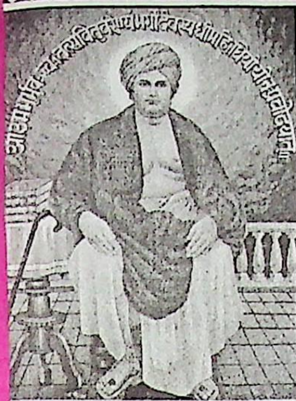
131191

रत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
ीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
० ०१२६२-२७७७२२
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

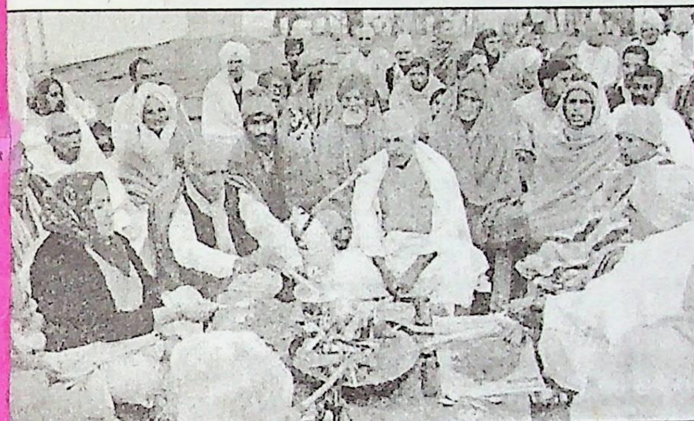



ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

...यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक ६ ७ जनवरी, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# सत्यलोक आश्रम के खिलाफ मोर्चा खोला


...र्य महासम्मेलन में यज्ञ करते हुए सभामन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, आनन्ददेव शास्त्री आचार्य विजयपाल, सुखदेव शास्त्री आदि आर्य महानुभाव।



पाखण्ड-खण्डन आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आचार्य सत्यव्रत जी तथा मंच पर विराजमान आचार्य विजयपाल जी, आचार्य बलदेव जी, ब्र० राजसिंह जी, स्वामी कर्मपाल जी तथा अन्य।

- आश्रम की जगह कन्या गुरुकुल बनेगा
- स्वामी रामदास पर गांवों में आने की रोक
- तैनात था भारी पुलिस बल
- आश्रम की संपत्ति की सीबीआई जांच हो

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान ...आज डीघल की सीमा में हुए पाखंड ...डन महासम्मेलन में करौंथा गांव के ...त्यलोक आश्रम के रामपालदास पर ...खंडों और अनैतिक कार्यों को बढ़ावा ...ने का आरोप लगाते हुए निर्णय लिया ...या कि इस क्षेत्र के गांवों में रामपाल के ...वेश पर रोक लगाई जाएगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस ...हासम्मेलन का आयोजन रामपालदास ...ारा स्वामी दयानन्द तथा वेदों पर किए ...ए कथित आक्षेपों का जवाब देने तथा ...स डेरे के पाखंडों की पोल खोलने के ...लए किया था। पहले यह सम्मेलन करौंथा ...ांव में ही आयोजित होना था, लेकिन ...अदालत द्वारा करौंथा गांव में इसके ...आयोजन पर रोक लगा देने के बाद ...महासम्मेलन डीघल गांव की सीमा में ...हुआ। आज डीघल गांव में इस ...महासम्मेलन के आयोजन तथा इसके कारण ...कथित तनाव और टकराव की आशंकाओं ...के मद्देनजर करौंथा के सत्यलोक आश्रम ...तथा डीघल में महासम्मेलन के आयोजन ...स्थल पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए ...थे। सत्यलोक आश्रम के बाहर जहां रोहतक के एसडीएम संजय राय तथा डीएसपी एमआई खान के नेतृत्व में भारी पुलिस बल तैनात था वहीं डीघल में आर्य महासम्मेलन स्थल पर झज्जर पुलिस ने सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए हुए थे। यहां झज्जर के डीएसपी टीकाराम तथा एसडीएम सतीश के नेतृत्व में काफी संख्या में पुलिस बल तैनात था। डीघल गांव में पाखंड-खंडन सम्मेलन में हजारों की संख्या में आर्यसमाज की विचारधारा को मानने वाले लोग शामिल हुए और इन लोगों में सत्यलोक आश्रम तथा इसके रामपालदास के प्रति गहरा रोष था। महासम्मेलन में वक्ताओं ने कहा कि रामपालदास के पाखंडों की पोल जनता के बीच खोलने का आज से शुरू हुआ अभियान अब लगातार जारी रहेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष आचार्य बलदेव ने कहा कि स्वामी रामपाल को या तो शास्त्रार्थ की आर्यसमाज की चुनौती को स्वीकारना होगा या आश्रम खाली करके जाना होगा। उन्होंने स्वामी दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेप कर सोए हुए आर्यसमाज को जगा दिया है यह उन्हें काफी महंगा पड़ेगा। आचार्य बलदेव ने कहा कि जिस व्यक्ति को वेदों का कोई ज्ञान नहीं है, उसे वेदों तथा स्वामी दयानन्द के प्रति गलत टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है। आचार्य बलदेव ने अपनी यह मांग फिर दोहराई कि सत्यलोक आश्रम के पास अंधाधुंध सम्पत्ति के स्रोत की सीबीआई जांच करवाई जाए। उन्होंने यह मांग भी की कि सरकार इस डेरे के विज्ञापनों और प्रसारणों पर तुरंत प्रभाव से रोक लगाए। हुडा खाप के एडवोकेट राममेहर हुड्डा ने कहा कि रामपालदास के खिलाफ आर्यसमाज हरयाणा तथा दिल्ली में अदालतों में मामले डालेगा तथा रामपालदास ने केवल करौंथा में आर्यसमाज के महासम्मेलन पर धारा १४४ लागू करवाई है। इसके जवाब में आर्यसमाज सभी गांवों में आज से रामपाल दास के खिलाफ धारा १४४ जनता की अदालत द्वारा लागू किए जाने का फरमान जारी करता है। आज से ही रामपाल दास का सभी गांवों में प्रवेश निषेध कर दिया गया है। वक्ताओं ने कहा कि रामपाल दास की विचारधारा को अब इस क्षेत्र से उखाड़ फेंका जाएगा तथा आश्रम के स्थान पर कन्या गुरुकुल का निर्माण करवाया जाएगा।

वक्ताओं ने कहा कि उनकी लड़ाई रामपाल दास से व्यक्तिगत नहीं है बल्कि विचारधारा के साथ है। वे जिस तरह समाज में पाखंड को बढ़ावा दे रहे हैं उससे समाज का हर तरह का विकास रुक गया है तथा युवा वर्ग गलत रास्ते पर जा रहा है। कई वक्ताओं ने रामपाल दास को सीआईए का एजेंट बताया और कहा कि वे विदेशी पैसे के बल पर देश को तोड़ने का काम कर रहे हैं। वक्ताओं ने सरकार से रामपाल दास की गतिविधियों की जांच करवाकर उन पर रोक लगाने की मांग की। महासम्मेलन में प्रस्ताव पारित कर रामपाल दास डेरे की गतिविधियों की सीबीआई जांच करवाने और इसके कार्यक्रमों के प्रसारण तथा विज्ञापनों के प्रकाशन पर रोक लगाने की मांग की गई। एक अन्य प्रस्ताव में इस डेरे में अनैतिक गतिविधियों के आरोप लगाते हुए इनकी राज्य सरकार से जांच करवाने की मांग की गई। तीसरे प्रस्ताव में प्रदेश के इसी तरह के दूसरे डेरों की गतिविधियों की जांच की मांग की गई।

गोहत्या पर रोक लगाने, स्टीकपुरी के बूचड़खाने को बंद करवाने के प्रस्ताव भी पारित किए गए। महासम्मेलन को सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत के अध्यक्ष स्वामी कर्मपाल, स्वामी रुद्रवेश, आचार्य सुदर्शनदेव, सुमित्रा देवी, करुणा देवी, डॉ० रघबीरसिंह, ब्र० राजसिंह, राजेन्द्र, विजयपाल, सुखदेव, रामरख, तेजवीर आदि ने भी संबोधित किया।

०३-०१-०५ साभार-दैनिक जागरण

# सुख-दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं

❑ लालचन्द आर्य, ग्राम व डाकघर मदाना, जिला झज्जर ( हरयाणा )

**(स्वामी सत्यपति जी उत्तर देने की कृपा करें)**

गतांक से आगे....

**पन्द्रहवां दोष**-''यदि सांसारिक सुख जीव का स्वाभाविक गुण है तो उसकी प्राप्ति के लिए यज्ञ का विधान व्यर्थ है।

**उत्तर**-यह आप द्वारा लगाया दोष आपकी मान्यता ''**सुख प्रकृति का स्वाभाविक गुण है**'' पर भी बराबर लागू होगा। जब प्रकृति में पहले ही स्वभाव से विद्यमान है तब भी यज्ञ व्यर्थ ही होगा। किन्तु यज्ञ का विधान व्यर्थ नहीं है। जीवात्मा की सभी क्रियाओं का परिणाम अपने उसके लिये व अन्य जीवों के लिए सुख देने वाला या दुःख देने वाला होता है। यज्ञ भी मनुष्यों द्वारा की गई एक क्रिया है जो सभी प्राणियों लिये दुःखनिवृत्ति और सुखप्राप्ति का साधन है। आप तो साधन में सुख अर्थात् सांसारिक सुख स्वभाव से मान रहे हो तो फिर उसमें यज्ञ द्वारा शुद्धि की क्या आवश्यकता।'' शास्त्रों में तो साधन को शुद्ध करने का विधान है।

**सोलहवां दोष**-दुःख जीव का स्वाभाविक गुण होने से इसके प्रतिकूल नहीं हो सकता है। जैसे ज्ञान गुण जीव का स्वाभाविक है वह उसके प्रतिकूल नहीं होता।

**उत्तर**-दुःख प्रतिकूल है तभी तो उससे निवृत्ति चाहता है। जो दुःख जीव में स्वभाव से न होता तो उसे क्या पता होता कि दुःख क्या वस्तु है और क्यों उससे निवृत्ति चाहता? दुःख को प्रकृति में स्वाभाविक मानने पर तो मुक्ति में जीव को प्रकृति से छूट जाना मानना पडेगा, जो ऋषि दयानन्द जी की मान्यता के विरुद्ध होगा। उन्होंने तो दुःख से छूट जाने को मुक्ति कहा है प्रकृति से छूट जाने को नहीं। और ज्ञान गुण जीव में प्रतिकूल होने पर ही अज्ञान, विपरीत ज्ञान और अविद्या कहाता है। जीव में ज्ञान की विपरीतता ही तो बन्ध का कारण है। ज्ञान की प्रतिकूलता ही जीव में अल्पज्ञता है।

**सत्रहवां दोष**-दुःख गुण को स्वाभाविक बतलाना और उसकी निवृत्ति के उपायों का वर्णन भी करना यह परस्पर विरुद्ध है।

**उत्तर**-सुख और दुःख दोनों स्वाभाविक होने से कोई विरोध नहीं। दुःख छूटेगा तभी सुख प्राप्त होगा। सांख्यदर्शन ३-८४ में दुःख निवृत्ति रूप मुक्ति प्रतिपादन की है और सांख्य० ६-९ में ''द्वैविध्यात्'' मुक्ति दो प्रकार की होने से सुख का अभाव रूप नहीं। दोनों एक साथ न होने और स्वाभाविक होने से कोई विरोध नहीं। सांख्य सूत्र ३-७१ में पुरुष को बन्ध, मोक्ष, अविवेक से होते हैं परमार्थ से नहीं। अविवेक के त्याग और विवेक के ग्रहण का उपाय शास्त्रों में वर्णित है। अकेले दुःखनिवृत्ति के उपायों का वर्णन नहीं है।

**अठारहवां दोष**-यदि दुःख गुण जीव का स्वाभाविक है, तो ऋषियों ने उसको दूर करने के उपाय क्यों लिखे हैं?

**उत्तर**-ऋषियों ने सुखप्राप्ति के उपाय भी तो लिखे हैं। ऋषियों को पता था कि विद्या और अविद्या जीव के साथ प्रवाह से अनादि हैं। जिसके कारण सुख-दुःख होता है, जीवों के उपकारार्थ दुःखनिवृत्ति और सुखप्राप्ति के उपाय लिखे हैं।

**उन्नीसवां दोष**-लड्डू खाते-खाते जब पेट भर जाता है तब लड्डू खाने वाले व्यक्ति के मन, इन्द्रिय और शरीर की लड्डू से मिलने वाले सुख की प्राप्ति भी नहीं होती।

**उत्तर**-यह दृष्टांत तो आपकी मान्यता का ही खण्डन करता है। जब आप प्रकृति में सुख को नित्य और स्वाभाविक मानते हैं। मन, इन्द्रिय और शरीर भी प्राकृतिक हैं तो फिर नित्य पदार्थ के नित्य गुण का समाप्त होना और प्राप्त होना कहना नहीं बन सकता।

**स्वामी ( सत्यपति ) जी का वचन**-यदि सुख गुण जीव का स्वाभाविक है तो लड्डू खाने वाले व्यक्ति का पेट भर जाने पर जीवात्मा को अपने नित्य सुख की प्राप्ति क्यों नहीं होती इसका उचित समाधान करें।

**उत्तर**-लड्डू एक प्राकृतिक पदार्थ है। प्रकृति अपने आप में न किसी को सुखदायक और न दुःखदायक है, क्योंकि वह जड़ है। जीवात्मा विद्या से सदुपयोग करता है तो वह सुख का साधन है और उसी वस्तु का जीव अपनी अविद्या से दुरुपयोग करता है तो वह दुःख का साधन बनती है। पेट भरने पर भी यदि कोई अविद्या के कारण लड्डू खाता जायेगा तो वही प्राकृतिक पदार्थ लड्डू का अधिक सेवन दुःखदायक हो जायेगा। सुख का स्थान दुःख ले लेगा।

**बीसवां दोष**-मैंने अपने पांचवें लेख में प्रतिज्ञा आदि अवयवों के द्वारा साधर्म्य और वैधर्म्य से अपने पक्ष की सिद्धि और विपक्ष का खण्डन किया है।

**उत्तर**-यह आपका पांचवां लेख प्राप्त नहीं हो सका है। ऐसा जानें कि जीव और ईश्वर में सुख साधर्म्य तथा दुःख वैधर्म्य है, प्रकृति में दोनों नहीं।

**इक्कीसवां दोष**-कुछ लेखक अपने विषय की उचित स्थापना और विपक्ष के प्रश्नों का उचित उत्तर नहीं देते।

**उत्तर**-दोनों पक्षों को अपना-अपना पक्ष उचित दिखाई देता है। सत्यासत्य का निर्णय तो ऋषि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में बताये गये पांच बिन्दुओं के आधार पर ही हो सकता है जो शास्त्रों में वर्णित है और कोई विधि नहीं है। अपनी बात तो सभी को सत्य प्रतीत होती है। आपके २२ दोषों का उत्तर दिया है। आगे आपकी मान्यता में दोष प्रकट किये जायेंगे जिनका आपको उत्तर देना चाहिये।

**बाइसवां दोष**-नौवें समुल्लास में पंचकोशों का वर्णन करते हुएं कारण प्रकृति को आनन्द का आधार बतलाया है। वह आनन्द गुण न तो परमात्मा का है और न जीवात्मा का वह सांसारिक सुख है जो कि प्रकृति का धर्म है।

**उत्तर**-वहां ''**आनन्दःका आधार**'' नहीं लिखा, वहां तो ''आनन्द और आधार'' लिखा है। पांच कोशों के वर्णन में तो ''आनन्द का आधार'' नहीं लिखा वहां तो ''आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है'' ऐसा लिखा है। यहां तो प्रकृति को कारण रूप कहा है और आधार माना है। प्रश्न है किसका आधार? ऋषि दयानन्द जी ने अन्यत्र कहा है कारण कार्य का आधार होता है। यहां तो आनन्द और प्रकृति पांचवें कोश के दो भिन्न-भिन्न घटक हैं। प्रकृति को आनन्द का आधार और सांसारिक सुख प्रकृति का धर्म मानने से पहले आपको प्रकृति को चेतन सिद्ध करना पड़ेगा। जो न्यायदर्शन २-२-१ सूत्र के सम्भव प्रमाण से असम्भव है। सुख को प्रकृति का आप स्वाभाविक गुण मान रहे हैं और छूटता भी नहीं, यह भी मानते हैं तो फिर मृत शरीर में सुख क्यों नहीं, उत्तर बनता हो तो कृपा कीजिए।

**स्वामी ( सत्यपति ) जी का वचन**-आठवें समुल्लास में जीव को प्रकृति का भोक्ता लिखा है। इससे सिद्ध होता है कि सुख-दुःख गुण प्रकृति के हैं और जीवात्मा उनको भोगता है।

**उत्तर**-जीवात्मा में सुख-दुःख स्वाभाविक होने के कारण ''भोक्ता'' जीवात्मा का विशेषण है। जीवात्मा प्रकृति का उपयोग करने से भोक्ता नहीं है किन्तु अपने निज सुख-दुःख गुणों के भोगने के कारण है। जीव या तो सुख भोगता है या दुःख भोगता है। यदि प्रकृति में यह गुण स्वाभाविक होते तो यह विशेषण उसी का होता। जैसे जीवात्मा प्राकृतिक साधनों का उपयोग करने से ''कर्ता'' नहीं कहाता, किन्तु उसके प्रयत्न गुण के कारण ''कर्ता'' है ऐसे ही भोक्ता होने के विषय में समझें।

**स्वामी ( सत्यपति ) जी का वचन**-आठवें समुल्लास में सुख-दुःख गुण प्रकृति के हैं और जीवात्मा उनका भोक्ता है।

**उत्तर**-वहां तो ऋषि दयानन्द जी ने उपरोक्त वाक्यों के बाद कहा है कि ''अब प्रकृति का लक्षण लिखते हैं।'' यदि सुख-दुःख प्रकृति के लक्षण होते तो वहां ऋषि जी अवश्य लिखते। उन्होंने तो (सत्त्व) शुद्ध (रज) मध्य (तमः) जाड्य यह अर्थ किये हैं और अपनी पुस्तक में इसके विपरीत ''सत्त्व का गुण सुख है और दुःख गुण रज का है'' ऐसा लिख रहे हैं। ऋषि दयानन्द जी ने प्रकृति के लक्षणों में सुख-दुःख का नाम तक नहीं लिखा है।

**स्वामी ( सत्यपति ) जी का वचन**-नौवें समुल्लास में जीव के २४ स्वाभाविक गुणों को स्वीकार किया है, जो कि मुक्ति में भी विद्यमान रहते हैं, इन २४ में सुख-दुःख को स्वीकार नहीं किया है।

**उत्तर**-वहां पर प्रश्न है कि जीव स्थूल शरीर के बिना मुक्ति में सुख और आनन्द भोग कैसे करता है? उत्तर में ऋषि जी ने २४ प्रकार के सामर्थ्य गिनाने से पहले कहा- ''मुख्य एक प्रकार की शक्ति है।'' जीव में सुख अनुभूति रूप स्वशक्ति ही तो मुख्य एक प्रकार की शक्ति है जिससे जीव मुक्ति सुख को भोगता है। यहां पर कोई ईश्वर को मुख्य शक्ति या जीव की चेतनता को मुख्य शक्ति कह सकता है। इसके उत्तर में निवेदन है कि यहां जीव की शक्ति कितने प्रकार की है, ईश्वर का प्रसंग नहीं है और चेतनता तो बन्ध में भी रहती है यहां तो मुक्ति भोग का वर्णन है। इसी प्रसंग में ऋषि ने कहा- ''अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है।'' और २४ सामर्थ्य बताने के बाद अगला ही वाक्य है-''इससे मुक्ति में भी आनन्द की प्राप्ति भोग करता है।'' और आगे है- ''दुःखों से छूटकर।'' यहां पर आपका यह दोष बनता कि २४ में नहीं, इसलिए स्वाभाविक नहीं। सुख इन २४ सामर्थ्यों से भोगना है और दुःख छूटने पर ही सुख होना है इसलिए २४ में नहीं गिने।

**स्वामी ( सत्यपति ) जी का वचन**-जो लोग सुख-दुःख को जीव के स्वाभाविक गुण मानते हैं वे वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों के प्रमाणों से उचित समाधान करें।

**उत्तर**-सत्य की सिद्धि करने के लिये वेद से बढ़कर कोई प्रमाण नहीं और वर्तमान में ऋषि दयानन्द से बढ़कर कोई वेदों का शुद्ध अर्थकर्ता नहीं जिसके प्रमाण प्रथम दोष के उत्तर में लिख दिये हैं। जहां तक उचित समाधान का प्रश्न है, यह तो सत्य को ग्रहण करने पर उद्यत रहने की इच्छाशक्ति पर निर्भर करेगा कि कौन कितना सत्य को मानने को तैयार होता है और समाधान को उचित मानता है। आगे सुख-दुःख को प्रकृति के स्वाभाविक गुण मानने में दोष लिखे जाते हैं।

**सुख-दुःख को प्रकृति के स्वाभाविक गुण मानने में दोष-**

(१) सभी वेद, शास्त्र और ऋषियों ने प्रकृति को जड़ माना है और सुख-दुःख को चेतन का गुण कहा है और आप भी अपनी पुस्तक ''**सरल योग से ईश्वर साक्षात्**'' के पृष्ठ ११ पर ऐसा ही मानते हैं। सुख-दुःख अनुभूति रूप गुण है तो फिर आप किस शब्द प्रमाण के आधार पर इन्हें जड़ प्रकृति के स्वाभाविक बताकर इन्हें प्रकृति को अनुभव करा रहे हैं?

(२) ऋषियों ने इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, ज्ञान और प्रयत्न गुणयुक्त को जीव माना है। परन्तु आपने अपनी पुस्तक के पृष्ठ २२ पर जीव के स्वरूप में ज्ञान, इच्छा और प्रयत्न को तो माना और द्वेष, दुःख और सुख को छोड दिया, ऐसा किस शब्द प्रमाण के आधार पर किया?

( शेष पृष्ठ सात पर )

# मानवता सबसे बड़ा गुण

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, १५०, महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७

जैसे गऊ के दूध में सब विटामिन (तत्त्व) मिले हुए होते हैं यानि सिर्फ गऊ का दूध पीकर भी मनुष्य जीवित रह सकता है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य में मानवता का एक गुण ही होना ही प्रर्याप्त है कारण इस गुण के होने से मनुष्य में बाकी सभी गुण स्वयं ही प्रविष्ट हो जाते हैं। जैसे ईमानदारी, सत्य बोलना, चोरी न करना, धोखा न देना, दया करुणा, परोपकार आदि। मानवता के न होने से सभी अवगुण जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, लालच, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, चोरी करना, झूठ बोलना, धोखा देना आदि स्वयं ही आजाते हैं। जब तक मानवतावाला गुण मनुष्य में नहीं आता तब तक कोई कितना भी बड़ा विद्वान्, बलवान्, धनवान् व बुद्धिमान् क्यों न हो, सब निरर्थक है। इसीलिये वेदों में यह न कहकर कि तुम हिन्दू बनो, मुसलमान बनो, ईसाई बनो, डाक्टर बनो, वकील बनो, व्यापारी बनो, किसान बनो, सिपाही बनो, सिर्फ यह कहा है कि "मनुर्भव" यानि मानव बनो। इसका तात्पर्य यह होता है कि जब मनुष्य जन्म लेता है तब वह सिर्फ आकृति से मनुष्य होता है, वास्तव में मनुष्य नहीं होता। जैसे-जैसे उसमें मानवता के गुण आते जायेगें वैसे-वैसे वह मानव बनता जायेगा। मानव वह होता है जो चिन्तन मनन करता है और इसी के करने से गुणों को ग्रहण करते जाता है और अवगुणों को छोड़ते जाता है तभी वह मानवता की ओर अग्रसर होने लगता है। इसी भावना के अनुसार यजुर्वेद में एक मन्त्र आया है। **"ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव॥"** इस मन्त्र में मनुष्य ईश्वर से प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! आप मेरे सभी दुर्गुणों व दुर्व्यसनों को दूर कर दीजिये और सब अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव मुझे प्रदान कीजिये ताकि मैं एक सच्चा मानव बन सकूँ। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है उसमें सम्पूर्ण गुणों का होना असम्भव है। सर्वगुणसम्पन्न तो एक ईश्वर ही है जो सर्वशक्तिमान् व सर्वज्ञ है। मेरा स्वयं का यह विचार है कि जब मनुष्य में पच्चास प्रतिशत गुण आजाते हैं तब वह मानव कहलाने का अधिकारी बन जाता है। जब उसमें सत्तर प्रतिशत गुण आ जाते हैं तब वह देवता-तुल्य हो जाता है और जब उसमें नब्बे प्रतिशत गुण आ जाते हैं तब वह ऋषि व महर्षि की कोटि में पहुंच जाता है।

मनुष्य को सृष्टि व अपना जीवन चलाने के लिये ईश्वर ने सीमित दोष व अवगुण रखने की व्यावहारिक छूट दे रखी है, इसका कारण यह है कि मनुष्य को कुछ दोष कहलाने वाले कर्म भी करने पड़ते हैं जैसे माता यदि अपने बच्चों में मोह-ममता नहीं रखेगी तो वह बच्चे का पालन-पोषण नहीं कर सकेगी। पिता यदि अपने बच्चे से कुछ सीमित स्वार्थ की भावना नहीं रखेगा तो वह परिवार को खिलाना-पिलाना, पढ़ाना-लिखाना तथा सब सुखों की व्यवस्था नहीं कर सकेगा। पति यदि पत्नी से प्यार नहीं करेगा और सन्तानोत्पति नहीं करेगा तो यह संसार नहीं चल सकेगा। इसलिये मनुष्य के कुछ सीमित अवगुण सृष्टि नियम के अनुसार गुण में परिवर्तित हो जाते हैं। यदि मनुष्य अपनी पत्नी से सिर्फ ऋतुगामी है तो महर्षि दयानन्द, ऐसे गृहस्थी को ब्रह्मचारी मानते हैं और अतिकामी बनना अवगुण कहलाता है। यदि माता की ममता से बच्चा सुधरता है तो यह गुण है और यदि अति या ममता से बच्चा बिगड़ता है तब यह अवगुण बन जाती है। यही बात सब जगह लागू होती है।

मनुष्य यदि कितना भी पढ़ा-लिखा हो और कितने ही बड़े पद पर हो यदि उसमें मानवता नहीं है तो वह पद का दुरुपयोग ही करेगा और लोगों का ज्यादा अहित करेगा और यदि कोई छोटे पद पर ही है किन्तु उसमें मानवता है तो वह किसी का भला ही करेगा। यदि आप धनवान् हैं और आप में मानवता नहीं है तो आपका धन बुरे कामों में नष्ट होगा और यदि आप में मानवता है तो वह धन सदुपयोग में लगेगा यानि आप उस धन से स्कूल, कॉलेज, धर्मशाला, औषधालय, वाचनालय आदि खोलेंगे जिनसे जनहित का कार्य होगा। मानवता होने से मनुष्य का स्वयं का जीवन भी शुद्ध, पवित्र बनता है जिससे वह शुभकार्य, शुद्ध व्यवहार, शुद्ध विचार, शुद्ध आहार करते हुए अपने जीवन को सफल बनाता है साथ ही मनुष्य के चार पुरुषार्थ वेदानुकूल चलते हुए धर्म, अर्थ, काम को करता हुआ मोक्षप्राप्ति की ओर अग्रसर होता है।

कई व्यक्ति कह देते हैं कि कर्त्तव्य पालन करने वाला व्यक्ति मानवता या दया नहीं दिखा सकता। न्यायाधीश यदि न्याय करता है तो दुष्ट को दण्ड देना ही पड़ेगा। यह सत्य नहीं है, फिर भी मानवता का रास्ता निकल ही आता है, जैसे एक गाड़ी के रिजर्व डिब्बे में एक बूढ़ा जिसको भीड़ के कारण साधारण डिब्बे में बैठने को जगह नहीं मिली, वह किसी प्रकार से रिजर्व डिब्बे में चढ़ गया, यदि टी-टी सच्चा मानव है तो क्या वह उस बुढ़े को डिब्बे से उतार देगा? कभी नहीं! हाँ वह कानून के अनुसार उसको कोर्ड बर्थ या सीट तो नहीं दे सकता किन्तु उस बूढ़े को अपनी सीट पर तो बिठा ही सकता है। इसमें तो किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। बस! यही मानवता है। इसी प्रकार सब जगह नियम व कानून का पालन करते हुए भी [illegible] दूसरों का दुःख दूर कर सकता है। मानवता की सही व्याख्या यही है, किसी को सुख देना मानवता है और दुःख देना अमानवता है।

वैसे तो कर्त्तव्य का पालन करना ही मानवता है जैसे एक डॉक्टर किसी रोगी का ऑपरेशन कर रहा है। यहाँ डॉक्टर का कर्त्तव्य और मानवता यही है कि वह रोगी का ईमानदारी से, कम से कम तकलीफ देकर, कम से कम खर्चे पर उसका ऑपरेशन करे। जब उसे मालूम हो जाये कि यह रोगी पूरी फीस देने में असमर्थ है, तब डॉक्टर अपनी फीस कम लेता है या पूरी छोड़ देता है यह त्याग उसे मानव की जगह देवता बना देता है। यदि डॉक्टर को यह ज्ञात हो गया कि यह तो अति गरीब है तब वह यदि हास्पीटल का खर्च व दवाइयों का खर्च अपने पास से दे देता है तब वह देवता से ऋषि, महर्षि के कोटि में पहुँच जाता है। यदि डॉक्टर यह जानकर कि यह रोगी गरीब है ऑपरेशन होने के बाद मेरी पूरी फीस नहीं दे सकेगा। तब वह ऑपरेशन करने से पहले रोगी से अपनी पूरी फीस माँगता है और फीस लिये बिना ओपरेशन नहीं करता। रोगी किसी प्रकार से भी अपनी पत्नी के गहने बेचकर डॉक्टर को फीस देता है यह मानवता से गिरने का काम हुआ। ऐसे डॉक्टर को हम मानव की में नहीं दानव की श्रेणी में गिनेंगे अर्थात् मानवता में चढ़ने और गिरने दोनों का स्तर होता है। यह मनुष्य के ऊपर निर्भर करता है। जैसे महात्मा गान्धी ने कहा के मेरे ऊपर गोली चलाने वाले को क्षमा कर देना यह देवता कोटि का काम हुआ और महर्षि दयानन्द ने विष देने वाले को क्षमा तो कर ही दिया उसके उपरान्त पाँच सौ रुपये देकर प्राण बचाने का रास्ता भी बतला दिया। यह ऋषि-महर्षि कोटि की महानता हुई।

मैं तो यह कहता हूँ कि मानवता कानून और नियमों से कहीं बड़ी है। वैसे तो कानून भी जनता को सुखी बनाने के लिये बनाये जाते हैं परन्तु कभी-कभी कानून से एक वर्ग खुशी और दूसरा वर्ग दुःखी भी होता है। किन्तु मानवता तो है ही सभी को सुखी बनाने के लिये। मानवता के प्रयोग से दुःख कभी नहीं हो सकता जैसे उदाहरण के तौर पर कानून यह है कि मजदूर आठ घण्टे ही काम करेगा, इससे ऊपर काम करने से अलग मजदूरी लेगा। एक कारखाने में दो मजदूर हैं। कारखाना में चार घण्टे काम करने के बाद बिजली चली गई। चार घण्टे से दोनों मजदूर हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। जब जाने का समय आया तो लाइट आ गई। एक मजदूर तो वह था जो बिजली आते ही चला गया। इसमें मालिक को तकलीफ तो जरूर हुई लेकिन वह कर भी क्या सकता था। दूसरा मजदूर ऐसा है जिसमें मानवता है वह मालिक से कहता है कि मैं बिना कुछ अलग मजदूरी लिये दो-तीन घण्टे काम करूंगा। कारण काम करने से ही कारखाना में कमाई होगी तभी तो आप मजदूरी दे सकोगे। कारखाना चलाने और कमाई करने से ही आपका और मेरा दोनों का लाभ है। मैं भी चार घण्टे निकम्मा बैठने पर आलसी हो गया था। जब दो-तीन घण्टे काम करूंगा तो मेरा शरीर भी ठीक होगा, मुझे घर जाकर भूख भी अच्छी लगेगी और नींद भी अच्छी आयेगी। यह उस मजदूर की मानवता हुई जो मालिक और मजदूर दोनों को प्रसन्न बनाती है। कानून से तो दूसरा मजदूर भी घर जा सकता था लेकिन उसमें मानवता थी जिससे वह दोनों को खुश कर सका और इससे कारखाना में भी लाभ ज्यादा होने से मालिक उसकी उन्नति भी करेगा जिससे उसकी भी स्वार्थ की सिद्धि होगी और ज्यादा उत्पादन होने से देश को भी लाभ पहुंचेगा। कई बार हम देखते हैं कि कानून से काम बिगड़ता है और वहीं काम मानवता से सिर्फ सुधरता ही नहीं बल्कि तीव्र गति से बढ़ता है। आज हम देखते हैं कि कानून के साथ मानवता न होने से अधिकतर कारखाने व फैक्ट्रियाँ घाटे में चल रही हैं। यही कारण है कि आज बंगाल उत्पादन के मामले में और प्रान्तों से पिछड़ रहा है। जहाँ कानून के साथ मानवता होगी वहाँ नुकसान होने की कोई सम्भावना ही नहीं हो सकती।

यह सर्वमान्य सत्य है कि जिस व्यक्ति में मानवता होगी वह जहाँ कहीं भी काम करता होगा वह अपनी मानवता के साथ-साथ कर्त्तव्य का भी पूरा ध्यान रखेगा। वह समाज व राष्ट्र का किसी रूप में भी अहित नहीं होने देगा। हर व्यक्ति को समझना चाहिये कि मैं डॉक्टर, वकील, व्यापारी, अध्यापक, सैनिक बाद में हूँ ईश्वर ने मुझे मानव बनाकर भेजा है इसलिये मैं पहले मानव हूँ, मुझे मानवता के कर्त्तव्य का अवश्य ही पालन करना चाहिये।

## राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली जीन्द हरयाणा का मकरसंक्रान्ति पर वार्षिक महोत्सव

**१४ जनवरी २००५ शुक्रवार**

मगर संक्रान्ति पर्व प्राचीन काल से ही गोपूजा के लिए प्रसिद्ध है। १४-१-२००५ मकर संक्रान्ति पर सभी गोभक्त गोमाता के लिए यथा सामर्थ्य गुड़ दलिया खल बिनौला लाकर पुण्यार्जन करें। गौ का दुःख मनुष्य की परेशानी है।

इस पुण्यावसर पर आचार्य श्री धर्मवीर जी, स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती से आचार्य बलदेव जी के ब्रह्मत्व में संन्यास दीक्षा ग्रहण करेंगे जिनका नवीन नाम स्वामी धर्मदेव जी महाराज रहेगा।

अतः अधिकाधिक संख्या में महोत्सव में पधारकर साधु-महात्माओं, विद्वानों, भजनोपदेशकों के विचार सुनें तथा पुण्य लाभ प्राप्त करें।



# दीक्षान्त समारोह सम्पन्न



दिनांक २२-१२-०४ को दयानन्द महिला महाविद्यालय में दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि विख्यात आर्यसंन्यासी स्वामी अग्निवेश जी रहे जो बंधुआ मुक्ति मोर्चा के प्रधान, अध्यात्म जागरण मंच के राष्ट्रीय संयोजक तथा हरयाणा सरकार के भूतपूर्व शिक्षामंत्री हैं। महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के प्रधान डॉ० रामप्रकाश जी ने स्वामी जी का स्वागत करते हुए कहा कि स्वामी जी के संघर्ष का एक लम्बा इतिहास है आज जब धार्मिक जगत् रूढ़िवादिता से ग्रस्त होकर अपनी अस्मिता खो चुका है ऐसे में स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द के मार्ग को प्रशस्त किया है। स्वामी जी अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त हैं। इन्हें राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार से इसी वर्ष सम्मानित किया गया है। इसी वर्ष वैकल्पिक नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त करके स्वामी जी ने समूचे भारत को गौरवान्वित किया है। प्रधान जी ने कहा कि पाश्चात्य देशों की प्रवृत्ति जिससे उपभोक्तावाद और पाश्चात्य सांस्कृतिक साम्राज्यवाद जैसी नकारात्मक शक्तियां पनप रही हैं उनके विरोध में स्वामी जी निरन्तर प्रयासरत हैं तथा आर्यसमाज आन्दोलन को बढ़ावा देकर विभिन्न सामाजिक कुरीतियों जैसे सम्प्रदायिकता, मजदूरी, बन्धुआ मजदूरी, बाल मजदूरी दलित और हरिजनों तथा नारी के प्रति संकुचित दृष्टिकोण के निवारण के लिए सामाजिक न्याय के पक्षधर हैं। प्राचार्या (डॉ०) श्रीमती विभा अग्रवाल ने महाविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

मुख्य अतिथि ने अपने दीक्षान्त भाषण में उत्साहपूरित मनोभावों को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि दयानन्द महिला महाविद्यालय की ऐतिहासिक क्षमता एवं उपलब्धियों पर आज समस्त आर्यजगत् गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। युगान्तर की इस बेला में छात्राओं ने एक नया अध्याय जोड़ा है। जीवन के विविध क्षेत्र, नए आयाम छात्राओं के लिए खुले हैं, ऐसा विश्वास स्वामी जी ने अभिव्यक्त किया तथा छात्राओं को संकल्पशक्ति की अग्नि प्रज्वलित रखने के लिए प्रेरित किया। स्वामी जी ने कहा कि जीवन एक साधना है कि इसके लिए हमें ऐसी विद्या की आवश्यकता है जो विवेक जागृत करे आत्मविश्वास पैदा करे और पाखण्डों से मुक्ति दिलाए तथा सबके प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न करे लेकिन विद्या से पहले दीक्षा की अर्थात् मिशन की आवश्यकता है। प्राणिमात्र के प्रति समर्पित होकर सबके लिए संघर्ष करना व्यक्ति का मिशन होना चाहिए। समारोह के अन्त में डॉ० रामप्रकाश जी ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट किया तथा प्राचार्या ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

## महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में यज्ञ, योग और राष्ट्रभाषा को बढ़ावा दिया जाएगा

रोहतक २५ दिसम्बर। हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति का एक शिष्टमंडल डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा की अध्यक्षता में म०द०वि० के कुलपति श्री राजसिंह धनखड़ से पूर्व निर्धारित समयानुसार मिला। कुलपति महोदय ने समिति के ज्ञापन को स्वीकार करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में समस्त कार्य, नामपट्ट, पत्र-पैड, निर्देश-पत्र, पाठ्यक्रम पुस्तिकाएँ आदि को राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखने व प्रकाशित करने का गम्भीर प्रयास किया जाएगा। हिन्दी के प्रश्नपत्र व पीरियड बढ़ाने के लिए प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों की संयुक्त बैठक में निर्णय लिया जाएगा। वि०वि० की सभी शाखाओं में हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष व मानक हिन्दी शब्दावली उपलब्ध कराई जा रही है। शीघ्र ही प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों की हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया जाएगा। डॉ० नरेश मिश्र हिन्दी विभागाध्यक्ष व श्री सुभाषचन्द्र नारंग सहायक शैक्षणिक शाखा ने वि०वि० की हिन्दी नीति बारे बताया।

कुलपति महोदय ने कहा कि प्रदूषण मुक्ति व छात्रों को संस्कारित करने के लिए प्रत्येक छात्रावास में साप्ताहिक यज्ञों का कार्यक्रम आरम्भ किया जाएगा। माननीय कुलपति जी ने कहा कि विश्वविद्यालय के नए प्रशासनिक व शैक्षणिक प्रांगण के मध्य महर्षि दयानन्द की भव्य प्रतिमा स्थापित करने पर विचार किया जाएगा। जहां महर्षि जी के जीवन के प्रमुख प्रसंग व उद्देश्यों का भी चित्रण किया जाएगा। शिष्टमंडल ने १४ मांगों का एक ज्ञापन कुलपति जी को दिया। डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा ने महर्षि दयानन्द के उत्कृष्ट साहित्य के साथ राष्ट्रभाषा समिति के प्रकाशन भी कुलपति जी को भेंट किये। शिष्टमंडल में रोहतक से डॉ० जगदेवसिंह, श्री महावीर 'धीर', जीन्द से श्री प्रो० ओमकुमार आर्य व श्रीमती दर्शना मलिक, झज्जर से श्रीमती संतोष मुद्गिल, डॉ० प्रकाशवीर दलाल, श्री रामकिशन राठी विधिवक्ता सम्मिलित थे। डेढ़ घण्टे तक स्वस्थ वार्ता हुई।

-महावीरसिंह फोगाट, संयोजक, हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति

# अध्यापक समाज में अपना स्थान बनाएं-डॉ० सांगवान

एक आदर्श अध्यापक के रूप में हम कभी भी अपने भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन को नहीं भूल सकते। उन्होंने अध्यापकों को अपना दायित्व एवं कर्तव्यों का पालन करना सिखाया। आज आवश्यकता इस बात की है कि अध्यापक उनके पदचिह्नों पर चलते हुए समाज में अपना स्थान बनाएं। अध्यापक ही राष्ट्र की अमूल्य पूंजी है। राष्ट्र के भावी कर्णधारों को वे ही तैयार करते हैं। आज के चिकित्सक, वकील, व्यापारी, उद्योगपति, साहित्यकार, सरकारी, गैरसरकारी एवं अर्द्धसरकारी कर्मचारी व अधिकारी एवं अन्य सभी विविध क्षेत्रों में कार्यरत सभी अध्यापक समुदाय द्वारा ही तैयार किए गए हैं। ये शब्द आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल के प्रबन्धक डॉ० आर.एस. सांगवान ने अपने शुभकामना सन्देश में कहे।

गौरतलब है कि आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल, सिरसा में २७ दिसम्बर से अध्यापक प्रशिक्षण शिविर चल रहा है। इसमें रानियां, ऐलनाबाद, डबवाली उपमण्डल के ८५ गांवों के राजकीय, मिडल, हाई एवं सीनियर सै० स्कूलों में कार्यरत २६१ अध्यापक, अध्यापिकाएं भाग ले रहे हैं। इस शिविर में सामाजिक अध्ययन, हिन्दी, संस्कृत एवं पंजाबी विषय का शिक्षण दिया जा रहा है। उच्चकोटि एवं प्रतिभावान लेक्चरार द्वारा शिक्षण कार्य किया जा रहा है। हिन्दी विषय में सर्वश्री ओमप्रकाश कालड़ा, श्रीमती उषा मेहता, श्रीमती कृष्णा मोंगा, श्री श्रीगोपाल जी शास्त्री, संस्कृत विषय में श्री सतनामसिंह, श्रीमती वीणा जैन, पंजाबी विषय में श्री रामसिंह कम्बोज, श्री सहीराम, सामाजिक अध्ययन विषय में श्री इन्द्रपाल, श्री शमशेरसिंह, श्री सुभाष वर्मा, श्रीमती रवीन्द्र ग्रोवर, श्री रोहताश नोखवाल, श्री नरेशकुमार हैं। श्री रामकुमार जी बैनीवाल उपमण्डल शिक्षा अधिकारी ने शिविर का निरीक्षण किया। शिविर में समुद्री तूफान में मरने वाले लाखों लोगों को श्रद्धांजलि दी गई।

-कृष्णलाल वोहरा, प्रिंसिपल, आर्य सीनि०सै० स्कूल, सिरसा

## श्रीकृष्ण मानव कल्याण समिति के बढ़ते कदम-डॉ० सांगवान



समिति ने समाज सेवा के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। समिति के संरक्षक श्री भगवानदास बजाज राजकीय सेवा से निवृत्त होकर समाजसेवा में जुटकर हम सबके प्रेरणास्रोत बन गए हैं। समय की रेत पर अंकित उनके पदचिह्न हमें सदा दीन-हीन एवं निर्धन वर्ग की सहायता की प्रेरणा देते रहेंगे। शीतकाल में निर्धन छात्रों को जर्सियां देना, निर्धन कन्याओं के विवाह, निर्धन रोगियों को नि:शुल्क दवाइयां देना, गर्मियों में प्याऊ लगाकर ठण्डे पानी की व्यवस्था करना आदि अनेक कार्य श्रीकृष्ण मानव कल्याण समिति द्वारा किए जाते हैं। ये शब्द प्रबन्धक डॉ० आर.एस. सांगवान ने विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं समिति के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहे।

आज समिति ने ७० विद्यार्थियों को जर्सियां वितरित कीं। आज के इस समारोह के मुख्य अतिथि सिरसा एजुकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष श्री भीमसेन झपरा, अध्यक्ष डॉ० जे.एल. खुराना एवं विशिष्ट अतिथि श्री निर्मल बजाज थे। मंच संचालन श्री रणजीतसिंह मोंगा ने किया। **-प्रिंसिपल, आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, सिरसा**

## बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

हरयाणा आर्य युवक परिषद् एवं क्षेत्रीय सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में १९ दिसम्बर २००४ को ग्राम शाहपुर (करनाल) में शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल एवं अशफाक उल्ला खां का बलिदान दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रातः स्वामी धर्मानन्द परिव्राजक के ब्रह्मत्व में शिवराम आर्य विद्यावाचस्पति ने यज्ञ करवाया। यज्ञ पर १० युवकों ने जनेऊ लिया। मंच का संचालन सूर्यदेव प्रभाकर जीन्द ने किया। इस अवसर पर परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, पं० धर्मपाल आर्य व्यायामाचार्य आदि ने पं० रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उनके देश की आजादी में विशेष योगदान के अनेक प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए। पं० सुखपाल आर्य उत्तरप्रदेश, मामराज आर्य, मानसिंह आर्य, रामकुमार आर्य के देशभक्ति के भजन हुए। समारोह में गांव-गुवांड के काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। **-श्यामलाल निर्मल,** अध्यक्ष जिला परिषद् करनाल

## योगस्थली आश्रम का वैदिक सत्संग सम्पन्न

२६ दिसम्बर २००४ को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़ में बृहद् यज्ञ के पश्चात् 'ईश्वर' विषय पर संगोष्ठी हुई जिसमें आचार्य सुदर्शनदेव जी की अध्यक्षता में संगोष्ठी होनी थी, अस्वस्थ होने से आचार्य जी सम्मिलित नहीं हो सके, उनके स्थान पर श्री राममुनि जी ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। संगोष्ठी में आर्यजगत् के प्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध सिद्धान्त के धनी विश्वामित्र जी शास्त्री लूखी, मास्टर रूपराम जी आर्य, स्वामी अमरमुनि जी, महाशय ताराचन्द्र जी कारौली, श्री फूलसिंह जी आर्य मन्त्री आर्यसमाज कनीना, बहन बिमला जी, डॉ० श्रीभगवान्, सरपंच श्रीचन्द जी। ईश्वर के स्वरूप का प्रमाणों सहित भलीभांति वर्णन किया और आगन्तुक महानुभावों की कितनी ही शंकाओं का समाधान किया गया। मंच का संचालन मास्टर वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल महेंद्रगढ़ ने किया। यज्ञ का कार्य वेदप्रकाश जी ने ही कराया और यजमान का स्थान बहन केशरदेवी जी ने एक किलो शुद्ध घृत का दान कर ग्रहण किया। इसके पश्चात् स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने नवयुवकों को ब्रह्मचर्य की रक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस संगोष्ठी में अधिकांश संख्या नवयुवकों की थी। वेद और दर्शनों के प्रमाण देकर सरल भाषा में नवयुवकों को विस्तार से समझाया। नवयुवकों से ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा कराई। ब्रह्मचर्य पालन से क्या-क्या लाभ होते हैं वह सब विस्तार से समझाया। इस संगोष्ठी को सफल बनाने में ब्रह्मचारी, प्राचार्य अनिलकुमार आर्य का विशेष सहयोग रहा। अन्त में शान्तिपाठ के पश्चात् शुद्ध घी से निर्मित हलवे का प्रसाद सबको प्रचुर मात्रा में खिलाया और ३५ रोगियों का उचित निदान कर नि:शुल्क औषधियों का वितरण किया।

**-मास्टर वेदप्रकाश आर्य,** मण्डलपति आर्यवीर दल, महेन्द्रगढ़

## आभार प्रदर्शन

सभी प्रकार के विपरीत वातावरण के होते हुए भी आर्यों का आशातीत जनसमूह पाखण्ड-खण्डन आर्य महासम्मेलन में पहुंचा। २-१-२००४ को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी गई। सरकार द्वारा धारा-१४४ लगाई गई। समाचार पत्रों द्वारा सूचना दी गई कि कोई सम्मेलन नहीं होगा। यदि सम्मेलन किया गया तो कानूनी कार्यवाही होगी। स्टे अदालत से लिया गया। हर जगह सम्पर्क भी न हो सका। भयङ्कर धुन्ध ने भी बाधा डाली। परन्तु आर्यों ने सिद्ध करके दिखाया-

**बाधायें कब रोक सकती हैं आगे बढ़नेवालों को।**

१० बजे प्रातः से साढे चार बजे तक शांतिपूर्वक कार्यक्रम में आर्यजनता का बैठे रहना, विद्वानों का सारगर्भित भाषण देना, प्रत्येक के मुख से यही वाक्य निकलना "आर्यसमाज में पुन: नवजीवन आ गया है", सभी के मन को प्रफुल्लित कर रहा था। सबका विचार शास्त्रार्थ का युग फिर से आरम्भ होना चाहिये। आज बड़ी अच्छी शुरुआत हुई है। पाखण्ड-खण्डन को समाप्त करने की सबकी प्रबल इच्छा उनके मुखों पर भारी प्रसन्नता प्रकट कर रही थी। यात्रा तथा भूख-प्यास का कष्ट सहकर जो आर्यों ने तप किया है इसके लिये मैं सभी का आभार प्रकट करता हूं।

**-आचार्य बलदेव, सभाप्रधान**

## निर्वाचन

केरल वैदिक मिशन की वार्षिक बैठक आर्यसमाज गिदड़बाहा में आचार्य राजेन्द्रमुनि जिज्ञासु की अध्यक्षता में दिनांक १२ दिसम्बर २००४ को सम्पन्न हुई। इसमें आगामी वर्ष के पदाधिकारी इस प्रकार चुने गए।

सर्वाधिकारी-प्रो. राजेन्द्रमुनि जिज्ञासु, वानप्रस्थ अबोहर, संरक्षक-श्री प्रेमप्रकाश वानप्रस्थ धूरी, प्रधान-श्री वासदेव आर्य धूरी, वरिष्ठ उप-प्रधान-श्री तरसेमकुमार आर्य गोनियाना, उपप्रधान-(क) श्री मदनलाल आर्य गिदड़बाहा, (ख) डा. विवेक आर्य, रोहतक, महामन्त्री-डा० अशोक आर्य मण्डी डबवाली, मन्त्री-श्री सुरेन्द्रपाल गुप्ता संगरूर, उपमन्त्री-(क) श्री कौशलपुरी रामांमण्डी, (ख) श्री जगदीश गुप्ता, दिल्ली, कोषाध्यक्ष-डा० विजयकुमार, कालांवाली, सह-कोषाध्यक्ष-श्री सूरतसिंह पूनियां, कालांवाली। **-डा. अशोक आर्य**

## समुद्री तूफान राहत हेतु अपील

प्रकृति ने एक बार फिर २६ दिसम्बर २००४ को भारत के दक्षिणी प्रान्तों तमिनालनाडु, आन्ध्रप्रदेश, केरल, अंडमान निकोबार और पांडिचेरी में कहर ढाया है। हजारों लोगों की जानें सुनामी लहरों ने ले ली हैं और हजारों घर नष्ट हो गए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं प्रान्तीय आर्यवीर दल हरयाणा ने प्राकृतिक आपदा से पीड़ित मानवता की सहायता के लिए शीघ्र ही एक और जत्था चेन्नई में भेजने का निर्णय लिया है। ध्यान रहे कि एक जत्था आर्यवीर दल का २७ दिसम्बर २००४ को पहले ही चेन्नई के लिए भेजा चुका है।

आप सभी से निवेदन है कि आप अपनी ओर से, अपनी आर्यसमाज/संस्था की ओर से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग स्थानीय आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं को देवें या प्रान्तीय कार्यालय आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कार्यालय के पते पर भेजें।

कृपया सहायताराशि नकद/ड्राफ्ट द्वारा उपरोक्त पते पर भेजने का कष्ट करें। कपड़े/अन्न आदि वहीं से खरीदकर बांटने की योजना है क्योंकि यहां से सामान भेजना महंगा पड़ेगा।

निवेदक :-

**आचार्य बलदेव** प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्दमठ, रोहतक
हरयाणा

**वेदप्रकाश आर्य** महामंत्री,
सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा
कार्यालय : आर्यसमाज शिवाजी
कालोनी, रोहतक

## शोक समाचार

पूज्य माता गार्गी देवी जी धर्मपत्नी कर्नल आखेराम माडल टाउन पानीपत का ८३ वर्ष की आयु में स्वर्गवास २७ दिसम्बर २००४ को हो गया। माता जी कन्या गुरुकुल खानपुर की पहली पढ़नेवाली कन्या थीं। माता जी महर्षि के प्रति बड़ी श्रद्धावान् थीं। आर्यसमाज हेतु उनका बहुत बड़ा सहयोग रहा। अनेक गुरुकुल गोशालाओं को, ब्रह्मचारियों को आर्थिक सहयोग देती रही हैं। अनेक वैदिक विद्वानों का इस परिवार में आना-जाना रहा है। दिनांक २७-१२-०४ से सामवेद का पारायण यज्ञ परिवार में चल रहा है। उसकी पूर्णाहुति दिनांक ७-१-२००५ को प्रातः ११ बजे होगी। प्रातः ११ बजे से १२ बजे तक माता जी की श्रद्धांजलि सभा होगी।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इस असह्य दु:ख को सहन करने की शक्ति इस परिवार को प्रदान करे तथा दिवंगत आत्मा को अपनी गोद में शान्ति प्रदान करे।

**-वेदपाल आर्य,** आर्यसमाज थर्मल कालोनी, पानीपत

# श्री पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्तों पर किये गये आक्षेपों के सन्दर्भ में

श्री धर्मगुरु पं० रतिराम आर्य (जीन्द) द्वारा लिखित ''सत्यार्थप्रकाश हत्याकाण्ड का भाण्डाफोड़'' नामक पुस्तक का अध्ययन किया जिसमें लेखक ने सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न सम्पादित व पाद-टिप्पणी सहित प्रकाशित संस्करणों में अनेक पाठभेद प्रदर्शित करते हुए प्रदत्त पाद-टिप्पणियों (फुटनोट्स) की समीक्षा की है। उसी समालोचना प्रसंग में लेखक महोदय ने आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान्, समाजसेवी, आर्यनेता श्री पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती द्वारा पाद-टिप्पणी सहित सम्पादित व देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार दिल्ली द्वारा सन १९६४ में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश में, द्वितीय संस्करण से पाठ-भेदों के उल्लेख प्रसंग तथा पाद-टिप्पणियों के समालोचना सन्दर्भ में विवेचना करते हुए, उन पर अशोभनीय एवं अमर्यादित आक्षेप किये हैं। श्री पं० रतिराम जी आर्य ने श्री सिद्धान्ती जी द्वारा सम्पादित सत्यार्थप्रकाश का आधार माननीय स्वामी वेदानन्द जी वेदतीर्थ द्वारा सम्पादित सत्यार्थप्रकाश को मानते हुए अपनी पुस्तक में प्रकरणानुसार दोनों पर सम्मिलित रूप से भी आक्षेप किये हैं, जो बहुवचन में प्रयुक्त हैं। उन्हें भी में उदाहरण रूप में एकवचन में ही प्रस्तुत कर रहा हूँ-

(१) पुस्तक के पृष्ठ नं० ९६ में-घमण्डी।
(२) पुस्तक के पृष्ठ नं० १५० में-क्षुद्राशयी।
(३) पुस्तक के पृष्ठ नं० १६४ में-अनाड़ी।
(४) पुस्तक के पृष्ठ नं० १७४ में-उल्लू का चरखा।
(५) पुस्तक के पृष्ठ नं० १८० में-लबाड़ी।
(६) पुस्तक के पृष्ठ नं० १९४ में-दुष्टस्वभावी।
(७) पुस्तक के पृष्ठ नं० २०१ में-भूण्ड के समान स्वामी दयानन्द से विपरीतगामी।
(८) पुस्तक के पृष्ठ नं० २०४ में-इतिहास का शत्रु।
(९) पुस्तक के पृष्ठ नं० २०७ में-इतिहास का हत्यारा।
(१०) पुस्तक के पृष्ठ नं० २०८ में-महामूर्ख।
(११) पुस्तक के पृष्ठ नं० २२१ में-मानव-कौम को धोखा देने वाला।
(१२) पुस्तक के पृष्ठ नं० २२३ में-पत्थरबुद्धि।
(१३) पुस्तक के पृष्ठ नं० २२४ में-पागलखाने में प्रवेश योग्य।
(१४) पुस्तक के पृष्ठ नं० २३८ में-भ्रष्ट-मूर्ख।

इनके अतिरिक्त पुस्तक में वर्णित भ्रष्टीकरणकर्ताओं के नाम से सामूहिक रूप में भी उन्हें अनेक दु:सहनीय व निम्नस्तरीय आक्षेपों से कलङ्कित करने का निन्दनीय प्रयास किया गया है। समालोचना-सन्दर्भ में लेखक महोदय ने आर्योचित मर्यादित पद्धति की लेखन-परम्परा का निर्वहनमात्र भी नहीं किया है। यद्यपि पुस्तक में अन्यों पर भी कटु व उद्वेजक शब्दावली में आक्षेपों व अपशब्दों की वर्षा की है। किन्तु मैं श्री सिद्धान्ती जी के वैयक्तिक व सामाजिक व्यक्तित्व से पर्याप्त परिचित होने के कारण उन पर ही अपना लेख केन्द्रित कर रहा हूँ। श्री सिद्धान्ती जी ने रक्षाविभाग की वृत्ति (नौकरी) का परित्याग कर बड़ी अवस्था में संस्कृत भाषा के अध्ययन में श्रम करके स्वल्पकाल में जो योग्यता भाषा व सिद्धान्त क्षेत्र में अर्जित की थी उसकी सभी विज्ञ व सामान्यजन सम्मान करते थे। सिद्धान्ती की उपाधि उन्होंने किसी विश्वविद्यालय से प्राप्त नहीं की थी अपितु वैदिक सिद्धान्तों की हृत्स्पर्शी व बुद्धिग्राह्य व्याख्या करने की उनकी असाधारण क्षमता से प्रभावित आर्यजनता ने उन्हें श्लाघा-स्वरूप प्रदत्त की थी। आर्यसमाज की विद्वत्शृंखला में गणनीय श्री पं० रघुवीरसिंह शास्त्री पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार तो उनके विद्या-पुत्र थे ही, इसी श्रेणी में आदरणीय वैदिक विद्वान् श्री महावीर जी मीमांसक, श्री वेदव्रत जी शास्त्री, श्री आचार्य सुदर्शनदेव जी भी उनसे यत् किंचित् पढ़े हैं। श्री सिद्धान्ती जी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे, वे सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि से सम्बन्धित आर्यजनों की शंकाओं का स्वयं समाधान करने में प्रसिद्ध थे। मैंने स्वयं उनसे एक बार सत्यार्थप्रकाश पर शंका करते हुए उसके समाधान से जब असहमति प्रकट की तो कहने लगे बेटा अभी तुम्हारी बुद्धि योगिराज दयानन्द के सूक्ष्म सैद्धान्तिक पक्षों को हृदयङ्गम करने योग्य नहीं है। वे महर्षि के लेख को आप्त प्रमाण में गिनते थे, पुनः वे ऋषिकल्प व अपने प्रेरणास्रोत स्वामी दयानन्द के ऐतिहासिक महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में जानबूझकर व पाण्डित्य प्रदर्शन की हेयभावना के वशीभूत होकर उनके मूल लेख में परिवर्तन करने के पाप-पंक में कैसे लीन हो सकते थे? जिन्होंने महर्षि के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से प्रेरित होकर सरकारी नौकरी छोड़ युवावस्था में ही अपनी पत्नी व परिवार का त्यागकर संस्कृत भाषा तथा वैदिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन कर अपने आदर्श महात्मा द्वारा संस्थापित आर्यसमाजरूपी वृक्ष के पल्लवन में सब कुछ अर्पित कर दिया तथा जिसने अपने विद्या-बल से अनेक पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं का लेखन व सम्पादन कर महर्षि के सत्यार्थप्रकाश को जन-जन तक फैलाने का प्रयास किया, उन द्वारा ऋषि के सिद्धान्तों में न्यूनता प्रदर्शित करने या उनमें छलपूर्वक परिवर्तन करना कभी नहीं हो सकता। श्री सिद्धान्ती जी का कार्यक्षेत्र बहुआयामी रहा है। वे लेखक-सम्पादक, वक्ता भी रहे तथा साथ-साथ सामाजिक व राजनैतिक नेतृत्व संवाहक भी रहे हैं। जिससे जीवन-क्षेत्र में सक्रियता व व्यस्तता का आधिक्य होना स्वाभाविक है, साथ ही वे योगज ऋतम्भरा प्रज्ञा से पुनीत ज्ञानालोक से अन्त:प्रकाशित नहीं थे, अत: इस परिप्रेक्ष्य में यह माना जा सकता है कि सिद्धान्ती जी से सत्यार्थप्रकाश के सम्पादन में या पाद-टिप्पणियाँ लिखने में सम्पूर्णता न रही हो। साथ ही लेखन या सम्पादन-कार्य केवल एक पर निर्भर न रहने के कारण तथा अपेक्षित श्रम के अभाव में व प्रमादवश कुछ शब्द छूट गये हों या परिवर्तित हो गये हों। इसी चिन्तन प्रक्रिया में यह भी माना जा सकता है कि उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के दुरूह स्थलों को साधारण जनता की सहज ग्राह्यता के क्षेत्र में लाने की भावना से जो समीक्षात्मक पाद-टिप्पणियाँ की हैं, उनमें कुछ न्यूनताएं रह गई होंगी जिन्हें युक्ति-प्रमाण से विवेचित व संशोधित किया जा सकता है। इसके विपरीत अपशब्दों के तीक्ष्ण प्रहारों से अपने ही सम्मानित दिवंगत विद्वानों व नेताओं को गरिमाहीन करने का प्रयत्न आर्यसमाज के संगठन को प्रभावी बनाने में सहायक नहीं हो सकता। आप में यदि योग्यता और सर्जनात्मक शक्ति है तथा महर्षि के दर्शन के प्रति समर्पण हैं तो विधर्मियों के वैचारिक आक्रमणों को ध्वस्त करने का प्रयास कीजिए जो दिन-प्रतिदिन हो रहे हैं। मैं लेखक महोदय की इस चिन्तन प्रक्रिया का विरोधी नहीं हूँ कि महर्षि के अमरग्रन्थरत्न सत्यार्थप्रकाश के मौलिकस्वरूप में कोई परिवर्तन व परिवर्द्धन नहीं होना चाहिए। इसके सर्वाधिक मौलिक व प्रामाणिक संस्करण की सुरक्षा व प्रकाशन की सद्भावना से लेखक ने जो श्रम-अध्ययन व सामग्री-संकलन का प्रयास किया है, वह तो स्तुत्य है किन्तु आर्यों की लेखनशैली के विपरीत अपने ही संगठन की कड़ियों को कठोर प्रहारों से जीर्ण-शीर्ण करना शोभनीय नहीं कहा जा सकता इससे तो ऐसा लगता है कि -

**सीने के फफोले जल उठे सीने के दाग से।**
**इस घर को आग लग गई घर के चिराग से॥**

पुस्तक की समीक्षा करना मेरे लेख का विषय नहीं है वह तो सत्यार्थप्रकाश के विशेषज्ञ विद्वान् करेंगे। मेरे लेख का केन्द्रबिन्दु आर्यजगत् के मनीषी विद्वान् व नेता श्री सिद्धान्ती जी पर पुस्तक में किये गये अपमानजनक आक्षेपों का अनौचित्य प्रदर्शित करना था। इस लेखन-प्रसंग में यदि कहीं अज्ञानवश प्रकट किये गये वाक्य-सन्दर्भों के भाव से लेखक महोदय व अन्य किसी को उद्वेग हो तो उसके लिए क्षमा चाहता हूँ। साथ ही महर्षि की उत्तराधिकारिणी, परोपकारिणी सभा से यह विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि वह सत्यार्थप्रकाश के सम्पादित व प्रकाशित ३७वें संस्करण पर पुन: चिन्तन करे तथा आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानों का सम्पादक मण्डल बनाकर उनकी संस्तुति व सम्मतियुक्त सत्यार्थप्रकाश का सर्वाधिक मौलिक व प्रामाणिक संस्करण आर्यजनता को समर्पित करे, चाहे इसमें कितना ही समय व धन लगे। आर्य विद्वानों व नेताओं से हार्दिक निवेदन है कि ऐसा प्रयत्न शीघ्र किया जाए कि यह आर्यों का पारस्परिक-विरोध यथाशीघ्र समाप्त हो तथा इस पुस्तक का जो विधर्मियों का हथियार बन सकती है और अधिक प्रकाशन व वितरण न हो।

**-राजपाल बहराणा**, सैक्टर-१ म०न० १४५८, रोहतक

## हार्दिक बधाई

दीपेश मलिक सुपुत्र श्री बलवीरसिंह मलिक प्रधान पूर्वी आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद ने हरयाणा सिविल सर्विसिज (H.C.S.) परीक्षा उत्तीर्ण की है। आर्यजगत् में इस बात से बड़ा उत्साह है तथा गर्व है। आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, आर्यवीर दल हरयाणा तथा आर्यवीर विजय पत्रिका परिवार इस शुभ अवसर पर दीपेश को आशीर्वाद तथा श्री बलवीरसिंह मलिक एवं श्रीमती दर्शना मलिक जी को बहुत-बहुत बधाई देते हैं।

-अजीतकुमार आर्य, महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद

## विशेष छूट

**आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय में निम्न साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध है।**

| | पुस्तक | | मूल्य |
|---|---|---|---|
| १. | धर्म-भूषण | २० प्रतिशत छूट | १०-०० |
| २. | धर्म-प्रवेशिका | | ५-०० |
| ३. | वैदिक सिद्धान्त सार | | १५-०० |
| ४. | वैदिक उपासना पद्धति | | ८-०० |
| ५. | प्राणायाम का महत्त्व | | १५-०० |
| ६. | श्रीमद्दयानन्दप्रकाश | | ५०-०० |
| ७. | पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित्र | आधे मूल्य में | १०-०० |
| ८. | हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान | | ३०-०० |
| ९. | पंजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन | | १००-०० |
| १०. | विजडम ऑफ ऋषिज | | ७२-०० |
| ११. | सरफरोशी की तमन्ना | | २०-०० |
| १२. | सत्यार्थप्रकाश | | २५-०० |
| १३. | आर्यसमाज क्या है? | | ५-०० |
| १४. | हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास | | ५-०० |
| १५. | हमारा फाजिल्का | | ५-०० |
| १६. | श्लीपद हाथी पांव चिकित्सा | | २-०० |
| १७. | शराबबन्दी शंका-समाधान | | १-०० |
| १८. | आदर्श धातु रूपावली | | ५-०० |
| १९. | ओ३म् ध्वज | | १५-०० |
| २०. | दैनिक यज्ञ प्रकाश | | २-५० |

**नोट :-**

१. अगर आप डाक से मंगवाना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड बुक पोस्ट+पैकिंग खर्च अलग से लगेगा।
२. रुपये पहले भेजने होंगे।
३. बैंक ड्राफ्ट 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम भेजें।

**-सत्यवीर शास्त्री**, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

# आर्य-संसार

## गुरुकुल में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक सम्पन्न

कुरुक्षेत्र २५ दिसम्बर, २००४ निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी व गुरुकुलशिक्षापद्धति के पुनरुद्धारक अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द के ७८वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रांगण में भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध शिक्षाविद् व गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डॉ. देवव्रत ने की। इस अवसर पर उन्होंने सम्बोधित करते हुए कहा कि मानव अपने कर्मों से महान् बनता है, न कि जन्म से। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द समर्पण, त्याग और श्रद्धा की विलक्षण प्रतिमूर्ति थे। त्याग, समर्पण और साहस की ऐसी मिशाल विश्व इतिहास के पन्नों में दुर्लभ है। उन्होंने अपने पुत्र, धन, वैभव, सुख आदि सब कुछ मानवता को अर्पित कर दिया। वे अपने जीवन की शहादत की अंतिम घड़ियों तक साहस और कर्मयोग की अनुपम मूर्ति बने रहे।

इस अवसर पर संस्कृताचार्य राजीव शास्त्री ने कहा कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द महान् व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अंग्रेजों से बगावत करके अपने साहसिक व्यक्तित्व का परिचय दिया था। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द को शान्ति का दूत बताते हुए कहा कि वे एक महान् शिक्षाशास्त्री थे। उनके करकमलों द्वारा स्थापित की गई १९०२ में गुरुकुल कांगड़ी व १९१२ में गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना विश्व इतिहास में महानतम घटना के रूप में उल्लेखनीय है। उन्होंने कहा कि ये दोनों गुरुकुल उनके जीवन की सर्वोत्कृष्ट कृति हैं। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के प्रवर्त्तन में उनका योगदान चिरस्मरणीय है। -डॉ० श्यामलाल शर्मा, प्रेस प्रवक्ता, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

## सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

झाडौदा कलां नई दिल्ली-७२। २५ से दिसम्बर २००४ तक श्री पं० अनिलकुमार जी आर्य और पं० कृष्णकुमार जी आर्य ने अपने घर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया। यह यज्ञ स्वामी वेदारक्षानन्द जी आर्ष गुरुकुल कालवा और आचार्य चेतनदेव जी (अलीगढ़) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। २६ दिसम्बर को आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी "दुग्धाहारी" का सारगर्भित प्रवचन हुआ। २७ को पूर्णाहुति पर कन्या गुरुकुल लोवाकलां की छात्राओं ने वेदपाठ तथा ईश्वरभक्ति के भजन प्रस्तुत किये। श्री राजेन्द्र जी आर्य और श्री रमेश जी आर्य के भी मधुरगीत हुये। प्रतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-राकेश आर्य, झाड़ौदा कलां नई दिल्ली-७२

## आर्य विद्यालय चरखी दादरी में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनाकं २४ दिसम्बर २००४ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शिक्षण संस्था आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी जिला भिवानी में आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस वानप्रस्थी श्री कंवरसिंह की अध्यक्षता में प्रात: यज्ञ के बाद मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबन्धक श्री केदारसिंह आर्य ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए बताया कि स्वामी जी का बचपन का नाम श्री मुन्शीराम जी था। उनके पिताजी बनारस में कोतवाल नियुक्त थे। एक दिन वहाँ आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द उपदेश दे रहे थे। एक दिन उनका उपदेश सुनने के लिए मुन्शीराम अपने पिताजी के साथ पहुंच गये। प्रभावशाली उपदेश से श्री मुन्शीराम का जीवन पलट गया। उन्होंने अपने दुर्व्यसन त्यागकर सद्गुण अपना लिए और समाजसुधार तथा वेदप्रचार करने हेतु गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आदि स्थापित करके उच्चकोटि के विद्वान् तैयार किये, जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द के साथ भारत को स्वतन्त्र कराने में भाग लिया। श्री केदारसिंह आर्य ने ब्रह्मचारियों को बताया कि स्वामी जी को शुद्धि आन्दोलन में एक मुसलमान आतंकवादी ने धोखा देकर पिस्तौल चलाकर शहीद कर दिया था। इसी कारण यह बलिदान दिवस सारे भारत में मनाया जाता है।

-मन्त्री, आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी

## सत्संग सुधा

आर्यसमाज प्रेमनगर करनाल हरयाणा में मंगलवार दिनाकं १४-१२-२००४ से १९-१२-२००४ तक प्रतिदिन ५-४५ से ६-४५ तक आर्यसमाज के प्रधान पं० शमशेरकुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व तथा अध्यक्षता में यज्ञ उपरांत कर्मयोगी के सम्पादक स्वामी सांख्यायन सरस्वती जी के वेदमन्त्रों पर प्रवचन होते रहे। विद्यालय के बालकों को स्वामी जी ने प्रतिदिन संबोधित किया। बालकों को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। कार्यक्रम का सचांलन श्री हरीश खुराना जी ने किया। प्रचार्य श्रीमती रेणुबाला जी ने उपस्थित सज्जनों का आभार प्रकट किया। मंत्राणी सन्तोष नागपाल जी ने यज्ञशेष वितरित किया। भोजन व्यवस्था श्री शमशेरसिंह जी प्रधान आर्यसमाज ने की।

## वेद राष्ट्रभक्ति और विश्वबंधुत्व के प्रेरक ग्रंथ

### महात्मा वेदभिक्षु स्मृति दिवस पर वैदिक विद्वानों के उद्गार

नई दिल्ली, २३ दिसम्बर। वेद जहां राष्ट्रनिष्ठा और मातृभूमि के प्रति अनन्य समर्पण भाव के प्रेरक हैं, वहीं उनमें मानव कल्याण और विश्वबंधुत्व का वह सन्देश भी निहित है जो विश्वशांति की सत्य अर्थों में स्थापना का प्रशस्त पथ है। वेद के ज्ञान का प्रचार प्रसार ही कलहग्रस्त संसार में सौहार्दभाव का संचार करने में समर्थ सिद्ध हो सकता है। उपरोक्त उद्गार वेदप्रचारक स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु के स्मृति दिवस के अवसर पर दयानन्द संस्थान द्वारा आयोजित यज्ञ के समापन पर वैदिक विद्वानों और सार्वजनिक क्षेत्र में सक्रिय अनेक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ताओं ने व्यक्त किए। उन्होंने चारों वेदों का भाष्य प्रकाशित कर उसे सामान्य जन के लिए सुलभ बनाने एवं वेदप्रचार अभियान को गतिमान करने में महात्मा वेदभिक्षु के अनन्य योगदान को सराहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष स्वामी सत्यम् ने की।

-दयानन्द संस्थान, २२८६, आर्यसमाज रोड, करौल बाग, नई दिल्ली

## सुख-दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं... (पृष्ठ दो का शेष)

(३) आप अपनी पुस्तक के पृष्ठ ९१ पर प्रकृति को विभु नहीं मान रहे किन्तु सांख्य प्रथमाध्याय सूत्र ७६ में कहा है -"एकदेशी सबका उपादान कारण नहीं हो सकता।" और नौवें समुल्लास में ऋषि दयानन्द जी ने प्रकृति को "सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है" ऐसा माना है। और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के ग्रन्थप्रमाण विषय में यजुर्वेद के अध्याय ५ मं० १५ की व्याख्या में "भगवान् अपने पाद अर्थात् प्रकृति परमाणु आदि सामर्थ्य के अंशों से सब जगत् को तीन स्थानों में स्थापन करके धारण कर रहा है" ऐसा कहा है। जब ईश्वर सर्वव्यापक विभु है तो उसका सामर्थ्य प्रकृति भी विभु ही होना चाहिए और आप प्रकृति के विभु होने का खण्डन यदि यजुर्वेद ३१-३, ४ के आधार पर करना चाहें तो वहां ऋषि दयानन्द जी ने सृष्टिरचना को एक अंश में कहा है जो प्रकृति का कार्य है। प्रकृति तो कारण है जो ईश्वर में उसके सामर्थ्य रूप में उपादान कारण के नाम से उसकी सर्वव्यापकता में उसी की तरह विभु है। वेद शास्त्रों के प्रमाण से प्रकृति को परिछिन्न सिद्ध करें।

(४) **सबसे बड़ा दोष** तो यह होगा कि यदि आर्यसमाज आपकी इस मान्यता को मान ले कि सुख-दुःख प्रकृति के स्वाभाविक गुण हैं तो मूर्तिपूजा का खण्डन नहीं कर सकता। मूर्ति प्रकृति का कार्य है और कारण के गुण कार्य में अवश्य रहते हैं और आप भी मानते हैं कि स्वाभाविक गुण छूटता नहीं। फिर तो पौराणिक मूर्तिपूजकों की क्या गलती जो मूर्ति को सुखी करने के लिए और दुःखनिवृत्ति के लिए उसे कपड़े पहनाते, भोग लगाते, स्नान कराते और सभी क्रियायें वैध हो जायेंगी।

(५) आप अपनी पुस्तक के पृष्ठ ९७ पर सत्त्व और रज को पदार्थ मानकर सुख और दुःख को उनके गुण मान रहे हैं। परन्तु शास्त्रों में तो सत्त्व, रज और तम को प्रकृति का गुण माना है, इसलिए प्रकृति त्रिगुणात्मक कहलाती है। फिर आप किस वेद के मन्त्र या शास्त्र के सूत्र के आधार पर इन्हें द्रव्य कह रहे हैं। आप गुणों का गुणों में धारण करा रहे हैं जो ऋषि दयानन्द जी की मान्यता के विरुद्ध है। उन्होंने वै०दर्शन १-१-१६ सूत्र के अर्थ में गुण के लक्षण बताते हुये कहा है-"जो अन्य गुण का धारण न करे।" इस दोष पर भी विचार करें।

(६) पृष्ठ ९७ पर ही आप सुख को सत्त्व का स्वाभाविक गुण मान रहे हैं। आयुर्वेद के आर्षग्रन्थों में घृत को सत्त्वगुणी पदार्थ माना है। आपकी इस मान्यता के अनुसार घृत के प्रयोग से सुख प्राप्त होना चाहिए। परन्तु यदि कोई ज्वरपीड़ित व्यक्ति घृत का उपयोग अविद्यावश कर लेगा तो उसे सुख के स्थान पर दुःख ही प्राप्त होगा। इस दृष्टांत से सुख गुण सत्त्व का तो सिद्ध नहीं होता। सत्त्व का सुख गुण स्वाभाविक होता तो ज्वर की पीड़ा हटकर सुख प्राप्त हो जाना चाहिए था। यहां तो सिद्ध होता है कि सुख-दुःख प्रकृति में नहीं रहते, विद्या और अविद्या के कारण जीव में रहते हैं।

(७) आप इसी पृष्ठ पर सत्त्व, रज, तम तीन तत्त्व मिलकर किसी वस्तु का उपादान कारण बनते हैं। वह वस्तु किसी प्राणी को सुख-दुःख दे सकती है। आप एक तरफ तो इन्हें जड़पदार्थ मान रहे हैं और दूसरी तरफ इन्हीं में सुख-दुःख देने की क्षमता बता रहे हैं जो परस्पर विरुद्ध और असम्भव है। प्रकृति ही सुख-दुःख दे सकती है तो ईश्वर को मानने की क्या आवश्यकता है। सुख-दुःख देना तो ईश्वर आधीन है और वह भी जीवों के कर्मों के अनुसार। प्रकृति को कर्मफलदाता सिद्ध करें।

(८) पृष्ठ ९८ पर लिखा है "सुख और दुःख जीवात्मा के नैमित्तिक गुण हैं।" किसी भी पदार्थ का स्वाभाविक गुण प्रथम उसी में अपना अस्तित्व प्रकट करता है उसके उपरान्त ही अन्य पदार्थ के लिये निमित्त बनता है। प्रकृति जड़ होने से किसी ने उसे सुखी-दुःखी होते नहीं देखा। इसलिये सुख-दुःख प्रकृति में स्वाभाविक होकर जीव के नैमित्तिक गुण होना असम्भव है। इसे किसी प्रमाण से सिद्ध करें।

आपकी पुस्तक "**सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार**" में दोष तो और भी हैं किन्तु लेख के विस्तारभय से नहीं लिखते। मैंने अपने यह कुछ विचार विद्वानों के विचारार्थ लिखे हैं। आशा है आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान् स्वामी सत्यपति जी से विचार विमर्श करके इस विषय का निपटारा करेंगे जिससे आर्यजनता में ऋषि दयानन्द जी के मन्तव्यों में भ्रम न रहे, जो स्वामी सत्यपति जी की नवीन मान्यता से उत्पन्न हो गया है।

# नारी जागरण और महर्षि दयानन्द

❑ डॉ० अशोक आर्य, आर्य कुटीर ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली ( हरयाणा )

सती सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी के भारत में नारी की दिशा गिरते-गिरते निरन्तर दीन होती चली जा रही थी। नारी से उसके अधिकार छीने जा रहे थे। उसे कुलटा, अबला, पांव की जूती सरीखे विशेषणों के साथ जीवनाधिकार से वंचित किया जा रहा था। जो माता निर्माण का, संतान के सुमार्ग पर लाने का कार्य करती है, उससे शिक्षाप्राप्ति का अधिकार भी इस दकियानूसी समाज ने छीन लिया। उसे वेदमन्त्र सुनने पर दण्ड दिया जाने लगा।

जब नारी को घोर अपमान के ये घूंट पीने पड़ रहे थे, तभी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस भारत भूमि पर समग्र क्रांति का शंख फूंका। उन्होंने समाज का नाड़ी परीक्षण किया और देखा कि इस देश के अध:पतन का कारण वास्तव में यहां की नारी का अपमान है। अत: उन्होंने सर्वप्रथम नारी को शिक्षा व वेदपाठ का अधिकार पुन: दिलाया। शुरू-शुरू में कन्या विद्यालयों का भरपूर विरोध हुआ, किन्तु उन्होंने किसी भी प्रकार की चिन्ता किए बिना इस कार्य के लिए कमर कस ली। बहुविवाह, बालविवाह, सतीप्रथा आदि का विरोध करते हुए उन्होंने विधवा विवाह पर भी बल दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के चौथे सम्मुलास में नारी उत्थान के लिए उचित उपदेश दिया है। लिखा है कि जिस कुल में स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री सदा प्रसन्न रहती हैं, उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है। आगे लिखा है कि उत्तम स्त्री, नाना प्रकार के रत्न, विद्या, सत्य, पवित्रता, श्रेष्ठ भाषण और नाना प्रकार की शिल्पविद्या, सब देश तथा सब मनुष्यों से ग्रहण करे।

राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखके विद्वान् कराना। जो कोई माता-पिता इस आज्ञा को न माने उसे राजदण्ड देना।

देखो आर्यवर्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद भी अच्छी प्रकार जानती थीं। यदि न जानती होती तो कैकेई आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जातीं। इसलिए ब्राह्मणों और क्षत्रियों को सब विद्या, वैश्यों को व्यवहारविद्या और शूद्रों को पाकादि सेवाविद्या अवश्य पढ़नी चाहिए।

इससे स्पष्ट होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरुष व स्त्री में समानता दिखाना चाहते थे। वे स्त्री को इन अधिकारों से वंचित करना अनर्थ समझते थे। इस अनर्थ से बचाने के लिए उन्होंने नारी शिक्षा का पूर्ण समर्थन किया। स्वामी जी ने लिखा है :-

कन्या ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि शास्त्रों को पढ़, पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होकर पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश विद्वान् पुरुष को प्राप्त होवे। इसमें महर्षि ने स्वयंवर की प्रथा को भी स्वीकार किया है। उन्होंने यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय से उद्धरण देते हुए सबको समान शिक्षा के अधिकार का प्रतिपादन किया है।

इस प्रकार सत्यार्थप्रकाश व महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर नारी की महिमा का गायन किया गया है। फिर नारी का यह अपमान क्यों? यद्यपि महर्षि दयानन्द के उपकारों के परिणाम-स्वरूप श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा सुषमा स्वराज जैसी नारियां देश की प्रधानमन्त्री व मन्त्री बनीं, किन्तु अभी नारी पूरी तरह आजाद नहीं है। अभी नारी को वह सम्मान नहीं मिल पाया है, जिसकी वह अधिकारिणी हैं। अत: आज हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेशों को कार्यरूप देते हुए नारी को पूर्ण सम्मान प्रदान करना है।

# साहित्य प्रचार ही क्यों ?

वेदों के द्वारा प्रतिपादित विचारों को फैलाने का उद्देश्य ही आर्यसमाज की स्थापना का मूलाधार है। अमर हुतात्मा पं० धर्मवीर जी आर्यपथिक ने भी अपनी अन्तिम वसीयत में आर्यसमाज में लेखन और प्रवचन को कभी भी बन्द न करने का आदेश आर्यसमाजियों को दिया था। ऐसी स्थिति में साहित्यप्रचार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है क्योंकि किसी के भी विचारों में परिवर्तन करने के कार्य में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। कृपया विचार करें कि मूर्तिपूजा करने के कार्य को इस्लाम तलवार के बल पर अब तक भारत में समाप्त नहीं कर सका है वहाँ आर्यसमाज के सदस्यों के मन में क्या मूर्तिपूजा के बारे में कोई आस्था है? यदि नहीं तो क्या कभी हमने आत्म-चिन्तन किया है कि हम इस कार्य में क्यों सफल रहे हैं। इसका कारण है लोगों के विचारों में परिवर्तन। पर खेद है कि इस दिशा में दूसरों के लिये हमने कोई योजनाबद्ध कार्य किया ही नहीं है? आर्यसमाज से जुड़े लोगों में स्वाध्याय की भावना निरन्तर अधोगति की ओर है। आर्यसमाज के कार्यों की एक बड़ी राशि बेकार के कार्यों में अपव्यय की जा रही है पर साहित्य के क्रय-विक्रय या वितरण में अधिकांश लोगों की दिलचस्पी नहीं है और इन कार्यों को बेकार समझा जाता है। आर्यसमाज की पुस्तकों को क्रय करने के पूर्व क्रेता विक्रेता से यह जानना चाहता है कि उसे पुस्तक के क्रय में क्या छूट मिलेगी? कभी भी क्रय नहीं करने वाले लोग पुस्तकों के महंगा होने का रोना रोते है। आर्यसमाज के नाम पर केवल स्कूल खुल रहे हैं पर इनमें छात्रोपयोगी वैदिक साहित्य, महापुरुषों के चित्र इत्यादि का पूर्ण अभाव है। पढ़ाने वाले अध्यापक तो आर्यसमाजी हैं ही नहीं। कतिपय आर्यप्रकाशक अच्छी पुस्तकों को रद्दी कागज पर छापते हैं कि कुछ वर्षों के बाद ऐसी पुस्तकों को देखते ही लोग उसे नहीं देखना चाहते हैं। प्रश्न यह है कि आत्मश्लाघा के क्षणिक कार्यों में संस्था के धन से बहुमूल्य कागजों पर छपाई तो की जाती है पर ऐसी ही उदारता अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन में क्यों नहीं की जाती है। बाइबिल का अनुवाद २२८७ भाषाओं में हुआ है पर सत्यार्थप्रकाश जैसी क्रान्तिकारी पुस्तक का अनुवाद केवल २३ भाषाओं में ही क्यों? पिछले २५-३० वर्षों से तो सत्यार्थप्रकाश का भी अनुवाद किसी भी भाषा में नहीं हुआ है अन्य भाषाओं में भी पूर्व प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश के एक दो संस्करण ही छपे है। आर्यजन विचार करे मेरा परामर्श है कि वे निजी और सामूहिक रूप से कुछ न कुछ साहित्य-प्रचार पर अवश्य व्यय करें। प्रत्येक आर्यसमाज में कम से कम आर्यसमाज के महत्त्वपूर्ण साहित्य का क्रय-विक्रय और वितरण का कार्य होना ही चाहिए और प्रवचन में सक्षम विद्वानों का अधिक से अधिक सभी तरह से सम्मान के साथ-साथ ऐसा प्रबन्ध किया जाना चाहिए कि वे आर्थिक दृष्टि से अपने निजी व पारिवारिक उतरदायित्वों का निर्वाह कर सकें अन्यथा आर्यसमाज का भविष्य धूमिल होगा।

-दयाराम पोद्दार, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।

पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

# श्री रामपालदास मत समीक्षा

❑ सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष-संस्कृत सेवा संस्थान, ७७६/३४, हरिसिंह कालोनी, रोहतक।

### वेदार्थ-प्रकरण

श्री रामपाल दास जी सत्यलोक आश्रम करौंथा जि० रोहतक, दैनिक भास्कर आदि पत्र, टेलीविजन तथा अपने उपदेश आदि के माध्यम से आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत वेदभाष्य तथा उनकी प्रसिद्ध रचना सत्यार्थप्रकाश में दोष दिखलाकर महर्षि दयानन्द और उनके उत्तराधिकारी आर्यसमाज का अपमान करने का प्रयास कर रहे हैं और उन्हें स्वयं वेदादि शास्त्रों का परिज्ञान नहीं है, अत: अण्ड-बण्ड वेदार्थ लिखकर स्वयं भी विद्वत्समाज में उपहास का पात्र बन रहे हैं। क्या ही अच्छा होता कि वे किसी वैदिक विद्वान् के सान्निध्य से वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करते और अपने सत्यलोक आश्रम से सत्य सनातन वैदिकधर्म का प्रचार-प्रसार करते। श्री दास जी ने महर्षि के वेदभाष्य अर्थात् वेदार्थ के सम्बन्ध में जो अण्ड-बण्ड लिखा है, सर्वप्रथम उसकी यहाँ तुलनात्मक समीक्षा की जाती है।

### महर्षि का मन्त्रार्थ

**मन्त्र भूमिका**-किस-किस प्रयोजन के लिये यज्ञ का अनुष्ठान करना योग्य है, इस विषय का उपदेश अगले मंत्र में किया जाता है-

**अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे त्वाऽतिथेरातिथ्यमसि विष्णवे त्वा, श्येनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वाऽग्नये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा॥** यजु० ५/१॥

**पदार्थ**-हे मनुष्यो! तुम लोग-जैसे मैं जो (अग्नेः) बिजुली प्रसिद्ध रूप में (तनूः) शरीर के समान (असि) है (त्वा) उसको (विष्णवे) यज्ञ की सिद्धि के लिये स्वीकार करता हूँ। जो (सोमस्य) जगत् में उत्पन्न हुये पदार्थसमूह की (तनूः) विस्तारक सामग्री है (असि) है (त्वा) उसको (विष्णवे) वायु की शुद्धि के लिये उपयोग करता हूँ। और जो (अतिथेः) संन्यासी आदि का (आतिथ्यम्) अतिथिपन वा उनका सेवारूप कर्म (असि) है (त्वा) उसको (विष्णवे) विज्ञान-यज्ञ की प्राप्ति के लिये ग्रहण करता हूँ। जो (श्येनाय) श्येन पक्षी के समान शीघ्र जानने के लिये (असि) है (त्वा) उस द्रव्य को अग्नि आदि में छोड़ता हूँ। जो (विष्णवे) सब विद्या-कर्मयुक्त (सोमभृते) सोम को धारण करने वाले यजमान के लिये सुख (असि) है (त्वा) उसको ग्रहण करता हूँ। जो (अग्नये) अग्नि बढ़ाने के लिये काष्ठ आदि हैं (त्वा) उसको स्वीकार करता हूँ। जो (रायस्पोषदे) धन की पुष्टि देने वा (विष्णवे) उत्तम कर्म, विद्या की प्राप्ति के लिये समर्थ पदार्थ हैं (त्वा) उसको ग्रहण करता हूँ, वैसे इन सबका सेवन तुम भी किया करो।

**भावार्थ**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलंकार है। मनुष्यों को उचित है कि पूर्वोक्त फल की प्राप्ति के लिये तीन प्रकार के यज्ञ का अनुष्ठान नित्य करें॥

(महर्षिकृत यजुर्वेदभाष्य का भाषार्थ)

### श्री रामपालदास जी का मन्त्रार्थ
### (परमात्मा का शरीर है)

पवित्र यजुर्वेद अध्याय ५ मन्त्र १ में लिखा है कि '**अग्नेस्तनूरसि, विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि**' जिसका अर्थ बनता है कि (अग्नेः) परमेश्वर (तनूः) सशरीर (असि) है (त्वा) उस (विष्णवे) सर्वपालनकर्त्ता, सर्वशक्तिमान् (सोमस्य) अविनाशी प्रभु का अर्थात् सत्पुरुष का (तनूर्) शरीर (असि) है।

इस मंत्र में दो बार गवाही दे रखी है कि परमात्मा का शरीर है। पूर्ण परमात्मा का आम व्यक्ति जैसा शरीर नहीं है। आकार मानव सदृश ही है।

**१. समीक्षा**-इस मंत्र का देवता=प्रतिपाद्य विषय विष्णु है। शतपथब्राह्मण के अनुसार '**यज्ञो वै विष्णुः**' यहां प्रकरणवश 'विष्णु' का अर्थ यज्ञादि है, ईश्वर नहीं। और दास जी ने विष्णु का जो ईश्वरपरक अर्थ सर्वपालनकर्त्ता और सर्वशक्तिमान् किया है वह भी ठीक नहीं, क्योंकि '**विष्णु**' शब्द '**विष्लृ व्याप्तौ**' (जु०प०) धातु से '**विषेः किच्च**' (उणा० ३।३९) से 'णु' प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है:-**वेवेष्टि=व्याप्रोति चराचरं जगत् स विष्णुः-जगदीश्वरः।** अर्थात् चर-अचर जगत् में व्यापक होने से जगदीश्वर का नाम '**विष्णु**' है, सर्वपालनकर्त्ता और सर्वशक्तिमान् होने से नहीं।

२. श्री दास जी ने 'सोम' शब्द का जो अविनाशी प्रभु अर्थात् सत्पुरुष अर्थ किया है वह तो एक गपोड़ा ही है। '**सु प्रसव-ऐश्वर्ययोः**' (भ्वा०प०) धातु से '**अर्त्तिस्तुसु०**' (उणा० १/१४०) से 'मन्' प्रत्यय करने पर सोम शब्द सिद्ध होता है। अत: जगत् की उत्पत्ति करने वाला और परम-ऐश्वर्यवान् होने से ईश्वर का नाम 'सोम' है। क्या कोई कबीर तथा दास जी जैसे सत्पुरुष पृथिवी आदि जगत् की उत्पत्ति कर सकते हैं और परम-ऐश्वर्यवान् हो सकते हैं?

श्री दास जी से निवेदन है कि वे ईश्वरवाची पदों के अर्थ करना '**सत्यार्थप्रकाश**' के प्रथम समुल्लास से सीख सकते हैं।

३. इस मंत्र में यज्ञ का प्रकरण है अत: विष्णु आदि पदों का ईश्वरपरक अर्थ करना अनुचित है। महर्षि ने प्रकरणानुसार विष्णु का अर्थ यज्ञानुष्ठान और सोम का अर्थ जगत् में उत्पन्न पदार्थसमूह किया है।

४. यदि दास जी इस मंत्र का अर्थ ईश्वरपरक मानते हैं तो संपूर्ण मंत्र का अर्थ सप्रमाण ईश्वरपरक लिखने का कष्ट करें। मंत्र के कुछ पदों को लेकर ईश्वर सशरीर है, इस वेदविरुद्ध मत की स्थापना करना ठीक नहीं। क्या वे कबीर और स्वयं को ईश्वर मानने तथा मनवाने की ही इच्छा रखते हैं?

### श्री कबीर जी के विषय में महर्षि का मत

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश समु० (११) में लिखते हैं :-

**प्रश्न**-कबीरपंथी तो अच्छे हैं? **उत्तर**-नहीं।

**प्रश्न**-क्यों अच्छे नहीं। पाषाणादि मूर्त्तिपूजा का खण्डन करते हैं। कबीर साहेब फूलों से उत्पन्न हुये और अंत में भी फूल हो गये। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का जन्म जब नहीं था, तब भी कबीर साहेब थे। बड़े सिद्ध ऐसे कि जिस बात को वेद पुराण भी नहीं जान सकता, उसको कबीर जानते हैं। सच्चा रास्ता है सो कबीर ने ही दिखाया है। इनका मंत्र '**सत्यनाम कबीर**' आदि है।

**उत्तर**-पाषाणादि को छोड़ पलंग, गद्दी, तकिये, खड़ाऊं, ज्योति अर्थात् दीप आदि का पूजना पाषाणमूर्त्ति से न्यून नहीं।

क्या कबीर भुनगा (कीड़ा) था, वा कलियां थीं, जो फूलों से उत्पन्न हुआ और अंत में फूल हो गया।

यहां जो यह बात सुनी जाती है वही सच्ची होगी कि कोई जुलाहा काशी में रहता था। उसके बालक नहीं थे। एक समय थोड़ी-सी रात्रि थी। वह एक गली में चला जा रहा था तो देखा सड़क किनारे एक टोकरी में फूलों के बीच में उसी रात में जन्मा बालक था। वह उसको उठा ले गया। अपनी स्त्री को दिया, उसने उसका पालन किया। जब वह बड़ा हुआ तब जुलाहे का काम करता था। किसी पण्डित के पास संस्कृत पढ़ने के लिये गया, उसने उसका अपमान किया। कहा कि हम जुलाहे को नहीं पढ़ाते।

इसी प्रकार कई पण्डितों के पास फिरा, परन्तु किसी ने नहीं पढ़ाया। तब ऊट-पटांग भाषा बनाकर जुलाहे आदि लोगों को समझाने लगा। तम्बूरे लेकर गाता था। भजन बनाता था। विशेष पण्डित, शास्त्र, वेदों की निंदा करता था। कुछ मूर्ख लोग उसके जाल में फंस गये जब वह मर गया तब लोगों ने उसे सिद्ध बना लिया।

जो-जो उसने जीते-जी बनाया था, उसको उसके चेले पढ़ते रहे। कान को मूंदकर जो शब्द सुना जाता है उसको '**अनहत**' शब्द सिद्धान्त ठहराया। मन की वृत्ति को '**सुरति**' कहते हैं। उसको उस शब्द सुनने में लगाना, उसी को संत और परमेश्वर का ध्यान बतलाते हैं। वहां काल नहीं पहुंचता। बर्छी के समान तिलक और चन्दनादि लकड़े की कंठी बांधते हैं।

भला विचार कर देखो कि इसमें आत्मा की उन्नति और ज्ञान क्या बढ़ सकता है? यह सब लड़कों के खेल के समान लीला है। (सत्यार्थप्रकाश एकादश समुल्लास)

### महर्षि का मन्त्रार्थ

**मन्त्र भूमिका**-उक्त यज्ञ किस प्रकार का होता है, इस विषय का उपदेश अगले मंत्र में किया है-

**मंत्र-अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं देववीतये त्वा गृह्णामि बृहद् ग्रावासि वानस्पत्यः सऽइदं देवेभ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीष्व। हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि॥** (यजु० १ मं० १५)

**पदार्थ**-हे मनुष्यो! जैसे मैं जो हवि (अग्नेः) विद्युत अथवा प्रसिद्ध अग्नि के (तनूः) शरीर के समान (असि) है (त्वा) उस हवि को (विष्णवे) यज्ञानुष्ठान के लिये स्वीकार करता हूँ। और जो (सोमस्य) जगत् में उत्पन्न पदार्थसमूह वा रस की (तनूः) विस्तारक सामग्री (असि) है (त्वा) उस सामग्री को (विष्णवे) व्याप्तशील वायु की शुद्धि के लिये मैं सब जनों के सहित जिस हवि, अर्थात् पदार्थ के संस्कार के लिए (बृहद्ग्रावासि) बड़े-बड़े पत्थर (असि) हैं और (वानस्पत्यः) काष्ठ के मूसल आदि पदार्थ (देवेभ्यः) विद्वान् वा दिव्यगुणों के लिए उस यज्ञ को (देववीतये) श्रेष्ठ गुणों के प्रकाश और श्रेष्ठ विद्वान् वा विविध भोगों की प्राप्ति के लिये (प्रतिगृह्णामि) ग्रहण करता हूं। हे विद्वान् मनुष्य! तुम (देवेभ्यः) विद्वानों के लिये (सुशमि) अच्छे प्रकार दुःख शान्त करने वाले (हविः)यज्ञ करने योग्य पदार्थ को (शमीष्व, शमीष्व) अत्यन्त शुद्ध करो। जो मनुष्य वेद आदि शास्त्रों को प्रीतिपूर्वक पढ़ते वा पढ़ाते हैं, उन्हीं को यह (हविष्कृत्) हविः अर्थात् होम में चढ़ाने योग्य पदार्थों का विधान करने वाली जो कि यज्ञ का विस्तार करने के लिए वेद के पढ़ने से ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों की शुद्ध सुशिक्षित और प्रसिद्ध वाणी है, सो प्राप्त होती है।

**भावार्थ**- जब मनुष्य वेद आदि शास्त्रों के द्वारा यज्ञ क्रिया और उसका फल जान के शुद्धि और उत्तमता के साथ यज्ञ को करते हैं, तब वह सुगन्धित आदि पदार्थों को उत्तम उपयोग करके दिव्य सुखों को उत्पन्न करता है। जो मनुष्य सब प्राणियों के सुख के अर्थ पूर्वोक्त तीन प्रकार के यज्ञ को नित्य करता है, उसको सब मनुष्य हविष्कृत्, अर्थात् यह यज्ञ का विस्तार करने वाला उत्तम मनुष्य है, ऐसा बार-बार कहकर सत्कार करें॥

### श्री रामपालदास का मन्त्रार्थ
### (परमेश्वर का शरीर है)

**अनुवाद**-पवित्र यजुर्वेद को बोलने वाला प्रभु (ब्रह्म) कह रहा है कि (अग्नेः) परमेश्वर (तनूः) सशरीर है और (वाचः) सत्य ज्ञान-मार्ग के वचनों को (विसर्जनं) त्याग देने से (देव) परमेश्वर द्वारा मिलने वाले (वितये) लाभ के स्थान पर दुष्कर्मों का (ग्रावा) बादलरूपी (बृहत्) आवरण छाया हुआ (असि) है (त्वा) उस शास्त्र-अनुकूल साधना को फिर (गृह्णामि) ग्रहण करता हूँ तथा तुम भी भक्ति-कर्म उसी परमेश्वर के बताए मार्ग शास्त्रानुकूल करो। (देवेभ्यः) परमेश्वर के निमित्त (शमीष्व) शान्ति प्राप्ति के लिये (हविः) यज्ञ करने योग्य पदार्थों अर्थात् धार्मिक कार्य से (सः) उस परमेश्वर की भक्ति (वानस्पत्यः) जैसे वृक्ष बीज से बनता है, फिर बड़ा वृक्ष बन जाता है, ऐसे सत्य नामरूपी सत्य भक्ति बीज से फलीभूत होकर मोक्ष प्राप्त होता है। (इदम्) इस शास्त्र अनुकूल साधना को (सुशमि) अच्छी तरह

शान्ति के साथ करना चाहिये। (यहि) इसलिये जो (हविष्कृत) यज्ञ आदि को शास्त्रानुसार करो जिससे (शमिष्व) शान्ति प्राप्त हो सके (यहि) इसलिये (हविष्कृत्) यज्ञ करने योग्य पदार्थ अर्थात् शास्त्र अनुकूल शुभ कर्म करो। (दैनिक भास्कर)।

**समीक्षा**-श्री दास जी ने मंत्र के अनुवाद में वैदिक-पदों के मनचाहे अर्थ किये हैं। जैसे-

१. **बृहत्**=आवरण छाया हुआ है। पूरा पद-बृहद्ग्रावा है, बृहत् नहीं। 'ग्रावा' शब्द का कोई अर्थ नहीं किया। उस बृहद्ग्रावा का सत्यार्थ है-बड़ा पत्थर।

२. **त्वा**=शास्त्रानुकूल साधना। **त्वा** का सत्यार्थ है-तुझको/व्यत्यय से उसको।

३. **वानस्पत्यः**=जैसे वृक्ष बीज से बनता है, फिर बड़ा वृक्ष बन जाता है, वैसे सत्यनाम रूपी सत्यभक्ति बीज से फलीभूत होकर मोक्ष प्राप्त होता है। '**वानस्पत्यः**' पद का सत्यार्थ है वनस्पति (वृक्ष) से बनने वाले पदार्थ जैसे-मूसल आदि।

४. **शमीष्व**=शान्ति प्राप्ति के लिये। यह क्रियापद है अतः इसका अर्थ '**के लिये**' नहीं हो सकता। के लिये अर्थ सुबन्त में होता है। जैसे **शमाय**=शान्ति के लिये। इसका सत्यार्थ है-शान्त करो एवं शुद्ध करो।

५. **हविः**=धार्मिक कार्य। इसका सत्यार्थ है यज्ञ करने योग्य पदार्थ, सामग्री आदि।

६. **इदम्**=इस शास्त्रानुकूल साधना को। इसका सत्यार्थ है-यह (हवि)।

७. **यहि**=इसलिये जो। यह 'यहि' पद नहीं अपितु 'एहि' पद है। इसका अर्थ 'इसलिये' नहीं। इसका सत्यार्थ 'प्राप्त होती है' है।

८. **हविष्कृत्**=यज्ञ आदि को शास्त्र अनुसार करो। यह कोई क्रियापद नहीं अपितु कृदन्तरूप सुबन्त पद है। अतः इसका क्रिया-पद विषयक अर्थ 'करो' नहीं हो सकता। इसका सत्यार्थ है-**हविः**=होम में डालने योग्य पदार्थों का विधान करने वाली, सुशिक्षित वाणी।

१. इस ऊपरलिखित लेख से स्पष्ट है कि श्री दास जी को जो संस्कृतभाषा में सुबन्त (रामः आदि) तथा तिङन्त (पठति) आदि पदों का भी विवेक नहीं है। सुबन्त पद का क्रियापरक अर्थ और तिङन्त पद का सुबन्तपरक अर्थ कर बैठते हैं।

२. जब पदों के ही सत्यार्थ नहीं हैं तो सम्पूर्ण मंत्र का सत्यार्थ कैसे हो सकता है?

३. श्री दास जी ने अपने मन्त्रार्थ में यह वेद सिद्धान्त स्वीकार किया है कि शास्त्रानुकूल साधना करनी चाहिये।

४. सत्य नाम (ओ३म्) को स्मरण करने से मोक्ष प्राप्त होता है।

## महर्षि का मन्त्रार्थ
## (परमेश्वर का स्वरूप)

फिर परमेश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्रों में कहा है-

**स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥**

यजु०अ०४०/ मं० ८॥

**पदार्थ**-हे मनुष्यो! जो ब्रह्म (शुक्रम्)=शीघ्रकारी सर्वशक्तिमान् (अकायम्) स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से रहित (अव्रणम्) छिद्ररहित और नहीं छेद करने योग्य (अस्नाविरम्) नाड़ी आदि के साथ सम्बन्ध रूप बंधन से रहित (शुद्धम्) अविद्यादि दोषों से रहित होने से सदा पवित्र और (अपापविद्धम्) जो पापयुक्त पापकारी और पाप में प्रीति करने वाला कभी नहीं होता (परि, अगात्) सब ओर से व्याप्त है। जो (कविः) सर्वत्र (मनीषी) सब जीवों के मनों की वृत्तियों को जानने वाला (परिभूः) दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला और (स्वयम्भूः) अनादि स्वरूप जिसकी संयोग से उत्पत्ति वियोग से विनाश माता-पिता गर्भवास जन्म वृद्धि और मरण नहीं होते वह परमात्मा (शाश्वतीभ्यः) सनातन अनादिस्वरूप अपने-अपने स्वरूप से उत्पत्ति और विनाश रहित (समाभ्यः) प्रजाओं के लिए (याथातथ्यतः) यथार्थभाव से अर्थात् वेद द्वारा सब पदार्थों को (व्यदधात्) विशेषकर बनाता है, यही परमेश्वर तुम लोगों को उपासना करने योग्य है।

**भावार्थ**-हे मनुष्यो! जो अनन्त शक्तियुक्त अजन्मा निरन्तर सदा मुक्त न्यायकारी निर्मल सर्वज्ञ सबका साक्षी नियन्ता अनादिस्वरूप ब्रह्म कल्प के आरम्भ में जीवों को अपने वेद से शब्द, अर्थ और उनके सम्बन्ध को जानने वाली विद्या का उपदेश न करे तो कोई विद्वान् न होवे और न धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के फलों के भोगने को समर्थ हो इसलिये इसी ब्रह्म की सदैव उपासना करो।

## श्री दास जी का अर्थ
## (परमात्मा का शरीर है)

पूर्ण परमात्मा का आम व्यक्ति जैसा शरीर नहीं है। आकार मानव सदृश ही है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय ४० मं० ८ में बतलाया है कि परमेश्वर का शरीर (अस्नाविरम्) बिना नाड़ियों का है (अकायम्) पांच तत्त्वों से बनी काया जैसा नहीं है जैसे एक मिट्टी की मूर्ति है, दूसरी सोने की, अंग एक जैसे ही होते हैं, ऐसा अन्तर है, उस परमेश्वर का नाम 'कविर्देव' है। (दैनिक भास्कर, नाचा न जाये आंगन टेढ़ा २७/१०/०४)।

## समीक्षा

### कौआ चला हंस की चाल :-

१. दास जी कबीर को परमेश्वर मानते हैं कि वह तो वेदों से भी पहले था। क्या श्री कबीर जी का शरीर अस्नाविरम्-बिना नाड़ियों का था? यदि नाड़ियों से बना हुआ था तो उसे परमेश्वर कैसे माना जा सकता है?

२. श्री रामपालदास ने 'अकायम्' पद की व्याख्या में कहा है कि परमात्मा का शरीर पांच तत्त्वों से बनी काया जैसा नहीं है। किन्तु श्री दास जी ने यह नहीं बतलाया कि वह छठा तत्त्व कौन-सा है, जिससे परमात्मा का शरीर बना हुआ है। श्री दास जी ने यहां जो मिट्टी की मूर्ति तथा सोने की मूर्ति अथवा चीनी का प्याला तथा सोने के प्याले का उदाहरण दिया है, वह अयुक्त है-ठीक नहीं है। क्योंकि मिट्टी और सोने से बनी मूर्त्तियाँ अथवा प्याले सब पाँच तत्त्वों से ही बने हुये हैं। उदाहरण ऐसा देना चाहिये था जो कि पांच तत्त्वों से न बना हो।

वेद में 'अस्नाविरम्'-नाड़ी आदि के बंधन से रहित बतलाकर 'अकायम्' काया (शरीर) से रहित कहने का तात्पर्य यही है कि परमात्मा की कोई मिट्टी अथवा सोने आदि की मूर्ति (काया) नहीं हो सकती।

३. श्री दास जी! परमात्मा को साकार मानने पर अनेक प्रश्न खड़े होते हैं। जिनका उत्तर आपको अपने भक्तों को तथा जिज्ञासु लोगों को देना चाहिये-जैसे साकार घट का निर्माण कुम्भकार निमित्त कारण है, मिट्टी उपादान कारण है और दण्ड चक्रादि साधारण कारण हैं, वैसे उस साकार परमात्मा का निमित्त कारण कौन है, उपादान कारण क्या है-किस मैटर से बना है और उसके साधारण कारण क्या हैं?

यदि साकार परमात्मा के शरीर का कोई निर्माता आप बतलायेंगे तब भी यह प्रश्नपरम्परा समाप्त नहीं होगी। पुनः प्रश्न उत्पन्न होगा कि परमात्मा के शरीर के निर्माता का निर्माता कौन है और उसका निर्माता कौन है। निराकार परमात्मा के पक्ष में यह दोष उत्पन्न नहीं होता कि उसका कर्त्ता कौन है। वह तो समस्त जगत् का कर्त्ता स्वयं है। उसका कर्त्ता कोई नहीं। वह तो स्वयंभू है-उसकी सत्ता स्वयम् है।

४. जितने साकार पदार्थ हैं वे सब जड़ होते हैं। यह मेरा शरीर भी जड़ प्राकृतिक पांच तत्त्वों से बना हुआ जड़ है। आत्मा के संयोग से इसमें चैतन्य है। यदि वह जड़ है तो वह अपने लिये कुछ नहीं हो सकता। घट, पट आदि जड़ पदार्थ स्वयं अपने लिए कुछ नहीं अपितु जीवात्मा के उपभोग के लिये होते हैं। कृपया बतलाने का कष्ट करें कि परमात्मा का शरीर किसके उपभोग के लिये है? उसमें चैतन्य किस शक्तिविशेष का चमत्कार है?

५. साकार परमात्मा सर्वव्यापक नहीं हो सकता। समस्त साकार घट, पट आदि पदार्थ विभु नहीं, सर्वव्यापक नहीं अपितु परिच्छिन्न हैं, एकदेशी हैं। क्या तत्त्वदर्शी जी बतलायेंगे कि साकार परमात्मा किस स्थान विशेष में रहता है?

६. जो सर्वव्यापक नहीं वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता। वह अल्पज्ञ होगा। क्या आपका साकार परमात्मा अल्पज्ञ है?

७. साकार परमात्मा में सच्चिदानन्द, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि-कर्त्ता आदि एक भी ईश्वरीय गुण सम्भव नहीं हो सकता।

८. श्री रामपालदास का परमात्मा को सशरीर मानना वेद के विरुद्ध है। जैसा यजुर्वेद (३२/३) में लिखा है कि '**न तस्य प्रतिमाऽअस्ति, यस्य नाम महद्यशः**' अर्थात् उस परमात्मा की कोई प्रतिमा=परिमाण, उसके तुल्य, अवधि का साधन, प्रतिकृति, मूर्त्ति वा आकृति नहीं है। (क्रमशः)

## दशम सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास उदयपुर द्वारा आयोजित 'दशम सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता' का परिणाम घोषित कर दिया गया। सत्यार्थप्रकाश के दशम समुल्लास पर आधारित इस प्रतियोगिता का विषय था '**शुद्ध आहार पवित्र विचार, श्रेष्ठ आचार एवं धर्मयुक्त व्यवहार मानवोन्नति हेतु अपरिहार्य है।**'

देश के विभिन्न भागों से कुल ५७ निबन्ध प्राप्त हुए जिनका मूल्यांकन आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा किया गया। इसमें कोटा के वरुण मुनि जी वानप्रस्थ ने प्रथम, उदयपुर के श्री मुनीन्द्रसिंह जी भाटी ने द्वितीय तथा जयपुर की श्रीमती सरोज आर्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन विद्वान् लेखक/लेखिका को क्रमशः २१००, १५०० एवं ११०० रु० का नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया जावेगा।

इन पुरस्कारों के अतिरिक्त १००-०० रु० के पांच सान्त्वना पुरस्कार भी श्री मोहनचन्द जी अजमेर, श्री आचार्य भगवानदेव चैतन्य सुन्दरनगर, श्री मूलाराम जी आर्य उदयपुर, श्री राधेश्याम जी जांगिड़ भीलवाड़ा तथा श्री हीरालाल आर्य शाहपुरा को प्रदान किये जायेंगे।

महिला वर्ग में दो विशेष सान्त्वना पुरस्कार श्रीमती कुसुम अग्रवाल, यमुनानगर एवं श्रीमती एन.संध्या, करीम नगर को दिये जावेंगे। ये सभी पुरस्कार उदयपुर नवलखा महल में २६ से २८ फरवरी २००५ में आयोज्य दशम सत्यार्थप्रकाश महोत्सव के अवसर पर दिये जावेंगे।

८-२-२००५ -**अशोक आर्य**, कार्यकारी अध्यक्ष

# कालांवाली व डबवाली में सत्यार्थप्रकाश की नियमित कक्षाएं आरम्भ

**मण्डी डबवाली**-आज संसार में बढ़ रही बेचैनी, भ्रष्टाचार, कष्टों व भयंकर रोगों का मूल कारण है धार्मिक व नैतिक शिक्षा व ऐसे क्रिया-कलापों से लोगों का दूर होना। जब तक समाज में धर्म व नैतिकता के मूल्यों को नहीं समझा जाता, तब तक सामाजिक व राष्ट्रीय चरित्र का उत्थान सम्भव नहीं। यह शब्द राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष डा० अशोक आर्य ने महर्षि दयानन्द कन्या महाविद्यालय, कालांवाली (हरयाणा) की छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहे।

उन्होंने बताया कि देश का भविष्य युवक व युवतियां हैं। इनका नैतिक उत्थान करने के लिए राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा परिषद् का गठन किया गया है। परिषद् के संरक्षक श्री प्रभाकरदेव आर्य हिण्डौन सिटी, राजस्थान हैं जबकि अध्यक्ष व रजिस्ट्रार डा० अशोक आर्य मण्डी डबवाली तथा मंत्री रामसुफल शास्त्री, हांसी हैं। अभी धर्म-प्रवेश परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को सत्यार्थप्रकाश, आर्यसमाज के मन्तव्यों व उपलब्धियों के माध्यम से नैतिक ज्ञान दिया जा रहा है। महर्षि दयानन्द कन्या महाविद्यालय में डा० अशोक आर्य द्वारा सत्यार्थप्रकाश आदि की नियमित कक्षाएं ली जा रही हैं। इसमें सभी सफल परीक्षार्थियों को प्रमाणपत्र तथा प्रत्येक कक्षा व नगर के तीन सर्वोत्तम परीक्षार्थियों को पुरस्कार व छात्रवृत्तियां दी जावेंगी।

इस परीक्षा के भविष्य में जानकारी देते हुए डा० अशोक आर्य ने बताया कि इसका आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया जायेगा। प्रत्येक राज्य के प्रत्येक जिला में परीक्षा आयोजकों की नियुक्ति की जावेगी। अपने-अपने क्षेत्र में परीक्षार्थियों को पुस्तकें निःशुल्क दी जायेंगी। परीक्षा शुल्क लगभग तीस रुपये होगा। सफल परीक्षार्थियों को प्रमाणपत्र व सर्वोत्तम परीक्षार्थियों को पुरस्कार व छात्रवृत्तियां दी जावेंगी।

-**डा० अशोक आर्य,** आर्य कुटीर, ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरयाणा)

# मेरे होठ बन्द हैं बस बन्द रहने दो

चेहरे पे हंसी दिल में द्वन्द्व रहने दो।
मेरे होठ बन्द हैं बस बन्द रहने दो॥
खामोशी चिल्ला उठे ये नहीं अच्छा।
हर चिल्लाने वाला भी नहीं होता सच्चा॥
ना गिराओ हौसले मेरे इन्हें बुलन्द रहने दो।
मेरे होठ बन्द हैं बस बन्द रहने दो॥
हमारे गाँधी को परखो तुम ऊधम को न आजमाओ।
पटाकों से डरने वालो एटमबम को न आजमाओ॥
ये दबे तूफान हैं पगले इन्हें दफन रहने दो।
मेरे होठ बन्द हैं बस बन्द रहने दो॥
मेरी शराफत को कभी मेरी कमजोरी में ना तोलो तुम।
प्रलय आ जायेगी "पाखण्डी दास" जरा धीरे से बोलो तुम॥
हमारे खून में भी गरमी है, अपनी तपन रहने दो।
मेरे होठ बन्द हैं बस बन्द रहने दो॥
मेरे होठ के पीछे तुम्हारे राज हैं गहरे।
जिसके सीने में ना गुर्दा हो वही लगाता सदा पहरे॥
"रणवीर" आर्यों के रक्षक हैं दयानन्द, दयानन्द रहने दो।
मेरे होठ बन्द हैं बस बन्द रहने दो॥

-**ब्र० रणवीर शास्त्री,** II वर्ष, गुरुकुल भैयापुर लाढ़ोत (रोहतक)

# समुद्री तूफान राहत हेतु अपील

प्रकृति ने एक बार फिर २६ दिसम्बर २००४ को भारत के दक्षिणी प्रान्तों तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, केरल, अंडमान निकोबार और पांडिचेरी में कहर ढाया है। हजारों लोगों की जानें सुनामी लहरों ने ले ली हैं और हजारों घर नष्ट हो गए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं प्रान्तीय आर्यवीर दल हरयाणा ने प्राकृतिक आपदा से पीड़ित मानवता की सहायता के लिए शीघ्र ही एक और जत्था चेन्नई में भेजने का निर्णय लिया है। ध्यान रहे कि एक जत्था आर्यवीर दल का २७ दिसम्बर २००४ को पहले ही चेन्नई के लिए भेजा जा चुका है।

आप सभी से निवेदन है कि आप अपनी ओर से, अपने आर्यसमाज/संस्था की ओर से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक कार्यालय अथवा स्थानीय आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं को देवें या प्रान्तीय कार्यालय आर्यवीर दल हरयाणा, आर्यसमाज शिवाजी कालोनी, रोहतक के पते पर भेजें।

कृपया सहायताराशि नकद/ड्राफ्ट द्वारा उपरोक्त पते पर भेजने का कष्ट करें। कपड़े/अन्न आदि वहीं से खरीदकर बांटने की योजना है क्योंकि यहां से सामान भेजना महंगा पड़ेगा।

निवेदक :-

**आचार्य बलदेव** प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्दमठ, रोहतक
हरयाणा

**वेदप्रकाश आर्य** महामंत्री,
सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा
कार्यालय : आर्यसमाज शिवाजी
कालोनी, रोहतक

# आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| | | |
|---|---|---|
| ३. | समाजसुधार सम्मेलन आर्यसमाज मिर्जापुर जिला हिसार | २३-२४ फरवरी ०५ |
| ४. | आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला फरीदाबाद | २५ से २७ फरवरी ०५ |
| ५. | आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर | २५ से २७ मार्च ०५ |
| ६. | गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत | १९ से २० मार्च ०५ |
| ७. | आर्यसमाज ठोल जिला कुरुक्षेत्र | ११ से १३ मार्च ०५ |
| ८. | गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव | १२ से १३ मार्च ०५ |
| ९. | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| १०. | श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद | १८ से २० मार्च ०५ |
| ११. | आर्यसमाज रेवाड़ी | ९ से १० अप्रैल ०५ |
| १२. | आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल | ११ से १३ मार्च ०५ |

—**अभयसिंह आर्य,** सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

**बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।**

# गीता ? गीता ? गीता ?

**प्रोफेसर डा० प्रतापसिंह कुण्डु, शाहपुर ( पानीपत )**

अपने लेख की प्रथम पंक्ति में ही मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस लेख से किसी आर्य विद्वान् की विद्वत्ता पर संदेह करने का मेरा मन्तव्य कदाचित् नहीं है। ''गीता'' के पक्ष-विपक्ष में अब तक बहुत कुछ लिखा, कहा व सुना जा चुका है। अब समय आ गया है कि सभी वैदिक विद्वान् इस पर सर्वसम्मत निर्णय लेकर, अपने गले में इस मृत-सर्प को सदा के लिये उतार फेंकें तथा आर्यसमाज के तृतीय नियम का पालन कर आर्यों में फैले भ्रम को दूर कर, नित्य होने वाले उपहास से अपने को बचा समाज, देश व विश्व का कल्याण करें।

यह तो सर्वविदित कटु सत्य है कि गीता में काफी-कुछ अवैज्ञानिक व वेदविरुद्ध है जिसके विषय में आर्य विद्वानों ने खूब सफाई देने का असफल प्रयास किया है। एतदर्थ लगभग सभी विद्वान् जब तक अपने लेख, पुस्तक व प्रवचन में गीता का उद्धरण न दे लें, अपने को हेय व छला गया-सा मानते हैं, अपनी विद्वत्ता कम आंकते हैं। डा० भवानीलाल भारतीय जी जैसे ऋषिभक्त व सुविख्यात विद्वान् भी ''श्रीकृष्ण कथा'' नामक अपनी लघु पुस्तिका में ४२ पेज ''गीता'' के अध्यायों से भरने का लोभ संवरण नहीं कर सके। सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय को इसे श्रीकृष्ण की पुस्तक मानने व वैदिक सिद्ध करने के लिये **''गीता रहस्य''** नामक पुस्तक लिखनी पड़ी। विस्तार भय से सब विद्वानों के नाम नहीं दिये जा रहे।

रोहतक में अपने प्रवचन में श्री विवेकभूषण जी (रोजड़ गुजरात) गीता को वेदविरुद्ध बताते हैं तो इन्हीं के सहयोगी श्रीयुत ज्ञानेश्वरार्य जी (रोजड़, गुजरात) सोनीपत में अपने प्रवचन में देश का संविधान वेद व गीता-सम्मत बनाने की बात कहते हैं। पाठकवृन्द! यह विरोधाभास क्यों? डा० भवानीलाल भारतीय जी ने गीता के जगत्प्रसिद्ध श्लोक **''यदा यदा हि धर्मस्य....''** का अर्थ करने में लीपापोती की है, जबकि दुनिया तो यह जानती व मानती है कि इसका सीधा अर्थ यह है कि ''जब-जब धर्म की हानि होती है भगवान् के रूप में श्रीकृष्ण अवतार लेते हैं।'' इसी पुस्तक में गीता के दसवें अध्याय के अन्त में भारतीय जी स्वयं टिप्पणी कर रहे हैं कि-''४२ श्लोकों के इस अध्याय में '**पौराणिकता**' की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।'' बताइये वावजूद इसके हम क्यों गीता को अपने गले का फांस बनाये हुए हैं? २ जनवरी २००५ को डीघल (रोहतक) में 'पाखण्ड खण्डन सम्मेलन' में वैदिक विद्वान् डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी ने ३२२ श्लोकों वाली गीता का उल्लेख किया तथा स्वयंभू विद्वान् रामपालदास को लक्ष्य करके कहा कि- ''हमने इतने श्लोकों की गीता तो मानी। मानो इतने श्लोकों की गीता मानना आर्यसमाज की मजबूरी है अन्यथा 'हिन्दू' नाराज हो जायेंगे।''

*ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में पठनीय ग्रन्थों का उल्लेख किया है, परन्तु वहाँ गीता का नाम नहीं। सातवें समुल्लास में **''यदा यदा हि धर्मस्य....''** के बारे में ऋषि ने स्पष्ट लिखा है कि- ''यह बात वेदविरुद्ध होने से प्रमाण नहीं।'' इसी समुल्लास में ऋषि लिखते हैं-''जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना कि हमारा मत वेद अर्थात् जो कुछ वेदों में कहा है, हम उसको मानते हैं। दस बीस नहीं हजारों-लाखों हिन्दु ऐसे हैं जो वेदों की अपेक्षा गीता को ब्रह्मवाक्य मानते हैं, इसके ही श्लोकों का पाठ या जाप करते हैं, वेदमंत्रों का नहीं।'' क्या पौराणिक गीता का गुणगान करके आर्य भी इनके मन्तव्य की पुष्टि नहीं करते? आज जितना अत्याचार, अनाचार हो रहा है, उसके अनुसार तो कृष्ण को कब का आ जाना चाहिये था अथवा क्या हम सभी मिलकर धर्म की और भी हानि करने में जी-जान से जुट जायें ताकि श्रीकृष्ण जी अवतार लेकर धर्म को पुन:स्थापित कर सकें। एक बात समझ से बाहर है कि महाभारत में युद्धस्थली पर होने वाले १८ दिन के युद्ध में ७०० श्लोकों वाली १८ अध्यायों की गीता का उपदेश किस समय दिया गया? वहाँ युद्ध हुआ या गीता-प्रवचन? इतनी पुस्तक को पढने, वाचने में शायद १८ दिन लग जायें, तो फिर युद्ध कब हुआ होगा? बहुत स्पष्ट व सीधी बात है कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को आत्मा के अजर, अमर होने की बात कही और बाद में किसी विद्वान् ने १८ अध्यायों वाली गीता घड़कर महाभारत में मिला दी। धातव्य है कि हमारे लगभग सभी ग्रन्थों में समय-समय पर जिस किसी ने प्रक्षिप्त अंशों को मिलाया है, चाहे वह रामायण हो या महाभारत, चरक हो या सुश्रुत, मनुस्मृति हो या अन्य। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? सत्यार्थप्रकाश के ग्याहरवें समुल्लास में वेदव्यास कृत ४४०० श्लोकों वाले मूलमहाभारत का उल्लेख आया है। व्यास के शिष्यों ने ५६०० श्लोक और मिला दस हजार श्लोकों का भारत (महाभारत) बनाया, फिर बीस हजार, फिर पच्चीस हजार, फिर तीस हजार और वर्तमान में तो कहीं बड़ा महाभारत मिल जायेगा, शायद गीताप्रेस, गोरखपुर वालों का। यह दुर्दशा की गयी इस ग्रन्थ की। गीता में एक भी ऐसी बात, तथ्य या रहस्य नहीं जो हमारे वेदों, दर्शनों, उपनिषदों, ब्राह्मणग्रंथों, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश से परे हो। फिर भी, इस गीता की अनिवार्यता क्यों? हम क्यों नहीं जनता का ध्यान उक्त शास्त्रों की ओर आकृष्ट करते?

देवदयानन्द में मेरी श्रद्धा किसी से कम नहीं। राम, कृष्ण को मैं भी अपने आदर्श पुरुष मानता हूँ। उक्त सभी शास्त्रों का मैंने भी स्वाध्याय किया है। मैं अपने को आर्यसमाज का सबसे छोटा कार्यकर्ता मानता हूँ। अपनी प्रथम पंक्ति का स्मरण करा, अब मैं कहने जा रहा हूँ कि देवदयानन्द के बाद वेदों व साइंस दोनों के एक साथ सबसे बड़े विद्वान् विश्वविख्यात डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी (पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का सुपुत्र) हुए हैं। ये वही स्वामी जी थे जिन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में एक मुसलमान वैज्ञानिक को निरुत्तर किया था। ज्ञातव्य हो कि उस मुसलमान वैज्ञानिक ने सबके सामने यज्ञ करके, उससे बनी गैसों को गैस-जारों में एकत्र कर उन्हें विषाक्त अत: प्राणिमात्र के लिये हानिकर सिद्ध कर **यज्ञ** पर प्रश्नचिह्न लगा दिया था। यह तामाशा सत्यप्रकाश जी ने देखा था। बाद में अपनी रिसर्च करके उस मुसलमान वैज्ञानिक सहित सभी वैज्ञानिकों के सामने यज्ञ किया, यज्ञ से बनी गैसों को गैस-जारों में एकत्र किया तथा प्रयोगशाला में इन्हें सर्वथा निर्दोष व प्राणिमात्र, जलों, पौधों, वायु के लिए प्राणप्रद सिद्ध किया तथा यज्ञ की वैज्ञानिकता सिद्ध की। यह वेदों की जीत थी, ऋषियों की विजय थी। इस विद्वान् ने वेदों का भाष्य किया तथा अनेक अमूल्य पुस्तकें लिखकर वैज्ञानिक रहस्य खोले। इस विद्वान् के दर्शन करने का सौभाग्य लेखक को १९७५ में रोहतक में आर्यसमाज शताब्दी समारोह के अवसर पर मिला था जहाँ दिव्य मूर्ति हरयाणा आर्यसमाज के प्राण स्वामी ओमानन्द के साथ मंच पर शोभायमान थी। अपने पूज्य पिता द्वारा **''गीता रहस्य''** लिखने के बावजूद देखिये यह सत्य का प्रकाशक डा० स्वामी सत्यप्रकाश क्या लिखता है-**''व्यासकृत ४४०० श्लोकों वाली मूल महाभारत में गीता थी ही नहीं। लोगों का भ्रम है कि गीता का उपदेश श्रीकृष्ण ने दिया था।''***

मेरा विचार है कि व्यास जी के शिष्यों ने अपने ५६०० श्लोक मिला जो दस हजार श्लोकों का भारत (बाद में महाभारत नाम) बनाया उसमें भी गीता न थी। यह बहुत बाद में किसी पौराणिक या सनातनी विद्वान् ने महाभारत में मिला दी। समय की माँग है कि हम इस भ्रम को तोड़कर सत्य को स्वीकारने का साहस दिखायें देवदयानन्द के सच्चे सिपाही बनें।

*मोहग्रस्त अर्जुन को श्रीकृष्ण ने आत्मा के अजर अमर नित्य होने का उपदेश देकर अर्जुन के मोह को नष्ट किया और युद्ध के लिए सन्नद्ध किया यह एक ऐतिहासिक सत्य है। श्रीकृष्ण का वह उपदेश कितने क्षण मुहूर्त मिनट या घण्टों का था यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास ने उस उपदेश को कितने श्लोकों में छन्दोबद्ध किया था यह अनुसन्धेय है। जैसे ४४००, १०,०००, २५,००० का जय, भारत और महाभारत समय-समय पर बढ़ता-बढ़ता सवा लाख श्लोकों का महाग्रन्थ बन गया उसी प्रकार महाभारतान्तर्गत गीता भी प्रक्षेपों के कारण बढती चली गई और श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार सिद्ध करने के लिये सैकड़ों वेदविरुद्ध नये श्लोक बनाकर मिला दिये गये। गीता का वर्तमान उपलब्ध स्वरूप **विषसम्पृक्तान्नवत्** त्याज्य हो गया है।

स्वर्गीय आत्मानन्द सरस्वती ने वैदिक सिद्धान्तों के विपरीत प्रक्षिप्त श्लोकों को छांटकर गीता का जो वैदिक स्वरूप प्रस्तुत किया है वह स्तुत्य है, पठनीय है।

-वेदव्रत शास्त्री

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक ७ १४ जनवरी, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## मकर संक्रान्ति पर्व का महत्त्व

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

मकर सौर संक्रान्ति=सूर्य का मकर राशि में आने का दिन। इस दिन सूर्यदेव दक्षिणायन की गति छोड़ श्रेष्ठ उत्तरायण पथ का आश्रय ले लेते हैं। यह अभ्युदय का प्रारम्भ व अयन का परिवर्तन समय है। मकर-संक्रान्ति पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृत दान करने की प्रथा सनातनियों में प्रचलित है। "**कम्बलवन्तं न बाधते शीतम्**" की श्लिष्ट उक्ति संस्कृत में प्रसिद्ध ही है। घृत को भी वैद्यक में ओज और तेज को बढ़ानेवाला तथा अग्निदीपक कहा गया है। आर्य पर्वों पर दान, जो धर्म का एक स्कन्ध है, अवश्यमेव ही कर्त्तव्य है और **देशे काले च पात्रे च तद् दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।** (गीता १७।२०)

**अर्थ** :- देश, काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान 'दान' कहलाता है।

**दरिद्रान्भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।।**

**अर्थ** :- हे अर्जुन! दरिद्रों का पालन करो, धनियों को धन मत दो।

वैद्यकशास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तैल, तूल (रूई) बतलाये हैं। जिसमें तिल सबसे मुख्य है। इसलिये पुराणों में इस पर्व के सब कृत्यों में तिलों के प्रयोग का विशेष माहात्म्य गाया गया है और पापनाशक कहा गया है। किसी पुराण का निम्नलिखित वचन प्रसिद्ध है :-

**तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी।**
**तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशनाः ।।**

**अर्थ** :- तिलमिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग पापनाशक हैं।

मकरसंक्रान्ति पर्व के विषय में पं० सिद्धगोपाल जी काव्यतीर्थ कविरत्न ने कहा है-

दोहा : **शीत शिशिर हेमन्त का, हुआ परम प्राधान्य।**
**तैल, तूल, तपन का, सब जग में है मान्य।।**

रुचिरा : उत्तर अयन इसी तिथि को है, सविता का सुप्रवेश हुआ।
मान दिवस का इस ही कारण, अब से है सविशेष हुआ।।
वेद प्रदर्शित देवयान का, जगती में विस्तार हुआ।
उत्सव संक्रान्ति मकर की का, जनता में सुप्रसार हुआ।।१।।
तिल के मोदक, खिचड़ी, कम्बल, आज दान में देते हैं।
दीनों का दुःख दूर भगाकर, उनकी आशिष लेते हैं।।
सतिल सुगन्धित सुसाकल्य से होम यज्ञ भी करते हैं।
हिम से आवृत नभमण्डल को शुद्ध वायु से भरते हैं।।२।।

इस पर्व पर प्रातः सब गृहादि पवित्र कर यजमान बृहद्यज्ञ करके निम्न मन्त्रों से विशेष आहुति देवे। जिनका अर्थ भी साथ में दिया है।

**१. ओ३म् सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि स्वाहा।।**

**अर्थ** :- सह (मार्गशीर्ष) और 'सहस्य' (पौष) यह दोनों हेमन्त ऋतु के नाम हैं। हे संवत्सर! तुम सूर्य की ज्योति से युक्त हो। यही तुम्हारी स्तुति है।

**२. ओ३म् कल्पेताम् द्यावापृथिवी स्वाहा।।**

**अर्थ** :- इन ऋतुओं में द्यु और पृथिवी समर्थ हों।

**३. ओ३म् कल्पन्ताम् आप ओषधयः स्वाहा।।**

**अर्थ** :- अन्न व जल समृद्ध हों।

**४. ओ३म् कल्पन्ताम् अग्नयः पृथङ्मम ज्यैष्ठ्या सव्रताः स्वाहा।।**

**अर्थ** :- मेरी उत्कृष्टता के लिये समस्त तेज समर्थ हों।

**५. ओ३म् ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे हैमन्तिकावृतू अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि स्वाहा।।**

**अर्थ** :- 'तप' (माघ) और 'तपस्य' (फाल्गुन) ये दोनों शिशिर-ऋतु के मास हैं। हे संवत्सर! तुम सूर्य की ज्योति से युक्त हो। यही तुम्हारी स्तुति है।

**७. ओ३म् कल्पेताम् द्यावापृथिवी स्वाहा।।**

**८. ओ३म् कल्पन्ताम् आप ओषधयः स्वाहा।।**

**९. ओ३म् कल्पन्ताम् अग्नयः पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः स्वाहा।।**

**१०. ओ३म् ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे शैशिरावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभि संविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् स्वाहा।।**

(यजु० १५।१७) अर्थ पूर्ववत्

**मकर संक्रान्ति का महत्त्व** :- जितने काल में पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है, उसको एक "सौर वर्ष" कहते हैं और कुछ लम्बी वतुर्लाकार जिस परिधि पर पृथिवी पर पृथिवी परिभ्रमण करती है, उसको "क्रान्तिवृत्त" कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के १२ भाग कल्पित किये हुये हैं और उन १२ भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्रपुञ्जों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिये गये हैं। यथा-१. मेष, २. वृष, ३. मिथुन, ४. कर्क, ५. सिंह, ६. कन्या, ७. तुला, ८. वृश्चिक, ९. धनु, १०. मकर, ११. कुम्भ, १२. मीन। प्रत्येक भाग वा आकृति "राशि" कहलाती है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उसको "संक्रान्ति" कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को दक्षिणायन कहते हैं। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दीखता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है और स्मरणातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है।

## समुद्री तूफान राहत हेतु अपील

प्रकृति ने एक बार फिर २६ दिसम्बर २००४ को भारत के दक्षिणी प्रान्तों तमिनालनाडु, आन्ध्रप्रदेश, केरल, अंडमान निकोबार और पांडिचेरी में कहर ढाया है। हजारों लोगों की जानें सुनामी लहरों ने ले ली हैं और हजारों घर नष्ट हो गए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं प्रान्तीय आर्यवीर दल हरयाणा ने प्राकृतिक आपदा से पीड़ित मानवता की सहायता के लिए शीघ्र ही एक और जत्था चेन्नई में भेजने का निर्णय लिया है। ध्यान रहे कि एक जत्था आर्यवीर दल का २७ दिसम्बर २००४ को पहले ही चेन्नई के लिए भेजा चुका है।

आप सभी से निवेदन है कि आप अपनी ओर से, अपने आर्यसमाज/संस्था की ओर से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक कार्यालय अथवा स्थानीय आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं को देवें या प्रान्तीय कार्यालय आर्यवीर दल हरयाणा, आर्यसमाज शिवाजी कालोनी, रोहतक के पते पर भेजें।

कृपया सहायताराशि नकद/ड्राफ्ट द्वारा उपरोक्त पते पर भेजने का कष्ट करें। कपड़े/अन्न आदि वहीं से खरीदकर बांटने की योजना है क्योंकि यहां से सामान भेजना महंगा पड़ेगा।

निवेदक :-

**आचार्य बलदेव** प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्दमठ, रोहतक
हरयाणा

**वेदप्रकाश आर्य** महामंत्री,
सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा
कार्यालय : आर्यसमाज शिवाजी
कालोनी, रोहतक

## पादकीय-

# त्यार्थप्रकाश की एकरूपता

एक सौ तीस वर्ष पूर्व आर्यभाषा में लिखा गया र्षि दयानन्द सरस्वती का कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश ाक सिद्धान्तों, महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की यताओं का एक प्रामाणिक दस्तावेज है। इसके उत्तरार्ध चार समुल्लासों में उस समय प्रचलित प्रमुख मत-ान्तरों एवं झूठी पाखण्डपूर्ण लीलाओं की शिष्टभाषा में ीचीन समालोचना भी युक्ति-प्रमाण-पूर्वक की गई । अन्तिम दो समुल्लासों में ईसाई और मुसलमानों के मत । समीक्षा बाइबल और कुरान के आधार पर की है। ार्षि दयानन्द सरस्वती अपने समय के संसार में सर्वमान्य दों के विद्वान् थे। उन्हें कोई भी स्वदेशी वा विदेशी द्वान् शास्त्रार्थ में कभी भी पराजित न कर सका। वे ालिश और उर्दू फारसी के ज्ञाता नहीं थे पुनरपि इंगलिश ौर उर्दू फारसी के विद्वानों के सहयोग से उन्होंने बाइबल ौर कुरान की समीक्षा आर्यभाषा में लिखी। विश्व में ुरान का सर्वप्रथम आर्यभाषा में अनुवाद महर्षि दयानन्द ारस्वती ने ही करवाया था जो परोपकारिणी सभा अजमेर ा संग्रहालय में विद्यमान है। इसी प्रकार संसार में वेदों ा भाष्य भी आर्यभाषा में करनेवाला सर्वप्रथम विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती ही था।

"**कब तक मौन रहेंगे?** सत्यार्थप्रकाश अस्मिता सुरक्षा हमारा पुनीत दायित्व" नाम की पुस्तक श्री अशोक आर्य ने तरुण आफसेट प्रेस उदयपुर से छपवाकर मेरे पास भेजी है। मैंने पूरी पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ा है। प्रसंगवश पृष्ठ १, ४४ और ४६ पर संमानपूर्वक मेरी भी चर्चा वा आलोचना की है। पृष्ठ ४६ पर "श्री वेदव्रत जी शास्त्री ने सर्वहितकारी अंक २१ सित० २००४ में कर विरजानन्द जी के पक्ष को सम्पुष्ट किया है।" अशोक जी ने मेरे लेख को पढ़कर जो धारणा बनाई है वह ठीक नहीं है। मैंने अपने उक्त लेख में द्वितीय संस्करण को सर्वथा प्रामाणिक मानकर एक भी अक्षर परिवर्तित किये विना छापने में जो त्रुटियां वा अशुद्धियां रहेंगी उनके कुछ उदाहरण उपस्थित किये थे। विरजानन्द जी के पक्ष को सम्पुष्ट करने की कोई चर्चा नहीं की। जिस द्वितीय संस्करण में ५८६ अशुद्धियों का तो अन्त में शुद्धिपत्र छापा गया है और कुछ ऐसी अशुद्धियां भी हैं जिनको कोई बुद्धिमान् व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता। ऐसे भी पाठ हैं जो महर्षि दयानन्द सरस्वती की अन्यत्र लिखित मान्यताओं के प्रतिकूल हैं। ऐसी स्थिति में वेद की भांति सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण की वर्णानुपूर्वी नित्य अथवा अपरिवर्तनीय कैसे मानी जा सकती है और उसी संस्करण की ज्यों की त्यों फोटो कापी प्रसारित करना कैसे सर्वमान्य हो सकता है?

उक्त पुस्तक में निहित अशोक जी की इस भावना से मैं पूर्णतया सहमत हूं कि "**सत्यार्थप्रकाश विश्व में कहीं से भी क्रय किया जावे, उसका एक-एक शब्द दूसरे से मिलता हो।**" (पृष्ठ ८८)

मैं आपकी इस भावना का भी पोषक और समर्थक हूं कि "**मूर्धन्य विद्वानों की देखरेख में सर्वांग शुद्ध एकरूप सत्यार्थप्रकाश छपे और अपने मूलस्वरूप (द्वितीय संस्करण) से न्यूनतम दूर हो।**" (पृष्ठ १००)

आपका २० पृष्ठ पर "**द्वितीय संस्करण को प्रेस प्रति पर भी वरीयता देनी चाहिये।**" यह सुझाव भी युक्तिसंगत है। इसकी सम्पुष्टि के लिये मैं एक अन्तरंग उदाहरण उपस्थित करता हूं। सत्यार्थप्रकाश की दोनों हस्तलिखित प्रतियों में मुक्ति से पुनरावृत्ति न मानने के प्रसंग में जीव **कमती** होजाने का लेख है परन्तु सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण में **कमती** के स्थान पर **निःशेष** शब्द छपा है जो कि सर्वथा शुद्ध और सिद्धान्तानुकूल है। जीव **कमती होने** और **निःशेष** होने के अर्थ में बहुत अन्तर है।

अब प्रश्न उठता है जब मूलकापी और प्रेस कापी में **कमती** शब्द है तो द्वितीय संस्करण में **निःशेष** शब्द कहां से आया?

इसके आने के दो ही मार्ग अनुमान से प्रतीत होते हैं। प्रथम मार्ग है दो हस्तलिखित कापियों के अतिरिक्त तीसरी प्रेस कापी और बनाई गई थी जिसके थोड़े-थोड़े पृष्ठ शुद्ध करके स्वामी जी मुद्रणार्थ प्रेस में भेजते थे और वह प्रूफ के साथ आती जाती थी, वह अब उपलब्ध नहीं है। ऐसा अनुमान मुझसे पूर्व अन्य अनेक विद्वानों का भी था। विगत ५२ वर्षों से मैं लेखन, मुद्रण, प्रकाशन और प्रेससंचालन से सम्बद्ध हूं। १९६४ में व्याकरणमहाभाष्य छपवाने के प्रसंग में मुझे एक मास तक निरन्तर वैदिक यन्त्रालय और फाइन आर्ट प्रेस श्रीनगर रोड अजमेर में ठहरना भी पड़ा था। प्रेस कम्पोजीटर जब कम्पोज करते हैं, प्रूफ उठाते हैं तब उनके हाथ टाइप और स्याही लगने के कारण काले और मैले हो जाते हैं। उस समय कम्प्यूटर द्वारा पुस्तकमुद्रणकार्य नहीं होता था। मैंने सत्यार्थप्रकाश की दोनों हस्तलिखित कापियों की फोटो प्रतियां देखी हैं, उन पर कम्पोजिटरों के काले मैले हाथ लगने के निशान दृग्गोचर नहीं हुये। इसलिये भी तीसरी प्रेसकापी होने का अनुमान किया जा सकता है। **निःशेष** शब्द छपने का दूसरा मार्ग है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रूफ देखते समय **कमती** को उचित न मानकर **निःशेष** शब्द बदल दिया।

सत्यार्थप्रकाश की हस्तलिखित प्रतियों को विरजानन्द जी मूल प्रति और प्रेस प्रति मानते हैं और अशोक जी रफ और प्रेस प्रति मानते हैं। कोई प्रथम कापी और द्वितीय कापी मानता है। नाम कुछ भी रखें किन्तु सत्यार्थप्रकाश द्वितीय संस्करण की त्रुटियों को दूर करने में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

प्रिय अशोक आर्य ने सत्यार्थप्रकाश का सर्वांग शुद्ध एकरूप संस्करण तैयार करने के लिये कुछ विद्वानों के नाम आलोच्य पुस्तक में लिखे हैं उनमें से दो विद्वानों के पत्रों का सारांश भी परिशिष्ट (क) और (ख) में प्रकाशित किया है।

सत्य के ग्रहण करने **और** असत्य **के** छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। (पृष्ठ ९०)-धर्मसिंह जी कोठारी।

"सत्य के ग्रहण करने **तथा** असत्य **को** छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।" (पृष्ठ ९२)-पं० विशुद्धानन्द मिश्र शास्त्री।

आर्यसमाज के नियम की एक पंक्ति अथवा एक वाक्य भी जब हमारे दो मूर्धन्य विद्वान् एकरूप में नहीं लिख सकते उस अवस्था में सत्यार्थप्रकाश सदृश विशाल ग्रन्थ की एकरूपता की उनसे आशा....।

यदि विद्वानों ने ठीक लिखा था और पुस्तक के छापने में आपने एकरूपता भंग कर दी तो आप अपने बारे में विचार कीजिये। आपने भी इस पुस्तक के प्रूफ कम से कम दो बार अवश्य पढ़े हैं यह आप स्वयं पुस्तक के २० पृष्ठ पर लिख रहे हैं।

यह कोई सामान्य वाक्य नहीं, आर्यसमाज का नियम है। यह उक्त तीनों विद्वानों को कण्ठस्थ भी होगा। ९० और ९२ पृष्ठों के प्रूफ भी आपने एक साथ ही पढ़े होंगे। दोनों की पृष्ठसंख्या साथ-साथ है। दोनों एक ही फार्म में आते हैं, वह फार्म चाहे १६ पेजी, ८ पेजी वा ४ पेजी ही क्यों न हो।

आपने यह पुस्तक स्वयं लिखी है और कम से कम आपने इसके दो बार स्वयं प्रूफ भी पढ़े हैं। आपको आर्यभाषा और संस्कृत का कितना ज्ञान है यह मैं नहीं जानता। इस पुस्तक में कुछ प्रमुख अशुद्धियां इस प्रकार हैं-

शुद्धतम्, दृग्गत्, दृग्गत्, दृष्टिपात्, दृष्टिगत्, विरत्, निष्णात्, प्रख्यात्, अन्तर्गत्, जन्मगत्, तहत्, हृदयगत्, पुनर्प्रयास, पुनर्शोधन, पुनरूक्ति, विद्वता, महत्व, बताऐं, समीक्षाऐं, संस्थाऐं, शंकाऐं, विद्वत् जन, विद्वद्जन्, चिन्ह, प्रबन्धकर्त्तव्य, प्रतिद्वन्द्वता, एकरुप, एकरुपता, रुप, प्रारुप, तदनुरुप, स्वरुप, यथानुरुप, फलस्वरुप, विशेष रुप, रूपये, करूँगा, करुं, निरुपण, करूणा, पुरूष, राजपुरूष, दारूण, पुरूषंज्जगत, सम्यक, यथावत, विरूद्ध, रूड़की, गुरू, गारन्टी, रुपरेखा, बृहत्वाद, यथारूचि, भगवन, यत्किंच, कदाचित, पशु प्रहार, वस्तुतस्थु, दुष्चेष्टा, अतिश्योक्ति, यत्किंच, पश्चात्वर्ती, सहस्त्रों, अनेकों ग्रन्थों, रामसनेही, आर्यसज्जनों!, टिप्पणी दीं, महर्षि से पूंछ, स्थितियां थी, प्रकरण बह्य, जात्याभिमानी, होने चाहिए, सर्वशक्तिमान, अप्रमाणिक, अलंकारिक, वांड्मय, गौवंश, सांपों के दर्शन से, पृ० ९५ पर ४ श्लोकों में २० अशुद्धियां हैं। प्रायश्चित, ब्राह्य आक्रमण, अपौरुषेयत्त्व, बुद्धिपूर्वक वाक्यकृतिर्वेदे, सुख दुःखे, इच्छा द्वेषौ, लोक दृष्टैश्च, पत्नी ग्राह्यं, भर्तारंलंघयेत्, प्रस्त्राव, अच्यते गत्यङ्त्येति, सोऽयमग्नि, पूर्व रंग प्रसाराय, भवद्गिराम् अवसर प्रदानाय।

संज्ञानामों तथा पुस्तकनाम आदि की लेखन-पद्धति देखिये-तत्त्व बोध, श्री राम शर्मा, महेश प्रसाद, आ० वेद व्रत, श्री करण शारदा, राम प्रकाश, समर्थ दान, जयकृष्ण दास, विश्वेश्वर सिंह, बख्तावर सिंह, ज्वलन्त कुमार, सत्यार्थ प्रकाश, आर्य समाज, आर्य जगत, वेद भाष्य, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्योद्देश्य रत्न माला, अपनी आर्य समाज, विद्या वाचस्पति, वेद वाचस्पति, साक्षात् कृतधर्मा, कपोल कल्पित, भक्ष्या भक्ष्य, विषय भोगी, बुद्धि चातुर्य, श्रम साध्य, समय साध्य, पद वाक्य प्रमाणज्ञ, वेद प्रणीत, शब्द कल्प द्रुम, प्रमाण शून्य, आत्म हनन, महर्षि कृत, ऋषि प्रणीत, एक रूपता, पाठक गण, पुष्प वर्षा, कार्य शैली, पत्र व्यवहार, प्रश्न चिन्ह, ग्रन्थ रत्न, ऋषि भक्त, वर्ण व्यवस्था, परोपकारी सभा, दुर्भाग्य पूर्ण, छल पूर्ण, कृपा पात्र, साक्षात्कार कर्त्ताओं, ओर।

इस प्रकार की अन्य भी अनेक त्रुटियां हैं। ये ही शब्द पुस्तक में बार-बार प्रयुक्त होने से अशुद्धियों की भरमार है। इतने अशुद्ध प्रकाशन को पढ़ना भी बहुत कष्टप्रद होता है।

पुस्तक का कागज बढिया है। आवरण (कवर) आकर्षक है किन्तु अन्दर-**हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्या-पिहितं मुखम्।**

संस्कृत हिन्दी से एम.ए., पी-एच.डी., प्रभाकर, शास्त्री और आचार्य उपाधिधारी अनेक महापुरुषों को न ह्रस्व दीर्घ और हलन्त का ध्यान है और न ही लिंग वचन आदि का ज्ञान है किन्तु लिखने का शोक है। वेद-शास्त्रों के प्रमाण में मन्त्र, सूत्र और श्लोक उद्धृत करते हैं अपने अधूरे ज्ञान से अथवा किसी पुस्तक में अशुद्ध छपे हुये की नकल करके। मूलग्रन्थों को देखने का कष्ट नहीं करते अथवा उन्हें सुलभ नहीं होते।

बड़े-बड़े ख्यातिप्राप्त राष्ट्रीय समाचार-पत्र भी श्रृंखला श्रृंगार आदि को श्र में ऋ की मात्रा लगाकर लिखते हैं। टेलीविजन आदि पर मनोविज्ञान की भांति **मनोचिकित्सा मनोस्थिति** आदि शब्द सुनने और देखने में कष्ट अनुभव होता है। एक संस्कृत एम.ए. सेवानिवृत्त वयोवृद्ध अध्यापक ने तो २० रुपये के नोट पर छपे "**विंशती रूप्यकाणि**" संस्कृतवाक्य को ही अशुद्ध समझकर भारत के रिजर्व बैंक के गवर्नर को इसे ठीक करके छपवाने का भी परामर्श दे दिया।

मैं समझ नहीं पा रहा कि हमारे अध्यापक क्या पढ़ाते हैं और विद्यार्थी क्या पढ़ते हैं? राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी जननी संस्कृतभाषा की जो दुर्गति आज के हमारे शिक्षितवर्ग ने कर रखी है वह अत्यन्त चिन्तनीय विषय है। प्रबुद्ध विद्वानों को आगे आकर इसमें सुधार करना चाहिये।

सत्यार्थप्रकाश की एकरूपता तो होनी ही चाहिये। इसके साथ-साथ आर्यसमाजसम्बन्धी जो साहित्य प्रकाशित होता उसकी शुद्धि और उत्कृष्टता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिये।

आर्यों के दैनिक सन्ध्या यज्ञ आदि की विधि में भी एकरूपता होनी चाहिये। संगठन सूक्त का पाठ तो किया जाता है उसकी झलक हमारे जीवन और कार्यकलापों में भी दिखाई देनी चाहिये।

**-वेदव्रत शास्त्री**

# तपःपूत स्वामी सर्वानन्द जी के पावन संस्मरण

❑ डॉ० भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन जोधपुर

'भूयश्च शरदः शतात्' के वैदिक आदर्श के जीवन्त उदाहरण स्वामी सर्वानन्द जी का त्याग, तप तथा साधनामय जीवन लोकसेवा के लिए समर्पित था। मैंने सत्तर के दशक में उनको पत्र लिखकर यह जानकारी चाही थी कि क्या स्वामी स्वतंत्रानन्द जी ने स्वामी दयानन्द के बंगाली शिष्य हेमचन्द्र चक्रवर्ती लिखित स्वामी जी के कलकत्ता निवासकाल के संस्करणों का हिन्दी में अनुवाद किया था। उत्तर में स्वामी सर्वानन्द जी ने पत्र द्वारा मुझे सूचित किया कि स्वामी स्वतंत्रानन्द जी ने ऐसा कोई अनुवाद नहीं किया और वे बंगला का ज्ञान भी नहीं रखते थे। इन महाराज के प्रत्यक्ष दर्शन का प्रथम अवसर मुझे तब मिला जब मैं प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु के निमंत्रण पर सम्भवतः १९७३ में अबोहर गया जहां डी.ए.वी. कालेज के महिला विभाग का आरम्भ होना था। स्वामी जी के विनम्र व्यवहार तथा उनके तप-त्यागपूर्ण जीवन को प्रत्यक्ष देखने का यह पहला अवसर था। अपने चण्डीगढ़ के कार्यकाल में भी महाराज जी से भेंट के कुछ अवसर मिले, तब पता चला कि लौहपुरुष स्वामी स्वतंत्रानन्द जी का यह तपस्वी शिष्य किस धातु का बना है।

कालान्तर में हमने उन्हें परोपकारिणी सभा का प्रधान निर्वाचित किया तो उनके दर्शन तथा विचारविमर्श के अधिकाधिक अवसर मिलने लगे। वे सभा के वार्षिक अधिवेशनों में अजमेर आते, ऋषि मेले में उनके प्रवचन होते तथा सभा को उनकी सूझबूझ तथा दूरदर्शिता का लाभ मिलता। महाराज जी की सरलता, कष्टसहिष्णुता तथा विनम्रता तो वर्णनातीत थी। दिल्ली मेल से हम दोनों को अजमेर से दिल्ली जाना था। मेरा आरक्षण सुनिश्चित था किन्तु स्वामी जी बिना चिंता किये मेरे साथ प्लैटफार्म पर बैठे थे कि जहां जगह मिल जाएगी, वहीं बैठकर सारी रात की यात्रा पूरी कर लेंगे। उनके लिए सारे द्वन्द्व समान थे और इस सहनशीलता ने उन्हें द्वन्द्वातीत तथा सही मायने में गीता का 'स्थितप्रज्ञ पुरुष' बनाया था। यह प्रसिद्ध बात है कि महाराज जी एक कुशल चिकित्सक, पीयूषपाणि वैद्य थे। पूर्वाश्रम के पं० रामचन्द्र ने जहां शास्त्रों का प्रगाढ़ अध्ययन किया था वहां दयानन्दमठ में चिकित्सा विभाग का सफल संचालन कर आर्तजनों की सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया था। प्रसंगवशात् मैंने अपनी पौरुषग्रन्थि की दुर्बलता तथा तज्जन्य रुग्णता की स्वामी जी से चर्चा की तो स्वामी जी ने न केवल समुचित परामर्श दिया अपितु मठ से चन्द्रप्रभावटी तथा गोक्षुरादि चूर्ण जैसी अनुभूत औषधियां भेजकर मुझे स्वस्थ होने की राह सुझाई। यह एक प्रसिद्ध तथ्य है कि महाराज मठ द्वारा निर्मित च्यवनप्राशादि बल-बुद्धि-वर्धक औषधियां आर्यविद्वानों को प्रसाद रूप में भेजा करते थे। उनका कथन था कि जब विद्वान् लोग मानसिक काम के द्वारा वेदमत की सेवा करते हैं तो मठ का कर्तव्य बनता है कि वह भी उनके योगक्षेम का ध्यान रखे। सारस्वत साधना में संलग्न व्यक्तियों का हितचिंतक यह तुरीयाश्रमी साधु सचमुच बौद्धिक श्रम के महत्त्व को जानता-समझता था।

उनकी शास्त्रज्ञता तथा वैदिक वाङ्मय पर उनके गहन अधिकार का परिचय मुझे तब मिला जब अजमेर के ऋषि उद्यान में गुरुकुल चलाने की योजना परोपकारिणी सभा ने बनाई और तदनुसार विस्तृत पाठ्यक्रम बनाया गया। पाठ्यक्रम का यह प्रारूप जब सभा की कार्यकारिणी में विचारार्थ प्रस्तुत किया गया तो महाराज ने कुछ ऐसे सुझाव दिये जो उनके तलस्पर्शी वैदुष्य तथा प्रगाढ पाण्डित्य का परिचय देते थे। सच कहूं, महाराज का बहुत निकट का सम्पर्क तो मुझे मिला नहीं था, मैं लोक सेवक साधु, सरल प्रकृति का दिव्य पुरुष मानता था, अब उनकी शास्त्रीय अभिज्ञता तथा विद्वता से रूबरू होने का मौका मिला। दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में उन्होंने गहन अध्ययन किया था।

स्वामी जी का आग्रह था कि मैं वर्षाऋतु में मठ में आऊँ, स्वामी दयानन्द के जीवन पर रसमयी साप्ताहिक कथा प्रस्तुत करूं और मठ के रसीले आमों से स्वरसना को तृप्त करूं। महाराज का आग्रह तथा प्रस्ताव सचमुच लुभावना था। तदनुसार मैं दो बार मठ के वर्षा सत्र के कार्यक्रमों में सम्मिलित हुआ और मठ को निकटता से देखा। मठ की दैनन्दिनचर्या से हटकर मेरे लिए प्रातःकालीन चाय तथा प्रातराश की पृथक् व्यवस्था तो हुई किन्तु मध्याह्न के भिक्षा भोजन में शिरकत कर मुझे अपूर्व आनन्द और तृप्ति मिली। जिह्वा के रस से निर्लिप्त रहने की अपूर्व औषधि गृहस्थ घरों से एकत्रित भोजन का आस्वादन है, इसे दयानन्दमठ की पुरानी परम्परा ने अद्यापि सिद्ध कर दिया है। रोटी-सब्जी के सामान्य पाथेय से पृथक् यदि किसी गृहस्थ ने परांठा या हलुआ भिक्षापात्र में डाल दिया तो महाराज विशेष अनुकम्पा पूर्वक कहते-'यह मिष्ठान्न डाक्टर जी को दे दें।' उनका यह कृपाप्रसाद सचमुच स्पृहणीय था।

प्रातःकालीन यज्ञ-प्रवचन के सत्र में नियमित रूप से आरम्भ से अन्त तक उनका बैठना, सायं यज्ञ के पश्चात् स्वहस्त से भक्तजनों को प्रसाद वितरण कर आशीर्वाद देना आगन्तुक व्यक्ति को अतिरिक्त प्रफुल्लता प्रदान करता। मैंने दो बार के मठ निवास में स्वामी स्वतंत्रानन्द पुस्तकालय में एकत्रित अनेक अलभ्य ग्रन्थों की जानकारी ली, कुछ की जीरोक्ष प्रतियां अपने संग्रह के लिए प्राप्त कीं। दो वर्ष पूर्व जब मठ के इस वर्षा सत्र में जाना हुआ तो महाराज की वार्धक्यजन्य दुर्बलता बढ़ चुकी थी। तथापि वे पहिए की कुर्सी पर बैठकर प्रातःकाल यज्ञशाला में आते, बैठते तथा सारी कार्यवाही को देखते, अवशिष्ट दिन तो विश्राम में ही बीतता।

दीनानगर के दयानन्दमठ का संचालन त्रिविध ऐषणामुक्त, सर्वसंगपरित्यागी परिव्राजक के द्वारा किया जाता रहा। मठ की सारी व्यवस्थाएं जनसामान्य द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहयोग से होती थीं किन्तु महाराज विद्वानों, लेखकों तथा साहित्यकारों की आर्थिक सहायता मुक्तहस्त से करते थे। जब मैंने आर्यलेखक कोश के प्रकाशन के लिये महाराज को लिखा तो उनके द्वारा प्रेषित सहायता राशि उस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रकाश में आने के लिए प्रदत्त सौम्यमना साधु की प्रधान आहुति थी। मठ में बिना किसी जाति, वर्ण या वर्ग का भेद किये मनुष्यमात्र को सहायता, सहयोग, सर्वोपरि चिकित्सा सहायता प्राप्त होती थी। यही कारण है कि गुरदासपुर जिले की जनता जिनमें हिन्दू एवं सिखों के अतिरिक्त ईसाई तथा मुसलमान सम्मिलित हैं, महाराज के प्रति असीम श्रद्धा तथा विश्वास का भाव रखती थी। वे सचमुच मानवजाति को विभक्त करने वाली काराओं से मुक्त परिव्राट् थे। जनसेवा ही उनके जीवन का प्रथम एवं अन्तिम लक्ष्य था, जिसका वे जीवनपर्यन्त निर्वाह करते रहे।

# गोहत्यारी वोट की नीति

वर्तमान में अमूल्य धन गौ की हत्या की जिम्मेदार वोट की नीति है। विद्वान् व मूर्ख का वोट का समान अधिकार होना वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध है। राजनेता अपना वोट बैंक बैलेंस बढ़ाने के लिये कसाइयों को ढीले छोड़ देते हैं। वे गोहत्या करने के सब हथकण्डे अपनाते हैं। राजनेताओं का कहना है कि सभी मुसलमान गोहत्यारे नहीं होते। गोभक्त भी इसको स्वीकार करते हैं। परन्तु जिस समय कसाइयों के चंगुल से गाय छुड़ाने का गोभक्त द्वारा यत्न किया जाता है तो सभी ग्राम के मेव उनकी सहायता करते हैं। इससे कसाइयों के पक्षधर मेव गोहत्या को बढ़ावा देते हैं। लगभग सभी पार्टियां तीन मेवातक्षेत्र के विधायकों को अपने पक्ष में लेने के लिये ८७ अन्य विधायकों की उपेक्षा करती हैं। इन्हीं तीनों को हरयाणा का भाग्यविधाता माना जाता है। इसलिये सम्प्रदाय के आधार पर मेवात जिला बनाने की घोषणा एक दूसरे से पहले करने की स्पर्धा लगी। वोटरों के तुष्टिकरण की नीति ही गोहत्या को आशातीत सीमा तक बढ़ा रही है। २४-१२-२००४ को पानीपत में एक बछड़े का मांस बेचते कसाई पकड़े गये। पता लगाया कि सभी मुसलमान कसाई थे तथा पर्याप्त दिन से यह निन्दनीय कर्म कर रहे थे। २५-१२-२००४ को ७५ बैल कसाइयों से छुड़ाये। २७-१२-२००४ को ४२ बैलों का मांस मेवात में मालव ग्राम के पास पकड़ा गया। इस प्रकार इस समय मेवात में गोहत्या बेहद बढ़ रही है। इसका कारण केवलमात्र वोट की राजनीति है। सरकार चाहे तो एक दिन में गोहत्या बन्द कर दे। २६-१२-२००४ को पानीपत में हरयाणा राज्य संघ के आह्वान पर सभी गोभक्तों की सभा हुई। इसमें निम्न निर्णय किये गये। सभी को आगाह किया गया कि भूल का परिणाम ही गोहत्या है। महात्मा गांधी जी ने कहा था कि आजादी मिलने पर सबसे पहला कार्य गोहत्या बन्द करने का होगा। आजादी से पहले ३०० बूचड़खाने थे। आजादी के बाद इस समय ३००० बूचड़खाने हैं। प्रत्येक पार्टी सत्ता में आने से पहले घोषणा पर घोषणा करती है कि एक भी गाय अपने राज्य में नहीं मरने देगी। यदि कोई गाय मरी तो अपनी मृत्यु समझेंगे। परन्तु सत्ता पर आने पर गोहत्या बढ़ती है। सरकार आंधी व बहरी हो जाती है। गोहत्या के सम्बन्ध में सुनाई करने के स्थान पर गोभक्तों को जेल में डालने व उन पर केश बनाने की धमकी दी जाती है। गोहत्या बन्द करने की लड़ाई आजादी से भी अधिक बलिदान चाहती है। अधिक महंगी है। गोभक्तों ने निश्चय किया कि जब तक गोहत्या बन्द नहीं होगी तब तक लड़ाई जारी रहेगी। चैन से नहीं बैठेंगे। चुनाव के समय सभी से गोरक्षक को वोट देने की प्रेरणा दें तथा सरकार बनने पर जेल भरो आन्दोलन द्वारा संघर्ष जारी रहेगा यह निश्चय करें। निम्न शर्त मानने वाली पार्टियों या उम्मीदवार को वोट दें।

१. मेवात में सटकपुरी में एक मुर्गी भी नहीं मरने दूंगा। यह घोषणा अपने घोषणा पत्र में करें।
२. सम्पूर्ण मेवात क्षेत्र तथा हरयाणा में गोवंश की हत्या नहीं होने देंगे। यदि होती है तो त्यागपत्र देने को तैयार हों।
३. गो-निकासी पूर्णतया बन्द करने का निर्णय ले।
४. गोसेवा आयोग अन्य राज्यों के समान हरयाणा में बनायें।
५. गोचरभूमि गायों के प्रयोग के लिये ही हो।
६. पंचायती भूमि जो पंचायत के प्रस्ताव द्वारा पारित गोशाला को दी गई है। वे गोशालाओं के नाम करवाने का वचन दे।
७. सैशन ट्रायल बनाये जिससे गोहत्यारे की जमानत न हो।
८. निःशुल्क बिजली व चिकित्सा सुविधा गोशालाओं को दे।
९. इन शर्तों के आधार पर ही गोभक्त वोट दें इसके लिये जगह-जगह पर सम्मेलन किये जायेंगे।

१४-१-२००५ मकरसंक्रान्ति पर्व पर राष्ट्रिय गोशाला धड़ौली (जीन्द) में गोरक्षा महासम्मेलन होगा जिसमें गोभक्त इन योजनाओं को क्रियान्वित करने का कार्यक्रम बनायेंगे। अन्यत्र स्थानों पर भी सम्मेलन होंगे।

**-आचार्य बलदेव,** प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

# मनुष्य के सात शत्रु....और मित्र भी

सृष्टि की रचना में सबसे श्रेष्ठ प्राणी मानव को बताया गया है क्योंकि असंख्य योनियों के भुगतान के बाद श्रेष्ठकर्मों के आधार पर मानव जीवन मिलता है। संतशिरोमणि सूरदास जी भी कहते हैं कि, **'बड़े भाग मानुष तन पावा, सूर दुर्लभ सब ग्रन्थी गावा'**-लेकिन इसको बुद्धि के साथ-साथ कई दोष भी मिले हैं जो दूसरे प्राणियों में कम हैं जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि।

पहले हम कामवासना को ही लें, प्रकृति में मनुष्य को छोड़कर सभी प्राणियों में कामेच्छा ऋतु अनुकूल जागृति होती है इसलिए सभी प्राणी ऋतुगामी होते हैं, परन्तु मनुष्य का कोई विधान नहीं है। वर्तमान समय में तो वासनामय वातावरण ही रहता है। वैसे इतिहास बताता है कि रामायण काल में श्रीराम के १४ वर्ष काल में दो पुत्र हुए थे और द्वापर में श्रीकृष्ण जी ने १२ वर्ष तपस्या के पश्चात् एक पुत्र पैदा किया। कामी मनुष्य क्रोधी एवं स्वार्थी होता है वह समाज के हित में कभी नहीं सोचता है। यदि मनुष्य मर्यादा में रहे तो वह व्यक्ति समाज में आदर्श जीवन जीता है। बलात्कार, अनाचार, हत्या, डकैती आदि जो प्रतिदिन समाचार में मोटी सुर्खियों में पढ़ते हैं उनके पीछे कामवासना का ही प्रभाव होता है। क्रोध मनुष्य का स्वयं का गुस्सा है जो व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक ह्रास का कारण बनता है जब व्यक्ति को क्रोध आता है वह अन्धा हो जाता है स्वयं के भले बुरे की भी नहीं सोचता है मैंने स्वयं समाचारपत्रों में पढ़ा है कि अमुक व्यक्ति ने क्रोध में आकर अपने पुत्र, पुत्री या पत्नी को मार दिया और फिर आत्महत्या कर ली। याद रखें क्रोधित व्यक्ति कभी भी व कहीं भी कोई सम्मानजनक कार्य नहीं कर सकता। लोभ तो मनुष्य का जीवन ही अधूरा कर देता है। अति लोभी व्यक्ति तो पेट भरकर भोजन भी नहीं कर सकता और वस्त्र भी मैले-कुचेले पहनने का आदी हो जाता है, अच्छे और शुभ कर्म के लिए उसके हाथ से कभी भी दान नहीं दिया जाता। संत कबीर ने लोभी व्यक्ति के चित्रण में अच्छा दोहा लिखा है-

**मख्खी गुड़ में गढ़ी रहे पंख रही लिपटाय।**
**हाथ मले और सिर धुने लालच बुरी बलाय॥**

अंग्रेजी में कहावत है "Greediness is curse" अर्थात् लालच बुरी बला है। मोह कहते हैं अपने परिवार या सम्बन्धियों में अत्यधिक अनुराग होना, जिसके कारण व्यक्ति दूसरों की हानि या अहित करता हुआ जरा भी नहीं सोचता है। आर्यवीर धनुर्धारी अर्जुन ने मोहवश ही तो धर्मयुद्ध कुरुक्षेत्र के मैदान में हथियार डाल दिए थे जिस मोह को तोड़ने के लिए योगिराज श्रीकृष्ण जी ने इतना बड़ा व्याख्यान दिया कि दुनिया के इतिहास की सर्वमान्य पुस्तक गीता छप गई जिसको पढ़कर मनुष्य को इतना आत्मबल मिलता है कि वह पहाड़ जैसे कार्य को बिल्कुल तुच्छ समझने लगता है और मृत्यु को शरीर के पुराने वस्त्र बदलने के समान समझने लगता है। अहंकार व्यक्ति के गुणों को प्रकट नहीं होने देता। अभिमान, रूप, धन, बल, सत्ता-शक्ति किसी भी तरह से हो सकता है। दूसरे जन अहंकारी व्यक्ति के दोष ही देखते हैं, क्योंकि वह कभी भी समतल एवं सम्मानजनक बात नहीं करता और दूसरे मनुष्यों में कितने ही अच्छे गुण हों, अहंकारी व्यक्ति उनको तुच्छ ही समझता है इसलिए संत कबीर जी ने कहा है, **''कबीरा घमंड न कीजिए काल गहे कर केस, न जाने कहां मारी है कै घर वै परदेस''**, तो अहंकारी व्यक्ति का मालूम नहीं कहां और कैसे अन्त हो जाता है। अंग्रेजी में कहावत है "Pride hath a fall always" यानि घमण्डी व्यक्ति का सर हमेशा नीचा होता है। अहंकार से पीछा इन पंक्तियों को व्यवहार में लाने से छूट सकता है, **''लेने को प्रभु नाम है देने को दान। तारन को है नम्रता और डूबन को अभिमान''**।

ईर्ष्या मनुष्य का घातक अवगुण है जैसे लकड़ी को घुण अन्दर से खोखला कर देता है ठीक उसी प्रकार ईर्ष्या मनुष्य को अन्दर से कमजोर कर देती है और उसको रोग पकड़ लेते हैं। ईर्ष्या वह व्यक्ति करता है जो स्वयं तो अमुक कार्य करने में असमर्थ है और को देख-देखकर जलता है कुढ़ता है और बेवजह अच्छे व्यक्ति की चुगली औरों के सामने करता रहता है और इसी कारण ईर्ष्यालु मनुष्य को दूसरों से द्वेष हो जाता है और स्वयं मानसिक और शारीरिक दृष्टि से रोगी बन जाता है और अन्त में जीवन को बोझ की तरह ढोता है। अब हम विचार करते हैं कि ये दोष हमारे मित्र कैसे बन सकते हैं? काम को नियंत्रण में करने के लिए महापुरुषों के जीवनचरित्र पढो, ब्रह्मचर्य की महिमा देखो, पशु-पक्षियों का उदाहरण लो। भगवान् श्रीराम व योगिराज श्रीकृष्ण जी के मर्यादित जीवन को आदर्श मानकर उनकी शिक्षाओं पर चलने का प्रयास करो। फिर देखिये कामवासना ऊर्जा में परिवर्तित होकर आपके व्यक्तित्व को कितना निखारेगी। क्रोध में जोश आता है और व्यक्ति अनहोनी कर बैठता है इसलिए जोश के साथ होश भी रखिए। फिर देखिए आपका क्रोध कितने सार्थक व रचनात्मक कार्य करेगा। यह बात सच होगी कि लोभ व मोह के बिना सांसारिक कार्य नहीं चलते, लेकिन अधिकता तो दुःख का कारण होती है। कहा जाता है कि excess of every thing is bad यदि भोजन भी जरूरत से ज्यादा करेंगे तो अहितकर होगा। जन सामान्य अति मोह के कारण अपने बच्चों को बिगाड़ लेते हैं और फिर पछताते हैं। अति लोभ के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा भी धूमिल होती है।

ईर्ष्या और द्वेष को कैसे रोका जा सकता है-महर्षि दयानन्द जी अमरग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश'' के चौथे समुल्लास गृहस्थ आश्रम में लिखते हैं कि व्यक्ति को स्वयं से अधिक धनवान् बलवान् व सुखी आदमी को देखकर प्रसन्न होना चाहिए और समझना चाहिए कि ये सब इसके शुभ कार्यों का फल है। मुझे भी अच्छे कार्य करने चाहिएं तथा स्वयं के समान व्यक्ति से मित्रता करनी चाहिए और स्वयं से कमजोर पर दया, करुणा बरतनी चाहिए। यदि हम ऊपरलिखित सुझावों पर थोड़ा भी ध्यान देकर इनको व्यावहारिक जीवन में लायेंगे, तो अवश्य ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या व द्वेष हमारे शत्रु न रहकर मित्र बन जायेंगे और जीवन को सरलता एवं सहजता से व्यतीत करने में हमारे सहायक सिद्ध होंगे।

**-आर्य अत्तरसिंह ढाण्डा**, प्रधान गुरुकुल, धीरणवास हिसार, म०नं०-११, हिसार

# महर्षि पर बेबुनियादी आक्षेपों की वास्तविकता

लगभग एक वर्ष से श्री रामपालदास महर्षि दयानन्द की कृतियों पर अनर्गल आक्षेप लगाता आ रहा है। साथ-साथ अपने को अनपढ़ तथा अबोध लिखता रहा है। इसलिये आर्यविद्वानों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। राजा शिशुपाल की ९९ गालियों को श्रीकृष्ण महाराज ने सहन किया। १०० गालियां पूरी होने पर श्रीकृष्ण जी को शिशुपाल के विरुद्ध हथियार उठाना पड़ा। श्री रामपाल दास द्वारा सीमा का अतिक्रमण करने पर आर्य लेखकों ने कलम उठाई है। लगभग सभी आक्षेपों का उत्तर तीन लेखों द्वारा ३०-१२-२००४, ३१-१२-२००४, २-१-२००५ के 'हरिभूमि' समाचार पत्र में दिया जा चुका है। श्री रामपाल दास की पुस्तकें व विज्ञापन पढ़ने तथा लोगों द्वारा इसके संदर्भ में मिली जानकारी द्वारा यह ज्ञात होता है कि अब तक हुए पोपों में यह महापोप है। लोगों के ज्ञानार्थ निम्न अवैज्ञानिक बातें जो इनकी पुस्तकों में लिखी हैं, उन्हें प्रदर्शित किया जा रहा है।

श्री रामपाल दास उत्तर देवें तथा प्रबुद्ध जन इस तथ्य को समझें-

(१) 'गहरी नजर गीता में' पुस्तक के आरम्भ में ही 'पूर्ण परमात्माय नमः' लिखा है। बालक भी जानता है कि यह अशुद्ध है। 'पूर्णपरमात्मने नमः' शुद्ध लिखना चाहिए। (२) कविः और कबीर को समान बताकर कबीर को ईश्वर सिद्ध करना कितना अज्ञान फैलाना है। (३) दक्ष को बकरे का शिर लगाकर जीवित किया-'गहरी नजर गीता में' पृष्ठ-१४६ (४) जाली का स्वयमेव बढ़ जाना-दैनिक पत्र में श्री रामपाल दास का विज्ञापन। (५) कबीर द्वारा भैंसे से वेदमन्त्र बुलवाना-'गहरी नजर गीता में' पृष्ठ-१९५ (६) गेहूं की दो बोरी का सरसों बनाना। (७) मृतक गाय को जीवित करना-'गहरी नजर गीता में' पृष्ठ-३४८-३४९ (८) मृतक लड़के कमाल को जीवित करना-'गहरी नजर गीता में' पृष्ठ-३५० (९) मृतक लड़की कमाली को जीवित करना-'गहरी नजर गीता में' पृष्ठ-३५१ (१०) मृतक लड़के सेऊ को जीवित करना-'गहरी नजर गीता में' पृष्ठ-३५२। और भी अनेक जगह पोपलीला का अश्लीलता व विज्ञानविरुद्ध वर्णन हैं। स्थालीपुलाव न्याय से श्री रामपाल दास की पाखण्डयुक्त बातों का वर्णन यहां किया गया है। इनकी पुस्तकें इससे भी अधिक पाखण्ड तथा अन्धविश्वास से भरी हैं। कुछ भोले लोग सत्य वचन महाराज कहकर इसका अन्धानुकरण कर रहे हैं। मत-मतान्तर वालों को खण्डन-मण्डन से कोई प्रयोजन नहीं। केवल आर्यसमाज ही कुरीतियां अन्धविश्वास, पाखण्डवाद का खण्डन करता है। मेरे पाखण्ड व अल्पज्ञान पर कोई प्रहार न करे यह विचार कर श्री रामपाल दास ने महर्षि दयानन्द पर आक्षेप लगाए हैं। श्रीरामपाल दास ने आर्यसमाज के लिए पुनः शास्त्रार्थ का रास्ता खोल दिया है। श्री रामपाल दास की पुस्तकें प्राप्त कर ली गई हैं। आर्यसमाज इन पुस्तकों में वर्णित अनर्गल बातों का जनता के सम्मुख भंडाफोड़ कर रहा है व करता रहेगा।

**-आचार्य बलदेव**, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

## अनमोल वचन

१. माता-पिता-गुरु के अभ्यास कराने से ही बालक गुणी होता है, जन्म से कोई बालक पण्डित नहीं होता।
२. दूसरे के धन को हरण करना, परस्त्री से प्रेम करना, मित्रों का त्याग करना, यह तीनों नाशकारक होते हैं।
३. पॉलीथीन की थैलियों में आप गेंदा, तुलसी, मरुआ इत्यादि फूल, पौधे लगा सकते हैं। Hobby के रूप में अपनाइये।
४. शादियों पर भारी भरकम खर्च न करें, वह धन मानवता पर, असहायों पर लगाकर जीवन को सफल बना सकते हैं।

**बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।**

# महर्षि दयानन्द के मानसपुत्र : पंडित श्यामजीकृष्ण वर्मा

❑ **अशोक आर्य**, आर्य कुटीर, ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरयाणा)

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अपने जीवन के स्वर्ण को गला-गलाकर, मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने शीश हंसते-हंसते अर्पण करने वाले अनेक क्रान्तिवीरों के प्रेरणास्त्रोत, उनके पथप्रदर्शक पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा से कौन ऐसा भारतीय होगा जो अपरिचित होगा?

पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म इतिहास के चिरस्मरणीय समुज्ज्वल वर्ष १८५७, जिसमें कि भारत के प्रथम स्वातन्त्र्य समर की अग्नि-उष्णता सर्वत्र व्याप्त थी, गुजरात प्रान्त के 'मांडवी' में हुआ। यह संभवत: ईश्वरीय विधानान्तर्गत ही नियत था कि इस प्रथम स्वातंत्र्य समर में गुजरात की ही पावन धरा पर उत्पन्न, जो प्रखर राष्ट्रवादी युवा संन्यासी अतीव निकट से उक्त वातावरण के अत्यन्त समीप रहकर भविष्य के भारतीय नवजागरण की रूपरेखा का निर्धारण कर रहा था, इस बालक को कालान्तर के उसी कर्मयोगी का शिष्य बनने का गौरव प्राप्त हुआ। जी हां नि:सन्देह पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसी भव्य मूर्ति को तराशने, संवारने, प्रकाशित करने का श्रेय, अपने युग के महान् शिल्प-संस्कार-निष्णात महर्षि दयानन्द सरस्वती को प्राप्त है।

पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने जिस क्षण से महर्षि दयानन्द के दिव्य आभालोक में कदम रखा, उन्हीं के होकर रह गये। कुशाग्र मेधावी श्यामजी अनेक भाषाओं के साथ संस्कृत के भी प्रकाण्ड विद्वान् थे। गुरु-शिष्य का पत्र-व्यवहार प्राय: संस्कृत में ही होता था। श्यामजी ने कुछ वर्ष अपने गुरु के वेदभाष्य-प्रकाशन में भी सहयोग किया। महर्षि जी ने जब श्यामजी को निर्देश दिया-'**विद्वानों के मान्य, सर्वशोभायुक्त, पाखण्ड-खण्डन में अभंग उत्साही, अपनी वाक् विन्यास शैली से सर्व सज्जनों को प्रमुदित करने वाले पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा के लिए अब वैदिक धर्म के प्रचार में लग जाना श्रेयस्कर है।**' तो पंडित श्यामजी धर्मप्रचार हेतु नगर-नगर प्रवास करने लगे।

परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती की दिव्य दृष्टि ने शीघ्र ही देख लिया कि नियति ने वैदिक संस्कृति के प्रचार के अतिरिक्त भी अन्य अनेक महान् दायित्वों के निर्वहन हेतु श्याम जी को तैयार किया है तो प्रोफेसर मोनियर विलियम्स के आमन्त्रण के फलस्वरूप पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा के विदेश गमन का प्रसंग उपस्थित होने पर शिष्य ने जब गुरु से आज्ञा लेनी चाही तो महर्षि ने सहर्ष अनुमति प्रदान करते हुए लिखा कि-'**तीन वर्ष के लिए इंग्लैण्ड जाने को आपका विचार उत्तम है। मेरे विचार से यह उपयुक्त अवसर है जिसका उपयोग आप अपने और अपने देशवासियों के लिये कर सकते हैं।**'

गुरु के उपरोक्त आदेश में वह '**सब कुछ**' छिपा हुआ था जिसे पंडित श्यामजी ने पढ़ लिया और तदनुरूप अपने भावी महान् कार्यों के लिये स्वयं को तैयार करने का उपक्रम प्रारम्भ कर दिया।

मेधावी प्रतिभासम्पन्न पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की तथा वहां संस्कृत का अध्यापन भी किया। इस काल में भी महर्षि दयानन्द उन्हें अपने पत्रों में निर्देशित करते रहे कि जहां एक ओर वे योरोपीय संस्कृतज्ञों से निकटता प्राप्त कर उन्हें दिव्य वैदिक-संस्कृति से प्रभावित करें वहीं इंग्लैण्ड के राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रभाव उत्पन्न कर भारत की, उसके विदेशी शासकों के कारनामों द्वारा जो दशा हो रही है, उससे ब्रिटिश पार्लियामेंट को अवगत करावें।

पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा के इंग्लैण्ड प्रवास से महर्षि दयानन्द ने भारतोन्नति के जो स्वप्न संजोए थे इसका कुछ परिचय गुरु द्वारा शिष्य को दिये निर्देशों से होता है। भारत का भाल सदैव ऊंचा रहे अत: शिष्य को चेतावनी देते हैं-'**ध्यान रखें कि कोई ऐसा काम न हो जिससे अपने देश का ह्रास होवे।**'

महर्षि जी ने पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा को लिखा कि वे पार्लियामेंट संसद् में जाकर जहां एक ओर उन्हें आर्यावर्तीय शास्त्रानुकूल नियमों से परिचित करावें वहीं म्लेच्छ लोग जिस प्रकार भारतीय जनों को पीड़ित कर रहे हैं उससे भी अवगत करावें कि उससे जो अपने देशवासी दु:खी हैं उनके दु:ख को वे देख सकें।

महर्षि दयानन्द को पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा किस हद तक प्रिय थे यह उनके पत्रों में पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा को किये गये सम्बोधनों से पता चलता है। एक उदाहरण प्रस्तुत हैं-

स्वस्ति श्री श्रेष्ठ उपमा योग्य विद्वद्वर वैदिक धर्म के मार्ग पर परम निष्ठा वाले वेदों का लक्षण और प्रमाणों से धर्मयुक्त कर्मों के उपदेश में प्रवृत्त मनवाले इसके विरुद्ध कर्मों के उच्छेदन में प्रोत्साहित चित्तवाले उत्तम विद्वानों के आनन्द के लिए सूक्तिसमूह वाक्य अनुवाक्य प्रयुक्त वक्रता के अभ्यास वाले सर्वदा विद्या के अर्जन और दानरूप उत्तम स्वभाव वाले आर्यविद्वानों से मान प्राप्त हमारे प्रिय श्यामजी कृष्ण वर्मा के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती के आशीर्वाद! (महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र विज्ञापन भाग १, पृ० ३४९)।

इतिहास में कितने और ऐसे भाग्यशाली रहे होंगे जिनको महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे युगपुरुष से उक्त प्रकार के सम्बोधन व आत्मीयता प्राप्त हुई हो?

महर्षि जी ने इसी आत्मीयता के कारण इस परम योग्य शिष्य को अपनी उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा में मनोनीत किया था।

महर्षि दयानन्द के जीवनचरित्र और उनके वाङ्मय से प्रेरित व प्रभावित हो सहस्रों देशभक्त भारतीयों ने भारत स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया यह एक ऐतिहासिक सत्य है परन्तु पंडित श्यामजी उन विरले भाग्यशाली अनुसरणकर्त्ताओं में से है जिन्हें ऋषि के जीवनकाल में ही साक्षात् ऋषि-स्नेह की धारा एवं प्रेरणा ने सिक्त किया था। गुरु गंभीर दायित्व के निर्वहन के लिये १८९७ में भारत से विदा हो किस प्रकार इंग्लैण्ड में रहने वाले भारतीयों में देशप्रेम की भावना को विकसित करने के लिए छात्रवृत्तियां प्रदान कीं (क्रान्तिवीर विनायक दामोदर सावरकर को भी छात्रवृत्ति मिली), किस प्रकार 'दि इंडियन सोशियोलोजिस्ट' पत्र एवं इंडियन होमरूल सोसाइटी, इंडिया हाउस (यही इंडिया हाउस भारतीय देशभक्तों का मुख्यालय बना, द्रष्टव्य-स्वतंत्रता सेनानी श्री मदनलाल धींगड़ा का जीवन) के माध्यम से इंग्लैण्ड प्रवास में पश्चात् जेनेवा प्रवास में पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने सर्वात्मना भारतीय स्वतन्त्रता के लिए तन, मन, धन का होम किया। इसका वर्णन इस संक्षिप्त आलेख में संभव नहीं है।

इन त्यागी-तपस्वी, बलिदानी, सर्वमेधकर्त्ता, अनेक क्रान्तिवीरों के गुरु महामना ने वैदिक संस्कृति के केन्द्रबिन्दु 'त्याग' की भावना से अपने जीवन को ओतप्रोत कर विश्वमाता भारतभूमि की स्वतन्त्रता के लिये अहर्निश सन्नद्ध हो, तन, मन, धन का बलिदान कर ३१ मई १९३० को परमात्मा की ममतामयी गोद में अपने सुरक्षित स्थान को ग्रहण किया था। **अत एव सन् २००५ का वर्ष इस महान् ज्योति स्फुलिंग के प्रकाश से निज जीवन को ज्योतित कर भारत माँ की अस्मिता की रक्षा के लिये तिल-तिल करके जलते रहकर भी सर्वस्व समर्पित कर देने का व्रत लेने का पर्व है।** ऐसे महान् व्यक्तित्व की गौरवगाथा के लिये सहस्रों पृष्ठ भी अपर्याप्त हैं, शब्दकोष में शब्दों का भी नितान्त दारिद्र्य है और इस अकिंचन की लेखनी भी अशक्य है।

क्रान्तिवीर महान् राष्ट्रभक्त पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा का 'पुण्य हीरक स्मृति वर्ष' मनाने के प्रारम्भ हेतु उदयपुर (राज०) में अवस्थित, श्यामजी के जीवन निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती की कर्मस्थली व उनकी कालजयी कृति 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रणयन स्थली पर आगामी **२६ फरवरी से २८ फरवरी २००५ में आयोज्य दशम सत्यार्थप्रकाश महोत्सव** से सुन्दर व प्रेरक कोई अन्य स्थल व अवसर नहीं हो सकता। इसका एक हेतु और भी है कि उदयपुर से पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा का स्वयं का भी गहरा संबंध रहा है। पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने मेवाड़ नरेश महाराणा फतेहसिंह जी के कार्यकाल में लगभग दो वर्ष तक उदयपुर राज्य के दीवान के महत्त्वपूर्ण पद को सुशोभित किया। आपकी विद्वत्ता, योग्यता से अति प्रभावित महाराणा जी ने आपकी विदाई के अवसर पर कहा था-पंडित जी! आपकी सेवाओं को उदयपुर कभी नहीं भूलेगा। यहां के दीवान की जगह सदैव आपके लिए खाली रहेगी।

**इस कारण इस महान् स्मृति वर्ष के शुभारम्भ हेतु उदयपुर सर्वाधिक उपयुक्त स्थल है।** आर्यजगत् में जिस मूर्धन्य स्थान को प्राप्त करने के, पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा अधिकारी हैं उसे सुस्थापित करने के लिए विश्वभर के आर्य नर-नारियों से प्रार्थना है कि वे अधिकाधिक संख्या में २६ से २८ फरवरी २००५ में उदयपुर अवश्य पधारें। यह आलेख इसी निमित्त लिखा है।

स्वास्थ्य-चर्चा....

# मुंहासे (Acne Vulgaris)

१५ से २३ वर्ष की आयु के लड़के-लड़कियों में से कुछ एक के चेहरे के रोमकूपों के मुंह पर पिन के नोक जितनी, छोटी-छोटी पिडिकाएं अधिक मात्रा में निकली हुई दिखलाई देती हैं। सामान्य रूप से ये पिडिकाएं (फुन्सियां) चेहरे पर, नाक पर, नाक के पास, गाल पर, ठोडी पर एवं मस्तक पर मिलती हैं। कभी-कभी ये फुन्सियां छाती तथा पीठ पर भी निकल आती हैं। कभी-कभी कील या फुन्सियां सख्त गांठ जैसी प्रतीत होती हैं और इसमें पीव भी पड़ जाती हैं जो कुछ कठोर होती हैं। ये कील के रूप में निकलती हैं। ये फुन्सियां के रूप में ही चेहरे पर निकलती हैं। पीव निकल जाने के पश्चात् वहां पर व्रण चिह्न रह जाते हैं। फुन्सियों से चेहरा स्निग्ध, रूक्ष एवं विवर्ण हो जाता है। चेहरे का अपना स्वाभाविक स्वरूप बदल जाता है। कीलों के सिर की त्वचा सख्त एवं लाल हो जाती है, जिससे चेहरा कुरूप हो जाता है। चेहरे पर देखने से अनेक रोमकूप बाहर की ओर उभरे दिखते हैं। रोगी के चेहरे पर स्वेद भी अधिक होता है चेहरे पर इस विकृति के कारण रोगी में चिन्ता का लक्षण होता है। यह रोग विलम्ब से ठीक होने वाला होता है।

**कारण**-(१) कब्ज अथवा अजीर्ण रोग, (२) गर्म भोजन एवं रक्तदोष, (३) युवावस्था में अधिक कामुक विचार रखना तथा (४) इस रोग को पैदा करने वाला जीवाणु एक्नस वेसीलस (Acnes bacillus) है। इसके अतिरिक्त 'स्टेफिलोकोकस' भी सहायक रूप में होता है। (५) पुरुषों में अण्डकोषों के अन्त:स्राव और महिलाओं में डिम्ब का अन्त:स्राव एवं आहार-विहार आदि कारण भी होते हैं। (६) हस्थमैथुन भी इन पीडियों का कारण माना जाता है। (७) इस रोग की उत्पत्ति 'सीवेसियस' ग्लैण्डस के विकार के कारण तथा आटा एवं चिकना के अधिक मात्रा में सेवन करने से भी होता है। (८) प्रणालीविहीन ग्रन्थियों (Endocrine glands) का असन्तुलन भी इसका कारण हो सकता है। (९) इसके औत्पत्तिक कारणों में त्वचा में तैलीय अंश की अधिकता, कोष्ठबद्धता, सेप्टिक फोकस तथा मासिकस्राव की अनियमितता प्रधान है। (१०) विटामिन 'ए' की न्यूनता भी इस रोग का कारण प्रतीत होता है।

सभवत: जो लोग आहार अधिक लेते हैं और उसकी अपेक्षाकृत व्यायाम कम करते हैं। विशेषकर मिठाई चिकनाई जैसे खोआ, मैदा, बेसन ये अधिक लेते हैं अथवा जिनके मूत्र में अम्लियता अधिक होती है उनमें ये रोग अधिक होते देखा गया है।

**विशेष**-युवतियों में सन्तान की प्राप्ति होने पर यह रोग शान्त हो जाता है। आयुर्वेद मतानुसार कफ, वायु एवं रक्त के विकार से युवक-युवतियों के मुख विशेषत: कपोलों पर सेमल के कांटों की-सी फुन्सियां निकल जाती हैं। इन्हें युवानपीडिका या मुखदूषिका भी कहते हैं।

**निदान**-लक्षणों के आधार पर इसका निदान सुगमता से हो जाता है। इसमें नवयुवक एवं नवयुवतियों के मुख पर कीलें (फुन्सियां) निकलना इसका स्पष्ट प्रमाण है। हलके ढंग के मुंहासे में दानों का मुंह नुकीला होता है और दबाने पर उनमें से चर्बीयुक्त कीलें निकलती हैं। कभी-कभी हल्का-सा रक्त भी आता है। आगे चलकर यह बहुत सख्त हो जाती हैं और उनमें पीव पड़ जाती है।

**विभेदक निदान**-(१) ब्रोमाइड, आयोडाइड एवं रोजेसिया से उत्पन्न इनके (विषाक्त प्रभाव) से इनका निदान करना चाहिए। विभेदक परीक्षा करने पर ये देखने को मिलता है कि इनके मुख पर काली घुण्डी नहीं होती। उपरोक्त कैमिकलों का प्रभाव लेबोरेटरी एवं इनकी फक्टिरियों में काम करने वालों पर प्रभाव होता है।

(२) गोण उपदंश जनमुंहासों (Seconeary syphilitic Acne) से भेद करने के लिए रक्त परीक्षा (Serological test) से पर्याप्त सहायता मिलती है।

पूर्वानुमान-यह देखने में आया है कि कुछ रोगियों में पीव निकलने के बाद वहां पर व्रण अथवा धब्बे रह जाते हैं जिससे चेहरा कुरूप हो जाता है। इसकी सफल चिकित्सा अगले लेख में देंगे।

-स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, योगस्थली आश्रम, महेन्द्रगढ़

## ईश्वर-वन्दना

टेक-भगवान् की महिमा का, गुणगान करके देखो।
जिसने जगत् रचा है, उसे ध्यान करके देखो॥
भगवान् की महिमा का..........।

१. कण-कण में बस रहा है, जीवों का नाथ है वो,
उस जैसा नहीं है कोई, जग में महान् देखो।
भगवान् की महिमा का..........।

२. पर्वत ये झील नदियाँ, मन को लुभाने वाले,
उसकी दया हो जिस पर, खोलो जुबान देखो।
भगवान् की महिमा का..........।

३. सुमिरन कर प्रभु का जो साथ जाये तेरे,
वरना 'सरस' धरा पर, खाली मकान देखो।
भगवान् की महिमा का..........।

-सुरेन्द्रकुमार 'सरस', आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक

## सूचना

सर्वहितकारी के पाठकों को सूचित किया जाता है कि सर्वहितकारी का आगामी २१ और २८ तिथि का संयुक्त विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा। -सम्पादक

# आर्यसमाज का चमत्कार

एक लोकोक्ति है कि '**जादू वो जो सिर पर चढ़कर बोले**' वैदिक विचारधारा का जादू सचमुच सिर चढ़कर बोलता है। मेरे पिताजी अत्यन्त ईमानदार, सरल स्वभाव के बिलकुल अशिक्षित पुरुष थे। विकराल भीषण ग्रीष्म ऋतु में गेहूं की कटाई करते हुए भी प्रात: घर से भोजन करके तथा पानी पीकर जाते थे तो सायं घर पर आकर ही पानी पीते थे। खेत में अन्य का पानी तक नहीं पीते थे।

माताजी भी अशिक्षित भोली-भाली थी। मैं डॉ० जगदेवसिंह विद्यालङ्कार के माध्यम से आर्यसमाज में आया। वैदिक साहित्य का गहन अध्ययन किया। एक बार अमरीका से एक विद्वान् डॉ० प्रेमसहाय से सम्पर्क हुआ जो अमरीका में अध्यापकों को पढ़ाते थे। उन्होंने स्वयं लिखित पुस्तक 'हिन्दू विवाह संस्कार' प्रेषित की तथा उस पर मेरी प्रतिक्रिया चाही। मैंने दो-चार प्रश्न उसी सन्दर्भ में पूछ लिये, उत्तर नहीं दे पाये। पत्र डाला कि मैं आपकी माता जी के दर्शन हेतु आपके गांव आऊंगा यह देखने की वह कितनी महान् विदुषी है जिसकी कुक्षि से आपने जन्म लिया तथा आपके पिता जी कितने महान् विद्वान् तथा चिन्तक होंगे। वह सचमुच मेरे गांव गोयला कलां जिला झज्जर मेरी माता जी के दर्शन करने आये। इस प्रकार एक-दो और सज्जन भी इसी सन्दर्भ में दर्शन करने हेतु मेरे गांव पधारे। यह वैदिक विचारधारा का जादू नहीं तो और क्या है? मुझे अपनी माताजी पर गर्व है। मैंने समस्त जीवन अपने माता-पिता की जी भरकर सेवा की। यही मेरे जीवन की सबसे नेक कमाई है। मेरी माता श्रीमती कलावती धर्मपत्नी श्री मोलड़राम जी का दिनांक २८-१२-२००४ को ८१ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया तथा ७-१-२००५ को श्रद्धाञ्जलि यज्ञ सम्पन्न हुआ। वह बिलकुल बोलती-बोलती स्वर्ग सिधार गई। उनकी तीन पोतियां गुरुकुल लोवाकलां में अध्ययनरत हैं। दो पोते अभी छोटे हैं।

-रामकुमार आर्य, प्रधान आर्यसमाज, गोयला कलां

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१. आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद — २४ जनवरी से २८ फरवरी ०५
२. के.एल. महता दयानन्द महिला महाविद्यालय फरीदाबाद — २८ जनवरी ०५
(महात्मा कन्हैयालाल जी की पुण्यतिथि)
प्रेरणा दिवस प्रात: ८ बजे से १२ बजे तक
३. गोशाला बाबा फुल्लुसाध उचाना खुर्द जिला जीन्द — १० से १३ फरवरी ०५
४. आर्यसमाज बसई जिला गुड़गांव — ११ से १३ फरवरी ०५
५. आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव — १८ से २० फरवरी ०५
६. आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी — १२ से १३ फरवरी ०५
७. आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद जिला महेन्द्रगढ़ — १५ से १७ फरवरी ०५
८. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत — ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५
९. श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद — १८ से २० मार्च ०५
१०. आर्यसमाज रेवाड़ी — ९ से १० अप्रैल ०५
११. आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल — ११ से १३ मार्च ०५

—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

## विशेष छूट

**आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय में निम्न साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध है।**

| क्रम | पुस्तक | छूट | मूल्य |
|---|---|---|---|
| १. | धर्म-भूषण | २० प्रतिशत छूट | १०-०० |
| २. | धर्म-प्रवेशिका | | ५-०० |
| ३. | वैदिक सिद्धान्त सार | | १५-०० |
| ४. | वैदिक उपासना पद्धति | | ८-०० |
| ५. | प्राणायाम का महत्त्व | | १५-०० |
| ६. | श्रीमद्दयानन्दप्रकाश | | ५०-०० |
| ७. | पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित्र | आधे मूल्य में | १०-०० |
| ८. | हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान | | ३०-०० |
| ९. | पंजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन | | १००-०० |
| १०. | विजडम ऑफ ऋषिज | | ७२-०० |
| ११. | सरफरोशी की तमन्ना | | २०-०० |
| १२. | सत्यार्थप्रकाश | | २५-०० |
| १३. | आर्यसमाज क्या है? | | ५-०० |
| १४. | हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास | | ५-०० |
| १५. | हमारा फाजिल्का | | ५-०० |
| १६. | श्लीपद हाथी पांव चिकित्सा | | २-०० |
| १७. | शराबबन्दी शंका-समाधान | | १-०० |
| १८. | आदर्श धातु रूपावली | | ५-०० |
| १९. | ओ३म् ध्वज | | १५-०० |
| २०. | दैनिक यज्ञ प्रकाश | | २-५० |

**नोट :-**
१. अगर आप डाक से मंगवाना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड बुक पोस्ट+पैकिंग खर्च अलग से लगेगा।
२. रुपये पहले भेजने होंगे।
३. बैंक ड्राफ्ट 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम भेजें।

-सत्यवीर शास्त्री, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

# आर्य-संसार

## ...ी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

...कुल आर्यनगर (हिसार) में २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ...ा के साथ मनाया गया। प्रातः ९ बजे आचार्य आजाद मुनि द्वारा हवन किया ...जमान का स्थान डॉ० नारायणसिंह दहिया दम्पति (हिसार) ने ग्रहण किया। ...समारोह की अध्यक्षता गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पं० रामस्वरूप शास्त्री ने की। ... अखबार के वरिष्ठ पत्रकार श्री देवेन्द्र उप्पल समारोह के मुख्य अतिथि थे। ...ाओं द्वारा मुख्य अतिथि का सम्मान किया गया।

...तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन व कार्यों पर विस्तार से ...डालते हुए बताया कि इतिहास में दो उदाहरण ऐसे हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ...ात्मा गांधी जी जिन्होंने ने अपनी आत्मकथा में अपनी अच्छी व बुरी सभी ...ों का समावेश किया है। युवकों से शराब व धूम्रपान जैसी बुराइयों से दूर रहने ...ह्वान भी किया। मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र उप्पल ने छात्रों को आध्यात्मिकता के ...ड़कर वैज्ञानिक ढंग से आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने का सुझाव दिया।

**-सूरजभान आर्य**, गुरुकुल आर्यनगर (हिसार)

## पलवल में आर्य शहीद सम्मेलन सम्पन्न

...रयाणा आर्य युवक परिषद् की ओर से २६ दिसम्बर को मोहन निकेतन उच्च ...तय पलवल के प्रांगण में आर्य शहीद सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रातः ८ ...वामी धर्मानन्द जी (पानीपत) के ब्रह्मत्व में श्री पं० देशराज शुक्ल, पं० वेदप्रिय ..., पं० ओमप्रकाश शास्त्री ने बड़ी सुरीली आवाज में मन्त्रपाठ किया। श्री जगवीर ...केट ने ध्वजारोहण किया।

...आर्य शहीद सम्मेलन की अध्यक्षता होडल मार्केट कमेटी के चेयरमैन श्री शिवराम ... विद्यावाचस्पति ने की। महाशय चतरसिंह आर्य व महाशय रामचन्द्र बेधड़क के ...दायक भजन हुये। क्षेत्र में वेदप्रचार व सामाजिक कार्यों में सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को ...द् की ओर से एक शाल व स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया जिनमें महाशय ...लाल आर्य, वी.के. आर्य, रोशनलाल रावत, माता यशोदा बाई, महाशय मेघराज ..., हेतराम आर्य, चन्द्रभान विद्यार्थी, कुंवरपाल तंवर, डॉ० धर्मप्रकाश आर्य को ...नित किया गया।

... परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने कहा कि शहीदों को ...ी श्रद्धाञ्जलि यही है कि हम सब आर्य संगठित होकर भारतीय संस्कृति एवं ...यता को बचाने हेतु शराबखोरी, गोहत्या, दहेज, भ्रूणहत्या, अश्लील-प्रसारण, ...र्मिकपाखण्ड के खिलाफ जनजागरण अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लें। मुख्य ...तिथि श्री जगवीर एडवोकेट ने देश की आजादी में आर्यसमाज के योगदान की चर्चा ...ते हुए स्वामी श्रद्धानन्द, पं० रामप्रसाद बिस्मिल तथा सरदार भगतसिंह के बलिदानी ...वन पर प्रकाश डालते हुए युवकों का आह्वान किया कि शहीदों के जीवन से प्रेरणा ...कर अन्याय, भ्रष्टाचार, अभाव को मिटाकर शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिये ...र्य करें।

**-महेश अग्रवाल**, मन्त्री, हरयाणा आर्य युवक परिषद्

## स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्यसमाज सेक्टर-२२ए, चंडीगढ़ के तत्त्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान ...वस बड़े उल्लासपूर्वक मनाया गया है। इस अवसर पर आचार्य देवव्रत, गुरुकुल ...रुक्षेत्र ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बारे में बताते हुये कहा कि स्वामी जी आत्मसंकल्प ...ोर थे। जब सभी व्यक्ति डरे हुये थे एवं कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता करने को ...ोई भी व्यक्ति तैयार नहीं था तब अकेले ही अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन की ...ध्यक्षता स्वामी श्रद्धानन्द जी ने की एवं उनमें अदम्य शक्ति थी। रोल्ट एक्ट के विरुद्ध ...दर्शन में स्वामी जी ने महात्मा गांधी के साथ आन्दोलन में पूरा साथ दिया।

इसी अवसर पर न्यायमूर्ति श्री प्रीतमपाल न्यायाधीश पंजाब एवं हरयाणा हाईकोर्ट चंडीगढ़ ने अपने विचारों के माध्यम से कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वामी दयानन्द की शिक्षा पद्धति को कार्यान्वित किया, दलितों का उद्धार किया एवं शुद्धिकरण किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी में इतनी शक्ति थी कि वे मन में जिस कार्य को करने की ठान लेते थे उसको पूरा करके ही दम लेते थे। वे वीरता के लिए जिए और वीरता के लिए ही मरे। पंजाब एवं हरयाणा हाईकोर्ट के सीनियर एडवोकेट श्री गोपाल चतरथ जी ने कहा कि हमें स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि आज हम उन्हीं के दिखाए मार्ग एवं कार्यों पर चलकर जिन्दा हैं। जो देश के लिए जीता और मरता है वही सच्चा आर्यसमाजी है। यही हमारी स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

चंडीगढ़ के माननीय सांसद श्री पवन बंसल जी ने इसी अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे विचार अच्छे और श्रेष्ठ होने चाहिएं। हमें महान् पुरुषों के आदर्श और विचारों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। एम.डी.ए.वी. आदर्श विद्यालय के बच्चों ने दो गीतों के माध्यम से "श्रद्धा की प्रतिमूर्ति बने आप, श्रद्धा का प्रतिमान तुम्हें" स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी। अंत में आर्यसमाज के प्रधान श्री चन्द्रप्रकाश मलिक ने सभी का धन्यवाद किया एवं ऋषिलंगर का आयोजन किया गया।

## निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा कैंप जांच एवं इलाज

आर्यसमाज सेक्टर-२२-ए, चंडीगढ़ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा कैंप जांच एवं इलाज का आयोजन किया गया। इसी उपलक्ष्य में आँखों का निःशुल्क परीक्षण वरिष्ठ चिकित्सकों द्वारा किया गया। इस आयुर्वेदिक कैम्प में लगभग ३०० मरीजों ने आंखों का परीक्षण करवाया। इस कैम्प में मरीजों ने जांच के माध्यम से बहुत लाभ प्राप्त किया तथा दवाइयां भी निःशुल्क उपलब्ध करवाई गईं। आंखों के चश्मे मरीजों को आधे मूल्य पर उपलब्ध करवाए गए।

**-प्रधान, आर्यसमाज सेक्टर-२२-ए, चंडीगढ़**

## मेवात में लड़कियों की बिक्री रोकने हेतु राष्ट्रपति से मांग

गुड़गांव हरयाणा के मेवात क्षेत्र में गत २० वर्षों से अन्य प्रदेशों से लड़कियों को लाकर पशुओं की भांति बेचे जाने का धन्धा जोरों पर है। बदचलन व दलाल लोग लड़कियों के माता-पिता को अच्छे वर तथा घरों में शादी का झांसा सब्जबाग दिखाकर मेवात में लाकर पहले खुद दुष्कर्म करते हैं और फिर बन्धक बनाकर कई-कई मर्दों को बेचकर मोटी रकम बटोरी जाती है। ऐसी सैकड़ों पीड़ित लड़कियां भय व आतंक की मारी नारकीय जीवन जीने के लिए दर्जनों ग्रामों में मजबूर हैं।

इसी प्रकार की दिल दहला देने वाली १७-१८ वर्ष की कमसिन मुनिया का संगीन मामला उस उक्त उजागर हुआ जब मुनिया ने रोते-चिल्लाते असगर नामक दलाल पर यह इल्जाम लगाया कि वो झारखंड के कोडरमा गांव से फुसलाकर मेवात में ले आया और खुद, सम्बन्धियों तथा दूसरे लोगों से इज्जत लुटवाते हुए उसे बेचता रहा। इसकी रिपोर्ट भी गत दिवस पुन्हाना थाने में दर्ज हुई है।

गोवंश एवं संस्कृति रक्षा मंच गुड़गांव के अध्यक्ष स्वामी भक्तिस्वरूपानन्द, विहप नेता व जिला पार्षद मानसिंह राघव, आर्य वेदप्रचार मंडल प्रधान पदमचन्द आर्य ने खरीद-फरोक्त के ऐसे कई उदाहरण देते हुए पत्रकारों को बताया कि राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, महिला आयोग, मुख्यमंत्री हरयाणा के नाम प्रेषित किए गए पत्रों द्वारा मांग की है कि हरयाणा व भारत सरकार इन निर्धन-असहाय लड़कियों की बिक्री व साथ हो रहे दुष्कर्मों की जांच कराते हुए मुनिया कांड में लिप्त असगर आदि दलालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करे अन्यथा इन संगठनों को आन्दोलन व धरने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। पत्र में आगे कहा गया है कि ऐसे संवेदनशील मामलों की छानबीन करने के लिए मेवात में एक निष्पक्ष एजेंसी कायम की जाए जिससे क्षेत्र में आपसी भाईचारा बना रहे। मेवात में इन लड़कियों (महिलाओं) में अधिकांश हिन्दू लड़कियां होती हैं।

**-पदमचन्द आर्य**, प्रधान आर्य वेदप्रचार मण्डल, मेवात (गुड़गांव)

## निर्वाचन

आर्यसमाज बीकानेर जिला रेवाड़ी के वार्षिक चुनाव हेतु दिनांक २६-१२-०४ को आम सभा बुलाई गई जिसमें सर्वप्रथम दक्षिण भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में आई भयंकर प्रलयकारी समुद्री (सुनामी) लहरों द्वारा लाखों व्यक्तियों को मौत की नींद में सुला दिया गया, को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई और दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए प्रार्थना की। तत्पश्चात् वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न कर निम्न पदाधिकारियों को चुना गया-

प्रधान-मा० दयाराम आर्य, मन्त्री-प्रो० धर्मवीर आर्य, कोषाध्यक्ष-दलीपसिंह आर्य।

**-धर्मवीर आर्य**, आर्यसमाज बीकानेर जिला रेवाड़ी

## छत्तीसगढ़ में प्रथम गुरुकुल की स्थापना

प्राचीन भारतीय विद्यासभा गुरुकुल आश्रम न्यास आमसेना की ओर से देश के दक्षिण पूर्व प्रान्तों में विभिन्न स्थानों पर आर्षग्रन्थों की शिक्षा एवं उनके प्रचार-प्रसार के लिये आर्ष गुरुकुलों का संचालन किया जा रहा है। इसी शृंखला में छत्तीसगढ़ में प्रथम गुरुकुल का शिलान्यास छत्तीसगढ़ के (महासमुन्द) कोसरंगी ग्राम में प्रसिद्ध योग शिक्षक एवं योग चिकित्सक स्वामी रामदेव जी के करकमलों से प्रसिद्ध उद्योगपति श्री चौ० मित्रसेन जी आर्य की अध्यक्षता में तथा छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष श्री प्रेमप्रकाश जी पाण्डेय के मुख्यातिथ्य में पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की उपस्थिति में अत्यन्त समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ सभाओं के अधिकारियों के साथ रायपुर, दुर्ग, भिलाई के आर्यजन तथा भारी संख्या में स्थानीय जनता उपस्थित थी। गुरुकुल के निर्माणार्थ पूज्य स्वामी रामदेव जी ने ढाई लाख, स्थानीय विधायक एवं संसदीय सचिव श्री पूनम चन्द्राकर जी ने २ लाख रुपये तथा आश्रम में बिजली लगाने का वचन दिया। इसी प्रकार रायपुर एम.एम.आई. के निर्माता नरेन्द्र गोयल ने भी एक लाख रुपये देने का वचन दिया। इस प्रकार अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

**-सुदर्शनदेवार्य व्रती**, मुख्याध्यापक, गुरुकुल आश्रम आमसेना

# पर उपकार सरिस धर्म नहीं भाई

चन्द्रप्रकाश आर्य, ४२ ... करनाल-१३२००१

आर्यसमाज का छठा नियम कहता ... संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना' आज मनुष्य भौतिक उन्नति के चरम शिखर पर ... की भौतिक सुख-सुविधा में बढ़ती जा रही हैं ज्यों-ज्यों उसकी सुख-सुविधायें बढ़ती जा रही हैं, मनुष्य उतना ही स्वकेन्द्रित, ... रहा है। वह संकुचित होता जा रहा है। वह अपने तक सीमित हो गया है। दूसरों से उसे कोई मतलब नहीं। दूसरों की पीड़ा, कष्ट, दुःख, दर्द से उसे कोई प्रयोजन नहीं। उसके पास दूरदर्शन/टी.वी., रेडियो, टेलिफोन है, मोबाइल/चलभाष है। उसके पास कम्प्यूटर है, सी.डी. है, पानी साफ करने वाली मशीन है, वातानुकूलित कमरा है और अन्य अनेक सुख-सुविधायें हैं किन्तु ज्यों-ज्यों सुख के साधन बढ़ रहे हैं, मनुष्य उतना ही स्वकेन्द्रित, अपने तक सीमित होता जा रहा है। दूसरों की उन्नति, भलाई, परहित से उसे कोई प्रयोजन नहीं।

अपने आसपास समाज में सैकड़ों लोग, भूख, ठंड/गर्मी, बीमारी से पीड़ित हैं। उनके पास खाने को अन्न नहीं, वे अपना भोजन भी किसी आश्रम, मन्दिर या गुरुद्वारे में जाकर करते हैं। ठंड में पहनने/ओढ़ने को कपड़े नहीं। खुले मैदान में या झुग्गी-झोंपड़ियों में वे पड़े हैं या शहरों की मलिन बस्तियों में अथवा गांवों के गन्दे स्थानों में वे अपना डेरा जमाये हुए हैं। रोग या बीमारी के इलाज के लिए उनके पास पैसा नहीं। इसके लिए वे दूसरों के मोहताज रहते हैं। कई बार बीमारी में उचित इलाज के बिना उनके बच्चे या अन्य जन मर भी जाते हैं किन्तु कोई पूछने वाला नहीं?

गरीबी, भूख और बीमारी से वे सारा साल पीड़ित रहते हैं। उनकी कोई सुध लेने वाला नहीं? जिला प्रशासन जिला स्तर पर खुले दरबार लगाता है, जनता की शिकायतें सुनता है किन्तु इनके लिए कोई खुला दरबार नहीं? सरकार आपके द्वार पर कार्यक्रम चलाया जाता है, लोगों की कठिनाइयां हल की जाती हैं किन्तु इनके द्वार पर प्रशासन/सरकार भी नहीं पहुंचती? आपके, हमारे बच्चे स्कूलों/कालेजों में पढ़ते हैं। इंजीनियरिंग, मेडिकल कालेजों में ऊंची शिक्षा/उच्च से उच्च शिक्षा ले रहे हैं किन्तु इनके बच्चे घरों/मकानों/दुकानों आदि में झाड़ू लगाकर/सफाई करके या अन्य छोटा काम करके अपना पेट पालते हैं, पढ़ाई-लिखाई तो दूर रही। वे तो सदा के लिए मजदूर/झाड़ू-पौंछा करने वाले श्रमिक बने गए हैं। शहरों में बहुत से बच्चे/लड़के-लड़कियां/महिलायें आपको ऐसे मिल जायेंगे जो कंधे पर थैला उठाये हुए, मैले कपड़े पहने हुए रद्दी कागज टुकड़े इकट्ठे करते हुए, कूड़ा बीनते हुए या ईंधन के लिए लकड़ी इकट्ठी करते हुए मिलेंगे। इनके पास खाने को भोजन नहीं, पहनने को उचित कपड़े नहीं, पीने का पानी भी वे पड़ोस के घरों से लाकर रखते हैं। ऐसे सैकड़ों, हजारों लोग आपको मिल जायेंगे।

सबसे पहले हमें इनकी शारीरिक उन्नति/जरूरतों/आवश्यकताओं को देना होगा। अन्न, जल, वस्त्रों द्वारा इनकी सहायता करनी चाहिए। रोगी/चिकित्सा सहायता करनी चाहिए। ये लोग अपने लिए पर्याप्त भोजन/अन्न, नहीं जुटा सकते। इनके पास क्रयशक्ति/खरीददारी के लिए पैसा नहीं खरीदना इनके लिए और भी कठिन काम है। ऐसे में समाज के लोगों को चाहिए। अपनी सुख-सुविधाओं तक सीमित न रहकर ऐसे लोगों के लिए सहायता/परोपकार करना चाहिए। देने से, सहायता करने से/परोपकार से नहीं है। वेद कहता है कि सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों से दान करो।

**शतहस्तः समाहर, सहस्रहस्तः संकिर** (अथर्व० ३।२४।५)

सारी सृष्टि परोपकार में लगी हुई है। सूर्य, चन्द्र, तारे, दिन-रात निरन्तर रहे हैं। अग्नि जलकर ताप देती है। हवा और जल का कितना उपकार है। ... जीना दूभर हो जाए। इस प्रकार अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा आदि देने में लगे हुए हैं। प्राणियों का दिन-रात हित करने में लगे हुए हैं। इनके उपकार हैं, वर्णन नहीं किया जा सकता। संस्कृत के एक कवि ने कहा है परोपकार अथवा दूसरों के लिए फल देते हैं, नदियां परोपकार के लिए बहती परोपकार के लिए दूध देती हैं अपने लिए नहीं। यह मनुष्य शरीर परोपकार के दूसरों के भले के लिए है :-

**परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।**
**परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥**

यह मनुष्य जीवन केवल अपने भोग और ऐश्वर्य के लिए नहीं है। अपने सभी जीते हैं। कौवे भी चोंच मारकर अपना पेट भर लेते हैं। जीवन वही है दूसरे भी जिएं। अन्य लोगों को भी जीने की सुख-सुविधाएं मिलें। जिनमें दीन-दुःखियों तथा अभावग्रस्त लोगों को जीने का सहारा मिल सके। संस्कृत में ने कहा है :- **यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवतु।**
**वयांसि किं न कुर्वन्ति चंच्वा स्वोदरपूरणम्॥**

आज हमने, मनुष्य ने सुख को, जीवन की सुख-सुविधाओं को अपने तक कर लिया है। सारे साधन अपने लिए एकत्रित करने में लगे हुए हैं। अपने लिए एक से एक बढ़कर सुख-सुविधायें जुटाली हैं किन्तु दूसरे की हमें किंचित् भी नहीं। थोड़ा-सा भी समय नहीं। इसी कारण समाज में अनेक लोग पीड़ित हैं, हैं, अथावग्रस्त हैं। उनकी हम विभिन्न प्रकार से सहायता करके उनके कष्टों को दूर सकते हैं। अन्न, जल, वस्त्र, चिकित्सा आदि प्राथमिक साधन हैं। आवश्यकता इनकी सहायता द्वारा हम उनकी शारीरिक भलाई या उन्नति कर सकते हैं। आवश्यक है अपने सुख को विस्तृत करने की, दूसरों में बांटने की, परोपकार की। जयशंकर ने "कामायनी" में लिखा है :-

**औरों को हंसते देखो मनु, हंसो और सुख पाओ।**
**अपने सुख को विस्तृत करलो, सबको सुखी बनाओ॥**



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८१





आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक १० ७ फरवरी, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## क्या श्री रामपाल अंधविश्वासी नहीं है?

❑ प्राचार्य अभय आर्य, गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक

सतलोक आश्रम करौंथा द्वारा दैनिक पत्रों में जारी विज्ञापनों में दावा किया जाता है कि श्री रामपाल अंधविश्वास, मूर्तिपूजा आदि का विरोध करता है। यहां हम सिद्ध करेंगे कि श्री रामपाल महाअंधविश्वासी है। धर्म के नाम पर अपनी दुकानदारी चलाने के लिए उसने अंधविश्वास के विरोध का ढोंग मात्र किया है। नाम बांटने वाले इस गुरु की नाम जाप सम्बन्धी एक पुस्तक 'ब्रह्म गायत्री मन्त्र' मिली। इन्हें इतना भी ज्ञात नहीं कि गायत्री एक छन्द का नाम है जिसके आधार पर किसी मन्त्र को गायत्री मन्त्र कहा जाता है। इस पुस्तक में कहीं भी कोई गायत्री मन्त्र नहीं है। इस पर भी इस पुस्तक का नाम 'ब्रह्म गायत्री मन्त्र' है। दूसरे, पुस्तक के कवर पर लिखा है कि 'कबीर साहेब की जय'। प्रबुद्ध पाठको! 'जय' सदैव मनुष्यों की बोली जाती है। जय-पराजय का उल्लेख मनुष्यों के संदर्भ में होता है। पुराणियों ने जो अपने देवी-देवता बनाए वे उनकी जय बोलते हैं। वहीं से यह परम्परा शुरु हुई। भगवान् के संदर्भ में जयकारा मूर्तिपूजक लगाते हैं। रामपाल पंथी और स्वयं श्री रामपाल अपने कल्पित देव कबीर की जय बोलते हैं। ये पुराणियों के मौसेरे भाई होकर भी मूर्तिपूजा का विरोध करते हैं। श्री रामपाल को अपने विषय में ही ज्ञात नहीं है कि वे क्या कह रहे हैं? क्या कर रहे हैं? क्या लिख रहे हैं?

ये नाम जाप की प्रथम सीढ़ी इसे मानते हैं-

ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्
हरियम् हरियम् हरियम् हरियम्
श्रीयम् श्रीयम् श्रीयम् श्रीयम्
सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम्
सत्यम् सत्यम् सत्यम् सत्यम्

'ओ३म्' को दर्शाने के लिए इस पुस्तक में सावित्री-ब्रह्मा की तस्वीर, किलियम् को दर्शाने के लिए गणेश की तस्वीर, हरियम् को दर्शाने के लिए लक्ष्मी-विष्णु की तस्वीर, 'श्रीयम्' को दर्शाने के लिए शेरों वाली की तस्वीर, सोऽहम् को दर्शाने के लिए पार्वती-शंकर की तस्वीर तथा 'सत्यम्' के नाम पर सूर्य की तरह कुछ बनाकर सत्य पुरुष लिखा है। सबसे ऊपर कबीर साहेब सफेद दाढ़ी, मूंछ में टोपी पहने बैठे हैं। आश्चर्य! तिस पर भी ये कहते हैं कि हम मूर्तिपूजक नहीं हैं।

श्री रामपाल जी! तुम्हारा कबीर परमात्मा टोपी क्यों पहनता है? पगड़ी क्यों नहीं बांधता? आर्यों की परम्परा तो पगड़ी पहनने की है। अगर तुम कहो कि हमारा परमात्मा धर्म-निरपेक्ष है तो उसे कोई भी टोपी नहीं पहननी चाहिए या फिर अनेक सर लगाकर विभिन्न परम्पराओं के अनुसार मुसलमानों की टोपी, हिन्दुओं की पगड़ी, सिक्खों की पगड़ी, अंग्रेजी टोप पहनना चाहिए। दूसरे, आपके कबीर परमात्मा की दाढ़ी तथा मूंछें सफेद हैं जो उसकी वृद्धावस्था की द्योतक हैं। हमने तो सुना है कि परमात्मा अजर व अमर है। तुमने तो उसे जर बना दिया। यदि कबीर परमात्मा किसी औरत के गर्भ से नहीं जन्मा तो बालक रूप में क्यों आया? बड़ा होने में इतना समय क्यों नष्ट किया? इस पर भी कोई कपोल-कल्पित कहानी गढ़ दो। तुम्हारे अनुसार कबीर परमात्मा ने जन्म लिया था। क्यों जन्म लिया? तुम कहोगे कि सच्ची भक्ति का संदेश देने आया था। ऐसा तो सभी अवतारवाद को मानने वाले कहते हैं तथा अपने-अपने देवी देवताओं को श्रेष्ठ बताते हैं। लेकिन तुम्हारी ये मान्यताएं ईश्वर को जन्म लेने वाला, वृद्ध होने वाला, मरने वाला सिद्ध करती हैं। पोल खुलने के भय से तुम एक कहानी के पीछे दूसरी कहानी गढ़ते रहते हो, जो सभी मिथ्या व भ्रामक होती हैं। अतः श्री रामपाल जी अंधविश्वासियों के मौसेरे भाई हैं।

इन्होंने चारमुख वाले ब्रह्मा, हाथी के सूंड समान नाक वाले गणेश, चार भुजाओं वाले विष्णु, शेरों वाली माता, जटाजूट डमरू वाले शिव की तस्वीर बनाई है। अपने कबीर परमात्मा का भी चित्र बनवाया है तथा उसे सबसे बड़ा माना है। बड़े परमात्मा तक पहुंचने के लिए इन छोटे भगवानों को प्रसन्न करना पड़ता है। अतः श्री रामपाल जी हरियम् किलियम् श्रीयम् आदि नाम बांटते हैं। श्री रामपाल! ये नाम भी तो पुराणों से ही लिये होंगे। मूर्तिपूजा के विरोध के कारण जब पुराणियों का भय सताया होगा तो ये तस्वीर भी बनवा डाली।

इसी पुस्तक (ब्रह्म गायत्री मंत्र) के आरम्भ में लिखा है-'उपदेश प्राप्त करने वाला भक्तात्मा यह सोचेगा कि गुरु जी कह तो रहे थे कि तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमोगुण-शिव) की पूजा नहीं करनी है। मन्त्र जप उन्हीं के दिए हैं। उनके लिए निवेदन है कि यह पूजा नहीं है। हम काल के लोक में रहे हैं। यहां हमने जो सुविधा चाहियेगी वह ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि ही प्रदान करेंगे।' वाह! रामपाल जी मूर्तिपूजकों को भी पटा लिया तथा भक्तों को भी भ्रम में डाल दिया। इस लोक में सुविधा के लिए तमगुण की पूजा करनी है। वाह! रामपाल जी, तुम्हारे अनुसार तो खूब लहसून, प्याज, मांस, शराब और कुकर्म करने चाहिएं। पहले यह करो और फिर भगवान से मिलो। आपके पंथ का भी जवाब नहीं। आप पोल खुलने पर घबराते बहुत जल्दी हो। ऐसा सुनने में आया है कि जब आर्यसमाज ने तुम्हारे द्वारा गऊओं की सेवा न करने की पोल खोली तो तुमने आश्रम में गऊ रखनी शुरू कर दी। इसी तरह धीरे-धीरे एक-एक बात मानते जाओ तो आगे आने वाले पापों से बच जाओगे। तुम तो विज्ञापनों में यह भी देने लगे थे कि मैं लोगों को आर्य बना रहा हूँ। लेकिन आर्यसमाज तुम्हारे भ्रमजाल में फंसने वाला नहीं। पहले तुम खुद आर्य बनो, बाद में अन्य को बनाना। तुम्हारी मान्यताओं के अनुसार तो वैदिक धर्म हेतु बलिदान देने वाले स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, ब्र० रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय आदि स्वयं भ्रमित थे व जनता को भ्रम में डालने वाले थे। स्वामी श्रद्धानन्द, ब्र० रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय आदि स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं से प्रभावित थे। क्या वे आर्य नहीं थे? विद्यालयों, गुरुकुलों के माध्यम से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का स्वप्न देखने वाले तथा उसको क्रियान्वित करने वाले विज्ञान में महाज्ञाता पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी ओमानन्द जी आदि, क्या ये सब आर्य नहीं थे? आश्चर्य! स्वामी दयानन्द पर आक्षेप लगाने वाले महाअंधविश्वासी रामपाल आर्यों का निर्माण कर रहे हैं और वह भी सत्यार्थप्रकाश पर आक्षेप करके? श्रीरामपाल ! कभी इन भोले लोगों को 'सत्यार्थप्रकाश' का पूरा प्रसंग स्पष्ट करके भी पढ़ाया करो। तुमने ऐसा मायाजाल बिछाया है कि ये बेचारे उतना ही पढ़ते हैं जितना तुम निशान लगवाते हो। देखो! सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में नामस्मरण के विषय में लिखा है-

परमेश्वर का नाम ब्रह्म है अर्थात् परमेश्वर सबसे बड़ा है। इसी प्रकार हमें भी बड़े काम, अच्छे काम करके बड़ा बनना चाहिए। उसी प्रभु का नाम 'परमेश्वर' इसलिए है कि वह समर्थों में समर्थ है। हमें भी अपने पुरुषार्थ द्वारा शरीर बुद्धि धनादि में समर्थ होना चाहिए। वह प्रभु न्यायकारी तथा दयालु है। हमें भी कभी अधर्म में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए और सब पर दया रखनी चाहिए। वह प्रभु 'ब्रह्मा' है अर्थात् विविध जगत् के पदार्थों को बनानेहारा है। हम भी शिल्पविद्या से नाना प्रकार के पदार्थों को बनावें। वह प्रभु 'विष्णु' है अर्थात् सबमें व्यापक होकर रक्षा करता है, इसी प्रकार हम भी सब संसार में अपने आत्मा के तुल्य सुख-दुःख समझें, सबकी रक्षा करें। वह प्रभु 'रुद्र' है अर्थात् प्रलय करने वाला है। हम भी दुष्ट कर्म का प्रलय करें अर्थात्

(शेष पृष्ठ दो पर)

# आर्यसमाजों के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन

**विषय : कबीरपंथी रामपालदास द्वारा महर्षि दयानन्द की प्रतिष्ठा-हनन के विरुद्ध संघर्ष में तन-मन-धन से सहयोग करने हेतु अपील।**

आशा है आप ईश्वर-कृपा से स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

यह भी आशा है कि आप और आर्यसमाज के सदस्य श्री रामपाल दास के पीड़ादायक षड्यन्त्रपूर्ण अभियान से अवश्य परिचित होंगे।

स्वयम्भू सन्त रामपाल दास एक कबीरपंथी है जो गांव करौंथा (जिला रोहतक-हरयाणा) में "सत्यलोक आश्रम" बनाकर अपना गुरुडम चला रहा है। उसने गत एक वर्ष से, मुख्यतः तीन-चार मास से महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रतिष्ठा हनन या छवि खराब करने का अभियान चला रखा है। वह दैनिक समाचार-पत्रों में विज्ञापनों के माध्यम से महर्षि दयानन्द, उनके ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश आदि पर छलपूर्ण आक्षेप कर रहा है। कभी प्रश्न करता है, कभी आलोचना। महर्षि की भाषा को बदलकर, तोड़-मरोड़कर अपनी भाषा लिखकर छल से प्रस्तुत करता है और नाम महर्षि का देता है। वह महर्षि के सिद्धान्तों को विकृत करता है, जैसे-महर्षि साकार परमात्मा को मानते हैं, पाप क्षमा होना मानते हैं, अग्नि, वायु, आदित्य वेदप्रवक्ता ऋषियों को जड़ मानते हैं, कई परमात्मा मानते हैं आदि। इसी प्रकार त्रुटियां प्रस्तुत करके वेदभाष्य और सत्यार्थप्रकाश में संशोधन की मांग करता है, जैसे-महर्षि के लेखन में परस्पर विरोध है, महर्षि को ब्रह्म का ज्ञान नहीं था, ये ग्रन्थ गुमराह करने वाले हैं, वेदभाष्य अशुद्ध है, सत्यार्थप्रकाश में कबीर आदि सन्तों को अपशब्द कहे हैं आदि।

यह व्यक्ति संस्कृत की शिक्षा की दृष्टि से अशिक्षित है, शुद्ध हिन्दी भी लिखनी नहीं आती किन्तु स्वयं को तत्वदर्शी और जगद्गुरु लिखता है तथा ब्रह्मज्ञान देने का पाखण्ड करके भोले-भाले लोगों को लूटता है। महर्षि की प्रतिष्ठा हनन करने वाले विज्ञापनों पर अब तक यह कम से कम २०-२५ लाख रुपये खर्च कर चुका होगा। यह पैसा पाखण्ड प्रभावित भक्तों तथा अज्ञात स्रोतों से आ रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इसका मुकाबला करने का निश्चय किया है। इसके विरुद्ध आस-पास के क्षेत्र में प्रचार अभियान चलाया है। २ जनवरी २००५ को गांव करौंथा में विशाल आर्य सम्मेलन करने का कार्यक्रम बना। इसने झगड़े की आशंका बताकर रोहतक के कोर्ट से स्टे ले लिया। पैसे व पाखण्ड के बल पर प्रशासन में पहुंच बना रखी है। वहां धारा-१४४ लगवा दी। आर्यों ने हार नहीं मानी। इस सम्मेलन को उसी दिन करौंथा के साथ वाले गांव डीघल में पूरे उत्साह से आयोजित किया जिसमें ८-१० हजार की उपस्थिति थी। सभा के पत्र 'सर्वहितकारी' तथा गुरुकुल झज्जर के मासिक-पत्र 'सुधारक' का १६४ पृष्ठ का एक संयुक्तांक निकाला है जिसमें रामपालदास के सभी मिथ्या आक्षेपों का विद्वानों ने युक्तिप्रमाण से उत्तर दिया है। इसके अतिरिक्त लगभग ८-१० उत्तरात्मक विज्ञापन दैनिक समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। भविष्य में भी विज्ञापन देने की योजना है तथा आसपास बहुत से सम्मेलन करने की योजना है। प्रचार के प्रभाव से करौंथा और डीघल गांवों ने रामपालदास का गांव प्रवेश वर्जित कर दिया है।

रामपाल दास के पास पर्याप्त धन है। उसी के बल पर उसके विज्ञापन जारी हैं। आर्यसमाज तथा सभा के पास सीमित धन है। आपसे अनुरोध है कि महर्षि की प्रतिष्ठा रक्षा के इस अभियान में आप-तन-मन-धन से उदारतापूर्वक सहयोग करें क्योंकि यदि महर्षि और सत्यार्थप्रकाश की छवि खराब होती है तो आर्यसमाज की ही हानि होगी। हम आर्य ही क्या, यदि हमारे रहते हमारे धर्मग्रन्थ और धर्मगुरु का अपमान होता रहे? यह विषय एकता, शक्ति और संघर्ष का है और इसमें प्रत्येक आर्य का योगदान होना चाहिए।

आप इस सन्दर्भ में अनेक प्रकार से सहयोग दे सकते हैं :-

- इस विषय पर आयोजित सम्मेलन की सूचना मिलने पर अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर शक्ति एवं एकता का प्रदर्शन करें।
- इस संघर्ष को चलाने के लिए अधिकाधिक धनराशि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को प्रेषित करें ताकि अर्थाभाव में यह संघर्ष न रुके।
- आर्य विद्वानों द्वारा लिखे उत्तरात्मक विज्ञापन को आप दैनिक समाचार-पत्रों में प्रकाशित करायें। उसमें 'प्रायोजक' के रूप में आपकी सभा/आर्यसमाज/दानदाता का नाम प्रकाशित होगा।
- आर्य विद्वानों द्वारा लिखे लेखों को ट्रैक्ट के रूप में प्रकाशित करके वितरित किया जा रहा है। आप अपने व्यय पर कोई भी ट्रैक्ट अपने नाम से वितरणार्थ प्रकाशित करवा सकते हैं। उसे प्रचार और सम्मेलन के अवसर पर लोगों में निःशुल्क वितरित किया जायेगा।
- अन्य कोई सहयोग जो आपको उचित प्रतीत हो।

आर्यसमाज की रक्षा करनी है तो प्रत्येक आर्य को आगे आना होगा। आप आगे आयेंगे तो महर्षि की और सत्यार्थप्रकाश की प्रतिष्ठा बचेगी। आइये, अपने आर्यत्व का परिचय दीजिये और इस संघर्ष में सहयोगी बनिए। षड्यन्त्र की गंभीरता को पहचानिए।

**—आचार्य बलदेव,** प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

# आदर्श व्यक्ति में १३ गुण

आदर्श व्यक्ति सदा यथार्थ गुणों में विश्वास करता है। वह केवल आडम्बर में विश्वास नहीं करता है। जैसा भीतर है वैसा ही बाहर अपना आदर्श उपस्थित करता है। बाह्याडम्बर वाला व्यक्ति सदा असत्य का सहारा लेता है। परिणाम अच्छा नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी सफल नहीं होता है। आइये, वेद क्या मार्ग बताता है?

**ओ३म् क्षत्राहणं दाधृषिं तुभ्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम्।**
**हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः॥** (सामवेद ३३५)

वेद मन्त्र के द्वारा आदर्श व्यक्ति में १३ गुण हुआ करते हैं-

१. **सत्राहणम्**-१३ दिन से १०० दिन तक चलने वाले यज्ञ को सत्राहण यज्ञ कहते हैं। अर्थात् जो व्यक्ति यज्ञों के प्रति श्रद्धा रखता है, निरन्तर यज्ञ करता है। यज्ञ के लाभ फिर कभी लिखेंगे।

२. **दाधृषिम्**-जो वासनाओं को वश में रखता है।

३. **तुभ्रम्**-आत्म प्रेरणा देना वाला व्यक्ति। इस प्रकार स्वयं को प्रेरणा देकर आदर्श उपस्थित करता है।

४. **इन्द्रम्**-जो जितेन्द्रिय है।

५. **महान्**-जो अपने जीवन को विशाल बनाता है।

६. **अपारम्**-सदा क्रियाशील रहता है।

७. **वृषभम्**-जो शक्तिशाली होता है।

८. **सुवज्रम्**-जो सदा गतिशील रहता है।

९. **वृत्रम्**- जो ज्ञान की ओर बढ़ता है और वासनाओं को समाप्त करता है।

१०. **वाजम्**-अपने धन को सन्तोष से बांटकर खाता है। अकेला कभी नहीं खाता है।

११. **मघानि दाता**-जो धन को दान करता है।

१२. **मघवा**- दान देने से उसका धन सदा बढ़ता है और ऐसे व्यक्ति का धन सदा बढ़ता रहता है।

१३. **सुराधाः**-ऐसा व्यक्ति सदा और प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करता है। अधिक दिव्यता को प्राप्त करता है।

एक आदर्श व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता को प्राप्त करता है। जिसने अपने को आग की भट्ठी में तपा लिया है उस पर कोई लांछन नहीं लगा सकता है। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन को अत्यन्त तपा कर सीधा-सच्चा वेद मार्ग दिखाया। अतः वेद को पढ़ो और अपना जीवन सफल बनाओ। इस चकाचौंध वाले धन की अधिककामना है। सन्तोषी माता का गीत गाते हैं और असन्तोष भरा पड़ा है। परिणाम स्पष्ट है। आज बहुसंख्या में रोगी जनता है। अधिक धन पाओगे तो वैद्य, डॉक्टरों या वकीलों को दोगे। तभी तो लिखा है-

**गौ धन, गज धन, वाजीधन और रत्न धन खान।**
**जब आवे सन्तोष धन सब धन धूरि समान॥**

बन्धुओ! आज ऐसा देखने में आ रहा है, भोजन का कोई निर्धारित समय नहीं। भागते-भागते, जल्दी-जल्दी में उदर को भरा और गाड़ी पकड़ रहे हैं। न व्यायाम की चिन्ता, कहते हैं समय नहीं। जिस शरीर की सुरक्षा हेतु भोजन तथा व्यायाम आवश्यक था, सब भूल गये। आदर्श का जीवन कैसे बने? धन तो अत्यन्त निकृष्ट है। तभी तो लिखा है-

**नाव में बाढ़े पानी, घर में बाढ़े दाम।**
**दोनों हाथ उलिचिये, यही सज्जन का काम॥**

वेद कहता है-**शतहस्तः समाहर सहस्रहस्तः संकिरः।** अर्थात् सौ हाथ से धन एकत्रित कर हजार हाथों से बांट।

अतः अपना जीवन यथार्थ और आदर्शयुक्त बनाओ। यही लोकोपकार है।

**-राजपालसिंह शास्त्री,** आचार्य, एम.ए. (द्वय) ३४, चन्दन पार्क, दिल्ली-११००४२

## क्या श्री रामपाल अन्धविश्वासी...... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्हें नष्ट करें, दुष्ट कर्म करने वालों को प्रयत्न से दण्ड और सज्जनों की रक्षा करें।

इस प्रकार परमेश्वर के नामों के अर्थ जानकर परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुकूल अपने गुण-कर्म-स्वभव को करते जाना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है। श्रीं, क्लीं आदि न जाने क्या-क्या ऊल-जलूल नाम बांटने की प्रथा ढोंगियों ने शुरू की जिसका भेद भी 'सत्यार्थप्रकाश' में खुला है। 'श्रीं, क्लीं' जैसे मन्त्र बंगाल में भूत-प्रेत झाड़ने वाले देते थे व अब भी देते हैं।

अतः चाहे श्री रामपाल लाख बहाने बनाएं वे महाअंधविश्वासी हैं। उन पर 'सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास की यह उक्ति सही चरितार्थ होती है कि 'जैसे प्रेतनाथ वैसा भूतनाथ।'

रामपाल पंथ की पोल खोलने हेतु लेख पत्र-पत्रिकाओं में देते रहें। इससे हमारे भजनोपदेशकों को व उपदेशकों को रामपाल के मायाजाल की जानकारी मिलेगी तथा वे अपनी वाणी तथा लेखनी की तलवार से इसे काट कर भोले-भाले लोगों को बचा सकेंगे।

# महिला जाति का अपमान किया था कबीर ने

२२ जनवरी २००५ को दैनिक जागरण में 'कबीर वाणी' के कुछ दोहे मिले, जिनको पढ़कर पता लगा कि श्री रामपालदास गांव करौंथा में एक गढ़ बनाकर लोगों को मूर्ख बना रहा है। इस लेख में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस कबीरपन्थी गढ़ की कड़ी आलोचना की है। महिला संघ की तरफ से ये लेख लिखा जा रहा है। जब २२ जनवरी दैनिक जागरण हमने पढ़ा तो रामपाल दास की पोल खोल रखी थी। अरे! ये बात तो बिलकुल असत्य है जब नारी जाति का कबीर इतना अपमान करता था वह भगवान् किस मूर्ख ने बना दिया। (महिला संघ) महिला जाति का अपमान सहन नहीं करेगा। जब हमने कबीर के लिखे दोहे पढ़े पत्नी के प्रति अश्लीलता पढ़ी हमारी आंखों में खून उतर आया। एक जगह लिखा है-**नारी पराई आपणी, भुगत्या नरकहिं जाई।** अर्थात् अपनी पत्नी से भी नर्क मिलेगा। जब नारी से नरक मिलता है तो क्या जीने का अधिकार है हमारा? इससे अच्छा तो पैदा ही नहीं होती। जब पैदा ही नहीं होती तो सृष्टि कैसे चलती? जब सृष्टि ही न होती तो भगवान् भी नहीं होता, जब भगवान् ही नहीं होता तो कमल में पैदा हुआ कबीर की के धोंक मारेंगे। खामखा क्यों दुनिया बावली बना रखी है। एक दोहा लिखा कबीर जी महाराज ने-**नारी की झांई परत अंधा होत भुजंग। कबीरा तिनकी का गति जो नित नारी के संग॥** अर्थात् नारी की परछाई से सांप भी अन्धा हो जाता है। जो नित नारी के संग रहते हैं उनका क्या हाल होता होगा? तत्त्वदर्शी रामपाल दास ने कबीर से पूछना चाहिए था महाराज! आप तो कमल से पैदा हुए थे नारी की जरूरत नहीं पड़ी मगर हम तो नारी से पैदा हुए नारी के संग शादी हुई और घर में बहन-बेटी भी हैं। अगर आपकी बात मानकर आर-पार करदे तो घर का खड़ा नाश हो जाएगा।

अरे! महर्षि दयानन्द का क्या मुकाबला करेगा। नारी जाति को जो सम्मान दिया भूला नहीं जा सकता। उसका ऋण तो हम कई जन्मों तक भी नहीं उतार सकते। तुम्हारे जैसे मूर्खों ने लिखा है-

**ढोल, गंवार पशु, शूद्र नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥**

पैरों की जूती के समान बताया था कबीर ने। मगर कमाल कर दिया ऋषि दयानन्द ने-**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।** जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं।

**होती नहीं शादी विधवा नारी की, दुःख वा अनाथों जिसे पा रही थी, रोवे बेचारी बुरी ढाल, ना देख्या जा उनका हाल, ख्याल फिर आया उस ऋषिवर ने।** नारी जाति को जो सम्मान दिलाया, जो अधिकार दिलाया दुनिया जानती है। आज नारी पुरुषों से आगे है। खबरदार! कबीर की लिखी ऐसी घटिया पुस्तक अगर समाज को दी तो!

कितनी शर्म की बात है महाराज योगिराज श्रीकृष्ण इतने बड़े विद्वान् और चरित्रवान् थे उनके बारे में कबीरपंथी ने लिखा-जब गोपियां तालाब में नहा रही थीं तो उनके कपड़े उठाकर ले गया, जब उन्होंने अपने कपड़े मांगे तो श्रीकृष्ण ने कहा-दोनों हाथ ऊपर करके ज्यों की त्यों बाहर आ जाओ। इतनी नीचता की बात तो आवारा भी न कहे अगर कह दे तो जात-पात तै गिरज्या। फिर श्रीकृष्ण का नाम आज इतिहास में होता? चांद के कभी स्याही नहीं लगती। ऋषि दयानन्द चन्द्रमा के समान पवित्र और सूर्य के समान तेज दुनिया भर का ज्ञान भरा पड़ा था। अरे! भिरड़, ततैयों के हाथ लगाकर अपना मुंह सुजाना पड़ेगा। ढके-ढकाये ढोल पड़े रहने दो कबीर के। खालो टिक के रोटी, ना तो इस आश्रम की जगह कन्या गुरुकुल खोलना पड़ेगा, बेचारी कन्या आशीष देंगी। तुम्हारा क्या है गधे का खाया पाप न पुन्न। महिला संघ-आप सभी माताओं और बहनों को हाथ जोड़कर निवेदन करता है इस आश्रम में जाके अपने आपको बर्बाद मत करो। रामपाल दास कबीर के शिष्य हैं और कबीर नारी को जहरीला सांप बताता है। देख लेना अब किस बल ऊँट बैठेगा।

**-सुमित्रा देवी, महिला संघ प्रधान माता दरवाजा रोहतक**

# आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| | | |
|---|---|---|
| १. | गोशाला बाबा फुल्लुसाध उचाना खुर्द जिला जीन्द | १० से १३ फरवरी ०५ |
| २. | आर्यसमाज बसई जिला गुड़गांव | ११ से १३ फरवरी ०५ |
| ३. | आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव | १८ से २० फरवरी ०५ |
| ४. | आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी | १२ से १३ फरवरी ०५ |
| ५. | आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद जिला महेन्द्रगढ़ | १५ से १७ फरवरी ०५ |
| ६. | गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव | १२ से १३ मार्च ०५ |
| ७. | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| ८. | श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद | १८ से २० मार्च ०५ |
| ९. | आर्यसमाज रेवाड़ी | ९ से १० अप्रैल ०५ |
| १०. | आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल | ११ से १३ मार्च ०५ |

**—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

# समुद्री तूफान राहत हेतु अपील

प्रकृति ने एक बार फिर २६ दिसम्बर २००४ को भारत के दक्षिणी प्रान्तों तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, केरल, अंडमान निकोबार और पांडिचेरी में कहर ढाया है। हजारों लोगों की जानें सुनामी लहरों ने ले ली हैं और हजारों घर नष्ट हो गए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं प्रान्तीय आर्यवीर दल हरयाणा ने प्राकृतिक आपदा से पीड़ित मानवता की सहायता के लिए शीघ्र ही एक और जत्था चेन्नई में भेजने का निर्णय लिया है। ध्यान रहे कि एक जत्था आर्यवीर दल का २७ दिसम्बर २००४ को पहले ही चेन्नई के लिए भेजा जा चुका है।

आप सभी से निवेदन है कि आप अपनी ओर से, अपने आर्यसमाज/संस्था की ओर से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक कार्यालय अथवा स्थानीय आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं को देवें या प्रान्तीय कार्यालय आर्यवीर दल हरयाणा, आर्यसमाज शिवाजी कालोनी, रोहतक के पते पर भेजें।

कृपया सहायताराशि नकद/ड्राफ्ट द्वारा उपरोक्त पते पर भेजने का कष्ट करें। कपड़े/अन्न आदि वहीं से खरीदकर बांटने की योजना है क्योंकि यहां से सामान भेजना महंगा पड़ेगा।

निवेदक :-

**आचार्य बलदेव** प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्दमठ, रोहतक
हरयाणा

**वेदप्रकाश आर्य** महामंत्री,
सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा
कार्यालय : आर्यसमाज शिवाजी
कालोनी, रोहतक

# आर्यवीरों का अद्वितीय कार्य

२६ दिसम्बर २००४ को हुई दुःखद सुनामी घटना की जानकारी मिलते ही सार्वदेशिक सभा ने अपने आर्यवीरों का एक दल वायुयान द्वारा श्री विजेन्द्रार्य के नेतृत्व में प्रभावित क्षेत्र में भेजा। इस दल के अन्य दो सदस्य संजीव आर्य व वीरेन्द्र आर्य थे। दल ने सबसे पहले प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण किया और २९ दिसम्बर से ही तमिलनाडु सरकार से निरन्तर सम्पर्क बनाकर राहत कार्य में अपनी सेवाएं दीं। प्रभावित क्षेत्र में पूरे देश से भरपूर मात्रा में सहायता सामग्री पहुंची। सरकार ने भी प्रभावित लोगों की भरपूर सहायता की परन्तु सबसे मुख्य कार्य अब लोगों को जो बेघर हो चुके थे, उनको बसाने का था। इस कार्य को अकेली सरकार नहीं कर सकती थी। अतः पुनर्वास के कार्य को अंजाम देने के लिए सरकार ने सभी गैर सरकारी संगठनों के स्वयंसेवकों की आपातकालीन बैठक बुलाई जिसमें आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व श्री विजेन्द्र आर्यवीर ने किया। आर्यवीरों द्वारा चलाए गए राहत कार्य से तमिलनाडु सरकार के अधिकारी इतने प्रभावित थे कि मकान बनाने के कार्य में प्राथमिकता आर्यसमाज को मिली। इस कार्य को अंजाम देने के लिए आर्यवीरों ने पुम्पाहार में अपना मुख्य कार्यालय स्थापित करके नागापटिनम व वाणी गिरी जो सबसे प्रभावित क्षेत्र थे को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। प्रारम्भ में तमिलनाडु सरकार से १०० अस्थाई मकान नागापटिनम में बनाने की स्वीकृति मिली। इस कार्य को सभी आर्यवीरों व अधिकारियों ने पूरे उत्साह के साथ निश्चित समय पर पूरा किया और ७० मकान तैयार किए हैं। शेष कार्य भी युद्धस्तर पर चल रहा है।

उपरोक्त कार्य को अंजाम देने के लिए दिल्ली, हरयाणा, बैंगलोर, मध्यप्रदेश, मुम्बई, चेन्नई आदि स्थानों से निरन्तर कार्यकर्ताओं का तांता लगा हुआ है। आर्यजनता का दिल खोल खोलकर तन-मन-धन से सहयोग निरन्तर जारी है।

**-चांदसिंह आर्य, सुनामी राहत शिविर तमिलनाडु**

# सभा की रसीद बुक गुम होने के बारे में आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री चिरंजीलाल आर्य की एक रसीद बुक गुम हो गई है, जिसका विवरण इस प्रकार है-

| क्र०सं० | जारी तिथि | रसीद नं० | रसीद नं० जो काटनी शेष है | विवरण |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३-७-२००४ | अ/३०३०१-३०३५० | ३०३४८-३०३५० | तक बिन कटी तीन रसीदें |

उपर्युक्त विवरण सहित रसीद बुक उपरोक्त भजनोपदेशक से गुरुकुल कुरुक्षेत्र के वार्षिक उत्सव में गुम हो गई है जिसके बारे में उक्त महानुभाव ने सभा कार्यालय में लिखित रूप में सूचित किया है। इस रसीद बुक की बिना कटी रसीदों को अंतरंग सभा की बैठक में दिनांक २१-१२-२००४ के प्रस्ताव सं० ९ के अनुसार निरस्त करने का निर्णय किया है। अतः कोई भी आर्यसमाज/व्यक्ति इन रसीदों से कोई लेन-देन न करे। यदि कोई इनमें से रसीद काटता पाया जाये तो इसकी सूचना तत्काल सभा कार्यालय को देवें। इन रसीद बुकों से धन प्राप्ति अवैध मानी जाएगी। आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

**-सत्यवीर शास्त्री, सभामन्त्री**

# मकरसंक्रान्ति पर अथर्ववेद पारायण यज्ञ



गुरुकुल आश्रम भऊअकबरपुर में मकरसंक्रान्ति पर्व वैदिक रीत्यनुसार मनाया गया। अथर्ववेदपारायण यज्ञ की पूर्णाहुति अनेक याज्ञिकों (दम्पतियों) द्वारा की गई। गांव से अनेक धार्मिक जनों द्वारा २ मन घृत यज्ञ स्थान पर स्वयं लाया गया। बालक, जवान व बूढ़े सभी में विशेष उल्लास था। पूज्य आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में अनेक लोग यज्ञ में रुचि ले रहे हैं और दुर्व्यसनों से दूर हो रहे हैं। गुरुकुल के प्रति लोगों में विशेष लगाव बढ़ रहा है। अनेक दानवीरों ने जहां घृत, दूध, सामग्री प्रदान की वहीं रजाइयां, बाल्टी, रसोई का सामान गुरुकुल के लिए दिया। आचार्य जी के प्रभाव से ग्रामीण लोग जो आज के दिन घर के बाहर अग्नि जलाया करते उन्होंने प्रभावित होकर यजमान बन यज्ञ में आहुति डाली। हरयाणा में बड़ों को जिनको पितसरा भी कहा जाता है उनको इस दिन मनाने की प्रथा है उसे वैदिक प्रथा का विकृत रूप बताया। बड़ों को पित्तर (जीवित) कहा जाता है, सो उनकी सेवा करना आर्यों का परमधर्म है। गुरु, माता-पिता, दादा-दादी आदि की नित्य सेवा की तुलना अथर्ववेद के व्रात्य (काण्ड-१४) सूक्त। यह आर्यों का परमधर्म है। ये बातें प्रवचन होकर यहां सार्थक हो रही हैं। अन्त में देशी घी से हलवे का प्रसाद परोसा गया। -जगदेव आर्य मन्त्री

# मकरसंक्रान्ति महोत्सव एवं गोरक्षा सम्मेलन सम्पन्न

ऋषि कुल गोशाला नीमड़ीवाली (भिवानी) में १४ जनवरी २००५ को मकरसंक्रान्ति महोत्सव एवं गोरक्षा सम्मेलन विधिवत् सम्पन्न हुआ। प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक हवन किया गया। प्रातः १० बजे श्री श्यामजीत जी दूबे इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) की अध्यक्षता में गोरक्षा सम्मेलन हुआ। श्रीमती निर्मला सर्राफ भिवानी मुख्य अतिथि थीं। परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष एवं सभा के अन्तरंग सदस्य श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी नलवा, श्री सेठ वेदप्रकाश जी आर्य प्रधान आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी, श्री विद्यासागर जी प्रधान आर्यसमाज कृष्णानगर भिवानी विशिष्ट अतिथि थे।

श्री ज्ञानेन्द्र तेवतिया व चिन्तामणि शास्त्री जी के प्रेरणादायक भजन हुये। धर्मपाल जी शास्त्री भाण्डवा ने महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालते हुये बताया कि महर्षि हरयाणा में अम्बाला व रेवाड़ी में आए थे। सर्वप्रथम रेवाड़ी में राजा राव युधिष्ठिर को प्रेरणा देकर गोशाला खुलवाई। हमें भी तन-मन-धन से गोशालाओं में सहयोग करना चाहिए। मा० रामकुमार जी ने बोहरा ने साढ़े तीन लाख रुपये देकर शैड बनवाया था। आज गोशाला का संक्षिप्त परिचय दिया तथा एक वर्ष के लिए सारा चारा स्वयं देने की घोषणा की।

श्री क्रान्तिकारी जी ने मकर संक्रान्ति पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए गोकरुणानिधि का हवाला देकर गोपालन पर बल दिया। साथ में दो विधि व एक निधि को जीवन में अपनाने की अपील करते हुए गोरक्षक आचार्य बलदेव जी के हाथ मजबूत करने का सुझाव दिया। श्रीमती निर्मला सर्राफ ने बताया कि हमें श्रद्धा से गोसेवा व विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। साथ में बढ़ती हुई भ्रूणहत्या पर चिन्ता प्रकट की। इस गोरक्षा सम्मेलन में काफी संख्या में नरनारियों ने भाग लिया। शेरसिंह आर्य ने सभी विद्वानों व श्रोताओं का धन्यवाद किया। सैकड़ों लोगों ने ऋषिलंगर में भोजन किया।

-सूरजभान पटवारी नीमड़ीवाली



# आर्य केन्द्रीय सभा ने सुनामी पीड़ितों की सहायतार्थ सेवादल नागापट्टनम भेजा

आर्य केन्द्रीय सभा एवं आर्यवीर दल फरीदाबाद ने संयुक्त रूप से श्री कुलभूषण आर्य तथा श्री हरिओ३म् शिक्षक को १,६०,००० रु० (एक लाख ६० हजार रु०) की राशि देकर सुनामी पीड़ितों की सहायतार्थ तमिलनाडु राज्य के अति संवेदनशील एवं क्षतिग्रस्त क्षेत्र नागापट्टनम में भेजा है। केन्द्रीय सभा की अध्यक्षा डॉ० विमल महता ने बताया कि यह दल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार वहां पर कुटिया बनाकर पीड़ितों के पुनर्वास में सहयोग करेगा। यदि आवश्यकता हुई तो इस पुनीत कार्य हेतु दूसरा दल भी सेवार्थ भेजा जाएगा। आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री अजीत कुमार आर्य ने बताया कि दल को यज्ञोपरान्त शुभकामनाएं देकर फरीदाबाद की सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने हार्दिक विदाई दी।

-अजीतकुमार आर्य, महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद

# हार्दिक बधाई

विजय मलिक सुपुत्र डॉ० देवीसिंह मलिक निवासी लाखू बुआना (पानीपत) ने अभी हाल ही में हरयाणा सिविल सर्विसिज़ (H.C.S.) परीक्षा प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण की है। आर्यजगत् में इस बात से बड़ा उत्साह है तथा गर्व है। आर्यसमाज लाखू बुआना (पानीपत) के सभी सदस्यगण इस शुभ अवसर पर विजय मलिक एवं उसके माता-पिता को हार्दिक बधाई एवं आशीर्वाद देते हैं। श्री विजय मलिक ने हाल ही में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से एम.एस-सी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की थी तथा वे एक अच्छे खिलाड़ी भी रहे। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा गांव के ही सरकारी स्कूल से प्राप्त की थी। विजय मलिक का सारा परिवार आर्यसमाजी है। अतः आर्यसमाज के सभी सदस्यों में हर्ष की लहर है। -मा० तीर्थसिंह आर्य पत्रकार रोहतक



॥ ओ३म् ॥

## श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-363650 ( गुजरात ) दूरभाष ( 02822 ) 287756

# ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते।

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 7-8-9 मार्च, 2005 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को ऋषि जन्मस्थली टंकारा में समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

**यजुर्वेदपारायण यज्ञ :- मंगलवार, दिनांक 1 मार्च से मंगलवार, 8 मार्च 2005 तक**

**ब्रह्मा : आचार्य विद्यादेव जी एवं श्री रामदेव जी** **भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक**

**वेद प्रवचन : श्री आचार्य रामकिशोर शर्मा**

**सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री बृजमोहन मुंजाल ( प्रबन्ध निदेशक हीरो ग्रुप इण्डस्ट्रीज )**

## बोधोत्सव

**दिनांक 8-3-2005 मंगलवार को दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक**

मुख्य अतिथि : **महामहिम श्री टी.एन. चतुर्वेदी** (राज्यपाल कर्नाटक)
विशिष्ट आमंत्रित : **पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा** (प्रधान डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति)
मुख्यवक्ता : **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (सांसद), **श्री मोहन भाई कुंडारिया** (विधायक)

## कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान्

**कैप्टन देवरत्न आर्य** (प्रधान, सार्वदेशिक सभा), **स्वामी सत्यम् जी** (कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक सभा), **महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती** (बरेली), **श्रीमती शिवराजवती** (मुम्बई), **डॉ. शशिप्रभा कुमार** (रीडर-संस्कृत, जे.एन.यू.). **डॉ. रमा** (रीडर-हंसराज कालेज), **आचार्या नन्दिता शास्त्री** (वाराणसी), **श्रीमती सत्यप्रिया** (मण्डी), **आचार्य ग्यिंवदा वेदभारती** (बिजनौर), **आचार्य धारणा** (सिरोही), **आचार्या पुष्पा बहन जोशी** (पोरबन्दर), **श्रीमती रामचमेली** (दिल्ली), **श्रीमती स्नेह हाण्डा** (इन्दौर), **आचार्या सुशीला** (दाधिया), **डॉ. महेश वेदालंकार** (प्रसिद्ध वेदप्रवक्ता), **आचार्य भगवान्देव चैतन्य** (मण्डी), **इन्द्र स्वामी** (बिहार), **श्री नरेन्द्रनाथ गुप्ता** (यू.एस.ए.), **श्री विनोद शर्मा** (यू.एस.ए.), **पं० रामकिशन शर्मा** (नैरोबी), **श्री योगेश मुंजाल** (उद्योगपति दिल्ली)। इनके अतिरिक्त असंख्य विद्वान् एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित होंगे।

ट्रस्ट की गतिविधियों से आप भलीभांति परिचित ही हैं। ट्रस्ट निरन्तर वेदप्रचार और वैदिक साहित्य प्रकाशन में विशेष योगदान दे रहा है। ट्रस्ट द्वारा उपदेशक विद्यालय चलाया जा रहा है। एक भव्य गोशाला है। स्व० ओंकारनाथ आर्य की स्मृति में महिलाओं हेतु सिलाई-कढ़ाई केन्द्र भी संचालित है।

ऋषिभक्तों के अनुरोध पर 44 फ्लैट/कमरों/शौचालय/स्नानागार सहित एवं विश्वदर्शनीय 'यज्ञशाला', 'महर्षि दयानन्द द्वार' का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। इस वर्ष 8 आवासीय कमरों का निर्माण कार्य प्रगति पर है। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में हो रहे कार्यों हेतु एवं ऋषिलंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रासचैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय-आर्यसमाज ''अनारकली'' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर अथवा टंकारा, जिला राजकोट-363650 ( गुजरात ) को भिजवाने की कृपा करें।**

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप आर्यसमाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजने की कृपा करें और ऋषि ऋण से अनृण होकर पुण्य के भागी बनें। बाहर से आने वाले ऋषिभक्त ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लावें।

**टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

| सत्यानन्द मुंजाल | शान्तिप्रकाश बहल | रामनाथ सहगल |
|---|---|---|
| प्रधान/मैनेजिंग ट्रस्टी | कार्यकारी प्रधान | मन्त्री |

**उपकार्यालय : आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 23362110, 24693607 टेलीफैक्स : 24615195**

# बाल शिक्षा और महर्षि दयानन्द

मनुष्य पर जन्म से पूर्व ही संस्कारों द्वारा शिक्षा ग्रहण का कार्य आरम्भ हो जाता है किन्तु संसार में पदार्पण के पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'माता-पिता तथा आचार्य' स्वरूप तीन गुरुओं का वर्णन करते हुए कहा है कि यदि यह तीनों गुरु उत्तम हों तो मनुष्य निश्चित रूप से ज्ञानवान् बनेगा। तभी तो महर्षि ने कहा कि "वह कुल धन्य है। वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् है जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान् हों इनमें से भी माता के उपदेशों से शिशु का जितना उपकार होता है, वैसा अन्य किसी से नहीं होता। तभी तो माता को परम गुरु कहा गया है।" गर्भस्थ बालक पर भी माता की प्रत्येक क्रिया का प्रभाव पड़ता है। अतः गर्भाधान से लेकर बालक की शिक्षा पूर्ण होने तक माता सुशीलता का उपदेश दे। माता-पिता मादक द्रव्यों से दूर रहें तथा उत्तम पदार्थों का सेवन करें।

**माता द्वारा शिक्षा**-माता प्रत्येक बालक की प्रथम शिक्षक होती है, इसलिए-

१. सन्तानों को सभ्य बनाने के लिए माता उत्तम शिक्षा दे।
२. जब बालक बोलना आरम्भ करे तो माता उसके साथ तोतला न बोले अपितु ऐसे उपाय करे कि जिससे बालक की जिह्वा कोमल हो तथा वह साफ बोल सके।
३. बालक को ऐसी शिक्षा दें कि बालक व्यर्थ में समय नष्ट न करके जितेन्द्रिय, विद्याप्रेमी तथा सत्संग में रुचि रखने वाला बने।
४. सत्य भावना, शौर्य, धैर्य आदि से भरपूर कथाएं सुनाकर उसे भी ऐसा बनने की प्रेरणा दें।
५. पांच वर्ष की आयु में पहुँचने पर उन्हें देवनागरी अक्षर सिखायें। फिर अन्य भाषाएं सिखाएं, फिर शिक्षाप्रद मन्त्र श्लोकादि सिखाएं। इस प्रकार उसे विद्वान् व व्यवहारकुशल बनने की ओर अग्रसर करें।

**भूत-प्रेत खण्डन**-बालक को आरम्भ से ही समझा दिया जावे कि भूत-प्रेत, चुडैल आदि कुछ नहीं होता। यह केवल धूर्तों का खेल है। बीते हुए अर्थात् मृतक को भूत कहते हैं तथा जब मृतक शरीर का अन्तिम संस्कार हो जाता है तो उसे प्रेत कहते हैं।

**ज्योतिष-जन्मपत्र**-महर्षि दयानन्द सरस्वती अंक आधारित ज्योतिष के अतिरिक्त फलित ज्योतिष को ढोंगियों का पेट पालनार्थ किया जाने वाला गन्दा व्यवहार माना है। उन्होंने जन्मपत्र को भी मृत्युपत्र कहा है, क्योंकि किसी के भविष्य के विषय में कोई नहीं बता सकता। इसलिए ज्योतिष व जन्मपत्र के चक्कर में पड़कर समय व धन का दुरुपयोग करने से बचने की ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास में प्रेरणा दी है।

**मोहन-मंत्र**-ज्योतिष के समान ही मारण-मोहन, मन्त्र-तन्त्र आदि को भी मिथ्या बताते हुए कहा है कि बाल्यावस्था से ही यह बात सन्तानों को बता दें कि यह सब बातें गिरे हुए पापी लोगों की हैं, क्योंकि परमेश्वर के नियम और कर्मफल से कोई भी बच नहीं सकता।

**ब्रह्मचर्य का महत्त्व**-माता-पिता को चाहिए कि बच्चों को यह भी समझा देवें कि सुरक्षित वीर्य से ही आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ता है। इससे जीवन सुखी होता है। इसकी रक्षा में आनन्द की प्राप्ति है तथा नाश में जीवन दुःखी होता है। इसकी रक्षा के लिए विषयों की कथा तथा गन्दे लोगों का संग न करें। स्त्री-दर्शन व एकान्त से बचें। एतदर्थ उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्याप्राप्ति में ध्यान लगावें वीर्यरहित नपुंसक, कुलक्षणी होता है। प्रमेह रोग वाला दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, धैर्य-बल, साहस आदि गुणों से रहित होता है।

**माता-पिता-आचार्य**-पांच वर्ष की आयु तक माता बच्चे को शिक्षा दे क्योंकि माता का अर्थ है निर्माण करने वाली। फिर बालक माता की गोद छोड़कर पिता की अंगुली से चलता है। इस समय से आठ वर्ष की आयु तक पिता बालक को सब प्रकार के शिष्टाचार सिखावे। नवम वर्ष में बालक का उपनयन-संस्कार करवाकर पूर्ण विद्वान् गुरु के पास शिक्षार्थ भेजे।

**दण्ड**-शिक्षा में बालक को सद्बुद्धि देने के लिए यथा आवश्यक दण्ड भी दिया जावे। यह दण्ड बालक के लिए अमृत समान होता है। इससे बालक को सद्बुद्धि मिलती है। लाड़न से सन्तान के दोष बढ़ते हैं। किन्तु ताड़न से गुण बढ़ते हैं। जिस प्रकार कुम्हार घड़े को थपथपाता है ऐसे ही बच्चे को शिक्षाप्रद दण्ड दें।

**आचार्य स्वरूप शिक्षण**-आचार्य का अर्थ है आचार ग्रहण कराने वाला। अतः आचार्य ज्ञान के साथ-साथ सदाचार की शिक्षा भी देता है। वह बालक को चोरी, आलस्य, प्रमाद, मादकता का सेवन, झूठाचरण, हिंसा, ईर्ष्या, द्वेष आदि को छोड़कर सत्य के ग्रहण की शिक्षा दे तथा बताए कि सत्याचरण के बिना मृत्युपर्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होगी। मिथ्याभाषण व मिथ्या प्रतिज्ञा से हानि होती है। अतः कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। अभिमान से दूर रहें। छल-कपट व कृतघ्नता से हृदय को कष्ट होता है। अतः इससे बचना चाहिए। शान्त व मधुर वचन बोलें। क्रोध से बचें। बड़ों का आदर करें। उन्हें नमस्ते करें। माता-पिता व आचार्य की तन-मन-धन से सेवा करें। प्रभु प्रार्थना में लगे रहें। बल-वीर्य वृद्धि वाला भोजन करें। जिस जल की गहराई का पता न हो उसमें प्रवेश कभी न करें। ऊँचे-नीचे स्थान पर जाते समय नीचे देखते हुए ध्यान से चलें। जल छानकर पीयें तथा सत्य वचन बोलें और विचार पूर्ण आचरण करें।

**आचार्य की अभिमान शून्यता**-सभी विद्याओं में बालकों को पूर्ण पारंगत करने के पश्चात् आचार्य बालक को दीक्षा देते हुए कहता है कि हमारे जो-जो श्रेष्ठकर्म हैं उन्हीं का तुम सेवन करना। हमारे दोष, दुर्गुण अथवा त्रुटियों को यहीं छोड़ जाना।

**माता-पिता का मुख्यधर्म**-अविद्वान् व्यक्ति हंसों में बगुला समान विद्वानों में तिरस्कृत होता है। इसलिए माता-पिता का यही कर्तव्य है, यही मुख्य व परमधर्म है तथा उनके यश व कीर्ति का काम है कि वह अपनी सन्तानों को तन-मन-धन से विद्या-धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षा से युक्त करें। ऐसा करने से ही बालक का भविष्य उज्ज्वल होगा। राष्ट्र का उत्थान होगा तथा विश्व का कल्याण होगा।

-**डॉ० अशोक आर्य,** आर्य कुटीर, ११६ मित्र विहार
मण्डी डबवाली (हरयाणा)-१२५१०४

# राष्ट्रभाषा हिन्दी का शर्मनाक अपमान

पिछले दिनों (शनिवार ८-१-२००५) मुम्बई में हुए प्रवासी भारतीयों के सम्मेलन में हिन्दी में बोलने पर मैगसायसाय पुरस्कार से सम्मानित श्री राजेन्द्रसिंह को शर्मसार होना पड़ा तथा मंच के अध्यक्ष श्री सैमपित्रोदा (सैम पित्रोदां) ने इसके लिए विशेषरूप से क्षमायाचना की। बर्मिंघम (इंगलैंड) से आए डॉ. कृष्णकुमार द्वारा इसका विरोध करने तथा वक्ताओं को हिन्दी में बोलने की अनुमति की बात को भी श्री सैम पित्रोदा ने अस्वीकार कर दिया। क्या प्रवासी भारतीयों को हिन्दी नहीं आती? एक ओर प्रवासी भारतीय तो हिन्दी में साहित्य रचना कर रहे हैं। जून, २००३ में सूरीनाम में हुए सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर प्रवासी भारतीयों की हिन्दी रचनाओं का विशाल संकलन "विश्व हिन्दी-रचना" (भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् नई दिल्ली-२) प्रकाशित हुआ है। दूसरी ओर हम राजभाषा हिन्दी का इतना अपमान कर रहे हैं। हिन्दी को जितना खतरा अपने देश में है उतना बाहर से नहीं। महर्षि दयानन्द ने गुजराती होते हुए भी आज से लगभग १२५-३० वर्ष पूर्व अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' हिन्दी में लिखा। उन्होंने संस्कृत के विद्वान् होते हुए भी अपना वेदों का भाष्य पहली बार हिन्दी में लिखा। दूसरी ओर हम आजादी के ५७ साल बाद भी राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसका वास्तविक स्थान नहीं दिलवा पाए हैं। श्री सैम पित्रोदा को एक केन्द्रीय मंत्री का दर्जा प्राप्त है। उन्होंने राजभाषा हिन्दी का इस तरह अपमान करके देश के संविधान का अपमान किया है तथा देश की कोटि-कोटि/करोड़ों जनता की भावनाओं का अपमान किया है। भारत सरकार तथा प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह को तुरन्त इस ओर ध्यान देना चाहिए।

प्रेषक -(१) **प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य**
अध्यक्ष राजभाषा संघर्ष समिति (करनाल शाखा)
# ४३२ / सै०-८, करनाल-१३२००१
(२) **शमेश आर्य** एम.ए. (३) **श्रीमती सरोज** एम.ए. (४) **वरुण** बी.ए. (तृतीय वर्ष) तथा अन्य सदस्यगण (राजभाषा संघर्ष समिति करनाल)

## विशेष छूट

**आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय में निम्न साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध है।**

| क्रम | पुस्तक | छूट | मूल्य |
|---|---|---|---|
| १. | धर्म-भूषण | २० प्रतिशत छूट | १०-०० |
| २. | धर्म-प्रवेशिका | | ५-०० |
| ३. | वैदिक सिद्धान्त सार | | १५-०० |
| ४. | वैदिक उपासना पद्धति | | ८-०० |
| ५. | प्राणायाम का महत्त्व | | १५-०० |
| ६. | श्रीमद्दयानन्दप्रकाश | आधे मूल्य में | ५०-०० |
| ७. | पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित्र | | १०-०० |
| ८. | हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान | | ३०-०० |
| ९. | पंजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन | | १००-०० |
| १०. | विजडम ऑफ ऋषिज | | ७२-०० |
| ११. | सरफरोशी की तमन्ना | | २०-०० |
| १२. | सत्यार्थप्रकाश | | २५-०० |
| १३. | आर्यसमाज क्या है? | | ५-०० |
| १४. | हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास | | ५-०० |
| १५. | हमारा फाजिल्का | | ५-०० |
| १६. | श्लीपद हाथी पांव चिकित्सा | | २-०० |
| १७. | शराबबन्दी शंका-समाधान | | १-०० |
| १८. | आदर्श धातु रूपावली | | ५-०० |
| १९. | ओ३म् ध्वज | | १५-०० |
| २०. | दैनिक यज्ञ प्रकाश | | २-५० |

**नोट :-**
१. अगर आप डाक से मंगवाना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड बुक पोस्ट+पैकिंग खर्च अलग से लगेगा।
२. रुपये पहले भेजने होंगे।
३. बैंक ड्राफ्ट 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम भेजें।

-**सत्यवीर शास्त्री,** मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

# आर्य-संसार

## गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्ष गुरुकुल-उद्घाटन व पाखण्ड-खण्डन सम्मेलन

### १३ फरवरी वसन्त पंचमी (रविवार)

विभिन्न भाषाओं के सुयोग्य विद्वान् उपदेशक व प्रचारक तैयार करने के उद्देश्य से गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पवित्र प्रांगण में आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय के भवन का निर्माण हो चुका है जिसका उद्घाटन वसन्त पंचमी रविवार १३ फरवरी २००५ को होगा। स्वामी सत्यपति जी के शिष्य सुयोग्य विद्वान् दर्शनाचार्य श्री रवीन्द्र जी अपने गुरुकुल तिलोरा पुष्कर (राजस्थान) से शिष्यों सहित इस आर्ष गुरुकुल में स्थानान्तरण कर रहे हैं।

आर्यो! क्या आपको विदित है कि आजकल कुछ अपने आपको तत्त्वदर्शी जगद्गुरु व सन्त कहने वाले तथाकथित अज्ञानी व्यक्ति महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों पर गलत आक्षेप करके जनसामान्य को भ्रमित कर रहे हैं-इन आक्षेपों के उत्तर के साथ समाज में फैले गुरुडम, भूत-प्रेत, जादू-टोना आदि अन्धविश्वासों के निराकरण के लिए पाखण्ड-खण्डन सम्मेलन किया जाएगा। आप सबसे अनुरोध है कि परिवार व इष्टमित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ उठाएं।

**आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन**-श्री नन्दकिशोर जी शास्त्री व्यायामाचार्य एवं श्री कविराज जी योगाचार्य के नेतृत्व में विभिन्न भारतीय व्यायामों का प्रदर्शन होगा।

**सम्मेलन में पधारने वाले विद्वान् महानुभाव**-स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक, तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी, आचार्य विजयपाल जी, महात्मा वेदपाल जी आर्य, आचार्य आशुतोष जी दर्शनाचार्य, श्री आदित्यप्रकाश जी पानीपत, श्री राकेश जी जैन लुधियाना।

-**डॉ० देवव्रत प्राचार्य**, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

## बृहद् यज्ञ का आयोजन

१४ जनवरी २००५ मकर संक्रान्ति पर्व पर ग्राम भम्भेवा जिला झज्जर में २ जनवरी २००५ को डीघल ग्राम के पाखण्ड-खण्डन सम्मेलन की घोषणा के अनुसार सवामन घृत के बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। आचार्य सत्यव्रत जी आश्रम सुन्दरपुर जिला रोहतक के सान्निध्य में कई घंटों चले यज्ञ में श्री आचार्य जी ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। आचार्य जी ने गांव के समीपस्थ गांव में चल रहे कथाकथित सतलोक आश्रम करौंथा को नरकलोक की संज्ञा दी तथा ऐसे मूर्ख गुरुओं से सावधान रहने के लिए ग्रामीणों को सचेत किया। उन्होंने अपने घंटों चले उपदेश में उसके द्वारा दिए गए समाचार-पत्रों में मिथ्या प्रलापों का भी निवारण किया। आचार्य जी ने व्यंग्यात्मक शैली में ग्रामीणों को व्यापक जानकारी दी एवं बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं आर्यसमाज के लोगों ने रामपाल दास के आश्रम एवं उसकी अनैतिक गतिविधियों की सी.बी.आई. से जांच की मांग की थी। अब इस अनपढ़ जगद्गुरु ने भी सी.बी.आई. का नाम सुन लिया तथा एक समाचार-पत्र में स्वामी आत्मानन्द द्वारा लिखी संक्षिप्त गीता की जांच की बात करता है। उस अनभिज्ञ जगद्गुरु एवं स्वयंभू संत को यह नहीं मालूम कि किसी भी ग्रन्थ का सारांश लिखकर पढ़ाया जा सकता है। हरयाणा शिक्षा विभाग एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा भी गीता के कुछ अध्याय ही अपने पाठ्यक्रमों में पढ़ाए जा रहे हैं। रामायण एवं महाभारत के संक्षिप्त रूपान्तर भी राज्य सरकार के पाठ्यक्रमों में रहे हैं-क्या ये संत जी सरकारों की भी सी.बी.आई. जांच करवायेंगे?

आचार्य अभय आर्य, गुरुकुल सिंहपुरा के प्रिंसिपल एवं श्री सत्यवीर शास्त्री सभामन्त्री विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं। इन्होंने पहले भी गांव में वेदप्रचार करवाकर कृतार्थ किया। शान्तिपाठ के साथ सभा एवं यज्ञ सम्पन्न हुआ।

-**श्रीकृष्ण शास्त्री**, प्रवक्ता अंग्रेजी, मंत्री आर्यसमाज भम्भेवा, जिला झज्जर

## आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना का रजत जयन्ती महोत्सव सम्पन्न

### इस अवसर पर चार विदुषियों का अभिनन्दन किया तथा १३० ईसाइयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

गत २५, २६, २७ दिसम्बर २००४ को आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना का रजत जयन्ती महोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी संकल्पानन्द जी, महाराष्ट्र के आर्य नेता डॉ. ब्रह्ममुनि जी, परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री डॉ. धर्मवीर जी, श्री आचार्य हरिदेव जी आदि विद्वानों के साथ आर्यजगत् की प्रसिद्ध विदुषी सुश्री आचार्या मेधादेवी जी बनारस, सुश्री आचार्या सुकामा जी बिजनौर, सुश्री आचार्या निरजा जी हैदराबाद, सुश्री आचार्या वीणा वेदवादिनी जी आमसेना आदि का अभिनन्दन भी इस अवसर पर किया गया।

इसी के साथ १ दिसम्बर से चल रहे चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई तथा वैदिक धर्म से बिछुड़े १३० ईसाइयों ने पुनः वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इनको आशीर्वाद देने के लिए वैद्यनाथ भवन नागपुर के वरिष्ठ प्रबन्धक श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य पधारे थे।-**स्वामी व्रतानन्द सरस्वती (आचार्य) गुरुकुल आश्रम आमसेना**

## गोरछी (हिसार) में आर्य महासम्मेलन सम्पन्न



**गोरछी आर्य महासम्मेलन में सभाप्रधान आचार्य बलदेव जी परिषद् की स्मारिका का विमोचन करते हुए दांई ओर साथ में स्वामी धर्मानन्द, प्रधान मा० चतरसिंह आर्य, शमशेर आर्य, क्रान्तिकारी, स्वामी तेजमुनि तथा बांई ओर आचार्य विजयपाल, स्वामी सर्वदानन्द, डॉ. आर.एस. सांगवान, पं० रामस्वरूप शास्त्री, बजरंगलाल आर्य खड़े हैं।**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं हरयाणा आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में ग्राम गोरछी के राजकीय उच्च विद्यालय के मैदान में जिला स्तरीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन ९ जनवरी २००५ को किया गया। प्रातः ९ बजे पं० रामस्वरूप शास्त्री के ब्रह्मत्व में हवन किया गया। मन्त्रपाठ गुरुकुल आर्यनगर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। यज्ञ पर ११ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत लिया। जीवन में शराब व धूम्रपान न पीने का व्रत लिया। आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी ने की। मुख्य अतिथि ब्र० दीपकुमार जी योगी गुरुकुल आर्यनगर थे विशिष्ट अतिथि डॉ. आर.एस. सांगवान (सिरसा), सेठ सत्यप्रकाश मित्तल (हिसार), बृजभान मलिक एस.डी.ओ. (उमरा), डॉ. सुरेन्द्रसिंह पूनिया (सातरोड कलां) थे।

इस अवसर पर प्रो० ओमकुमार आर्य (जीन्द) ने अपने सम्बोधन में पाखण्ड और नामधारी सन्त लोगों से भ्रम में न पड़ने की सलाह दी। उन्होंने महाभारत और रामायण का उदाहरण देते हुए धर्मनीति, राजनीति, समाजनीति समझने की सलाह दी। डॉ० रणधीरसिंह सांगवान (सिरसा), उपप्रधान सभा ने युवाओं से कहा कि राजनीति दलदल में फंसने की बजाए समाजसेवा को अपनाने का सुझाव दिया। बढ़ते हुए लिंगानुपात पर चिन्ता प्रकट की। परिषद् के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य हरपाल शास्त्री ने नर-नारियों से कहा कि अगर जीवन में कुछ करना चाहते हो तो अपने जीवन व घरों में सन्ध्या-हवन को कर्तव्य कर्म समझकर अपनाओ। दिलबाग शास्त्री पूर्व आचार्य गुरुकुल कुम्भाखेड़ा ने युवकों से महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थों को पढ़ने की अपील की। पं० विश्वप्रिय शास्त्री (हिसार) ने महर्षि के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। परिषद् के संरक्षक स्वामी धर्मानन्द परिव्राजक ने सृष्टि की उत्पत्ति व आर्यसमाज का इतिहास रखा। स्वामी तेजमुनि ने कहा कि गोमाता कृषि व राष्ट्र का आधार है। अतः प्रत्येक गृहस्थी को एक गऊ घर में अवश्य पालनी चाहिए। कुमारी डॉ० दर्शनादेवी आचार्या कन्या गुरुकुल खरल ने नारी शिक्षा की वकालत करते हुए पर्दाप्रथा हटाने तथा झांसी की रानी की तरह नीडर बनने का आह्वान किया। आचार्य विजयपाल योगार्थी वरिष्ठ उपप्रधान सभा ने पत्थर पूजा का विरोध करते हुए जीवित माता-पिता की सेवा करने का सुझाव दिया। काज को भी वेदविरुद्ध बताया।

सभा अध्यक्ष आचार्य बलदेव जी ने उपस्थित जनसमूह को बताया कि पाखण्ड व अन्धविश्वास की आंधी को रोकने के लिए शंका-समाधान, शास्त्रार्थ तथा वेदप्रचार के कार्य को युद्धस्तर पर चलाना होगा। साथ में जोर देकर कहा कि विधानसभा चुनाव में गोहत्या रोकने का आश्वासन देने वाले को ही वोट दें। उन्होंने बताया कि आजादी से पहले ३०० बूचड़खाने थे। आजादी के बाद इस समय ३००० बूचड़खाने हैं। आगे कहा कि प्रत्येक राजनीतिक दल ३ मेवात क्षेत्र के विधायकों को अपने पक्ष में लेने के लिए ८७ अन्य विधायकों की उपेक्षा करते हैं। सफल सम्मेलन का आयोजन करने हेतु श्री क्रान्तिकारी व उनके साथियों का धन्यवाद किया।

-**दीपेन्द्र शास्त्री**, महामन्त्री हरयाणा आर्य युवक परिषद

## जन्म-दिवस पर बधाई

श्री आनन्ददेव (प्रवक्ता संस्कृत) आर्यनगर झज्जर ने अपने पौत्र आयुष्मान् सौरभ सुपुत्र श्री दिनेशकुमार के शुभ जन्म दिवस पर दिनांक २३ जनवरी २००५ को अपने निवासस्थान पर यज्ञ एवं सत्संग का भव्य आयोजन किया। इस सत्संग पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री आचार्य बलदेव जी महाराज, महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के आचार्य एवं संचालक श्री विजयपाल जी योगार्थी ने बालक को शुभाशीर्वाद देते हुए सामाजिक कुरीतियों एवं सभी प्रकार के पाखण्डों से दूर रहने का आह्वान किया। इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र जी, प्रिंसिपल डॉ. राजकुमार आचार्य, श्री फतेहसिंह भण्डारी एवं आर्यसमाज के सभी महानुभाव उपस्थित थे। इस अवसर पर आनन्ददेव जी शास्त्री ने पाखण्ड-खण्डन के विरोध के लिए सभा को २१०० रुपये का दान दिया। कार्यवाही का संचालन डॉ० राजकुमार आचार्य ने किया।

# १३ फरवरी वसन्त पञ्चमी पर्व

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रिय गोशाला धड़ौली

माघ शुक्ला पञ्चमी। शिविर के गर्भ में वसन्त का विकास हो चला है। चालीस दिन के बाद वसन्त अपने पूर्ण यौवन में होगा। उसका स्वागत आवश्यक है। प्रकृति ऊपर से निराश दिखाई देती हुई भी अपने अन्तर में भविष्य की मधुरता व स्वर्णिम आशा लिये हुए है। प्रकृति का अनुकरण करने के लिए हमें भी अपने मानस में मधुरता का संचार करना चाहिए। कविशिरोमणि श्री हरि ने कितना ही सुन्दर पद्य में कहा है-

**है ऋतुराज का आगमन, जल थल में छवि छाई है।**
**प्रकृति देवी नवल रंग में रंगमंच पर आई है॥**
**विरस द्रुमों ने नवल दलों से निज शृंगार बनाया है।**
**मानो श्रीवसन्त स्वागत हित रुचिर वितान बनाया है॥**
**कुसुमभार का हार पहनकर मतवाले से झूम रहे।**
**कभी-कभी वे अनुरागवश अवनि चरण को चूम रहे॥**
**सरल रसाल साल में मञ्जुल पीतमञ्जरी आई है।**
**सरसों सुमन पीत भूतल में पीताम्बरी छवि छाई है॥**
**चित्र विचित्र वेश भूषा में चित्रित मन हो जाता है।**
**नीरस हृदयों में सहसा ही प्रेम बीज बो जाता है॥**
**श्री ऋतुराज-राज की लक्ष्मी नये ढंग से आती है।**
**'श्री हरि' विश्व-रंगशाला में नये रंग दिखलाती है॥**

'आर्य पर्व पद्धति' में इस पर्व पर प्रातःकाल बृहद्यज्ञ करके इन मन्त्रों से विशेष आहुति देने का विधान किया है। यहां जिनका अर्थ भी दिया जा रहा है-

१. वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः॥
(यजु० २१/२)

**अर्थ**-वसन्त में ऋतु के साथ ही ज्ञान, कर्म व उपासना रूप तीन धागों में बंधे हुए विद्वान् लोग अपने तेज से आत्मा में शक्ति का आधान करते हैं।

२. मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामापऽओषधयः कल्पन्तामग्न्यः पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः। येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे वासन्तिकावृतूऽअभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवाऽभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्॥ (यजु० १३/२५)

**अर्थ**-'मधु' (चैत्र) और 'माधव' (वैशाख) ये दोनों वसन्त ऋतु के मास हैं। हे संवत्सर! तुम सूर्य की ज्योति से युक्त हो। यही तुम्हारी स्तुति है। इन ऋतुओं में द्यौ और पृथिवी समर्थ हों। अन्न व जल समृद्ध हों। मेरी उत्कृष्टता के लिये तेज समर्थ हों।

३. मधु वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधिः॥ (यजु० १३/३७)

**अर्थ**-ऋतुपूर्वक आचरण करने वाले मनुष्य के लिए वायु, नदियां और समस्त औषधियां मधुरता व शान्ति प्रदान करती हैं।

४. मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवँ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ (यजु० १३/२८)

**अर्थ**-हे प्रभो! हमारे लिये उषा पृथिवी के रजः कण और द्युलोक का प्रकाश सभी मधुमय बने रहें।

५. मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (यजु० १३/२९)

**अर्थ**-हमारे लिये वनस्पति, सूर्य और गौ आदि पशु मधुरता व शान्ति देने वाले हों।

इन मन्त्रों का आशय यह है-पृथिवी आदि वसु वा विद्वान् लोग दिव्यगुणों से युक्त हैं, स्तुति के योग्य हैं। ये भूत, भविष्यत्, वर्तमान इन तीनों कालों में विद्यमान वसन्त ऋतु के साथ रहने वाले हैं। ये तीक्ष्ण स्वरूप से सूर्य के प्रकाश में यज्ञ के द्वारा हवि तथा आयु को स्थापित करते हैं। प्रजाजन इनके स्वरूप को जानकर इनका संग करें और वसन्त-ऋतु के सुखों को प्राप्त करें। वसन्त-ऋतु चैत्र और वैशाख के मासों का नाम है। इस ऋतु में श्लेष्मा=कफ की वृद्धि और उष्णता की वृद्धि होनी प्रारम्भ हो जाती है। ये दोनों मास मधुरता से पूर्ण तथा मधुर फलों से युक्त सदा रहें। इसी प्रकार सूर्य, भूमि, जल और विभिन्न औषधियां मधुर होकर सुख के लिए समर्थ रहें और जो सत्य-व्यवहारों से युक्त, समान विज्ञान वाले और अग्नि के समान काल के वेत्ता विद्वान् हैं उनको ऐश्वर्यादि की प्राप्ति के लिए सब ओर प्राप्त करें। प्रकाश और अन्तरिक्ष परमात्मा के साथ प्राण के समान दृढ़ हैं वैसे ही स्त्री-पुरुष निश्चल रहकर वसन्त ऋतु में ऋतु के अनुकूल रहकर निरोग होकर सुखी रहें। वसन्तु ऋतु में हवायें सुगन्ध, मधुर, मन्द तथा शीतल चलती हैं, नदी और समुद्र मधुरतापूर्वक वर्षा करते हैं और विभिन्न प्रकार की औषधियां मधुरता से युक्त होती हैं। अतः इस ऋतु में भ्रमण करना उपयोगी है और हमारा जीवन वसन्त ऋतु की तरह मधुरतापूर्ण बने। जैसे वसन्त ऋतु में रात्रियां, दिन पार्थिव रेणु और प्रकाशादि हमारे लिये मधुर तथा विविध उत्तम औषधियां प्राप्त कराने से पालक वैसे ही हम माधुर्यादि गुण वाले होवें और वसन्त में होने वाले पदार्थों को जानकर यथार्थ में जीवनोपयोगी बनायें। वसन्तु ऋतु में वट, पीपलादि वनस्पतियां मधुरतादि गुणों वाले हो जाते हैं अर्थात् वटादि के प्रयोग से विभिन्न गर्मी के रोगों की निवृत्ति होती है। अतः वे सवास्थ्यप्रद होने के कारण हमारे लिए मधुर हैं। इनके सदुपयोग से सूर्य तथा सूर्य की किरणों से होने वाले रोगों का शमन होता है। अतः विद्वान् पुरुष वनस्पतिविज्ञान से वासन्तिक सुखों को प्राप्त करे।

**कूलन में केलिन में कछारन में कुञ्जन में,**
**क्यारिन में कलित कलीन किलकत है।**
**कहै पद्माकर परागन में पानहूं में,**
**पानन में पीक में पलाशन पंगत है।**
**द्वार में दिशान में दुनी में देश देश में,**
**देखो दीप दीपन में दीपत दिंगत है।**
**वीथिन में व्रज में नवेलिन में वेलिन में,**
**बतन में बागन में बगरो वसन्त है॥**



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक ११ १४ फरवरी, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

वेदों में ऋतु विज्ञान का महत्त्व और रहस्य पर विशेष :-

## ऋतुराज वसंत की आई बहार

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

छः ऋतुओं के क्रमशः आने-जाने तथा प्रकृति पर उनके प्रभाव तथा गुण धर्म पर चारों वेदों में बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं रहस्यपूर्ण रूप से वर्णन किया गया है। अथर्ववेद के काण्ड ६, सूक्त ५५, मन्त्र २ में छः ऋतुओं का प्रवचन इन मंत्रों के द्रष्टा ब्रह्मा ऋषि ने किया है-**ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः शरद् वर्षा स्विते नो दधात०**-ग्रीष्म, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, शरद्, वर्षा, ये छः ऋतुएं वेद में कही गई हैं। ये ऋतुएं परमात्मा की कृपा से हमारे जीवन में सदैव सुख का संचार करें। हमारे गौ आदि पशुओं तथा प्रजा पुत्रादि में भी सुखशान्ति रहे, हम ऐसे घर में बसे रहें।

सामवेद के पूर्वार्चिक मन्त्र ६१६ में छहों ऋतुओं की रमणीयता एवं सुन्दरता का वर्णन करते हुए मन्त्रद्रष्टा ऋषि वामदेव का प्रवचन-**वसन्तः इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिरः इन्नु रन्त्यः।** अर्थात् अब निश्चय से वसन्त ऋतु कितनी रमणीय है। यह फूलों की बहारवाली ऋतु सारे संसार में कितनी सुन्दर लगती है। वसन्त के बाद ग्रीष्म भी कितनी रमणीक है। इसमें सूर्य अपनी प्रचण्ड किरणों से सर्वत्र शुद्धि कर डालता है। इसी प्रकार वर्षा भी अपनी ठण्डी वर्षा की बौछारों से सर्वत्र फसलों को लहलहाती बना देती है। इसी प्रकार ही शरद्, हेमन्त, शिशिर ऋतु भी अपने-अपने समय में सभी सुन्दर एवं परम रमणीय हैं।

वर्ष भर में १२ महीने होते हैं, वर्ष के दो महीनों में एक ऋतु होती है। १. वसन्त ऋतु-चैत्र और वैशाख, २. ग्रीष्म ऋतु-जेष्ठ व आषाढ़, ३. वर्षा ऋतु-श्रावण व भाद्रपद, ४. शरद् ऋतु-आश्विन व कार्तिक, ५. हेमन्त ऋतु-मार्गशीर्ष व पौष, ६. शिशिर ऋतु-माघ व फाल्गुन में होती है। इन महीनों की ऋतुओं को स्मरण रखना चाहिए।

इसी प्रकार ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त ९५, मन्त्र ३ में वसन्तादि ऋतुओं के विवरण का उपदेश करते हुए लिखा है-**त्रीणि जाना....ऋतून् प्रशासद् विदधौ अनुष्ठु.....**इस मन्त्रभाग का अभिप्राय यह है कि सूर्य की गति ही मनुष्यों को उपदेश-सा देती प्रतीत होती है। जैसे-१. वसन्त की भांति खिले हुए चित्त-पुष्पवाला बनकर रहता है। २. ग्रीष्म की तरह से तेजस्वी बनकर रहता है। ३. वर्षा की भांति सुखों की वर्षा करने वाला बनता है। ४. शरद् ऋतु से मर्यादा का पाठ पढ़ना है इस ऋतु में जल मर्यादा में बहते हैं। ५. हेमन्त ऋतु से वृद्धि का पाठ पढ़ना है। ६. शिशिर से अत्यन्त क्रियाशील होना है। इस प्रकार सूर्य द्वारा स्थापित इन ऋतुओं को अपने जीवन में क्रियान्वित करते हुए रहन-सहन, भोजन आच्छादन का भी ध्यान रखना चाहिए। वैसे तो आपको समझने के लिए १२ महीनों का ऋतुओं में अन्तर्भाव ऐसे भी यजुर्वेद के अध्याय ३१, मन्त्र १४ के अनुसार भी जान सकते हैं। ऋतु मुख्य रूप से इस मन्त्र के अनुसार तीन भी मानी गई हैं। मन्त्र है-**यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म शरद्धविः॥** अर्थात् परमपिता परमात्मा द्वारा जब इस सृष्टि यज्ञ की रचना क्रिया आरम्भ हुई तो मानो इस सृष्टि यज्ञ में घी वसन्त, ईंधन ग्रीष्म तथा हवि-सामग्री शरद् ऋतु थी।

इसी के अनुक्रम में ऋग्वेद १, सूक्त १६४, मन्त्र २३ में-'**पंचारे चक्रे परिवर्त्तमाने**' इस वेदमन्त्र की व्याख्या में आचार्य यास्क ने हेमन्त ऋतु में शिशिर को मिलाकर लिखा है **पंचारे**-वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् तथा हेमन्त रूपी पांच अरों वाले संवत्सर चक्र में यह सारा विश्व स्थित है। किन्तु इतना सब कुछ होने पर भी समस्त भूमण्डल में समान सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के परिभ्रमण की गति से मौसम में छः प्रकार का परिवर्तन आता है।

इसी प्रकार ऋग्वेद १, १६४, मन्त्र १२ के अन्तिम वाक्य में कहा गया है-'**सप्त चक्रे षडर आहुरर्पितम्**' इस मन्त्र के अन्तिम '**षडरे**' शब्द का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं-''जिसमें छः ऋतुएं अरारूप और '**सप्त चक्रे**' सात चक्र **घूमने की परिधि विद्यमान है, उस मेघमण्डल में वाणी के विषय को तुम जानो।**''

इसी सम्बन्ध में ऋग्वेद में 'कालचक्र' का वर्णन करते हुए मन्त्र में कहा गया है-''**सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा०**'' अर्थात् यह कालचक्र (जिसमें सारे लोक व प्राणी स्थित हैं) एक चक्र का बना हुआ है। यह चक्र तीन (शरद, ग्रीष्म, वर्षारूपी) नाभियों का बना हुआ है। इसको सूर्यरूपी एक घोड़ा खींच रहा है और उसकी सात किरणें इस रथ में रस्सी के समान बंधी हुई हैं।

ऋग्वेद में इस कालचक्र के विषय में फिर कहा है-''**द्वादशारं न हि तज्जराय...**'' यह परमात्मा का चक्र निरन्तर ऋतुओं का संसार में चल रहा है, यह कभी जीर्ण नहीं होता। यह १२ मासरूपी १२ अरों का बना हुआ है। हे प्रकाश! इसमें तेरे ७२० पुत्र अर्थात् ३६० दिन व ३६० रात जोड़ा बनाकर रह रहे हैं। ऐसा ही ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १६४ में भी कहा है-''**द्वादश प्रधयश्चक्रमेकम्०**'' अर्थात् यह ऋतुओं का कालचक्र जिसमें बारह मास रूपी बारह खण्ड, शरद, वर्षा, ग्रीष्म रूप तीन ऋतुओं की तीन नाभियां व अहोरात्ररूपी ३६० अरे लगे हुए हैं, निरन्तर प्रलयपर्यन्त चलता रहेगा। इसका संचालक परमात्मा है।

अथर्ववेद का १२वां काण्ड, प्रथम सूक्त के ३६वें मन्त्र को भी पढ़ लें-''**ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः०**'' मन्त्र का आशय यह है कि परमात्मा ने सृष्टिरचना को पूर्ण कर उसको ''वसन्त'' का रूप दे दिया था। वसन्त का अर्थ है वसनीय। सृष्टि को निवास योग्य बनाने के लिए उसके समस्त ओषधि वनस्पत्यादि वस्तुओं का पूर्ण विकास होना आवश्यक था। अतः सृष्टि का इस विधि से आरम्भ पूर्ण विकसित रूप में हुआ। अतः सृष्टि का आरम्भ चैत्र मास की शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को हुआ।

यजुर्वेद के २१वें अध्याय के २३ से २८ मन्त्रों तक छः ऋतुओं के विषय में मन्त्रों के ही प्रमाण देख लें-यजुर्वेद २१ अध्याय, मन्त्र २३वां-''**वसन्तेन ऋतुना देवा०**'' यह वसन्त का वर्णन कर रहा है। २. यजुर्वेद २१-२४वां मन्त्र-''**ग्रीष्मेण ऋतुना देवा०**'' यह ग्रीष्म ऋतु के बारे में बता रहा है। ३. यजुर्वेद २१-२५, ३. ''**वर्षाभिर्ऋतुनादित्या:०**'' यह वर्षा का वर्णन सुन्दर प्रकार से कर रहा है। ४. यजु० २१-२६ ''**शारदेन ऋतुना देवा०**'' यहां शरद् ऋतु का महत्त्व वर्णन किया जा रहा है। ५. यजु० २१-२७ ''**हेमन्तेन ऋतुना देवा:०**'' इस मन्त्र में आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, विद्युत् और यज्ञ इन तैंतीस दिव्य गुणवाले देवों के विषय में विचार करना चाहिए।

इसी प्रकार अथर्ववेद के पन्द्रहवें काण्ड के चतुर्थ सूक्त में छः ऋतुओं का गान किया है। इन मन्त्रों के यहां लिखने से लेख बढ़ जायेगा। अतः आप अथर्ववेद में पढ़ें-

अब वसन्त का ही विशेष महत्त्व दर्शाना चाहिए। वैसे तो प्रत्येक ऋतु के विषय में पृथक्-पृथक् संक्षिप्त-सा महत्त्व आपके सामने प्रस्तुत कर ही दिया है। आप तो विद्वान हैं, अब स्वयमेव विचार करें।

वसन्त को ऋतुओं का राजा कहा गया है। वैसे तो सभी ऋतुएं महत्त्वपूर्ण हैं किन्तु 'वसन्त' का महत्त्व सबसे बढ़कर है। वसन्त का आगमन तो चैत्र और वैशाख महीने में होता है। यजुर्वेद के अध्याय १३, मन्त्र २५ में इसके महत्त्व एवं रहस्य का वर्णन किया गया है। जैसे कि ''**मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू०**'' अर्थात् मधुर सुगन्ध से युक्त चैत्र और माधवैः=मधुर आदि गुणों से युक्त फलों का हेतु वैशाख वसन्त के महीने हैं। इस ऋतु में श्लेष्मा-कफ की वृद्धि और उष्णता की वृद्धि होनी आरम्भ हो जाती है। ये दोनों महीने मधुरता से पूर्ण तथा मधुर फलों से लदे रहते हैं।

इन मधु-माधव महीने चैत्र-वैशाख के सम्बन्ध में यजुर्वेद के अध्याय १३ के २७,

(शेष पृष्ठ दो पर)

# बढ़ती हुई चरित्रहीनता के कारण

आचार्य बलदेव जी अध्यक्ष आर्य प्रतिनीधि सभा हरयाणा ने दुःख प्रकट करते हुये बताया कि शर्म को भी शर्म दिलाने वाली आज की बढ़ती हुई चरित्रहीनता के निम्न कष्टदायक कारण हैं :-

1. संस्कृति के नाम से विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में कुमार तथा कुमारियों के मध्य में कामवासना उत्पन्न करने वाले नृत्य करवाना। स्वर्ग समान देश को नरक बनाने का इन्हीं का उत्तरदायित्व है। देश के रक्षक कहलाने वाले नेतागण इसको रोकने के स्थान पर पारितोषिक देकर बढ़ा रहे हैं। देश पड़े गढ़े में मन्त्रियों को वाह वाह चाहिये।
2. सहशिक्षा के दुष्परिणाम देखकर अमेरिका में उसे बन्द करने के लिये योजनाएं बनाई जा रही हैं। अपने देश में प्रतिदिन सहशिक्षा बढ़ाने की योजनायें बन रही हैं। हेतु यह दिया जाता है कि सह-शिक्षा से अल्प व्यय द्वारा अधिक शिक्षा का प्रचार किया जा सकता है। रोजाना समाचार-पत्रों का बलात्कार के केसों से भरे हुये होने पर भी देश के अपयश का कोई ध्यान नहीं।
3. टेलीविजनों पर अश्लील चित्र तथा गीतों का प्रसारण। **'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः'** के फलस्वरूप सरकार को बार बार जनता के आंदोलन, इनको रोकने के लिये चलाये जाने पर भी बन्द करने के स्थान पर दूषित वातावरण करने में वृद्धि हुई है।
4. सामाजिक स्थानों, समाचार पत्रों, दूकानों, घरों में गन्दे व नंगे चित्रों को लगाना।
5. चरित्र नष्ट करने वाली गंदी पुस्तकों पर रोक न लगाना।
6. कामुकता बढ़ाने वाले, लड़के व लड़की की भी पहचान को समाप्त करने वाले फैशन की भरमार।
7. स्थान-स्थान पर फिल्मों के बड़े-बड़े गन्दे चित्रों से युक्त बड़े-बड़े पोस्टर।
8. ढोंगी गुरुओं का बहिनों तथा माताओं द्वारा पाँव दबवाना।
9. स्वाँग, नाटक, सिनेमा द्वारा अश्लीलता का प्रचार।
10. परस्पर के व्यवहार में भी पवित्र शब्दों का उच्चारण न करके माता-बहिन आदि को गाली देकर बोलना।
11. शराब तथा नशीली वस्तुओं का प्रचार।

आज का माता-पिता कहलाने वाला, दादा-दादी, मोहल्ले वाले, क्षेत्रवासी, प्रांत में रहने वाले तथा संपूर्ण देश आज के बालक तथा नौजवान की हालत देखकर, अपने जीवन को भी नरक में मानकर दुःखी हैं। सभी देश के प्रति प्रेम रखने वालो! इन लिखित कारणों को समाप्त कर देश को पूर्ववत् चरित्रवान् बनायें। इसके लिये अध्यापक, उपदेशक, समाचारपत्र, पंचायतें, साधु-महात्मा, सरकार विशेष भूमिका निभा सकते हैं।

दिनांक : ७-२-२००५ **-आचार्य बलदेव,** प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक

## जालन्धर के आर्यनेता श्री मुलखराज आर्य का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर के पूर्वमंत्री श्री मुलखराज आर्य जो कि पंजाब के प्रसिद्ध आर्यनेता थे, का ११-१-२००५ को निधन हो गया। मुझे उनके साथ कई वर्ष कार्य करने का अवसर मिला है। मैं उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय में सेवारत था। वे आर्यसमाज अड्डा होशियार जालन्धर के मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष थे। वे हिन्दीरक्षा आन्दोलन में जेल गये थे और आर्यसमाज के प्रत्येक कार्य में उत्साह से भाग लेते रहे। वे आर्यसमाज की पत्रिकाओं में लेख भी लिखते थे। पंजाब सभा के विभाजन के बाद वे मुझे जालन्धर, हरद्वार तथा दिल्ली आदि की बैठकों में प्रेम से मिलते तथा आर्यसमाज के कार्यों पर चर्चा करते थे। उनके निधन से पंजाब के आर्यसमाज को बहुत हानि हुई है। **-केदारसिंह आर्य, रोहतक**

## महाशय कर्णसिंह आर्य भी चले गये

आर्यसमाज फिरोजपुर बांगर जिला सोनीपत के संस्थापक एवं प्रधान महाशय कर्णसिंह आर्य के निधन होने का समाचार दिल्ली के पत्र आर्यजगत् में पढ़कर दुःख हुआ। हिन्दीरक्षा आन्दोलन तथा शराबबन्दी आन्दोलन में इन्होंने पूरी शक्ति के साथ कार्य किया था। उनके सुपुत्र श्री मा० सुरेन्द्रसिंह आर्य ने उनकी स्मृति में आर्य औषधालय ओचन्दी (दिल्ली) एक कमरे के निर्माण हेतु ५५०००/- का दान दिया है। **-केदारसिंह आर्य, रोहतक**

**ऋतुराज वसंत की आई बहार......** (प्रथम पृष्ठ का शेष)

२८, २९ मन्त्रों में भी वसन्त का महत्त्व एवं रहस्य बताया गया है। **''मधु वाता ऋतायते०....मधु नक्तं...मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँऽस्तु सूर्य। माध्वी गावो भवन्तु नः''** आदि मन्त्रों में वसन्त ऋतु के लाभ बताए गए हैं। जैसे इस ऋतु में वायु सुगन्ध, मधुरता लिए चलता है। इस समय अनेक प्रकार की औषधियां मधुरता लिये होती हैं। बड़, पीपल, वनस्पतियां आदि मधुरतायुक्त होती हैं। सब जगह मधुर ही मधुर है। इन्हीं यजुर्वेद के मन्त्रों के आधार पर मधु-शहद की चर्चा भी की गई है। विवाह-संस्कार के अवसर पर विवाह वेदी पर ही कन्या वर का स्वागत करते हुए ''मधुपर्क'' देती है। यह मधुपर्क तीनों मधु-शहद, घी, दही का बना होता है। इसमें मधु-शहद के गुण आयुर्वेद के अनुसार शहद-शीतल, मधुर, बलवर्धक, अग्निदीपक, बलवर्धक, पाचक दूर करता है। घृत-घी-कान्ति, तेज, बुद्धिवर्धक, शक्तिदायक, विष व पित्तनाशक है। दधि-दही-गर्म, अग्निदीपक, स्निग्ध, बलवर्धक तथा वातनाशक है। विवाह-संस्कार के आदि में ही यही शिक्षा वधू को दी गई है कि भोजन ऐसा हो, जो वात, पित्त, कफ को सम रखे। इसलिए ही वेद ने इस वसन्त ऋतु को मधु व माधव नाम दिया है।

यदि आप अधिक पढ़ना चाहें तो अथर्ववेद काण्ड ९, सूक्त ५ तथा मन्त्र ३१ से लेकर ३६ तक पढ़लें।

**वसन्त पंचमी का पर्व क्यों मनाया जाता है?**

प्राचीन कालीन आर्यावर्त भारत के वेदवक्ता ऋषि-मुनियों ने षड् ऋतुओं के महत्त्व को समझते हुए मानव जीवन पर पड़ते हुए उनके गुणों को देखकर 'वसन्त पंचमी' मनाने के पर्व को आरम्भ किया था। वे इस सुन्दर, सुखद, सुरम्य ऋतु के अनुसार अपने स्वास्थ्य का निर्माण करते थे। माघ सुदी पंचमी के दिन ही 'वसंत पंचमी' का आरम्भ हो जाता था। इसके बीच में ही फाल्गुन का मस्त महीना भी आ जाता था अब तो जाड़ा भी समाप्त-सा होगया है। शिशिर ऋतु हमसे विदाई ले रही है। सरस वसन्त ने वन-उपवन में एवं सारी ही वसुधाभर में अपने आने की घोषणा सूर्य द्वारा करवा दी है।

हिन्दी के कवि ने कितनी सुन्दर कविता में वसन्त के आगमन का स्वागत किया है-

**उन्मादित पुष्प करें लताओं से दुलार, कूके कोयल, प्रकृति करे श्रृंगार।**
**पीताम्बर-सी सरसों कहे बार-बार, लो, फिर आई वसन्त बहार॥**

**तो फिर क्या हुआ?**

**अब रजतमंजरियों से, लद गई आम्र तक की डाली।**
**झर रहे ढाक, पीपल के दल, हो उठी कोकिल मतवाली॥**

कविकुलशिरोमणि कालिदास भी वसन्त का वर्णन करते हुए अपने काव्य 'मेघदूत' में लिखते हैं-

**कुसुमजन्म ततो नवपल्लवास्तदनुषट्पदकोकिलकूजितम्।**

अर्थात् पहले फूल आते हैं, फिर पल्लव आते हैं, फिर भौंरे मण्डराते हैं और फिर कोयल अपनी मीठी आवाज से कुहू-कुहू करके कूकने लगती है, मानो वह कुहू-कुहू बोलकर कह रही हो-ओ! सृष्टि रचाने वाले तू कहां है? चारों ओर हरियाली ही हरियाली, मानो परमात्मा ने हरियाणवी खेतों में लाकर सारा 'हरयाणा' ही बसा दिया हो। खेतों में पीले फूलों से लदी सरसों, मानो वानप्रस्थी ही आकर यहां योगाभ्यास कर रहे हों। फूलों-फलों से आच्छादित लताएं, सुन्दर सुगन्धित सुवासित खिले हुए फूल उन पर अपनी प्रेयसी भौंरी से वार्तालाप करते हुए भौंरे, चारों तरफ सरसों के फूलों से शहद इकट्ठा करती मधु-मक्खियां, मानो शहद लेकर मानवमात्र के कफ की निवृत्ति करेंगी? मौज-मस्ती का आलम, यही तो है वसन्त। चारों ओर वसन्त बहार।

**वसन्त पंचमी का ऐतिहासिक महत्त्व-**

वसन्त पंचमी का ऐतिहासिक महत्त्व तब और भी बढ़ जाता है जब इसके साथ इतिहास जुड़ जाता है। जबकि इस दिन वीर बालक हकीकतराय का बलिदान हुआ था। वैदिक धर्म की रक्षा करते हुए इस धर्मवीर बालक ने चोटी-जनेऊ की रक्षार्थ अपना बलिदान दिया था। उसने कत्ल करने से पहले 'मुसब्बिर' से कहा था-

**मुसब्बिर खींच वो नक्शा जिसमें ये सफाई हो।**
**कातिल के हाथ में हो खंजर, उधर गर्दन झुकाई हो॥**

लाहौर के मुस्लिम नवाब ने उसे मुसलमान बनने के लिए समझाते हुए कहा था-

**हकीकत नाम है तेरा, नहीं समझा हकीकत को।**
**सरासर चल रहा उलटा, छोड़ राहे तरीकत को॥**
**कुफ्र को छोड़ दे और पाक करले अपनी नीयत को।**
**गुनाह धुल जायेंगे सारे, मान अहकामे शरीयत को॥**
**यहां और आकबत, दोनों जहां सुर्खरु होगा।**
**नहीं तो समझ ले, ये तलवार होगी और तू होगा॥**

हकीकत राय ने मुस्लिम नवाब की बात को अस्वीकार करते हुए कहा था-

**तुम्हारे पास खंजर है, यहां है आत्मिक-शक्ति।**
**तुम्हारे पास जन्नत है, यहां है ओ३म् की भक्ति॥**
**ये वो दिल है जिस दिल में ज्योत ईश्वर की है जगती।**
**करो तुम लाख कोशिश, जोंक पत्थर पर नहीं लगती॥**
**तुम्हें इतनी तो ताकत है कि सिर मेरे को जो कटवा दो।**
**बहादुर तुमको जब मैं जानूं, धर्म मेरा जो छुड़वा दो॥**

वधस्थल पर ले जाते हुए हकीकतराय ने नवाब को अन्तिम बार कहा था-

**जिस धर्म को छुड़ाते हो, मुझसे मियां, वह धर्म कोई किस्सा कहानी नहीं।**
**मजहब का स्त्रोता है यह धर्म, आपने इसकी असलियत पहचानी नहीं॥**

इसी प्रकार पंजाब के वीर भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव ने भी २३ मार्च १९३१ **'मेरा रंग दे वसंती चोला'** गीत गाते हुए इंकलाब जिन्दाबाद के नारे लगाते हुए इ वसन्त के अवसर पर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने बलिदान दिए। अन्त में ऋतुर वसन्त के स्वागत में-

**फाल्गुन के महीने का सुहाना परिवेश, धारे हैं लता-पुष्प वसन्ती गणवेश**
**सोती हुई कलियों को जगाकर चुपके, पहुंचाती हैं तितलियां पिया का संदेश**

... है वसन्त पंचमी ... फरवरी २००५ को यह पर्व है। बृहद् यज्ञ क

# भारत के आर्य मूलतः भारतीय हैं विदेशी नहीं

❑ रामअवतार गोयल, मकान नं० ६३०, सैक्टर-१६-ए, फरीदाबाद

भारत की सुषुप्त अस्वस्थ व्यवस्था सामाजिक व्यवस्था में, उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने एवं सत्य के हनन हेतु, कुछ स्वयंभू बुद्धिजीवियों और उनके साथ चलने और चलाने वाले वामपंथियों द्वारा एक निश्चित योजना के अधीन अत्यन्त भ्रमपूर्ण एवं प्रश्नचिह्नित मिथकों को बढावा दिया जाना, एक अद्यतन उदाहरण है, यह भ्रमित विचारधारा लगभग तीन शताब्दियों से भी अधिक समय के दुष्प्रचार का माध्यम बनाई गई है, इसका आधार अत्यंत साररहित होते हुए भी यह विचार बार-बार और निरंतर फैलाया जाता है कि भारत के आर्य इस देश के मूल निवासी नहीं थे और वे भी अन्य आततायियों तथा आक्रामकों की भाँति ही विदेशों से आकर भारत के मूल निवासियों को त्रस्त करके, उन्हें अपने अधीन लाकर, भारत में लुटेरों की भाँति राज्य करने लगे। इस धारणा अथवा मान्यता का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं होता न इसके सम्बन्ध में कोई पुष्टि या साक्ष्य ही प्राप्त है, फिर भी विदेशी विचारधारा के अधीन मानसिकदासता के कारण भारतीयों पर यह आरोप थोपा जा रहा है और उन्हें बदनाम किया जा रहा है।

**इस विषय में कुछ तथ्य इस प्रकार हैं-**

१. आर्य लोगों की सबसे प्राचीनतम मान्य, विश्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तक वेद है, यह सर्वमान्य है, वेद विश्व की सर्वप्रथम लिपिबद्ध पुस्तक है और उससे पूर्व मौखिक रूप में श्रुति द्वारा एक से दूसरे व्यक्ति को शताब्दियों तक वेद संदेश ज्ञानरूप में एक पीढी से दूसरी पीढी तक दिए जाते रहे, यदि आर्य लोग बाहर से आए थे तो जो वैदिक ज्ञान उनके द्वारा भारतवर्ष में सर्वत्र प्रकाशित किया गया था, वह ज्ञान उससे पूर्व उस विदेशी भूभाग में भी होना चाहिए था, जहाँ से आर्य लोग भारत में आए। कहा जाता है तभी तो वे भारत में आकर वेद ज्ञान फैला सकते थे, परंतु इतिहास में सारी सृष्टि में वेदों से पूर्व कोई ऐसा साहित्य अथवा ज्ञान भारत के बाहर उपलब्ध होने का पता नहीं लगता, अतः यह कैसे मान लिया जाए कि आर्य लोग विश्व के किसी अन्य भूभाग से यहाँ आकर बसे थे।

२. श्री आर.एस. शर्मा, जिन्होंने 'राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान परिषद्' (NCERT) की कक्षा ग्यारहवीं की पाठ्यपुस्तक 'प्राचीन भारत' का संपादन किया है, उसमें पृष्ठसंख्या ७० पर निम्न विचार प्रस्तुत किए हैं-''आरम्भ में आर्य लोग विश्व के दक्षिणी रूस में मध्य एशिया के किसी भूभाग के रहने वाले थे। उनके पशुओं के नाम जिनमें बकरियाँ, कुत्ते व घोड़े आदि आते हैं और कुछ वनस्पतियाँ जैसे चील व मेपेल आते हैं, वे भारतीय एवं यूरोपीय भाषाओं में एक से दिखाई देते हैं। इससे पता चलता है कि आर्य लोग नदियों और जंगलों से परिचित थे तथा यद्यपि भारत में आनेवाले आर्य अनेक पहाड़ों को पार करके भारत में आए तो भी उन पहाड़ों के कतिपय नाम आर्य भाषाओं में पाए जाते हैं।'' विद्वान् लेखक श्री आर.एस. शर्मा इससे क्या सिद्ध करना चाहते हैं, कुछ समझ में पाना कठिन है। एक-सी भाषा का प्रयोग करने वाले या बोलने वाले लोग यह आवश्यक नहीं कि एक ही पूर्वज की संतान हों। अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्पेनी, पुर्तगाली, चीनी, रूसी अथवा हिन्दीभाषी आवश्यक नहीं कि एक ही परिवार से उत्पन्न हुए हों। प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता श्री विन्सेंट ए. स्मिथ ने आक्सफोर्ड भारत के इतिहास में (पुस्तक पृष्ठसंख्या ४० संस्करण १९५७) लिखा है कि भाषा रक्त की सभ्यता का प्रमाण नहीं है 'Language is no proof of commonality of blood.'

३. अतः सरकार की भ्रमपूर्ण धारणा ऐसे मिथक को जन्म देती है कि बड़े-बड़े विद्वान् लोग मिथ्या विचारधाराओं से ग्रसित होकर उक्त भ्रम से बाहर निकलने में अपने को असमर्थ पाते हैं तथा अन्य जो इस बात से सहमत नहीं होते, उनको अज्ञानी व अंधविश्वासी समझने व कहने लगते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि ऐसे स्वयंभू विद्वान् आत्मनिरीक्षण करके देखें तो पता लगेगा कि उनकी धारणा तथ्यविहीन है। इस विषय में श्री आर.एस. शर्मा द्वारा सम्पादित (NCERT) की उपरोक्त पाठ्यपुस्तक को ही लिया जाये तो वे स्वयं पृष्ठ ७१ संस्करण जून १९९९ पर स्वीकार करते हैं कि-''सन् १५०० ई.पू. आर्य लोग भारत में दिखाई दिए पर उनके भारत में आने का कोई स्पष्ट तथा संपूर्ण विश्वसनीय तथ्य पुरातत्त्व ज्ञान द्वारा साक्ष्य नहीं होता।'' इस पर भी यह धारणा फैलाई जाए कि आर्य लोग बाहर से आए थे, केवल हास्यास्पद ही है। क्योंकि जब ये बुद्धिजीवी तथा इतिहासवेत्ता स्वयं मानते हैं कि उनके पास कोई पुरातत्त्व साक्ष्य अपने प्रस्ताव के समर्थन में मौजूद नहीं है। ऐसा लगता है कि समस्त अभियान का एक ही मूल स्रोत है कि किसी प्रकार से आर्य लोगों को अन्य हमलावरों के तुल्य रख दिया जाये और उन्हें भी आततायी श्रेणी में खड़ा किया जाये जिससे कि उनको परवर्ती शक, हूण, यूरोपियन, अरबी, ईरानी, अफगानी एवं दूसरे धर्मावलम्बियों व विदेशियों के बराबर ही समाविष्ट किया जाए।

४. हमारे इस आलेख का अभिप्राय है कि हम इस बात को भली प्रकार समझें और बिना संदेह के समझें कि आर्य लोग भारत के मूल निवासी थे और वे बाहर से नहीं आए थे। इसके विपरीत धारणा या विश्वास इतिहास विरुद्ध है तथा असत्य है। प्रश्न पैदा होता है कि क्या कारण है कि यह धारणा कि आर्य लोग बाहर से भारत में आए थे, मान्यता प्राप्त कर सकी। यह केवलमात्र कपोलकल्पना है। इस विषय में प्रस्तुत विश्लेषण से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं-

(क) आक्सफोर्ड भारत का इतिहास में पृष्ठ ३२ पर इतिहासकार विन्सेंट स्मिथ ने निम्न विचार प्रस्तुत किए हैं: ''यह प्रस्तावना कि आर्य लोग बाहर से आए थे, वे आंकता है और उन्होंने मूल भारत निवासी काले मोटी नाक वाले दस्यु लोगों को अपने अधीन कर लिया था केवल वैदिकमंत्रों के आधार पर ही रची गयी है।''

(ख) इसी पुस्तक के पृष्ठ ५३ में यही विद्वान् लिखते हैं कि ''यह मानी हुई धारणा कि आर्य लोग मध्य एशिया से भारत में आए, ऋग्वेद की संहिताओं पर एवं भूगोलीय इशारों पर आधारित हैं, इसका कोई प्रत्यक्ष सीधा प्रमाण नहीं है कि आर्यों का भारत से बाहर कोई अन्य मूल निवास था।''

(ग) उपरोक्त से स्पष्ट होता है कि विद्वान् लेखक स्वयं मानते हैं कि उनके पास अपनी इस धारणा के लिए कि आर्य लोग बाहर से आए, सिवाय वेदमंत्रों के कोई अन्य साक्ष्य नहीं है। वेदमन्त्रों का सही आकलन एवं अनुवाद वेदज्ञाताओं को छोड़कर अनुवाद से पढ़ने वाले जोन्स अथवा मार्क्स मनीषी द्वारा किया जाना वेदों का उपहास है परिहास नहीं। अतः स्पष्ट है कि अनुवाद से लिया गया निष्कर्ष पूर्ण सत्यता का दावा नहीं कर सकता।

५. अब हम इतिहास के तथा अन्य तथ्यों का अध्ययन करें जो आर्य लोगों की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, राज्य, शैली, समाजशास्त्र पर प्रकाश डालते हैं-

(क) सर्वमान्य है कि विश्व के इतिहास में ईसा से चौथी शती पूर्व केवल दो लिपियाँ ही थीं जो एशिया में प्रचलित थीं। खरोष्ठी लिपि जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी और दूसरी ब्राह्मी लिपि थी जो बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी। यदि आर्य लोग ब्राह्मी लिपि के अभ्यस्त थे और उनकी भाषा बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी तो यह सत्य को तिलांजलि है कि वे किसी ऐसे पूर्वज की संतान थे जिनकी लिपि खरोष्ठी थी। इस तथ्य का प्रमाण 'Encylopedia Britanica' के पार्ट १४ के पृष्ठ २२८ पर उपलब्ध है।

(ख) लोगों का आना-जाना एवं मेलजोल कोई ऐसा साक्ष्य नहीं है कि उनके पूर्वज एक ही हों, व्यापारियों के जो आपसी माल का क्रय-विक्रय करते हैं, जरूरी नहीं कि पूर्वज एक ही हो। 'Encylopedia Britanica' के २२८ पृष्ठ पर यह बात मानी गई है कि भारत के व्यापार संबंध बहुत प्राचीन समय से ईसा की पहली कुछ शताब्दियों में दक्षिण पूर्व एशिया तथा रोमन साम्राज्य से काफी बड़े स्तर पर थे, इससे यह मान लेना कि आर्य लोग रोमन साम्राज्य के अथवा दक्षिणी एशिया के किसी भूभाग से आए थे, निराधार है।

(ग) यह धारणा कि वेदों में देवता ऐतिहासिक व्यक्ति थे, जिन्होंने राजाओं के रूप में अथवा आक्रांताओं के रूप में भारत के मूल निवासी जिन्हें दस्यु समझा जाता था, काबू कर लिया यह भ्रान्त धारणा एवं विश्वास है 'Encylopedia Britanica' के पार्ट १८ के पृष्ठ ६३० पर यह माना गया है कि वेदमन्त्रों में दिए गए वेदों के नाम अथवा व्यक्तियों के विशेषण उनके मानवीय होने का संकेत नहीं देते। ये नाम उनकी प्रकृति की शक्तियों के प्रतीक में ही दिए गए हैं। वे लोग ऐतिहासिक पुरुष न होकर दैवी शक्तियों के रूप में मन्त्रों में उल्लिखित हैं। स्पष्ट है कि दस्यु दानव युद्ध जो देवों के साथ वेदों में अथवा अन्य इतिहास में अंकित हैं, वे प्रकृति के निरंतर संघर्ष को ही अंकित करते हैं और समझना कि ये भारत के मूल निवासियों का दस्यु रूप में आर्य लोगों से संघर्ष था, एक बिल्कुल निराधार धारणा अथवा निष्कर्ष है।

(घ) आर्य लोगों के पास दास व्यवस्था नहीं थी। उन्होंने कभी कोई दास न बनाए, न पाले, न पकड़े और न ही किन्हीं मानवों का दास रूप में व्यापार किया जबकि ऐसा प्रचलन समस्त विश्व में था एवं अरबी यूनानी रोमानी तथा मंगोलियन इस प्रकार की व्यवस्था से बुरी तरह ग्रस्त थे। आर्य लोग भारत में गाय पालते थे, वे गो-पालक थे और विश्व में कोई अन्य जाति गोपालक के नाते नहीं जानी जाती। आर्य लोग पशु चराने वाले, पशुधन के पालक और उस पर निर्वाह करने वाले नहीं थे, वे तो खेती बाड़ी में दक्ष थे। उस समय की सभ्यता में कोई और जाति खेती-बाड़ी में इतनी कुशल नहीं थी। आर्य लोगों का मालिकाना हक किसी बड़े जमींदार के पास नहीं रहा। सभी भूमि समाज की संपत्ति मानी जाती थी। उन्होंने किसी देश अथवा किन्हीं अन्य लोगों को न कभी गुलाम बनाया, न हमला किया। इतिहास साक्षी है कि आर्य लोगों ने भारत के बाहर कोई सेना नहीं भेजी और न आक्रमणकारियों का भारत से बाहर जाकर कभी प्रतिकार किया।

(ङ) आर्य लोगों में पर्दाप्रथा भी नहीं थी। विश्वभर के लोग आर्यों को छोड़कर अपने मृतकों को भूमि में दबाकर उनकी अंत्येष्टि करते थे, जबकि केवल मात्र आर्य लोग भारत में अपने मृतकों का अग्निदाह करते थे। अतः कैसे माना जाये कि ऐसे लोगों का इतिहास, विश्व के किसी

( शेष पृष्ठ चार पर )

# जब ऋषि पर आक्षेप हुए

❑ प्राचार्य अभय आर्य, गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक

जहाँ तक अपना बचपन याद आता है, वहीं से अपने जीवन को ऋषि के प्रति श्रद्धायुक्त पाता हूँ। कालान्तर में यह श्रद्धा संस्कारों के आधार पर हिलोरे लेती रही। महाविद्यालय की शिक्षा प्राप्त कर पिछले पाँच वर्ष से जब से अध्यापन के क्षेत्र में आया तो वह श्रद्धा विवेक का आधार पाकर दृढ़ हो गई। यही श्रद्धा हर पल हृदयपटल व मानसपटल पर अपना आवरण डाले रहती है और ज्यादातर कर्म भी उसी के हेतु होते हैं। वरन् हर कर्म में उसका संस्कार तो बना ही रहता है। ऋषि दयानन्द का व्यक्तित्व, ऋषि दयानन्द के कार्य, ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ यहाँ तक कि ऋषि दयानन्द का नाम भी मेरे हृदय को पवित्र करने वाले हैं। मैं जितना भी स्वाध्याय करता हूँ वह ऋषि दयानन्द में डूबकर करता हूँ। ग्रन्थ पढ़ने में आनन्द आता है तो केवल ऋषि दयानन्द के, वेदभाष्य को पढ़ने में आनन्द आता है तो केवल ऋषि दयानन्द के, चरित्र पढ़ने में आनन्द आता है तो केवल ऋषि दयानन्द के। जब ऋषि दयानन्द का जीवनचरित्र पढ़ता हूँ तो स्पष्ट आभास होता है कि ऋषि का जन्म लेना ही हमारे ऊपर ऋण है, जब ऋषि के ग्रन्थ पढ़ता हूँ तो स्पष्ट आभास होता है कि ऋषि का एक-एक शब्द हमारे ऊपर ऋण है। हम ऋषि के नाम के व ऋषि के काम के दीवाने हैं, यह बात कहते हुए हमें तनिक भी संकोच नहीं होता। ऋषि के मिशन को द्रुतगति से बढ़ाना ही मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

**इस श्रद्धा को देख बालक भी, अगर कोई कहे तो कुछ गम नहीं।**
**अपनों का राग या गैरों का द्वेष पीछे हटा दे ऐसे दयानन्द के सिपाही हम नहीं॥**

जब दयानन्द के प्रति ऐसी श्रद्धा लेकर हम जीवनयापन कर रहे थे तो किसी ने दयानन्द पर आक्षेप कर दिए और वह भी दैनिक पत्रों में। अंधविश्वासी व्यक्ति की मान्यताओं को अगर ठेस पहुँचाई जाए तो उसे जो पीड़ा होती है वह स्वार्थमय होती है जो उसे छल के लिए प्रेरित करती है। जब एक सच्चे श्रद्धालु की मान्यताओं को ठेस पहुँचाई जाए तो उसे जो पीड़ा होती है वह परमार्थजन्य होती है जो सत्य की रक्षा के लिये बलिदान की प्रेरणा देती है। ऐसी ही पीड़ा दयानन्द के सच्चे सैनिकों को तब हुई जब रामपाल नामक एक ऊल-जलूल नाम बाँटने वाले व्यक्ति ने सतलोक आश्रम करौंथा, रोहतक से दैनिक पत्रों में उनके चरितनायक पर आक्षेप किए। यह दूरदर्शन आदि पर भी यह लीला करता आया है। ऋषि दयानन्द को बाल बुद्धि, जनता को भ्रमित करने वाला संत तथा अज्ञानी तक कहा गया। 'सत्यार्थप्रकाश' को भ्रामक ग्रन्थ कहा गया। ऐसे समय में क्या चुप रहना उचित था? यदि हमारे मन में यह धारणा थी कि ऐसे समय में चुप रहा जाए तो वह धारणा भ्रामक थी। ऋषि दयानन्द पर आक्षेप लगने का कारण ही यही है कि हम पिछले कुछ समय से चुप रहे। हमारे अंदर यह भावना बलवती होती जा रही है कि केवल मण्डन करो, किसी का खण्डन मत करो। अरे! यह सिद्धान्त तो पौराणिकों का हो सकता है आर्यसमाज का नहीं। ऋषि जी 'सत्यार्थ-प्रकाश' के ग्याहरवें समुल्लास में लिखते हैं "वेदमार्ग की उन्नति और यावत्पाखण्ड मार्ग हैं तावत् के खण्डन मण्डन से क्या प्रयोजन? हम तो महात्मा हैं, ऐसे लोग भी संसार में भाररूप हैं।" अतः आर्य संन्यासी खण्डन-मण्डन को अपनाकर ही श्रेष्ठ पद पाते हैं।

जितने भी झूठे व्यक्ति होते हैं वे सदैव एक सच का गला दबाने की कोशिश करते हैं। यदि एक रामपाल को छूट दे दोगे तो अनेक रामपाल तुम्हारे ऊपर टूट पड़ेंगे। आलसी सोते रह जाएंगे व श्रद्धावान् सिसकते रह जाएंगे। कुछ का विचार है कि मूर्ख को क्या कहें? आर्य महानुभावो! ऐसे व्यक्ति मूर्ख के साथ-साथ धूर्त भी होते हैं। ऐसे धूर्तों को, साजिशखोरों को सबक सिखाना नितान्त आवश्यक है।

समाचार-पत्रों में रामपाल जो लेख दे रहा है उसी तरह हमारे भी लेख जाने चाहिएं। वह चाहे महीने में एक ही क्यों न हो। चाहे थोड़े पृष्ठ पर क्यों न हों। वह लेख इतना ठोस होना चाहिए जो रामपाल के उस समयावधि के दो या तीन लेखों के उत्तर को समाहित करने वाला व उसके छली हृदय को भेदने वाला हो। इसके लिए दिल खोलकर दान दो।

इस कार्य को गौण मत समझो। जैसा की आचार्य बलदेव की ओर से घोषणा हो चुकी है कि इस कार्य को प्रमुख समझो। सलाह देने के अतिरिक्त स्वयं भी कुछ करो। गुरुकुलों से, समाजों से, वित्त आदि की दृष्टि से समर्थ विद्वान् लोगों की ओर से समाचार-पत्रों में उसके विज्ञापनों के उत्तर रूप में लेख आने चाहिएं। हमने अपने सामर्थ्यानुसार इस दिशा में कार्य किया है व आगे भी करेंगे। लेखनी में बड़ी शक्ति होती है। कुछ सज्जन कहते हैं क्यों रामपाल को बढ़ावा देते हो? मैं पूछता हूँ कि हम कितने बढ़े हुए हैं? दैनिक पत्रों में हमारे कितने लेख आते हैं? लगभग सभी समाचार-पत्रों में धर्म सम्बन्धी पौराणिकों के ही लेख छपते हैं। यह सही अवसर है। विज्ञापन रूप में हमारे खण्डन-मण्डन विषयपरक लेख प्रकाशित हो सकते हैं। आर्यसमाज को इससे लाभ होगा। इस रामपाल को लेखनी द्वारा मसलकर ही दम लो। मुझे आपकी लेखनी पर पूरा भरोसा है। यदि आप ऐसा करो तो देखना रामपाल कुछ ही दिनों में पश्चाताप के आँसू गिराएगा। धूर्त व्यक्ति का पश्चाताप भी विचित्र होता है। वह माफी माँगने के लिये पश्चाताप नहीं करता। मन ही मन कुढ़ता है। रामपाल ने ऋषि पर आक्षेप लगा जो पाप किया है उसकी माफी भी नहीं है। अतः सोचो रामपाल की क्या दशा होगी?

इसके अतिरिक्त भी जो योजनाएँ हैं उन्हें क्रियान्वित करो। लेखों के द्वारा अभी इसे और रगड़ो। फिर हम गाँव-गाँव जाकर प्रचार तो कर ही रहे हैं। हमारा तो कार्य ही खण्डन-मण्डन है। बौखलाहट तो उस बेचारे को होगी जो अपनी दुकानदारी छोड़ आर्यसमाज से टकरा बैठा।

## भारत के आर्य मूलतः भारतीय... (पृष्ठ तीन का शेष)

अन्य समाज संस्कृति या क्षेत्र से मेल खाता था अथवा आर्य लोग उनमें से किसी एक का कभी भाग रहे थे।

(च) ईरानी व यहूदी लोग अपनी लिपि दाँए से बाँए लिखते थे। यह कहना कि आर्य लोग ईरान से कोई संबंध लेकर वहाँ के अग्निपूजक पारसियों जोरोस्तियों से पैदा हुए थे, एक भ्रांति है। जोरोस्ति तो स्वयं इतिहास में आर्यों के बहुत बाद अस्तित्व में आए थे। मंगोल व मध्य एशिया के युद्ध करने वाले राजाओं या तारतराजी लोगों के उत्तराधिकारी थे, इस बात को नकारा जाता है। आर्य लोगों के गाँव अपने आप में प्रजातांत्रिक थे और वे गणतंत्र भी थे और उनमें कोई राजा व पारिवारिक मुखिया नहीं होते थे। इस प्रकार के गणतांत्रिक लोग सारे मध्य एशिया में नहीं पाए जाते थे। अतः कैसे माना जाए कि आर्य लोग मध्य एशिया की किसी संस्कृति से उत्पन्न हुए थे।

६. भारत के आर्य लोग समस्त विश्व को अपना कुटुम्ब मानकर उसके कल्याण की कामना तथा साधना करते थे। वे अंहिसा के अनुयायी थे। इस प्रकार की संस्कृति वाले गत ३००० वर्षों में कोई अन्य समाज या राष्ट्र इस भावना के अनुयायी नहीं रहे। अतः स्पष्ट है कि भारतीय आर्य लोग विदेशी सभ्यताओं से भिन्न थे और वे कहीं बाहर से आए हों, प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

७. आर्य लोगों का और उनके धर्म का कोई जनक अथवा पैगम्बर नहीं था, जैसा कि यहूदियों का अब्राहम, ईसाइयों का ईसामसीह, मुसलमानों का मुहम्मद और अन्य लोगों के धर्मावलम्बियों के प्रतिपादक अथवा जनक रहे हैं, यह दिखाता है कि किस प्रकार भारत के आर्य विश्व से पृथक् थे।

८. आर्य सभ्यता, संस्कृति, धर्म व आस्था पद्धति में कोई काफिर या जेहादी अथवा पुण्य या पवित्र युद्ध धर्म के नाम पर कभी प्रतिपादित नहीं किया गया। आर्य लोग तो सारे संसार के लोगों को ईश्वरीय संतान मानकर अपने से भिन्न मतांतर रखने वालों को मानव या भ्राता के तौर पर देखते थे। उन्होंने अन्य को कभी शत्रु नहीं समझा और न उनके अन्य धर्मावलम्बियों के होने पर समाज से द्रोह करने वाला कहा। ऐसे मानवतावादी लोगों को विश्व के अन्य भागों में ढूंढ़ने से भी पाया नहीं जा सकता। ऐसे लोग किसी अन्य क्षेत्र से संस्कृति लेकर भारत आए हैं, ऐसा मानना अपने आप में एक विकृति है।

९. जिस समय आर्य लोग भारत में ईसा से १५०० वर्ष पूर्व एवं उसके पश्चात् यहाँ रहे माने जाते हैं, उनकी महिलाएं विदुषी थीं। वेदमन्त्रों की द्रष्टा थी। गणतंत्र के विद्वत् मंडलों में वे भाग लेती थीं। हर ग्राम सभा में महिलाओं का सम्मिलित होना आवश्यक था। आर्य लोग अपनी स्त्रियों को इतना मान देते थे जबकि उस समय समस्त विश्व में स्त्रियों को कठिनाई से ही अन्य लोग सह पाते थे और उन्हें साधन या भोग्यवस्तु मानते थे। निश्चित है कि आर्य लोग उनसे भिन्न थे।

१०. आर्य लोगों में राज्य सेना नहीं होती थी। यदि उन पर कभी युद्ध थोपा जाता था तो वे अपनी सेना अपने गणतंत्र में से भर्ती करके अपना बचाव करते थे। अतः वे हमलावर नहीं हो सकते।

११. 'जन' शब्द ऋग्वेद में २७५ स्थानों पर आया है, यह वह समय था जब 'जनतंत्र' का दुनिया को पता नहीं था और न उसका कोई मान्यता ही थी। अतः ऐसे लोग बाहर से आए थे, यह कैसे माना जाए?

१२. प्रसिद्ध इतिहासकार 'मूर' ने अपने संस्कृत में रचित इतिहास भाग-२ में स्पष्ट माना है कि किसी संस्कृत की पुस्तक में, चाहे वह कितनी भी प्राचीन हो, यह संकेत नहीं दिया गया कि आर्यों को उद्‌गम भारत से बाहर हुआ था और यह भी माना गया है कि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि ऋग्वेद में जिन दास अथवा असुरों का जिक्र किया गया है, वे लोग भारत के मूल निवासी थे।

१३. यह भी माना जाता है कि श्री बालगंगाधर तिलक भी मानते थे कि आर्य लोग भारत में उत्तरी ध्रुव से आए थे। श्री तिलक ने श्री उमेशचन्द्र विद्यारत्न को स्पष्टरूप से कहा था कि उन्होंने वेदों को मूलरूप में न पढ़कर एवं वेदों के पश्चिमी विद्वानों के अनुवाद को ही पढ़ा था, जिससे उनकी मूलभावना का अर्थ पूर्णतया मेरे पास पहुँच नहीं पाया। अतः तिलक ने विद्यारत्न को स्वीकार किया कि वे अपनी इस प्रस्तावना से कि आर्य लोग उत्तरी ध्रुव से भारत आए, प्रतिपादित नहीं कर सके।

१४. आर्यों का ब्लड ग्रुप संसार के किसी और ब्लड ग्रुप से जो मध्य एशिया में व यूरोप में पाया जाता है, मेल नहीं खाता। इस विषय में 'Encylopedia Britanica' भाग १८ पृष्ठ ९७२, भाग ४, पृष्ठ २९२, भाग-१, पृष्ठ ३४ की ओर ध्यान देने की प्रमाण रूप से आवश्यकता है। यह वैज्ञानिक सत्य है कि जो लोग एक ब्लड ग्रुप नहीं रखते, उनके पूर्वज एक हो ही नहीं सकते।

ओ३म्

# सर्वखाप महापंचायत

विषय : महापोप श्री रामपाल के महापाखण्ड का खण्डन तथा गोरक्षा
स्थान : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक
अध्यक्षता : **सर्वप्रिय, वीतराग आचार्य बलदेव जी**
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक
समय : २० फरवरी २००५ प्रातः ११ बजे

सामाजिक मर्यादाओं को सुरक्षित रखने तथा धार्मिक सुव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये हरयाणा प्रान्त में सर्वखाप पंचायत की अहम् भूमिका रही है।

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द जी ने कई बार विद्वानों की नगरी काशी को हराया। उनके तर्कसंगत अकाट्य वैदिक सिद्धान्तों के आगे विश्वभर में कोई रुक न सका। लगभग एक वर्ष से महापोप श्री रामपाल अपने पाखण्ड का भाण्डा फूटने के भय से महर्षि के वेदभाष्य तथा सत्यार्थप्रकाश पर अनर्गल आक्षेप कर रहा है। उनके ग्रन्थों पर आक्षेपों का उत्तर तथा श्री महापोप द्वारा लिखित "गहरी नजर गीता में" का खण्डन समाचार-पत्रों के नौ विज्ञापनों के द्वारा व आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा लिखित "महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर" एक सारगर्भित पुस्तक लिखकर दिया जा चुका है। उससे अब निरुत्तर होकर श्री महापोप जी ने अपने विज्ञापन में हरयाणा की परम्परागत स्वच्छ व वैज्ञानिक विवाह पद्धति पर कटाक्ष किया है। इस पवित्र विवाह पद्धति का खण्डन करते हुए वे लिखते हैं कि मुसलमान केवल सहोदर को ही छोड़ते हैं, उनमें कौन-सी उन्नति नहीं है। उनका यह कथन महा-पंचायत के मूलभूत सिद्धान्त (माता-पिता के गोत्र छोड़कर विवाह करना) पर भारी आघात है। विचार करें कि स्वच्छ आर्य परम्परा को छुड़ाकर चाचा की लड़की के साथ विवाह करवाकर कैसा समाज महापोप बनाना चाहता है। क्या चरित्रहीनता फैलाने वाली तथा मनुष्य को रुग्ण तथा निर्बल बनाने वाली (स्वगोत्रविवाह) इस अवैज्ञानिक पद्धति को आप सुनना भी पसन्द करेंगे? श्री दास के असामाजिक विचारों पर निर्णय लेकर पवित्र परम्पराओं को क्रियान्वित करने के लिए पंचायत बुलाई है। अधिक से अधिक संख्या में पधारें।

२६-१-२००५ को दीवान हाल दिल्ली में "देश भर के बूचड़खानों को बन्द करना" महा सम्मेलन में श्री मदनमोहन तथा श्री डी.सी. जैन भूगर्भ विज्ञान के दोनों विशेषज्ञों ने बताया कि भूकम्प तथा सुनामी लहरों जैसी भयंकर आपदाओं का मूल कारण गोहत्या ही है। अतः हरयाणा से इस भयंकर कलंक को हटाने के लिए भी इस पंचायत में विचार किया जायेगा।

दोनों विषयों के निर्णायक निर्णय के लिए सभी पंचायत के अधिकारी तथा गोभक्तों एवं सभी आर्यप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि सर्वखाप महापंचायत में भारी संख्या में पहुंचें।

**आर्यो! जागना और जगाना पड़ेगा, पाखण्ड छोड़ना और छुड़ाना पड़ेगा।**

निवेदक : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

## आर्यसमाज जामनगर में गणतंत्र दिवस मनाया गया

स्वतंत्र भारत का ५६वां गणतंत्र दिवस दिनांक २६-१-२००५ बुधवार को आर्यसमाज मंदिर खंभालिया नाका बाहर, जामनगर में मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः ८-३० बजे बृहद् यज्ञ पं० अरुण शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् आर्यसमाज जामनगर के प्रमुख श्री धर्मवीर जी खन्ना के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया और प्रासंगिक प्रवचन हुआ। -सतपाल आर्य, मन्त्री आर्यसमाज जामनगर

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| क्र. | आयोजन | तिथि |
|---|---|---|
| १. | आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव | १८ से २० फरवरी ०५ |
| २. | आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद जिला महेन्द्रगढ़ | १५ से १७ फरवरी ०५ |
| ३. | समाजसुधार सम्मेलन आर्यसमाज मिर्जापुर जिला हिसार | २३-२४ फरवरी ०५ |
| ४. | आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला फरीदाबाद | २५ से २७ फरवरी ०५ |
| ५. | आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर | २५ से २७ मार्च ०५ |
| ६. | गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत | १९ से २० मार्च ०५ |
| ७. | आर्यसमाज ठोल जिला कुरुक्षेत्र | ११ से १३ मार्च ०५ |
| ८. | गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव | १२ से १३ मार्च ०५ |
| ९. | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| १०. | श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद | १८ से २० मार्च ०५ |
| ११. | आर्यसमाज रेवाड़ी | ९ से १० अप्रैल ०५ |
| १२. | आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल | ११ से १३ मार्च ०५ |

—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

# समाजसुधार सम्मेलन का आयोजन

हरयाणा आर्य युवक परिषद् एवं आर्यसमाज मिर्जापुर (हिसार) के संयुक्त तत्त्वावधान में ग्राम मिर्जापुर में दो दिवसीय समाजसुधार सम्मेलन एवं बृहद् यज्ञ का आयोजन दिनांक २३-२४ फरवरी २००५ को किया जा रहा है।

इस अवसर पर तपोधन संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास, स्वामी तेजमुनि खाण्डा, वैदिक विद्वान् पंडित रामस्वरूप जी शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर परिषद् के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य हरपाल शास्त्री (हिसार), श्री शमशेर आर्य गोरखपुर प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सभा, चौ० जिलेसिंह डी.एस.पी. व प्रिं० बलवीरसिंह आर्य (दादरी) आदि विद्वान् वक्ता तथा आर्य भजनोपदेशक पं० सत्यपाल आर्य (दयानन्दमठ रोहतक) मा० ओमप्रकाश (पानीपत) महाशय फूलसिंह आर्य (गोरछी) पधारेंगे।

उपरोक्त विद्वान् वक्ता आध्यात्मिक प्रवचन के अतिरिक्त शराबखोरी, गोहत्या, अश्लील प्रसारण, दहेजप्रथा, भ्रूणहत्या तथा धार्मिक पाखण्ड के खिलाफ वैदिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे।

निवेदक :-

**मा० ज्ञानीराम आर्य** — प्रधान आ०स० मिर्जापुर
**डॉ० बलवन्तसिंह आर्य** — महामन्त्री आ०स० मिर्जापुर
**अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी** — संयोजक सम्मेलन एवं प्रधान हरयाणा आर्य युवक परिषद

ओ३म्

## दूरस्थ देश में तथा गोत्र छोड़कर विवाह के लाभ

यह निश्चित बात है कि जैसी परोक्ष पदार्थ में प्रीति होती है, वैसी प्रत्यक्ष में नहीं। जैसे किसी ने मिश्री के गुण सुने हों और खाई न हो तो उसका मन उसी में लगा रहता है, जैसे किसी परोक्ष वस्तु की प्रशंसा सुनकर मिलने की उत्कट इच्छा होती है वैसे ही दूरस्थ अर्थात् जो अपने गोत्र वा माता के कुल में निकट सम्बन्ध की न हो उसी कन्या से वर का विवाह होना चाहिए। निकट में दोष और दूर विवाह करने में ये गुण हैं :-

१. एक-जो बालक बाल्यावस्था से निकट रहते हैं, परस्पर क्रीड़ा, लड़ाई और प्रेम करते हैं, एक-दूसरे के गुण, दोष स्वभाव बाल्यावस्था के विपरीत आचरण जानते और नंगे भी एक-दूसरे को देखते हैं, उनका परस्पर विवाह होने से प्रेम कभी नहीं हो सकता।
२. दूसरा-जैसे पानी में पानी मिलने से विलक्षण गुण नहीं होता, वैसे एक गोत्र पितृ व मातृकुल में विवाह होने में धातुओं में अदल-बदल नहीं होने से उन्नति नहीं होती।
३. तीसरा-जैसे दूध में मिश्री वा शुण्ठ्यादि औषधियों के योग होने से उत्तमता होती है, वैसे ही भिन्न गोत्र मातृ-पितृकुल से पृथक् वर्तमान स्त्री-पुरुषों का विवाह होना उत्तम है।
४. चौथा-जैसे एक देश में रोगी हो वह दूसरे देश में वायु और खानपान के बदलने से रोगरहित होता है, वैसे ही दूर-देशस्थों के विवाह होने में उत्तमता है।
५. पांचवां-निकट सम्बन्ध करने में एक-दूसरे के निकट होने में सुख-दुःख का भान और विरोध होना भी सम्भव है, दूरस्थ देशों में नहीं और दूरस्थों से विवाह में दूर-दूर प्रेम की डोरी लम्बी बढ़ जाती है, निकटस्थ विवाह में नहीं।
६. छठा-दूर-दूर देश के वर्तमान और पदार्थों की प्राप्ति भी दूर सम्बन्ध होने में सहजता से हो सकती है, निकट विवाह होने में नहीं। इसलिये :- दुहिता दुर्हिता दूरे हिता भवतीति॥ निरुक्त ३। ४॥ कन्या का नाम "दुहिता" इस कारण से है कि इसका विवाह दूर देश में होने से हितकारी होता है, निकट करने में नहीं।
७. सातवें-कन्या के पितृकुल में दारिद्र्य होने का भी सम्भव है, क्योंकि जब-जब कन्या पितृकुल में आवेगी तब-तब उसको कुछ न कुछ देना ही होगा।
८. आठवां-कोई निकट होने से एक-दूसरे को अपने-अपने पितृकुल के सहाय का घमण्ड और जब कुछ भी दोनों में वैमनस्य होगा तब स्त्री झट ही पिता के कुल में चली जायेगी। एक दूसरे की निन्दा अधिक होगी और विरोध भी, क्योंकि प्रायः स्त्रियों का स्वभाव तीक्ष्ण और मृदु होता है, इत्यादि कारणों से पिता के एक गोत्र, माता की छः पीढ़ी और समीप देश में विवाह करना अच्छा नहीं है। -सत्यार्थप्रकाश

गाय-भैंसादि पशुओं की अच्छी-अच्छी नसल बनाने हेतु वैज्ञानिक दूर से सांड या भैंसा लाने का सुझाव देते हैं।

निवेदक : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

# देश के सामने यक्ष प्रश्न ?? वैदिक विद्वान् विचार करें!!!

❑ महावीर 'धीर' प्राध्यापक

गुरुकुल संस्थाएँ चलाने वालों को भौतिक विज्ञान की शिक्षा से परहेज क्यों है? कब होगा? और कौन करेगा भारतीय शिक्षा पद्धति का उद्धार?

भारतीय सामाजिक व राजनैतिक नेता समय-समय पर प्राचीन भारतीय गुरुकुल पद्धति की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं। गुरुकुलों के पूज्य आचार्यगण तो गुरुकुल चला ही रहे हैं, लेकिन सामाजिक व राजनेता लोग भी शिक्षा की बात आने पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ही बड़ाई करते हैं। ये नेता यहाँ तक भी कहते हैं कि-'आधुनिक शिक्षप्रणाली लार्ड मैकाले ने भारतीय शिक्षा को तहस-नहस कर केवल अपने साम्राज्य को अनन्तकाल तक पुष्ट रखने व विस्तार देने के लिए ही बनाई थी।' यह शिक्षा केवल छोटे-बड़े लिपिक, अधिकारी, उद्योगपति व राजनेता पैदा करती है जो प्रायः भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबे हुए रहते हैं। यह प्रणाली सदाचारी देशभक्त व मानव भक्त विद्वान् व अधिकारी पैदा नहीं करती यदि कोई अब्दुल कलाम, चन्द्रशेखर वेंकटरमन या जगदीशचन्द्र बसु बनता भी है तो उनके संस्कार व पारिवारिक पृष्ठभूमि ही उनके मूल में पाई जाती है जो इस प्रणाली का लाभ अपनी भावनाओं के अनुरूप कठोर परिश्रम से उठा पाते हैं फिर भी ये अपवाद ही कहे जा सकते हैं।

लेकिन ये राजनेता व समाजनेता इस लार्ड मैकाले की प्रणाली को बदलने की कभी भी कोशिश नहीं करते, केवल इसे कोसते भर ही हैं। कितने राजनेता बहुमत पाकर मुख्यमंत्री के रूप में व प्रधानमंत्री के रूप में सरकारें चलाते रहे हैं लेकिन इस शिक्षाप्रणाली को परिवर्तन के नाम पर बिगाड़ा ही गया है, सुधारा नहीं गया। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली को अपनाना तो दूर की बात है। गुरुकुलों को तो किसी भी सरकार ने मान्यता ही नहीं दी, जबकि लार्ड मैकाले की प्रणाली से चल रहे निजी विद्यालयों को मान्यताएं दी गईं तथा ९० और ७५ प्रतिशत तक आर्थिक सहायताएँ दी जा रही हैं, जबकि गुरुकुलों को थोड़ा बहुत अनुदान देकर भुलावा दिया जाता है।

दूसरी ओर हैं गुरुकुल संस्थाओं के संचालक और श्रद्धालु। प्रायः गुरुकुल संस्थाएँ आर्यसमाज संचालित कर रहा है या वैदिक विचारक लोग। जैन सम्प्रदाय के भाई कुछ गुरुकुल संस्थाएँ चला रहे हैं लेकिन इन सभी संस्थाओं से समाज में जो परिवर्तन आना चाहिए था वह नहीं आ पाया क्योंकि ये संस्थाएँ सर्वाङ्गीण शिक्षा नहीं दे पाईं। वैदिक विद्वान्, आर्यसज्जन एवं गुरुकुल संस्थाओं के आचार्य व उपाध्यायगण प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान की प्रशंसा तो करते हैं लेकिन अपनी संस्थाओं में उस ज्ञान विज्ञान का संपूर्ण विकास नहीं कर पाए। वे कहते हैं वेदों में सभी प्रकार का भौतिक और आत्मिक ज्ञान-विज्ञान है। हमारे पूर्वज ग्रहों में आते जाते थे। अनेक प्रकार के विमान व जल थल और अंतरिक्ष में चलने वाले यान थे। शल्य-चिकित्सक व नाडीतंत्र के ज्ञाता थे। बड़े-बड़े योगी और आत्मज्ञानी थे। मैं यह नहीं कहता कि नहीं थे। अवश्य थे, अवश्य ही रहे होंगे। लेकिन प्रश्न यह है कि आज प्रचलित गुरुकुल संस्थाओं में वह शिक्षा क्यों नहीं दी जा रही है? जब हमारे संचालक आचार्यगण प्राचीन भौतिक विज्ञान की भरपूर प्रशंसा गौरवपूर्ण ढंग से करते हैं तो उसको भी गुरुकुलीय शिक्षा में जोड़ना चाहिए। मान लिया जाए कि प्राचीन भौतिक विज्ञान का संपूर्ण ज्ञान अब उपलब्ध नहीं होता तो आधुनिक विज्ञान में जो खोजें हो रही हैं वह भी किसी न किसी प्रकार से कभी न कभी भारत से ही गया है। भारत से ही लिया गया है। भारत के साहित्य का ही अंग रहा है ऐसा हमें विद्वानों द्वारा बतलाया जाता है। पढ़ने को भी मिलता है। ऐतिहासिक व अन्य साहित्यिक ग्रन्थों से भी ऐसा ही प्रतीत होता है।

जब हम गुरुकुल शिक्षा के श्रद्धालु, समर्थक व संचालक आधुनिक तकनीक व शिक्षा शोधों से निर्मित नए से नए वाहनों का प्रयोग करते हैं, दूरभाष, चल दूरभाष, विद्युत् उपकरण, भवन निर्माण सामग्री, प्रकाशन व ध्वनि विस्तार यंत्रों आदि सभी का प्रयोग करते हैं तो फिर उस शिक्षा से परहेज क्यों करते हैं जिस शिक्षा तकनीक से ये बनाए जाते हैं। हम गुरुकुल संस्थाओं में यह शिक्षा नहीं देते इसीलिए गुरुकुलों का आकर्षण धीरे-धीरे कम हो गया है। हमें सर्वांगीण शिक्षा प्राचीन व अर्वाचीन शिक्षा व पद्धति में समन्वय करके गुरुकुल संस्थाओं में देनी चाहिए। जब तक हम यह नहीं करेंगे तब तक गुरुकुल संस्थाएँ दीन हीन ही बनी रहेंगी। हमें समस्त प्राचीन व आधुनिक ज्ञान संस्कृत, हिन्दी, भारतीय भाषाओं व जरूरत अनुसार अंग्रेजी में भी देना चाहिए। गुरुकुल आयुर्विज्ञान संस्थान बनें। गुरुकुल अभियांत्रिकी संस्थान बने। गुरुकुल परमाणु विज्ञान, समुद्र विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान के केन्द्र क्यों न बनें। गुरुकुलों में पढ़े स्नातक तथा गुरुकुल प्रबन्धकारिणी के सदस्य तक भी गुरुकुलों में अपनी संतानों को इसलिए नहीं पढ़ाते क्योंकि वहाँ एकांगी शिक्षा रह गई है। संस्कृत की भी समग्र ज्ञान की शिक्षा वहाँ नहीं है। जिस दिन हम गुरुकुलों में सर्वांगीण शिक्षा स्थापित कर देंगे उसी दिन गुरुकुलों में प्रवेशार्थियों का तांता लग जाएगा। गुरुकुल पब्लिक स्कूलों से अधिक आकर्षक होंगे और उनका यदि ठीक संचालन किया गया तो धड़ाधड़ गुरुकुल खुलते चले जाएंगे। स्वयं ही संस्थाओं, छात्रों स्नातकों व स्नातक से सेवा में आए कर्मचारी अधिकारी आदि ही प्रचार के स्तम्भ बन जाएंगे। आशा है वैदिक विद्वान् गम्भीरता से विचारकर इसके लिए प्रयत्न करेंगे।

## सुनामी तूफान पीड़ित सहायता

### दानदाताओं की सूची

| क्र. | नाम | राशि |
|---|---|---|
| १. | श्री बलवानसिंह सु० श्री मांगेराम फरमाना जिला रोहतक | १००-०० |
| २. | श्री हरदेवासिंह सु० श्री चन्दगीराम भम्भेवा जिला जीन्द | ५००-०० |
| ३. | श्री चतरसिंह सिवाह जिला जीन्द | ५००-०० |
| ४. | गुप्तदान | २०-०० |
| ५. | भलेराम, भम्भेवा, जिला जीन्द | १००-०० |
| ६. | सत्यवान, गांगोली, जीन्द | ५०-०० |
| ७. | धर्मचन्द, नगूरा, जीन्द | २००-०० |
| ८. | महेन्द्रसिंह आर्य, भटगांव, जिला सोनीपत | १५१-०० |
| ९. | मा० आजादसिंह पुरुषार्थी, खुर्मपुर, जिला सोनीपत | १०१-०० |
| १०. | धर्मपाल वैरागी नारनौंद, हिसार | ५१-०० |
| ११. | सत्यवान पाथरी पानीपत | १००-०० |
| १२. | धर्मसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज अलेवा जीन्द | १००-०० |
| १३. | बलवीरसिंह मोरखी, जिला जीन्द | १००-०० |
| १४. | सुरेन्द्र मोरखी जिला जीन्द | २०-०० |
| १५. | सूबेदार करतारसिंह आर्य, गोहाना सोनीपत | २००-०० |
| १६. | श्रीमती बिमला देवी कृष्णा कालोनी रोहतक | २५१-०० |
| १७. | श्री रामचन्द्र आर्य सु० श्री मुरलीराम हरिसिंह कालोनी रोहतक | १००-०० |
| १८. | आर्यसमाज कालांवाली सिरसा | ११,०००-०० |
| १९. | श्री गंगाविष्णु आर्य, भटगांव जिला सोनीपत | १०१-०० |
| २०. | श्री सूर्यदेव वानप्रस्थी, दयानन्दमठ, रोहतक | २००-०० |
| २१. | श्री रामसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज योगीपुर, सोनीपत | ५००-०० |
| २२. | श्रीमती किताबकौर आर्या, पाकस्मा, रोहतक | ५००-०० |
| २३. | श्री ओमप्रकाश शास्त्री, सभागणक, रोहतक | १०१-०० |
| २४. | चौ० ३४ विकास नगर, रोहतक | ५००-०० |
| २५. | चौ० धर्मचन्द १०५७/२३ डी.एल.एफ. कालोनी रोहतक | ५००-०० |
| | योग = | १५,९९६-०० |

## वेदप्रचार

ऐंचरा खुर्द जिला जीन्द में पं० रामकुमार जी आर्य की भजनमण्डली द्वारा दो दिन वैदिक प्रचार हुआ तथा दो दिन हवन भी हुआ। लगभग दस-पन्द्रह युवकों ने यज्ञवेदी पर जनेऊ धारण किये तथा शराब जैसी भयंकर बुराई को छोड़ने का व्रत लिया जिनमें मुख्य दो शराबियों ने शराब छोड़ी। अपने घर पर हवन करवाया एवं यज्ञोपवीत धारण किया। ओमप्रकाश व कप्तानसिंह, सत्यवान, बिन्द्र, दलवीर, जगवीर, बहादुर, रामेहर आदि युवक प्रमुख हैं। प्रचार का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। लोगों की विशेष मांग रही कि जल्दी-जल्दी प्रचार होना चाहिये आर्यसमाज ऐंचरा खुर्द में नये सदस्य शामिल हुये।

**-सत्यवीर आर्य,** प्रधान आर्यसमाज ऐंचरा खुर्द, जीन्द

## विशेष छूट

### आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय में निम्न साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध है।

| क्र. | पुस्तक | मूल्य | |
|---|---|---|---|
| १. | धर्म-भूषण | १०-०० | २० प्रतिशत छूट |
| २. | धर्म-प्रवेशिका | ५-०० | |
| ३. | वैदिक सिद्धान्त सार | १५-०० | |
| ४. | वैदिक उपासना पद्धति | ८-०० | |
| ५. | प्राणायाम का महत्त्व | १५-०० | |
| ६. | श्रीमद्दयानन्दप्रकाश | ५०-०० | आधे मूल्य में |
| ७. | पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित्र | १०-०० | |
| ८. | हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान | ३०-०० | |
| ९. | पंजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन | १००-०० | |
| १०. | विजडम ऑफ ऋषिज | ७२-०० | |
| ११. | सरफरोशी की तमन्ना | २०-०० | |
| १२. | सत्यार्थप्रकाश | २५-०० | |
| १३. | आर्यसमाज क्या है? | ५-०० | |
| १४. | हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास | ५-०० | |
| १५. | हमारा फाजिल्का | ५-०० | |
| १६. | श्लीपद हाथी पांव चिकित्सा | २-०० | |
| १७. | शराबबन्दी शंका-समाधान | १-०० | |
| १८. | आदर्श धातु रूपावली | ५-०० | |
| १९. | ओ३म् ध्वज | १५-०० | |
| २०. | दैनिक यज्ञ प्रकाश | २-५० | |

**नोट :-**

१. अगर आप डाक से मंगवाना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड बुक पोस्ट+पैकिंग खर्च अलग से लगेगा।
२. रुपये पहले भेजने होंगे।
३. बैंक ड्राफ्ट 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम भेजें।

**-सत्यवीर शास्त्री,** मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

# आर्य-संसार

## आर्यो टंकारा चलो

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में ऋषि मेले का आयोजन ७,८,९ मार्च, २००५ को किया जा रहा है जिसमें भाग लेने हेतु देश-विदेश से हजारों ऋषिभक्त टंकारा पहुंच रहे हैं। आर्य परिवारों को टंकारा ले जाने हेतु गुड़गांव से एक स्पेशल बस आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय नई कालोनी मोड़ से चलाई जा रही है। टंकारा के साथ यात्री, अजमेर, पुष्करराज, जोधपुर, माउंट आबू, उदयपुर, जयपुर, चित्तौड़गढ़, द्वारिका, बेट द्वारिका, पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, राजकोट तथा अक्षरधाम देख सकेंगे। बस दिनांक ४-३-२००५ रात्रि ९-०० बजे गुड़गांव से चलेगी जो १३-३-२००५ को रात्रि गुड़गांव वापिस पहुंचेगी। **किराया १८००/- रु० प्रति सवारी।**

**यात्रा प्रबंधक-सोमनाथ, प्रधान आर्यसमाज अर्जुननगर गुड़गांव**

**दूरभाष : २३२७३४४, ९८१११७६२३६४, २३०४८७३**

## एन.एस.एस. शिविर सम्पन्न



**रा०व०० मा० विद्यालय नहला (फतेहाबाद) में यज्ञ कराते शमशेर आर्य**

गोरखपुर। रा.व.मा. विद्यालय नहला (फतेहाबाद) में आयोजित एन.एस.एस. शिविर के समापन के अवसर पर स्वयंसेवकों ने यज्ञ किया तथा जीवनभर नशों व बुराइयों से दूर रहने की प्रतिज्ञा की।

शिविर के समापन समारोह के अवसर पर माड़ूराम आर्य विद्या-प्रचार ट्रस्ट गोरखपुर की ओर से ट्रस्ट के प्रधान तथा सभा के अन्तरंग सदस्य शमशेर आर्य पत्रकार ने यज्ञ-हवन करवाया तथा लगभग तीन दर्जन छात्र-छात्राओं को यज्ञोपवीत धारण करवाकर, जीवनभर नशों से दूर रहने, दहेज न लेने, रिश्वत न लेने तथा इनका विरोध करते हुए समाज में रचनात्मक भूमिका निभाने की प्रतिज्ञा कराई तथा संगठित होकर कार्य करने पर बल दिया। पं० सूरजभान आर्य ने विद्या-अध्ययन के साथ-साथ ब्रह्मचर्य पालन कर शक्ति बढ़ाने तथा सदाचार व सादगीपूर्ण जीवन जीने पर बल दिया। बलवीरसिंह ने समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझते हुए सामाजिक गतिविधियों में बढ़चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया। माड़ूराम आर्य ट्रस्ट गोरखपुर की ओर से शिविर के दौरान प्रशंसनीय कार्य करने वाले स्वयंसेवकों को वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया। शिविर संयोजक सुभाषचन्द्र टांक ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर समाजसेवी पं० रतिराम, डॉ० पंकज गुप्ता, डॉ० जगदीशराय ने भी अपना उद्बोधन दिया। **-प्रो० सुभाषचन्द्र,** शिविर संयोजक, रा.व.मा. वि., नहला

# गौ-पूजा का वैज्ञानिक महत्त्व

वेद में सत्य कहा है कि गोमाता के गुणों को तोला नहीं जा सकता है। आर्यग्रन्थों में गाय के गोबर में लक्ष्मी का और मूत्र में गंगा का वास बताया गया है। गाय के पृष्ठ भाग में ब्रह्मा, कण्ठ स्थान में विष्णु, मुख में शिवजी तथा प्रत्येक रोम में ऋषि-महर्षियों का वास है। उसका गोबर जो अष्ट सिद्धियों का दाता है, उसे लक्ष्मी ने अपना विश्राम स्थल बनाया है। अनादिकाल से चली आ रही यह गोभक्ति हमारी अन्ध श्रद्धा और रूढ़िवादिता न होकर पूर्ण वैज्ञानिकता पर आधारित है। जब आधुनिक विज्ञान के प्रकाश में इन छोटी से छोटी रीतिरिवाजों का विश्लेषण किया जाता है तो वह महान् वैज्ञानिक रहस्यों से युक्त होते हैं।

भारतीय संस्कृति की विशेषता यही रही है कि उसमें गुणों की पूजा की जाती है। चूंकि परमात्मा की वाणी वेद ही कह रहा है कि गोमाता के गुणों को तोला नहीं जा सकता है। तो उसकी पूजा करना और माता कहकर पुकारना भी महान् वैज्ञानिकता से पूर्ण है यह हमारी केवल धार्मिक श्रद्धा नहीं है। हमारे ऋषि-महर्षियों की अलौकिक खोजों पर आधारित है। इसलिए गौ पूजन और संवर्धन धार्मिक दृष्टिकोण ही नहीं अपितु भारतीय आर्थिक दर्शनशास्त्र भी है। इसी कारण हमारे राजा महाराजाओं ने गोसेवा में अपना जीवन लगाया। राजा दिलीप और अर्जुन ने गोसेवा के लिए क्या-क्या कष्ट नहीं सहे उनके आख्यानों से साहित्य भरा पड़ा है। गुरु गोरखनाथ जी का नाम भी गोरक्षा के कारण ही पड़ा था। गोमठ बाबा मेलनाथ लेंघा भिवानी के संचालक प्रातःस्मरणीय श्री श्री १००८ स्वामी राजनाथ जी का गोमाता को चलता-फिरता भगवान् का मंदिर कहना महान् रहस्य भरा है।

गाय माता से प्राप्त मुख्यरूप से पांच प्रकार के पदार्थ हैं जिन्हें चिकित्सीय भाषा में पंचगव्य कहा जाता है। प्राचीनकाल से ही हमारे दैनिक जीवन में इन पंचगव्यों का उपयोग होकर रोगों से रक्षा तथा उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त किया जा रहा है। शास्त्रीय वचन एवं आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से भी सिद्ध हो चुका है कि-**यदस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्** अर्थात् पंचगव्य हमारी हड्डियों तक में प्रवेशित होकर पापसमूह रोगों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे अग्नि ईंधन को जला देती है। इसी कारण आधुनिक युग के लाइलाज रोग कैंसर, एड्स, गुर्दे फेलमोर जैसी घातक प्राणलेवा बीमारियों को समूल नष्ट करने का गुण पंचगव्य में निहित है। वैज्ञानिकों के अनुसार रक्तकैंसर एक अस्थि-मज्जा (बोनमेरो) जन्य रोग है, क्योंकि आर.बी.सी. का निर्माण बोनमेरो में ही होता है आधुनिक पैथोलोजी के विकास के बाद यह बात प्रमाणित हुई है कि ल्युकेमिया (रक्तकैंसर) अस्थि-मज्जाजन्य रोग है। इस सत्य को लाखों वर्षों पूर्व आयुर्वेद के महान् सर्जन सुश्रुत ने '**दारुण पाण्डु मज्जादोषात्**' सूत्र में स्पष्ट कर दिया था। पंचगव्य के इसी वैज्ञानिक स्वास्थ्यकर रहस्य को जानकर हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में उनका उपयोग होता है। भगवान् श्रीकृष्ण जी को शिशु अवस्था में गोमूत्र से स्नान कराया और सभी अंगों में गाय के खुर की धूल लगायी (श्रीमद्भागवतपुराण १०।६।२०)।

पंचगव्य में गाय के दूध, दही, घृत, मूत्र और गोबर का समावेश होता है। इनके संक्षेप में वैज्ञानिक गुण निम्न प्रकार हैं :-

**गोदुग्ध**-गाय का दूध रसायन है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे एन्टी ऑक्सीडेंट कहा है। चरक संहिता में इसके दस गुण बताये हैं-स्वादिष्ट, शीतल, कोमल, स्निग्ध, गाढ़ा, सौम्य, भारी, लसादार तथा बाह्य प्रभाव को विलम्ब से ग्रहण करने वाला कहा है। यह वीर्यवर्धक, ज्योतिवर्धक, बल-कान्ति मेधावर्धक हृदयरोग, गुल्म, उदरशूल, दाह इत्यादि को नष्ट करने वाला है। माईन साइंस में इसे ए.बी.सी.डी.ई. विटामिनों से भरपूर बताया गया है। उनका कथन है कि गाय के दूध में केरोटिन होता है जो किसी भी दूध में नहीं होता इसमें पीलापन होता है जो सोने के कण होने के कारण है सोना विषनाशक होता है।

**गोदधि**-दही में शरीर की इम्युनिटी बढ़ाने की क्षमता है। इसमें कैंसर रोधी गुण पाये जाते हैं। अनिद्रा रोग में कालीमिर्च, दही, सौंफ और मिश्री मिलाकर खाने से नींद आजाती है और नशीली गोलियों की आदत छूट जाती है।

**गोघृत**-त्रिदोषनाशक है। मानसिक शक्तिवर्धक श्रेष्ठ विरेचक इससे नेत्रज्योति बढ़ती है। अनेक विषों का प्रभाव दूर होता है। मकड़ी का विष तथा पित्ती नाशक गुण भी हैं।

**गाय का गोबर**-रूस के वैज्ञानिकों ने बताया है कि गाय के गोबर में सक्रिय विकिरणशीलता का प्रतिकार करने का गुण पाया जाता है जिस मकान में गोबर से निर्मित कंडों का धुंआ फैला हुआ है या गोबर से लिपा है वह सक्रिय विकिरणशीलता से सुरक्षित रहता है। गाय का गोबर उच्चकोटि का एंटीसैप्टिक है। इसी कारण आदिकाल से ही हिन्दू गृहणियां गोबर और पीली मिट्टी से घरों को लीपती हैं, क्योंकि इससे अमोनिया गैस और फार्मल डिठाइड का निर्माण होता है। अनेक प्रकार के चर्मरोगों को कंडे से खुजाकर मरहम लगाने का विधान किया गया है। स्वामी राजनाथ जी के संचालन में मेलनाथ औषधालय ने पंचगव्य से निर्मित मेलनाथ कामधेनु साबुन, चर्मरोगहर मरहम, कामधेनु धूप, हेयर शैम्पू का निर्माण किया है तथा फसलों को विषैले कीटनाशकों के हानिकारक प्रभाव से बचाने के लिए कामधेनु कीटनाशक भी तैयार किया है जिसके प्रयोग से कपास में अमेरिकन सुंडी नहीं लगती और सस्ता कीटाणु नाशक है।

**गोमूत्र**-गोमूत्र पृथ्वी का अमृत है। इसमें २४ तत्त्व पाये जाते हैं तथा स्वर्णक्षार भी होता है। वायोकेमी के जनक डॉ० सुशलर साहब ने १२ लक्षणों से मानव के सम्पूर्ण रोगों का इलाज करने की पैथी बायोकेमिक चला दी तो २४ तत्त्वों से युक्त गोमूत्र से सम्पूर्ण रोगों का इलाज क्यों नहीं होगा? इसी कारण भारतीय वैज्ञानिकों को अमेरिका में गोमूत्र का पेटेंट मिल गया है। इन वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि गोमूत्र के अर्क (डिस्टिलेंट) से कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों की दवाइयां माइक्रो ब्रनाशी दवाइयों और एन्टीबायरिक्स की क्षमता कई गुणा बढ़ जाती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि गोमूत्र अर्क से जो औषधीय फारमेलेशन तैयार होगा उससे कैंसर, फगंस इंफेक्शन और माइक्रो फैक्शन की बेहतर दवाइयां शुरुआत करने का काम आसानी से किया जा सकता है। उपरोक्त तथ्यों से सिद्ध है कि गोपूजा हमारा धार्मिक अन्धविश्वास न होकर वैज्ञानिकता है। गाय की सेवा रक्षा संवर्धन भारत का आर्थिक दर्शन को प्रभावित करता है। गाय हमें पोषण देती है। प्रदूषण से बचाती है। रोगों से बचाती है। विश्व की माता है सब भारतीयों के लिए कल्याणकारी है उसकी रक्षा और संवर्धन में सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। भारत के आर्थिक दर्शन की रक्षार्थ, गृहक्लेश, वास्तुदोष से मुक्ति पाने के लिए हर घर में एक गौ पालन का व्रत लें।

**-डॉ० रणवीर सिंह आर्य, गोमठ लेघा (भिवानी)**

# नामदान उन्मूलन अभियान

भारतवर्ष प्राचीन काल से ही ऋषियों-मुनियों, सन्तों व महात्माओं की जन्मभूमि व कर्मभूमि रहा है, जिन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान के क्षेत्र में उच्च सोपान व कीर्तिमान् स्थापित किए हैं जिनका विश्वभर में कोई सानी नहीं है। परन्तु विगत कुछ वर्षों से उत्तर भारत (विशेषकर पंजाब, हरयाणा व दिल्ली) के शहरी व ग्रामीण अंचलों में आध्यात्मिकता के नाम पर 'नामदान' नामक मानसिक व्याधि ने पनपना प्रारम्भ किया जो वर्तमान में एक महामारी का रूप धारण कर चुकी है। यह गोपनीय रोग है। पत्नी भी पति से नामदान को गुप्त रखती है। यह महामारी 'एड्स' से भी ज्यादा घातक है। एड्स का रोगी एक बार मरता है, जबकि नामदान का रोगी जन्म-जन्मान्तर तक आवागमन के चक्कर में फंस जाता है। क्योंकि अज्ञानतामूलक संस्कार मानव की मुक्ति में सर्वदा बाधक है।

वैदिक विद्वानों ने राज्य व राष्ट्रीय राजमार्गों पर स्थापित तथाकथित आश्रमों का गहन निरीक्षण करके इस महामारी के वायरस का पता लगा लिया है। यह बीमारी प्रपंची संत नामक एक परजीवी कीटाणु से फैलती है, जो भ्रान्तिजनक आश्रमों में पाया जाता है। इसका सीधा आक्रमण सरल हृदय मानव के मन-मस्तिष्क पर होता है। परिणामस्वरूप मानव की सद्भावना व विचारशक्ति विकृत व कुंठित हो जाती है। महिलाओं की कोमल धार्मिक भावनाओं के लिए यह ज्यादा घातक पाया गया है। फलतः महिलाएं इसकी सर्वाधिक शिकार होती हैं। समाचार-पत्रों में प्रकाशित आंकड़ों से पता चला है कि रोहतक जिला के एक ही आश्रम में इसके पीड़ितों की संख्या ३,५०,००० को पार कर चुकी है। इसका उपचार स्नातकोत्तर संस्थान चिकित्सालय (पी.जी.आई.एम.एस.) रोहतक में भी उपलब्ध नहीं है।

**रोग के लक्षण-**

१. नामदान के रोगी में तन-मन-धन गुरु के अर्पण की भावना विकसित होने लगती है।
२. रोगी को सत्य ज्ञान से एलर्जी हो जाती है।
३. रोगी का व्यक्तिविशेष के प्रति सम्मोहन बढ़ता जाता है, उसे ईश्वरतुल्य समझने लगता है।
४. रोगी सत्य का आभास कराने वाले के प्रति आक्रामक हो जाता है। कभी-कभी हत्या भी कर डालता है। उदाहरणार्थ श्री छत्रपति जी इनका शिकार हो चुके हैं।
५. रोगी गृहकार्यों की उपेक्षा करके साप्ताहिक व पाक्षिक कुसंगों में जाने लगता है।

**रोग से बचाव के उपाय व सावधानियाँ-**

१. अपने जीवन साथी के प्रति वफादार रहें तथाकथित सन्त के प्रति नहीं।
२. अनजान व्यक्ति से कुछ भी न लें, आपके साथ धोखा हो सकता है।
३. नामदान को गोपनीय मत रखें, इस पर खुलकर चर्चा करें। स्वस्थ विचार-विमर्श द्वारा 'नामदान' से बचा जा सकता है।
४. अपने आसपास के क्षेत्र में भक्ति-मुक्ति नामक अंधकूप को ना खुदने दें, इसमें आप कभी भी गिर सकते हैं।
५. यह संक्रामक रोग है अतः स्वस्थ व्यक्ति स्वयं को रोगी के सम्पर्क से दूर रखें।
६. वैदिक विद्वानों से अध्यात्मसम्बन्धी चर्चा करें व शंकाओं का निवारण करें।
७. अज्ञानतिमिरनाशक वैदिक साहित्य व सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय, श्रवण व मनन करें।
८. माता-पिता व आचार्य को ही गुरु मानें, आचारहीन सन्त को नहीं।
९. व्यक्ति को भगवान् मानने की धारणा न बनाएं, व्यक्तिपूजा से बचें।
१०. सद्विवेक व तर्कशक्ति को विकसित करके अन्धश्रद्धा से बचें।

**विशेष सूचना**-सभी आर्यसामाजिक संस्थाओं में नामदान के रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा व परामर्श उपलब्ध हैं।

**सौजन्य : श्री महेन्द्र आर्य, गाँव इमलोटा, जनपद भिवानी (हरयाणा)**

## भजन

सुनो आर्यो! दयानन्द का मान घटाना ठीक नहीं,
उनके बतलाए मार्ग को भूल जाना ठीक नहीं॥टेक॥
ऐसा ऋषि कभी आया नहीं और ना आने की आश,
किसी प्रकार का उस पर दोष लगाना ठीक नहीं॥१॥
वेदप्रचार और देश धर्म पर हो गए बलिदान,
उसकी बखानी के विरुद्ध कभी जाना ठीक नहीं॥२॥
दस नियम बनाए ऋषि ने उनको अपनाओ,
अपने मनमाने नियम बनाना ठीक नहीं॥३॥
मनमोटाव आपस के मिल बैठ ठीक करलो,
यही ठीक मार्ग है कोर्ट कचहरी जाना ठीक नहीं॥४॥
बहुकुण्डिये यज्ञ करना-कराना ऋषि का आदेश नहीं,
मरने के बाद भी शान्ति यज्ञ रचाना ठीक नहीं॥५॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को साकार करना चाहो तो,
भवनों में बैठकर पंखों की हवा खाना ठीक नहीं॥६॥
गांवों में जाकर बतलाओ ऋषि आदेश को,
केवल आर्यसमाजमन्दिरों में बाजा बजाना ठीक नहीं॥७॥
वेद के विद्वानों और संन्यासियों का करो सम्मान,
केवल अपनी ही छवि को बनाना ठीक नहीं॥८॥
अपनी शुभ कमाई से कुछ दान दो आर्यसमाज को,
केवल ऋषि के नाम पर खाना ठीक नहीं॥९॥
दयानन्द का इतना कर्जा है उतार सकता ना कोई,
बिना कर्जा चुकाए विश्वम्भर तेरा मर जाना ठीक नहीं॥१०॥

-डॉ० विश्वम्भर आर्य, ग्राम छिल्लर डाढी, पो० दूधवा, जिला भिवानी (हरयाणा)




आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक १२ २१ फरवरी, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# मनुष्य एक शाकाहारी प्राणी है

यह मानवीय स्वभाव है कि जो काम या रुचि जिस व्यक्ति की स्वयं की अच्छी या बुरी होती है, वह उसी के पक्ष में तर्क व कुतर्क से दूसरों को भी मनवाने का प्रयत्न करता है यानि अपने ही पक्ष की बलपूर्वक पैरवी करके अपनी ही बात को सही सिद्ध करना चाहता है। इसी प्रवृत्ति के वशीभूत होकर मांसाहारी लोग यह कहने पर जोर देते हैं कि मांस मनुष्य का भोजन है और युक्ति देते है कि **"जीवो जीवस्य भोजनम्"** यानि जीव ही जीव का भोजन है। उदाहरण के तौर पर वे कहते हैं कि कुत्ता बिल्ली को खाता है, बिल्ली चूहे को खाती है, शेर अन्य पशुओं को खाता है यानि एक शक्तिशाली प्राणी, अपने से कमजोर को खाता है। मनुष्य सबसे शक्तिशाली प्राणी है तो यदि वह पशु-पक्षियों को खाता है तो क्या बुरा करता है। यह तो सृष्टि का ही नियम है। परन्तु उनकी यह युक्ति बुद्धिसंगत, मानवीय स्वभाव तथा वेदानुकूल न होने से न्यायोचित नहीं है। इस बात को सिद्ध करने के लिये निम्नलिखित कारण व प्रमाण प्रस्तुत किये हैं जिनको पढ़कर पाठकगण स्वयं ही निर्णय ले लेवेंगे।

**१. मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है :-** इस सृष्टि में ईश्वर ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। उसी को चिन्तन-मनन करने के लिये एक विशेष वरदान के रूप में बुद्धि दी है जिससे अच्छे बुरे की पहचान कर सके यानि क्या काम मुझे करना चाहिये और क्या काम नहीं करना चाहिये यह जान सके। मनुष्य को उसी के लिये प्रयत्न करना चाहिये जिसकी प्राप्ति के लिये ईश्वर ने मनुष्य को इस संसार में भेजा है। वह काम या पुरुषार्थ है धर्म,अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति करना यानि धर्मपूर्वक सदाचार, सद्विचार और सबसे सद्व्यवहार रखते हुए अपने पूर्ण पुरुषार्थ से धनसंग्रह करना, उस धन को धर्मपूर्वक सद्उपयोग करके अपनी सीमित इच्छाओं व कामनाओं की पूर्ति करते हुए मनुष्य का जो अंतिम लक्ष्य मोक्ष है उसको प्राप्त करना। जिन कार्यों व साधनों से मोक्ष की प्राप्ति हो वही काम करना मनुष्य के लिए हितकर है। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य से भटक जाता है उसको, उसके कर्मानुसार निम्नकोटि की योनि मिलनी निश्चत है।

**२. ईश्वर ने मनुष्य को वेदों का ज्ञान दिया :-** ईश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न करने से पहले उसके लिये साधन व सहयोग के रूप में सृष्टि की रचना की जिसमें आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि बनाकर अनेक युवा स्त्री-पुरुषों के जोडों की तिब्बत पर कृत्रिम गर्भाशय के द्वारा अमैथुनी प्रक्रिया से उत्पत्ति की, तत्पश्चात् चार-ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा थे, उनके हृदय में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के ज्ञान का प्रकाश करके लोगों को सुनवाया। उस वेद ज्ञान में मनुष्य को अपने जीवनपर्यन्त किस प्रकार रहना चाहिये जिससे वह परिवार, समाज, विश्व व प्राणिमात्र को सुखी रखते हुए वह स्वयं भी सुखी रह सके। ये सब शिक्षाएं व उपदेश मनुष्य को दिया। साथ ही मनुष्य को क्या खाना चाहिये और क्या नहीं खाना चाहिये यह भी बतलाया। वेदों के आधार पर बाद में हमारे ऋषि-मुनियों ने भी आर्षग्रन्थ दर्शन, उपनिषद्, स्मृति व ब्राह्मणग्रन्थ आदि रचकर उनमें विस्तार से वर्णन किया। अब मनुष्य का पावन कर्तव्य यह है कि जैसा ईश्वर ने वेदों में आदेश दिया है उसी के अनुसार चलकर अपने जीवन को सुखी व सफल बनावे।

**३. वेद तथा आर्षग्रन्थों की शिक्षाएं :-** ईश्वर ने सारी सृष्टि रची है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, तथा मनुष्य आदि सभी को ईश्वर ने उत्पन्न किया है इसलिये प्राणिमात्र का ईश्वर पिता हुआ और हम सब ईश्वर के पुत्र-पुत्रियाँ हुए। वेद भी यह कहता है **"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"** पृथ्वी हमारी माता है, हम सब उसके पुत्र हैं इसलिये पृथ्वी पर जितने भी प्राणी बसते हैं, वे सब उसके पुत्र होने के कारण बहन-भाई हुए, जिसमें मनुष्य सबसे श्रेष्ठ है तो मनुष्य की श्रेष्ठता इसी में है कि वह प्राणिमात्र को अपना भाई व बहन समझे। इसलिये मनुष्य को किसी भी जीव व प्राणी चाहे वह बकरा हो, मुर्गा हो, गाय हो या मछली हो, मारकर या अपने खाने के लिये किसी के द्वारा मारा हुआ नहीं खाना चाहिये। किसी जीव को मारकर या दूसरे के द्वारा मारा हुआ खाना, मानवता के विरुद्ध है। मनुष्य को एक बात और समझनी चाहिए, जिस प्रकार मेरे को मारने से मेरे माता-पिता को जितना दुःख व कष्ट होता है उसी प्रकार पशु-पक्षी भी किसी माता-पिता के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। महर्षि वेदव्यास ने भी कहा है **"आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्"** जिस व्यवहार से तुम्हारी आत्मा दुःख पाती है वह व्यवहार दूसरों से भी मत करो और जिस व्यवहार से तुम्हारी आत्मा प्रसन्न होती है वही व्यवहार दूसरों से भी करो। कारण प्राणिमात्र की आत्मा के दुःख-सुख एक समान है यही बात महर्षि दयानन्द ने मानव की परिभाषा बताते हुए कही है। इसलिये मनुष्य के लिए किसी भी प्राणी को मारकर खाना तो दूर रहा बल्कि किसी को भी किसी प्रकार का कष्ट देना भी वेदविरुद्ध है।

**४. जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतंन्त्र है :-** ईश्वर ने जीव को कर्म करने में स्वतन्त्र और फल देना अपनी न्यायव्यवस्था के अधीन रखा है जो मनुष्य अच्छा या बुरा जैसा भी काम करेगा वैसा ही उसको फल मिलना निश्चित ही है। कृष्ण भगवान् ने भी यही बात गीता में कही है **"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"** तो मनुष्य की समझदारी इसी में है कि वह हर प्राणी से प्रेमपूर्वक मित्रता का व्यवहार करे ताकि हर प्राणी उसको मित्रता की दृष्टि से देखे जिससे वह स्वयं को सुखी रखता हुआ सब को सुखी रख सके। यजुर्वेद का यह मन्त्र भी यही उपदेश देता है **"मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥"**

**५. मानव को अधिकार के साथ जिम्मेवारी भी दी है :-** ईश्वर ने जितने भी ग्रह-उपग्रह, पदार्थ व जीव बनाये हैं, वे सभी मनुष्य के प्रयोग, उपयोग, सहयोग व उपभोग के लिये मनुष्य की उत्पत्ति से पहले ही बना दिये थे जैसे बच्चा होने से पहले ईश्वर माँ के स्तनों में दूध भेज देता है और उसी दूध को पीकर बच्चा बड़ा होता है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्य के लिये यह सृष्टि रची और इसी के साथ ही वेदज्ञान भी दिया जिसमें किस चीज का क्या सदुपयोग है बताया। वेदों के अनुसार मनुष्य को चाहिये कि घोड़ा, ऊँट, गधा, हाथी व बैल आदि का उपयोग माल ढोने व हल चलाने में करे। गाय भैंस, बकरी आदि का प्रयोग दूध पीने के लिये करे अन्न, फल-फूल, साग-सब्जी व मेवा का प्रयोग खाने कि लिये यानि उपभोग के लिये करे और सोना, चाँदी लोहा, पीतल, मिट्टी, पत्थर आदि का प्रयोग मकान बनाने व जेवर, औषधि आदि बनाने के लिये करे। इसके विपरीत यदि मनुष्य इनका दुरुपयोग करता है तो वह मानव नहीं दानव है। जहाँ ईश्वर ने इनके प्रयोग का अधिकार मनुष्य को दिया है, वहीं वेद ने **"पशून् पाहि"** कहकर उनके पालन व रक्षा करने की जिम्मेवारी भी मनुष्य को ही दी है। जैसे गाय, भैंस के दूध पीने का और उनके बच्चों से हल जोतने का जहाँ अधिकार दिया है वहीं उनके पालन और रक्षा करने का भार भी मनुष्य को ही दिया है। यदि कोई इनका दूध पीकर फिर कसाई के हाथ काटने के लिये बेच देता है वह कृतघ्न ही नहीं बल्कि महापापी भी है।

**६. जो पैदा करता है वही मारने का अधिकार है :-** यह तो सृष्टि का अटल नियम है कि जो पैदा हुआ है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। महाभारत में कहा है **"जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च"** परन्तु जो पैदा करता है उसी को मारने का अधिकार है। जीवों को ईश्वर ने पैदा किया है, इसलिये किसी भी जीव को मनुष्य मारता है तो वह अनधिकार और प्रकृति नियम

विरुद्ध काम करता है। मनुष्य फसल पैदा करता है, पेड़ लगाता है या घर बनाता है तो फसल पक जाने पर काटने का, पेड़ सूख जाने पर काटने और घर जर्जर होने से तोड़ने का उसे पूरा अधिकार है। परन्तु जीव को मनुष्य पैदा नहीं करता इसलिये उसे मारने का कोई अधिकार नहीं उसे ईश्वर ने पैदा किया और ईश्वर ही अपनी न्यायव्यवस्था के अनुसार उसकी मृत्यु के बाद उसके कर्मानुसार दूसरी योनि में भेजता है। यह काम ईश्वर का है उसी पर ही हमें छोड़ देना चाहिये।

**७. मनुष्य की बच्चे से तुलना :-** एक बात यह समझने की है कि एक छोटा बच्चा नासमझ होने से बिस्तर में पेशाब व टट्टी कर देता है बाद में वही बच्चा समझदार होने से बिस्तर में पेशाब व टट्टी करना निहायत कमजोरी के लक्षण मानने लग जाता है। यदि बड़ा व्यक्ति भी यह कहे कि बच्चा जब पेशाब व टट्टी बिस्तर में कर देता है तो मैं भी क्यों न करूँ? यह उसकी मानसिक दुर्बलता ही कही जायेगी। जो लोग मांसाहारी पशु जो दूसरे पशुओं को खाता है उनका उदाहरण देते हैं उन पर भी यही बात लागू होती है।

जिन आधारों पर मांसाहारी लोग, मांस खाना उचित ठहराते हैं वे आधार निम्नलिखित हैं तथा उनके उत्तर भी साथ दिये हुए हैं।

**१. पेड़-पौधों में भी प्राण है :-** हाँ! वेद भी मानता है कि पेड़-पौधों में भी प्राण है परन्तु हम तो जो फल पक जाता है वह चाहे पेड़ से गिरा हुआ हो या पेड़ से गिरने वाला हो उसी को खाते हैं। अन्न जैसे गेहूँ, जौ, चना, चावल, बाजरा आदि सभी खेत में पक जाने के बाद घर पर लाकर उसे पकाकर खाते हैं और उसके सूखे तने (बिचाली) को पशु खाते हैं जिसको खाने में कोई हिंसा नहीं। कारण ऋग्वेद के एक मन्त्र द्वारा आदेश है कि हे मनुष्य! तू जूवा न खेल, कृषि कर और गाय पाल।

**२. गाय का दूध पीना भी हिंसा है :-** मांसाहारियों का एक तर्क यह है कि गाय का दूध उसके बच्चे के लिये होता है मनुष्य बच्चे को न पिलाकर खुद पीते हैं यह पाप है। उनका यह कहना गलत है कारण गाय को हम अन्न व घास खिलाकर उसकी अच्छी प्रकार सेवा करके उसका दूध बढाते हैं। बच्चा जितना दूध पीता है उसको पिलाकर बाकी जो दूध बचता है उसे मनुष्य पीते हैं जिसको पीने में कोई पाप नहीं। दूसरी बात यह है कि यदि मनुष्य बच्चे का कुछ दूध पीते भी हैं तो बदले में बच्चे का पेट तो अनाज व घास खिलाकर भरते हैं। बच्चे को भूखा तो नहीं रखते इसलिये अपनी सेवा के बदले कुछ दूध बच्चे का पीते हैं तो इसमें कोई पाप नहीं है बल्कि धर्म इसलिये है कि अनाज खाने से गाय का दूध बढ़ जाता है। यदि सारा दूध बच्चा पी लेवे तो उसकी जान का खतरा हो सकता है। ईश्वर ने गाय, भैंस, बकरी दूध पीने के लिये ही बनाई हैं इसलिये इनका दूध पीने में कोई पाप नहीं। वेदों में तो गाय के दूध को अमृत कहा इसलिये गाय का दूध पीना और इसके बदले उसकी अच्छी प्रकार सेवा करके उसकी हर तरह से रक्षा करना मनुष्य का पवित्र कर्तव्य बताया है।

**३. बकरे-मुर्गे नहीं खायेंगे तो एक समस्या बन जायेगी :-** मांसाहारी कहते हैं कि यदि बकरे-मुर्गे नहीं खाये जायेंगे तो वे इतने ज्यादा हो जायेंगे कि मनुष्यों का जीना मुश्किल हो जायेगा। यह भी उनकी गलत धारणा है। मनुष्य, कुत्ते, बिल्ली, चूहे नहीं खाता तो क्या उनके बढ़ने की कोई समस्या आती है। जबकि कुतियाँ एक समय ७-८ बच्चे देती है। पक्षियों में मुर्गा खाया जाता है कौवा, चील नहीं खाई जाती तो क्या उनकी संख्या बढ़ती है? यह विषय ईश्वर का है, उसे नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं। यहाँ बात बता देना भी उचित है सृष्टि का यह नियम है कि प्रकृति का एक कण और जीव भी न कभी बढ़ता है और न घटता है। सृष्टि के प्रारम्भ में जितने मिट्टी के कण थे और जीवात्माएं थीं उतनी ही आज भी हैं। सिर्फ रूपान्तर होता है। मिट्टी के कण से पहाड़ बनता है और पहाड़ से ही कण बनता है। जीवात्माओं का भी रूपान्तर अनेक योनियों में होता रहता है। एक योनि बढ़ती है तो दूसरी योनि घट जाती है। इसकी गिनती या हिसाब रखना ईश्वर का ही विषय है, मनुष्य का नहीं। यहाँ एक बात और समझने की है, ब्रह्माण्ड में अनगिनत लोक-लोकान्तर व ग्रह-उपग्रह हैं। अपनी पृथ्वी तो समुद्र के एक बूंद के समान है। इतनी बड़ी सृष्टि का हिसाब तो ईश्वर की न्यायव्यवस्था के अधीन चलता है, मनुष्य की शक्ति व सामर्थ्य के बाहर की चीज है इसलिये अनधिकार चेष्टा करना गलत है। मनुष्य को चाहिये की वह वेदानुसार धर्म की राह पर चलता रहे।

**४. दही, हवा, पानी, सब्जी में भी जीवाणु हैं :-** मांसाहारी यह कह देते हैं कि जब दही, हवा, पानी, सब्जी आदि में जीवाणु हैं और उनको हम खाते पीते हैं तो पशु-पक्षी खाने में क्या दोष है? यह पहले भी लिख दिया गया है कि सृष्टि में जितनी भी चीजें व पदार्थ हैं वे सब मनुष्य के प्रयोग, उपभोग, सहयोग व उपयोग के लिये हैं। किस वस्तु का क्या प्रयोग है, ईश्वर ने वेदों में वर्णित कर दिया है, इसलिये जैसा वेदों में आदेश है हमें उसी भांति हर वस्तु का प्रयोग करना चाहिये तभी विश्व में सुख व शांति रह सकती है। वेदों में पशु-पक्षी खाना नहीं लिखा है बल्कि रक्षा करना लिखा है। **"अविर्मा हिंसी:, गां मा हिंसी: एकशफं मा हिंसी:"** (यजुर्वेद) ऐ मनुष्य! तू भेड़, गाय, एक खुर वाले घोड़े आदि पशुओं को मत मार।

**५. मांस खाने से शरीर बलिष्ठ होता है :-** मांसाहारियों की यह धारणा होती है कि मांस खाने से शरीर बलिष्ठ होता है यह धारणा भी उनकी गलत है। सच तो यह है कि शाकाहारी में मांसाहारी से शक्ति ज्यादा होती है। उदाहरण के तौर पर पहलवान मेहरदीन मांसाहारी को मास्टर चन्दगीराम शाकाहारी ने कुछ ही क्षणों में पटककर हरा दिया था। बल भी मनुष्य में चार किस्म का होता है। शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक। यदि हम मान भी लेवें की मांसाहारी में शारीरिक बल कुछ ज्यादा होता है परन्तु बाकी तीनों बल, फूर्ती तथा काम करने की लम्बे समय तक क्षमता मांसाहारी में निश्चितरूप में ही शाकाहारी से कम होती है और शाकाहारी के विचार, स्वभाव व चरित्र मांसाहारी से कहीं अच्छा होता है इसलिये वह सबसे प्रीतिपूर्वक सद्व्यवहार करके जीवन में ज्यादा सुखी व सफल होता है।

**६. मांस खाने में अनाज कम लगता है :-** यह भी मांसाहारी की भ्रान्ति है। मांस भोजन कम सब्जी अधिक है। मांस साथ होने से भोजन ज्यादा खाया जाता है और मांस में मशाला ज्यादा पड़ता है जिससे खर्चीला भी अधिक होता है। हम देखते हैं, जब सब्जी स्वादिष्ट होती है तब भात व रोटी ज्यादा खाई जाती है। मांस खाने वालों से पूछो मांस मिलने से वह भात या रोटी ज्यादा खाते हैं इसलिये मांस खाने से अनाज कम खाया जाता है यह भ्रम है।

एक यह बात अति विचारणीय है कि मांस खाने वाले पशु जैसे शेर, कुत्ता, बिल्ली आदि मांस न खाने वाले पशु जैसे गाय, भैंस, ऊँट, घोड़ा, हाथी आदि के शरीर की बनावट में अन्तर होता है। मैं लेख के विस्तार में न जाकर इतना ही लिखना काफी समझता हूँ कि मांसाहारी पशुओं के दाँत, आँख, पानी पीने का ढंग, आँत तथा चमड़ी में, शाकाहारी पशुओं से काफी अन्तर होता है और मनुष्यों की शरीर की बनावट शाकाहारी पशुओं से मिलती है इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी प्राणी बनाया है। दुःख इस बात का है कि जो पशु मांस नहीं खाता वह भूखा चाहे मर जाये परन्तु मांस नहीं खायेगा। पर मनुष्य एक ऐसा निर्लज्ज प्राणी है जिसको ईश्वर ने विवेक के लिये बुद्धि दी, वेद ज्ञान दिया और खाने के लिये सबसे उत्तम फल-फूल, मेवा-मिश्री, दूध-मलाई आदि भी दिये फिर भी वह मांस अण्डे, मछली खाता है। यह उसकी बुद्धिहीनता व पतन की पराकाष्ठा ही कही जायेगी। कविवर **"प्रकाश"** के शब्दों में ईश्वर कहता है :-

**फल-फूल, शाक, मेवा व दुग्दाधि सम,**
**मधु आहार मैंने तुझे है दिया।**
**तू अभागा तम्बाकू, अमल, मद्य, मांसादि खा,**
**रोग तन में बसाए तो मैं क्या करूं॥**

मेरे प्यारे पाठकगण, मैंने इस विषय को काफी उदाहरणों से समझाने का प्रयत्न किया है फिर भी यह हिंसा-अहिंसा का विषय इतना जटिल व उलझा हुआ है जिसको हर व्यक्ति समझने में असमर्थ है। मांस खाने वालों के अनेक प्रश्न ऐसे हैं जैसे मनुष्य कच्ची हरी सब्जी खाता है, फूलों को तोड़कर माला बनाता, श्वास लेकर कितने ही जीवों की हत्या करता है आदि। जिनका समाधान करना कठिन है। बस! मानवमात्र के लिये उचित यही है कि वह ईश्वरप्रदत्त वेदों के अनुसार चलकर अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को प्रसन्न व सुखी बनाते हुए त्यागमय जीवन जीकर मनुष्य के अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करें।

–खुशहालचन्द्र आर्य, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

## सर्वोपरि महर्षि दयानन्द

ऋषिवर तेरी तुलना नहीं हो सकती किसी एक व्यक्ति महान् से।
तेरी तुलना हो सकती है, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और आसमान से॥
तेरी तुलना श्रीराम से करूं, वह कृष्ण जैसा था कूट नीतिवान् नहीं,
तेरी तुलना करूं कृष्ण से, उसने रखा मर्यादा का इतना ध्यान नहीं,
दयानन्द, तेरे अन्दर दोनों के समस्त गुण पाये जाते हैं समान से.......१
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती.................।
तेरे तुल्य समझूं मैं बुद्ध को, वह आदिशंकर जैसा था विद्वान् नहीं,
तेरी तुलना करूं शंकर से, वह बुद्ध जैसा मिला दयावान् नहीं,
तेरे अन्दर दोनों के गुण थे, कह सकते हैं हम स्वाभिमान से..........२
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती.................।
तेरी तुलना करूं भीम से, उसने रखा ब्रह्मचर्य व्रत महान् नहीं,
तेरी तुलना करूं भीष्म से, उसने अन्याय पक्ष लेकर रखा अपना सम्मान नहीं,
दोनों के गुण विद्यमान थे, पता लगता है आपके व्यक्तित्व महान् से...३
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती.................।
तेरी तुलना कालिदास से करूं, उसमें चाणक्य जैसा था देश स्वाभिमान नहीं,
तेरी तुलना करूं चाणक्य से, उसमें मिलता सहनशीलता गुण प्रधान नहीं,
दोनों के गुण पाये जाते, आपका जीवन चरित्र पढ़ते हैं जब ध्यान से....४
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती.................।
तेरी तुलना करूं केशवसेन से, जिसमें भारतीय संस्कृति पर था स्वाभिमान नहीं,
तेरी तुलना करूं गांधी से, जिसने सोचा तुष्टीकरण का परिणाम नहीं,
दोनों के गुण भलीभांति जाने जाते, आपके किये जनकल्याणी काम से.....५
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती.................।
"खुशहाल" ने खोज लिया सारा इतिहास, इस प्यारे देश की शान का,
कोई भी व्यक्ति पाया नहीं, ऋषि दयानन्द के चरित्र के समान का,
अब इच्छा होती है, तुलना करूं सर्वगुणसम्पन्न शुद्ध स्वरूप भगवान् से.....६
ऋषिवर, तेरी तुलना नहीं हो सकती.................।

–खुशहालचन्द्र आर्य, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

# आर्य-संसार

## आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स का अमृतमहोत्सव (हीरक जयन्ती) समारोह सम्पन्न




आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स कमला नगर दिल्ली का अमृतमहोत्सव (हीरक जयन्ती) कार्यक्रम दिनांक २८/२९/३० जनवरी २००५ को आर्यसमाज के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम दिनांक २८ जनवरी, २००५ को एक शोभायात्रा का आयोजन किया गया। सामवेदीय यज्ञ, ब्रह्मा परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी ने कराया यज्ञ संयोजक आचार्य कुंवरपाल शास्त्री जी के सान्निध्य में सामवेदीय यज्ञ का पाठ वेद उद्गात्री आर्ष कन्या गुरुकुल दोणस्थली देहरादून की आचार्या डा० अन्नपूर्णा जी एवं ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध उद्योगपति श्री अरुणकुमार बंसल जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। शोभायात्रा का आरम्भ आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने हरी झण्डी दिखाकर किया। शोभा-यात्रा प्रात: १०-०० बजे आर्यसमाज मंदिर से प्रारम्भ होकर शक्तिनगर, कमलानगर क्षेत्र के प्रमुख मार्गों से होती हुई वापिस बिड़ला सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के प्रांगण में सम्पन्न हुई। शोभायात्रा का संयोजन आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के नेतृत्व में ब्रजेश आर्य, वीरेन्द्र आर्य जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य जी ने किया। शोभायात्रा का स्वरूप देखने वाला था। शोभायात्रा में ओ३म् ध्वज पताका लहराते हुए भूदेव जी आर्य सबसे आगे चल रहे थे। उनके पीछे अमृतमहोत्सव का बैनर लिए हुए दो व्यक्ति चल रहे थे। उनके पीछे चार घुड़सवार ओम् ध्वज हाथों में लिए हुए थे। घुड़सवारों के पीछे विभिन्न आर्यसमाजों के एवं क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्ति आर्यबन्धु भजन गाते हुए एवं जयकारा लगाते हुए चल रहे थे। इनके पीछे बैण्ड बहुत ही सुन्दर भजनों की धुन बजा रहा था। बैण्ड के पीछे दो घोड़े की बग्घी में परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द, माता स्वर्णा गुप्ता जी, शकुन्तला दीक्षित जी विराजमान थीं। बग्घी के पीछे बहुत ही सुंदर झाँकी फूलों से सज्जित चल रही थीं जिसमें ब्रह्मचारिणी सुमेधाजी के साथ आर्य महिलाएं यज्ञ कर रही थीं। इनके ठीक पीछे आर्यसमाजों में चल रहे स्कूल के बच्चों की टोलियाँ थीं जो ओ३म् ध्वज हाथों में लेकर जयघोष करती हुई चल रही थी।

### शनिवार दिनांक २९ जनवरी, २००५

प्रात: ११-०० बजे से ४-०० बजे तक आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स के प्रांगण में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। आचार्य डा० अन्नपूर्णा जी द्वारा यज्ञ कराया गया, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित जी की अध्यक्षता में कार्यक्रम शुरू हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि शकुन्तला आर्या (पूर्व महापौर दिल्ली) एवं मुख्यवक्ता आचार्या डा० अन्नपूर्णा जी, श्रीमती सुषमा शर्मा, श्रीमती राजरानी चौधरी थीं।

### रविवार दिनांक ३० जनवरी, २००५

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स के अमृतमहोत्सव की पूर्णाहुति एवं समापन समारोह के मुख्य यजमान श्रीमती एवं श्री उमाकान्त जी गुप्ता रहे। पूर्णाहुति के पश्चात् भक्ति संगीत का कार्यक्रम पं० धूमसिंह शास्त्री द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें बहुत ही मधुर भजनों का समागम था। समापन समारोह की अध्यक्षता श्री श्यामसुन्दर जी आर्य ने की तथा संयोजन श्री नरेन्द्र आर्य जी ने किया। कार्यक्रम में अमृतमहोत्सव पर समाज के ७५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में एक स्मारिका का विमोचन आरदणीय परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी ने किया। समारोह में मुख्य वक्तागण के रूप में डॉ० महेश विद्यालंकार, ब्रह्मचारी राजसिंह प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्या अन्नपूर्णा जी (देहरादून) आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य जी आदि ने उपस्थित आर्य जनसमूह को सम्बोधित किया।

–नरेन्द्र आर्य, मंत्री

## विश्वकल्याणार्थ महत्त्वपूर्ण कार्य प्रारंभ

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि ईश्वरप्रदत्त वेद तथा ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट दर्शन, उपनिषद् आदि शास्त्रों के अनुसार वैदिक धर्म, शिक्षा, संस्कृति, वर्णाश्रम व्यवस्था आदि के माध्यम से लौकिक उन्नति तथा मोक्ष सिद्धि हेतु रोजड़, गुजरात में एक भव्य विशाल आकार के भवन (११५ फीट × ६० फीट) का निर्माण प्रारंभ हो गया है जिसमें भूमिगत ध्यान कक्ष (क्षमता ५०० व्यक्ति), विशाल सभागार (क्षमता १५०० व्यक्ति) तथा २० अतिथि कक्ष (क्षमता ३५० व्यक्ति) सम्मिलित हैं।

यह कार्य वानप्रस्थ साधक आश्रम के प्रबंधक न्यासी श्री ज्ञानेश्वरार्य: (आचार्य दर्शन योग महाविद्यालय) के निर्देशन में सुसम्पन्न हो रहा है। आश्रम के इस भवन के संबंध में हमारा विचार है कि यह भवन इस दिवाली (नवम्बर, २००५ तक) पूर्णरूप से निर्मित हो जाये। सभी सज्जन तथा माताएं इस सर्वहितकारी महत्त्वपूर्ण कार्य को संपूर्ण कराने में तन-मन-धन से स्वयं सहयोग करें तथा अन्य महानुभावों से सहयोग करवाने का प्रयास करें।

निवेदक-**स्वामी सत्यपति परिव्राजक** (संस्थापक) तथा न्यासीगण और कार्यकर्ता वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, पो०-सागपुर, जिला-साबरकांठा, गुजरात-३९३३०७

## वैदिक ऋचाओं की गूंज से ओ३म्मय हुआ अलवर झांकियों में जीवंत हुए महर्षि दयानंद के आदर्श

सिंहद्वार अलवर आज वैदिक ऋचाओं की मधुर गूंज से उस वक्त ओ३म्मय हो गया जब हजारों बालिकाएं अपने हाथों में 'ओ३म्' अंकित ध्वज लिए सड़कों पर निकल पड़ी। कदम से कदम मिलाती छात्राओं की ओजस्वी गूंज तथा आकर्षक झांकियों में महर्षि दयानंद के आदर्श जीवंत हो उठे।

गौरतलब है कि आज रूढ़िवाद, पाखंडवाद, अंधविश्वास तथा जड़पूजा के खिलाफ शंखनाद करने वाले और स्त्रीशिक्षा के प्रबल समर्थक महर्षि दयानंद सरस्वती का 181वां जन्मदिवस था। इस अवसर पर अलवर की प्रमुख शिक्षण संस्थान आर्य कन्या विद्यालय समिति के तत्त्वावधान में शहर में होकर विशाल् भव्य शोभायात्रा निकाली गई। खराब मौसम के बावजूद शोभायात्रा में हजारों बालिकाओं व आर्यसमाजियों ने बढ़-चढ़कर उत्साह से भाग लिया। इनमें सैकड़ों महिलाएं भी शामिल थीं।

पिछले तीन दिनों से जिले भर में आर्यसमाजों के सहयोग से मनाये जा रहे दयानंद महोत्सव का प्रमुख आकर्षण आज निकाली गई लगभग पाँच किलोमीटर लम्बी, अनूठी, भव्य एवं विशाल शोभायात्रा थी। पाँच अश्वारूढ़ वीरांगनाओं एवं पन्द्रह झांकियों से सुसज्जित इस शोभायात्रा का शुभारंभ जिला पुलिस अधीयक राजेश आर्य ने 'ओ३म्' ध्वजा दिखाकर किया। शोभायात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व विद्यालय की बोर्ड परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त छात्राओं शिवानी गोयल व मोना शर्मा ने विद्यालय के मुख्य द्वार पर एस.पी. राजेश आर्य का पारम्परिक रीति से तिलक लगाकर स्वागत किया।

समिति प्रधान छोटूसिंह आर्य, मंत्री जगदीशप्रसाद गुप्ता सहित कैलाशनाथ भार्गव, प्रद्युम्न गर्ग व विद्यालय निदेशिका श्रीमती कमला शर्मा ने मुख्य अतिथि व अन्य गणमान्य आगन्तुकों का माल्यार्पण तथा पुष्प भेंट कर स्वागत किया। ओ३म् ध्वजाओं से सुसज्जित व वेदमंत्रों से गुंजित वैदिक विद्या मंदिर के प्रांगण से यह शोभायात्रा आर्यनेता व समिति प्रधान छोटूसिंह आर्य के नेतृत्व में प्रारम्भ होकर नगर के प्रमुख मार्गों मन्नी का बड़, पंसारी बाजार, होपसर्कस, बजाजा बाजार, मालाखेड़ा बाजार, विवेकानंद चौक व बस स्टैण्ड होती हुई पुन: विद्यालय प्रांगण में पहुंची। इस रैली का संचालन सत्यवीर आर्य ने किया।

## शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

हरयाणा आर्य युवक परिषद् के संरक्षक एवं गुरुकुल धीरणवास के लेखानिरीक्षक मितल की माताजी श्रीमती परमेश्वरीदेवी का ८६ वर्ष की आयु में २-२-०५ को हिसार में निधन हो गया। आज प्रात: ६-०० बजे उनके घर रामपुरा मोहला हिसार में पं० रामस्वरूप शास्त्री गुरुकुल आर्यनगर द्वारा शांतियज्ञ किया गया।

११ बजे विश्वकर्मा धर्मशाला हिसार के हाल में श्रद्धांजलि समारोह हुआ। इस अवसर पर शहर के अतिरिक्त बाहर के आर्यसमाजों के अधिकारियों व प्रतिष्ठित नर-नारियों ने भाग लिया। परिषद् के प्रांतीय बौद्धिक अध्यक्ष डा० प्रमोदकुमार शास्त्री ने मंच का संचालन किया। गुरुकुल आर्यनगर के ब्रह्मचारियों ने सर्वप्रथम ईश्वरभक्ति के भजन रखे। ब्र० दीपकुमार आर्य, डा० प्रेमप्रकाश आर्य, मानसिंह पाठक गुरुकुल आर्य नगर, अत्तरसिंह ढ़ाण्डा प्रधान गुरुकुल धीरणवास ने माताजी को सच्ची ईश्वरभक्त, यज्ञप्रेमी, अतिथि सेविका व धर्मपारायण महिला बताया। परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने उपस्थित लोगों से कहा कि माताजी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सबने इस दृढ़ आर्यसमाजी परिवार से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में परोपकार की भावना पैदा करनी चाहिए। श्री भारतभूषण तायल (रामामण्डी) ने आर्य परिवार के कई संस्मरण सुनाते हुये बताया कि वानप्रस्थी ओमप्रकाश आर्य इन माता जी के विशेष सहयोग के कारण ही आर्यसमाज का इतना बड़ा कार्य कर सके। हमारे पिछड़े क्षेत्र में कुई कन्या पाठशाला व स्कूल खुलवाये। मितल परिवार ने इस अवसर पर गुरुकुल धीरणवास व गुरुकुल आर्यनगर को एक-एक गाय हेतु १५-१५ हजार रुपये का दान दिया।

–बंसीधर आर्य, हिसार

# राष्ट्ररक्षा सार्वजनिक कर्तव्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ब्रह्मचर्य और तपस्वी जीवन तथा वैदिक ज्ञान-विज्ञान की साधना के पश्चात् समस्त संसार के मनुष्य समाज को सत्य और न्याय के आधार पर मानवधर्म की शिक्षा देते हुए राष्ट्रीय जनजागरण आन्दोलन के रूप में जब १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना करते हैं और उसके पश्चात् १८७७ में विश्व उपयोगी दस नियम निर्धारित करते हैं, उसमें से विशेष नियम महर्षि दयानन्द सरस्वती की पवित्र आत्मा के ज्ञानस्रोत से उद्धृत होता है :- **"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"**

उपरोक्त नियम की पालना करके हर व्यक्ति अपने शरीर का और अपनी आत्मा की उन्नति के साथ अपने आपको एक सभ्य समाज का परोपकारी अंग सिद्ध करके समस्त संसार के लिए परोपकार का केन्द्रबिन्दु बन सकता है। यह केवल अभिलाषा मात्र नहीं बल्कि यह सत्यनिष्ठ कर्तव्य है। राष्ट्रीय चेतना के अग्निपुंज महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य की जन्मजात किसी भेदभाव को नहीं माना और वेद के आधार पर सिद्ध किया कि मनुष्य विद्या ग्रहण करके शिक्षण-प्रशिक्षण के पश्चात् अपने आपको ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य या शुद्र बना सकता और फिर शूद्र से उन्नति करके ब्राह्मण पद को प्राप्त हो सकता है तथा उसके अन्दर देवत्व के गुण आ सकते हैं।

ब्रह्मज्ञान की उपाधि प्राप्त कर सूर्य के समान तेजस्वी, परोपकारी व्यक्तित्व का धनी हो सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी एक रचना में **"ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव"** मंत्र की व्याख्या करते हुए लिखा है :- काश यह मंत्र समस्त प्राणिमात्र की अभिलाषा और ईश्वर प्रार्थना बना जाय। सब प्राणी अपने सत्याचरण में सद्गुण धारण करे और दुर्गुणों से मुक्त हो। विद्वान् अपने बुद्धि और ज्ञानरूपी प्रकाश से जो पथ प्रकाशित करता है, जो ज्योतिस्तम्भ स्थापित करता है, उनकी रक्षा करना, उनका अनुकरण-अनुसरण करना हम सबका कर्तव्य है, तभी मनुष्य समाज में सुख-शांति का वास हो सकता है।

कवि ने विदेशी राज की क्रूरता से पीड़ित भारतीय जनमानस को अपने वैदिक गौरवकाल की याद कराते हुए पतन की दलदल से बाहर निकाला और आवाज दी कि आर्यों का चक्रवर्ती राज समस्त संसार में रहा है। मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, एवं योगिराज श्रीकृष्ण समस्त मनुष्य सभ्यता के राष्ट्रनायक हैं। उनके सत्याचरण को वेद के आधार पर हमें अपने आचरण में आत्मविश्वास और विवेकशीलता के आधार पर उन्नत करना होगा। ऋषि की आत्मिक आह्वान को भारतीयों ने सुना। आर्यसमाज एवं अनेक राष्ट्रीय राजनैतिक दलों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना प्रचण्ड हुई और १५ अगस्त १९४७ को भारतवर्ष ७०० वर्षों की दासता के पश्चात् स्वतन्त्र हुआ, परन्तु सशक्त अंग पंजाब एवं बंगाल को अलग करके एक अलग देश पाकिस्तान भूगोल के मानचित्र पर बनाकर सत्ता छोड़कर जाने वाले विदेशी शासकों ने सदा-सदा के लिए विरोधाभास के बीज बो दिये, फिर भी भारतवर्ष के महान् जननायकों ने मानव उपयोगी संविधान २६ जनवरी १९५० को लागू किया। उस संविधान के संरक्षण की पावन शपथ हर व्यक्ति को दिलाई जाती है, जो पंचायत से लेकर राष्ट्रपति के पद तक, प्रान्तों की विधानसभा के सदस्यों से पार्लियामेंट के सदस्य का पद ग्रहण करने वाले हर उस व्यक्ति को यह याद कराया जाता है कि भारत का हर नागरिक आपसे जनसेवा और परोपकार की आशा करता है।

इसी प्रकार जो लोग राष्ट्रीय सुरक्षा सेनाओं में पदभार ग्रहण करते हैं, उन्हें भी संविधान की सुरक्षा की शपथ दिलाई जाती है। स्थिति ५३ वर्ष की छोटी सी अवधि में इतनी विकृत और पीड़ादायक हो चुकी है कि आतंकवाद और उग्रवाद ने देश विरोधी, संविधान विरोधी द[illegible]ल की भयानक शक्ल धारण कर ली है।

इसी मास में देश के तीन प्रान्तों में विधानसभा के चुनाव आयोग के संरक्षण में कराये जा रहे हैं इन तीनों प्रान्तों हरयाणा, बिहार एवं झारखण्ड में से एक भी प्रान्त हिंसात्मक घटनाओं से मुक्त नहीं हो पाया। बिहार और झारखण्ड की वर्तमान सरकारों ने यह मान लिया है कि उनके प्रान्तों में कुछ वन क्षेत्र ऐसे भी हैं, जहाँ उनका राज न होकर माओवादी-देशविरोधी शक्तियों का राज है और वह वहाँ किसी भी प्रकार की---सुरक्षा का प्रबन्ध करने में असमर्थ है। देश के उच्च आसन पर आसीन जननायकों से देश का हर नागरिक जो संविधान की सुरक्षा और पवित्रता को नमन करता है, यह पीड़ादायक प्रश्न पूछने को विवश है कि ऐसी स्थिति को सुधारना क्या उनके वश की बात नहीं और कहीं भी ऐसी प्रान्तीय सरकार का बने रहना संविधान की सुरक्षा की दृष्टि से उचित है।

ऐसे समाचार सुनने में आये हैं कि निर्वाचन आयोग के आदेश से भेजी गई पोलिंग पार्टियां अपने पोलिंग बूथ पर ऐसी देश विरोधी शक्तियों के डराने-धमकाने के कारण उस स्थान पर नहीं पहुँच पाई और जिला मुख्यालयों में वापस बिना चुनाव कराये आ गईं। ऐसे देश और संविधान विरोधी शक्तियों ने एक दल के जननायक का हैलीकॉप्टर जला दिया और जिस व्यक्ति ने उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने में सहायता की, उसको उन माओवादियों ने मृत्युदंड सुना दिया है और उसके भाई को बलात् घर से उठाकर ले गये हैं। देश का उच्चतम न्यायालय और प्रान्तों के उच्च न्यायालय कुछ गम्भीर आपराधिक वृत्ति के संविधान से खिलवाड़ करने वाले जननायकों के विरुद्ध कार्यवाही करने का प्रयास कर रहे हैं, परन्तु बहुत कुछ सुधार करना अनिवार्य है।

१९९४ में देश की पार्लियामेंन्ट के दोनों सदनों ने सर्वसम्मत ऐतिहासिक और निर्णायक प्रस्ताव पारित किया कि जम्मू-कश्मीर भारत का अटूट अंग है और इस प्रान्त का जो भूभाग बलपूर्वक पाकिस्तान और चीन के कब्जे में है, उसे तुरन्त मुक्त करवाकर भारत की अखण्डता सुरक्षित की जाय, परन्तु ये प्रस्ताव जो जन-जन की आवाज है, अभी तक पूर्णता की राह देख रहा है। जम्मू कश्मीर के मूल निवासी लाखों कश्मीरी पंडित बलात् अपने घरों से उजाड़ दिये गये हैं और १० वर्षों से स्थान-स्थान पर कैम्पों में रहकर अपमानजनक जीवन जी रहे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाजरूपी जनजागरण आन्दोलन देशवासियों में आत्मविश्वास, निर्भयता और सत्य पर बलिदान होने की भावना जागृत करने की दृष्टि से स्थापित किया था। भारतवर्ष और समस्त संसार में असमानता, असामाजिकता और अपराध वृत्ति को मिटाकर सुख-शांति और समानता का राज स्थापित करना संसार का उपकार करना कहलायेगा और यह आर्यसमाज का मुख्य कर्तव्य है।

आर्यसमाज किसी विशेष मत का नाम नहीं, यह वैदिक संस्कृति की पवित्र परोपकारी जीवन पद्धति है, जिससे हर मनुष्य लाभ उठा सकता है। ऋतुराज वसन्त एवं वसन्त पंचमी के शुभागमंन तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस के शुभ आगमन के अवसर पर सब विवेकशील वैदिक संस्कृति को मानने वाले मनुष्यमात्र का कर्तव्य बनता है कि हम राष्ट्ररक्षा, संविधान की रक्षा का व्रत लें और राष्ट्रविरोधी शक्तियों का बलिदान की भावना सम्मुख लेकर सामना करें और देश में समानता और संविधान के आदर का वातावरण स्थापित करने में मार्गदर्शक बनकर सत्यनिष्ठा से कर्तव्य निभायें।

-हरवंशलाल कपूर, सहमंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली




आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवा कर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय है।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८१



आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री    सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२    अंक १४    २८ फरवरी, २००५    वार्षिक शुल्क ८०)    विदेश में २० डॉलर    एक प्रति २.००

## फाल्गुन बदि अष्टमी के दिन सती सीता के जन्मदिवस पर विशेष....

# ऐसी थी, पतिव्रता सती सीता

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

नारी जाति का महत्त्व वेदों, उपनिषदों, गीता आदि एवं भारतीय रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रंथों में पढ़ने को मिलता है। आज सती सीता के जन्मदिवस पर अति संक्षिप्त रूप से ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर उनके चरित्र का चित्रण करेंगे। हिन्दी के कवि रामनरेश त्रिपाठी ने सीताजी के विषय में लिखा है :-

जनक सुता, सुंदरी, शुभा, साध्वो, सुकुमारी।
सती, सुशीला, सदाचारिणी, विदुषी नारी॥
रामप्रिया, पति-भक्ति-भूषिता थी वह सीता।
अब तक है हृदयस्थ, काल यद्यपि अति बीता॥
निष्कलंक सच्चरित जानकी ने दिखलाया।
पड़ रावण के हाथ, सतीत्व स्वधर्म बचाया॥
दृढ़ पतिव्रता भारतीय ललना हैं जैसी।
पृथ्वी भर के किसी देश में कहीं न वैसी॥

भारतीय नारी की संपूर्ण विशेषता ऐतिहासिक एवं सामाजिक रूप से उसके पतिव्रत धर्म के कारण ही महत्त्वपूर्ण मानी गई है। मेरे आर्यों के आदि देश भारत में, तथा ब्रह्मर्षि प्रदेश हरयाणा में अत्यंत स्पष्ट रूप से उनके चरित्र की परीक्षा की जा सकती है। वे चरित्र पालन में सर्वोच्च स्तर की होती हैं।

नारी जाति को परमात्मा ने ललित, दिव्य, मृदु, एवं मधुर गुणों की खान बनाया है। नारी दया का अवतार, प्यार-प्रेम की परमधारा, सौन्दर्य की मूर्त्ति, मधुरता की प्रतीक है। वह संसार जीवनदात्री शक्ति परमात्मा ने रची है। नारी को नर की रक्षक एवं नर की खान बताया है। सारे संसार की सारभूत, गृहस्थ की आधारशिला, घरवाली कहा गया है। जिस नारीजाति की इतनी महिमा है, इतना समादर है। नारी ने सर्वोत्कृष्ट और आदर्श रूप में जिस नारी ने इस भारतीय पवित्र धरती को अपने जन्म से सुशोभित किया था, वह नारी तत्त्वज्ञानी मिथिलाधिपति राजर्षि विदेह जनक की आत्मजा और सूर्यवंशी मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र की धर्मपत्नी सीताजी थी।

श्रीमती सती सीताजी को रामायण के रचयिता आदि कवि वाल्मीकि ने अनुपमा कहा है। क्या सरलता में, क्या सुशीलता में, क्या सच्चरित्रता में, क्या पतिपरायणता में, क्या कृतज्ञता में, क्या गम्भीरता में और क्या सुंदरता में सभी विषयों में पतिव्रता सती सीताजी अद्वितीया थी। वैसी नारी तो **''न भूता न भविष्यति।''**

इसका मुख्य कारण=सीताजी का यह सौभाग्य था कि उनका जन्म तत्त्ववेत्ता तथा वेदों व उपनिषदों के विद्वान् महाराजा जनक के यहां हुआ था। उनके पिता महाराज जनक जी महर्षि को निमन्त्रित कर उनसे यज्ञ तथा उपदेश ग्रहण किया करते थे। उपनिषदों में महाराजा जनक व महर्षि उद्दालक के संवाद तो ब्रह्मविद्या के विषय में चर्चित रहते थे। ऐसे धार्मिक विद्वान् पिता को पाकर सीता भी सर्वगुणों की खान क्यों न होती? ऐसी पतिव्रता सीता।

उनके पति मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम भी उच्च कोटि के व्यक्तित्व के धनी थे। जब महर्षि वाल्मीकि रामायण की ऐतिहासिक कथा लिखने लगे, तब वाल्मीकि जी ने महर्षि नारद से पूछा था कि हे भगवन्! इस समय संसार में गुणवान्, शूरवीर, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी और दृढ़प्रतिज्ञ कौन है? महर्षि नारद ने उत्तर देते हुए कहा था- **''इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नामजनैः श्रुतः। नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।''** अर्थात्-इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न, राम नाम से लोगों में विख्यात, श्री रामचन्द्र, नियतात्मा, अति बलवान्, तेजस्वी, धैर्यवान् और जितेन्द्रिय है। (इस परिचय में [illegible] दिया है। इन वाल्मीकि रामायण के प्रथम सर्ग में १८ श्लोकों में नारद [illegible] श्लोकों में राम का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परिचय दिया गया है। श्लोक महत्त्व के हैं यहां सारे श्लोक नहीं लिखे जा सकते।)

**सीता का स्वयंवर :-** सीताजी के विवाह के निमन्त्रण को पाकर महर्षि विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को साथ लेकर जनकपुरी पहुंचे थे। स्वयंवर में राजा जनक ने धनुष तोड़ने की शर्त रखी थी। विश्वामित्र के कहने पर राजा जनक ने वह शिव धनुष राम को दिखाया। राम जी उस धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर देखने लगे तो धनुष टूट गया। राम के धनुष तोड़ने पर राजा जनक परम प्रसन्न होकर कहने लगे :-

**मम सत्या प्रतिज्ञा च वीर्यशुल्केति कौशिकः, सीता प्राणैर्बहुमता देया रामाय मे सुता।** (बाल० ६७/२३)

हे विश्वामित्र जी मैंने सीता के विवाह के लिए ''वीर्यशुल्का'' शक्तिशाली वर को देने की प्रतिज्ञा की थी, वह आज पूरी हो गई है। अब मैं अपनी प्राणों से प्रिय पुत्री को श्रीराम को दूंगा। महर्षि विश्वामित्र की आज्ञा से राजा दशरथ को भी विवाह का शुभसंदेश देकर जनकपुरी बुलवा लिया। जनक जी के दूतों द्वारा राम के स्वयंवर का निमन्त्रण पाकर दशरथ भी अपने माननीय पुरोहितों महर्षियों को साथ लेकर जिनमें **''वसिष्ठो वामदेवश्च जाबालिरथ कश्यपः। मार्कण्डेयस्तु दीर्घायुर्ऋषिः कात्यायन-स्तथा''** वशिष्ठ, वामदेव, जाबालि, कश्यप, मार्कण्डेय और कात्यायन आदि विद्वान बारात के रूप में विवाह-संस्कार करवाने के लिए राजा दशरथ के साथ जनकपुर में पहुंचे। जनकपुर में पहुंचने पर राजा जनक ने दशरथ का व वशिष्ठ का स्वागत करते हुए कहा :-

**''उवाच च नरश्रेष्ठो नृपश्रेष्ठं मुदान्वितः। स्वागतं ते महाराज दिष्ट्या प्राप्तोऽसि राघव।''** (सर्ग २१ श्लोक ८) अर्थात्-नरश्रेष्ठ जनक हर्षित होकर नृपश्रेष्ठ दशरथ जी से बोले-महाराज! मैं आपका स्वागत करता हूँ। मेरा बड़ा सौभाग्य है कि जो आप हमारे यहां पधारे हैं। दशरथ के साथ ही महर्षि वशिष्ठ जी का स्वागत करते हुए जनक ने कहा-**'दिष्ट्या प्राप्तो महातेजा वशिष्ठो भगवानृषिः'**... यह भी बड़े सौभाग्य की बात है कि महातेजस्वी महर्षि वशिष्ठ भी सब ऋषियों के साथ पधारे हैं, जैसे देवताओं के साथ इन्द्र पधारते हैं। (रामा० सर्ग २१, श्लोक ७) विवाह संस्कार की तैयारी के लिए राजा जनक ने अपने पुरोहित शतानन्द को भी बुलाया।

विवाह-संस्कार के समय राजा दशरथ ने अपने कुलपुरोहित वशिष्ठ जी को सुर्यवंशी राजाओं की वंशावली पढ़ने के लिए आदेश दिया। वशिष्ठ ने प्रथम प्रजापति मनु से लेकर अज के पुत्र दशरथ तथा दशरथ के पुत्र राम लक्ष्मण तक की ३३ राजाओं की वंशावली पढ़कर सुना दी। राजा जनक ने भी अब अपने २२ जनक वैदेहों की वंशावली 'निमि' राजा से लेकर अपने पिता 'हर्षरोम' तक अपना तथा अपने भाई कुशध्वज का वंशवर्णन किया। आपस में गोत-नात भी मिला लिए।

अब निश्चित तिथि पर दोनों ओर के कुलपुरोहितों के द्वारा वैदिक मंत्रों के साथ अग्नि में आहुति देने से पहले कन्यादान, पाणिग्रहण, आदि करके और अब चार अग्नि की परिक्रमा करके खीलों की आहुति देते हुए सप्तपदी व ध्रुवदर्शन आदि विवाह की विधियां पूर्णाहुति के साथ शान्तिपाठ के पश्चात् आशीर्वादपूर्वक विवाहसंस्कार सम्पूर्ण हुआ। संस्कार में सर्वप्रथम राजा ने कन्यादान करते हुए राम से कहा-**'इयं सीता मम सुता सहधर्मचरी तव। प्रतीच्छ चैनां भद्रं ते पाणिं गृहिष्व पाणिना।'** हे राम! यह मेरी कन्या सीता आज से आपकी सहधर्मचारिणी हुई। इसे ग्रहण कीजिए और अपने हाथ से इसका हाथ पकड़िये।

विवाह-संस्कार के पश्चात् दोनों ही वर-वधू के पक्ष की ओर से दान-दक्षिणा दी गई। महाराजा दशरथ ने इस अवसर पर **''गवां शतसहस्राणि ब्राह्मणेभ्यो नराधिपः। एकैकशो ददौ राजा पुत्रानुद्दिश्य धर्मतः।''** महाराज दशरथ ने इस अवसर पर धर्मपूर्वक

एक लाख गौएं राजपुत्रों की मंगलकामना के लिए एक एक करके ब्राह्मणों को दी। कैसी थी वे गौएं? "**स्वर्णशृंगाः सम्पन्नाः सवत्साः कांस्यदोहनाः। गवां शतसहस्राणि चत्वारि पुरुषर्षभः।**" सुवर्ण के सींगों वाली, दुधारू, बछड़ों वाली, कांसे के दोहन वाली एक लाख गौएं दान में दीं। आर्यावर्त भारत में कितना सम्मान था गौओं का। विवाह में कन्यादान के अवसर पर आज भी गोदान होता है।

इस प्रकार चारों ही भाइयों का विवाह जनक व कुशध्वज की कन्याओं के साथ हो गया। राम का सीता के साथ। लक्ष्मण का उर्मिला के साथ। भरत का माण्डवी के साथ। शत्रुघ्न का श्रुतकीर्ति के साथ। बहुओं को लेकर अयोध्या आए। यह संक्षिप्त-सा ऐतिहासिक विवरण दिया गया।

**अब थोड़ा-सा इन सुपात्रों का चरित्र-चित्रण करेंगे :-**

**१. पहले पतिव्रता सती सीता का चरित्र देखें :-**

रावण ने सीता का हरण करके उसे अपनी अशोक वाटिका में रखा था। सीता को अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे अनेक प्रलोभन तथा जान से मारने की भी धमकियां रावण देता रहता था। एक दिन रावण अशोक वाटिका में आकर सीता को पत्नी बनाने के लिये समझाने लगा, रावण ने कहा :-

**पंचदास्यसहस्राणि सर्वाभरणभूषिताः। सीते! परिचरिष्यन्ति भार्या भवसि मे यदि॥**

अर्थात् हे सीते! यदि तुम मेरी स्त्री बन जाओगी तो सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित पांच हजार दासियां सदा तेरी सेवा किया करेंगी और तू महारानी बनकर लंका पर राज्य करेगी। मैं भी तेरा सेवक बनकर सिंहासन के नीचे बैठकर तेरे चरणों का दास बनकर रहूँगा, हे सीते! सुन्दरी मेरी प्रार्थना स्वीकार करले। इतना बड़ा प्रलोभन देने के बाद भी सीता ने रावण के मुँहतोड़ उत्तर देते हुए कहा-अय! दुष्ट रावण! **महाबाहुं महोरस्कं सिंहविक्रान्तगामिनम्। नृसिंहं सिंहसंकाशमहं रामं अनुव्रता। त्वं पुनर्जम्बूकः सिंहीं मां इहेच्छसि दुर्लभाम्। नाहं शक्या त्वया स्प्रष्टुमादित्यस्य प्रभा यथा॥** बड़ी भुजाओं वाले, विशाल छाती वाले, सिंह समान पराक्रम वाले, नरों में सिंह समान, मैं राम की पतिव्रता धर्मपत्नी हूं। तू गीदड़ के समान होकर मुझ सिंहनी के समान दुर्लभ को तू चाहता है, मैं तेरे द्वारा छूई भी नहीं जा सकती, तू मुझे छू नहीं सकता, सूर्य की तेज किरण के समान, जैसे कोई सूर्य की तेज किरणों को छू नहीं सकता। ऐसी मैं राम की पतिव्रता नारी हूं। मेरे पवित्र देश आर्यावर्त भारत में पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली नारियों का इतिहास पन्नों में पढ़ा जा सकता है। वे सपूत बेटों को जन्म देती थी। जो जन्म से ही माता-पिता के पवित्र संस्कारों को लेकर मानवता के प्रतिरूप अधिकारी होते थे। सीता ने भी दो पुत्रों को जन्म दिया था। दोनों ही राम के समान ही वीर थे। वे थे लव-कुश। लव से तो लाहौर बसा, और कुश से कशूर। इस कुश के विषय में कविवर कालिदास ने अपने रघुवंश काव्य ग्रन्थ में लिखा है :-

एक दिन महाराज कुश अपने महल में विश्राम कर रहे थे, तो इतने में अपने लम्बे-लम्बे बालों को खोले हुए विरहिणी वेश में उसके एकान्त सूने कमरे में एक रूपवती स्त्री ने प्रवेश किया। उस देवी को अकेले कमरे में प्रवेश करती देखकर महाराज कुश ने कहा :-"**का त्वं शुभे! कस्य परिग्रहो वा किं वा मदभ्यागमकारणं ते। आचक्ष्स्व वशिनां रघूणां मनः परस्त्रीविमुखप्रवृत्तिः॥**" अर्थात् हे देवी! तू कौन है? किसकी पत्नी है और मेरे पास किस मतलब से आई है, किंतु इन मेरी बातों का उत्तर देने से पहले तू यह समझ ले कि जितेन्द्रिय रघुवंशी परस्त्रियों के सम्पर्क से सदा विमुख रहते हैं। भला, जिनके माता-पिता सयमी, सदाचारी हों, तो उनकी संतान भी सदाचारी क्यों न हो?

एक ऐसा ही सच्चरित्रता का ऐतिहासिक उदाहरण मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र का भी है। राम के द्वारा रावण के लड़ाई में मारे जाने पर रावण की पत्नी मन्दोदरी ने श्रीराम के दर्शन करने की इच्छा विभीषण से की थी, विभीषण ने श्रीराम से मन्दोदरी से मिलने की आज्ञा ले ली। मन्दोदरी जब राम के दर्शन करने के लिए आई तो राम ने तो मुझे आंख उठाकर भी नहीं देखा। तब मन्दोदरी ने कहा था :-

**धन्या राम तव माता, धन्या राम तव पिता।**
**धन्यो राम तव वंशः, परदारान्न पश्यसि॥**

अर्थात्-हे राम! तेरी माता धन्य है। तेरे पिता धन्य है। तेरा वंश धन्य है। पर स्त्रियों को तुम आंख उठाकर भी नहीं देखते।

एक ऐसा ही उदाहरण लक्ष्मण के विषय में भी है। जब राम ने सीता के आभूषणों को पहचानने के लिए कहा था तब लक्ष्मण ने उत्तर देते हुए कहा था :-

**नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।**
**नूपुरे त्वाभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥**

अर्थात् मैं सीताजी के केयूर व कुण्डल आभूषणों को तो नहीं जानता हूं, किंतु मैं पैरों में पहनने वाले नूपुरों को तो जानता हूं, क्योंकि सीता जी को मैं नित्य पैरों में नमस्कार करता था। कितना उच्च चरित्र था लक्ष्मण का।

प्राचीन आर्यावर्त भारत में सारी ही प्रजा सदाचार का पालन करती थी। शिक्षा में उच्चरित्रता का पाठ पढ़ाया जाता था। **मातृवत् परदारेषु** का सभी जन पालन करते थे। इसी कारण मनु महाराज ने घोषणा की थी-

**एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।**

यही कारण था कि-

**क्या कर नहीं सकतीं भला, यदि शिक्षिता हों नारियां।**
**रण-रंग-राज्य सुधर्मरक्षा कर चुकी सुकुमारियां॥**

# विलक्षण बुद्धि दयानन्द

-आचार्या सुमित्रा विद्यालंकार एम. ए. (द्वय)

कियत्यो नो जाता जगति शिवरात्र्यो ननु पुरा।
कियद्भिर्नाकारि प्रथितशिवरात्रीव्रतविधिः॥
परं सा काप्यासीद् वृतिवर! जगन्मंगलकरी।
सवित्रीं ज्ञानानाममृतफलदात्री तव यते॥

ऋषि दयानन्द को बोध होने से पहले जाने कितनी शिवरात्रियां संसार में व्यतीत हो चुकी थीं, जाने कितने भक्तों ने व्रतों के अनुष्ठान किये थे किंतु किसी के मन में शिव की पिण्डी पर चढ़ते चूहों को देखकर विवेक उत्पन्न न हुआ, वह तो दयानन्द की एक विलक्षण बुद्धि थी जिसने उन्हें सोचने के लिये मजबूर कर दिया जिस की वजह से दयानन्द सच्चाई जानने के लिए जंगलों की खाक छानने के लिए मजबूर हो गया। कितने कष्ट सहे। तब कहीं जाकर सत्य का बोध हुआ। सदियों के बाद इस धरती का सौभाग्य जागा था जब इस धरा पर दयानन्द का शुभ आगमन हुआ। वह मृत्युंजय देवात्मा संसार को जगाने आई थी। सत्य का उद्घाटन करना ही उनका लक्ष्य था इसलिए यह शिवरात्रि सत्य बोध का पावन पर्व है। सत्य के शोधन के लिए सत्य प्राप्त करने के लिए सत्य रहस्य उद्घाटन करने के लिए महामानव को जाने कितनी बार जहर के प्याले पीने पड़े, अपमान सहना पड़ा, कष्ट उठाये, तब कहीं सत्य की उपलब्धि हुई। उसी सत्य के प्रचार-प्रसार में सम्पूर्ण जीवन लगा दिया ऐसा सत्यवक्ता इतिहास में मिलना दुर्लभ है।

हाय! हम भारतीय उस योगी आध्यात्मिक पुरुष और महान् क्रान्तिकारी का मूल्यांकन न कर सके। उनके योगदान तथा महत्त्व को समझ सकते, तो शायद यह हमारी दुर्दशा व दीन-हीन स्थिति न होती। वह देवपुरुष जीवनभर सत्य के लिए लड़ाई लड़ता रहा। सत्य के लिए जहर पीता रहा। हर साल शिवरात्रि आती है। मेले, जलूस, श्रद्धाञ्जलि में ही अपनी करुण कहानी छोड़ जाती है। कहीं भी आत्मचिंतन, आत्मसुधार, दुर्गुण और दुर्व्यसनों से छूटने की ललक बेचैनी व पीड़ा नजर नहीं आती। जीवन से सद्धर्म, सत्यकर्म एवं सद्भाव छूटते जा रहे हैं। पाप और पुण्य, सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म की विवेचनाशक्ति का निरन्तर ह्रास हो रहा है। जीवन शरीर और संसार का सत्य मृत्यु आत्मा एवं परमात्मा आँखों से ओझल होने लगा है। चारों ओर अधर्म पाप पाखण्ड प्रदर्शन का बोलबाला हो रहा है। चमत्कार को नमस्कार के प्रवाह में सब तेजी से बहे जा रहे हैं। पहले सामाजिक पारिवारिक व नैतिक मूल्यों का भय और सीमाएं होती थीं।

उन्हें आज आधुनिकता की आँधी ने इतना दूर उड़ा दिया है कि कही नामोनिशान भी नजर नहीं आता है। अब पाप अधर्म असत्य व अनैतिक कर्म करते हुए किसी को लज्जा और संकोच नहीं होता। यह हमारे आत्मिक पतन की चरमसीमा है। अंदर आत्मा की आवाज को सुनने के लिए कोई तैयार नहीं है न किसी को अंदर की आवाज सुनने की फुर्सत है।

आर्यसमाज का इतिहास साक्षी है कि इसके प्रवर्तक और अनुयायियों के जीवन व्यवहार से तथा कार्य में सत्य कूट-कूट कर भरा था। आर्यसमाज के दसों नियमों में पाँच बार सत्य का प्रयोग किया गया है। इसी सत्याचरण, सत्यभाषण तथा शुद्ध पवित्र जीवन के अभाव में जनता में आर्यसमाज और आर्यसमाजियों की विश्वसनीयता टूट रही है। अब हमारे जीवन व्यवहार और आचरण में असत्य और अधर्म अनैतिकता चिंतन पाप कमाई बड़ी तेजी से फैलाते जा रहे हैं। उदाहरण सामने है-आर्यसमाज की सम्पत्ति को पगड़ियों, दुकानों, स्कूलों के माध्यम से मिल बाँट कर खाया जा रहा है आने जाने के झूठे बिल बन रहे हैं। जो जहाँ बैठ गया हिलने का नाम नहीं लेता है। कब्जे की भावना आ गई। करनी-कथनी का फासला बढ़ता जा रहा है उससे हमारी साख गिरी है पहचान खत्म हो रही है विश्वसनीयता घट रही है। आर्यत्व छूट रहा है। खान-पान की दृष्टि से भी हमारे में गिरावट आ रही है। अब आर्यसमाज का संगठन दावे के साथ नहीं कह सकता कि हमारे संगठन में खाने पीने वाले नहीं हैं। खान पान की दृष्टि से भी हम सत्य से बहुत दूर होते जा रहे हैं। आर्यसमाज में बड़े लोग खूब शौक से खाते पीते हैं उन्हें आर्यसमाज का उद्धारक, कर्णधार और दयानन्द के बाद सबसे बड़ा आर्यसमाज का हितचिंतक के विशेषणों से विभूषित भी किया जाता है। क्या ये हमारी गिरावट नहीं है। एक आर्यसमाजी दीवाने का संस्मरण है जब वह मृत्यु शैया पर था। डा० ने कहा आपने स्वास्थ्य के लिए दवाई के रूप में मांस का सेवन करना होगा। तो उन्होंने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया था-मरना स्वीकार है पर मांस का सेवन नहीं करूंगा, वह आत्मा के विरुद्ध है।

आर्यसमाज ने अपने त्याग सेवा सच्चाई और बलिदानों से संसार में अपनी अलग पहचान बनाई थी। वह पहचान अब हमारे और कर्णधारों के कर्मों से ढह रही है, धूमिल हो रही है यह चिंतनीय और विचारणीय है। पर्व हमें जगाने दिशाबोध कराने और सम्भावनाओं की प्रेरणा व चेतना देने के लिए आते हैं। यदि पर्वों से महापुरुषों के जीवनों को और धर्मग्रन्थों से कुछ नहीं सीखा तो ये हमारी नासमझी होगी। शिवरात्रि का पर्व हमें आत्मचिंतन तथा सत्यपथ की ओर चलने की प्रेरणा देता है। संसार में व्याप्त अज्ञान, अंधकार, पाखण्ड, अंधविश्वास आदि हैं। उनसे सत्य ज्ञान के द्वारा मुकाबला करने की भावना जागृत करता है। सच्चे शिव के साथ नाता जोड़ने की प्रेरणा देता है। बिना प्रभु सम्बन्ध के जीवन नीरस अतृप्त अशांत व चिंतित रहेगा। जब तक हम जगन्नियन्ता को कण-कण में अनुभव नहीं करेंगे, तब तक हम पापकर्म से छूट नहीं सकते। यही शिवरात्रि के जागरण पूजा व प्रार्थना का प्रयोजन है।

आज आवश्यकता है आर्यसमाज और आर्यसमाजियों को जीवन व्यवहार आचरण सभा संगठनों मंदिरों की संस्थाओं आदि में सत्याचरण की। ऋषिप्रदत्त पहचान बनाए रखने की। तभी हम दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर सकेंगे। तभी हम सच्चे अर्थ में ऋषि के नाम लेने के हकदार होंगे। यही शिवरात्रि प्रतिवर्ष हमें संदेश देती है क्या हम इस संदेश को सुनेंगे? पालन करेंगे? कुछ जीवन में परिवर्तन का संकल्प लेंगे? आर्यजन थोड़ा-सा विचार करें।

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (औरैया) (उत्तर प्रदेश)

# तीर्थ यात्रा और मुक्ति

❑ प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, ४३२, सेक्टर-८ करनाल-१३२००१

देश में लगभग सारा साल तीर्थयात्रायें जारी रहती हैं। यद्यपि उनके कारण सैकड़ों लोगों की अकारण/अकाल मौत हो जाती है। ताजा उदाहरण महाराष्ट्र के सतारा जिले में वाई पहाड़ी पर स्थित मन्दरादेवी के मंदिर का है। २६ जनवरी गणतंत्र दिवस से एक दिन पहले २५/०१/०५ को यहाँ लगभग दो-तीन लाख लोग देश के विभिन्न भागों से आए थे। समाचार के अनुसार (दैनिक जागरण-पानीपत, २६/१/०५ पृ. १) यहाँ श्रद्धालुओं में भगदड़ मच जाने के कारण तथा बाद में भीड़ द्वारा पंडालों और मंडपों को आग लगा देने के कारण तथा दुकानों में रखे गैस सिलेंडरों के फटने के कारण ३६० से अधिक लोगों की मौत हो गई तथा १००० से अधिक लोग घायल हो गए। उनमें ५०० की हालत गंभीर थी। यह कैसी श्रद्धा और आस्था है जहाँ श्रद्धालु लोग आग शांत करने की बजाय पंडालों और दुकानों को आग लगायें और लोग जलकर मर जायें। "नवभारत टाइम्स" (२७/०१/०५ संपादकीय) के अनुसार भीड़ में भगदड़ मचने के बाद श्रद्धालुओं द्वारा की गई आगजनी विनाश को निमंत्रण देने वाली कार्यवाही थी। श्रद्धालुओं से इस बात की उम्मीद नहीं की जा सकती।

तीर्थयात्रा, मेलों और मंदिरों में देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कई जगह पशुओं की बलि चढ़ाई जाती है। महाराष्ट्र के सतारा जिले में वाई पहाड़ियों पर मन्दरा देवी के जिस मंदिर में भीड़ में भगदड़ मचने तथा आगजनी से ३६० से अधिक लोग मारे गए वहाँ एक रिपोर्ट के अनुसार ('दैनिक जागरण'-पानीपत, २६/१/०५ पृ. २) दस हजार निरपराध भेड़-बकरियों को बलि के लिए इकट्ठा किया हुआ था। यह कैसी पूजा अर्चना है? कैसी तीर्थयात्रा है जहाँ निरपराध पशुओं की बलि दी जाती हो?

बाबा अमरनाथ की तीर्थ यात्रा एक अन्य प्रसिद्ध तीर्थ यात्रा है। यहाँ देश के कोने-कोने से हजारों श्रद्धालु चौदह हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित अमरनाथ गुफा में जान हथेली पर रखकर जाते हैं। यद्यपि कड़ी सुरक्षा के बीच श्रद्धालु यहाँ आते हैं फिर भी उनकी जान को खतरा बना रहता है। जब तब आतंकवादी तीर्थयात्रियों को मार डालते हैं। वर्ष २००० में अगस्त में आतंकवादियों ने ३०-३२ यात्रियों को मार डाला था। वर्ष २००१ में आतंकवादियों ने २०-२२ तीर्थयात्रियों को मार डाला। वर्ष २००२ में भी अमरनाथ यात्रियों पर आतंकवादी हमले हुए। उसमें भी कई यात्रियों पर आतंकवादी हमले हुए। उसमें भी कई यात्री मारे गए, कई घायल हुए। (२) "दैनिक भास्कर" (पानीपत ७/८/०२ पृ. १) (२) "पंजाब केसरी (अंबाला छावनी" ७/८/०२ पृ. ३) (३) "अमर उजाला" (चंडीगढ़ ७/८/०२ पृ. १) (४) "नवभारत टाइम्स" (नई दिल्ली ७/८/०२ पृ. १) (५) "हिन्दुस्तान" (नई दिल्ली ७/८/०२ पृ. ७) (६) "दैनिक ट्रिब्यून" (चंडीगढ़ ७/८/०२ पृ. १) आदि हिन्दी समाचार पत्रों में इसकी रिपोर्ट छपी। अंग्रेजी के अखबारों (१) "दी ट्रिब्यून" (चंडीगढ़ ७/८/०२ पृ. १) (२) "हिन्दुस्तान टाइम्स" (नई दिल्ली ७/८/०२ पृ. १) (३) "टाइम्स ऑफ इंडिया नई दिल्ली-७/८/०२" आदि में भी इसका ब्यौरा छपा। इससे देश में यह सन्देश गया कि देश के तीर्थयात्री कितने असुरक्षित हैं। ऐसी तीर्थयात्रा का लाभ क्या है?

आखिर ये तीर्थयात्री कई-कई दिन तक कष्ट सहन कर मौत के साये में वहां जाते क्यों हैं? क्या इन तीर्थस्थानों और धार्मिक यात्राओं से मुक्ति मिल सकती है? कबीरदास कहते हैं कि नहीं साधु संगति और हरि भक्ति के बिना कुछ नहीं मिल सकता-

**मथुरा जावै द्वारिका, भावै जावे जगन्नाथ।**
**साध संगति हरि भगति बिन, कछु न आवै हाथ॥**

अन्यत्र कबीर कहते हैं कि भगवान् की भक्ति करने से मुक्ति मिलती है तथा सब काम भ्रम मिट जाते हैं। हज और तीर्थ यात्रा से मुक्ति नहीं मिलती-

**एक निरंजन अलह मेरा**
**ना हज जाऊँ ना तीरथ पूजा, एक पिछाण्या तौ का दूजा।**
**कहै कबीर भरम सब भागा, एक निरंजन सूं मन लागा॥**
**इन तीर्थों में भगवान् या मुक्ति नहीं मिलती-**
**मो को कहाँ ढूढ़े बन्दे, मैं तो तेरे पास में।**
**ना मैं देवल, ना मैं मस्जिद, ना काबै कैलास में॥**

तीर्थ वे होते हैं जिनके द्वारा मनुष्य दुःखों से तरे-"**जनाः यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि।**" परमात्मा की भक्ति तीर्थ है, सत्संगति तीर्थ है। माता-पिता की सेवा तीर्थ है। परोपकार तीर्थ है। "सत्यार्थप्रकाश" के ११वें समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने तीर्थों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। परोपकार को ही ले लें। समाज में सैकड़ों लोग भूख, ठंड, गर्मी और बीमारी से पीड़ित हैं। उनके पास अन्न, जल और वस्त्र की सुविधा नहीं। शहरों की मलिन बस्तियों या गांवों के गन्दे स्थानों या खुले मैदानों में ये लोग पड़े हैं। रोग या बीमारी के इलाज के लिए इनके पास पैसा नहीं। कई बार बीमारी या उचित इलाज के बिना इनके बच्चे या अन्य परिजन मर भी जाते हैं। गरीबी, भूख और बीमारी से ये सारा साल पीड़ित रहते हैं। इनके बच्चे घरों, मकानों, दुकानों आदि सफाई करके या अन्य छोटा काम करके अपना पेट पालते हैं। पढ़ाई-लिखाई तो दूर रही। वे सदा के लिए मजदूर, सफाई करने वाले श्रमिक बन गए हैं। शहरों में से बहुत बच्चे, लड़के-लड़कियाँ, महिलायें आपको ऐसे मिल जायेंगे जो मलिन वस्त्र पहने हुए, थैला उठाये हुए कागज इकट्ठे करते हुए, कूड़ा बीनते हुए मिलेंगे। गरीबी, भूख, बीमारी और अभावों से पीड़ित ऐसे लोग प्रत्येक शहर, नगर गांव और कस्बों में मिलेंगे। करनाल (पंजाब केसरी ६/२/०५-करनाल केसरी पृ. १०) की ही बात करें तो यहाँ अनपढ़ और छोटे-छोटे बच्चे रोजी रोटी के लिए भटक रहे हैं। करनाल में दलित व पिछड़ी कालोनियों में रहने वाले छोटे-छोटे बच्चे दाने-दाने के लिए तरस रहे हैं। शहर की मलिन व झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले सैकड़ों बच्चे सर्दी और गर्मी नंगे पांव कूड़ा बीनकर पेट पालते हैं। इनकी संख्या बढ़ती जा रही है। रेलवे स्टेशन राष्ट्रीय राजमार्ग बस अड्डा तथा सार्वजनिक स्थानों पर इनको देखा जा सकता है। समाजसेवी संस्थाओं, स्वयंसेवी लोगों, दानी सज्जनों को आगे लाकर इनकी सहायता करनी चाहिए। यह बहुत बड़ा तीर्थ है-समाज सेवा, पर उपकार।

शासन तथा राजनेताओं को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए। ३ फरवरी २००५ को सम्पन्न हुए विधानसभा चुनावों में प्रत्येक जिले के उम्मीदवारों ने अपने-अपने क्षेत्र में जनता की सेवा के वायदे किए, दिन-रात जनता के हितों की रक्षा करने की बात कही। अब उन्हें जनता की शिकायतों को दूर करना चाहिए। लोगों के अभाव, कष्ट, दुःख-दर्द, गरीबी, बेरोजगारी और भूख को मिटाने के लिए जुट जाना चाहिए। जन प्रतिनिधि विधायक/सांसद आदि वास्तव में जनता के प्रतिनिधि बन जायें। जनता की सेवा ही उनके लिए सबसे बड़ा तीर्थ है। जनता ने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है, अब वे अपना कर्त्तव्य पूरा करें।

# कई खापों ने अपने गांवों में रामपाल दास के प्रवेश पर लगाया प्रतिबंध

रोहतक (दैनिक जागरण २०-२-०५)। आज यहां दयानन्दमठ में आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बुलाई गई सर्वखाप पंचायत में एक दर्जन से ज्यादा खापों ने अपने-अपने गांवों में करौंथा स्थित सतलोक आश्रम के रामपालदास के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव पारित किया। सर्वखाप पंचायत में स्वामी रामपालदास को जमकर आड़े हाथों लिया गया तथा उन पर पाखंड को बढ़ावा देने और हरयाणा के सामाजिक ताने-बाने को तोड़ने के काम करने के आरोप लगाये।

दयानन्दमठ में हजारों की संख्या में रोहतक तथा आसपास के जिलों से आर्यसमाज को मानने वाले लोग आज सुबह ही पहुंचना शुरू हो गये थे। आज की इस महापंचायत की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांतीय अध्यक्ष आचार्य बलदेव ने की। इस महापंचायत में कुंडू खाप के प्रधान नाहरसिंह टिटोली वाले, हुड्डा खाप के प्रधान सूरतसिंह, अहलावत खाप के प्रधान दलीपसिंह, देशवाल खाप के प्रधान शिवधन, सतगामा खाप के प्रधान कंवलसिंह, पावड़िया खाप के प्रधान रघबीरसिंह, दहिया खाप के प्रधान रामफल, नरवाल खाप के प्रधान भलेराम, महम चौबीसी खाप के प्रधान सूरतसिंह, सुनारिया सतगामा के प्रधान रामफल, पंघाल खाप के प्रधान रामकुमार तथा बहलंबा तपा के प्रधान सूबेसिंह आर्य विशेषरूप से शामिल हुए।

महापंचायत में कुल ९ प्रस्ताव खापों के प्रधानों तथा महापंचायत में आए आम लोगों के अनुमोदन के लिए रखे गये। इन प्रस्तावों को महापंचायत में आए सभी लोगों ने हाथ खड़े कर सर्वसम्मति से पारित कर दिया। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव सभी खापों द्वारा अपने-अपने गांवों में रामपालदास के प्रवेश पर रोक लगाने तथा इन गांवों से किसी भी व्यक्ति के रामपालदास के आश्रम में नहीं जाने देने का था। सभी प्रधानों ने इस पर पूर्ण अमल का आश्वासन मंच पर आकर एक-एक करके दिया। इसी प्रस्ताव में हर गांव में पंचायत करके इस प्रतिबंध को प्रभावी बनाने की बात कही गई तथा भोली-भाली जनता को अंधविश्वास, पाखंड और कुरीतियों से बचाने के लिए वेदप्रचार यात्राओं में बढ़-चढ़कर भाग लेने पर सहमति हुई।

दूसरे प्रस्ताव में रामपालदास द्वारा नामदान के जरिये पाप को क्षमा किए जाने का विरोध करते हुए कहा गया कि इससे पाप को बढ़ावा मिल रहा है तथा सर्वखाप पंचायत पाप को बढ़ावा देने वाले करौंथा के सतलोक डेरे पर रोक लगायेगी।

एक अन्य प्रस्ताव में रामपालदास द्वारा आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती पर आक्षेप किए जाने की कड़ी निंदा करते हुए इसके लिए रामपालदास को मुंहतोड़ जवाब देने का निर्णय लिया गया। एक अन्य प्रस्ताव में करौंथा डेरे में अनैतिक कार्य होने के आरोपों को फिर से दोहराया गया। सर्वखाप पंचायत ने हरयाणा के सटकपुरी में बूचड़खाना नहीं खुलने देने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित करते हुए कहा गया कि प्रदेश में जो भी नई सरकार बनती है, वह इस बूचड़खाने को रोकने की घोषणा नहीं करती है तो आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सर्वखाप पंचायत धरना, अनशन, सम्मेलन, रैली तथा जेल भरो आन्दोलन सभी कुछ करेगी।

आचार्य बलदेव ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि अब प्रदेश में गोहत्या को बंद करवाया जाएगा तथा रामपालदास के पाखंड को जड़ से समाप्त करके ही दम लिया जाएगा। रामपालदास ने आर्यसमाज के सोये हुए शेर को जगाने का काम आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द पर आक्षेप करके किया है तथा इसका खामियाजा उन्हें इस रूप में भुगतना पड़ेगा कि प्रदेश से रामपालदास तथा उसके डेरे की मान्यता को पूरी तरह से समाप्त करवा दिया जाएगा।

## सर्वखाप पंचायत में पारित प्रस्ताव

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित तथा सर्वखाप पंचायत द्वारा संचालित दूरस्थ देश में तथा गोत्र छोड़कर विवाह पद्धति पर आक्षेप करके श्री रामपाल ने सर्वखाप पंचायत पर भारी कुठाराघात किया है। सर्वखाप का सम्पूर्ण ऐतिहासिक सुन्दर व्यवस्थित व निर्णायक ढांचा गोत्रों पर ही खड़ा है। सर्वखाप पंचायत की समाज की मर्यादाओं को सुरक्षित एवं व्यवस्थित रखने में अहम् भूमिका रही है। २३ जनवरी २००५ को दैनिक जागरण में श्री रामपाल जी ने लिखा है- "मुसलमान वर्ग केवल सहोदर को ही छोड़ते हैं, उनमें कौन-सी उन्नति नहीं होती।" इस प्रकार चाचा की लड़की से शादी करवाकर एक ही घर में चाचा व श्वसुर कहलाना चाहता है। इस प्रक्रिया द्वारा कितना पापाचार, व्यभिचार बढ़ेगा तथा नस्ल का ह्रास होगा। इस संदर्भ में श्री रामपाल द्वारा विचारहीन होने के कारण से कोई विचार नहीं किया गया। इस बेहूदी पद्धति की यह पंचायत घोर निन्दा करती है तथा समाज को इस पाप कर्म से बचाने हेतु हरयाणा में इस कुकृत्य को फैलाने वाले का सर्वसम्मति से बहिष्कार करती है।

क) प्रत्येक खाप का प्रधान अपने-अपने खाप के ग्रामवासियों को आश्रम में न जाने तथा श्री रामपाल के ग्रामों में प्रवेश-निषेध के लिये पत्र लिख देवें।

ख) अपने-अपने ग्राम में भी पंचायत करके यही प्रतिबन्ध लगाया जाए।

ग) भोली भाली जनता को अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों से बचाने के लिये वेदप्रचार यात्राएं निकाली जाएं।

घ) सभी समाचार पत्रों में क्रम से 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ने को मिले ऐसा प्रस्ताव पास कर सम्पादकों को भेजा जाए जिससे पाखण्ड तथा कुरीतियों का विनाश हो।

२. वोट की नीति के कारण दोषी को दण्ड नहीं दिया जाता। इससे आतंकवाद, हत्याएं तथा जघन्य अपराध बढ़ रहे हैं। नाम दान द्वारा पाप क्षमा हो जाने का श्री रामपाल का आश्रम प्रचार कर रहा है। जब हत्यारे, डाकू तथा रिश्वतखोरों का पाप क्षमा करने का उत्तरदायित्व तत्त्वदर्शी जगद्गुरु कहलाने वाला ले लेगा तो आतंकवाद तथा जघन्य अपराधों का बोलबाला अधिक होगा। पंचायत प्रस्ताव पास करती है कि इस आतंकवाद के बढ़ाने वाले अड्डे पर रोक लगाई जाए।

३. श्री रामपाल जी तन-मन-धन सब गुरु के अर्पण तथा आय का ४० प्रतिशत आश्रम को देने का उपदेश दे रहे हैं। इससे समाज में बड़ी हानि हो रही है। सुनने में आता है कि माताएं घर का सारा दूध आश्रम में ले जाती हैं। बालक तथा परिश्रम करने वाले घर के व्यक्तियों को चाय के लिये भी दूध नहीं मिलता। फरमाणा ग्राम के श्री अस्मान जी जैसे न जाने कितने बेघर बन गये। इससे समाज में गरीबी आने की अवस्था बढ़ेगी। अतः पंचायत इस सामाजिक बुराई को रोकने का प्रस्ताव पास करती है।

४. माताओं तथा कन्याओं के डेरों में जाने से अनेक दुष्कर्म उजागर हो रहे हैं। भम्भेवा गांव की एक लड़की ने अपनी ससुराल जाने से इन्कार कर दिया तथा घर और ससुराल में कलह का वातावरण बन गया। यह तन, मन व धन अर्पण करने का ही परिणाम था। इस तथाकथित सन्त द्वारा माताओं व बहनों से पैर दबवाना अनैतिक है। इन चरित्रहीनता के दुष्परिणामों से बचाने के लिये पंचायत यह प्रस्ताव पास करती है कि माताओं तथा बहनों का आश्रम जाना नितान्त बन्द किया जाए।

५. ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी जो व्याकरण के सूर्य थे तथा स्वामी दयानन्द जी महाराज उन्हीं के शिष्य होने के कारण प्रकाण्ड पण्डित तथा वेदों के उद्धारक बने। महर्षि दयानन्द ने कई बार काशी को हराया। उनके तर्कसंगत तथा अकाट्य प्रमाणों के सम्मुख कोई रुक न सका। श्री रामपाल ने स्वामी विरजानन्द जी को अन्धा होने के कारण से अनपढ़ कहा है और स्वामी दयानन्द को अनपढ़ अन्धे का शिष्य होने के कारण से अज्ञानी कहा है। आज यह पंचायत प्रस्ताव पास करती है कि सम्पूर्ण देश के साधुओं तथा आर्यों की सभा बुलाई जाए जिसमें श्री रामपाल जी के कथन का उत्तर दिया जा सके। अन्धे को विद्वानों ने प्रज्ञाचक्षु के नाम से पुकारा है तथा वेदों का ज्ञान आरम्भ में श्रवण पद्धति से हुआ है जिसके कारण वेदों को 'श्रुति' भी कहा जाता है।

६. श्री रामपाल जी जिन्न भूत आदि का प्रचार करता है तथा सृष्टि विरुद्ध अनेक करिश्मों का चमत्कार दिखाने का ढोंग करता है। इससे बालकों का दिल कमजोर होगा। 'गहरी नजर गीता में' पुस्तक में लिखता है कि मृत कमाल, कमाली तथा सेऊ को जिन्दा किया गया, दक्ष का सिर काटकर बकरे का सिर लगाया गया तथा अनेक घरों को आशीर्वाद द्वारा खुशहाल बनाया गया। कैंसर जैसे भयंकर रोगों का इलाज भी अपने नाम जप द्वारा दर्शाता है। यह बीमारों की भावना के साथ भयंकर खिलवाड़ कर रहा है। यदि कोई ऐसी शक्ति है तो अपना सिर काटकर बकरे का सिर लगाकर मनुष्य की बोली या बकरे की बोली बोलने की करामात दिखाए।

७. बार-बार विज्ञापनों में लिखता है कि कोई भी ऋषि, सन्त तथा विद्वान् वेद का ठीक अर्थ नहीं कर पाया। इसने सभी सन्तों तथा ऋषियों का अपमान किया है। यह पंचायत प्रस्ताव पास करती है कि सभी सन्तों, महात्माओं तथा विद्वानों की पंचायत बुलाई जाए तथा इसका उचित निर्णय किया जाए।

८. श्री रामपाल की पुस्तक 'गहरी नजर गीता में' का पहला पृष्ठ उलटते ही परमात्माय नमः लिखा है। कविर् तथा कबीर को समान मानता है। पद-पद पर आर्यभाषा की भी अनेक अशुद्धियां मिलती हैं। यह सभा प्रस्ताव पास करती है कि सभी देश और विदेश के विश्व महाविद्यालयों के उच्च कोटि की डिग्री प्राप्त विद्वानों को बुलाया जाए तथा इसके द्वारा कृत वेद के मन्त्र का अर्थ करने के दुस्साहस की पोल खोली जाए।

९. श्री मदनमोहन जी व श्री डी.सी. जैन जो भूगर्भ विज्ञान के विशेषज्ञ हैं उन दोनों ने २६-१-२००५ को आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली की 'सम्पूर्ण देश में बूचड़खाना बन्द' करने विषयक सभा में बताया कि आज की भूकंप व सुनामी लहर जैसी भयंकर आपदाओं का कारण गोहत्या ही है। यह पंचायत प्रस्ताव पास करती है कि सटकपुरी का बूचड़खाना पूर्णतया बन्द करके ताला लगा दिया जाए। मुख्यमन्त्री श्री ओमप्रकाश चौटाला ने शिष्टमण्डल के सामने कई बार आश्वासन दिया कि मैं बूचड़खाना नहीं खुलने दूंगा। श्री भजनलाल जी अध्यक्ष कांग्रेस हरयाणा ने अपने समाचार पत्रों में स्पष्ट बयान दिया था कि चाहे मेरी सरकार आए या न आए बूचड़खाना नहीं खुलने दिया जाएगा। बीजेपी पार्टी ने अपने घोषणा-पत्र में भी सटकपुरी बूचड़खाने को न खुलने देने के लिये लिखा है। श्री वीरेन्द्र जी वर्मा अध्यक्ष एकता पार्टी ने भी सटकपुरी बूचड़खाना नहीं खुलने पाएगा यह घोषणा बार-बार अपने व्याख्यानों में की। चाहे किसी पार्टी की सरकार बने सभी गो-भक्तों तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रार्थना है कि बूचड़खाने को सरकार बनते ही बन्द करने की घोषणा करे। यदि बूचड़खाना बन्द करने की घोषणा नहीं की जाती है तो धरना, अनशन, सम्मेलन, रैली, जेल भरो आन्दोलन अहिंसक विधि से कितना भी बलिदान देना पड़े गोभक्तों का निश्चय है कि गोहत्या का कलंक हरयाणा के माथे पर न रहने पाए। यह प्रस्ताव पास कर पंचायत आने वाली सरकार से अनुरोध करती है सरकार बनते ही पहला कार्य सटकपुरी बूचड़खाना बन्द करके गोभक्त जनता का आशीर्वाद प्राप्त करे।

-**आचार्य बलदेव**, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक

## शोक समाचार

श्रीमती सरबती धर्मपत्नी पहलवान सूबेसिंह आर्य गांव नूनामाजरा (बहादुरगढ़) जिला झज्जर का दिनांक ५-२-०५ को ७२ वर्ष की आयु में बीमार पड़ने के कारण देहावसान हो गया। वह धार्मिक विचारों की गृहिणी थीं। वह महाशय जी के धार्मिक कार्यों में हाथ बंटाती थीं। उनके इस आयु में परिवार से चले जाने से अपूरणीय क्षति हुई है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें।

-ओमप्रकाश शास्त्री, सभागणक

# धर्म केवल एक ही है, पन्थ और मत अनेक हैं

❑ राजपालसिंह शास्त्री, आचार्य, एम.ए., ३४ चन्दन पार्क, दिल्ली-११००४२

धर्म, पन्थ और मत इन तीनों में महान् अन्तर है। तीनों को एक ही समझना हमारी भूल है। तीनों को एक समझना हमारी अज्ञानता, दुःख और कलह का मूल कारण है। योगेश्वर कृष्ण ने गीता में स्पष्ट लिखा है कि-**यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।** आप ध्यान दीजिए कृष्ण महाराज यह भी लिख सकते थे **धर्मस्य** के स्थान पर **पन्थस्य ग्लानिर्भवति भारत।** परन्तु ऐसा नहीं लिखा।

१. **धर्म** केवल एक है। जो वेद की मान्यता है। उसे वैदिक धर्म कहते हैं। **धार्यते इति धर्मः।** जिसने धारण किया हुआ है। किस पदार्थ को धारण किया है। उत्तर स्पष्ट है-उस परम सत्ता, परमेश्वर ने संपूर्ण विश्व को धारण किया हुआ है। वह प्रभु सबका स्वामी है। वह परमसत्ता ही **धर्म** है।

यों तो धर्म की परिभाषा अथवा लक्षण अनेक ऋषि-मुनियों वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार स्वीकार किया है। धर्म तो केवल एक ही है-वह है **वैदिक धर्म।** वेद द्वारा प्रदत्त ज्ञान ही धर्म है। केवल वेद के सिद्धान्तों को स्वीकार करो। मनुष्यकृत ज्ञान अधूरा होता है। केवल ऋषि-मुनियों ने जो मार्ग बताया है, वही श्रेष्ठ धर्म-**वैदिक धर्म** है।

मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण लिखे हैं-**धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय-निग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।** अर्थात् धृति (धैर्य), **क्षमा, दमः** (संयम करना), **अस्तेयम्** (चोरी न करना), **शौचम्** (पवित्रता), **इन्द्रियनिग्रहः** (अपनी सभी इन्द्रियों को वशीभूत रखना), **धी** (बुद्धि), **विद्या, सत्यम्, अक्रोधः** (क्रोध न करना) ये धर्म के दस लक्षण बताये हैं।

महर्षि पतञ्जलि ने भी धर्म के दस लक्षण लिखे हैं :-

**पांच यम-अंहिसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमपरिग्रहा यमाः।** अर्थात् अंहिसा, सत्य,अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पांच यम हैं।

**पांच नियम-शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।** अर्थात् शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान (ईश्वर की स्तुति करें) ये पांच नियम हैं।

ये महर्षि पतञ्जलि ने धर्म के दस लक्षण पांच यम और पांच नियम लिखकर धर्म की व्याख्या स्पष्ट की है।

महर्षि चाणक्य ने धर्म की परिभाषा अथवा लक्षणों का वर्णन किया है। वे लिखते हैं-**इज्याध्ययनदानानि तपः सत्यं धृतिः क्षमा। अलोभ इति धर्मस्य पन्था अष्टविधः स्मृतः।** अर्थात् इज्या (यज्ञ करना), अध्ययन (स्वाध्याय), दान, तप, सत्य, धृति, क्षमा और अलोभ (लोभ न करना) ये धर्म के आठ लक्षण किए। राजऋषि अत्यन्त कूटनीतिज्ञ और स्पष्ट वक्ता थे। वे आगे स्पष्ट लिखते हैं-**तत्र पूर्वचतुर्वर्गः दम्भार्थमपि सेव्यते। उत्तरस्तु चतुर्वर्गो महात्मनैव तिष्ठति।** अर्थात् प्रथम चार गुण तो छली-कपटी लोग भी अपना सकते हैं। द्वितीय चतुर्वर्ग का तो महात्मा, साधु-संन्यासी ही पालन कर सकते हैं।

राजऋषि चाणक्य आगे और स्पष्ट लिखते हैं। **शठे शाठ्यं समाचरेत्।** दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करो। इस प्रकार धर्म के लक्षण अथवा परिभाषायें समय-समय पर अनेक प्रकार की गई हैं। परन्तु ध्यान रहे, धर्म एक ही है। लक्षण और परिभाषायें परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकती हैं।

२. **पन्थ**-अब पन्थ का अर्थ समझें। पन्थ का अर्थ है मार्ग। जब जनता धर्म से मार्गभ्रष्ट अथवा पदच्युत हो जाती है। तब महापुरुष, विद्वान्, साधु-सन्त, वेद-ज्ञान को सरल-सुबोध भाषा के द्वारा जो मार्ग दर्शाते हैं, वह पन्थ है। वेद, दर्शन, उपनिषद्, गीता और रामायण उपदेश दे रहे हैं। प्रायः हम धर्म के मार्ग से भटक जाते हैं। उस परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान को भूल जाते हैं। धर्म की हानि प्रारम्भ हो जाती है। ऐसे वातावरण में स्वार्थी और पाखण्डी लोग पंथ का नया खेल रच डालते हैं। इन पंथों का प्रचार बढ़ गया। जनता की मानसिकता संकीर्ण होती चली गई। धर्म की आड़ में आडम्बर और दुराचार बढ़ने लगे। ईश्वर, अल्लाह और वाहे गुरु के नाम पर कलह बढ़ने लगा।

पंथों के द्वारा संकीर्णता के भाव उत्पन्न हो गये। यदि सभी एक ही सिद्धान्त का प्रतिपादन करते तो मानवता का व्यवहार बढ़ता। हम सब एक हैं और एक पिता की संतान हैं, कोई भेदभाव नहीं था, कोई ऊंच-नीच नहीं था। इन पंथों ने हमारे में विभाजन कर दिया। सभी पंथ कहते हैं कि मेरा ईश्वर बड़ा है। मेरा झण्डा ऊंचा है। यह कैसी विडम्बना।

३. **मत**-मत का अर्थ है विचार। यह मत तो जनसाधारण व्यक्ति के भिन्न-भिन्न होते हैं। **मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना, तुण्डे-तुण्डे सरस्वती।** ईश्वर की उपासना के रीति-रिवाज भिन्न हैं। खान-पान भिन्न-भिन्न हैं। उठना-बैठना सबके पृथक्-पृथक् हैं। नहाना-धोना सबके अलग-अलग, बोल-चाल में विभिन्नता। मत सबके भिन्न हैं। संगठन नहीं, एक शिक्षा नहीं, एक पद्धति नहीं है। मत के अनुसार चलने से विचार-भिन्नता अवश्य रहेगी।

## दयानन्दमठ का ६५ वां सत्संग सम्पन्न

दयानन्दमठ, रोहतक। वैदिक सत्संग समिति द्वारा संचालित दयानन्दमठ का ६५वां सत्संग दिनांक ६/२/२००५ को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हो गया। ९ बजे से १० बजे तक ब्र० कृष्णदेव नैष्ठिक वैद्य ने यज्ञ सम्पन्न करवाया फिर उसके बाद यज्ञप्रसाद का वितरण किया गया। प्रसाद के बाद भक्तिगीतों का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। बहिन गायत्री देवी व बहिन दयावती तथा उपदेशक जगवीरसिंह सांघी व मास्टर देवीसिंह आर्य ने अपनी-अपनी गायन कला से सबको सराबोर कर दिया। ठीक ११ बजे मुख्य विषय **''योगसाधना से जीवन का साफल्य''** पर स्वामी इन्द्रवेश जी पूर्व सांसद एवं अध्यक्ष दयानन्दमठ का सारगर्भित व्याख्यान हुआ।

स्वामी जी ने कहा कि संसार का सबसे बड़ा परोपकार वेद का प्रचार करना ही है। वैसे तो जब से दुनिया बनी है वेदज्ञान तो तभी से मिल रहा है लेकिन कालान्तर में यह प्रचार कर दिया गया था कि भस्मासुर नामक राक्षस वेद को लेकर समुद्र में चला गया है। अतः वेद तो समाप्त हो गये हैं। लेकिन महर्षि दयानन्द ने कहा कि आलस्यरूपी भस्मासुर को समाप्त कर दिया है। उन्होंने कहा कि अष्टांग योग से जीवन का साफल्य हो सकता है। छः दर्शन हैं, जिन्हें छः शास्त्र भी कहते हैं लेकिन आठ हैं अंग जिसके ऐसे योग को अष्टांग कहते हैं। अभ्यास यानि प्रयास करना जरूरी है। जैसे गुड़-गुड़ कहने से मुँह मीठा नहीं होता। जीवन की सफलता तभी होगी जब हम व्यवहार में लायेंगे। मानव जीवन के चार लक्ष्य हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन्हीं की सिद्धि के लिए अष्टांग योग (योग साधना) को अपने जीवन में अपनाना चाहिये।

**-सन्तराम आर्य,** संयोजक एवं मंत्री, वैदिक सत्संग समिति दयानन्दमठ, रोहतक

## स्वामी दयानन्द बन जाओ

**-पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक**

आर्यवर्त्त के वीर सपूतो! मिलजुल करके कदम बढाओ।
करो वेद प्रचार जगत् में, स्वामी दयानन्द बन जाओ॥
जीवमात्र के हितचिंतक थे, दयानन्द ऋषिराज निराले।
मानवता के महापुंज थे, ईश्वर भक्त संत मतवाले॥
कर्षण तिवारी जी के सुत थे, यशोदा बाई माँ ने पाले।
जग का भला किया स्वामी ने, पी-पी के विष के प्याले॥
परोपकारी बनो आर्यो! सकल विश्व को आर्य बनाओ।
करो वेदप्रचार जगत् में, स्वामी दयानन्द बन जाओ॥
वेद सभ्यता, सदाचार को, जग ने आज विसार दिया है।
नर-नारी बन गए शराबी, मांस को भोजन बना लिया है॥
ब्रह्मचर्य का पालन छोडा, विनाशकारी काम किया है।
रावण, कंस गए बन लाखों, कंपित होता देख लिया है॥
राम, कृष्ण बन जाओ वीरो! दानवदल को मार गिराओ।
करो वेदप्रचार जगत् में, स्वामी दयानन्द बन जाओ॥
आई है शिवरात्र आर्यो! देव पुरुष की याद दिलाने।
हमें धर्म का बोध कराने, सोया फिर संसार जगाने॥
धर्म-अधर्म का, पुण्य-पाप का, सारे जग को भेद बताने।
स्वामी दयानन्द आए थे, स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाने॥
गऊहत्या को बंद कराओ, दुनिया में गोपाल कहाओ।
करो वेदप्रचार जगत् में, स्वामी दयानन्द बन जाओ॥
उग्रवाद, आतंकवाद का, भूमण्डल से नाम मिटा दो।
धूर्त, नास्तिक, विधर्मियों को, वीरो अपनी शक्ति दिखा दो॥
त्याग, तपस्या, सच्चाई का, सर्व जगत् को पाठ पढा दो।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, जग में वैदिक नाद बजा दो॥
बिस्मिल, भगतसिंह बन जाओ, दुनियाभर में धूम मचाओ।
करो वेदप्रचार जगत् में, स्वामी दयानन्द बन जाओ॥

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| | |
|---|---|
| १. वैदिक साधना आश्रम, गोरड़ जिला सोनीपत | २७ फरवरी से ६ मार्च ०५ |
| २. आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर | २५ से २७ मार्च ०५ |
| ३. आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द | ६ से ८ मार्च ०५ |
| ४. श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर | ४ से ६ मार्च ०५ |
| ५. आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी | ८ मार्च ०५ |
| ६. आर्यसमाज गोली जिला करनाल | १८ से २० मार्च ०५ |
| ७. आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल | १८ से २० मार्च ०५ |
| ८. गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत | १९ से २० मार्च ०५ |
| ९. आर्यसमाज ढोल जिला कुरुक्षेत्र | ११ से १३ मार्च ०५ |
| १०. गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव | १२ से १३ मार्च ०५ |
| ११. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| १२. महात्मा फग्गुराम जी स्मृति पर्व (स्थान-विश्वकर्मा धर्मशाला बड़ोदा रोड काठमण्डी गोहाना जिला सोनीपत) | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| १३. श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद | १८ से २० मार्च ०५ |
| १४ आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | २ से ५ अप्रैल ०५ |
| १५ आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत (देवी मेले के उपलक्ष्य में वेदप्रचार) | १६-१७ अप्रैल ०५ |
| १६. आर्यसमाज रेवाड़ी | ९ से १० अप्रैल ०५ |
| १७. आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल | ११ से १३ मार्च ०५ |

**—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

# दयानन्द बोधरात्रि पर वेद संदेश

❑ स्वामी वेदरक्षानंद सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी। शिवरात्रि के पर्व के अवसर पर चौदह वर्ष का बालक मूलशंकर मंदिर में बैठकर शिव के दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा था। किंतु उसने आश्चर्य से देखा कि शिवलिंग पर चढ़ाये गये भोग को शिव नहीं खा रहा है किंतु चूहे खा रहे हैं। मूलशंकर ने सोचा शिव में इतनी शक्ति नहीं है कि अपने ऊपर से इन चूहों को हटा दे? इस छोटी-सी घटना ने मूलशंकर को दयानन्द बना दिया। अतः यह पर्व महत्त्व का है। दयानन्द बोधरात्रि पर कविवर पंडित नाथूराम 'शंकर' ने कितना ही सुंदर कहा है-

**भारतरत्न मूलशंकर ने, मंगल मूल विचार किया।**
**होकर दयानन्द ऋषि नामी, जीवन परमोदार किया॥**
**कौतुक देख चपल चूहे का, अबोधज रोग किया।**
**भवसागर के तर जाने का, परमोचित उद्योग किया॥**
**त्याग कुटुम्ब विलास विसारे, बनके गृही न भोग किया।**
**ब्रह्मचर्यव्रत धार सिधारे, सिद्ध मनोरथ योग किया॥**
**बनकर योगिराज विज्ञानी, वैदिक धर्मप्रचार किया।**
**होकर दयानन्द ऋषि नामी, जीवन परमोदार किया॥**

**''जो जागत है सो पावत है'' वेद संदेश-**

जो इस जगत् में सर्वदा सावधान रहता है, सदा सजग रहता है, उसको जगत् में सदा ऋचायें प्राप्त होती हैं, ज्ञान-विज्ञान प्राप्त होते हैं, कला-कौशल प्राप्त होते हैं, उनके आधार पर फिर जगत् में उसे स्तुतियाँ प्राप्त होती हैं, प्रशंसायें मिलती हैं, यश-कीर्तियाँ मिलती हैं। जो इस संसार में सदा सजग रहता है, सदा अविद्या से हटकर विद्या-विज्ञान की ओर अग्रसर होता रहता है, उसे साम प्राप्त होते हैं, उसे साम-मंत्रों का ज्ञान प्राप्त होता है, उसे उपासनायें प्राप्त होती हैं, उसे धैर्य और सांत्वनायें प्राप्त होती हैं। सच बात तो यह है कि जो जागता है, सदा पुरुषार्थ कर अविद्या के गर्त से अपने आपको उभारने का प्रयत्न करता है, तो वह शांत स्वरूप प्रभु उसे प्यार में आकर मानो कहता है कि **''तेरी मित्रता में स्थिर हुआ-हुआ मैं तेरा निश्चित रूप से आधार अर्थात् आश्रय बन गया हूँ।''** साधक को चाहिये कि वह सदा जागरूक रहकर वेदादि सत्यशास्त्रों का स्वाध्याय कर जहाँ जग में स्नेह-सम्मान सेवा-सत्कार को प्राप्त करे वहाँ उस प्रभु में आत्मविभोर होकर उसका गुणगान करे, उसका ध्यान करे जिससे कि वह सर्वाधार प्रभु उस उपासक का सच्चा आश्रय बनकर उसको आनन्द रस से आप्लावित कर दे, इस प्रकार से तृप्त कर दे। ऋग्वेद पंचम मण्डल के चौवालीसवें सूक्त के १४-१५वें मंत्रों में जागरूकता तथा पुरुषार्थ के विषय में सुंदर वर्णन आया है-

**यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति। यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥** (ऋग्वेद ५/४४/१४)

अर्थ-(यः जागार तम् ऋचः कामयन्ते) जो सदा जागरूक रहता है उसको ऋचायें चाहती हैं, उसको स्तुतियां चाहती हैं। (यः जागार तम् उ सामानि यन्ति) जो सदा जागता है, सावधान रहता है, उस ही को साम मन्त्र प्राप्त होते हैं, उपासनायें प्राप्त होती हैं। (यः जागार तं अयं सोमः आह) जो जागता है, अविद्यान्धकार से उठ खड़ा होता है, उसको ही यह सर्वोत्पादक सर्वप्रेरक सौम्य गुण-कर्म-स्वभावों वाला प्रभु मानो कहता है कि (अहं तव सख्ये नि-ओकाः अस्मि) मैं तेरी मैत्री में, मैं तेरे सखाभाव में स्थिर हुआ-हुआ निश्चित रूप से तेरा निवास हूँ, निश्चित रूप से तेरा घर हूँ, निश्चित रूप से तेरा आश्रय हूँ। अतः तू मुझे ही सर्वप्रकार से अपना आश्रय बना। अगले मंत्र में भी **'जो जागत है सो पावत है'** का संदेश दिया है-

**अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेऽअग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति। अग्निर्जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥** (ऋग्वेद ५/४४/१५)

अर्थ-(अग्निः जागार तम् ऋचः कामयन्ते) अग्नि के समान ज्ञान प्रकाशवाला पुरुष ही जागता है, सदा जागरूक रहता है इसलिये उसको ऋचायें चाहती हैं, उसको स्तुतियाँ प्रशंसायें चाहती हैं, प्राप्त होती हैं। (अग्निः जागार तम् उ सामानि यन्ति) अग्नि के सदृश देदीप्यमान मनुष्य जागता है, सदा सावधान रहता है, इसलिये उसको ही साम-मन्त्र प्राप्त होते हैं, उपासनायें प्राप्त होती हैं, सान्त्वनायें प्राप्त होती हैं। (अग्निः जागार तम् अयं सोम आह) ज्ञानी-विवेकी जागता है, सदा सजग रहता है, इसलिये उसको यह सोम-शान्तस्वरूप आनन्दस्वरूप प्रभु मानो कहता है कि (अहं तव सख्ये न्योकाः अस्मि) मैं तेरे सखित्व में स्थित हुआ-हुआ निश्चित रूप से तेरा निवास हूँ, निश्चित रूप से तेरा आश्रय हूँ। अतः तू मुझे ही अपना सब प्रकार से आश्रय बना।

जो अग्नि, जो वेदादि के स्वाध्याय से सदा अपने ज्ञान प्रकाश से युक्त करता रहता है, जिसमें उत्साह है, तड़प है, लगन है, आगे बढ़ने और ऊपर उठने की भावना है, वही सदा जागरूक रहता है, वही अपने एक-एक पल और एक-एक क्षण का सदुपयोग करने के लिये सावधान रहता है, सदा सजग रहता है। इसलिये ऋचायें ज्ञान-विज्ञान उसे प्राप्त होता है, उपासना की गुत्थियाँ उसी के आगे खुलती हैं, हृदय की गाँठें उसकी खुलती हैं, धैर्य और सान्त्वनायें उसे ही मिलती हैं। इस प्रकार वह पूर्ण मनोयोग के साथ, हृदय की तड़प के साथ प्रभु का सच्चा सखा बनकर उसके गुण-कर्म-स्वभावों को अपने में निरन्तर भरता रहता है तो एक न एक दिन उसके जीवन में बहुत शीघ्र ही वह सौभाग्यशाली दिन आ जाता है जबकि वह सोम प्रभु शान्तस्वरूप दिव्यपावन प्रभु उसे प्यार में आकर मानो सहज ही कह बैठता है कि ''मैं तेरी निश्छल मैत्री में स्थिर हुआ-हुआ तेरा बन गया हूँ। अतः तू मुझे अपना आधार बनाकर मुझसे वह दिव्य रस पा, वह दिव्य आनन्द पा, जो कि अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। अन्त में पुनः कविवर पंडित नाथूराम शर्मा 'शंकर' की कविता प्रस्तुत कर रहे हैं-

दोहा-

जान सच्चिदानन्द को, शंकर जगदाधार।
धन्य दयानन्दर्षि थे, सबका किया सुधार॥

कवित्त घनाक्षरी-

जिसकी पवित्र वेदविद्या मंगला के आगे,
पापिनी अविद्या दुःखदा का मुख बंद है।
लुक्कड़ लताड़े, मतवाले दर्पहीन किये,
जानता जिसे न ऐसा कौन मति-मंद है?
धर्म-धारणा से सारे देशों का सुधार किया,
जिसका अमोघ उपदेश सुखकन्द है।
सूझी शिवरात्रि को महेश की महत्ता जिसे,
सत्य मूलशंकर वहीं तो दयानन्द है॥

## आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी) के सत्रहवें आर्य सम्मेलन का संक्षिप्त वृत्तांत

गत नवम्बर मास में दिनाङ्क २७ व २८ नवम्बर को सफलतापूर्वक सम्पन्न आर्य सम्मेलन में सर्वश्री आचार्य विजयपाल योगार्थी, श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, गऊरक्षक शेरसिंह आर्य, श्री डॉ० भूपसिंह आर्य विज्ञानी, श्री डॉ० सत्यपाल आर्य दार्शनिक, श्री पं० नरदेव आर्य, श्री पं० ताराचन्द वैदिक, श्री पं० विश्वमित्र आर्य, श्री रामरख आर्य, श्री स्वामी परमानन्द जी, महाशय आजादसिंह आर्य, श्री खेमचन्द आर्य, वानप्रस्थी ताराचन्द आर्य, श्री रणवीरसिंह जी (मन्दौला) विधायक तथा श्री रामफलजी रांगी एवं अजय शास्त्री पधारे जिन्होंने मार्मिक प्रकरणों को प्रभावशाली ढंग से अपने व्याख्यानों, भजनोपदेशों व धर्मचर्चा के माध्यम से प्रस्तुत कर वेदवीणा बजाई। सुनकर हजारों श्रोता मंत्रमुग्ध हुए, उनकी आत्मायें तृप्त हुई तथा आर्यसमाज से प्रभावित हुए। विशेष उल्लेखनीय यह है कि खेतों में नलकूपों के पास आवास करने वाले अधिकांश ग्रामीणों में से इस बार, धर्मशास्त्री, योगार्य व पहलवान् ताराचन्द आर्यप्रेमी के द्वारा उनके घर द्वार जाकर किये गये आमन्त्रण व आह्वान के कारण, सैकड़ों की संख्या में खेतों से चलकर मंदिर में पहुँचे व आनन्दित हुए। ग्राम व अन्य ग्रामवासी अनेक युवकों ने जनेऊ ग्रहण किये। मंदिर खाप व आर्यसेवक श्री प्रतापसिंह आर्य (राजगढ़) एवं कुछ ग्रामीण सज्जनों का भेंट आदि के द्वारा सम्मान किया गया। उत्सव का सकल भोजन व्यय धर्मशास्त्री, रामार्य, सुमेरार्य तथा महीपाल आर्य ने दिया। धर्मभक्तों व आर्यमित्रों ने पर्याप्त दान दिया। अनेक आर्यसमाजों, आर्यवीरों तथा आर्यकुमारों ने विशेष सहयोग दिया।

**-धर्मशास्त्री मंत्री आर्यसमाज भाण्डवा, जिला भिवानी**

# आर्य-संसार



फोटो परिचय :- गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्ष महाविद्यालय का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आदरणीय आचार्य बलदेव जी व गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य देवव्रत जी आचार्य

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रांगण में रविवार को वसन्त पंचमी के शुभावसर आर्ष महाविद्यालय उद्घाटन समारोह एवं पाखण्ड-खण्डन सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का शुभारम्भ नवप्रविष्ट ग्यारह ब्रह्मचारियों ने ऋग्वेद मंत्रोच्चारण द्वारा किया तथा आर्ष महाविद्यालय व आचार्य निवास का उद्घाटन योगिराज स्वामी सत्यपति परिव्राजक (रोजड़) एवं तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव द्वारा किया गया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रदेशाध्यक्ष आचार्य बलदेव मुख्यातिथि थे तथा इसकी अध्यक्षता पानीपत के प्रसिद्ध उद्योगपति सेठ आदित्यप्रसाद ने की। इस अवसर पर योगिराज स्वामी सत्यपति परिव्राजक व आचार्य बलदेव ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज एक क्रान्ति है तथा क्रान्ति से ही समाज में शांति संभव है। उनके इस उद्घोष ने सम्मेलन में उपस्थित सभी लोगों में नया जोश व उत्साह भर दिया। उन्होंने घोषणा की कि अब इस पवित्र धरा पर धर्म के नाम पर पाखण्ड किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस मौके पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रस्तोता महात्मा वेदपाल ने कहा कि महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने आर्ष महाविद्यालय खोलकर शोभनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र को आध्यात्मिक शिक्षा का केन्द्र बनाया जाएगा, जो समस्त विश्व में वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करेगा।

इस सम्मेलन को संबोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान आचार्य विजयपाल ने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने आर्ष महाविद्यालय खोलकर वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करने वाले उपदेशकों को तैयार करने का बीड़ा उठाकर रिक्तता को पूर कर दिया है। उन्होंने कहा कि जो आर्यसमाज का स्वरूप पहले था, उसमें आज शिथिलताएं आ गई हैं, इन्हें दूर करने के लिए वैदिक धर्म के प्रचार की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए गुरुकुल ने जो पहल की है वह अति प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि हमें आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए कम से कम एक संतान समर्पित करने क संकल्प लेना चाहिए, ताकि आर्यसमाज का निरन्तर विकास हो सके।

इस अवसर पर प्रसिद्ध शिक्षाविद् व गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डॉ० देवव्रत शास्त्री ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्ष विश्वविद्यालय खोलने का उद्देश्य प्रकट करते हुए कहा कि समस्त विश्व में अनेक मत-मतान्तरों ने समाज में अंधविश्वास, हिंसा, अज्ञान व अन्याय को जन्म दिया है। आज न जाने कितना गुरुडम अज्ञानवश फैलाया जा रहा है जिससे मानव में मतभेद पैदा हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि समस्त विश्व एक हो, सभी प्राणियों में प्रेमभावना पैदा हो, इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए गुरुकुल प्रबंध समिति द्वारा इस महाविद्यालय की स्थापना की गई है। उन्होंने बताया कि इस आर्ष महाविद्यालय में ग्यारह ब्रह्मचारियों को प्रविष्ट किया गया है। ये ब्रह्मचारी प्रतिज्ञाबद्ध होंगे कि वे आजीवन अविवाहित रहेंगे व सरकारी नौकरी न करके वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करेंगे तथा अपना जीवन मानवता के उत्थान में लगाएंगे। उन्होंने बताया कि इन ब्रह्मचारियों के वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में जुटने के बाद नए ब्रह्मचारियों को महाविद्यालय में प्रवेश दिया जाएगा, इस प्रकार यह क्रम निरंतर जारी रहेगा। उन्होंने बताया कि इस महाविद्यालय में अध्ययनरत सभी ब्रह्मचारियों को वस्त्र, भोजन व आवास व्यवस्था निःशुल्क प्रदान की जाएगी तथा एक ब्रह्मचारी पर दो हजार रुपए प्रतिमाह खर्च किया जाएगा, जिसे गुरुकुल प्रबंध समिति निर्वहन करेगी।

इस सम्मेलन में परोपकारिणी सभा अजमेर के मंत्री डॉ० धर्मवीर, डॉ० राजेन्द्र वेदालंकार, आचार्य आशुतोष, आचार्य सत्यजीत, गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवंतसिंह सैनी, लाला सतप्रकाश गर्ग, उप-प्राचार्य शमशेरसिंह, गुरुकुल के समस्त आचार्यगण व पूर्व प्राचार्य होशियारसिंह सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस सम्मेलन में हजारों लोगों ने भाग लिया। इसमें हरयाणा के अलावा देश के कोने-कोने से आए आर्यसमाज के विद्वानों ने सारगर्भित विचार व्यक्त किए और बढ़ते पाखण्डियों के पाखण्ड का पर्दाफाश करने का आह्वान किया।

-डॉ श्यामलाल शर्मा, प्रेस प्रवक्ता, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

## ईश्वर कैसा न्यायकारी है?

आप देख रहे हो, सब्जी मण्डी की तरह मुर्गों की मण्डी भी खुली हुई है जहाँ से असंख्य मुर्गे प्रतिदिन तन्दूर में झोंकने के लिए जाते हैं। ऐसे ही बकरे भी बिकते हैं, विशेषतः ईद के दिन जब इनकी कुर्बानी दी जाती है। यह देखकर ईश्वर का भक्त पूछता है, भगवन् यह आपका कैसा न्याय है? इन बेजुबां मासूम पशु-पक्षियों ने क्या अपराध किया है जो इनको इतनी बेदर्दी से मार रहे हो?

अन्तःकरण से आवाज आती है। ओ भोले भक्त! तू नहीं जानता, ये मार्किट में बिकने वाले मुर्गे, बकरे पिछले जन्म में सब इंसान थे। मगर मूर्खतावश सारी उमर (आजीवन) बकरों, मुर्गों को काटते, बेचते, पकाते खाते रहे। ईश्वर की न्यायव्यवस्था में अब बकरे मुर्गे बनकर आये हैं। इस समय जो लोग बकरों मुर्गों को काट रहे हैं, बेच रहे हैं, पका रह हैं और खा रहे हैं वे जल्दी ही पुनः बकरे और मुर्गे बनकर जन्म लेंगे। जब पाप का घड़ा भर जाता है तब एक दिन अकस्मात् फूट जाता है अर्थात् सुनामी लहरों की तरह प्राकृतिक आपदा भूकम्प आदि में चने के साथ घुन की तरह पिस रहे हैं। याद रखो! **ईश्वर के न्यायालय में न्याय अनोखा होता है।**

**कुछ देर भले ही हो जाये अंधेर कभी नहीं होता है॥**

## उपदेशक और प्रचारक में अंतर

उपदेशक और प्रचारक में कुछ अंतर है। उपदेशक पहले स्वयं को उपदेश करता है अर्थात् अपने आपको सुधारता है। उसे दक्षिणा का लोभ लालच नहीं होता। वह परोपकारी बनकर नम्रता से उपदेश करता है। प्रचारक केवल प्रचार करता है। वह धनोपार्जन की दृष्टि से कार्य करता है। आर्यजगत् में दो प्रकार के प्रचारक हैं। कुछ ऐसे प्रचारक हैं जो स्वतन्त्र रूप से कार्य करते हैं। प्रचार करने के लिये निश्चित दक्षिणा मांगते हैं। दक्षिणा के अतिरिक्त आने जाने का मार्ग व्यय इत्यादि देना पड़ता है। दूसरे प्रकार के प्रचारक किसी सभा के आदेशानुसार जाकर प्रचार करते हैं। सभा के लिये दिये गये दान की रसीद देते हैं।

आज हम देखते हैं कि प्रचारकों की संख्या अधिक है परन्तु उपदेशक बहुत कम हैं। इसलिये प्रचार का प्रभाव तीव्रगति से नहीं हो रहा है। जब तक पं० गुरुदत्त, पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे दीवाने बनकर प्रचार नहीं होगा तब तक **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का स्वप्न साकार नहीं होगा। आर्यसंन्यासी और वानप्रस्थी ही त्यागी तपस्वी बनकर इस कार्य को सफल प्रभावशाली बना सकते हैं। गृहस्थी को अपने बीवी बच्चों के पालन-पोषण की चिंता रहती है। गृहस्थी को अपने परिवार का चरित्र निर्माण करके '**भनुर्भव जनया दैव्यं जनम्**' का पालन करना चाहिये।

**-देवराज आर्य मित्र, आ० स० हरिनगर, नई दिल्ली-६४**

## आर्यसमाज सान्ताक्रुज़ का ६२ वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सान्ताक्रुज़ का ६२वाँ वार्षिकोत्सव दि० २६ जनवरी से ३० जनवरी, २००५ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेदीय पारायण महायज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा पं० रमेशचन्द्र जी शास्त्री (फरीदाबाद, हरयाणा) तथा वेदपाठी पं० नामदेव आर्य, पं० विनोदकुमार शास्त्री, पं० नरेन्द्र शास्त्री, पं० प्रभारंजन पाठक एवं पं० रणधीर शास्त्री जी थे।

इस अवसर पर भजन, प्रवचन, आर्यवीर दल प्रदर्शन, आर्य महिला सम्मेलन तथा वैदिक भजन संख्या के साथ-साथ भव्य पुस्तक मेले का आयोजन किया गया।

प्रातः तथा रात्रिकालीन सत्र में दि० २७, २८, २९ जनवरी, २००५ को प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुंवर उदयवीर जी आर्य (मथुरा, उ०प्र०) के सुमधुर भजन हुए। इसी क्रम में वैदिक प्रवक्ता पं० रमेशचन्द्र जी शास्त्री तथा स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती (रोहतक, हरयाणा) के सारगर्भित प्रभावोत्पादक एवं तथ्यात्मक प्रवचन हुए।

दि० २६ जनवरी, २००५ को प्रातः यजुर्वेद पारायण यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। उसके पश्चात् आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री विश्वभूषण आर्य ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण किया। आर्य विद्यामंदिर सान्ताक्रुज की छात्राओं ने एवं उपस्थित आर्य नर-नारियों ने राष्ट्रगीत गाकर राष्ट्रीय ध्वज को अभिवादन किया। इसके उपरान्त भजन एवं प्रवचन हुए। अंत में समारोह के अध्यक्ष स्वामी जीवनानन्द जी ने सभी को अपना आशीर्वाद दिया। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री विश्वभूषण आर्य ने सभी का धन्यवाद किया।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के पदाधिकारियों ने आमन्त्रित संन्यासियों, विद्वानों को शाल और मोती-माला भेंट कर सम्मानित किया। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री विश्वभूषण आर्य ने सभी का धन्यवाद किया तथा महामंत्री श्री संगीत आर्य ने कार्यक्रम का संचालन किया। अन्त में समारोह अध्यक्ष स्वामी जीवनानन्द जी द्वारा उपदेश, आशीर्वचन, शान्तिस्रोत गायन द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शान्तिपाठ, जयघोष एवं प्रीति भोजन के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

**बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।**

# परमात्मा का स्वरूप

❑ डा० अशोक आर्य, आर्य कुटीर, ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरयाणा)

सत्यार्थप्रकाश का शुभारम्भ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ईश्वर अर्थात् न केवल प्रभु स्मरण से अपितु प्रभुचर्चा से किया है। तभी तो इसके प्रथम समुल्लास में विस्तृत रूप से प्रभुचर्चा की गई है। जिसके माध्यम से प्रभु के निज नाम, गौणिक नामों, स्वरूप इत्यादि की विशद विवेचना की गई है।

**निज एवं सर्वोत्तम नाम**-अनन्त गुण, कर्म एवं स्वभाव वाले प्रभु के नाम भी अनन्त हैं। इन अनन्त नामों में से यदि प्रभु के एक सर्वोत्तम नाम अथवा निज नाम की खोज करनी हो तो एकमात्र 'ओ३म्' नाम ही ऐसा मिलता है, जो न केवल प्रभु का निज नाम ही है अपितु अन्य नामों में सर्वोत्तम भी है। ओ३म् के अतिरिक्त जितने भी नामों से परमपिता को हम स्मरण करते हैं, उनमें से किसी में भी निजता नहीं है। अपितु पिता का कोई न कोई गुण छुपा है। इसलिए ये नाम निज नाम की श्रेणी में न आकर गौणिक कहे जा सकते हैं। जिस प्रकार कहावत है कि हाथी के पांव में सब का पांव, उसी प्रकार 'ओ३म्' नाम में सभी नाम आ जाते हैं। जिस प्रकार कोई रमेश नाम का व्यक्ति किन्तु कोई उसे भाई कहता है, कोई चाचा कहता है, कोई पिता भी कहता है तथा कोई बेटा। वास्तव में यह सब उसके नाम नहीं हैं। उसका नाम तो रमेश ही है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर का निज नाम 'ओ३म्' ही है।

यह ओ३म् शब्द तीन अक्षरों से बना है- अ, उ और म्। इन तीन अक्षरों से भी प्रभु के अनेक नामों यथा-

अ = अकार = विराट्, अग्नि, विश्वादि।
उ = उकार = वायु, तैजस, हिरण्यगर्भ आदि।
म् = मकार = ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञादि।

प्रकरणानुसार यह नाम अन्य पदार्थों के भी हो सकते हैं। जहां जैसा प्रकरण हो वहां वैसा ही अर्थ लेना चाहिए। खाना बनाने के अवसर पर अग्नि का भाव चूल्हा जलाने से है न कि ईश्वर से। जबकि स्तुति, प्रार्थना उपासना के अवसर पर अग्नि का भाव ईश्वर से है।

**सभी नाम सार्थक**-प्रभु का कोई भी नाम निरर्थक नहीं है अपितु सभी नाम सार्थक हैं। जिस प्रकार हम मूर्ख को बहुत समझदार, अन्धे को नयनसुख आदि निरर्थक नाम दे देते हैं, वैसे परमात्मा के किसी भी नाम में नहीं है। परमात्मा के सभी नाम सार्थक इसलिए भी हैं, क्योंकि कहीं यह गुणों का बोध कराते हैं, तो कभी कर्म अथवा स्वभाव का यथा स्वप्रकाश होने से उसे अग्नि कहते हैं।

**प्रभु के विभिन्न नाम**-प्रभु का निज नाम 'ओ३म्' है परन्तु गुण, कर्म, स्वभावानुसार उसके अनेक नाम हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश में १०० नामों की सूची देने के पश्चात् लिखा है, 'प्रभु के इसी प्रकार और भी अनेक नाम हैं।' सौ नाम में ब्रह्मा, मनु, प्राण, ब्रह्म, विराट्, वायु, अग्नि, तेजस्, जल, आकाश, चन्द्र आदि दिए हैं। यह सौ नाम तो सागर में बूंद समान हैं।

**सगुण-निर्गुण**-जिसमें कोई गुण हो वह सगुण तथा जिसमें कोई गुण न हो वह निर्गुण कहलाता है। महर्षि ने प्रभु को सगुण व निर्गुण दोनों रूपों में ही स्वीकार किया है। परमात्मा 'सर्वज्ञ' है, पवित्र है, दयालु है-यह सब प्रभु के गुण हैं, इसलिए प्रभु सगुण है। प्रभु रूप-स्पर्श-गन्ध, अविद्या, राग-द्वेष एवं नस आदि से रहित होने के कारण निर्गुण भी है। कुछ लोगों ने निराकार को निर्गुण व साकार को सगुण कहा है। यह अर्थ ठीक नहीं है। परमात्मा के समान सृष्टि की प्रत्येक वस्तु व प्रत्येक जीव में कुछ गुण हैं और कुछ गुण नहीं हैं, इस कारण वह सब भी सगुण भी हैं और निर्गुण भी।

**परमेश्वर की ही स्तुति**-जो गुण, कर्म, व्यवहार में सबसे उत्तम हो उसे श्रेष्ठ कहते हैं। उन सब श्रेष्ठों में भी परमात्मा सर्वश्रेष्ठ है। उसकी तुलना में अन्य कोई नहीं आता। इसलिए उसी परमात्मा की ही स्तुति-प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए, अन्य किसी की भी नहीं। यही कारण है कि देवता व दानव सभी ने सदैव परमेश्वर का ही स्मरण किया है, अन्य किसी का नहीं। यदि कोई प्रभु को छोड़कर किसी अन्य की उपासना करता है तो वह पशु है। प्रभु स्मरण के अन्त में शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः के माध्यम से प्रभु से हम प्रार्थना करते हैं कि आध्यात्मिक दुःख, आदिभौतिक दुःख तथा आधिदैविक दुःखों से हम बचें। प्राचीन ऋषि-मुनियों की परम्परा को ही ऋषि ने आगे बढ़ाते हुए आदेश दिया कि किसी भी कार्य का शुभारम्भ 'ओ३म्' अथवा 'अथ' लिखकर करना चाहिए। यही मङ्गलाचरण है। सांख्यदर्शन में लिखा भी है कि-जो न्यायकारी, पक्षपातरहित, सत्य, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा है, उसी का यथावत् सर्वत्र और सदा आचरण करना मङ्गलाचरण कहलाता है। ग्रन्थ के आदि से लेकर समाप्ति तक सत्याचार का प्रयोग ही मङ्गलाचरण है। इसी प्रकार 'ओ३म्' के स्थान पर 'हरि ओ३म्' लिखना भी ठीक नहीं। जब 'ओ३म्' नाम सर्वश्रेष्ठ है तो उससे पूर्व किसी और नाम को स्थान देना उत्तम नहीं। अतः हमें ग्रन्थ आरम्भ व अन्त करते समय 'ओ३म्' 'अथ' 'इति' आदि शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए।

## जन्मदिवस पर यज्ञ व वेदप्रचार सम्पन्न

दिनांक ११ फरवरी के आर्य निवास नलवा (हिसार) में स्व० श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य के सुपुत्र श्री युद्धवीर आर्य के ११वें जन्मदिवस पर यज्ञ व वेदप्रचार का आयोजन किया गया। स्वामी सर्वानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। श्री ज्ञानेन्द्र तेवतिया भजनोपदेशक भिवानी के शिक्षाप्रद भजन हुए। स्वामी जी का आध्यात्मिक व सुखी गृहस्थ का जीवन पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज नलवा के प्रधान श्री भलेराम आर्य, श्री विजयराम आर्य प्रधान व नवीन आर्य मंत्री आर्यसमाज कंवारी, सेठ महेन्द्र आर्य, सत्यवीर आदि ने बच्चे को आशीर्वाद दिया व परमपिता परमात्मा से लम्बी आयु की कामना की। श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने विद्वानों व कार्यक्रम में पधारे नर-नारियों का धन्यवाद किया। -नरेन्द्र आर्य नलवा



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८१






ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री — सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक १५ — ७ मार्च, २००५ — वार्षिक शुल्क ८०) — विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## ऋषिबोध-अंक

### ऋषि जन्मोत्सव व बोधोत्सव पर....

# कालजयी ऋषिवर! तुम्हें प्रणाम



महर्षि दयानन्द सरस्वती

डॉ० महेश विद्यालंकार, दिल्ली

देश के महापुरुषों की परम्परा में ऋषि दयानन्द का नाम बड़ी श्रद्धा भक्ति और सम्मान से लिया जाता है। ऋषि का संसार में आगमन ऐसे समय में हुआ, जब चारों ओर अविद्या, अन्धकार, ढोंग, पाखण्ड पंथ, गुरुडम आदि फैला हुआ था। वैदिक धर्म को लोग भूल रहे थे। संस्कृति, सभ्यता, जीवनमूल्य और नारी की स्थिति शोचनीय हो रही थी। ऐसे घोर अंधकार में स्वामी दयानन्द प्रकाशस्तम्भ बनकर संसार में आए।

ऋषि का व्यक्तित्व और कृतित्व निराला तथा चुम्बकीय था। वे जिधर से निकले, उधर ही वैचारिक क्रान्ति एवं परिवर्तन की लहर चल पड़ी। शिवरात्रि को सत्य ईश्वर और जीवन का बोध हुआ। शिवरात्रि को ऐसे जागे, फिर जीवनभर कभी नहीं सोए। सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म, मानवता, वेदोद्धार आदि में लगा दिया। अपने लिए न कुछ चाहा, न मांगा, न संग्रह किया, न कोई चेला, न चेली, न पंथ, सम्प्रदाय, न गद्दी बनाई। सारा जीवन अपमान सहते रहे। गालियां सुनते रहे, अपमान झेलते रहे, जहर पीते रहे। बदले में संसार को सीधा, सच्चा और सरल मार्ग दिखाते रहे। ऋषि देश, धर्म, संस्कृति तथा मानवजाति की दीन-हीन दुर्दशा को देखकर रातों जागकर करुण-क्रन्दन किया करते थे। कवि के शब्दों में-

एक टीस-सी दिल में उठती है,
एक दर्द जिगर में होता है।
हम बैठे रोया करते हैं,
जब सारा आलम सोता है।

रोती हुई भारतमाता के आंसू किसी ने पोंछे हैं, तो वह ऋषि दयानन्द ने। वे हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये किले की दीवार बनकर खड़े हुए। ऋषि का व्यक्तित्व चुम्बकीय और आकर्षक था। जो भी सम्पर्क में आया, उसी का कायाकल्प हो गया। जिसने भी उन्हें देखा, सुना तथा पढ़ा, वही उनका दीवाना हो गया। लोग तलवार लेकर आए और शिष्य बनकर गए। न जाने कितने गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, लेखराम हंसराज आदि के जीवन सन्त तथा परोपकारी बन गए। वे संसार को कैद करना नहीं, बल्कि उसे कैद से छुड़ाने आए थे। विषदाता जगन्नाथ को प्राणदान, संसार के इतिहास में ऐसा दूसरा उदाहरण न मिलेगा।

सच है कि ऋषि उनसठ वर्ष के अवधि के लिए संसार में आये थे। वे सत्य के शोधक, सत्यवक्ता, सत्य के प्रचारक और अन्त में सत्य के लिए ही शहीद हो गए। बरेली की सभा में कमिश्नर, कलेक्टर तथा उच्च अधिकारी बैठे थे। स्वामी जी ने बड़ी निर्भिकता से कहा-लोग कहते हैं-सच मत प्रकट करो। सच्च बोलने से कलेक्टर नाराज होंगे। कमिश्नर दण्ड देंगे। स्वामी जी ने सिंह गर्जना करते हुए कहा-चाहे लोग मेरी उंगलियों को मोमबत्ती बनाकर जलाएं, चाहे मुझे तोप के मुख के आगे खड़ा कर दें। फिर भी वाणी से सत्य ही निकलेगा। उन्नीसवीं शताब्दी में ऋषि से बड़ा कोई अन्य सत्यवक्ता नहीं हुआ है।

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारी संस्था आर्यसमाज है। यह संगठन ऋषि का जीवन्त स्मारक है। आर्यसमाज का राष्ट्रनिर्माण, वेदोद्वार, मानव निर्माण, नारी शिक्षा, धार्मिक व सामाजिक कुरीतियों, ढोंग, पाखण्ड, अंधविश्वास आदि को मिटाने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आर्यसमाज न सदा जागते रहो, की भूमिका निभाई है। वर्तमान आर्यसमाज में अपने कर्त्तव्य, सिद्धान्त, उद्देश्य, दायित्व और आदर्श में शिथिलता आ रही है। इसी कारण संसार में फिर तरह-तरह के ढोंग, पाखण्ड, अंधविश्वास, गुरु, महन्त, महाराज, भगवान् आदि तेजी से बढ़ व फैल रहे हैं। आर्यसमाज अपने स्वरूप, कर्त्तव्य, आदर्श परम्परा और दायित्व को समझे। जीवन और जगत् आर्यसमाज की ओर देख रहा है। यदि कोई सत्मार्ग दिखा सकता है-वह आर्यसमाज है। यही ऋषि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव का अमर संदेश है। यही ऋषिवर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

---

### जिस रात ने हर जहां नूर किया उस रात की कीमत क्या होगी?

## ऋषि बोधोत्सव को सार्थक बनाओ

फाल्गुन बदी दशमी को हर वर्ष महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिन मनाया जाता है। इसके चार दिन बाद ही शिवरात्रि आ जाती है जिसे आर्यसमाजी ऋषिबोध दिवस के नाम से मनाते हैं। कैसे मनाते हैं? कुछ संख्या में आर्यसमाजी एकत्र होकर ऋषि का गुणगान करते हैं। वक्तागण उनके जीवन की मुख्य घटना शिवरात्रि का व्रत, शिव दर्शन के लिए जागना और चूहों का शिवपिण्डी पर चढ़ना इत्यादि बातों को बताकर शान्तिपाठ कर देते हैं। सहभोज की व्यवस्था हो तो उसे ग्रहण करके सम्पन्न होजाता है। इस प्रकार किसी पर्व का मनाना एक लकीर पीटने वाली बात है। प्रत्येक पर्व हमें प्रेरणा देता है कि जागो, उठो, कुछ करो, कुछ बनो। कुछ करने या बनने के लिये व्रत धारण करना पड़ता है। दृढ़संकल्प के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। शिवरात्रि को ऋषि को बोध हुआ। उन्होंने सच्चे शिव की तलाश में अपना घर छोड़ दिया। जब उनको ज्ञान प्राप्त हो गया तब उसका प्रचार-प्रसार किया। मैं देखता हूं कि हम ऋषि की बात को पढ़कर सुनकर भी कोई व्रत नहीं लेते। कम से कम हमें एक श्रेष्ठ व्यक्ति (आर्य) बनने का ही संकल्प करना चाहिये। आत्मनिरीक्षण द्वारा अपनी त्रुटियों (बुराइयों) को छोड़कर सद्‌गुण ग्रहण करते हुये सन्मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये।

क्या कहें? आज लोग भौतिकवाद की चकाचौंध में भटक रहे हैं। एक-दूसरे को नीचा दिखाने की चेष्टा में लगे हुये हैं। जबकि आर्यसमाज का नवां नियम कहता है कि अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट मत रहो। स्वार्थभावना को त्यागकर सबको साथ लेकर चलो। सबको खिलाने के बाद खाने की भावना से सुख शान्ति, यश कीर्ति मिलेगी।

आज अंधविश्वास इतना बढ़ गया है कि शायद ऋषि के समय नहीं था। पग-पग पर चमत्कारी बाबा ठग तान्त्रिक जनता को गुमराह कर रहे हैं। हम आर्यसमाजी केवल यज्ञ हवन करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझे बैठे हैं। मुझे क्या तुझे क्या कहकर चुप रहते हैं। आर्यसमाज का आठवां नियम संकेत कर रहा है कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करने के लिये हर समय हर जगह प्रयत्नशील रहना चाहिये।

अन्त में कहना चाहता हूं यदि आर्यसमाज की छवि को बनाये रखना चाहते हो तो सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना पड़ेगा। स्वार्थ की लोभ लालच वाली वृत्ति त्यागनी होगी। समाज का सेवक और प्रहरी बनकर काम करो। जो पदों के लिये लड़ते रहे तो नोट करो। पदों की टक्कर में रहना तो घमण्ड की बात है। चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात है।

-देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज हरिनगर, नईदिल्ली-६४

# बैलगाड़ी और बैल के भाग जगे गोभक्तों के लिए शुभ समाचार

❑ प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद्

जब से किसान के घर में ट्रैक्टर का प्रवेश हुआ, बैल का महत्त्व कम होता चला गया। बेरोजगार होने के कारण गोमाता के बेटे का महत्त्व भैंस के बेटे से भी कम हो गया। यह सब कुछ होते हुए भी बैल की उपयोगिता समाप्त नहीं हुई।

पं० बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द) जी कहा करते थे कि बैलों से बिजली पैदा की जा सकती है, परन्तु मैं वैज्ञानिक तो नहीं, यह कैसे सम्भव हो सकेगा, मैं नहीं जानता। कल के नवभारत टाइम्स के प्रथम पृष्ठ पर छपे समाचार को पढ़कर मैं दंग रह गया। शीर्षक था ''किसान का घर रोशन कर सकती है बैलगाड़ी ऊर्जा''। जो वेद के महान् विद्वान् कहते थे, वह आदिलाबाद जिले के ग्रामीण पृष्ठभूमि के इंजीनियरिंग के छात्रों, रमेश, सतीशकुमार, पारितोषकुमार, नवीन और प्रसन्नचन्द्री ने कर दिखाया। बीटेक डिग्री के लिये अपने प्रोजेक्ट ''बैलगाड़ी से बिजली उत्पत्ति'' में यह दावा किया है कि किसान को जरूरत की सारी बिजली उसकी बैलगाड़ी के जरिये पूरी की जा सकती है। हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय में चल रही प्रदर्शनी में उन्होंने अपनी खोज का प्रदर्शन किया। उन्होंने बैलगाड़ी के चक्के में बिजली पैदा करने वाला यंत्र जिसे आल्टर्नेटर (Alternator) कहते हैं, लगा दिया। यह यांत्रिक ऊर्जा विधुवीय ऊर्जा में परिवर्तित होने लगी और उसे बैठरी में संचित कर दिया गया। बैलगाड़ी में हैडलाइट और हार्न बजाने वाले उपकरण भी लगा दिये। ट्रेक्टर ने बैल का स्थान तो छीन रखा है, परन्तु न वह खाद देता है और न ही बिजली पैदा कर सकता है, वह तो ऊर्जा पैदा नहीं करता, उल्टा उसे खाता है। हजारों करोड़ का तेल हमें विदेशी मुद्रा देकर खरीदना पड़ता है। बैल तो किसान के घर की शोभा है, वह फिर लौट आये तो विदेशियों की कृपा से नहीं अपनी बिजली से किसान का घर जगमगा उठेगा?

गोभक्तों के लिए तो इससे बढ़कर हर्षित करने वाला कोई समाचार नहीं हो सकता। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड आदि में तो १०० बछड़ों में से ज्यादा दूध देने वाली बछड़ी पैदा करने वाले बछड़ों के वीर्य का उपयोग करते हैं। इसलिये २ को सांड बनाकर ९८ को मारकर उसका मांस खा लेते हैं। मेरे देश में भी बैल की बेरोजगारी के कारण उसका भी वही हाल हो जायेगा, यह खतरा मौजूद है।

१९९१ के आरम्भ में मैं कोयम्बटूर कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति के प्रगतिशील कार्यक्रमों को देखने के लिये गया। योजना आयोग के सदस्य के नाते कृषि मेरा विषय था। रासायनिक खाद के इस्तेमाल से जहां एक ओर कीटनाशकों की आवश्यकता होती है, वहां उसके द्वारा उत्पादित अन्न आदि प्रदूषित हो जाते हैं। इसलिये अब जैवखाद (Bio-Fertilizer) का इस्तेमाल करना जरूरी हो गया। इस कार्य को कोयम्बटूर कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति ने सबसे अधिक और अच्छा किया।

जैव खाद तो कृमि और गोबर से मिलकर बनता है। मैंने उनसे पूछा कि आपने अपने खेतों में तो सब कुछ अच्छे से कर दिया, क्या किसानों ने भी उसे अपना लिया। उनका उत्तर था कि कोयम्बटूर से १५ किलोमीटर दूर केरल प्रदेश का पालघाट जिला पड़ता है, वहां गोमांस बनाकर पश्चिम के देशों में निर्यात किया जाता है। इस क्षेत्र में तो गाय और बैल बहुत कम रह गये, सब वहां खरीदकर ले जाते हैं। इसलिये गोबर ही नहीं मिलता उसके बिना जैवखाद कैसे बने।

यदि कोयम्बटूर के आस पास के या पालघाट के किसान बैल से बिजली पैदा करने लगे तो वह उनका उपयोग वह गोमांस बनाने के लिये नहीं होने देगा। कसाई व्यापारियों के लिये अपना कीमती धन नहीं लुटायेगा।

बैलों को जीवन दान मिला, इससे बढ़कर गोभक्तों के लिये हर्ष का समाचार और क्या हो सकता है।

परन्तु बैलों की बेरोजगारी केवल इस प्रशंसनीय कदम से दूर नहीं हो सकती। उसके लिये तो कृषिनीति में सुधार करना होगा। १९९१ में चौ० देवीलाल जी के कहने पर मैंने योजना आयोग के सदस्य के नाते राष्ट्रीय कृषिनीति तैयार की थी, और उस नीति को चन्द्रशेखर की सरकार ने अपनी स्वीकृति भी दे दी थी। परन्तु उसके पश्चात जो सरकारें बनी उन्होंने उसको ठंडे बस्ते में रख दिया। उस नीति में यह निर्णय किया गया था कि आगे के लिये ट्रेक्टर का इस्तेमाल बन्द किया जाये, डीजल पर व्यय होने वाला हजारों करोड़ का राजस्व बचाया जाये। कृषि वैज्ञानिक शीघ्र से शीघ्र कृषि के औजारों और उपकरणों में सुधार करके ऐसा बनायें जिससे बैलों द्वारा थोड़े परिश्रम से अधिक काम हो सके। ऐसा हो जाने पर ट्रेक्टर की उपयोगिता भी बहुत कम हो जायेगी। जिन तीन दर्जन प्रयोगशालाओं पर हजारों करोड़ रुपया व्यय हुआ, वैज्ञानिकों ने किसान और गरीब जनता को अपने अनुसन्धान का लाभ नहीं दिया। किसान को थोड़ा लाभ काठ या लोहे के पहिये की जगह रबड़ के पहिये से बोझा ढोने में मिला और अनाज निकालने के लिये जो औजार बना, उससे बैलों की गहाई करने में जहमत उठानी पड़ती थी, वह खत्म हो गई। परन्तु यह काम तो वैज्ञानिकों ने नहीं किया, यह तो मिस्त्रियों की देन है।

किसान के लिये एक उपयोगी अनुसन्धान के लिये तो आदिलाबाद के पांच छात्रों का अभिनन्दन करना चाहिये। यदि वैज्ञानिक भी राष्ट्रीय कृषि नीति पर अमल करके किसान के लिये उपयोगी अनुसन्धान कर दें तो वह अभिनन्दनीय होगा।

## यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न

वैदिक सत्संग मण्डल झज्जर के तत्त्वावधान में सूबेदार भरतसिंह सिलानी गेट के प्रांगण में स्वर्गीय श्रीमती धापा देवी की पांचवीं पुण्यतिथि के अवसर पर यज्ञ (हवन) कार्यक्रम हुआ। सायंकाल महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र के प्रांगण में भजनों का कार्यक्रम रहा। वैदिक धर्म के विचारों को श्री ईश्वरसिंह जी (तूफानी) रेडियो सिंगर ने भजनों के माध्यम से वीर हकीकत राय की मार्मिक कथा सुनाई जिसकी सुनकर श्रोतागण हृदय से द्रवित हो उठे। अपने अन्य भजनों में भारतीय संस्कृति को बचाये रखने के लिये विशेष जोर दिया। पाखण्ड का खण्डन करते हुये एक निराकार ईश्वर की उपासना पर बल दिया। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा नारीशिक्षा के उत्थान में किये गये महान् योगदान को याद किया।

इस कार्यक्रम में गणमान्य श्री आनन्ददेव शास्त्री विदुषी माता सुमित्रा देवी पं० जयभगवान जी आर्य, पं० रमेशचन्द्र कौशिक, श्री भगवान सैनी, जयकिशन आर्य एवं श्री नन्दराम आर्य (पूर्व प्रधान आर्यसमाज) ने उपस्थिति दी। अन्त में श्री जितेन्द्र, रामवीर एवं मुकेश आर्य ने धन्यवाद प्रकट किया। -सुभाष आर्य

## वेदप्रचार

गांव सच्चाखेडा त० नरवाना (जीन्द) में दिनांक २३-१-२००५ से २४-१-२००५ दो दिन पण्डित रामकुमार जी की भजनमण्डली द्वारा गांव में वेदप्रचार बड़े अच्छे तरीके से हुआ। दोनों दिन सुबह बलवन्त सुपुत्र श्री मुंशीराम के घर तथा डा० प्रतापसिंह सुपुत्र श्री सूरतसिंह के घर बड़े अच्छे ढंग से यज्ञ हुआ। इस अवसर पर काफी संख्या में नौजवान, स्त्री व पुरुष पहुंचे तथा मौके पर यज्ञ के समय जनेऊ धारण किया तथा ईश्वरभक्ति के भजन व उपदेश पं० रामकुमार व पं० बलवीर जी द्वारा बड़ा ही सुन्दर प्रोग्राम चला तथा लोगों ने काफी सराहना भी की। सभी ने भजन मण्डली को ६ माह पश्चात् बुलाया जाने का आग्रह भी किया।

सर्वसम्मति से आर्यसमाज का चुनाव हुआ जिसमें प्रधान श्री धर्मवीर जी आर्य, मन्त्री रणधीरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष मास्टर रामकुमार को चुना गया।

-रणधीरसिंह, मन्त्री आर्यसमाज गांव सच्चा खेड़ा, जिला जीन्द

## शोक समाचार

(१) बड़े भाई बृजलाल आर्य के कनिष्ठ पुत्र एवं वेदपाल शास्त्री एडवोकेट के छोटे भाई सत्यपाल आर्य का आकस्मिक निधन ४४ वर्ष की आयु में २३ फरवरी २००५ को जयपुर के हस्पताल में हो गया। उनकी अन्त्येष्टि २४ फरवरी को मध्याह्न १ बजे उनके गांव अजीतपुरा (नूनियां गोठड़ा) जिला झुंझुनूं की श्मशान भूमि में की गई। अन्त्येष्टि में अजीतपुरा, नूनियां गोठड़ा, गोठड़ी, बखतावरपुरा आदि निकटवर्ती ग्रामों के सैंकड़ों व्यक्तियों का शोकाकुल जनसमूह सम्मिलित हुआ। अन्त्येष्टि में शमी (जांटी) की लकड़ी, गाय के घी, सामग्री और नारियल का प्रयोग किया गया।

सत्यपाल कृषि और गोपालन के साथ-साथ व्यापार भी करता था। इसके ३ पुत्रों में से एक ब्र० आलोक पहले गुरुकुल झज्जर में पढ़ता था और अब गुरुकुल घासेड़ा (रेवाड़ी) में पढ़ रहा है। ऐसे पुरुषार्थी घर के कमाऊ मुखिया का आकस्मिक निधन जहां परिवार एवं बन्धु-बान्धवों के लिए अति दुःख का कारण है वहां विधवा पत्नी, वृद्धा माता और पढ़ने वाले तीनों पुत्रों के लिए तो अनभ्र वज्रपात ही है।

ईश्वर अपनी व्यवस्थानुसार दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और शोकाकुल परिवारजनों को धैर्य धारण की शक्ति दे यही प्रार्थना है। -वेदव्रत शास्त्री

(२) आर्यसमाज बालधन कलां जिला रेवाड़ी के पूर्व प्रधान श्री किशनलाल जी ८५ वर्ष के थे। दिनांक २२-१-२००५ को आकस्मिक निधन हो गया। वे बड़े ही यज्ञप्रेमी व स्वाध्यायशील व्यक्ति थे। हमारे सबके लिये प्रेरणास्रोत थे। उनका अन्तिम संस्कार हर्षोल्लास के साथ एक मन घी व एक मन सामग्री से वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया जिसमें महाशय रामकरण जी व परमानन्द वसु जी का विशेष सहयोग रहा।

शांतियज्ञ ३०-१-२००५ को स्वामी शरणानन्द जी दड़ौली व नैष्ठिक जीवानन्द जी द्वारा किया गया। दिवंगत आत्मा की सद्गति व शांति के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई। शान्तियज्ञ पर उनके तीन पुत्रों द्वारा निम्नलिखित संस्थाओं को दान-दक्षिणा दी गई :-

(१) ५०१ रु० श्री कृष्णा गोशाला कनीना, (२) ५०१ रु० भगवद्गीता आश्रम दड़ौली, (३) ५०१ रु० श्री कृष्ण ज्ञानज्योति गुरुकुल दड़ौली, (४) १०१ रु० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, (५) ५०१ रु० आर्यसमाज बालधन कलां, (६) १०१ रु० शिवमंदिर बालधन कलां, (७) १०१ रु० स्वामी शरणानन्द जी, (८) १०१ नैष्ठिक जीवानन्द जी, (९) १०१ रु० परमानन्द मुनि जी, (१०) १०१ रु० श्री गुरुकुल दड़ौली, (११) १०१ रु० मास्टर उमरावसिंह जी।

-रामकरण आर्य, संरक्षक आर्यसमाज बालधन कलां

फाल्गुन बदि १४, शिवरात्रि तथा महर्षि दयानन्द बोधरात्रि पर विशेष.....

# जब आई थी शिवरात-दयानन्द संसार बदलने वाला था

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

शिवरात्रि पर्व एवं महर्षि दयानन्द बोधरात्रि पर विशेष परिचय देते हुए कविवर सिद्ध गोपाल ने लिखा था-

विश्वविदित गुजरात देश में, टंकारा इक सुन्दर गाम।
उसमें था औदीच्य ब्राह्मणों का, कुल बहुश्रुत एक ललाम॥
पुत्र लालजी के कर्सन जी, थे उसके मुखिया अभिराम।
महादेव में अविचल श्रद्धा, उनकी रहती आठों याम॥
उनके कुल दीपक दयाल जी, थे जन्मे अति प्रतिभावान्।
शिवरात्रि-व्रत पूजन में थे, पित्राज्ञा से श्रद्धावान्॥
शिवमन्दिर में निशिभर जागे, अटल ध्यान हो निष्ठावान्।
पर शिवपिण्डी पर चूहे की, लीला देख हुए हैरान॥
बोध हुआ उनको तबही से, हो नहीं सकता पाषाण।
है यह जगती तल में फैला, जड़पदार्थ पूजा अज्ञान॥
निराकार शिव की पूजा ही, है वेदोक्त सनातन ज्ञान।
इसी शान की महिमा से वे, दयानन्द बन गये महान्॥
उस ही दिन से शिवरात्रि भी, बोधरात्रि विख्यात हुई।
बोधदान आर्यजनों को, महिमा उसकी ज्ञात हुई॥
पर्वरूप में तबही से वह, जनता में सुप्रसिद्ध हुई।
उसे मानकर आर्यमण्डली, वास्तव में ज्ञान-समृद्ध हुई॥

महर्षि का जन्म १२ फरवरी १८२४ को गुजरात के तत्कालीन मौरवी राज्य के टंकारा नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री कर्सन जी तिवारी सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण थे। कर्सन जी तिवारी के कई सन्तानें थीं, जिनमें बड़े पुत्र मूलशंकर थे। इन्हें दयाल भी कहते थे। यही मूलशंकर ही जीवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। महर्षि दयानन्द जी की माताश्री का नाम यशोदा बाई था। यही वह यशोदा माता थी जिसने दयानन्द जैसा सपूत बेटा पैदा किया। मूलशंकर (दयानन्द) ने पांच वर्ष की आयु में देवनागरी अक्षरों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। आठ वर्ष की आयु में बालक का यज्ञोपवीत १८३२ में संस्कार हुआ। पिताश्री ने सामवेदी ब्राह्मण होते हुए भी बालक को यजुर्वेद स्मरण करा दिया था। पिता के शैवमतानुयायी होने के कारण बालक मूलशंकर को शैवमत की दीक्षा देने की तैयारी की गई। महाशिवरात्रि पर्व पर इसे ठीक माना गया। गुजरात प्रदेश में शिवरात्रि का पर्व माघ वदि त्रयोदशी को मनाया जाता है। उत्तर भारत में फागन की १४ को मनाया जाता है।

**शिवरात्रि व्रत**-बालक मूलशंकर को पिता की आज्ञा से शिवरात्रि का व्रत-जागरण के लिए १८३७ में १४ वर्ष की आयु में मछुकाटानदी के किनारे पर स्थित शिवमन्दिर में ले जाया गया। शिवरात्रि जागरण समारोह में अनेक शिवभक्त उपस्थित हुए थे। शिवरात्रि की महारात्रि में रात्रि जागरण आरम्भ हुआ। मन्दिर के घंटानादों से 'जय जगदीश हरे' की आरती से तथा 'बम-बम भोले' के उद्‌घोषों से आकाश गूंज उठा। सभी भक्तों ने शिवजी की पिण्डी पर मिठाई चढ़ाई। किन्तु शिवव्रत होने के कारण सभी शिवभक्त निराहार व्रती थे। भूख तो सभी को सता ही रही थी। अन्धेरी रात होती चली गई सभी निद्रा में मग्न हो गए। इतने में आ गए शिवजी महाराज के भक्त चूहे। ये सभी मिठाई खाने लगे। उछलकूद करने लगे। यह सब देखकर मूलशंकर ने सोचा-यह कैसा शिव है, जो इन क्षुद्र चूहों को भी अपने ऊपर कूदते तथा मिठाई को खाने से नहीं रोकता? अपने पिताजी को जगाकर पूछा-पिताजी यह कैसा शिव है, जो इन चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर पाता है? पिताजी से कोई उत्तर न पाकर मूलशंकर रात को घर आकर माता जी से भोजन लेकर खाकर सोगया। यही वह घटना है जिससे मूलशंकर दयानन्द को बोध हुआ।

इसके पश्चात् बहन की तथा चाचा जी की मृत्यु से तो पूर्ण वैराग्य ही होता चला गया। सच्चे शिव की तलाश तथा मृत्यु पर विजय पाने की भावना सुदृढ़ होती चली गई। वह मृत्युञ्जय महर्षि दयानन्द बन गया।

**गृहत्याग**-इस प्रकार १८४६ में योगियों की तलाश में घर का परित्याग करके सायला में ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर ब्र० शुद्ध चैतन्य नाम धराकर पश्चात् स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती द्वारा संन्यास की दीक्षा लेकर 'दयानन्द सरस्वती' नाम धारण किया। १८५५ में कुम्भ मेले में सर्वस्व त्यागकर वन-पर्वतों में योगियों की खोज में घूमते रहे। तत्पश्चात् स्वामी पूर्णानन्द जी के द्वारा स्वामी विरजानन्द जी से विद्या ग्रहण की बात याद रखते हुए १४ नवम्बर १८६० को ब्रह्मर्षि विरजानन्द के पास रात्रि के समय ९ बजे मथुरा पहुंचे। ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी से सभी वेद व्याकरण शास्त्रों को पढ़कर ३० मई १८६३ को वेदप्रचार की दीक्षा लेकर गुरुदक्षिणा देकर वेदप्रचार कार्यक्षेत्र में समर्पित होकर कार्य करने लगे।

१८६५ में वेदप्रचार यात्रा आरम्भ की। जयपुर व पुष्कर में ईसाई पादरियों से धार्मिक शास्त्रार्थ किया। १८६७ में फिर हरिद्वार पहुंचे। मूर्तिपूजा व जातिप्रथा की आलोचना करते रहे। १८६८ में राव कर्णसिंह द्वारा तलवार से वार किया गया। स्वामी जी ने तलवार के दो टुकड़े करके फैंक दिए। शान्त बने रहे। १८६९ में १६ नवम्बर को काशी के राजा की अध्यक्षता में प्रसिद्ध काशीशास्त्रार्थ पूर्तिपूजा पर हुआ। काशी के सभी पण्डित हार गए जिनमें ताराचरण तर्करत्न, बालशास्त्री, स्वामी विशुद्धानन्द आदि सनातनी विद्वान् पराजित हो गए। १८७२ में अप्रैल में बिहार व बंगाल की प्रचारयात्रा की। दिसम्बर में कलकत्ता में ब्रह्मसमाज के नेता केशवचन्द सेन तथा महर्षि देवेन्द्रनाथ से भेंट कर धर्मप्रचारार्थ चर्चा करते रहे। कलकत्ता तब भारत की राजधानी थी। मूर्तिपूजा का विरोध किया। किन्तु ब्रह्मसमाज के नेता महर्षि से सहमत न हो सके। केशवचन्द्र सेन का झुकाव तो ईसाइयत की तरफ बढ़ता चला गया। इनमें स्वदेशभक्ति बहुत कम थी।

**महान् स्वतंत्रता सेनानी महर्षि दयानन्द**-महर्षि दयानन्द जब मार्च १८७३ में कलकत्ता में थे। महर्षि के व्याख्यानों में लार्ड विशप भी आते थे। वे महर्षि की अपूर्व प्रतिभा, अगाध विद्या एवं उनके अखण्ड ब्रह्मचर्य से अत्यन्त प्रभावित थे। उन दिनों लार्ड विशप ने अपने कलकत्ता के नार्थब्रुक वायसराय से महर्षि दयानन्द के साथ भेंट करने का प्रबन्ध किया था। महर्षि के साथ नार्थब्रुक वायसराय के साथ बातचीत हुई। वायसराय ने कहा-पण्डित दयानन्द! मुझे पता लगा है कि अन्य मतों की तीव्र आलोचना करते हैं जो कि आपके विरोध का कारण बनती हैं। यदि आप चाहें तो हम सरकार की ओर से आपकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर दें? महर्षि ने कहा-ब्रिटिश राज्य में मुझे अपने धर्मप्रचार की पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त है। मुझे अपने शरीर के लिए कोई खतरा नहीं है। मेरा रक्षक परमात्मा है। वायसराय ने फिर कहा-यदि ऐसा ही है तो क्या पण्डित दयानन्द आप हमारे ब्रिटिश राज्य की प्रशंसा जनता में करेंगे? आप अपनी सभा में भगवान् से ब्रिटिश राज्य के स्थायित्व के लिए प्रार्थना किया करेंगे? महर्षि ने कहा-''मैं ऐसी किसी भी बात को स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि मेरी यह दृढ़ धारणा है कि मेरा देश पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करे।'' इस प्रकार वायसराय नार्थब्रुक महर्षि की राजनीतिक भावनाओं को सुनकर वायसराय एकदम चौंक पड़ा। बातचीत बन्द कर दी गई। नार्थब्रुक ने अपनी साप्ताहिक डायरी में महारानी विक्टोरिया को इस घटना की सूचना देते हुए लिखा-मैंने अपनी सी.आई.डी. को आदेश दिया है कि इस बागी फकीर की गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखें। परिणामत: ३१ अक्तूबर १८८३ को महर्षि के बलिदान तक सी.आई.डी. महर्षि की निगरानी करती रही।

इससे पूर्व भी महर्षि दयानन्द ने १८५७ में भी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था। तत्कालीन स्वतन्त्रता सेनानियों से भी महर्षि के पूर्णरूप से सम्पर्क थे। तात्याटोपे, नाना फड़नवीस, रानी लक्ष्मीबाई झांसी आदि से महर्षि से वार्ताएं होती रहती थी। महर्षि ने अपनी प्रार्थना पुस्तक ''आर्याभिविनय'' के मन्त्रों में अनेक स्थानों पर परमात्मा से स्वतंत्रता के लिए प्रार्थना की गई है। महर्षि की प्रेरणा से ८५ प्रतिशत आर्यसमाजियों ने आजादी में भाग लिया था।

१८७५ में बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के साथ ही १२ जून १८७४ को महान् क्रांतिकारी अमरग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश'' की भी रचना की गई थी जिससे आर्य सदस्य मार्गदर्शन पा सकें। आर्यसमाज की सदस्यता तथा मार्गदर्शक सत्यार्थप्रकाश को प्राप्त कर समाजसुधार के कार्य सफलता से आगे बढ़ने लगे। महर्षि ने यह ग्रन्थ चौदह समुल्लासों में पूरा किया है जिससे क्रमश: राष्ट्रनिर्माण का सारा कार्यक्रम बनाया गया है।

**सत्यार्थप्रकाश का महत्त्व**-आर्योपदेशक पं० बस्तीराम जी सत्यार्थप्रकाश की प्रशंसा एवं उसके महत्त्व के बारे में गीत गाया करते थे-''चौदह गोले घलकै दयानन्दी तोप किले पै आई।'' सचमुच सत्यार्थप्रकाश अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध स्वतंत्रता सेनानियों के लिए आजादी की भावनाओं से भरपूर सुदर्शन चक्र था। सत्यार्थप्रकाश तोप के समान था। भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध में सत्यार्थप्रकाश द्वारा अमर बलिदानियों ने प्रेरणा प्राप्त की थी। वे उसे जेल में भी पढ़कर आजादी के दीवाने बने रहते थे। स्वातन्त्र्य वीर सावरकर जब १० जुलाई १९३७ में कालेपानी से छूटकर आए थे, तब उन्होंने आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में अपने भाषण में कहा था-''काले पानी की जेल में मैं सत्यार्थप्रकाश पढ़कर उससे निरन्तर आजादी की प्रेरणा प्राप्त करता था।'' रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि सभी क्रान्तिकारियों के लिए जैसे श्रीकृष्ण की गीता अर्जुन के लिए मार्गदर्शक बनी थी, वैसा ही सत्यार्थप्रकाश भी मार्गदर्शक बना था। वह आज भी राष्ट्र के सुधारकों के लिए मार्गदर्शक है। सदा ही रहेगा भी। भारत की आजादी के लिए बलिदान देने वाले सभी क्रान्तिकारी सत्यार्थप्रकाश को गीता के समान समझते व पढ़ते थे।

अब १८७५ में बम्बई में १० अप्रैल को आर्यसमाज की स्थापना की गई थी। कविवर प्रकाशचन्द्र ने आर्यसमाज स्थापना के विषय में लिखा है-

१. भारत के नभ-मण्डल पर अविवेक अधर्म के बादल छाए।
छोड़ रहे थे निरन्तर वैदिक धर्म सनातन राम के जाये॥
ईशकृपा से कराल परिस्थिति में ऋषिराज दयानन्द आए।
संसृति के अघताप निवारण कारण आर्यसमाज बनाए॥

२. होता ना आर्यसमाज यहां तो कौन हमें सन्मार्ग दिखाता।
तर्क की कसौटी से कौन हमें फिर सत्यासत्य का बोध कराता॥
कौन कहो, फिर घोर घमण्डियों धूर्त पाखण्डियों के गण ढाता।
एक अखण्ड अगोचर ईश की कौन हमें भक्ति सिखाता॥

३. कौन सनातन वेद के अर्थ सही, शुचि यज्ञ महत्त्व सिखाता।
इन पादरी मुल्लों के चंगुल से प्रिय राम की सन्तति को कौन बचाता॥
कौन निराश्रित दीन-दु:खी विधवा अनाथों की धीर बंधवाता।
होता ना आर्यसमाज यहां तो कौन कहो? नवजागृति लाता?
आर्यसमाज के पुत्र हैं हम, और आर्यसमाज हमारी माता।

**भारत भाग्यविधाता दयानन्द**-मेरे आर्यावर्त भारत की सच्चरित्रता की महिमा संसार के सभी लोग मानते थे। राजर्षि मनु के आदेशानुसार **"स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः"** के अनुसार चरित्र की शिक्षा काल में पूर्णरूप से दी जाती थी। बालक बाल्यकाल से ही **"मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद"** के द्वारा सम्पूर्ण मानव निर्माण का कार्यक्रम पूरा कर लेते थे। इनके निर्माण में माता का महत्त्वपूर्ण योगदान होता था। **"माता निर्माता भवति"** का पूर्णरूप से ध्यान रखा जाता था। अत एव हमारे राष्ट्र का सर्वत्र संसार में चक्रवर्ती राज्य था। सभी नारियां बड़ी विदुषी होती थीं। भारतीय प्राचीन इतिहास इनका साक्षी है।

महाभारत के महायुद्ध के पश्चात् देश का पतन आरम्भ हुआ। वेदों का प्रचार समाप्त हो गया। अनेक प्रकार के मत-पन्थ प्रचलित हो गए। मध्यकाल में अनेक सन्त गुरु हैं, जिन्होंने स्त्रियों के सम्बन्ध में बहुत अपमानजनक शब्द कहे हैं। जिनमें गोस्वामी तुलसीदास जी जो अकबर बादशाह के समकालीन थे, अपने "रामचरितमानस" में लिखा है-(१) ढोल, गवार, शुद्र, पशु, नारी ये सब ताड़न के अधिकारी। (२) अधम से अधम नारी। (३) सहज अपवित्र नारी। उसके बाद शंकराचार्य हुए। उन्होंने नारी के बारे में लिखा-(१) **द्वारं किमेकं नरकस्य नारी**-अर्थात् नारी नरक का द्वार है। (२) **महामहाविज्ञतमोऽस्ति को वा**-समझदार कौन है? उत्तर दिया-**"नार्यापिशाच्या न च वीचितोयः"** अर्थात् जो स्त्री पिशाचनी से न ठगा गया हो। (३) **विश्वासपात्रं न कश्चित् नारी**-अर्थात् नारी विश्वास योग्य नहीं होती। (३) सन्त कबीर जी-सन् १३८० से १४२० तक अपने पन्थ का प्रचार करते रहे। सन्त कबीर सिकन्दर लोधी के समय थे। संत कबीर ने अपनी **"चौरासी अंग की साखी"** में **"निगुरा को अंग"** पांचवे नंबर पर पृष्ठ १२७ पर दो दोहे लिखे हैं, जो स्त्रियों के लिए अत्यन्त अपमान करने वाले हैं पढ़िये दोहे-

**जो कामिन पड़ दे रहे, सुनै न गुरुमुख बात।**
**सो तो होगी कुकरी, फिरै उधारे गात॥**

अर्थात्-यदि कोई सुन्दर स्त्री अपने रूप यौवन और सुन्दरता के अभिमान में सद्गुरु के मुख की बात नहीं सुनती, गुरुमुख नहीं होती है, तो वह दूसरे जन्म में कुत्ती आदि नीच योनियों को प्राप्त होगी और पशु होने के कारण नग्न शरीर में भ्रमण करती रहेगी।

**कबीर गुरु की भगति बिनु, नारी कुकरी होय।**
**गली-गली भूकंत फिरै, टूक न डारे कोय॥**

**मूलार्थ**-सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि जो स्त्री गुरु महाराज की भक्ति, सेवा, उपासना से रहित है वह निश्चय ही कुकरी (कुत्तिया) होगी। गली-गली में वह भूखे पेट लोगों से भोजन मांगते फिरेगी। उसे कोई एक टुकड़ा भी खाने के लिए नहीं देगा। उसी जमाने में त्रिलोचन, धन्नाजाट, नरदेव, रविदास, सदना, सिनो, शेख फरीद, बेनी आदि तथाकथित सन्तों ने नारी का अपमान किया। इन्हें चेलिया बनाते रहे। चरणामृत देकर पाँव पूजवाते रहे। प्रसाद देने के नाम पर झूठ खिलाते रहे। ऐसा आज भी देखने में आ रहा है।

कितना अच्छा होता, यदि सन्त कबीर नारियों को पतिव्रत धर्म का पाठ पढ़ाते? साधुओं को समर्पित न करते। अथर्ववेद में स्त्री को ब्रह्मा कहा है। मनु ने भी-**"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"** लिखा है। महर्षि भी सत्यार्थप्रकाश में अति सम्मान करते हैं।

**गोरक्षा**-जैसा कि आप जानते हैं कि सत्यार्थप्रकाश चौदह समुल्लासों में अनेक विषयों की व्याख्या करता है, उसके दशम समुल्लास में गोरक्षा के लाभ तथा उसकी हत्या से महान् हानियां बताई गई हैं। महर्षि भारत से गोहत्या को समाप्त करना चाहते थे। उन्होंने १८७७ में पं० लेखराम जी से गोहत्या के विरुद्ध हस्ताक्षर करवाकर विक्टोरिया महारानी को भेजने की योजना बनाई थी, लेकिन ३० अक्तूबर १८८१ को महर्षि का बलिदान हो गया। कार्य अधूरा ही रह गया। राज्य मिलने पर भी गाँधी जी व नेहरू जी ने गोहत्याबंदी का विरोध किया। आज सूर्य निकलते ही ७५ हजार गाय कटती हैं। १लाख, ९० हजार बछड़े काटे जाते हैं। आज इस गांधी जी के अहिंसक राज्य में ७ हजार हत्थे गौ आदि के काटने तथा विदेशों में मांस भेजने का काम कर रहे हैं। महर्षि ने अलग **"गोकरणानिधि"** पुस्तक भी लिखी है। किन्तु आज कोई भी सरकार गोहत्या को बन्द नहीं करवाना चाहती है।

**राष्ट्रभाषा**-महर्षि भारत की राष्ट्र भाषा, इसकी सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और परम्पराओं को अक्षुण्ण रखने, इस देश की भाषा को जीवित रखना और उसका विकास करना महर्षि परमावश्यक मानते थे। उन्होंने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में लिखे हैं। संविधान में हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा माना गया है। इस हिन्दी का विरोध भी नेहरू जी ने ही किया था। आर्यसमाज ने हिन्दी सत्याग्रह भी किया। उसका कोई परिणाम न निकला। आज उर्दू व अंग्रेजी, पंजाबी की पढ़ाई जा रही है। संस्कृत नहीं। राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान महर्षि चाहते थे। उनके बाद में आर्यसमाज ने भी अनेक समस्याओं का समाधान किया है। अन्त में महर्षि को उनके जन्मदिवस पर श्रुद्धासुमन प्रस्तुत हैं-

**जंजीरों से जकड़े भारत को राह दिखाई थी तूने।**
**जिसको न काल भी बुझा सके, वह शमा जलाई थी तूने॥**
**घनघोर तिमिर के आंगन में, तू बीज उषा के बोता था।**
**आवाज लगाई थी तूने, जब सारा भारत सोता था॥**

## विशेष छूट

### आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय में निम्न साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध है।

| | पुस्तक | छूट | मूल्य |
|---|---|---|---|
| १. | धर्म-भूषण | २० प्रतिशत छूट | १०-०० |
| २. | धर्म-प्रवेशिका | २० प्रतिशत छूट | ५-०० |
| ३. | वैदिक सिद्धान्त सार | २० प्रतिशत छूट | १५-०० |
| ४. | वैदिक उपासना पद्धति | २० प्रतिशत छूट | ८-०० |
| ५. | प्राणायाम का महत्त्व | | १५-०० |
| ६. | श्रीमद्दयानन्दप्रकाश | आधे मूल्य में | ५०-०० |
| ७. | पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित्र | आधे मूल्य में | १०-०० |
| ८. | हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान | आधे मूल्य में | ३०-०० |
| ९. | पंजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन | आधे मूल्य में | १००-०० |
| १०. | विजडम ऑफ ऋषिज | आधे मूल्य में | ७२-०० |
| ११. | सरफरोशी की तमन्ना | | २०-०० |
| १२. | सत्यार्थप्रकाश | | २५-०० |
| १३. | आर्यसमाज क्या है? | | ५-०० |
| १४. | हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास | | ५-०० |
| १५. | हमारा फाजिल्का | | ५-०० |
| १६. | श्लीपद हाथी पांव चिकित्सा | | २-०० |
| १७. | शराबबन्दी शंका-समाधान | | १-०० |
| १८. | आदर्श धातु रूपावली | | ५-०० |
| १९. | ओ३म् ध्वज | | १५-०० |
| २०. | दैनिक यज्ञ प्रकाश | | २-५० |
| २१. | आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो लेखक-प्रो० रामविचार | | १०-०० |
| २२. | स्वामी दयानन्द और वेदों पर आक्षेपों का उत्तर | | २०-०० |
| २३. | ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका | | ५०-०० |

**नोट :-**

१. अगर आप डाक से मंगवाना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड बुक पोस्ट+पैकिंग खर्च अलग से लगेगा।
२. रुपये पहले भेजने होंगे।
३. बैंक ड्राफ्ट 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम भेजें।

**-सत्यवीर शास्त्री**, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

# बीस मिनट का हवन चौबीस घंटे का प्रदूषणमुक्त संरक्षण

**( वातावरण में बढ रहे $SO_2$, $NO_2$, CO, SPM व ग्लोबल वार्मिंग ( ताप ) से बचने का सरल रक्षाकवच )**

❑ आचार्य आर्यनरेश वैदिक गवेषक, उद्‌गीथ साधना सदन-हिमाचल प्रदेश

देश व विदेश में अनेक स्थानों पर किये जा चुके परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि यज्ञ मात्र एक धार्मिक पूजा पाठ ही नहीं, अपितु वर्तमान के प्रदूपित वातावरण से मुक्त रहने का एक महान् कवच है। 'यज्ञ' जहाँ मानसिक रोगों, शारीरिक रोगों को दूर करके उन्हें स्वस्थ तथा उन्नत करता है, वहाँ वर्तमान के प्रदूपित वातावरण से बचने का एक प्रमुख वैज्ञानिक साधन भी है।

वर्तमान का प्रत्येक बुद्धिजीवी व सम्पन्न व्यक्ति समाज में बढ़ते हुए प्रदूपित वातावरण से विशेष चिन्तित हे, क्योंकि इससे बढने वाले कैंसर, दमा, श्वास, पोलियो तथा एलर्जी आदि के अनेक रोग तीव्र गति से मनुष्यों की जान ले रहे हैं। बुद्धिमान् व्यक्ति की बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ तथा धनवान व्यक्ति की बड़ी-बड़ी धनराशियाँ कुछ भी काम नहीं आती, जब वह व्यक्ति किसी कैंसर जैसे रोग का शिकार हो चुका होता है। ऐसे रोगों का चिन्तनमात्र ही व्यक्ति को इसलिए भयभीत कर देता है, क्योंकि इनका पता ही रोगी को तब चलता है, जब ये अपन पूरा जाल बिछा चुके होते हैं।

यदि वर्तमान के बुद्धिजीवी व धनाढ्य लोग इस रोग के आतंक से मुक्ति चाहते हैं तो हमारा यह सुझाव है कि वे प्रतिदिन अपने घर पर यज्ञ किया करें। प्रातःकाल केवल बीस मिनट के समय में थोडी-सी सामग्री तथा गोघृत से होने वाला यह वैदिक यज्ञ आपको लगभग २४ घंटे तक एक 'कवच' की तरह प्रदूपित वातावरण से बचाता रहेगा। विज्ञान के मूलस्रोत अथर्ववेद में यह कहा भी कहा गया है कि '**तम् आहरामि निर्ऋते उपस्थात्**' अर्थात् यज्ञ करने वाले को पावन यज्ञ की पावन अग्नि मृत्यु की कोख से भी बचा लाने की शक्ति रखती है। विशेप जानकारी हेतु पाठकवृन्द हमारी '**यज्ञ-विज्ञान परिचय**' पुस्तक पढ़ें।

हमारे पर्यावरण में स्वाभाविक रूप से सल्फर, नाइट्रोजन, कार्बनडाई ऑक्साइड तथा एस. पी. एम. (सस्पैन्डि पार्टीकुलेट मैटर) रहते हैं। यह जीवन के लिए उस समय घातक हो जाते हैं, जब गाडियों तथा फैक्ट्रियों से निकलने वाले ऑक्साइड जैसे कि सल्फरडाइ ऑक्साइड ($SO_2$) नाइट्रस ऑक्साइड ($NO_2$) व मोनो ऑक्साइड (CO) तथा लैड की मात्रा को अनुपात से अधिक बढा देते हैं। फटती हुई ओजोन लेअर, धुएं में बढ़ते हुए वैश्विक तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) तथा धूएं का बढ़ते हुए लैडयुक्त एस.पी.एम. मनुष्यों के लिए कैंसर जैसे भयंकर रोगों का कारण बन रहा है। इनसे शीघ्र बचने का सरल व सर्वोत्तम साधन केवल महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित वैदिक आर्ययज्ञ ही है। मात्र बीस मिनट में गुड़, चावल, गुग्गल, गिलोय व गोघृत और आम आदि की समिधा (लकड़ी) के स्थान पर गाय के गोबर से ही बनी समिधा भी प्रयोग करके हम यज्ञ का अनुष्ठान कर सकते हैं। यदि सब मन्त्र न आते हों तो उनके सीखने तक हम गायत्री मंत्र से भी पैंतीस आहुतियाँ डाल सकते हैं। (बत्तीस प्रातः-सायं की और तीन पूर्णाहुति मिलकर पैंतीस होती हैं) गिलोय आदि के साथ कुछ मात्रा में अगर-तगर व दूसरी सामग्री भी मिलाई जा सकती है। इन उपरोक्त जड़ी-बूटियों के जलने से-फार्मेल्डीहाइड, इथाइल-मिथाईल अल्कोहल व प्रोपीनोईक एसिड डिस्फैक्टिव तत्त्व निकलते हैं, जो पूरा दिन शरीर के भीतर व बाहर कवच के रूप में आपको घर तथा बाहर के प्रदूपित वातावरण से बचाते रहते हैं। यज्ञ-हवन से निकलने वाले ये मूल्यवान तत्त्व आर्यप्रमाण हवनकुण्ड के उच्च तापमान में कम्पक्षन व डिफ्यूजन द्वारा प्रदूपित वातावरण में उपस्थित सल्फर डाइ ऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड व मोनो ऑक्साइड को भेद करके उन्हें पुनः सल्फर व ऑक्सीजन, नाइट्रोजन व ऑक्सीजन तथा नेसेंट ऑक्सीजन व ओजोन में बदल देते हैं। सस्पेंडिड पार्टिकुलेट मैटर यज्ञीय घृत व एन्टीसेप्टिक गैसों के संयोग से प्रभावित होकर हानि रहित हो जाते हैं तथा उनकी वायुमण्डल में मात्रा बहुत कम हो जाती है। गाय के गोबर में उपस्थित 'मिथेन' विघटित होकर पर्याप्त मात्रा में हाइड्रोजन उत्पन्न करती है, जो ग्लोबल वार्मिंग (ताप) को रोकने का सर्वोत्तम साधन है। इससे जल भी पवित्र होता है।

यज्ञ की इस भेदन शक्ति की चर्चा वैदिक वैज्ञानिक व स्वतन्त्रता के प्रथम मंत्रदाता आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ '**सत्यार्थ-प्रकाश**' के तीसरे समुल्लास में आज से १२० वर्ष पूर्व की थी। अतः वैदिकयज्ञ की इस वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा पर्यावरण शुद्ध होता है, उसमें पुनः ऑक्सीजन की वृद्धि होती है और ओजोन की वृद्धि से ओजोन-लेअर की रक्षा होकर पृथ्वी का मानव अधिक ताप से होने वाले अनेक प्रकार के रोगों तथा प्राकृतिक विपदाओं से बचा रहता है। हवन के पश्चात् पांच बार अभ्यन्तर कुम्भक या दस बार उद्‌गीथ ध्वनि प्राणायाम करने से शरीर के बाहर तथा भीतर यज्ञीय एन्टीसैप्टिक गैसें एक ऐसा प्रतिरोधी कवच प्रदान करती हैं जो पूरा दिन प्रदूषण तथा रोग के कीटाणुओं से हमारी रक्षा करता है। इसके साथ-साथ यदि चार छोटे चम्मच यज्ञ की भस्म को छानकर पानी के मटके में प्रातःकाल डालकर दिन भर उसी का प्रयोग करें तो शुगर, हाई ब्लडप्रेशर व एलर्जी में विशेष लाभ होगा, इसीलिए हमारे प्राचीन ऋषि व वर्तमान के आर्य-मनीषी स्वास्थ्य तथा दीर्घ आयु को प्राप्त करते रहे हैं। अन्य मंत्र न आते हों तो गायत्री मंत्र बोलकर भी हवन कर सकते हैं।

विशेष जानकारी हेतु सत्यार्थप्रकाश तथा लेखक की अन्य पुस्तकें-मेरा मन, संस्कार विज्ञान, वेद विज्ञान, आध्यात्मिक चमत्कार व प्राण विज्ञान तथा यौगिक व्यायाम पढ़े।

## स्वराज्य के प्रथम उद्‌घोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज विश्व के महान् पुरुषों में सर्वोपरि स्थान रखते हैं। जिस समय इनका जन्म हुआ, उस समय भारत में अविद्या की घनघोर घटाएं छाई हुई थीं। हमारा देश उस समय अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। भारतवासी अपने को हीन समझ रहे थे। अनाथ तथा विधवाएं बिलख रही थीं। नारीजाति अपमानित हो रही थी। धर्म का स्थान पाखंडों ने ले लिया था। लोग जड-पूजा व नदियों में स्नान करने से मुक्ति मान रहे थे। "**स्त्रीशूद्रो नाधीताम् इति श्रुतिः**" कहकर स्त्री व शूद्रों को विद्याधिकार से वंचित रखा जा रहा था। वेदविद्या लुप्त हो रही थी। एक ईश्वर का स्थान अनेक कल्पित-देवी-देवताओं ने ले लिया था। सूर्य की किरण निकलने से पहले ही हजारों गऊओं की गर्दनों पर छुरी फेर दी जाती थी। धर्म के नाम पर आडम्बर व कुरीतियाँ बढ़ रही थीं। महर्षि ने इन सभी समस्याओं को देखा। भारत की दीन-हीन अवस्था को देखकर उनका मन चीत्कार कर उठा। उन्होंने भारत की बिगडी हुई दशा को संवारने का प्रबल प्रयास किया। मानवमात्र के कल्याण हेतु वेद का सही स्वरूप हमारे सामने रखा। उन्होंने हमें मानवता का पाठ पढ़ाया। जाति-पाति, ऊँच-नीच, छुआ-छूत को मिटाकर मानव की एक जाति होने का पावन संदेश दिया। स्त्री तथा शूद्रों को विद्याधिकार दिलाया। सर्वप्रथम भारत में गोमाता की रक्षा के लिए हरयाणा के रिवाड़ी नगर में गोशाला की स्थापना की। एक ईश्वर की चेतन उपासना-पद्धति पर बल दिया। अनाथ बच्चों की उचित शिक्षा सहित सुचारु परवरिश पालन-पोषण के लिये पंजाब के फिरोजपुर नगर में अनाथालय खुलवाया। संसार की जन्मदात्री उस मातृशक्ति को जिसे ईसाई लोग पैर की जूती समझते थे, सर का ताज बनाया।

भारतमाता की परतन्त्रता की बेड़ियों को काटने के लिए अपने पटु शिष्य श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा को इग्लैंड भेजा। जिन्होंने महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश के स्वराज्य एवं उसके छठे (अध्याय) समुल्लास में वर्णित सुराज्य को भारत में स्थापित करने हेतु दिलोजान से काम किया। कर्जन वाइली को मौत की सजा देने वाला मदनलाल धींगरा जलियाँवाले बाग के हत्यारे को मारने वाले शहीद ऊधमसिंह को रिवाल्वर श्यामजीकृष्ण वर्मा से ही मिली थी। लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वाली बहन रामरक्खी व उनके पति भाई बालमुकुन्द, भाई परमानन्द, वीर सावरकर, हरदयाल एम. ए., लाला लाजपतराय, सरदार अर्जुनसिंह, सरदार भगतसिंह, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल और उनके सभी साथियों ने महर्षि दयानन्द की विचारधारा से प्रभावित होकर देश को स्वतन्त्र कराने के लिये अंग्रेजों से टक्कर की दासता से मुक्त कराया। महर्षि के तपोबल से ही देश में एक नई चेतना आई। विशेष जानकारी के लिये हमारी पुस्तक "गुप्त रहस्य" पढ़ें।

**युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द को शत-शत प्रणाम।**

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| | | |
|---|---|---|
| १. | आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर | २५ से २७ मार्च ०५ |
| २. | आर्यसमाज गोली जिला करनाल | १८ से २० मार्च ०५ |
| ३. | आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल | १८ से २० मार्च ०५ |
| ४. | गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत | १९ से २० मार्च ०५ |
| ५. | आर्यसमाज ठोल जिला कुरुक्षेत्र | ११ से १३ मार्च ०५ |
| ६. | गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव | १२ से १३ मार्च ०५ |
| ७. | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| ८. | महात्मा फग्गुराम जी स्मृति पर्व (स्थान-विश्वकर्मा धर्मशाला बड़ोदा रोड काठमण्डी गोहाना जिला सोनीपत) | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| ९. | श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद | १८ से २० मार्च ०५ |
| १० | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | २ से ५ अप्रैल ०५ |
| ११ | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत (देवी मेले के उपलक्ष्य में वेदप्रचार) | १६-१७ अप्रैल ०५ |
| १२. | आर्यसमाज रेवाड़ी | ९ से १० अप्रैल ०५ |
| १३. | आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल | ११ से १३ मार्च ०५ |

—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता


## 'सर्वहितकारी' के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म-४ ( नियम ८ देखिए )

| | | |
|---|---|---|
| १. | प्रकाशन स्थान | -दयानन्दमठ, रोहतक |
| २. | प्रकाशन अवधि | -साप्ताहिक |
| ३. | मुद्रक का नाम | -वेदव्रत शास्त्री |
| | क्या भारत का नागरिक है ? | -है |
| | पता | -दयानन्दमठ, रोहतक |
| ४. | प्रकाशक का नाम | -वेदव्रत शास्त्री |
| | क्या भारत का नागरिक है ? | -है |
| | पता | -दयानन्दमठ, रोहतक |
| ५. | सम्पादक का नाम | -वेदव्रत शास्त्री |
| | क्या भारत का नागरिक है ? | -है |
| | पता | -दयानन्दमठ, रोहतक |
| ६. | उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के | -वेदव्रत शास्त्री के द्वारा 'आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा' दयानन्दमठ, रोहतक इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण आय-व्यय वहन करती है। अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है। |

मैं, वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(वेदव्रत शास्त्री)

# आज का भारत और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

❑ दीनदयाल सुधाकर, प्रचारमंत्री व मंडलपति, वेदप्रचार मंडल जिला रेवाड़ी

जिन महामहिम पुरुष बौद्ध दिवस पर कुछ निवेदन करना चाहते हैं उन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म २९-२-१८२४ को गुजरात के टंकारा गांव में श्री कृष्णजी तिवाड़ी सामवेदी ओदीच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ। पिताश्री उस स्टेट के तहसीलदार थे। अतः बालक मूलशंकर इकलौते पुत्र के पठन-पाठन का प्रबन्ध घर पर ही किया गया। इन प्रखर बुद्धि आत्मा ने अल्पायु में ही यजुर्वेद कंठस्थ कर लिया और अपने ही विचारों में निमग्न रहने लगे।

प्रथम घटना मूलशंकर के जीवन में उसके चाचा की मृत्यु घटी। अतः सारा परिवार रोया पर मूलशंकर पत्थरवत् देखता रहा वह नहीं रोया। फिर कुछ दिन पश्चात् बहिन की मृत्यु होगई वह फूट-फूटकर बहुत रोया और मृत्यु पर विजय तथा अमरता के विचारों में डूबे रहते पिता श्री ने समझा कि पुत्र को वैराग्य हो गया। अतः शादी द्वारा गृहस्थ के बंधन में बांधना चाहते थे किन्तु मूलशंकर सब कुछ समझकर समय पाकर अमर होने की तलाश में सदा के लिए घर से निकल गये।

इस संसार में कौन-सा दुःख है जो भारत के भावी गुरु को घर छोड़ने के पश्चात् नहीं हुआ हो? आप अपने जीवन में बहुत-बहुत कठिनाइयों का सामना करते हुए और स्वामी श्री पूर्णानन्द जी महाराज से संन्यास एवं प्रेरणा ले गुरुवर श्रीयुत विरजानन्द जी महाराज के चरणों में पहुंच गये। बहुत तप और साधना के साथ गुरुजी से सत्यविद्या और सत्यज्ञान की चाबी लेकर गुरुजी को दक्षिणा में निज जीवन का समर्पण कर, गुरु प्रेरणा से भारत के कल्याण के लिए चल दिए। सन् १८७५ में आर्यसमाज की बम्बई में स्थापना कर जुट गये धूवांधार वेदप्रचार में, मानव उद्धार में, देशोद्धार में और नैतिक प्रचार में। आपने जात-पात के बंधन तोड़े, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, शूद्र, ब्राह्मण, बणिए, राजपूत इत्यादि सबको साथ लेकर भारत के उद्बोधन में जोरों से उद्घोष करने लगे।

ईसाई स्काट को ऋषिभक्त होने का गौरव प्राप्त हुआ। मुहम्मद उमर जन्मजात मुसलमान-हिन्दुओं के अलखधारी सन्त बनाए। सैय्यद मुहम्मद तहसीदार होते भी ऋषि की शरण में आए। विक्रमसिंह जैसे घमंडी राजा का घमण्ड चूर कर दिया और कसाई (मजहबी सिख) को किसी ने कहा कि व्याख्यान सभा से दूर हट जा? ऋषि जी ने कहा, नहीं! मेरा व्याख्यान कसाइयों के लिए भी है। सबसे पहला मलकाना रुस्तमसिंह को यज्ञोपवीत पहनाकर, आर्यत्व के पुण्य शिखर पर बैठाया। ऋषि जी का करुणा क्षेत्र मनुष्य जाति तक सीमित नहीं था-प्राणिमात्र ही दयानन्द की दया के पात्र थे।

गोरक्षा के लिए बड़े प्रयत्न किए और एक निवेदन पत्र पर-हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सबके हस्ताक्षर करवाए कि गोहत्या राजनियम से बन्द की जावे। ऋषि जी ने अपने नाम को जब सार्थक किया तब दातारपुर के बाहर सड़क जाते हुए, एक बैलगाड़ी कीचड़ में धसी देखी। गाड़ीवान बैलों को पीट रहा था कि गाड़ी निकले किन्तु सब निरर्थक? गाड़ीवान तथा बैलों को ऋषि जी ने हताश देखा, जब राजों, महाराजों के गुरु लोकमान्य दयानन्द जी ने स्वयं कीचड़ में उतरकर बैलों का जुवा अपनी गर्दन पर डाला और जो भार बैलों से न खींचा गया था, अकेले ने अपने भुजा बल से खींच जोहड़ से बाहर कर दिया।

उधर विभिन्न मत, मजहब, हिन्दू सम्प्रदाय जैसे निष्ठुर और निर्भीक गरदन उठाए घूम रहे थे। जिसको मारते थे वह मरता था, जिसको जीवन देते थे वह जीता था शूद्रों की बुरी दशा थी, न अच्छा कमा सकते थे न शुद्ध खा सकते थे, न अच्छे मकान बनाने का अधिकार था न शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहनने का अधिकार था, न जमीन खरीदने-बेचने का अधिकार था, न शुद्ध मकान बनाकर रहने का अधिकार था, न पढ़ने लिखने का अधिकार था। यदि शूद्र किसी देवमंदिर के आगे से निकल जाए तो उसकी आँखे फोड़ दी जाती थी, यदि कोई मंत्र, श्लोक जाने अनजाने में सुना गया तो उसके कानों में शीशा (एक धातु) डलवाकर मरवा दिया जाता था, धर्मध्वजी इन ब्राह्मणों ने जन्म के आधार पर चतुर्वर्णों की व्याख्या कर समाज को गर्त में डाला हुआ था। महर्षि जी ने इन मानवविरोधी धर्मावलम्बियों को ललकारा और जात-पात, छुआछूत-अस्पृश्यता पर कदम-कदम पर शास्त्रार्थ कर इनको हराकर शूद्रों को मानव समाज की मुख्य धारा में ला छोड़ा।

नारीजाति को यह धर्मधुरन्धर-मुसलमानों और अंग्रेजों की तरह ही भोग की जडवत् वस्तु समझते थे-कुंवारी कन्याओं को पत्थर के देवता के साथ जबरी विवाह कर देते थे। सुन्दर-सुन्दर अबोध बालाओं को पत्थर के भगवान की सेवा के लिए आजन्म दासीरूप में समर्पण करवा देते थे, फिर समय आने पर वह युवतियां, पुजारियों को शहर के धनवानों को अथवा अन्ततोगत चकले में जाती थी। महर्षि ने कहा यह धर्म नहीं है महापाप और महापाप है, यह सब उन्हीं की पोल खोलकर गर्व घमंड सब चूर कर दिया।

जो मैं विशेष निवेदन करना चाहता हूं, वह यह है कि महर्षि जी की सभाओं में निर्भीकता से क्या जैनी, बौद्ध, कुरानी, हिंदू, सिख, पारसी, वेदान्ती, वाममार्गी, सन्त-मतावलम्बी, अंधविश्वासी और पत्थरपूजक-सभी को बुरी तरह से फटकारा गया और पुनः वेद के आधार पर सबका यथायोग्य परिसंस्कार कर, सत्यार्थ के द्वारा प्रकाश कर समस्त भारती समाज के सम्मुख रख दिया और स्वराज्य शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम महर्षि जी ने ही किया था जिसका देश के धर्म क्षेत्र में विशेष जागृति का आभाष नजर आने लगा था जिसके फलस्वरूप आक्रोश में आकर अंग्रेजों ने बड़ी सूझ-बूझ के साथ डा० ए०ओ० ह्यूम ने सन् १८८५ में राष्ट्रीय कांग्रेस की नींव डाली और महर्षि दयानन्द जी के आर्यसमाज के द्वारा बढ़ते हुए संगठन को, रोकने के लिए इसमें ऐसे नियम बनाए कि राष्ट्रीय कांग्रेस हिन्दुस्तानियों के ओर गोरी सरकार के बीच कड़ी का काम करेगी। अर्थात् गोरी सरकार के आदेशों को, नियमों को हिन्दुस्तानी जनता तक पहुंचाएगी और हिन्दुस्तान की जनता की मांगों को दुःख-दर्द को, विचारधारा को गोरी सरकार तक पहुंचाएगी।

डा० ए०ओ० हयूम की सोच थी कि हिन्दुस्तान की भूखी जनता रोटी कपड़े के अतिरिक्त क्या मांग करेगी। अतः हम इन भूखे नंगों को रोटी और कपड़े के सब्जबाग के दिखावे में ही फंसाए रहेंगे इससे आगे इन डोगवत् (कुत्तों जैसे) लोगों को हम सोचने का मौका ही नहीं देंगे। किन्तु यह राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म अंग्रेजों को भारी पड़ा। इसलिए कि अब हिन्दुस्तान नहीं, अब तो आर्यावर्त की जनता को, इस भारत की वीर जनता को अपने प्रवचनों से, व्याख्यानों से और उपदेशों से, यज्ञ-हवनादि श्रेष्ठकर्मों के द्वारा, प्राचीन आर्यव्रत की सभ्यता, संस्कृति, स्वराज्य, साम्राज्य की भूख को ही भारतीयों में विशेष रूप से विशेष तम जागृत कर दिया। महर्षि जी ने इस रोटी-कपड़े की भूख को गौण बताते हुए स्वाधीनता की भूख, स्वराज्य की भूख को भारतीयों के हृदयों में प्रज्ज्वलित कर दिया।

तब भारत आर्यवीरों का हृदय इस भूख से धधक उठा और सभी आर्यवीरों ने डा० हयूम की राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बनकर, गोरी सरकार से स्वराज्य की मांग कर दी। ऋषिजी ने भारत में घूम-घूमकर राजे, महाराजे, प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी अपने विश्वास में लिया था किन्तु १८५७ का प्रथम युद्ध स्वराज्य युद्ध को, भावनाओं में बहकर समय से पूर्व छेड़ दिया अतः असफलता मिली किन्तु अनुभव भी मिला।

महर्षि जी ने जो भी कार्य किया बड़े सोच-विचारकर किया, ठोस कार्य किया, भारत के बुद्धिजीवी और अल्हड़ जवानी के धनी श्री शामजीकृष्ण वर्मा, श्री धींगडा जी, श्री जस्टिस महादेवप्रसाद राणाडे। श्री चन्द्रशेखर, श्री लाला लाजपतराय, गुरुदत्त विद्यार्थी, श्री श्रद्धानन्द जी, रामप्रसाद बिस्मिल जी इत्यादि वीर हथेली पर सिर रखे घूम रहे थे जिनके मरने के लिए होड़-सी लगी हुई थी। श्री सुखदेव जी इसलिए श्री चन्द्रशेखर जी से नाराज रहते थे कि लोकसभा में बम्ब फैंकने को मुझे नहीं भेजा। श्री बिस्मिल जी से पिताश्री ने कहा कि इतनी रात बीते, यह घर आने का समय है? अभी निर्णय करो? आर्यसमाज प्यारा है या परिवार? वीर ने विनय भाव से कहा पिताजी, आर्यसमाज सारे भारत की माता-पिता है। पिता ने कहा, मेरे घर के सब वस्त्र उतार दो और जाओ आर्यसमाज के पास। वीर वस्त्र उतारकर पिताजी के चरणों में रख, चरण छूकर नमस्ते कर, कड़कती सर्दी में पुनः वापिस आर्यसमाज मंदिर में चला गया। काकोरी काण्ड में फांसी मिली। ऋषि जी ने ऐसे ही भारत वीरों को तैयार किया जो भारतमाता के चरणों में पुष्परूपी निज शीश चढ़ाते रहे और बहुत लम्बे समय तक यह आन्दोलन चला और वीरों का रक्त रंग लाया। २६ जनवरी १९५० को भारत का संविधान बनकर लागू हुआ। मैं दिल्ली गया था उस समय मेरी आयु २० वर्ष की थी। जनता-जनार्दन का समूह, द्वितीय पर्व अपनी प्यारी स्वाधीनता को देखने को उमड़ पड़ा था। दिल्ली को दुल्हन से भी अति सुन्दर सजाया गया था। रात को हर वृक्ष, वर पौधे की टहनी, पत्ते पर, लाल, पीले, हरे, नीले और सफेद बल्ब जगमगा रहे थे।

प्रातः ही एक सरकारी कर्मचारी की सहायता से झांकी देखने को सबसे आगे बैठाया था। श्रीयुत महामहिम भारत सबसे बड़े लोकतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति जी विराजमान थे। सबने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। श्रीयुत् महामहिम जी दोनों हाथ जोड़कर, दोनों ओर खड़ी जनता को प्रणाम करते थे। बग्गी चलती जा रही थी। तत्पश्चात् मैं बड़ी उत्सुकता से देख रहा था कि श्रीयुत महामहिम जी के पश्चात् झांकी सर्वप्रथम होगी-सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रणेता, भारत देश के पुरोधा, राष्ट्र के प्रथम उद्बोधक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की। जिस पर ऊंचा ओ३म् ध्वज लगा होगा और महर्षि जी का किसी भी मुद्रा में बड़ा चित्र होगा जिसके पास चारों वेद तथा सत्यार्थप्रकाश रखा होगा और पीछे वेदों के पंडित वेदमंत्रों से अग्निहोत्र या राष्ट्रयज्ञ चला रहे होंगे। आगे मुख्य पट्टे पर, मोटे अक्षरों में लिखा होगा भारत राष्ट्र के दादाश्री, प्रथम राष्ट्र उद्बोधक और सम्पूर्ण पिछली क्रान्ति के प्रणेता महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज और पिछली झांकी पर लिखा होगा, प्रज्ञाचक्षु श्री विरजानन्द जी महाराज, वेद, व्याकरण के सूर्य तथा महर्षि दयानन्द जी के गुरुजी। किन्तु बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि-तब क्या? आज ५५ वर्ष के बाद २६ जनवरी २००५ तक भी भारत राष्ट्र के उन महापुरुषों को, इन दोनों पर्वों (१५ अगस्त-२६ जनवरी) में याद तक नहीं किया। इन दोनों पर्वों में वही छाए रहते हैं जो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से गौण हैं तथा महर्षि जी से किसी रूप में किसी प्रकार भी जिनका कद लम्बा नहीं है।

क्षमा करेंगे? विद्वेषवश नहीं? सत्य है। महात्मा गाँधी जी को राष्ट्रपिता की उपाधि? जबकि लोक लिहाज से भी महर्षि जी-महात्मा गाँधी के दादा गुरु हैं। यथा-जस्टिस्ट राणाडे, महात्मा जी के इस आंदोलन में लाने वाले प्रथम गुरु हैं, जबकि श्री राणाडे जी के महर्षि दयानन्द जी किसी न किसी रूप में गुरु हैं और आर्यसमाज राजनैतिक पार्टियों की जननी माता है। इसलिए इन दोनों पर्वों में इन राष्ट्रीय युगपुरुष महर्षि जी को भुला देना भारत के कर्णधारों की बड़ी भारी कृतघ्नता है जिसका फल राष्ट्र किसी न किसी रूप में परिताप भोग रहा है।

महात्मा गाँधी जी की भारत को मुख्य देन हैं। प्रथम-एक ही वाक्य में, भारत की सैकड़ों अछूत जातियों को सम्बोधन करना-हरिजन। स्वाधीनता मिलने के समय जातिवाद समाप्त हो सकता था किन्तु हरिजन की मोहर लगाकर जातिवाद पुनः पुष्ट कर दिया जो राष्ट्र की एकता में खतरा साबित होगा। नं० दो-भारत से अंग्रेजों को, सबके सहयोग से निकलवाकर, अंग्रेजियत के रंग में भारत को आमूलचूल रंग देना। विदेशी वस्त्रों की होली जलाने वाले महात्मा गाँधी राष्ट्रपिता के देश में आज भारत की-ललनाएं, कन्याएं, बालाएं, युवतियां तथा महिलाएं-केवल अच्छे और नग्नतापूर्ण बाड़ी (चोली की जगह) पहने और सिर के अर्ध बाल कटाए हुए, भारत के गाँवों में भी, बड़ी संख्या में निःसंकोच, सड़कों में गलियारों में घूम रही हैं। दूसरी ओर नैतिकता की शिक्षा देने वाले, शिक्षा की व्यवस्था देने वाले कि-कन्या विद्यालयों में सभी छोटे बड़े कर्मचारीगण नारियां ही रहें और कुमारों के विद्यालयों में सब पुरुष कर्मचारी रहें अर्थात् पुरुषों की पाठशाला में पाँच वर्ष की बच्ची का भी निषिद्ध किया तथा इसी प्रकार कन्या पाठशाला में पाँच वर्ष के कुमार का भी निषिद्ध माना है। वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वयं चरित्र के धनी और चरित्रनायक भारत को उजागर करते हैं। ऐसे विश्वगुरु को, जननायक का और जीवमात्र के हितैषी को, भारत को पुनः जीवन देने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को सन् १९४७ से २६ जनवरी २००५ तक हमने याद ही नहीं किया।

# आर्य-संसार

## शुभ समाचार

जो व्यक्ति विश्व की अनुपम धरोहर वेदों से परिचित होना चाहते हैं तो उनके लिये एक अनोखा अवसर है। हमें यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि-वेद दर्शन तथा उपनिषद् आदि ग्रन्थों में विद्यमान मानव उपयोगी विषयों का ज्ञान कराने हेतु **''श्रीमती परोपकारिणी सभा''** (अजमेर) के निर्देशन में मुम्बई में **''वैदिक मिशन''** की स्थापना की गयी है जिसके अंतर्गत प्रथम **''निःशुल्क वैदिक प्रशिक्षण केन्द्र''** का शुभारम्भ दि० ५ मार्च २००५ से मुम्बई में किया जा रहा है। जिसका पता है- ७/३९ त्रिमूर्ति को ऑप. सोसाइटी, (एम.एच.वी. कालोनी), राजेन्द्रनगर, दत्तापाडा रोड, बोरीवली (पूर्व), मुंबई - ६६. (भारत) **नियम :-**

- जो व्यक्ति (स्त्री/पुरुष) बारहवीं कक्षा या बी.ए. (अंग्रेजी माध्यम से) उत्तीर्ण है तथा उसके साथ-साथ हिन्दी का भी ज्ञान रखते हैं वे इसमें भाग ले सकते हैं।
- यदि आप अंग्रेजी में वेदादि शास्त्रों के व्याख्याता प्रचारक या उपदेशक बनना चाहते हैं तो आपके लिये यह एक सुनहरा अवसर है।
- यदि आप यज्ञ और वैदिक संस्कारों में प्रयुक्त मंत्रों की व्याख्या हिन्दी तथा अंग्रेजी में करना चाहते हैं तो आपके लिये यह अलभ्य अवसर है।
- योग्य पठनार्थी के लिये शिष्य वृत्ति की भी व्यवस्था है।
- स्थान सीमित हैं अत: पहले से ही अपना स्थान सुरक्षित कराएं।
- जो महानुभाव घर बैठे ही वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी हिन्दी या अंग्रेजी में प्राप्त करना चाहें तो वे भी वार्षिक शुल्क देकर मासिक स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा लाभ उठा सकते हैं।

**विशेष :** प्रवेशार्थी अपनी आयु और योग्यता के प्रमाण के साथ प्रार्थना-पत्र निम्नलिखित पत्ते पर भेजें :-

**वैदिक मिशन, अध्यक्ष डा० सोमदेव शास्त्री,** संपर्कसूत्र : डी/३०९, मिल्टन अपार्टमेन्ट, जुहू कोलीवाडा, जुहू, मुंबई - ४०० ०४९. भारत

## गुरुकुल के आचार्य को अभूतपूर्व सम्मान

श्रीमदार्यावर्त्त विद्वत् परिषद् काशी के द्वारा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के स्थापित संस्कृत विद्वान् एवं आचार्य प्रोफसर वेदप्रकाश शास्त्री को महामहोपाध्याय की उपाधि से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल में आयोजित सम्मान समारोह में बोलते हुए कुलपति प्रो० स्वतंत्रकुमार ने कहा आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय धन्य हो गया। काशी का नाम सम्पूर्ण जगत् में विद्वत् नगरी के रूप में जाना जाता है, आज उसी काशी की विद्वत् परिषद् ने गुरुकुल के संस्कृत विद्वान् को महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित कर गुरुकुल के गौरव को दिग्दिगन्त तक फैला दिया। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने किसी समय पौराणिकों की नगरी को पाखण्ड के विरुद्ध ललकारा था और शास्त्रार्थ में वहां के पंडितों को हराया था, आज उन्हीं के शिष्य ने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल के आचार्य के रूप में कार्य करते हुए इस भव्य अलंकरण को प्राप्त किया, यह स्वामी दयानन्द की जीत है। आज गुरुकुल परिवार सम्मानित हुआ है। गुरुकुल का वैभव विस्तारित हुआ है।

समारोह के अध्यक्ष तथा श्रीमदार्यावर्त्त विद्वत् परिषद् काशी के प्रतिनिधि प्रो० अमरनाथ पांडेय ने परिषद् का परिचय दिया तथा अपने संभाषण में सभी आभार एवं आचार्य का अभिनंदन किया।

## स्वामी मुनीश्वरानन्द उपदेशक सम्मान दिवस सम्पन्न

विगत वर्षों की भांति स्वामी मुनीश्वरानन्द जी के स्मृति दिवस को उपदेशक सम्मान दिवस के रूप में मनाया गया। आचार्य रामस्वरूप शास्त्री (गुरुकुल आर्यनगर) के ब्रह्मत्व श्री सुनील अग्रवाल, श्री राकेश ठकराल एवं श्री चंचल मदान दम्पति यज्ञमानों द्वारा यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री हरबंशलाल कपूर मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, सभा अध्यक्ष श्री कश्मीरीलाल बत्रा थे।

इस अवसर पर उपदेशक सम्मान के रूप में पूज्यपाद महात्मा प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थ आर्य कुटिया धूरी (पंजाब) एवं श्री विद्यासागर शास्त्री (जींद) का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

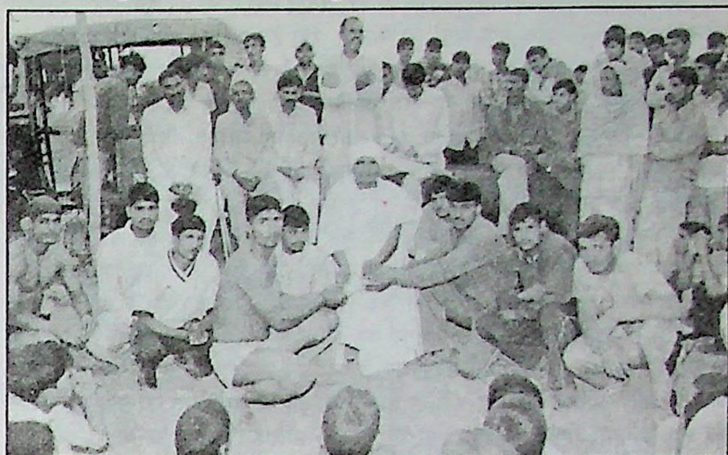
समारोह में मा० प्रतापसिंह शास्त्री पत्रकार, स्वामी सर्वदानन्द गुरुकुल धीरणवास, स्वामी अग्निदेव भीष्म, महात्मा प्रेमप्रकाश जी, आर.एस. चुघ आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये तथा डा० उमेश यादव प्राचार्य दयानन्द महाविद्यालय हिसार ने इंग्लैंड से दूरभाष पर अपना संदेश दिया।

इस मौके पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सत्यपाल, गुरुकुल आर्यनगर के प्राचार्य आजाद मुनि एवं आर्यजगत् के स्वतन्त्र उपदेशक आचार्य रामसुफल शास्त्री ''वैदिक प्रवक्ता'' हाँसी ने भी सभा को सम्बोधित किया।

नगर के गणमान्य व्यक्ति एवं सभी आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंच संचालन दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने किया। कार्यक्रम के पश्चात् ऋषिलंगर का आयोजन किया गया।

**-आचार्य रामसुफल शास्त्री ''स्नातक'' दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार**

## बृहद् यज्ञ व युवा जागृति शिविर



वसंत पंचमी पर ग्राम भऊ अकबरपुर में बृहद् यज्ञ अखाड़े में किया गया। पूज्य आचार्य वेदमित्र के ब्रह्मत्व में यह यज्ञ हुआ। पचास से अधिक विद्यार्थियों ने अण्डा, मांसभक्षण व धूम्रपान आदि कुरीतियों से दूर रहने का व्रत लेकर जनेऊ धारण किया। पूज्य आचार्य जी ने नेताजी सुभाष, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आदि के जीवन के प्रेरक प्रसंगों से युवाओं में धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा हेतु प्रभावशाली जोशपूर्ण व्याख्यान से इन युवाओं ने प्रतिदिन गायत्री मन्त्र जाप आदि करने का भी व्रत दिलाया। अनेक विद्यार्थियों को सत्यार्थप्रकाश आदि पुस्तकें दीं। वर्ष में इसी प्रकार के 'युवा जागृति' हेतु अनेक कार्यक्रम गुरुकुल आश्रम में चलाये जाते हैं जिनका अच्छा प्रभाव पड़ता है। कुछ दिन पूर्व भी आचार्य जी ने युवाओं के खेलों का आयोजन गुरुकुल आश्रम में किया था। प्रतिभावान अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी विक्रम (कबड्डी), धर्मवीर पहलवान, रजेवान पहलवान आदि गुरुकुल आश्रम के ब्रह्मचारियों का भी मार्गदर्शन करते हैं। इस आयोजन में ६ हजार रुपये का इनाम सुभाष आर्य प्राध्यापक ने प्रदान किया जो आचार्य जी के अनन्य सहयोगी हैं। **-जगदेव आर्य गुरुकुल मन्त्री पातञ्जल योगाश्रम**

## बृहद् यज्ञ व वेदप्रचार

आचार्य वेदमित्र के ब्रह्मत्व में ब्रिगेडियर यादव कादीपुर नारनौल के पिता स्व० श्री रामपत आर्य के शान्ति का आयोजन दिनांक १७-२-२००५ को ग्राम कादीपुर में किया गया। श्री रामपत जी एक कर्मठ समाजसेवी तथा राजस्थान पुलिस के एक स्वच्छ कर्मचारी थे। सेवानिवृत्ति पर ग्राम सुधार तथा आर्यसमाज के कार्यों को आत्मिक रूप से करते थे। उनके दूसरे पुत्र भी हरयाणा पुलिस में अधिकारी हैं जो ईमानदारी के प्रतीक हैं। पौत्र-पौत्रियां भी मेजर हैं। ३०० घंटों के गांव में आर्यसमाज की जीती-जागती छवि आज भी मौजूद है। अनेक अधिकारी आपस में वेदप्रचार व यज्ञों का आयोजन करते रहते हैं। पूज्य आचार्य वेदमित्र चैतन्य गुरुकुल भऊअकबरपुर समय-समय पर वेदप्रचार के लिए आते हैं। धर्म, संस्कृति तथा वैज्ञानिक विचारों से यहां के लोग आचार्य जी से प्रभावित हैं। इस यज्ञ से पूर्व भी इसी प्रकार का वेदप्रचार श्री वेदप्रकाश जी इंस्पेक्टर के पिता की वार्षिकी पर वेदप्रचार हुआ था। पूज्य आचार्य जी तथा स्वामी जी आश्रम महेंद्रगढ़ ने उस दिन ३० आदमियों को कम्बल, सैकड़ों बालकों को कापी पुस्तकें आदि प्रदान की थी। श्री चरणसिंह श्री महाशय हंसराज आर्य आर्यसमाज की अच्छी सेवा कर रहे हैं। **-मन्त्री, आर्यसमाज कादीपुर (महेंद्रगढ़)**

## यज्ञ एवं वेदप्रवचन कार्यक्रम सम्पन्न

गुड़गांव। मेवात क्षेत्र के सुप्रसिद्ध उजीना कस्बे में यज्ञ एवं वेदप्रवचन का तीन दिवसीय कार्यक्रम उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष तथा आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् ब्र० राजसिंह आर्य ने किया। श्री आर्य की अपील पर सत्संग की सफलता में उस वक्त चार चांद लग गए जब यज्ञ की पूर्ण आहुति के अवसर पर उपस्थित सैकड़ों लोगों ने आजीवन शराब और मांस आदि कुकृत्यों को त्यागने की शपथ ली।

यज्ञ कार्यक्रम में आर्य वेदप्रचार मंडल मेवात के प्रधान पदमचन्द आर्य, हरयाणा गोशाला संघ के उपाध्यक्ष राजबाबू, तावडू अग्रवाल सभा के प्रधान महेंद्र गोयल, तावडू भाजपा प्रत्याशी संजयसिंह, फिरोजपुर झिरका के आर.एस.एस. नेता ताराचन्द बंसल, विजय सक्सेना सहित काफी संख्या में क्षेत्रीय सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

नरेन्द्र आर्य के मधुर भजनों ने जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस मौके पर उजीना में आर्यसमाज का भी गठन किया गया, जिसके संरक्षक ठाकुर अतरसिंह बनाए गए। इसके सहयोगियों में संजयसिंह, सुरेन्द्रसिंह के नाम उल्लेखनीय हैं।

कार्यक्रम ११-१२-१३ फरवरी को हुआ तथा यज्ञ के समापन पर श्री सुरेन्द्र जी सुपुत्र स्व० मा० प्रह्लादसिंह जी जिनके घर पर यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ था ने पूरा विश्वास दिलाया कि शीघ्र ही उजीना में आर्यसमाज मन्दिर के लिये जमीन चाहे मुझे अपने घर के प्लाट में से देना पड़े-दूंगा तथा उसका उद्घाटन भी ब्र० राजसिंह आर्य द्वारा करायेंगे।

# राष्ट्रगान पर विवाद

भारत के राष्ट्रगान को लेकर प्रारम्भ से ही विवाद बना हुआ है। एक पक्ष विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के 'जन-गण-मन' का कायल रहा है तो दूसरा पक्ष बंकिम चन्द्र द्वारा रचित 'वन्देमातरम्' का हिमायती रहा है। यह सही है कि स्वाधीनता पूर्व कांग्रेस मंचों मे 'वन्देमातरम्' ही गाया जाता था और क्रान्तिकारियों का भी यह प्रियगान था। सन् १९५० में संविधान-सभा में राष्ट्रगान पर विचार हुआ तो मुस्लिम विरोध को देखते हुए 'वन्देमातरम्' के स्थान पर 'जन-गण-मण' को स्वाधीन भारत का राष्ट्रगान स्वीकार किया गया। वन्देमातरम् पर मुसलमानों का एतराज यह था कि इसमें उन्हें मूर्तिपूजा की झलक दिखाई देती थी जबकि 'जन-गण-मन' का विरोध इस आधार पर हो रहा था क्योंकि यह गान जार्ज पंचम के भारत आगमन पर उनकी स्तुति के रूप में गाया गया था। यद्यपि इन दोनों ही आपत्तियों को बार-बार सम्बद्ध पक्षों द्वारा खारिज किया जाता रहा है लेकिन यह विवाद आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। जन-गण-मन पर नया विवाद सुप्रीम कोर्ट में इस बात को लेकर उठाया गया है के इस राष्ट्रगान में सिन्ध शब्द का अब कोई औचित्य नहीं है क्योंकि भौगोलिक दृष्टि में वह भारत का नहीं पाकिस्तान का भाग है। यह स्थिति तो १९५० में भी थी जब संविधान सभा ने इसे राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया था। भारत सरकार का तर्क है कि सिन्ध शब्द भौगोलिक स्थान का सूचक न होकर सिन्धी संस्कृति का सूचक है जो लाखों भारतीय सिन्धियों की संस्कृति है। लेकिन इस पक्ष का खण्डन करते हुए कहा जा रहा है चूँकि राष्ट्रगान में, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल, बंग आदि शब्द भी भौगोलिक स्थान के सूचक हैं अतः सिंध शब्द सिन्धी संस्कृति का सूचक नहीं हो सकता। सिन्ध के स्थान पर कश्मीर को रखने का प्रस्ताव किया जा रहा है। ऐसा करने से विवाद का अन्त हो जायेगा ऐसा नहीं माना जा सकता। माननीय सर्वोच्च न्यायालय इस विवाद पर क्या निर्णय लेता है और उस निर्णय पर आपत्तिकर्ताओं को कितनी संतुष्टि होगी यह भविष्य की बात है।

इस विवादास्पद मसले पर मेरा कहना यह है कि क्या भारत की एक राष्ट्र के रूप में स्थापना सन् १९४७ के बाद हुई थी? यदि भारत १९४७ से पहले भी एक राष्ट्र था तो क्या कोई उसका राष्ट्रगान नहीं था? स्वाधीनता आंदोलन की रणभेरी कांग्रेस से पहले ही स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका आर्यसमाज बजा चुका था। आर्यसमाजों के यज्ञ व समारोहों में जिस राष्ट्रगान का पाठ होता था वह यजुर्वेद के २२वें अध्याय का २२वाँ मंत्र है जिसमें राष्ट्र को हर क्षेत्र व दिशा में सर्वशक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से की गई है। मेरी अपील है कि यदि 'वन्देमातरम्' और 'जन-गण-मण' पर विवाद रुकने की कोई संभावना नहीं है जैसा कि पिछले ५४-५५ वर्ष से देखने में आ रहा है तो वैदिक राष्ट्रगान को अपनाकर इस विवाद को अंतिम रूप से खत्म किया जाये। वैदिक राष्ट्रगान में न तो मूर्ति पूजा का संकेत है और न उसमें किसी विदेशी को भारत का भाग्यविधाता माना गया है और न ही भौगोलिक सीमाओं का कोई उल्लेख है। वैदिक राष्ट्रगान वास्तव में एक ऐसा राष्ट्रगान है जिसे भारत ही नहीं हर राष्ट्र अपना राष्ट्रगान मान सकता है। अतः इस पर देशवासियों व भारत सरकार को गम्भीर चिन्तन करना चाहिए।

## सार्वभौम-राष्ट्रीय वैदिक प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

यजु० अ० २२, मं० २२

**कविता भाव**

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रीय महारथी हों अरि-दल विनाशकारी॥
होवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही॥
बलवान् सभ्य योद्धा यजमानपुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें॥
फल-फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी।
हो योगक्षेम-कारी, स्वाधीनता हमारी॥

**नोट :** उपरोक्त वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना न जाति है न सम्प्रदायिक है और न ही प्रान्तीय, यह सार्वभौम आदर्श राष्ट्र की मानव मात्र की श्रेष्ठतम प्रार्थना है।

वेदों में प्राणिमात्र की सुख शांति की प्रार्थनाओं का अक्षय भण्डार भरा है। आशा है भारत राष्ट्र के वर्तमान कर्णधार इस राष्ट्रीय वैदिक प्रार्थना की सर्व सम्मति से स्वीकार करेंगे। व्यक्ति विशेष द्वारा रचे गये दोनों राष्ट्रगीतों को पूर्ण विराम देकर वर्तमान समस्या का हल कर दें।

-स्वामी केवलानन्द सरस्वती, वैदिक मोहन आश्रम, भूपतवाला हरिद्वार (उत्तरांचल)

## शिवरात्रि ( ऋषिबोधोत्सव ) पर विशेष....

**तर्ज-आ जाओ बुलाते हैं अरमां....**

- शिवरात्रि मुबारक हो सबको, जो शिव की खोज कराती है।
  जो सोये पड़े मुसाफिर हैं, यह उनको आज जगाती है॥ टेक॥
- ज्योतिर्मय पुण्य धरा पर अब, अति छाया घना अंधेरा है।
  जागो ऋषिवर की सन्तानों, इस बात की याद दिलाती है॥१॥
- दानवता-सैन्य-वाहिनी ने, धरती को चहुँदिशि घेरा है।
  तुम उठो सपूतों शिवरात्रि, स्वाभिमानी दीप दिखाती है॥२॥
- इस देश-धर्म की रक्षा हित, निर्वाण किया ऋषि ने अपना।
  वह क्रान्ति भावना दी हमको, बलिदान हमें जो सिखाती है॥३॥
- इस दिन ऋषिवर को बोध हुआ, स्वेच्छा से घर को त्याग दिया।
  त्यागी ही सब कुछ कर सकता, यह बात हमें समझाती है॥४॥
- ईंटें पत्थर खाकर ऋषि ने, हमें अमृत प्याला पिला दिया।
  रवि-शशि-वन्दना तीनों को, हमें याद ऋषि की आती है॥५॥

प्रस्तुति एवं रचना : **रविकान्त-शशिकान्त एवं वन्दना आर्या,** पुत्र-पुत्री आचार्य रामसुफल शास्त्री (वैदिक प्रवक्ता) शास्त्री भवन, लाल सड़क, हांसी (हरयाणा)



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८२




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक १६ १४ मार्च, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## स्वच्छ छवि के धनी मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्रसिंह हुड्डा



**चौ. भूपेन्द्रसिंह हुड्डा**
**मुख्यमंत्री हरयाणा**

हरयाणा की जनता का सौभाग्य है कि हरयाणा को चौ. भूपेन्द्रसिंह हुड्डा जैसे स्वच्छ छवि के धनी, कुशल राजनीतिज्ञ एवं ईमानदार मुख्यमंत्री मिले हैं। श्री हुड्डा जी को राजनीति विरासत में मिली है। आपका जन्म गांव सांघी में एक सुविख्यात परिवार में हुआ। आपके दादा चौ. मातूराम जाने माने समाजसेवी, शिक्षाविद्, महर्षि दयानन्द के सच्चे शिष्य, कर्तव्यनिष्ठ आर्यनेता, स्वतंत्रता सेनानी एवं आदर्श राजनीतिज्ञ थे। आर्यसमाज के माध्यम से आपने समाजसुधार, पाखण्ड-निवारण एवं सामाजिक चेतना के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया तथा जाट शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से शिक्षा की ज्योति को पूरे प्रदेश में फैलाया तथा विशेषकर जिला रोहतक में शिक्षा का सघनता से प्रसार किया। आपके दादा जी ने पं० मोतीलाल नेहरू के आह्वान पर १९२३ का विधान सभा का चुनाव लड़ा, विजय प्राप्त की और १९२४ में कांग्रेसी प्रत्याशी के रूप में जिला बोर्ड के सदस्य बने तथा बड़ी सक्रियता से सारा जीवन निःस्वार्थ समाजसेवा एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध रचनात्मक संघर्ष करते रहे।

गौरतलब है कि हरयाणा में आर्यसमाज में दीक्षित होने वाले प्रथम व्यक्तियों में आपके पूज्य दादा चौ. मातुराम थे। अपने खानदान की इस उज्ज्वल परंपरा को आपके पिता चौ. रणवीरसिंह ने और व्यापक रूप दिया। चौ. रणवीरसिंह को देश-सेवा की धुन छात्र-जीवन से ही रही है जिसके चलते आप विद्यार्थी काल में ही स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और बाद में भी इस क्षेत्र में पूरी तरह सक्रिय रहे, कई बार जेल गये और भीषण यातनायें आपने झेलीं। अपने यशस्वी पिता चौ. मातूराम की तरह चौ. रणवीरसिंह भी आर्यसमाज से जुड़े रहे। आर्यत्व के संस्कारों से आपका जीवन ओतप्रोत रहा तथा आर्यसमाज द्वारा प्रेरित एवं संचालित समाजसुधार, शिक्षा-प्रसार, दलितोद्धार, महिला जागरण आदि अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिया। आपका राजनैतिक कार्यकाल भी सुदीर्घ रहा है। आप पंजाब एवं हरयाणा की सरकारों में मंत्री रहे। विभिन्न सदन जैसे विधानसभा, संविधान सभा, प्रोविजनल पार्लियामेंट, लोकसभा, राज्यसभा आदि के सदस्य रहे। आज नब्बे साल की उम्र में भी आपकी सक्रियता, स्फूर्ति ज्यों की त्यों बरकरार है। आयु के इस मुकाम पर पहुंचकर भी आप अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी संगठन के कार्यकारी अध्यक्ष हैं और देशभर के स्वतंत्रता सेनानी एवं उनके परिवारों की समस्याओं के समाधान की प्रशंसनीय सेवा कर रहे हैं। चौ. रणवीरसिंह संविधान सभा के एकमात्र जीवित सदस्य हैं।

उपर्युक्त गौरवशाली पारिवारिक पृष्ठभूमि में चौ. भूपेन्द्रसिंह हुड्डा का जन्म गांव सांघी में १५ सितम्बर १९४७ को हुआ। यह भी अजब संयोग है कि हरयाणे के अब तक के सभी मुख्यमंत्रियों में श्री हुड्डा साहब अकेले ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिनका जन्म आजाद भारत में हुआ है। स्वतंत्रताप्राप्ति के ठीक एक महीने पश्चात आपका जन्म होना एक बहुत ही शुभ एवं सुखद संकेत है जो शायद यह संदेश अपने में संजोये हुये हैं कि आप एक बहुत ही स्वतंत्र, प्रगतिशील एवं सकारात्मक सोच के राजनेता हैं, जो आजादी के फायदे साधारण से साधारण आदमी तक पहुंचाने के लिए कृतसंकल्प हैं। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कुंजपुरा तथा चण्डीगढ़ स्थित सैनिक विद्यालयों में हुई। उत्तरोत्तर उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुये आपने स्नातक स्तर की शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से एवं विधि-स्नातक की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इस प्रकार आप एक उच्च-शिक्षा प्राप्त अनुभवी राजनेता हैं।

आपने अपना राजनैतिक सफर कांग्रेस पार्टी के एक साधारण से कार्यकर्ता के रूप में शुरू किया किंतु अपनी मेहनत, लगन और साफ-सुथरी छवि के बलबूते पर आप निरंतर आगे ही आगे बढ़ते गये। कुछ समय पश्चात् ही आप किलोई क्षेत्र कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गये, फिर रोहतक ब्लॉक समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुये। रोहतक मार्केट कमेटी के सदस्य रूप में भी आपने कार्य किया। आप एक के बाद एक शानदार उपलब्धि प्राप्त करते आगे बढ़ते रहे जैसे आप हरयाणा युवा कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तदनन्तर युवा कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष निर्वाचित हुये। उल्लेखनीय है कि युवा कांग्रेस में रहते हुये आपने तत्कालीन सोवियत संघ (रूस) में आयोजित विश्व युवा सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया। आपने सौंपे गये प्रत्येक दायित्व को बहुत ही सफलतापूर्वक निभाया और पार्टी में एक बहुत ही विश्वसनीय एवं जिम्मेदार नेता के रूप में अपने को स्थापित किया।

दसवीं लोकसभा के आम चुनाव में आप १९९१ में रोहतक संसदीय क्षेत्र से प्रथम बार कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में चुनावी महासमर में उतरे और निर्वाचित हुये। आपकी शोहरत दिनोदिन ज्यादा से ज्यादा फैलती गई और जनता पर आपकी पकड़ इस कदर मजबूत होती गई, जनता जनार्दन ने आपको इस कदर सर आंखों पर बिठाया कि १९९६ में भी फिर आपने लोकसभा का चुनाव भारी बहुमत से जीता। फलस्वरूप आपको हरयाणा कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया और लगभग छह साल तक आप इस पद पर विराजमान रहे। १९९८ में लोकसभा के मध्यावधि चुनाव हुये। अपनी पूर्व परंपरा को कायम रखते हुये तीसरी बार भी आपने शानदार जीत हासिल की और जनसेवा के लिये लोकसभा पहुंचे। अपनी साफ-सुथरी छवि के चलते आप चुनाव में विजय के पर्याय ही बन गये हैं।

सन् २००० में आप पहली बार किलोई असेम्बली हल्के से विधानसभा के चुनाव में बतौर कांग्रेसी प्रत्याशी खड़े हुये और जीत प्राप्त की। सन् २००२ में आप हरयाणा विधानसभा में विपक्ष के नेता चुने गये और एक जिम्मेदार विपक्षी नेता का दायित्व सफलतापूर्वक निभाया। फिर पार्टी ने आपको २००४ के लोकसभा के आम चुनाव में रोहतक संसदीय क्षेत्र से अपना प्रत्याशी घोषित किया। आपने गजब के आत्मविश्वास के साथ चुनाव तो जीता ही एक ऐसी विस्मयकारी घोषणा भी की जो बाद में सत्य साबित हुई कि मैं चंडीगढ़ वाया दिल्ली पहुंचूंगा। ३ फरवरी २००५ में हरयाणा विधानसभा के चुनाव हुये। २७ फरवरी को मतगणना हुई जिसमें आपकी पार्टी को प्रबल बहुमत मिला। आपने भी शानदार जीत हासिल की। ३ मार्च २००५ को सबसे विचार विमर्श के बाद आलाकमान ने आपको बतौर मुख्यमंत्री हरयाणा की कमान सौंपी और ४ मार्च को आपने हरयाणा के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर इस घोषणा को अक्षरशः सही साबित कर दिया कि चंडीगढ़ वाया दिल्ली पहुंचूंगा। यहां यह भी याद दिलाना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि परमपिता परमेश्वर ने यह हरयाणा पर कृपा ही की थी जो अगस्त २००३ में पीली नदी (उत्तराञ्चल) की चपेट में आकर जानलेवा हादसे में चौ. भूपेन्द्रसिंह हुड्डा सुरक्षित बच गये थे, हरयाणा के लिये उनका जीवित बच जाना किसी ईश्वरीय वरदान से कम नहीं था।

आज ईश्वर की कृपा, जनता के सहयोग, पार्टी का उनके प्रति भरोसा और अपने पुरुषार्थ के बल पर चौ. भूपेन्द्रसिंह हुड्डा हमारे मुख्यमंत्री हैं। ईश्वर उन्हें पूर्ण

( शेष पृष्ठ दो पर )

# सांसारिक दुःखों के कारण एवं निवारण

❑ आर्य अत्तरसिंह ढाण्डा, प्रधान-गुरुकुल धीरणवास, हिसार

सृष्टि की रचना में सुनते हैं कि ८४ लाख योनियां हैं। कीट-पतंग से लेकर मानव योनि तक तथा मैं तो चौरासी लाख से भी अधिक मानता हूं पर मनुष्य को छोड़कर सभी भोग योनियां हैं, जो दुःख व सुख का भेद व्यक्त नहीं कर सकतीं। लेकिन उनको दुःख एवं सुख अनुभव जरूर होता है। पर मानव जाति बुद्धि के बल पर दुःख व सुख का अनुभव भी करती है और व्यक्त भी करती है। वैसे तो दुःखों के असंख्य कारण हैं, परन्तु मोटे तौर पर वह इंसान सदा दुःखी रहता है जो चाहता सब कुछ है, पर करता कुछ नहीं है। मुख्य कारण दुःख के हैं अविद्या, अभाव, अहंकार। किसी प्रकार का ज्ञान या जानकारी न होने के कारण मनुष्य को बड़े कष्ट झेलने पड़ते हैं जैसे अक्षर का ज्ञान ही नहीं तो वह व्यक्ति आयुभर पशु समान बोझा ढोता रहता है या बैल की तरह कठिन परिश्रम से जीवन-निर्वाह करना पड़ता है। गृहस्थ जीवन में तीन प्रबल ऐषणाएं (इच्छाएं) हैं-पुत्रैषणा, वित्तैषणा एवं लोकैषणा। इन तीनों में किसी एक का अभाव है तो मनुष्य दुःखी रहेगा। मान लो किसी के घर पुत्रियां हैं तो पुत्रप्राप्ति के लिए क्या-क्या प्रयत्न नहीं करेगा। दवाई लेना, गण्डे तागे लेना, ओझा के चक्कर में फंसना, मानसिक विकृति हो जाना। प्रायः ये भी देखा गया है कि एक पत्नी से पुत्र नहीं मिलता तो बुढ़ापे में दूसरी शादी रचा लेना। परन्तु पुत्र प्राप्त करने की हर सम्भव चेष्टा करना। घर में पुत्र-पुत्रियां हैं, धन की कमी है केवल निर्वाह के योग्य है फिर येन-केन-प्रकारेण धन कमाने की अन्धी दौड़ में फंस जाएगा। ऐसा भी देखा गया है कि जो पास था वो भी गंवा दिया और महादुःखी बन गया। अब रुपया-पैसा बहुत हो गया-तो चौधर चाहिए यानि लोकैषणा में नाम हो अर्थात् घर, परिवार, मोहल्ला, गांव, नगर के लोग अलग तरह का सम्मान दें तो लोकैषणा पूरी हो, नहीं तो फिर अपने से कमजोर व्यक्ति वर्ग को धौंस दिखाएगा और सताएगा भी ताकि इस प्रकार के अभावग्रस्त लोग उसको चौधरी मानें। क्योंकि मनुष्य का स्वभाव प्रतिद्वन्द्विता का है कि मैं सबसे अलग दिखाई दूं। मान लो सांसारिक जीवन संतान से, सम्पत्ति से तथा सभी साधनों से परिपूर्ण है और एकदम आराम की जिंदगी जी सकता है फिर अहंकार आएगा और अहंकार के कारण लड़ाई झगड़े करना दूसरे व्यक्तियों सम्बन्धियों, भाइयों को छोटा समझकर नीचा दिखाने की कोशिश में दिन-रात बेचैन व दुःखी रहेगा। अधिक धन-सम्पत्ति, सुन्दर रूप, राजसत्ता में भागीदारी, सरकार की नौकरी में बड़ा पद आदि अज्ञानतावश अहंकारजन्य कारण हैं और महादुःख के भी कारण यही बनते हैं। हां आडम्बरपूर्ण जीवनशैली भी कष्ट देती है क्योंकि व्यक्ति में जो गुण योग्यता व सामर्थ्य नहीं है उसका छल-कपट फरेब से लोगों के सामने दिखावा करना अन्ततः भारी दुःख का कारण बनता है। योगदर्शनानुसार, **''अविद्या, अस्मिता, राग-द्वेष, अभिनिवेशाः पंचकलेशाः''** यानि अज्ञान किसी भी वस्तु का सही-सही ज्ञान न होना, अस्मिता-आशक्ति अर्थात् अति-मोहवश रिश्ते-नातों में उलझा रहना जिसके फलस्वरूप सामाजिक कार्यों में अरुचि होना। राग या प्रेम होना वस्तुओं में, मनुष्यों में जिनके सुख-दुःख में पड़कर अशान्त एवं बेचैन रहना, तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करना। राग के बिल्कुल विपरीत द्वेष होना यानि अपने सहनिवासियों, सहयोगियों परिचितों से वैरभाव रखना। उनके अच्छे गुणों, बढ़िया जीवन, सम्पन्नता सामाजिक सम्मान को सहन न कर सकने के कारण द्वेष भावना रखना। पांचवां अभिनिवेश अर्थात् मौत का भय सभी प्राणियों को सताता है परन्तु मनुष्य बुद्धिमान् होने के कारण मृत्युभय से ज्यादा ग्रस्त है। जब कभी छोटी-मोटी बीमारी हो जाए तो बस रोने लगता है कि अब मौत अवश्य आएगी। हम यदि यह बात समझलें कि जीव जन्म लेता है तो उसकी मृत्यु अवश्य होनी है। किसी कवि ने लिखा है कि, **'देह धरे का दण्ड है सब काहू को होय। ज्ञानी भुगते ज्ञान से और मूर्ख भुक्ते रोए।'** बस ये अन्तर है। शरीर जिसने धारण किया है किसी न किसी दिन अवश्य मरेगा। इसीलिए इसे नश्वर कहा है। केवल एक परमात्मा अजर अमर है क्योंकि वो सृष्टि का रचयिता, पालनकर्ता तथा संहारकर्ता भी है। जिनके पास पुत्र-पौत्र, धन-सम्पदा सामाजिक सम्मान नहीं है वो यदि दुःखी है उनका दुःख तो समझ में आता है कि वास्तव में अभाव में दुःखी है लेकिन जिनके पास ये ऊपरलिखित सभी कुछ बहुत है फिर भी दुःखी है तो उनका दुःख समझ में नहीं आ सकता। फिर ऐसे जन अस्मिता राग-द्वेष से दुःखी हैं। जो केवल सत्संग सद्बुद्धि एवं सदाचारपूर्वक जीवन शैली से दूर हो सकता है।

जगद्गुरु महर्षि दयानन्द जैसा कोई बिरला एवं सच्चा योगी ब्रह्मज्ञानी ही अन्तिम समय में प्रभु की स्तुति प्रार्थना करके यह कह सकता है कि हे प्रभु! तूने कैसी लीला की? तेरी इच्छा पूर्ण हो।

अब विचार करें इन दुःखों का निवारण कैसे हो सकता है। केवल जो दुःख के कारण हैं उनको समझ लेने एवं जीवन में उसी प्रकार भावना से प्रेरित होकर इनसे छुटकारा हो सकता है। जैसे इच्छाएं कम करके, कठिन परिश्रम के साधारण एवं सादा जीवनशैली उच्च विचारों की माला पहनकर। जिस माला में परहित-परोपकार के मणियां हों तो जीवन शान्त व सुखी बन सकता है। एक कवि ने लिखा है कि, **''चाह गई चिन्ता मिटी, मनवा बेपरवाह। जिसको कुछ नहीं चाहिए, वो ही शहनशाह।''** ऐसी बात भावनाओं में तो अच्छी लगती है लेकिन यथार्थ में सम्भव नहीं। महर्षि जी सूत्ररूप में निम्नलिखित चार उपायों को बताते हैं वे उपाय व्यावहारिक व पूर्ण है यदि इन चारों भावनाओं के अनुरूप व्यक्ति चिन्तन, विचार व आचरण करता है तो जीवन में कभी भी दुःखी व अशान्त नहीं हो सकता। योगदर्शनप्रणेता योगिराज पतञ्जलि कहते हैं-

**मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्।**
(योगदर्शन १/३३)

अर्थात् सुखी से मैत्रीभाव रखना, शत्रुता, ईर्ष्या या राग-द्वेष का नहीं, इससे आप भी सुखी रहेंगे और आपके मित्र भी। दुःखियों को देखकर उनसे घृणा न करना अपितु उनको दुःखी देखकर यदि कर सकते हो तो करुणामय हृदय से उनका तन-मन-धन से सहयोग करना। अपने दुःखों के कारण तो दुनिया के सब लोग रोते पीटते हैं परन्तु उनका रोना या आंखों में करुणा के आंसुओं का बहाना धन्य है जिनकी आंखें दूसरों के दुःख कष्ट को देखकर द्रवित हो जाती हैं। पुण्यात्मा सत्पुरुषों के प्रति मुदिता, प्रसन्नता, हर्ष व आनन्द का भाव रखना तथा अध्यात्म में अग्रसर होने वाले पुण्यात्माओं के प्रति सदा नम्र रहना चाहिए। उनसे कभी भी उदासीनता न रखना। चौथे जो अपुण्य असुर प्रकृति के लोग हैं उनके प्रति चाहे वे कितने भी धनी हों वैभवशाली, बलवान् व सत्तावान् हों, उनकी सदा उपेक्षा करना। उनसे कभी भी अपेक्षा नहीं रखना और नहीं उनके प्रति कभी आकृष्ट होना। क्योंकि यदि हम असुरों की उपेक्षा नहीं करेंगे तो वही असुरावृत्ति हममें भी आ सकती है। इसलिए सदा सुखी-दुःखी पुण्यात्मा व अपुण्यशील पुरुषों-महिलाओं के प्रति मित्रता, दया, प्रसन्नता व उपेक्षा-उदासीनता का भाव रखते हुए प्रसन्न शान्तचित्त एवं आनन्दित रहना चाहिए।

योगिराज श्रीकृष्ण जी के गीता उपदेश से भी हम प्रेरणा ले सकते हैं कि मनुष्य कार्य करे और फल के ईश्वर पर छोड़ दे। वैसे वेद-शास्त्रों में लिखा है कि ये आठ चीजें मनुष्य के वश की नहीं हैं-जन्म, मृत्यु, सुख-दुःख, लाभ-हानि और यश-अपयश अर्थात् मान-सम्मान केवल जीवनयापन के लिए कर्म करना उसके हाथ में है वह भी बुद्धि अनुसार। इसलिए प्रभु से गायत्री महामन्त्र के अर्थ की पंक्तियां प्रतिदिन प्रातः सायं मन में पूर्ण शान्तभाव से अवश्य दोहरानी चाहिए ताकि हमें सद्बुद्धि प्राप्त हो और हमारा जीवन सुखी बने।

**तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।**
**तुझसे ही प्राण पाते हम, दुःखियों के कष्ट हर्ता है तू॥**
**तेरा महान् तेज है छाया हुआ सभी स्थान।**
**सृष्टि के कण-कण में तू हो रहा है विद्यमान।**
**तेरा ही धर के ध्यान हम मांगते हैं तेरी दया।**
**ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।**

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१. आर्यसमाज गोली जिला करनाल — १८ से २० मार्च ०५
२. आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल — १८ से २० मार्च ०५
३. गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत — १९ से २० मार्च ०५
४. आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय डिकाडला जिला पानीपत — १९ से २० मार्च ०५
५. आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द — १८, १९, २० मार्च ०५
६. आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर — २५ से २७ मार्च ०५
७. आर्यसमाज ठोल जिला कुरुक्षेत्र — ११ से १३ मार्च ०५
८. गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव — १२ से १३ मार्च ०५
९. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत — ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५
१०. महात्मा फग्गुराम जी स्मृति पर्व — ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५
(स्थान-विश्वकर्मा धर्मशाला बड़ोदा रोड काठमण्डी गोहाना जिला सोनीपत)
११. योगसाधना व चिकित्सा शिविर — २८ मार्च से ३ अप्रैल ०५
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जिला झज्जर
१२ आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत — .२ से ५ अप्रैल ०५
१३ आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत — १६-१७ अप्रैल ०५
(देवी मेले के उपलक्ष्य में वेदप्रचार)
१४. आर्यसमाज रेवाड़ी — ९ से १० अप्रैल ०५

—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

## स्वच्छ छवि के धनी मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्रसिंह हुड्डा... ( प्रथम पृष्ठ का शेष )

सफलता दे और उनके हाथों विकास एवं जनहित के प्रशंसनीय कार्य होवें। वे अपने परिवार की परम्परागत आर्यमर्यादाओं को बनाये रखने में समर्थ हों, राजनीति को भ्रष्टाचार से निजात दिलवा सकें, प्रदेश का चहुंमुखी विकास करते हुए जनता जनार्दन की आकांक्षाओं पर खरे उतरें और ऐसे उज्ज्वल कीर्तिमान स्थापित करें कि इतिहास में उनका अलग स्थान बने, अलग पहचान बने और भयमुक्त, अंधविश्वासमुक्त, सुसंपन्न, आदर्श हरयाणा का सपना साकार हो। आप द्वारा की गई प्रथम घोषणा कि **''मैं हरयाणा को भय और भ्रष्टाचार से मुक्त करूंगा''** का आर्यसमाज तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा स्वागत करती है तथा आशा करती है कि आपके नेतृत्व में हरयाणा प्रदेश गोवध के कलंक से मुक्त होगा। **-आचार्य बलदेव,** प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं
अध्यक्ष हरयाणा राज्य गोशाला संघ

# पाखण्डी रामपाल के पाखण्ड जाल से सावधान!

❑ महावीरसिंह फौगाट, भालोट ( रोहतक )

तथाकथित स्वयंभू संत रामपालदास बार-बार एक ही बात लिखते जा रहे हैं कि **''महर्षि दयानन्द एक ओर कहते हैं कि भगवान् पाप क्षमा नहीं करता''** दूसरी ओर महर्षि दयानन्द जी के यजुर्वेद भाष्य अध्याय ८ मंत्र १३ का अनुवाद प्रस्तुत करते हुए रामपाल कहते हैं कि महर्षि जी ने यहां मंत्रार्थ करते हुए लिखा है कि **''दुष्ट आचरण के दूर करने वाले आप हैं।''** इसी प्रकार ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका से उद्धृत यजुर्वेद अध्याय ४ मंत्र १५ का अर्थ का उदाहरण देते हुए रामपाल 'दैनिक भास्कर' रोहतक के दि० १७-२-०५ के संस्करण में पृष्ठ तीन पर लिखता है कि महर्षि जी ने अध्याय ८ मंत्र २५ के सरलार्थ में लिखा है कि-सब पापों को नाश करने वाले आप हमको बुरे कामों और दुःखों से पुनर्जन्म में अलग रखें। इस प्रकार अन्य उदाहरण देकर भी वह रामपाल 'नाश' शब्द को कोष्ठक में क्षमा दिखाकर सिद्ध करना चाहता है कि नाश का अर्थ क्षमा ही है। इस प्रकार वह अपनी तुच्छ बुद्धि से लोगों में भ्रम डालता है कि महर्षि जी स्वयं ही कहते हैं कि भगवान् पाप क्षमा नहीं करता और दूसरी ओर वेदभाष्य में पाप-नाश (क्षमा) करने वाले ऐसा अर्थ कर रहे हैं। इस पर रामपाल फिर कहता है कि ऐसी व्याख्याओं का संग्रह सत्यार्थप्रकाश है इसलिए वेदज्ञान सही है परन्तु महर्षि दयानन्द जी के विचार वेदविरुद्ध हैं।

इस अज्ञानी या जानबूझकर झांसा देने वाले मूर्ख कपटी व्यक्ति रामपाल को इतना भी नहीं पता कि नाश और क्षमा पर्यायवाची नहीं है। पाप नाश का भाव है पाप नष्ट होना अर्थात् भक्त के पाप थे लेकिन भक्ति से या समझ से, पश्चाताप से वे नष्ट हो गए अर्थात् आगे से भक्त पापाचरण छोड़ देता है तो कहा जाता है कि इसके पाप समाप्त हो गए। अब यह निष्पाप हो गया है, लेकिन इसका अभिप्राय यह कभी नहीं निकल सकता कि उसके पिछले किए पाप नष्ट हो गए और उनका उसे बुरा फल नहीं मिलेगा। उसने आगे से भविष्य में पाप कर्म छोड़ दिए। इसलिए कहा गया कि पाप नाश हो गए। वह पाप से दूर हो गया है। उसने पाप छोड़ दिए। इसलिए की गई प्रार्थनाएं भी भविष्य के लिए हैं न कि भूतकाल के लिए। भगवान् आप हमारे सबके पाप नाश करने वाले पापों से दूर करने वाले हो, आप पाप छुड़ाने वाले हो। ये सभी प्रार्थनाएं भविष्य के लिए हैं, लेकिन रामपाल अपनी कुटिलता से इन्हें भूतकाल की वर्णित दिखाकर लोगों में भ्रम पैदाकर उनकी श्रद्धा का शोषण कर रहा है। यह शोषण पाप है। महापाप है इसका बुरा फल रामपाल को भी भोगना पड़ेगा। शायद वह सोचता है कि मेरे पाप क्षमा हो जाएंगे? लेकिन वह तो खुद को ही भगवान बताता है उसके भक्त भी कितने मिट्टी के माधो हैं कि उसको भगवान् समझ लुट-पिट रहे हैं। वह स्वयम्भू भगवान् रामपालदास पुलिस और न्यायालय में गिड़गिड़ाता फिर रहा है कि **''मेरी और मेरे आश्रम की रक्षा करो मुझे खतरा है।''** अरे निर्बुद्धि भक्तो! कभी भगवान् को भी किसी से खतरा हो सकता है? भगवान् को ही खतरा हो गया तो इस सृष्टि का क्या होगा? इस मूर्ख रामपाल से कोई पूछे हे स्वयम्भू भगवान्! तूने सुनामी ताण्डव से लोगों को क्यों नहीं बचाया। तूने जगह-जगह ओलावृष्टि से जनता की फसलों को क्यों नहीं बचाया? तू तो बरसात में भी छिपकर आश्रम में बैठता है। तू अपने बनाए आदमियों से भी डरता है और बंदूकधारी तेरी रक्षा करते हैं। जो स्वयं ही छोटे-छोटे व्यक्तियों, निहत्थे साधारण लोगों से डरता है वह क्या संसार का रक्षक हो सकता है? यदि तेरे अन्दर जरा भी इंसानियत है, शर्म है, तो तुझे सर्वसमाज से क्षमा मांगनी चाहिए।

जिस परमर्षि दयानन्द ने विश्वभर के पाखण्डियों को ललकारा। जिसके आगे कोई टिक नहीं पाया। कोई उसके अकाट्य तर्कों का उत्तर नहीं दे पाया। यह अज्ञानी रामपाल उसके सृजित साहित्य को समझ नहीं सकता बल्कि यही आभास होता है कि कुछ समझता है भी तो जानबूझकर लोगों में भ्रम फैलाता है। यदि उसकी इच्छा अथवा जिज्ञासा ज्ञान को समझने की तथा शंका-समाधान की होती, तो वह वैदिक विद्वानों के चरणों में बैठकर अपनी शंकाएं दूर करता, लेकिन उसने तो लोगों को भ्रम में डालना है। इसलिए अपने को भगवान् कह पुजवाने के लिए जरूरी है लोगों को भ्रम में डालना। एक सामान्य आदमी को वेदों की सिद्धान्त की अथवा संस्कृत शास्त्रों की क्या समझ होती है। उसको जैसे कोई समझा देगा वह उसको ही सत्य समझ लेगा, फिर ऊपर से अंधविश्वास में जकड़े व्यक्ति तो कुछ भी दूसरे की बात न सुनेंगे न मानेंगे। अंधविश्वास में जकड़ने के रहस्य को तो बड़े-बड़े आदमी भी नहीं समझ सकते। जो समझ भी जाते हैं वे भी उसे नकारने की हिम्मत नहीं जुटा पाते। आपको कोई व्यक्ति कह दे कि-ले यह लकड़ी। इसे साधारण न समझना। साधु की दी हुई है। इसे नहा-धोकर रोज पूजना। तीन बार परिक्रमा करना। तीन बार दिए गए मंत्र का पाठ करना। तीन-तीन जौ दोने सिरों पर रखना। तीन बीच में रखना। पूजा के बाद पंडित को दान कर प्रसाद बांटना। आदि-आदि कुछ भी इसी प्रकार का कमोबेश कहकर समझाया जाए। आप उसे करेंगे। यदि करने पर आपकी मनोकामना पूरी हुई तो आप वही करते रहेंगे तथा उस व्यक्ति के पंजे में आ जाएंगे। यदि मनोकामना पूरी नहीं हुई तो समझदार व्यक्ति समझ जाएगा। लेकिन मूर्ख सोचेगा कोई कमी रह गई है। वह फिर उसी व्यक्ति के पास जाएगा। वह फिर कुछ और बता देगा। मूर्ख व्यक्ति इसी प्रकार के चक्करों में फंसे रहते हैं, लुटते-पिटते रहते हैं। एक आदमी ने ईसाइयों के कहने पर ईसा की मूर्ति के सामने मन्नत मांग ली। मन्नत पूरी हो गई। वह ईसाई बन गया। कोई पीर के पास जाता है और कोई सियाने के पास। कोई किसी को गुरु और भगवान् मान बैठ गए कोई किसी को। कोई वैष्णो देवी जाता है तो कोई मनसा देवी, चंडी देवी। कोई कहता है मेरी वहां मान्यता है, दूसरा कहता है मेरी वहां है, लेकिन इन सभी आदमियों की सभी कामनाएं पूर्ण नहीं होतीं। इन्हें दुःख-सुख दोनों सहज रूप में आते रहते हैं लेकिन सुख आने पर ये विश्वास अनुसार अपने गुरु सियाने, पीर, देवी या मान्यता स्थल को इसका कारण मानते हैं लेकिन दुःख आते हैं, तब अपनी ही कमी ढूंढते हैं। दूसरी ओर बहुत से आदमी भगवान् पीर, देवी या देवता अथवा अन्य मान्यता कुछ नहीं मानते अपना कार्य बुद्धि से सोचकर करते हैं। दुःख-सुख सहज रूप से उनमें भी आते हैं, लेकिन वे कोई वहम या अन्धविश्वास न करके अन्य सम्भव उपाय करते हैं। गुरु, देवी, पीरों को मानने वाले असंख्य जन अस्पतालों में लाखों रुपए खर्चते हैं, दुःख उठाते हैं, तब उनके देवी-देवता कहां चले जाते हैं? वे उन्हें क्यों दुःखी करते हैं? बहुत से अस्पताल में जाकर स्वस्थ हो जाते हैं तथा गुरु, पीर व देवी देवता को समझ जाते हैं कि ये सब कुछ नहीं करते वे पहले लुटने पिटने को याद करके बहुत पछताते हैं। गांव खेवड़ा की बहू मायादेवी पत्नी रिसालसिंह अपने पति के साथ जमना पार के गांव में कमरदर्द का झाड़ा लगवाने चली। वह अपनी ननद को भी बोली-कमला तू भी चल ना, तेरा घुटनों का दर्द एक झाड़े में ही ठीक हो जायेगा। कमला बोली-'बेबे मैं नहीं जा सकती तेरा ननदोईया नहीं जाने देता।' कमला नहीं गई लेकिन उसकी भाभी मायादेवी और भाई दोनों झाड़ा लगवाकर आए लेकिन उनकी कमर और घुटनों में कोई आराम नहीं हुआ। कुछ महीने बाद कमला भाई से मिलने आई तो उसने बताया कि-अरी माया मेरे घुटनों का दर्द तो अपने आप ही ठीक हो गया। अब मैं बिल्कुल ठीक हूं। माया बोली-मुझे तो कुछ भी आराम नहीं आया तेरे को अपने आप कैसे आ गया? कमला बोली-पता नहीं बेबे मैंने तो कुछ भी नहीं किया अपने आप बिल्कुल ठीक हो गया। अब आप लोग सोचो यदि कमला झाड़ा लगवाने जाती तो आराम होने पर यही सोचती कि आराम झाड़ा लगवाने से ही हुआ है और वह कितने ही आदमियों को बताती और झाड़ा लगवाने के लिए प्रेरित करती। अंधविश्वास का यही रहस्य है। इसी का लाभ उठाकर चालाक पाखण्डी अपना उल्लू सीधा करते हैं। लोगों को वास्तविकता समझनी चाहिए। आंख मूंदकर लुटना पिटना नहीं चाहिए।

ऐसे ही रामपाल और उसके भक्त साक्षात्कार का अर्थ आंखों के सामने ऐसा करते हैं और कहते हैं कि साक्षात्कार तो साकार का होता है। यहां साक्षात्कार का लाक्षणिक अर्थ तो आंखों से देखना या आंखों के सामने ऐसा हो सकता है, लेकिन यह व्यंग्य नहीं है, यहां साक्षात्कार से अभिप्राय अनुभूति से है। कोई कहे मेरे घर के पास हिमालय है तो वह मूर्ख ही कहा जाएगा। यह ठीक है कि हिमालय का लाक्षणिक अर्थ बर्फखाना या बर्फघर ही होता है लेकिन हिमालय का अभिप्राय सर्वत्र प्रसिद्ध उत्तर दिशा के ऊंचे विशाल पर्वत से ही होता है। इसी प्रकार दास मण्डली कहती है कि ४८ वर्ष की आयु विवाह के लिए अनुचित है। शरीर आयु के साथ-साथ परिपक्व होता जाता है, वहीं बुद्धि भी बढ़ती जाती है। ४८ के बाद घटना शुरू हो जाता है। अतः पूर्ण परिपक्व शरीर बुद्धि वाले व्यक्ति की संतान उत्तम होनी निश्चित है। इसे कम बुद्धिवाला व्यक्ति कैसे समझ सकता है। मानव समाज के उत्तमोत्तम निर्माण की विद्या एक सामान्य व्यक्ति क्या जान सकता है। कोई मूर्खों की भीड़ जुटाकर अपने को सिद्ध सन्त या भगवान् घोषित करे तो वह 'काणों का सरदार' या 'मूर्खों का बादशाह' ही कहा जा सकता है। उसे विद्वान् नहीं कहा जा सकता। साधारण रूप से महर्षि दयानन्द जी ने १६ वर्ष की कन्या व २५ वर्ष का कुमार हो, यही बताया है और यह उन्होंने अपनी तरफ से नहीं नियत किया है विभिन्न सत्य-शास्त्रों से ही ग्रहण करके बताया है जिसे सामान्य जन भूल चुके थे। यदि कोई २४ से ४८ वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करके विवाह करना चाहे तो उसमें बुराई क्या है? शरीर विज्ञान के अनुसार परिपक्व अवस्था ही उत्तम मानी जाएगी। यदि कोई फल स्वयं पौधे पर समयानुसार पकता है तो उसका बीज भी उत्तम बनेगा तथा वह खाने में अधिक स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्यप्रद होगा बनिस्वत उसके कि जो फल कच्चा तोड़कर मसाले से पकाया जाएगा अथवा अपूर्ण पका रहने पर ही प्रयुक्त होगा।

रामपाल बिना ज्ञान के लोगों को मूर्ख बनाकर लूट रहा है। यह उचित नहीं कहा जा सकता। पैसे का कोई हिसाब नहीं है। इतना पैसा उसके पास आता है उस पर वह आयकर भी नहीं देता। कर-वञ्चक है। काली कमाई से काली करतूत करता है और आर्यसमाज को पैसे बटोरू कहता है। जहां पैसे-पैसे का हिसाब होता है।

## हरयाणा आर्य युवक परिषद् की महत्त्वपूर्ण बैठक

हरयाणा आर्य युवक परिषद् की महत्त्वपूर्ण बैठक ८ अप्रैल २००५ को सायं ८ बजे गुरुकुल धीरणवास जिला हिसार में परिषद् अध्यक्ष श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी की अध्यक्षता में होगी जिसमें परिषद् द्वारा शराबखोरी, गोहत्या, धार्मिक पाखण्ड, अश्लील प्रसारण के खिलाफ चलाए जा रहे जनजागरण अभियान को गति देने पर भावी रणनीति पर विचार किया जायेगा। बैठक को परिषद् के संरक्षक स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी धर्मानन्द परिव्राजक, स्वामी तेजमुनि तथा परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिवराम आर्य विद्यावाचस्पति सम्बोधित करेंगे।

-**दीपेन्द्र शास्त्री**, महामंत्री हरयाणा आर्य युवक परिषद

स्वामी ओमानन्द सरस्वती की तीसरी पुण्य तिथि (२३.३.२००५) पर-

# स्वामी ओमानन्द सरस्वती का शिष्य-मण्डल

## [ आर्षपाठविधि के विद्वान्, नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा संन्यासी ]

देहली प्रान्त के नरेला कस्बे के मामूरपुर पाना में चौ० निहालसिंह खत्री ३०० बीघा भूमि के मालिक थे। उनके पुत्र चौ० कनकसिंह नम्बरदार के घर में चैत्र कृष्णा अष्टमी संवत् १९६७ विक्रमी (३ अप्रैल १९१० ई०) के दिन माता नान्हीदेवी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम भगवान्सिंह रखा गया किन्तु परिवार में प्यार का नाम 'भानु' ही था।

भगवान्सिंह इकलौता बेटा था अतः उस समय के रिवाज के अनुसार इसका विवाह लगभग ११ वर्ष की आयु में ही कर दिया गया। गांव के स्कूल के पश्चात् दिल्ली के सैंट स्टीफन कॉलेज में उच्च शिक्षा के लिये प्रविष्ट करवाया गया किन्तु १९३१ ई० में सरदार भक्तसिंह को अंग्रेज सरकार द्वारा फांसी का समाचार सुनकर भगवान्सिंह ने अंग्रेजी शिक्षा को त्यागकर भारत-स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया।

आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों को पढकर आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर विवाह-विच्छेद भी कर दिया। गुरुकुल दयानन्द वेदविद्यालय दिल्ली और गुरुकुल चित्तौड़गढ़ आदि में आर्षपाठविधि के अनुसार शिक्षा व्याकरण निरुक्त दर्शन आदि की शिक्षा प्राप्त की। अपने बाग में भी **"विद्यार्थी आश्रम नरेला"** की स्थापना की। हरिजनों की शिक्षा के लिये **रात्रि-पाठशाला** चलाई। आर्यसमाज के प्रचारार्थ विद्यार्थी आश्रम में **उपदेशक विद्यालय** भी चलाया जिसमें स्वामी योगानन्द, ब्र० हरिशरण, भद्रसेन, सेवाराम आदि नवयुवकों ने अध्ययन किया।

भक्त फूलसिंह जी आपके तप-त्याग और तेजस्वी जीवन से बहुत प्रभावित हुये और अपने जैसे ही त्यागी-तपस्वी, विद्वान् ब्रह्मचारी तैयार करने के लिये वे ब्रह्मचारी भगवान्देव को अपने गुरुकुल भैंसवाल का आचार्य बनाना चाहते थे। उनके आदेश को शिरोधार्य कर आप गुरुकुल भैंसवाल को देखने भी गये थे किन्तु इसी समयावधि में भक्त फूलसिंह जी का बलिदान हो गया और आप वहां नहीं गये।

गुरुकुल झज्जर की प्रबन्धकारिणी सभा के मन्त्री चौ० छोटूराम राठी तथा पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती के प्रबल अनुरोध पर ब्र० भगवान्देव जी ने २२ सितम्बर १९४२ ई० (दीपावली पर) को गुरुकुल झज्जर में पदार्पण किया। उस समय गुरुकुल झज्जर गुरुकुल कांगड़ी का "शाखा गुरुकुल" था अतः गुरुकुल कांगड़ी की पाठविधि के अनुसार छठी श्रेणी तक की शिक्षा दी जाती थी और श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर की पाठविधि के अनुसार "सिद्धान्त-भूषण" परीक्षा की पुस्तकें पढ़ाई जाती थीं।

धुन के धनी आचार्य भगवान्देव जी ने लीक से हटकर सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि में लिखित आर्षपाठविधि के अनुसार एक स्वतन्त्र आदर्श गुरुकुल चलाकर आर्षपाठविधि के अनुसार उच्चकोटि के विद्वान् तैयार करने का दृढ़निश्चय किया और ३ अक्तूबर १९४५ ई० को मा० धर्मसिंह जी (झिंझोली निवासी) ने प्रबन्ध का कार्य तथा १२ नवम्बर को आचार्य जी के सहपाठी (बिजनौर उत्तरप्रदेश निवासी) महावैयाकरण पं० विश्वप्रिय भाष्याचार्य ने उपाचार्य का कार्यभार संभाल लिया। मेरे जैसे कुछ नये तथा कुछ पुराने विद्यार्थी भी पुनः प्रविष्ट होगये और सन् १९४६ ई० से आर्षपाठविधि का युग प्रारम्भ हो गया। संस्कृतभाषा और वर्णोच्चारण शिक्षा के पश्चात् १९४८ ई० से अष्टाध्यायी का पढ़ाना प्रारम्भ हुआ और १९५२ तक चार वर्ष में व्याकरण महाभाष्यपर्यन्त सम्पूर्ण संस्कृत व्याकरण पढ़ाकर आर्षपाठविधि के अनुसार विद्वान् तैयार करने की नींव पक्की कर दी गई और यह परम्परा विशेषरूप से १९६५ ई० तक निरन्तर चलती रही। इस अवधि में गुरुकुल झज्जर से आर्षपाठविधि से पढकर जो विद्वान् स्नातक तैयार हुये वे निराले एवं अद्वितीय हैं। उनके मुकाबले के वैदिक विद्वान् दूसरे गुरुकुलों से बहुत कम निकले हैं। आज भी विद्वानों में उनके पाण्डित्य की धाक और छाप है। उनमें से कुछ नाम यहां लिखता हूं-

| क्र० | नाम | पता |
|---|---|---|
| १. | यज्ञदेव शास्त्री | ग्राम-पो० लीलोढ, जिला रोहतक (हरयाणा) |
| २. | वेदव्रत शास्त्री | ग्राम अजीतपुरा, पो० नूनिया गोठड़ा तह० चिड़ावा, जिला झुझनूं (राजस्थान) वर्तमान-आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक। सम्पादक-सर्वहितकारी साप्ताहिक रोहतक। |
| ३. | देवशर्मा वैद्य | ग्राम-पो० टिकरी कलां दिल्ली। |
| ४. | सुदर्शनदेव आचार्य | ग्राम-पो०-बालन्द, जिला रोहतक वर्तमान-संस्कृत सेवा संस्थान, हरिसिंह कालोनी, रोहतक (हरयाणा) |
| ५. | राजवीर शास्त्री | ग्राम-फजलगढ़, पो० फरीदनगर जिला मेरठ (उ०प्र०) वर्तमान-भूपेन्द्रपुरी, मोदीनगर जिला गाजियाबाद (उ०प्र०) दयानन्द सन्देश के सम्पादक |
| ६. | प्रो० सत्यवीर शास्त्री | ग्राम-पो० डालावास, जिला भिवानी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्वमन्त्री। |
| ७. | डॉ० महावीर मीमांसक | ग्राम-मल्हामाजरा, जिला सोनीपत। वर्तमान-वैदिक अनुसन्धान केन्द्र, पश्चिम विहार, दिल्ली |
| ८. | वैद्य मनुदेव शास्त्री | ग्राम-पो०-डालावास, जिला भिवानी वर्तमान-फव्वारा चौक, चरखी दादरी जिला भिवानी |
| ९. | सत्यव्रत प्राध्यापक | बलभीम कालेज बीड़, महाराष्ट्र (भाई बंशीलाल जी के सुपुत्र) [दिवंगत] |
| १०. | प्रिं० धर्मव्रत शास्त्री | ग्राम०पो०-चुड़ेला, जिला झुंझनूं (राजस्थान) वर्तमान-गुरुकुल माउंट आबू में प्राध्यापक। |
| ११. | स्वामी सत्यपति परिव्राजक | ग्राम-पो०-फरमाणा (महम) जिला रोहतक वर्तमान-दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन, विकास क्षेत्र, रोजड़, डा० सागपुर (गुजरात) |
| १२. | सोमदेव शास्त्री | ग्राम-पो०-बालन्द, रोहतक, सेवानिवृत्त अध्यापक |
| १३. | सत्यवीर शास्त्री | ग्राम-पो०-गढ़ी बोहर, जिला रोहतक वर्तमान-मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा |
| १४. | प्रो० धर्मवीर | ग्राम-पो० चाकूर, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर (राजस्थान) |
| १५. | रणवीरसिंह शास्त्री | ग्राम-पो० गढ़ी बोहर, जिला रोहतक वर्तमान-वर्तमान सेक्टर-1 रोहतक |
| १६. | आचार्य दयानन्द शास्त्री | ग्राम-पो० कितलाना, जिला भिवानी वर्तमान-प्राध्यापक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार |
| १७. | स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती | ग्राम-पो०-उदगीर, जिला लातूर (महाराष्ट्र) वर्तमान-गुरुकुल कालवा (जीन्द) |
| १८. | डॉ० कुशलदेव शास्त्री | ३९-रामानन्द नगर, पावड़ेवाड़ी, नांदेड़ (महाराष्ट्र) प्रवक्ता-नेताजी सुभाष महाविद्यालय नांदेड़ |
| १९. | सत्यपाल शास्त्री | ग्राम-पो०-हुमायूंपुर, जिला रोहतक वर्तमान-साधुशाहनगर, रेवाड़ी (हरयाणा) |
| २०. | स्वामी धर्मानन्द सरस्वती | ग्राम-पो०-हुमायूंपुर, जिला रोहतक संचालक-गुरुकुल आश्रम आमसेना, खड़ियार रोड जिला नवापारा. (उड़ीसा) |
| २१. | डॉ० सुरेन्द्रकुमार | ग्राम-पो० मकड़ौली, जिला रोहतक वर्तमान-छोटूरामनगर, झज्जर (हरयाणा) सम्पादक-सुधारक (मासिक) |
| २२. | सत्यव्रत शास्त्री | ग्राम-पो०-मकड़ौलीकलां, जिला रोहतक, अध्यापक |
| २३. | डॉ० रामवीर | ग्राम-श्यामपुर जट्ट, पो० दतियाना, जिला मेरठ प्रवक्ता-राजकीय महाविद्यालय, फरीदाबाद |
| २४. | रामधारी शास्त्री | ग्राम-पो०-डाहोला, जिला जीन्द (हरयाणा) वर्तमान-योग चिकित्सा आश्रम, अर्बन इस्टेट, जीन्द (हरयाणा) |
| २५. | डॉ० योगानन्द शास्त्री | ग्राम-पो०-भदानी, जिला झज्जर (हरयाणा) वर्तमान-सी-२४, गीतांजलि, नई दिल्ली स्वास्थ्य और समाज कल्याण मन्त्री, दिल्ली सरकार |
| २६. | आचार्य यशपाल | ग्राम-पो०-हुमायूंपुर, जिला रोहतक (हरयाणा) संचालक-कन्या गुरुकुल महाविद्यालय खरखौदा (सोनीपत) |
| २७. | डॉ० रवीन्द्रकुमार | ग्रा०-देगलमड़ी, पो० चिंचोली, जिला गुलबर्गा मैसूर (कर्णाटक) |
| २८. | डॉ० धर्मपाल देशवाल | ग्राम-पो०-लाढौत, जिला रोहतक (हरयाणा) वर्तमान-१८३ माडल टाउन, रोहतक |
| २९. | डॉ० यज्ञवीर दहिया | ग्राम-पो०-रोहणा, जिला सोनीपत (हरयाणा) प्रो० महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक |
| ३०. | विरजानन्द दैवकरणि | ग्राम-पो० जखाला ढाणी, जिला रेवाड़ी (हरयाणा) निदेशक-पुरातत्त्व संग्रहालय, गुरुकुल झज्जर |
| ३१. | आचार्य विश्वपाल | ग्राम-पो०-कंवरियावास, जिला महेन्द्रगढ़ वर्तमान-आचार्य संस्कृत महाविद्यालय अस्थल बोहर मठ, रोहतक (हरयाणा) |
| ३२. | स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती | ग्राम-पो०-देवनगर मैनपुरी (उ०प्र०) संचालक-योगधाम ज्वालापुर (उत्तराञ्चल) |
| ३३. | स्वामी चन्द्रवेश सरस्वती | ग्राम-पो०-मकड़ौली कलां, रोहतक आचार्य गुरुकुल धरारी, पो०-बिलोचा, जिला बुलन्द शहर (उ०प्र०) |

| | |
|---|---|
| ३४. डॉ० देवव्रत आचार्य | ग्राम-पो० दड़ौली, जिला रेवाड़ी<br>वर्तमान-स्वामी देवव्रत सरस्वती<br>संचालक-सार्वदेशिक आर्यवीर दल |
| ३५. चन्द्रपाल राणा एम.ए. | ग्राम-पो०-पाकस्मा, जिला रोहतक।<br>वर्तमान-हिन्दीप्रवक्ता, बवाना, दिल्ली |
| ३६. प्रिं० यज्ञवीर शास्त्री | ग्राम-पो० किसरेंटी, रोहतक<br>वर्तमान-प्रिंसिपल बवाना, दिल्ली |
| ३७. रणवीरसिंह शास्त्री एम.ए. | ग्राम-पो० आसन, जिला रोहतक<br>वर्तमान-हिन्दीप्रवक्ता बवाना, दिल्ली |
| ३८. डॉ० महावीर अग्रवाल | प्रोफेसर्स कालोनी, गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार |
| ३९. डॉ० रघुवीर वेदालंकार | बी. ३६६ सरस्वती विहार, नई दिल्ली |
| ४०. देवव्रत शास्त्री | ग्राम-पो०-वारड़ा, जिला भिवानी<br>सेवानिवृत्त संस्कृत अध्यापक |
| ४१. धर्मव्रत शास्त्री | संस्कृतप्रवक्ता ११० गौतम विहार कालोनी<br>नरेला, दिल्ली |
| ४२. स्वामी विवेकानन्द सरस्वती | संचालक-गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी<br>जिला मेरठ |
| ४३. डॉ० राजपाल शास्त्री | ग्राम-पो० बरहाणा, जिला झज्जर (हरयाणा)<br>संस्कृतप्रवक्ता, सेक्टर-१, रोहतक |
| ४४. डॉ० सोमदेव शास्त्री | ३०४ सुमन अपार्टमेंट, अंधेरी मुम्बई-६१ |
| ४५. आचार्य हरिदत्त उपाध्याय | संचालक-गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) |
| ४६. वेदपाल शास्त्री एडवोकेट | स्टेशन रोड, चिड़ावा, झुंझनूं (राजस्थान)<br>वर्तमान-राजस्थान हाई कोर्ट जयपुर |
| ४७. आचार्य हरिदेव | संचालक-गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली<br>तथा गुरुकुल मंझावली, फरीदाबाद |
| ४८. इन्द्रपाल शास्त्री | आचार्य गुरुकुल शुक्रताल<br>जिला मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) |
| ४९. डॉ० विक्रमकुमार विवेकी | संस्कृतप्रवक्ता<br>पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ |
| ५०. डॉ० आनन्दकुमार (आई.पी.एस.) | अतिरिक्त सचिव<br>गृहमंत्रालय भोपाल (म०प्र०) |
| ५१. महावीर शास्त्री आजाद | संस्कृतप्रवक्ता तथा संपादक वनौषधिमाला<br>एम.सी. कालोनी, चरखी दादरी, भिवानी |
| ५२. सुरेशकुमार शास्त्री | गवलीबस्ती देगाव रोड, शोलापुर (महाराष्ट्र) |
| ५३. डॉ० वेदपाल सुनीथ | संस्थापक-पाणिनिधाम तिलोरा<br>पुष्कर अजमेर (राजस्थान) [दिवंगत] |
| ५४. डॉ० देवकेतु आचार्य | ग्राम आनन्दपुर, डॉ० जलालाबाद<br>जिला मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) |
| ५५. डॉ० बलवीर आचार्य | संस्कृतप्रवक्ता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक |
| ५६. डॉ० राजकुमार आचार्य | कोसली रोड, झज्जर (हरयाणा)<br>प्रिंसिपल देहली शिक्षा विभाग में। |
| ५७. ब्र० विजयपाल योगार्थी | आचार्य गुरुकुल झज्जर (हरयाणा) |
| ५८. डॉ० वीरदेव विष्ट | टोटकेसाल नेपाल, वर्तमान-अमेरिका में |
| ५९. डॉ० प्रकाशचन्द्र | प्राध्यापक संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर |
| ६०. यशपाल आचार्य | आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, कमलानगर, दिल्ली |
| ६१. आचार्य धर्मपाल | गुरुकुल पुष्पावती पूठ<br>बहादुरगढ़ जिला गाजियाबाद (उ०प्र०) |
| ६२. प्रो० वीरेन्द्रकुमार शास्त्री | ग्राम-पो० बालन्द, रोहतक<br>वर्तमान-सेक्टर-१, रोहतक |
| ६३. डॉ० विजयकुमार 'प्रचेता' | प्राध्यापक राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान लखनऊ (उ.प्र.) |

इस प्रकार स्वामी ओमानन्द जी के विद्वान् स्नातक शिष्यों की सूची ३०० से ऊपर है। विशेष ज्ञानार्थ स्नातक संक्षिप्त परिचायिका देखी जा सकती है।

गुरुकुल में **आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला** का उद्घाटन विधिवत् १५ मार्च, १९५० को पंजाब के मुख्यमंत्री डॉ० गोपीचन्द भार्गव के द्वारा सम्पन्न होचुका था किन्तु आर्षपाठविधि के एक अंग आयुर्वेद की शिक्षा के लिये **आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर** का विधिवत् उद्घाटन भारत के शिक्षामन्त्री डॉ० कालूलाल श्रीमाली द्वारा २९ अगस्त १९५६ ई० को हुआ। यह आयुर्वेद महाविद्यालय १९६० तक चला। इसमें ७ आयुर्वेदाचार्य और ३ आयुर्वेद शास्त्री मिलाकर १० आयुर्वेद के स्नातक बने।

कन्याओं को आर्षपाठविधि की शिक्षा देने के लिये अपनी जन्मभूमि नरेला में **कन्या गुरुकुल नरेला** की स्थापना की जिससे सैकड़ों विदुषी स्नातिकायें निकलीं। यह गुरुकुल वर्तमान में भी भलीभांति चल रहा है।

आर्षपाठविधि के विद्वान् तैयार करने के साथ-साथ स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने अनेक नैष्ठिक ब्रह्मचारी और संन्यासी भी बनाये जो देश-विदेश में आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं। भारत में प्रचलित सैकड़ों गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक स्वामी ओमानन्द सरस्वती के ही शिष्य हैं। कुछ प्रमुख नाम अपनी जानकारी के अनुसार लिख रहा हूं-

## नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा संन्यासी

| | |
|---|---|
| १. स्वामी योगानन्द सरस्वती | (दिवंगत) |
| २. ब्र० हरिशरण बाइबिल आचार्य | (दिवंगत) |
| ३. स्वामी इन्द्रवेश परिव्राजक | प्रधान दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा) |
| ४. स्वामी सत्यपति परिव्राजक | दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात) |
| ५. आचार्य बलदेव नैष्ठिक | संस्थापक गुरुकुल कालवा जीन्द, प्रधान<br>गोशाला संघ एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा |
| ६. स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती | गुरुकुल कालवा (जीन्द) |
| ७. स्वामी धर्मानन्द | गुरुकुल आश्रम पानपोस (उड़ीसा) |
| ८. स्वामी आनन्दवेश | संस्थापक-गुरुकुल शुक्रताल (उ०प्र०) |
| ९. स्वामी अग्निवेश | जन्तर-मन्तर रोड, नई दिल्ली, अन्तर्राष्ट्रीय प्रचारक |
| १०. ब्र० देशपाल 'दीक्षित' | आर्यसमाज मन्दिर, सिमडेगा, जिला रांची (बिहार) |
| ११. ब्र० रामधारी शास्त्री | योगाश्रम अर्बन इस्टेट, जीन्द |
| १२. ब्र० विरजानन्द दैवकरणि | निदेशक-पुरातत्त्व संग्रहालय, गुरुकुल झज्जर |
| १३. ब्र० विजयपाल योगार्थी | आचार्य गुरुकुल झज्जर |
| १४. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती | संचालक-योगधाम ज्वालापुर |
| १५. डॉ० स्वामी देवव्रत सरस्वती | संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल |
| १६. आचार्य हरिदेव | संचालक-गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली<br>संस्थापक-गुरुकुल मंझावली और<br>गुरुकुल पौंधा देहरादून (उत्तराञ्चल) |
| १७. स्वामी विवेकानन्द सरस्वती | संचालक गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी (मेरठ) |
| १८. आचार्य हरिदत्त 'उपाध्याय' | संस्थापक गुरुकुल भैयापुर लाढौत रोहतक |
| १९. ब्र० बलदेव नैष्ठिक (स्वामी आनन्दवेश) | संस्थापक गुरुकुल शुक्रताल (उ०प्र०) |
| २०. स्वामी धर्ममुनि | संचालक-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ (झज्जर) |
| २१. महन्त प्रतापपुरी | संचालक-तारातरामठ बाड़मेर (राजस्थान) |
| २२. आचार्य धर्मपाल नैष्ठिक | संचालक गुरुकुल पुष्पावती पूठ बहादुरगढ़<br>जिला मुजफ्फरनगर (उ०प्र०) |
| २३. आचार्य प्रद्युम्न नैष्ठिक | संस्थापक-गुरुकुल खानपुर<br>डा० मंढाणा नारनौल (महेन्द्रगढ़) |
| २४. ब्र० सत्यानन्द नैष्ठिक | आर्यसमाज नयाबांस, दिल्ली<br>आर्य साहित्य के प्रकाशक और विक्रेता |
| २५. ब्र० हरिश्चन्द्र नैष्ठिक | प्राध्यापक गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार |
| २६. स्वामी विश्वानन्द सरस्वती | प्रचारक, योगशिक्षक |
| २७. आचार्य सत्यव्रत | प्रभुआश्रित आश्रम, गुरुकुल सुन्दरपुर कुटिया (रोहतक) |
| २८. स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती | प्राध्यापक गुरुकुल मंझावली (फरीदाबाद) |
| २९. स्वामी चन्द्रवेश सरस्वती | संचालक-गुरुकुल धरारी, बिलोचा बुलन्दशहर |
| ३०. स्वामी योगानन्द सरस्वती | खिडवाली जिला रोहतक |
| ३१. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती | संस्थापक गुरुकुल आबू पर्वत (राजस्थान) |

इनके अतिरिक्त अन्य सैकड़ों ब्रह्मचारी वानप्रस्थी और संन्यासी हैं, जिन्होंने स्वामी ओमानन्द सरस्वती की प्रेरणा से गृहस्थाश्रम में प्रवेश ही नहीं किया अथवा वैराग्य धारण करके वानप्रस्थी और संन्यासी बनकर संसार के उपकार में लग गये।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती उड़ीसा, स्वामी सत्यपति परिव्राजक गुजरात, आचार्य बलदेव गुरुकुल कालवा जींद हरयाणा, ब्र० विजयपाल योगार्थी आचार्य गुरुकुल झज्जर आदि की शिष्य-परम्परा में भी अनेक विद्वान् नैष्ठिक ब्रह्मचारी और संन्यासी हैं। यह परम्परा निरन्तर वृद्धि की ओर अग्रसर है।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने इतिहास और पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी विशेष अनुसन्धान किया था और आर्य साहित्य के प्रकाशन वितरण और प्रचार में तो उन जैसा दूसरा नाम ढूंढने पर भी नहीं मिल रहा है। अन्तिम अवस्था में आपने कैंसर रोग की चिकित्सा आयुर्वेदिक पद्धति से करने पर विशेष बल दिया। अनेक नई औषधियां तैयार करवाईं। इसमें उन्हें सफलता भी मिली। उन्होंने कैंसर रोगियों की चिकित्सा के लिये गुरुकुल झज्जर की भूमि पर (रेवाड़ी रोड पर) एक विशाल कैंसर हस्पताल का भी निर्माण प्रारम्भ किया था किन्तु शरीर के साथ न देने पर उसे अधूरा ही छोड़कर २३ मार्च २००३ ई० को परलोक के पथिक बन गये।

-वेदव्रत शास्त्री

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक दूरभाष : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४

# महाशिवरात्रि पर हमारा संकल्प

आज विश्व के उन सभी देशों में जहां आर्यसमाज मन्दिर हैं-ऋषिबोधोत्सव बड़े हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। आर्य-सन्यासियों के प्रवचन हो रहे हैं। भजनोपदेशकों के भजन सबको सम्मोहित कर रहे हैं। ऋषि का अटूट लंगर चल रहा है। क्या हम कभी महर्षि दयानन्द सरस्वती को भूल सकते हैं जिसने हम भारतवासियों को जीने का ढंग सिखाया, जिसने अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों का खण्डन किया, जिसने भूत-प्रेत एवं जादू-टोनों के भय को दूर किया, जिसने सतीप्रथा; कन्यावध आदि सामाजिक बुराइयों का विरोध किया, जिसने वैदिक शिक्षा व हवन यज्ञ का हमें पाठ पढ़ाया, जिसने भारत के कोने-कोने में ओ३म् ध्वज लहराया। आज समूची मानवता ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के आगे नतमस्तक है।

**दयानन्द इस भारत में ज्योति बनकर आया था।**
**अंधविश्वासी हिन्दुओं का अंधकार मिटाया था॥**

मूलशंकर का जन्म १८२४ ई० में गुजरात में टंकारा नामक स्थान पर श्रीकृष्णलाल जी त्रिवेदी के घर हुआ। ब्राह्मण परिवार होने के कारण सब सदस्य शिवभक्त थे। नित्यप्रति मंदिर जाकर पूजा अर्चना करना उनकी स्वाभाविक क्रिया थी। महाशिवरात्रि पर परिवार के अन्य सदस्यों की भान्ति बालक ने भी उपवास रखा। यह १८३७ ई० की बात है इस समय बालक की आयु केवल मात्र १४ वर्ष की थी। अर्द्धरात्रि के समय मूलशंकर ने चूहों को शिव भगवान् की प्रतिमा पर उछलते कूदते और फलों को खाते हुए देखा। बालक के मन में तुरन्त यह ख्याल आया कि कैसा शिव है यह जो स्वयं की रक्षा नहीं कर सकता। रातभर भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार मस्तिष्क में आते रहे कि आखिर परम सत्य क्या है। ईश्वर का स्वरूप क्या है। अगले दिन प्रातःकाल जब मूलशंकर ने अपने पिता से रात की घटना के बारे में बताया-तो जो उत्तर मिला उससे बालक के हृदय में असली शिव को जानने की उत्सुकता बढ़ गई।

२२ वर्ष की आयु में मूलशंकर अपने घर-परिवार को छोड़कर सच्चे शिव की खोज में निकल पड़ा। कितने ही साधु-सन्त मिले, विद्वत्ता एवं ज्ञान के भण्डार ब्राह्मण मिले। आपस में वार्तालाप हुआ लेकिन कोई समाधान नहीं। १८६० ई० में मूलशंकर मथुरा में स्वामी विरजानन्द की कुटिया में जा पहुंचा। पहली ही दृष्टि में मूलशंकर को आभास हो गया कि अब सच्चे शिव की प्राप्ति हो सकती है। गुरु विरजानन्द को भी आभास हो गया कि जिसकी आज तक इस आश्रम में प्रतिक्षा थी-वह आ पहुंचा है। तीन वर्षों की घोर तपस्या एवं गहन अध्ययन के बाद मूलशंकर सच्चे शिव की ओर बढता चला गया। अंधकार का परदा हटता चला गया। गुरुदक्षिणा के रूप में भेंट किए गए लौंग स्वामी विरजानन्द जी ने लेने से इंकार कर दिए। पूरा जीवन ही समाज को समर्पित कर डाला स्वामी दयानन्द सरस्वती ने।

स्वामी जी ने १८७५ ई० में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। स्वामी जी ने सारे देश में घूमकर अविद्या, अंधकार, पाखण्ड एवं छुआछूत को दूर किया। वैदिक धर्मध्वजा को फहराया। सत्य के कंटीले मार्ग पर चलते हुए समूची मानवता को सत्यशिव का आभास करवाया। सत्यार्थप्रकाश नामक ग्रंथ की रचना करके महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सारे विश्व का उपकार किया।

महाशिवरात्रि पर हम सब असत्य को त्यागने व सत्य को धारण करने का संकल्प लें। लाला लाजपतराय, शहीद भगतसिंह, अशफाक उल्ला खाँ, पं० रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर, राजगुरु, सुखदेव, नेता सुभाष आदि अनेक इसी सत्यरूपी संकल्पशक्ति के बल पर अंग्रेजी साम्राज्य से संघर्ष करने में सफल हो गए। आज हम भी समाज में फैले अंधकार को दूर करने का संकल्प लें। महाशिवरात्रि हमारे इस संकल्प को दृढ़ करने का कार्य करे।

-**कृष्णलाल वोहरा**, प्रिंसिपल,
आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, सिरसा

## ऋषिवर-वन्दना

टेक-जमाने में अविद्या की घटा घनघोर छाई थी।
आर्यों पर कृपा करने महाशिवरात्रि आई थी।

१. अविद्या में भटकते सब किसी को क्या पता होता।
भरा पाखण्ड था सारा सच्चे शिव का क्या होता।
मगर ऋषिवर यहां आकर दीपक लौ जलाई थी।
जमाने में अविद्या की..........।

२. बताया ज्ञान दुनिया को मेरे स्वामी दयानन्द ने।
परमेश्वर क्या, कहाँ रहता मेरे स्वामी दयानन्द ने।
कई जन्मों को पा करके तब यह क्रांति लाई थी।
जमाने में अविद्या की..........।

३. करो सुमिरन ईश्वर का, जीवन 'सरस' बना देगा।
हरे दुःख सारे भक्तों का, भव से पार लगा देगा।
भरोसा करके तुम देखो, जो ऋषिवर ने बताई थी।
जमाने में अविद्या की..........।

-**सुरेन्द्रकुमार 'सरस'**, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक

## कुसंग दर्शन

सतलोक आश्रम का बोर्ड लगाया है।
हलवा के लालची भूखों को बुलाया है।
शिक्षितों के सामने तो पोल खुल जाती।
सारे खोटे सिक्कों को भगतों में चलाया है॥

दास ने बकवास का सिलसिला चलाया है।
सत्यार्थप्रकाश बारे भ्रम बहुत फैलाया है।
मूर्खों व धूर्तों की भीड़ को बढ़ाकर।
दैनिक भास्कर में विज्ञापन छपवाया है॥

तीन दिवसीय भेड़ों का मेला लगाया है।
पच्चीस हजार का रेवड़ सामने बैठाया है।
सत्यार्थप्रकाश को छूकर गन्दे हाथों से,
पापी ने सत्य का गला ही दबाया है॥

पाप की कमाई से प्रोजैक्टर मंगाया है।
उसके सम्मुख बैठ मूर्ख बड़ा इतराया है।
खौफनाक चेहरे की आकृति दिखाकर,
भगतों को रात के अन्धेरे में डराया है॥

जब भी बुलाया दास सामने ना आया है।
औरतों में छिपकर चीखा-चिल्लाया है।
मर्द तो चुनौती को स्वीकार करते हैं,
इस कायर ने मर्दों के नाम को लजाया है॥

संतसमागम को तो दाग ही लगाया है।
जहरीले विचारों का तो बाग ही लगाया है।
इसने गहरी नजर गीता में लिखकर,
कामुकता का भद्दा राग ही तो गाया है॥

तीन लाख अट्ठावन हजार संख्या को दर्शाया है।
सारे ही आंकड़ों में गोलमाल पाया है।
भीड़ में भड़ास को निकालने से क्या होगा,
वेद के विद्वान् सम्मुख क्या कभी आया है?

सर्वखाप पंचायत ने फैसला सुनाया है।
अहलावत प्रधान ने भी उसे अपनाया है।
जागता रहे वही तो जागेगा होता है,
आपको तो गहरी नींद में सुलाया है॥

-**महेन्द्र आर्य**, गांव-इमलोटा, जनपद-भिवानी।

## काहनी गांव में समाजसुधार यज्ञ

गुरुकुल गोशाला भैयापुर लाढ़ौत जिला रोहतक की ओर से गांव काहनी में समाजसुधार यज्ञ किया गया, जिसमें गुरुकुल के संचालक श्री आचार्य हरिदत्त जी ने प्रवचन देते हुए कहा-किसी भी देश की आधारशिला वहां की युवाशक्ति ही होती है लेकिन जब युवा ही पथभ्रष्ट हो जाए तो देश उन्नति की ओर कैसे अग्रसर हो सकता है। आज हमारे देश के युवाओं में बढ़ती फैशन व पाश्चात्य संस्कृति में रुचि होने के कारण युवा नशे तथा अकर्मण्यता की दिशा में जा रहा है। इन सबका मूल कारण आचार्य जी ने अश्लील चलचित्रों के प्रचार-प्रसार को बताया। उसके बाद उपाचार्य उदयवीर शास्त्री ने यज्ञ में आई हुई महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि **"माता निर्माता भवति"** अर्थात् माता ही पुत्र की सही निर्मात्री होती है। माताओं ने ही अच्छे संस्कार देकर सुभाष, भगतसिंह आदि महान् क्रान्तिकारियों को जन्म दिया, जिसकी हुंकार से अंग्रेजी सरकार भी थर्रा उठी थी। लेकिन आज हमारे युवा अपने तीनों गुरुओं माता, पिता व आचार्य का सम्मान करना छोड़ गये।

उन्होंने कहा कि यदि आज हम समाज को विघटन से रोकना चाहते हैं तो अपने राम-कृष्ण आदि महापुरुषों के जीवन-चरित्र को जीवन में अपनाना होगा। क्योंकि अच्छे व उच्च चरित्रों से ही हमें अच्छी शिक्षा व सुसंस्कार मिल सकते हैं और यज्ञ को जीवन में अपनाकर हम स्वार्थ व संकीर्णता की भावना को समाप्त कर सकते हैं। उन्होंने वायुमण्डल को शुद्ध करने का सबसे सरल उपाय यज्ञ को बताया। इससे अगला कार्यक्रम ग्राम गुमाणा का रखा गया।

# आर्य-संसार

## झाड़ौदा कलां दिल्ली में यज्ञ सम्पन्न

२४ से २७ फरवरी २००५ तक ऋग्वेद के पावन मंत्रों से यज्ञ किया गया। श्री नरेश जी आर्य व श्री रमेश जी आर्य ने प्रतिवर्ष की भांति यज्ञ कराया। यह यज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती आर्ष गुरुकुल कालवा और आचार्य चेतनदेव जी (अलीगढ़) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। २७ फरवरी को यज्ञ की पूर्णाहुति पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध वक्ता आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय का सारगर्भित वेद-प्रवचन हुआ। यज्ञ में ब्रह्मचारी जयप्रकाश जी, श्री रमेश जी आर्य, पं० अनिलकुमार जी आर्य, भक्त रामधन जी आदि के भजन हुये। पूर्णाहुति पर कई सौ यज्ञप्रेमी सज्जनों तथा माताओं ने प्रीतिभोज में भाग लिया। **-पं० सतीशकुमार आर्य,** झाड़ौदा कलां, नई दिल्ली-७२

## योगस्थली आश्रम का ८८वां वैदिक सत्संग

दिनांक २७-२-२००५ को प्रात: ८ से ९ बजे तक यज्ञ किया गया जिसमें यजमान का स्थान वहन केशरदेवी ने १ किलो शुद्ध घृत का दान कर ग्रहण किया और यज्ञ पंडित इन्द्रमुनि जी धर्मप्रचार मंत्री ने विधिपूर्वक करवाया और ब्रह्मा का स्थान अमरमुनि जी ने ग्रहण किया। इसके पश्चात् दूसरी सभा श्री वज्रप्रसाद जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने अपने प्रवचनों में कहा कि वेद न सिर्फ हमारी आत्मा है बल्कि इनके ज्ञान द्वारा सभी व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है और मनुष्य सुख व शांति प्राप्त कर सकता है। आज की विषम परिस्थितियों में मानव समाज दिशाहीन हो चुका है जिससे समाज में बहुत कुरीतियों ने जन्म ले लिया है और जटिल समस्याएं पैदा हो गई हैं। इनका समाधान केवल वेदों के ज्ञान द्वारा ही सम्भव है।

स्वामी जी वेदों में निहित ज्ञान को आम लोगों तक पहुंचाना चाहते थे। यह उनका सपना था। उनका प्रयास अधूरा रह गया। इसलिए संसार के कल्याण के लिए सभी आर्यों का परम धर्म है कि स्वामी जी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर वेदों की महत्ता को आम लोगों को बताएं। वेदों पर गहन अध्ययन और बड़े पैमाने पर शोध की आवश्यकता है। आज के समय की मांग है कि आर्यसमाज इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाए।

अन्त में शांतिपाठ के पश्चात् शुद्ध घृत से निर्मित्त सभी आगन्तुकों ने प्रसाद ग्रहण किया एवं स्वामी जी ने ५० रोगियों का उचित निदान कर नि:शुल्क औषधियों का वितरण किया। **-वेदप्रकाश आर्य,** मण्डलपति आर्यवीर दल, महेन्द्रगढ़

## वैदिक वशिष्ठ आश्रम (महर्षि दयानन्द धाम) की स्थापना

वरिष्ठ साहित्यकार एवं आर्यजगत् के सम्मानित नेता व सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता आचार्य भगवान्देव 'चैतन्य' जी एवं उनकी धर्मपत्नी सत्यप्रिया जी के भरसक प्रयासों से वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा का जन-साधारण तक प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से हिमाचल प्रदेश, जिला मण्डी के सुन्दरनगर नामक स्थान से लगभग पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर लेदा (दसेहड़ा गांव) नामक स्थान की सुरम्य पहाड़ी पर 'वैदिक वशिष्ठ आश्रम (महर्षि दयानन्द धाम)' की विधिवत् स्थापना कर दी गई है। 'चैतन्य' परिवार की ओर से इस पुण्य कार्य के लिए लगभग नौ लाख रुपए की भूमि व भवन समर्पित किया गया है। वैदिक धर्म के प्रशिक्षण द्वारा राष्ट्र के लिए चरित्रवान् नागरिक पैदा करना। पर्यावरण शुद्धि के लिए 'यज्ञ-विज्ञान' पर शोध करना, आयुर्वेद के प्रति जनसाधारण में जागरूकता पैदा करना, योग शिविरों तथा वैदिक चरित्र-निर्माण शिविरों का आयोजन करना, संस्कृत भाषा का पठन-पाठन, शैक्षणिक माध्यम से महिला एवं शिशु कल्याण योजनाओं को कार्यान्वयन करना तथा वैदिक वाङ्मय के पुस्तकालय की स्थापना करना आदि इस आश्रम की मुख्य गतिविधियां रहेंगी।

**-अभिलेख भारती,** संयोजक-वैदिक वशिष्ठ आश्रम (महर्षि दयानन्द धाम), ८१/एस-४ सुन्दरनगर कालोनी, जिला मण्डी (हि०प्र०)

## स्नातकों की बैठक

गुरुकुल भैंसवाल कलां जिला सोनीपत के स्नातकों की आवश्यक बैठक २७-३-०५ को प्रात: ११ बजे गोहाना मण्डी सत्संग भवन में होगी, जिसमें सभी गुरुकुल के स्नातक एवं गुरुकुल प्रेमी आमंत्रित हैं। आचार्य बलदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सभा की अध्यक्षता करेंगे। आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर भी आयेंगे। गुरुकुलों के बारे में तथा इलाके में आर्यसमाज का एवं वेदों का प्रचार हो इस बारे चर्चा होगी। भक्त फूलसिंह एवं बहन सुभाषिणी के अधूरे कार्यों को पूरा किया जायेगा। २३-२-०५ को श्री सत्यपाल जी शास्त्री भैंसवाल कलां के स्नातक जो लम्बे समय तक गुरुकुलों के सचिव रहे एवं गोहाना मार्किट कमेटी के चैयरमैन भी रहे, के देहान्त पर स्नातक संघ श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

**-महेन्द्र शास्त्री,** महासचिव गुरुकुल भैंसवाल स्नातक संघ

## वेदप्रचार

आर्यसमाज गांव कासण्डा जिला सोनीपत में रामकुमार आर्य की भजनमण्डली द्वारा गांव में वैदिक प्रचार हुआ। प्रचार से प्रभावित होकर आर्यसमाज कासण्डा की नवीन कमेटी का गठन किया गया। प्रचार का अच्छा प्रभाव रहा। बलवीरसिंह आर्य के भजन भी बहुत पसन्द किये। सर्वसम्मति से आर्यसमाज का चुनाव किया गया। जिसके पदाधिकारी निम्न प्रकार से हैं-मंत्री-रामकुमार आर्य, प्रधान-भीमसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष-प्रतापसिंह आर्य, उपप्रधान-रामधारी, उपमंत्री-वीरेन्द्रसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-वीरेन्द्रसिंह, प्रचारमंत्री-गुणपाल आर्य भजनोपदेशक।

## ग्राम जसिया में समाजसुधार यज्ञ

श्रेष्ठ युवा शक्ति ही राष्ट्र की आधारशिला होती है, महर्षि दयानन्द की इस उक्ति को चरितार्थ करने के लिए समाजसुधार के कार्यक्रम में गुरुकुलों का बड़ा महत्त्व है। समाजसुधार की शृंखला में गुरुकुल के संस्थापक व संचालक आचार्य हरिदत्त जी ने गुरुकुल की ओर से एक नई कड़ी का सूत्रपात किया है उनके निर्देशानुसार सोमवार को जसिया गांव में समाजसुधार यज्ञ का आयोजन गुरुकुल के ही उपाचार्य उदयवीर शास्त्री ने किया। उपाचार्य जी ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा-'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' अर्थात् यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है क्योंकि यज्ञ से मनुष्य के अन्दर परोपकार की भावना जागृत होती है तथा स्वार्थ की भावना नष्ट होकर भाईचारे की भावना उत्पन्न होती है।

# योगसाधना व प्राणायाम का महत्त्व

जीवन बड़ा अनमोल रत्न है। मनुष्य जीवन पाना बड़ा ही दुर्लभ है। पूर्वजन्म के अच्छे कर्मों से यह मानव चोला मिला है। पुराणों के अनुसार चौरासी लाख योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ है। महाभारत में भी कहा है कि **"न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्"** यानि मनुष्य तन से कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है। जो चीज श्रेष्ठ है। वह बुरी क्यों बनती जा रही है। बड़े भाग्य से मानुष रत्न पाया परन्तु इस रत्न पर पापों व बुराइयों का जंग क्यों लग रहा है? खजाना भर हुआ है परन्तु पंच-शत्रु लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार लुट रहे हैं। क्योंकि आलस व प्रमाद की दीवार खड़ी है। शास्त्रों में आलस को भी शरीर का सबसे बड़ा दुश्मन माना गया है। अत: स्वामी रामदेव जी महाराज सारी दुनिया को जगा रहे हैं और अपने उपदेशों की अमृतधारा प्रवाहित करते हुए हमें रोग रूप शत्रु से बचने का मार्ग दिखा रहे हैं।

भौतिकवादी दुनिया में जीना दूभर हो गया है। हर व्यक्ति तनावग्रस्त व दु:खी है। भूल-भूलैया में भटक रहा है। क्योंकि उसे सच्चा मार्ग नहीं मिल रहा है। सही दिशा के अभाव में बहुमूल्य मानव तन का खजाना लुटा रहा है। मानसिक रोग के साथ शारीरिक रोग से भी ग्रस्त है। इसलिए जीना और खाना सिर्फ अपना उद्देश्य बना रखा है। प्रभुभक्ति में मन नहीं लगता और साधना बड़ी कठिन लगती है। इस स्थिति में व्यक्ति तनावग्रस्त ही रहेगा। योग को जोड़ना कहते हैं। शक्तियों को इकट्ठा करना। जिस प्रकार से १+१=२ होता है। उसी को योग कहते हैं। अब आप कहोगे कि यह बात कैसी है? भाई हमारे शरीर में अनगनित नस-नाड़ियाँ हैं। अनेक अवयव हैं। कई तरह के पुर्जे हैं। योगसाधना उन पुर्जों को जोड़ती है और खोई हुई शक्ति वापस लाती है। योगसाधना आत्मा को परमात्मा से मिलाती है। आत्मा परमात्मा से जुड़ती है जिसके कारण आत्मिक बल आशातीत बढ़ता है। जिस प्रकार से आज का व्यक्ति किसी मिनिस्टर से नाता जोड़कर खुद को शक्तिशाली बना लेता है। भयरहित हो जाता है। इसी प्रकार आत्मा भी परमात्मा से रिश्ता जोड़कर खुद को शक्तिमान् बना लेती है।

बहत्तर करोड़ से अधिक नस-नाड़ी हमारे शरीर में हैं। प्राणों के आधार पर हमारा जीवन टिका हुआ है। प्राण ही नस-नाड़ियों को शुद्ध करते हैं और निष्क्रिय होने पर शरीर के अन्दर-बाहर अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती हैं। इसलिए पतञ्जलि मुनि ने योगदर्शन में प्राणायाम का महत्त्व दर्शाया है। सामान्य रूप से हर प्राणी श्वास-प्रश्वास करता है। सांस छोड़ना और भीतर लेना यह क्रिया चलती है परन्तु सामान्य से विशेष प्राणों की क्रियाओं का नाम प्राणायाम कहलाता है। क्योंकि प्राणों की शक्ति ही जीवन का आधार है। प्राणायाम द्वारा जीवनशक्ति व प्राणों की शक्ति बढ़ाई जाती है। सामान्य सांस द्वारा दूषित हवा हमारे शरीर में नहीं निकल पाती है परन्तु प्राणायाम द्वारा अशुद्ध हवा निकल जाती है और शुद्ध हवा प्रविष्ट हो जाती है जिसके कारण अनगिनत नस-नाड़ियां ठीक रूप से काम करना शुरू कर देती हैं। फेफड़ों को शुद्ध हवा मिलती है। प्राणायाम द्वारा सांस की गति कम होती है। जितनी सास जो प्राणी कम लेगा उतनी ही उसकी आयु बढ़ेगी जैसे कि कछुआ एक मिनट में चार बार सांस लेता है और उसकी आयु चार सौ वर्ष की होती है। इसी प्रकार योगी-मुनि साधक व्यक्ति अपनी सास को रोककर अपनी आयु को बढ़ा लेते हैं। इसलिए शरीर व मन को शुद्ध व निरोग रखने के लिए प्राणायाम की सख्त जरूरत है। प्राणायाम वह रामबाण औषधि है जिसके सेवन से हर रोग दूर हो जाते हैं।

**-सुदामा शास्त्री,** वैदिक प्रवक्ता आर्यसमाज मंदिर, फतेहाबाद

# अद्वितीय दयानन्द

❑ प्राचार्य अभय आर्य आदर्श गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक

**भूमिका**-ऋषि दयानन्द एक ऐसा नाम जो आर्यों का प्राण है, ऋषि दयानन्द, एक ऐसा व्यक्तित्व जिसके सङ्ग से, जिसकी शिक्षाओं से अनेक पतितों का उद्धार हुआ, ऋषि दयानन्द एक ऐसा विद्वान् जिसके ग्रन्थ पढ़कर श्रद्धानन्द, लेखराम आदि धर्मवीर विद्वान् बन गए, ऋषि दयानन्द एक ऐसा समाजसुधारक जिसके परोपकार के छींटे भारत माँ की छाती पर अमिट रूप से विद्यमान हो गए, ऋषि दयानन्द, एक ऐसा परोपकारी संन्यासी जो मानवता के दुःखों के त्राण हेतु हमारे हृदय को करुणा से आर्द्र कर गया, ऋषि दयानन्द एक ऐसा निर्भीक संन्यासी जो हमें अन्याय से लड़ना सिखाकर मनुष्यत्व का पाठ पढ़ा गया, वह ऋषि दयानन्द अद्वितीय था, क्योंकि-

**१. विद्यार्थी तुझसा न मिला**-हे दयानन्द! विद्या की जो लालसा तुझमें विद्यमान थी, वैसी किसी में न मिली। विद्या के लिये तुने भयङ्कर जंगल, दुर्गम पहाड़, बर्फीली नदियां लांघ डाली। प्रतिभाशाली गुरु से ज्ञान पाकर भी तेरी ज्ञानपिपासा शांत न हुई। तू तप की भट्टी में तपने फिर से एकान्त में चला गया। ऐ दयानन्द! लेकिन फिर तो हमें ऐसा विद्यार्थी न मिला। अतः तू अद्वितीय था।

**२. ब्रह्मचारी तुझसा न मिला**-ब्रह्म का स्वरूप जान व उसी की आज्ञा में रहकर तू ब्रह्मचारी बना। वीर्य की रक्षा की ऊर्ध्वरेता बन तू ब्रह्मचारी बना। आरम्भ में स्त्रियों के दर्शन व भाषण आदि से बचकर तूं इस भट्टी में खूब तपा। न चाहते हुए भी जब ऐसा हुआ तो तूने उस आकस्मिक केशों के स्पर्श की स्मृति को भी उस 'भर्गः' के ध्यान से भून डाला। विषयों से पार पा जब तूं समाजसुधार में आया तो भी स्त्रीजाति से यथासम्भव पृथक् रहा और फिर भी इसका महाकल्याण कर गया। तूने हर कन्या, हर स्त्री में अपनी उस माँ के रूप को देखा जिसके हाथों में बचपन में लोरियां ली थीं। ब्रह्मचर्य की साधना का ऐसा कठोर तप फिर न मिला। अतः दयानन्द तूं अद्वितीय था।

**३. योगी तुझ-सा न मिला**-हे दयानन्द! ईश्वर का आलम्बन प्राप्त कर तूने बुराइयों को भेद अच्छाइयों का प्रचार किया। १८ घण्टे की समाधि सिद्ध की। ईश्वर को अपने हृदय में प्रत्यक्ष किया। तूने यजुर्वेद के इस मन्त्र को अक्षरशः चरितार्थ किया-

**युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याऽभरत्॥**

अर्थात् ज्ञानैश्वर्य का साधक पहले अपने मन को आध्यात्मिक उन्नति में लगाए, प्रभु के ज्ञानरूपी प्रकाश से अपनी आत्मा को प्रकाशित करे तथा फिर समस्त पृथ्वी को उस ज्ञान से प्रकाशित कर दे।

देशोद्धार हेतु बल व सामर्थ्य प्राप्त करने के लिये आपने पुत्रभाव से पिता ईश्वर की प्रार्थना की। 'आर्याभिविनय' तेरी इन प्रार्थनाओं का ज्वलंत उदाहरण है। ईश्वर का ऐसा आलम्बन फिर कोई न पा सका। अतः दयानन्द तूं अद्वितीय था।

**४. कोई ऋषि फिर न आया**-कितनी विचित्र बात है कि तुझसे पहले लगभग ५ हजार वर्ष तक यह धरा ऋषि-शून्य रही और तेरे जाने के बाद फिर वही दशा हो गई। तूं विचित्र ऊहवान् था। 'सत्यार्थप्रकाश' के बारहवें समुल्लास में तेरी ऊहा का उदाहरण देखकर मेरे हृदय में तेरी जो श्रद्धा थी उसमें तेरे विवेक की स्मृति की लहरों ने हर्षयुक्त आश्चर्य का तूफान मचा दिया। जैनी लोग मुख पर पट्टी बांधने के लिये तर्क देते हैं कि इससे जीवों का विनाश न होगा। सांख्यदर्शन के सूत्र का पार पा तूने उदाहरण दिया ''जो अत्यन्त अन्धकार, महासुषुप्ति और महानशा में जीव हैं, इनको सुख-दुःख की प्राप्ति मानना तुम्हारे तीर्थंकरों की भूल विदित होती है।'' तुझसा अथाह ज्ञान पाकर फिर ऋषि कोई न कहलाया। अतः ऋषि दयानन्द तूं अद्वितीय था।

**५. समाजसुधारक तुझसा न मिला**-हे ऋषि! तेरा हृदय इतना विशाल आईना था कि उसमें समस्त मानवता के दुःखों का प्रतिबिम्ब बना जिसे तूने अपने ज्ञान-चक्षुओं से देखा। तेरा सामर्थ्य इतना प्रबल था कि तूने उन दुःखों को मिटाने का दृढ़संकल्प धारण कर सुखों के पथ के आगे जो अज्ञान की दीवार खड़ी थी, उसे तोड़ डाला। तूने यदि विदेशियों के मिथ्यावाद का खण्डन किया तो स्वदेशियों के साथ भी ऐसा ही करता। सारे भूगोल में सत्य का प्रचार हो, सभी श्रेष्ठ बनें, यही तो तुझे अभिप्रेत था। अतः 'सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहें', यह सिद्धान्त तुझ पर अक्षरशः चरितार्थ हुआ। मनुष्यमात्र का उपकारी कोई तुझसा सामर्थ्यवान् तेरे बाद न हुआ। अतः दयानन्द तूं अद्वितीय था।

**६. देशोपकारक तुझसा न मिला**-हर ऋण से रहित होकर ही तो कोई मुक्त होता है। अतः जिस देश के पदार्थों, अन्नादि से तेरे शरीर का निर्माण हुआ उसके उद्धार के लिये तूने अपने प्राणों की भेंट चढ़ा दी। आर्यजाति के दुःख को देखकर तूं रोया, इसकी निर्बलता को देखकर तूने सुख-चैन खोया। जिस प्रकार एक मां बच्चे की लातादि की मार को आनन्दपूर्वक सहन करती है, उसी प्रकार तूं अपने देश की जनता की ईंटें, पत्थर खाकर भी उनके हितसाधन में लगा रहा। प्राण त्यागते समय भी तूने 'प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें' के सिद्धान्त को आत्मसात् किया। देश जाति की उन्नति की ऐसी सामर्थ्ययुक्त भावना फिर न मिली। अतः दयानन्द तूं अद्वितीय था।

**७. निर्भीक तुझसा न मिला**-बारिश की बूंदों को तन पर सहकर, भयङ्कर गर्मी व कड़कड़ाती शीत को सहन कर तेरा शरीर वज्र बन गया था। हृदय में ब्रह्म का प्रत्यक्ष कर, समस्त ऐषणाओं को त्याग तूने आत्मा से भय के संस्कार को मिटा दिया। दुष्ट द्वारा अपने ऊपर फेंके भयङ्कर सर्प को तूने पैरों तले कुचल डाला, प्रहार करने वाले की तलवार को तोड़ डाला, पाखण्डियों को शास्त्रार्थ के लिये ही नहीं शस्त्रार्थ के लिये भी ललकार डाला। पाखण्ड के विशाल वृक्ष को काटने के लिये निर्भीकता की जो कुल्हाड़ी तेरे पास पराधीन भारत में थी उसे आज हमने स्वतन्त्र भारत में खो दिया है। अतः ऋषि दयानन्द तूं अद्वितीय था।

**उपसंहार**-(निराश होने की बात नहीं)-ऋषि के प्रति श्रद्धा और सत्य को धारण करके ये बातें लिखीं। लेकिन आज भी ऋषि के ऐसे दीवाने विद्यमान हैं जो अपने सामर्थ्य के अनुसार निःस्वार्थभाव से उनके स्वप्न को साकार करने में लगे हैं। भगवान् उन्हें हरविध सुखी रखे। जो नवीन विद्यार्थी हैं वे ऋषि के उपर्युक्त व अन्य गुणों को अपनाकर ऋषि बनने का प्रयास करें। तभी सबका भला होगा।



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८२









आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक १७ २१ मार्च, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा
# करौंथा आश्रम की सी.बी.आई. जांच हो





करौंथा आश्रम के संचालक के खिलाफ प्रदर्शन करते आर्यसमाजी तथा डी.सी. राकेश गुप्ता को ज्ञापन देते आचार्य बलदेव।

रोहतक, १५ मार्च। सतलोक आश्रम, करौंथा के महंत रामपालदास द्वारा महर्षि दयानन्द द्वारा रचित 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रति की गई कथित आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर रुष्ट चल रहे आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा व हरयाणा गोशाला संघ पदाधिकारियों एवं आर्यसमाज से जुड़े लोगों का गुस्सा प्रशासन पर उतरा। आर्य प्रतिनिधि सभा के बैनर तले जिला मुख्यालय पर किए गए प्रदर्शन के दौरान जिला प्रशासन को जमकर कोसा गया। बाद में सभा के प्रदेशाध्यक्ष आचार्य बलदेव के नेतृत्व में डी.सी. राकेश गुप्ता को ज्ञापन सौंपा गया।

> **आरोप है कि रामपालदास ने एक विज्ञापन में महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द महाराज को आपत्तिजनक ढंग से अंधा होने के कारण अनपढ़ कहा है और महर्षि दयानन्द को अज्ञानी कहा है।**

ज्ञापन में संत रामपाल के करौंथा स्थित आश्रम व उसके आर्थिक स्रोतों की सी.बी.आई. जांच कराने की मांग की गई है। आर्य प्रतिनिधि सभा ने ज्ञापन में चेतावनी दी है कि अगर इस मामले में प्रशासन ने अब भी ढिलाई बरती तो इसके परिणाम खतरनाक होंगे और इसके लिए पूरी तरह से प्रशासन ही जिम्मेदार होगा। आर्य प्रतिनिधियों के अनुसार डी.सी. राकेश गुप्ता ने उनको आश्वासन दिया है कि वे संत रामपालदास के कार्यों की जांच कराएंगे और इसकी रिपोर्ट मुख्यमंत्री भूपेंद्रसिंह हुड्डा को भेजेंगे।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पानीपत, सोनीपत, झज्जर, जींद व रोहतक सहित कई जिलों के आर्यसमाज से जुड़े नागरिक आज गोहाना रोड स्थित दयानन्द मठ में एकत्रित हुए। यहां हुई बैठक की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष आचार्य बलदेव ने की।

इस मौके पर उन्होंने करौंथा आश्रम के संचालक रामपालदास पर कई तरह के आरोप लगाए। इसके बाद आर्य प्रतिनिधि जुलूस की शक्ल में गोहाना स्टैंड, सुभाष रोड, सिविल रोड आदि जगहों से होते हुए डी.सी. कार्यालय पहुंचे। डी.सी. कार्यालय के बाहर प्रदर्शनकारियों ने जमकर संत रामपालदास व जिला प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। प्रदर्शन के बाद आर्य कार्यकर्त्ताओं ने आचार्य बलदेव की अगुवाई में डी.सी. राकेश गुप्ता को ज्ञापन सौंपा।

इस दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्त्ता एवं पदाधिकारी समाचार पत्रों व न्यूज चैनलों से भी नाराज आए।

ज्ञापन में कहा गया है कि सतलोक आश्रम के संचालक लगभग दो वर्षों से समाचारपत्रों व टी.वी. चैनलों के माध्यम से आर्यसमाज, प्राचीन वैदिक परंपरा, ऋषि-मुनियों द्वारा बनाई गई सामाजिक व्यवस्थाएं तथा महर्षि दयानंद द्वारा रचित ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश, यजुर्वेदभाष्य, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रंथों के विरुद्ध आपत्तिजनक प्रचार कर रहे हैं। इससे समाज का माहौल, अमन-चैन व सद्भाव बिगड़ने की आशंका आर्य प्रतिनिधि सभा ने ज्ञापन में जाहिर की है।

आर्य प्रतिनिधि सभा का आरोप है कि संत रामपाल ने सत्यार्थप्रकाश में अपनी ओर से ९ पृष्ठ जोड़ दिए हैं, जो गैर कानूनी व असंवैधानिक कुचेष्टा है। आरोप है कि रामपालदास ने एक विज्ञापन में महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द महाराज को आपत्तिजनक ढंग से अंधा होने के कारण अनपढ़ कहा है और महर्षि दयानन्द को अज्ञानी कहा है।

आचार्य बलदेव ने ज्ञापन में कहा है कि रामपाल दास भूत-प्रेत व जिन्न आदि का प्रचार कर समाज में अंधविश्वास फैला रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा ने ज्ञापन में इसी तरह के और भी कई आरोप रामपाल दास पर लगाते हुए उनके आश्रम, आर्थिक स्रोतों एवं संसाधनों की सी.बी.आई. जांच कराने की मांग की है।

साथ ही चेतावनी दी है कि आर्यसमाज इस तरह की आपत्तिजनक टिप्पणियों को बर्दाश्त नहीं करेगा और अगर प्रशासन ने अब भी कोई ठोस कदम नहीं उठाए तो किसी भी प्रकार के परिणाम के लिए प्रशासन स्वयं जिम्मेदार होगा।

(पंजाब केसरी, १६ मार्च २००५ से साभार)

### आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक की ओर से सतलोक आश्रम करौंथा के संचालक रामपालदास के दुष्प्रचार के संदर्भ में माननीय मुख्यमंत्री हरयाणा की सेवा में उपायुक्त रोहतक के माध्यम से प्रस्तुत

## ज्ञापन

**माननीय मुख्यमंत्री महोदय,**

सेवा में सादर निवेदन है कि सतलोक आश्रम करौंथा के संचालक श्री रामपालदास पिछले लगभग दो वर्ष से अलग-अलग समाचार-पत्रों में विज्ञापनों एवं टी.वी. चैनल के माध्यम से आर्यसमाज, प्राचीन वैदिक परम्परा, ऋषि-मुनियों द्वारा बनाई गई सामाजिक व्यवस्थाएं महर्षि दयानन्द और उन द्वारा रचित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, यजुर्वेदभाष्य, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों के विरुद्ध घोर आपत्तिजनक प्रचार कर रहा है। उसने सामाजिक मर्यादाओं और शिष्टाचार को ताक पर रखकर ऐसा आधारहीन मिथ्या, अनर्गल दुष्प्रचार शुरू किया हुआ है, जिससे समाज का माहौल अमन-चैन और सद्भाव तक बिगड़ सकता है। हम उसके दुष्प्रचार के कुछ एक उदाहरण आपके ध्यान में लाना चाहते हैं-

1. महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश में उसने अपनी ओर से ९ पृष्ठ अलग से जोड़ दिये हैं, जो निहायत गैर कानूनी, असंवैधानिक कुचेष्टा है।

(शेष पृष्ठ दो पर)

# रामपालदास कबीर की दुर्गति न करें

कबीरदास जी भक्तिमार्ग की निर्गुण धारा के प्रमुख कवि थे। इस बात को दुनिया के लेखक और हिन्दी साहित्य से परिचित आदमी मानते हैं और जानते हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक श्यामसुन्दर दास, डा० हजारीप्रसाद और रामचन्द्र शुक्ल जी ने उनका जन्म १३९९ ई० माना है। वह रामानन्द जी के शिष्य थे। लोई उनकी पत्नी और कमाल पुत्र था काशी में पैदा हुए थे। जुलाहे के घर पालन पोषण हुआ था। कबीर जीवनभर राम नाम का जाप करते रहे- **कहै कबीर एक राम जपहु रे भाई** (पद ५७) **इहि तनि राम जपहु रे प्राणी** (पद ९)

कबीरदास जी ने कण-कण में निवास करने वाले राम की (ये रमन्ते ते रामाः) उपासना की, दशरथ पुत्र राम की नहीं। यहां प्रश्न उठता है जब कबीर स्वयं भगवान् थे जगद्‌गुरु सन्त रामपालदास जी भक्ति मुक्ति ट्रस्ट के सदस्य श्री महावीरसिंह मलिक और शंभुदयाल शास्त्री जी तो ईश्वर सर्वज्ञ होता है। कबीर को यह ज्ञान नहीं हुआ कि तू स्वयं ईश्वर है तो राम नाम क्यों जपने को कहा कबीर-कबीर जपवाना था। कबीर तो भगवान् नहीं बनना चाहते थे किन्तु संत श्री कबीर की आड़ में अपने को पुजवाना चाहते हैं। कबीरदास जी अंधविश्वास, पाखंड, कर्मकांड, वेद, कुरान सभी के घोर विरोधी थे मालूम पड़ता है। इसी कारण कबीर जी को वेद में और कुरानशरीफ में कविर्देव और कबिरा शब्द नहीं मिले किन्तु संत जी तत्त्वदर्शी ठहरे उनकी पैनी नजरों से अपने स्वार्थपूर्ति के शब्द कविर्देव और कबिरा तो ज्ञात हो गये किन्तु इस मामूली-सी बात का ज्ञान न हुआ कि वेदों में मन्त्र होते हैं श्लोक नहीं। इसी तरह कुरान में शरीयतें आयतें होती हैं। कबीर जी ने लिखा है-

**वेद कतेब इफ्तारा भाई दिल का फिकर न जाई॥**

अर्थात् वेद और कुरान झूठे हैं इनसे दिल की चिन्ता नहीं जाती। अब सन्त रामपालदास आदि अपने को कबीर का चेला मानते हैं तो गुरु के सिद्धान्तों के विरुद्ध वेद और कुरान में कबीर का नाम कौन से मुख से खोजते हैं? जो आदमी श्लोक और मंत्र का भेद न जानता हो वेदभाष्य करने का दंभ भरे जब कबीर जी कर्मकांड के विरोधी थे तो वेद गीता का भाष्य करने का आपको अधिकार कबीरपंथी होते हुए कदापि नहीं। जाहिर है आप इन ग्रंथों का दुरुपयोग अपना पाखंड फैलाने में करना चाहते हैं जो असम्भव है। दुनिया में यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि वेद संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है। फिर ६०० वर्ष पूर्व पैदा हुए व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध वेद में कैसे हो सकता है। आर्यसमाज के विद्वानों ने सभ्यता का परिचय देते हुए आपके लेखों का उत्तर इसलिए दिया था कि आपकी बे-सिर-पैर की बातों का दुष्प्रभाव निम्न बुद्धि के लोगों में हो सकता है। बे-सिर-पैर की बातें करने पर आपको दंभ हो आता। एक झूठ को सौ बार बोलने से क्या वह सच हो जाता है। बार-बार उत्तर देने पर भी आप उन्हीं झूठों का राग अलापते जाते हो। आपको मालूम था जो पाखंड रचकर दुनिया को लूट रहे हो उसका विरोध आर्यसमाज ही करेगा इसलिए सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए पहली बार ही क्यों ना कर देवें?

सन्त श्री! वेदों का भाष्य करना बच्चों का खेल नहीं है और न कबीर जी का इकतारा है जिससे मामूली-सा जानकार बजा लेगा। वैदिक भाषा और लौकिक संस्कृत में जमीन आसमान का अंतर है। वेद भाषा में वराह बादल को कहते हैं। लौकिक संस्कृत में सूअर को कहते हैं। वैसे ही कबीर शब्द अरबी का है। कविर् का अपभ्रंश नहीं है, कबीरपंथियों को भले ही धोखा देते रहो। कुरान शरीफ में कबीर का अर्थ बड़ा है आयत १९, २१, २२ में वह शब्द आया है वहां परमेश्वर का जिक्र नहीं तो कबीर कला में पाक से ईश्वर कैसे हो सकते हैं?

**फला तो तेइल मफिरीना वजाहेद हुग विहीजिहाद कबीरा** (आ० २२)

कहना मत मानो काफिरों का और झगड़ा करो उनके साथ जिसका झगड़ा बड़ा है। इसी तरह रणवीरा भी हुए, ५५१ आयतों में आया है जिसका अर्थ खबरदार है। अरहमान फस अल विही रणबीरा (५९) अर्थ वह रहमान है बस सवालकर उसको खबरदार से अब सन्त श्री भानुमती का कुनबा जोड़कर कबीरा रणबीरा का क्या अनर्थ करवायेंगे? कबीरदास जी नारियों के घोर विरोधी थे।

१. **एक कनक और कामनी दोऊ अग्नि की झाल**
२. **नारी की झांयी परत अन्धा होत भुजंग............नारी के संग**
**एक कनक और कामनी जग में दोड़ फंदा।**

अब संतश्री जी बतायें कि उनका गुरु नारियों को सर्प से भी भयंकर बता रहा है फिर भी नारियों को नामदान कैसे दे रहे हैं? यह कबीर जी के सिद्धान्त के विरुद्ध है।

**कुराना कतेबां अस अस पढ़ि फिकारी या न जाइ॥** जब कबीर जी कुरान को व्यर्थ मानते हैं फिर मलिक साहब झूठी चापलूसी क्यों करते हैं कुरान में कबीर के नाम की। वैदिक धर्म सदा से कर्मफल को भुगते बिना क्षीण नहीं मानता फिर महर्षि दयानंद के बारे में पाप क्षमा करना आपका मनगड़न्त है। देखिए :-

**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।**
**नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि॥**

कबीर जी ने इसका समर्थन किया-

**मासा घटे न तिल बढै जो कोटि करै उपाई॥**

अर्थात् कर्मों का फल अवश्य भोगा जायेगा न मासा घटे न तिल के समान बढ़े चाहे करोड़ों उपाय कर लीजिए।

अन्त में एक महत्त्वपूर्ण बात पर पाठक ध्यान देवें २० फरवरी पंजाब केसरी में जो विज्ञापन मलिक जी ने छपवाया है उसमें संतश्री रामपालदास जी को राम का भेजा हुआ कुत्ता बताया है। उधर कबीरदास जी अपने को राम की कुतिया कहते हैं देखिए :-

**कबीर कुतिया राम की मुतिया मेरा नाऊं।**
**गले राम की जेवड़ी जित खींचे तित जाऊं॥**

देखिए गुरु कुतिया, शिष्य राम का कुत्ता है। दोनों पति-पत्नी हुए। संतश्री अपने गुरु का स्वामी बन गये हैं। इससे ज्यादा गुरु का अपमान क्या हो सकता है? [illegible] गुरु माँ,



बेटा, पत्नी बने देखे हैं। किन्तु अन्य सब जगह गुरु का दर्जा भगवान् से बड़ा माना है कबीर ने भी **"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काकै लागो पाय॥"** इसलिए संत श्री रामपालदास जी से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि अपने स्वार्थों की बलिस्वरूप कबीर जी की ज्यादा दुर्गति न करें आपके किसी भी काम का समर्थन कबीर जी के सिद्धान्तों से नहीं होगा। आपके अंधविश्वासों, चमत्कारों, छल, फरेब कबीर-वाणी से सिद्ध नहीं होते। यदि आपको दुनिया को भरमाना ही है तो कबीर पंथ को छोड़कर कोई दूसरा सम्प्रदाय बना लीजिए, बेचारे कबीर की ज्यादा दुर्गति मत करो, बेचारे संत कबीर पर रहम करो। शास्त्री जी एम०ए०बीएड० करने मात्र से ही वेदों का भाष्य करना हंस के बच्चे का मदराचल लांघना है। सम्प्रदायों का चश्मा चापलूसी करना सिखाता है सत्य का दर्पण नहीं हो सकता चाहे एम०बी०बी०एस० और दुनिया भर की डिग्री क्यों न ले लेवें जो विज्ञान विरुद्ध बातों को स्वयं माने और मिथ्याचार करे उससे सत्य की आशा करना व्यर्थ है। लेकिन यह काम कबीर पंथ से दूसरा नया सम्प्रदाय बनाकर किया जाये तो ज्यादा उत्तम रहेगा। कबीर की आत्मा को यह तो दुःख न होगा कि उसके चेले उसकी कब्र खोद रहे हैं। **-योगिराज राजनाथ,** संचालक गोमठ बाबा मेलनाथ लेघां, भिवानी (हरयाणा)

## मुख्यमन्त्री हरयाणा की सेवा में ज्ञापन... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

2. रामपालदास ने एक विज्ञापन में महर्षि दयानन्द के पूज्य गुरु स्वामी विरजानन्द महाराज को, जिनको कि तत्कालीन सभी विद्वानों ने व्याकरण का सूर्य एवं संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान् कहा है, उनको रामपालदास ने बहुत ही आपत्तिजनक ढंग से अंधा होने के कारण अनपढ़ कहा है, और उस 'अन्धे अनपढ़' के शिष्य महर्षि दयानन्द को अज्ञानी कहा है।
महोदय, हम इन विश्वविख्यात विद्वान् शिरोमणि गुरु विरजानन्द और महर्षि दयानन्द के विरुद्ध इन आपत्तिजनक टिप्पणियों को सहन नहीं कर सकते।
3. आज विज्ञान के युग में रामपालदास नामदान से पाप क्षमा होने की बात करता है। गुरु के आशीर्वाद से पाप-नाश और रोग-नाश की बात कहता है। विज्ञापनों में इससे सम्बन्धित झूठी कहानियां छपवाता रहता है। उसका यह कृत्य अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, गुरुडमवाद फैलाता है, जो असंवैधानिक एवं अपराध है। पाप क्षमा कर देने के दुष्प्रचार से समाज में अपराध व आतंकवाद की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है।
4. इसके सतलोक आश्रम करौंथा में होने वाले अनाचार के कई कारनामे सुनने में आए हैं, जिनकी वजह से परिवारों में अशांति व तनाव पैदा हो रहा है।
5. रामपालदास भूत-प्रेत, जिन्न आदि का भी प्रचार कर रहा है जो कि अंधविश्वास के दायरे में आता है। अंधविश्वास फैलाना अवैज्ञानिक तो है ही असंवैधानिक, गैरकानूनी एवं दण्डनीय अपराध है।
6. रामपालदास दावा करता है कि अब तक ऋषि-मुनियों, वैदिक विद्वानों ने वेद या गीता आदि के जो भी भाष्य किये हैं वे गलत एवं अशुद्ध हैं और दास (रामपालदास) की व्याख्या ही केवल शुद्ध है जबकि यह संस्कृत से पूरी तरह अनभिज्ञ है, जिसका एक प्रमाण यह है कि इसने अपनी पुस्तक '**गहरी नज़र गीता में**' के पहले पृष्ठ पर '**परमात्माय नमः**' लिखा है, जबकि साधारण-सा संस्कृत पढ़ा हुआ व्यक्ति भी जानता है कि '**परमात्माय नमः**' शब्द अशुद्ध है। इसके स्थान पर '**परमात्मने नमः**' होना चाहिए।
महोदय, जिसका संस्कृत का ज्ञान शून्य के बराबर हो और वह व्यक्ति संस्कृत के विद्वानों के ग्रन्थों में मनमाने ढंग से अशुद्धियां खोजे, अनुचित छेड़छाड़ करे, शब्दों को तोड़मरोडकर अर्थ निकाले तो पढ़े लिखे व धार्मिक श्रद्धालु जनों की भावना को ठेस पहुंचना स्वाभाविक है।
7. रामपालदास ने ऋषियों द्वारा स्थापित एवं प्रतिपादित विवाह जैसी पवित्र संस्था की पवित्रता भंग करने की कुचेष्टा की है। एक विज्ञापन में यह लिखता है कि '**मुसलमान वर्ग केवल सहोदर को ही छोड़ते हैं, उनमें कौनसी उन्नति नहीं है?**' इसका तात्पर्य यह है कि हिन्दू परिवारों में भी चाचा-ताऊ आदि की बहनों से विवाह कर लेना चाहिए। उसकी यह मान्यता घोर अवैदिक, अधार्मिक, समाज विरुद्ध एवं अवैज्ञानिक है।

महोदय, उपर्युक्त कथनों, उदाहरणों, जो रामपालदास के दुष्प्रचार के अलग-अलग नमूने हैं, हम यह कहना चाहते हैं कि इन सब के परिणामस्वरूप हमारी सामाजिक, शांति, सद्भाव सभी सम्प्रदायों के बीच चला आ रहा प्रेम-प्यार खतरे में पड़ सकता है। रामपालदास अपनी इन गलत टिप्पणियों के सत्यासत्य के निर्णय हेतु आपसी विचार-विमर्श और शास्त्रार्थ भी नहीं करना चाहता। आपसे प्रार्थना है कि समाजहित में इसके दुष्प्रचार पर आप तुरन्त प्रतिबंध लगाएं अथवा विद्वानों के आमने सामने बिठाकर सत्यासत्य के निर्णय हेतु शास्त्रार्थ करवाएं। यदि इन दोनों विकल्पों में से किसी पर भी कोई सार्थक कार्यवाही नहीं होती तो हमें विवश होकर कोई आगामी निर्णायक कदम उठाना होगा। उसके जो भी परिणाम निकलते हैं, उसका उत्तरदायित्व प्रशासन पर होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा बार-बार यह मांग करती रही है कि सरकार रामपालदास के करौंथा आश्रम में चल रहे अनाचार अनियमितताओं और आर्थिक स्रोतों एवं संसाधनों की सी.बी.आई. जांच करवाए। अब हम पुनः अपनी मांग दोहराते हैं कि इसके आश्रम की व्यापक सी.बी.आई. जांच तुरन्त करवाई जाए।

सादर एवं साभार...

निवेदक **आचार्य बलदेव,** प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

# महातपस्वी कर्मयोगी स्वामी ओमानन्द सरस्वती


कर्मयोगी स्वामी ओमानन्द सरस्वती

दिल्ली प्रान्त के नरेला कस्बे के मामूरपुर पाने में चौ० निहालसिंह खत्री के पुत्र नम्बरदार कनकसिंह के इकलौते बेटे भगवान्सिंह का जन्म ३ अप्रैल १९१० में हुआ। गांव के स्कूल की शिक्षोपरान्त उच्च शिक्षा के लिए सम्पन्न पिता ने दिल्ली के सैंट स्टीफन कालेज में प्रविष्ट करवाया। भारत का स्वाधीनता आन्दोलन चरमोत्कर्ष पर था। देशभक्त क्रान्तिकारियों को विविध प्रकार की यातनायें दी जा रही थीं। कालेज का विद्यार्थी भगवान्सिंह भी इससे अनभिज्ञ नहीं था। सन् १९३१ में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगतसिंह को अंग्रेज सरकार द्वारा फांसी की सजा देने पर नवयुवक भगवान्सिंह के मन में अंग्रेज और उनके द्वारा प्रचलित शिक्षापद्धति के.प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। परिणामस्वरूप भगवान्सिंह कालेज की शिक्षा अधूरी छोड़कर भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय हो गया।

नरेला के निकट अपने पैतृक बाग में विद्यार्थी आश्रम की स्थापना करके उसी को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया और व्यायाम तथा ब्रह्मचर्य पालन पर विशेष बल दिया। शारीरिक और आध्यात्मिक साधना करते हुए अपने अनेक नवयुवक साथी भी तैयार किये। सन् १९३९ ई० के हैदराबाद सत्याग्रह में निजाम के कारावास में रहे। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। इस प्रकार बचपन और जवानी के ३२ वर्ष तक अपनी जन्मभूमि में विद्यार्थी आश्रम नरेला के माध्यम से कांग्रेस और आर्यसमाज का कार्य किया। ईसाइयों से मोर्चा लिया। शास्त्रार्थ किये। हरिजनों को ईसाई होने से बचाने के लिये रात्रि पाठशाला चलाकर उनको शिक्षित किया।

गुरुकुल झज्जर की प्रबन्धकारिणी सभा के मन्त्री चौ० छोटूराम राठी और श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती के प्रबल अनुरोध पर आपने २२ सितम्बर १९४२ ई० दीपावली के दिन गुरुकुल झज्जर में पदार्पण किया और २३ मार्च २००३ ई० तक निरन्तर ६१ वर्ष तक गुरुकुल झज्जर को ही अपना केन्द्र बनाकर जो महान् कार्य देश और विदेश में किया वह अनुपम और अभूतपूर्व है।

नरेला दिल्ली के हरेभरे सम्पन्न घर परिवार और प्रदेश को छोड़कर झज्जर के अभावग्रस्त सूखे बागड़ जैसे क्षेत्र में बैठकर आचार्य भगवान्देव जी ने जो तपस्या की है, वह मैंने उनके साथ रहकर देखी है (१९४५ से २००३ तक)।

नरेला से झज्जर आजाने पर भी आचार्य जी का स्वतन्त्रता आन्दोलन पूर्ववत् चलता रहा जब तक भारत स्वतन्त्र हुआ। नरेला निवास के समय जिस प्रकार सी.आई.डी. वाले आचार्य जी के आश्रम में जाकर उनकी गतिविधि की जानकारी के लिए उनकी दिनचर्या व्यायाम सन्ध्या यज्ञ आदि में सम्मिलित होते थे और शीर्षासन आदि भी करते थे उसी प्रकार झज्जर आने पर भी अंग्रेज सरकार की सी.आई.डी. आचार्य जी का पीछा निरन्तर करती रही।

१५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हो गया। स्वतंत्रता के पश्चात् कांग्रेस का एक बहुत बड़ा अधिवेशन जयपुर में हुआ जिसमें उस समय के सभी बड़े-बड़े कांग्रेस के नेता उस अधिवेशन में जयपुर पधारे थे। आचार्य भगवान्देव जी भी झज्जर से रेवाड़ी होते हुए जयपुर गये। आचार्य जी ने बताया कि उस समय पूरे देश में आजादी की एक ऐसी उमंग थी जिसका वर्णन लेखनी से करना कठिन है। आचार्य जी अपने अन्य साथियों के साथ रेवाड़ी पहुंचे तो रेवाड़ी से जयपुर जाने वाली रेलगाड़ी ठसाठस भरी हुई थी। गाड़ी के अन्दर तिलमात्र भी स्थान न देखकर यात्री रेल के डिब्बों के ऊपर सवार हो गये। बांदी कुई जंक्शन पर गाड़ी में और डिब्बे जोड़े गये तब कुछ यात्रियों को अन्दर स्थान मिला।

जयपुर के अधिवेशन में भारी भीड़ थी। दूर-दूर तक जन-समुद्र ठाठें मार रहा था। प्रत्येक व्यक्ति स्टेज के निकट जाने के लिए प्रयत्नशील था और पुलिस भीड़ को हटाने के लिए वापिस धकेल रही थी। ऐसी भीड़ को चीरते हुए पहलवान ब्रह्मचारी भगवान्देव जी स्टेज के निकट पहुंच गया। इनके साथी मा० शिवराम आदि भी इनकी चादर पकड़े हुए पीछे-पीछे चलते रहे। प्रत्यक्ष द्रष्टा व्यक्ति का कहना था कि बाबा में इतनी ताकत थी जितनी एक हाथी में होती है। यह घटना मा० शिवराम जी ने '**शिव विचार तरंगिणी**' में लिखी है।

सन् १९४७ में आचार्य जी ने गुरुकुल झज्जर की रजत जयन्ती मनाई। देश के बड़े-बड़े राजनेता पधारे। डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, राजा महेन्द्रप्रताप, चौ० लहरीसिंह, प्रो० शेरसिंह आदि। देहात में अत्यधिक प्रचार किया गया। गुरुकुल में जयन्ती पर पर्याप्त दान मिला। चारों वेदों से पारायण यज्ञ किया गया। स्वतन्त्रता पश्चात् हिन्दू-मुस्लिम फिसाद में हजारों व्यक्ति मारे गये। अत्यधिक जन धन की हानि हुई। आचार्य जी ने इसमें भी बढ़चढ़कर भाग लिया। जहां गुरुकुल में विद्वान् ब्रह्मचारी तैयार करने की व्यवस्था की गई वहां बाहर स्कूल कालेजों में भी प्रचार किया गया। गांवों में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर लगाकर प्रचार-कार्य को आगे बढ़ाया। उन शिविरों के प्रचार से स्कूल कालेजों में पढ़ने वाले उस समय के अनेक विद्यार्थी आगे चलकर उच्च सरकारी पदों पर आसीन हुए और आर्यसमाज के प्रचार-कार्य में भारी योगदान दिया।

प्रारम्भिक काल में आचार्य जी ने भारतीय सेना की छावनियों में जाकर भी प्रचार किया। परिणामस्वरूप वहां से पर्याप्त धन गुरुकुल संचालन के लिए मिला। फौजी परिवारों के अनेक विद्यार्थी गुरुकुल में प्रविष्ट हुये। अनेक फौजी आचार्य जी से प्रभावित होकर नौकरी छोड़कर आये और आर्यसमाज के कार्य में सहभागी बने।

नंगे पांव, नंगे सिर, चद्दर कटिवस्त्र धारी फकीर ने पैदल घूमकर, साइकिल और मोटर साइकिल पर तथा बाद में जीप के द्वारा जितनी यात्रा की है उतनी शायद किसी अन्य उपदेशक वा प्रचारक ने नहीं की होगी। जिधर चल दिये उधर ही प्रचार की धूम मचा दी। खाने-पीने के नियम कठोर होने के कारण यात्रा में अनेक बार निराहार रहना पड़ता था और प्रायः रूखा-सूखा भोजन खाकर सन्तोष करते थे।

ऐसे महातपस्वी कर्मयोगी संन्यासी के प्रेरणा लेकर हमें भी उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ने का संकल्प लेना चाहिए। -**वेदव्रत शास्त्री**

# ईश्वरप्राप्ति ही सर्वोत्तम

संसार में जीवन प्राप्त करके सर्वोत्तम कार्य क्या है? निज कार्य तथा परोपकार के कार्यों को सिद्ध करने का सर्वोत्तम साधन क्या है? जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य क्या है? सर्वोत्तम प्राप्ति क्या है जिसके प्राप्त करने पर सब कुछ की प्राप्ति हो जाती है? इसका केवलमात्र उत्तर ईश्वरप्राप्ति ही है। इसलिये मनुष्य को प्रेरित करते हुये उपनिषद् में लिखा है-

**इह चेदवेदीत् सत्यमस्ति।**

यदि मनुष्य की कुछ हानि हो जाये, सूई भी गुम हो जाये तो वह दुःखी हो जाता है। यदि बेहद हानि हो जाये तो तिलमिला जाता है तथा कह उठता है कि मेरा सर्वस्व नाश हो गया। वास्तव में सर्वस्व नाश तो ईश्वर को जीवन में न प्राप्त करना ही है। जिस लक्ष्य के लिये यह जीवन मिला है। ऋषि-महर्षियों ने ईश्वर प्राप्त कर संसार को स्वर्ग बनाया। ऋषिवर देवदयानन्द के आने से पहले आर्यावर्त अविद्या के घोर अन्धकार से आच्छादित था। स्वामी जी महाराज ने ईश्वर की प्राप्ति करके 16 बार विष पीकर मनुष्यमात्र को वेदामृत पिलाया। जहालत से निकाला। स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम आदि आर्यों की पहली पीढ़ी ने भी ऋषिवर का अनुकरण कर वेद के संदेश को संसार के कोने-कोने तक पहुंचाने का कार्य किया। इस समय आर्यों की संख्या अत्यधिक बढ़ रही है परन्तु अन्धविश्वास कम होने के स्थान पर बढ़ ही रहा है। परस्पर विचार करने पर यही उत्तर मिलता है कि टेलीविजन आदि अनेक वैज्ञानिक साधनों द्वारा दूषित वातावरण हो चुका है। हमारे पास साधनों की कमी है। अब तो प्रभु ही कुछ कर सकता है। वेदाज्ञानुसार ऋषियों के पदचिह्नों पर थोड़ासा चलके देखा है। गुरुकुल कालवा में सायंकाल दाल बन चुकी थी। प्रातःकाल के लिये न दाल थी न पैसे थे। प्रभु सब ठीक करेगा ऐसा मानकर सर्वस्व ईश्वर पर समर्पित करने पर कार्य पूरा हो जाता है। समय पर दाल आ गई। ऐसी अनेक घटनाएं घटीं जिनसे ईश्वर विश्वास अधिक दृढ़ हो गया। गुरुकुल कालवा से अनेक नैष्ठिक ब्रह्मचारी निकालने में सफलता मिली। गोशाला धड़ौली में रात के समय गोरक्षकों ने बताया कि भूसा मूल्य पर भी आज नहीं मिला है। अगले दिन दोपहर के लिये चारा नहीं था। प्रभु पर दृढ़ विश्वास से यत्न करने पर समय से पहले चारा गोशाला में आगया। इस प्रकार साढ़े तीन हजार गायों पर भारी खर्च में कोई कमी नहीं आई। आत्मशुद्धि व ईश्वरप्राप्ति हेतु प्रतिज्ञाओं के द्वारा भी साथ-साथ परोपकार के कार्यों में सफलता मिलती है। प्रतिज्ञायें ईश्वरप्राप्ति, आत्मकल्याण व परोपकार में सहायक हैं। परोपकार कार्य सिद्ध करने हेतु कई वर्ष तक घी आदि खाना छोड़ परोपकार के कार्य में सफलता मिली है। वेद के मन्त्रानुसार ईश्वर की उपासना के चार फल है-(१) निर्दोष जीवन, (२) निर्वैरता, किये हुये कार्यों में सफलता तथा मोक्ष की प्राप्ति।

वर्तमान में आर्यसमाज में फूट देखकर सभी आर्य चिन्तित हैं। जब तक एक सर्वसम्मत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अनेक सर्वसम्मत प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा नहीं बनती है, मैं प्रातःकाल प्रातराश नहीं करूंगा। सायंकाल तक एक बार ही भोजन करूंगा। सायंकाल भोजन भी कर लेता हूं। आज से आगे दूध ही ग्रहण करूंगा। संसार का उपकार करने तथा ईश्वरप्राप्ति हेतु निर्दोष जीवन बनाना आवश्यक है। निर्दोष जीवन बनाने के लिये ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ आदि पांचों यज्ञ अनिवार्य हैं। प्राणायाम एक बहुत बड़ा साधन है। नैष्ठिक ब्रह्मचारी के सम्मुख टेलीविजन आदि सभी साधन फीके पड़ जाते हैं। २३ मार्च को स्वामी ओमानन्द जी महाराज के नश्वर शरीर त्याग दिवस के अवसर पर स्वामी जी महाराज के जीवन से प्रेरणा लें।

गुरुकुल के १० ब्रह्मचारी भी इस वर्ष स्वामी जी महाराज की सर्वाधिक प्रबल इच्छा की पूर्ति हेतु आजीवन ब्रह्मचारी रहकर ईश्वरप्राप्ति तथा वेदप्रचार की प्रतिज्ञा ले लेते हैं तो उनके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि होगी। मेरा भी यह प्रयास स्वामी जी महाराज के लिये एकमात्र श्रद्धाञ्जलि है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दयालु आर्यों में फूट का रोग समाप्त करे।

**आचार्य बलदेव,** प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

# होलकोत्सव का वास्तविक स्वरूप

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धडौली

संस्कृत में अग्नि में भुने हुये अर्द्धपक्व अन्न को 'होलक' कहते हैं। इस विषय में निम्नलिखित प्रमाण द्रष्टव्य है-

''तृणाग्निभृष्टार्द्धपक्वशमीधान्यं होलकः। होला इति हिन्दी भाषा।''
(शब्दकल्पद्रुमकोशः)

**होलकोऽल्पानिलो मेदःकफदोषश्रमापहः।**
**भवेद् यो होलको यस्य स तत्तद् गुणो भवेत्॥** (भावप्रकाश)

**अर्थ**-तिनकों की अग्नि में भूने हुये अधपके शमीधान्य (फलीवाले अन्न) को 'होलक' (होला) कहते हैं। होला स्वल्पवात है और मेद (चर्बी), कफ और श्रम (थकान) के दोषों को शमन करता है। जिस-जिस अन्न का होला होता है, उसमें उसी अन्न का गुण होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आदि में तृणाग्नि में भूने आषाढ़ी के प्रत्येक अन्न के लिये 'होलक' शब्द प्रयुक्त होता था, किन्तु पीछे से वह शमीधान्यों (फलीयुक्त के होलों के लिये ही रूढ़ हो गया था) हिन्दी का प्रचलित 'होला' शब्द इसी का अपभ्रंश है। आषाढ़ी नवान्नेष्टि में नवागत अधपके यवों के होम के कारण उसको 'होलकोत्सव' कहते थे। उसमें होलक या होले हुतशेष रूप से भक्षण किये जाते थे और उनके सत्तू (सक्तु) का प्रयोग भी इसे पर्व से प्रारम्भ होता था। सत्तू ग्रीष्म का विशेष आहार है और उसके पित्तादि दोषों को शमन करता है।

देवयज्ञ का प्रधान साधन भौतिक अग्नि ही है, क्योंकि वह सब देवों का दूत है। वेद में उसको अनेक बार 'देवदूत' कहा गया है। वही सब देवों को होमे हुये द्रव्य पहुंचाता है इसलिये नवागत अन्न सर्वप्रथम अग्नि के ही अर्पण किये जाते हैं और तदनन्तर मानव देव ब्राह्मणों को भेंट करके अपने उपयोग में लाये जाते हैं। श्रुति कहती हैं- **''केवलाघो भवति केवलादी।''**

**अर्थ**-अकेला खाने वाला केवल पाप खाने वाला है।

मनु महाराज इसी का समर्थन इस प्रकार करते हैं-

**अघं सकेवलं भुङ्क्ते यः पचत्यात्मकारणात्।**
**यज्ञशिष्टाशनं ह्यैतत्सतामन्नं विधीयते॥**

**अर्थ**-जो पुरुष अपने लिये भोजन पकाता है, वह पाप भक्षण करता है। यज्ञशेष वा हुतशेष ही सज्जनों का (भोक्तव्य) अन्न का विधान किया गया है।

तदनुसार ही आषाढ़ी की नवीन फसल के आने पर नये यवों को होमने के लिये इस अवसर पर प्राचीन काल में नवसस्येष्टि, होलकेष्टि, वा होलकोत्सव होता था। जहां प्रत्येक गृह में पृथक्-पृथक् नवसस्येष्टि की जाती थी, वहां प्रत्येक ग्राम में सामूहिक रूप से सम्मिलित नवसस्येष्टि भी होती थी और उसमें सब लोग अपने-अपने घरों में यवादि आहवनीय पदार्थ लाकर चढ़ाते थे। वर्तमान समय में काष्ठ और कण्डों (उपलों) के ढेरों के रूप में होली जलाने की प्रथा प्राचीन सामूहिक नवसस्येष्टियों का विकृत रूप है। उसमें आहवनीय सामग्री का हवन तो कुटिल काल की गति में लुप्त हो गया है और केवल काष्ठ तथा अमेध्य द्रव्यों का जलाना और यवों की बालों को भूनना रूढि वा लकीर के रूप में रह गया है। इस आषाढ़ी नवान्नेष्टि का उपर्युक्त देवयज्ञ द्वारा देवपूजन, विद्वत् समादर, वायु-संशोधन, गृह-परिमार्जन तथा नवीन वस्त्र परिवर्तन धार्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप है।

इस आधुनिक रंग बखेरने और गुलाल उड़ाने की प्रथा का मूल प्राचीन काल में यह प्रतीत होता है कि पुराने भारतवासी इस आमोद-प्रमोद के पर्व पर कुसुमसार (इत्र) आदि सुगंधित द्रव्यों को परस्पर उपहार रूप में व्यवहार में लाते थे। सम्भव है कि सम्मिलित मित्रमण्डली पर गुलाबपाश वा पिचकारियों द्वारा गुलाब जल छिड़का जाता हो और यतः इस वसन्त ऋतु के अवसर पर सब वसन्ती बाना वा पीताम्बर धारण किये होते थे, इसलिये अनुमान होता है कि केशर धुले हुये गुलाब जल का छिड़काव होता है। उससे पीतवस्त्रों के बिगड़ने की कुछ आशंका नहीं होती होगी। आजकल के विकृत विदेशी लाल रंग का यही मौलिक शुद्ध स्वरूप अनुमान होता है। गुलाल का मूल भी पुष्पों का पराग वा पुष्पों की पत्तियों का चूर्ण होगा, जो पटवासक के रूप में काम में लाया जाता होगा। यही बिगड़कर आजकल लाल पुड़िया से चावलों के चूर्ण (आटे) के रूप में गुलाल बन गया है और आंखों को अन्धा करने और मानव मुखों को लाल वानरमुखाकृति देने के अतिरिक्त उसका कुछ भी उपयोग नहीं है। इस वासन्ती आषाढ़ी नवसस्येष्टि होलकोत्सव फाल्गुन सुदी पूर्णिमा के पर्व के विषय में पं० सिद्धगोपाल कविरत्न ने बहुत सुन्दर वर्णन किया है-

**ऋतुराज वसन्त विराज रहा, मनभावन है छवि छाज रहा।**
**बन-बागन में कुसुमावलि की, सुखदा सुषमा वह साज रहा॥**
**यव गेहूं चना सरसों अलसी, सब ही पक आज अनाज रहा।**
**यह देख मनोहर दृश्य सभी, अति हर्षित होय समाज रहा॥**
**उपलक्ष्य इसे करके जग में, शुभ होलक-उत्सव हैं करते।**
**अधपक्व-युवाहुति दे करके, सब व्योम सुगन्ध से हैं भरते॥**
**सब सज्जन-वृन्द अतः जग में, नवसस्य-सुयज्ञ उसे कहते।**
**कुल-वैर-विसार स्नेह-सुने, हुलसे सब आपस में मिलते॥**
**चार पान इलाइची भेंट करें, निज मित्र-समादर हैं करते।**
**हृदयङ्गम गायन-वादन से, मुद से सब हैं मन को भरते॥**

# वेदों में गुरु का सर्वोच्च स्थान

❑ आचार्य वेदमित्र, गुरुकुल आश्रम, बहुअकबरपुर, रोहतक

जहां वेद में गुरु का माहात्म्य अनेक स्थानों में हुआ है वहीं समाज में भी गुरु का ऊँचा स्थान है। उपनिषदों में पदे-पदे संवाद की संतुष्टि गुरु के मुख से दर्शायी गयी है। सभी दर्शनशास्त्र, व्याकरण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, अर्थवेद आदि में गुरुओं के अमृत वचन ही तो हैं श्रीकृष्ण द्वैपायन (व्यास) द्वारा रचित गीता को बहुत कम मनुष्य जानते हैं कि यह गीता व्यास की कृति है। वेदों के सार को प्रश्नोत्तर के रूप में व्यक्त करने के कारण इस ग्रन्थ की छाप उसके उत्तरदाता श्रीकृष्ण को ही इसका रचयिता दर्शाते हैं। ऋषि दयानन्द को गुरु विरजानन्द का अनन्य भक्त तो सभी आर्य कहते हैं लेकिन आर्यजन गुरु के स्वरूप को देखना चाहें तो गुरु दयानन्द द्वारा रचित मानव बनाने की कार्यशाला 'संस्कारविधि' का अवलोकन करें। उपनयन-संस्कार में गुरु शिष्य को बृहस्पति (परमात्मा) द्वारा युक्त करने की बात है। सनातन वेद की शिक्षा को आचार्य, शिष्य को प्रदान करके परमात्मा की आज्ञा का पालन ही तो कर रहा है। योगदर्शनकार ने भी यही कहा है-

**स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।**

पतंजलि ऋषि की इस उक्ति को हम अथर्ववेद के पन्द्रवें काण्ड में स्पष्ट देख सकते हैं। व्रात्य इस काण्ड का देवता है। व्रात्य नाम परमात्मा का है। जो समस्त संसार के पदार्थों का पालक, रक्षक व व्यवस्थापक है जो प्रलयावस्था में भी गतिशील था उस Mover ने समस्त पदार्थों (Unmover) को गति प्रदान की।* सृष्टिरचना उसका स्वाभाविक ज्ञान है-**नीलमस्योदरं लोहितं पृष्ठम्।** प्रथम सूक्त में प्रजापति की शक्तियों का वर्णन है, जो समर्थवान् है। उसने बिना किसी की सहायता के सृष्टि का सृजन किया। इस सृष्टि रचना को लौकिक रूप से समझाने के लिए उसको पूर्व, दक्षिण आदि दिशाओं में सृजन करते दर्शाया गया है। समस्त पदार्थों को बनाते हुए वह वर्ष भर खड़ा रहा। उससे देवता बोले-**व्रात्य किं नु तिष्ठसीति।** तू क्यों खड़ा है। उसने अपने सामर्थ्य को जनाने के लिए उनको कहा-**आसन्दीम् समभरन्तु।** आसन धरो। यहाँ चार पाये आदि द्वारा प्रभु की शक्तियों को लौकिक रूप देकर समझाया गया है। आजकल कहानियों, पटकथाओं का मूल जो वेद से ही निकली हैं। इनका वर्णन वेद की शिक्षा के आधार पर ही है। इस अथर्ववेद के लौकिक वर्णन से वेद भगवान् अनूठा उपदेश देते हैं-

**तं प्रजापतिश्च परमेष्ठी च पिता च मातामहश्चानुव्यचलन्।** सूक्त ६-२५

अर्थात् प्रजापालक (राजा) परमेष्ठी (गुरु) आचार्य वा संन्यासी पिता का दादा का प्रिय धाम होता है जो ऐसे व्रात्य (परमात्मा) को जानता है। राजा और गुरु में उसी प्रभु के विराट् आदि गुण होते हैं जो जगत् को सुव्यवस्थित रखते हैं। इन दोनों पदों राजा और गुरु में 'गुरु' ही आगे श्रेष्ठ बताया क्यों राजा तो प्रजा को अन्न, धन, काम, रक्षा आदि ही देता है गुरु तो उसे मोक्ष तक प्रदान कर देता है जहां दुःखों का अन्त हो जाता है। लेकिन आज इन गुणों को निभाने वाले गुरु कितने हैं। वेदज्ञ योगी ही अविद्या, अन्धकार आदि से दूर होकर निस्पृही प्रभु को असली भक्त होता है जो श्रद्धा से पूजना चाहिए उन्हें ही अन्न, धन, लोक तथा भोग्य पदार्थ देने चाहिएं जिससे यज्ञ संसार में बढ़े।

ऐसा गुरु किसी के यहां आये तो उसका सत्कार करें। उससे पूछे-**व्रात्य क्वात्सीर्व्रात्योदकम्**-हे व्रात्य तूने कहां वास किया था। कुछ भोजन आदि ग्रहण किया कि नहीं। लीजिए जल। **व्रात्य तर्पयन्तु**-तृप्त होकर पीजिए। इसी प्रकार अगर वह व्रात्य (गुरु) किसी प्रजापति (राजा) के यहां जावे तो राजा उसे **श्रेयांसमेनमात्मनो मानयेत्**-अपने से अधिक मान देवे। अश्वपति, जनक, दशरथ आदि उनके लिए राजगद्दी से ही नहीं उठते थे अपितु पूजने हेतु समर्पित होते थे। भारत भूमि पर जब तक धर्म कर्मयुक्त व्यवस्था थी यहां कोई चोर, जार तथा यज्ञ न करने वाले का नामोनिशान नहीं था। उस गुरु का आदर कितना था। इसका वर्णन राम व कृष्ण आदि सभी आर्य (महाभारतपर्यन्त) करते आये हैं। ऋषि दयानन्द की गुरुभक्ति तो देखते ही बनती है। जिस आश्रम में वे स्वयं रह नहीं रहे थे उस गुरुधाम की सफाई करना अपना परम धर्म समझते थे। गुरु के नहाने के लिए शरद् ऋतु में २०-२० घड़े गंगा से पानी लाते थे। गुरु चरणों में अमृत वेदविद्या से नित्य अभिभूत होते थे। आत्मा से सेवा न करने वाले चाहे गुरु चरणामृत करने का कितना दिखावा करें **''तन्माम् अवतु तद् वक्तारम् अवतु अवतु माम् अवतु वक्तारम्''** के वैदिक नाद को साक्षात्कार नहीं कर सकते। अथर्ववेद के लौकिक रूपक को इसीलिए आज प्रत्येक समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

* व्रात्य आसीदीयमान एव स प्रजापतिः समैरयत्-अथर्व० १५-१-१

## सुख-दुःख, महापुरुषों की नजर में

जीवन सुख-दुःख का उतार-चढ़ाव है, जैसे सुख में डूब जाना बुद्धिमानी नहीं है, वैसे ही दुःख में अपने को भूल जाना भी कमजोरी की चरम सीमा है। मनुष्य के सामने एक ध्येय होना चाहिए। उसे पाने के मार्ग में जो भी दुःख-सुख आएं उनका तिरस्कार करते चलना ही समझदारी है। आंधी में कमजोर पेड़ टूट जाते हैं, मजबूत चट्टान की तरह स्थिर रहते हैं।

# रसायन और वाजीकरण चिकित्सा

चिकित्सा का अर्थ रोगनिवृत्तिजनक व्यापार है। अर्थात् जिस व्यापार से रोग उत्पन्न न हो अथवा जिस व्यापार से उत्पन्न रोग शान्त हो जाये उसे चिकित्सा कहते हैं। चरक सूत्रस्थान अ. ९ श्लोक ५ में चरक चिकित्सा शब्द की व्याख्या में लिखते हैं-

**चतुर्णां भिषगादीनां शस्तानां धातुवैकृते।**
**प्रवृत्तिर्धातुसाम्यार्था चिकित्सेत्यभिधीयते॥**

धातुओं के विकृत होने पर उन धातुओं में समता लाने के लिए उत्तम वैद्य आदि चिकित्सा के चार पादों की जो प्रवृत्ति होती है उसे ही चिकित्सा कहा जाता है।

आगे १६वें अध्याय के ३४वें श्लोक में कहा है कि जिन क्रियाओं के द्वारा शरीर में धातुओं की समता होती है वही रोगों की चिकित्सा है-

**याभिः क्रियाभिर्जायन्ते शरीरे धातवः समाः।**
**सा चिकित्सा विकाराणां.................॥**

शरीर में रस रक्त आदि धातुओं को सम करने का नाम चिकित्सा है। धातुओं के सम होने पर रोग दूर हो जाता है।

'**स्वस्थ**' की परिभाषा में भी यही कहा गया है-

**समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।**
**प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः 'स्वस्थ' इत्यभिधीयते॥**

जिसके वात आदि तीनों दोष और जठराग्नि सम है, रसादि सात धातु और मल मूत्र आदि की क्रिया सामान्य है तथा जिसका आत्मा इन्द्रिय एवं मन प्रसन्न है वह व्यक्ति 'स्वस्थ' कहा जाता है।

'**कित् निवासे रोगापनयने च**' धातु से चिकित्सा शब्द बना है जिसका अर्थ है रोग को दूर करना। आचार्य वाग्भट ने शुद्ध और अशुद्ध भेद से चिकित्सा के दो भेद माने हैं-

**प्रयोगः शमयेद् व्याधिं योऽन्यव्याधीमुदीरयेत्।**
**नासौ विशुद्धः शुद्धस्तु शमयेद् यो न कोपयेत्॥**

वह चिकित्सा विशुद्ध नहीं है जो मूल व्याधि को दूर करते हुए अन्य व्याधि को उत्पन्न करदे, जो व्याधि को शान्त करदे तथा दूसरे रोग उत्पन्न न करे, वह चिकित्सा शुद्ध है।

आयुर्वेदशास्त्र के दो प्रयोजन सुश्रुत ने बतलाये हैं-

'**इह खल्वायुर्वेदप्रयोजनम्-व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं च॥**'
(सुश्रुत सूत्रस्थान अ. १)

रोगग्रस्त व्यक्तियों का रोग से छुटकारा आयुर्वेद वा चिकित्सा का प्रथम प्रयोजन है और दूसरा प्रयोजन है स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना, जिससे वह रोगग्रस्त न होकर स्वस्थ बना रहे।

स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और ऊर्जा के लिए ही रसायन और वाजीकरण योगों का प्रयोग किया जाता है यह स्वयं आचार्य चरक लिखते हैं- '**स्वस्थस्योर्जस्करं यत्तु तद्वृष्यं तद्रसायनम्**' (चि. स्था. अ. १ श्लोक ५) स्वस्थ व्यक्ति को और अधिक ऊर्जा प्रदान करने के लिए रसायन और वाजीकरण योगों का प्रयोग किया जाता है।

चरक चिकित्सा स्थान अ. १ के सातवें श्लोक के अनुसार रसायन भेषज का सेवन करने से मनुष्य दीर्घ आयु, स्मरणशक्ति, मेधा (धारणशक्ति), आरोग्य, तरुणावस्था, प्रभा, वर्ण, स्वर का उदार होना, देह एवं इन्द्रियों में उत्तम बल की प्राप्ति, वाक्सिद्धि, प्रणति, कान्ति आदि गुणों को प्राप्त करता है।

रसायन की परिभाषा है-

'**लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम्**'

उत्तम रस आदि धातुओं को प्राप्त करने का जो उपाय है उसे '**रसायन**' कहते हैं।

वाजीकरण (वृष्य) की परिभाषा चरक के अनुसार-

**अपत्यसन्तानकरं यत् सद्यः सम्प्रहर्षणम्।**
**वाजीवातिबलो येन यात्यप्रतिहतो स्त्रियः॥९॥**
**भवत्यतिप्रियः स्त्रीणां येन येनोपचीयते।**
**जीर्यतोऽप्यक्षयं शुक्रं फलवद्येन दृश्यते॥१०॥**
**प्रभूतशाखः शाखीव येन चैत्यो यथा महान्।**
**भवत्यर्च्यो बहुमतः प्रजानां सुबहुप्रजः॥११॥**
**सन्तानमूलं येनेह प्रेत्य चानन्त्यमश्नुते।**
**यशः श्रियं बलं पुष्टिं वाजीकरणमेव तत्॥१२॥**

जो भेषज अपत्य-सन्तानकर अर्थात् पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि का सन्तान=विस्तार करनेवाला हो, जो शीघ्र ही मैथुनविषयक हर्ष को उत्पन्न करनेवाला हो, जिस भेषज के सेवन से अप्रतिहत वेग से अत्यन्त बलवान् घोड़े के समान मैथुन करने में समर्थ होता है, जिसके प्रयोग से स्त्रियों के लिए अत्यन्त प्रिय होता है और जिससे शरीर में रस, रक्त, मांस आदि की पुष्टि होती है, जिससे वृद्धावस्था हो जाने पर भी शुक्र का क्षय नहीं होता, जिससे व्यक्ति फलवाला=सन्तानवाला होता है। जिससे अनेक शाखावाले वृक्ष की तरह होता है जिस प्रकार चैत्य (वट पीपल आदि वृक्ष) पूज्य होता है उसी प्रकार वाजीकरण भेषज का सेवन करनेवाला व्यक्ति पूज्य होता है। वह अनेक व्यक्तियों की दृष्टि में श्रेष्ठ होता है और अनेक प्रजाओं में वह सुबहुप्रज=बहुत उत्तम सन्तानवाला है, ऐसा कहा जाता है। यह वाजीकरण का प्रयोग सन्तान उत्पत्ति करने का मूल है। संसार में वह व्यक्ति सन्तानमूलक अनन्त सुख को प्राप्त करता है और मृत्यु के पश्चात् आनन्त्य=मोक्ष सुख को प्राप्त होता है।

जिन औषधियों के सेवन करने से यश, श्री=शोभा वा लक्ष्मी, बल तथा पुष्टि की वृद्धि होती है उसे ही **वाजीकरण** कहते हैं।

रसायन और वाजीकरण (वृष्य) दोनों प्रकार के योगों का प्रयोग स्वस्थ पुरुष की शक्तिवृद्धि के लिए किया जाता है। परन्तु वृष्य की अपेक्षा रसायन का प्रयोग रोगनिवारण के लिए अधिक किया जाता है और वृष्य का प्रयोग रोगनिवारण के लिए भी किया जाता है परन्तु विशेषकर इसका प्रयोग शक्तिवृद्धि के लिए ही किया जाता है। यही दोनों में अन्तर है।

शार्ङ्गधर में रसायन को वार्धक्य और व्याधिनाशक कहा है- '**रसायनं तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम्।**'

चरक ने रसायन और वाजीकरण का वर्णन चिकित्सा स्थान के प्रारम्भ में किया है और सुश्रुत ने चिकित्सा स्थान के मध्य में तथा वाग्भट्ट ने उत्तरतन्त्र में किया है।

सामान्य सज्जनों की सुलभता और समय की बचत के लिए आचार्य प्रकाशन दयानन्दमठ, रोहतक से '**रसायन और वाजीकरण योग**' पुस्तक प्रकाशित की गई है जिसमें हरयाणा के प्रसिद्ध चिकित्सक चौ० हरिसिंह जी चिड़ी-निवासी के स्वानुभूत और अन्य चिकित्सकों द्वारा प्रयुक्त रसायन, वाजीकरण, लिंगवृद्धि आदि के प्रमुख योग प्रकाशित किये हैं। सामान्यजन, रोगी और चिकित्सक इनका प्रयोग अपनी आवश्यकतानुसार करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

**-वेदव्रत शास्त्री**, आयुर्वेदाचार्य
रजिस्टर्ड चिकित्सक (पार्ट-१) नं० १४१६

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| | |
|---|---|
| १. आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर | २५ से २७ मार्च ०५ |
| २. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| ३. महात्मा फग्गुराम जी स्मृति पर्व (स्थान-विश्वकर्मा धर्मशाला बड़ोदा रोड काठमण्डी गोहाना जिला सोनीपत) | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| ४. योगसाधना व चिकित्सा शिविर आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जिला झज्जर | २८ मार्च से ३ अप्रैल ०५ |
| ५. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | २ से ५ अप्रैल ०५ |
| ६. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत (देवी मेले के उपलक्ष्य में वेदप्रचार) | १६-१७ अप्रैल ०५ |
| ७. आर्यसमाज रेवाड़ी | ९ से १० अप्रैल ०५ |

**—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

## विशेष छूट

**आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय में निम्न साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध है।**

| पुस्तक | | मूल्य |
|---|---|---|
| १. धर्म-भूषण | २० प्रतिशत छूट | १०-०० |
| २. धर्म-प्रवेशिका | | ५-०० |
| ३. वैदिक सिद्धान्त सार | | १५-०० |
| ४. वैदिक उपासना पद्धति | | ८-०० |
| ५. प्राणायाम का महत्त्व | | १५-०० |
| ६. श्रीमद्दयानन्दप्रकाश | आधे मूल्य में | ५०-०० |
| ७. पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित्र | | १०-०० |
| ८. हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान | | ३०-०० |
| ९. पंजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन | | १००-०० |
| १०. विजडम ऑफ ऋषिज | | ७२-०० |
| ११. सरफरोशी की तमन्ना | | २०-०० |
| १२. सत्यार्थप्रकाश | | २५-०० |
| १३. आर्यसमाज क्या है? | | ५-०० |
| १४. हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास | | ५-०० |
| १५. हमारा फाजिल्का | | ५-०० |
| १६. श्लीपद हाथी पांव चिकित्सा | | २-०० |
| १७. शराबबन्दी शंका-समाधान | | १-०० |
| १८. आदर्श धातु रूपावली | | ५-०० |
| १९. ओ३म् ध्वज | | १५-०० |
| २०. दैनिक यज्ञ प्रकाश | | २-५० |
| २१. आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो लेखक-प्रो० रामविचार | | १०-०० |
| २२. स्वामी दयानन्द और वेदों पर आक्षेपों का उत्तर | | २०-०० |
| २३. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका | | ५०-०० |

**नोट :-**

१. अगर आप डाक से मंगवाना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड बुक पोस्ट+पैकिंग खर्च अलग से लगेगा।
२. रुपये पहले भेजने होंगे।
३. बैंक ड्राफ्ट 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम भेजें।

**-सत्यवीर शास्त्री**, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

# मधुऋतु आई सावन की फिर लेकर नई बहार

होली शरद ऋतु के अन्त और ग्रीष्म ऋतु के आगमन के बीच वसन्त ऋतु की मादकता के मध्य मनाया जाने वाला यह त्यौहार हर्षोल्लास से परिपूर्ण है। बड़ा इंतजार रहता है। इस पर्व का दिनभर तो रंगों की खुशबू और रात्रि को कवि सम्मेलन, मूर्ख सम्मेलन एवं परिवार मिलन समारोह। चारों ओर हँसी व मुस्कान। इसीलिए होली को मनमोहक पर्व कहा गया है। यह हमारे प्रमुख पर्वों में से एक है।

चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को ही यह पर्व सम्पूर्ण भारतवर्ष में रंगों के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। इसे सामान्य भाषा में धुलैण्डी भी कहते हैं। इस दिन लोग दिल खोलकर होली खेलते हैं। जैसे-जैसे सूर्य अपना प्रकाश धरती पर बिखेरने लगता है-वैसे-वैसे बच्चों के हाथों में थमी पिचकारियां रंग उड़ेलने लगती हैं। नवयुवकों की मस्ती देखने वाली होती है। बिखरे हुए बाल, बालों में विभिन्न प्रकार के रंग, कपड़ों में इत्र की खुशबू, चेहरे पर मुस्कान सबके हृदयों को मोह लेती है। नवयुवतियों की मस्ती तो और भी हृदयस्पर्शी होती है। ऐसे समय में वृद्ध ईश्वर से यही कामना करते हैं कि उन्हें उनका यौवन वापिस मिल जाए। रंगों की बौछार से सड़कें और गलियां रंग-बिरंगी हो जाती हैं। इस दिन सब एक-दूसरे से गले मिलते हैं। भजन व कीर्तन करती हुई टोलियां इतनी सुन्दर लगती हैं कि सभी के हृदय खुशी से झूमने लगते हैं। बाजारों में केवल विभिन्न प्रकार के रंग व गुलाल ही देखने को मिलते हैं। आनन्द और उल्लास का वातावरण केवल होली के दिन ही देखने को मिलता है।

होली से एक दिन पूर्व फाल्गुनी पूर्णिमा की रात्रि में होलिकादहन होता है। एक स्थान विशेष पर किसी एक वृक्ष की डाल को गाड़ दिया जाता है और फिर उसके चारों ओर लकड़ियों का ढेर लगा दिया जाता है। रात के समय इसे आग लगा दी जाती है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसी समय प्राचीनकाल में होलिका का अग्नि में जलन हो गया था लेकिन प्रह्लाद बच गया था। होलिका अपने भाई हिरण्यकश्यप के कहने पर ही प्रह्लाद को अपनी गोद में बैठाकर अग्नि में प्रवेश कर गई थी। उसे यह वरदान था कि वह अग्नि में बैठकर भी सुरक्षित रहेगी लेकिन हुआ प्रतिकूल। प्रह्लाद सुरक्षित बच गया लेकिन होलिका जल गई। आज भी रात के समय जब लकड़ियों को आग लगा दी जाती है तब आसपड़ोस की स्त्रियां यहाँ अग्नि के चक्कर लगाते-लगाते सुन्दर भजन व गीत गाती हैं। कैसा मनमोहक पर्व है यह।

होली केवल रंगों का त्यौहार ही नहीं है बल्कि रसीले पकवानों का भी त्यौहार है। इस दिन घर-घर में स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं। बाजारों में भी सायंकाल मिठाई की दुकानों पर विशेष रौनक देखने को मिलती है। लोग स्नान करके नए कपड़े पहनकर एक-दूसरे के घर भी मिलने जाते हैं। नवविवाहितों के लिए यह एक खुशी से भरपूर पर्व है।

आओ हम सब हर्ष, उल्लास, आनन्द और सामाजिक एकता के त्यौहार होली को बड़ी शालीनता एवं शिष्टता से मनाएं। होली का आगमन ऐसे समय होता है जब खेतों में गेहूं और सरसों आदि फसलें पक कर तैयार हो जाती हैं। किसान अब इन्हें काटने की तैयारी में होता है। ऐसे समय यदि मौसम अनुकूल रहता है तो किसान अपनी पकी फसल को देखकर खुशी से झूमने लगता है।

मथुरा एवं वृन्दावन में रंगों का त्यौहार होली बड़ी शान-शौकत से मनाया जाता है। पानी बरसाने की होली तो कई दिनों तक चलती है। सत्य यही है कि यह पर्व सब प्रकार की भेदभाव की दीवारें तोड़ने में अपनी अहम् भूमिका निभाता है। आज के दिन जातिगत, सम्प्रदाय एवं धर्म की भावनाएं टूट जाती हैं और लोग एक दूसरे को गले मिलते हैं।

**सब जन हों संगठित, बढ़े एकता का आधार।**
**आया होली का त्यौहार, आया होली का त्यौहार।**

-**कृष्णलाल वोहरा**, प्रिंसिपल, आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, सिरसा

## स्वास्थ्य चर्चा....

**त्रयः उपस्तंभा इत्याहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति।**
**एभिस्त्रिभिर्युक्तैरुपस्तब्धमुपस्तम्भैः शरीरम्।**
**बलवर्णोपचयोपचितमनुवर्तते यावदायुः संस्कारात्।**

चरक संहिता के इस उद्धरणानुसार पूर्ण स्वस्थ मानव-शरीर तीन उपस्तम्भों (आधारों) पर निर्भर रहता है। आहार अर्थात् संतुलित भोजन, स्वप्न (निद्रा) अर्थात् पूर्ण विश्राम और ब्रह्मचर्य अर्थात् संयम। इन तीनों उपस्तम्भों को युक्तियुक्त रखने से शरीर सदा ही पूर्ण स्वस्थ रहकर दीर्घायु होता है।

कितना सत्य और सुनिश्चित सिद्धान्त है। जैसे तीन पायों की तिपाई तभी तक खड़ी रह सकती है, जब तक उसके तीनों पाये यथावत् रहें। एक भी पाया टूटा तो तिपायी गिर जायेगी। यही स्थिति पूर्ण स्वस्थ शरीररूपी तिपाई की है।

तीन उपस्तम्भों पर आधारित पूर्ण स्वास्थ्य का यह आयुर्वेदीय सिद्धान्त अवस्थानुसार बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबके लिए समान रूप से हितकर और व्यावहारिक है। स्वाभाविक रूप से पूर्ण स्वस्थ और दीर्घजीवी बनने के लिए इन तीनों उपस्तम्भों को समान रूप से सुदृढ़ रखना चाहिए। एक के बिगड़ते ही शेष दो स्वतः अशक्त हो जावेंगे। आहार अर्थात् भोजन में नियमित न रहें तो निद्रा और ब्रह्मचर्य कदापि यथावत् नहीं रह सकते। इसी प्रकार निद्रा (विश्राम) में नियमित न रहे तो आहार में अनियमितता अपने आप आ जायेगी। आहार या विश्राम में असंतुलन से ऐसी मनःस्थिति रह ही नहीं सकती, जिसमें ब्रह्मचर्य (संयम) का यथोचित पालन हो सके।

निश्चित समय पर, नियमित भूख लगते ही, पाचनशक्ति के अनुकूल उचित मात्रा में संतुलित और पौष्टिक भोजन करना, शरीर थकने पर उचित विश्राम लेना और निश्चित समय पर सुख निद्रा में सोना, इन्द्रियों का सीमित और संतुलित उपभोग करते हुए ब्रह्मचर्य से रहना, ये तीन बातें पूर्ण स्वास्थ्य के मूल आधार हैं।

स्वास्थ्य साधन के प्रसंग में ब्रह्मचर्य का अर्थ इन्द्रिय संयमपूर्वक जीवन रखना तो है ही, इसके अतिरिक्त ब्रह्मचर्य से यहां उत्कृष्ट आचरण का भी संकेत है।

इन तीन स्तम्भों पर विस्तार से अगले अंक में लिखेंगे।

-**स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती**, योगस्थली आश्रम, महेन्द्रगढ़

## ऋषिवर का जीवनदान

खुद विष पीकर अमृत बांटा,
वह दयानंद बलिदानी था।
सोये लोगों को जगा दिया,
वह देशभक्त स्वाभिमानी था।
थी धर्म की शिक्षा दी जिसने,
वह धर्मपरायण दानी था।
स्वेच्छा से घर का त्याग किया,
त्यागी तपस्वी कल्याणी था।
जहां छाया घना अंधेरा था,
वह ज्योतिपुंज प्रकाश किया।

वेदों का अमृत ज्ञान पिला,
जन-जन का बहुत विकास किया।
जकड़े भारत को राह दिखा,
आजाद विहग-सा बना दिया।
दासत्व का बंधन काट दिया,
घनघोर तिमिर था छांट दिया।
अति रूढ़िवाद समूल मिटा,
विधवा महिला को मान दिया।
'बंसल' दुःखी अनाथों को,
ऋषिवर ने जीवनदान दिया।

-**रामनिवास बंसल** आश्रम रोड़, चरखी दादरी (भिवानी)

# आर्य-संसार

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित**

## आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

**शुक्रवार दिनांक २५ मार्च, २००५**

**समय : सांय ३.३० बजे से ७.३० बजे तक**

**स्थान : तालकटोरा गार्डन, विलिंग्डन क्रीसेन्ट रोड, नई दिल्ली**

## वैदिक कन्या गुरुकुल का उद्घाटन १० अप्रैल को

आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक १० अप्रैल, २००५ को वैदिक कन्या गुरुकुल इन्दिरा कॉलोनी बहालगढ़ जिला सोनीपत का उद्घाटन उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर दिनांक ३ अप्रैल २००५ से पूज्यचरण स्वामी जीवनानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जारहा है। विख्यात वैदिक मनीषी डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य प्रधानाचार्य के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे। इस अवसर पर अनेक संन्यासी, राजनेता तथा क्रान्तिकारी भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

**-राजकुमार सैनी,** मंत्री वैदिक कन्या गुरुकुल बहालगढ़, जि० सोनीपत

## महोत्सव पर महर्षि दयानंद के जीवन पर प्रकाश डाला

सोहना। आर्य माध्यमिक विद्यालय में आर्यसमाज के तत्वावधान में चल रहे महर्षि दयानन्द महोत्सव एवं बोध-दिवस पर चल रहे कार्यक्रम में वक्ता सतीश शास्त्री ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द क्या थे। इस प्रश्न का सही उत्तर यह है कि वे क्या नहीं थे। देव और आदर्श मानव के प्रतीक सत्य के प्रसारक और धर्म के ज्योतिस्तम्भ दया के पुंज आनंद के स्रोत और मानवता के संरक्षक देवतुल्य ऋषि दयानन्द सा व्यक्ति भूमंडल पर कभी-कभी आता है। महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे। स्वामी दयानन्द कहते थे कि संसार के मानवो! तुम परस्पर एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखो, कभी किसी को हानि न पहुंचाओ व दूसरों के सुख को अपना सुख समझो व दूसरों की मुसीबतों को टालने के लिए अपने आपको मुसीबत में डाल देना अपना कर्तव्य समझो। स्वामी दयानन्द सत्य के परम पुजारी थे। अपने अनुयायियों को सत्य का पुजारी बनाना चाहते थे। उनका अडिग विश्वास था कि वेद सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद की विचारधारा स्थापित करना ऋषि का चरम लक्ष्य व सिद्धांत होता है।

इस कार्यक्रम में सुबह आर्यसमाज मंदिर से प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। सारे शहर में होकर दयानंद आर्य विद्यालय में समापन कर दिया गया व उसके पश्चात् आर्यसमाज मंदिर में यज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की तहत महाशिवरात्रि को भी आर्यसमाज के वक्ता अपने विचार रखेंगे व उसके पश्चात् इस कार्यक्रम का समापन किया जाएगा।

## महाशय हीरालाल स्मृति दिवस समारोह पर वेदकथा

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर में 'महाशय हीरालाल आर्य' के २६वें स्मृति दिवस पर आचार्य डा० ओमदत्त जी द्वारा वेदकथा का आयोजन किया गया। १९ से २२ फरवरी तक आचार्य जी ने मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी व योगिराज श्रीकृष्ण के अनेक प्रसंगों की जानकारी दी व ईश्वर के निज नाम "ओ३म्" की विस्तृत व्याख्या की। २२ फरवरी को प्रातः यज्ञोपरान्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० शोभाराम 'प्रेमी' ने की। महाशय भरतसिंह ने भजनों के माध्यम से महाशय हीरालाल जी की यादों को ताजा कर दिया। मा० धर्मपाल, मा० सत्यवीर आर्य, स्वामी व्रतानंद, महात्मा धर्मवीर, पं० राजकुमार सभी ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुये कहा कि हीरालाल जी हीरों की खान थे। हमें अनेक आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिये।

**-दयाराम आर्य अध्यापक,** प्रधान आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर, जिला रेवाड़ी

## जिला रोहतक में वेदप्रचार की धूम

ग्राम मकड़ौली खुर्द जिला रोहतक में उत्तर भारत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० रामनिवास जी आर्य की भजनमण्डली के सुन्दर भजन हुये। दो दिन तक पं० रामकुमार जी आर्य सभा भजनोपदेशक की भजनमण्डली द्वारा वैदिक प्रचार हुआ। ढोलक मास्टर मीरसिंह जी तथा सहायक शिवनारायण जी के भी सुन्दर भजन हुये। ढोंग पाखंड अंधविश्वास के जाल से बचने बारे विशेष प्रकाश डाला गया। सभामंत्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री का भी उपदेश हुआ। लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। नवीन आर्यसमाज का गठन किया गया। पं० रामकुमार जी आर्य सभा भजनोपदेशक की अध्यक्षता में आर्यसमाज मकड़ौली खुर्द का चुनाव सर्वसम्मति से किया गया। पदाधिकारी निम्न प्रकार हैं-

१. प्रधान-श्री सतवीर आर्य, २. उपप्रधान-श्री जिलेसिंह आर्य, ३. मंत्री-मास्टर सुभाष आर्य, ४. उपमंत्री-शमशेरसिंह आर्य, ५. कोषाध्यक्ष-मास्टर कर्णसिंह आर्य, ६. पुस्तकालय-सुमितकुमार आर्य, ७. प्रचारमंत्री-जसवन्तसिंह आर्य।

# यज्ञ समारोह



झज्जर। गुरुकुल झज्जर के तत्त्वावधान में स्वर्गीय महाशय महाराम जी की छमाही पुण्यस्मृति में महर्षि दयानंद शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह में यज्ञ ब्रह्मा श्री फतेहसिंह भंडारी ने बताया कि **"होता है सारे विश्व का, कल्याण यज्ञ से। जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान् यज्ञ से॥ चाहे अमीर है कोई, चाहे गरीब है। जो नित्य यज्ञ करता है, वह खुशनसीब है॥"** कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी व्रतानंद जी मोहदीपुर रेवाड़ी ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कारविधि में लिखते है-**'मनुष्य को योग्य है कि सब मंगलकार्यों में अपने और पराये कल्याण के लिए यज्ञ द्वारा ईश्वरोपासना करें।'** कार्यक्रम की मुख्यातिथि प्राचार्या (प्रिंसिपल) श्रीमती कौशल्या जी ने बताया कि उन्नति चाहनेवाले वाणी का प्रयोग बहुत ही सावधानी से करे अर्थात् आवश्यक होने पर ही बोले, सत्य ही बोले, सत्य भी मधुर भाषा में बोले और वह भी हितकारी होना चाहिए। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ईश्वरसिंह तूफान ने वर्तमान में तेजी से फैल रहे पाखंड के प्रति व्यक्तियों को सचेत भजनों के माध्यम से किया।

वैदिक क०व०मा० विद्यालय झज्जर की श्रीमती सत्यवती जी ने ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्योपासना) के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भलीभांति ध्यान किया जाए परमेश्वर का जिसमें, वह सन्ध्या है। श्री महेन्द्र जी शास्त्री ने बच्चों को संस्कारित करने पर जोर दिया। मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा को सुसंस्कारी (उत्तम) बनाने के लिए नामकरण, यज्ञोपवीत इत्यादि १६ संस्कारों का करना कर्त्तव्य है। शिक्षण केन्द्र के संस्थापक श्री रतिराम ने आगन्तुकों का धन्यवाद किया। श्रीमती मामकौर देवी (माता श्री सुभाष आर्य) ने मुख्यातिथि को स्मृतिचिह्न प्रदान किया। **-सुभाष आर्य**

## शिवरात्रि पर्व सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत के तत्त्वावधान में शिवरात्रि का पावन पर्व आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के बोध दिवस के रूप में शान्ति नगर (चार मरला) कालोनी में आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान श्री सुरेन्द्रकुमार खुराना की प्रधानता में धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य कृष्णदेव आर्य कौटिल्य थे। उन्होंने बताया कि यज्ञ करना सबसे उत्तम कर्म है। सुख, शांति, स्वास्थ्य, कीर्ति, दीर्घायु, विद्या, बल, पुत्र, पशु, सम्पत्ति की इच्छा करने वाले यज्ञ करें। यज्ञ से उत्तम परिवार की प्राप्ति होती है।

यज्ञ के पश्चात् कुमारी कुमुद मदान के सुन्दर एवं प्रभावशाली गीतों का जनता ने आनन्द प्राप्त किया। आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री हरिचन्द स्नेही ने महर्षि स्वामी दयानन्द के उपकारों की चर्चा की तथा उन्होंने कुशल, प्रभावशाली, योग्य एवं गतिशील ढंग से मंच वेदी का संचालन किया।

इस कार्यालय के प्रमुख वक्ता एवं आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् प्राध्यापक श्री राजेन्द्रमुनि जी जिज्ञासु (अबोहर) ने स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं की चर्चा करते हुए उन्हें महान् समाजसुधारक, वेदोद्धारक, गोरक्षक, देशभक्त, स्त्रीजाति के उद्धारक, महान् योगी, परम संत, अछूतोद्धारक एवं जगत् गुरु की संज्ञा से सुशोभित किया।

**-हरिचन्द स्नेही,** वरिष्ठ उपप्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत

पुण्यतिथि पर विशेष-

# नारी शिक्षा की ज्योति महान् बाप की

❑ महेन्द्र शास्त्री, न्यात, जिला सोनीपत

महान् बेटी, १० मार्च सन् २००३ को प्रातः ८ बजे यह देवी इस संसार से सदा के लिए विदा हो गई। ज्योति में ज्योति मिल गई। शेष रह गई गौरवमयी यशोगाथा। सन् १९४२ में भक्त जी के बलिदान के बाद सारा गुरुकुल का कार्यभार बहन जी को सम्भालना पड़ा। उस समय केवल ३-४ कच्चे कमरे थे। उस जमाने में न सड़क थी, न चारदीवारी थी, न कोई सिक्योरिटी गार्ड थे, न धन था, था तो केवल ईश्वर का सहारा और इलाके के लोगों का प्यार। आदरणीया बहन ने सड़क भी बनाई और एक कमरा बनाकर गुरुकुल को विश्वविद्यालय स्तर का बनाया। बहन ने अपना सारा जीवन महिला जगत् की शैक्षणिक, धार्मिक, सामाजिक सेवा में समर्पित कर दिया। नारीसेवा, नारीशिक्षा, नारी उद्धारकर्त्री पूर्णरूप से एक दिव्य नारी थीं। उन्होंने अपने समस्त जीवन व सांसारिक सुखों को बलिवेदी पर न्यौछावर कर एक अदम्य, उत्साह व लग्न से काम करते हुए जीवन के अंतिम क्षणों तक नारी उत्थान में जुटी रही। कटु व विषम परिस्थितियों में उन्हें इस संस्था रूप नैया को बड़े कुशल खेवट की भांति संभालकर हर तूफान से निकालकर किनारे पहुंचाया है।

## भजन

अब नौजवानों की, फिलहाल जरूरत है॥ टेक॥
कोई विरजानन्द बन जावे-दयानन्द से अनेक बनावे।
ऐसे अरमानों की, फिलहाल जरूरत है॥ १॥
कोई दयानन्द फिर आवे, पाखण्ड सभी मिट्टावे।
ऐसे विद्वानों की, फिलहाल जरूरत है॥ २॥
श्रद्धानन्द लेखराम आजां, सब बिगड़े काम बनाजां।
ऐसे अभयमानों की, फिलहाल जरूरत है॥ ३॥
स्वतन्त्रानन्द आवें, लोहारू-सा जयघोष लगावें।
ऐसे तरानों की, फिलहाल जरूरत है॥ ४॥
रणजीत सूरजमल हों, सर छोटूराम से दल हों।
उन जैसे बयानों की, फिलहाल जरूरत है॥ ५॥
राजगुरु सुखदेव भगतसिंह, आवें फिर चन्द्रशेखर बिस्मिल।
ऐसे उदयभानों की, फिलहाल जरूरत है॥ ६॥
कोई लोटनसिंह बन जावे, मरती गऊ बचावे।
ऐसे पहलवानों की, फिलहाल जरूरत है॥ ७॥
आवें महारानी लक्ष्मीबाई-मैत्री गार्गी सी विद्वताई।
उन से कारनामों की, फिलहाल जरूरत है॥ ८॥
घर-घर यज्ञ हवन हो, शुद्ध गगन पवन हो।
वैदिक यजमानों की, फिलहाल जरूरत है॥ ९॥
विश्वम्भर तुम से गाने, दुनिया सारी जाने।
नौनन्दसिंह से गानों की, फिलहाल जरूरत है॥ १०॥

-डॉ० विश्वम्भर छिल्लर आर्य विद्यावाचस्पति, ग्राम-छिल्लर डाढ़ई पो०-दूधवा, जिला भिवानी (हरयाणा)

**जन्म**-१४ अगस्त १९१४ ई को पिता भक्त फूलसिंह एवं माता लक्ष्मीदेवी ग्राम जूआं माहरा जिला सोनीपत में हुआ। माता-पिता धार्मिक होने के कारण सद्गुण आपको विरासत में मिले।

**शिक्षा**-कन्या गुरुकुल देहरादून में सन् १९१९ से १९३० तक हुई। यहाँ उच्च शिक्षा एवं उच्च आदर्श सीखने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

बहन जी मधुरभाषी, त्यागी-तपस्विनी, विनम्रता की मूर्ति, नारी-रत्न, भारत-रत्न, महान् राष्ट्रभक्त, समाज सेविका, पतितोद्धारक, असाधारण मातृशक्ति थी जिन्होंने अपने खून और पसीने से गुरुकुलों का निर्माण किया।

कन्या गुरुकुल चलाने के लिए बहन जी ने दिल्ली, कलकत्ता, यू.पी., हिसार आदि स्थानों की यात्रा की और धनसंग्रह किया, धन उधार लिया, चिमनी भट्ठा लगाया, सीमेंट लेने दादरी गई, ग्रान्ट लेने हजारों बार चण्डीगढ़ गई, कितने कष्ट सहन करने पड़े बहन जी को यह लिखना मेरी लेखनी के बस से बाहर है। सन् १९३६ से १९६० तक हाईस्कूल चलाया उसके बाद जे०बी०टी० कक्षाओं को प्रारम्भ किया। गुरुकुल हेतु जमीन दान में प्राप्त की तथा उसके लिए नहर के पानी का प्रबन्ध किया। सन् १९६७ ई० में महिला महाविद्यालय की स्थापना की तथा उसके लिए भवन एवं स्टाफ का प्रबन्ध किया। यहां प्रतापसिंह कैरो से लेकर ओमप्रकाश चौटाला तक सभी मुख्यमंत्रियों का सहयोग मिलता रहा। सन् १९६८ ई० में बी०एड० कॉलेज की स्थापना की तथा उसके लिए भवन एवं स्टाफ की व्यवस्था करने में बहन को बहुत कष्ट झेलने पड़े। सन् १९३७ ई० आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना एवं विकास किया। चिकित्सालय का निर्माण किया। इसके बाद वाटर-वर्क्स का निर्माण करवाया इसके बाद सन् १९८४ ई० में महिला तकनीकी संस्थान का निर्माण कराया। इसके बाद सन् १९९९ ई० में गुरुकुल भैंसवाल हेतु प्रोफेसर सत्यपाल की मदद से बहुतकनीकी कॉलेज का निर्माण कराया। और अपने अंतिम समय में विधि महाविद्यालय को आरम्भ कराया। संस्थाओं के मुख्य द्वारों का निर्माण दानियों से कराया। इन उत्तम कार्यों हेतु बहन जी को भारत सरकार ने पद्मश्री से विभूषित किया। अलग-अलग समय में अनेक बार बहन जी को सम्मानित किया गया। वृद्धावस्था में गुरुकुल रक्षार्थ १६ दिनों तक अनशन किया एवं धरना दिया और विजय प्राप्त की।

**१. दिन-महीने-साल निरन्तर आते-जाते रहेंगे।**
**कीर्ति स्तम्भ बहन जी आपका गुणगान गाते रहेंगे॥**
**२. सर्वस्व त्याग की जब भी किसी से बात कोई करेगा।**
**सुभाषिणी के नाम से गाथा की शुरुआत करेगा।**



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०५
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८२




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक १८ २८ मार्च, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## २३ मार्च १९३१ को भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव के बलिदान दिवस पर विशेष....

# ऐसे थे महाबलिदानी वीर भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

जो बलिदानी वीर शहीद अपने राष्ट्र के स्वतन्त्रता यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देते हैं-वे संसार के इतिहास में ऐसे चिरस्मरणीय अद्भुत कार्य कर जाते हैं, जो बहुत कठिन होते हैं। इस स्वतन्त्रता की यज्ञवेदी पर अपने शीश चढ़ाकर सदैव के लिये अमर हो जाते हैं, जिनमें वीर भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव भी इसी श्रेणी में आते हैं।

**१. वीर भगतसिंह**-पंजाब की वीर भूमि में जालंधर जिले के गांव खटकर-कलां झण्डाजी में आसौज महीने की शुक्ला तिथि १३, संवत् १९६४, अर्थात्-१९०७। देशभर में ख्यातिप्राप्त आर्य परिवार में पिता श्री किशनसिंह तथा माता श्री विद्यादेवी ने एक सुन्दर से बालक को जन्म दिया था। इन तारीखों में कार्यवश नेपाल गए पिता घर लौटे थे, तो चाचा स्वर्णसिंह जी भी जेल की यातनाएं झेलकर वापस आए थे और इसी तारीख में दूसरे चाचा अजीत सिंह के भी माण्डले जेल से मुक्त होने का समाचार भी प्राप्त हुआ था। ऐसे दिन शनिवार को जन्मे बालक की दादी ने बड़े प्यार से बालक का नाम भागों वाला रखा था, यही था भगतसिंह।

सपूत के पांव पालने में ही पहचाने जाते हैं। पिता श्री किशनसिंह ख्यातिप्राप्त थे। एक दिन उनके घर डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर के प्राध्यापक जयचन्द्र जी विद्यालंकार आए थे। तब उन्होंने बड़े प्यार से छोटे से बालक भगतसिंह को अपने पास बुलाकर पूछा कि तुम बड़े होकर क्या करोगे? बालक भगतसिंह ने कहा-खेती करूंगा और वह भी बंदूकों और तलवारों की। छोटे से बालक की यह बात सुनकर प्रो० जयचन्द्र जी दंग रह गए। जाते समय किशनसिंह जी से कह गए कि-यह बालक एक दिन इतिहास में आपका नाम रोशन करेगा। आगे जाकर जीवन में सचमुच भगतसिंह ने बंदूकों की ही खेती की थी। इनके चाचाओं का प्रभाव भगतसिंह पर बचपन से ही पड़ गया था। यही आजादी के संस्कार भगतसिंह पर भी पड़े।

भगतसिंह के पूज्य दादा अर्जुनसिंह जी महर्षि दयानंद के उपदेशों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में आए थे। वे प्रतिदिन सत्यार्थप्रकाश का पाठ करते थे, उसे अपनी कमर पर बांधे रहते थे। दादा अर्जनसिंह ने एक पुस्तक लिखकर यह सिद्ध किया था कि सभी गुरु यज्ञोपवीतधारी आर्य थे। पिता किशनसिंह पर भी ऐसा रंग चढ़ा कि वे भी आर्यसमाज के प्रचारक बन गए। आर्यसमाज द्वारा लाहौर में स्थापित 'अनाथालय' का काम देखते थे। बड़े चाचा अजीतसिंह भी आर्यसमाजी थे। आर्यसमाज से ही उन्होंने देशभक्ति का पाठ पढ़ा था। आप ने पंजाब केसरी लाजपतराय से मिलकर पंजाबभर में आजादी की ज्वाला प्रचण्ड की थी। आप बर्मा की माण्डले जेल में रहे। वहां से छूटने पर विदेशों में चले गए। वहीं पर आजादी की लड़ाई लड़ते रहे। देश की आजादी की लड़ाई १९४७ तक चली। वे आजादी मिलने के कुछ ही समय पूर्व स्वदेश लौटे और ५-६ दिन बाद ही डलहौजी में उनका स्वर्गवास हो गया। आज तक उनका कोई स्मारक भी न बना। छोटे भाई सुवर्णसिंह भी ऐसे ही थे।

**भगतसिंह का जनेऊ संस्कार व गायत्री मंत्र का स्मरण**-ऐसे दृढ़ आर्य परिवार में जन्म लेकर भगतसिंह ने होश संभाला। डी०ए०वी० हाई स्कूल लाहौर में शिक्षा प्राप्त की। जहां भाई परमानंद जी जैसे गुरु थे। आर्यसमाज के महोपदेशक, शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० लोकनाथ जी तर्कवाचस्पति यज्ञोपवीत यज्ञ के अवसर पर पधारे थे। उन्होंने भगतसिंह को जनेऊ दिया था जिसे भगतसिंह ने जीवनभर नहीं उतारा था। जनेऊ के तीन तारों के विषय में भगतसिंह को उसके लाभ बताए गए। यज्ञवेदी पर ही देशभक्ति की प्रेरणा भी करवाया गया। दादा अर्जुनसिंह ने भी देशभक्ति की प्रेरणा दी। डी०ए०वी० में पढ़ते समय ही भगतसिंह का परिचय सुखदेव, भगवतीचरण तथा अन्य अनेक नौजवानों से हो गया था। सुखदेव इनमें उग्र विचारधारा के नवयुवक थे। जिस कॉलेज के प्राध्यापक भाई परमानन्द, जयचन्द्र विद्यालंकार जैसे महान् क्रान्तिकारी हों, उनके संपर्क में कौन स्वाभिमानी युवक भला क्रान्ति की दीक्षा लेने से कैसे बच सकता था?

**साईमन कमीशन का पंजाब में आगमन**-''अंग्रेज सरकार ने अपनी तथाकथित सुधार योजना का परिणाम जानने के लिए साईमन नामक अंग्रेज की अध्यक्षता में एक कमीशन की नियुक्ति की थी, जिसमें सभी अंग्रेज थे। यह कमीशन देश में जहां पर भी गया, इसका भारी विरोध किया। प्रदर्शन किए। हड़ताल की। भारी जुलूस निकाला, जिसमें लाखों लोग थे। जुलूस का नेतृत्व आर्यसमाज के महान् नेता लाला लाजपतराय जी कर रहे थे। विशाल जनसमूह 'साईमन कमीशन वापस जाओ' के गगनभेदी नारे लगा रहा था। भारी भीड़ पर मि० स्काट कप्तान पुलिस ने जनता पर लाठी चार्ज का आदेश दिया। भारी लाठी चार्ज हुआ। हजारों लोग घायल हो गये। पुलिस कप्तान स्काट ने स्वयं आगे बढ़कर पंजाब केसरी लाला लाजपतराय पर लाठियां बरसा दीं। इससे उनकी गर्दन की हड्डी टूट गई। ऐसा होते ही जनता बहुत अधिक उग्र हो गई। खून बह गया। इतना सब कुछ होते-होते पंजाब केसरी लाजपतराय ने जनता के बीच जोरदार आवाज में घोषणा की कि-''**मेरे शरीर पर की गई लाठी की एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील साबित होगी।**'' पंजाब केसरी के इस भाषण से जनता में बड़ा जोश फैल गया। लाखों लोग लाहौर के बाजार में लालाजी का भाषण सुन रहे थे। इस भाषण के बाद एक सभा हुई, जिसमें भगतसिंह के चाचा अजीतसिंह का भाषण बहुत ही जोशीला था जिसमें श्रोताओं के दिल दहला दिए। इसके साथ ही पंजाब के वीर 'बांकेदयाल' ने अपना स्वरचित गीत ''पगड़ी संभाल जट्टा'' गाया। गीत के बोल थे-

**पगड़ी संभाल जट्टा, पगड़ी संभाल ओए।**
**हिन्द है मंदिर तेरा, इसका पुजारी तूं।**
**कब तक झल्लैगा तू, एह दी ख्वारी तू।**
**पगड़ी संभाल जट्टा, पगड़ी संभाल ओए।**

वहां उपस्थित सारी जनता ने इस गीत को गाया। यह गीत शीघ्र ही 'वन्दे मातरम्' की तरह से पंजाब का राष्ट्रगीत बन गया। इस गीत में हिन्दू, मुसलमान तथा सिक्ख सबको मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने की प्रेरणा देते हुए कहा गया कि इस नये कानून से जाटों की सारी इज्जत धूल में मिल जाएगी। उन्हें अपनी पगड़ी की इज्जत बचाने के लिए एक होकर सरकार के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए।

लाठियों की इस भयंकर चोट से लाला लाजपतराय का १७ नवम्बर १९२८ को बलिदान हो गया। इस महान् नेता का अपमान न सहते हुए और उसे लाठियों से मारकर उसकी हड्डी पसली की चोट को देखते हुए और वहीं पर उपस्थित क्रान्तिकारियों के हृदय में बदला लेने की भावनाएं धधक उठीं। सरदार भगतसिंह व वीर सुखदेव, राजगुरु तथा चन्द्रशेखर आजाद ने स्काट को मारने का संकल्प लिया।

निश्चित समय पर वे चारों पुलिस स्टेशन की ओर गए जो डी०ए०वी० लाहौर के साथ में ही था। सायंकाल के धुंधले अंधेरे में एक साहब पुलिस की वर्दी पहने हुए पुलिस दफ्तर से बाहर निकला, वह स्काट नहीं था। सांडर्स पुलिस अफसर था। भगतसिंह व राजगुरु ने

(शेष पृष्ठ सात पर)

# डार्विन थ्यौरी अप्राकृतिक व अवैदिक

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७०००७

डार्विन थ्यौरी एक कल्पना की दौड़ मात्र है और एक झूठ का पिटारा है। यह प्रकृति और वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध ही नहीं बल्कि एक बकवास है। इसकी जितनी निन्दा व भर्त्सना की जावे उतना ही मानवमात्र का हित व कल्याण है, कारण इस थ्यौरी से नवयुवकों को ज्ञान की गलत दिशा मिलती है और इससे नवयुवक भ्रमित होकर सही ज्ञान के मार्ग से भटक गये हैं। डार्विन कहता है कि मनुष्य पहले बंदर था यानि लाखों, करोड़ों वर्ष पहले बन्दर का ही रूप सुधरते-सुधरते मनुष्य बन गया। इसका कारण बताते हुए डार्विन का कहना है कि जो अंग कोई काम नहीं आता वह हजारों लाखों वर्ष बाद आहिस्ता-आहिस्ता, घटते-घटते नष्ट हो जाता है यानि समाप्त हो जाता है। इसी प्रक्रिया से बन्दर की पूंछ जो कोई काम नहीं आती वह घटती-घटती नष्ट हो गई और बाल भी घटते-घटते बहुत छोटे हो गये। फिर बन्दर जैसे-जैसे सभ्य बनता गया वैसे-वैसे अपने आपको सुधारता गया और वह मनुष्य के रूप में आ गया। यह कैसी बुद्धि, तर्क व प्रकृति के प्रतिकूल बात है। आश्चर्य की बात तो यह है कि कोई अनपढ़ या कम समझदार व्यक्ति इस बात को मान लेवे जो कोई आश्चर्य की बात नहीं किन्तु बड़े-बड़े वैज्ञानिक, विचारक, प्रोफेसर, डाक्टर व वकीलों आदि ने भी इस प्रक्रिया को मान लिया है और स्कूल व कॉलेजों में पढ़ाया भी जाने लगा है यह दुःख की बात है। डार्विन एक बात और कहता है कि सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य जंगली, असभ्य व मूर्ख था। पशुओं की भांति नंगा रहता था, कच्चा मांस खाता था। बाद में जैसे-जैसे बुद्धि का विकास होता गया वैसे-वैसे मनुष्य सभ्य होता गया। पहले उसको अग्नि का ज्ञान हुआ तब वह मांस को पकाकर खाने लगा। समझदारी बढ़ती गई तो इज्जत व शर्म का अनुभव होने लगा तो वह केले आदि के पत्तों से शरीर को आगे पीछे से ढकने लगा। बाद में खेती करने का ज्ञान हुआ तो अनाज पैदा करके अन्न को पकाकर खाने लगा। फिर वस्त्रादि का ज्ञान हुआ तो वस्त्र को पहनने और ओढ़ने लगा। इस प्रकार बुद्धि के विकास के साथ-साथ ज्ञान बढ़ता गया और वह आज का मानव बन गया। इसको डार्विन का विकासवाद भी कहते हैं। यह कैसी विडम्बना कि बात है कि ज्ञान कभी भी अपने-आप स्वयं को नहीं आता वह किसी से सुनने व पढ़ने से आता है और तभी बुद्धि विकसित होती है। यदि स्वयं ही ज्ञान आता तो अन्य पशु-पक्षियों को क्यों नहीं आया। अब डार्विन थ्यौरी किसलिये गलत और भ्रामक है इसका उल्लेख हम नीचे करते हैं।

१. डार्विन कहता है कि बन्दर की बुद्धि का विकास होते-होते वह मनुष्य के रूप में आ गया। डार्विन को पता नहीं कि ज्ञान दो किस्म का होता है। एक स्वाभाविक दूसरा नैमित्तिक। स्वाभाविक ज्ञान वह होता है जो ईश्वर काम चलाने के लिये पशु-पक्षियों व कीट-पतंगों को देता है। उनकी बुद्धि या ज्ञान खाना-पीना, सोना-जागना व मैथुन तक ही सीमित है और नैमित्तिक बुद्धि वह ज्ञान होता है जो पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने व मनन करने से आता है तथा बढ़ता है जो ईश्वर ने मनुष्य को ही विशेष रूप से दिया है जिससे वह अपने जीवन को सुखी बनाता हुआ और उन्नति करता हुआ मोक्ष तक पहुँच जाता है। पशु-पक्षी आदि में यह ज्ञान नहीं होता इसलिये वे मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकते। बन्दर भी एक चंचल व चतुर पशु ही है उसमें भी मनुष्य वाली नैमित्तिक बुद्धि या ज्ञान नहीं होता। इसलिये बन्दर से मनुष्य का नहीं बनना अपने आप ही सिद्ध हो जाता है। यदि बन्दर में नैमित्तिक ज्ञान होता तो बन्दर पालने वाले उसको कितना सिखाते हैं फिर भी वह मनुष्य वाले काम नहीं कर पाता, कारण उसमें समझने व काम करने की शक्ति व क्षमता सीमित है।

२. यदि बन्दर या वनमानुष से मनुष्य बनता तो यह प्रक्रिया अब भी चालू बनी रहती, कारण प्रकृति की कोई भी क्रिया जो आरम्भ से चली आ रही है वह अब भी चल रही है और आगे भी चलती रहेगी जैसे ग्रह-उपग्रह की चलने की गति व मनुष्य का बचपन, यौवन, प्रौढ़ तथा वृद्ध होकर मृत्यु को प्राप्त होना। यह क्रम सृष्टि के आदि में भी था, अब भी चल रहा है और आगे भी चलता रहेगा। इस सिद्धान्त से अब भी बन्दरों से मनुष्य बनने का क्रम चालू रहना चाहिये था यानि बन्दर की पूंछ घटती जाती तो अब भी इस प्रक्रिया के चालू रहने से हमें हजारों किस्म की पूंछ वाले बन्दर अभी भी मिलते, जिनमें किसी की पूंछ एक इंच, किसी की दो इंच, किसी की तीन इंच और किसी की बढ़ते-बढ़ते चार फुट तक की पूँछ होनी चाहिए परन्तु ऐसे बन्दर हमें नहीं मिल रहे है। मनुष्य भी कई किस्म के होते, कुछ मनुष्य तो ऐसे होते जो तुरन्त बन्दर से मनुष्य बने हैं और कुछ प्रगति कि ओर बढ़ते मिलते उन सबके बाल भी छोटे-बड़े होते लेकिन हम सैकड़ों किस्म के मनुष्य भी नहीं देख रहे हैं जिनमें कुछ बन्दर से मिलते जुलते होते और कुछ मनुष्य से मिलते-जुलते होते और कुछ बिल्कुल मनुष्य जैसे होते। ऐसा हम कुछ नहीं देख रहे हैं। सोचने की बात है कि जब खच्चर से भी घोड़ा नहीं बनते हुए देखा जाता जबकि दोनों में बहुत ही कम अन्तर है तो फिर बन्दर से मनुष्य क्या बनेगा, इन दोनों में तो जमीन आसमान का अन्तर है।

३. यदि एक बार हम मान भी लेवें की पूंछ और बाल समय के अनुसार घटने से घट गये या नष्ट हो गये लेकिन बन्दर का स्वभाव, आदत व बुद्धि तो नहीं बदलनी चाहिए परन्तु बन्दर जहां चंचल, नकल करने वाला, पढ़ाने से भी न पढ़ने वाला व कम बुद्धि वाला होता है, मनुष्य इसके विपरीत गम्भीर, विचारक, भूल पर प्रायश्चित करने वाला, पढ़ाने से पढ़ने वाला और भविष्य की सोचने वाला और तीव्र बुद्धि का होता है और बड़े-बड़े आविष्कार करता है। यदि मनुष्य बन्दर की संतान होती तो उसमें बन्दर वाली ही बुद्धि होती इसलिये बन्दर से मनुष्य बना यह कहना सिर्फ धोखा देना है।

४. अन्य पशुओं की पूँछ बन्दर की पूंछ से कम काम करती है। बन्दर तो एक डाली से दूसरी डाली और एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदता है तब पूंछ को जोर के बल पर कड़ी रखनी पड़ती है और चलते समय भी पूंछ ऊपर उठाकर चलता है तब भी पूंछ पर जोर पड़ता है जब कि गाय, भैंस आदि की पूंछ नीचे की तरफ लटकती रहती है जिससे पूंछ पर कोई जोर नहीं पड़ता है। जब कभी मक्खी-मच्छर हटाना पड़ता है तब कभी-कभी हिलाती है तब कुछ जोर पड़ता है। यदि बन्दर की पूंछ घटती है तो गाय-भैंस की पूंछ उससे भी पहले या जल्दी घटनी चाहिए थी। लेकिन गाय, भैंस की पूंछ जो सृष्टि के आदि में थी वही अब भी है।

५. बन्दर कभी मांस नहीं खाता, एकदम शाकाहारी जानवर है। अपने आप शराब भी नहीं पीता कोई जबरदस्ती पिलावे तो अलग बात है परन्तु मांस तो जबरदस्ती खिलाने पर भी नहीं खायेगा तब यदि मनुष्य बन्दर की संतान है तो अब मनुष्य मांस व शराब क्यों खाता व पीता है? इस थ्यौरी के मानने वालों को पहले शराब व मांस छोड़ना चाहिए फिर वैदिक साहित्य पढ़कर बुद्धि को सुधारना होगा।

६. हम अनेक तरह के पुरुष व स्त्रियां देखते हैं जिनमें किसी की नाक चपटी, किसी की खड़ी। किसी की आंख छोटी किसी की बड़ी। किसी का माथा छोटा किसी का चौड़ा व बड़ा। किसी के होंठ पतले, किसी के मोटे। किसी का सिर गंजा, किसी का बालों से भरा परन्तु अन्य पशु-पक्षियों की भांति बन्दरों के चेहरों की बनावट में बहुत कम अन्तर होता है। हम देखते हैं कि जगह और जलवायु का मनुष्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है इसलिये कई किस्म के लोग धरती पर मिलते हैं परन्तु विश्व के बन्दरों में इतनी असमानता नहीं पाई जाती। यदि बन्दरों से मनुष्य बनता तो सभी मनुष्य करीब करीब समान होते।

७. आज के बन्दर में कोई भी मानवीय गुण नहीं है जैसे त्याग, अहिंसा, ईमानदारी, परोपकारिता, मितव्ययता व कर्तव्य-परायणता आदि और न ही बन्दर में माता-पिता की सेवा करने के भाव, न ईश्वर के प्रति भक्ति और न ही भविष्य की चिन्ता जो मनुष्यों में होती है। यदि बन्दर से मानव बनता तो आज के बन्दर में भी यह सभी मानवीय गुण होते।

उपरोक्त उदाहरणों से तो आप समझ गये होंगे कि बन्दर बनने का कितना अधिक विरोध प्रकृति करती है। अब इस प्रक्रिया का वेदों से भी जिसका घोर विरोध प्रकट होता है, वह स्पष्ट करते हैं।

महाभारत के बाद वेदों का सबसे बड़ा उद्भट विद्वान् यदि कोई हुआ है तो वह हैं महर्षि दयानन्द। महर्षि ने पूरे प्रमाणों सहित यह सिद्ध किया है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो ईश्वर ने मानवमात्र के हित व कल्याण के लिये सृष्टि की रचना के बाद चार ऋषियों, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे, उनके हृदय में वेद ज्ञान का प्रकाश करके लोगों को सुनवाया जिनमें यह शिक्षा दी गई है कि मनुष्य को अपने संपूर्ण जीवन में क्या काम करने चाहिएं, क्या नहीं करने चाहिएं और उसका अपने व्यक्तिगत, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा प्राणिमात्र के प्रति क्या कर्तव्य है जिससे सारा विश्व ही नहीं प्राणिमात्र सुखी व शांति से रह सके। उससे पहले ईश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, पेड़-पौधे व पशु-पक्षी मनुष्य के उपकार व सहयोग के लिये बना दिये थे। तत्पश्चात् ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति तिब्बत पर अमैथुनिक प्रक्रिया से अनेक नौजवान स्त्री-पुरुषों के जोड़े उत्पन्न करके की और उनको वेदज्ञान सुनाया। यदि मानव बन्दरों से ही बने होते तो ईश्वर सिर्फ बन्दर ही पैदा करता, स्त्री-पुरुष उत्पन्न करने की जरूरत क्या थी? दूसरी बात यह है कि क्या वेद ज्ञान बन्दरों को सुनाया? यदि आप कहें हां। वेद ज्ञान बन्दरों को सुनाया तो प्रश्न उठता है कि आज का बन्दर वेद ज्ञान क्यों नहीं सुनता। इन सब तथ्यों से सिद्ध होता है कि डार्विन थ्यौरी यानि विकासवाद पूर्णतः मिथ्या और भ्रामक है। हम बन्दर व वनमानुष की संतान न होकर ऋषि-मुनियों, विद्वानों व चरित्रवान् पुरुषों की संतान हैं।

दूसरी बात यह है कि सृष्टि के आरम्भ में जो स्त्री-पुरुष हुए थे वे या तो प्रलय का लम्बा समय व्यतीत करके आने वाली आत्माएं थीं या मोक्ष से लौटकर आने वाली पवित्र आत्माएं थीं इसलिये उन्होंने वेद ज्ञान को केवल कण्ठस्थ ही नहीं किया बल्कि उसकी शिक्षाओं को अपने जीवन में भी धारण कर लिया। ऐसे महान् पुरुषों व स्त्रियों को असभ्य या मूर्ख कहना कहने वाले के गलत विचारों का ही परिचय होता है।

हाँ। एक बात यह जरूर है कि सृष्टि की पूरी आयु चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की है जिसमें करीब दो अरब वर्ष बीत चुके हैं बाकी करीब दो अरब बत्तीस करोड़ का समय महाप्रलय होने में बाकी है। इस बीच हजारों लाखों वर्षों में खण्ड प्रलय महाभारत जैसा विश्व युद्ध, प्रचण्ड भूकम्प, भूचाल या महामारी आने से होते रहते हैं जिसमें पृथ्वी का बहुत बड़ा भाग मुख्य धारा से कट जाता है तब हजारों वर्षों तक लोग असभ्य, अशिक्षित व अन्धविश्वासी बने रहते हैं और जब वहां शनैः-शनैः नया सर्जन होने लगता है तो वे मुख्य धारा से जुड़ जाते हैं उन्हीं को देखकर डार्विन को यह विचार आया होगा और विकासवाद की कल्पना की होगी। यदि डार्विन ने वैदिक संस्कृति पढ़ी होती तो वह ऐसी उटपटांग बातें न करता। आज भी यदि विश्व सुख व शान्ति से रहना चाहता है तो अन्य सभी मत-मतान्तरों को छोड़कर एक वैदिक धर्म को मानने से ही सम्भव है। इसके अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं।

एक सामयिक चेतावनी आर्यों के लिए....

# आर्यसमाज का राजनैतिक मंच

❑ महीपाल आर्य, संस्कृत प्रवक्ता, पूर्व प्रधान संस्कृत अध्यापक संघ
जिला हिसार एवं मंत्री आर्यसमाज मतलौडा (हिसार)

वास्तव में कहने सुनने के लिए तो इससे सुन्दर कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन ऐसा हो नहीं रहा। प्रत्येक आर्य हर सप्ताह इसे वाणी द्वारा कहकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर लेता है। ऐसी सामाजिक व्यवस्था में सारे सुखी हों यह कठिन ही नहीं असम्भव है।

जिस देश की जनता को खाने के लिए गम मिले, पीने के लिए आंसू, ओढ़ने के लिए आकाश और बिछाने के लिए धरती, उसे हम कहें सुखी हो? क्या नहीं सुना '**बुभुक्षितः किं न करोति पापम्**' फिर आप चाहते हैं ''**कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्**'' यह स्वप्न इस ढंग से हजारों वर्षों में भी साकार नहीं होगा।

महर्षि दयानंद और वैदिक धर्म के नाम पर सबसे उच्च दर्जे का आर्यसमाज भी अगर दुःखी जनों की पुकार सुनकर चुप बैठ सकता है तो देश का इससे बड़ा दुर्भाग्य कोई हो नहीं सकता। उस महर्षि के जीवन को पढ़ो-''**जो देश की दुर्दशा से दुःखी होकर रात को जाग उठता है नींद नहीं आती।**'' सेवक पूछते हैं स्वामी जी अगर शरीर में पीड़ा हो तो डाक्टर को बुलाएं लेकिन स्वामी जी कहते हैं यह पीडा डाक्टर के बस की नहीं। मेरे हृदय में देशवासियों की दुर्दशा की पीड़ा हो रही है। विधवा को अपने पुत्र का शव ढकने को कफन नहीं मिलता तो स्वामी जी को रोना आता है। उसी ऋषिवर दयानंद के देश में आज आर्यसमाजियों का जाल बिछा है लेकिन आज देश के शासन को सम्भालने की बात आती है तो अपने आपको बड़ा नेता कहलाने वाले स्वयं को आर्यसमाजी भी कहते हैं। आर्यसमाज का कार्य केवल धर्म प्रचार है, वैदिक प्रचार है। अरे आर्यसमाज को केवल धर्म की मंच समझने वालो क्या तुम्हें मालूम है धर्म किसे कहते हैं? केवलमात्र धर्मशास्त्रों में लिखित श्लोक व मंत्र को पढ़कर, सुनाकर धर्म की परिभाषा नहीं जानी जा सकती। जिस मुहल्ले में तुम रहते हो यदि उसकी नालियां दुर्गन्धयुक्त हैं और चारों ओर कीचड़ सड़ रहा है, लोग मैले, कुचैले, अनपढ़, रोगों के मारे, निर्धनता के सताए पड़े हैं और तुम इन अवस्थाओं में परिवर्तन के लिए कुछ नहीं कर रहे हो तो मत समझो तुम धर्मात्मा हो। मंच पर आकर रटे रटाए भाषण देकर आर्य बनने का ढोंग कर दूसरों के लिए आदर्श का पाठ जतलाकर स्वयं आदर्श से परे हुए तुम मत समझो आर्यसमाजी हो। चाहे तुम कितनी लंबी समाधि लगाते हो, चाहे कितना भजन कीर्तन करते हो, कितने घण्टे घडियाल बजाते हो, चाहे कितनी ही सामग्री फूंक देते हो, कितने ही समाज में बढ़कर साप्ताहिक सत्संग करते हो तो भी तुम धर्मात्मा नहीं हो। यदि तुम्हारे मंदिर की आरती ने, तुम्हारी लम्बी संध्याओं ने, तुम्हारी पांच नमाजों ने, आर्यसमाज के सत्संग ने तुम्हारी आंखों को गरीबों का दुःख देखने के लिए, तुम्हारे हाथों को उनके दुःख दूर करने के लिए तुम्हें विवश नहीं किया तो तुम आंख रखते हुए भी अंधे हो। कान रखते हुए भी बहरे हो और हाथ रखते हुए भी लूले हो। यह है धर्म। इसे कहते हैं धर्म। जो धर्म की रक्षा नहीं करता धर्म उसे नष्ट कर देता है। आज धर्म को बचाए जाने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को कोई समझ सकता है तो उसका नाम है आर्यसमाज। इसी उद्देश्य को लेकर तो की थी ऋषिवर ने आर्यसमाज की स्थापना। आर्यसमाज कोई धर्म तो नहीं लेकिन धर्म को बचाए जाने की दिव्य बाण औषधि तैयार की थी महर्षि ने। एक ऐसा धर्म जो पर पीड़ा में रस न ले, एक ऐसा धर्म जो इंसानियत के मर्म को छुए। लेकिन ऋषिवर के द्वारा तैयार किया आर्यसमाजरूपी आंदोलन लगता है आज ठण्डा पड़ गया है। ऋषिवर द्वारा किए गए कार्यों को गिनवाकर ही आत्मसन्तुष्टि का नाद बजा रहा है आर्यसमाजी। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज वह प्रज्वलित अग्नि ज्वाला जलाई थी जहां पाप-पुंज जलते हैं। जिसमें पड़कर अरत् असित् आयस् के गोले गलते हैं। दीप्त सुवर्ण रूप होकर से सत् सिद्धान्त निकलते हैं। ईश्वर एक है तथा प्रत्येक ईश्वर की कृति भी एक ही है। तथा पृथ्वी पर जहां कहीं भी अन्याय, शोषण व अभाव होता है तथा जहां व्यक्ति किसी भी रूप में इन तीनों चीजों के विरुद्ध संघर्ष करता है वही सच्चा आर्यसमाजी है।

आज न तो समाज को अन्याय से बचाया जा रहा है न शोषण से मुक्त किया जा रहा है न अभाव से लड़ा जा रहा है न धर्म को बचाया जा रहा है। आज अन्याय, शोषण व अभाव से छुटकारा दिलाया जा सकता है तो राजनैतिक सत्ता के द्वारा। लेकिन आर्यसमाज ने १२९ वर्षों में भी सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास की कोई कीमत न समझी। जो व्यक्ति वेद और दयानन्द को सही मानता है उसे स्वीकार करना होगा कि आर्यों का चक्रवर्ती राज्य कभी था और आर्य ही राज्य का अधिकारी है अनार्य नहीं। यदि कीमत समझते तो आज आर्यों का राज्य होता। ये बढ़ती मंहगाई, ये बेरोजगारी और भूख सच्चे आर्यों को ललकारती नहीं। ''यदि इस भूखमरी के दर्शन करना चाहते हो तो चले जाइए आसाम, बिहार और बंगाल के अंदर। वहां की बहुतसी जनता भूखी सोती है। चले जाइए केरल के अंदर वहां की जनता ईसाई बनकर धर्म परिवर्तन कर अपनी भूख मिटा रही है। ईमारदारी, इज्जत बेच रही है। चले आइए कलकत्ता के अंदर जहां की सड़कों पर बंगाल के ६० लाख लोगों को यह भूख हर साल लील रही है।'' जुल्म करने वाले से ज्यादा पापी जुल्म सहन करनेवाला होता है। अपने आपको देश का पहरेदार, चौकीदार कहने वाला आर्यसमाज आज चुप बैठा है। इसका अपना राजनैतिक दल बनाया जाने की बात आती है तो व्यक्तिगत मतभेद के कारण, दयानंद के सारे जीवन की मेहनत व सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास को पढ़कर भी कह दिया जाता है कि आर्यसमाज तो एक धार्मिक मंच है, धार्मिक स्टेज है। आर्यसमाज महापाखण्डी, नीच और मूर्ख बालयोगेश्वर का एक्शन न ले सका। अपने आपको भगवान् बताने वाले भगवान् रजनीश का बाल बांका न कर सका। समय-समय पर पोपलीला कर रहे भगवे वस्त्रधारी मठाधीशों की करतूतों का पता चलने पर भी एक्शन न ले सका और आज भी आर्यसमाज की आंखों की किरकिरी बना हुआ, रामपाल स्वयंभू जगद्गुरु बना हुआ अनर्थ करता हुआ ऋषि पर, आर्यसमाज पर विज्ञापन रूप में नित नए आक्षेप कर रहा है लेकिन आर्यसमाज कोई ठोस कारवाई न कर सका। कारण? कारण स्पष्ट है आर्यसमाज के पास वह योग्यता व सत्ता नहीं। किसे दोष दें?

ईश्वर उपदेश की संस्तुति करते हुए ऋषिवर सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में विद्यार्य्यसभा, धर्मार्य्यसभा, राजार्य्यसभा का गठन कर राजनीति में योग्य व्यक्तियों को सम्मिलित होने का संकेत करते हैं। महाविद्वानों को विद्यासभा अधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्मसभा अधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद् और जो उन सबमें सर्वोत्तम गुण, कर्म, स्वभावयुक्त महान् पुरुष हो उसको राजसभा का पतिरूप मान के सब प्रकार से उन्नति करें। तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के अधीन सब लोग बर्तें, सबके हितकारक कामों में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिए परतंत्र और धर्मयुक्त कामों में अर्थात् जो-जो निज के काम हैं उन-उन में स्वतंत्र रहें। इत्यादि सभी बातें वैदिक दृष्टिकोण से समझा रहे हैं।

कौन कहता है पूर्व में आर्यसमाज राजनीति से विमुख रहा है। कौन कहता है आर्यसमाज ने राजनीति का कर्त्तव्य नहीं निभाया। कौन कहता है आर्यसमाज ने लोगों को राजधर्म का उपदेश नहीं दिया। इस बात का दुराग्रहयुक्त कोई विरोध करता है वह आर्य नहीं हो सकता। वर्तमान व्यवस्था में तो आर्यसमाज की राजनैतिकशिथिलता स्वीकारी जा सकती है पूर्व में नहीं।

आँकड़े और तथ्य बोलते हैं इतिहास बोलता है। समय जवाब मांगता है कि १८५७ की प्रथम स्वाधीनता की क्रान्ति के समय स्वामी दयानंद कहां थे? वृदांवनलाल वर्मा जैसे प्रसिद्ध हिन्दी के साहित्यकार और अन्य इतिहासकार मानने को बाध्य हैं कि महर्षि दयानंद की क्रान्तिकारी भूमिका कोई छिपने वाली घटना नहीं है। पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, डा० रोशनसिंह, पं० गेन्दालाल दीक्षित, राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे आर्यवीरों के नामों से इतिहास विभूषित है।

इतना ही नहीं महारानी विक्टोरिया को भेजी जाने वाली गुप्त रिपोर्ट यह स्पष्ट संकेत करती है कि अंग्रेज स्वामी दयानंद और आर्यसमाज के आंदोलन से कितने भयभीत थे लिखा है :-

Arya Samaj was a historical movement that shaped Hinduism.

कोई माने या ना माने। कहने का मन्तव्य है कि देश की स्वतंत्रता की प्रेरणा देने वाले सबसे पहले योद्धा महर्षि दयानंद थे जिन्होंने सामाजिक चेतना के साथ-साथ राजनीति का पाठ जनता को पढ़ाया था। वर्तमान के साथ-साथ अतीत में भी आर्यसमाजी पूर्णतः राजनीति में भाग लेते रहे हैं। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिन लोगों ने जेल की याजनाएं भोगीं, अपने उभरते हुए यौवन को कुर्बान कर दिया, फांसी के फंदे चूमे, अपने प्राणों की आहुति दी उन लोगों में ७५ प्रतिशत आर्यसमाजी थे। लेकिन इसका श्रेय आर्यसमाज को नहीं मिला क्योंकि आर्यसमाज ने सामूहिक रूपेण संगठित होकर राजनीति में कभी हिस्सा नहीं लिया। अतः अपरिहार्यता है आर्यसमाज को अपना राजनैतिक संगठन बनाकर सक्रिय भाग लेने की।

महर्षि के मन्तव्यों को मूर्तरूप देने का उत्तरदायित्व आर्यसमाज पर है तथा आर्यसमाज ने इस गुरुतर भार को हद तक सफलतापूर्वक वहन करने की चेष्टा की है। महर्षि के बलिदान से प्रभावित होकर हजारों यौवन के सुखों की उपेक्षा कर समाज सेवा की दीक्षा ग्रहण की थी और आर्य विद्वान्, संन्यासी, वक्ता और लेखक बनकर आर्यसमाज के कार्य को सभी दिशाओं में आगे बढ़ाया था। स्वामी श्रद्धानन्द आर्य पं० लाला लाजपतराय, मुनिवर गुरुदत्त, भाई परमानन्द, स्वामी दर्शनानन्द आदि उसी प्रथम पंक्ति के युवकों में से थे जिन्होने आर्यसमाज की वाटिका को अपने रक्त के कण-कण से सींचा था। समय बीतता गया बलिदान की लहर मंद पड़ती गई और उनकी अपेक्षा न्यून योग्यता और तड़प के व्यक्ति समाज में आने लगे। सामाजिक और राजनैतिक चेतना का ज्वार कुण्ठ हो गया।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि आर्यसमाज का अस्तित्व त्याग पर टिका है, आर्यसमाज की वृद्धि, उन्नति का मूल त्याग है परन्तु आज त्याग की भावना पूर्णतः विलुप्त होगई है आज आर्यसमाज से अधिक पद लोलुपता की दौड़, लिप्सा, किसी अन्य संस्था में नहीं। गुरुकुल जैसी संस्थाओं में यज्ञ हवन, विवाहसंस्कार कराने वाले संस्कृत पढ़े-लिखे अधकचरे (दूसरों के लिए विद्वान्) तो मिल जाएंगे लेकिन वेदों के भाष्य करने वाले वैदिक व्याख्याता विद्वान् विलुप्त हो गए हैं। जब विद्वान् नहीं होंगे तो कैसे खत्म होंगे दम्भी और पाखण्डी? कैसे होंगे ये अनाचार बंद? वीरता और साहस जैसे गुण पुराने आर्यसमाजियों में देखे जा सकते थे। लेकिन आज ये

(शेष पृष्ठ चार पर)

# जिला हिसार में वेदप्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के युवा भजनोपदेशक पं० सत्यपाल आर्य की भजनमण्डली द्वारा २२ फरवरी रात्रि आर्य निवास नलवा प्रातः हवन, २३ फरवरी दिन में ११ बजे से २ बजे तक ग्राम बालावास ओड़ धर्मशाला में सायं ६ बजे गुरुकुल आर्यनगर में तथा २४ फरवरी को ग्राम मिर्जापुर में प्रातः ९ बजे हवन, १ बजे तक वेदप्रचार का कार्यक्रम रहा।

पं० सत्यपाल जी ने उपरोक्त गांव में समाजसुधार के फुटकड़ भजनों के अतिरिक्त पं० रामप्रसाद बिस्मिल व वीर हकीकतराय का क्रान्तिकारी इतिहास रखा। अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी अध्यक्ष हरयाणा आर्य युवक परिषद् ने आर्यसमाज को देश की आजादी में योगदान, आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है तथा शराब, धूम्रपान, मांस जैसी भयंकर बुराइयों से दूर रहने का आह्वान किया। ग्राम मिर्जापुर में पं० रामस्वरूप शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। गुरुकुल के छात्रों ने सुरीली आवाज में वेदमन्त्रों का पाठ किया।

-मा० ज्ञानीराम आर्य, प्रधान आर्यसमाज मिर्जापुर (हिसार)

## निमन्त्रण

दूरभाष : ०१३०-२३८०१२२

**वैदिक कन्या गुरुकुल इन्दिरा कालोनी बहालगढ़, जिला सोनीपत का**

## उद्घाटन समारोह

**रविवार दिनांक १० अप्रैल २००५**

**प्रातः ८ से २ बजे तक**

इस अवसर पर उच्चकोटि के संन्यासी, राजनेता, समाजसुधारक, विचारक, वेदज्ञ तथा क्रान्तिकारी भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आप सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक

| प्रधान | मन्त्री | प्रधानाचार्य | कोषाध्यक्ष |
|---|---|---|---|
| सुमित्रा दहिया | राजकुमार सैनी | डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य | सत्यमित्र आर्य |

## शोक समाचार

आर्यसमाज बड़ा बाजार 'शहर' सोनीपत के पूर्व प्रधान श्री हरिश्चन्द्र 'नाज़' सोनीपती का १८/३/२००५ सायं को देहावसान हो गया। वे आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध कवि थे। अपनी हिन्दी, उर्दू, मुलतानी कविताओं के माध्यम से उन्होंने समाज, धर्म, देश की महती सेवा की। शिक्षा क्षेत्र में पूरी लगन से अपना कर्त्तव्यपालन किया। १९७८ में उन्हें राज्य सरकार के श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से राज्यपाल महोदय द्वारा सम्मानित किया गया। आप सभा की पत्रिका सर्वहितकारी में अपनी रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजते रहते थे। आकाशवाणी दिल्ली, रोहतक, जालंधर, सूरतगढ़ केन्द्रों से उनकी कविताओं का प्रसारण भी किया जाता रहा। वैदिक धर्म की सेवा में यथा सामर्थ्य वे सदैव तत्पर रहते थे। अपनी धार्मिक प्रवृत्ति, मिलनसार व्यक्तित्व, स्पष्टवादिता, आदर्शवादिता के कारण उन्होंने सोनीपत ही नहीं, हर जगह जनमानस पर अमिट छाप छोड़ी।

२१/३/२००५ को उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। शान्तियज्ञ के पश्चात् उपस्थित जनसमूह ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये व प्रेरणादायी प्रवचन भी हुए। -वेदप्रकाश आर्य, मंत्री आर्यसमाज बड़ा बाजार सोनीपत

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| क्रम | स्थान | तिथि |
|---|---|---|
| १. | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| २. | महात्मा फगुराम जी स्मृति पर्व (स्थान-विश्वकर्मा धर्मशाला बड़ोदा रोड काठमण्डी गोहाना जिला सोनीपत) | ३१ मार्च से १ अप्रैल ०५ |
| ३. | योगसाधना व चिकित्सा शिविर आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जिला झज्जर | २८ मार्च से ३ अप्रैल ०५ |
| ४. | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत | २ से ५ अप्रैल ०५ |
| ५. | स्त्री आर्यसमाज कैथल शहर | ४ से १० अप्रैल ०५ |
| ६. | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत (देवी मेले के उपलक्ष्य में वेदप्रचार) | १६-१७ अप्रैल ०५ |
| ७. | आर्यसमाज रेवाड़ी | ९ से १० अप्रैल ०५ |
| ८. | आर्यसमाज सेक्टर-९-९ए-७ एक्स गुड़गांव सत्संग स्थल-सब्जीमंडी सेक्टर-७ एक्स गुड़गांव | १८ से २४ अप्रैल ०५ |
| ९. | आर्यसमाज उलेटा (नगीना) जिला गुड़गांव | २९ अप्रैल से १ मई ०५ |
| १०. | आर्यसमाज रादौर जिला यमुनानगर | २७ से २९ मई ०५ |

—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

## आर्यसमाज का राजनैतिक मंच..... (पृष्ठ तीन का शेष)

गुण ढूंढने से नहीं मिलेंगे। है कोई आर्यसमाजी माता-पिता जो अपने बेटे को भगतसिंह बनाना चाहता है? है कोई देश दीवाना जो दयानंद जैसे त्यागी तपस्वी संतान देश को दे सके? है कोई आर्यसमाजी जो अपनी संतान में महाराणा प्रताप जैसा शौर्य उत्पन्न कर सके? है कोई ऐसा आर्यसमाजी जो अपनी संतान में गौतम, कपिल, कणाद और कुमारिलभट्ट जैसा पाण्डित्य ला सके? है कोई ऐसा आर्यसमाजी जो अपनी संतान को हनुमान् और भीष्म जैसा ब्रह्मचारी बना सके? है कोई ऐसा आर्यसमाजी जो श्रीकृष्ण और शिवाजी की तरह नीतिमत्ता रख सके? यदि है तो उसी में है नेतृत्व करने का सामर्थ्य। उसी में है अदम्य राजशक्ति का मादा। वो राजशक्ति ही थी जिसने अमेरिका में रजनीशपुरम् बसाने वाले स्वयंभू भगवान् को बाहर धकेलने का काम किया था। '**वीरभोग्याः वसुन्धरा**' अतः आर्यवीरो अपने अंदर राजशक्ति की इच्छा जागृत करते हुए राजनैतिक मंच का गठन कीजिए। आज योग्यता के बलबूते पर सत्ता पर काबिज होकर इन धूर्तों का इलाज सम्भव है। केवलमात्र किसी प्रश्न के समाधान में वेदमन्त्रों का हवाला देकर मत समझो हमने इन्हें परास्त कर दिया। कहने वाले तो यहां तक कहते हैं कि आज कोई नया आविष्कार होता है तो आम आर्यसमाजी कहता है यह तो वेदों में पूर्व ही वर्णित है। यदि वर्णित है तो जनता को प्रयोग करके दर्शाओ, बतलाओ। केवलमात्र ऋषियों के महाभाष्य व उन द्वारा लिखित ग्रन्थों का हवाला देकर अपनी योग्यता का परचम मत फहराओ। यही कारण है कि योग्यता व सत्ता की कमी खलने लगी है। यदि वह देवदयानंद आज होता तो अकेला देख लेता। आज जगह-जगह आर्यसमाज हैं फिर भी कुछ न हो तो डूब मरने की बात है। इतना सब हो रहा है फिर भी कहते हैं-**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।**

क्या देखें भद्र-चारों ओर बहन-बेटियों की अस्मिता लूटे जाने के समाचारों से समाचार पत्र भरा रहता है। आज कहीं धर्म के नाम पर लोगों को छला जा रहा है। कहीं भ्रष्टाचार का दानव मानव को निगल रहा है। कहीं कालाबाजारी तस्करी का धंधा समाज को जर्जर कर रहा है। कहीं साम्प्रदायिकता का विषैला विष मानवता का मर्दन कर रहा है। कहीं विध्वंसकता की चपेट में आया हुआ कल का भविष्य नवयुवक अनुशासनहीनता का शिकार हो रहा है। कहीं असंतोष की ज्वाला जल रही है। सर्वत्र अकुशल, अक्षम और अदूरदर्शी शासन मान्यताओं की होली जलाकर गरीब कमेरे लोगों को मरने पर मजबूर कर रहा है। जिस देश का बचपन भूखा हो उस देश की जवानी क्या होगी? जरा गहराई से विचार करें इन सब बातों के लिए क्या प्रबल संगठित राजनैतिक मंच की आवश्यकता नहीं है?

इतना ही नहीं ऐ आर्यवीरो! जिस समाज में अन्नदाता किसान का बेटा भूखे पेट सोता हो, जिस समाज में दूसरों के लिए कई-कई मंजिल की एयर कण्डीशन कोठियां खड़ी करने वाले मजदूर के पास सिर छुपाने के लिए एक झोंपड़ी भी उपलब्ध न हो, जिस समाज के अंदर ईमानदार व्यक्ति के श्रम पर पलनेवाले खटमल हर रोज दावतें उड़ा रहे हों, जिस समाज में दिन दहाड़े लोगों के लूटे जाने की घटना आम बात हो गई हो, जिस समाज में महिलाओं की अस्मिता सुरक्षित न हो, जिस समाज में प्रजातान्त्रिक मूल्यों का हनन हो रहा हो, जिस समाज में अन्याय का बोलबाला हो, जिस समाज में अनर्गल बकवास करने की छूट दे दी गई हो उस समाज को बदले जाने की आवश्यकता क्या आपको नहीं झकझोर रही है।

**कत्ले आम हो रहा है, गौतम बुद्ध के देश में, अपराधी यहां घूमते हैं, साधुओं के वेश में।**
**शहादत पर सेकते हैं राजनीति की रोटियां, कितना पतन हो गया ऋषिवर तेरे देश में॥**

आर्यवीरो बुरा मत मानना। आज विचारों की आंधी के साथ-साथ राजनैतिक तूफान लाए जाने की आवश्यकता है। मिल बैठकर सुविचार करें। आज सवाल केवल व्यवस्था परिवर्तन का नहीं, आज सवाल केवल प्रचार प्रसार का नहीं। आज सवाल केवलमात्र सभा के गठन का नहीं। आज सवाल केवल आर्य उत्सव मनाए जाने का नहीं। आज सवाल समाज को अनार्य होने से बचाने का है। आज सवाल एकत्रित होकर राजनैतिक मंच बनाने का है। आज सवाल वैदिक मान्यताओं को बचाने का है। आज सवाल ऋषिवर के सिद्धान्तों को क्रियान्वित करने का है। आज सवाल आर्ससमाज के वजूद को कायम रखने का है। आज सवाल आर्यसमाज के संगठनात्मक, प्रचारात्मक, आन्दोलनात्मक, रचनात्मक और सृजनात्मक स्वरूप का है। इन सवालों के साथ-साथ मुझे दुःख इस बात का है कि ऋषिवर की भावनाओं का, उनके स्वप्नों का एक ढोंगी के द्वारा सरे आम चौराहे पर कत्ल किया जा रहा है। लातों के भूत बातों से नहीं मानते। ऐसे में राजनैतिक सत्ता की आवश्यकता अनुभव हुई मुझे सत्यार्थप्रकाश में उद्धृत छठे सम्मुलास का स्मरण हो आया।

**कुत्ता अगर पागल हो जाए तो क्या उसे पुचकारोगे।**
**आदमखोर शेर हो तो क्या उसे न मारोगे।**
**कोई गुण्डा पत्नी मांगे तो क्या दे दोगे। कोई माँ को गाली दे तो क्या हंसकर सह लोगे।**

तो आपका एक ही स्वर उभरेगा। नहीं, कदापि नहीं। नहीं, कदापि नहीं।

भद्र पुरुषो! समाज में चाहे-अनचाहे जो भी परिस्थितियां बन चुकी हैं वे सहज स्वीकार्य नहीं हैं। आज हर आंख इस परिवेश में परिवर्तन चाहती है। केवलमात्र बात इतनी-सी है कि उन्हें योग्य, विश्वसनीय कृति, नेतृत्व की तलाश है लड़ाई लड़ ली जाएगी। कम से कम इसके लिए राजनैतिक मंच तो तैयार हो। फिर कहना "**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।**" गुड़ कहने से मुख मीठा नहीं होता-जंगल में बैठे शेर के मुख में मृग स्वयं नहीं आजाते। तो फिर आर्यसमाज के कहनेमात्र से स्वच्छ प्रशासन, आर्यराज्य नहीं हो पाएगा। तो क्यों न हम सभी आर्यजन अपना राजनैतिक मंच तैयार कर सत्ता की लड़ाई लड़ें। भले ही हमें प्रारम्भिक दौर में मंच को १-२ सीट ही उपलब्ध क्यों न हो पाएं। इसी सन्दर्भ में कवि की चंद पंक्तियां स्मरण रखें।

**सफलता का एक कोई पथ नहीं विफलता की गोद में ही जीत है।**
**पथ में यदि शूल न होते कांटो का आभास न होता।**
**मंजिल-मंजिल ही रह जाती मानव का इतिहास न होता॥**

कल को अछूत समझे जाने वाले राजनैतिक मंच आज सत्ता की शीर्षता को छू चुके हैं। वक्त की चुनौती समझकर आर्यवीरो राजनैतिक मंच को स्वीकारते हुए सत्ता की ओर लौटो। फिर न कहना हमारा शासन होता तो हम गोहत्या बंद कर देते, हम शराब बंद कर देते, हम देश को पुनः आर्यावर्त घोषित कर देते। ये बातें पूर्व चिल्लाने की नहीं। बात है सिर्फ केवल "आर्यसमाज के राजनैतिक मंच की, राजनैतिक पार्टी की।"

**तालिम का जोर इतना, तहजीब का शोर इतना।**
**मगर फिर भी बरकत नहीं होती तो नीयत की खराबी है॥**

# पं० बस्तीराम का संक्षिप्त जीवन परिचय


स्व. पं. बस्तीराम जी आर्योपदेशक

**जन्मकाल**-झज्जर तहसील के ग्राम खेड़ी सुलतान में संवत् १८९८ विक्रमी आश्विन कृष्णा चतुर्थी (सन् १८४१ ई०) को मध्याह्न एक बजे बस्तीराम जी का जन्म हुआ। आपके पिता का नाम पं० रामलाल था। आप सावरणी ब्राह्मण थे और ठाकुर जी के पूजक थे।

**अध्ययन-काल**-६ वर्ष की आयु में माछरोली निवासी पं० हरसुख जी से पं० बस्तीराम जी ने पढ़ना प्रारम्भ किया। कुछ काल पश्चात् इनके चाचा जीवनराम जी इनको बनारस ले गये, वे वहां अध्यापन कार्य करते थे। संवत् १९१४ वि० में युद्ध छिड़ जाने के कारण अपने घर आ गये। स्मरण रहे यह युद्ध सन् १८५७ ई० की ऐतिहासिक स्वतंत्रता जन-क्रान्ति थी।

पं० रामलाल जी ने ठाकुर जी के मन्दिर में पं० प्राणसुख के पुत्र बलदेवशाह (समचाना निवासी) को पुजारी रखा हुआ था। बस्तीराम जी ने इनसे भी कुछ समय अध्ययन किया। चाचा जीवनराम जी के प्रभाव के कारण आपके मन में वैराग्य के भाव उत्पन्न हो गये और आप विवाह-बन्धन से मुक्त रहे।

**महर्षि के दर्शन**-संवत् १९२४ वि० (सन् १८६७ ई०) में हरिद्वार में कुम्भ का मेला लगा। इशितहार और अखबारों में सूचना छपी कि हरिद्वार में भीम गोडे के पास पाखण्ड-खण्डनी नाम की पताका गड़ी होगी। ४ वेद और ६ शास्त्र आदि ग्रन्थ सच्चे हैं शेष सब भ्रान्तिग्रन्थ हैं। सब मत एवं सम्प्रदाय सर्वथा नाश की जड़ हैं। गंगा में नहाने से, किसी जगह जाने से, किसी पदार्थ को खाने से और मूर्ति आदि को देखने से मुक्ति नहीं होती। ईश्वर अवतार धारण नहीं करता। भूत, प्रेत, भैंरू, काली इत्यादि सब मिथ्या हैं। विधवा रखना और जन्म से जाति मानना पाप है। मांस-मदिरा का सेवन करना नीच कर्म है। मूर्तिपूजा और मृतक-श्राद्ध आदि पाखण्ड हैं। जिनको अपने मत में सत्य दृष्टिगोचर हो वह पक्षपातरहित होकर शास्त्रार्थ करे, सत्य बात बड़े प्रेम से स्वीकार की जायेगी, इत्यादि।

इस प्रकार की सूचना से सर्वत्र हलचल मच गई। विचार उत्पन्न हुए, ऐसा कौन स्वामी दयानन्द सरस्वती है? ठाकुर सुलतानसिंह तैयार हुये, उनके साथ उनका रनिवास भी और गांव के ब्राह्मण, बनिये भी बैलगाड़ी घोड़े और ऊंटों के साथ तैयार होगये। लगभग ५०० आदमी थे। ठाकुर लछमनसिंह भी हथिनी पर हरिद्वार पहुंचे।

प्रात:काल भीम गोडे पर पहुंचे, वहां अनेक पंडित और साधु विद्यमान थे। कोई सुनने का अभिलाषी था और किसी के मन में शास्त्रार्थ की लहर चल रही थी। कुछ कहते थे हम तो साक्षात् भूत दिखा दें, कोई कहता मैं सोता श्मशान जगा दूं। पं० बस्तीराम जी को भी अपनी मान्यताओं पर अभिमान था।

सूचना मिली कि **गुसाईं लालगिरि** जी शास्त्रार्थ के लिये आ रहे हैं। कुछ काल पश्चात् गोस्वामी जी जय बोलते हुए हाथी पर सवार होकर पहुंचे और स्वामी जी के निकट उतरकर साभिमान कहा कि कहां है वह दयानन्द? स्वामी जी ने उठकर मधुर स्वर में कहा महाराज जी मैं हूं।

गुसाईं जी-शास्त्रार्थ करो, हम तो शास्त्रार्थ करने आये हैं, अभी थोड़ी ही देर में सब फैसला हो जायेगा।

स्वामी जी और गुसाईं जी के कुछ क्षण प्रश्नोत्तर हुए और गुसाईं लालगिरि जी ने पराजित होकर कहा कि **यह आदमी नहीं, यह तो कोई हवा है। चलो**, कहकर चुपचाप खिसक गये।

पं० बस्तीराम पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा और जब तक स्वामी जी वहां रहे तब तक बस्तीराम जी भी उनके पास रहे और उनके अनुयायी होगये। ठाकुर सुलतानसिंह जी तथा अन्य ग्रामवासियों ने स्वामी जी से यज्ञोपवीत ग्रहण किया और सब वापिस घर आगये।

गांव में भी यही चर्चा रहती थी। एक दिन ज्ञात हुआ कि स्वामी जी **अचरोल** आ रहे हैं तो बस्तीराम जी भी वहां पहुंच गये। एक दिन स्वामी जी के पीछे बस्तीराम जी ने एक भजन गाया जिसकी टेक थी-**"स्वामी जी आपनो अमर कियो बानो, धन्य-धन्य या संन्यासी को पूर्व पन्थ पहचानो"** स्वामी जी ने एकान्त में कहा-बस्तीराम यह भजन मेरे आगे न गाया करो। स्वामी जी यहां से **उदयपुर** चले गये और बस्तीराम जी अपने घर आगये।

संवत् १९२६ वि० में बस्तीराम जी इतने रुग्ण हुए कि एक प्रकार से इनका पुनर्जन्म ही समझना चाहिये। इनके यहां गाने-बजाने की परिपाटी थी। यह भी रुक्मिणी मंगल गाते थे और यजमानों से आजीविका चलती रहती थी।

संवत् १९३० वि० (सन् १८७३) में दिल्ली में दरबार हुआ। उसमें सभी राजा-महाराजा पधारे थे। स्वामी दयानन्द जी ने भी तम्बू लगाया था। प्रतिदिन ढाई घण्टे तक उपदेश देते थे। प्रचार लगभग दो मास तक होता रहा।

इसी काल में चर्चा चली कि बस्तीराम आर्य बन गया। इनके चाचा राधाकिशन ने यजमानों को बहकाना प्रारम्भ कर दिया कि बस्तीराम तो आर्य होगया अब तुम मेरे यजमान बन जाओ। बस्तीराम जी पर भी दबाव डाला गया कि तुम आर्य मत बनो। किन्तु इन्होंने स्पष्ट कह किया कि चाहे कुछ भी हो हम रहेंगे आर्य, जो हमारे यजमान रहें वे आर्य बन जायें और शेष सब मेरे चाचा के यजमान बन जायें।

सन् संवत् १९३४ (सन् १८७७ ई०) में माघ मास में चेचक की बीमारी फैली। पं० बस्तीराम जी भी अत्यधिक रुग्ण हुए और इनकी आंखों में विकार होगया किन्तु कुछ दीखता था। संवत् १९३६ (सन् १८७९ ई०) में भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को ठाकुर सुलतानसिंह जी का देहान्त होजाने पर इनकी सहायता में पर्याप्त न्यूनता होगई।

संवत् १९३७ वि० (सन् १८८० ई०) में राव शिवताससिंह जी स्वामी दयानन्द जी को रेवाड़ी ले आये और पं० बस्तीराम जी भी उनके पास चले गये। **रानी के तालाब** पर प्रचार होने लगा। पंडित जी एक-दो भजन पहले और एक-दो पश्चात् कह देते थे, बीच में स्वामी जी का व्याख्यान होता था। **मूर्तिपूजा, मृतक-श्राद्ध, मरकर भूत बनना, गंगा में स्नान करने से पापों का कट जाना, ईश्वर का अवतार धारण करना** इत्यादि विषयों का प्रबल खंडन होता था। प्रान्त में हलचल मच गई। रेवाड़ी के मुख्य-मुख्य पोप मिलकर राव राजा युधिष्ठिर जी के पास गये और प्रार्थना की-हे धर्म के अवतार, धर्ममूर्ति! आपके होते हुए आपके तालाब पर स्वामी दयानन्द (न जाने ईसाई है या कृश्चियन है) श्रीमद्भागवत आदि अठारह पुराणों का और गंगा, यमुना, कृष्ण और दुर्गा का खंडन करता है। शिवपूजा को पाप बतलाता है। इसका कुछ प्रबन्ध न हुआ तो कलियुग आ ही गया। साथ में खेड़ीवाला बस्तीराम ऐसे बुरे-बुरे भजन गाता है कि धर्मात्मा आदमी सुन भी न सके।

राव साहब ने कहा कि आज हम चलेंगे और सब काम ठीक हो जायेगा। शहर और गांव में कोलाहल मच गया कि आज प्रचार में राव साहब आयेंगे और इनको खंडन करने का पता लग जायेगा।

प्रचार के समय राव साहब की टमटम तैयार हुई, राव साहब और उनके **मंत्री नरसिंहबक्स** डेरोली नांगल वाले जो बड़े विद्वान् थे, टमटम में सवार हुए। तब महल के द्वार पर आकर रानी ने मंत्री जी को बुलाया और कहा कि आप राव साहब से यूं कहो कि **"हम गृहस्थी हैं, हमारे स्थान पर साधु, महात्मा, योगी कोई आये उसकी भोजन वस्त्र से जैसी बने वैसी सेवा करें। किसी का अपमान करना और बुरा-भला कहना हमारा काम नहीं है।"** चौधरी जी ने रानी का संदेश राव साहब को सुना दिया। राव साहब के बहुत से विचार बदल गये और जाकर प्रचार सुनने लगे। उस दिन श्रोताओं की उपस्थिति भी बहुत अधिक थी। जहां तहां चर्चा थी कि राव साहब बड़े समझदार हैं, सब सुन लेंगे तब पकड़ेंगे। जब प्रचार समाप्त हुआ तब राव साहब स्वामी जी के पांवों में जा गिरे। उनकी आंखों से पानी निकल आया। स्वामी जी ने महाराज का हाथ पकड़कर उठाया और कहा-**अपने चित्त की बात कहो।**

राजा ने हाथ जोड़कर कहा-स्वामी जी मूर्ख लोगों के कहने से आपके लिये बड़े अनिष्ट विचार लेकर आया था किन्तु यहां आने पर और बात पाई। उस मानसिक पाप का प्रायश्चित्त क्या होगा? स्वामी जी ने कहा **विचार करता है बुरा और कर्म करता है भला तो फल कर्म का मिलेगा विचार का नहीं।** राजा ने कहा मैं आपकी कुछ सेवा करना चाहता हूं आज्ञा दीजिये।

स्वामी जी ने कहा मुझे धन तो चाहिये नहीं, भोजन वस्त्र का काम चल रहा है, मकान मैं रखता ही नहीं। देश की सेवा करता हूं, आप भी देश की सेवा करें। **आप अपने यहां एक गोशाला खोल दें। आप यदुवंशी हैं, यदुवंशियों का काम गोरक्षा करना है। आप जनेऊ लें और आर्य बनें।**

राव शिवताससिंह जी ने राजा युधिष्ठिर जी को भली-भांति समझा दिया। युधिष्ठिर जी शिवताससिंह जी के ही पुत्र थे। **राव तुलाराम जी ने तो इनको गोद लिया था।** राजा युधिष्ठिर जी ने सभा में खड़ा होकर कहा भाइयो स्वामी जी के कहने से हम रामपुरा में गोशाला खोलना चाहते हैं जिस भाई के पास गाड़ी हो वह पत्थर ढोने में अपनी गाड़ी लगा दे। धर्म तो यह है कि जो रुपया कमाता है वह इस कार्य में पन्द्रह आने ले ले तो अच्छा है परन्तु हमसे पन्द्रह आने और रुपये के स्थान में सत्रह आने ले ले।

बहुत से अहीरों ने नाम लिखवाये। राव साहब ने कहा कि रविवार से कार्य प्रारम्भ हो जायेगा। रविवार के दिन कचहरी में हवन होगा और मैं जनेऊ धारण करूंगा। मेरी बिरादरी के जो भाई जनेऊ लें वे सब आ जायें। रविवार को पं० बस्तीराम जी आदि ने किले में हवन किया और सैकड़ों यज्ञोपवीत प्रदान किये।

चौ० नरसिंहबक्स जी (राव साहब के मंत्री) गोशाला कमेटी के प्रधान बने और स्वामी आत्मानन्द जी को यहां छोड़कर स्वामी दयानन्द जी जयपुर चले गये। पं० बस्तीराम जी भी साथ गये। जयपुर से पंडित जी वापिस घर आ गये। पुराने भजन छोड़ दिये और आर्यसमाज के नये भजन बनाकर गाने लगे।

संवत् १९४४ वि० (सन् १८८७ ई०) पंडित जी की माता जी का भी देहान्त हो गया। सं० १९५० (सन् १९९३) के पश्चात् पंडित जी के मित्र हरिसिंह ने कोटा में चंडीप्रसाद उपदेशक से सत्यार्थप्रकाश प्राप्त किया। उस समय पं० बस्तीराम जी स्वयं तो सत्यार्थप्रकाश नहीं पढ़ सकते थे किन्तु दूसरे से सुनते थे। कुछ वर्ष पूर्व नेत्रज्योतिविहीन होगए थे।

पंडित जी ने हरयाणा, राजस्थान और उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज का प्रचार किया। अनेक शास्त्रार्थ किए। मटिण्डू, भैंसवाल आदि गुरुकुलों की सहायता की। वृद्ध और नेत्रज्योतिविहीन होने पर भी आपने अन्तिम समय तक आर्यसमाज का प्रचार किया। आपकी पुस्तकों के द्वारा भी वैदिक सिद्धान्तों का बहुत प्रचार हुआ है।

**देहत्याग**-पंडित जी प्रचार करते हुए बराणी (तहसील झज्जर) में ठाकुर हरफूलसिंह जी के घर पहुंचे। मृत्यु से पूर्व आपको अतिसार हुआ और २६ अगस्त, १९५८ ई० तदनुसार श्रावण शुक्ला द्वादशी सं० २०१५ वि० मंगलवार को प्रात:काल सूर्योदय के समय लगभग ६ बजे पंडित जी ने नश्वर देह को छोड़ दिया। उसस समय आपकी आयु ११६ वर्ष १० मास २३ दिन थी।

**अन्त्येष्टि-संस्कार**-पंडित जी के देहावसान का वृत्तान्त सुन आचार्य भगवान्देव जी (स्वामी ओमानन्द जी) खातीवास से बराणी पहुंचे और पण्डित जी के शव को २३७२ डी.एल.डी. जीप में रखकर पौने दस बजे गुरुकुल झज्जर में पहुंचे। यहां उनके शव का चित्र लिया और शव को दयानन्दमठ रोहतक में पहुंचाया गया। आचार्य जी के साथ पण्डित जी के शिष्य चौ. रामपत जी आसन निवासी भी थे।

निकटस्थ सभी ग्रामों में सूचना भेजी गई और २७ अगस्त को १ बजे से २ बजे तक रोहतक शहर में पण्डित जी की शोभायात्रा निकाली गई। २ बजे मठ में ही पंडित जी की अन्त्येष्टि वैदिक रीति से की गई। अन्त्येष्टि संस्कार पण्डित जयदयाल जी पुरोहित ने करवाया और वेदमन्त्र पढ़नेवाले गुरुकुल झज्जर के ४ पंडित (१) वेदव्रत शास्त्री, (२) यज्ञदेव शास्त्री, (३) सुदर्शनदेव शास्त्री, (४) महावीर शास्त्री तथा कुछ अन्य सज्जन भी थे।

पण्डित जी के अन्त्येष्टि संस्कार में जिला रोहतक के सभी प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया और समस्त लोगों ने बड़े सत्कार के साथ पण्डित जी की अन्तिम क्रिया की।

यहां पंडित जी के जीवन की संक्षिप्त घटनायें लिखी गई हैं। जिस सज्जनों के पास पंडित जी के जीवनचरित-सम्बन्धी सामग्री उपलब्ध हो वे उसे दयानन्दमठ रोहतक में मेरे पास भिजवाने की कृपा करें जिससे पण्डित जी का जीवन चरित लिखने में सहायता मिल सके।

**-वेदव्रत शास्त्री**

**नोट-पं. बस्तीराम जी की उपलब्ध १३ पुस्तकें कम्प्यूटर द्वारा ऑफसेट मशीन पर एक ही जिल्द में शीघ्र प्रकाशित की जारही हैं।**

वीर भगतसिंह के बलिदान दिवस पर विशेष....

# इतिहास उधर चल देता है, जिस ओर जवानी चलती है

क्या हम कभी वीर भगतसिंह को भूल सकते हैं जो २४ वर्ष की आयु में ही फांसी के फन्दे पर झूल गए। धन्य हैं वीर राजगुरु एवं सुखदेव-जो भगतसिंह के साथ ही फांसी के फन्दे पर झूले। आने वाली पीढ़ियां सदा याद रखेंगी इन तीनों देश के दीवानों को जिन्होंने अपने यौवन देश की स्वतन्त्रता के लिए अर्पित कर दिए। इन तीनों वीरों का ही नहीं बल्कि असंख्य वीरों का नाम सदा अमर रहेगा। कुर्बानी के गीत गाना आसान है लेकिन कुर्बानी देना कठिन है। लेकिन इतिहास में केवल रणवाकुरों के नाम ही लिखे जाते हैं-

**जिक्र उनका ही होता है,**
**कफन बांधे जो फिरते हैं।**
**वे ही कुछ कर गुजरते हैं,**
**जो सौदा सिर का करते हैं।**

२३ मार्च १९३१ ई० को लाहौर सैन्ट्रल जेल में सायं ७ बजे तीनों क्रान्तिकारियों को फांसी दी गयी। फांसी से पूर्व तीनों ने इंकलाब जिंदाबाद के गगनभेदी नारे लगाए। अपने देश की पावन मिट्टी को चूमा। जेल में भी इन नारों से आकाश गूंज रहा था। कैदी अपनी बैरकों में बंद थे, लेकिन उनकी जबान बंद नहीं थी। नारों का जोश अंग्रेज अधिकारियों को सकते में डाल रहा था कि कहीं कोई अनहोनी न हो जाए। आखिर सायं ७ बजे इन तीनों को फांसी दे दी गई। गगनचुम्बी नारों का शोर थम गया। चारों ओर सन्नाटा छा गया। अब तो कैदियों की आँखों में केवल आँसू ही थे-और कुछ नहीं। सत्य तो यह है कि इस दिन हर देशवासी रोया था। जंगल की आग की तरह यह समाचार चारों दिशाओं में फैल गया। मातृभूमि के लिए शीश चढ़ाने की होड़ लग गई।

**मुझे तोड़ लेना वनमाली,**
**उस पथ पर तुम देना फेंक।**
**जिस पथ पर शीश चढ़ाने,**
**बढ़ें वीर अनेक।**

वीर भगतसिंह का जन्म २८ फरवरी १९०७ में पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा गांव में सरदार किशनसिंह के घर हुआ। इसी दिन ही इनके पिता व दोनों चाचों को अलग-अलग जेलों से जमानत पर रिहाई मिली थी-इसलिए बालक का नाम भगतसिंह रखा गया-अर्थात् भागों वाला। प्राइमरी शिक्षा गांव के एक स्कूल में हुई लेकिन उच्च शिक्षा लाहौर नगर में हुई सत्य तो यह है कि नेशनल कॉलेज लाहौर ने ही भगतसिंह को क्रान्तिपथ पर बढ़ाया। यहां पढ़ते-पढ़ते ही वह श्री चन्द्रशेखर आजाद, श्री गणेशशंकर विद्यार्थी, श्री भगवतीचरण, श्री बटुकेश्वर दत्त आदि क्रान्तिकारियों के संपर्क में आ गए। २० अक्तूबर १९२८ को लाहौर में साईमन कमीशन का विरोध लाला लाजपतराय के नेतृत्व में सैकड़ों नवयुवकों ने मिलकर किया था। सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स द्वारा जलूस पर लाठियां बरसाई गईं जिसमें लालाजी बुरी तरह घायल होगए। १७ नवम्बर १९२८ को लालाजी का निधन होगया।

क्रान्तिकारियों ने लाला लाजपतराय की मौत का बदला २८ दिसंबर १९२८ ई० को ले लिया। सांडर्स को गोलियों से भून दिया गया। अब तो नवयुवकों की टोलियां आजादी की मशाल हाथों में लेकर निकल पड़ीं। ८ अप्रैल १९२९ ई० को केन्द्रीय एसेम्बली में दो विधेयक पारित किए जाने थे। इनके विरोध में भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त ने एसेम्बली में बम फेंके। सभी अंग्रेज सदस्य अपनी जान बचाने के लिए भागे। लेकिन भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त एसेम्बली में खड़े रहे और अंग्रेज सरकार के विरुद्ध नारे लगाते रहे। आखिर इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। फिर २३ मार्च १९३१ ई० को फांसी दे दी गई।

**शहीदों की चिताओं पर**
**लगेंगे हर वर्ष मेले।**
**वतन पर मिटने वालों का**
**यही बाकी निशां होगा॥**

**-कृष्णलाल वोहरा,**
प्रिंसिपल-आर्य०सी०सै०स्कूल, सिरसा

## हरयाणा आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में बृहदयज्ञ एवं विचारगोष्ठी का आयोजन

**स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती** संस्थापक व कुलपति गुरुकुल धीरणवास एवं परिषद् के संरक्षक की अध्यक्षता में शनिवार, ९ अप्रैल २००५ वार शनिवार को गुरुकुल धीरणवास में ५० किलो (सवा मन) घी का बृहद् यज्ञ एवं विचारगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् आचार्य सत्यव्रत गुरुकुल सुन्दरपुर (रोहतक) होंगे। विचारगोष्ठी में परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिवराम आर्य विद्यावाचस्पति, आचार्य हरपाल शास्त्री, डा० प्रमोदकुमार शास्त्री, श्री अभयसिंह जी कुण्डू आचार्य गुरुकुल सिंहपुरा एवं वेदप्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प्रो० ओमकुमार आर्य (जीन्द), पं० रामस्वरूप जी शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर, मुख्य वक्ता होंगे। इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

**-अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी,**
संयोजक व प्रधान हरयाणा आर्य युवक परिषद् एवं अन्तरंग सदस्य सभा

## आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कुरुक्षेत्र में संन्यास दीक्षा समारोह सम्पन्न

कुरुक्षेत्र (१४ मार्च) आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कुरुक्षेत्र की यज्ञशाला में सोमवार को संन्यास दीक्षा समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह में ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थान) के आचार्य विष्वङ् दर्शनाचार्य ने दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ के संस्थापक स्वामी सत्यपति परिव्राजक से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा से पूर्व प्रसिद्ध शिक्षाविद् व गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डॉ० देवव्रत शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के पश्चात् आचार्य विष्वङ् का केशकर्तन किया गया।

इस मौके पर स्वामी सत्यपति परिव्राजक द्वारा आचार्य विष्वङ् को गेरुवें वस्त्र पहनाकर संन्यास के कर्तव्यों का उपदेश दिया गया। उन्होंने योगाभ्यास, दोनों समय ईश-उपासना, मुक्ति-प्राप्ति का संकल्प तथा राग-द्वेष छोड़कर प्रीतिपूर्वक व्यवहार करने की शिक्षा दी। इन्हें अपने जीवन में आत्मसात् कर संसार का उपकार करना ही संन्यासी का मुख्य कर्तव्य है। संन्यास दीक्षा के बाद आचार्य विष्वङ् का नामकरण स्वामी विष्वङ् कर दिया गया है।

स्वामी विष्वङ् ने बताया कि जीवात्मा का एक नाम विष्वङ् भी है। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की अन्त्येष्टि के पश्चात् बची भस्म जिस उद्यान में बिखेरी गई थी, वही उद्यान आज 'ऋषि उद्यान' के नाम से जाना जाता है। ऋषि उद्यान महर्षि दयानंद की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित है। उन्होंने बताया कि उन्होंने १९९१ से रोजड स्थित दर्शन योग महाविद्यालय में दर्शन व उपनिषदों का अध्ययन किया। इसके पश्चात् उन्होंने १९९४ से १९९८ तक इसी महाविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। वे आजकल ऋषि उद्यान अजमेर को केन्द्र बनाकर प्रचार कार्य में संलग्न है।

## अवकाश के दिनों में शिविर लगायें

आज का युवक नारकीय जीवन का शिकार बना है। इससे प्रत्येक माता-पिता कहलाने वाले तथा हितैषी उनकी इस दशा से अतीव चिंतित तथा दुःखी हैं। इसका केवलमात्र समाधान युवकों को वैदिक सिद्धान्तों से दीक्षित करना है। अवकाश के दिनों में निम्नलिखित सभी धार्मिक संगठन शिविरों का आयोजन करने का कष्ट करें। ७ दिन के शिविरों में गुरुकुलीय वातावरण में नौजवानों को रखने से युवकों का जीवन निर्माण हुआ है तथा वर्तमान में हो रहा है। इसलिए अवकाश के दिनों में निम्न प्रकार से शिविर का आयोजन करें।

(१) सभी गुरुकुलों में शिविर लगाये जायें। (२) मण्डल तथा उपमण्डलों में बड़े स्तर पर शिविर लगें। (३) डी०ए०वी० शिक्षण संस्था तथा आर्य संस्थायें शिविर लगायें। (४) सभी आर्यवीर दल शिविरों का आयोजन करें। (५) सभी धार्मिक व्यक्ति शिविर लगाने में सहयोग दें। (६) सूचित करने का कष्ट करें कि किस स्थान पर कब शिविर लगा रहे हैं जिससे विद्यार्थी भेजने में सहयोग किया जा सके।

-आचार्य बलदेव, सभा प्रधान

## आर्यसमाज को आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपने वार्षिक उत्सव नहीं मनाए हैं, वे अपने आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव मनावें। जिन आर्यसमाजों ने अपना वर्ष २००४-२००५ का वेदप्रचार, दशांश एवं सर्वहितकारी शुल्क नहीं भेजा है वे सभा कार्यालय मे ३० अप्रैल २००५ तक भेज देवें। १ अप्रैल २००५ से नया वित्तीय वर्ष २००५-२००६ शुरू हो जाएगा।

-सभामंत्री

## वेदप्रचार

श्री ओमप्रकाश आर्यप्रधान वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के नेतृत्व में दिनांक ४-३-०५ से ६-३-०५ तक गांव ताजपुर तिहाड़ा जिला सोनीपत की चौपाल में महिला जागृति के रूप में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें ४० महिलाओं तथा १५ पुरुषों ने भाग लिया। महाशय होशियारसिंह नाहरी ने इस कार्यक्रम में दहेज न लेने, घूंघट न करने, कन्या भ्रूणहत्या न करने की प्रेरणा दी तथा सभी से इसका प्रस्ताव पास करवाया। श्री ओमप्रकाश आर्य ने सभी बहन-भाइयों से अपने परिवार में शराब न पीने की प्रेरणा देकर यज्ञ में आहुतियां डलवाईं।

## महर्षि दयानन्द जी के जन्मदिवस पर यज्ञ

दिनांक ५ मार्च २००५ को आर्यनिवास नलवा (हिसार) में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के १८१वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में पारिवारिक यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ पर नजदीक की कई ढ़ाणियों के नर-नारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सभा के प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने महर्षि के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालते हुवे बताया कि स्वामी जी संसार में निराले महापुरुष थे। जिन्होंने प्राणिमात्र की भलाई के लिए १७ बार जहर पीया, १८ घंटों की समाधि छोड़ी तथा देश की गरीबी व गुलामी पर रोये। इसलिए ऋषि ऋण से अनृण होने के लिए हम सब आर्यों ने उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपना आत्मनिरीक्षण करके उनके बताये रास्ते पर चलने का दृढ़ संकल्प लेना चाहिए।

-भलेराम आर्य, प्रधान आर्यसमाज, नलवा

# आर्य-संसार

## बहन सुमित्रा आर्या प्रचारमंत्री नियुक्त



सभाप्रधान आचार्य बलदेव जी की स्वीकृति से बहन सुमित्रा आर्या, संचालिका महर्षि दयानंद विद्यालय माता दरवाजा, रोहतक को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रचारमंत्री नियुक्त किया गया है। बहन जी अपनी शिष्यमण्डली के साथ आर्यसमाज का प्रचार जोर-शोर से करती आई हैं। अब वे अधिकार पूर्वक सभा में कार्य करेंगी। प्रचारमंत्री नियुक्त होते ही उन्होंने महिला मण्डली की नियुक्ति कर गांव-गांव में जाकर महिलाओं में जागृति लाने का कार्य शुरू कर दिया है। इसके बड़े ही सुखदायक परिणाम निकले हैं। यह आर्यसमाज के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कदम है। हमें पूर्ण आशा है कि बहन जी इसी तरह कर्त्तव्यपरायणता से अपने कार्य का निर्वहन करती रहेंगी। -सभामंत्री

## बोहर में वेदप्रचार की धूम

१४ मार्च को ग्राम बोहर जिला रोहतक में सभामंत्री श्री सत्यवीर शास्त्री के निर्देशन में वेदप्रचार का कार्यक्रम रखा गया जिसमें श्री पं० रामरख की भजनमण्डली ने भजनों के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वासों तथा पाखण्डों पर चोट करते हुए कहा कि-लोगो! जीवन जीने का सबसे सुंदर मार्ग वेद का मार्ग है, वेद के रास्ते पर चलने से समाज को, मानव को सच्चाई तथा सुखद जीवनयापन करने की कला का पता चलता है। वेद कहता है-'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बन। मननशील होकर कार्य कर। यही पशुता और मनुष्यत्व में अन्तर है कि मानव बुद्धि से विचार करके कार्य करें। पं० जी ने कहा कि अंधविश्वासों के कारण ही हम सदियों गुलाम रहे। उन्होंने आह्वान किया पाखण्डों को छोड़कर ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज द्वारा प्रचलित विचारधारा से जुड़ जाओ, अन्यथा महाविनाश को प्राप्त होओगे। सभामंत्री श्री सत्यवीर जी ने कहा कि हम अपनी प्राचीन गौरवमयी संस्कृति को छोड़ने के कारण ही बेबस और लाचार हैं। उन्होंने कहा कि आज पिता-पुत्र में वैमनस्य, माता-बहन में तकरार है। इसका कारण यही है कि हम अपने प्राचीन जीवन मूल्यों से अलग-थलग पड़ गये। अपने जीवन में अपने लिए संकल्प लिया तथा महामंत्री जी से अनुरोध किया कि वेदप्रचार के कार्य को आर्यसमाज जोर-शोर से चलाता रहे, उनका सहयोग तन-मन-धन से आर्यसमाज के साथ मिलकर पाखण्ड को उखाड़ फैंकने में सदा साथ रहेगा।

इस अवसर पर अनेक दानी सज्जनों ने अपनी पवित्र कमाई में से दान वेदप्रचार में दिया। आर्यसमाज बोहर की ओर से उनका धन्यवाद करता है। इस वेदप्रचार में १३४९ रुपये का दान आया। -कृष्णकुमार शास्त्री

## जयंती समारोह

यदि आठ वर्ष का बच्चा और साठ वर्ष का बूढ़ा घर छोड़ दे तो समाज में शांति कायम हो सकती है। यह बात हरयाणा आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने स्वतन्त्रता सेनानी माडूराम आर्य की ८८वीं जयन्ती पर आयोजित समारोह में कही। उन्होंने कहा कि साठ वर्ष आयु होने पर हर व्यक्ति वानप्रस्थ ग्रहण कर समाज में सामूहिक कार्यों के लिए घर छोड़ दे तथा समाज में शिक्षा के प्रचार के लिए कार्य करना आरम्भ कर दे तो पूरे राष्ट्र व समाज में शांति तथा खुशहाली आ सकती है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए किसान नेता का० कृष्णस्वरूप गोरखपुरिया ने माडूराम आर्य के जीवन को आदर्श बताते हुए कहा कि वे आर्य जी से काफी प्रभावित हुए तथा आज वे जो कुछ भी हैं उसमें आर्य जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

रा०व०मा०वि० के प्राचार्य शेरसिंह ने माडूराम आर्य को सफेद कपड़ों में साधु बताते हुए कहा कि आज भी क्षेत्र में उनका काफी प्रभाव है। समारोह को जिला परिषद सदस्या सुमनलता सिवाच, स्पोर्टस क्लब के प्रधान बलजीत यादव, का० बलबीरसिंह व पं० सूरजभान आर्य ने भी सम्बोधित किया। ट्रस्ट के प्रधान शमशेर आर्य ने अतिथि-मेहमानों का स्वागत करते हुए माडूराम आर्य के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला तथा भविष्य की योजनाएं बताईं।

-शमशेर आर्य पत्रकार, प्रधान आर्यसमाज गोरखपुर तथा अन्तरंग सदस्य सभा

## आर्यसमाज थानेसर ने मनाया ऋषिबोधोत्सव

नवजागृति, नवसंस्कृति, नवोल्लास, नवजीवन संचार करने वाली शिवरात्रि का महत्त्व आर्यसमाज के लिए बहुत ज्यादा है। आज ही के दिन मूलशंकर को सच्चे शंकर को जानने का बोध हुआ। अपने को जागरूक व आंदोलित करने हेतु आर्यसमाज थानेसर (कुरुक्षेत्र) द्वारा मूल बोधरात्रि हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

पं० लक्ष्मणदत्त जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसके यजमान आर्यसमाज प्रधान श्री धर्मपाल जी बने। पश्चात् स्वामी अश्व जी परमहंस ने स्वामी दयानंद जी द्वारा पुनः प्रतिपादित त्रैतवाद के सिद्धान्त पर प्रवचन किया व इसी को आर्यसमाज का मूल आधार बताया। पं० हरिशचन्द्र जी ने स्वामी जी के जीवन सम्बन्धी विभिन्न घटनाओं का श्रवण कराया। इसी क्रम में श्री नन्दकिशोर जी शास्त्री ने (जो आज के मुख्यवक्ता रहे) स्वामी जी से पूर्व भारत की दुरवस्था, मूल जी को बोध, शिवरात्रि का आर्यसमाज के लिए महत्त्व, आज के शिवलिङ्गार्चना की उत्पत्ति, तात्कालिक अंग्रेजों की नीतियों के विरुद्ध स्वामी जी के विचार-स्वामी जी की वैज्ञानिकता आदि विषयों पर विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की।

-देवेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज थानेसर (कुरुक्षेत्र)



## ऐसे थे महाबलिदानी...... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

गोलियां चलाकर सांडर्स की हत्या कर दी। सांडर्स हत्या के अभियोग में भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव पर मुकदमा चलाया गया। लाहौर सैंट्रल जेल में इन तीनों देशभक्तों को फांसी की सजा दी गई। आजाद पुलिस से पकड़े न जा सके।

उन्हीं दिनों गांधी-इर्विन समझौता होने जा रहा था। जनता ने महात्मा गांधी जी से प्रार्थना की कि समझौते की शर्तों में उन तीन युवकों की रिहाई की शर्त भी अवश्य रखी जावे। तत्कालीन विश्वस्त सूत्रों के अनुसार यह आम धारणा थी कि वायसराय लार्ड इर्विन इस शर्त को मानने के लिए तैयार भी थे परन्तु गांधी जी ने अपनी भ्रान्त धारणाओं पर आधारित 'अंहिसा' को सामने रखते हुए और यह कहते हुए कि "मैं अहिंसावादी इन जवानों की सहायता नहीं कर सकता, ये तो आतंकवादी हैं, इस प्रकार लोगों की सर्वसम्मत मांग को तिरस्कारपूर्वक ठुकरा दिया था।"

परिणामस्वरूप तीनों क्रान्तिकारी वीरों को, जिन्होंने देश को 'इंकलाब जिंदाबाद' 'क्राति अमर रहे' का नारा दिया था, २३ मार्च १९३१ के दिन लाहौर सैन्ट्रल जेल में फांसी पर लटका दिया गया।

उस दिन जनता की तीव्र प्रतिक्रिया से भयभीत होकर दिन छिपने पर जेल की पिछली दीवार तोड़कर तीनों को मारकर उनके शवों को बोरी में भरकर उनकी लाश की बोटी-बोटी करके तीनों के शवों को पुलिस की गाड़ी में डालकर रात के अंधेरे में फिरोजपुर पुल के निकट सतलुज नदी के दांए तट पर मिट्टी का तेल डालकर तीनों को जलाकर उनकी गर्म चिता में से अधजली हड्डियों व राख को निकालकर नदी की तेज तरंगों में बहा दिया गया था। अत्याचार की हद हो गई थी।

प्रातःकाल जब जनता को पता चला तो सभी भागकर उस हत्या स्थल पर हजारों की संख्या में पहुंचे, वहां पर कुछ बची हुई भस्म को उठाकर मस्तकों पर लगाकर आँसू बहाते रहे। रामप्रसाद बिस्मिल ने फांसी पर चढ़ने से पहले गीत गाया था-

**शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,**<br>
**वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।**<br>
**इलाही वो भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे,**<br>
**जब अपनी जमीं होगी, अपना आसमां होगा॥**

किंतु आज तो-

**उनके बलिदानों की चर्चा भी नहीं, जलते थे जिनके खून से चिरागे वतन।**<br>
**आज जगमगाते हैं मकबरे उनके, जो चुराते थे शहीदों के कफन॥**

**विशेष**-२३ मार्च को भगतसिंह आदि वीरों के फांसी पर चढ़ने के समाचार को सुनकर सैंटस्टीफन कॉलेज दिल्ली में पढ़ने वाले नवयुवक छात्र भगवान्‌सिंह-भगवान्देव ने नरेला-दिल्ली, इनके बलिदानों से प्रेरणा पाकर कॉलेज में पढ़ना छोड़कर ब्रह्मचर्य का कठिन व्रत धारणकर समाजसेवा का व्रत लेकर आर्यसमाज का नेतृत्व करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुलों का आर्ष पाठविधि से संचालन करते हुए भगतसिंह जैसे अनेक युवकों को तैयार किया। गोहत्याबंदी सत्याग्रह, शराबबंदी सत्याग्रह, हिन्दीरक्षा सत्याग्रह आदि अनेक सत्याग्रहों का नेतृत्व किया। विदेशों में जाकर वेदों का संदेश दिया आर्यसाहित्य का प्रचार किया। सत्यार्थप्रकाश का ताम्रपत्रों पर प्रकाशन कर महान् कार्य किया। कन्याओं के उद्धार के लिए अपनी पैतृक जमीन दान देकर आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला-दिल्ली की स्थापना की। ऐसे थे स्वामी ओमानन्द।

कितने आश्चर्य की बात है कि भगतसिंह के बलिदान दिवस पर २३ मार्च १९३१ को समाजसेवा का जो व्रत उन्होंने लिया था, उनका वह व्रत २३ मार्च २००३ को ही पूरा हुआ और वे संसार से विदा हो गये। उन्हें भी आर्यसमाज की सादर श्रद्धांजलि

# परिवर्तनशील है संसार

क्यों व्यर्थ चिन्ता करते.हो? कौन तुम्हें पराजित कर सकता है। जो हुआ, अच्छा हुआ है, जो हो रहा है, अच्छा हो रहा है, जो होगा वह भी अच्छा ही होगा। तुम भविष्य की चिन्ता न करो, भूत का पश्चात्ताप करके अपना भविष्य सुधारो, वर्तमान तो चल रहा है।

तुम्हारा क्या गया है? जो अब रो रहे हो, क्या, कुछ साथ लाये थे जो तुमने खो दिया है, खाली हाथ आये थे, कष्ट न मानो, **यह परिवर्तनशील संसार है।**

**ईशावास्यमिदं सर्वं, यत्किञ्चित् जगत्यां जगत्।**

न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो, प्रभु जो कुछ करता है, अच्छा करता है। उसी की प्रेरणा से यह सब संसार गतिशील है। आनन्द परिवर्तन में ही है। सदा एक समान वर्षभर जीवन व्यतीत करेंगे। दुःख होना स्वाभाविक है। बारह मास ग्रीष्मऋतु रहे तो सभी व्याकुल हो जायेंगे। ग्रीष्मऋतु के पश्चात् शरद्ऋतु। प्रकृति भी परिवर्तन चाहती है। आहार-विहार भी परिवर्तन चाहता है। अतः आवश्यकता थी परिवर्तन की। निराशा मत कीजिए। आशावान् बनकर पुनः करो उद्योग।

आदरणीय स्वर्गीय स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के निधन के पश्चात् जब सार्वदेशिक सभा भवन में जाने का अवसर मिला तो बहुत बड़ा परिवर्तन पाया। व्यवस्था की दृष्टि से अत्यन्त परिवर्तन पाया। यह परिवर्तन भी शोभनीय पाया। यह परिवर्तन भी अत्यन्त आवश्यक था। क्योंकि मनुष्य का स्वभाव भी ऐसा है, वह भी परिवर्तन चाहता है।

वस्तुतः इस परिवर्तन से पूर्व के अधिकारियों के कार्य-व्यवहार से मैं स्वयं अत्यन्त असन्तुष्ट था। उनका सब क्रिया-कलाप अशोभनीय और निन्दित था। जब सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन हो रहा था। आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली-६ के सब दरवाजे बन्द, अपने-अपने मिलने-जुलने वाले व्यक्तियों को भवन में प्रवेश, शेष सभी व्यक्ति बाहर दृश्य देख रहे थे। इतने मतदाता नहीं थे, जितने पुलिस कर्मचारी और सुरक्षा अधिकारी थे। यह सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन था। अत्यन्त दुःख हो रहा था जो आर्य **अभयं मित्रादभयममित्राद्** मन्त्र का पाठ पढने वाले, ईश्वर विश्वासी बन्द भवन में बैठकर निर्वाचन करें, शोभनीय नहीं।

इससे भी अधिक व्यथा तब पहुंची, जब कैप्टन श्री देवरत्न जी निर्वाचन स्थल पर उपस्थित नहीं, वे कहीं अस्पताल में पड़े हुए थे। उनकी अनुपस्थिति में प्रधान पद का निर्वाचन हुआ। फोन से सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन-अन्य प्रांतों से आये हुए प्रतिनिधि भी हाँ में हाँ कर रहे थे। अत्यन्त लज्जाजनक कार्य देखकर मै खिन्न हो रहा था, पर विवश था। उससे अधिक दुःख यह था कि सभी अधिकारी ईसाई पद्धति वाली वेशभूषा में कोट, पैंट और टाई लगाए हुए थे।

अरे! ईसाई पद्धति को अपनाने वाले अधिकारियो! अपना सुधार करो। पुनः परिश्रम करो। जीवन में सुधार करो, फिर सभा के अधिकारी बनो।

मुझे एक घटना स्मरण आ गई। जब सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले थे। आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली-६ में एक बैठक का आयोजन किया गया था। उस बैठक में सर्वश्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती तथा प्रो० रत्नसिंह जी गाजियाबाद वाले भी उपस्थित थे। उस बैठक में एक प्रस्ताव भी यह था कि सार्वदेशिक सभा का प्रधान संन्यासी होना चाहिए। अगले दिन कुछ आर्य लोगों ने सभा भवन आसफ अली मार्ग पर धरना दिया और यज्ञ करने लगे। पुलिस ने हटवा दिया। तब सभा भवन के साथ पार्क में मीटिंग की। यह कार्यक्रम दो-तीन दिन चला। भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज नयाबांस की ओर से थी।

उसी अवसर पर श्री शालवाले दीनानगर, दयानन्दमठ पहुंचे। स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली आनन्दबोध सरस्वती बन गये सभाप्रधान।

अतः सभी आर्यों से प्रार्थना है और निवेदन है कि सार्वदेशिक सभा प्रधान तो कोई संन्यासी ही होना चाहिए। कुछ कार्य परम्परा से भी हुआ करते हैं।

इसी प्रकार पूर्व अधिकारियों से प्रार्थना है और निवेदन भी है कि सब द्वेष भावना को छोड़कर **योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।** उस परमपिता परमात्मा पर विश्वास कर न्यायालयों से सभी अभियोगों को समाप्त कर शान्ति से घर बैठें। त्याग भावना से ही लाभ होगा। देश में फिर आर्यों का शासन स्थापित हो। आप तो प्रतिदिन संगठन सूक्त का पाठ करते हैं। संगठित होकर देश में शान्ति स्थापित करें। यही आर्यत्व है। श्री सत्यपाल जी पथिक, अमृतसर वालों का एक भजन प्रतिदिन सुनता हूं कि-

**भगवान्! इन आर्यों को पहली लगन लगा दे।**
**छोड़ दे छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।**

आज १८१वें ऋषि जन्मोत्सव पर एक समय भोजन करके व्रत करें, प्रतिज्ञा करें, और करें संकल्प-ऋषि के वचनों का कुछ तो पालन करें। तभी तो अनृण हो सकेंगे।

१. **हिन्दी अपनाओ**-आपका पत्र-व्यवहार हिन्दी में हो। बैंक खाते में हस्ताक्षर हिन्दी में करें। दूरभाष जब सुनें तो आप हैलो न कहकर नमस्ते कहिए। तुरन्त सामने वाला व्यक्ति समझ जाएगा कि फोन ठीक मिल गया। अपनी पहचान बनाओ।

२. भूल करके भी अभिवादन में हाथ न मिलायें, नमस्कार न करें। केवल नमस्ते कहकर स्वागत करें।

३. आपका नाम ठीक हो-ओ०पी० शर्मा, ओ०पी० चौधरी, ओ०पी० गर्ग तथा ओ०पी० दास आदि न रखकर ओमप्रकाश आर्य से विख्याति प्राप्त करें। अपने नाम के साथ जातिवाचक शब्द न लगावें।

४. सभी संस्कारों में अपने वैदिक विद्वान् को स्मरण करें। सभी उक्त वर्तों का पालन करें। शुद्ध आर्य बनें।

-**राजपाल सिंह शास्त्री**, आचार्य, एम०ए० (द्वय) ३४-चन्दन पार्क, दिल्ली-११००४२



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ...
विक्रमसंवत् २०६१
दयानन्दजन्माब्द १८२





आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

वर्ष ३२ अंक १६ ७ अप्रैल, २००५ वार्षिक शुल्क ८०)

# आर्यसमाज का सैद्धान्तिक परिचय

❑ यशपाल आर्यबंधु,आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद (उत्तर-प्रदेश)

आर्यसमाज एक बुद्धिवादी जन आंदोलन है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द ने १० अप्रैल सन् १८७५ को मुम्बई में की थी। आर्यसमाज के अपने कुछ सुनिश्चित सिद्धान्त हैं, जिनके प्रचार प्रसार में भी आर्यजन प्रयत्नशील रहते हैं। इन सिद्धान्तों की सही जानकारी हो तो प्रचार में सुगमता रहती है। अतः आइये! आर्यसमाज के सिद्धान्तों की जानकारी लें।

आर्यसमाज के सिद्धान्त वही हैं, जो उसके संस्थापक ऋषि के मान्य सिद्धान्त हैं। महर्षि के मान्य सिद्धान्तों की परख करें तो ज्ञात होता है कि महर्षि के मान्य सिद्धान्त वेद आधारित हैं, मनमाने नहीं। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि आर्यसमाज के सिद्धान्त वेद आधारित, वेद प्रतिपादित सिद्धान्त हैं। महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना वेदप्रतिपादित सिद्धान्तों पर की है, अतः आर्यसमाज का मूलाधार पावन वेद हैं, जो ईश्वर की शाश्वत वाणी हैं। वेद पर आधारित होने के कारण आर्यसमाज के सिद्धान्त सत्य सनातन सिद्धान्त हैं। वेद चूंकि ईश्वर की बुद्धिपूर्वक की गई रचना है (वैशेषिक दर्शन) अतः उसमें कोई भी बात बुद्धिविरुद्ध, अयुक्तियुक्त तथा तर्कहीन नहीं है। वेदाधारित होने से आर्यसमाज के मान्य सिद्धान्त भी सर्वथा युक्तियुक्त, तर्कसंगत तथा बुद्धिसम्मत हैं। वेदों वाले ऋषि दयानन्द ने अपने अगाध पाण्डित्य, यौगिक साधनाओं तथा घोर तपस्या से वेदों को मन्थकर वैदिक सिद्धान्त नवनीत हमें प्रदान करने की महती कृपा की है। इसके लिये आर्यसमाज उनका ऋणी है।

आर्यसमाज के सिद्धान्तों की चर्चा करने से पूर्व यह जान लेना समीचीन होगा कि सिद्धान्त कहते किसे हैं। यदि सिद्धान्त की सरल-सी व्याख्या करनी हो तो हम कह सकते हैं कि विभिन्न प्रमाणों, युक्तियों, तर्कों, कसौटियों आदि पर कसने-परखने के पश्चात् अन्ततः जो सत्य सिद्ध होता है, सुनिश्चित होता है, उसे सिद्धान्त कहते हैं। सिद्धान्त अर्थात् ''सिद्ध+अन्त= सिद्धान्त'' सुपरीक्षित, सुनिश्चित मत ही सिद्धान्त है। ईश्वर आदि विभिन्न विषयों पर आर्यसमाज का जो सुनिश्चित एवं सुविचारित मत है, उसे ही सिद्धान्त कहा जाता है। उलूल-जुलूल, अयुक्तियुत, अप्रमाणिक मान्यताओं का नाम सिद्धान्त नहीं। आर्यसमाज के सिद्धान्त सत्य सिद्धान्त हैं, जो शाश्वत वेदवाणी पर आधारित हैं। कोई भी व्यक्ति इनकी सत्यता की परख कर सकता है।

**आर्यसमाज के प्रमुख सिद्धान्त**-जब संक्षेप में आर्यसमाज के प्रमुख सिद्धान्तों कर चर्चा करेंगे। त्रैतवाद आर्यसमाज का सर्वप्रमुख सिद्धान्त है। अखिल ब्रह्माण्ड के मूल उपादान सत्त्व, रजस् और तमस की साम्यावस्था के रूप में अनादि प्रकृति की विषम अवस्था विकृति रूप सृष्टि का भोक्ता अनादि जीव और इन सबके नियन्ता, नियामक ईश्वर की सत्ता की स्वीकृति ही वैदिक त्रैतवाद है। अर्थात् ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीन अनादि पदार्थों की सत्ता को स्वीकार करना ही त्रैतवाद है। अब इन तीनों अनादि पदार्थों की अलग-अलग चर्चा करेंगे।

**ईश्वर**-सत्ता में यथार्थ एवम् अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव और सामर्थ्य का स्वामी सच्चिदानंद आदि लक्षणों वाला,सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने वाले तथा जीवों के कर्मफल की यथायोग्य व्यवस्था करने वाली सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापी सत्ता का नाम ईश्वर, ब्रह्म, परमेश्वर आदि हैं। ईश्वर कभी जन्मादि सांसारिक बंधनों में नहीं आता। न ही वह कभी अवतार लेता है। निराकार होने से उसकी कोई मूर्ति नहीं। वह क्लेश कर्म विपाकाशय से सर्वथा अपरामृष्ट, नित्य, शुद्ध-बुद्ध मुक्त स्वभाव है। वही एकमात्र सबका उपास्य है।

**जीव**-सत्ता में यथार्थ, अल्पज्ञ, एकदेशी, अणुपरिणाम वाला चेतन, अल्प शक्ति वाला, कर्मों का कर्त्ता और फलों का ईश्वरीय व्यवस्था से भोक्ता, कर्मानुसार विभिन्न योनियों में जन्म लेता, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञानादि लक्षणों वाला है। जीव भी अनादि और अनन्त है।

**प्रकृति**-सत्ता में यथार्थ, सृष्टि का उपादान कारण जड़, निश्चेष्ट आदि गुणों वाली अनादि और अनन्त है। कभी सृष्टि का रूप धारण करती है एवं कभी प्रलय का किन्तु स्वतः नहीं, ईश्वर जो सृष्टिकर्त्ता है, उसी के द्वारा सृष्टि और प्रलय होता है। सृष्टि और प्रलय का चक्र प्रवाह से अनादि है।

**नित्य पदार्थ**-ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों नित्य हैं। ईश्वर और जीव कूटस्थ नित्य हैं, प्रकृति परिणामी नित्य है। नित्य पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य ही होते हैं। चूंकि ईश्वर नित्य है अतः उसका ज्ञान (वेद) भी नित्य है। नित्य पदार्थ का आदि और अन्त नहीं होता अर्थात् नित्य पदार्थ अनादि और अनन्त होता है।

**मुक्ति से पुनरावृत्ति**-मुक्ति से पुनरावृत्ति का सिद्धान्त आर्यसमाज का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। सत्य पूछें तो यह महर्षि दयानन्द की एक अनुपम सूझ है। महर्षि का तर्क है कि सीमित साधनों से सीमित सामर्थ्य वाले किसी अल्पज्ञ व्यक्ति द्वारा किये गये सीमित कर्मों का अनन्त फल कदापि नहीं मिल सकता। मुक्ति की अवधि को परान्त काल कहते हैं, जिसका इतना-सा अर्थ है कि-जिसका अन्त परे या दूर हो, वह परान्त काल होता है। उसे लोग अनन्त काल मान बैठे थे, यही भूल हुई। दूसरे महर्षि का तर्क है कि सीमित सामर्थ्य वाले जीव में अनन्त आनन्द भोगने की सामर्थ्य नहीं। इसलिये मुक्ति सुदीर्घ अवधि की होती है, अनन्तकाल की नहीं। मुक्ति में जीव का लय नहीं होता। वह ब्रह्ममय हो जाता है, ब्रह्म नहीं।

**स्वतन्त्र-परतन्त्र**-जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, वह जैसा चाहे कर्म कर सकता है। करे न करे, उल्टा करे या सीधा करे, इसमें जीव स्वतन्त्र है पर फल भोगने में वह स्वतन्त्र नहीं, ईश्वर की व्यवस्था के अधीन है।

**कर्मफल व्यवस्था**-आर्यसमाज की यह सुदृढ़ और सुनिश्चित मानता है कि जीव को किये हुये अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगना पड़ता है। पाप क्षमा नहीं होते, न जप से, न तप से, न पूजा-पाठ से, न कर्मकाण्ड से, न गंगा स्नान से, न तीर्थयात्रा आदि से। कर्म का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं।

**वेदाध्ययन अधिकार**-वेद ईश्वर की वाणी है। आर्यसमाज की मान्यता है कि जैसे ईश्वर रचित जल, वायु, अग्नि, धूप आदि पर सभी का अधिकार है, वैसे ही वेद के अध्ययन का अधिकार भी मनुष्यमात्र को है। स्त्री और तथाकथित शूद्रों को भी वेद पढ़ने का अन्य लोगों की भाँति ही पूर्ण अधिकार है।

**स्वर्ग-नरक**-स्वर्ग और नरक कोई स्थान नहीं, अपितु यह स्थिति विशेष है। सुख विशेष और सुख की विशेष सामग्री की प्राप्ति का नाम स्वर्ग है और दुःख की विशेष सामग्री की प्राप्ति का नाम नरक है। मनुष्य अपने लिये स्वर्ग या नरक का निर्माण स्वयं करता है। परलोक में मिलने वाले सुख-दुःख का नाम ही स्वर्ग औ[र] नरक नहीं, इसी जन्म में, इसी लोक [में] भी स्वर्ग और नरक की प्राप्ति भी होती है।

**तीर्थ**-जिससे दुःख सागर से पार उ[तरें] कि जो सत्य भाषण, विद्या, सत्सं[ग], योगाभ्यास, विद्यादान, यज्ञ आदि शुभ [कर्म] हैं, यही सच्चे तीर्थ हैं। जल-स्थल अ[ादि] तीर्थ नहीं।

(शेष पृष्ठ दो ...)

# सत्यार्थप्रकाश के चुनिन्दा मोती

❑ प्राचार्य अभय आर्य, आदर्श गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक

**सत्य**

१. जो जैसा है उसे वैसा कहना, लिखना और मानना सत्य है।
२. अप्रिय सत्य अर्थात् काणे को काणा बोलें।
३. सदा भद्र अर्थात् सबके हितकारी वचन बोलें।
४. जो बात दूसरे के हितकारक हो चाहे वह बुरा ही क्यों न माने कहे बिना न रहें।
५. सत्य और असत्य को जानकर सत्य का ग्रहण तथा असत्य का परित्याग करें।

**परमेश्वर**

१. परमेश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है।
२. रक्षा करने से परमेश्वर का नाम ओ३म् है।
३. गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार परमेश्वर के असंख्य नाम हैं।
४. परमेश्वर का कोई भी नाम अनर्थक नहीं।
५. परमेश्वर के समान न कोई हुआ है, न है और न होगा।

**ब्रह्मचर्य**

१. उपस्थेन्द्रिय का स्पर्श बिना निमित्त न करें। इसके स्पर्श और मर्दन से वीर्य की क्षीणता, नपुंसकता और हस्त से दुर्गंध आती है।
२. ब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है कनिष्ठ, मध्यम, उत्तम।
३. जो २४ वर्ष ब्रह्मचारी रहता है उसके प्राण बलवान होते हैं।
४. जो ४४ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहकर वेदाभ्यास करता है उसके प्राण, इन्द्रियाँ, अन्तःकरण और आत्मा बल से युक्त हो जाती है।
५. जो ४८ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहता है उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विद्याओं को ग्रहण करता हैं।

**भूत-प्रेत**

१. मृत शरीर को प्रेत कहते हैं।
२. जिस शरीर का दाह हो चुका हो उसे भूत कहते हैं।
३. जो उत्पन्न हुआ और उत्पन्न होकर न रहे उसे भूत कहते हैं।
४. तावीज, धागा, यंत्र, तंत्र आदि बांधना और बंधवाना व्यर्थ है।
५. जीवनपत्र को शोकपत्र कहना उचित है।

**माता-पिता व पुत्र तथा गुरु व शिष्य सम्बन्धी**

१. जो माता-पिता और गुरु अपने पुत्र और शिष्य का ताड़न करता है वह मानो उसे अपने हाथों से अमृत पिला रहे हों।
२. जो माता-पिता और गुरु अपने पुत्र व शिष्य का लाड़न करते हैं वह मानो उसे अपने हाथो से विष पिलाकर नष्ट भ्रष्ट कर रहे हैं।
३. पुत्र व शिष्य लाड़न से दोषयुक्त और ताड़न से गुणयुक्त होते हैं।
४. पुत्र व शिष्य को चाहिये कि लाड़न से अप्रसन्न तथा ताड़न से प्रसन्न रहें।
५. जो माता-पिता और गुरु अपने पुत्र को शिक्षा नहीं देते वे उसके शत्रु होते हैं।

**सत्य प्रतिज्ञा**

१. जो हानि मिथ्या प्रतिज्ञा करने वाले की होती है वैसी किसी की नहीं होती।
२. जो जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करे उसके साथ वैसी ही निभानी चाहिए।
३. सदा सबको सत्य प्रतिज्ञायुक्त होना चाहिए।
४. हमें कभी अभिमान नहीं करना चाहिए इससे शोभा और श्री नष्ट हो जाती है।
५. हम सदा धर्मयुक्त कार्यों को ग्रहण व दोषयुक्त कार्यों का परित्याग करें।

**व्यवहार सम्बन्धी**

१. क्रोध आदि दोष तथा कटु वचनों को त्यागकर शांत व मधुर बोलें और अधिक बकवाद न करें।
२. आवश्यकता से अधिक तथा न्यून न बोलें।
३. अपने से बड़ों को मान्य देवें। उठकर जाकर उन्हें उच्च आसन पर बैठाकर उसको सर्वप्रथम नमस्ते करें।
४. बड़ों के सामने उत्तम आसन पर न बैठें।
५. किसी सभा आदि में जाने पर अपनी योग्यता के अनुसार आसन ग्रहण करें ताकि बीच में न उठना पड़े।

**विद्या पढ़ने में अनुपालनीय**

जो अध्यापक (स्त्री या पुरुष) दुष्ट हों उससे विद्या न पढ़ें।
जो अध्यापक धार्मिक तथा विद्यायुक्त है वह ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य है।
विद्या का अध्ययन एकांत देश में करना चाहिए।
लड़कों और लड़कियों की पाठशाला एक-दूसरे के बीच दो कोस का अंतर होना चाहिए।
स्त्रियों या लड़कियों की पाठशाला में ५ वर्ष का लड़का तथा लड़कों की पाठशाला में ५ वर्ष की लड़की भी न प्रवेश कर पाए।

## महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर की प्रबन्धकर्त्री विद्यार्यसभा का वार्षिक (२००५) चुनाव सम्पन्न

१. श्री पूर्णसिंह जी (भदानी) प्रधान, २. श्री दरियावसिंह जी आर्य (रोहतक) उपप्रधान, ३. श्री डॉ० सुरेन्द्रकुमार (झज्जर) मंत्री, ४. श्री राजबीरसिंह आर्य (बेरी आसरा) उपमंत्री, ५. श्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री (डालावास) कोषाध्यक्ष, ६. श्री कृष्ण भारती (जनकपुरी) पुस्तकाध्यक्ष।

**अन्तरंग सदस्य**—१. श्री आचार्य बलदेव जी (गुरुकुल कालवा), २. श्री आचार्य हरिदेव जी (गुरुकुल गौतम नगर), ३. श्री आचार्य स्वामी देवव्रत जी (गुरुकुल गौतमनगर), ४. श्री वेदव्रत जी शास्त्री (आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक), ५. श्री फतेहसिंह जी भण्डारी (गुरुकुल झज्जर), ६. श्री वेदप्रकाश जी परमार्थी (गुरुकुल झज्जर), ७. श्री चन्द्रपाल जी शास्त्री (बवाना दिल्ली), ८. श्री रामवीर जी शास्त्री (कंसाला), ९. श्री महाशय बलवन्तसिंह जी आर्य (मकड़ौली कलां), १०. श्री राममेहर जी एडवोकेट (रोहतक), ११. श्री डॉ० राजकुमार आचार्य (झज्जर), १२. श्री कैप्टन अभिमन्यु जी (रोहतक), १३. श्री सत्यवीर जी (सरूपगढ़), १४. श्री महेन्द्रसिंह जी आर्य (गुढ़ा)।

## बृहद् यज्ञ व वेदप्रचार

आर्यसमाज बादली के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा यज्ञ व वेदप्रचार किया गया। आर्यजगत् के युवा वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र गुरुकुल भऊअकबरपुर जिला रोहतक के ओजस्वी व्याख्यानों से नई पीढ़ी में जागृति आये कार्यक्रम में आर्यजन घृत सामग्री लाकर उपस्थित हुए। अनेक युवकों में दुर्व्यसन से हटकर यज्ञोपवीत धारण किये। आचार्य जी के सार्थक प्रवचनों से छोटे-छोटे बालक बहुत प्रभावित हुए। क्योंकि आचार्य जी के एक मिनट में हवन के मंत्रों को याद करवाके बालकों के मुख से बुलवा दिए। अनेकों को हवन करने का संकल्प दिया। आचार्यजी ने दैनिक नित्यकर्मविधि आदि पुस्तकें वितरीत कीं। आर्यसमाज के श्री श्रीभगवान्, श्री धीरसिंह आदि अनेक महानुभाव आर्यसंस्कारों को फैला रहे हैं।

-श्री श्रीभगवान् सूबेदार, आर्यसमाज सेवक, बादली (झज्जर)

## शोकसभा

दिनांक १-४-२००५ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मंत्री श्री सत्यवीर शास्त्री एवं आचार्य बलदेव जी सभाप्रधान जी की अध्यक्षता में सभा के उच्चाधिकारियों की एक विशेष आपातकालीन बैठक हुई। सभा में दर्दनाक हादसे में हरयाणा के कैबिनेट मंत्री श्री ओमप्रकाश जिंदल व कृषिमंत्री चौ. सुरेन्द्रसिंह की मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया। उन्होंने कहा कि श्री ओमप्रकाश जिंदल देश के गिने चुने उद्योगपतियों में से एक थे। इसके उपरान्त वे आम आदमी के दुःख से जुड़े हुए थे। उनके हृदय में गरीब व्यक्ति के प्रति दयाभावना एवं हर दुःखी व्यक्ति की सहायता के लिये चेष्टा रहती थी। उन्होंने कहा कि चौ. सुरेन्द्रसिंह व ओमप्रकाश जिंदल के निधन से हरयाणा प्रदेश के दो अनुभवी राजनीतिज्ञ सदा के लिये हमसे दूर हो गए। इनकी क्षतिपूर्ति होना असंभव है। सभा में दोनों नेताओं की आत्मा की सद्गति के लिये एवं परिवार, इष्टमित्रों को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई।

## आर्यसमाज का सैद्धान्तिक परिचय...... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

**श्राद्ध**-जीवित पितरों की सेवा-सत्कार करना ही वास्तविक श्राद्ध है। मृत पितरों के नाम पर ब्रह्मभोग करना श्रद्धा नहीं। पितरों को हर प्रकार से तृप्त रखना ही सच्चा तर्पण है।

**वर्णाश्रम व्यवस्था**-आर्यसमाज मनुष्यों की व्यक्तिगत उन्नति के लिये आश्रम व्यवस्था तथा सामाजिक उन्नति के लिये वर्णव्यवस्था को अनिवार्य समझता है। आर्यसमाज जन्म या जाति-व्यवस्था को न मानकर गुण, कर्म अनुसार वर्णव्यवस्था को मान्यता प्रदान करता है।

**पाखण्ड**-आर्यसमाज मुहूर्त, राशिफल, फलित ज्योतिष, जन्मपत्री तथा टोने-टोटके आदि को पाखण्ड मानता है। अतः इनके चक्कर में नहीं फंसना चाहिए।

**पुरुषार्थ और प्रारब्ध**-'पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा' इसलिये है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है। कल का हमारा पुरुपार्थ आज का हमारा प्रारब्ध है। आज का हमारा पुरुषार्थ कल का प्रारब्ध बनेगा।

**आर्य**-श्रेष्ठ प्रगतिशील व्यक्ति को आर्य कहते हैं। आर्य गुणवाचक संज्ञा है, जातिवाचक संज्ञा नहीं।

**संस्कार**-जिससे शरीर, मन और आत्मा उन्नत हों, उन्हें संस्कार कहते हैं। निषेदादि श्मशानान्त सोलह संस्कार है। दाह के पश्चात् मृतक के लिये और कुछ भी नहीं करना चाहिये।

यह है कि आर्यसमाज का संक्षिप्त सैद्धान्तिक परिचय अधिक जानकारी के महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। अन्त में यही कहेंगे कि-

**वैदिक सिद्धान्तों का भाई क्या कमाल है।**
**आये मुकाबिले पर किसकी मजाल है॥**

❖ ❖ ❖

# गाय कृषि और किसान एक त्रिभुज

□ खुशहालचन्द्र आर्य, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

त्रिभुज की जैसे तीन भुजाएं (रेखाएं) समान होती हैं और एक-दूसरे पर आधारित, सम्बन्धित व आश्रित रहती हैं तथा तीनों का महत्त्व भी प्राय: समान-सा होता है। एक का काम दूसरी के बिना और दूसरी का काम तीसरी के बिना अधूरा रहता है या यह कहिये इन तीनों में से किसी एक को निकाल दें तो बाकी दोनों का कोई विशेष महत्त्व नहीं रह जाता इसलिये यह तीनों भुजाएं एक-दूसरे की पूरक हैं। ठीक इसी प्रकार गाय, कृषि और किसान का भी यही संबंध है। वे भी एक दूसरे पर आधारित, सम्बन्धित व आश्रित हैं। इनका भी महत्त्व प्राय: समान ही है। किसी एक को अलग कर देने से बाकी दोनों अधूरे हो जाते हैं, अर्थात् यह भी एक-दूसरे के पूरक हैं। इन तीनों पर ही व्यक्ति, गृहस्थ, समाज, राष्ट्र व विश्व टिका हुआ है। हम देखते हैं कि गाय के गोबर से बनी खाद खेती में काम आती है जिससे फसल अधिक पैदा होती है और जमीन की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है। गाय के बछड़े हल जोतने के काम आते हैं जिससे पैदा हुआ अन्न, फल व वनस्पति से किसान अपने परिवार का पालन-पोषण करता है, साथ ही प्राणिमात्र का पालन भी होता है। खेत में पैदा हुआ घास जो मनुष्यों के खाने के काम नहीं आता उसे गाय खाकर उसके बदले किसान को अमृत के समान दूध देती है और उसके बछड़े उसी घास को खाकर खेत में हल जोतते हैं जिससे किसान को हर किस्म का अन्न उपलब्ध होता है। इसमें से किसान कुछ अन्न से अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और कुछ अन्न को बेचकर घर व मकान बना लेता है जिससे वह सर्दी, गर्मी व वर्षा से अपनी रक्षा कर पाता है। गाय के दूध से किसान घृत निकालकर उससे अनेक प्रकार की मिठाइयां व बढ़िया भोजन बनाकर स्वयं खाता है, अपने पर्व-त्यौहार मनाता है और अपने मित्रों, सम्बन्धियों, अतिथियों व विद्वानों का सत्कार करता है। दूध से बनी दही, छाछ से साग व सब्जी की आवश्यकता पूरी करता है। गाय का दूध व घृत शरीर व बुद्धि के लिये कितना लाभदायक, पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्द्धक है, यह तो किसी से छिपा नहीं।

किसान गाय के घृत से यज्ञ करके अपने आस-पास के वातावरण व वायुमण्डल को शुद्ध व पवित्र करता है जिससे स्वयं तो लाभान्वित होता ही है साथ ही पड़ोस में रहने वाले मित्र व शत्रु भी इसका लाभ उठाते हैं। वैसे तो यज्ञ करने वाले का कोई शत्रु नहीं होना चाहिए कारण वेदों के मंत्रों से ही यज्ञ किया जाता है। वेद सबको मित्रता की दृष्टि से देखने का आदेश देता है कहता है कि अपने चरित्र को महान् और मन को उदार बनाकर सबको मित्र की दृष्टि से देखो और सभी तुमको मित्र की दृष्टि से देखें। फिर भी कोई शत्रु हो तो वह भी लाभ उठाता है, इसलिये वेदों में "**यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म**" यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा गया है। यज्ञ गाय के घृत से ही होता है अन्य पशुओं के घृत से नहीं। वेद व गीता के आधार पर बृहद् यज्ञों से वृष्टि होती है सो अनावृष्टि (अकाल) के समय सब किसान मिलकर गाय के घृत से वृहद यज्ञ करके वृष्टि भी करवा सकते हैं और अकाल से होने वाली हानि से बच सकते हैं।

किसान गाय के बछड़े व बछड़ियों को किसी किसान या घर में पालने वाले को बेचकर उन रुपयों से अपने अन्य जरूरी काम विवाह, शादी की रस्में पूरी कर सकता है। इस प्रकार गोवंश किसान के परिवार व खेती के लिये अति आवश्यक व उपयोगी है। जैसे गाय कृषि पर और कृषि गाय पर निर्भर व आश्रित है वैसे ही किसान इन दोनों पर और यह दोनों किसान पर आश्रित हैं। कारण किसान इनको पालता व जोतता है इसलिये यह तीनों एक-दूसरे पर आधारित व आश्रित हैं यानि तीनों का परस्पर अटूट सम्बन्ध है। यहाँ पर यह लिखना भी उचित है कि इन तीनों पर ही विश्व का जीवन, व्यवसाय व उद्योग चलता है।

यदि हम पूरी सृष्टि का अवलोकन करें तो हमें विदित होगा कि सारी सृष्टि ही त्रिभुजमय है। यहाँ तक कि प्रारम्भ में वेदों में प्रतिपादित त्रैतवाद जिसमें ईश्वर, जीव और प्रकृति, इन तीन सत्ताओं को अनादि व अनन्त माना है। यह त्रैतवाद भी त्रिभुज की भाँति ही एक-दूसरे पर आश्रित है, क्योंकि वेदों के अनुसार ईश्वर, जीव के लिये प्रकृति यानि परमाणुओं द्वारा सृष्टि की रचना करता है वैसे ही किसान भी गाय का सहयोग लेते हुए अपने परिवार व गाय का पालन कृषि द्वारा करता है। इसमें किसान ईश्वर का, गाय जीव का, और कृषि प्रकृति का कार्य करती है। इसमें इतना अंतर जरूर है कि किसान एक मनुष्य होने के नाते गाय का पालन और कृषि का जोतना अपने स्वार्थ के लिये करता है परन्तु ईश्वर का अपना कोई स्वार्थ नहीं होता वह अपने परोपकारी स्वभाव से ही नि:स्वार्थ भाव से जीव के लिये सृष्टि रचता है।

किसी काम को सुचारु रूप से चलाने के लिये यह तीन वाला फार्मूला या क्रिया हर जगह व हर कार्य में लागू होती है। एक करने वाला, एक जिसके लिए काम किया जाता है और एक जिसके द्वारा काम किया जावे। जैसे एक दुकान में एक दुकानदार जो दुकान को चलाता है, एक ग्राहक जिसके लिये दुकान की है और दुकान का माल जो ग्राहक के लिये रखा गया है। इन तीनों में जैसे एक दुकान चलती है वैसे ही संसार के सब काम इन तीनों क्रियाओं से ही चलते हैं। चाहे वह लुहार हो, चाहे सुनार, कुम्हार या बढ़ई (खाती) क्यों न हो। मालूम तो ऐसा होता है कि सारा विश्व ही तीन अवस्थाओं या गतियों से बंधा हुआ है। सृष्टि की तीन गति हैं उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय। ओ३म् भी तीन अक्षरों से बना है अ-उ-म्। "अ" उच्चारण से मुंह खुलता है इसलिये उत्पत्ति का, "उ" से मुंह खुला रहता है इसलिये स्थिति का और "म्" से मुंह बंद हो जाता है इसलिये प्रलय (समाप्ति) का बोध करवाता है। ईश्वर भी तीन ही काम करता है। पहला प्रलय की स्थिति से सृष्टि की रचना करना, दूसरा सृष्टि को सुचारु रूप से व सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के लिये जीव को उसके कर्मानुसार फल देना और तीसरा सृष्टि की अवधि के अनुसार उसको समाप्त करके प्रलय की स्थिति में रखना।

कुछ लोग कह देते हैं कि इस वैज्ञानिक युग में जहां यूरिया खाद का आविष्कार हो चुका है जिसके डालने से चार-पाँच गुणी फसल जमीन से ले सकते हैं और ट्रेक्टर का जमाना आ गया है जिसके द्वारा बैलों से दस गुणी जमीन जोती जा सकती है। अब गाय व बैल को कौन पूछता है? उनका यह कहना सत्य जैसा प्रतीत होता है परन्तु उनका यह कहना सत्य नहीं किन्तु भ्रामक है। आपको मालूम ही है कि भारत एक कृषिप्रधान देश है। यहाँ पूरी आबादी के सत्तर प्रतिशत लोग ग्रामों में रहते हैं और खेती करते हैं यानि एक अरब आबादी में सत्तर करोड़ ग्रामीण किसान हैं जिनके पास जमीन बहुत कम है और आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं। उनको ट्रेक्टर की बजाए बैलों से खेती करना ही लाभदायक है कारण थोड़ी जमीन में बैलों से ही खेती करने से उसके ऊपर खर्च कम आता है और बैल ही थोड़ी जमीन को अच्छी प्रकार जोत सकते हैं। ट्रेक्टर के लिये बड़ी जमीन चाहिए। साथ ही बैलों का गोबर और मूत्र खाद के रूप में काम आ जाता है। बैल उसी खेत का घास खाकर काम करते रहते हैं जिससे किसान को कोई अलग परेशानी नहीं होती। बैलों से खेती करने से गोपालन भी हो जाता है वैसे भी पैट्रोल व डीजल की महंगाई से सभी लोग दु:खी है। दूसरी बात यह है कि गोबर की खाद यूरिया खाद से कहीं उत्तम व लाभप्रद होती है। यूरिया खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति शनै:-शनै: नष्ट हो जाती है और आठ-दस साल बाद वह जमीन बंजर बन जाती है। इसके विपरीत गोबर की खाद से जमीन की उर्वरा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है और उससे होने वाला अन्न, फल व वनस्पति, यूरिया से होने वाले अन्न, फल व वनस्पति से कहीं अधिक स्वादिष्ट, पौष्टिक व गुणकारक होते हैं। यूरिया खाद से अन्न की तादात (क्वान्टीटी) तो जरूर बढ़ती है किन्तु उसमें गुणवत्ता (क्वालिटी) कम होने से वह स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होती है कारण बनावटी वस्तु प्राकृतिक वस्तु से हमेशा कमजोर होती है जैसे नकली दाँत असली दाँतों से कमजोर होते हैं और भी शरीर के कई अंग जैसे हृदय (हर्ट), गुर्दा (किडनी) भी अप्राकृतिक लगाई जाती हैं किन्तु यह असली से कमजोर होते हैं। आज जो विश्व का स्वास्थ्य व चरित्र का पतन हो रहा है उसके पीछे यूरिया खाद से पैदा हुए अन्न व फलों को खाने का भी कई कारणों में से एक कारण है। इसलिये गऊ के गोबर से बनी खाद और बैलों से खेत जोतकर ही भारत का किसान लाभ प्राप्त कर सकता है और सुखी बन सकता है।

खुशी की बात यह है कि गोवंश को बचाने के लिये आजकल कई गोशालाएं तथा कुछ व्यक्तिगत व्यवसायी भी गऊ के गोबर, मूत्र, दूध, दही, घी (पंचगव्य) से अनेकों किस्म की दवाइयां बनाने लगे हैं। यहाँ तक की कैंसर और टी०बी० जैसी घातक रोगों की दवाई भी पंचगव्य से बनने लगी हैं साथ ही धूप, अगरबत्ती, साबुन, फिनाइल आदि भी बनते हैं, जो काफी लाभदायक सिद्ध हुए हैं जिससे गाय के गोबर व मूत्र की काफी मांग बढ़ गई है। दवाई बनाने वाले गोबर और गोमूत्र को किसानों के घरों पर जाकर अच्छे भावों से खरीद लेते हैं और अपनी प्रयोगशाला में ले जाकर दवाइयाँ बनाते हैं इससे लाभ होने लगा है कि बूढ़ी गाय व बैल जो कटने के लिये कसाइयों को बेच दिये जाते थे, अब उनके गोबर व मूत्र के लोभ से बेचना कम हो गया। कारण जो बूढ़ी गाय या बैल एक दिन में बीस रुपयों का चारा खाते हैं, उसके गोबर व मूत्र को बेचने से चालीस रुपये किसान को मिल जाते हैं, तब कौन ऐसा मूर्ख होगा जो गोवंश को बेचेगा? यदि दवाइयों को बनाने का काम भविष्य में बढ़ता गया तो गोवंश की हत्या होनी बंद हो जायेगी इसलिये मेरा प्रत्येक सच्चे भारतीय से विनम्र निवेदन है कि वह पंचगव्य से बनी दवाइयों का ही प्रयोग करे और एक या दो गाय अपने घर पर रखकर पाले, जिससे उसके दूध, घी, व छाछ का आनन्द उठा सके और गोबर व मूत्र का भी लाभ उठा सके। जो घर पर गऊ नहीं रख सकता वह एक गऊ अपने पैसों से खरीदकर गोशाला को दे देने और उसका मूल्य देकर उसका जितना चाहिए उतना दूध खरीद लेवें इससे दानदाता गाय के दूध, घी, दही, व छाछ का आनन्द उठा सकेगा और अपने स्वास्थ्य की रक्षा भी कर सकेगा, साथ ही गोशाला को भी लाभ हो सकेगा और गोवंश को भी बचाया जा सकेगा। इसके अलावा मरे हुए पशुओं की खाल से बने जूते या कपड़े का प्रयोग करें और जो वस्तुएं गोवंश की चमड़ी, हड्डी, चर्बी व आंत आदि से बनाई जाती है। जैसे-बेल्ट, हैण्डबैग, चांदी की बर्क, कई किस्म की साबुनें आदि का प्रयोग न करके उसके स्थान पर प्लास्टिक व फौम से बनी वस्तुओं का प्रयोग करें ताकि गोवंश की रक्षा हो सके और मेरा प्यारा देश भारत धन-धान्य से परिपूर्ण हो सके। इसीलिये कहा जाता है-"**गोरक्षा ही राष्ट्ररक्षा है।**"

## नवलखा महल उदयपुर से-

# सत्यार्थप्रकाश का प्रामाणिक संस्करण

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनमें महर्षि की एक रचना सत्यार्थप्रकाश भी है। सत्यार्थप्रकाश का जो प्रथम संस्करण छपा था, उसमें मृत श्राद्ध आदि अवैदिक सिद्धान्तों का मुद्रण हो जाने से महर्षि ने उस प्रथम संस्करण को रद्द कर दिया और पुनः सत्यार्थप्रकाश का संशोधित द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया। महर्षि द्वितीय संस्करण की भूमिका में लिखते हैं-

'सत्यार्थप्रकाश को दूसरी बार शुद्ध करके छपवाया है, क्योंकि जिस समय मैंने यह ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश बनाया था उस समय और उससे पूर्व संस्कृत भाषण करना, पठन-पाठन में संस्कृत बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती थी इत्यादि कारणों से मुझको इस भाषा का विशेष परिज्ञान न था, अब इसको अच्छे प्रकार भाषा के व्याकरणानुसार जानकर अभ्यास भी कर लिया है, इस समय इसकी भाषा पूर्व से उत्तम हुई है. कहीं-कहीं शब्द, वाक्यरचना का भेद हुआ है, वह करना उचित था क्योंकि उसके भेद किये बिना भाषा की परिपाटी सुधरनी कठिन थी किन्तु अर्थ का भेद नहीं किया गया है, प्रत्युत विशेष तो लिखा गया है। हां! जो प्रथम छपने में कहीं-कहीं भूल रही थी वह-वह निकाल शोध कर ठीक-ठीक कर दी गई है।'

परोपकारिणी सभा अजमेर में सत्यार्थप्रकाश की दो हस्तलिखित प्रतियां हैं। एक का नाम प्रथम प्रति और दूसरी का नाम मुद्रण प्रति है। कई विद्वानों का कहना है कि एक तृतीय प्रति भी थी जो कि प्रेस में मुद्रणार्थ भेजी थी। महर्षि के पत्र और विज्ञापनों से पता चलता है कि सत्यार्थप्रकाश का प्रूफ महर्षि के पास देखने और शोधन के लिये भेजा जाता था। जिसे महर्षि स्वयं शोधन कर मुद्रणार्थ भेजते थे। प्रथम संस्करण के मुद्रण में त्रुटि रह जाने से महर्षि द्वितीय संस्करण के मुद्रण के प्रति अत्यन्त सावधान थे।

सन् १८८४ ई० में सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया। यह ग्रन्थ महर्षि के निर्वाण से एक वर्ष पश्चात् छपा। अन्तः साक्ष्य के अनुसार इस ग्रन्थ के १३वें समुल्लास तक स्वयं देखा और शोधा भी है। अतः यह द्वितीय संस्करण ही शुद्ध एवं प्रामाणिक है।

सन् १८८४ ई० में छपे द्वितीय संस्करण के मुख-पृष्ठ पर लिखा है **'पण्डित-ज्वालादत्त-भीमसेनशर्मभ्यां संशोधितः'** अर्थात् यह द्वितीय संस्करण महर्षि के शिष्य पं० ज्वालादत्त तथा पं० भीमसेन शर्मा ने भी इसके प्रूफ का संशोधन किया है।

महर्षि ने इस संस्करण के मुख पर यह भी लिखा है कि **'सर्वथा राजनियमे नियोजितः'** जिसका अभिप्राय यह है कि इस ग्रन्थ की रजिस्ट्री कराई गई है, जिससे इसे ग्रन्थ को कोई अन्य प्रकाशक न छाप सके और इसमें कोई किसी प्रकार का संशोधन एवं परिवर्धन न कर सके।

**मूल में संशोधन**-सत्यार्थप्रकाश को अति उत्तम बनाने की भावना से आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् पं० भगवद्दत्त, पं० युधिष्ठिर मीमांसक, स्वा० वेदानन्द आदि ने सत्यार्थप्रकाश के मूल में संशोधन करके यह ग्रन्थ प्रकाशित कराया। इससे ऋषिभक्तों के हृदय में एक आक्रोश उत्पन्न हुआ कि ऋषि के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में कोई संशोधन नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे ऋषि ग्रन्थों का स्वरूप ही बदल जायेगा। एकरूपता खण्डित हो जायेगी। इस संशोधन की धारा को रोकने के लिये सेठ दीपचन्द आर्य ४५५ खारी बावली दिल्ली-६ ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की स्थापना की और सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण की प्रति किसी विद्वान् से प्राप्त करके उसका प्रकाशन कराया और तत्पश्चात् द्वितीय संस्करण के अनुरूप ही ट्रस्ट से सत्यार्थ-प्रकाश छापना प्रारम्भ किया। इस प्रयास से सत्यार्थप्रकाश के संशोधन कार्य में बाधा तो अवश्य उत्पन्न हुई किन्तु पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई।

**परोपकारिणी सभा**-महर्षि के ग्रन्थों को विशुद्ध प्रकाशित करने का उत्तरदायित्व महर्षि की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर का है। परोपकारिणी सभा ३६वें संस्करण तक सत्यार्थप्रकाश को द्वितीय संस्करण के अनुसार छापने का प्रयास करती रही है। सत्यार्थप्रकाश को उत्तम छापने के लिये परोपकारिणी सभा ने आर्य विद्वानों की एक बैठक अजमेर बुलाई थी। स्वा० सर्वानन्द सरस्वती दीनानगर उस समय परोपकारिणी सभा के प्रधान थे और स्वा० ओमानन्द सरस्वती कार्यकारी प्रधान थे। ये दोनों विभूतियाँ भी उस बैठक में विराजमान थीं। उस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि सत्यार्थप्रकाश का उत्तम प्रकाशन किया जाये और हस्तलिखित प्रतियों से भी इस कार्य में सहायता ले ली जाये। परोपकारिणी सभा ने यह कार्य गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक एवं स्वामी ओमानन्द सरस्वती के प्रिय शिष्य पं० विरजानन्द दैवकरणि जी ने प्रथम प्रति और मुद्रण प्रति दोनों का मिलान कर एक तृतीय प्रकार का सत्यार्थप्रकाश तैयार किया और जिसे परोपकारिणी सभा ने ३७वां संस्करण नाम से छापा। इससे आर्यजगत् में हलचल मच गई कि कौन-सा सत्यार्थप्रकाश शुद्ध एवं प्रामाणिक है। पं० रतिराम धर्मगुरु ने सत्यार्थप्रकाश का हत्याकाण्ड का भंडाफोड़ तथा सत्यार्थप्रकाश न्यास उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने 'कब तक मौन रहोगे' नामक पुस्तिका प्रकाशित करके आर्यजगत् में वितरित कर दीं। इससे सत्यार्थप्रकाश की शुद्धता और प्रामाणिकता के प्रति संशय और तीव्र होगया।

**आर्य विद्वानों की बैठक**-इस समस्या के समाधान के लिये सत्यार्थप्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने दिनांक १-२ मार्च को जगत् के विद्वानों को नवलखा महल उदयपुर में सादर आमन्त्रित किया जिसमें लगभग २५ आर्य विद्वानों ने भाग लिया। इस बैठक के अध्यक्ष पं० विशुद्धानन्द बहायूं थे और संयोजक कार्य डा० रघुवीर वेदालंकार दिल्ली को सौंपा गया। रोहतक से मेरे साथ पं० वेदव्रत शास्त्री प्रधान गुरुकुल झज्जर एवं मालिक आचार्य मुद्रणालय भी गये थे। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के प्रधान पं० राजवीर शास्त्री तथा श्री धर्मपाल आर्य ने भी इसमें भाग लिया।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित तथा पं० विरजानन्द दैवकरणि द्वारा सम्पादित ३७वें संस्करण की शुद्धता एवं प्रामाणिकता का पक्ष डा० सुरेन्द्रकुमार झज्जर ने बड़ी योग्यता के साथ प्रस्तुत किया।

**निर्णय**-इस बैठक में यही निर्णय लिया गया कि महर्षि के द्वारा संशोधित सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण ही प्रामाणिक है। द्वितीय संस्करण को ही आधार मानकर इसका दोनों हस्तलिखित प्रतियों से मिलान किया जाये और द्वितीय संस्करण में कोई छापे आदि की भूल रह गई है उसे उक्त हस्तलेखों की सहायता से शुद्ध करके प्रामाणिक सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया जाये।

इस कार्य के लिये पं० विशुद्धानन्द बदायूं की अध्यक्षता में एक विदत्समिति का भी गठन किया गया। इस समिति के संयोजक डॉ० रघुवीर वेदालंकार दिल्ली रहेंगे। -**सुदर्शनदेव आचार्य**, प्रधानाचार्य वैदिक कन्या गुरुकुल, इन्दिरा कॉलोनी-लिवासपुर पो० बहालगढ़ (सोनीपत), दूरभाष ०१३०-२३८०१२२

# आर्यों में पहली लग्न लगे

(१) नये वर्ष के आरम्भ में सभी आर्यों को ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि आर्यों में पहली लग्न लगे। इसके लिये प्रत्येक आर्य तन, मन व धन समर्पण करें व घोर पुरुषार्थ करें।

(२) आर्य सज्जन, श्रेष्ठ, धर्मात्मा को कहते हैं। लोगों को आर्य बनाने के लिये पहले स्वयं आर्य बनना चाहिये। किसी ने ठीक ही कहा है-**बना लूं आप अपने को किसी को फिर बनाऊँगा।**

(३) स्वामी दयानन्द जी महाराज आरम्भ में प्रचार करने लगे तो जनता पर प्रभाव नहीं पड़ा। यह कहकर- अभी तो मेरे में खुद ही त्याग-तप की जरूरत है। प्रचार कार्य को छोड़कर घोर तप किया। सभी ऐषणाओं को समाप्त कर, तप व त्याग की भट्ठी में शुद्ध होकर पुनः प्रचार क्षेत्र में उतरे। प्रचार का इतना प्रबल प्रभाव पड़ा कि उपदेशकों ने निम्न शब्दों में प्रकट किया। छत्तीस करोड़ के मुकाबले में अकेला ही शेर दहाड़ा था।

(४) स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं० लेखराम जी, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, नारायण स्वामी, स्वामी स्वतंत्रानन्द जी आदि अनेक संन्यासियों तथा उपदेशक ने सबसे पहले अपने जीवन का निर्माण पूर्ण वेदाज्ञानुसार किया। दिन रात आर्य तथा आर्यसमाज बनाने के लिये एक कर दिया। बलिदान तक दिये। फलस्वरूप इतना प्रचार हुआ कि ८५ प्रतिशत आजादी की लड़ाई में सम्मिलित हुये। अवर्णनीय यातनायें सहीं। स्वतंत्रता देवी के दर्शन कराये। इसीलिए आज भी गाते हैं-

**भगवान् आर्यों में पहली लगन लगा दे।**

(५) सम्राट् अशोक ने बौद्ध मत को फैलाने के लिये अनेक यत्न किये परन्तु सफल नहीं हुआ। अन्तिम छठी सभा पाटलिपुत्र में बुलाई। विद्वानों ने निर्णय किया कि इसके लिये महाराज अपने प्रिय से प्रिय वस्तु समर्पित करें। सम्राट् ने अपने लड़के महेन्द्र और अपनी लड़की संघमित्रा को दान में दिया। आशातीत मत का संसार में प्रचार हुआ। आर्यों की पहली लगन लगाने के लिये आर्य भी अपने एक-एक सुयोग्य पुत्र दान में दें। स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने अपने पिताजी के अकेले पुत्र होने पर भी वेदप्रचारार्थ सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। ऐसी महाविभूतियों के कारण ही विश्वभर में वेदप्रचार की धूम मची। स्वामी जी महाराज ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में स्पष्ट लिखा है जो जाति, देश व धर्म का उपकार करना चाहे वह यत्न से ब्रह्मचारी रहे। ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास में दीक्षित होने वाले देवपुरुषों के द्वारा ही राष्ट्र में शक्ति व ओज का सञ्चार होता है।

(६) आर्यों का खाना, पीना, सोना, जागना, ओढ़ना व पहनना आदि जब प्रत्येक क्रिया तथा प्रत्येक श्वास आर्यसमाज के लिये लगेगा तभी पूर्ववत् पुनः प्रचार संभव है।

(७) आर्यों के मन, वचन व कर्म में समानता हो। केवल भाषण मात्र से नहीं बेदाग व बेलाग जीवन ही वेदप्रचार का मूल कारण बनेगा।

(८) जब गुरुकुलों के ब्रह्मचारी वीर्य हानि के दोष तथा वीर्य संरक्षण के लाभ को आत्मनिरीक्षण का मुख्य अंग बना लेंगे तो स्वप्न में भी पतित नहीं होंगे तथा उपदेशकों के निम्न वाक्यों के साकार कर देंगे।

**आयेंगे खत अरब से जिनमें यह लिखा होगा।**
**गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है॥**

(९) पांच यज्ञों को करने वाले जब सभी आर्य गृहस्थ होंगे तथा कम से कम एक घण्टा प्रतिदिन योगियों की तरह ध्यान करेंगे तो पुनः आर्यों का पहले के समान प्रभाव होगा।

(१०) आर्यसंन्यासी तीनों ऐषणाओं के त्यागने में जब स्वामी आत्मानन्द, स्वामी वेदानन्द तथा स्वामी स्वतंत्रानन्द जी का अनुकरण करेंगे तो आर्यसमाज वही अपना पूर्व गौरव प्राप्त करेगा।

(११) जब तक आर्यसमाज का प्रयोग राजनेता अपने राजनीति स्वार्थ के लिये करेंगे तब तक आर्यसमाज में सुधार के स्थान पर पतन ही होगा।

(१२) आर्यसमाज का एक भी पैसा खाना प्रत्येक आर्य मल-मूत्र के प्रयोग के समान समझे। फिर देखें आर्यसमाज कैसे नहीं फले-फूलेगा।

(१३) प्रत्येक आर्य, आर्यसमाज के दश नियमों का मन, वचन व कर्म से पालन करे।

(१४) आर्यसमाज का प्रचार अपने पवित्र जीवन द्वारा करते समय सदैव अपमान की चाहना करता रहे तथा मान से विष के तुल्य डरता रहे। सदैव स्मरण रखे कि सदैव पदलोलुप व स्वार्थी अपने स्वार्थसिद्ध करने हेतु शुभकार्य करने वाले को बदनाम करने की कोशिश किया करते हैं। ढोंगी, स्वार्थी तथा लोभी मनुष्यों ने स्वार्थसिद्ध करने हेतु पहले राम और कृष्ण को बदनाम किया। इसलिये मानव अपमान की परवाह न करते हुये वैदिक प्रचारार्थ पूर्ण शक्ति लगायें।

(१५) स्वामी जी महाराज ने उग्र तप व तपस्या कर वेदज्ञान में पाराङ्गत हो, पूर्ण योगी बनकर ऋषित्व अवस्था को प्राप्त करके लिखा। सत्यार्थप्रकाश का एक भी शब्द बदलना महर्षि की हत्या है। विद्वानों की समिति नीचे टिप्पणियां लिख सकती है।

(१६) आर्यसमाज मर चुकी है। आर्य अब कहां रहे हैं। सब कुछ समाप्त हो चुका है। क्या आर्यो! अपने जीवन में इन शब्दों को सहन कर सकोगे? क्या आर्यसमाज के गौरव के संरक्षण हेतु सर्वस्व समर्पित करने के लिये तैयार नहीं होंगे? क्या जो आर्यसमाज वैदिक सिद्धान्त पर आधारित है उसे स्वामी दयानन्द जी के मन्तव्य से विरुद्ध एकमत के रूप में परिवर्तित होने देंगे? आत्मा के विरुद्ध कार्य करने वाले घोर नरकगामी होते हैं। इस तथ्य को स्मरण करें। पूरी आशा है कि आर्य सब कुछ न्यौछावर करके, बड़े से बड़े बलिदान देकर भी आर्यसमाज की छवि को अक्षुण्ण बनाये रखेंगे। इस कार्य के लिये निम्न उद्देश्य रखेंगे-

**फांसी मिले गोली लगे या और कोई तदबीर हो।**
**मञ्जूर हो मञ्जूर हो मञ्जूर हो मञ्जूर हो॥**

स्वास्थ्य चर्चा-

## युवानपीड़िका (मुंहासे)

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती,
योगस्थली आश्रम, महेन्द्रगढ़

उपरोक्त व्याधि मुंहासे के कारण और लक्षण इससे पूर्व अंकों में दे चुके हैं। अब हम इसकी शास्त्रोक्त और अपने अनुभव की चिकित्सा लिख रहे हैं। ये व्याधि कफ, वायु एवं रक्त की विकृति से मुख की त्वचा को दूषित कर देती है। ये थोड़ी बहुत युवानपीड़िका सभी नर-नारी को निकलती हैं। किन्तु किसी-किसी को अधिक निकलती हैं जिससे मुख की सुन्दरता अथवा त्वचा को दूषित कर देती हैं। ये बात, कफ और रक्त की विकृति से होती है। इसकी चिकित्सा से पहले वमन द्वारा शरीर का शोधन करते रहना चाहिए। इसकी चिकित्सा लम्बे समय तक करनी पड़ती है। जैसे भावप्रकाश में लिखा है-

**अङ्गलस्य चतुर्थांशो मुखलेपो विधीयते।**
**मध्यमस्तु त्रिभागः स्यादुत्तमोऽर्द्धाङ्गली भवेत्॥** (३१)

युवानपीड़िका पर चौथाई अंगुल मोटा लेप किया जाता है अथवा तिहाई या आधा अंगुल लेप भी किया जाता है। इनको क्रमशः मध्यम तथा उत्तम लेप माना जाता है।

**स्थितिकालोऽपि तस्योक्तो यावत्कल्को न शुष्यति।**
**शुष्कस्तु गुणहीनः स्यात्तथा दूषयति त्वचम्॥** (३२)

लेप तब तक लगाए रखना चाहिए जब तक सूखे नहीं (गीला रहे) क्योंकि सूखने पर कोई लाभ नहीं करता परन्तु मुख की त्वचा को दूषित करता है (कान्ति को नष्ट करता है)।

**लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिडिकासहः।**
**तद्वद्गोरोचनायुक्तं मरिचं मुखलेपितम्॥**

युवान पिटका पर धनियां तथा बालबच, गोरोचन एवं काली मिर्च को बकरी के मूत्र में पिसकर आधा अंगुल मोटा लेप करें और शाम को सोते समय लेप करें तो ये तीन घण्टे में सूखने को हो जाए तो गर्म पानी से धोकर उतार दें।

हमारे अनुभव में निम्नलिखित लेप अधिक लाभकारी सिद्ध हुए हैं। सेमल वृक्ष के कांटों को बकरी के दूध में महीन पीसकर लेप करें अथवा जम्भीरी नींबू के जड़ की छाल, मनसीलाः गऊ का घृत समान भाग लेकर अति सूक्ष्म बकरी के मूत्र में पीसकर लेप करें। लगातार एक माह लेप करते रहना चाहिए। रात के समय करना अति उपयुक्त होगा और लेप सूखने लगे तो गर्म जल से उतारना चाहिए। कम से कम दो घण्टे का लेप अवश्य होना चाहिए। प्रलेपों के साथ-साथ हफ्ते-दस दिन में वमन अवश्य करवाना चाहिए। वमन के लिए एक लीटर जल में २५ ग्राम नीम के पत्ते कूटकर जल में डालकर उबाल लें जब आधा जल शेष रह जाए तो उतारकर छान लें और ३ ग्राम सेंधा नमक और २५ ग्राम शहद मिलाकर सारा जल प्रातः निराहार पी जाना चाहिए। इससे थोड़ी देर में वमन हो जाता है। यदि नहीं हो तो दोबारा आधे घण्टे में उपरोक्त विधि अपनानी चाहिए। कितने ही मनुष्य तो पानी पीकर नोली क्रिया द्वारा वमन कर लेते हैं। नोली क्रिया द्वारा वमन करने की विधि किसी अनुभव से सिखनी चाहिए। जिस दिन वमन की जाए उस दिन केवल मूंग-चावल की खिचड़ी बगैर घी डाले खानी चाहिए अथवा फलों का रस पीना चाहिए। वमन और प्रलेप के साथ-साथ मुख द्वारा औषधियों का प्रयोग करना चाहिए। जैसे-प्रवाल पिष्ठी, सोना गेरू, यषद भस्म और मोती पिष्ठी और स्वर्ण माक्षिक भस्म समान भाग लेकर २५० मि.ग्राम की मात्रा आधा चम्मच गऊ घृत और एक चम्मच शहद में मिलाकर प्रातः निराहार चाट लें और ऊपर से फटे दूध का पानी अथवा दूध को फाड़कर उसका पानी २५० मि.ली. प्रतिदिन पीएं। इस प्रकार १५ दिन उपरोक्त औषधि का सेवन करें और १५ दिन बन्द रखें ये क्रम छः महीने तक चलना चाहिए। साथ में पेट साफ रखना (कब्ज) नहीं रहनी चाहिए। अधिक चिकनी वस्तु जैसे-खोआ, खीर, मूंगफली, चटपटी, मिर्च-मसाले, तली हुई वस्तु से परहेज रखना चाहिए। उत्तम एवं सात्विक विचार रखने चाहिए। सिनेमा, टेलीविजन एवं अश्लील उपन्यास आदि को नहीं पढ़ना चाहिए।

❑❑❑

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| | | |
|---|---|---|
| १. | स्त्री आर्यसमाज कैथल शहर | ४ से १० अप्रैल ०५ |
| २. | आर्यसमाज रेवाड़ी | ९ से १० अप्रैल ०५ |
| ३. | आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत (देवी मेले के उपलक्ष्य में वेदप्रचार) | १६-१७ अप्रैल ०५ |
| ४. | आर्यसमाज सेक्टर-९-९ए-७ एक्स गुड़गांव सत्संग स्थल-सब्जीमंडी सेक्टर-७ एक्स गुड़गांव | १८ से २४ अप्रैल ०५ |
| ५. | आर्यसमाज उलेटा (नगीना) जिला गुड़गांव | २९ अप्रैल से १ मई ०५ |
| ६. | आर्यसमाज रादौर जिला यमुनानगर | २७ से २९ मई ०५ |
| ७. | आर्यसमाज शिकोहपुर (जनपद बागपत) के तत्त्वावधान में महाशय पृथ्वीसिंह बेधड़क जन्मशताब्दी पर आर्य महासम्मेलन | ८ से १० अप्रैल ०५ |

—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

# सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण विषयक सूचना

वर्त्तमान समय में उपलब्ध सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न संस्करणों पर विचार करने हेतु १-२ मार्च २००५ को सत्यार्थप्रकाश न्यास उदयपुर में आर्यजगत् के लगभग २०-२५ शीर्षस्थ विद्वानों एवं विभिन्न संस्थाओं/निकायों के प्रतिनिधियों की बैठक सम्पन्न हुई थी जिसमें सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया था कि सत्यार्थप्रकाश का एक मानक संस्करण तैयार किया जाए। सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण को आधार बनाकर प्रथम मूलप्रति तथा द्वितीय मुद्रण प्रति से सहायता लेते हुए इस संस्करण को तैयार किया जाए। इसके लिए दस विद्वानों की एक 'सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण समिति' का गठन भी तभी कर लिया गया था जिसके अध्यक्ष आचार्य विशुद्धानन्द जी हैं। यह भी निश्चय किया गया था कि अब इस विषय में किसी की ओर से भी आरोप-प्रत्यारोप न किये जाएं तथा अब तक जो कुछ भी अप्रिय लेखन एतद्विषयक हुआ है, उसे भुला दिया जाए। साथ ही श्रीमती परोपकारिणी सभा को भी उक्त समिति में अपना प्रतिनिधि भेजने के लिए निवेदन किया जाए।

उक्त समिति के प्रस्ताव को मैंने २ मार्च ०५ को ही परोपकारिणी सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री मित्रसेन जी आर्य के पास उनके निवास पर रोहतक भेज दिया था। तत्पश्चात् दूरभाष पर दिये गये उनके निर्देशानुसार १३ मार्च को यह प्रस्ताव परोपकारिणी सभा को भी भेजा जा चुका है। अभी तक सभा का कोई उत्तर नहीं आया है।

उक्त समिति का निश्चय है कि यथाशीघ्र पूर्ण प्रामाणिक रूप में इस कार्य को सम्पन्न किया जाए। इसके लिए समिति के मान्य सदस्यों से प्रार्थना की जाती है कि वे मई मास में इस कार्य के लिए समय निकालने की कृपा करें। सभी विद्वान् १०-१५ दिनों के लिए किसी स्थान पर मिलकर बैठेंगे तथा इस कार्य को आगे बढ़ायेंगे। निश्चित समय तथा स्थान की सूचना बाद में दे दी जायेगी, किन्तु अप्रैल २००५ के अंत तक भी सभा का कोई उत्तर नहीं आता तो मई मास में इस कार्य को प्रारम्भ कर दिया जायेगा। इस विषय में समिति के मान्य सदस्यों के विचार आमंत्रित हैं। उदयपुर में बैठक का आयोजन न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने किया था जिसका सुफल सबके सामने है। हम सब ऋषि के भक्त एवं ऋणी हैं। मानक संस्करण जैसे महान् कार्य के लिए १५-२० दिन देना कोई बड़ी बात नहीं है। अत: समिति के मान्य विद्वानों से नम्र निवेदन है कि **१६ मई से मई के अंत तक का समय** इस पवित्र कार्य के लिए सुरक्षित रखें।

**-रघुवीर वेदालंकार,** संयोजक-सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण समिति, बी-२६६ सरस्वती विहार, दिल्ली

## बताओ! क्या कारण है?

आर्यसमाज का स्थापना दिवस हर वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आता है और कुछ याद दिलाने के लिए आता रहेगा। यह पर्व आर्यसमाजों और सभाओं द्वारा हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। वैदिक विद्वान् और प्रवक्ता आर्यसमाज का प्राचीन इतिहास बताते हैं, कुछ महर्षि दयानन्द का गुणगान करते हैं। इस प्रकार शान्तिपाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हो जाता है। यदि ऋषिलंगर की व्यवस्था हो तो उसे छककर अपने घर चले जाते हैं। घर में जाकर थकावट दूर करने के लिये आराम से सो जाते हैं। यह दिन आर्यों को जगाने के लिये आता है। धर्म और राष्ट्र के प्रति कुछ करने की प्रेरणा देता है। आप देख रहे हो, धर्म का इतना प्रचार होने के बाद भी जहालत (अंधविश्वास) बढ़ता ही जारहा है अभक्ष्य दूषित खान-पान के कारण जनता की मानसिक वृत्तियां [illegible] ओर बढ़ रही हैं। आर्यसमाज के अधिकारी भाषण और जयघोष लगाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ रहे हैं। मैं देखता हूँ प्रात: संध्या हवन करने के बाद आर्यसमाज के दरवाजे बंद हो जाते हैं। कहीं-कहीं तो ताला लग जाता है। द्वार पर कम से कम प्रधान/मंत्री का नाम-पता फोन नंबर कुछ लिखा होना चाहिए।

मैं जब साधारण जनता में वैदिक सिद्धान्तों और आर्यसमाज के नियमों की चर्चा करता हूँ तो सच्चाई के नाते सब मानने को तैयार हैं। परन्तु जब वो देखते हैं कि ये इतनी अच्छी बात करनेवाले स्वयं परस्पर विद्रोह (ईर्ष्या-द्वेष) की अग्नि में जल रहे हैं या स्वार्थ की दल-दल में फंसे हुये हैं तो मुँह मोड़ लेते हैं या बचकर निकल जाते हैं। अनेक आर्यसमाजों में दो गुट बने हुये हैं। जो गुट सत्ता में नहीं है वो आता ही नहीं। सार्वदेशिक सभा को ही देख लो। मैं जानना चाहता हूँ जब आर्यवीर दल पहले से ही युवकों का दल बना हुआ है तो आर्य युवक परिषद् बनाने की क्या आवश्यकता है? क्यों नहीं एक दल संगठित होकर कार्य करता है।

आपको सोचने विचारने हेतु कुछ निम्न प्रश्न लिख रहा हूँ जिनका लेख के शीर्षक से निर्णय कीजिए कि आपको क्या करना है?

१. आप देख रहे हो कि एक पौराणिक का बच्चा स्वयं पौराणिक बन जाता है,वह बिना बताये मंदिर में जाकर घंटी बजाता है, शिवलिंग पर पानी चढ़ाता है। परन्तु अफसोस है कि आर्यसमाजी का बच्चा आर्यसमाजी नहीं बनता।

२. आर्यसमाज जैसी श्रेष्ठ संस्था में पद के लिये लड़ाई झगड़े क्यों होते हैं?

३. आर्यसमाज के दैनिक/साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थिति कम क्यों रहती है, जबकि मासिक चन्दा देने वालों की संख्या सौ से भी अधिक है।

४. अयोग्य-आचरणहीन व्यक्ति को आर्यसमाज का प्रधान या मंत्री क्यों चुना जाता है।

५. महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना क्यों की थी? उसे पूरा करने के लिये क्या हो रहा है, क्या करना चाहिए?

-देवराज आर्यमित्र, हरिनगर, दिल्ली-६४

## होली का त्यौहार वैदिक रीति से सम्पन्न

वैदिक योग आश्रम मोरखी के संचालक ब्र० नचिकेता जी नैष्ठिक ने मोरखी ग्राम में दिनांक २५-२६ मार्च २००५ को होली का त्यौहार वैदिक रीति से मनाया। ग्रामवासियों ने बड़ी श्रद्धा व उत्साह से नवसस्येष्टि यज्ञ में भाग लिया और माताओं ने भी अपनी श्रद्धा के अनुसार यज्ञ में हलवा, खील, लड्डू आदि की आहुति डाली। ब्रह्मचारी जी ने ग्रामवासियों से होली त्यौहार बड़े प्रेम व भाईचारे से मनाने की अपील की और होली का वैदिक स्वरूप बताया। ग्राम में बहुत अच्छा असर रहा। सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने सम्बोधित किया और इस अवसर पर शराब आदि बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा दी। १० किलो घी और १० किलो सामग्री से यज्ञ किया गया। इसी प्रकार ग्राम गंगोली में भी यज्ञकिया। ग्राम गंगोली में १०० किलो घृत का यज्ञ किया। यज्ञ २१/३/२००५ से २६/३/२००५ तक चला। यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया। वेदमंत्रों का पाठ ब्र० जयदेव जी व आचार्य राजेन्द्र जी ने किया। भजनोपदेशक योगेशदत्त जी ने बहुत ही सुमधुर भजन सुनाये। लोगों ने बड़ी ही श्रद्धा से सुने। ग्राम भिड़ताना में भी आचार्य जी की प्रेरणा से होली का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया गया और इस अवसर पर पूरे गांव की गलियों की सफाई की गई और आचार्य आत्मप्रकाश जी व स्वामी धर्मदेव जी की प्रेरणा से प्रत्येक घर-घर में हवन किया गया वैदिक प्राथमिक पाठशाला पिल्लूखेड़ा व गुरुकुल भिड़ताना के आर्यवीरों ने मधुर गीत सुनाये।

-जयपाल आर्य

## वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

वेदप्रचार मण्डल जिला अम्बाला व पंचकूला का वार्षिक सम्मेलन दिनांक २३, २४, २५ मार्च २००५ को नारायणगढ़ के समीप गांव बरौली में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से पं० जगदीशचन्द्र जी की भजनमण्डली, स्वतन्त्र भजनोपदेशक पं० रामनिवास जी आर्य, स्वामी चन्द्रदेव जी कंकर खेड़ा उत्तरप्रदेश ने बड़े प्रभावशाली ढंग से अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त अंबाला से डॉ० राजकुमार चौहान, प्रिंसिपल जसमेरसिंह नैन व प्रचारमंत्री श्यामसुन्दर भी पहुंचे। २५ मार्च को क्षेत्र की सभी आर्यसमाजों गांव हुसैनी, बरौली, नारायणगढ़, लाहड़पुर, सालेहपुर, ठसका, बनोंदी, रामगढ़, बड़ागढ़, तन्दवाल, बिचपड़ी, बुर्जशहीद, शहजादपुर, भायसी आदि अनेक गांवों के पधारे प्रतिनिधियों ने तथा अंबाला शहर की कई आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने वेदप्रचार की गति तेज करने बारे अपने-अपने सुझाव दिये। श्रोताओं की उपस्थिति कई हजार में थी।

कार्यक्रम (सम्मेलन) का प्रभाव अच्छा रहा है। सभी ने प्रशंसा की है और सम्मेलन सफल रहा है। इसी अवसर पर गांव बरौली में भव्य यज्ञशाला का भी विधिवत् उद्घाटन किया गया है।

-महेश आर्य, प्रधान,
वेदप्रचार मण्डल जिला अंबाला व पंचकूला

## विशेष छूट

### आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय में निम्न साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध है।

| क्र. | पुस्तक | छूट | मूल्य |
|---|---|---|---|
| १. | धर्म-भूषण | २० प्रतिशत छूट | १०-०० |
| २. | धर्म-प्रवेशिका | | ५-०० |
| ३. | वैदिक सिद्धान्त सार | | १५-०० |
| ४. | वैदिक उपासना पद्धति | | ८-०० |
| ५. | प्राणायाम का महत्त्व | आधे मूल्य में | १५-०० |
| ६. | पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित्र | | १०-०० |
| ७. | हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान | | ३०-०० |
| ८. | पंजाब का हिन्दीरक्षा आन्दोलन | | १००-०० |
| ९. | विजडम ऑफ ऋषिज | | ७२-०० |
| १०. | सरफरोशी की तमन्ना | | २०-०० |
| ११. | सत्यार्थप्रकाश | | २५-०० |
| १२. | आर्यसमाज क्या है? | | ५-०० |
| १३. | हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास | | ५-०० |
| १४. | हमारा फाजिल्का | | ५-०० |
| १५. | श्लीपद हाथी पांव चिकित्सा | | २-०० |
| १६. | शराबबन्दी शंका-समाधान | | १-०० |
| १७. | आदर्श धातु रूपावली | | ५-०० |
| १८. | ओ३म् ध्वज | | १५-०० |
| १९. | दैनिक यज्ञ प्रकाश | | २-५० |
| २०. | आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो लेखक-प्रो० रामविचार | | १०-०० |
| २२. | स्वामी दयानन्द और वेदों पर आक्षेपों का उत्तर | | २०-०० |
| २३. | ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका | | ५०-०० |

**नोट :-**

१. अगर आप डाक से मंगवाना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड बुक पोस्ट+पैकिंग खर्च अलग से लगेगा।
२. रुपये पहले भेजने होंगे।
३. बैंक ड्राफ्ट 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम भेजें।

**-सत्यवीर शास्त्री,** मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

# आर्य-संसार

## चरित्र-निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न



चरित्र-निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर डीघल जिला झज्जर

जिला झज्जर आर्यवीर दल व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संयुक्त तत्त्वावधान में ग्राम डीघल के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पिछले सात दिन से चल रहे चरित्र-निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा यादराम शास्त्री थे व यजमान का आसन शाखा संचालक सुरेन्द्र आर्य ने ग्रहण किया। शिविर से प्रभावित होकर लगभग ५० नौजवानों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया तथा सच्चे ईश्वर की उपासना, माता-पिता की सेवा करने व आजीवन शराब, अंडे-मांस-मछली, धूम्रपान आदि दुर्व्यसनों से दूर रहने का संकल्प लिया। यज्ञोपरान्त वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक चाँदसिंह आर्य ने अपने ओजस्वी प्रवचन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री आर्य ने बताया कि आर्यवीरदल महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज का युवा संगठन है जिसका उद्देश्य समाज से अज्ञान, अन्याय एवं अभाव को मिटाना, वैदिक संस्कृति की रक्षा करना, शारीरिक व आत्मिक शक्ति अर्जित करके समाज की सेवा करना है। आर्यसमाज में फैलते जा रहे पाखण्ड, अंधविश्वास व गुरुडमवाद पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सभी शिविरार्थियों व ग्रामीणों को जागरूक किया कि किस प्रकार तथाकथित सन्त समाज में विघटन पैदा करके आपसी भाईचारे व मेलमिलाप को खत्म करके फूट के बीज बो रहे हैं। श्री रामपालदास द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत सत्यार्थप्रकाश पर तोड़-मरोड़ कर किए जा रहे मिथ्या प्रचार की कटु आलोचना करते हुए कहा कि यदि दास या उनके द्वारा प्रेरित किसी अन्य भक्त द्वारा आगे से इस प्रकार के भ्रामक विज्ञापन अखबारों में छपवाने का दुःसाहस किया तो इसका परिणाम बुरा होगा और जिसका जिम्मेदार वह स्वयं व प्रशासन होगा। यदि उनको कोई भी शंका है तो वह आमने-सामने बैठकर शास्त्रार्थ करे। आर्यसमाज इसके लिए उन्हें खुली चुनौती देता है।

शिविर के दौरान आचार्य बलदेव जी आर्य प्रधान गोशाला संघ व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, वेदप्रकाश आर्य महामंत्री आर्यवीर दल हरयाणा तथा मण्डलपति श्री ...राज आर्य ने भी शिविरार्थियों को समय-समय पर सम्बोधित किया। गांव में आर्यवीर दल की कार्यकारिणी का भी गठन किया गया जिसमें सुरेन्द्र आर्य को शाखा संचालक, दीपक आर्य को सचिव, सुरेन्द्र अध्यापक को खजांची व राकेश आर्य को ...सचिव नियुक्त किया गया। समापन समारोह में महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय के ... अध्यापक सत्यनारायण, अध्यापक अजीतसिंह, देवेन्द्रसिंह, रोहतास अहलावत, ...सिंह, कृष्ण शास्त्री, दिनेश आर्य, अमितार्य, महीपालार्य, कुलवीरार्य, रविदत्तार्य, ...द्रार्य, धनराजार्य, ओमप्रकाशार्य, पवनार्य, ग्राम पंचायत एवं सभी ग्रामीणों का भरपूर ...योग रहा।

## स्वच्छ पंचायत बनायें

हरयाणा पंचायत में गणराज्य रहा है। पंचायतों का अत्यधिक महत्त्व हरयाणा में ...काल से ही है। शराब, मांस, अण्डे, शुल्फा आदि सेवन करने वाले को पंच तथा ... न बनायें। गांव के विकास तथा प्रत्येक प्रकार की ग्राम रक्षा का उत्तरदायित्व ... का होता है। आर्य, श्रेष्ठ व धर्मात्मा को ही सरपंच बनायें। आर्य प्रतिनिधि सभा ... की ओर से आर्य सरपंच तथा पंचों को सम्मानित किया जायेगा। वे अपने-...ग्राम में शराब बन्द का दायित्व लें। ग्राम में टेलीविजन गंदे गाने व चित्र के होने ...चारित्रिक ह्रास को रोक सकेंगे।

-बलदेव, सभा प्रधान

## वेदप्रचार में बहनों का अनूठा प्रयास

...न सुमित्रा जी के नेतृत्व में ग्राम-ग्राम में जाकर वेदप्रचार व पाखण्ड-खण्डन ... सत्संगमण्डली, जिसमें बहन दयावती जी, डॉ० गायत्री आदि अपने प्रवचनों ... अच्छा कार्य आर्यसमाज का कर रही हैं जिसका ग्रामवासी बहनों पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। दिनांक २४ मार्च को इन विदुषियों का कार्यक्रम भऊअकबरपुर व मोखरा में रहा जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। आर्य बहनों के कार्यक्रम गांव-गांव में होवें तो इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

-आचार्य वेदमित्र, गुरुकुल भऊअकबरपुर, जिला रोहतक

## आर्यसमाज जींद शहर का चुनाव

१. श्रीमती सरला गोयल-प्रधान, २. श्री मा० मोहनलाल आर्य-संरक्षक, ३. श्री सत्यप्रकाश आर्य-संरक्षक, ४. श्री जयप्रकाश आर्य-उपप्रधान, ५. श्री सुरेन्द्रसिंह पूनिया एडवोकेट-उपप्रधान, ६. श्री मा० राजवीरसिंह आर्य-मंत्री, ७. श्री संजीवकुमार आर्य-उपमंत्री, ८. श्री कृष्णदेव शास्त्री-प्रचारमंत्री, ९. श्री अशोककुमार आर्य-कोषाध्यक्ष, १०. श्री कुंवर महावीरसिंह एडवोकेट-पुस्तकाध्यक्ष।

-सरला गोयल, प्रधान, आर्यसमाज, जींद

## आर्यसमाज गहलव का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गहलव (हथीन) जिला फरीदाबाद का छठा वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। उत्सव का शुभारम्भ वैदिक यज्ञ से किया गया। उत्सव में समाजसुधार शहीद सम्मेलन, धर्मरक्षा सम्मेलन व महिला सम्मेलन के माध्यम से विद्वानों ने वैदिक मान्यताओं से जनमानस को अवगत कराया। हथीन क्षेत्र के विधायक चौ० हर्षकुमार ने वार्षिकोत्सव में मुख्यातिथि के रूप में भाग लिया।

-ओमप्रकाश आर्य, प्रधान

## आर्यसमाज होडल जिला फरीदाबाद का अधिवेशन सम्पन्न

आर्यसमाज होडल जिला फरीदाबाद का वार्षिक अधिवेशन गत दिवस समाज के सभागार में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता श्री शिवराम विद्यावाचस्पति ने की। आगामी एक वर्ष के लिए आर्यसमाज की साधारण सभा ने सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारियों का चुनाव किया-

प्रधान-श्री हेतराम गर्ग, उपप्रधान-श्री जोरमल चौहान, श्री कृष्णचन्द्र क्षेत्रपाल, मंत्री-हृदयराम गर्ग, उपमंत्री-श्री देव शर्मा, कोषाध्यक्ष-ओमप्रकाश मित्तल, आर्य उच्च विद्यालय प्रबन्धक-श्री भारतभूषण पाराशर, श्री रामकिशोर धमार्थ औषधालय प्रबन्धक-श्री भद्रसेन सचदेवा।

-हृदयराम गर्ग-मंत्री, आर्यसमाज-होडल

## सात दिवसीय वैदिक सत्संग कार्यक्रम

सत्य की तलाश के इच्छुक धार्मिक महानुभावो (पुरुष एवं महिलाएं) अपनी समस्त शंकाओं के समाधान और आसन, प्राणायाम आदि योग सीखने तथा प्राकृतिक चिकित्सा जानकारी हेतु छात्र-छात्राओं सहित **महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर** में सादर आमन्त्रित हों। मदशिके के संस्थापक श्री रतीराम आर्य के दिल्ली विद्युत् बोर्ड से सेवा मुक्त होने पर।

### कार्यक्रम

**( २५ अप्रैल सोमवार से ३० अप्रैल २००५ शनिवार तक प्रतिदिन )**

**योग तथा प्राकृतिक चिकित्सा** -प्रातः ५ बजे से ६ बजे तक तथा सायं ५ बजे से ६ बजे तक। **देवयज्ञ ( हवन )**-प्रातः ७ बजे से ८ बजे तक। **भजन-प्रवचन**-प्रातः ८ बजे से १०.३० बजे तक तथा सायं ७ बजे से ९:३० बजे तक। **वैदिक सम्मेलन**-१ मई २००५ रविवार को प्रातः ६ बजे से ११.३० बजे तक **यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह** परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में आयोजित होगा।

-सार्जेन्ट विजय आर्य (मदशिके, भट्टी गेट, झज्जर, ०१२५१-२५३८५६)

# नवसंवत्सरोत्सवः (संवत्सरेष्टि)

## चैत्र शुक्ला प्रतिपदा अथवा मेष संक्रान्ति

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

करुणाकर भगवान् ने सृष्टिरचना को पूर्ण कर उसको वसन्त का रूप दे दिया था। वसन्त का अर्थ है वसनीय। सृष्टि को वसनीय बनाने के लिये उसके समस्त ओषधिवनस्पत्यादि वस्तुओं का पूर्ण विकास होना आवश्यक था। अतः सृष्टि का आरम्भ पूर्ण विकसित रूप में हुआ। अतः निश्चित है कि सृष्टि का आरम्भ वसन्त से हुआ। चैत्र और वैशाख वसन्त के दो मास हैं। अतः सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को हुआ।

**मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू॥** (यजुर्वेद अध्याय १३ मन्त्र २५)

वेद की इस श्रुति में आये हुये मधु तथा माधव शब्दों को लेकर वसन्त ऋतु के मासों के नाम पड़े हैं और क्रमानुसार आदिम प्रथम मास का नाम मधु और द्वितीय मास का माधव रखा है।

कालक्रम के आगे चलकर ज्योतिष विद्या के विकास और विस्तार के समय काल की चान्द्र गणना प्रचलित होने पर मासों के मधु आदि वैदिक नाम बदलकर चैत्र आदि चान्द्र नाम रखे गये चान्द्र मासों का नामकरण इस नियम से किया गया था कि जिस पूर्णिमा को जो नक्षत्र पड़े वह पूर्णिमा उसी नक्षत्र की नामधारिणी होगी और पूर्णिमा नक्षत्र युक्त नाम के अनुसार ही मास का नाम भी रखा जायेगा। महामुनि पाणिनि ने अपने प्रसिद्ध अष्टाध्यायी व्याकरण में इस नियम को इस प्रकार सूचित किया है-

**साऽस्मिन् पौर्णमासीति॥** (अष्टाध्यायी ४।२।२०)

**वृत्ति-प्रथमा समर्थात् पौर्णमासी विशेषवाचिनः शब्दात् अस्मिन्निति सप्तम्यर्थे यथाविहितः प्रत्ययो भवति।**

**अर्थ**-पौर्णमासी विशेषवाची शब्द से सप्तम्यर्थ में (जिस शब्दवाचक मास में वह पौर्णमासी पड़े, उस शब्द से) यथाविहित प्रत्यय हो।

यथा-'**चित्रा नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी चैत्री, सा (चैत्री) पौर्णमासी यस्मिन् स चैत्रो मासः**' अर्थात् जिस पौर्णमासी को चित्रा नक्षत्र हो वह चैत्री कहलायेगी और चैत्री पौर्णमासी जिस मास में पड़ेगी वह चैत्र मास होगा। इसी नियम के अनुसार मासों के चैत्र, वैशाख आदि नाम प्रचलित हुये हैं।

उपर्युक्त विवेचनानुसार ही यह इतिहास बन गया कि सृष्टि का आरम्भ चैत्र मास के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा को हुआ था, क्योंकि सृष्टि का प्रथम मास वैदिक संज्ञानुसार मधु कहलाता था और वही फिर ज्योतिष में चान्द्र काल गणनानुसार चैत्र कहलाने लगा था उसी की पुष्टि में ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रंथ में निम्नलिखित श्लोक आया है-

**चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।**
**शुक्लपक्षे समग्रन्तु, तदा सूर्योदये सति॥**

**अर्थ**-चैत्र शुक्लपक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की। प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्यकृत 'सिद्धान्तशिरोमणि' का निम्नलिखित पद्य भी इसी पक्ष का पोषक है-

**लङ्कानगर्यामुदयाच्च भानोस्तस्येव वारं प्रथमं बभूव।**
**मधोः सितादेर्दिनमासवर्षयुगादिकानां युगपत्प्रवृत्तिः॥**

**भाषार्थ**-लङ्का नगर में सूर्य के उदय होने पर उसी के वार अर्थात् आदित्य वार में चैत्र मास शुक्लपक्ष के आरम्भ में दिन मास वर्ष युग आदि एक साथ आरम्भ हुये।

आगे चलकर इस वर्ष पूर्व परम्परानुसार आर्यों के अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से ही आरम्भ किये गये। ब्रह्मदिन, सृष्टिसंवत्, वैवस्वतादिमन्वन्तरारम्भ, सतयुगादि युगारम्भ, कलिसंवत्, वैक्रम संवत् चैत्र सुदी प्रतिपदा को ही आरम्भ होता है। आदि सृष्टि से ही आर्यजाति में नवसंवत्सराम्भ का पर्व मनाने की प्रथा प्रचलित है।

नवसंवत्सरारम्भ संसार की प्रायः सब सभ्य जातियों में मनाया जाता है। ईसाइयों के यहां उसको न्यू इयर्स डे कहते हैं और वह पहली जनवरी को होता है। फारस देश में पारसियों के यहां यह जश्न नौरोज के नाम से प्रसिद्ध है। और सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने पर मनाया जाता है। अन्य जातियों में जहां इस अवसर पर प्रसन्नता प्रदर्शन और रंगरेलियाँ मनाने की रीति है वहां धर्मप्राण आर्यजाति में आनन्दानुभव के साथ यज्ञ आदि धर्मानुष्ठानपूर्वक इस उत्सव को मनाने की परिपाटी है। ऊपर हेमाद्रिग्रन्थ के प्रमाण से बतलाया जा चुका है कि आदि सृष्टि शुक्लपक्ष के प्रथम दिन प्रतिपदा को प्रथम सूर्योदय होने पर संवत्सर का प्रारम्भ हुआ था और सिद्धान्त शिरोमणि का उद्धरण देकर यह भी वर्णन किया गया है कि वसन्त ऋतु शुक्लपक्ष, मास, वर्ष तथा युगादि की प्रवृत्ति उसी समय एक साथ हुई थी। इससे ज्ञात होता है कि उस समय चैत्र सुदी प्रतिपदा और सौर मेष संक्रान्ति एक साथ ही पड़ी थी, किन्तु पीछे से सौर और चान्द्र वर्षों की दो प्रकार की गणना संसार में प्रचलित होने पर सौर और चान्द्र संवत्सरों का नवसंवत्सराम्भ भी पृथक्-पृथक् तिथियों पर होने लगा। कविवर पूर्ण ने सुन्दर शब्दों में स्वस्ति और स्वागत गान किया है-

**स्वस्ति महजन! स्वागत सज्जन! आशाभाजन प्यारे!**
**नवसंवत्सर! समयराज के वत्स रसाल दुलारे!**
**स्वागत आगामिनी भामिनी के प्रिय बालक वारे!**
**स्वागत, स्वागत! स्वस्ति नवागत आदर योग्य हमारे!**

## आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आर्य महिला जागृति मण्डल जिला रोहतक का चुनाव

प्रधान-बहन सुमित्रा वर्मा भजनोपदेशिका, उपप्रधान-बहन दयावती आर्या, मंत्री-बहन गायत्री आर्या, उपमंत्री-बहन कान्तादेवी आर्या, कोषाध्यक्ष-बहन फूलवती आर्या, पुस्तकाध्यक्ष-बहन ओमपति आर्या, लेखानिरीक्षक-बहन राजबाला एडवोकेट।



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री    सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२    अंक २०    १४ अप्रैल, २००५    वार्षिक शुल्क ८०)    विदेश में २० डॉलर    एक प्रति २.००

१० अप्रैल १८७५ को स्थापित, आर्यसमाज की स्थापना पर विशेष...

## अमर रहे हमारा यह आर्यसमाज

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

**आर्यसमाज की पृष्ठिभूमि में महर्षि के आगमन से पूर्व की स्थिति-**

महर्षि के आगमन से पूर्व बंगाल में राजा राममोहन द्वारा ''ब्रह्मसमाज'' की स्थापना का ट्रस्टडीड ८ जनवरी १८३० को उन्हीं के द्वारा लिखा गया था। उस युग में राजा राममोहन पहले व्यक्ति थे जिन्होंने समाजसुधार का कार्य प्रारम्भ किया था। 'ब्रह्मसमाज की स्थापनां भी इन्हीं के द्वारा की गई थी।' किन्तु कुछ काल के पश्चात् राममोहनराय भ्रमित होकर अंग्रेजों की प्रशंसा करने लगे। अपने पूर्व संतुलन को खो बैठे। उन्होंने लिखा-''मुझे अब विश्वास हो गया है कि अंग्रेजों का राज्य विदेशी होते हुए भी भारतीयों की उन्नति के लिए निश्चित रूप से अधिक हितकारी है।'' सन् १८३० में राजा राममोहनराय इंग्लैंड चले गए। वहीं पर १८३३ में उनका देहांत हो गया।

इसके बाद केशवचन्द्र सेन १८५७ में ब्रह्मसमाज में सम्मिलित हो गए। किन्तु केशवचन्द्र सेन का आना समाज के लिए रुकावट बन गया। केशवचन्द्र सेन की भी शिक्षा-दीक्षा पाश्चात्य संस्कारों के साथ हुई थी। ईसाईयत के प्रति उनमें आपार उत्साह थां। वे ईसामसीह को समस्त मानव जाति का त्राता मानते थे। अपने अनुयायियों को ईसाईमत को अपनाने के लिए प्रबल प्रेरणा देते थे।

९ अप्रैल १८७९ को कलकत्ता के टाउन हाल में ''India asks who is Christ.'' शीर्षक का व्याख्यान देते हुए केशव बाबू ने अपने हृदय के भावों को इन शब्दों में प्रकट किया था-''My Christ. My suect chirst. The brightest jeuel of my heart the necklec of my soul for twenty years have I chrished them. In this my miserable heart.'' अर्थात् मेरा ईसा, मेरे हृदय का आभावान हीरा, मेरी आत्मा का कण्ठहार बीस वर्ष तक मैंने इसे अपने संतप्त हृदय में संजोए रखा है।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द १८७२ में कलकत्ता पहुंचे। उस समय भारत की राजधानी कलकत्ता थी। अनेक विद्वान् तथा राजनीतिज्ञ कलकत्ता में थे। महर्षि की तत्कालीन विद्वानों में इन्हीं केशवचन्द्र सेन, महर्षि देवेन्द्रनाथ तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा सरकार के अधिकारियों वायसराय आदि से भी भेंट होती रही। अनेक गणमान्य व्यक्तियों से महर्षि ने विचार विमर्श किया।

महर्षि वहां पर कई महीने तक रहे। विशेषकर केशवचन्द्र सेन से तो मिलना होता रहा। महर्षि सब कुछ देखकर व वार्त्तालाप आदि के द्वारा सब कुछ जानकर इस परिणाम पर पहुंचे कि उन्होंने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास के अन्त में ब्रह्मसमाज के प्रकरण में लिखा-''इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत न्यून है।'' ईयाइयों के आचरण बहुत से ले लिए हैं। खानपान विवाहादि के नियम भी बदल गए हैं। और जो विद्या का चिन्ह यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान ईसाइयों के सदृश बन बैठना यह भी व्यर्थ है। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में इनकी १६ त्रुटियां लिखी हैं और अन्त में वहीं पर महर्षि ब्रह्मसमाजियों को सम्बोधित करते हुए लिखते हैं-''इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।'' क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना; अब भी पालन होता है; आगे होगा; उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है। क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं॥

**आर्यसमाज की स्थापना**-इस प्रकार महर्षि ने बंगाल के परिभ्रमण में राष्ट्र की अवस्था को अच्छी प्रकार देखकर एक सुदृढ़, शक्तिशाली, वेदोक्त धर्म को मानने वाले ''समाज'' की स्थापना का विचार करके अपने वेदों के स्वाध्याय काल में 'आर्य' शब्द को ही सर्वश्रेष्ठ समझकर **''इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो-ऽराव्णः''** (ऋ० ९/६३/५) के आर्य शब्द को आधार मानकर तथा ऋग्वेद के ४-२६-२, मंत्र को विचार कर कि-**''अहं भूमिमददाम्०''** अर्थात् सारे संसार को आर्य बनाओ के आदेश तथा ईश्वर के आदेश के अनुसार यह भूमि में आर्यों को देता हूं के उद्देश्यों को मन में विचारकर''आर्यसमाज'' नाम के सुदृढ़, वेदोक्त सत्य पर आधारित, संगठन की आधारशिला महर्षि के आदेशानुसार चैत्र सुदि ५, सम्वत् १९३२ वि० शनिवार को मुम्बई नगर के गिरगांव मुहल्ले में डॉक्टर माणिकचन्द की वाटिका में सायं समय शुभ स्थापना हुई थी। सन् १८७५, १० अप्रैल को महर्षि द्वारा सुधार का कल्पतरु आरोपित किया गया। आर्यजाति में नया जीवन और जागृति पैदा की गई। आर्यसमाज द्वारा सच्चे वैदिक धर्म का स्रोत खोल दिया गया। इस प्रकार आर्य मानमर्यादा तथा गौरव-गरिमा की रक्षा के निमित्त एक प्रकार से सुरक्षित व्यवस्था कायम होगई। अब सुधार का कार्यक्रम सुचारु रूप से आर्यों के सहयोग से आरंभ हो गया।

पाखण्डों का खण्ड-खण्ड कर कुरान, बाइबिल के विदेशी मतों पर प्रबल प्रहार कर महर्षि ने राम, कृष्ण व ऋषि-मुनियों की पावन परम्परा के अजस्र प्रवाह को पुनः प्रवाहित किया। यदि महर्षि दयानन्द न होते और उन्होंने आर्यसमाज के रूप में अपना उत्तराधिकारी कार्यक्षेत्र में अवतरित न किया होता तो-

**न होता स्वराज-सूर्योदय, न ज्ञान का प्रकाश होता।**
**न वेदशास्त्र, न राम, न कृष्ण, न सत्य का विकास होता।**
**होता हिन्द, किन्तु अवैदिक मतवादियों से पूर्ण।**
**चारों ओर केवल हीनभावना का राज्य होता॥**

**२. वेदज्ञान का प्रचारक आर्यसमाज**-संसार वेदों को भूल चुका था। परमात्मा की इस अमरवाणी का नाम मात्र ही शेष था। वेदों के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्त धारणाएं व्याप्त थीं। पौराणिक कहते थे, वेदों को लेकर भस्मासुर पाताल में चला गया। मनुष्यकृत ग्रन्थों का चारों ओर बोलबाला था। वेदों के उद्धार एवं प्रचार के पुण्य कार्य से महर्षि दयानन्द ने ही हमें वेदों का भाष्य लिखकर परिचित कराया। महर्षि ने ही आर्यसमाज के तीसरे नियम में हमें आज्ञा देकर वेदों के सम्बन्ध में बताया। आर्यसमाज की प्रमुख मान्यता-**''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।''**

आर्यसमाज का आधार वेद है। आर्यसमाज का लक्ष्य संसार में वेदप्रचार है। पश्चिमी विद्वानों ने वेदों के सम्बन्ध में भ्रामक विचार फैलाकर भारतीयों में हीनभावना उत्पन्न करने का षड्यन्त्र रचा था। सायण, महीधर आदि भारतीय तथाकथित विद्वानों ने वेदों के अश्लील अर्थ लिखकर उनका अपमान किया था। किन्तु आर्यसमाज ने सफलता के साथ उनके भ्रामक प्रचार का खण्डन किया तथा महर्षि दयानन्द ने मैक्समूलर आदि विदेशी विद्वानों के द्वारा किए गए वेदभाष्यों का भी खण्डन करके संसार के लोगों के सामने वेदों के यथार्थस्वरूप का व्याख्यान किया। महर्षि ने सारे विश्व के विद्वानों के सामने चेतावनी देते हुए कहा था-**''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।''** इसीलिए तो आज हम कहते हैं-

**वेद ज्ञान की पावन गंगा, बहा रहा है आर्यसमाज।**
**घर-घर से अज्ञान, अंधेरा, हटा रहा है आर्यसमाज।**
**मतवादों-पन्थों के झगड़े, मिटा रहा है आर्यसमाज।**
**सौ वर्षों से मनुज मात्र को, उठा रहा है आर्यसमाज।**

( शेष पृष्ठ सात पर )

# ब्रह्मचर्य ही जीवन है

❑ आर्य अत्तरसिंह ढ़ाण्डा, प्रधान, गुरुकुल धीरणवास ( हिसार )

मानव जीवन को सफलता एवं सार्थकता से व्यतीत करने के उद्देश्य से भारतीय वैदिक संस्कृति में जीवन को मुख्य चार आश्रमों में बांटा गया, वस्तुतः (१) ब्रह्मचर्य (२) गृहस्थ (३) वानप्रस्थ (४) संन्यास आश्रम। पिछले तीनों की सफलता ब्रह्मचर्य आश्रम पर टिकी है। जैसे कोई तीन मंजिल या अधिक मंजिल का भवन बनाना चाहता हो तो निश्चय रूप से उसकी नींव बहुत मजबूत बनानी होगी। उस नींव में बढ़िया से बढ़िया मसाला एवं ईंट-पत्थर सीमेंट लगाने होंगे। तब ही यह नींव ऊपर की तीन मंजिलों का भार वहन कर सकेगी। ब्रह्मचर्य से मनुष्य-देवता मृत्यु को जीत लेते हैं अर्थात् **'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत'।** क्योंकि मनुष्य को कर्म करते हुए १०० वर्ष जीने का विधान है और प्रत्येक आश्रम का समय २५-२५ वर्ष का है। आइए अब विचार करें कि ब्रह्मचर्य का क्या उद्देश्य है। बच्चा ५ से ७ वर्ष तक अपने परिवार में रहकर माता-पिता से अक्षर ज्ञान प्राप्त करता है। फिर उसको किसी गुरुकुल या विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवेश दिला दिया जाता है। आम आदमी की धारणा यह है कि ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल विवाह नहीं करना और वीर्यरक्षा करना है। विद्यार्थी जीवन में लड़का-लड़की अपनी रुचि अनुसार उच्च से उच्चतम शिक्षा ग्रहण करते हैं अर्थात् सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक आदि विषयों में। इसके साथ-साथ वीर्यरक्षा करना अपना पहला कर्तव्य समझते हैं तथा अपनी रुचि अनुसार विविध प्रकार के क्रीड़ा-खेल, आसन, व्यायाम आदि में भी बराबर भाग लेते हैं ताकि शारीरिक दृष्टि से भी सुदृढ़, सुन्दर, सुडौल स्वास्थ्य के धनी बनें और जब पूरी शिक्षा ग्रहण करके विद्यालय या विश्वविद्यालय से निकलें तो एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक हों। प्रायः देखने व सुनने में यह आया है कि अमुक लड़का नपुंसक हो गया है या नामर्द हो गया और वैवाहिक जीवन जीने के योग्य नहीं रहा। **सावधान?** ऐसे लड़के छोटी आयु में कुसंग में पड़कर बुरी आदतों के शिकार हो जाते हैं। जैसे-गांजा, भांग, शराब, चरस, हशीश, अफीम/मैडिकल ड्रग्स आदि का अत्यधिक मात्रा में सेवन करना जिससे उनका पौरुष नष्ट हो जाता है। ये सब बुरी आदतें विद्यार्थी जीवन में यानि १३ वर्ष से लेकर २०-२२ वर्ष की आयु तक सीख लेता है केवल अज्ञानवश। फिर आयु भर पश्चाताप करता रहता है। फिर आयु अनुसार माता-पिता उसकी शादी कर देते हैं तो जो लड़का ब्रह्मचर्य आश्रम में नियमपूर्वक रहा और वीर्य रक्षण किया उसका वैवाहिक जीवन सुख शांतिपूर्वक व्यतीत होता है। लेकिन जो युवा अज्ञानता व कुसंगवश वीर्यरक्षा में असफल रहा उसका वैवाहिक जीवन भारी संकटमय और अशान्त होता है। पत्नी से वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद की नौबत भी आ जाती है और तलाक हो जाते हैं। फिर ब्रह्मचर्य तो गृहस्थ के लिए भी आवश्यक है। गृहस्थ का अर्थ तो इतना है कि पति-पत्नी अपनी इच्छानुसार संतान पैदा करें और समाज को चरित्रवान् युवक-युवतियां दें, ताकि देश सर्वदा स्वतन्त्र व शक्तिशाली बना रहे। लेकिन हमने तो गृहस्थ जीवन आश्रम में काम वासना को पुत्रोत्पत्ति निमित्त न मानकर काम को जीवन के आमोद-प्रमोद व भोग-विलास का साधन बना लिया है। पाश्चात्य संस्कृति के खुलेपन के कारण गंदे साहित्य, कामुक, सैक्सी फिल्में देखकर कामवासना का शिकार बनकर बहुमूल्य वीर्य क्षणिक स्वाद के लिये यूं ही नष्ट कर देते हैं और फिर पश्चाताप करते हैं और यह क्रम जीवन भर करते रहते हैं जिससे शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास रुक जाता है और अंत में सामान्य मनुष्यों की भान्ति संसार से विदा हो जाते हैं। **आग में जितना घी डालते रहोगे, उतनी अधिक वेग से जलेगी। काम कभी भी किसी सूरत में भी काम-वासना पूर्ति से शान्त नहीं हो सकता।** केवल समझकर व संयम से दूर या संतुष्ट किया जा सकता है। वैराग्य होने पर महाराज भर्तृहरि तो ललकार कर वैराग्य शतक-५८ में लिखते हैं कि मदमस्त हाथियों की कनपटियों को पकड़कर हिला देने में समर्थ अनेक सूरमा इस धरती पर मिल जायेंगे और कुछ साहसी वीर शेर-बाघों को मारने में समर्थ हैं और कुछ बहादुर हिमालय की चोटियों से छलांग लगाकर बच सकते हैं किन्तु मैं समस्त वीरों के सामने चुनौती के साथ कहता हूँ कि प्रबल कामदेव के पछाड़ने में कोई बिरले ही मनुष्य होंगे। **इस युग में महर्षि दयानन्द सरस्वती** जैसे।

**वीर्यरक्षा कैसे करें**-यानि ब्रह्मचारी कैसे रहें। वीर्यरक्षा करना सरल उपाय साधना, स्वाध्याय, सत्संग, ब्रह्मचर्य के विशेष लाभ वर्णित पुस्तकों का पढ़ना तथा रचनात्मक लेखन कार्य करना वा/ शारीरिक व्यायाम में अधिक आसन एवं प्राणायाम करना तथा संयमित आहार विहार करना। योगिराज श्रीकृष्ण जी लिखते हैं :-

**युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥**

अर्थात् जिसने अपने आहार-भोजन को सात्विक सुपाच्य बना लिया तथा व्यवहार यानि दूसरों के साथ बर्ताव लेन-देन में जो ईमानदार और सच्चा है तथा विहार यानि इधर-उधर फिजूल नहीं घूमता केवल विशेष कार्य से ही किसी के पास आना जाना रखता है। जिसका सोना व जागना अर्थपूर्ण और नियमित है वही व्यक्ति, युवा-युवती ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है। छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि-**आहारशुद्धौ, सत्वशुद्धि, सत्वशुद्धौ, ध्रुवा स्मृतिः। स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः॥**

अर्थात् आहार सात्विक होने से बुद्धि शुद्ध होती है और बुद्धि सात्विक होने से स्मृति ठीक ढंग से काम करती है और वीर्य रक्षण में पूर्ण सहायता मिलती है आम बोलचाल की भाषा में भी कहते हैं कि **जैसा खाए अन्न वैसा होवे मन और जैसा पीवे पाणी वैसी बोले वाणी।** महर्षि चरक ने भोजन के विषय में थोड़े शब्दों में अति सरल व संक्षिप्त मूलमंत्र दे दिया और लिखा कि वही व्यक्ति स्वस्थ और संयमी होगा जो हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक् होगा। हितभुक् व्यक्ति अपनी जीभ के स्वाद के लिए नहीं खाएगा। केवल अपने शरीर स्वास्थ्य के हितकारी भोजन करेगा। दूसरा मितभुक् यानि पेट को ठूंस-ठूंसकर नहीं भरेगा केवल सात्विक और स्वरुचिकर भोजन भूख से कम खाएगा। तीसरी बात ऋतभुक् अर्थात् सीजन अनुसार सब्जी सलाद व फलों का प्रयोग करेगा। ऐसा नहीं कि जैसा धनी लोग करते हैं बेमौसम सब्जी व फल महंगे भाव खरीदकर दिखावा करते हैं और खाकर बीमार रहते हैं क्योंकि प्रकृति नियम के विरुद्ध चलते हैं कोल्ड स्टोरेज में रखे फल-सब्जियों का बेमौसम प्रयोग करते हैं। हाँ, वीर्यरक्षा के उपायों में प्राणायाम भी आवश्यक है जैसे भस्त्रिका, कपाल भाति, अनुलोम-विलोम, ब्राह्म-कुम्भक, भ्रामरी, नाड़ीशोधन एवं प्रणव का जाप। लेकिन प्राणायाम को करते समय यह अवश्य देख लें कि पहले खाया भोजन पच गया है या सुबह पेट बिल्कुल साफ है तथा प्राणायाम किसी विशेषज्ञ की देखरेख में सीखना व करना चाहिए। क्योंकि प्राणायाम वीर्य की गति को ध्रुवा से ऊर्ध्वा यानि नीचे से ऊपर की ओर करता है जिससे मानसिक शक्ति, शारीरिक बल व आत्मिक शान्ति विशेष रूप से बढ़ती है और व्यक्ति, युवा-युवती का मुखमण्डल आभायुक्त होकर दूसरों पर प्रभाव छोड़ने वाला बन जाता है। इसलिए वीर्य रक्षण यानि ब्रह्मचर्य ही जीवन है तथा वीर्यनाश ही मृत्यु है।

# आर्य बनो बनाओ अभियान

मैं घोषणा और प्रतिज्ञा करता हूं कि अपना जीवन समाज और देश के प्रति निष्ठावान् होकर, मिथ्याचरण को त्यागकर सत्य आचरण करते हुये व्यतीत करूंगा। मैं समझता हूं कि अन्य सज्जन भी ऐसा घोषित करें। हम सब मिलकर मानवता के नाते जीवनोपयोगी सद्ज्ञान का प्रचार करेंगे। अपने दुर्व्यसनों को छोड़कर सन्मार्ग के पथिक बनेंगे। जब हम सच्चे आर्य बनेंगे तो हमारे बच्चे और अन्य साथी ही हमारा अनुकरण करेंगे।

इस अभियान में सर्वप्रथम हम अपना और अपने परिवार का खानपान सात्त्विक बनायेंगे। यदि किसी का खानपान दूषित है तो उसे समझकर अभक्ष्य पदार्थ खाने के लिए मना करेंगे। जब तक भोजन जलपान शुद्ध पवित्र नहीं होगा तब तक बुद्धि निर्मल नहीं हो सकती और मन-मस्तिष्क में विकार उत्पन्न होते रहेंगे।

जो व्यक्ति आर्यसमाज का प्रधान/मंत्री बनने का दम भरता है वह पहले दुर्व्यसनों को छोड़कर मनुष्य बनने का प्रयास करे। उसकी पत्नी बच्चे भी उसके अनुगामी होने चाहियें। यदि उसका परिवार उसके अनुकूल नहीं है अर्थात् उसका कहना नहीं मानते तो वह आर्यसमाज में पद प्राप्त करने की चेष्टा न करें। जिसका आहार-विहार और दिनचर्या अच्छा नहीं है उसे आर्यसमाज का सदस्य मत बनाओ।

हमने आर्यसमाज के अनेक अधिकारियों को देखा है जो यज्ञोपवीत पहनना एक आफत समझते हैं। सन्ध्या-हवन करने में लापरवाही करते हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दीभाषा लिखना-पढ़ना जानते हुए प्रतिदिन अंग्रेजी का अखबार खरीदते हैं। राष्ट्रभाषा की उपेक्षा करते हैं। ऐसे चतुर अधिकारियों को पद से हटाना उचित है। आर्यसमाज का अधिकारी यदि अन्य किसी संस्था में भी अधिकारी है तो वह अर्यसमाज का काम समय पर ठीक ढंग से नहीं करेगा।

**'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के प्रचार में बच्चों की उपेक्षा न करें। उनको अपने साथ सत्संग में लाना आवश्यक है। उनको घर पर नमस्ते आदि करने की शिक्षा माता-पिता देते रहें। उनको गायत्री मंत्र याद करायें। उन्हें बुरी संगत से बचायें। आज के बच्चे ही बड़े होकर समाज का कार्यभार संभालेंगे।

आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार परोपकार के कार्य करने की योजना बनानी चाहिये। लेकिन उल्टा हो रहा है, धन उपार्जन के साधन बनाये जा रहे हैं। दान संग्रह करने के बाद भी बिना शुल्क के कोई काम नहीं होता। गरीब जनता वहां जाती है, जहां निःशुल्क सहायता मिलती है। अतः असहाय निर्धन लोगों को अपना प्रेम-प्यार देकर कुछ काम करने की प्रेरणा देनी चाहिये। समाज में आने वाले को सहयोग दिया जाये।

बातें बहुत हैं परन्तु मैं लेख लंबा नहीं करना चाहता। प्राथमिकता के आधार पर यह एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। आशा है आप जहां भी हैं पूरा सहयोग करेंगे।

देवव्रत आर्यमित्र, आर्यसमाज हरिनगर, नई दिल्ली-६४

# अंजाम-ए-गुलिस्तां क्या होगा?

❑ प्राचार्य अभय आर्य, गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)

**भूमिका-** प्रभु ने जिस गुलिस्तां को छ: ऋतुओं से अनुप्राणित किया; मरुस्थल, पहाड़, सागर, नदियों तथा मैदानों द्वारा विधिवत्ता दी; दिव्य जड़ी-बूटियों व अन्न द्वारा सुवासित किया; ऋषि-मुनियों ने जिसे अनुप्रेरित किया; वीर क्षत्रियों ने देदीप्यमान किया और इस प्रकार जिस गुलिस्ताँ की कीर्ति सुगंध बनकर संपूर्ण धरा पर फैली थी आज उस गुलिस्तां की उजड़ती हुई अवस्था को देखकर उसके कुछ लाडले यह सोचकर सिसक उठते हैं कि-अंजाम-ए-गुलिस्ताँ क्या होगा? हर क्षेत्र में अपने इस गुलिस्ताँ की बर्बादी शोचनीय है। आओ अवलोकन करें।

**धार्मिक क्षेत्र में-**जिन नियमों को धारण करने से सर्वाङ्गीण उन्नति हो वही धर्म है। ये नियम सभी के लिये अविरुद्ध होते हैं। जैसे दूध पीना, चोरी न करना मेरे लिये हितकर है तो यह सभी के लिये हितकर है। अत: यह धर्म है। माँस खाना, चोरी करना मेरे लिये हानिकर है तो यह सभी के लिये हानिकर है। अत: यह अधर्म है। इस भारतवर्ष ने जिसका प्राचीन नाम आर्यावर्त्त था कभी ऐसे ही सर्वहितकारी वैदिक धर्म का संदेश दुनिया को दिया था। इस धर्म में सत्य का सार था, वैज्ञानिकता थी, राष्ट्रीयता की भावना के मूल में सर्वजनहिताय का संदेश था। 'महाभारत' तक यही दशा रही। लेकिन इसके बाद धर्म अनेक रूपों में बँट गया। अनेकता में एकता खोजने का विफल प्रयास होता रहा। धर्म के नाम पर कटड़ों, बकरों, मुर्गों आदि की बली दी जाती है। यह कहाँ का धर्म है? ईसाई व मुस्लिम धर्म को हमने अपनी कायरता और स्वार्थरूपी उदारता का परिचय दिया। हमने इस बात पर कभी विचार नहीं किया कि क्या ऐसा करना राष्ट्र व मानवता के हित में है या नहीं। क्या जैन, वैष्णव, शैव, ईसाई आदि मतों की मान्यताएं एक हैं? चाहे वे एक न हों, लेकिन हम भारतीयों ने उन्हें एक बनाकर धर्म को 'घालमेल' बना दिया। धर्म को हमने मार दिया। मारे हुए धर्म ने हमें मार दिया। जिस देश में बादल नियत समय पर बारिश करते थे उस देश में अतिवृष्टि या अनावृष्टि, जिस देश में सभी दीर्घायु होते थे वहाँ पिता से पहले पुत्र की अकाल मृत्यु व अनेक विधवा स्त्रियाँ, जिस देश में सब निरोगी थे वहाँ कैंसर जैसी भयंकर बीमारियाँ अनेक बच्चों का गर्भ में ही मरना और इसके अतिरिक्त चोरादि का भय सर्वत्र है।

**क्या करना चाहिए?-**मूर्त्तिपूजा के स्थान पर घर-घर में यज्ञ हों-इसके लिये विशेष पुरुषार्थ करना होगा। मूर्त्तिपूजा हमारे विघटन का प्रतीक है। यज्ञ ही हमें एकता के सूत्र में बांध सकता है। गुरुकुलों में सुव्यवस्था देनी होगी ताकि लोगों का रुख गुरुकुलों की ओर बन सके। अपनी स्वार्थसिद्धि व भोगसिद्धि या लोकैषणा की पूर्ति के लिये गुरुकुलों को आश्रय न बनाएं। गुरुकुलों के माध्यम से वैदिक धर्म का पुनरुत्थान हो सकता है। 'विश्व हिन्दू परिषद्' राष्ट्रहित की बात करता है। उसे चाहिए कि सभी कथावाचक पौराणिक गुरुओं को राष्ट्रहित का उपदेश देने को कहे। यह देखना चाहिए कि क्या कभी ये गुरु भगतसिंह, सुभाषचन्द्र बोस आदि देशभक्तों की बात करते हैं या नहीं? क्या ये राम, लक्ष्मण, हनुमान, श्रीकृष्ण के ब्रह्मचर्य व वीरता की भी बात करते हैं? या केवल अवतारवाद की बात करके ही संतुष्ट हो जाते हैं। जिस दिन ये गुरु राष्ट्रहित की बात करने लगें उसी दिन से धर्म का सच्चा स्वरूप प्रकाशित होकर राष्ट्र के हित के द्वार खुल जाएंगे। वर्ष में एक या अधिक बार विभिन्न मतों के प्रमुख गुरुओं की बैठक होनी चाहिए जिसमें धर्म के स्वरूप के चिंतन के साथ ही देश की स्थिति पर भी विचार-मंथन होना चाहिए।

**राजनैतिक क्षेत्र में ह्रास-**वोट के लिए राष्ट्रहित को दाव पर लगाने की जो राजनीति भारत में है, वह अन्यत्र नहीं मिलेगी। मनु महाराज ने राजनेताओं के जो गुण दिए है, अगर उनके आधार आज के राजनेताओं का मूल्यांकन करोगे तो ढूंढते रह जाओगे। हमारे राष्ट्र की राजनैतिक पार्टियों ने वर्गभेद जातिभेद का भयंकर विद्वेष जनमानस में भर दिया है। आज के स्वतन्त्र भारत में हर रोज अखबारों में पढ़ते हैं कि फलाँ अलगाववादी नेता ने कहा, आदि। बड़ी विचित्र बात है कि अलगाववादी शब्द भी इनके साथ जुड़ा हुआ है और ये देश में स्वतन्त्र घूम रहे हैं। इधर अपने अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण माँग उठाने वाले हिन्दुओं को गोलियों से भून दिया जाता है। अपने राज, अपने राष्ट्र में अपने लोगों से ऐसा सौतेला व्यवहार क्यों? इसी तरह आरक्षण गरीबी के आधार पर होना चाहिए न कि जन्मगत जाति के आधार पर। कोई बड़ा बदमाश तो नेता बन जाता है और इधर कोई बेकसूर गरीब कानून के शिकंजे में बुरी तरह से कसा जाता है। पंचायतों की दयनीय दशा है। गाँव में जो घटना घटी उसका गाँव की पंचायत को तो पता हो सकता है लेकिन कोसों दूर न्यायालय में उसका क्या पता? पंच आदि की गवाही पर फैसले होते थे। अब तो कोई भी नकली गवाह बना सकते हैं। अदालती शैली ज्यादातर अंग्रेजी राज्य के समानान्तर ही चल रही है। विभिन्न राजनैतिक पार्टियों का एक ही मुख्य लक्ष्य रह गया है-आपस में आरोप-प्रत्यारोप लगाना तथा किसी भी विधि से वोट बटोरना। उनकी नजर व्यक्ति पर नहीं अपितु वोट पर है। उनका उद्देश्य भारत माँ का धन लूटना है, उसकी सेवा करना नहीं। और परिणाम यह है कि राजस्थान जैसे प्रान्त जिन्हें कभी अपनी आन-बान-शान पर गर्व था आज आजाद भारत में उनके ग्रामीण क्षेत्र उजड़े पड़े हैं। भारत के अनेक प्रान्तों में फैली गरीबी, अराजकता, अलगाववाद इसी भौंडी राजनीति का परिणाम है।

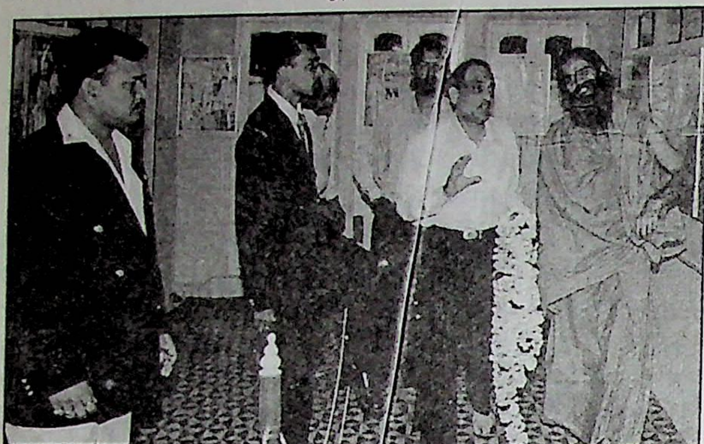
**क्या करना चाहिए?-**धार्मिक गुरुओं को गाँव-गाँव घूमकर लोगों को जागरूक करना चाहिए। ऐसे गांव तैयार किए जाएं जहाँ लोग स्वार्थी नेताओं का गाँव में प्रवेश निषेध कर देवें। उन्हीं नेताओं को गाँव में घुसने दिया जाए जो देश सेवा का व्रत लें, जो अत्यन्त सादगी व ईमानदारी से जीवन यापन का व्रत लें या फिर चुनाव से पहले अलग-अलग चुनावी क्षेत्रों से जुड़े गाँव की पंचायतों की बैठक धार्मिक गुरुओं द्वारा बुलाई जाए। वे पंचायत ही अपने क्षेत्र से सबसे सदाचारी, गुणों के आधार पर प्रशंसित सबसे योग्य व्यक्ति को उम्मीदवार बनाएं। वही व्यक्ति एम.एल.ए. या एम.पी. बने। यह बात सर्वथा सम्भव है। यदि ऐसा हो तो निश्चित तौर पर हमारी मातृभूमि फिर से स्वर्ग बने।

**सामाजिक क्षेत्र में ह्रास-** हमारे देश का समाज आज महादु:खों में व्याप्त है। लेकिन इतनी घोर अज्ञानता है कि उसे ये दु:ख दिखाई नहीं दे रहे। व्यक्ति ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, लोभ-लालच, स्वार्थ व अज्ञान से भरा पड़ा है। परिवारों की दयनीय दशा है। भाई-भाई, सास-बहु, पिता-पुत्र का झगड़ा लगभग हर परिवार में व्याप्त है। बुजुर्गों में धर्म नहीं है, युवाओं में संयम नहीं है, युवतियों में शालीनता नहीं है, बालकों में निर्दोषता नहीं है। दुर्जन व्यक्ति सज्जनों पर हावी हैं। शराब के ठेकों, सिनेमा घरों में भीड़ लगी है। धर्म की बात सुनने के लिये कोई तैयार नहीं है। गाँव में बुजुर्ग सारा का सारा दिन ताश खेलकर व हुक्का पीकर व्यतीत करते हैं। उन्हें देश-धर्म से कुछ लेना-देना नहीं। परिणाम यह है कि माताएं व बहनें बुरी तरह से ढोंगी गुरुओं के जाल में फँस चुकी हैं। कहते हैं कि पहले यदि गाँव में किसी के घर ढोंगी बाबा या गुरु आ जाता था तो घर का बुजुर्ग उसे लताड़ कर भगा देता था क्योंकि गाँव-गाँव में आर्यसमाज का प्रचार था। लेकिन आज के बुजुर्ग को इससे कुछ लेना-देना नहीं। वह हुक्के व ताश में मग्न है। यदि औरतों में दोष आया है तो वह मर्दों की धर्मविमुखता के कारण आया है। ऋषि दयानन्द का मानना है कि जब पुरुष उत्तम होते हैं तो स्त्रियाँ उत्तम होती हैं। विद्यालय के बालक आज अश्लील फिल्म बनाते पकड़े जाते हैं, इससे बड़ा देश के समाज का और क्या ह्रास होगा?

**क्या करना चाहिए-**इस सामाजिक विकृति को दूर करने के लिये आवश्यक है कि पहले आर्यसमाजी ही मिल बैठकर चिंतन करें। व्यर्थ के विवादों को मिटाएं। जब हमारे विद्वानों में गुटबंदी हो जाती है तो उनसे जुड़े कार्यकर्त्ताओं के भी गुट बन जाते हैं। यह स्थिति बड़ी भयंकर है। 'मंच' के अतिरिक्त घर में, समाज में, मन में भी आर्य बनकर जीवन व्यापन करें। मूर्त्तिपूजा, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, भ्रष्ट नेताओं, उग्रवाद, अलगाववाद के विरुद्ध सिंहनाद करें। आचार्य चाणक्य ने जिस प्रकार राष्ट्र की रक्षा की थी, आज उसी क्रान्ति की आवश्यकता है। हमारे उपदेशकों को आज विश्वामित्र व कृष्ण की तरह क्षत्रियों को क्रान्तिकारी विचारों द्वारा उद्वेलित करना होगा।

**उपसंहार (उत्तरदायित्व किस पर है?)** इस सारी कुव्यवस्था को बदलने का उत्तरदायित्व किस पर है? इस प्रश्न का मात्र एक ही उत्तर है-धार्मिक नेताओं पर। लेकिन हम में से अधिकतर भयंकर ऐषणाओं व ईर्ष्या-द्वेष में उलझे हुए हैं। एक-दूसरे के यश को देखकर डाह का काँटा हमारे हृदय में गड़ जाता है। हम विद्वान् तो हैं लेकिन क्या हम धर्मात्मा भी हैं? यह विषय चिन्तनीय है। नि:स्वार्थ भावना से परोपकार करने वाले भी हैं, लेकिन उनकी संख्या अत्यल्प है। कार्य महान् है। एकता की आवश्यकता है। केवल वाणी से ही नहीं अपितु हृदय से कार्य करने की आवश्यकता है। स्वार्थ और कुटिलता द्वारा यश की सिद्धि का नहीं अपितु परोपकार द्वारा यश की स्वत: सिद्धि का समय है। आओ संगठित हो जाएँ। इस गुलिस्ताँ को बचा लो!

# मैं जो कुछ भी हूं स्वामी दयानन्द सरस्वती और सत्यार्थप्रकाश की देन हूं -योगाचार्य स्वामी रामदेव



उक्त भावभरी अभिव्यक्ति पूज्य स्वामी रामदेव जी ने सैकड़ों योगप्रेमी नर-नारियों के समक्ष तब प्रस्तुत की जब वे उदयपुर के महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के फलस्वरूप उन्हें दिए गए अलंकरण को ग्रहण करने के संदर्भ में उदयपुर पधारे थे। न्यास के आमन्त्रण पर ७ मार्च २००५ को ऋषि कर्मस्थली पर पधारे थे। अपने पूरे सम्बोधन में स्वामी रामदेव जी महर्षि दयानन्द जी महाराज के प्रति श्रद्धा से ओतप्रोत दिखे। उन्होंने अपने जीवन के निर्माण के संदर्भ में पूज्य स्वामी बलदेव जी (सद्यः प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा-हरयाणा), महर्षि दयानन्द एवं सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव को निरूपित किया।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास उदयपुर द्वारा जिस प्रकार सत्यार्थप्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ की रचनास्थली को भव्य स्मारक का रूप प्रदान किया गया है, उसकी, यहां की सुन्दर ऋषि चित्रदीर्घा की स्वामी जी ने प्रशंसा की तथा न्यास के सभी प्रकल्पों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर न्यास के पदाधिकारीगण द्वारा शाल तथा श्रीफल भेंट कर स्वामी जी का सम्मान किया गया। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा न्यास के सभी प्रकाशन स्वामी जी को भेंट किये गये। ज्ञातव्य है कि न्यास द्वारा २ जनवरी २००५ से निरन्तर प्रातः सायं योग कक्षाएं लगायी जा रही हैं जिनको नगरवासियों का अभूतपूर्व स्नेह प्राप्त हो रहा है।

**-अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, चलभाष-९४१४१६२४०१**

## भजन (पाखण्ड-खण्डन)

तर्ज-मैं बहुत घणी पछताई हे सखी, इन पाखण्डियों की मान कै।
गुरनामा लेण मत जाइए हे सखी, उस पाखण्डी के डेरे म्है॥

१. वो धर्म की नाव डुबो रह्या सै, और बीज पाप के बो रह्या सै।
शुभकर्मों की फूंके होली हे सखी, उसनै लादई आग चौफेरे म्है॥

२. ढंग बदल सपेरा आ रह्या सै, गुरनामे की बीन बजा रह्या सै।
मत सुणिए उसका लहरा हे सखी, लुट ज्यागी कालर कोरे म्है॥

३. सतलोक के सपने दिखावैगा, मिथ्या बातां म्हैं भरमावैगा।
सूरज तै बैर लगाया हे सखी, राखैगा घोर अन्धेरे म्है॥

४. मैंने पाया गुरनामे म्है सार नहीं, यह सत्पुरुषों की कार नहीं।
तू देखकै कदम बढ़ाइए हे सखी, ना गिर जावेगी झेरे म्है॥

५. आर्य मुंह मोड़ेंगे पाखण्डी का, खोलेंगे भेद पाखण्डी का।
भीष्म का करै बचाव हे सखी, जो आगया इसके घेरे म्है॥

६. मैं तो हो गई बिल्कुल स्याणी हे, सुणी **महेन्द्र आर्य** की वाणी है।
उसके पावन वेद विचार हे सखी, सुण भ्रम रह्या ना मन मेरे म्है॥

## शोक संदेश

### वैद्य श्री छाजूराम शर्मा शास्त्री नहीं रहे

आर्य विद्वान्, पुरोहित, प्रवचनकर्ता, पंजाब-हरयाणा-उत्तर प्रदेश-महाराष्ट्र की समाजों में पुरोहित के रूप में कुशल कार्यकर्ता, कवि, संगीतज्ञ और कविराज श्री छाजूराम शर्मा शास्त्री का आकस्मिक निधन सड़क दुर्घटना में बुधवार दिनांक २३-२-०५ लगभग ८२ वर्ष की आयु में हो गया। रस्म पगड़ी सोमवार दिनांक ७-०३-०५ को १२६ डी०डी०ए० जनता फ्लैट बदरपुर नई देहली ११००४० को हुई। वह सच्चे अर्थ में आर्यपुरोहित, सर्वप्रिय अधिकारपूर्वक वेदों पर प्रवचन देते ८२ वर्ष की आयु में भी बतौर वैद्य आयुर्वेदिक औषधालय महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास जिला बुलन्दशहर यू०पी० में कार्य करते थे। उन्होंने लगभग ५० पुस्तकें लिखीं और उनके सैकड़ों लिखे लेख भारत के सभी आर्यपत्रों में छपे। उनके निधन से आर्यसमाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। उनकी आत्मा की सद्गति व शोक संताप परिजनों को धैर्य व साहस दिलाने हेतु परमपिता से बारम्बार प्रार्थना है।

-बालकृष्ण मक्कड़

## सन् को छोड़ो सम्वत् पकड़ो, जो सबका आधार है

आज क्यों भूल गये।

१. नये साल में नई मुबारक देते हैं सारे भाई।
अंग्रेजी के नये साल में नई चीज कुछ ना पाई।
हैप्पी कार्ड बांट रहे हैं भारत के नर-नार, आज क्यों....।

२. गिनती में भी गडबड़ है नौ को ग्यारह कहते हैं।
दस से बना दिसम्बर उसको क्यों ये बारह कहते हैं।
इतनी गलती होने पर भी क्यों हम करते प्यार, आज क्यों....।

३. सात से बना सितम्बर उसको नौंवा मास बताते हैं।
आठ से अक्तूबर बनता दशमा कह गलती खाते हैं।
आंख मींचकर मान रही है भारत की सरकार, आज क्यों....।

४. सुनो खाशियत सम्वत् की ना कोई गलती भूल मिले।
नये साल के तिथि महीने, मौसम के अनुकूल मिले।
फसल पकी जब चैत मास में खुश होंगे जमींदार, आज क्यों....।

५. ऋतु बदलती मौसम आते, कैसी अदा निराली है।
चैत्र मास जब आता है, चारों ओर हरियाली है।
पेड़ और पौधे मस्त हुए जब आई नई बहार, आज क्यों....।

६. तिथि के ऊपर चन्द्रमा घटता बढ़ता चलता है।
पूर्णिमा को सागर भी उछल किनारे मिलता है।
तारीख से ना लेना देना, देखो करो विचार, आज क्यों....।

७. नई उमंग और नई खुशी में झूम रहे सब नर-नारी।
खून बदलता चैत्र मास में मान रही दुनिया सारी।
बूढ़ी औरत मस्त हुई जब फाल्गुन हुआ सवार, आज क्यों....।

८. कर्जा लेना देना है जितने बही और खाते हैं।
आँक उतारे जाते हैं और खाते बदले जाते हैं।
सारा काम चले तिथियों से नकदी और उधार, आज क्यों....।

९. भारत वालो भारतीय सम्वत् को तुम अपनाओ।
**रामरख** कहता गैरों के पीछे-पीछे मत जाओ।
तिथियों में हैं सोम और मंगल, बृहस्पति, शुक्रवार, आज क्यों....।

**-रामरख आर्य भजनोपदेशक,** गांव गुजरानी, जिला भिवानी (हरयाणा)

## मंगलकारी हो नव वर्ष

❑ **राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति,** मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उत्तरप्रदेश)

स्वर्णिम आशाओं की कलिका,
खिले धरा के शुभ प्रांगण में।
नव आह्लाद भरे वसुधा के,
आंचल में व कण-कण में।
पुनः मनुजता के तत्त्वों का-
सुन्दर-शिव-सत् हो उत्कर्ष।
मंगलकारी हो नव वर्ष॥

विकसित हो देवत्व धरा पर,
असुर वृत्तियों का हो नाश।
नव उत्साह तथा नव चेतन,
का फिर जगे यहां मधुमास।
विस्तृत हो फिर आर्य मनीषा
यही हमारा नव निष्कर्ष।
मंगलकारी हो नव वर्ष॥

विश्व पटल का नष्टप्राय हो,
आतंकी घनघोर कुहासा।
शांति सुखों की, समरसता की,
पूरी हो जन-जन अभिलाषा।
दानवता हो जाय पराजित
बढ़े असीमित हर्ष, सहर्ष।
मंगलकारी हो नव वर्ष॥

अनाचार का, कदाचार का,
हो निश्चित सम्पूर्ण समापन।
स्वार्थ हितों को त्याग सभी हम,
अपनाएं मिलकर अपनापन।
शक्तिपुञ्ज बन उभरे भू पर
दिव्य हमारा भारत वर्ष।
मंगलकारी हो नव वर्ष॥

## अशुद्धि संशोधन

७ मार्च, सन् २००५ के सर्वहितकारी साप्ताहिक में **''आज का भारत और महर्षि दयानन्द सरस्वती''** नामक लेख में महर्षि दयानन्द की जन्मतिथि भूल से २९-२-१८२४ छपी है, जबकि महर्षि की जन्म तारीख १२ फरवरी १८२४ है। अब तक के महर्षि के जीवन चरितों में १२ फरवरी १८२४ मानी है। यही जन्मतिथि पं० लेखराम जी द्वारा खोजकर महर्षि दयानन्द के जीवन चरित में लिखी है। इसे पाठक ठीक करके पढ़ें।

-सम्पादक

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१. आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत (देवी मेले के उपलक्ष्य में वेदप्रचार) — १६-१७ अप्रैल ०५
२. आर्यसमाज सेक्टर-९-९ए-७ एक्स गुड़गांव सत्संग स्थल-सब्जीमंडी सेक्टर-७ एक्स गुड़गांव — १८ से २४ अप्रैल ०५
३. आर्यसमाज उलेटा (नगीना) जिला गुड़गांव — २९ अप्रैल से १ मई ०५
४. आर्यसमाज रादौर जिला यमुनानगर — २७ से २९ मई ०५

—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

# सतलोक आश्रम करौंथा ( रोहतक ) के खण्डन के विरुद्ध स्पष्टीकरण

सेवा में,
रामपालदास जी !
सतलोक आश्रम, गांव करौंथा (रोहतक)
सादर नमस्ते।

दैनिक भास्कर (पानीपत) दिनांक ०१/३/२००५ में आप द्वारा सत्यार्थप्रकाश एवं आर्यसमाज की खामियों से सम्बन्धित विज्ञापन में आपने जो भ्रामक और द्वेषपूर्ण बातें कहकर सत्य का खण्डन किया है और अपने आपको ईश्वरतुल्य सिद्ध करने का प्रयास किया है वह केवल भोले, अज्ञानी और अन्धे भक्तों को वास्तविक वैदिक ज्ञान से अलग रखकर भ्रम में डालने का प्रयोजन है। मैंने आपके व्याख्यान तीन बार सुने हैं। आप उनमें असम्भव और भ्रामक कहानियां सुनाकर अपने भक्तों से 'सत्य वचन महाराज' के रूप में स्वीकार करवाते हो। मानवरचित सबसे शक्तिशाली ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज की आलोचना करके आपका प्रयोजन अपने मत का प्रचार करने के अतिरिक्त प्रसिद्धि पाकर राजनेता बनने या अन्य मतावलम्बियों की तरह अरबपति बनने के सिवाय कुछ नहीं हो सकता।

आप जरा विचार करें कि मिथ्याज्ञान के प्रचार द्वारा आप धर्म के नाम पर अपने और अपने असंख्य भक्तों के जीवन को मिट्टी में मिला रहे हो ऐसा करके आप इस जीवन में भौतिक सुख तो भोग सकते हो लेकिन आप ईश्वर की न्यायव्यवस्था से नहीं बच सकते और अन्ततः आपको समाज के प्रति इस गम्भीर अपराध का दण्ड ईश्वर अवश्य देगा।

आप या आपके भक्तों द्वारा उपरोक्त विज्ञापन में छपी बातों का खण्डन निम्न प्रकार से है। आप इससे लाभ उठाकर अपना व समाज का कल्याण करने की कृपा करें ताकि आपका समाज हित में धर्मप्रचार निमित्त घर छोड़ना सार्थक हो सके।

१. आरम्भ में जयवीरसिंह मलिक ने एक शम्भुदयाल शास्त्री के माध्यम से सत्यार्थप्रकाश में विरोधाभास जैसे आ से आम और भा से भालू होना लिखा है उसका समुल्लास या पृष्ठ सम्बन्धी कोई विवरण नहीं है कि अमुक स्थान पर ऐसा लिखा है। यह आम लोगों को मूर्ख बनाने का प्रयास है।

२. तत्त्वज्ञान मात्र अक्षरज्ञान नहीं है। यह भी एक भ्रामक वाक्य आपने लिखा है। सत्यार्थप्रकाश या वैदिक साहित्य में कहीं नहीं लिखा कि तत्त्वज्ञान को आप जीवन में उपयोगी न बनाकर अक्षरज्ञान तक सीमित रखो। वैदिक ग्रन्थों में तो हर बात, हर ज्ञान को तभी सार्थक माना जाता है जब उसको अपने जीवन व समाज के हित में प्रयोग किया जाए। ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि **''केवल भाण्ड के समान पढ़ते जाने का कोई लाभ नहीं होता।''** अतः आप लोगों को तत्त्व का कोई ज्ञान ही नहीं है।

३. श्री रामपालदास जो कि मनगढंत कहानियों का उपदेश ही अपने प्रचार में करते हों जैसे गरीबदास महाराज ने कटे सिर को जोड़कर चरवाहे भक्त को जीवित कर दिया, बिना ब्याई गऊ ने दूध दे दिया। आपके वेदभाष्य की ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य के साथ तुलना करके उस महान् तपस्वी ऋषि से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करना एक गम्भीर सामाजिक अपराध है। आपने कविर्देव शब्द का असंगत अर्थ करके इससे कबीर होना सिद्ध किया है मुझे नहीं पता कि उक्त शब्द का वेदों में कहां वर्णन है लेकिन वेदों में किसी नाम, स्थान या इतिहास का कोई वर्णन नहीं है अतः यह भी आपका असंगत अर्थ सिद्ध हुआ।

४. आप मिथ्या आरोपियों द्वारा योगसाधना से रोग न कटने की बात कह रहे हैं। योगसाधना से आत्मिक शान्ति तो अभ्यास करते हुए मिल ही जाती है जिससे ईश्वर की कृपा से शरीर व आत्मा में जीवनी शक्ति की वृद्धि होती है और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। योगसाधना से केवल प्रथम चार अंगों, यम, नियम, आसन, प्राणायाम द्वारा ही शरीर स्वस्थ व निरोग होने लगता है। यह बात शारीरिक विज्ञान के नियम पर आधारित है न कि मनगढ़त और आप इससे कैसे मना कर सकते हो। हाँ हो सकता है आप द्वारा बताई गई योगसाधना से रोग कटने के स्थान पर बढ़ते ही होंगे। आपने इस सम्बन्ध में मिथ्या आरोपियों का कोई विवरण नहीं दिया ताकि पता चल सके कि मिथ्या आरोपी कोई और है या आप स्वयं ही हैं।

५. उपरोक्त रोग कटने के सम्बन्ध में आपकी कृपा व सिर पर हाथ रखने से ही किन्हीं डा० हुड्डा साहब के रोग कटने (पत्नी सहित) के वर्णन से ज्ञात होता है कि आप तो ईश्वर से भी श्रेष्ठ हैं क्योंकि ईश्वर तो नियमपूर्वक शारीरिक अभ्यास और योगसाधना करने वाले के ही रोग दूर करता है और उसके सदैव हमारे साथ रहते हुए भी बिना प्रयत्न के रोग दूर नहीं होते और आपके तो मात्र साथ रहने व सिर पर हाथ रखने से ही रोग दूर हो जाते हैं। आप क्यों नहीं गम्भीर रोगों से पीड़ित कराह रहे दयनीय अवस्था को प्राप्त लोगों के पास जाकर उनके रोग दूर करते। जब आपके पास ऐसी शक्ति है और आप इसका उपयोग दीन दुःखियों व पीड़ितों के लिए न करके केवल अपने सामने नतमस्तक होने वाले चापलूसी लोगों के लिए ही करते हो तो आप एक भयंकर सामाजिक अपराधी हैं और ईश्वर आपको इसका कठोर दण्ड देगा।

६. विज्ञापन में लिखा है हुड्डा व मलिक गोत्र के असंख्य परिवार आपके अन्धे भक्त हैं जो कि एक झूठ ही है। आपने अपनी लच्छेदार व भ्रामक बातों द्वारा थोड़े से जाट परिवारों को जरूर बहका रखा है लेकिन ये आर्यवीर जाट परिवार आपके बंधक नहीं हैं जिनकी संख्या बढ़ाचढ़ाकर बताकर आप झूठ बोल रहे हो। असत्य का पर्दाफाश होने पर ये आर्य आपको यहां से खदेड़ने में देर नहीं लगाऐंगे क्योंकि ये जाट लोग आर्यों के सच्चे प्रतिनिधि हैं।

७. एक आर्य जाट परिवार से राजवीरसिंह मलिक द्वारा गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करके भी आपके मत में विश्वास रखना बताता है कि इन आर्य जी की तार्किक बौद्धिक शक्ति इस प्रकार क्षीण हो गई है जैसे कोई पहलवान सक्षम होते हुए भी बिना प्रयत्न किये किसी कमजोर व्यक्ति द्वारा परास्त कर दिया जाता है।

८. सूर्य पर मनुष्य व अन्य प्राणी होने के वर्णन से अर्थ है कि अन्य ग्रहों पर भी जीवन है। इसका अर्थ यह नहीं कि ऋषि दयानन्द सूर्य के बीच में जीवन मानते थे। क्या ऐसे महान् ऋषि से ऐसी असत्य बातों की स्थापना करने की आशा की जा सकती है।

**ऋषि जी सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं कि मेरा मत चलाने का लेशमात्र भी प्रयोजन नहीं है किन्तु सत्य का ग्रहण कराना व असत्य को छुड़वाना ही इस ग्रन्थ का प्रयोजन है ( फिर भी किसी बात पर संदेह हो तो आर्य लोग तर्क वितर्क द्वारा सत्य की स्थापन कर लें )।** ऋषि जी परम तपस्वी होते हुए भी आपकी तरह भक्तों को अन्धे बनाकर 'सत्य वचन महाराज' का पालन नहीं करवाना चाहते थे।

९. आर्यों के बच्चे व्यसनी और बिगड़ैल होने की बात सभी आर्यों पर लागू नहीं होती। सबके बच्चे ऐसे नहीं हैं लेकिन वैदिक सिद्धान्तों पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है यह रामपालदास जी द्वारा हाथ रखने या नाम दान देने के समान आसान नहीं है। फिर भी कई लोग इन पर स्वयं चलने की कोशिश करते हुए असफल हो जाते हैं। कुछ के बच्चे इस रास्ते का अनुकरण करते हैं कुछ के नहीं करते लेकिन इससे वैदिक ज्ञान तो असत्य नहीं हो जाता। सिद्धान्त तो सत्य ही रहेंगे जो इसका पालन करेगा उसी का उद्धार होगा। केवल अपने नाम के साथ आर्य लिखने या आर्य संस्था का सदस्य बनने मात्र से नहीं।

१०. ईश्वर निराकार व सर्वशक्तिमान् है। ईश्वर में महान् गुण आनन्द, ज्ञान, बल आदि हैं ईश्वरोपासना के समय उपासक को इन गुणों का ईश्वर की कृपा से आभास होता है उसको आत्मा में ज्ञान का प्रकाश व आनन्द का अनुभव होता है व शारीरिक व मानसिक बल की वृद्धि होती है। अतः ईश्वर के गुणों का आभास होना व उनकी प्राप्ति होना ही ईश्वर साक्षात्कार है। ईश्वर से आमने सामने बात होना नहीं। इससे अनेक ईश्वर का भी खण्डन होता है। इन गुणों की वृद्धि होने पर मनुष्य के काम, क्रोध, लोभ आदि पाप नष्ट हो जाते हैं व आगे इनसे बचा रहता है लेकिन जो पाप पहले किए जा चुके हैं, उनसे कैसे बचा जाएगा।

११. विवाह के समय लड़के लड़की का रोगमुक्त होना व शुभ नाम वाले होना ऋषि जी ने लिखा है लेकिन आप कहते हैं कि विवाह के बाद रोग हो जाए तो वे सम्बन्ध विच्छेद कर लें। ऋषि जी ने ऐसा कहीं नहीं लिखा कि विवाह उपरान्त रोगी होने पर सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए यह तो आपने आम लोगों को मूर्ख बनाने हेतु अपनी तरफ से लिख दिया है। विवाह समय रोग न होने का यही कारण है कि पत्नी, पति स्वस्थ हों जिससे सन्तान भी स्वस्थ व बुद्धिमान् हो। शुभ नाम होने का प्रयोजन यह है कि हमें अपने संतानों के सार्थक नाम रखने चाहिएं जिससे उनको अपने नाम के गुण से जीवन भर प्रेरणा मिलती रहे व गर्व महसूस करें।

१२. आगे मलिक जी द्वारा श्री रामपाल दास जी को जगत्गुरु कहने का वर्णन है व मलिक गोत्र के परिवारों का उनके शिष्य होने की बात कही है। उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यानपूर्वक पढ़कर व गहन विचार करके सिद्ध हो जाता है कि रामपालदास जी कैसे जगत्गुरु हैं व कितने आर्य जाट परिवार उनके शिष्य हैं।

उपरोक्त बातों पर विचार करने पर ज्ञात होता है रामपालदास जी आप सतलोक नहीं झूठलोक आश्रम चला रहे हैं। यदि आप अपने जीवन को समाज के लिए धर्म का मार्ग दिखाने में वास्तव में लगाना चाहते हैं तो अपना दुराग्रह छोड़कर अब भी वैदिक धर्म के रास्ते पर चल पड़ना जिससे आपको समाज के प्रति अपराध से छुटकारा मिल सके।

**-चौ० अशोककुमार आर्य, खरखौदा**
**( सोनीपत ) हरयाणा**

# महिला मण्डल का वैदिक सत्संग ही महिलाओं में जागृति ला सकता है

आज अन्धविश्वास और पाखण्डवाद ने चारों तरफ तबाह मचा रखा है। गुरु के बिना मुक्ति नहीं इस भय ने हर घर में हर सदस्य को ग्रस्त कर रखा है। हर महिला इनमें इतना विश्वास रखती है चाहे पारिवारिक जीवन में कितना ही बाधा पड़े मगर गुरु के बिना इनका काम नहीं चलता। गुरुओं के आश्रमों में इनको इतना पक्का बना दिया जाता है कि अपन वचन से टस से मस नहीं होती चाहे परिवार का मुखिया कितना ही समझा ले। ऐसा ही चलता रहा तो आश्रमों और डेरों में महिलाएं रिजर्व हो जाएंगी जिसका भविष्य में घोर परिणाम निकलेगा। गुरुओं के माध्यम से विदेशी चाल हमारी संस्कृति और धर्म पर कुठाराघात करेगी। इसलिए डेरों में बैठे गुरुओं का कोई भरोसा नहीं। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के हर जिले के प्रचार मण्डल के प्रधान को सम्बोधित व अपना सुझाव देना चाहती हूं कि हर जिले में ज्यादा से ज्यादा अनुभवी महिला मण्डल का गठन किया जाए जो हर गांव में जाकर वैदिक सत्संग करके मधुर भजनों के माध्यम से व वक्तव्य के माध्यम से महिलाओं पर अपनी छाप छोड़े। महिला ही महिलाओं को समझा सकती हैं। जब महिलाएं संभल जायेंगी तो डेरों की जड़ें अपने आप हिल जायेंगी। इसलिए महिलाओं में प्रचार होना अति आवश्यक है। अक्तूबर मास में पूरे हरयाणा का महिला सम्मेलन होगा जिसकी निश्चित तिथि बाद में तय की जाएगी।

**-बहन सुमित्रा वर्मा ( प्रचारमंत्री, हरयाणा )**

## स्वामी ओमानन्द जन्मदिवस

स्वर्गीय श्री स्वामी ओमानन्द का ९५वां जन्मदिवस ३ अप्रैल ०५ को नरेला आर्यसमाज के सदस्यों तथा अनेक नागरिकों द्वारा मनाया गया। ९ बजे तक हवन यज्ञ तथा समाजसुधार सम्मेलन का आयोजन किया गया। समाजसुधार के सम्बन्ध में अनेक वक्ताओं ने विचार प्रस्तुत किए। कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने विशेषरूप से भाग लिया। स्वामी जी के जीवन पर अनेक घटनाएं प्रस्तुत की गईं।

इस अवसर पर श्री सुखदेव शास्त्री तथा श्रीमती अनीता नगर निगमाध्यक्ष को सम्मानित किया गया। **-पूर्णसिंह आर्य, महामंत्री आर्यसमाज नरेला, दिल्ली**

## आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया की आचार्या सुशीला का निधन

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया की आचार्या श्रीमती सुशीला का देहावसान शनिवार दिनांक २.४.२००५ को प्रातः १० बजे गुरुकुल दाधिया स्थित उनके निवास पर होगया। उनकी अन्त्येष्टि उसी दिन वैदिक रीति से सायं ४ बजे गुरुकुल के प्रांगण में सम्पन्न हुई। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

**-रामनाथ सहगल, मंत्री**

# आर्यसमाज स्थापना पर वेद सन्देश

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

आर्यसमाज की स्थापना ऐसे सर्वव्यापक और सर्वहितैषी नियमों पर हुई थी कि संसार के सब राष्ट्रों और जातियों के निवासी उन पर चलकर सर्वदा अपनी उन्नति कर सकते हैं। आर्यसमाज का संगठन भी दीर्घदर्शितापूर्वक ऐसी प्रजासत्तात्मक परिपाटी पर किया गया है कि उससे प्रत्येक राष्ट्र में सब प्रकार की शासन प्रणालियों में सर्वोत्तम और सर्वसुखदायक प्रजासत्तात्मक शासन का विकास और अभ्यास पूर्णरूप से हो सकता है। आर्यसमाज के संगठन में उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने लिये कोई विशेष स्थान वा पद नहीं रखा था। वे अपने आपको भी आर्यसमाज का एक साधारण सदस्य मानते थे। एक बार लाहौर आर्यसमाज ने जब उनसे एक अधिवेशन का प्रधान पद स्वीकार करने की प्रार्थना की थी तो उन्होंने उत्तर दिया था कि आपके समाज का प्रधान विद्यमान ही है वही आपना कर्त्तव्य पालन करे, एक साधारण सदस्य के रूप में मैं भी आपके कार्य में योग दे सकता हूँ। आर्यसमाज ने भारत के अन्य सम्प्रदायों और मतों को भी संगठित होकर काम करने की रीति सिखलाई है और यहाँ के कई सम्प्रदाय संगठन सब आर्यसमाज से भी आगे जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द के कई लेखों के देखने से ज्ञात होता है कि उन्होंने आर्यसमाज से संसार के उपकार और देश-देशान्तरों में वैदिक धर्म के प्रचार की बड़ी-बड़ी आशायें बांधी थीं। उन्होंने अपनी कोई गद्दी आदि न बनाकर आर्यसमाज को ही अपना उत्तराधिकारी माना था और उनके उद्देश्य के साफल्य की सारी आशायें आर्यसमाज में ही केन्द्रित थीं। महर्षि के स्वनामधन्य सच्चे अनुयायी इन आशाओं की पूर्ति के लिये प्राणपण से पूरा यत्न कर रहे हैं।

कविशिरोमणि पं० नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने आर्यसमाज के दस नियमों को कविता में प्रस्तुत किया है। वह इस प्रकार है :-

१. सकल सत्य विद्या, विद्या से जो कुछ जाना जाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है। टेक।
२. सर्व-शक्ति-सम्पन्न-विधाता ब्रह्म विश्व का करता है।
शुद्ध-सच्चिदानन्द निरामय नित्य निशङ्क न मरता है॥
सकल, अनन्त, अनादि, अजन्मा, भौतिक देह न धरता है।
न्यायशील सर्वज्ञ दयानिधि सब जीवों का भरता है॥
धरो उसी का ध्यान दूसरा कौन मुक्ति का दाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है॥ १॥
३. जो विद्यानिधि वेदों को तुम प्यारे पढ़ो पढ़ाओगे।
सुनो सुनाओगे तो अपने तीनों ताप नसाओगे॥
४. धारो सत्य असत्य विसारो तब चारों फल पाओगे।
झूठ सांच को जांच धर्म के धाम काम कर जाओगे।
५. तो न रहेगा उसमें जिनका पञ्च-भूत से नाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता॥ २॥
६. तुम सामाजिक अरु देहात्मिक उन्नति अनुदिन किया करो।
मान मुख्य उद्देश्य पडंगी का सबको सुख दिया करो॥
७. यथायोग्य वरतो सबसे प्रतिवार प्रेम यश किया करो।
८. आठों धाम अविद्या को तज विद्या का रस पिया करो॥
९. सबकी उन्नति में निज उन्नति को नवनिधि नर पाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है॥३॥
१०. सबके हितकारी नियमों के पालन में परतन्त्र रहो।
नीति रीति सीखो समाज की गुरु लोगों की गैल गहो॥
हितकारी नियमों के पालन का आनन्द स्वतन्त्र लहो।
वैदिक मत के सारभूत यों दश नियमों का भाव कहो॥
श्रीमद्दयानन्द स्वामी के उपदेशों का खाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है॥ ४॥

**आर्यसमाज स्थापना-**

इस दिन महर्षि दयानन्द ने अपने विचारों व सत्य वैदिक सिद्धान्तों की आधारशिला मूर्त एवं स्थिररूप में बम्बई के गिरगांव में डॉ० मानिकचन्द जी की वाटिका में सम्वत् १९३२ में प्रथम आर्यसमाज के रूप में रखी थी। समस्त आर्यों को इस दिन मौन होकर आर्यसमाज की अब तक की प्रगति व नवीन वर्ष के लिये कार्यक्रम की योजना बनानी चाहिये जिससे ऋषि द्वारा स्थापित संगठन दृढ़ खड़ा रहे।

ऋग्वेद संगठन सूक्त का पद्यानुवाद-

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते हैं तुम्हें कीजिये धनवृष्टि को॥ १॥
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥ २॥
हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों॥ ३॥
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुखसम्पदा॥ ४॥

# दयानन्दमठ का ६७वां वैदिक सत्संग सम्पन्न

वैदिक सत्संग समिति द्वारा संचालित दयानन्दमठ रोहतक का ६७वां सत्संग बड़ी धूमधाम से ३ अप्रैल २००५ रविवार को सम्पन्न हुआ। इस समिति के मन्त्री एवं कार्यक्रम के संयोजक आचार्य सन्तराम आर्य ने बताया कि प्रातःकाल ९ बजे बृहद् यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। १०-२० बजे भक्तिगीत प्रारम्भ हुए जो ११-०० बजे तक चले। उपदेशक श्री जगवीरसिंह सांघी ने इस प्रकार गाया-'जिनसे मुझको मिली प्रेरणा उनके दर्शन किए नहीं। है मेरा दुर्भाग्य दयानन्द ज्यादा दिन तक जीये नहीं।' जयदीप युवक ने गाया-'छोड़कर संसार जब तू जायेगा...'। इसी प्रकार विनोद आर्य ने गाया-'दुनिया में पा गये नाम....।' दीपिका आर्या व पं० मनफूलसिंह आर्य ने अपने-अपने मधुर भजन सुनाये। बहिन दयावती आर्या ने अपने गीत एवं भजन से मन्त्रमुग्ध कर दिया। डॉ० धर्मपाल शास्त्री जो मुख्यवक्ता के रूप में पधारे थे। अपना प्रवचन प्रारम्भ किया उनका विषय था-**'समर्पण में ही सुख है'**। डॉ. धर्मपाल जी ने बताया कि एक महात्मा विदुर से पूछा गया कि निर्भय कैसे रहा जा सकता है? तो विदुर ने कहा कि चार बातें अभय दान देती हैं जिसमें प्रथम है विधिपूर्वक यज्ञ करना। राजा जनक ने एक बार यज्ञ की व्यवस्था की थी उस यज्ञ की शोभा बढ़ाने के लिए महर्षि उद्दालक बिना निमंत्रण के पहुंचते हैं। महर्षि उद्दालक ने तीन प्रश्न किये। जो निम्न प्रकार से थे-(१) यज्ञ की आत्मा क्या है? (२) यज्ञ के प्राण क्या हैं? और (३) यज्ञ का सार क्या है? उपरोक्त तीनों प्रश्नों का उत्तर पूरी विद्वत् मण्डली नहीं दे पाई। फिर राजा जनक के आग्रह पर स्वयं महर्षि उद्दालक उत्तर देते हैं। (१) केवल स्वाहा-स्वाहा कह करके इतिश्री नहीं माननी चाहिये। उस यज्ञ से श्रेष्ठता का काम हो रहा है। मानव उन्नति के लिए कार्य हो रहा है कि नहीं? यदि स्वाहा-स्वाहा कहने में भी तारतम्यता नहीं बनी तो उससे भी पूरा लाभ नहीं हो पाता। इसलिये मन में ऐसी तरंगें उठनी चाहियें जो हमारे अन्दर से एक-एक बुराई को आहुत कर देना ही यज्ञ की आत्मा कहलाती है। (२) यज्ञ के प्राण-अग्नि पर प्रतिष्ठित हैं हम भी यज्ञ पर प्रतिष्ठित हैं, श्रद्धापूर्वक अपने आपको समर्पण करना। इस भावना को उजागर करना कि हे प्रभु मैं सामर्थ्यशील होकर संकल्प कर रहा हूं कि मुझमें **'इदं न मम'** का भाव सदैव बना रहे। अन्यथा कोई लाभ नहीं होगा। पवित्र भाव से तन मन धन सब आपका है। (३) यज्ञ की पराकाष्ठा अर्थात् सार-आस्तिकता में विश्वास होना अनिवार्य है **योगः चित्तवृत्तिनिरोधः** अर्थात् अपनी इन्द्रियों को वश में करो-इन्द्रियां निरोग हो जायें। ये इन्द्रियां कल्याणकारी बन जायें। अंत में निम्न पंक्तियां गाकर भावविभोर कर दिया-'सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुःख भी मुझे प्यारे हैं, छोडूं मैं किसे भगवन् दोनों ही तुम्हारे हैं।'

श्री सन्तराम आर्य ने शान्तिपाठ बुलवाकर सभी को ऋषिलंगर में भोजन के लिए प्रार्थना की।

-रामवीर आर्य, आर्य युवक परिषद् कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक

# आर्य-संसार

## श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद हरयाणा का ६८वाँ वार्षिकमहोत्सव दिनांक १८,१९,२० मार्च २००५ को हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर १४ मार्च तक यजुर्वेदपारायण-महायज्ञ श्री विजयपाल आचार्य के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इस अवधि में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न स्थानों से आए हुए ३५ विद्वानों ने लाभ उठाया। महोत्सव में गोरक्षा सम्मेलन, नशाबंदी सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन विशिष्ट रूप से आकर्षण के केन्द्र रहे। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने अपने उद्‌बोधन में गुरुकुलीय अध्ययन की सार्थकता की बात पर विशेष बल दिया। उत्सव में श्री चिरंजीलाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, जनार्दन जी दिल्ली, खेमसिंह जी चिरवाड़ी, श्रीमती राजबाला आदि भजनोपदेशकों ने अपने सदुपदेश से समीपवर्ती ग्रामीण जनों को लाभान्वित किया। उत्सव के समापन अवसर पर गुरुकुल के प्रधान आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री ने इस सफल आयोजन में सहयोग देनेवाले दानी महानुभावों तथा समस्त अतिथि महानुभावों का धन्यवाद किया। -स्वामी विद्यानन्द

## दामनजोड़ी ( कोरापुट ) उड़ीसा में आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

गत २५, २६, २७ मार्च को आदिवासी-बहुल कोरापुट जिले के दामनजोड़ी में आर्य (हिन्दू) धर्म के सभी संगठनों ने सामूहिक प्रयास से गुरुकुल आश्रम आमसेना के संचालक पू० स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में वेदपारायण महायज्ञपूर्वक भव्य आर्यमहासम्मेलन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में पूज्य स्वामी जी को भव्य शोभायात्रा के साथ ओ३म् ध्वजोत्तोलन के लिए ले जाया गया। इस पवित्र पताकोत्तोलन करते हुए सभा में उपस्थित विशाल आर्यजनों को कहा कि यदि आप सब अपने मतभेद मिटाकर नहीं मिलोगे तो यह विदेशी मिशनरी सबको समाप्त कर देगी जैसा अब भी बिना कारण इनके द्वारा विरोध किया जा रहा है। फिर महायज्ञपूर्वक तीन दिनों तक गरिमामय वातावरण में २७ मार्च को शोभायात्रा के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ। इस वेदपारायण महायज्ञ की ब्रह्मा डॉ० अन्नपूर्णा जी, आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून थीं तथा कार्यक्रम का संचालन श्री विशीकेशन जी शास्त्री ने किया। इस महायज्ञ में सैकड़ों लोगों ने यज्ञोपवीत लेकर वैदिक धर्म की दीक्षा ली तथा इसी प्रकार का एक विशाल भव्य कार्यक्रम ९, १०, ११ मार्च को फुलवाणी जिले में भी सम्पन्न हुआ।

-सुदर्शनदेव 'व्रती' उपमंत्री, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

## उमरा ( हिसार ) में यज्ञों का आयोजन

दिनांक २९-३-०५ को श्री बलवीरसिंह आर्य उमरा निवासी के नवगृह प्रवेश के उपलक्ष्य में सभा के अन्तरंग सदस्य श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी द्वारा हवन किया गया। श्री क्रान्तिकारी ने पंचमहायज्ञ की विस्तार से व्याख्या की।

दिनांक ३१-३-०५ को हरयाणा आर्य युवक परिषद् जिला हिसार के मंत्री श्री मा० दिलबागसिंह आर्य के सुपुत्र उपेन्द्र के ६वें जन्मदिवस पर आचार्य हरपाल शास्त्री (हिसार) द्वारा यज्ञ किया गया।

इस शुभ अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी ने बताया कि माता-पिता ने अपना स्वयं का आदर्श प्रस्तुत करके बच्चों पर संस्कार डालने चाहिएं। परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, आर्यसमाज उमरा के मंत्री श्री बलवन्तसिंह आर्य ने बच्चे को आशीर्वाद देते हुये लम्बी आयु व अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।

-सु० सरजीतसिंह आर्य, प्रचारमंत्री आर्यसमाज उमरा

## वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सुभाष कालोनी बल्लभगढ़ जिला फरीदाबाद का द्वितीय उत्सव ११-३-०५ से १३-३-०५ तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें (हाथरस से) गुरुकुल सासनी की आचार्या पवित्रा जी तथा मथुरा से उदयवीर जी भजनोपदेशक सभा रोहतक से स्वामी देवानन्द तथा भजनलाल जी मितरौल से पधारे। उत्सव का संचालन आचार्य इन्द्रदेव जी ने किया। समय-समय पर सभी उपदेशकों ने ईश्वरभक्ति तथा देशभक्ति पर प्रकाश डालते हुये शराब व दहेजादि कुप्रथाओं पर भी जोर देते हुये समाजसुधार का उपदेश दिया। -तेजपाल आर्य मन्त्री



## अमर रहे हमारा...... ( प्रथम पृष्ठ का शेष )

३. **स्वराज्य का मन्त्रदाता आर्यसमाज**-सन् १८५७ के प्रथम ... को अंग्रेजों ने क्रूरता से कुचल दिया था। सारे भारत में भय का साम्रा... की बात करना मौत को निमन्त्रण देना था। ऐसे कठिन काल में आर्यस... एवं स्वराज्य के प्रथम उद्‌घोषकर्त्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर... में लिखा था-

''कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह स... है'', अथवा मत मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्ष... माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों... सुखदायक नहीं।

आर्यसमाज ने ही महर्षि की आशाओं के अनुसार स्थान-... आंदोलन चलाया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वालों में ... आर्यसमाज के ही सदस्य थे। भारत माँ के गुलामी के बंधन काटने के... भेंट देनेवाले अमर शहीदों में ८५ प्रतिशत आर्यसमाज के ही वीर थे। ... श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, वीर भ... राजगुरु, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशनसिंह, ... भाई परमानन्द, हरदयाल, वीर सावरकर तथा हजारों युवकों को आजा... देनेवाला आर्यसमाज तथा सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ही थे।

असल में तो आज सच तो यह है कि-

**भारत मां की स्वतन्त्रता का पावन प्रहरी आर्यसमाज...**
**अंग्रेजों के दमनचक्र से जूझ रहा था आर्यसमा...**
**बलिदानों की परम्परा में सबसे आगे रहा आर्यसमाज...**
**आज सभी की आशाओं का केन्द्रबिन्दु है आर्यसमा...**

४. **मृतप्राय आर्यजाति में महर्षि ने खून का संचार किया**-... मृतप्राय आर्य (हिन्दू) जाति में पुनः सिंह समान पराक्रम पैदा किया। ... भारत के साहित्य, दर्शन एवं वेदज्ञान को संसार में सर्वोच्च घोषित किया ... के उपदेशकों, विद्वानों ने यवनों, ईसाइयों को शास्त्रार्थ के लिए ललका... किया। आर्यसमाज ने ही तो देश के करोड़ों व्यक्तियों को नई प्रेरणा, ... प्रदान किया। सचमुच ही हमीं तो हैं राष्ट्र के सजग प्रहरी-

**युग युग तक नवजीवनदाता, अमर रहेगा आर्यसमाज...**
**मन्त्रमुग्ध-सा भव्य राष्ट्र का सम्बलदाता आर्यसमा...**
**दीन-हीन को इसने सिंह बनाया, सारा ही नैराश्य ...**
**विश्व विजय की भरी भावना, जय जय जय हे आर्यसमाज**

५. पिछले १३० वर्षों से कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, ... आर्यसमाज ने ही सजग प्रहरी बनकर उसे मुसलमानों व ईसाइयों ... परिचित कराया। महर्षि के सत्यार्थप्रकाश का १३वां व १४वां समुल्लास ... मुस्लिमों व ईसाइयों के इरादों पर वज्र बनकर गिरा है। वीर लेखराम, ... भक्त फूलसिंह ने अपने प्राण देकर भी शुद्धि की दीवार खड़ी कर दी थी। गांधी जी के लड़के हीरालाल गांधी को भी आर्यसमाज ने बचाया था।

आज चारों ओर शोर है-

**अज्ञानी, पाखण्डी, पंथी, कांपे देखकर आर्यसमाज।**
**यवन, इसाई, पोप, पादरी दूर हुए जब आर्यसमाज।**
**आगे बढ़कर हुंकारा था, कांप उठे थे सारे पाप।**
**दौड़े मुल्ला करके हल्ला, आया देखो आर्यसमाज॥**

६. **समानता का उद्‌घोषक**-आर्यसमाज ही एक ऐसा संगठन है जो ... जन्म से किसी भी स्तर पर किसी भी भेदभाव को स्वीकार नहीं करता। मनुष्यों को एक ईश्वर का पुत्र होने के नाते धरती पर भाई-भाई की तरह ... प्रेरणा करता है-

**हों विचार समान सबके, चित्त, मन सब एक हों।**
**हो सुखी संसार सारा, भावनाएं सब नेक हों।**
**हों सभी के मन तथा संकल्प अविरोधी सदा।**
**मन भरे हों प्रेम से, जिससे बढ़े सुख सम्पदा।**

तो आओ! आज इसके स्थापना दिवस पर इसके सदा के लिए अमर ... प्रार्थना करें -

अमर रहे हमारा यह आर्यसमाज।
जिसके संस्थापक थे ऋषिवर दयानन्द से संन्यासी।
वेदोद्धार किया जिसने फिर, वैदिक पथ का था अभ्यासी।
उसी दयानन्द स्वामी ने शुचि सजा दिया है इसका साज।
वेदों के पावन प्रचार में, जो संलग्न अभी है आज।
अमर रहे हमारा यह आर्यसमाज।

# टंकारा में ऋषि-बोधोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न

इस वर्ष ऋषि जन्मभूमि टंकारा में बोधोत्सव १ मार्च से ९ मार्च तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। १ मार्च से यजुर्वेदपारायण यज्ञ का शुभारंभ हुआ जिसके ब्रह्मा टंकारा स्थित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के आचार्य श्री विद्यादेव एवं उपाचार्य श्री रामदेव जी थे।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के १८१ वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में ६ मार्च को वकृत्व प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें गुजरात प्रदेश के माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

७ मार्च २००५ को प्रात: प्रभातफेरी के साथ ऋषि बोधोत्सव का विधिवत् रूप से उद्घाटन हुआ। लगभग पूरे विश्व से पधारे ऋषिभक्तों ने प्राय: ६ बजे पूरे टंकारा ग्राम को ऋषि की जय के नारों से गुंजायमान कर दिया था।

इस सत्र में जहां विभिन्न आर्य कन्या गुरुकुलों से पधारी ब्रह्मचारिणियों ने अपनी प्रतिभा का परिचय विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से दिया वहीं दूसरी ओर गुरुकुलों की आचार्या नन्दिता शास्त्री, आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, आचार्या धारणा, आचार्या सुशीला के भी ओजस्वी प्रवचन हुए। पूरे उत्सव में इस सत्र की जितनी प्रशंसा ऋषिभक्तों के उपस्थित जनसमूह ने की, वह अन्य किसी सत्र में नहीं हुई। इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव के पूर्ण कार्यक्रम में महिलाओं का वर्चस्व रहे, ऐसा प्रयास टंकारा ट्रस्ट के अधिकारियों द्वारा किया गया। इसी संदर्भ में कन्या गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सारे कार्यक्रम का संयोजन टंकारा ट्रस्ट की ट्रस्टी श्रीमती स्नेहलता हाण्डा ने किया।

दिनांक ८.३.०५ ऋषि बोधोत्सव के दिन यज्ञ की पूर्णाहुति जिसमें दिल्ली से विशेषरूप से पधारे श्री आनन्द चौहान (डायरेक्टर एमिटी स्कूल्स) अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मृदुला चौहान एवं बेटी के साथ यज्ञवेदी पर उपस्थित थे। दूसरी ओर श्री योगेश मुंजाल एवं श्रीमती [illegible]र्ष मुंजाल, एक ओर श्री अरुण अब्रोल एवं श्रीमती सुधा अब्रोल तथा श्रीमती रामचमे[illegible], श्रीमती [illegible]राजवती, श्री ललित साहनी एवं श्रीमती स्नेहलता हाण्डा उपस्थित थे। इसके साथ ही यज्ञ के चारों ओर छोटे हवनकुण्ड लगाकर भारत एवं विश्व की आर्यसमाजों से पधारे ऋषिभक्तों को यज्ञ में स्थान दिया गया। अत्यन्त श्रद्धामय वातावरण में यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इसके उपरान्त महर्षि दयानन्द प्राथमिक चिकित्सा/जांच केन्द्र का उद्घाटन श्री सुधीर मुंजाल एवं श्रीमती अंजू मुंजाल (बड़ौदा) के करकमलों द्वारा किया गया। उपरोक्त जांच केन्द्र के लिये भारत के सुप्रसिद्ध उद्योग एम.डी.एच. के मालिक महाशय धर्मपाल जी ने लगभग एक लाख की राशि के उपकरण, श्रीमती निर्मला गुप्ता कोटा ने ५५,०००/- की राशि के उपकरण, श्री सूरजचन्द्र सूद दिल्ली ने रु० १७९९९/- की राशि के उपकरण तथा अन्य महानुभावों ने उपकरणों हेतु सहयोग देकर इस पुण्य कार्य में अपनी आहुति डाली। इसी अवसर पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध ट्रस्ट ला० दीवानचन्द ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा रु. २,६७,०००/- की सहयोग राशि द्वारा खरीदे गये रुग्णवाहन (एम्बुलेंस) को श्री आनन्द चौहान (डायरेक्टर एमिटी स्कूल्स) के करकमलों द्वारा आचार्य विद्यादेव जी को समर्पित की गई। इसके उपरान्त आर्यसभा मॉरीशस से पधारे मंत्री श्री हरिदेव रामधनी जी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण हुआ। शोभायात्रा के उपरान्त सायं ३ से ५ बजे तक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से श्री मदनलाल खुराना, पूर्व मुख्यमंत्री दिल्ली एवं पूर्व राज्यपाल राजस्थान पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सत्यानन्द मुंजाल/मैनेजिंग ट्रस्टी, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा ने की। इस अवसर पर श्री मदनलाल खुराना जी ने अपने वक्तव्य में विशेष रूप से ऋषि के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि ऋषि द्वारा प्रतिपादित आर्यसमाज के १० नियम संयुक्त राष्ट्र के नियम लगते हैं। किसी व्यक्तिविशेष, किसी जातिविशेष के लिये नियम न होकर पूरे मानव समाज के लिये ये नियम हैं।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भुज कच्छ गुजरात की श्रीमती भावना बेन को टंकाराश्री की उपाधि से अलंकृत किया गया और दिल्ली से पधारे श्री सोमदत्त महाजन को टंकारा रतन की उपाधि से अलंकृत किया गया।





आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१



ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ | अंक २१ | २१ अप्रैल, २००५ | वार्षिक शुल्क ८०) | विदेश में २० डॉलर | एक प्रति २.००

## तप-त्याग एवं निष्काम सेवाभाव के प्रतिमान महात्मा हंसराज

स्वर्गमयी भारत भूमि सदा से ही रत्नगर्भा एवं वीरप्रसू भूमि रही है। प्रकृति ने इसे जहां उदारतापूर्वक अथाह भौतिक तथा प्राकृतिक सम्पदा दी है, वहीं इसकी कोख से समय-समय पर उन नर-पुंगवों और नारी-रत्नों ने जन्म लिया है, जिनकी विलक्षण आभा ने न केवल भारत देश के इतिहास को प्रत्युत विश्व इतिहास को भी जगमगा दिया है। वे नर-रत्न समूची मानवता की अमूल्य निधि हैं। ऐसे ही देदीप्यमान व्यक्तित्व थे महात्मा हंसराज, जिन्होंने गत सदी में अपने अपूर्व त्याग की अमिट छाप इतिहास के पन्नों पर छोड़ी है। उनका त्याग उच्चकोटि का था, एक तरह से अवर्णनीय एवं आज की पीढ़ी के लिये लगभग अकल्पनीय था। उनके त्याग का एक संक्षिप्त-सा परिचय यूँ दिया जा सकता है कि-

**सर्वस्व त्याग की जब भी किसी से कोई बात करेगा।**
**हंसराज के नाम से गाथा की शुरुआत करेगा॥**

महात्मा हंसराज ने यह साबित करके दिखा दिया कि दृढ़संकल्प, अविचल आस्था, फौलादी इच्छाशक्ति एवं बुलंद इरादों के आगे सभी प्रतिकूलताएं बाधाएं नतमस्तक हो जाया करती हैं। गरीबी अथवा अभाव साहसी कदमों का रास्ता नहीं रोक सकते और यह भी महानता महलों और अमीरों की बपौती नहीं है। झोपड़ियां भी उन गुदड़ी के लालों को जन्म दे सकती हैं जो आगे चलकर युगद्रष्टा, युगसृष्टा एवं इतिहास निर्माता बनते हैं। प्रसिद्ध सूक्ति है कि-

**परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।**
**स जातो येन जातेन याति राष्ट्रं समुन्नतिम्॥**

❑ प्रो० ओमकुमार आर्य, पटियाला चौक, जींद

अर्थात् परिवर्तनशील जगत् अंदर हर आनेवाला जाता है। आना उसका धन्य कि जिससे राष्ट्र गौरव पाता है। लगता है कि सूक्तिकार ने यह सूक्ति महात्मा हंसराज को ही ध्यान में रखकर बनाई थी।

कालान्तर में महात्मा हंसराज के रूप में प्रसिद्धि पानेवाले बालक हंसराज का जन्म १९ अप्रैल १८६४ के पंजाब के होशियारपुर जिले में स्थित बजवाड़ा गांव में हुआ था। साधारण-सी हैसियत रखनेवाले भल्ला दम्पति पिता श्री चुन्नीलाल और माता श्रीमती गणेशीदेवी को शायद कभी सपने में भी ख्याल नहीं आया होगा कि उनके आंगन का यह धूलि-धूसरित चिथड़ों-लपेटा नन्हा हंसराज एक दिन विश्व की महान् विभूति बनेगा और आनेवाली पीढ़ियाँ उसे शिक्षाजगत् के भीष्मपितामह एवं महानायक के रूप में याद किया करेगी। इनका निधन ७४ वर्ष की आयु में १५ नवम्बर १९३८ को हुआ था।

बालक हंसराज को अपनी प्रारंभिक शिक्षा के लिये भी रोजाना ४-५ किलोमीटर चलकर होशियारपुर जाना पड़ता था। उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा लाहौर में प्राप्त की थी, जहाँ वे आर्यनेताओं के संपर्क में आए। वे पं० गुरुदत्त के हम उम्र ही नहीं, सहपाठी भी थे। उनकी गिनती अत्यन्त मेधावी और प्रतिभासम्पन्न युवकों में होती थी। सन् १८८५ में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से स्नातक परीक्षा (बी०ए०) उत्तीर्ण की। आपका नाम सफल प्रत्याशियों की विशेष मैरिट सूची में था।

उन दिनों इतनी शानदार सफलता के साथ स्नातक होना कोई मामूली बात नहीं थी। यदि युवक हंसराज चाहता तो बड़ी से बड़ी सरकारी नौकरी अथवा निजी क्षेत्र में कोई भी भारी भरकम वेतन वाला पद उन्हें मिल सकता था। लेकिन ऋषि का अनन्य भक्त और आर्यसमाज का यह मेधावी सपूत तो त्याग, तपस्या और अपरिग्रह के उस पथ पर पथिक बनने जा रहा था जिसकी अंतिम मञ्जिल थी अपना सर्वस्व निछावर कर देना लगता है, अदृश्य शक्ति किन्हीं चुनिंदा पुण्यात्माओं को एक विशेष योजना देकर इस धराधाम पर भेजती है, उनको सतत प्रेरणा देकर गंतव्य की ओर बढ़ाती है, उनके पुरुषार्थ को अपनी कृपा से फलीभूत करती है। उन पुण्यात्माओं को वह अदृश्य सहायिका शक्ति इतना दृढ़ सम्बल भी प्रदान करती है कि जीवन के उतार-चढ़ाव, आंधी-तूफान, झंझावात उनको किञ्चित् भी विचलित नहीं कर पाते। परमात्मा की असीम अनुकम्पा के ऐसे ही भाग्यशाली पात्र थे पवित्रात्मा महात्मा हंसराज।

यहां मेरा संकेत है उस घटना की ओर जब महर्षि के महाप्रयाण के पश्चात् सन् १८८६ में आर्यजनों ने महर्षि के स्मारक रूप में डी.ए.वी. स्कूल स्थापति करने की योजना बनाई। पहली जून १८८६ में पहला डी.ए.वी. स्कूल लाहौर में अस्तित्व में आया। प्रश्न था कि कोई सुयोग्य, सुशिक्षित व्यक्ति '**अवैतनिक सेवाएं**' देने को तैयार हो! सुशिक्षित, सुयोग्य और अवैतनिक सेवाएं? बड़ा टेढ़ा काम दिख रहा था। आर्यसमाज की वही स्थिति थी जो मध्ययुग में राजा सुधन्वा की विदुषी रानी की वेद को लेकर थी - '**किं करोमि, क्व गच्छामि, को वेदानुद्धरिष्यति**' और महल के नीचे से गुजरते हुए कुमारिल भट्ट ने रानी माँ को आश्वस्त करते हुए कहा था-'**मां विषीद वरारोहे, भट्टाचार्योऽस्ति भूतले**' कुछ उसी लहजे में युवक हंसराज ने भी आर्यनेताओं के सामने संकल्प व्यक्त किया था कि आप निश्चिन्त होकर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने की योजना बनाओ, उसे लागू करो, रही अवैतनिक सेवा और जीवनदान की बात, चिंता मत करना-'**हंसराजोऽस्मि भूतले**'।

इतिहास साक्षी है कि युवक हंसराज की यह प्रतिज्ञा उस कठोर प्रतिज्ञा से कम नहीं थी, जो सदियों पहले द्वापर में युवक देवव्रत ने की थी। उस भीषण प्रतिज्ञा के चलते ही तो इतिहास ने देवव्रत को भीष्मपितामह का नाम दिया था। आजीवन अवैतनिक सेवा के व्रत को सफलतापूर्वक निभानेवाले महात्मा हंसराज को शिक्षाजगत् का पितामह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं। किंतु यह भी एक कटु सत्य है कि महात्मा हंसराज ने तो सब प्रतिकूलतायें झेलते हुए अपनी प्रतिज्ञा को पूरी तरह निभाया, अब डी.ए.वी. संस्थायें अपने अंदर झांककर देखें और सत्य-सत्य बतायें कि वे अपने संस्थापक प्राचार्य की राह पर हैं या भटक कर दूर चली गई है?

सन् १८८६ से १८८९ तक अवैतनिक मुख्याध्यापक और १८८९ से १९१२ तक महात्मा हंसराज अवैतनिक प्राचार्य रहे। 'अवैतनिक' शब्द बोलने में और लिखने में बड़ा सरल है, किंतु 'अवैतनिक' पथ के पथिक ही जानते हैं कि अपनी सुख-सुविधाओं को लात मारकर, समस्त कोमल अरमानों को कुचल-मसलकर, परिवार के सुनहरे सपनों के निर्ममतापूर्वक पैरों तले रौंदते हुये यह व्रत कैसे निभाया जाता है। इसका पालन करने की क्षमता किसी शेरदिल हंसराज में ही होती है, ऐरे गैरे नत्थू खैरे के बस की बात नहीं है। इसके मद्देनजर

(शेष पृष्ठ दो पर)

# मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

भारतीय संस्कृति अपने त्यौहारों, उत्सवों एवं पर्वो के कारण सुरक्षित है। शक, हूण, कुषाण आदि विदेशी जातियों ने, नादिरशाह, चंगेजखान, अहमदशाह अब्दाली आदि विदेशी आक्रमणकारियों ने यहाँ की धन-सम्पत्ति को लूटा लेकिन वे यहां की सांस्कृतिक धरोहर को किसी प्रकार की हानि पहुंचाने में विफल रहे। त्योहारों, उत्सवों एवं पर्वो ने सांस्कृतिक धरोहर को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित किया। हजारों वर्ष बीत जाने के बाद भी त्यौहार, उत्सव एवं पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाये जाते हैं।

रामनवमी हमारे प्रमुख पर्वो में से एक है। यह पर्व स्मरण कराता है मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का, जिन्होंने भाई, मित्र, माता-पिता, गुरु, प्रजा आदि सभी के लिए आदर्श प्रस्तुत किया। माता कैकेयी के कहने पर १४ वर्ष के लिए वन चले गए। भाई भरत ने वापिस अयोध्या लौटने की बार-बार प्रार्थना की लेकिन वह नहीं लौटे। यहां तक कि पिता दशरथ ने उनके वियोग में प्राण त्याग दिए। मातृभक्ति का ऐसा उदाहरण शायद ही कहीं देखने को मिले। शील, सदाचार, उदारता, शिष्टाचार, मर्यादा, ईमानदारी तथा कर्त्तव्यनिष्ठा आदि जीवनमूल्यों का बोध श्रीराम के जीवन से होता है।

वन में श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण तथा अपनी पत्नी सीता के साथ नाना प्रकार के कष्ट सहते हैं, लेकिन फिर भी साहस और हिम्मत का दामन नहीं छोड़ते। शबरी के घर जाकर बेर खाते हैं। प्रेम व स्नेह का व्यवहार करते हुए वनवासियों का हृदय जीत लेते हैं। हनुमान, सुग्रीव जैसे परम मित्र उन्हें वन में ही मिलते हैं। वन में प्रेम, स्नेह अनुराग की ऐसी पावन पवित्र गंगा बह उठती है जैसे स्वर्ग धरती पर उतर आया हो-कहीं ऊँच-नीच नहीं, कहीं किसी प्रकार का भेदभाव नहीं। चारों ओर अपार सुख शान्ति एवं आनन्द १३ वर्ष तो ठीक बीत गए लेकिन अंतिम वर्ष सीता का अपहरण हो गया। दुःखों के पहाड़ टूट पड़े चारों वेदों का ज्ञाता लंकानरेश रावण विवेकहीन होकर पथभ्रष्ट होगया। लेकिन श्रीराम ने मुसीबत की इस वेला में भी अपना संतुलन बनाए रखा। वानर सेना को संगठित किया गया। समुद्र पर पुल बनाया गया। घमासान युद्ध हुआ। महापराक्रमी रावण, मेघनाथ, कुम्भकर्ण आदि सभी को गहरी नींद सुला दिया गया। विभीषण को लंकानरेश बना दिया गया। श्रीराम ने अपने पराक्रम से सिद्ध किया कि काली अंधेरी रात का भी अंत होता है और प्रकाश की किरणें लिए दिन अवश्य आता है। अत्याचारी, अभिमानी, अधर्मी शासक का भी एक न एक दिन पतन अवश्य होता है।

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम अयोध्या लौट आए। लोगों ने दीप जलाकर प्रसन्नता प्रकट की। यह पर्व हमें श्रीराम के समान दृढ़प्रतिज्ञ बनने की प्रेरणा देता है। आज के दिन मंदिरों की साज-सज्जा देखते ही बनती है। संत तुलसीदासकृत वाल्मीकि रामायण हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इसके पठन-पाठन से भी हमारे जीवन में सुधार आ सकता है। आओ श्रीराम के इन शब्दों को सदा याद रखें।

**अपि स्वर्णमयी लंका, न मे लक्ष्मण रोचते।**
**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥**

**-कृष्ण वोहरा**, प्रिंसिपल,
आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, सिरसा

## श्रीराम नवमी पर विशेष भजन

(तर्ज-हरियाणवी) छैल गैल्यां जांगी......

मानव मर्यादा सिखाई श्रीराम ने।
निज पितु आज्ञा निभाई श्रीराम ने॥
होना था राम राज्य हुआ बनवास था।
वन की तैयारी बनाई श्रीराम ने॥ मानव....
आज्ञापालन में वचनबद्ध श्रीराम जी।
रघुकुल की रीति दर्शायी श्रीराम ने॥ मानव....
सीता लखन जब अति हठ ठाने।
उनको भी संग में लिवाई श्रीराम ने॥ मानव....
व्याकुल देखा जब पुरवासिन को।
भोली भाली जनता समझाई श्रीराम ने॥ मानव....
तपसी रूप लिये पहुंचे घनघोर वन।
पंचवटी कुटिया बनाई श्रीराम ने॥ मानव....
पावन पतित नित सन्ध्या हवन कर।
'जीवन' की ज्योति जगाई श्रीराम ने॥ मानव....

**-आचार्य रामसुफल शास्त्री, हाँसी**

## आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

| | |
|---|---|
| १. आर्यसमाज उलेटा (नगीना) जिला गुड़गांव | २९ अप्रैल से १ मई ०५ |
| २. आर्यसमाज रादौर जिला यमुनानगर | २७ से २९ मई ०५ |
| ३. आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द | १३, १४ मई ०५ |
| ४. आर्य महासम्मेलन, आर्यसमाज रेवाड़ी | २१,२२ मई ०५ |

**—अभयसिंह आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

## तप-त्याग और निष्काम...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

महात्मा हंसराज को 'जीवित शहीद' कहना उचित नहीं होगा। शहीद की तरह बलिदान देना भी हिम्मत का काम है किंतु अपने मिशन के लिये तिल-तिल करके जलना और हँसते-हँसते रोजाना शहादत देना भी कम हिम्मत का काम नहीं है। जरा कल्पना करके देखिए कि लगातार २५ वर्ष तक जिस महामानव ने लाखों की राशि वेतनरूप में अपने सहयोगियों को दी हो और स्वयं हर महीने खाली हाथ घर आया हो उसके इरादे कितने अडिग और भावना कितनी पवित्र रही होगी और फिर २५-२६ वर्ष के सुदीर्घ सेवाकाल के बाद संस्था के मुखिया पद से इतनी सहजता और अनासक्त भाव से अलग होगया मानो कभी मुखिया पद पर रहा ही नहीं था। कुर्सी छोड़ दी तो मुड़कर देखा भी नहीं कि कुर्सी कहाँ है और कैसी है। क्या यह अनासक्ति, वैराग्य और वीतरागिता की अंतिम सीमा नहीं है? गीताकार ने स्थित प्रज्ञ, स्थितधी, योगी व्यक्ति के यही लक्षण तो बताये हैं-

**दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।**
**वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥**

आज का पदलोलुप, कुर्सी चिप्पू व्यक्ति महात्मा हंसराज के हिमालय जैसे उच्च व्यक्तित्व के सामने कितना बौना नजर आयेगा? सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इन्हीं उदात्त गुणों के कारण ही महात्मा हंसराज को 'श्वेत परिधान' में संन्यासी भी कहा जा सकता है।

महात्मा हंसराज ने अपने लिये दो प्रमुख उद्देश्य निर्धारित कर लिये थे। एक तो शिक्षा के द्वारा जनमानस में सुसंस्कार भरना, सद्गुणों का विकास करना और दूसरा यह कि वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार से अज्ञान, अंधविश्वासादि के अंधकार को हटाना। उनके जीवन को तीन भागों में बांटें तो पायेंगे कि पहले २१-२२ वर्ष शिक्षा-प्रसार के उद्देश्य को समर्पित हुये और अंतिम २४-२५ वर्ष समाजसेवा, धर्मप्रचार में बीते। इस प्रकार कुल मिलाकर ७३-७४ साल का समग्र जीवन अत्यंत व्यस्त एवं रचनात्मक कार्यो का 'ऐतिहासिक एजेण्डा' कहा जा सकता है। उन्होंने हमें 'पञ्चसकारी' अत्यंत जीवनोपयोगी कार्यक्रम दिया था जिसको अपने प्रमाद के चलते हम भूलते जा रहे हैं।

१. संध्या, २. स्वाध्याय, ३. सत्संग, ४. समाज सेवा, ५. समीक्षा (आत्मचिंतन)।

उन्होंने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे, अपनों का विरोध और तीखे व्यंग्यबाण सहे, घोर अभाव देखा, चरित्र-हनन के कुचक्रों का धैर्यपूर्वक सामना किया। 'घास पार्टी बनाम माँस पार्टी' विवाद चला 'गुरुकुल बनाम कॉलेज' बवंडर चला 'बाबा बनाम बाबू' की बातें चलीं और कई बार निशाने पर महात्मा हंसराज रहे किंतु इन सबको महात्मा जी ने बड़े अविचलभाव से झेला। वे चट्टान की तरह अडिग और अडोल बने रहे। समस्त विरोध और सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद उन्होंने शालीनता कभी नहीं छोड़ी, अपने विरोधियों को भी सदा सम्मान दिया। आज आपसी उठापटक और मिथ्या आरोप प्रत्यारोप के इस दुर्भाग्यपूर्ण दौर में पिछली पीढ़ी के उच्च नैतिक गुण कहीं दूर, बहुत दूर पीछे छूट गये हैं।

लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानंद के साथ मिलकर आपने समाजसेवा एवं राष्ट्रसेवा के अनेक उल्लेखनीय कार्य किये जैसे गढ़वाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ में अकालपीड़ितों के लिये राहत कार्य (१९१८-१९), बिहार के भूकम्प पीड़ितों की सहायता (१९३४), क्वेटा में भूकम्प पीड़ितों का पुनर्वास कार्य (१९३५), आगरा जनपद में मलकाने राजपूतों की शुद्धि (१९२६), मोपला काण्ड के पीड़ित हिन्दू परिवारों के लिये राहत कार्य, (१९२२)। बिहार में आर्य भूकंप से हुई बरबादी से पीड़ितों को बचाने के राहत कार्य में तो राजेन्द्र बाबू (स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति) भी महात्मा के साथ थे।

महात्मा जी की ईश्वर में आस्था थी और बड़ी दृढ़ एवं अडिग थी। वे ईश्वर की न्यायव्यवस्था को सही, पूर्ण और दोषरहित मानते थे। आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों का सक्रिय साथ देने के जुर्म में तब अंग्रेज सरकार ने महात्मा जी के बड़े सुपुत्र बलराज पर 'राजद्रोह' का केस चलाया तो सभी परिवारजन एवं परिचित लोग डर गये थे कि फांसी तक की सजा हो सकती थी। किंतु महात्मा जी पूरी तरह संयत, संतुलित, सहज एवं भयमुक्त रहे और कहते रहे कि यदि बलराज निर्दोष है तो उसका बाल भी बांका नहीं होगा। यदि उसने कोई गुनाह किया है तो सजा मिल जायेगी, इसमें डरने की क्या बात है। बलराज को उम्रकैद की सजा हुई जो बाद में सात साल के सश्रम कारावास में बदल दी गई। यह घटना बताती है कि महात्मा जी की ईश्वरभक्ति शुद्ध एवं सच्ची थी, वे दिखावे के ईश्वरभक्त नहीं थे।

और इस प्रकार विश्व इतिहास का यह महानायक सधे हुये कदमों से महानता के पथ पर चलता रहा, आगे बढ़ता रहा, आगे बढ़ता गया अपने बेमिसाल सेवा कार्य से समाज को लाभान्वित करता रहा। किंतु बढ़ती आयु और कार्य के बोझ का स्वास्थ्य पर कुप्रभाव तो पड़ना ही था, फलस्वरूप महात्मा जी अस्वस्थ रहने लगे। सन १९३८ के अक्तूबर मास में थकान और सांस फूलने का जो सिलसिला शुरू हुआ वह काबू नहीं किया जा सका। आंखों की ज्योति भी लगभग न के बराबर रह गई। महात्मा जी को मसूरी ले जाया गया फिर वे 'मोहन आश्रम' में हरिद्वार आ गये। 'दवा' ने असर करना बंद कर दिया, मात्र 'दुआ' का भरोसा रह गया था। फिर आई १५ नवम्बर १९३८ को आधी रात के करीब वह घड़ी जब आर्यत्व का पुतला, ऋषि का भक्त शिक्षा आकाश का जगमगाता सितारा, तप, त्याग, विद्या, धर्म और संस्कृति का सूर्य अस्त हो गया। नम आँखों और भरे हुये कण्ठ से कवि ने श्रद्धांजलि दी-

**युगों युगों तक याद करेगा तुम्हें जमाना हंसराज।**
**हो सके तो जन्म लेकर फिर से आना हंसराज॥**

# नवसंवत्सर-अभिनन्दन

**यज्ञमय जीवन ही परम सुख-शांति का मार्ग है**-प्रातःकाल होते ही ऋग्वेद (मण्डल ७, सूक्त ४१) के '**भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन भगवन्तः स्याम**।' आदि मंत्र जपकर हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान् की सारी शक्तियाँ हममें प्रवेश करके हमें भी भग-वान् बना दें (भगवान् से हमारा योग हो जाए, हम भगवान् हो जाने की कामना करते हैं); और आचमन के मंत्र जपते तथा इन्द्रियस्पर्श करते हैं। इन मंत्रों द्वारा अपने प्यारे प्रभु की गोद में बैठा-सा हुआ भक्त प्रतिज्ञा करता है कि वह प्रभु के मंदिररूपी शरीर के किसी अंग से कोई भी ऐसा पाप नहीं करेगा जिससे उसमें निर्बलता आ जाए। इस प्रकार वह स्नान-ध्यान आदि सहित सूर्योदयकाल तक गुरुमंत्र (गायत्री) सहित तीनों मार्जन-मंत्र, समर्पण मंत्र, नमस्कार मंत्र, और प्राणायाम, सूर्य नमस्कार आदि योगासन एवं आवश्यक व्यायाम पूरे करता है। ब्रह्मयज्ञ (ब्रह्म अर्थात् महान् शक्ति प्राप्त करने का आचरण, ब्रह्मचर्या) करके देवयज्ञ (अग्निहोत्र), पितृयज्ञ (लोक-कल्याण के कार्य-'**यज्ञोऽपि तस्यै जनतायै कल्पते : ऐतरेय**') आदि के लिए, वह प्रस्तुत हो जाता है। ये पंचमहायज्ञ (मनुस्मृति ४-२१) भारतीय जीवन-दर्शन या वैदिक संस्कृति (श्रेष्ठ मानव संस्कृति) की आधारशिला हैं। '**वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः**।' (अर्थात् हम सब राष्ट्र के प्रति हित-कामना से सजग रहे), यही तो यजुर्वेद ९/२३ में निर्देश है।

महाभारत के विजयी पक्ष के वृष्णि-वंशी (यादव) वीर वेद-विरोधी अर्थ-काम-प्रधान पश्चिमी अपसंस्कृति की चपेट में आकर योगिराज श्रीकृष्ण की आँखों के आगे ही अपना वंश-नाश कर बैठे थे। वैदिक (श्रेष्ठ) मानव-संस्कृति छोड़कर विकृति में आई जाति का विनाश होना ही था; और कोई दूसरा मार्ग नहीं था। वेद फिर चेतावनी देते हैं '**नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय**।' (यजुर्वेद ३१/१८) अर्थात् '**अन्य कोई पथ नहीं है श्रेय का**।'

**आसन्न संकट**-लम्बे संघर्ष के पश्चात् शताब्दियों की दासता से मुक्त हुए भारत में पुनः उसी अपसंस्कृति का आक्रमण हो रहा है। दूर-दर्शन, चल-चित्र और शिक्षा एवं संचार माध्यम, सभी पीढ़ी को श्रेष्ठ भारतीय (वैदिक) संस्कृति से विमुख करके सुरा-सुन्दरी और द्यूत-वृत्ति का दास बनाने पर तुले हैं।

**राष्ट्र के पथ-प्रदर्शकों के लिए सत्परामर्श**-विद्या भवन के वार्षिक समारोह (नभाटा १४/१२/०२ ई०) में मूल्यों से जुड़ी शिक्षा शीर्षक समाचार है-"यह सुखद संयोग है कि राजनीति से अवकाश ग्रहण कर चुके अनेक राष्ट्रनेता मूल्यों से जुड़ी शिक्षा पर जोर दे रहे हैं और बच्चों में भारत, भारतीयता और भारतीय संस्कृति के प्रति रुझान बढ़ाकर राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार में सहयोग दे रहे हैं। भारतीय विद्या भवन के संस्थापक प्रखर राष्ट्रभक्त स्वर्गीय कन्हैयालाल मुंशी ने ऐसे समय में भारतीयता से जुड़ी शिक्षा को अपना उद्देश्य बनाया था, जब ब्रिटिश हुकूमत ऐसी किसी भी कोशिश को कुचलने को तत्पर दिखाई देती थी।"

"इंदिरापुरम् में भारतीय विद्या भवन पब्लिक स्कूल" का उद्घाटन-दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम पेश किए। विद्यालय के भवन का उद्घाटन जहाजरानी मंत्री शत्रुघ्न सिन्हा ने किया। इस मौके पर **पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर मुख्य अतिथि** और **केंद्रीय मानव संसाधन राज्यमंत्री संजय पासवान** विशेष आमंत्रित थे। **चंद्रशेखर** और **पासवान** ने अपने भाषण में भारतीय संस्कृति से जुड़ी शिक्षा पर जोर दिया और कहा कि जहाँ पश्चिमी देश भारत के प्राचीन विज्ञान और विरासत के प्रति आकर्षित हो रहे हैं, वहीं हम पश्चिमी देशों की ओर भाग रहे हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को भारतीय जीवन पद्धति और मूल्यों से जुड़ी शिक्षा से जोड़ना चाहिए। इस दिशा में भारतीय विद्या भवन के प्रयासों की सराहना भी की गई।

"जातियाँ कभी जिस्मानी आक्रमणों से नष्ट नहीं हुआ करती, उनका सर्वनाश आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पराजय से ही होता है। जिस राष्ट्र की अपनी संस्कृति कायम नहीं रह सकती वह सही मायने में राष्ट्र भी नहीं कहा जा सकता। वह तो केवल कठपुतली बनकर रह जाता है और खेल खत्म होने पर, **जिसकी बोली बोलता है, उसी की झोली में पड़ जाता है**।"

अब आजादी के आधी सदी बाद ही सही, भ्रष्ट इतिहास बदलकर हम सही निर्णय पर पहुँच रहे हैं। यह सच्ची राष्ट्रभक्ति और उत्तम देश-सेवा है। इस निर्णय पर अटल रहकर सरकार भी बधाई पात्र है। (राष्ट्रीय अनुसंधान विकास परिषद् -NCERT- को उच्चतम न्यायालय के निर्देश हैं कि अप्रैल २००४ ई० तक भ्रष्ट इतिहास बदलकर शुद्ध पाठ प्रस्तुत करें)।

**पं० प्रकाशवीर शास्त्री अभिनन्दन-ग्रंथ**-पिछले दिनों उपराष्ट्रपति निवास पर एक बहुत ही सादे कार्यक्रम में स्वर्गीय पं० प्रकाशवीर शास्त्री का अभिनन्दन-ग्रंथ एवं दो खण्डों में प्रकाशित उनके संसदीय भाषणों के आलेख जो दिल्ली स्थित वेदप्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित किए गए थे, वेद प्रतिष्ठान के प्रधान प्रसिद्ध विधिवेत्ता **डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** (सांसद)एवं मंत्री **श्री रामनाथ सहगल** द्वारा उपराष्ट्रपति **श्री भैरोसिंह शेखावत** जी को भेंट किए गए।

इस अवसर पर **उपराष्ट्रपति महामहिम श्री भैरोसिंह शेखावत** जी ने पं० प्रकाशवीर शास्त्री जी को स्मरण करते हुए उनके संसद में दिये जाने वाले भाषणों के विषय में बताया कि जिस दिन शास्त्री जी को संसद में किसी विषय पर अपना वक्तव्य देना होता था, तो लगभग सभी सांसदों में यह उत्सुकता रहती थी कि वे उस समय संसद में उपस्थित रहें। हिन्दी भाषा पर जो उनकी पकड़ थी और उनकी भाषण कला में जो तेजस्विता थी उनका कोई और उदाहरण, महामहिम ने कहा कि मैंने नहीं देखा। निःसंदेह इसका सारा श्रेय शास्त्री जी की प्राचीन (वैदिक)/गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा ग्रहण करना ही था और सांसद होने से कई वर्ष पूर्व तक वह वेद-प्रचारक के रूप में पूरे भारत में प्रसिद्ध थे।

(टंकारा समाचार अनारकली, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-१ मार्च २००३ अंक से साभार)

**प्रगति के नाम पर दुर्गति**-अगली पीढ़ियों को प्रगति के नाम पर दुर्गति की ओर ढकेलने के प्रयास अभी भी चारों ओर चल रहे हैं। विश्व इतिहास के अध्येता श्री अजय मित्तल, (९७, खन्दक) मेरठ की यह टीका ध्यान देने योग्य है-

"प्रथम विश्वयुद्ध में फ्रांस के मार्शल फोश के नेतृत्व में मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी पर अपेक्षाकृत कम समय में निर्णायक विजय प्राप्त की थी। पर युद्ध की समाप्ति के बाद फ्रेंच राष्ट्र भोग-विलास में डूब गया। पेरिस जैसे नगरों मे नृत्यगृह बड़ी संख्या में खुल गए, जो कामुकता के केन्द्र थे। यहाँ स्त्रियाँ नग्न या अर्धनग्न नृत्य करती थीं। फ्रेंच युवकों की रातें इन नृत्य-गृहों या नाइट क्लबों में गुजरने लगीं। बीस-पच्चीस सालों में एक पराक्रमी राष्ट्र इन्द्रिय सुखों का दास बन गया।"

"दुष्परिणाम दूसरे विश्वयुद्ध में सामने आया। जर्मनी की विजयवन्त सेनाओं ने छह सप्ताह में फ्रांस को रौंद डाला। एक पीढ़ी पूर्व ही विजयगाथा लिखने वाली फ्रेंच सेनाएँ तिनके के समान बिखर गईं। अपनी फौज के जर्मनी के सामने आत्मसमर्पण कर देने के बाद फ्रांसीसी सेनाध्यक्ष मार्शल पेटाँ ने कहा था-'फ्रांस की हार युद्ध क्षेत्र में नहीं, पेरिस के नृत्यगृहों से हुई है'।"

"एक पूरी पीढ़ी को कामुकता का दास बनाने का षड्यंत्र भारत में भी चल रहा है। स्टार टी.वी., अन्य विदेशी चैनल और अपना सरकारी मैट्रो चैनल, फिल्मी-गैर-फिल्मी पत्रिकाएँ, कई एक अखबार सब जुटे हैं इसी काम में।" विदेशी कलाकारों द्वारा पश्चिमी शैली के आयोजन किए जा रहे हैं। अमेरिकी महापुरुष माइकल जैक्सन भौंड़ी कामुकता फैलाकर गए ही थे, कि अमिताभ बच्चन, मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता ले आए। कामुकता के इन पैरोकारों के जरा तर्क सुनिए। श्री बच्चन फरमाते हैं कि यह प्रतियोगिता भारत के लिए चैलेंज थी और ऐसा विश्व स्तरीय आयोजन कराके मैंने भारत का गौरव बढ़ाया है।

कल कोई दूसरा साहसी कहेगा कि "मोटे कार्लो के कैसाइन (जुआघर) भारत के लिए चैलेंज हैं और मैं भारत में भी वैसे ही अधनंगी स्त्रियों से भरे कैसाइन शुरू कर देश का गौरव बढ़ाता हूँ।"

"क्या गंदगी के मामले में हम पश्चिम की नकल करेंगे? और गंदगी भी वह, जिसे दूर करने की सुगबुगाहट खुद वहाँ के लोगों में भी है। क्या अमिताभ को मालूम है कि ब्रिटेन में १९७२ के बाद से ये सौंदर्य-प्रतियोगिताएँ प्रतिबन्धित हैं? यही नहीं, बी.बी.सी. तथा दो अन्य ब्रिटिश टी.वी. संस्थान पिछले 24 साल से इन प्रतियोगिताओं का प्रसारण तक नहीं करते।" (नवभारत टाइम्स ११/१२/१९९६ से साभार उद्धृत)

**वैदिक संस्कृति ही श्रेय का एकमात्र पथ है**-निष्कर्ष यही निकलता है कि ईश्वर की सृष्टि में अधोगति की ओर जाने की प्रवृत्ति ही अधिक रही है, सुधार की ओर कम। कवि के शब्दों में-

**है मानव की प्रकृति निम्नगा होता संस्कृति से उद्धार।**
**मानव-संस्कृति वही, भरा हो जिसमें मानवता का प्यार।**
**इसका ही सीखना-सिखाना, रक्षा करना मानव-धर्म।**
**वश में रखकर प्रकृति, धर्म ही करवाता नर से सत्कर्म।**

(गुप्त-बंधु : अनल-प्रकाश महाकाव्य, ८वीं किरण, मध्य खण्ड ७)

भारतीय संस्कृति का प्राण गायत्री मंत्र है। इसका महत्त्व इसी में है कि यह हमें अपनी बुद्धि (अन्तःकरण) का ही प्रयोग करने का बारम्बार सुझाव देता है और कहता है कि '**धियो यो नः प्रचोदयात्**' अर्थात् प्रभु हमारी बुद्धियों को अच्छे कर्म की ओर प्रेरित करें। तात्पर्य यह है कि अच्छा या बुरा क्या है, धर्म-अधर्म क्या है, इस प्रश्न का समाधान भी वेद (भगवान्) को ही करना है; और धर्म-मार्ग जानने के लिए हमें उसी (प्रभु) की शरण में जाना है, उसी की उपासना करनी है। यही भारतीय संस्कृति का आधार है।

किन्तु फिर भी ईश्वर निराश होकर सृष्टि-रचना से विरत नहीं हुआ। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में "**पैदा होने वाला हर बच्चा यह संदेश लेकर आता है कि ईश्वर अभी तक मनुष्यों से निराश नहीं हुआ है**।" इसका भी निहित संदेश है कि वैदिक धर्म ही श्रेय का मार्ग है। यानि '**उसको भूला न चाहिए कहना, सुबह जो जाए और आए शाम**।' भारतीय (वैदिक) संस्कृति-अपहारक वर्तमान झंझा में फँसी राष्ट्र की नौका को अर्थ-काम-प्रधान अपसंस्कृति की बाढ़ में बहने से बचाने और जन-जन में राष्ट्रप्रेम की भावना पैदा करने के लिए **राष्ट्र-सेवी कर्णधारों हेतु तो राष्ट्र की शिक्षा अनिवार्य है ही, नयी पीढ़ी को राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत, पवित्र और सुसंस्कृत बनाने के लिए उनमें भी राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार तेजी से करने की आवश्यकता है।**

इसलिए **सभी सरकारी, गैर-सरकारी, आर्य (श्रेष्ठ) विद्यालयों के आचार्यों के सामने नववर्ष-दिवस की चुनौती है कि वे आत्म-संकल्पित कर्त्तव्य के सम्पादन हेतु कटिबद्ध होकर वर्तमान (२०६२ वि०) सत्र में अधिक से अधिक छात्र अखिल-भारतीय प्रतियोगिता-परीक्षाओं में भेजें। राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार देश/राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण सेवा है और हाल में स्वीकृत नील-कमल सम्मान को उसकी अखिल भारतीय मान्यता समझकर अपना और अपने विद्यालय का गौरव बढ़ाएँ।**

भारत में सदियों की लम्बी गुलामी से मुक्ति के लिए पहला संघर्ष, फ्रांस की १७८९ ई० की जन-क्रान्ति के बाद १० मई १८५७ को मेरठ से ही प्रारम्भ हुआ था। '**मंगल पाण्डे ने किया, मेरठ में आरम्भ**' के गायकों को अजय मित्तल के उपर्युक्त संदेश में भी एक सामजस्य दीखा राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार द्वारा विश्वव्यापी क्रान्ति करने का। राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार-योजना का आरम्भ १९९६ में राष्ट्र-प्रेमी विद्वानों की आर्य

संस्था सर्व-सुलभ-साहित्य-सदन १० मई १९९६ को अपनी स्थापना की ३९वीं वर्षगाँठ मनाते समय किया था।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के एक दशक बाद, १० मई १८५७ की क्रान्ति की शताब्दी मनाते समय राष्ट्र के नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए कुछ विद्वानों ने अनुभव किया कि 'भा-रत' (भा=ज्ञान या प्रकाश की खोज और प्राप्ति में, रत=लगा हुआ देश)अब भी विश्वगुरु होने का प्राचीन गौरव प्राप्त कर सकता है कि यह आर्य (श्रेष्ठ) वैदिक विद्वान् प्रयासरत हो जाएँ। यह भी अनुभव किया गया कि वर्तमान अपसंस्कृति की बाढ़ से बचाने के लिए उपयुक्त राष्ट्रीय साहित्य का सृजन अनिवार्य है, जिसके लिए NCERT को निर्देश दिए जा चुके हैं।

**अन्य कोई पथ नहीं है श्रेय का**-राष्ट्रप्रेमी विद्वानों को एक मंच प्रदान करने के लिए १०/५/१९५७ को ही सर्व-सुलभ-साहित्य-सदन की स्थापना हुई। स्वतन्त्र होकर भी गुलामी में आरोपित अंग्रेजी-शिक्षा-ज्यों-की-त्यों स्वीकारने के कारण राष्ट्र की उभरती पीढ़ियाँ भारत, भारतीयता और भारतीय संस्कृति से कटती जारही हैं, यह देखकर सदन का प्रथम कार्य हुआ श्रेष्ठ राष्ट्रीय साहित्य तैयार करवाना जिसका क्रम आजादी मिलते ही टूट चुका था। आजीवन सदस्यों से प्राप्त सदस्यता-शुल्क तथा स्वल्प शासकीय सहयोग से ही श्रेष्ठ राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशित किया गया, सदस्यों को नि:शुल्क एवं जनता को लागतमात्र अल्प मूल्य पर उपलब्ध कराया गया। साहित्य की उत्कृष्टता का एक प्रमाण यही है कि सदन का अधिकांश साहित्य राष्ट्रपति-पारितोषिकों एवं राष्ट्रीय सरकार के पुरस्कारों से सम्मानित, फलत: विद्वत्समाज द्वारा विशेषरूप समादृत हुआ।

दूसरे चरण में **'राष्ट्रीय-साहित्य-परिचय-योजना'** आरम्भ की गई। इसके अंतर्गत देश के विशिष्ट विद्वानों को सदन के सम्मानित सदस्य बनाकर उन्हें राष्ट्रीय साहित्य इस निवेदन के साथ भेंट किया गया कि वे उसकी समीक्षा करके और उसपर लेख लिख-लिखकर देश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराएँ और/अथवा विचार-विनिमय/वाद-संवाद/साहित्यिक संगोष्ठियों के माध्यम से राष्ट्र को उससे भलीभाँति परिचित करा दें। इसी योजना के अधीन सदन-साहित्य पर दिल्ली/लखनऊ विश्वविद्यालयों में शोधकार्य हो रहा है। गुप्त-बंधुकृत **'अनल प्रकाश'** महाकाव्य पर दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलतराम कालेज में 'राष्ट्रीय एकात्मकता की सतत प्रवाहमान धारा का सन्दर्भ अनल-प्रकाश' शीर्षक अंतर्दृष्टि प्रस्तुत हुई जो भारत सरकार के सहयोग से प्रकाशित हुई है। लखनऊ विश्वविद्यालय में भी १९९६-१९९७ में शोधार्थी छात्रा भारती मिश्रा द्वारा एम्.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध **'गुप्त-बंधु-कृत अनल-प्रकाश महाकाव्य : एक अध्ययन'** स्वीकृत हो चुका है। अनेक विद्वानों के शोधपत्र और लेख सदन-साहित्य को उजागर करते हुए पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं तथा **'मत-अभिमत'** के अंकों में भी **'अनल-प्रकाश-दीपिका'** एवं अन्य शीर्षकों से समय-समय पर प्रकाशित किए गए हैं।

अगले चरण में **'राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार-योजना'** आरम्भ की गई जिसे देश के शीर्षस्थ नेताओं, राजपुरुषों और विद्वानों का आशीर्वाद प्राप्त है। इस योजना के अन्तर्गत कक्षा ३ से १२ तक के छात्रों को **'पर्यावरण विज्ञान और संस्कृति'** विषय की शिक्षा देकर यज्ञमय जीवन जीना सिखाया जाता है। देश के उच्चकोटि के शिक्षाविदों की सलाह से पाठ्यक्रम निश्चित होता है, पाठ्य-सामग्री तैयार करके दी जाती है और **अखिल-भारतीय-प्रतियोगिता-परीक्षाएँ** आयोजित करके पुरस्कार, पदक, प्रमाण-पत्र आदि दिए जाते हैं। इस समय (२०६२ विक्रमी में) विभिन्न प्रदेशों के १९ विद्यालयों के हजारों छात्र-छात्राएँ योजना से लाभान्वित हो रही हैं। उल्लेखनीय है कि इसमें किसी पन्थ, मज़हब, रेलीजन और मत-मतान्तर का भेदभाव नहीं है; सभी भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा पाकर मानव धर्म में दीक्षित होकर राष्ट्रभक्त नागरिक बनते और विश्वशान्ति में योग देते हैं।

**निष्कर्ष-'उसको भूला न चाहिए कहना, सुबह जो जाए और आए शाम'।** भारतीय (वैदिक) संस्कृति-अपहारक वर्तमान झंझा में फँसी राष्ट्र की नौका को अर्थ-काम-प्रधान अपसंस्कृति की बाढ़ में बहने से बचाने और जन-जन में राष्ट्रप्रेम की भावना पैदा करने के लिए **राष्ट्र-सेवी कर्णधारों हेतु तो राष्ट्र की शिक्षा अनिवार्य है ही, नयी पीढ़ी को राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत, पवित्र और सुसंस्कृत बनाने के लिए उनमें भी राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार तेजी से करने की आवश्यकता है।**

इसलिए सभी सरकारी, गैर-सरकारी, आर्य (श्रेष्ठ) विद्यालयों के आचार्यों के सामने नव-वर्ष-दिवस की चुनौती है कि वे इस योजना को अभियान का रूप देकर संगठित प्रयास करें; राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसारक बनें और बनाए; अधिक-से-अधिक विद्यालय/गुरुकुल योजना से सम्बद्ध कराएँ और छात्रों को लाभान्वित करें जिससे देश के सभी बच्चे देशभक्त और श्रेष्ठ भारतीय नागरिक बनकर देश का मान बढ़ाएँ। **राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रसार देश/राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण सेवा है और हाल में स्वीकृत नील-कमल सम्मान को उसकी अखिल भारतीय मान्यता समझकर अपना और अपने विद्यालय का गौरव बढ़ाएँ।** अधिक जानकारी के लिए ''सचिव, सर्व-सुलभ-साहित्य-सदन, बी-१५४ लोक विहार, दिल्ली-११००३४ से सम्पर्क करें।''

पश्चिम की अर्थ-काम-प्रधान संस्कृति की चकाचौंध की आड़ में भारतीय पर्यावरण-मैत्रीवाली संस्कृति के उन्मूलन के निहित प्रयास तो दूर रहे, फिरंगियों का फिरंग रोग (आतशक) एड्स का राक्षसी रूप धरकर विश्व-स्वास्थ्य को ही आतंकित करने लगा। ये पश्चिमी सोच के विनाशोन्मुख कार्य-क्लाप हैं। और विडम्बना यह है कि यह सब कुछ अनजाने नहीं हो रह, वरन् जान-बूझकर किया जा रहा है, बड़े जोर-शोर के साथ उत्साहपूर्वक किया जा रहा है। इसका कारण अज्ञान नहीं, मिथ्याज्ञान (सत्य-ज्ञान-आधारित) संस्कृति से श्रेष्ठ सिद्ध करने की उद्दाम कामना।

किन्तु विद्वानों ने यह भलीभाँति... अर्थ है

सूर्य की भाँति अस्तोन्मुख होना। **'पर्यावरण का संरक्षण हो, अन्यथा विनाश होगा'** अब यह तथ्य भलीभाँति उजागर हो चुका है, और यह भी, कि सभी संकटों का प्रभावी उपचार है बुद्धियों की संस्क्रिया, जो यज्ञमय जीवन जीना सिखाने-वाली राष्ट्रीय शिक्षा का विषय है। **'एक विश्व, नेक विश्व' रचने (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्-ऋग्वेद ९/६३/५)** की प्रेरक राष्ट्रीय शिक्षा को ही प्रकारान्तर से मान्यता देते हुए संयुक्त राष्ट्र संगठन के महासचिव, नोबेल-पुरस्कार-विजेता कोफी अन्नान महोदय ने २००१ ई० का पर्यावरण-दिवस मनाने की विषय-वस्तु **'विश्वव्यापी जीवन-तंत्र से जुड़िए'** घोषित की थी। आज संसार के लिए **'अन्य कोई पथ नहीं है श्रेय का'**। ओम शम्।

**-विश्वम्भरप्रसाद 'गुप्त-बंधु'** बी-१५४, लोकविहार, दिल्ली-११००३४

## गायत्री महायज्ञ

आर्यसमाज भीमनगर, गुड़गांव द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी २९वें गायत्री महायज्ञ का आयोजन ९ मई २००५ से १५ मई २००५ तक किया गया है। यज्ञ के ब्रह्मा डा० सत्यव्रत राजेश जी हरिद्वार होंगे। यज्ञ प्रात: ५.४५ से ७.१५ तक होगा। वेद प्रवचन और भजन रात्रि ८.३० से १०.३० बजे तक होंगे। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित महानुभव भी पधार रहे हैं।

१. आचार्य ब्र० राजसिंह जी आर्य, दिल्ली (प्रधान, दिल्ली अ.प्र.स.)
२. श्री योगेशदत्त जी (प्रसिद्ध भजनोपदेशक), बिजनौर (उ०प्र०)
३. श्री विजयानन्द जी, संगीताचार्य, फिरोजपुर (पंजाब)

दिनांक १४ मई प्रात: ९.०० बजे प्रो० एस.के.आर्य ध्वजारोहण करेंगे और रात्रि को ८.३० से ११.०० बजे तक भजन संध्या का आयोजन किया गया है। रविवार प्रात: ७.०० बजे से ८.३० बजे तक यज्ञ एवं पूर्ण आहुति और ८.३० से ९.०० बजे तक भजन ९.०० से ११.३० तक आर्य सम्मेलन जिसके अध्यक्ष श्री राजपाल जी आर्य, मुख्य अतिथि श्री धर्मबीर गाबा एवं श्री योगेश मुंजाल होंगे।

**-अशोक आर्य, प्रधान आर्यसमाज, भीमनगर, गुड़गांव**

# आर्यों के न्यायालय में

-आचार्य बलदेव, सभाप्रधान

जब से आर्य अधिकार पाने के लिये सरकार के कोर्ट में चक्कर काटने लगे, तथा सभाओं पर कब्जा करने का सिलसिला चला तभी से आर्यसमाज का नाश होना आरम्भ हुआ है। दूसरों का फैसला करवाने वाले तथा करने वाले अपना फैसला करवाने के लिए वकील करते फिरते हैं तथा जजों की शरण लेते हैं। मत-मतान्तरों तथा साधारण लोगों के लिये वर्त्तमान के आर्य तथा आर्यसमाज तमाशा बने हुये हैं। भ्रष्ट से भ्रष्ट शराबी, कबाबी, मांसाहारी, जुआरी सब प्रकार से गिरा हुआ व्यक्ति भी आर्यों तथा आर्यसमाज की खिल्ली उड़ाता है। आर्यसमाजों तथा सभाओं में सर्वसम्मति से आग्रहपूर्वक अधिकार सौंपा जाता था। कार्य करने की लगन थी, अधिकार पाने की नहीं। कर्मठ, दिन-रात कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता थे। कार्यकर्ता कहलाने में गौरव अनुभव करते थे, प्रधान तथा मंत्री कहलाने में शर्म अनुभव करते थे। ऐसे कार्यकर्त्ताओं द्वारा अपने जीवन को पूर्ण यज्ञमय बनाकर इतना कार्य किया गया कि गाँव के गाँव में प्रत्येक के सिर पर चोटी व गले में यज्ञोपवीत (जनेऊ) दिखाई देते थे। संपूर्ण ग्राम वेदप्रचार में आकर शांति से बैठकर सुनता था। आर्यसमाज के दैनिक सत्संग में भी आर्यसमाज के भवनों में बैठने के लिये जगह नहीं मिलती थी। गुरुकुलों तथा आर्यसमाजों के उत्सव मेले के रूप में परिवर्तित हो जाया करते थे। पैसे के स्थान पर चरित्र की पूजा होती थी। विद्वान् तथा धर्मात्मा की बात सर्वोपरि मानी जाती थी। उसी का नेतृत्व सब स्वीकार करते थे। अब आर्यसमाज तथा सभाओं पर अधिकार पाने के लिये मुकदमे चल रहे हैं। एक दूसरे के दोष देख रहे हैं। प्रत्येक आर्य पृथक्-पृथक् घूमता दिखाई दे रहा है। फूट का साम्राज्य है। स्वामी जी महाराज के शब्दों में-"न जाने फूट का रोग आर्यो से समाप्त होगा अथवा सर्वस्व का नाश करके छोड़ेगा।"

इस समय आर्यसमाज के अस्तित्व को बचाने के लिए पदत्याग कार्य में लगें। इसमें पहल करने की बड़ी आवश्यकता है। पवित्र समाज बनाने के लिये सर्वप्रथम अपने आपको पवित्र करना चाहिये। दूसरों को बुराई त्यागो कहने से पूर्व दूसरों से अपनी त्रुटियां पूछनी चाहियें। यदि कोई बता दे तो उसका विशेष धन्यवाद करना चाहिये। बुराई ज्ञात होने पर उसे त्यागने का पूर्ण यत्न करें। बार-बार अपने आपको आर्यों के न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करना चाहिये। १०वें नियमानुसार सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिये।

एक बार दो माताओं में एक बालक के विषय में झगड़ा हो गया। दोनों ने अपना-अपना पुत्र होने का दावा किया। न्यायाधीश ने आधा-आधा काटकर दोनों को देने का फैसला लिया। जिसका लड़का था उसने कहा बच्चे को मत मारो, दूसरी को देने को कहा। आर्यो आर्यसमाज को हैदराबाद के नवाब तक हिला देने वाली, क्षमा मांगने पर विवश करने वाली पहली शक्ति को पुनः प्राप्त करने हेतु त्याग का जीवन अपनाओ। सब एषणाओं को मैंने ग्रहण कर लिया ऐसा कार्य आर्यों तथा संसार के सामने मत लाओ। सभी पदत्याग का ऐतिहासिक उदाहरण देकर सार्वदेशिक सभा से आरम्भ कर सभी प्रान्तों में एक सर्वसम्मान सभा बनायें। अब भी न संभले तो आगे आने वाली पीढ़ी के लिये निन्दा के पात्र बनेंगे। हरयाणा प्रान्त मे दो वर्ष से सर्वसम्मत एक सभा है। वेद प्रचार किस प्रकार तेज गति से हो रहा है सभी को ज्ञात है। बीच-बीच में बड़ी-बड़ी सभाओं तथा सम्मेलनों द्वारा सर्वसम्मत सभा की पुष्टि होती रही है।

१. इसे दृढ़ बनाने हेतु-आ०प्र०सभा कार्यालय में ८.५.२००५ रविवार ११ बजे आर्य प्रतिनिधियों तथा कर्मठ आर्यों की एक मीटिंग होगी।

२. २९.५.२००५ को गुरुकुल झज्जर में प्रांतीय महासम्मेलन होगा।

३. ग्रामों में आर्यसमाजों तथा आर्यों से संपर्क किया जा चुका है। अनेक समाजों के कार्यकर्त्ता तथा शुभचिंतक सभा में आ चुके हैं। सभी ने निश्चय किया है यदि आ०प्र०सभा हरयाणा में किसी प्रकार से कब्जा करने का इतिहास दोहराया तो ऐसा सबक सिखाया जाये कि सदैव के लिये यह कलङ्क आर्य सभा से समाप्त हो जाये। हरयाणा में आर्यों की लग्न देखकर सभी को यह अनुभव हो रहा है कि आर्यों का पहला युग पुनः हरयाणा की धरती पर अवतरित होगा। सार्वदेशिक सभा तथा सभी प्रांतीय सभा हरयाणा सभा का अनुकरण करेंगी। संसार के सम्मुख आर्यसमाज का अस्तित्व पूर्व से अधिक शक्ति से उभरेगा। निश्चित रूप से आर्य वेद के निम्न उद्घोष को पूर्ण करने में सफल होंगे। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।"

# जूआँ जि० सोनीपत में आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज जिला सोनीपत में १२,१३ अप्रैल २००५ को आर्यसमाज मंदिर में प्रातःकाल आचार्य वेदपाल शास्त्री ने यज्ञ करवाया। इस अवसर पर आर्य कार्यकर्ता एवं छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के प्रधान श्री ओम्प्रकाश आर्य, श्री ज्ञानसिंह आर्य तथा आर्यसमाज के मंत्री श्री खजानसिंह आर्य ने स्वतंत्रता संग्राम में आर्यसमाज के योगदान एवं शहीद भगतसिंह, सरदार उधमसिंह, श्री चन्द्रशेखर आजाद, पं० रामप्रसाद बिस्मिल, श्री सुभाषचंद्र बोस, स्वामी श्रद्धानंद आदि क्रान्तिकारियों के कार्यों पर प्रकाश डाला। आचार्य वेदपाल ने ग्राम के बालकों द्वारा योग का प्रदर्शन दिखाकर सभी को प्रभावित किया। रात्रि को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रसिद्ध नवयुवक भजनोपदेशक पं० तेजवीर ने ग्राम में वैदिक धर्म की विशेषताओं पर तथा वीर हकीकतराय आदि की वीरगाथा प्रभावशाली ढंग से सुनाई। ग्राम जूआँ की नवनिर्वाचित सरपंच श्रीमती बबीता पंचायत नं० १ तथा श्रीमती संतोष पंचायत नं० २ का आर्यसमाज की ओर से स्वागत किया। दोनों सरपंचों ने आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग देने का वचन दिया। समारोह से पूर्व ९ अप्रैल को ग्राम में शोभायात्रा निकाली गई थी। जिसमें स्कूलों के छात्र तथा छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा को वेदप्रचार आदि हेतु १६०० रु दिया गया।

-केदारसिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज जूआँ



# बधाई और धन्यवाद



श्रीमती प्रतिभा सुमन

१६ अप्रैल २००५ शनिवार को नगरपरिषद रोहतक के वार्ड नं० ७ से भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी निवर्तमान नगरपरिषद् प्रधान (चेयरमैन) **प्रतिभा सुमन** (पत्नी श्री विजयकुमार पुत्र वेदव्रत शास्त्री) भारी बहुमत से चुनाव जीत गईं। इस शानदार विजय के लिए वार्ड नं० ७ के सभी मतदाताओं, कार्यकर्ताओं, शुभचिन्तकों और बंधु-बान्धवों को बधाई देते हुए हार्दिक धन्यवाद प्रेषित करते हैं।

जबसे लोकसभा के चुनावों में एक सोनीपत की सीट छोड़कर शेष सभी ९ सीट कांग्रेस को मिली हैं तभी से हरयाणा में कांग्रेस की जबरदस्त लहर चल पड़ी है। इसके पश्चात् हरयाणा विधानसभा चुनावों में मुख्यमंत्री चौटाला की पार्टी को ९ और भा०ज०पा० को केवल दो स्थानों पर सफलता मिली तो कांग्रेस की लहर व आंधी और तेज हो गई तथा यहाँ कांग्रेस की सरकार बन गई और उसमें भी चौ० भूपेन्द्रसिंह हुड्डा के मुख्यमंत्री बनने पर तो कांग्रेस की आंधी ने तूफान का रूप धारण कर लिया। इसके पश्चात् ग्राम पंचायत, ब्लॉक समिति और जिला परिषद् चुनाव में भी कांग्रेस का ही वर्चस्व रहा। ऐसी स्थिति में रोहतक नगरपरिषद् के चुनाव में पार्टी के चुनाव चिह्न कमल के फूल पर चुनाव लड़ने वाले केवल ६ प्रत्याशी ही मिले। शेष प्रत्याशियों ने अपने आपको पंचायती अथवा कांग्रेस समर्थित प्रत्याशी घोषित कर दिया। स्थिति ऐसी बन गई कि एक वार्ड में अनेक प्रत्याशियों की कांग्रेस की टिकट के लिए लाइन लग गई और दूसरी ओर भा०ज०पा० के अनेक पुराने पार्षदों ने भी पार्टी के चुनाव चिह्न पर चुनाव लड़ना स्वीकार नहीं किया। इंडियन नेशनल लोकदल पार्टी का तो कोई नामलेवा भी नहीं रहा। भा०ज०पा० के चुनाव चिह्न पर खड़े हुए ६ में से तीन प्रत्याशी सफल हुए और तीन हार गये।

सर्वत्र यही प्रचार था कि केन्द्र में कांग्रेस सरकार है, हरयाणा में भी कांग्रेस की सरकार है। शहर का विधायक कांग्रेसी और सांसद भी कांग्रेस का ही है और सबसे बड़ी बात यह है कि हरयाणा का मुख्यमंत्री भी रोहतक का ही है। ऐसी परिस्थिति में प्रतिभा सुमन का भारतीय जनता पार्टी के चुनाव चिह्न पर दोबारा पार्षद चुना जाना विशेष महत्त्व रखता है। इस विजय का श्रेय जहां वार्ड ७ के निष्ठावान् ईमानदार कार्यकर्ताओं और मतदाताओं को जाता है वहां विगत वर्षों में पार्षद और परिषद् प्रधानपद पर आसीन होकर प्रतिभा सुमन ने अपने वार्ड तथा पूरे शहर में जो विकास कार्य करवाये उनको भी जाता है। मतदाताओं ने प्रतिभा सुमन के विकास कार्यों की कदर की है अतः भविष्य में भी इसी प्रकार विकासकार्य करते रहना चाहिए।

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक -वेदव्रत शास्त्री

# [आ]चमन का रहस्य-सफलता की तीन सीढ़ियाँ

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, एम.ए. पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गंगवा रोड़, हिसार

ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना के आठ मन्त्रों के पश्चात् यज्ञ से पूर्व तीन मंत्रों से आचमन विधि का निर्देश है। आचमन की विधि का भावार्थ यह है कि यजमान, ऋत्विज तथा यज्ञ में उपस्थित सब लोग इस भावना से बैठे हैं-उनका बिछौना भी वह है, ओढ़ना भी वह है। इस प्रकार अमृत की गोद में बैठे हुए वे प्रतिज्ञा करते हैं कि अगर वे यश प्राप्त करना चाहेंगे तो झूठा यश नहीं चाहेंगे, सच्चाई ईमानदारी से जो यश मिलेगा उसी यश को वे चाहेंगे। इसी प्रकार से वे प्रतिज्ञा करते हैं कि जो धन वे चाहेंगे वह सच्चाई और ईमानदारी से कमाया हुआ धन होगा, बेईमानी से, धोखाधड़ी से कमाया हुआ धन नहीं होगा। वेद में जल को औषध भी कहा है-

**''आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्त कृण्वन्तु भेषजम्।''**

अर्थात् जल कल्याणकारी औषध है। यज्ञ से पूर्व हमने अपने शरीर का निरीक्षण किया तब पता चला कि हमारे अंदर तीन विकार मौजूद हैं-वात, पित्त, कफ। इनमें से यदि कोई कुपित हो जाये तो हम स्वस्थ नहीं रह सकते। इसलिए हमने उपचार हेतु जल को औषध मानकर तीन आचमन किए। साथ ही परमात्मा से प्रार्थना की-(ओ३म् अमृतो-पस्तरणमसि) हे अमृतस्वरूप परमात्मा आप नीचे के बिछौना हो यानि नीचे की रक्षक माँ की गोद होती है इसलिए आप हमारी माँ और हम आपकी गोद में बैठकर सुरक्षित हैं। माँ की गोद का बहुत बड़ा महत्त्व है। सड़क के किनारे कुछ छोटे बच्चे खेल रहे थे। साधुवेश में एक जटाधारी सिर से पैरों तक राख लगाए हाथ में चिमटा लिए खेलते हुए बच्चों के पास से गुजरा। तभी एक बच्चे ने थोड़ी धूल उठाकर उस साँधु की पीठ पर फैंक दी। साधु बाबा कुछ नहीं बोले। तब दूसरे बच्चे ने भी धूल डाली फिर भी साधु बाबा कुछ न बोले। तब जितने बच्चे खेल रहे थे सभी धूल डालने लगे, उनको एक खेल मिल गया। साधु बाबा कब तक सहन करते, उन्होंने चिमटे को पटका और बाबा से डरकर सभी बच्चे भागने लगे। बाबा ने एक बच्चे का पीछा किया। वह बच्चा भागते हुए अपने घर पहुँचा। दरवाजे पर उसकी माँ बैठी थी वह माँ की गोद में बैठकर लिपट गया और डर से काँप रहा था। बाबा आकर सामने खड़ा होगया और बोला-माई, यह बच्चा तेरा है। माँ ने हाथ जोड़कर कहा हाँ, महाराज मेरा ही है। बाबा ने कहा-यह बच्चा शैतान है राहगीरों पर धूल डालता है, पत्थर मारता है। माँ ने हाथ जोड़कर कहा-आप तो महात्मा हैं, साधु हैं, ईश्वर के अवतार हैं, क्षमा कर दीजिए। साधु बाबा खुश होकर जैसे ही मुड़े थे कि बच्चे ने साधु बाबा को अंगूठा दिखाया। अंगूठे को देखकर बाबा फिर भड़क उठा और बोला-देख माई, तेरा बच्चा मुझे अंगूठा दिखाकर चिढ़ा रहा है। माँ ने कहा-महाराज एक बात पूछूं, बाबा हाँ, पूँछ क्या पूछती है। यह बतलाइये कि क्या यह बच्चा वही है जो आपके डर से कांप रहा था कि कोई दूसरा है। बाबा बोला-यह वही शैतान बच्चा तेरी सह पर ही मुझे चिढ़ा रहा है। मेरा बच्चा शैतान नहीं यदि शैतान होता तो [illegible] से डरता नहीं, अब जो आपका अंगूठा दिखा रहा है उसका रहस्य सुनो-आप किस खेत की मूली हैं दुनिया की कोई भी ताकत अब इस बच्चे को भयभीत नहीं कर सकती जब तक यह मेरी गोद में है। इसीलिए पहले आचमन में कहा गया-प्रभु आप हमारी माँ हैं, हम तेरी गोद में बैठकर निर्भीक हो गये हैं। फिर ख्याल आया नीचे से तो सुरक्षित हैं, परन्तु ऊपर से हमला हो सकता है। इसलिए हमने दूसरा आचमन किया-**ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।** अर्थात् हे रक्षक अमृतस्वरूप भगवन् आप हमारे ओढ़ने के समान हैं यह मैं यथार्थरूप से जानता हूँ। यानि आप हमारे पिता हो। नीचे ऊपर से सुरक्षित हो जाने पर विचार आया कि जीवनयापन के लिए केवल सुरक्षा ही पर्याप्त नहीं है। तब हमने तीसरा आचमन-**ओ३म् सत्यं यशः श्रीमयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।** किया। अर्थात्-हे रक्षक भगवन्-ब्राह्मणों के अंदर ब्रह्मविद्या से प्राप्त जो सत्य है वह मुझे दे दो और क्षत्रियों को जो यश उनके बाहुबल से प्राप्त है वह मुझे दे दो और उद्योगपतियों ने जो अपने उद्योग से धन (लक्ष्मी) श्री प्राप्त की है वह मुझे दे दो। इस प्रकार इन तीन आचमनों से ऊपर नीचे की सुरक्षा और सत्य, यश और धन हम परमात्मा से मांगते हैं।

अथर्ववेद १२-५-२ मंत्र **'सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता'** में भी आचमन मंत्र का सार विद्यमान है। इस मंत्र में कुल चार शब्द हैं-सत्य, श्री और यश, ये तीन शब्द और चौथा आङ्। आङ् का अर्थ है-समन्तात=सब ओर से। किंतु चार शब्द के इस छोटे से वेदमंत्र में आचमन का रहस्य गागर में सागर के समान भर दिया है सफल जीवन का पूर्ण चित्र खींचकर रख दिया है। यद्यपि यह आचमन मंत्र नहीं है किन्तु-**ओं सत्यं यशः श्रीमयि श्री श्रयताम् स्वाहा** का भावार्थ और रहस्य इसमें विद्यमान है। **'सत्येन आवृताः'** हमारा जीवन सत्य से युक्त हो, जीवन में सब ओर सत्य का व्यवहार हो, हम सत्यनिष्ठ बनें। मिथ्याव्यवहार छोड़कर, सत्याचरण को अपनाएं। मनुष्य की उन्नति और अवनति की कसौटी भी सत्य है जिसका साक्षी मनुष्य की अपनी आत्मा है। यदि मनुष्य सत्य पर चलता हो तो मनुष्य की आत्मा बंधु के समान उसकी सहायता करती है और यदि असत्य और अधर्म पर चलता हो तो उसकी आत्मा ही उसकी विरोधी हो जाती है। ऋग्वेद में आया है-**'सत्येनोत्तभिता भूमिः'**-इस संसार को सत्य ने संभाल रखा है। यदि इसमें से सत्य निकल जाये तो संसार चल नहीं सकता। लोग आजकल कहते हैं कि व्यवहार में झूठ अधिक हो गया है। इसका अभिप्राय नहीं कि सत्य की तुलना में झूठ अधिक हो गया है। सत्य आज भी बहुत अधिक है और झूठ बहुत कम। झूठे से झूठा व्यक्ति भी सारे दिन में तोड़ जोड़ के समय कुछ ही मिथ्याभाषण करता है अन्यथा परिवार में, मित्रों में सत्य का व्यवहार ही करता है। समीप और दूर के व्यवसाय सत्य पर [illegible] से बढ़कर कोई धर्म नहीं, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं। सत्य से उत्तम कोई ज्ञान नहीं, अतः सत्य का स्थान सबसे विशेष है। सत्य को विस्तृत रूप से समझने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' पढ़ना अनिवार्य है। सत्यार्थप्रकाश के आरम्भ में महर्षि घोषणा करते हैं-**''त्वम् एव प्रत्यक्षं ब्रह्माऽसि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यम् वदिष्यामि''** इस प्रकार की कठोर सत्य की घोषणा वही कर सकता है जो साक्षात्कृतधर्मा व्यक्ति है, जिसे योग समाधि में परमेश्वर प्रत्यक्ष हो। सत्यार्थ-प्रकाश के अंत में उन्होंने लिखा-**''त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्माऽसि, त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वादिषम्, ऋतमवादिषम् सत्यमवादिषम्''** इस प्रकार अपनी सत्यपालन की प्रतिज्ञा का उन्होंने अक्षरशः पालन करते हुए अमरग्रंथ सत्यार्थप्रकाश की रचना की। इस प्रकार सत्यमय व्यवहार जीवन की पहली सफलता है। दूसरी बात कही सत्य व्यवहार रखते हुए जो संसार का ऐश्वर्य आपको प्राप्त हो यह आपके जीवन की दूसरी सफलता है। धन अपने आप में कोई बुरी और त्याज्य वस्तु नहीं है। धर्मात्मा के पास आकर धन धर्म का विस्तार करता है। कहीं धन के माध्यम से गुरुकुल, विश्वविद्यालय, कन्या पाठशालाएं, अनाथालय, अस्पताल खुलेंगे, कहीं विधवाओं और आपत्तिग्रस्त लोगों, भूकम्प पीड़ितजनों के परिवारों को पुनर्वास सुविधा मिलेगी। अतः आचमन का रहस्य यही है कि सत्यमय व्यवहार से प्राप्त धन मनुष्य की दूसरी सफलता है। वेद कहता है-**'श्रिया प्रावृताः'** अर्थात् सत्य की अपेक्षा से धन की अधिकता रहे। नीतिकार कहते हैं-धन की तीन गतियाँ होती हैं-दान-भोग और नाश। दान धन का नमक है। जो व्यक्ति धन को सुरक्षित रखना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि धन को परोपकार के कार्यों में लगायें। जो ऐसा नहीं करते हैं और न स्वयं ही धन को खर्च करते हैं न धन में वृद्धि करते हैं उनके धन की तीसरी गति 'नाश होना' हो जाती है। इसके पश्चात् आचमन में यश प्राप्ति की बात कही गई है। वेद मंत्र भी कहता है- **'यशसा परीवृता'** अर्थात् सत्य की अपेक्षा से धन की अधिकता रहे और इन दोनों की अपेक्षा यश की मात्रा चारों ओर रहे। सत्य और धन का समस्त क्षेत्र यशस्वी बनाने वाला हो। सफलता की तीसरी सीढ़ी के लिए यशस्वी जीवन परम आवश्यक बताया है। आपका सत्य का व्यवहार आपको यश नहीं देता है तो उसमें कहीं त्रुटि है। विद्वानों ने ऋषियों ने सत्यभाषण के साथ कुछ शर्तें लगाई हैं-यथा-**सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्। प्रियञ्च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः॥** मनु० ४/१३८। इन सावधानियों के साथ जो सत्य बोला जायेगा, वही यश देगा। सत्य से कमाए धन को शुभ कार्यों में व्यय करोगे तो उससे आपको यश मिलेगा। गृहस्थजनों के यह यश की भावना पद पद पर बुराई से बचाती है। बुराई का विचार आते ही अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा का ध्यान आता है और हम उस कुसंस्कार को दबा देते हैं। गीता में कहा है-**'सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते'** सम्मानित व्यक्ति का अपयश होना मृत्यु से भी बुरा है। अतः आचमन का रहस्य यही है कि आपका सत्य और धर्मपूर्वक कमाया धन आपको यशस्वी बनावे, यही जीवन की पूर्ण सफलता है। सत्य, यश और श्री ये सफलता की तीन सीढ़िया हैं।

---

राम नवमी पर....

## दिया धर्म का नव-संदेश

सन्त सुरक्षा, दुष्ट हनन हित, तुम! धरती पर आये थे,
रावण सदृश अनेक राक्षसों को तुम! मार गिराये थे,
जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, मर्यादाओं का पालन कर-
बने तुम्हीं थे युग के जेता, बने धरा के सूर्य प्रखर॥

असुर वृत्तियों से धरती यह, राम! तुम्हीं ने मुक्त किया,
भारत की सीताओं को फिर अभय किया, उन्मुक्त किया,
दिव्य तुम्हारे संकल्पों से बने सभी जन वेद-पथिक,
आर्य बने, जग आर्य बनाया, किया नियोजित सत्य अधिक॥

शौर्यशील थे, धैर्यशील थे, क्षमाशील थे तुम अभिराम,
प्रजा प्रेम था अद्भुत तुममें, युग मानव तुम ललित ललाम,
मर्यादापुरुषोत्तम बनकर, दिया धर्म का नव संदेश,
तुमने भरा धरा के उर में, मानवता का भाव विशेष॥

❑ राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

---

## निर्वाचन

आर्यसमाज रामनगर का वार्षिक चुनाव वर्ष २००५-२००६ के लिए प्रो० ओमकुमार जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज रामनगर के पदाधिकारियों की सूची निम्न प्रकार है-प्रधान-श्री अभयसिंह आर्य, मंत्री-श्री अजीतकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री सतनारायण आर्य, उपप्रधान-श्री बलजीतसिंह आर्य, उप मंत्री-श्री सुभाष आर्य, प्रचारमंत्री-श्री यज्ञवीर आर्य, सह प्रचारमंत्री-श्री राजकुमार आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री हरिलाल आर्य (विजय)। साथ ही साथ कार्यकारिणी का भी गठित कर दिया गया है।

# आर्य-संसार

## गुरुकुल धीरणवास (हिसार) में सवा मन घी का यज्ञ सम्पन्न



हरयाणा आर्य युवक परिषद् की ओर से नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर गुरुकुल धीरणवास में स्वामी सर्वदानन्द की अध्यक्षता में आचार्य सत्यव्रत (रोहतक) के ब्रह्मत्व में सवा मन घी का बृहद् यज्ञ किया गया। परिषद् के बौद्धिक अध्यक्ष डॉ० प्रमोदकुमार, आचार्य हरपाल शास्त्री (हिसार) तथा सुरेन्द्र शास्त्री ने मन्त्र पाठ किया। यज्ञ पर ८ दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। कई युवकों ने जनेऊ लिया तथा शराब, धूम्रपान आदि बुराइयों से दूर रहने का संकल्प लिया।

आचार्य सत्यव्रत ने पंचमहायज्ञों की व्याख्या करते हुए कहा कि यज्ञ को जीवन का आवश्यक अंग बनाना चाहिए। यज्ञ संगठन का प्रतीक है। अगर आज भी घर-घर में यज्ञ हो तो हम सुखी जीवन जी सकते हैं। श्री सेठ राधेश्याम गुप्त ने परिषद् द्वारा प्रकाशित भजनों की पुस्तक 'वैदिक गीतों का तराना' का विमोचन किया गया। परिषद् की ओर से गुरुकुल के विशेष सहयोगी सेठ विजय गावड़िया, भगत देवराज एडवोकेट, सेठ राधेश्याम गुप्त, माता लीलावती आर्या (हिसार) तथा किसान नेता चौ० घासीराम नैन को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया।

दोपहर बाद १ बजे चौ० घासीराम नैन अध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन की अध्यक्षता में विचारगोष्ठी हुई। इस अवसर पर प्रो० ओमकुमार आर्य (जीन्द), दयानन्द आर्य (झज्जर), प्रिं० बलवीरसिंह (दादरी), रामस्वरूप आर्य (गोरखपुर), ब्र० दीपकुमार आर्य, पं० रामस्वरूप शास्त्री गुरुकुल आर्यनगर, स्वामी सर्वदानन्द, श्री क्रान्तिकारी आदि ने आज आर्यसमाज का संगठन, गोरक्षा, शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन, राजनैतिक व सामाजिक व्यवस्था बदलना तथा बढ़ते हुए लिंगानुपात व अश्लील प्रसारण पर चिन्ता प्रकट की।

चौ० घासीराम नैन ने गोरक्षा पर बल देते हुये गोशालाओं में उनकी नस्ल सुधारने पर बल दिया। साथ ही कहा कि सरकार किसी दल या पार्टी की हो हमें अपनी जायज मांगों की लड़ाई लड़ने के लिए किसान-मजदूर को संगठित रहना चाहिए। अन्त में परिषद् के अध्यक्ष अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने यज्ञ व विचार गोष्ठी में पधारे आर्य नर-नारियों का धन्यवाद किया तथा परिषद् के भावी कार्यक्रमों की घोषणा की कि १०० गांव में बृहद् किये जायेंगे। नशाखोरी, गोहत्या, अश्लील प्रसारण, दहेज, धार्मिक पाखण्ड के खिलाफ युद्ध स्तर पर जनजागरण अभियान चलाया जाएगा। स्कूल-कालेज की छुट्टियों में हिसार, करनाल, फरीदाबाद, फतेहाबाद, भिवानी जिलों में चरित्र निर्माण व्यायाम शिविर लगाये जायेंगे।

**-दीपेन्द्र शास्त्री, महामन्त्री हरयाणा आर्य युवक परिषद**

## समय का पालन कौन करेगा?

(१) प्रायः आर्यसमाज के उत्सवों में देखा जाता है कि कभी निश्चित समय पर कार्यक्रम को समाप्त नहीं करते, विज्ञापन में समापन का समय एक बजे लिखा है परन्तु दो बजे के बाद शान्तिपाठ किया जाता है।

(२) इसका कारण है कि वक्ता और नेता कभी समय पर नहीं आते। जब समय समाप्त होने में १५-२० मिनट शेष रहते हैं तब आते हैं। फिर उनका एक-एक व्यक्ति से फूल-माला द्वारा सम्मान-स्वागत कराया जाता है। उन्हें पांच मिनट बालने के लिये कहा जाता है परन्तु २०-२५ मिनट लगा देते हैं। इस प्रकार मंच संचालक भी वक्ताओं की प्रशंसा के पुल बांधने में अपनी विद्वत्ता दर्शाते हैं।

(३) श्रोतागण जो दूर-दूर से आते हैं, सुबह ९-१० बजे से सुनते-सुनते ऊब जाते हैं। मैंने देखा है कि अनेक भाई-बहन ऊंघने लगते हैं या सो जाते हैं। समय की सीमा में रहना या मर्यादा को तोड़ना कोई अनुशासन नहीं है।

(४) प्रदर्शन के अतिरिक्त इस अतिक्रमण से कोई लाभ व प्रभाव नहीं है। यह कोई जटिल समस्या भी नहीं है। इसे आसानी से सुधारा जा सकता है। केवल दृढ़निश्चय के चरित्र की आवश्यकता है। स्वागत-सम्मान एक व्यक्ति ही करे।

**वेद का सन्देश है-'मनुर्भव'** अर्थात् मनुष्य बन।

**बच्चा-बूढ़ा और जवान। हमेशा रखो समय का ध्यान॥**

**-देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१**

## आर्यसमाज गुढा रोड गोहाना मंडी को १०० पुस्तकें भेंट की गईं

श्री प्रेमसिंह मलिक, श्री सत्यवीरसिंह मलिक व श्री नरेन्द्रसिंह मलिक ग्राम बीधल तह० गोहाना जिला सोनीपत ने अपने पिता स्व० श्री गिरधारीलाल आर्य की स्मृति में स्थापित आर्य पुस्तकालय गांव बीधल की सभी १०० पुस्तकें जो आर्यसमाज से सम्बन्धित हैं, अपने स्वर्गीय पिता श्री गिरधारीलाल आर्य की स्मृति में आर्यसमाज गुढा रोड, गोहाना मंडी को सादर भेंट कीं। आर्यसमाज गुढा रोड गोहाना के मंत्री सूबेदार करतारसिंह आर्य तथा अन्य सदस्यों ने इस आर्य परिवार का धन्यवाद किया।

**-सत्यवीरसिंह मलिक आर्य**, प्रधान, आर्यसमाज बीधल, गली नं० ४, वार्ड ३ आदर्श नगर, गोहाना

## निर्वाचन

आर्य केन्द्रीय सभा (फरीदाबाद) के द्विवार्षिक चुनाव रविवार ३ अप्रैल को नेहरू ग्राउण्ड आर्यसमाज में हुए जिसमें डॉ० विमल महता को पांचवीं बार सर्वसम्मति से चुन लिया गया जो फरीदाबाद के आर्यजगत् की एकता उत्साह और परस्पर सौहार्द का सूचक है।

**-अजीत आर्य, मंत्री**

## भूल सुधार

दिनांक ७ अप्रैल, २००५ के सर्वहितकारी में महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर की प्रवन्धकर्त्री विद्यार्य सभा की सूची में श्री रामवीर शास्त्री (कंसाला) तथा श्री महाशय बलवन्तसिंह आर्य (मकड़ौली कलां) के नाम भूल से अंकित हो गये हैं। इन दोनों के स्थान पर श्री डॉ० धर्मवीर (अजमेर) तथा श्री प्रो० राजपाल (बरहाणा) ये दो नाम पढ़े जायें।

**-डॉ० राजकुमार आचार्य**, पूर्व उपमंत्री, विद्यार्यसभा महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर

## श्री रामचन्द्र के गुण गाओ

❑ पं० नन्दलाल 'निर्भय' पत्रकार, ग्राम बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)

श्री रामचन्द्र को याद करो।
अब समय नहीं बर्बाद करो॥
श्री रामचन्द्र थे तपधारी।
वेदों के सच्चे प्रचारी॥
मां-बाप के आज्ञाकारी थे।
वे ईशभक्त बलधारी थे॥
संकट में कभी न घबराए।
दानव दल से ना दहलाए॥
बाली रावण को नष्ट किया।
ऋषियों मुनियों का साथ दिया॥
परनारी को माता माना।
परधन को था मिट्टी जाना॥
प्रजा प्राणों से थी प्यारी।
वे दयावान थे न्यायकारी॥
निजी भ्राता उनको प्यारे थे।
मित्रों के सबल सहारे थे॥
वे धर्म-कर्म के थे ज्ञाता।
शास्त्रों के अद्भुत व्याख्याता॥
थी रामचन्द्र में मानवता।
सच्चाई का था पूर्ण पता॥
वे पीर पराई हरते थे।
अन्यायी उनसे डरते थे॥
यश गाते उनका नर-नारी।
महिमा गाती दुनिया सारी॥
फिर पाप गया है बढ़ जग में।
शैतान गये हैं चढ़ जग में॥
आतंकवाद का जोर यहां।
है जन्म जाति का शोर यहां॥
गऊएं जाती हैं नित मारी।
दनदना रहे भ्रष्टाचारी॥
नेता बन गए दुष्ट पापी।
करते हैं पाप नित संतापी॥
हे आर्यकुमारो! तुम जागो।
अंगड़ाई लो, आलस्य त्यागो॥
श्री रामचन्द्र के गुण गाओ॥
वैदिकधर्मी सब बन जाओ।
दुष्टों का वंश मिटाओ तुम।
मिटता संसार बचाओ तुम॥

## लाला अमरचन्द्र आर्य दिवंगत

आर्यसमाज हथीन जनपद फरीदाबाद के नेता लाला अमरचन्द्र आर्य का अस्सी वर्ष की दीर्घायु में निधन हो गया जिनकी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन दिनांक ३ अप्रैल २००५ को नगर हथीन में किया जाएगा। श्री अमरचन्द्र आर्य के निधन से समस्त क्षेत्र में शोक छा गया है। वे गरीबों के सच्चे सहयोगी थे।

-पं० नन्दलाल 'निर्भय' पत्रकार, ग्राम बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)

# मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम गुण-गान

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

श्री रामचन्द्र जी ने पितृ आज्ञा को सिर धरकर, अयोध्या के महासाम्राज्य को त्यागकर और महाकान्तार के दण्डकारण्य में निर्वासित होकर अपने प्रेम और सदुपदेश से वानर जाति को अपना मित्र बनाया और सुग्रीव को दिया तथा अत्याचारी राक्षसों के दमन के लिये महावीर हनुमान् के सेनापतित्व में उन्हीं वानरों की अपनी संगठन शक्ति से प्रबल और सुशिक्षित सेना सन्नद्ध की। उसी सेना की सहायता से लङ्काद्वीप के अतुल बलशाली तथा महापराक्रमी राक्षस जाति के साम्राज्य को उसके अधीश्वर प्रतापी अनाचारी रावण सहित विध्वंस किया। किन्तु श्री रामचन्द्र सदृश आर्य दिग्विजेता का विजेता साम्राज्य-विस्तार वा सम्पत्ति संचायार्थ नहीं था। उन्होंने विजित प्रदेश में धर्म की विजय-वैजयन्ती उड़ाकर भूतपूर्व लङ्केश्वर रावण के स्थान में उसके अनुज, धर्मपरायण विभीषण को ही प्रजापालनार्थ अभिषिक्त कर दिया। इस प्रकार दक्षिणापथ में आर्यसभ्यता का प्रसार करके अपनी वनवास यात्रा की अवधि पूर्ण होने पर श्री रामचन्द्र जी अपनी पैतृक राजधानी अयोध्या में लौट आये और स्वपितृपरम्परा साकेत राज्य के सिंहासन पर अभिषिक्त होकर यावज्जीवन नृपति धर्म का पालन करते रहे।

श्री रामचन्द्र जी के विषय में पं० बद्रीनारायण जी 'प्रेमघन' की कविता है-

जय जय मर्यादापुरुषोत्तम धर्मधुरन्धर।
जय जय एकादर्श भूमिपति महावीरवर॥
नाशन म्लेच्छाचार दलन दल प्रबल निशाचर।
करन यथोचित प्रजा प्रचारन दरन दुःख उर॥

हमारे लिये इससे अधिक सौभाग्य और क्या हो सकता है कि हम ऐसे मर्यादापुरुषोत्तम आदर्श चरित्र की संतान हैं। उन्हीं पवित्र नाम राम के जन्मदिन की शुभ तिथि चैत्र सुदी नवमी है। हमारे पूर्वजों ने हम पर यह भी एक बड़ा उपकार किया है कि इस लोकाभ्युदयकारक जन्म की तिथि इस चैत्र शुक्लानवमी को हम तक अविच्छिन्न रूप से पहुंचा दिया है। परन्तु आजकल अज्ञानान्धकार में निमग्न आर्यसंतान राम-नवमी प्रभृति जन्मोत्सव को लाभप्रद रीति से नहीं मनाते और उनके वास्तविक उद्देश्यों को भूलकर अनशन आदि व्यर्थ रूढ़ियों में फँस जाते हैं। शिक्षा से आलोकित हृदय सुधारकों और वैदिक धर्मावलम्बी आर्य महाशयों का कर्त्तव्य है कि सुसप्राय विशुद्ध वीर-पूजा की प्रथा का पुनरुद्धार करें और अपने आदर्श महापुरुषों की जन्मतिथियों और स्मारकों को शिक्षाप्रद प्रकारों से मनायें तथा सर्वसाधारण के लिये पथप्रदर्शक बनें। आज के दिन मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र के चरित्र के अध्ययन स्वाध्याय के लिये रामायण की कथा और संकीर्त्तन को पुनः प्रचारित करना चाहिये। यज्ञ और दान का शुभारम्भ होना चाहिये और अपने पूर्व पुरुषों के पदचिह्नों पर चलते हुये धर्म के तीनों स्कन्ध यज्ञ अध्ययन और दान के विशेष आचरण में ही ऐसे शुभ दिनों को बिताना चाहिये, जिससे कि हम अपनी उन्नति करते हुये अन्यों के उद्धार के हेतु बन सके। कविवर श्री रामनरेश त्रिपाठी ने श्रीराम गुणगान किया है। वह इस प्रकार है-

सत्पुरुष-पुंगव, सत्यवादी, संयमी श्रीराम थे।
प्रतिभा-निदान, पराक्रमी धृतिशील, सद्गुणधाम थे॥
परम प्रतापी, प्रजारञ्जन, शत्रु विजयी वीर थे।
ज्ञानी, सदाचारी, सुधी, धर्मज्ञ, दानी धीर थे॥
कल्याणकारक उनके सभी शुभलक्षणों को धार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो॥१॥
श्रुतितत्त्व-वेत्ता, सत्यसंध, कृतज्ञ, गौरववान् थे।
संसार के हित में सदा तत्पर, महाविद्वान् थे॥
निःस्पृह, प्रजाप्रिय, नयनिपुण, अभिराम अवगुणहीन थे।
आदर्श आर्य, उद्धार, करुणासिन्धु, शुचि, शालीन थे॥
वे सदा सर्वप्रकार से हैं पूजनीय विचार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण-पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो॥२॥
श्रीराम ने जो कर दिखाया धर्म के विश्वास में।
ऐसा न अन्य उदाहरण है जगत् के इतिहास में॥
दृढ़ हो उन्हीं के पुण्य-पथ पर चाहिये चलना हमें।
हम आर्य हिन्दू-मात्र रामचरित्र-कानन में रमें॥
होगा इसी से देश का कल्याण सन्मति सार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो॥३॥
उस सद्गुणी की जीवनी को लक्ष्य अपना मान लें।
आओ, सखे! सत्कर्म का संकल्प मन में ठान लें॥
श्रद्धा-सहित उस महात्मा का निरन्तर नाम लें।
इस लोक से उद्धार पाकर स्वर्ग में विश्राम लें॥
भ्रम त्याग 'रामनरेश' उर में शक्ति-रश्मि पसार लो।
पढ़ मित्र पूर्ण पवित्र रामचरित्र जन्म सुधार लो॥४॥

## वैदिक कन्या गुरुकुल का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

वैदिक कन्या गुरुकुल बहालगढ़ जिला सोनीपत का उद्घाटन समारोह रविवार, दिनांक १० अप्रैल २००५ को उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर चौ० मित्रसेन आर्य वरिष्ठ उपप्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर मुख्य अतिथि थे। पं० रमेशचन्द्र कौशिक विधायक हल्का राई जिला सोनीपत ने समारोह की अध्यक्षता की तथा महर्षि दयानन्द आयुर्वेदिक चिकित्सालय का शिलान्यास किया। स्वामी धर्मदेव जी महाराज अधिष्ठाता आश्रम हरिमन्दिर संस्कृत महाविद्यालय पाटौदी ने आशीर्वाद दिया। उद्घाटन समारोह में अनिल ठक्कर विधायक सोनीपत, प्रमुख समाजसेवी मोहन मदान, चौ० राममेहर एडवोकेट, डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, लाला कुलभूषण आर्य, प्रकाशवीर विद्यालंकार, पं० मनुदेव शास्त्री, रणवीर शास्त्री, महाशय जयपालसिंह बेधड़क, सत्यपाल आर्य 'मधुर', बहिन सुमित्रा वर्मा भजनोपदेशिका ने भी अपने विचार रखे।

-विदुषी आर्या, उपाचार्या वैदिक कन्या गुरुकुल
इन्दिरा कालोनी बहालगढ़ (सोनीपत)



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर
सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ | अंक २२ | २८ अप्रैल, २००५ | वार्षिक शुल्क ८०) | विदेश में २० डॉलर | एक प्रति २.००

## जीवन-पथ

☐ प्राचार्य अभय आर्य, गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)

'यजुर्वेद' कहता है 'शर्म असि' अर्थात् हे मनुष्य तू आनन्द के लिये बना है। दूसरी ओर दर्शन कहता है कि कहीं भी कोई भी सुखी नहीं है। सामान्य रूप से कोई सामान्य व्यक्ति इन दोनों बातों में विरोधाभास देखेगा। लेकिन सूक्ष्म रूप से चिंतन करने पर पता चलता है कि इन तथ्यों में विरोधाभास नहीं है। वास्तव में तो मनुष्य आनन्द प्राप्त करने के लिये ही बना है। जहां यह कहा गया है कि कहीं भी कोई भी सुखी नहीं है वहां भाव यही निकलता है कि जो देहधारी हैं वे दुःख से छूट नहीं सकते अर्थात् उन्हें कभी न कभी कोई न कोई दुःख हो ही जाता है। लेकिन वह दुःख भी इन्द्रियों के दोषों से जो बुरे कर्म किए जाते हैं उनके फलस्वरूप होता है। वरन् जीवन तो आनन्द की सिद्धि के लिये मिलता है। और अधिक सूक्ष्मता में जाएं तो आनन्द की सिद्धि के लिये मिलता है। ऋषि जी 'सत्यार्थप्रकाश' में स्पष्ट करते हैं कि यदि सृष्टि के दुःख-सुख की तुलना की जाए तो सुख अधिक है। ईश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु, अन्न, औषधियाँ, पुष्प, फल आदि मनुष्य के सुख के लिए बनाए हैं। प्रभु ने जीव को कर्म करने में स्वतंत्र छोड़ा है अतः यदि मनुष्य को दुःख होता है तो केवल अपने कर्मों के आधार पर।

शरीर धारण कर जीव जीवन पथ पर चल पड़ता है। इस जीवन-पथ पर विभिन्नताएँ हैं। ये विभिन्नताएँ भी जीव के कर्म पर आधारित है। कर्मों के आधार पर कोई स्वस्थ होता है तो कोई रोगी, कोई धनी है तो कोई निर्धन, कोई डॉक्टर इंजीनियर बन जाता है तो कोई मजदूरी करके जीवन यापन करता है, आदि। सुख-दुःख मनुष्य के जीवन-पथ की विभिन्नता के द्योतक हैं। लेकिन एक ऐसा सूत्र भी है जिसमें विभिन्नता के मनकों को पिरोकर समावस्था की माला तैयार की जा सकती है जिसे पहनकर मनुष्य आनन्द की सिद्धि कर सकता है। वह सूत्र है-धर्म।

धर्म को अपनाकर ही हम सुख-दुःख में समावस्था में रह सकते हैं। समावस्था में रहना ही पंडित का लक्षण है। धर्म एक ऐसा साथी है जो किसी भी अवस्था में साथ नहीं छोड़ता। धन निर्धन व्यक्ति का साथ छोड़ देता है। यदि निर्धन व्यक्ति धर्म से च्युत नहीं होता तो निश्चित तौर पर धर्म उसका अभ्युदय करता है। धर्म उसे निर्धनता में भी दुःखी नहीं होने देता। धर्म उसे पुरुषार्थ की प्रेरणा देता है, और नीतिकारों ने कहा है कि 'उद्योग से दरिद्रता नष्ट हो जाती है।' धर्म उस निर्धन व्यक्ति को सुबह उठने की प्रेरणा देता है। वह खिले हुए पुष्पों को देखकर, लहलहाते हुए खेतों को देखकर, पशु-पक्षियों को देखकर तथा उस परम सत्ता का आभास लेता हुआ आनंद मनाता है। श्रम के उपरान्त जब वह थककर चूर हो जाता है तो रात को मीठी नींद का आनन्द उठाता है। वह विद्वानों को अपने पुरुषार्थ से, अपनी सद्वृत्ति से अपना मित्र बना लेता है। जिसके विद्वान् मित्र हों, उसे दुःख कहाँ? रोटी-दाल में ही वह आनन्द लेता है तथा स्वाभिमान से जीता है। वह निर्धन होते हुए भी निर्धन नहीं है। धर्म उसकी सर्वोत्तम पूँजी है। इस संदर्भ में एक पहलवान का उदाहरण लेते हैं। एक पहलवान है जो व्यायाम करके अच्छा शरीर बना लेता है। लेकिन सरकारी नौकरी नहीं लगती और न ही वह ज्यादा पैसा जुटा पाता है। फिर भी यदि वह धार्मिक है तो सदाचार में ही आनन्द मनाता है। विद्वानों का सङ्ग करता है। वह रचनात्मक कार्यों में रुचि लेता है। इस प्रकार उसका अभ्युदय होता है। धर्म को अपनाकर ही वह ज्यादा लंबे समय तक उत्तम स्वास्थ्य लाभ ले सकता है। इसके विपरीत जो धार्मिक नहीं है वह जल्द ही भटक जाता है। आज अनेक पहलवान आपने देखें होंगे जो शरीर तो बना लेते हैं लेकिन धर्म के अभाव में जल्द ही शराब या अन्य नशा व गुंडागर्दी में उलझ जाते हैं। व्यायाम रूपी तप द्वारा उन्होंने अपने शरीर में जो बल बनाया है, वे उसका आनन्द नहीं ले पाते। धर्म के अभाव में वह तप व्यर्थ जाता है। इसके विपरीत धार्मिक पहलवान अपने बल में ही आनन्द मनाता है। उसका बल ही उसकी सर्वोत्तम पूँजी है, जिसकी वह जी-जान से रक्षा करता है धर्महीन निर्धन अपने भाग्य को कोसता है। अपने व्यवहार में चिड़चिड़ा हो जाता है। जुआ, शराबखोरी आदि दुर्व्यसनों में उलझ जाता है और दुःख के गहरे गड्ढ़े में डूबता चला जाता है। आज आप देखते होंगे कि रिक्शा चलाने वाले, ट्रक चलाने वाले, मजदूरी करने वाले अपने खून पसीने की कमाई से शराब पीते हैं, और वह शराब उनका खून पीती है। यह सब धर्म के अभाव में है।

अब धनी व्यक्ति को लेते हैं। धर्म के अभाव में अनेक धनी व्यक्तियों का जीवन नरक होते आपने देखा होगा। अनेक धनी व्यक्तियों के जवान लड़के रात को देर से घर आते हैं। सुबह सूर्य निकलने के बहुत बाद उठते हैं। सारा दिन इधर-उधर व्यर्थ घूमते हैं। ऊल-जलूल फैशन करते हैं। अस्वस्थ, दुराचारी होकर ऋषियों के इस देश पर कलंक बन जाते हैं। भगवान् धन इसलिए नहीं देता कि तुम सुबह देर से उठो, दुराचारी बनो, माँस, मुर्गे, शराब उड़ाओ, देश-सेवा मत करो। और जो भगवान् के दिए धन का उपयोग दुष्कर्मों में करता है, वह कितना बड़ा अज्ञानी व पापी है इस बात का अंदाजा आप स्वयं लगाएँ। ऐसे घरों में प्रायः पति-पत्नी के झगड़े, बाप-बेटे के झगड़े आदि कलह देखने को मिलते हैं। आत्महत्याओं के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। आत्मिक आनन्द से ऐसे जन कोसों दूर रहते हैं। धन अवश्य होना चाहिए लेकिन दुराचार के लिए उसका उपयोग करना महामूर्खता के सिवाय अन्य कुछ नहीं। धनी व्यक्ति उत्तम दुर्लभ सात्त्विक पदार्थों का सेवन करके, विद्वानों का सङ्ग व सेवा कर, देश सेवा कर, बड़े-बड़े यज्ञों का अनुष्ठान करके, सदाचार वर्त्तकर ही सुखी रह सकता है, अन्यथा नहीं।

अतः निर्धन हो या धनी धर्म सबके लिये आवश्यक है। इस जीवन-पथ पर आनन्दपूर्वक यात्रा करना चाहते हो तो धर्म को अपनाओ।

## व्यायाम शिक्षण शिविर

(१) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने १०० व्यायाम शिक्षण शिविर लगाने का निश्चय किया है। व्यायाम शिक्षकों के अभाव में शिविरों के कार्य में बाधा आती देखकर ब्र० कृष्णदेव जी व ब्र० जगदीप को संयोजक बनाकर ब्र० प्रवीण जी व्यायामशिक्षक द्वारा सात-सात दिन का शिविर लगवाकर कम से कम १०० व्यायामशिक्षक तैयार करने का विचार किया गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक में २२-४-२००५ से व्यायाम शिक्षण शिविर आरम्भ हो चुका है। जीवन को पवित्र बनाने के इच्छुक युवक सम्मिलित होकर भाग ले रहे हैं। यह क्रम व्यायाम शिक्षकों की अभावपूर्ति तक लगातार सभा में चलता रहेगा। शिविर में भाग लेने हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से सम्पर्क करें।

(२) ग्रामीण तो क्या शहर के आर्यसमाजों में भी सन्ध्या तथा यज्ञ के मन्त्रों का अशुद्धोच्चारण किया जाता है। शुद्धोच्चारण करवाने के लिये तीन-तीन दिन का आर्य प्रतिनिधि सभा में शिविर लगाया जा रहा है। सन्ध्या व यज्ञ की पुस्तक तथा कापी पैन साथ लेकर तीन दिन सभा में शुद्धोच्चारण करने के इच्छुक लाभ उठा सकते हैं। यह कार्यक्रम लगातार संतोषजनक कार्य होने तक चलता रहेगा। यह शिविर दिनांक २२-४-२००५ से शुरू हो चुका है। शिविर में भाग लेने हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक कार्यालय में सम्पर्क करें।

-आचार्य बलदेव, सभाप्रधान

# वेद में पशुपालन की विद्या

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

पशुपालन की विद्या के विद्वान् का कर्त्तव्य है कि वह भेड़, बकरी और गाय आदि उपकारक पशु और उनके पालने के साधनों को जानकर दूसरों को प्रशिक्षित करे। जिससे वे पशुओं की अवस्था के अनुसार उनका पालन और यथासमय प्रशिक्षण भी दे सकें। यजुर्वेद अष्टादश अध्याय के २६-२७वें मन्त्रों में पशुपालन विद्या के विषय में वर्णन है।

**अथ पशुपालनविषयमाह**=अब पशुपालन विषय का उपदेश किया जाता है-

**त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे**
**पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे**
**तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥** (यजु० १८।२६)

**अर्थ**-(मे) मेरा (त्र्यवि:) तीन अवि=भेडोंवाला (च) और इनसे भिन्न सामग्री (मे) मेरी (त्र्यवी) तीन अवि=भेडें वाली स्त्री (च) और इनका घृत आदि (मे) दिति=खण्डित क्रिया में विद्यमान जनों को प्राप्त करने वाला पुरुष (च) और इसका पालन (मे) मेरी (दित्यौही) उक्त पुरुष की स्त्री (च) अन्य भी (मे) मेरा (पञ्चावि:) पांच अवि=भेड़ों वाला पुरुष (च) और इसकी रक्षा (मे) मेरी (पञ्चावी) पांच अवि=भेडों वाली स्त्री (च) और इसका पालन (मे) मेरा (त्रिवत्स:) तीन वत्स:=बछड़ों वाला पुरुष (च) और इसका शिक्षण (मे) मेरी (त्रिवत्सा) तीन वत्स=बछड़ों वाली स्त्री (च)और इसकी रक्षा (मे) मेरा (तुर्यवाट्) जिसके तीन वर्ष पूरे हो चुके चौथा चालू है ऐसा तुर्य=चतुर्थ वर्ष को प्राप्त करने वाला वृषभ=बैल आदि (च) और इसका शिक्षण (मे) मेरी (तुर्यौही) पूर्वोक्त बैल के सदृश गौ (च) और इसकी रक्षा (यज्ञेन) पशुपालन की विधि से (कल्पन्ताम्) सिद्ध हों॥

**भावार्थ**-यहाँ गौ, बकरी, भेड़ का ग्रहण उपलक्षण के लिये है। जो मनुष्य पशुओं को बढ़ाते हैं वे रसाढ्य होते हैं॥

पुनस्तमेव विषयमाह=पशुपालन विषय का फिर उपदेश किया है-

**पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च मे ऽ उक्षा च मे वशा च मे**
**ऽऋषभश्च मे वेहच्च मे ऽ नड्वाँश्च मे धेनुश्च मे**
**यज्ञेन कल्पन्ताम्॥** (यजु० १८/२७)

**अर्थ**-(मे) मेरा (पष्ठवाट्) पष्ठ=पीठ से वहन करने वाले हाथी ऊँट आदि (च) और उसका सम्बन्धी पदार्थ, (मे) मेरी (पष्ठोही) पष्ठ=पीठ से वहन करने वाली वडवा=घोड़ी आदि, (च) और हथिनी आदि से उठाये पदार्थ (मे) मेरा (उक्षा) वीर्य का सेचक सांड (च) और वीर्य को धारण करने वाली गौवें, (मे) मेरी (वशा) वन्ध्या गौ (च) और वीर्य से हीन सांड (मे) मेरा (ऋषभ:) बलिष्ठ बैल (च) बलवती गौ, (मे) मेरा (वेहत्) वीर्य-पात वाला सांड अथवा गर्भपात वाली गौ (च) और सामर्थ्य हीन सांड, (मे) मेरा (अनड्वान्) हल, शकट-गाड़ी आदि के वहन में समर्थ बैल (च) और शकट=गाड़ी को ले जाने वाला मनुष्य (मे) मेरी (धेनु:) दूध देने वाली गौ (च) दूध दूहने वाला पुरुष (यज्ञेन) पशु-शिक्षा नामक यज्ञ से (कल्पन्ताम्) सिद्ध हों॥

**भावार्थ**-जो मनुष्य पशुओं को सुशिक्षित करके कार्यों में संयुक्त करते हैं वे कृतार्थ होते हैं।

**पशु-विशेषज्ञ किन-किन पशुओं को पालें-**

यज्ञ अर्थात् पशु-पालन-विधि के विद्वान् मनुष्य पीठ से भार वहन करने वाले हाथी, ऊँट, घोड़ा आदि पशुओं को, बलवान् सांड गाड़ी में जुड़ने वाले बैल और गायादि अन्न दूधादि देने वाले पशुओं का पालन करें और उनसे यथाशक्ति उपकार ग्रहण करें॥

सामवेद में मंत्र आये हैं-

**स न: पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।**
**शं राजन्नोषधीभ्य:॥** (साम उत्तरार्चिक १/३)

अर्थ-(राजन्) हे संसार के राजा (स:) वह आप (न:) हमारे (गवे) गौ आदि के लिये (शं पवस्व) सुख की पवन बहायें (जनाय शम्) मनुष्य समूह के लिये भी (अर्वते शम्) घोड़े आदि उपयोगी पशुओं के लिये (ओषधिभ्य: शम्) औषधियों के लिये भी सुख की पवन बहावें॥

**धेनु, अश्व, औषध हमारा कल्याण करावें।**
**भगवन् आप सदा हम पर सुख-शांति बरसावें॥**

**त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हित:। देवेभिर्मानुषे जने॥** (सामवेद १/२)

**अर्थ**-हे (अग्ने) ज्ञानस्वरूप परमेश्वर (त्वम्) तू (विश्वेपाम्) सब (यज्ञानाम्) यज्ञ आदि के शुभ कार्यों का (होता) उपदेष्टा है (देवेभि:) दिव्य (मानुषे जने) विचारशील पुरुषों में (हित:) उपस्थित हो जाते हो॥

**जग के सकल यज्ञ के होता सच्चिदानन्द कहलाते।**
**भक्तिभाव से उसको भजकर नर भवसागर तर जाते॥**

# आर्यसमाज बचाओ

७ अप्रैल २००५ के सर्वहितकारी के अंक में मैंने 'आर्यों में पहली लग्न लगे' के नाम से लेख लिखा। आर्यसमाज को बचाने के लिए कुछ सिरफिरे आर्य चाहियें **'कार्यं वा साधयेयं शरीरं वा पातयेयम्'** जिनका लक्ष्य हो। दो और दो कितने पूछने पर भूखा मनुष्य चार रोटियां ही उत्तर देता है। इसी प्रकार इन आर्यसमाज की तड़प रखने वाले दीवानों का एकमात्र उद्देश्य आर्यसमाज को बचाना ही हो। वीर अर्जुन को जिस प्रकार स्वयंवर के समय मछली का भेद्य स्थान ही दिखाई देता था इसी प्रकार इन निराले आर्यों को आर्यसमाज की उन्नति करने के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता हो। गुरु गोविन्दसिंह जी ने पांच प्यारे ही मांगे थे। उन्हीं के बल पर आश्चर्यजनक ऐतिहासिक कार्य किया। स्वामी दयानन्द जी महाराज के भी कुछ शिष्यों ने ही दिल दहलाने वाले बलिदान दिये थे। जिनके द्वारा आर्यसमाज के प्रचार की आंधी चली। जिसको अनुभव कर कवियों ने निम्न शब्दों में आर्यसमाज के सम्बन्ध में गाया-

**तेरे दीवाने जिस घड़ी दक्षिण दिशा को चल दिये।**
**हैरत में लोग रह गये दुनिया का दिल हिला दिया॥**

संसार में एक कहावत प्रचलित है कि घोड़े के पांव में पांव की रक्षार्थ लोहा लगवाते देखकर मैण्डकी ने भी पांव आगे बढ़ाया। ऋषि-महर्षियों, महापुरुषों के जीवन को पढ़ा। राम व कृष्ण ने इस भूमि को राक्षसहीन बनाने का वचन लिया। महाराणा प्रताप ने कहा कि 'चित्तौड़गढ़ को जब तक नहीं जीत लूंगा भूमि पर सोऊंगा।' इस प्रकार की अनेक प्रतिज्ञायें कीं। प्रतिज्ञायें पूर्ण कर ऐतिहासिक कार्य भी कर गये तथा विशेष आत्मिक विकास भी किया। मेण्डकी की बात मैंने अपने ऊपर लागू करके देखी है। एक आर्यसंन्यासी से प्रेरित होकर तीसरी श्रेणी में प्रतिज्ञा की कि बिना स्नान किये तथा सन्ध्या किये भोजन नहीं करूंगा। अन्य प्रतिज्ञा भी समय-समय पर बढ़ाकर मन, वचन व कर्म से उनका पालन करने का पूरा यत्न किया। इन्हीं का परिणाम था कि काषाय वस्त्रों को धारण करने का सौभाग्य मिला।

संस्कृत व्याकरणादि ग्रन्थों को पढ़ना, अनेक जीवनदानी युवक विद्वानों को तैयार करना, गोसेवा के पुनीत कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त करना भी विशेष प्रतिज्ञाओं का फल रहा। दृढ़ प्रतिज्ञाओं तथा शुभसंकल्पों से सांसारिक कार्य (परोपकार) तो होता ही है, आत्मा का बल तथा बौद्धिक विकास इतना बढ़ जाता है कि संसार में असम्भव दिखाई देने वाले कार्यों को सुगमता से कर लेता है। पितामह भीष्म ने प्रतिज्ञा के बल पर मौत को भी वश में कर लिया तथा इच्छानुसार प्राण त्यागे। महात्मा हंसराज जी दूसरों को लाखों रुपये बांटते परन्तु स्वयं उसमें से कुछ भी नहीं लेते थे। आज के ऐषणाओं में लिप्त आर्य उनकी शान के सामने कितने शर्मसार हैं।

किसी भी कारण से व्यभिचार, जूआ, चोरी, छल, कपट, रिश्वत आदि दुराचार मद्यादि मादक द्रव्यों और मांसादि अभक्ष्य पदार्थों के सेवन करने वालों को आर्यसमाज में भर्ती करने से आर्यसमाज का पतन हुआ है। अपने स्वार्थों के फलस्वरूप जिस किसी पार्टी में बदल-बदलकर गये उसी में आर्यसमाज को घसीटकर क्रान्तिकारी समाज की डुबाडगी बनाई। खून से सींचकर खड़ी की गई सत्य वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित संस्था कोअपने पदप्राप्ति का साधन बनाया और जब तक बनाया जाता रहेगा, ह्रास होता रहेगा। अपने पेट में गांठ लगाकर भूखे प्यासे रहकर जिस अपार सम्पत्ति को इकट्ठा किया उसको भोग विलास के निशाने पर रखा। इस प्रकार अनेक दुष्कर्मों की शिकार बनी आर्यसमाज गर्त में ही जायेगी। चाहे मूर्तिपूजक हो, चाहे मुंह पर पट्टी बांधे, चाहे कुरान पढ़े, चाहे ईशा पर ईमान लाये, इसी प्रकार लाखों करोड़ों के आर्यसमाज की सदस्यता शुल्क देने से तथा पैसे के लोभ में सदस्य मानने से कैसे आर्यसमाज बचेगा। निराश होने की कोई बात नहीं जब जाग जायें तभी भलाई मानें। सभी आर्यसमाज की दुर्दशा के दुःख से दुःखी घबरायें नहीं। आर्यसमाज को बचाने का जोर से अभियान चलायें। आओ तन, मन व धन सर्वस्व आर्यसमाज के लिए आहुत कर दें। सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी को ही सदस्य बनायें। सदाचारी, तपस्वी तथा आर्यसमाज के लिये ही श्वास लेने वाले दृढ़व्रतियों को ही आर्यसमाज में प्रविष्ट करें। बदनाम लाखों व करोड़ों नामधारी आर्यों के स्थान पर यदि १०० भी धर्म पर शिर चढाने वाले दीवाने आर्य आगे आ जाते हैं तो आर्यसमाज के बचाव की तो बात क्या उन्नति की ऊंची से ऊंची बुलन्दी पर आर्यसमाज पहुंच सकती है।

**आर्यसमाज को बचाने हेतु आओ सर्वस्व दान करें।**
**अपने स्वार्थपूर्ति हेतु नहीं आर्यसमाज की हान करें॥**

-आचार्य बलदेव, सभाप्रधान

# नारी ब्रह्मा है-उसकी पूजा में देवताओं का निवास

वेद में नारी को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है। ऋग्वेद (८/३३/१९) कहता है कि स्त्री ब्रह्मा है-**स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ**। संतान के निर्माण में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। परिवार को स्वर्ग बनाने में उसका अतुलनीय योगदान है। अथर्ववेद (अ० १४/१/१४) कहता है कि नारी घर की साम्राज्ञी है। देवर, ननंद, सास, ससुर सब पर उसका राज है :-

**साम्राज्ञी एधि श्वसुरेषु साम्राज्ञी उत देवृषु** (अ० १४/१/१४), वह घर की साम्राज्ञी तभी बन सकती है जब वह सास, ससुर, पति तथा घर के अन्य सगे-सम्बन्धियों तथा अन्य लोगों के साथ स्नेहयुक्त व्यवहार करे। अथर्ववेद (१४/२८, १७/२७) कहता है कि नारी को घर के सास-ससुर, पति आदि के लिए घर की तथा बाहर की अन्य प्रजा के लिए सुखदायिनी बनना चाहिए। वह उनके लिए दुःखदायिनी न हो। अथर्ववेद में नारी को (१) सुमंगली (२) घर की प्रतरणी (३) पति के लिए 'सुशेवा' (४) ससुर के लिए शम्भू तथा (५) सास के लिए 'स्योना' कहा है अर्थात् (१) घर-परिवार-समाज का मंगल करने वाली है। (२) प्रतरणी वह घरों को तारने वाली है (३) पति के लिए वह आह्लादकारिणी है। (४) श्वसुर के लिए वह 'शम्भू-कल्याणकारिणी है' (५) सास के लिए वह 'स्योना' है-सुखकारिणी है।

**सुमंगली प्रतरणी गृहाणां सुशेवा श्वसुराय शम्भूः।**
**स्योना श्वश्रुवे प्र गृहान् विशेमान्।।** (अ० १४/२/२६)

घर, परिवार का आधार नारी है। माँ, पत्नी, बहन, बेटी आदि नारी के कई रूप हैं। मनु कहते हैं कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। जहां इनका आदर/सम्मान नहीं होता वहां सारे काम निष्फल हैं-

**यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।**
**यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः** (मनु ३/५५)

इसलिए मनु आगे कहते हैं कि बहुत कल्याण एवं सुख चाहने वाले लोगों को, पिता, भाई, पति, देवर आदि को इनका सम्मान करना चाहिए तथा इनको आभूषित करना चाहिए -

**पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिः देवैस्तथा।**
**पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः।।** (मनु० ३/५७)

जिस घर-परिवार में नारी दुःख पाती है, शोक करती है, सताई जाती है वह घर परिवार शीघ्र नष्ट हो जाता है और जहां स्त्रियाँ शोक नहीं करतीं, सदा उत्साह एवं प्रसन्नतायुक्त रहती हैं वह कुल-परिवार सदा समृद्धि को प्राप्त होता है-

**शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।**
**न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा।।** (मनु० ३/५७)

इसलिए सुख और ऐश्वर्य की कामना करने वाले लोगों को सत्कार और उत्सव अवसरों पर भूषण, वस्त्र तथा खान-पान आदि द्वारा स्त्रियों का सदा सम्मान करना चाहिए-

**तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनासनैः।**
**भूतिकामैर्नरै नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च।।** (मनु० ३/५८-५९)

आज नारी घर-परिवार ही नहीं समाज, शासन तथा जीवन के हर क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दे रही है। स्व० इंदिरा गाँधी के रूप में वह देश की प्रधानमंत्री भी रह चुकी है फिर भी वह शोषण और अत्याचार का शिकार है। बालविवाह, दहेजप्रथा तथा बलात्कार आदि विभिन्न रूपों में उसका उत्पीडन एवं शोषण जारी है। भ्रूणहत्या, शिशुहत्या, विधवा रूप में हीनता, वेश्यावृत्ति, लिंगभेद आदि रूपों में भी उसका उत्पीडन एवं शोषण जारी है। समाचारपत्रों के पन्ने इस प्रकार की घटनाओं से भरे होते हैं। बलात्कार इसका घृणित रूप है। यह समाज के लिए एड्स या कैंसर के समान है। यह नारी के तन-मन को छिन्न-भिन्न, नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। इनमें पांच से बारह-चौदह वर्ष की बालिकायें भी शामिल हैं। इसीलिए पिछले वर्ष २००४ में कलकत्ता में एक बलात्कारी धनजंय को फांसी की सजा दी गई थी। राष्ट्रपति द्वारा भी इसकी दयायाचिका खारिज कर दी गई थी। देश के सर्वोच्च न्यायालय ने पहले ही उसकी अपील को रद्द/अस्वीकार कर दिया था।

ताजा घटना दिल्ली के एक स्कूल की है। समाचार के अनुसार (दैनिक भास्कर पानीपत १८/२/०५ पृ० ५) टैगोर गार्डन स्थित सर्वोदय (सरकारी) कन्या विद्यालय के प्राचार्य, उपाचार्य तथा अन्य दो लोगों ने रोहिणी के निकट पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में बलात्कार किया। ऐसे घृणित अपराध के लिए अपराधी को कठोर से कठोर सजा मिलनी चाहिए। एक अन्य खबर के अनुसार (महामेघा, नई दिल्ली २३/२/०५ पृ० १२) चीन के उत्तर पश्चिमी प्रान्त गनसू में टोंगवेई काउंटी क्षेत्र के चंगे गांव में स्थित एक मिडिल स्कूल के अध्यापक लीड को २४ छात्राओं के साथ बलात्कार के आरोप में पकड़ा गया है। इन लड़कियों की आयु १२ से १४ वर्ष के बीच है। प्रसाद के तौर पर यह उनको मादक पदार्थ देता था और फिर बेहोशी की अवस्था में उनके साथ यह घृणित कार्य करता था। ऐसे अपराधी चाहे कहीं भी हों उनको कठोरतम दण्ड/सजा मिलनी चाहिए।

दूसरी ओर टी.वी. चैनलों, सिनेमा और विज्ञापनों ने नारी को उपभोक्ता वस्तु बना दिया है। आज सिनेमा, टी.वी. और विज्ञापनों में महिलाओं का जो रूप प्रस्तुत किया जा रहा है उसने नारी की छवि को धूमिल कर दिया है। खुद महिलायें इसमें बढ़ चढ़कर भाग ले रही हैं। आधुनिक बनने की दौड़ में, फैशन शो में, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं की आपाधापी में महिलायें कम से कम कपड़े पहनना अपनी शान समझती हैं। टी.वी. चैनलों पर, सिनेमा में इसका प्रचलन बढ़ता जा रहा है। जबकि वेद ने यहां तक कहा था कि स्त्री को अपने शरीर के अंगों को ढककर रखना चाहिए। वेदों में जहां नारी को घर की साम्राज्ञी, सुखमंगली; घरों को तारने वाली, परिवार तथा समाज की सुखदायिनी कहा गया है और जिस स्त्री को वेद ने ब्रह्मा कहा है-**''स्त्री ही ब्रह्मा बभूविथ''** उसी वेदमंत्र में यह भी कहा गया है कि स्त्री के अपने गोपनीय अंगों को इस प्रकार ढककर रखना चाहिए कि वे दिखाई न दें-**'मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ'** (ऋग० ८/३३/१९)

आज इसके विपरीत हो रहा है। अंग प्रदर्शन की होड़ मची हुई है। इसका दुष्प्रभाव समाज की युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है। वे कई जगह टी.वी. चैनलों और सिनेमा में दिखाई जाने वाली सैक्स और बलात्कार की घटनाओं की नकल करते दिखाई देते हैं। इसके लिए महिलाओं को, महिला संगठनों को, समाजसेवी संस्थाओं को तथा शासन को और अधिक सक्रियता से इस ओर ध्यान देना होगा। संचार माध्यमों को भी इसमें सहयोग देना होगा। पैसा कमाना ही उनका उद्देश्य नहीं होना चाहिये। समाज का भी उन्हें ध्यान रखना होगा। सरकार तथा जनता को भी इसमें अपनी जिम्मेवारी को निभाना होगा। फिर इसमें सर्वाधिक जिम्मेवारी पुरुष वर्ग की है। पिता-पुत्र, भाई, पति आदि विभिन्न रूपों में उसे नारी का सम्मान करना होगा। इसी में समाज का कल्याण निहित है। नारी आज एक महाशक्ति बनकर उभर रही है। हमें इसे सार्थक बनाने में सहयोग करना चाहिए। नारियों को भी चाहिए वे अपने कार्यों में, अपने पिता, पति, पुत्र, भाई आदि का सहयोग लें। सर्वथा स्वतन्त्र होकर उन्मुक्त होकर सब काम न करें। मनु (५/१४९) ने लिखा है कि स्त्री को/नारियों को पिता, पति अथवा पुत्रों से अलग नहीं रहना चाहिए क्योंकि इनसे वियुक्त होकर स्त्री दुःख पाती है तथा अपने कुलों को दूषित या निन्दनीय करती है :-

**पिता भर्त्रा सुतैर्वापि नेच्छेद्विरहमात्मनः।** (मनु० ५/१४९)

**-चन्द्रप्रकाश आर्य**, बी.ए. ऑनर्स, विशारद, एम.ए. (संस्कृत व हिन्दी, गोल्ड मेडलिस्ट (पं०यू०)) आवास ४३२/८ सै० करनाल-१३२००१

# देश में बढ़ती गरीबी एवं बेरोजगारी

आज हमें स्वतंत्र हुए लगभग ५८ वर्ष हो गए हैं लेकिन देश में गरीबी एवं बेरोजगारी का आंकड़ा दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। चाहे जम्मू कश्मीर हो या केरल, बंगाल हो या राजस्थान सभी में समान स्थिति है। कोई भी प्रदेश गरीबी एवं बेरोजगारी के प्रकोप से बचा हुआ नहीं है। इन दिनों हरयाणा सरकार ने लगभग सभी सरकारी विभागों के रिक्त पड़े पदों को भरने के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन दिए हैं-इन्हें देखकर हजारों की संख्या में पढ़े लिखे बेरोजगार नवयुवक उन दुकानों पर टूट पड़े हैं, जहां ये फार्म उपलब्ध हो रहे हैं। एक एक फार्म ऊंचे दाम पर बिक रहा है। चाँदी हो रही है इन दुकानदारों की। गरीबी एवं बेरोजगारी से पीड़ित ये नवयुवक ऊंचे दामों पर भी इन फार्मों को खरीदकर भर रहे हैं और राज्य चयन सेवा आयोग को भेज रहे हैं इस उम्मीद के साथ कि सरकारी नौकरी मिलेगी लेकिन प्रश्न यह है कि नौकरी कितनों को मिलेगी। सत्य तो यह है कि ५८ वर्षों के बाद भी गरीबी एवं बेरोजगारी का शिकंजा कसता ही जा रहा है।

भारत के राष्ट्रपति डॉक्टर अब्दुल कलाम आजाद ने अपनी पुस्तक 'इण्डिया २०२० ई०' में घोषणा की है कि अगले दस वर्षों में भारत विश्व का एक शक्तिशाली देश बन जाएगा तथा इसकी गणना विकसित राष्ट्रों में होने लगेगी। सबको रोजगार के समान अवसर उपलब्ध होंगे। रोटी, कपड़ा और मकान की मूलभूत आवश्यकताएँ सबकी पूर्ण होगी लेकिन जैसी गरीबी एवं बेरोजगारी की भयानक स्थिति आज है-उससे ऐसा नहीं लगता कि स्थिति में सुधार अपेक्षा से अधिक होगा। आज देश में अमीर पहले से अधिक अमीर होते जा रहे हैं और निर्धन अधिक निर्धन होते जा रहे हैं। दीपावली के त्यौहार पर अमीर लोगों ने करोड़ों रुपये की आतिशबाजी फूंक दी। इन दिनों अमीर लोगों ने विवाह समारोहों पर करोड़ों रुपया पानी की तरह बहा दिया। पंचतारा होटलों में आलीशान पार्टियों का आयोजन हुआ। दूसरी ओर निर्धन महंगाई की मार से दुःखी है। आवश्यक वस्तुओं की कीमतें आसमान को छू रही हैं। परिणामस्वरूप आत्महत्याओं की घटनाएं पहले से अधिक बढ़ गई हैं।

प्रश्न यह है कि निर्धनता एवं बेरोजगारी की समस्या को कैसे दूर किया जाए। कैसे शिक्षित नवयुवकों को रोजगार दिया जाए। हर समस्या का समाधान है। केन्द्र सरकार एवं प्रान्तीय सरकारों को ऐसी आर्थिक नीतियां बनाने का संकल्प लेना होगा जो ग्रामीण आंचल के लिए उपयोगी एवं सार्थक हों। कृषि आधारित औद्योगिक नीतियों के निर्माण से ही रोजगार के साधन जुटाये जा सकते हैं। लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने से ही समस्या का स्थाई समाधान किया जा सकता है। अमेरिका, इंगलैंड, फ्रांस व जर्मनी आदि देशों ने कुटीर उद्योगों की शक्ति से ही अपने आपको शक्तिशाली बनाया है। हमारे देश के कर्णधारों को पंचवर्षीय योजना के निर्माण के समय कृषि आधारित आर्थिक नीतियों का ही निर्माण करना होगा। यही एकमात्र समाधान है।

**-कृष्णलाल वोहरा**
प्रिंसीपल, आर्य सी०सै० स्कूल, सिरसा

# झारखण्ड में आर्यसमाज का नया तीर्थस्थल-शांति आश्रम, लोहरदगा

❑ दयाराम पोद्दार

राँची से ७० किलोमीटर पर सड़क मार्ग पर लोहरदगा शहर स्थित है। यहीं लोहरदगा में आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० अयोध्याप्रसाद वैदिक मिश्नरी ने १९४३ ई० में शांति आश्रम स्थापित किया था। आपका जन्म १६ मार्च १८८८ ई० को गया (बिहार) के आमुआ ग्राम में हुआ था और उसका निधन ११ मार्च १९६५ को कोलकाता में हुआ था। आपके पिताजी राँची में सरकारी कर्मचारी थे, अत: आपका बचपन राँची में बीता और आपने यहीं पढ़ा। १९०० ई० में आर्यसमाज राँची द्वारा संचालित वेद विद्यालय के आप होनहार छात्र थे। आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् व कई पुस्तकों के लेखक मिथिला निवासी पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ से पढ़ने के साथ-साथ आप उन दिनों में वेद विद्यालय राँची में अध्ययन करते थे। हजारीबाग, पटना और कोलकाता में आपने अपना अध्ययन पूरा किया था। १९१५ ई० शिकागो (अमेरिका) नगर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में आपने आर्यसमाज की ओर से वैदिक धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। सम्मेलन में उन्होंने वैदिक धर्म की महत्ता और विश्वशांति विषय पर प्रभावशाली भाषण दिया। अमेरिका के बाद आपने दक्षिण अमेरिका के ट्रिनिडाड, डच गायना इत्यादि देशों में धर्म प्रचार किया। उनकी विदेश यात्रा का व्यय कोलकाता के सेठ युगल प्रसाद बिडला ने वहन किया। पं० अयोध्याप्रसाद को अमेरिका प्रवास में भारत के हिन्दुओं को ईसाई बनाने की गर्हित योजना की जानकारी मिली। इससे आप क्षुब्ध हुये। भारत लौटकर आप भी हिन्दुओं की रक्षार्थ आश्रम स्थापित करने पर अपने भाषणों में जोर देने लगे फलत: गया जिले के गोवछवा में उन्हें साढ़े तेरह बीघा भूमि दान में मिली, जिसपर उन्होंने जनवरी १९४० ई० में शान्ति आश्रम स्थापित किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण सरकार ने उक्त आश्रम की सम्पूर्ण भूमि को अपने कब्जे में ले लिया।

इसके बाद उन्हें लोहरदगा में १५ एकड़ ८७ डिसमील जमीन मिली, जिसमें उन्होंने शांति आश्रम स्थापित किया। इस आश्रम की स्थापना के समय से ही यहाँ स्वामी शिवानन्द तीर्थ और स्वामी दु:खदमनानन्द (प्राकृतिक जल चिकित्सक) प्रचाररत रहे। इन्होंने लोहरदगा के वनवासी उराँव लोगों की अकथनीय सेवा की। यहाँ लगभग ५०० लोगों ने शिक्षा ग्रहण की और आजीविकोपार्जन हेतु विभिन्न कार्य किये। आश्रम में अभी लगभग १५०० पुस्तकें हैं। यहाँ पूर्व में रात्रि पाठशाला, प्रौढ़ शिक्षा, व्यायामशाला, औषधालय के साथ-साथ वैदिक धर्म का भी प्रचार कार्य किया जाता था। उक्त दोनों संन्यासियों ने मृत्यु-पर्यन्त आर्यसमाज का प्रचार कार्य किया।

इस लेख का लेखक पिछले ३५-३६ वर्षों से उक्त संन्यासीद्वय और शान्ति आश्रम की सभी गतिविधियों का मूक दर्शक रहा है। प्रत्येक संस्था के जीवनकाल में उत्थान और पतन होता ही रहता है और यही इस आश्रम के साथ भी हुआ। समय-समय पर यहाँ कई लोग आये और अपनी योग्यता के अनुरूप कार्य करते रहे। कई कारणों से आश्रम की यथेष्ट उन्नति नहीं हुई। आर्थिक अभावों और आर्यसमाज का यहाँ सुदृढ़ आधार न होने से और समीपवर्ती आर्यों की उदासीनता के कारण इस आश्रम पर कई लोगों की नजर इसे हड़पने की ओर लगी रही। कई लोगों ने इसके लिये सभी तरह के साम दण्ड भेद भी अपनाये पर ईश्वर की कृपा से उक्त आश्रम बचा रहा गया।

सन् २००० में जब पृथक् झारखण्ड राज्य बना तब राँची में झारखण्ड राज्य (पूर्व में छोटानागपुर) आर्य प्रतिनिधि सभा बनी तब सभा के अत्यधिक आग्रह के कारण उड़ीसा में आर्यसमाज का सफल कार्य करने वाले गुरुकुल आमसेना के संस्थापक स्वामी धर्मानंद जी ने इस आश्रम का भार उठाने का दायित्व स्वीकार कर लिया। पिछले चार वर्षों से यहाँ एक गुरुकुल की स्थापना की गयी है, जिसमें २५ ब्रह्मचारी हैं जो समय-समय पर कम या अधिक हो जाते हैं। आश्रम में ५०-५५ वर्षों पूर्व का बना हुआ १०५ फुट लंबा और २८ फुट चौड़ा भवन है, जिसमें ५ कमरे, एक वृहद् बरामदा व एक पक्का कुंआ १२ हजार रुपये की लागत से बना हुआ है। सम्प्रति उक्त जीर्ण शीर्ण भवन को कामचलाऊ मरम्मत कर व्यवहार योग्य बना लिया गया है। अभी यहाँ एक चापाकल और एक शौचालय बना हुआ है। आश्रम की भूमि में ही पूर्व से चल रहे प्राथमिक स्कूल को सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। फरवरी से मई तक यहाँ पानी का बड़ा अभाव रहता है। इस आश्रम का सम्पूर्ण व्यय भार गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) पर है। आश्रम की सुरक्षा के लिये भूमि के चारों ओर चारदिवारी का निर्माण अनिवार्य है। पिछले वर्षों में एक चौथाई भूमि में चारदीवारी की गई है और शेष भूमि में चारदीवारी के लिये लगभग पाँच लाख रुपये की तत्काल आवश्यकता है। आश्रम के संचालनार्थ वनवासी आर्य शिक्षा समिति का गठन किया गया है, जिसका इसी नाम से बैंक खाता भी है। आश्रम में समय-समय पर आर्यवीर दल और हौमियोपैथी का प्रशिक्षण शिविर लगाया जाता है। प्रतिवर्ष इसका उत्सव भी होता है। उत्सव के अवसर पर ब्रह्मचारियों का अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन न केवल इस क्षेत्र के लिये बल्कि सम्पूर्ण झारखंड राज्य में एक नयी बात है। यह आश्रम अपने कार्यों के द्वारा आसपास अपनी पृथक् पहचान बना चुका है और आशा है कि भविष्य में यह उन्नति के उच्चतम सोपान पर भी पहुँच जायेगा।

यद्यपि राँची झारखंड की राजधानी है पर निकट भविष्य में झारखंड में आर्यसमाज की सक्रिय गतिविधियों का सबसे बड़ा केन्द्र लोहरदगा ही होगा क्योंकि यहाँ युवा संचालकों के साथ युवा शक्ति भी जुड़ी हुई है। राँची से लोहरदगा के मध्य बड़ी रेल लाइन बन गयी है। इसके बनने से लोहरदगा के तीव्र भौतिक विकास के साथ-साथ आर्यसमाज को भी स्वर्णिम अवसर प्राप्त होगा। आर्यसमाज यद्यपि स्थूल स्थान विशेष को तीर्थ स्थान नहीं मानता है पर यहाँ के कार्यों के कारण झारखंड में निकट भविष्य में आर्यसमाज का यह सबसे बड़ा तीर्थ स्थल बन जायेगा।

आशा है कि झारखंड के साथ-साथ देश के अन्य स्थानों के लोग आर्यसमाज की दृष्टि से उभरते हुए यहाँ के सबसे बड़े तीर्थ स्थल को उसकी सभी दृष्टि से उन्नति के लिये तन-मन-धन से अपना योगदान प्रदान करेंगे। इच्छुक लोग शांति आश्रम, शांति नगर पोस्ट व जिला लोहरदगा-८३५६०२ दूरभाष न०-०६५२६-२२२३८४ से या झारखंड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा राँची से संपर्क कर सकते हैं।

शांति आश्रम को न केवल धन की बल्कि प्रत्येक प्रकार के सहयोग की जरूरत है, यदि कोई अपना समय या श्रम प्रदान करना चाहे तो उसका भी स्वागत है। यदि वह आश्रम स्वावलम्बी हो जाता है तो झारखण्ड में आर्यसमाज के प्रचार के लिये नये द्वार खुल जायेगें अत: आर्यसमाज से जुड़े हुये सभी लोगों को इसे तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिये और अपनी सुविधानुसार यहाँ प्रवास भी करना चाहिये। आर्यसमाज के प्रबंध सम्बन्धी विवादों की काली परछाइयों से इसे दूर रखना हम सभी का नैतिक कर्त्तव्य है, आशा है कि सभी की सद्भावना से यह आश्रम उन्नति की अंतिम सोपान पर पहुँचेगा। आर्यसमाज की दृष्टि से कम उन्नत उड़ीसा प्रदेश में यदि गुरुकुल आमसेना, स्व० स्वामी ब्रह्मानन्द जी या अन्य लोगों के पुरुषार्थ के कारण आर्यसमाज के आन्दोलन का भारी नाम हो सकता है तब विविध दृष्टि से उन्नत झारखंड राज्य में कोई कारण प्रतीत नहीं होता है कि यहाँ भी आर्यसमाज को उसका गौरवशाली स्थान प्राप्त न हो। आवश्यकता है कि हम चिन्तित न होकर समस्या के समाधान हेतु चिन्तन करें।

पता-झारखंड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी श्रद्धानन्द पथ, राँची।

## सातदिवसीय वैदिक सत्संग कार्यक्रम

सत्य की तलाश के इच्छुक धार्मिक महानुभावों (पुरुष एवं महिलाओ) अपनी समस्त शंकाओं के समाधान और आसन, प्राणायाम आदि योग सीखने तथा प्राकृतिक चिकित्सा जानकारी हेतु छात्र-छात्राओं सहित महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में सादर आमन्त्रित हो। मदशिके के संस्थापक श्री रतीराम आर्य के दिल्ली विद्युत् बोर्ड से सेवा मुक्त होने पर

**कार्यक्रम**-(25 अप्रैल सोमवार से 30 अप्रैल 2005 शनिवार तक प्रतिदिन) योग तथा प्राकृतिक चिकित्सा-प्रात: 5 बजे से 6 बजे तक तथा सायं 5 बजे से 6 बजे तक। देवयज्ञ (हवन)-प्रात: 7 बजे से 8 बजे तक। भजन-प्रवचन-प्रात: 8 बजे से 10-30 बजे तक तथा सायं 7 बजे से 9-30 बजे तक।

**वैदिक सम्मेलन**-1 मई 2005 रविवार को प्रात: 6 बजे से 11:30 बजे तक यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में आयोजित होगा।

यज्ञ ब्रह्मा -**कन्या गुरुकुल लोवाकलां** (उपमण्डल बहादुरगढ़) की आचार्यागण
मुख्यातिथि-**डॉ० सुप्रभा जी दहिया** आई.ए.एस. (जिला उपायुक्त झज्जर)
-**श्री हनीफ जी कुरैशी** आई.पी.एस. (जिला पुलिस अधीक्षक झज्जर)

इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक-**सार्जेण्ट विजय आर्य** ( मदशिके झज्जर)

## सभा के प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिनिधियों एवं कर्मठ आर्य शुभचिन्तकों की बैठक सभाप्रधान आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में दिनांक ८ मई २००५ रविवार को प्रात: 11 बजे सभा कार्यालय बलिदान भवन दयानन्दमठ रोहतक में होगी। अत: आप समय पर पधारने का कष्ट करें।

### विचारणीय विषय

१. आर्यसमाज की वर्तमान अवस्था पर विचार करना तथा वेदप्रचार की गति को तीव्र करना।
२. वेदप्रचारमण्डलों द्वारा वेदप्रचार तथा उसकी समीक्षा। व्यायाम शिक्षण शिविर की व्यवस्था पर विचार। कम से कम एक सौ व्यायाम शिक्षण शिविर ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय लगाने की योजना को क्रिया रूप देना।
३. गोरक्षा के सम्बन्ध में विचार।
४. प्रान्तीय आर्य व गोरक्षा महासम्मेलन तथा स्वामी ओमानन्द जी स्मृति समारोह पर विचार।
५. अन्य विषय सभाप्रधान जी की आज्ञा से। -सत्यवीर शास्त्री, सभामन्त्री

# आर्यसमाज के द्वारा 'योग' का प्रचार-एक चिन्तन

-विवेकभूषण दर्शनाचार्य, दर्शनयोग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, जि० साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

आज निस्सन्देह भारतीय और विदेशी भी लोग 'योग' से प्रभावित और आकर्षित हैं। 'योग' बड़ा प्रतिष्ठित शब्द है। ऐसे प्रतिष्ठान शब्द के साथ जुड़ना और अपने आप को प्रतिष्ठित करना कौन नहीं चाहेगा। मनोविज्ञान कहता है, जब बाजार में एक ऊंचे स्तर की एक शुद्ध वस्तु बिकती है, तो कुछ व्यापारी उसकी नकल पर अपने नकली वस्तु कुछ सस्ते भाव पर बेचकर अपना व्यापार चलाने का प्रयास भी करते हैं। परन्तु उन व्यापारियों की इस चाल को सभी ग्राहक नहीं समझ पाते। वे नकली और सस्ता सामान खरीद कर कुछ बचत कर के मन में संतुष्ट हो जाते हैं। बात यदि यहीं तक सीमित हो, तो भी कुछ समझ में आती है।

परन्तु यदि परिस्थिति ऐसी बन जाये, कि वस्तु का नाम कुछ और हो और उसके नाम पर वस्तु कुछ और ही बेची जाये, तब तो ग्राहकों के साथ कितना अन्याय और धोखा कहलायेगा। जैसे-'सोने' के नाम पर, सोने जैसी चमक वाले 'नकली आभूषण' यदि बेचे जायें, तो क्या यह ग्राहकों के साथ धोखा नहीं है। ऐसा व्यापार करने वाले व्यापारी अपना व्यापार चलाने के लिए उन नकली आभूषणों का नाम, असली सोने से मिलता-जुलता भी रख लें तो क्या आश्चर्य है! अर्थात् कोई आश्चर्य नहीं है। जैसे कि-'आर्टिफिशियल ज्वैलरी' =(नकली आभूषण)। इसी प्रकार से 'घी' =(शुद्ध घी) की नकल पर व्यापार चलाने के लिए दूसरा नाम रखा गया 'डालडा घी'।

'घी' केवल इतना ही कहा जाये, तो उसका अर्थ होता है-'शुद्ध घी'। इसी प्रकार से 'सोना' इतना ही कहा जाये, तो उसका अर्थ होता है-'शुद्ध सोना'। यदि 'घी' से भिन्न वस्तु का भ्रान्ति रहित कथन करना हो, तो कहना होगा-'डालडा घी' इसी प्रकार से 'सोने' से भिन्न वस्तु का भ्रान्ति रहित कथन करना हो, तो कहना होगा-'नकली सोना'।

यदि कोई केवल 'घी' शब्द कहे और बेचे 'डालडा घी' तो क्या यह भ्रान्तिजनक, धोखे वाला व्यवहार नहीं है? ऐसे ही कोई कहे-'सोना' और बेचे 'नकली सोना'; तो क्या इससे भ्रान्ति और धोखा नहीं होगा? क्या इससे 'असली घी' और 'असली सोने' से होने वाला लाभ मिल सकेगा? क्या यह जनता के साथ खिलवाड़ नहीं है?

आप बुरा न मानें, वर्तमान में 'योग' के साथ कुछ ऐसा ही हो रहा है। कुछ चतुर चालाक लोगों ने विशेषरूप से पिछले ४०-५० वर्षों से 'योग' के नाम पर खूब प्रचार किया। देश और विदेश में 'योग' के नाम पर कुछ और ही 'हठयोग' (शारीरिक व्यायाम और शारीरिक रोगों की चिकित्सा) सिखाया जा रह है। क्या यह जनता के साथ धोखा या खिलवाड़ नहीं है? कुछ वर्ष पूर्व इसका नाम भी 'योग' से मिलता-जुलता='हठयोग' रख दिया गया। जैसे-'घी' से मिलता-जुलता नाम 'डालडा घी' रख लिया गया। अब यदि कोई व्यक्ति केवल 'घी' इतना ही नाम बोलकर 'डालडा घी' बेचे तो क्या यह धोखा नहीं है? इसी प्रकार से कोई व्यक्ति केवल 'योग' का नाम लेकर 'हठयोग' सिखाये, तो क्या यह जनता के साथ धोखा नहीं है? विनम्र निवेदन है कि क्रोध न करें और निष्पक्ष होकर शुद्ध मन से चिन्तन करें कि आप क्या कर रहे हैं?

**प्रश्न १.**-'योग' और 'हठयोग' में क्या अन्तर है?

**उत्तर**-'योग' का अर्थ है-मन के विचारों को रोक देना। महर्षि पंतजलि जी ने अपने योग दर्शन में 'योग' की परिभाषा इस प्रकार से की है-**योगश्चित्तवृत्ति-निरोधः॥** योग. सूत्र १/२

मन के विचारों को रोकने में परिश्रम करना पड़ता है। परिश्रम करना प्रायः लोग चाहते नहीं। यह कार्य कठिन लगता है। अतः इसे छोड़कर हठयोग की कुछ क्रियाएँ, जो उन्हें सरल लगती हैं वे ही करने-कराने लगते हैं। 'हठयोग' कुछ शारीरिक व्यायाम तथा 'नेति', 'वस्ति', 'त्राटक' आदि क्रियाओं का नाम है। ये क्रियाएँ 'हठयोग प्रदीपिका' आदि अनार्ष ग्रन्थों के आधार पर प्रचलित हुई हैं।

महर्षि पतंजलि जी ने 'योग' का उपदेश दिया है, वह वेद आदि सत्य शास्त्रों पर आधारित है। उसे आठ भागों में बाँटा है-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इस 'योग' विद्या का उद्देश्य है-आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार करना और जन्म-मरण से छूटकर ईश्वर का आनन्द प्राप्त करना=(मोक्ष प्राप्त करना)। वेदादि शास्त्रों में मोक्ष प्राप्ति के लिए एक मात्र उपाय 'ईश्वर-साक्षात्कार' बताया है। यजुर्वेद ३१/१८ में कहा है-**तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥** इसके अतिरिक्त मोक्ष के लिए कोई मार्ग नहीं है। ईश्वर-साक्षात्कार के लिए 'योग' (महर्षि पंतजलि प्रोक्त अष्टांग योग) ही एकमात्र उपाय है और किसी प्रकार से 'ईश्वर-साक्षात्कार' संभव नहीं; ऐसा महर्षि दयानन्द जी अदि ने स्वीकार किया है। अब जरा सोचिये, यदि महर्षि पंतजलि के 'योग' के स्थान पर 'हठयोग' ही 'योग' के नाम से जनता को सिखा दिया जाये; तो क्या यह जनता के साथ धोखा नहीं है? क्या जनता इस 'हठयोग' से कभी भी मोक्ष प्राप्त कर सकेगी? कितना पाप लगेगा, उस व्यक्ति को, जो यह धोखा देकर संसार के लिए मोक्ष का मार्ग ही बंद कर देगा। आने वाले सौ-दो सौ वर्षों तक यदि ऐसा ही मिथ्या प्रचार चलता रहा, तो 'शुद्ध योग' विद्या तो लुप्त ही हो जायेगी। भविष्य में लोग ईश्वर के आनन्द और जन्म-मरण से छूटने से वंचित ही रह जायेंगे। सदा संसार में जन्म-मरण के दुःखों को ही भोगते रहेंगे! जरा सोचिये।

**प्रश्न २.**-जनता को इस योग= (हठयोग) से कितना लाभ हो रहा है। कितने लोगों के जुकाम, खाँसी, सर्वाइकल आदि रोग ठीक हो गये हैं।

**उत्तर-पहली बात**-'योग' कोई शरीर चिकित्सा पद्धति नहीं है। यह तो मन के नियन्त्रण की और मोक्ष प्राप्ति की विद्या है। शरीर-चिकित्सा पद्धतियाँ अन्य अनेक हैं। जैसे-आयुर्वेदिक, ऐलोपैथिक, होम्यो-पैथिक आदि। चिकित्सा ही करनी हो, तो उन पद्धतियों से करनी चाहिये। 'योग' से चिकित्सा करना तो सत्य नहीं है। और न ही 'योग' (अष्टांग योग) से शरीर-चिकित्सा का विधान है, और न ही उसका मुख्य प्रयोजन। 'योग' से मन का नियन्त्रण होने से उसका कुछ प्रभाव शरीर पर भी पड़ता है, यह ठीक है। इस प्रकार के गौण प्रभाव से जो शारीरिक लाभ होते हैं, वे होवें। परन्तु वे शारीरिक लाभ प्राप्त करना या किन्हीं रोगों की चिकित्सा करना 'योग' का मुख्य प्रयोजन नहीं है। गौण शारीरिक लाभों का बहाना लेकर 'योग' को शरीर चिकित्सा में उपयोग करना, असत्य, अनुचित और चंदन को जलाकर कोयले बनाकर कम मूल्य में बेचने के समान है। अतः ऐसा नहीं करना चाहिये। ऐसा करना सम्पूर्ण मानवता के प्रति अपराध है। महर्षि दयानन्द जी ने तो पूना में दिये प्रवचनों में इन हठयोग की क्रियाओं के सम्बन्ध में कहा था-'यह बाजीगरी का खेल है। इनसे कब निवृत्ति पाकर योग प्राप्त कर सकते होंगे? यह हठ वाले ही जानें। **इन कामों से बीमारियाँ पैदा होती है।**' (उपदेश मंजरी ११वां उपदेश) **दूसरी बात**-आज आपको लो लग रहा है कि इस योग से रोग ठीक हो रहे हैं। परन्तु सत्य यह नहीं है। 'इन हठयोग की क्रियाओं से कुछ रोगों में १०-१५ प्रतिशत लाभ को सम्पूर्ण लाभ या रोग की निवृत्ति नहीं मान लेना चाहिये। और वह लाभ तो व्यायाम से हो रहा है, योग से नहीं। फिर लाभ भी तात्कालिक है, स्थाई लाभ नहीं है।' ऐसा अनेक रोगियों से साक्षात् बातचीत करने के बाद हमें उन्होंने अपना अनुभव बताया है। स्वास्थ्यरक्षा के लिये व्यायाम तो करना ही चाहिये, ऐसा आयुर्वेद स्वीकार करता है। फिर उस व्यायाम को 'योग' का नाम देना तो उचित नहीं है। इससे तो भ्रान्ति ही फैलती है। और भ्रान्ति फैलाना अपराध है। **तीसरी बात** - महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है-''अब तो परित्याग के योग्य ग्रन्थ हैं, उनका परिगणन संक्षेप से किया जाता है अर्थात् जो जो नीचे ग्रन्थ लिखेंगे वह-वह जालग्रन्थ समझना चाहिये। ...........योग में हठ-प्रदीपिकादि।''

अब देखिये कितने आश्चर्य की बात है-महर्षि दयानन्द जी तो हठप्रदीपिका आदि अनार्ष ग्रन्थों को जालग्रन्थ, परित्याग के योग्य ग्रन्थ कह रहे हैं। और उन्हीं महर्षि जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज में या उनके अनुयायी आर्य विद्वानों द्वारा 'हठयोग' का प्रचार किया जा रहा है। हे प्रभु! आर्यों को सद्बुद्धि दीजिये और उन्हें जगाइये। आर्यसमाज से भिन्न लोग तो अपनी अज्ञानता से 'हठयोग' का 'योग' के नाम पर प्रचार कर ही रहे हैं। ऐसी स्थिति में आर्यसमाजों और आर्य विद्वानों का यह कर्त्तव्य बनता है कि-'वे तो कम से कम इस झूठे प्रचार को रोकें और 'शुद्ध योग'=(अष्टांग योग) का प्रचार करें। स्वयं अष्टांग योग का अनुष्ठान करें तथा अन्यों को सिखायें। ध्यान, समाधि का स्वयं क्रियात्मक स्तर न भी हो, तब भी सिद्धान्त रूप में या आर्य संस्थाओ के तत्त्वावधान में 'हठयोग' के षट्कर्म (नेति, धोती आदि) 'योग चिकित्सा' आदि तथा 'व्यायाम आसनों' का प्रशिक्षण 'योग'के नाम पर अत्यन्त कठोरता से बंद करें;' अन्यथा यह महर्षि दयानन्द जी के प्रति विशेष अपराध माना जायेगा।

**प्रश्न ३.** - हलासन, शीर्षासन, सर्वांगासन आदि क्या 'योग' या 'योगासन' नहीं हैं?

**उत्तर**-जी नहीं! न तो यह 'योग' है और न ही 'योगासन'। 'योग' का अर्थ है-मन के विचारों को रोकना। और 'योगासन' का अर्थ है-**स्थिरसुखमासनम्॥** योग सूत्र २/४६ के अनुसार-शरीर की जिस अवस्था में स्थिरता और सुख हो, उसे योगासन कहते है! इसका उद्देश्य है-ध्यान करना व समाधि लगाना।

अब देखिये, हलासन, शीर्षासन, सर्वांगासन आदि में न तो मन के विचार रुकते हैं; और न ही इन अवस्थाओं में शरीर में स्थिरता एवं सुख ही होता है। और इन आसनों का उद्देश्य ध्यान करना व समाधि लगाना भी नहीं है। अब बताइए, इन्हें 'योग' अथवा 'योगासन' कैसे कहेंगे? इनका नाम योगासन नहीं, 'व्यायाम आसन' है। इन आसनों को व्यायाम के रूप में कर सकते हैं और सिखा सकते है; 'योग' के नाम से नही। क्योंकि व्यायाम करना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है। इसे आयुर्वेद में स्वीकार किया है। महर्षि दयानन्द जी ने आयुर्वेद को स्वीकार्य ग्रन्थ माना है, 'हठयोग' को नहीं।

**प्रश्न ४.**-आपने भी 'हठयोग' के ये आसन 'योग' के नाम पर न सही 'व्यायाम' के नाम पर ही सही स्वीकार तो किये। क्या आप महर्षि दयानन्द जी से विरुद्ध नहीं जा रहे?

**उत्तर**-ये व्यायाम आसन-'व्यायाम' है, जो शरीर के स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है, ऐसा आयुर्वेद कहता है। हमने व्यायाम आसन 'हठयोग' से नहीं लिये, बल्कि हठयोग ने 'व्यायाम' आयुर्वेद से सीखा है। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है-'संसार में जितना सत्य है, वह सब वेदों में से फैला है। और जो झूठ है, वह उनके=(सम्प्रदाय वालों के) घर का है।' हठयोग वालों ने आयुर्वेद से व्यायाम सीखकर 'हठयोग' के नाम से प्रचलित कर दिया, तो क्या वह हठयोग वालों का हुआ? यह वैसी ही भ्रान्ति है, जैसे कुछ लोग वेद में जमदग्नि, कश्यप आदि नाम

देखकर वेदों में मनुष्यों (ऋषियों) का इतिहास मानते हैं। ऋषियों ने जमदग्नि, कश्यप आदि नाम वेद में से लिये या कश्यप आदि नाम पहले हुए, बाद में वेदों में उनका इतिहास लिखा गया? महर्षि मनु और महर्षि दयानन्द जी आदि के अनुसार वेदों में मनुष्य को कोई इतिहास नहीं है, बल्कि वेदों में से ही सारे शब्द लेकर सृष्टि के आरंभ में मनुष्यों ने अपने व्यवहार चलाये। इसी प्रकार से आयुर्वेद तो पहले से था। उससे 'हठयोग' वालों ने व्यायाम सीखा। न कि 'हठयोग' से आयुर्वेद वालो ने। दूसरी बात-आयुर्वेद के अनुसार व्यायाम करना चाहिये। व्यायाम केवल आसन मात्र ही नहीं है। दण्ड-बैठक, कुश्ती, दौड़, तैरना, सैर करना आदि भी व्यायाम हैं। अपनी उम्र, शारीरिक बल आदि को देखकर इनमें से कोई भी व्यायाम किया जा सकता है। और हम इन सभी प्रकार के व्यायामों का प्रचार करते हैं, केवल आसनों का नहीं। इसलिये दण्ड-बैठक, आदि व्यायामों का प्रचार आयुर्वेद, महर्षि दयानन्द जी आदि के अनुकूल होने से इसमें कोई दोष नहीं है। और यह महर्षि दयानन्द जी के विरुद्ध कार्य नहीं है। हाँ, इन आसन व्यायामों को 'योग' के नाम पर सिखाना तो ऋषि विरुद्ध अवश्य है। अत: 'योग' के नाम पर सिखाना बन्द करना चाहिये।

**प्रश्न ५.**-जैसे व्यायाम आसनों से लाभ होता है, आपने स्वीकार किया, वैसे ही 'हठयोग' के षट्कर्म और कपालभाति आदि प्राणायामों से भी लाभ होता है। उसे आप स्वीकार क्यों नहीं करते?

**उत्तर**-व्यायाम आसन, आयुर्वेद के अनुकूल है। आयुर्वेद को महर्षि दयानन्द जी ने स्वीकार किया है, इसलिये व्यायाम आसन ग्राह्य है। परन्तु षट्कर्म=(नेति, धोती आदि) और कपालभाति आदि प्राणायामों को महर्षि दयानन्द जी ने त्याज्य और रोगोत्पादक माना है, इसलिये हम ग्राह्य नहीं मानते। और प्राणायामों के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द जी ने योग दर्शन के चार प्राणायाम ही 'योग' के अन्तर्गत माने हैं-बाह्य, आभ्यन्तर, स्तम्भवृत्ति और बाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी। ये प्राणायाम ध्यान योग मे सहायक हैं। इनके अतिरिक्त कपालभाति, भस्त्रिका, अनुलोम-विलोम आदि को महर्षि ने 'योग' में स्वीकार नहीं किया। इसलिये इनको 'योग' के नाम पर नहीं सिखाना चाहिये। और महर्षि की दृष्टि में ये प्राणायाम 'हठयोग' के होने से त्याज्य हैं। इनसे चिकित्सा आदि भी नहीं करनी चाहिये क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ने इनसे रोगों की उत्पत्ति होना माना है, रोगों की चिकित्सा नहीं।

**प्रश्न ६.**-अच्छा हम 'योग' के नाम पर शुद्ध योग=(अष्टांग योग) सिखायेंगे और साथ-साथ 'योग शिविर' में 'हठयोग' की क्रियाएँ भी रोगों की चिकित्सा के लिये सिखा देंगे। तब तो भ्रान्ति नहीं होगी।

**उत्तर**-यदि आप 'हठयोग' की क्रियाएँ सिखाएँगे, तो महर्षि दयानन्द जी के विरोधी तो कहलायेंगे ही। आप आर्यसमाजी या आर्य विद्वान् हैं तो कम से कम आपको तो यह कार्य नहीं करना चाहिये। यदि आप महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी और उन पर श्रद्धा रखते हैं तो आपको इन कार्यों को रोकना चाहिये तथा महर्षि दयानन्द जी द्वारा अनुमोदित, महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित वैदिक अष्टांग योग का ही केवल प्रचार करना चाहिये। अन्य सम्प्रदाय वाले या आर्यसमाज से भिन्न लोग तो अष्टांग योग को प्राय: जानते नहीं और विशेष प्रचार भी नहीं करते। यदि आर्यसमाज भी इस कार्य को नहीं करेगा और 'हठयोग' का प्रचार करेगा, तो 'वैदिक अष्टांग योग' तो समाप्त हो जाएगा। क्या महर्षि की भावनाओं और उद्देश्यों को बल मिलेगा? हानि होगी! जरा ठण्डे मस्तिष्क से सोचिये।

**प्रश्न ७.**-हम 'हठयोग' के प्राणायामों (कपालभाति आदि) को चिकित्सा के लिये सिखाएँगे। परन्तु इनका नाम 'योग' न रखकर, 'श्वसन-क्रिया', 'प्राण चिकित्सा' आदि रख देंगे। और साथ-साथ 'योग' भी सिखाएँगे तब क्या हानि है? क्या यह भी अनुचित है?

**उत्तर**-इसकी हानियाँ और अनुचितताएँ निम्नलिखित हैं-

१. महर्षि दयानन्द जी की भावना के विरुद्ध अन्य ग्रन्थों, सिद्धान्तों, क्रियाओं का प्रचार होगा और आप ऋषि के विरोधी तो कहलाएँगे ही।

२. 'हठयोग' की क्रियाएँ भी किसी 'चिकित्सा पद्धति=(पैथी)' में मान्य नहीं हैं। सरकारी तौर पर भी इनसे चिकित्सा नहीं की जा सकती। यदि आपके पास 'आयुर्वेद' का चिकित्सक का प्रमाण पत्र है, और आप 'एलोपैथी' की दवाओं से रोगी की चिकित्सा करते हैं, यह भी सरकारी कानून में अपराध है। फिर ये 'श्वसन क्रिया' और 'कपालभाति' आदि प्राणायाम कौन सी चिकित्सा पद्धति=(पैथी) के अन्तर्गत हैं? क्या इन्हें सरकारी मान्यता प्राप्त है क्या आपके पास उस पैथी से चिकित्सा करने का प्रमाण-पत्र है? अत: ऐसा करना सरकारी दृष्टि से भी अनुचित है।

क्रमशः

# परोपकार कैसे करें?

निष्काम कर्म में जो आनन्द आता है अथवा जो आत्मा का विकास होता है वह दूसरे किसी साधन से होना कठिन है। इसलिये स्पष्ट उल्लेख है कि **'परोपकाराय सतां विभूतयः'**। ईश्वर की प्राप्ति का सुगम रास्ता भी फल की कामना को त्यागकर कर्म करना ही है। परन्तु परोपकार करना बहुत कठिन कार्य है। एक व्यक्ति गली में घोषणा करता हुआ घूम रहा था-कोई सौ रुपये दान में देगा तो उसे दो सौ रुपये मिलेंगे। एक वृद्धा माता ने सौ रुपये दान में दिये। कई दिन तक दो सौ रुपये प्राप्त होने की प्रतीक्षा करती रही। चिन्ता में दस्त लग गये। कई बार बाहर आना-जाना पड़ता था। दैवयोग से २०० रुपये मार्ग में पड़े मिल गये। एक दिन दूसरा व्यक्ति दान के द्वारा दुगुना की घोषणा करने वाला घूम रहा था। वृद्धा माता ने सहसा सभी माताओं जो घोषणा करने वाले व्यक्ति के चारों ओर खड़ी थीं उन्हें जोरदार शब्दों में कहा कि दुगुने रुपये तो अवश्य हो जाते हैं परन्तु बीच के मरोड़े सहना बहुत कठिन कार्य है। इस प्रकार परोपकार करते समय संघर्ष को सहन करना महाकठिन कृत्य है। आजादी प्राप्त करने के लिये जब मस्त नवयुवकों की टोली घूमा करती थी तो उन्हें पागल की संज्ञा दी जाती थी। जिन उच्च कोटि के साधु-महात्माओं का प्रत्येक श्वास जनता जनार्दन की सेवा में व्यतीत होता है उन्हें भी मोडे व मस्तण्डे कहकर पुकारा जाता है। कोई मनुष्य परोपकारार्थ दर-दर ठोकर खाता फिरता है उसे दूसरों की रोटी खाता फिरता है, कहा जाता है। घर में कोई पूछता तक नहीं। कोई पानी द्वारा भी सत्कार नहीं करता। इस प्रकार के ताने लगते हैं। कुछ भ्रष्टाचारी, जनता के धन को हड़पने वालों के साथ अच्छे ईमानदार व्यक्तियों को भी जोड़ दिया जाता है। योगिराज श्रीकृष्णादि महापुरुषों को चोर तथा व्यभिचारी कहकर कलङ्कित किया गया जिससे दोषी लोग बेरोकटोक के दोष कर सकें। आजकल गोमाता के चार पांव रखने की केवल गोशाला में जगह है। बढ़ती हुई गोनिकासी तथा गोहत्या गोवंश को समाप्त कर रही है। अपनी परेशानी तथा हानि से बचने के लिये ग्रामीण लोग गायों के समूह के समूह लाकर गोशालाओं में ठूंस-ठूंसकर भर देते हैं। गोशाला के अधिकारी नींद व भूख की परवाह न करके सेवा करते हैं। रोगी तथा दुर्घटनाग्रस्त कटी टूटी गायें लाई जाती हैं। घरों से ऐसे पशु लाये जाते हैं जिनके विषय में मालिक स्वयं यह कहता है कि डाक्टर ने कहा है कि इसे गोशाला में छोड़ आओ अन्यथा घर के सब पशु मर जायेंगे। दो हल में चलने वाले बैलों में से यदि एक बैल दूसरे को मारने लग जाता था तो कमजोर बैल मर ही जाता था। ऐसी नाजुक अवस्था में यदि पशुओं में कमजोरी आजाये या मृत्यु आजाये तो गोशाला के मालिकों को कसाई तक की उपाधि मिलती है। इस अवस्था में उपकार करना कितने बड़े प्रबल संस्कार वाले व प्रबल आत्मिक शक्ति वाले व्यक्ति का काम है।

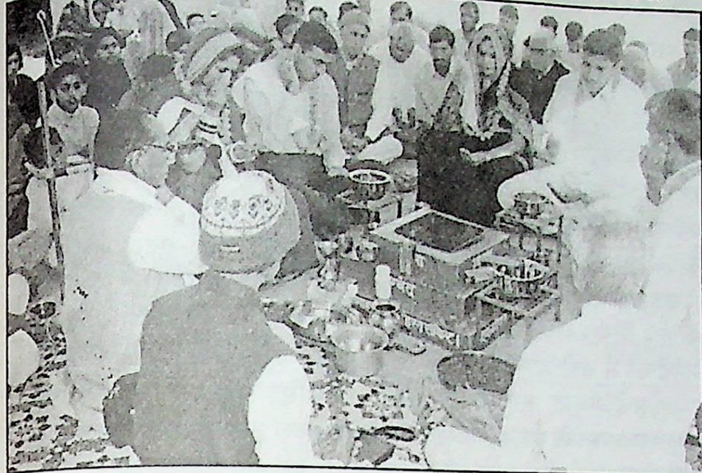
स्वामी दयानन्द जी महाराज ने परोपकारी के लिये कवच के रूप में लिखा है कि जो परोपकार का कार्य करना चाहे वह अपमान की चाहना करता रहे तथा मान से विष के तुल्य डरता रहे। चाहे दूषित करें या भूषित, लोकहित कार्य में लगा रहे। एक बार काशी में शास्त्रार्थ करते समय पाखण्डियों ने स्वामी दयानन्द जी महाराज की जीत को भी हार में परिवर्तित कर दिया। आश्रम पर स्वामी ज्वालाप्रसाद जी साधु मिले। कई घण्टे तक आध्यात्मिक चर्चा होती रही। शास्त्रार्थ सम्बन्धी एक भी शब्द चर्चा के मध्य नहीं आया। उस समय स्वामी ज्वालाप्रसाद नामक साधु ने कहा-आज से पहले मैं दयानन्द को पण्डित ही मानता था। आज पता लगा कि स्वामी दयानन्द योगी भी है। स्वामी जी महाराज ने कहा कि बिना योग के इतना बड़ा बेड़ा कैसे उठाया जा सकता है। वास्तव में परोपकार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाने हेतु योगारूढ़ होना अतीव आवश्यक है। परोपकार के समय सतत संघर्ष करते रहना ईश्वरप्रणिधान करने वाले लौहपुरुष का ही कार्य है। परोपकारप्रिय व्यक्ति निम्न सिद्धान्त अपनाते हुए कभी घबरायेगा नहीं अपितु आगे ही बढ़ता जायेगा।

**अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।**
**है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में॥**

**-आचार्य बलदेव, सभाप्रधान**

# आर्य-संसार

## होली ( फाग ) के पावन पर्व पर आर्यसमाज, आर्यनगर का वार्षिक लेखा-जोखा तथा यज्ञ सत्संग सम्पन्न



आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में आचार्य पं० रामस्वरूप जी शास्त्री (गुरुकुल आर्यनगर) वार्षिक लेखा-जोखा कार्यक्रम के प्रारम्भ में यज्ञ शुरू करवाते हुए।

आर्यसमाज मंदिर आर्यनगर (२६ मार्च २००५) : हर वर्ष की भान्ति आर्यसमाज आर्यनगर (जिला हिसार) का वार्षिक लेखा जोखा व यज्ञ सत्संग कार्यक्रम मान्यवर पं० रामजीलाल जी आर्य, (पूर्व सांसद व संरक्षक) की अध्यक्षता में प्रातःकाल की मंगलवेला में आयोजित किया गया।

आचार्य पं० रामस्वरुप जी शास्त्री (गुरुकुल आर्यनगर) यज्ञ के ब्रह्मा थे तीन यजमान दम्पति सर्व श्री महावीर जी, फतेहसिंह आर्य व रामफल जी (सपत्नीक) यज्ञवेदी पर बैठे। पूज्य आचार्य जी ने यजमानों को गृहस्थ जीवन सुखी बनाने व होली पर्व की विशेषताओं पर सारगर्भित प्रवचन के साथ बहुत सुंदर ढंग से यज्ञ सम्पन्न करवाया, सभी उपस्थित नर-नारियों व बच्चों ने भी आहुतियां दीं। यजमानों को आर्यसमाज की ओर से सत्यार्थप्रकाश व महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में दो विशिष्ट महानुभावों सर्व श्री राजूराम जी आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान व धर्मसिंह जी आर्य, महामंत्री (आर्यसमाज आर्यनगर) को उनकी दीर्घकालीन विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया, उन्हें माल्यार्पण के बाद शाल व स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। -सीताराम आर्य, सहमंत्री, आर्यसमाज आर्यनगर, जिला-हिसार

## परम मित्र आर्ष विद्यापीठ एवं योग साधना केन्द्र का शुभारंभ

रायगढ़ से १२ कि.मी. दूर सिन्धु फार्म के मनोहर स्थल पर परममित्र मानव संस्थान की ओर से साधना योगाभ्यास के साथ वेदशास्त्र आदि आर्षग्रन्थों के पढ़ने के इच्छुक प्रौढ़ युवकों के लिये इस विद्यापीठ का शुभारम्भ श्री चौ० मित्रसेन जी आर्य की अध्यक्षता में श्री अजय चन्द्राकर (पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री छ०ग० सरकार) एवं श्री रामविचार जी (वनमंत्री छ०ग० सरकार) के मुख्यातिथ्य में तथा स्वामी धर्मानन्द जी के निर्देश में होगा। इस अवसर पर श्री चाँदसिंह जी आर्य की देखरेख में सप्तदिवसीय आर्य वीरदल शिविर १४ मई से प्रारम्भ होगा। शिविर का समापन श्री कै० रुद्रसेन जी सिन्धु की उपस्थिति में २० मई को ही सम्पन्न होगा। विशेष जानकारी के लिये सम्पर्क करें। -श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती (आचार्य)
परममित्र आर्ष विद्या पीठ सिन्धु फार्म, पो० गेरबानी रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

## आर्यसमाज, आर्यनगर ( हिसार ) के वरिष्ठ उपप्रधान चौ० राजूराम जी आर्य का ९६ वर्ष की आयु में स्वर्गवास



आर्यनगर (हिसार) : ५ अप्रैल, २००५ (मंगलवार) पूज्य चौ० राजूराम जी आर्य वरिष्ठ उपप्रधान, आर्यसमाज आर्यनगर का ९६ वर्ष की आयु में दिनांक ५ अप्रैल, २००५ को स्वर्गवास हो गया, वे पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से गुरुकुल आर्यनगर से पधारे सर्व श्री आचार्य पं० रामस्वरूप जी शास्त्री आचार्य पं० आजाद 'मुनि' व पं० मानसिंह जी पाठक तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेदमन्त्रोच्चारण से किया। उनकी अन्त्येष्टि में पं० रामजीलाल जी आर्य (पूर्व सांसद) श्री रामस्वरूप जी, सरपंच (आर्यनगर) कर्नल ओमप्रकाश जी आर्य, पं० रामप्रताप जी आर्य (प्रधान), श्री धर्मसिंह जी आर्य (मंत्री), आर्यसमाज आर्यनगर के अधिकारी व सदस्यगणों सहित पंचायत व गाँव के सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

पूज्य चौ० राजूरामजी आर्य ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सच्चे सिपाही थे। उनका जीवन सादगी, संतोष व तप का जीवन था। उनके निधन से आर्यसमाज आर्यनगर ने अपना एक देदीप्यमान सितारा खो दिया है। आर्यसमाज की कार्यकारिणी अपने पूज्य चौ० राजूराम जी आर्य की दिवगंत आत्मा के लिए परमपिता से शांति और सद्गति के लिए प्रार्थना करती है। इति ओ३म् शान्ति-३

-सीताराम आर्य, सहमंत्री आर्यसमाज आर्यनगर, जिला हिसार

## वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नरेला का वार्षिक महोत्सव स्वामी ओमानंद जी के ९५वें जन्म पर दिनांक ३ अप्रैल, २००५ रविवार को आर्यसमाज मंदिर में बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ, जिसमें २ अप्रैल, २००५ को बाल कार्यक्रम तथा ३ अप्रैल, २००५ को समाज सुधार सम्मेलन प्रो० रामकृष्ण गोयल जी की अध्यक्षता में तथा दूसरा सम्मेलन श्री एस०एल० सागर जी की अध्यक्षता में कु० अरुणा जी अध्यक्षा ग्रामीण क्षेत्र, पं० सुखदेव जी शास्त्री (रोहतक), प्रि० रणवीर जी (बवाना), श्री मूलचंद जी जैन, श्री हरि भारद्वाज जी, श्री राजपाल आर्य, मा० राजसिंह जी आर्य आदि ने अपने-अपने विचार रखे। गुरुकुल की छात्राओं का कार्यक्रम सराहनीय रहा। शास्त्री वीरेन्द्र आर्य द्वारा मंच का संचालन बड़े अच्छे ढंग से किया गया। हॉल खचा-खच भरा हुआ था।

-मा० पूर्णसिंह आर्य, महामंत्री

## स्कूली छात्रों के लिए शुभ समाचार

स्कूली छात्र-छात्राओं के लिए उच्चस्तरीय एवं निबंध प्रतियोगिताएँ २० अप्रैल से १ मई, २००५ तक हरयाणा, बहादुरगढ़, रोहतक, भिवानी, हिसार, नरवाना, कैथल, कुरुक्षेत्र, पानीपत, करनाल, सोनीपत तथा दिल्ली में २०, २५ केंद्रों पर राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथ झारखंड के अनेक केंद्रों पर डी०ए०वी०/ आर्य विद्यालयों में उत्साहपूर्वक सम्पन्न होगी।

अलग-अलग वर्गों में ३४, ३४ विजेताओं को १०००/-, ७००/-, ५००/- ३००/-, १००/- तथा ५०/- के आकर्षक पुरस्कार/ साथ ही साहित्य, शहीद बिस्मिल का पोस्टर तथा प्रमाण पत्र भी दिए जाएंगे। प्रतियोगिता के विषय तथा नियमों की पूरी जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

निवेदक :-

| | | |
|---|---|---|
| **नारायणकुमार**<br>अध्यक्ष<br>९८१८१९६५७५ | **जगदीश नारायण राम**<br>महासचिव<br>०५४२-२३१५५९१ | **श्यामलाल**<br>मुख्य नियोजक<br>९८६८२६१३८७ |
| **महावीर शास्त्री**<br>संयोजक, रोहतक<br>०१२६२-२५५१२१ | **ओमप्रकाश आर्य**<br>संयोजक भिवानी<br>०१२६२-२३५८६४ | **रामेश्वरदयाल गोयल**<br>संयोजक करनाल<br>०१८४-२२५५०८० |
| **रघुनाथ प्रियदर्शी**<br>संयोजक हिसार<br>२४वी फैड्स कॉलोनी हिसार | **ईश्वरचन्द्र शास्त्री**<br>(नरवाना) संयोजक जींद<br>९४१६०५८१६१ | **धर्मवीर शर्मा**<br>संयोजक सोनीपत<br>०१२६३-२५६८८२<br>राजभाषा संघर्ष समिति (पंजी०) |

## आर्यसमाज का स्थापना दिवस मनाया

यमुनानगर : आर्यसमाज का १३०वां स्थापना दिवस समारोह आज आर्यसमाज मंदिर रेलवे रोड पर आयोजित किया गया। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा आर्यसमाज के पुरोहित अशोक शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ। उत्तरप्रदेश से आए सुखपाल आर्य की भजनमंडली ने प्रेरणाप्रद भजन व विपिनकुमार आर्य ने ईश्वरभक्ति के भजन प्रस्तुत किए। समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए ज्वालापुर (हरिद्वार) से आए डा० सत्यव्रत राजेश ने कहा कि आर्यसमाज न धर्म है न मत है और न ही पंथ है, यह केवल आश्रयस्थल है जहां पर सभी लोगों को ज्ञान और सत्य का मार्ग दिखाया जाता है। समारोह में डी०ए०वी० संस्थाओं के चेयरमैन विजय कपूर, स्वामी सदानन्द, आनन्द प्रकाश आर्य, मोहित आर्य, राजकुमार, डा० एस.पी. यादव, डा० हर्ष, प्रेमचंद आर्य एवं ललित आर्य भी उपस्थित थे।

## ऐतिहासिक आर्यपरिवार होली मंगल मिलन समारोह

# ऐसे मनाएं होली : प्रेरणामय होली समारोह सम्पन्न

### १० हजार से अधिक आर्य परिवारों के सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति




**चित्र परिचय**-आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह के अवसर पर प्रसिद्ध भजन "पूजनीय प्रभो! हमारे भाव उज्वल कीजिए...." के रचयिता पं० लोकनाथ तर्कवाचस्पति के सुयोग्य सुपौत्र एवं एकमात्र भारतीय अन्तरिक्ष यात्री श्री राकेश शर्मा को स्मृति चिह्न भेंट करती दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित साथ में हैं सभा प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य जी।

शुक्रवार २५ मार्च, २००५ नई दिल्ली। होली के पावन पर्व की संध्याकानीन वेला में ३.३० बजे दोपहर बाद मुम्बई से पधारे आचार्य वागीश जी के ब्रह्मत्व में नवसस्येष्टि महायज्ञ का शुभारम्भ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों के वेद पाठ से प्रारम्भ हुआ। प्रसिद्ध योगाचार्य स्वामी रामदेव जी महाराज भी इस अवसर पर उपस्थित हुए। उन्होंने आर्यसमाज के इस सराहनीय कार्यक्रम की भरपूर प्रशंसा की और कहा कि मैं आज जो कुछ भी हूं आर्यसमाज के कारण ही हूं। समारोह में पधारने वाले समस्त महानुभावों का द्वार पर ही चंदन के तिलक से व इत्र छिड़ककर स्वागत किया गया।

इस वर्ष आयोजित इस आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह में १० हजार से भी अधिक आर्य परिवारों के सदस्यों ने भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् आर्यसमाज द्वारा संचालित दिल्ली के विभिन्न स्कूलों के बच्चों के अत्यन्त मनोहारी सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल शादीपुर खामपुर, रत्नचंद आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर, वैदिक शिक्षा केन्द्र प्रीत विहार व आर्यवीर मॉडल स्कूल बादली के बच्चों ने कार्यक्रम में भाग लिया। बच्चों ने होली मनाने के शालीनता से सही तरीके बतलाए।

इसके पश्चात् समारोह के मुख्य आकर्षण **भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री श्री राकेश शर्मा जी** व उनके परिवार का स्वागत अभिनंदन किया गया। उन्हें मुख्य रूप से बैंगलोर से आमन्त्रित किया गया। (उनके दादाजी पं० लोकनाथ जी तर्कवाचस्पति द्वारा रचित प्रसिद्ध भजन "पूजनीय प्रभु हमारे........" समस्त आर्य जगत् में यज्ञ प्रश्चात् अत्यन्त श्रद्धाभाव से गाया जाता है।) इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित जी ने उन्हें शाल उढ़ाकर सम्मान दिया। इस सम्मान समारोह के समय श्री राकेश शर्मा की माताजी, उनकी चाची तथा चचेरे भाई एवं बहनें भी उपस्थित थीं, उन्हें भी मंच पर बुलाकर सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरेन्द्र आर्य जी के आध्यात्मिक रस से सराबोर संगीत लहरियों पर लहराते भजन समस्त देश को यह संदेश दे रहे थे कि होली मंगल मिलन सब त्यौहारों का शिरोमणि पर्व है क्योंकि इससे ऋतुराज वसन्त का नवयौवन नव विकसित कुसुमों की बहार है, कोयल की कूक एवं पक्षियों की चहक है।

इस समारोह में अनेक गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया जिनमें प्रमुख दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शिला दीक्षित एवं टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री सुरेन्द्रकुमार रैली, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री आनन्द चौहान जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्री विक्रम कपूर जी, श्री मुंशीराम सेठी जी आदि।

## आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी के तत्त्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री धनसिंह जी आर्य के मकान पर बृहद् यज्ञ करके पूरे गांव में मनाया गया जिसमें युवाओं ने अधिक संख्या में भाग लिया व आर्यसमाज से जुड़ने का आश्वासन दिया व आर्यसमाज का काम करने का संकल्प लिया जिसमें आर्यवीर दल का शिविर भी लगाया जाएगा। सभी ने पूरा सहयोग दिया।

-रोशनलालार्य, आर्यसमाज मन्दिर, जिला रेवाड़ी

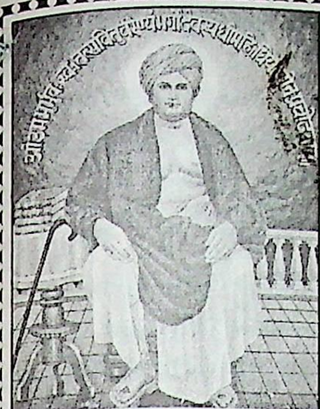


आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१



685 पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराञ्चल)


आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष ३२ अंक २३ ७ मई, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

ओ३म्
## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
3/5, दयानन्द भवन, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान) नई दिल्ली-110002

क्रमांक सा.आ.प्र.स./97/2005 दिनांक 1-5-2005

## आदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिष्ठित आर्यनेताओं व प्रतिनिधियों की एक बैठक दिनांक २४-४-२००५ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के सभाकक्ष में आयोजित की गई, जिसमें प्रो० शेरसिंह तथा स्वामी इन्द्रवेश ने विस्तार से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वर्तमान पदाधिकारियों की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला और बताया कि अनेक प्रयत्न करने पर भी वर्तमान पदाधिकारी सार्वदेशिक सभा के साथ सहयोग करने के लिए तैयार नहीं हैं और वे न केवल आर्थिक अनियमितताओं में संलिप्त हैं अपितु सभाप्रधान साधारणसभा द्वारा लिए गए सर्वसम्मत निर्णयों को भी मनमाने ढंग से बदल रहे हैं। दोनों आर्यनेताओं के विचार सुनने के बाद उपस्थित सभी आर्यजनों ने एक स्वर से सार्वदेशिक सभा से उचित संवैधानिक कदम उठाने का अनुरोध किया। इन आर्यनेताओं की लिखित में प्राप्त शिकायतों का संज्ञान लेते हुए सार्वदेशिक सभा के पत्र क्रमांक ८७ दिनांक २५-४-२००५ के माध्यम से मैंने (सभाप्रधान स्वामी अग्निवेश ने) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को पत्र लिखकर इस संदर्भ में ३०-४-२००५ तक उत्तर भेजने के लिए कहा। पहले तो आचार्य बलदेव ने सार्वदेशिक सभा द्वारा भेजे पत्र को लेने से मना कर दिया किन्तु अब दिनांक ३०-४-२००५ को सभा कार्यालय में एक चार पृष्ठ का फैक्स प्राप्त हुआ है जिसमें पत्रप्रेषक के रूप में श्री सत्यवीर शास्त्री के हस्ताक्षर हैं। फैक्स से प्राप्त पत्र में वांछित बिन्दुओं का उत्तर देने में कोई न कोई निराधार बहाना बनाकर आनाकानी का रुख अपनाया गया है, यहां तक कि पत्र की भाषा व शैली सामान्य शिष्टाचार (जो एक प्रान्तीय सभा का सार्वदेशिक सभा के साथ होना चाहिए) की सीमा का उल्लंघन कर रही है। आपके अपने पत्र में उन तथ्यों की अनदेखी की है जो श्री वधावन ने अपने पत्र संख्या २३७/०४ दिनांक १८-६-२००४ में आचार्य बलदेव जी को लिखा है, जिसके अनुसार उन्होंने आपके २७ जून २००४ के चुनाव को अवैध और रद्द माना है। यही नहीं आचार्य बलदेव ने अपने गुड़गांव की आर्यसमाज को पत्र संख्या १५२१ (क) दिनांक १-१०-२००४ को लिखे पत्र से भी आंखें मूंदकर गिड़गिड़ाने का घृणित कदम उठाया है। उन तथ्यों के आधार पर आपका २७ जून, २००४ का चुनाव अवैध है और आप सार्वदेशिक सभा को न मानकर अपने आपको स्वतंत्र मानते हैं। यह अपने आप में धृष्टता की पराकाष्ठा है। यही नहीं जिन व्यक्तियों ने एक षड्यन्त्र के तहत स्व० स्वामी ओमानन्द सरस्वती का अपमान किया था और उन्हें आर्यसमाज से निकालने की कुचेष्टा व घिनौना काम किया था, उन्हीं कैप्टन देवरत्न और विमल वधावन को आपने सार्वदेशिक सभा का वैध अधिकारी माना है। जबकि पहले एक मामले में यही अधिकारी सार्वदेशिक सभा के बारे में कोर्ट में लिखकर दे चुके हैं कि सार्वदेशिक सभा को हमारे काम में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। इन बातों का संज्ञान लेते हुए तथा अपने पूर्ण विवेक का प्रयोग करते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि यदि हरयाणा प्रान्त में आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अधिकारियों का यही रवैया रहा तो आर्यसमाज के काम में न केवल बाधा उत्पन्न होगी बल्कि इससे इनका आर्थिक अनियमितताएं करने में और भी हौंसला बढ़ जाएगा।

अतः सार्वदेशिक सभा के संविधान की धारा-१० (ग) का उपयोग करते हुए मैं स्वामी अग्निवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा जिसके वर्तमान प्रधान आचार्य बलदेव जी तथा मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री जी हैं, को तुरन्त प्रभाव से भंग करता हूं तथा सभा का काम चलाने तथा आगामी ६ मास में फिर से नया चुनाव करवाने के लिए निम्न प्रकार से नई तदर्थ समिति गठित करता हूं।

इस तदर्थ समिति के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी होंगे जिनको अदालत के आदेश पर तथा स्वामी ओमानन्द जी के आशीर्वाद से चुना गया था।

(शेष पृष्ठ दो पर) -स्वामी अग्निवेश, सभाप्रधान

## अत्यावश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पुराना कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन में था और नये प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी का कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में है। इनके विवाद के कारण सर्वहितकारी के ग्राहकों, लेखकों आदि को किसी प्रकार का कष्ट न हो इसके लिए सर्वहितकारी सम्बन्धी समस्त डाक-पत्र, लेख, मनीआर्डर आदि नीचे लिखे पते पर ही प्रेषित करें।

यदि आपको सर्वहितकारी साप्ताहिक समय पर नहीं मिलता है तो आप नीचे लिखे पते पर पोस्टकार्ड द्वारा ग्राहक संख्या सहित सूचित करें अथवा नीचे लिखे नम्बरों पर फोन द्वारा सूचित करेंगे तो समुचित कार्यवाही की जायेगी।

सर्वहितकारी के परिवर्तन में जो समाचार-पत्र आते हैं उनके सम्पादकों से भी मेरा नम्रनिवेदन है कि वे भी अपने समाचार-पत्र नीचे लिखे पते पर ही प्रेषित करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन के पते पर प्रेषित पत्र, लेख, मनीआर्डर आदि मुझे नहीं मिलेंगे तो अव्यवस्था हो जायेगी। अतः आप सभी से पुनः प्रार्थना है कि इस सूचना को अत्यावश्यक समझें।

दूरभाष : 01262-200700
मो० 94160 51111
मो० 94160 52111
मो० 94160 53111

**वेदव्रत शास्त्री**
सम्पादक 'सर्वहितकारी'
दयानन्दमठ, रोहतक-124001

## आदेश....... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

### आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की नवगठित तदर्थ समिति

प्रधान : स्वामी इन्द्रवेश जी

मन्त्री : चौ० जयसिंह ठेकेदार (गोहाना) सोनीपत

उपप्रधान : १. श्री जगवीरसिंह (एडवोकेट), २. चौ० सूबेसिंह रोहतक ३. डॉ० रणधीर सांगवान सिरसा, ४. बहन कलावती रिवाडी ५. श्रीमती विमला मेहता

कोषाध्यक्ष : श्री धर्मचन्द, रोहतक

पुस्तकाध्यक्ष : डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार, रोहतक (सभाप्रधान के विशेष कार्याधिकारी भी होंगे)

उपमन्त्री : १. श्री सत्यवीर शास्त्री, मोखरा, २. श्री चन्द्रपाल राणा, पाकस्मा ३. श्री रामकुमार आर्य, नरवाना, ४. श्री सन्तराम आर्य, रोहतक ५. श्री रणवीरसिंह (गढ़ी बोहर)

प्रस्तोता : श्री रामधारी शास्त्री (जीन्द)

सदस्य:

१. प्रो० शेरसिंह जी
२. श्रीमती प्रभातशोभा
३. श्री लाभसिंह पानीपत
४. श्री महेन्द्र शास्त्री, गुड़गांव
५. श्री इन्द्रसिंह नीमड़ीवाली भिवानी
६. प्रो० श्योताजसिंह
७. श्री रामचन्द्र रोहणा
८. श्री महेन्द्रसिंह पानीपत
९. श्री सुरेन्द्र शास्त्री, गोहाना
१०. आचार्य हरिदेव, गौतमनगर, दिल्ली
११. डॉ० बारूराम
१२. श्री वेदव्रत शास्त्री, रोहतक
१३. भगत मंगतूराम, तावडू
१४. श्री जसवन्त देशवाल (झज्जर)
१५. दिनेश लाठर, करनाल
१६. श्री धुलाराम, जीन्द
१७. श्री सुरेन्द्रपाल शर्मा, कालका
१८. बलवीर शास्त्री, भैंसवाल
१९. आचार्य सुदर्शनदेव, बालन्द
२०. श्री ब्रह्मजीत आर्य, बहादुरगढ़
२१. श्री दुलीचन्द शर्मा, महेन्द्रगढ़
२२. श्री राजेन्द्र बीसला, पूर्व एम.एल.ए. वल्लभगढ़
२३. श्री देवराज विद्यालंकार, आंवली
२४. श्री राममोहनराय, पानीपत
२५. श्री सतीश आर्य महेन्द्रगढ़
२६. श्री हरीराम वकील पानीपत
२७. प्रो० इन्द्रदेव, जीन्द
२८. श्री आजादसिंह, सोनीपत
२९. वैद्य गेन्दाराम, यमुनानगर
३०. श्री जयवीर आर्य, फरीदाबाद
३१. श्री जगदीश शीवर, सिरसा
३२. श्री देवेन्द्रसिंह, जीन्द
३३. श्री प्रतापसिंह, मुडलाना
३४. श्री पृथ्वीसिंह आर्यसमाज जंक्शन जीन्द
३५. श्री सत्यवीर शास्त्री, काठमण्डी, सोनीपत
३६. श्री देशबंधु, फरीदाबाद
३७. श्री बलराज़ मुद्गिल, नारायणगढ़
३८. श्री रामनिवास, नारनौल
३९. श्री रामपाल, सुरहैती
४०. श्री मामनसिंह, दयानन्दमठ, रोहतक
४१. श्री सत्यवीर शास्त्री, डालावास
४२. श्री दर्शनसिंह, मालखेड़ी, कैथल
४३. मा० छतरसिंह, बिरहौड़
४४. कर्नल सतीशचन्द्र धवन
४५. श्री स्वतन्त्रानन्द शास्त्री, बलियाणा
४६. श्री ऋषिपाल सुपुत्र म० श्रीचन्द, अनंगपुर, फरीदाबाद।
४७. श्री सतपाल आर्य, फरीदाबाद
४८. वैद्य ताराचन्द, खरखौदा

(स्वामी अग्निवेश)
सभा प्रधान

**प्रतिलिपि एवं सूचनार्थ :-**

१. स्वामी इन्द्रवेश जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक (हरयाणा)
२. आचार्य बलदेव जी, निवर्तमान प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)
३. श्री सत्यवीर शास्त्री, निवर्तमान मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)
४. रजिस्ट्रार सोसायटीज रोहतक, हरयाणा
५. उपायुक्त रोहतक (हरयाणा)
६. पुलिस अधीक्षक रोहतक, हरयाणा

## दयानन्दमठ रोहतक का ६८वां वैदिक सत्संग सम्पन्न

रोहतक १ मई, २००५। दयानन्दमठ रोहतक का ६८वां मासिक सत्संग बड़ी श्रद्धा और उल्लास से मनाया गया। आज के मुख्य वक्ता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं लवलीहुड पुरस्कार से सम्मानित स्वामी अग्निवेश थे। इस अवसर पर स्वामी जी ने **'वैदिक एकेश्वरवाद'** पर अपने विचार प्रकट करते हुए वैदिक मत स्वीकार करने की बात कही।

उन्होंने अपने प्रवचन में विरोधियों के साथ भी मित्रता का भाव रखकर कार्य करने की बात कही। उन्होंने कहा कि वेदों में योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः। अर्थात् हे परमात्मा हमारे मन में किसी के प्रति द्वेष न रहे, ऐसी प्रार्थना की गई है। उन्होंने हिंसा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि हिंसा भी कई प्रकार की होती है। उन्होंने नर-नारी विषमता, जातिवाद, काले-गोरे का भेद तथा गरीब-अमीर का भेदभाव आदि भी हिंसा के ही रूप बताये। उन्होंने कहा कि परमात्मा की उपासना हिंसा से नहीं हो सकती। वह तो केवल निर्विकार होकर 'स्थितप्रज्ञ' से ही हो सकती है।

प्रमुख आर्यनेता ने विश्व के भूमंडलीकरण व व्यापार के वैश्वीकरण की टिप्पणी करते हुए कहा कि यूरोप के देश केवल पैसे के लेन-देन को ही भूमंडलीकरण कहते हैं, तो फ़िर मनुष्यों के एक देश से दूसरे देश में जाने पर रोक हटा देनी चाहिए तथा वीजा की सभी सीमाएं हटा देनी चाहिएं, तभी वैश्वीकरण का सही उद्देश्य पूरा किया जा सकेगा। स्वामी जी ने भावुक होते हुए कहा कि आज जो कुछ भी मैं हूं, वह केवल स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के कारण हूं। यदि मुझे कोई पुरस्कार या सम्मान प्राप्त होता है, तो मैं केवल आर्यसमाज की कृपा ही मानता हूं तथा हर समय स्वामी दयानन्द का कृतज्ञ रहता हूं। उन्होंने आगे कहा कि मैं इस पद पर रहते हुए समाज के हर व्यक्ति को आर्यविचारों से जोड़ने का प्रयास करूंगा तथा किसी को भी आर्यसमाज से निष्कासित करने का कार्य नहीं करूंगा। उन्होंने इस अवसर पर अपने संघर्ष के शुरुआती दौर में स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी वरुणवेश, मित्रसेन सिन्धु और उनके परिवार तथा हरयाणा के विभिन्न आर्ययुवकों के द्वारा दिये गये सराहनीय योगदान की चर्चा की तथा कहा कि जब उन्हें स्वीडन की संसद द्वारा व्यवस्था के खिलाफ लगातार संघर्ष करने के उपलक्ष्य में सम्मानित किया गया तो उन्होंने वहां भी अपने सम्बोधन में सबका श्रेय स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज को दिया।

आज के इस मासिक सत्संग में अन्य सत्संगों की अपेक्षा भारी संख्या में लोग स्वामी अग्निवेश को सुनने आये, जिसमें युवकों की संख्या अधिक थी। इस अवसर पर ईश्वरभक्ति के कई सुन्दर भजन हुए तथा हजारों की संख्या से आये आर्यजनों ने ऋषिलंगर का आनंद लिया।

-तीर्थसिंह आर्य, पत्रकार
कार्यालयाधीक्षक

## आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक १५ मई २००५ को प्रातः ११ बजे सभाप्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में सभा कार्यालय, दयानन्दमठ, रोहतक में होगी। इस बैठक में सभी अन्तरंग सदस्य व विशेष आमंत्रित सदस्य समय पर उपस्थित होकर अपने अमूल्य विचारों से अवगत कराने की कृपा करें।

-जयसिंह ठेकेदार, सभामंत्री

# परमात्मा के गुणों का उपदेश

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

**पदार्थ**-(सः) वह (परिः) सर्वत्र (अगात्) विद्यमान है (शुक्रम्) संसार का उत्पन्न करने वाला (अकायम्) निराकार (अव्रणम्) घाव आदि से रहित (अस्नाविरम्) नस-नाड़ी के बन्धन से रहित (शुद्धम्) पवित्र (अपापविद्धम्) पाप से रहित, दोषशून्य, (कविः) ज्ञानी, सर्वपदार्थों को देखने वाला (मनीषी) मन के अन्दर की बात जानने वाला (परिभूः) सबसे बढ़कर हर जगह रहने वाला (स्वयंभूः) अपनी सत्ता के लिए दूसरों की अपेक्षा न करने वाला (याथातथ्यतः) ठीक-ठीक (अर्थात्) पदार्थों का (वि) विशेष रीति से (अदधात्) उपदेश है (शाश्वतीभ्यः+समाभ्यः) प्रजा की शान्ति के निमित्त सदा रहने वाले जीवों के लिये।

**भावार्थ**-परमात्मा, जिसके आदेशानुसार आचरण करने से मनुष्य दुःखों से छूट जाता है, सर्वत्र विद्यमान है। उसका न कोई एजेण्ट=प्रतिनिधि है और ना ही सांसारिक राजाओं की भांति उसके मन्त्री, सचिव तथा सेना हैं। इनकी आवश्यकता तो परिच्छिन्न, शरीरधारी के लिये होती है। परमात्मा शरीर से रहित है और शरीर रहित होने से घाव आदि से भी रहित है। वह किसी तरह भी टूट-फूट नहीं सकता, क्योंकि उसे शरीर और नस-नाड़ियों का बन्धन नहीं है। प्रत्येक अशुद्धि और दोष से शून्य होने के कारण वह शुद्ध है। अपवित्रता, अशुद्धि तो स्थूल वस्तुओं में प्रवेश कर सकती है। परमात्मा अत्यन्त सूक्ष्म है, अतः वह सर्वदा शुद्ध रहता है। वह पाप के फल दुःख से भी रहित है, क्योंकि परमात्मा के विरुद्ध चलने का नाम पाप है, परमात्मा अपने विरुद्ध कभी नहीं चलता। सर्वज्ञ होने के कारण वह उन सब रहस्यों को जो जीवों की दृष्टि से गुप्त रहते हैं, प्रत्येक पदार्थ का उसे ज्ञान है, हर एक के मन की अवस्थाओं का उसे परिचय है। संसार में ज्ञान के बिना कार्य करने से जीवों को हानि पहुंचती है, अतः परमात्मा ने जीवों को सुख और शान्ति देने के लिये, प्रत्येक पदार्थ के यथार्थ ज्ञान का उपदेश किया है।

**प्रश्न**-परमात्मा ने किस भांति जीवों को ज्ञान का उपदेश किया है। वह ज्ञान कौनसा है?

**उत्तर**-[सबके हृदयों में विद्यमान करुणानिधान भगवान् ने सृष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा महर्षियों के आत्मा में ज्ञान प्रकाश किया और] वह ज्ञान वेदों में है, जिनको जीवों की मुक्ति प्राप्ति के लिये परमात्मा ने उपदेश किया है।

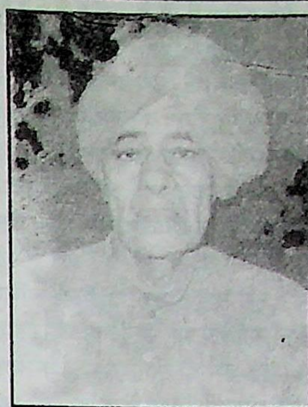
**प्रश्न**-निराकार परमात्मा किस तरह वेदों की रचना और उपदेश करता है? उपदेश करना वाणी से सम्भव हो सकता है? जिसकी वाणी न हो वह किस तरह उपदेश कर सकता है? कई अवसरों पर शरीर की नाना चेष्टाओं के द्वारा भी उपदेश किया जा सकता है, किन्तु जिसके शरीर न हो, वह शारीरिक चेष्टाओं से कैसे उपदेश कर सकता है? अतः निराकार परमात्मा का वेदों द्वारा उपदेश करना सर्वथा असम्भव है।

**उत्तर**-शरीर और वाणी केवल बाहर वालों को उपदेश करने के लिये आवश्यक है किन्तु जो हमारे भीतर रम रहा है, वह हमें शरीर और वाणी के विना भी उपदेश कर सकता है। जैसे किसी मनुष्य का मन बुरे कर्म की ओर जाता है तो आत्मा उसमें भय लज्जा और शंका पैदा करके उसे उससे रोकने के लिये उपदेश करता है। मन में यह भाव पैदा होता है कि कोई देख लेगा तो क्या होगा। अथवा सफल ही न हो। इस भांति जो सबके भीतर विद्यमान है, उपदेश करने के लिये उसे शरीर की आवश्यकता नहीं।

**प्रश्न**-शरीर के विना निराकार परमेश्वर संसार को किस प्रकार रच सकता है? प्रत्येक पदार्थ को बनाने के लिये हाथ, पांव और हथियार चाहियें। यदि हाथ, पांव और हथियार न हों तो यह अनेक प्रकार का संसार किस भांति बन सकता है?

**उत्तर**-हाथ, पांव और हथियारों की आवश्यकता परिच्छिन्न [सीमा वाले] को होती है। जो सर्वत्र विद्यमान है उसको हाथ-पांव आदि किसी अङ्ग की आवश्यकता नहीं होती। वृक्षों के पत्तों पर नाना प्रकार के चित्र, हाथ-पांव के विना बन जाते हैं। फूलों की पंखड़ियां, फलों के आकार, मनुष्य का शरीर, सारांश यह है कि लाखों पदार्थ हाथ-पांव के विना बनते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि हाथ-पांव के विना भी रचना सम्भव है। परिच्छिन्न जीवात्मा को हाथ-पांव आदि की आवश्यकता होती है, रचना के लिये अपरिच्छन्न, सर्वव्यापक भगवान् को हाथ-पांव आदि अङ्गों और हथियारों की आवश्कयता नहीं है। हाथ-पांव वाला तो सब काम कर भी नहीं सकता। कोई मनुष्य ऐसा नहीं दीखता जो परमाणु को पकड़ सके और ना ही इस समय कोई ऐसा यन्त्र है जिससे परमाणु को पकड़ सके। परमाणु को देखने के लिये अभी तक कोई सूक्ष्मवीक्षण यन्त्र (Microscope) भी तैयार नहीं हुआ। इससे सिद्ध होता है कि सृष्टिकर्ता वही हो सकता है जिसके हाथ, पैर शरीर न हो, वरन वह परमाणु सेभी सूक्ष्म तथा सर्वत्र विद्यमान हो।

-स्वामी दर्शनानन्द



**स्वामी इन्द्रवेश जी**
सभाप्रधान



**चौ० जयसिंह ठेकेदार**
सभामन्त्री



**चौ० धर्मचन्द**
सभा-कोषाध्यक्ष



**डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार**
सभा-पुस्तकाध्यक्ष
सभाप्रधान के विशेष कार्याधिकारी

ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में
देश की ज्वलन्त समस्याओं पर विचार करने एवं
आर्यसमाज की भूमिका व भावी कार्यक्रम निर्धारण हेतु

## राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्त्ता महासम्मेलन

सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष **स्वामी अग्निवेश** के नेतृत्व में

**दिनांक 22 व 23 मई, 2005**

**स्थान : तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली-1**

### मुख्य आकर्षण

❑ देशभर से आर्यसमाज के चुने हुए 5000 सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का भव्य समागम ❑ राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर आर्यसमाज का दृष्टिकोण व भूमिका ❑ आर्यराष्ट्र का घोषणा पत्र व योजनाएं। ❑ महर्षि दयानन्द मिशन के लिए एक लाख क्रान्तिवीर, वीरांगना सदस्यता अभियान ❑ जाति तोड़ो-समाज जोड़ो सम्मेलन ❑ कन्या भ्रूण हत्या बंद करो सम्मेलन ❑ राष्ट्रीय शराबबंदी सम्मेलन ❑ पाखण्ड-खण्डिनी पताका सम्मेलन ❑ अध्यात्म जागरण सम्मेलन।

सभी आर्य बहन, भाई केसरिया पगड़ियां व अंगवस्त्र पहनकर हजारों की संख्या में पहुंचें। आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है। कृपया अपनी संख्या के बारे में शीघ्र सूचित करें जिससे उचित आवास व भोजन का प्रबन्ध किया जा सके। महासम्मेलन हेतु एकत्रित धनराशि सभा कार्यालय 3/5, दयानन्द भवन, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002 पर शीघ्र भेजने की कृपा करें। फोन : (011) 23274771, 23260985

| **स्वामी इन्द्रवेश** | **श्री सत्यव्रत सामवेदी** | **प्रो. कैलाशनाथ सिंह** |
| --- | --- | --- |
| समारोह संरक्षक | कार्यकारी प्रधान | महामन्त्री एवं संयोजक |
| **प्रो० शेरसिंह** | **चौ० मित्रसेन आर्य** | **श्री अनिल आर्य, डॉ० धर्मपाल** |
| उपप्रधान | कोषाध्यक्ष | सहसंयोजक |

# अविस्मरणीय टंकारा यात्रा

महर्षि दयानन्द की जयन्ती ५-३-०५ को टंकारा में थी, मेरी इच्छा थी कि जिस प्रकार भगवान राम तथा भगवान् कृष्ण के जन्मदिवस पर लंगरों की व्यवस्था की जाती है इसी प्रकार महर्षि जी की जयन्ती पर ऋषिलंगर की व्यवस्था की जाए।

मेरी प्रेरणा से आर्यवीर दल के मण्डलपति श्री शिवदत्त आर्य श्री जगदीश आर्य तथा श्री श्यामसुन्दर आर्य ने इस कार्य को सुचारु रूप से चलाने का उत्तरदायित्व लिया यह ऋषिलंगर आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय गुड़गांव के बाहर प्रातः १० बजे से शुरू होकर सायं ४-०० बजे तक चलता रहा। लंगर में पूरी साग तथा हलवा वितरित किया गया, लंगर में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आर्य साहित्य भी भेंट किया गया। इससे पूर्व दिनांक ४-३-०५ रात्रि को आर्यपरिवारों की एक बस श्री सोमनाथ आर्य के नेतृत्व में टंकारा के लिए रवाना हुई, पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष टंकारा के यात्रियों का भव्य स्वागत तथा आदर सत्कार किया गया, गाड़ी को ओ३म् ध्वजों से सुसज्जित किया गया। गाड़ी जब रेवाड़ी पहुंची तो आर्यसमाज रेवाड़ी के सज्जनों ने ऋषिभक्तों का मालाओं तथा फल भेंट कर स्वागत किया। इसी प्रकार अलवर में लगभग १०० आर्य भाई-बहनों ने ऋषिभक्तों का पुष्पमालाओं तथा रात्रि भोजन के साथ स्वागत किया। रेलवे स्टेशन महर्षि दयानन्द की जयकारों से गूंज उठा, आर्यसमाज अलवर के अधिकारियों को साहित्य भेंट किया गया। अगले दिन गाड़ी प्रातः आठ बजे अहमदाबाद पहुंची। वहां पर आर्यसमाज टांकडिया के प्रधान श्री अमरनाथ ने वहां यज्ञ की पूर्ण व्यवस्था कर रखी थी। सभी ऋषिभक्तों ने यज्ञ किया। यहां भी अधिकारियों को प्रचारार्थ साहित्य भेंट किया गया। उन्होंने ऋषिभक्तों को प्रातराश कराया। गाड़ी राजकोट के लिए रवाना हो गई, राजकोट से बसों द्वारा हम सभी टंकारा पहुंचे, हमारी यह टंकारा यात्रा एक प्रचार यात्रा होती है जहां भी गाड़ी रुकती है वहां साहित्य बांटा जाता है प्लेटफार्म पर भजनों द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार भी किया जाता है। इस बार ऋषिभक्तों की संख्या पिछले वर्षकी अपेक्षा डेढ़ गुणा अधिक थी, निवास तथा भोजन व्यवस्था बड़ी शानदार थी। -रामचन्द्र आर्य, ४६६, भीमनगर, गुड़गांव (हरयाणा)

## सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् जिला रोहतक का पुनर्गठन

दयानन्दमठ रोहतक। 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' जिला रोहतक व जिला झज्जर के कार्यकर्ताओं की एक विशेष बैठक १ मई २००५ को दयानन्दमठ परिसर में हुई जिसकी अध्यक्षता परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष आचार्य सन्तराम आर्य ने की। बैठक में सर्वसम्मति से दोनों जिलों की इकाइयों का पुनर्गठन किया गया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् जिला रोहतक की कार्यकारिणी निम्न प्रकार से बनाई गई-प्रधान-श्री अजयकुमार आर्य टिटौली, उपप्रधान-श्री रामेन्द्र आर्य खरकड़ा व श्री सुनील आर्य भैंणी भैरो, मंत्री-श्री मनोज आर्य, उपमंत्री-श्री सुशील आर्य महम व विजयेन्द्र शास्त्री मोखरा। कोषाध्यक्ष-श्री रविन्द्र आर्य सीसर खास (महम)। सहायक कोषाध्यक्ष-श्री कुलदीप आर्य मदीना गिन्दरान। लेखानिरीक्षक-श्री विनोदकुमार आर्य टिटौली (कबूलपुर) तथा प्रचारमंत्री-श्री धीरेन्द्र आर्य निन्दाना को बनाया गया।

**अन्तरंग सदस्य**-सोमवीर आर्य व नरेन्द्र आर्य, दिनेश आर्य, लोकेन्द्र आर्य, प्रदीप आर्य, देवेन्द्रआर्य, हर्षवर्धन महम, राजेश आर्य, ध्रुवभक्त ब्र० विनोद आर्य पाकस्मा, देवीलाल कबूलपुर, बिजेन्द्र भालौठ, देवेन्द्र आर्य कबूलपुर, महेन्द्र आर्य मदीना, धौला व सोनू-धामड़, मोनू, मनजीत।

**आर्य युवक परिषद् झज्जर**-प्रधान-श्री रामवीर आर्य (सिवाना), उपप्रधान-सुरेन्द्र आर्य बरहाणा, मन्त्री-श्री प्रवीण कुमार आर्य दूबलधन, उपमंत्री-सुखवीर पहलवान बामडौला, उपमंत्री-मनोज आर्य दादरी तोए। कोषाध्यक्ष-श्री मुनेन्द्रकुमार झज्जर, प्रचारमंत्री-राकेशकुमार मुनीमपुर।

**अन्तरंग सदस्य**-ब्र० वीरदेव आर्य संरक्षक सदस्य, सोमवीर उर्फ काला, दूबलधन, लीलू पहलवान लाडपुर, ओमप्रकाश आर्य किलोई, श्री ओम आर्य गोयलाकलां, श्री अश्वनीकुमार खेड़ीजट।

अन्त में परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष आचार्य सन्तराम आर्य ने संगठन के सभी साथियों को निर्देश दिया कि २२ व २३ मई २००५ को राष्ट्रीय महासम्मेलन तालकटोरा स्टेडियम दिल्ली में होने जा रहा है। उसमें सभी साथी केसरिया पगड़ी बांधकर जायं तथा प्रदेश भर के सभी व्यायाम शिक्षक व कार्यकर्त्ता दल बल सहित भाग लें। १५ मई २००५ रविवार को दयानन्दमठ रोहतक में प्रदेश के सभी कार्यकर्ताओं की बैठक प्रातः १० बजे बुलाई गई है। -ब्र० वीरदेव आर्य, परिषद् कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक

## सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् जिला जीन्द का पुनर्गठन

जींद। आर्यसमाज का युवा संगठन ''सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्'' की जिला जींद के कार्यकत्ताओं की एक विशेष बैठक ३७०५ अरबन एस्टेट जींद में हुई जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष आचार्य सन्तराम आर्य ने की। वैधानिक प्रक्रिया के बाद पिछले तीन वर्ष तक जिला जींद की इकाई के मंत्री श्री धर्मवीर जी ने नये चुनाव के लिए प्रस्ताव पेश किया। संवैधानिक अधिकार प्राप्त होते हुए भी प्रदेश अध्यक्ष आचार्य सन्तराम आर्य ने तीन व्यक्तियों का एक पैनल बनाया और उसी पैनल ने सर्वसम्मति से डा० राजपाल आर्य जाजवान का नाम प्रस्तावित किया जिसे सभी कार्यकर्त्ताओं ने सहर्ष स्वीकार करके अनुमोदन कर दिया तथा उसी समय मौके पर ही निम्न कार्यकारिणी का गठन भी किया गया।

प्रधान-डा० राजपाल आर्य जाजवान, उपप्रधान-श्री वजीरसिंह आर्य सामलो कलां, उपप्रधान-श्री देवेन्द्र आर्य-बुआना, उपप्रधान-श्री अजमेर आर्य-खटकड़, महामंत्री-श्री नन्दकिशोर शास्त्री-देवरड़, मंत्री-श्री कुलदीपसिंह आर्य-सफीदों, प्रेस सचिव-श्री पवनकुमार आर्य, सह-प्रेससचिव-श्री जगवीरसिंह शास्त्री-अरबन एस्टेट। संरक्षक-श्री रामधारी शास्त्री, श्री जोरासिंह आर्य-फोफडियाँ, श्री हुश्यारसिंह खटकड़, श्री पृथ्वीसिंह चहल, श्री धर्मवीर आर्य सरपंच, श्री जयवीर सामला दलवीर चहल रधांना, शीशपाल शादीपुर जुलाना। -रामबीर आर्य, कार्यालय-दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

## लखीराम आर्य अनाथालय रोहतक के समाचार

दयानन्दमठ रोहतक में यह अनाथालय सफलता पूर्वक चल रहा है। इस समय ४४ अनाथ बालक गुरुकुलों के नियमानुसार प्रातः जागरण, शौच, व्यायाम, स्नान, सन्ध्या, यज्ञ प्रातराश के बाद नगर के आर्य विद्यालयों में पढ़ने जाते हैं। सायंकाल भी संध्या तथा स्वाध्याय का कार्यक्रम होता है। बालकों का समस्त व्यय अनाथालय वहन कर रहा है। गत सप्ताह निम्नलिखित दानी महानुभावों ने दान देकर सहयोग दिया है-श्री दयानन्द जी जनता कालोनी रोहतक १०१ रु०, श्रीमती शकुन्तला जी सैक्टर-१, रोहतक ६०० रु०, श्री के.एन. बजाज सेक्टर-१ रोहिणी, दिल्ली ५०० रु०, श्री सत्यपाल महलान सेक्टर-३, रोहतक १५०० रु०, गुप्तदान १०१ रु०, श्री अशोककुमार मक्कड़ डेयरी रोहतक ५० रु०, कु० विपाशा पुत्री डॉ० गुलशन, जगदीश कालोनी रोहतक २५० रु०, श्री मधुप्रिया पटेलनगर रोहतक १०० रु०।

-केदारसिंह आर्य, द्वारा आर्य अनाथालय रोहतक

## सम्पादकीय....

# एक और झूठ

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भूमि को विभिन्न पट्टों पर दिये गये प्रलेखों का कहना है कि हमारे स्वरूप के निम्न प्रकार के खाके से जाना जा सकता है। ये सभी पट्टे आचार्य बलदेव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक द्वारा सभा के नाम पर दिये गये प्रस्ताव सं० १२ दिनांक ३१-८-२००३ के, जिसको संयुक्त उपपंजीयन अधिकारी रोहतक में मु०नामा आम रजिस्टर में नं० २०२ ९-१०-२००३ से दर्ज दिखाया गया है और जिसके द्वारा श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री पुत्र श्री लालसिंह, १२ आदर्श कालोनी पलवल को मुख्त्यारेआम नियुक्त किया गया है, के द्वारा आचार्य बलदेव की ०ल पर श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री ने दिये हैं। ये सभी २९-१०-२००३ से ३१-१-२००५ के बीच पंजीकृत करवाये गये हैं। खास बात ध्यान में देने की यह भी है कि सभा की ओर से एक मुख्त्यारेआम पहले भी नियुक्त किया हुआ है। इस अवधि से पूर्व जब भी कभी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में सभा की भूमि के पट्टे दिये गये थे तो उन्हें आचार्य बलदेव व उनके सहयोगियों ने 'महान् घपले' की संज्ञा दी है लेकिन इस आचरण को वे संस्थाहित और सभाहित के आवरण से ढकने का प्रयास कर रहे हैं। यहां पर यह बात भी उल्लेख के योग्य है कि प्रलेखों के अनुसार अधिकार-पत्र आचार्य बलदेव द्वारा दिया दिखाया गया है, जबकि पट्टे दिये जाने के बारे में जब आचार्य बलदेव से सभा के एक उपप्रधान ने जानना चाहा तो उनका उत्तर था कि उन्हें इस विषय की कोई जानकारी नहीं है। छानबीन पर पता चला कि पट्टे आचार्य विजयपाल तथा श्री सत्यवीर शास्त्री की सहमति से दिये गये थे। इस तथ्य के उजागर होने पर सभाप्रधान आचार्य बलदेव ने कोई कार्यवाही नहीं की और चुप्पी धारण कर ली। इस कार्यवाही को अब सम्मिलित रूप से 'सभाहित' नाम दिया जा रहा है। क्या आचार्य बलदेव का सभाप्रधान होने के नाते यह कर्त्तव्य नहीं बनता था कि उनकी जानकारी में आने के बाद वे इस दिशा में कोई ठोस कदम उठाते और उन व्यक्तियों के खिलाफ कार्यवाही करते, जिन्होंने उनकी आज्ञा के बिना और उन्हें सामान्य जानकारी दिये बिना भी भूमि को मामूली से भावों पर दिलवा दिया। क्या आचार्य बलदेव इस विषय में कोई जानकारी आर्यजनों को देना पसन्द करेंगे कि यदि ये सभी पट्टे सभाहित को ध्यान में रखकर दिये गये थे तो इनके उजागर होने और प्रतिरोध होने पर श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को मुख्त्यारेआम की जिम्मेदारी से किसलिए पृथक् कर दिया गया और उनके स्थान पर एक नई प्रक्रिया से (जिसकी वैधानिकता के बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है) तीन अन्य को इसी भूमिका का निर्वहन करने का अधिकार दे दिया गया। उन्होंने क्या-क्या किया, इसकी खोज अभी जारी है। अपने पद के उत्तरदायित्वों को जो व्यक्ति ठीक तरह से न निभाए, संगठन उनको कठपुतली बनाने की कोशिश करे, तो किस प्रकार उसे ईमानदारी और सच्चरित्रता के नाम पर सिर पर ढोया जा सकता है, ईमानदारी और सच्चरित्रता की परिभाषा इतनी संकुचित नहीं है कि वह एक ही स्थान पर आकर चिपक जाती हो किन्तु इसकी किरणें चारों तरफ फैलने वाली होती हैं। यदि एक भी दिशा में धुंधलापन दिखाई देता है तो उसे संपूर्ण शुद्धता कभी नहीं कहा जा सकता। जो कुछ भी इन पट्टों के प्रलेखों से प्रकट हो रहा है, उससे आप स्वयं समझ सकते हैं, इनके कारण लोगों के मन में सन्देह पैदा होना स्वाभाविक है। इनका अध्ययन करने से स्पष्ट है कि इनको जिन कम भावों से दिया गया है, वे बाजार भाव से बहुत ही कम हैं।

-जयसिंह ठेकेदार उपप्रधान

## आचार्य बलदेव के प्रधानकाल में दिये गये पट्टों का विवरण

| क्रम | नाम एवं पता | खसरा नं० खेवट नं० | कुल जमीन | समय | पट्टे की तिथि | सालाना रकम |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | सुरीन पुत्री श्री रामप्रताप आर्यनगर हिसार | 232 खेवट 304/32 11,12,13 | 8 कनाल | 40 साल | 5-3-2004 | 30,000 सालाना |
| 2. | सुरजीत | 148 मिन 11 किला नं० 8 | 2 कनाल | 20 साल | 13-11-2003 | 5,000 सालाना |
| 3. | वीना आनन्द पत्नी महेन्द्रपाल आनन्द सी-21, चिराग इन्कलेव | 232 खेवट 28/11 20 2/13 | 5 कनाल 18 मरले | 20 साल | 29-10-2003 | 8,000 सालाना |
| 4. | देवेश छाबड़ा पुत्र श्री फकीरचन्द आर 725 न्यू राजेन्द्रनगर नई दिल्ली | 232/312 मिन 314 | 2 कनाल 14 मरला | 20 साल | 12-11-2003 | 8,000 सालाना |
| 5. | मै/- आर.पी.एस. एसोसिएट्स ए 2610 ग्रीन फील्ड कालोनी फरीदाबाद | 232 मिन 23 24-25 | 24 कनाल | 30 साल | 9-4-2004 | 60,000 सालाना |
| 6. | अरविन्द बत्रा पुत्र रणधीरसिंह बत्रा 101 कालका जी, नई दिल्ली | 232/312 मिन 314 9-10 | 5 कनाल 7 मरले | 20 साल | 12-11-2003 | 16,000 सालाना |
| 7. | जतिन्द्रपाल आनन्द पुत्र महेन्द्रपाल आनन्द 21 चिराग इन्कलेव नई दिल्ली | 43-232 44-304 21, 28 | 10 कनाल 1 मरला | 20 साल | 29-10-2003 | 34,500 सालाना |
| 8. | तेजसिंह तेवतिया पुत्र मोहनलाल 1495 सैक्टर 17 गुड़गांव | 232/304 मिन 21 | [illegible] कनाल | 20 वर्ष | 1-7-2004 | 30,000 सालाना |
| 9. | महेन्द्रपाल आनन्द पुत्र सोहनसिंह आनन्द 21 चिराग इन्कलेव नई दिल्ली | 43/44 मिन 19-20 मिन 9-10 मिन 11-12 मिन | 12 कनाल 1 मरला | 20 साल | 29 10-2003 | 15,000 सालाना |
| 10. | पार्टनर्ज (1) कुलवीर पुत्र सरदार गुरदेव 32-ए, हिमगिरि अपार्टमेंट कालका जी, दिल्ली (2) अजयपाल पुत्र लक्ष्मणसिंह 24 सी हिमगिरि अपार्टमेंट कालका जी, दिल्ली | खेवट 115 खतोनी 149 मिन 27/22 | 2 कनाल | 20 साल | 13-11-2003 | 5,000 सालाना |
| 11. | जगदीश पुत्र प्रहलादसिंह निवासी अनंगपुर फरीदाबाद | खेवट 209 खतौनी 258 मिन 28/14/1 7 | 4 कनाल | 25 साल | 15-7-2004 | 8,000 सालाना |
| 12. | सुभाषचन्द्र पुत्र भुल्लीराम अनंगपुर फरीदाबाद | 232 खेवट 304 खतौनी 15/20-21 | 2 कनाल 10 मरले | 20 साल | 11-12-2003 | 3,000 सालाना |
| 13. | अमितकुमार पुत्र सुशीलकुमार 211 सेक्टर-16-ए फरीदाबाद | 232 304 मिन 35/19-20 मिन मिन | 2 कनाल | 24 साल | 3-12-2004 | 6,050 सालाना |
| 14. | अमितकुमार पुत्र सुभाषचन्द्र 674/16-ए, फरीदाबाद | 232 खेवट 304 खतौनी 35/19-20 मिन | 2 कनाल | 24 वर्ष | 3-12-2004 | 3,000 सालाना |
| 15. | जगदीश पुत्र प्रहलाद अनंगपुर, फरीदाबाद | 115 खेवट 148 खतौनी 27/19 | 2 कनाल | 20 वर्ष | 31-1-2005 | 3,000 सालाना |
| 16. | विजय आहूजा पुत्र तिलकराज आहूजा | 209 258 27/19 | 3 कनाल 18 मरला | 20 वर्ष | 12-11-2003 | 5,000 सालाना |
| 17. | (1) सुरेन्द्र पुत्र धर्मवीर अनंगपुर, फरीदाबाद (2) सुभाष शर्मा पुत्र ए.एन. शर्मा-2ए/59 एन.आई.टी., फरीदाबाद | 232 304 7-8-9 12,13,14 | 24 कनाल | 25 वर्ष | 11-2-2004 | 90,000 सालाना |
| 18. | अजयपालसिंह पुत्र अमृतसिंह अनंगपुर, फरीदाबाद | 209/232 259/308 28/16,25 | 8 कनाल 5 मरले | 25 वर्ष | 15-7-2004 | 15,000 सालाना |

# आर्यसमाज पर आतंकवाद की काली छाया

□ प्रो० शेरसिंह

भारत की राजनीति की 'आयाराम-गयाराम' की कहावत और परम्परा देने का हरयाणा के माथे पर लगा आरोप एक ऐसा कलंक है, जो कभी नहीं मिट पाएगा। कुछ ऐसा ही कलंकमय इतिहास लगता है हरयाणा आर्यसमाज के माथे पर कलंक लगाकर आचार्य बलदेव रचना चाहते हैं। आर्यसमाज प्रजातांत्रिक व्यवस्था में विश्वास रखने वाली संस्था है। अनेक विवादों और अन्तर्कलह के बावजूद निर्वाचन के माध्यम से आये जनमत का यहां सदा आदर किया गया है। आर्यसमाज तो एक संस्था है, माना कि चारित्रिक प्रभावशालिता के कारण वह देश ही नहीं, मानव समाज को शिक्षा देने का संकल्प लिए है, तो भी भारत जैसे विविधधर्मी देश की विशालता और विराटता के साथ एक संस्था की तुलना क्या? जब इस देश में जनादेश पर स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्व० मोरार जी भाई, श्री चन्द्रशेखर इत्यादि राजनेताओं ने प्रधानमन्त्री पद पूरे सौजन्य एवं शालीनता के साथ छोड़ दिया तो आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को लेकर आचार्य बलदेव इतने मोह में क्यों आ गए कि अध्यक्ष पद पर बने रहने के लिए तरह-तरह की धमकियां दे रहे हैं।

हरयाणा में आर्यसमाज का संगठन इतना शक्तिशाली और सक्रिय रहा है कि लोग हरयाणा प्रान्त को 'आर्य-प्रान्त' पुकारते थे। भारत की आजादी के बाद अपनी संस्कृति, अपनी भाषा और अधिकारों के लिए जिसने सरकार के विरुद्ध लड़ाई लड़ी वह हरयाणा का आर्यसमाज ही था। हिन्दी को राजभाषा का पद दिलाया, पूर्ण नशाबन्दी के लिए संघर्ष करना, हरयाणावासियों को पंजाब में हो रहे सौतेले व्यवहार से मुक्ति दिलाना, इन सबका श्रेय आर्यसमाज को जाता है। ऐसी प्रतिष्ठित और कल्याणकारी संस्था का इतिहास बदलकर अपयश बटोरना क्या उचित है?

**१. जब संन्यासी झूठ बोले**-हम यहां वस्तुस्थिति प्रस्तुत कर रहे हैं इस आशय से कि जो भ्रम फैलाए जा रहे हैं उनसे आर्यजनता को छुटकारा मिले। हम आचार्य बलदेव जी को यह भी याद दिलाना चाहेंगे कि साधुवेश धारण करनेवाला जब कोई झूठ बोलता है या मायामोह में फंसता है तो 'रावण' की लंका ही जल जाती है और भावी पीढ़ियां उसे युगों तक धिक्कारती रहती हैं। आर्यसमाज की प्रतिष्ठा को बचाने के लिए जरूरी है कि जनमत का आदर करें और साधुवाद का पात्र बनें।

**२. सभा में आतंकवाद का प्रवेश**-२७ जून २००४ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव कैप्टन देवरत्न आर्य की सार्वदेशिक सभा से नाता तोड़कर किया गया। १८-६-२००४ के अपने पत्र में श्री वधावन वरिष्ठ उपप्रधान ने संविधान की दृष्टि से उस चुनाव को अवैध करार देकर रद्द कर दिया। १-१०-२००४ को आचार्य बलदेव ने अपने पत्र में स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा स्वतन्त्र है, वह सार्वदेशिक का अधिकार नहीं मानती। २७ जून का चुनाव पूरी तरह सबको मिलाकर नहीं हो पाया था, परन्तु फिर भी वह सर्वसम्मत हो गया था।

जब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बागडोर स्वामी अग्निवेश के हाथ में आ गई तब २७ जून २००४ के चुनाव की कमी को पूरा करके आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और सार्वदेशिक सभा मिलकर चलें। १२ मार्च को गुरुकुल झज्जर के अधिवेशन में हजारों आर्यजनों तथा आचार्य बलदेव आदि ने सार्वदेशिक के परिवर्तन का हाथ उठाकर समर्थन किया। इस निर्णय को औपचारिक रूप देने के लिये बातें चलीं, सभी शंकाओं का समाधान हो गया। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की है, इस प्रकार का शपथ-पत्र आदि देने के आश्वासन के पश्चात् आचार्य विजयपाल और सत्यवीर शास्त्री ने सहमति प्रकट करते हुए कहा कि आचार्य बलदेव नहीं मानते और हम इसलिये विवश हैं।

इसके पश्चात् हरयाणा के आर्यजनों ने निर्णय लिया कि अब तदर्थ समिति का गठन कर देना चाहिये। स्वामी अग्निवेश ने हरयाणा सभा को भंग कर देना चाहिये।

हरयाणा को उनकी अनियमि-तताओं तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में सभा की जमीन के पट्टों के लिये उनसे ३० अप्रैल तक जवाब मांगा। अपने जवाब में उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक सभा को आर्य प्रतिनिध सभा हरयाणा को भंग करने का अधिकार नहीं है। उन्होंने यह भी लिखा कि आपका कब चुनाव हुआ हमको पता नहीं, हम तो कैप्टन देवरत्न की अध्यक्षता वाली सभा को ही मानते हैं। १-१०-२००४ के अपने पत्र में आचार्य बलदेव जी यह लिख चुके थे कि आप दोनों के चुनाव हो गये और मामले कोर्ट में चल रहे हैं, हम किसी को नहीं मानते। अब उस सार्वदेशिक सभा को मानते हैं जिन्होंने इनका चुनाव रद्द कर रखा है।

अगले दिन ही समाचार-पत्रों में वक्तव्य दे दिया कि मैं प्रधान हूं और रहूंगा और मुझे छेड़कर देखो, सबक सिखा दूंगा। यह कहकर उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्दर किस उद्देश्य से प्रवेश किया और क्या करते रहे हैं उसका सार उजागर कर दिया। वे बार-बार कह चुके हैं कि सार्वदेशिक सभा को हरयाणा प्रतिनिधि सभा को भंग करने का अधिकार नहीं है। कैप्टन देवरत्न को बनाने वाले रामफल बंसल ने सार्वदेशिक सभा से आ०प्र० सभा हरयाणा के विधिवत् और अदालत के आदेश पर किये गये चुनाव को भंग कर दिया। आचार्य बलदेव की मान्यता के अनुसार यह अधिकार सार्वदेशिक को नहीं था। परन्तु उनकी महत्त्वाकांक्षा थी कि किसी तरह प्रधान बनूं और आचार्य यशपाल के सहयोग से वे तदर्थ समिति का प्रधान बन गये। उनकी अन्दर ही अन्दर पलती हुई इच्छा पूरी हो गई। अब तो उन्होंने यह ठान ली कि कुछ भी करना पड़े प्रधान जरूर रहना है। उनका चुनाव तो उस सभा ने रद्द कर दिया था जिसे वे अब मानते हैं। फिर भी वे २७ जून के चुनाव के आधार पर आगे बढ़ते रहे। उनको यह अहसास हो गया कि उनकी कलाबाजियों के कारण वे बहुत समय प्रधान नहीं रह पायेंगे। इसलिये उन्होंने फैसला किया कि धन इकट्ठा किया जाये उससे आतंकवादी खरीदे जायें और आतंक के सहारे प्रधान पद कायम रखा जाये। इसलिये सभा की गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ वाली जमीनों के पट्टे देने शुरू कर दिये। इस पर आपत्तियां होने लगीं तो पहले तो अनजान बन गये, बाद में जिस हरिश्चन्द्र शास्त्री को अन्तरंग सभा की स्वीकृति से मुख्त्यारेआम बनाया था और पट्टों पर हस्ताक्षर करवाये थे, उनको निकाल बाहर किया। मनमाने ढंग से धन बटोरने और भवन की मरम्मत का हवाला देकर उन्हें अपने अधिकार में जमा कर लिया। कुरुक्षेत्र से भी बैंक से सब पैसा निकाल लिया। इस पैसे से उन्होंने कुछ आतंकवादियों को सभा कार्यालय में बिठा दिया और धमकी देनी शुरू कर दी। आर्यसमाज तो जनतांत्रिक संस्था है। इसमें तो प्रधान बदलते रहते हैं और कभी आतंकवाद का सहारा लेने की नहीं सोची। यही नहीं भारत के प्रजातंत्र की सारा विश्व सराहना करता है कि यहां सत्ता परिवर्तन शान्तिपूर्ण होता है। बहुमत नहीं रहा तो इन्दिरा गांधी ने मोरार जी भाई को गद्दी सौंप दी। अटल जी ने सरदार मनमोहनसिंह को। वन्दे मातरम् जी ने स्वामी ओ३मानन्द जी को सार्वदेशिक सभा का कार्यालय सौंप दिया। यह कैसा आर्यत्व है आचार्य बलदेव का? प्रधान बने रहने के लिये रोज-रोज बदलना और आतंकवादियों द्वारा धमकियां देना पहली बार हुआ है। आतंकवाद को समूल नष्ट करने के लिये अनेक राष्ट्र लगे हुए हैं। भारत स्वयं उसका शिकार होने के कारण अगली पंक्ति में है।

हम चाहेंगे कि आचार्य बलदेव प्रधान पद के पीछे पागल न हों और शान्तिपूर्ण ढंग से परिवर्तन कबूल करें। जो व्यक्ति रोज-रोज अपने वचन बदलता रहता है, वह चरित्रवान् नहीं कहला सकता। उनका यह कृत्य चरित्र के पतन का द्योतक है, यह उनको समझना चाहिये। उनको पशु-बल का सहारा लेने की बजाय चरित्र-बल को ही मान्यता देनी चाहिये। पतन के रास्ते पर न चलकर वे अपना और समाज का कल्याण करने की सोचें।

# आचार्य बलदेव की पैंतरेबाजी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का काम इसके गठन से लेकर अब तक जिस रूप में चलता रहा है, उसकी पूरी और सही जानकारी आर्यजनों तक पहुंचे, यही इन पंक्तियों को लिखने का उद्देश्य है। आज से तीस वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १९७५ तक दिल्ली, हरयाणा तथा पंजाब की सभी आर्यसमाजें, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत अपना-अपना काम करती थीं, किन्तु सन् १९७३ के बाद आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेताओं में कुछ मुद्दों को लेकर आपसी मतभेद गहरी जड़ पकड़ते जा रहे थे, जिससे उनका आपस में मिलकर चलना लगभग असंभव हो गया था। पंजाब के तथा हरयाणा के आर्यनेताओं की उस समय हालत यह हो गई थी कि वे सन् १९५७ के हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन और बाद में गोरक्षा आंदोलन के बाद भी शायद ही कभी एक मंच पर दिखाई दिये हों। चूँकि पंजाब के अधिकांश आर्यनेता, जो देश के विभाजन के बाद पाकिस्तान से आए थे, पूरी तरह हरयाणा के आर्य नेताओं के साथ अपनी अलग सोच और संस्कृति होने के कारण अपना पूरा सामंजस्य नहीं बैठा पा रहे थे और दोनों ही तरफ एक दूसरे के प्रति अंदरखाने आदर करने का छुपा हुआ अभाव था, इसलिए पंजाब के आर्यनेता पंजाब सभा का विभाजन करवाना चाहते थे, क्योंकि लंबे समय से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पर हरयाणा के नेताओं का अधिकार और वर्चस्व कायम था, जिसे वे सहन नहीं कर पा रहे थे। लाला रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्दबोध) उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे और उनका रुझान पंजाब के नेताओं की ओर अधिक था, इसलिए जुलाई १९७५ में आर्य गर्ल्ज कॉलेज अंबाला छावनी में पंजाब की संयुक्त प्रतिनिधि सभा के निर्वाचित प्रतिनिधियों की एक बैठक बुलाई गई, जिसमें प्रतिनिधियों के अतिरिक्त मंच पर उस समय के सभी शीर्षस्थ आर्यनेता विद्यमान थे। प्रतिनिधियों के सामने उस समय की सारी वस्तुस्थिति रखी गई, नेताओं ने अपने-अपने विचार रखे और अन्त में सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित करके आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को पंजाब, हरयाणा तथा दिल्ली की प्रांतीय सीमाओं को आधार मानकर तीन भागों में बांट दिया गया, जो त्रिशाखन के नाम से आज भी किसी न किसी मामले में चर्चित रहता है। उसी समय सार्वदेशिक सभा के प्रधान द्वारा तीनों प्रान्तों के नेताओं की आपसी सहमति से प्रत्येक प्रान्त की आर्यसमाजों व संस्थाओं के उचित प्रबन्ध के लिए पन्द्रह-पन्द्रह प्रतिनिधियों की तीन पृथक्-पृथक् समितियों का गठन कर दिया गया और बाकी समस्याओं के समाधान के लिए सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान को अधिकार दे दिये गये और उसी दिन तीन सभाओं ने अपना-अपना काम शुरू कर दिया। उस समय सार्वदेशिक सभा के प्रधान को साधारण सभा ने जो अधिकार दिया उसका समय-समय पर दुरुपयोग भी हुआ और उसके कुछ दुःखद अवशेष अब भी विद्यमान हैं। सन् १९७५ से अब तक यदि बीच के १४ सालों को निकाल दिया जावे तो बाकी के समय में हरयाणा प्रतिनिधि सभा या तो उस अधिकार से वंचित रही है या अपनी अक्षमता के कारण उपेक्षित रही है जो उसे त्रिशाखन के समय तीनों प्रान्तों से उत्तर-प्रदेश वर्तमान में, उत्तरांचल प्रान्त में विद्यमान बाहर संस्थाओं में (देहरादून व हरिद्वार स्थित संस्थाओं में) प्रशासनिक दृष्टि से एक तिहाई भागीदारी के रूप में मिले थे। अस्तु-यह प्रसंग ऐसा है जो अपने आप में एक लंबा इतिहास है। उसपर फिर कभी प्रकाश डाला जावेगा। इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के बारे में विचार करने के लिए वापिस लौटना ही अधिक उपयुक्त होगा।

सन् १९७५ से सन् १९९६ तक हमारी प्रान्तीय सभा का काम निर्बाध गति से चलता रहा, यद्यपि इस दौरान भी कभी-कभी आपसी मतभेद उभरकर आते रहे किन्तु संगठन के हित की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए हमारे नेताओं ने इन्हें अधिक नहीं पनपने दिया। बिखराव की स्थिति उस समय उत्पन्न होनी शुरू होगई जब पहली बार सन् १९९७ में पानीपत में स्व० सोमनाथ मरवाह को वहाँ की प्रतिष्ठित आर्यसमाज बड़ा बाजार ने अपने मंच पर बोलने का अवसर प्रदान किया, क्योंकि इससे पूर्व सार्वदेशिक सभा का कोई भी नेता हरयाणा प्रांत की किसी भी आर्यसमाज के उत्सव में आने का साहस नहीं जुटा रहा था। इसका यह निष्कर्ष निकला कि अगले ही दिन सार्वदेशिक सभा ने बिना कोई कारण बताए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भंग करके नई तदर्थ समिति का गठन कर दिया। नई तदर्थ समिति ने अपना कार्यालय फरीदाबाद में खोल लिया। मामला कोर्ट में गया और अन्ततः हाईकोर्ट द्वारा नियुक्त कमिश्नर/प्रशासक की देखरेख में सन् १९९८ में पानीपत में चुनाव हुआ और सभा का काम पुनः ठीक प्रकार से चल पड़ा। किन्तु इस चुनाव के बाद कुछ ऐसी महत्त्वाकांक्षा उभरने लगी थी, जिसको हमारे नेता समय रहते या तो समझ नहीं पाये या फिर उसकी उपेक्षा की गई। इस बीच कुछ ऐसी घटनाएं भी किन्हीं कारणों से घटित हो रही थीं जिनके कारण लंबे समय साथ और सहयोग में असामंजस्य का अंकुर पनपने लगा था, मौके के खिलाड़ियों ने उसे और भी पल्लवित कर दिया और सितम्बर २००१ के चुनाव तक उसे वृक्ष के रूप में स्थापित कर दिया, जिसे एक दुःखद व पीड़ादायक अवसर की संज्ञा दी जा सकती है। सन् २००१ से मार्च २००४ तक किसने क्या किया, क्यों किया यदि इन बातों को कुरेदा जाए तो उससे कोई अच्छा परिणाम निकलने की संभावना बिल्कुल नहीं है अतः उसे दुःस्वप्न की संज्ञा देते हुए उस प्रसंग पर पहुंचना ठीक रहेगा जब स्व० स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की शोक-सभा के अवसर पर सभी ने अपने मतभेद भुलाकर स्वर्गीय स्वामी जी के श्रद्धांजलि के रूप में आर्यसमाज के काम को अच्छे तरीके से और अधिक गति देने के लिए एक सूत्र में बंधने का संकल्प लिया तथा निर्वाचित सभा और सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित तदर्थ समिति ने ३०-३-२००३ को सम्मिलित प्रस्ताव पारित करके गुरुकुल कालवा के आचार्य बलदेव को सारे अधिकार इस आशा और विश्वास के साथ सौंप दिये कि इनकी देखरेख में सभा का जो चुनाव होगा, वह निष्पक्ष, सर्वांगीण, सर्वक्षेत्रीय व सर्वमान्य होगा। किन्तु कुछ ही समय बाद जो कुछ देखने को मिला और परोसा गया वह उस भावना के बिल्कुल विपरीत था, जिस भावना से सारे अधिकार दिये गये थे। जो कुछ देखने को मिला उसके अनुसार **सं गच्छध्वम्** को दरकिनार किया जा रहा था। मेरी पहली मुलाकात में लोगों ने जैसा आचार्य बलदेव जी की भावना को समझा वह था कि वे केवल अपनी देखरेख में निष्पक्ष चुनाव करवाएंगे, किंतु उनके इर्द-गिर्द रहनेवाले लोगों ने उनको उनकी मूल एवं पवित्र भावना से विचलित कर दिया और उन्हें इस रूप में प्रतिष्ठित करने में निरन्तर जुट गये कि उनके बिना आर्यसमाज सूना हो जायेगा, कुछ हद तक उनकी बात ठीक भी हो सकती थी, किन्तु ऐसे व्यक्तियों के अन्तस् में एक ऐसी लालसा भी घर कर चुकी थी जो आचार्य जी के गुणगान से ही पूरी हो सकती थी। इस बात की उस समय धारणा और भी प्रबल होगई जब हमेशा से आर्यसमाज से जुड़े नेताओं और अच्छे वक्ताओं की भी आर्यसमाज के उत्सवों व सम्मेलनों में उपेक्षा की जाने लगी और ऐसे व्यक्तियों की चौधर ने जन्म लेना शुरू कर दिया जो पुरानी और नई तारीखों का मिलान करके मंचस्थ व्यक्तियों की प्रशंसा करने के अभ्यस्त हो गये और इसी कला के सहारे आगे के सम्मेलनों में अपना निमन्त्रण सुनिश्चित रखने के लिए प्रसिद्ध हैं। यद्यपि ऐसे व्यक्तियों में से एक का मैं व्यक्तिगत रूप से कुछ निजी मामलों में आभारी भी हूं किन्तु संगठन के व्यक्तियों को केवल निजी स्वार्थ के लिए अनुचित राय देने के कारण मैं संगठन के लिए विध्वंसक, खण्डनात्मक और सुनिश्चित सोच वाली प्रवृत्ति का जनक भी मानता हूं, जो हमेशा किसी भी योग्य व्यक्ति के बारे में संगठन सूत्रों में इस अंकुर को उत्पन्न करने में पूर्ण तथा सक्षम है कि अमुक व्यक्ति को ले लिया तो तुम्हें कभी भी संकट का सामना करना पड़ सकता है, जब मूल में उसी के मन में भय व्याप्त रहता है। खैर! परमेश्वर ऐसे व्यक्तियों में सकारात्मक सोच उत्पन्न करे यही प्रार्थना सामयिक एवं उपयुक्त हो सकती है।

जब से आचार्य बलदेव जी को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की कमान सौंपी गई उस समय से अब तक उन्होंने जो-जो पैंतरे बदले उन्हें एक संन्यासवेश, आचार्य, तपोनिष्ठ आदि अनेक विशेषणों से प्रचारित व्यक्ति के लिए किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं कहा जा सकता है। किस प्रकार वे बयानों से और वचनों से बदलते रहते हैं, उसके कुछ नमूने यहाँ पर पेश किये जा रहे हैं।

आचार्य बलदेव से जब १-४-२००३ को आयोजित उनके पहले संवाददाता सम्मेलन में उनसे पूछा कि हरिद्वार में बेची गई भूमियों के बारे में आपकी क्या राय है तो उनका उत्तर था कि इसमें कोई सच्चाई नहीं है और जो काम करते हैं उन पर निराधार आरोप लगते ही रहते हैं। लेकिन बाद में पंजाब और दिल्ली के उन व्यक्तियों के बहकावे में आकर जो स्वयं इन मामलों में लिप्त थे, किन्तु सार्वदेशिक सभा पर काबिज होने के कारण दूसरे को प्रभावित करने में समर्थ थे। हरयाणा के अपने गुरुओं और सहयोगियों को ही बदनाम करना शुरू कर दिया और स्व० स्वामी ओमानन्द को भी नहीं छोड़ा।

आज आचार्य बलदेव जिस सार्वदेशिक सभा को नकार रहे हैं, उसी सार्वदेशिक सभा के आदेश पत्र के अनुसार इनको तदर्थ समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था और उसकी अनुपालना में आचार्य बलदेव ने अपने हस्ताक्षरों से १६-४-२००३ को सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को सभा का कार्यभार संभालने की सूचना दी थी। आचार्य बलदेव ने दिनांक २-५-२००३ को एक अन्य पत्र सार्वदेशिक सभा को लिखा जिसमें नई प्रस्तावित तदर्थ समिति को स्वीकृत करने की प्रार्थना की गई थी। सार्वदेशिक सभा ने अपने आदेश पत्र सं० २०६ दिनांक ३-५-२००३ के द्वारा पुरानी तदर्थ समिति के स्थान पर नई तदर्थ समिति को स्वीकृति प्रदान कर दी, जिसका संयोजक श्री कन्हैयालाल आर्य को बनाया गया।

सार्वदेशिक सभा ने इसी आदेश के अनुसार श्री वेदव्रत शर्मा को, जो हरिद्वार के सभी मामलों में समान रूप से भागीदार रहे हैं, चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया, जिसे आचार्य बलदेव ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। श्री वेदव्रत शर्मा ने अपने पत्र सं० २१२/३ दिनांक १९-५-२००३ के द्वारा प्रान्तीय सभा की चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए लिखा, क्योंकि श्री वेदव्रत शर्मा रोहतक में आकर बैठक करने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे, कारण साफ था कि उन्होंने स्वामी ओमानन्द का दिल्ली में जो अपमान किया था, उससे उपजे आक्रोश को उनके रोहतक आने पर स्वामी जी के ही शिष्य, जो उन्हें अपना सर्वेसर्वा मान चुके थे, शांत कर पायेंगे या नहीं। अब देखिए आचरण के विभिन्न बदलते रूप जो यह स्पष्ट करते हैं कि हम आचार्य बलदेव के कौन से रूप को सही और स्थायी मानें। एक तरफ सार्वदेशिक सभा के अधिकार को मानते हुए वे तदर्थ समिति का अध्यक्ष बनना स्वीकार करते हैं और दूसरी तरफ प्रतिनिधि सभा के मुख-पत्र 'सर्वहितकारी' के २१ ५-२००३ के अंक में संयोजक के नाम से सूचना छपवाते हैं कि सभा के चुनाव के लिए ८-६-२००३ को साधारण सभा का अधिवेशन होगा। इसकी जानकारी मिलते ही सार्वदेशिक सभा अपने पत्र सं० २६२/०३ दिनांक २९-५-२००३ के द्वारा प्रतिनिधि सभा को ८-६-२००३ को बुलाए गये अधिवेशन को रद्द करने के निर्देश दिये गये और आचार्य बलदेव ने अपने पत्र सं० ३६१६ दिनांक ४-६-२००३ के द्वारा सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को सूचित किया कि ८-६-२००३ को साधारण सभा के अधिवेशन में कोई चुनाव प्रक्रिया नहीं होगी।

बात यहीं तक रहती तो कोई बात नहीं थी, किन्तु ८-६-२००३ की कार्यवाही के आधार पर यह प्रचारित किया जाने लगा कि सभा के साधारण अधिवेशन में आचार्य बलदेव को सर्वसम्मति से प्रधान चुन लिया गया है और बाकी पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्यों को मनोनीत करने का अधिकार भी नवनिर्वाचित प्रधान को सर्वसम्मति से दे दिया गया है। उस समय निष्ठाओं के बदलते रूप की सारी सीमाएं पार की जब ४.६.२००३ के हस्तलिखित पत्र द्वारा सार्वदेशिक सभा को ८.६.२००३ के साधारण अधिवेशन में कोई चुनाव प्रक्रिया न करने का आश्वासन देनेवाले आचार्य बलदेव ने सभा कार्यालय से अपने पत्र सं० ३६६० दिनांक ९.६.२००३ को अपनी कार्यकारिणी की सूची सार्वदेशिक सभा में मान्यता प्रदान करने के लिए भेज दी जिसे सार्वदेशिक सभा ने असंवैधानिक करार देते हुए इसे अमान्य कर दिया, जिस पर आचार्य बलदेव ने स्वयं अपने हाथ से टिप्पणी लिखी थी कि यह सूची मार्च २००४ तक ही मान्य होगी। इसी दौरान सार्वदेशिक सभा ने अपने पत्र क्रमांक ३२७/०३ दिनांक १३.६.२००३ के द्वारा रजिस्ट्रार फर्मस एण्ड सोसाइटीज् हरयाणा, चण्डीगढ़ को भी पत्र लिखकर ८.६.०३ के चुनाव के आधार पर तैयार करके भेजी गई सूची को अवैध माना जावे और उसे कोई स्वीकृति न दी जावे।

इस बीच एक बैठक में निर्णय लिया गया कि सार्वदेशिक सभा से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखा जावे। किन्तु आगे का व्यवहार भी इसी 'हाँ', 'ना' को दर्शाता है, उस पर जाने से पहले यह बताना भी बड़ा आवश्यक है कि ८.६.२००३ के चुनाव के आधार पर जो सूची आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय से पत्र क्रमांग ३६६२ दिनांक ११.६.२००३ को रजिस्ट्रार हरयाणा को नवीनीकरण के लिए भेजी गई उसके साथ अन्य जो प्रपत्र संलग्न किये उनमें क्रम सं० २ पर सार्वदेशिक सभा के आदेश की प्रति का उल्लेख है। कल्पना की जा सकती है कि जब सार्वदेशिक सभा ९.६.२००३ को भेजी गई सूची अमान्य कर चुकी है और उस संदर्भ में रजिस्ट्रार को भी १३.६.०३ को सारे विवरण सहित लिख चुकी है, तो सार्वदेशिक सभा के आदेश की प्रति कैसे भेजी जा सकती है। यह सारी कार्यवाही बड़ी चालाकी की कार्यवाही कही जा सकती है, तो केवल पदलिप्सा को ही परिभाषित करती है। पैंतरा बदलने की यह प्रक्रिया रुकी नहीं किन्तु जारी रही। नये प्रतिनिधि फार्म भरवाये गये। सार्वदेशिक सभा की शरण में फिर चले गये और सर्वहितकारी ७.२.२००४ के अंक में आचार्य बलदेव ने अपने नाम से सूचना छपवा दी कि हम उस सार्वदेशि सभा के अधिकारियों को वैध मानते जो सार्वदेशिक सभा के दयानन्द भ रामलीला मैदान नई दिल्ली के कार्या में काम करते हैं। बाद में इन्हीं के आचार्य बलदेव ने प्रतिनिधियों की केवल सूची अपितु सारे मूल प्रतिनि फार्म भी स्वीकृति के लिए भेज दि फिर उनकी स्वीकृति न मिलने पर अ को स्वतंत्र दिखाते हुए २७.६.२००४ चुनाव कर लिया और फिर प्रधान बैठे। अपने पत्र सं० ६५९१ दिन १.१०.२००४ के द्वारा फिर घोषणा दी थी कि सार्वदेशिक सभा का हरया सभा पर कोई वैधानिक अधिकार न है-और दो धड़ों में बँटी सार्वदेशिक स से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है, कि खेद है कि स्वामी अग्निवेश के न दिनांक ३०.४.२००५ को भेजे अ फैक्स में आचार्य बलदेव ने लिख भेज दिया कि हम उस सार्वदेशिक वैध मानते हैं, जिसके प्रधान कैप्टन देव आर्य और मंत्री विमल वधावन हैं। का यह सब कुछ देखने के लिए आज स्वा ओमानन्द जीवित होते और अपने शि की स्थिरप्रज्ञता का दर्शन कर पाते।

इन तथ्यों को इस कारण से आर्य के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है कि इनके आधार पर स्वयं निर्णय कर कि आज जो हालात पैदा हुए हैं उन लिए उत्तरदायी कौन है?

-जयसिंह ठेकेदार, सभाम



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ...
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष ३२ अंक २४ १४ मई, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# गीता का विषय-विवेचन

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः।
एवन्त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

यजुर्वेद अ० ४०। मं० २

यजुर्वेद का यह मन्त्र कर्मयोग का प्रतिपादन करता है। सम्पूर्ण गीता इसी मन्त्र का भाष्य प्रतीत होती है। एक मन्त्र का इतना विस्तृत, ऐसा भावपूर्ण और स्वारसिक अनुवाद सारे साहित्य में कहीं देखने को नहीं मिलता। इस मन्त्र का भाव है-'कर्म करते हुए ही संसार में जीने की इच्छा करो। यह गति तुम्हें विपरीत मार्ग की ओर ले जाने वाली न होगी, और इस प्रकार का कर्म, बन्धन का कारण न होगा।'

''कर्मबन्धन का कारण न होगा'' यह अन्त का वाक्य पहिले विधान किये कर्म में कुछ विशेषता की सूचना देता है। प्रत्येक कर्म से पुण्य या पाप की उत्पत्ति अवश्य होती है और वे पुण्य या पाप ही भले या बुरे जन्म का कारण बनते हैं और जन्म ही बन्धन है। फिर यह कैसे कहा गया कि कर्म बन्धन का कारण नहीं होते। इसलिए यह ठीक ही है कि जिन कर्मों को जीवन भर करते रहने का वेद इस मन्त्र में उपदेश दे रहा, उन कर्मों में कुछ विशेषता है।

थोड़ी-सी गहराई में जाने से यह बात अनायास समझ में आ जाती है कि यहां पर यह निष्काम कर्म का विधान है। यह निश्चित विचार है कि निष्काम कर्म बन्धन का कारण नहीं होते।

चलते-चलते पैर तिनके को छू गया। बिना इच्छा के ही वायु के प्रभाव से हाथ, पैर या शिर अपने आप हिलता रहा। ये और इस प्रकार के अन्य कितने ही कर्म, जिनके आरम्भ में इच्छा शक्ति का कोई हाथ नहीं, मनुष्य से बहुधा होते रहते हैं। परन्तु इनका कोई फल भी होगा, इसकी कोई सम्भावना नहीं। यदि ऐसा होता हो तो वायु के प्रबल वेग से गिरे हुए, मेरे वृक्ष के नीचे दब कर मरे हुए मनुष्य का हत्यारा मुझे ठहराया जाना चाहिये, क्योंकि यह वृक्ष मेरा था। परन्तु मेरा होते हुए भी वह वृक्ष मेरी इच्छा से नहीं गिरा, इसलिए उस मनुष्य के वध का अपराधी मुझे नहीं ठहराया जाता।

पाप या पुण्य एक प्रकार के अनत:करण पर पड़ने वाले संस्कार हैं और वे पड़ते हैं भावना के आधार पर। मनुष्य जिस प्रकार की कामना से किसी कर्म को करता है वैसे ही संस्कार उसके अन्त:करण पर पड़ जाते हैं। परन्तु जिन कर्मों के आरम्भ में बुरी या भली कोई भी भावना काम नहीं कर रही और जो उदासीन दृष्टि से कर्त्तव्य समझ कर ही किये जा रहे हैं, उनका फल होगा भी तो क्या? और मिलेगा भी तो किस आधार पर? यही कारण है कि निष्काम कर्म बन्धन का कारण नहीं होते। फलत: इस वेदमन्त्र के पहिले पाद में निष्काम कर्म का ही विधान है और यह गीता का प्रतिपाद्य विषय है।

गीता में और जो कुछ भी लिखा गया है यह सब इसी मुख्य विषय की पुष्टि के लिए लिखा गया है। इसलिये सम्पूर्ण गीता इसी एक वेदमन्त्र का भाष्य है।

यह प्रश्न किया जा सकता है कि क्या कोई कर्म ऐसा भी होगा, जिसके आरम्भ में कोई कामना ही न होगी? मनुष्य जिस कर्म को भी करना आरम्भ करता है उसके लिये मन में किसी कामना को रख ही लेता है।

यह ठीक है, कर्म आरम्भ करने से पहिले मनुष्य के सामने यह प्रश्न उपस्थित अवश्य होता है कि मैं इस कर्म को क्यों करूँ? उसे इस प्रश्न के दो उत्तर मिल सकते हैं। उनमें से एक यह है कि कर्म करने वाला मन में किसी फल की कामना कर ले और दूसरा यह कि वह उसे कर्त्तव्य-बुद्धि से करना आरम्भ कर दे।

''भगवान् ने मेरे लिये वर्ण या आश्रम के अनुसार इस कर्म का विधान किया है। इसका क्या फल होगा, यह सोचने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं। मैं इसे इसलिए कर रहा हूँ कि मुझे करना चाहिये।'' इसी बुद्धि का नाम कर्त्तव्य बुद्धि है।

गीता इस प्रश्न के इन दोनों उत्तरों में से दूसरे उत्तर को ठीक मानती है। परन्तु दूसरा उत्तर है कठिन। इस उत्तर को देने की योग्यता सम्पादन करने के लिये गीता में कितने ही उपाय बतलाये गये हैं और ये ही विषय गीता के गौण विषय हैं। संग्राम के आरम्भ में अर्जुन के सामने भी यह प्रश्न उपस्थित हो गया कि मैं इस संग्राम को क्यों करूँ? अर्जुन के उसी भाव का चित्रण करने के लिए व्यास जी ने गीता का प्रथम अध्याय

### अर्जुन निषाद

लिखा। अर्जुन का वर्ण क्षत्रिय था और उस वर्ण के अनुसार उसका कर्त्तव्यकर्म था संग्राम। इस संग्राम के फल की ओर अर्जुन ने ध्यान दिया, तो वह बड़ा भयंकर प्रतीत हुआ। अपने बन्धु-बान्धवों की हत्या उसे खटकने लगी। संग्राम में राज्य-लक्ष्मी का लाभ तुच्छ दिखाई देने लगा। महाराज ने देखा कि तमोगुण का जादू चल गया है। अर्जुन के हृदय पर मोह का आवरण आ चुका है। वह क्षात्र-धर्म भूल गया है। अर्जुन के इस आवरण को हटाने के लिये महाराज ने उसे दूसरा अध्याय

### सांख्ययोग

सुनाया। नित्य-अनित्य, आत्मा-अनात्मा और क्षर-अक्षर की विवेक ज्ञान के द्वारा गणना करने का नाम सांख्य है। इस विवेचन के द्वारा योगिराज ने आत्मा को अमर और शरीर को अवश्य नाश होने वाला सिद्ध कर अर्जुन के मोह और भ्रान्ति को दूर करने का यत्न किया। इसके बाद महाराज ने अर्जुन की, कर्मफल पर दृष्टि और उसके सोचे हुए कर्मफल के त्याग, दोनों ही की समालोचना करते हुए उसे तीसरे अध्याय में

### कर्मयोग

निष्काम-कर्म के अनुष्ठान का उपदेश दिया। उन्होंने कहा, अर्जुन! कर्म को कर्त्तव्य-बुद्धि से करो। फल की कामना का सर्वथा बहिष्कार कर दो। फल का सम्बन्ध टूट जाने पर कर्म बन्धन का कारण नहीं होते। जब तुम इस संग्राम से यह इच्छा ही न करोगे कि मुझे राज्य-लक्ष्मी मिले; किसी विशेष व्यक्ति का मारना भी तुम्हारा लक्ष्य न होगा;ह इस संग्राम को केवल कर्त्तव्य बुद्धि से करोगे इसलिये कि क्षत्रिय के लिये, धर्मानुकूल संग्राम का न करना पाप है, तब फिर बताओ तुम पाप के भागी क्यों बन जाओगे?

यद्यपि कर्म से कामना का सम्बन्ध तोड़ देना कठिन बात है परन्तु यह कठिन अवश्य है, असम्भव नहीं। अनेक फलों के झमेले से निकालकर बुद्धि को यदि स्थिर कर लिया जावे, उसमें सुख-दु:ख, हानि-लाभ आदि द्वन्द्वों को सहन करते हुए समान रहने की शक्ति पैदा कर दी जावे, तो बिना कामना के ही कर्त्तव्य समझ कर कर्म करना कोई कठिन बात नहीं। इस बात का आचरण करने वाले मनुष्य की कैसी अवस्था हो जाती है, इस विषय को स्पष्ट करने के

लिये महाराज ने चौथे अध्याय में

**स्थितप्रज्ञ का लक्षण**

स्थिर बुद्धि वाले पुरुष का चिह्न भी बतला दिया। आगे चलकर पांचवें अध्याय में

**कर्मसंन्यास की अशक्यता**

का निर्देश किया है। इसका तात्पर्य यह है कि कर्मों को सर्वथा छोड़ देना है ही असम्भव। शारीरिक कर्म बलपूर्वक छोड़ भी दिये तो मानसिक कर्म होते रहते हैं। यहां यह शङ्का हो सकती है कि यद्यपि कर्मों का त्याग असम्भव है, परन्तु फल की कामना का त्याग भी बड़ा कठिन है, सब ही स्थिर-बुद्धि नहीं हो सकते। इस प्रश्न में कुछ बल समझकर महाराज ने छठे अध्याय में

**यज्ञ के लिए कर्म की आवश्यकता**

का प्रसंग छेड़ा। कहा-अर्जुन! यदि फल-कामना का सर्वथा त्याग नहीं किया जा सकता, तो यज्ञ के लिये (लोकहित की कामना से) कर्म करो। यज्ञ के लिये किया हुआ कर्म भी बन्धन का कारण नहीं होता। कदाचित् यह शंका हो कि अर्जुन के संग्राम करने में लोकहित क्या था? अन्याय और अत्याचार का दमन लोकहित ही है। और वह ही इस संग्राम का महात्मा कृष्ण के हृदय में मुख्य उद्देश्य था। यज्ञ आदि कर्म भी सम्भवत: अज्ञानियों के लिये ही विधान किये गये हैं। फिर यदि अर्जुन ज्ञान मार्ग का ग्रहण कर ले तो उसे कर्म की क्या आवश्यकता रह जावेगी? इसी प्रश्न का निर्णय करने के लिये महाराज ने सातवें अध्याय में

**ज्ञानी के लिये कर्म की आवश्यकता**

बतलाई। कर्म करने से ज्ञानी को तो पाप लगता नहीं क्योंकि वह ज्ञानी होने के कारण किसी कर्म फल की कामना करेगा ही नहीं और कामना के बिना पाप-पुण्य का भागी नहीं बन सकता और यदि वह कर्म छोड़ दे, तो उसके दृष्टान्त से अज्ञानी लोग भी कर्म छोड़ देंगे, और यह उनकी क्रिया उनके लिये बड़ी घातक सिद्ध होगी, इसलिए ज्ञानी को भी कर्म करना ही चाहिये। आप लोगों के लिये ज्ञानी भी आदर्श बनने की आवश्यकता बतलाते हैं। भला इसकी आवश्यकता ही क्या है? लोग सब जानते ही हैं कि यह धर्म है और यह अधर्म। फिर वे जानते हुए भी पाप कर्म में प्रवृत्त होते रहते हैं? अर्जुन के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए महाराज ने आठवें अध्याय में

**प्रवृत्ति के प्रधान कारण**

बतलाया। कहा-अर्जुन! इन बेचारों का दोष नहीं। इनके हृदयों में रजोगुण की मात्रा अधिक है। रजोगुण काम और क्रोध का पिता है और काम तथा क्रोध पाप कर्म की ओर मनुष्य को बलपूर्वक खींचकर ले जाते हैं। तब फिर क्या कर्म कभी छूट ही नहीं सकेगा? इसके उत्तर में महाराज ने नवें अध्याय में बताया कि

**कर्मसंन्यास का साधन कर्म है**

कर्म का त्याग तो यह ही है कि वे अपना काम न कर सकें, मनुष्य को बन्धन में न डाल सकें। अर्जुन! यह कार्य भी कर्मयोग से ही सिद्ध हो जावेगा। फल की कामना को छोड़कर किया हुआ कर्म नपुंसक बन जाता है, फल देने के योग्य रहता ही नहीं। जब वह काम ही न कर सका तो उसका संन्यास सुतरां हो गया। पहिले महाराज यज्ञ के लिये और ज्ञानी के लिये कर्म की आवश्यकता बतला चुके हैं। परन्तु वे यज्ञ और ज्ञान क्या पदार्थ है, कितने प्रकार के हैं, और उनका क्या स्वरूप हैं, इसका स्पष्टीकरण अभी तक नहीं किया गया था। इसलिए दशम अध्याय में

**यज्ञ और ज्ञानयज्ञ की श्रेष्ठता**

का वर्णन किया गया। द्रव्ययज्ञ, तपोयज्ञ, योगयज्ञ और ज्ञानयज्ञ इन सब यज्ञों का व्याख्यान करते हुए इस अध्याय में ज्ञान को श्रेष्ठ कहा है। यहां संशय को दूर कर किसी निर्णय पर पहुंचने का नाम ज्ञान है। अर्जुन संशय में पड़ा हुआ था। इसलिए उसे किसी निर्णय पर पहुंचाने के लिये महाराज ने उपदेश किया है।

'यदि ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है तो फिर ज्ञान से ही क्यों न काम लिया जावे। कर्म की क्या आवश्यकता है? यह तो दूसरे शब्दों में कर्म संन्यास का ही उपदेश हो गया। आप का उपदेश कुछ मिला जुला सा है। कृपया निश्चय करके बतलाइये कि कर्मयोग और कर्म संन्यास इन दोनों में से कौन श्रेष्ठ है।' अर्जुन के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये महाराज ने ग्यारहवें अध्याय में

**कर्मसंन्यास से कर्मयोग की श्रेष्ठता**

का वर्णन किया। यद्यपि संन्यास और कर्म दोनों ही अच्छे हैं। परन्तु अनुष्ठान की दृष्टि से कर्मयोग ही श्रेष्ठ है। फल की कामना छोड़कर कर्म किया जा सकता है, परन्तु कर्म का सर्वथा छोड़ना कठिन है। कर्म का त्याग यदि करना भी हो तो पहिले मन से कामनाओं का त्याग करना पड़ेगा नहीं तो कर्म फिर मन से होते रहेंगे। और यदि कामनाओं का त्याग करना पड़ा तो पहिले कर्मयोग का आरम्भ अपने आप ही हो गया। यह विधि कर्म को फल देने योग्य छोड़ेगी ही नहीं, इसलिये अब कर्म संन्यास की आवश्यकता ही न पड़ेगी।

यद्यपि यह ठीक है, परन्तु फल-कामना का त्याग भी तो टेढ़ी खीर है। इसके उत्तर में महाराज ने बारहवें अध्याय में

**साम्यबुद्धि और साधन ध्यानयोग**

का वर्णन किया। जो मनुष्य सुख-दु:ख, मित्र-शत्रु, सोना-मिट्टी और लाभ-हानि इन सब को एक दृष्टि से देखता है उसकी बुद्धि सम है। और जिसके अन्त:करण में इस साम्यबुद्धि का जन्म हो गया, भला फिर वह कामना करेगा किसलिये? इस साम्यबुद्धि को भी मनुष्य बिना कठिनाई के प्राप्त कर सकता है, यदि वह ध्यान योग का अनुष्ठान करे।

**भक्तियोग**

का तेरहवें अध्याय में वर्णन किया। भक्तियोग भी जहां ईश्वर की प्राप्ति का साधन है, उसके साथ चित्त में एकाग्रता को उत्पन्न करता हुआ, साम्यबुद्धि की उत्पत्ति में भी कारण है।

ध्यानयोग, भक्ति और साम्यबुद्धि ये सबके सब ही यम नियम के बिना सिद्ध नहीं हो सकते। इसलिये चौदहवें अध्याय में महाराज ने-

**ज्ञानयोग**

का निरूपण किया है। अहिंसा, शौच आदि सदाचार के जिन नियमों को, योगदर्शन में यम नियम और मनु ने धर्म कहा है, वैसे ही कुछ अंगों को यहां ज्ञान कहा है। वास्तव में धर्म के ये अंग अन्त:करण में ध्यानयोग तथा साम्यबुद्धि की योग्यता उत्पन्न कर, मनुष्य को कर्मयोग का सच्चा अधिकारी बना सकते हैं।

सत्व, रज: और तम ये तीनों गुण, मनुष्य के जीवन-भर के सारे कार्यक्रम का सञ्चालन करने वाले हैं।

**अन्त:करण**

में इन तीनों में से जिस गुण की प्रधानता होगी, उस गुण के प्रभाव से मनुष्य वैसे ही कार्य कर सकेगा उसके विपरीत नहीं। गुणों की इस विशेषता को समझाने के लिये ही महाराज ने पन्द्रहवें अध्याय में

**गुण-कार्य-विवेक**

का वर्णन किया है। गुण-कार्य-विवेक 'विज्ञानयोग' का ही एक अंग है। इसलिये इस अध्याय से विज्ञानयोग का आरम्भ हो गया है। इस अध्याय में गुणों और उनके कार्यों का निर्देश करते हुए, गुणों से ऊँचा उठने का उपदेश दिया गया है।

अर्जुन गुणों को ऊँचा उठकर गुणातीत होने का अधिकारी न था। उसके हृदय में सत्व गुण का उदय हो चुका था। और इसलिये महाराज ने उसे उसकी स्थिति समझाने के लिये सोलहवें अध्याय में

**देव-आसुर भाव-विवेक**

का व्याख्यान किया है। दैवी और आसुरी सम्पत्ति का इस अध्याय में सुन्दर वर्णन है। अर्जुन ने प्रश्न किया कि महाराज! जो लोग शास्त्रविधि (कर्मयोग की विधि) के बिना ही यज्ञ करते हैं उनकी, सत्वगुणी, रजोगुणी, या तपोगुणी कौनसी निष्ठा होती है? अर्जुन के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महाराज ने सत्रहवें अध्याय में-

**गुणनिष्ठा**

का व्याख्यान किया। किस गुण में निष्ठा होने की क्या अवस्था होती है और वह कैसे कर्म करता है, इस अध्याय में ऐसे ही विषयों का वर्णन है।

इस व्याख्यान को सुनकर अर्जुन ने,कर्मयोग और कर्म संन्यास का भी गुणों की दृष्टि से व्याख्यान सुनना चाहा, इसलिये अठारहव अध्याय में महाराज ने गुणों की दृष्टि से संन्यास और योग का व्याख्यान करने के लिये, फिर

**गुणनिष्ठा**

का ही प्रकारान्तर से निरूपण किया है। अन्त में अर्जुन की समझ में आ गया कि मेरे अंदर तमोगुण तो है नहीं, रजोगुण और सत्वगुण दोनों विद्यमान हैं, महाराज के उपदेश से तमोगुण से उत्पन्न हुए मोह का पर्दा हट गया और मेरा क्षात्रधर्म

**रजोगुण**

की सहायता से मुझे अब धर्म युद्ध करने के लिये प्रेरणा करने लग गया है। वह यह भी समझ गया कि सत्वगुण की सहायता से मैं इस युद्ध को निष्काम भाव से कर सकता हूँ,और इससे होने वाले पाप या पुण्य से छुटकारा पा सकता हूँ, यह समझ कर अर्जुन ने महाराज को रणक्षेत्र में कूदने की अनुमति दे दी, और गीता का उपदेश समाप्त हुआ।

-स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

## सम्पादकीय....

# आयु बढ़ाई जा सकती है

सामान्यतया मनुष्य की आयु १०० वर्ष मानी गई है। **शतायुर्वै पुरुषः।** व्याकरण महाभाष्यकार पतंजलि ने भी प्रथमाह्निक में ही लिखा है कि **अद्यत्वे यश्चिरं जीवति शतं जीवति।** आजकल यदि कोई दीर्घायु होता है तो १०० वर्ष तक जीवित रहता है। वेद में भी सामान्यतया देखते, सुनते, बोलते हुए तथा पराधीन न होकर १०० वर्ष तक वा इससे अधिक जीने की प्रार्थना भगवान् से की गई है। **तच्चक्षुर्देवहितं० पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवामः शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥** सौ वर्ष तक शुभ कर्म करते हुए जीवित रहने की बात कही गई है। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय में '**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः**' किन्तु सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में छान्दोग्य उपनिषद् का प्रमाण उद्धृत करके महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि **"जो आचार्य और माता-पिता अपने सन्तानों को प्रथम वय में विद्या और गुण ग्रहण के लिए तपस्वी कर और उसी का उपदेश करें और वे सन्तान आप ही आप अखण्डित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्षपर्यन्त आयु को बढ़ावें वैसे तुम भी बढाओ।"**

यहां पर महर्षि दयानन्द जी का स्पष्ट लेख है कि अखण्डित ब्रह्मचर्य सेवन से चार सौ वर्षपर्यन्त आयु को बढ़ाया जा सकता है। पुरुष की सामान्य आयु १०० वर्ष को बढ़ाकर चार सौ वर्ष तक किया जा सकता है।

जो विद्वान् आयु का घटना-बढ़ना नहीं मानते और श्वासों की संख्या भी निश्चित मानते हैं वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के इस वाक्य को **"चार सौ वर्षपर्यन्त आयु को बढावें वैसे तुम भी बढाओ।"** विशेष ध्यान से पढ़ें और चिंतन-मनन करें।

यजुर्वेद अध्याय तीन के ६२वें मन्त्र-

**त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।**
**यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्मे अस्तु त्र्यायुषम्॥**

मन्त्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-"और (त्र्यायुषम्) इस पद की चार बार आवृत्ति होने से तीन सौ वर्ष से अधिक चार सौ वर्षपर्यन्त भी आयु का ग्रहण किया है। इसकी प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करके और अपना पुरुषार्थ करना उचित है, प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिए, हे जगदीश्वर! आपकी कृपा से जैसे विद्वान् लोग विद्या धर्म और परोपकार के अनुष्ठान आनन्दपूर्वक तीन सौ वर्षपर्यन्त आयु को भोगते हैं, वैसे ही तीन प्रकार के ताप से रहित शरीर मन बुद्धि चित्त अहंकार रूप अन्तःकरण, इन्द्रिय और प्राण आदि को सुख करने वाले विद्या विज्ञान सहित आयु को हम लोग प्राप्त होकर तीन सौ वा चार सौ वर्षपर्यन्त सुखपूर्वक भोगें।"

महाभारत युद्धकाल के समय भीष्मपितामह १७० वर्ष, श्रीकृष्ण १२५ वर्ष और वेदव्यास जी की आयु तीन सौ वर्ष बतलाई गई है। वैसे मैंने अभी तक ११७ वर्षीय पं० बस्तीराम आर्योपदेशक से अधिक आयु के महापुरुष के दर्शन नहीं किये हैं।

हिसार से प्रकाशित २९ अप्रैल २००५ के दैनिक जागरण में विजयप्रकाश त्रिपाठी ने **महान् योगी सन्त तैलंग स्वामी** के बारे में लिखा है कि परमहंस तैलंग स्वामी ने अपने जीवन के लगभग डेढ सौ वर्ष काशी में व्यतीत किये थे। आपके दर्शनार्थ भारत के विभिन्न भागों से योगी और महात्मा भी काशी पधारे थे।

अद्भुत शक्ति के सर्जक तैलंग स्वामी का जन्म १६०७ ई० में आन्ध्र प्रान्त के हालिया नामक स्थान पर हुआ था। आपके पिता का नाम नरसिंहराव व माता का नाम विद्यावती था। तैलंग स्वामी का बचपन का नाम शिवराम था। बचपन से ही वैराग्यवृत्ति देखकर माता-पिता ने आपका विवाह नहीं किया। चालीस वर्ष की अवस्था में पिता एवं बावन वर्ष की अवस्था में माता का देहावसान होने के उपरान्त आप गंगातट पर रहकर कठोर तपस्या करने लगे। यहीं पर विद्वान् संत भगीरथानन्द से आपका साक्षात्कार हुआ। आप उन्हीं के साथ देशाटन को निकल पड़े। सम्पूर्ण भारत के पुण्य स्थानों का भ्रमण किया और १७३७ में आप काशी आ गये। १५० वर्ष तक वहां रहे।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस आपके विषय में कहते थे-**"इनमें यथार्थ परमहंस के गुण विद्यमान हैं।"** कहते हैं तैलंग स्वामी ने स्वेच्छा से दो सौ अस्सी वर्ष की आयु में सन् १८८७ में काशी के गंगातट पर अपना शरीर छोड़ा।

ब्रह्मचर्य योग विद्या तप संयम सदाचारपूर्वक संयमी जीवन व्यतीत करते हुए आयु को दुगुना तिगुना किया जा सकता है।

मनु का कथन है कि अभिवादनशील और नित्य वृद्धोपसेवी की आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं-

**अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।**
**चत्वारि तस्य वर्धन्त आयुर्विद्यायशोबलम्॥**

-वेदव्रत शास्त्री

## ऋषिवर दयानन्द का संदेश

ऋषिवर दयानन्द का, संदेश सुनाने आया हूं।
जागो-जागो आर्य वीरो, तुम्हें जगाने आया हूँ॥
सदियों से सोये भारत को, ऋषि ने आन जगाया था।
गुण गौरव सब भूल चुके थे, फिर से याद दिलाया था।
वेदों के प्रचार हेतु, यह आर्यसमाज बनाया था।
पाखण्ड खण्डनी ध्वजा फहराकर, वैदिक नाद गुँजाया था।
ऋषि दयानन्द के भक्तों को, फिर याद दिलाने आया हूँ॥ १॥ जागो.......
जग को बतला दो ईश्वर का, होता नहीं कोई अवतार।
नसनाड़ी बंधन से न्यारा, रूप रंग न कोई आकार।
जन्म मरण से रहित प्रभु है, कभी न आता तन को धार।
मात-पिता नहीं पत्नी उसके, पुत्र पौत्र न कोई परिवार।
भूले-भटके भ्रमित जनों को, राह दिखाने आया हूँ॥ २॥ जागो.......
मंदिर मस्जिद अरु गिरजे में, नहीं ईश्वर का डेरा।
पुरी द्वारिका रामेश्वर, काशी, मथुरा में जा हेरा।
भक्तिभाव से खूब लगाया, सकल तीर्थों का फेरा।
हुए न दर्शन कहीं प्रभु के, ढूँढ लिया जग बहुतेरा।
सर्वज्ञ सर्वव्यापी घट में, यह समझाने आया हूँ॥ ३॥ जागो.......
निराकार प्रभु की उपासना, भूल गया सारा संसार।
सन्ध्या यज्ञ आदि तजकर, जड़ पूजा करते नर नार।
हाथों से भगवान् बनाकर, बेच रहे हैं सरे बाजार।
लगे स्वार्थी जन यहाँ करने ईश्वर का व्यापार।
मन मंदिर में ईशभक्ति की, ज्योति जगाने आया हूँ॥ ४॥ जागो.......
जीवित माता-पिता अरु गुरुजन, सभी पितर हैं कहलाते।
श्रद्धा से भोजन दो इनको, यही शास्त्र हैं समझाते।
जीवित पितर को न पानी प्याते, मरे पै भोजन पहुँचाते।
जीते दंगा मरे पै गंगा, लोग कहावत हैं गाते।
घोर अवैदिक मृतक-श्राद्ध को, बंद कराने आया हूँ॥ ५॥ जागो.........
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र की, कर्मों से होती पहचान।
गुण कर्मों से वर्णव्यवस्था, वेद शास्त्र में लिखा विधान।
जन्म जाति से ऊँच-नीच नहीं, छोड़ें यह मिथ्या अभिमान।
कल्याणी वैदिक वाणी का, जन जन में भर दो शुभ ज्ञान।
छुआछूत अरु भेदभाव का, भूत भगाने आया हूँ॥ ६॥ जागो........
उगे वेद का सूर्य, भगे अज्ञान निशा की अंधियारी।
"अभय" सदा हो पल्लवित पुलकित, ऋषिमुनियों की फुलवाड़ी।
जगत् गुरु भारत को माने, फिर से यह दुनिया सारी।
हो जाए हर भारतवासी, मातृभमि पै बलिहारी।
सकल विश्व में पावन वैदिक, नाद गुँजाने आया हूँ॥ ७॥ जागो........

**प्रेषक-हीरालाल आर्य,**
ग्राम-पो० बोडिया कमालपुर, जिला रेवाड़ी (हरयाणा)

## पलवल जिला फरीदाबाद में आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठक

१७ मई २००५ मंगलवार को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर, न्यू कालोनी, पलवल (श्रद्धानन्दनगर) में जनपद के आर्यसामाजिक कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक होगी जिसमें स्वामी इन्द्रवेश सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा मुख्य अतिथि होंगे। सभा की अध्यक्षता श्री राजेन्द्रसिंह बीसला अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल फरीदाबाद करेंगे।

**विचारणीय विषय**

१. २२, २३ मई २००५ को तालकटोरा स्टेडियम दिल्ली में होनेवाले सार्वदेशिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन की तैयारी।
२. आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम पर विचार।
३. ग्रामीणांचल में आर्यसमाज की गतिविधियों को तेज करने बारे विचार।
४. क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन करने पर विचार।

-नारायणसिंह आर्य, महामंत्री

# आर्यसमाज के द्वारा 'योग' का प्रचार-एक चिन्तन

-विवेकभूषण दर्शनाचार्य, दर्शनयोग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड़,
पत्रा. सागपुर, जि० साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

गतांक २८ अप्रैल से आगे....

३. आपके 'योग-शिविर' में जो शिविरार्थी आएँगे, उनमें से अधिकांश=(लगभग सभी) रोगों की चिकित्सा कराने के उद्देश्य से आएँगे। 'शुद्ध योग' न तो वे सीखना चाहते हैं और न ही उनको आवश्यकता है। आप जबरदस्ती साथ में 'शुद्ध योग' सिखाएँगे, तो उसमें वे लोग न तो कोई रुचि लेंगे और न ही सीखेंगे। ऐसा में अपने लम्बे अनुभव और वर्तमान के वातावरण के आधार पर कह रहा हूँ। तब आपका मुख्य प्रयोजन=(शुद्ध योग का प्रशिक्षण) गौण हो जाएगा; और गौण प्रयोजन=(रोगों की चिकित्सा) मुख्य हो जाएगा। हो सकता है, २-३ वर्ष के अनुभव के बाद आपको इस कार्य के करने में पश्चात्ताप भी करना पड़े, कि-मैंने व्यर्थ शक्ति और समय खोया।

४. इन 'श्वसन क्रिया' आदि से यदि किसी रोगी की हालत बिगड़ गई, और उसकी मृत्यु आदि या उसे कोई गम्भीर रोग हो गया, तो आपके पास कोई चिकित्सा-प्रमाण-पत्र न होने से आप पर गम्भीर मुकदमा और दण्ड भी हो सकता है।

५. मैं पिछले लगभग १५-१६ वर्षो से विशेष रूप से 'शुद्ध योग' का प्रचार कर रहा हूँ। 'हठयोग' की क्रियाएँ=(कपालभाति आदि) बिल्कुल नहीं सिखाता। जो सिखाते हैं, उन्हें १५-१६ वर्षों से समझा रहा हूँ, कि यह शुद्ध योग नहीं है! महर्षि पतंजलि जी का ही योग 'शुद्ध योग' है, उसे ही सिखायें। मेरे इतना समझाने पर भी उन सिखाने वाले प्रशिक्षकों ने 'शुद्ध योग' का प्रचार नहीं किया। वे आज भी 'योग' के नाम पर वित्तैषणा, लोकैषणादि के कारण हठयोग ही सिखा रहे हैं। आप एक सप्ताह के 'योग शिविर' में लोगों की भ्रान्ति दूर कर देंगे?

६. आपके 'योग शिविर' में भाग लेने वाले लोग जब 'हठयोग' की क्रियाएँ सीखकर रोगों में थोड़ा सा लाभ प्राप्त करके घर जाएँगे, तब आपके समझाने पर भी वे 'योग' और 'हठयोग' का अन्तर नहीं समझेंगे। मुश्किल से २-४ प्रतिशत को छोड़कर ९६-९८ प्रतिशत लोग घर जाकर यही कहेंगे-"हम 'योग शिविर' से आ रहे हैं। हमें अमुक रोग में जितना भी लाभ हुआ है, वह 'योग' से ही हुआ है।" अतः आपके ऐसे कार्यक्रमों से भी ९६-९८ प्रतिशत भ्रान्ति ही फैलेगी, जिसका आपको दण्ड भोगना पड़ेगा। यह बात मैं बहुत लम्बे अनुभव के बाद कह रहा हूँ। आप इसकी उपेक्षा न करें।

७. आपको देखकर अन्य भी नये विद्वान् या अन्य आर्यसमाजी सज्जन भी आपका प्रमाण देकर आपका अनुकरण करेंगे=(हठयोग सिखायेंगे)। तब 'शुद्ध योग' कौन सिखायेगा? तब क्या 'शुद्ध योग' बचेगा या मर जाएगा? तब आपको इसका पाप नहीं लगेगा?

**प्रश्न ८.**-हम भी टी.वी. पर 'शुद्ध योग' सिखाना चाहते हैं। जिससे देश-विदेश में इसका शीघ्र प्रचार हो जाये। परन्तु हमारे पास धन नहीं है। पहले हम 'हठयोग' सिखाकर धन कमाएँगे, फिर टी.वी. पर 'शुद्ध योग' सिखाएँगे।

**उत्तर**-वाह जी वाह! बहुत अच्छा तर्क है आपका! 'हम चिकित्सालय खोलना चाहते हैं। हमारे पास धन नहीं है। पहले हम बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, शराब बेच कर धन कमाएँगे। फिर उस धन से चिकित्सालय खोलेंगे।' कितना अच्छा तर्क है यह! ऐसा ही आपका तर्क है। अच्छी वस्तु के प्रचार के लिये बुरी वस्तु बेचो, फिर अच्छी। यदि पहले गलत चीज का प्रचार कर दिया, तो पाप के भागी तो पहले ही बन गये। बाद में जब अच्छी चीज का प्रचार करेंगे, तो जनता आपको बुरी वस्तु के प्रचारक के रूप में पहचानेगी, अच्छी वस्तु आपसे कोई लेना नहीं चाहेगा। बल्कि लोग आपकी खिल्ली उड़ायेंगे। 'कल तक तो 'हठयोग' सिखाते थे, आज चले हैं 'शुद्ध योग' सिखाने।' बुद्धिमान् लोग आपसे 'शुद्ध योग' सीखना भी नहीं चाहेंगे। जैसे कोई बुद्धिमान् माता-पिता किसी शराबी=(व्यसनी) अध्यापक से अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिलाना चाहते। हम जो कार्य करते हैं; उससे समाज में हमारी एक छवि बनती है। लोग हमें उसी दृष्टि से देखते हैं, हमसे वैसी ही आशा रखते हैं। हमसे वही कार्य सीखना चाहते हैं, अन्य नहीं। यदि एक संगीतकार बहुत अच्छी चिकित्सा भी जानता हो, तो भी लोग उससे संगीत ही सीखना चाहेंगे, चिकित्सा नहीं कराना चाहेंगे। इसी प्रकार से जब आपकी छवि समाज में 'हठयोग प्रशिक्षक, रोग निवारक चिकित्सक' आदि की बन जाएगी, तब लोग आपसे टी.वी. पर भी इसी कार्य की आशा रखेंगे। 'शुद्ध योग' सीखना नहीं चाहेंगे।

और 'शुद्ध योग' तो सब लोग सीखना भी नहीं चाहते। केवल वे ही लोग 'शुद्ध योग' सीखना चाहते हैं, जिनके पूर्व जन्मों के बहुत अच्छे संस्कार हों, वर्तमान में किसी रोग, वियोग अथवा भोगों में अतृप्ति के कारण भोगों से थक चुके हों। ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम ही होती है। इसलिये कोई सोचता हो, कि टी.वी. पर 'शुद्ध योग' सिखाने से बहुत से योगी बन जाएँगे, तो उसका यह भ्रम ही है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि टी.वी. पर जायें ही नहीं। प्रयास अवश्य करें, परन्तु आशा कम ही रखें। अधिकांश लोग तो साधारण बुद्धि होने के कारण भोगों को भोगने में ही रुचि रखते हैं। अब भी भोगों को गलत तरीके से भोग-भोग कर रोगी हुए हैं। वे इन अपने रोगों से छूटने के लिये 'योग?' की तरफ आकर्षित हुए हैं। स्वस्थ होते ही वे फिर भोगों को भोगेंगे। बहुत कम अपवाद रूप लोग ही 'शुद्ध योग' सीखना चाहेंगे, जो पूर्व संस्कारी होंगे। 'शुद्ध योग' का आचरण करना, भोगों को भोगने की अपेक्षा कठिन है! कठिन कार्य में अधिक लोगों की रुचि नहीं होती। इसमें तपस्या करनी पड़ती है। तपस्या प्राय: लोग करना नहीं चाहते।

इसलिये चतुर लोग संख्या जुटाने, धन कमाने आदि कारणों से सरल कार्यों को करने-कराने लगते हैं। इसी प्रयास में 'योग' के स्थान पर 'हठयोग' का प्रचार होने लग गया। इस तरह से जो लोग अपने मन पर नियन्त्रण नहीं करते, वे इन एषणाओं में फँस कर अपने जीवन का लक्ष्य=(मोक्षप्राप्ति) भी खो बैठते हैं और जनता को भी मोक्ष से दूर भोगों की तरफ ही ले जाते हैं। अतः ऐसा करना दोनों=(योग प्रशिक्षक और जनता) के लिये हानिकारक है। आप 'शुद्ध योग' भी सिखाना चाहते हैं, और धन कमाने के लिये आप 'हठयोग' का प्रचार करेंगे, तो आपके कथन में ही विरोध हो जाएगा। 'शुद्ध योग' में तो निष्काम कर्म करने का विधान है! जब धन कमाने के लिये 'हठयोग' सिखाएँगे, तो निष्काम कर्म ही नहीं रहेगा। तब आप 'शुद्ध योग' में कैसे कह पाएँगे कि कर्म करो। सकाम कर्म करके 'शुद्ध योग' सिखाते समय आप निष्काम कर्म कर पाएँगे इसकी क्या गारण्टी है।

**प्रश्न ९**-आप भी योग शिविर लगाते हैं। आप क्या सिखाते हैं?

**उत्तर**-हम भी योग शिविर लगाते हैं। उसमें पतंजलि महाराज का बताया हुआ 'शुद्ध योग' ही सिखाते हैं। संख्या की चिन्ता नहीं करते। संख्या चाहे १०० हो, या १५० या २०० हो। हम 'शुद्ध योग' ही सिखाते हैं। हमारे पास जो लोग सीखने आते हैं, वे भी 'शुद्ध योग' ही सीखने आते हैं। हम 'हठयोग' नहीं सिखाते। रोगों की चिकित्सा नहीं करते। कोई शिविरार्थी अपने किसी शारीरिक रोग=(खाँसी, दमा आदि) के बारे में पूछ भी बैठे, तो उसे चिकित्सक से चिकित्सा कराने का परामर्श देते हैं।

दिनचर्या के जैसे अन्य अंग=(शौच, स्नान, भोजन आदि) शिविर में होते हैं, वैसे ही दिनचर्या के एक अंग के रूप में व्यायाम भी कराते हैं। व्यायाम के रूप में पी.टी., व्यायाम आसन, सैर, दण्ड बैठक आदि सिखाते और करने का परामर्श देते हैं। परन्तु यह सब दिनचर्या के एक अंग के रूप में ही होता है। 'योग' के नाम से नहीं।

हम 'योग' के नाम से 'योग शिविर' में महर्षि पतंजलिनिर्दिष्ट यम, नियम, आसन=(ध्यान के आसन=पद्मासन, सिद्धासन, स्वस्तिकासन, सरलासन) प्राणायाम=(बाह्य, आभ्यान्तर आदि पूर्वोक्त केवल ४ प्राणायाम), प्रत्याहर, धारणा, ध्यान और समाधि; इस अष्टांग योग का सैद्धान्तिक और क्रियात्मक प्रशिक्षण देते हैं। इस अष्टांग योग को विस्तार से जानने के लिये हमारी संस्था (दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़) से प्रकाशित साहित्य=(योग-मीमांसा, योगदर्शनम्, क्रियात्मक योगाभ्यास, सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार आदि) का अध्ययन करें। जो लोग देखना चाहते हैं वे हमसे सम्पर्क करें। हमारे शिविर में भाग लेकर प्रत्यक्ष देखें। 'शुद्ध योग' को सीखकर अपना और सिखाकर दूसरों का कल्याण करें। आप सब को भी ऐसा ही करना चाहिये।

हे प्रभो! आर्य सज्जनों, आर्य विद्वानों एवं आर्य संस्थाओं के अधिकारियों को सद्‌बुद्धि प्रदान कीजिये, वे 'शुद्ध योग' का प्रचार करें, अनुष्ठान करें। अपने और अन्यों के मोक्ष के लिये प्रयत्न करें। 'हठयोग' आदि अनार्ष पद्धतियों का प्रचार न करें और आपके न्यायालय में दण्ड के पात्र न बनें। तभी वेद का प्रचार ठीक हो पाएगा और वैदिक ऋषियों की परम्परा एवं आर्यसमाज की रक्षा हो सकेगी।

**ओ३म् शम्॥**

**नोट**-इस लेख में कहीं-कहीं कठोर शब्दों का प्रयोग किया गया है। परन्तु वर्तमान में इस समस्या के निवारण के लिये ऐसा करना आवश्यक लगा, इसलिए ऐसा किया है। पाठकगण को इन शब्दों के प्रयोग से हुए कष्ट के लिये क्षमा-प्रार्थी हूँ।

**निवेदन**-आर्य विद्वानों, बुद्धिजीवियों से विनम्र निवेदन है कि वे इस लेख पर अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें ऊपर लिखे पते पर भेजने की कृपा करें। और यदि उचित समझें तो 'वैदिक योग' के प्रचार के लिये आप भी अपने-अपने लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित करावें।

# क्या आचार्य बलदेव उत्तर देना पसन्द करेंगे ?

## ताकि उसे सर्वहितकारी के आगामी अंक में प्रकाशित किया जा सके

आचार्य बलदेव के आदेश पर आर्य बलिदान भवन रोहतक में महापंचायत के नाम पर एक बैठक आयोजित की गई जिसमें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार चुने हुए व्यक्तियों को बोलने का मौका दिया गया जो केवल आचार्य बलदेव का, या तो पूर्ण श्रद्धा के कारण या फिर अपने स्वार्थों की निरन्तर हो रही पूर्ति को और आगे जारी रखने के कारण गुणगान करने के अभ्यस्त रहे हैं। कुछ व्यक्ति अपनी बात कहना भी चाहते थे, ऐसे व्यक्तियों में एक सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी का भी नाम शामिल किया जा सकता है, जो अपनी ईमानदारी और स्पष्टवादिता के कारण प्रसिद्ध हैं। उन्होंने बार-बार मंच संचालक को इशारा भी किया लेकिन उन्हें बोलने का मौका नहीं दिया गया। कारण साफ है कि आचार्य बलदेव और उनके गण उनकी साफ बात को पचाने में अपने आपको असमर्थ महसूस कर रहे थे। बात यहीं तक रहती तो भी समझ में आ सकती किन्तु तथाकथित महापंचायत की समाप्ति के बाद जब वही अधिकारी कुछ व्यक्तियों के साथ बातचीत कर रहा था तब एक लड़का उनके पास आया (जो आकृति से उनके अनुसार गुरुकुल का ब्रह्मचारी लग रहा था) और उन्हें कहने लगा कि क्या बात कर रहे हो? जब दूसरे व्यक्तियों ने कहा कि तुम कैसे बात कर रहे हो और ये रिटायर्ड एस.डी.एम. हैं तो उसका जवाब था कि अच्छा एस.डी.एम. होने का रौब दिखा रहे हो? आचार्य बलदेव कल्पना कर सकते हैं कि जो व्यक्ति आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित हो, जो प्रतिदिन यज्ञ करके ही दूसरे काम करने का आदी हो, जिसकी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रति असीम श्रद्धा रही हो, उसे यह सुनकर कितनी मानसिक पीड़ा हुई होगी? अगर हम आचार्य पद पर आसीन होकर समाज को इस प्रकार के उच्छृंखल व्यक्ति पैदा करके देंगे तो क्या समाज की दृष्टि में पवित्रता और शिष्टाचार के प्रतीक बनकर रह सकेंगे, जो हमारी गुरुकुल संस्कृति की अनुपम धरोहर है।

मेरा आचार्य बलदेव से अगला प्रश्न है कि यदि कोई व्यक्ति किसी भी संगठन का या संस्था का सर्वेसर्वा है और उसके अधीन काम करने वाले कर्मचारी अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं और तंग आकर अपने अधिकारियों को शिकायत करते हैं कि अमुक व्यक्ति ने (जो उस अधिकारी के मुंह लगता है) मुझे मां-बहिन की गाली दी है, हरामजादा कहा है और पेट में गोली मारने की धमकी दी है, फिर भी अधिकारी कोई कार्यवाही न करें तो आचार्य बलदेव और श्री सत्यवीर शास्त्री की दृष्टि में ऐसे अधिकारियों को क्या संज्ञा देनी चाहिए?

आचार्य बलदेव और उनके साथी यह दावा कर रहे हैं कि 'महापंचायत' में बड़ी भारी भीड़ थी, जबकि वास्तविकता यह है कि उस भीड़ में आर्यसमाजी कम और गैर-आर्यसमाजी ज्यादा थे। इस बात की पुष्टि इस बात होती है कि चार आदमी दयानन्दमठ में आए और वहां मैं स्वयं बैठा हुआ था और स्वामी इन्द्रवेश प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ १०-१५ आदमी और भी बैठे हुए थे। वे व्यक्ति दरवाजे पर आकर पूछने लगे कि यहां पर '**जाटों का हुक्का होगा**'। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि किस प्रकार के आर्यसमाजी आपने अपनी महापंचायत में बुला रखे थे। यदि ये वास्तव में आर्यसमाजी थे और उन्हें जानबूझकर वहां पर ऐसा कहने के लिए भेजा गया था तो इसे आचार्य बलदेव किस रूप में परिभाषित करना चाहेंगे। जहां तक भारी भीड़ का सवाल है, उसके बारे में भी साफ कर दिया जाए तो अच्छा है। इस तथाकथित महापंचायत में ४१७ व्यक्तियों की अपार भीड़ थी, जिसे देखकर आचार्य बलदेव गद्‌गद् थे और इसे बुलाने से पहले उनको विश्वास था कि उनके एक इशारे पर सारा हरयाणा उमड़ पड़ेगा और उनको यदि किसी ने छेड़ा तो हरयाणा में उनके नाम पर आग लग जावेगी, किन्तु खेद है कि कुछ धूंआ उठा जरूर लेकिन आकाश गंगा की तरह देखते ही देखते नष्ट हो गया। इसे भी विडम्बना ही कहा जा सकता है कि आचार्य बलदेव एक ओर तो पत्र जारी करके आर्य प्रतिनिधियों की बैठक कुछ मुद्दों पर विचार करने के लिए बुलाते हैं और बाद में यकायक उसे 'महापंचायत' का नाम दे देते हैं। उसमें मूल मुद्दों में से, जैसे गोरक्षा, वेदप्रचार आदि किसी पर भी चर्चा न करके केवल उन बातों को ही उछाला गया, जिसे केवल चरित्र-हनन ही कहा जा सकता है।

आचार्य बलदेव से यह पूछना भी सामयिक ही होगा कि क्या वे उस सूची को जारी करना उचित समझेंगे जो उस ८.५.२००५ को उपस्थित लोगों की तैयार की गई है जिसके द्वारा उन्होंने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की भूमि के पट्टों को वैध करवाने की असंवैधानिक और नापाक कोशिश की है। क्या आचार्य बलदेव उन पट्टों में से एक श्रीमती सुरीन सुपुत्री श्री रामप्रताप, आर्यनगर, हिसार को चालीस वर्ष की अवधि के लिए खेवट नं० २३२, ३०४/३२, ११, १२, १३ से आठ कनाल भूमि को ३०,०००/- रु० सालाना कीमत पर ५.३.२००४ को पंजीकृत करवाया है और उसमें खास शर्त लिखी है कि पट्टे की इस अवधि में कभी भी कोई वृद्धि नहीं की जावेगी। जबकि बाकी के पट्टों में हर पांच साल के बाद दस प्रतिशत की वृद्धि का प्रावधान रखा गया है। क्या आचार्य बलदेव ने यह लाभ श्रीमती सुरीन को इसलिए तो नहीं पहुंचाया है कि वह उसी नायब-तहसीलदार की पत्नी है, जिसके हस्ताक्षरों से बाकी पट्टे भी पंजीकृत हुए हैं। इसी प्रसंग में यह प्रश्न करना भी उचित प्रतीत होता है कि जब ८-५-२००५ की अपार भीड़ के सामने आप द्वारा नियुक्त मुख्त्यारेआम श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री ने यह स्वीकार किया कि मेरे कारण ही आचार्य बलदेव बदनाम हुए हैं। क्या उस 'कारण' पर कोई कार्यवाही करने की कोशिश की? इसके विपरीत भीड़ के हाथ उठवाकर प्रस्ताव पारित करवा दिया कि पट्टे ठीक दिये गये हैं और सभाहित में दिये गये हैं। आचार्य बलदेव स्वयं जानते हैं कि ऐसे प्रस्तावों की कोई संवैधानिक मान्यता नहीं होती है। यहां पर इसका उल्लेख करना भी बड़ा उपयुक्त रहेगा कि भगत मंगतूराम को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से बाहर करने के लिए आपने चौ० उदयसिंह मान का सहारा लिया और अपनी गर्ज में उन्हें वहां की प्रबन्ध समिति का प्रधान भी बनाया, क्योंकि तत्कालीन राजनैतिक शक्ति ने मान साहब के कारण ही आपकी मदद की थी। क्या कभी भी किसी भी पट्टे के बारे में आपने या आपके मुख्त्यारेआम ने मान साहब की स्वीकृति तो दूर की बात है किसी भी प्रकार का विचार-विमर्श किया? यदि आप चाहते हैं कि इस मामले की सच्चाई लोगों तक सही रूप में जाए तो आपके कार्यकाल में इस सम्बन्ध में जो भी कार्यवाही हुई है, उससे सम्बन्धित सारा रिकार्ड आप चौ० राममेहर वकील को परीक्षण के लिए दे दें। यदि वे उस बारे में यह प्रमाण-पत्र देते हैं कि पट्टे देने में कोई धांधली नहीं की गई है, तो उनकी रिपोर्ट को तीन अन्य वकीलों से, जिनमें एक आपका प्रतिनिधि होगा पुनः परीक्षण करवाकर, जैसी वे रिपोर्ट देंगे, वैसी की वैसी 'सर्वहितकारी' में छापेंगे। क्या आप ऐसा कर पायेंगे?

आपकी 'महापंचायत' में दिल्ली से आए ब्र० राजसिंह आर्य ने जिस भाषा का प्रयोग करके अपना उत्तेजक भाषण दिया, क्या आपकी अध्यक्षता में ऐसा होना चाहिए था? सच्चाई को भी कहने का कोई तरीका होता है। अच्छा होता वे शालीनता का परिचय देते और सभ्य शब्दों में अपनी बात कहते। किन्तु आपने धर्म से धड़े को ही बड़ा माना।

आप जानते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का नारीजाति के प्रति कितना सम्मान था और वे नारी के सम्मान को स्वर्ग का पर्यायवाची मानते थे। किन्तु आपने अपने गुरुकुल कालवा के उत्सव की सूचना 'सर्वहितकारी' में छपवाते समय यह पंक्ति भी साथ छपवा दी कि 'स्त्रियों का प्रवेश निषिद्ध है।' इससे आप किस मानसिकता का परिचय देना चाहते हैं। क्या इसे आप नारी जाति का सम्मान मानते हैं?

अन्त में मैं आप को यह भी बताना ठीक समझता हूं कि यह बात जब आपको दो सप्ताह की दौड़-धूप के बाद अच्छी तरह जंच गई कि ८.५.२००५ की तथाकथित महापंचायत में बहुत ज्यादा प्रतिनिधि नहीं आवेंगे तो आपने महापंचायत से एक दिन पूर्व न्यायालय में वाद प्रस्तुत करवा दिया। यदि महापंचायत के समर्थन और फैसले पर विश्वास था तो ८.५.२००५ की महापंचायत के निर्णय के बाद न्यायालय में जाना चाहिए था। जबकि सच्चाई यह है कि आपने महापंचायत को वाद प्रस्तुत करने की बात बिलकुल भी नहीं कही। इसे आप 'महापंचायत' का सम्मान कहेंगे या और कुछ।

अगले अंक में आपसे उन पत्रों के बारे में प्रश्न पूछे जावेंगे, जो आपके तथा कैप्टन देवरत्न आर्य, विमल वधावन आदि के बीच पिछले दो साल से होते रहे हैं।

-जयसिंह ठेकेदार, सभामंत्री

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ( रजि० ) के सम्बन्ध में आदेश

पिछले कुछ समय से पंजाब के प्रमुख आर्यसमाजियों के आपसी मतभेद व वैमनस्य ने एक गम्भीर स्थिति उत्पन्न कर दी है। पंजाब में दो-दो सामानान्तर प्रतिनिधि सभा चलाई जा रही हैं जिस कारण पंजाब में आर्यसमाज का कार्य बन्द होकर रह गया है। सभी गुट एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोपण कर रहे हैं। पंजाब सभा के चुनाव एवं कार्य संचालन में बहुत-सी अवैधताएं और अनियमितताएं पाई गई हैं। पंजाब सभा के धन का दुरुपयोग हो रहा है। अंतरंग सभा की स्वीकृति के बिना पंजाब सभा के लाखों रुपये व्यर्थ ही खर्च किये जा रहे हैं और सभा के खाते भी ठीक ढंग से नहीं दर्शाये जा रहे हैं। मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित दोनों गुटों के प्रतिनिधियों से बातचीत करने और पंजाब सभा के चुनाव में अनियमितताओं तथा उसके संचालन करने में आर्थिक अनियमितताओं की जांच करने हेतु एक आठ सदस्यीय उपसमिति का गठन किया था। उस उपसमिति ने अपनी रिपोर्ट में भी पंजाब सभा के पिछले चुनाव में अनियमितताओं और सभा के धन के दुरुपयोग के बारे में रिपोर्ट दी है इस परिस्थितियों में आर्यसमाजियों में एकता और पारस्परिक सद्भावना की अत्यधिक आवश्यकता है। इसलिए मैं स्वामी अग्निवेश प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के विधान की धारा १० (ग) के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकार के आधार पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के दोनों पक्षों यानि (१) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा श्री सुदर्शनकुमार शर्मा प्रधान, (२) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा श्री धर्मप्रकाशदत्त प्रधान की आर्य प्रतिनिधि सभाओं की अन्तरंग सभाओं को भंग करके अपने अधिकार में लेता हूं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का नए सिरे से कार्य संचालनार्थ एक तदर्थ समिति (एडहाक कमेटी) की नियुक्ति की जाती है। यह तदर्थ समिति छह महीने के लिए नियुक्त की जाती है लेकिन आवश्यकता पड़ने पर तदर्थ समिति का कार्यकाल बढ़ाया भी जा सकता है। यह तदर्थ समिति ६ महीने के भीतर पंजाब सभा का विधिवत् सभा के संविधान के अनुसार सार्वदेशिक सभा की देखरेख में निर्वाचन कराएगी। तदर्थ समिति के अधिकारियों व अन्तरंग सदस्यों की सूची निम्न प्रकार होगी।

**पदाधिकारी ( २१ )**

१. प्रधान : श्री बलवीरसिंह चौहान, चण्डीगढ़।
२. वरिष्ठ उपप्रधान (कार्यकर्ता प्रधान) : श्री अश्वनीकुमार शर्मा (एडवोकेट) जालन्धर
३. उपप्रधान : श्री धर्मप्रकाश दत्त नवाशहर
४. ,, ,, श्री अजय सूद मोग्गा
५. ,, ,, श्री अरविन्द मेहता, दीनानगर
६. ,, ,, श्री रोशनलाल आर्य, लुधियाना
७. ,, ,, डॉ० शिवदयाल माली, जालन्धर
८. ,, ,, श्रीमती जगदीश आर्या, अमृतसर
९. महामन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य, अमृतसर
१०. मन्त्री श्री रामकुमार शर्मा, जालन्धर
११. ,, ,, डॉ० रमेश गुप्ता, लुधियाना
१२. ,, ,, श्री सोमदत्त शास्त्री, चण्डीगढ़
१३. ,, ,, श्री ओमप्रकाश टण्डन, लुधियाना
१४. ,, ,, श्री अशोक मेहता प्रिंसिपल, अमृतसर
१५. ,, ,, श्री हरवंशलाल सेठी, लुधियाना
१६. ,, ,, श्री अनिल लडोइया, नवांशहर
१७. कोषाध्यक्ष श्री सन्तकुमार, लुधियाना
१८. रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् पंजाब (रजि०) : श्री हरवंशलाल तनेजा, नवांशहर
१९. अधिष्ठाता साहित्य विभाग : श्री वेदपाल, लुधियाना
२०. अधिष्ठाता आर्यवीर दल : श्री सुखदेव आर्य, जालन्धर
२१. अधिष्ठाता वेदप्रचार : श्री वेदप्रकाश आर्य, दीनानगर

**अन्तरंग सदस्य ( ३० )**

१. श्री सुल्कशन सरीन, नवांशहर
२. श्री अशोक भल्ला, लुधियाना
३. श्रीमती विनोद प्रभा, दीनानगर
४. श्री अमरनाथ आर्य, गढ़ा जालन्धर
६. श्री गुरदेव सैनी, जालन्धर
७. श्री अशोक आर्य, पटियाला
८. डॉ० कुन्दनलाल, पटियाला
९. श्री नन्दगोपाल सोनी, गढ़शंकर होशियारपुर
१०. श्री राजकुमार गर्ग वरनाला, हरदिया बाजार
११. श्री द्वारकादास, बांसले मोगा
१२. श्री सतपाल कौंसलर, जालन्धर
१३. श्रीमती सन्तोष चौहान, चण्डीगढ़
१४. श्री इन्द्रकुमार शर्मा, जालन्धर शहर
१५. स्वामी ब्रह्मवेश, पटियाला
१६. श्री वासुदेव आर्य, धुरी जिला सगरूर
१७. सुश्री स्वराजमोहन, जालन्धर छावनी
१८. श्री गुरवचनदास, गुरुदासपुर
१९. श्री विपिन शर्मा, वस्ती गुंजा, जालन्धर शहर
२०. श्री राकेश काठिया, रामदास अमृतसर
२१. डॉ० सुधीर, पठानकोट
२२. श्री चन्द्रप्रकाश मलिक, चण्डीगढ़
२३. श्री विशेषकुमार आर्य, मोहाली
२४. श्री नीरज कोढ़ा, चण्डीगढ़
२५. श्री प्रवीन आर्य, अमृतसर
२६. श्री इन्द्रजित् ठुकराल, अमृतसर
२७. श्री राजकुमार आर्य, चण्डीगढ़
२८. श्रीमती ज्योति नन्दा, गुरुदासपुर
२९. श्रीमती शुभलता भण्डारी, लुधियाना
३०. श्री ब्रजिन्द्र भण्डारी, लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि०) गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर के भिन्न-भिन्न बैंकों में सभा के बचत खातों अथवा एफ.डी.आर. खातों का संचालन सभा के निम्न तीन पदाधिकारियों में से किन्हीं दो के संयुक्त हस्ताक्षरों से किया जाएगा।

१. सभाप्रधान: श्री बलवीरसिंह चौहान
२. महामन्त्री : श्री ओमप्रकाश आर्य
३. कोषाध्यक्ष : श्री सन्तकुमार आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि०) गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर और आर्य विद्या परिषद् पंजाब (रजि०) गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से सम्बन्धित शिक्षा संस्थाओं, कालेजों अथवा स्कूलों की प्रबन्ध समितियों का गठन एवं पुनर्गठन करने के लिए एक उपसमिति का गठन किया जाता है।

**उपसमिति**

१. सभा प्रधान-श्री बलवीरसिंह चौहान, चंडीगढ़
२. सभा वरिष्ठ उपप्रधान (कार्यकर्ता प्रधान)- श्री अश्विनीकुमार शर्मा एडवोकेट, जालन्धर
३. सभा महामन्त्री-श्री ओमप्रकाश आर्य, अमृतसर
४. रजिस्ट्रार-श्री हरवंशलाल तनेजा, नवांशहर

यह उपसमिति समय-समय पर विचार करके पंजाब सभा अथवा आर्य विद्या परिषद् पंजाब (रजि०) से सम्बन्धित शिक्षा संस्थाओं के सुचारु रूप से संचालनार्थ प्रबन्ध समितियों का गठन एवं पूर्ण गठन करेगी और हर एक आदेश सभाप्रधान सभा महामन्त्री एवं रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर द्वारा जारी किया जाएगा।

**( स्वामी अग्निवेश )**
सभाप्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी०)
महर्षि दयानन्द भवन ३/५ आसफ अली रोड,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

**प्रतिलिपि : सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु**

१. श्री बलवीरसिंह चौहान, चण्डीगढ़, सभाप्रधान
२. श्री अश्वनीकुमार शर्मा एडवोकेट, सभा कार्यकर्ता प्रधान
३. श्री ओमप्रकाश आर्य, अमृतसर, महामन्त्री
४. श्री सुदर्शन शर्मा, ४०६ एल मॉडल टाउन, जालन्धर सिटी
५. श्री धर्मप्रकाशदत्त, नवांशहर
६. श्री धर्मदेव आर्य, कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, रजिस्टर्ड गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर
७. डिप्टी कमिश्नर, जालन्धर
८. सीनियर सुप्रिटेण्डेंट पुलिस, जालन्धर

( स्वामी अग्निवेश )

## अत्यावश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पुराना कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन में था और नये प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी का कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में है। इनके विवाद के कारण सर्वहितकारी के ग्राहकों, लेखकों आदि को किसी प्रकार का कष्ट न हो इसके लिए सर्वहितकारी सम्बन्धी समस्त डाक-पत्र, लेख, मनीआर्डर आदि नीचे लिखे पते पर ही प्रेषित करें।

यदि आपको सर्वहितकारी साप्ताहिक समय पर नहीं मिलता है तो आप नीचे लिखे पते पर पोस्टकार्ड द्वारा ग्राहक संख्या सहित सूचित करें अथवा नीचे लिखे नम्बरों पर फोन द्वारा सूचित करेंगे तो समुचित कार्यवाही की जायेगी।

सर्वहितकारी के परिवर्तन में जो समाचार-पत्र आते हैं उनके सम्पादकों से भी मेरा नम्रनिवेदन है कि वे भी अपने समाचार-पत्र नीचे लिखे पते पर ही प्रेषित करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन के पते पर प्रेषित पत्र, लेख, मनीआर्डर आदि मुझे नहीं मिलेंगे तो अव्यवस्था हो जायेगी। अतः आप सभी से पुनः प्रार्थना है कि इस सूचना को अत्यावश्यक समझें।

**वेदव्रत शास्त्री**
सम्पादक
'सर्वहितकारी'
दयानन्दमठ
रोहतक-124001

दूरभाष : 01262-200700
मो० 94160 51111
मो० 94160 52111
मो० 94160 53111

## शोक-प्रस्ताव

अभिज्ञान संस्कृत शोधकेन्द्र, चाणक्यपुरी रोहतक के संरक्षक डॉ० प्रकाशवीर दलाल की अध्यक्षता में केन्द्र में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की बैठक आयोजित की गई, जिसमें केन्द्र की छात्रा कु० ऋतुरानी की दादी स्व० श्रीमती सदाकौर (धर्मपत्नी श्री अमीरसिंह सहरावत पूर्व डी.ई.ओ.) गांव बिरहोड़ (झज्जर) के सत्तर वर्ष की आयु में ११-५-२००५ हुए आकस्मिक निधन पर संवेदना प्रकट की गई। दो मिनट का मौन धारण करके परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए और शोकसंतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

-सुशीला रानी, एम.ए. प्रथम वर्ष

# यज्ञदर्पण-जल-सिंचन-क्रिया का उद्देश्य

☐ प्रतापसिंह शास्त्री एम.ए., पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गंगवा रोड, हिसार

जलसिंचन से पहले "**अयं त इध्म आत्मा**" - इस मंत्र से प्रार्थना की गई है कि जैसे समिधाओं तथा घृत से अग्नि प्रदीप्त होती है वैसे ही धन, पशु, प्रजा से यजमान की बढ़ती हो। इस मंत्र को पांच बार बोलकर ५ आहुतियां दी जाती हैं इसका विशेष कारण इस मंत्र में प्रजा, पशु, ब्रह्मवर्चस् (विद्वानों का संग), अन्न तथा इनके अतिरिक्त हमारी जो इच्छायें हैं उनकी पूर्ति के लिए प्रार्थना की गई है। इनकी संख्या ५ है, इसीलिए यह मंत्र ५ बार पढ़ा जाता है। इस प्रार्थना का जलसिंचन के मंत्रों द्वारा अदिति, अनुमति, सरस्वती, सविता, गन्धर्व, इन पांच शक्तियों से अनुमोदन कराया जाता है।

"**ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व**" हे अदिति! तू अनुमोदन कर। अंजलि में जल लेकर इस मंत्र से पूर्व में जल सिंचन करें। "**ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व**" हे अनुमति तू भी अनुमोदन कर। इस मंत्र से पश्चिम में जलसिंचन करें।

"**ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व**" हे सरस्वती तू भी अनुमोदन का अनुमोदन कर। इस मंत्र से उत्तर में जलसिंचन करें।

"**ओ३म् देव सवितः**" इस मंत्र से वेदी के चारों ओर जलसिंचन करें।

"**दिति-शब्द**" "**दो अवखण्डने**" धातु से बना है जो खण्डन हो जाये। अदिति शब्द का अर्थ है-जो खण्डित न हो। जिस बात का आगे अनुमोदन कराया जा रहा है वह ऐसी बात है जो सब को स्वीकृत है वह सर्वसम्मति से स्वीकृत होने वाली है-अर्थात् यजमान की समृद्धि हो-यह बात। इसलिए कहा-'अदिति' अर्थात् सर्वसम्मति इस प्रस्ताव को स्वीकार करें। अनुमति अर्थात् सर्वसाधारण इसका अनुमोदन करें। सरस्वती-अर्थात् विद्वज्जन इसका अनुमोदन करें, सविता, गन्धर्व, वाचस्पति-सब मधुरवाणी से इसका अनुमोदन करें।

इस जल-सिंचन क्रिया में गृहस्थ के लिए भी बहुत सुंदर शिक्षा निहित है। पहले मंत्र में यह भी भाव है कि जब कभी हम कोई नया कार्य करना चाहें तो सबसे पहले ईश्वर से अनुमति मांगें। दूसरे मंत्र में कहा है उसी कार्य के लिए फिर अपने परिवार से अनुमति मांगें। अभी कार्य शुरू न करो और विद्वानों की अनुमति प्राप्त करके जो भी कार्य शुरू करोगे उसमें सफलता अवश्य मिलेगी। जलसिंचन दक्षिण से उत्तर की ओर किया जाता है क्योंकि दक्षिण को अंधकार की दिशा मानते हैं अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर। वर्ष में दो अयन होते हैं-उत्तरायण और दक्षिणायन, जब सूर्य दक्षिणायन होता है तब रात बड़ी और दिन छोटा होता है। और जब सूर्य उत्तरायण होता है तब रात छोटी और दिन बड़ा होता है। इसलिए दक्षिण को अंधकार की दिशा कहा गया है। जलसिंचन क्रिया यज्ञों में प्रायः बैठे-बैठे ही करते हैं किन्तु जलसिंचन क्रिया खड़े होकर करनी चाहिये। देखो पति-पत्नी खड़े होते हैं। पति पानी से भरा लोटा पत्नी के हाथ में देता है इसका अर्थ यह है कि पति जो भी कमाई करके लाये पूरी की पूरी पत्नी को दे। फिर पत्नी उस लोटे के जल को पति की अंजली में डालती है और पति अंजलि के पानी को यज्ञकुण्ड की नाली में डालता है। इसका अर्थ यह है कि पति की दी हुई रकम को पत्नी स्वयं किसी को न दे, पेमेन्ट पति के हाथ से कराये, यदि पति ने किसी को देना है तो पत्नी से लेकर ही दे। इस शिक्षा के अनुसार बर्तने से जीवन कलहरहित और स्नेही होगा। इन तीन मंत्रों के बाद चौथा मंत्र "**ओ३म् देव सवित०**" है जिससे वेदी के चारों तरफ जल का सिंचन किया जाय या नाली को भरकर रखा जाये।

नाली को भरी रखने का महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक कारण है देखो, अग्नि को कितनी भी सावधानी से जलाओ फिर भी उसमें से कुछ न कुछ कार्बन डाई आक्साइड गैस उत्पन्न होगी ही होगी। जो यजमान को तथा यज्ञ में उपस्थित जनों को हानि पहुंचा सकती है। जल कार्बन का शोषण करता है इसलिए यजमान के सामने नाली भरी होगी तो वह कार्बन का शोषण कर यजमान को हानि से बचा लेगा। दूसरा एक और महत्त्वपूर्ण कारण है जहाँ भी अग्नि जलेगी उसमें छोटा-सा पाजेटिव विद्युत् वोल्ट उत्पन्न होगा केवल पाजेटिव से किसी भी कार्य को नहीं किया जा सकता। जब तक उसमें नेगेटिव का योग न कर दिया जाय। इसलिए वेदी के चारों ओर पानी का होना जरूरी है क्योंकि नेगेटिव का उपादान कारण जल है और पाजेटिव का अग्नि है। वेदी जितनी लम्बी चौड़ी गहरी होगी उसी के अनुपात से विद्युत् उत्पन्न होगी और वेदी के माप के आधार पर मेखला बनाई जाती है। मेखला ही वह माप है जो पोजेटिव से नेगेटिव की दूरी को दर्शाता है।

जलसिंचन क्रिया का साधारण उद्देश्य भी है। पहला साधारण-सा उद्देश्य तो यह है कि यज्ञकुण्ड की प्रज्वलित अग्नि में कीटादि प्राणी अचानक से न आ घुसें और जल न जायें। इसलिए हवनकुण्ड के चारों तरफ नाली बनाकर उसे जल से भर दिया जाता है। दूसरा साधारण-सा उद्देश्य कुछ गहरा है। प्रतीकात्मक है। यज्ञकुण्ड को पृथ्वी का प्रतिनिधि मानकर उसे चारों तरफ से जल से घेर दिया जाता है जो पृथ्वी के चारों तरफ से समुद्र-जल से घिरे होने का प्रतीक है।

जलसिंचन क्रिया से पहले पाँच बार "**अयं त इध्म आत्मा०**" मंत्र बोला गया और इसका अनुमोदन जलसिंचन मन्त्रों से हुआ। पाँच बार '**इदं न मम**' यह भी बोला गया। बल्कि यज्ञ में कई मन्त्रों में प्राय अग्निहोत्र के प्रत्येक मन्त्र के साथ '**इदं न मम**' का प्रयोग होता है इसका अर्थ है-यह मेरा नहीं है। भारतीय संस्कृति के प्रत्येक व्यक्ति से दिन में बीसियों बार यह कहलवाया जाता था कि यह मेरा नहीं है, यह मेरा नहीं है। आज हर व्यक्ति 'मेरा'-'मेरा' की उलझन में फंसा हुआ है और हर समस्या 'मेरा' के कारण है। यज्ञ का यह संदेश कि-"यह मेरा नहीं है" मानव समाज के लिए एक अद्भुत तथा अपूर्व संदेश है जो कहने को तो सब कहते हैं परन्तु वैदिक-संस्कृति के एक-एक मंत्र में ओतप्रोत है। और यह "पंचमहायज्ञविधि", "संस्कारविधि" में महर्षि दयानन्द की विश्व को महान् देन है।

## आर्यसमाज कैथल शहर का शताब्दी समारोह




क्योड़क गेट कैथल पर आर्यसमाज कैथल शहर के शताब्दी समारोह का मुख्य-द्वार सुशोभित हो रहा है।

आर्यसमाज कैथल शहर की स्थापना में विशेष योगदान सेठ बसंतलाल जी व भूमिदाता स्वर्गीय सालिग्राम जी भल्ला का रहा। स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती के शुभ आगमन का सौभाग्य इसे प्राप्त हुआ। महाशय काकाराम, महाशय बृजलाल जी चौधरी, पं० अमरनाथ जी तिवाड़ी जैसे ऋषिभक्त इसी आर्यसमाज ने प्रदान किए। चाहे स्वतंत्रता की लड़ाई हो, चाहे हैदराबाद सत्याग्रह, चाहे हिन्दी आंदोलन सभी में यहाँ के आर्यसभासदों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में प्रयत्नशील रहे व निरन्तर वर्तमान में भी आर्यसमाज के प्रधान व हिन्दी सत्याग्रह में जेल जा चुके परम गोभक्त लाला अमरसिंह जी शोरेवाले, ऋषि दयानन्द के आंदोलन की लगामों को थामे हुए हैं व उनके नेतृत्व में आर्यसमाज कैथल शहर जिसकी स्थापना सन् १९०५ में हुई का शताब्दी समारोह १२, १३ फरवरी २००५ को सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० प्रमोद योगार्थी व पुरोहित पं० राजन शास्त्री रहे। समारोह के संयोजक आचार्य रणधीरसिंह शास्त्री रहे। श्री धर्मसिंह सहगल व श्यामवीर 'राघव' भजनोपदेशकों ने भजनों के माध्यम से ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज के कृतित्व व अमर शहीदों को स्मरण किया व १३ फरवरी २००५ को बसंत पंचमी पर्व की सार्थकता पर प्रकाश डाला। डॉ० प्रमोद योगार्थी जी ने डॉ० भवानीलाल भारतीय जी की कृति "मैंने दयानन्द को देखा" का बड़ा सजीव वृत्तान्त सुनाया जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा। श्री हरबंशलाल जी कपूर महामंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली विशेष अतिथि रहे। शहर व आसपास के गांवों सीवन, पुण्डरी, क्योडक, कठवाड, तितरम, देवीगढ़ से भी प्रबुद्धजनों ने समारोह में भाग लिया व आयोजन की सराहना की।

-युद्धेन्द्रकुमार वर्मा, कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज कैथल शहर

## श्रीमद्दयानन्द महिमा

( गीतिका-मिलिन्दपाद )

ब्रह्मचारी ब्रह्म-विद्या का विशद विश्राम था।
धर्मधारी धीर योगी, सर्व सद्‌गुण धाम था॥
कर्मवीरों में प्रतापी, पर निरा निष्काम था।
श्रीदयानन्दर्षि स्वामी, सिद्ध जिस का नाम था॥
बीज विद्या के उसी का पुण्य पौरुष बो गया।
देखलो लोगो दुबारा भारतोदय हो गया॥१॥
सत्यवादी वीर था जो, वाचनिक संग्राम का।
साहसी पाया किसी को भी न जिसके काम का॥
प्राण दे प्रेमी बना जो, प्रेम के परिणाम का।
क्या दया आनन्दधारी, धीर था वह नाम का?
धन्य सच्छिक्षा-सुधा से, धर्म का मुख धो गया।
देख लो लोगों दुबारा, भारतोदय हो गया॥२॥
साधु भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे।
सभ्यता की सीढ़ियों पै, सूरमा चढ़ने लगे॥
वेद-मंत्रों को विवेकी, प्रेम से पढ़ने लगे।
वञ्चकों की छातियों में शूल से गड़ने लगे॥
भारती जागी, अविद्या का कुलाहल सो गया।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय हो गया॥३॥
कामना विज्ञानवादी मुक्ति की करने लगे।
ध्यान द्वारा धारणा में ध्येय को धरने लगे॥
आलसी, पापी, प्रमादी पाप से डरने लगे।
अंधविश्वासी सचाई, भूल में भरने लगे॥
धूलि मिथ्या की उड़ा दी, दम्भ-दाहक रो गया।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय हो गया॥४॥
तर्क-झञ्झा के झकोले, झाड़ते चलने लगे।
युक्तियों की आग चेती, जालिया जलने लगे॥
पुण्य के पौधे फबीले, फूलने फलने लगे।
हाथ हत्यारे हठीले, मादकी मलने लगे॥
खेल देखे चेतना के, जड़ खिलौना खो गया।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय हो गया॥५॥
तामसी थोथे मतों की, मोह-माया हट गई।
ऐंठ की पोली पहाड़ी, खण्डनों से फट गई॥
छूत छैया की अछूती, नाक लम्बी कट गई।
लालची पाखण्डियों की, पेट-पूजा घट गई॥
ऊत भूतों का बखेड़ा, डूब मरने को गया।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय हो गया॥६॥
सत्य के साथी विवेकी मृत्यु को तर जायेंगे।
ज्ञान-गीता गाय भोलों का भला कर जायेंगे॥
अंध-अज्ञानी अंधेरे में पड़े मर जायेंगे।
आप डूबेंगे, अविद्या देश में भर जायेंगे॥
शंकरानन्दी वही है, जान शिव को जो गया।
देख लो लोगो दुबारा, भारतोदय हो गया॥ ७॥

-कविवर श्री नाथूराम 'शंकर' कृत

## वक़्त की आवाज़

- ( स्वर्गीय ) नाज़ सोनीपती

पहले अपनी बात को तोला करो।
फिर ज़बां से बात वह बोला करो॥
देखने की तरह तुम देखा करो।
बात की गहराई तक पहुंचा करो॥
अपनी खुशियों का तुम्हें एहसास है।
दूसरों के ग़म को भी समझा करो॥
क्यों बुराई ले रहे हो ख़ाहमखाह।
है यही अच्छा, कि तुम अच्छा करो॥
ढूंढ़ते हो ऐब औरों के मगर।
अपने अन्दर भी कभी झांका करो॥
ज़ेहन रोशन हैं, मगर अन्धेर क्यों?
ऐसे अंधेरों को भी चलता करो॥
खाहमखाह डूबे हो तुम किस सोच में।
सोचना क्या है, वही सोचा करो॥
उंगलियां तुम पर उठाए क्यों कोई।
काम तुम जो भी करो, बढ़िया करो॥
तुम ज़माने को बदल सकते हो 'नाज़'।
वक़्त की आवाज को भांपा करो॥

## सत्यार्थप्रकाश पर गोष्ठी

उदयपुर में हुए निश्चय के अनुसार आर्य विद्वन्मंडल की बैठक १९ मई से २ जून २००५ तक निरन्तर प्रतिदिन होगी जिसमें सत्यार्थप्रकाश पर विचारविमर्श होगा। अत: सभी सम्बन्धित विद्वान् १८ मई को सायंकाल तक आर्यसमाज मंदिर, नागौरी गेट, हिसार में पहुंचकर इस कार्य में अपना सहयोग देवें।

भोजन, निवास और मार्ग-व्यय आदि की व्यवस्था श्री सीताराम आर्य करेंगे।

-रघुवीर वेदालंकार, संयोजक गोष्ठी

## ध्यान रखने योग्य बातें....

- मदिरा पीकर शराबी परस्पर खूब लड़ते-झगड़ते हैं, उससे शरीर की शक्ति क्षीण हो जाती है और बूढ़े हो जाते हैं। -ऋग्वेद ८.२.१२
- शराब मनुष्य की बुद्धि को नष्ट कर देती है। -शार्ङ्गधर संहिता
- मद्य और मांस का सेवन नहीं करना चाहिये। -मनुस्मृति
- मैं मद्यपान को चोरी-डकैती से, दुराचार से और वेश्यावृत्ति से भी ज्यादा भयंकर पाप मानता हूं। -महात्मा गांधी



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती




ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र
प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१
वर्ष ३२ अंक २५ २१ मई, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की नवगठित तदर्थ समिति की बैठक में लिए गये महत्त्वपूर्ण निर्णय

❑ रणवीरसिंह शास्त्री, सभा उपमन्त्री

स्व० सुरेन्द्रसिंह व स्व० ओ०पी० जिंदल को श्रद्धांजलि दी गई। प्रतिनिधि सभा का चुनाव ३० नवम्बर तक करवाया जावेगा। वेदप्रचार मण्डलों के संयोजक नियुक्त किये गये। संस्कृत/हिन्दी के विषयों के आधार पर मेधावी छात्र/छात्राओं का सम्मानित करने का निर्णय।

राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन में हरयाणा से दो हजार कार्यकर्ता भेजने का संकल्प :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी अग्निवेश द्वारा आदेश दिनांक १-५-२००५ के अनुसार हरयाणा की आर्यसमाजों के काम को और अधिक गति देने के लिए आचार्य बलदेव की अध्यक्षता वाली कार्यकारिणी को भंग करके गठित की गई नई तदर्थ समिति की बैठक दिनांक १५-५-२००५ के तदर्थ समिति के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

ईशप्रार्थना के साथ बैठक की कार्यवाही प्रारंभ हुई और सर्वप्रथम पिछले दिनों विमान दुर्घटना में मारे गये हरयाणा सरकार के दो मंत्रियों स्व० श्री सुरेन्द्रसिंह तथा स्व० श्री ओ०पी० जिंदल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई और दो मिनट का मौन धारण किया गया। इसके अतिरिक्त दस अन्य आर्यजनों के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया गया।

बैठक की कार्यवाही का संचालन करते हुए तदर्थ समिति के संयोजक जयसिंह ठेकेदार ने उपस्थित सदस्यों को बताया कि किस तरह से आचार्य बलदेव ने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए सभी प्रतिनिधियों के साथ वादाखिलाफी की है। श्री जयसिंह ठेकेदार ने तहसील का वह मूल दस्तावेज दिखाते हुए, जिस पर आचार्य बलदेव, हरिश्चन्द्र शास्त्री, जिलेसिंह आर्य और रिसालसिंह नम्बरदार का फोटो लगा हुआ है, बताया कि श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को मुख्त्यार [illegible] ढंग से पंजीकृत करवाया है, उससे आशंका उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इस तरह की कार्यवाही विधान के अनुसार सभामंत्री द्वारा की जाती है, लेकिन सभामंत्री को भी शायद इस बात की कोई जानकारी नहीं थी। भले ही सभामंत्री आजकल असभ्य भाषा का प्रयोग करके अनाप शनाप ब्यान दे रहे हैं। स्वामी इन्द्रवेश और प्रो० शेरसिंह ने भी तदर्थ समिति के गठन से पूर्व की सभी परिस्थितियों पर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि कैसे समय-समय पर आचार्य बलदेव से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की भूमि को पट्टों पर दिए जाने से रोक लगाने की बात कही गई और कैसे वे पहले मना करते रहे और बाद में दस्तावेज दिखाने के बाद मान गये कि यह उनकी जानकारी के बिना ही हुआ है। उनकी इस बात में सच्चाई हो भी सकती है-क्योंकि जब श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री से इस बारे में पूछा गया तो बताया गया कि ये सभी पट्टे आचार्य विजयपाल और श्री सत्यवीर शास्त्री के कहने पर दिये गये हैं। अगर यह सत्य है तो आचार्य बलदेव की जानकारी में आने के बाद उन्होंने इस पर कार्यवाही क्यों नहीं की। कार्यवाही न करने वाला आचरण प्रधान पद पर बैठे आचार्य बलदेव को कैसे शोभा दे सकता है। दोनों आर्यनेताओं ने इस बात का उल्लेख किया कि यह प्रचार करना कि आचार्य बलदेव सभा में भोजन भी नहीं करते। इसमें कोई दो राय नहीं कि भोजन के नाम पर वे सभा पर कोई बोझ नहीं डाल रहे हैं। उनका भोजन कभी गुरुकुल लाढौत से तो कभी बोहर गांव से आता है। क्या इसके लिए सभा की गाड़ी नहीं जाती और उस पर कोई खर्च नहीं होता। जितनी आचार्य बलदेव के भोजन की कीमत है, उससे कहीं अधिक लाने [illegible] हो जाता है। अच्छा तो यही होगा कि इस मामले में वे स्व० स्वामी ओमानन्द सरस्वती के आचरण का अनुकरण करें। क्योंकि स्वामी जी ने भी कभी सभा में भोजन नहीं किया और उनका भोजन उनके प्रिय शिष्य श्री वेदव्रत शास्त्री के घर से आता था, किन्तु उन्होंने अपने जीवन में कभी इसका उल्लेख नहीं किया कि वे सभा के भोजनालय में भोजन नहीं करते। अगर यह बात कोई महत्त्व वाली होती तो वे उसका जिक्र जरूर करते।

८-५-२००५ की महापंचायत का जिक्र करते हुए स्वामी इन्द्रवेश ने कहा कि दावा किया जाता है कि उसमें सात सौ के लगभग प्रतिनिधियों ने आचार्य बलदेव में अपना विश्वास व्यक्त किया है। अगर ये बात सच होती हो वे प्रतिनिधि अवश्य मेरे पास आते और कहते कि हम आचार्य बलदेव को ही प्रधान मानते हैं। किन्तु ऐसा नहीं हुआ और जो आदमी उस दिन मिलने आए थे वे सभी मेरा सम्मान करते हैं और यही कहने आए थे कि मिलकर समस्या का समाधान निकाला जावे। जब उनको भी वास्तविकता बताई गई तो वे भी इस मत के हो गये कि कोई पट्टा नहीं दिया गया है। सभा प्रधान ने यह भी बताया कि आचार्य बलदेव को अगर आर्य प्रतिनिधियों के समर्थन का इतना भरोसा था तो एक दिन पहले न्यायालय में वाद क्यों प्रस्तुत कर दिया। उन्हें बताना चाहिए था कि क्या कारण है कि ८-५-२००५ को लोगों के सामने इस बारे क्यों नहीं बताया। न्यायालय की शरण में जाने के बाद महापंचायत का कोई औचित्य नहीं है और प्रतिनिधियों के समर्थन का विश्वास होने पर न्यायालय में जाने का कोई ठोस आधार प्रतीत नहीं होता। स्वामी इन्द्रवेश ने बड़े दुःख के साथ कहा कि इस तथाकथित महापंचायत में वक्ताओं ने जिस प्रकार की अभद्र भाषा का प्रयोग किया है, उसे सभ्यता की परिधि में नहीं रखा जा सकता है। दिल्ली से आए ब्र० राजसिंह आर्य के (जिसने मुम्बई में फिल्मों काम करके उच्चकोटि का कलाकर बनने के लिए जो लाखों रुपया उधार लिया है और अभी तक लौटाया भी नहीं है।) अपने अपशब्दों से पूर्ण भाषण में यह कहना कि १५-५-२००५ दिल्ली में स्वामी अग्निवेश के भगवा कपड़े उतार कर फेंक देंगे और उसकी टाँग तोड़ देंगे कितना सही कहा जा सकता है। किन्तु विधि का विधान देखिये, जो ब्र० राजसिंह आर्य इतनी बढ़ चढ़कर बात कर रहा था और १५-५-२००५ को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय पर पुनः कब्जा करने का दावा कर रहा था, उसको उसी की आर्यसमाज सब्जी मंडी नई दिल्ली ने उस दिन प्रातः पीटकर बाहर निकाल दिया। जो आदमी अपनी आर्यसमाज में स्वयं प्रधान नहीं रह सकता वह सार्वदेशिक सभा पर कब्जा करने की बात कर रहा है, यह आश्चर्य और दिवास्वप्न नहीं है तो क्या है?

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी ने भी अपने विचार रखे। श्री दयाकिशन गोच्छीं, श्री रामधारी शास्त्री, श्री रणधीरसिंह ने अपने विचार प्रकट किये। डा० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने अपने अनोखे अंदाज में तथा प्रभावशाली ढंग से अपनी बात कहते हुए कहा कि इस बात का कोई महत्त्व नहीं है कि कौन किस पर क्या आरोप लगा रहा है बल्कि महत्त्वपूर्ण यह अधिक है कि बैठक में उपस्थित सदस्यों को यह संकल्प लेकर उठना चाहिए कि आज बैठक में लगाए गए आरोपों की तह तक जाना है और सच्चाई का पता लगाना है। यदि आरोप झूठे हों तो हमारे अन्दर इतना साहस होना चाहिए हम आरोप लगाने वाले को माफी

(शेष पृष्ठ दो पर)

# सुसंस्कृत आर्य सन्तान हेतु

❑ सोहनलाल शारदा, शाहपुरा भीलवाड़ा (राजस्थान)

**मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।** (शतपथे)
**माता निर्माता भवति**

अर्थात् माता ही विशेषतया सन्तानों को प्रेम और उपदेश से जितना उपकार पहुंचाती है, उतना अन्य कोई भी नहीं पहुंचा सकता एवं पुनः पिता और आचार्य ये तीनों ही उत्तम शिक्षक होंगे तभी सन्तान योग्य ज्ञानवान् आर्य बन सकेगी।

अतः माता-पिता को अति उचित है कि गर्भाधान से पूर्व, मध्य, पश्चात् घृत दुग्ध मिष्ट अन्न पान आदि श्रेष्ठतम पदार्थों का सेवन करें। (द्वितीय समुल्लास)

इसलिए ही कहा गया है कि-

**आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।**
(छान्दोग्योपनिषद् प्रपाठक ७। २५। २)

अर्थात् शुद्ध आहार से जो कि घृत, दुग्ध, चावल, गेहूं आदि उत्तमोत्तम पदार्थों के सेवन से ही पुरुषार्थ, आरोग्य, अन्तःकरण की शुद्धि एवं बल, बुद्धि आदि की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। इसके लिये ही गर्भाधान संस्कार में वर्णन करते हैं कि-

गर्भावस्था समय घृत, दुग्ध, के साथ-साथ ही सोमलता ताजा जिसे गुडुची ओषधि यानी गिलोय वा नीम गिलोय भी कहते हैं उचित मात्रा में परामर्शानुसार लेते रहें और पुष्टिकारक द्रव्य चावल, दधि, गेहूं, उड़द, मूंग, तुअर आदि का भी सेवन करें। एवम् ऋत्वनुकूल शिशिर हेमन्त में केशर, कस्तूरी, जावित्री, जायफल, सूंठ आदि व ग्रीष्म ऋतु में इलायची वगैरा ठण्डे मसाले का उचित मात्रा में आहार व विहार करते रहें और दुग्ध में सूंठ व ब्राह्मी ओषधि का सेवन भी मात्रानुसार स्त्री बराबर करती रहे कि जिससे सन्तान अति बुद्धिमान् और रोगरहित व शुभ गुण, कर्म स्वभाव वाला हो।
(गर्भाधान संस्कार)

इसी हेतु ही इसी प्रथम संस्कार में सावधान करते हुए कहते हैं कि-

जैसे उत्तम बीज और क्षेत्र के उत्तम होने से अन्नादि पदार्थ भी उत्तम होते हैं वैसे ही उत्तम स्वास्थ्य बलयुक्त स्त्री-पुरुषों से भी सन्तान उत्तम ही होते हैं। इससे पूर्ण युवावस्था पर्यन्त यथावत् ब्रह्मचर्य का पालन और विद्याभ्यास करके न्यूनतम सोलह वर्ष की कन्या और पच्चीस वर्ष के पुरुष का विवाह होना ही उत्तम है।

इस विषय पर प्रसिद्ध आयुर्वेदीय ग्रन्थ सुश्रुत में वर्णन है कि-

**पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान्नारी तु षोडशे।**
**समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात् कुशलो भिषक्॥**
(सुश्रुत सूत्रस्थाने अध्याय ३५, श्लोक ९३)

अर्थात् जितना सामर्थ्य पच्चीसवें वर्ष में पुरुष के शरीर में होता है उतना ही सामर्थ्य सोलहवें वर्ष में कन्या के शरीर में हो जाता है। इसलिये ही आयुर्वेदाचार्य इस अवस्था को समवीर्यवान् कहते हैं। इस अवस्था से न्यून वय के समागम पर हानि का वर्णन भी यहां है कि-

**ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पञ्चविंशतिम्।**
**यद्याधत्ते पुमान् गर्भं, कुक्षिस्थः स विपद्यते॥**
(पुस्तक वही शरीरस्थाने अध्याय १०।५४)

सोलह वर्ष से न्यून वय की स्त्री और पच्चीस वर्ष से न्यून वयवाला पुरुष यदि गर्भाधान करता है तो वह गर्भ उदर में ही बिगड़ जाता है।

और आगे पुनः इस प्रकार की दुःखद परिस्थिति का वर्णन भी यहां इस प्रकार से शास्त्रकार कहते हैं कि-

**जातो वा न चिरञ्जीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः।**
**तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधानं न कारयेत्॥**
(पुस्तक वही, अध्याय दश श्लोक ५५वां)

अर्थात् और जो उत्पन्न भी हो जाये तो भी वह दीर्घजीवी नहीं होता है और कदाचित् जीवित भी रह जावे तो भी उसकी शारीरिक इन्द्रियां अत्यन्त दुर्बल ही होती हैं। इसलिये ही यथासमय से पूर्व गर्भाधान कर्म कभी भी नहीं करे। अर्थात् पूर्णता से ब्रह्मचर्यव्रत सुसन्तान हेतु निभाना अत्यावश्यक है।

यद्यपि वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से बालविवाह न्यून ही होते हैं। लेकिन ब्रह्मचर्य नष्ट करने के लिये वर्तमान में हमारे चलचित्र, टी.वी. चैनल, ब्लू फिल्म, अर्द्धनग्न नारी चित्र वह भी तोड़-मरोड़कर अन्धानुकरण पाश्चात्य सभ्यता के नाम पर अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं से भी भरे पड़े हैं। इस प्रकार से जो हमारे शास्त्रों में आठ प्रकार के मैथुन कहे गये हैं। वह अधिकांश युवा युवतियों को भ्रष्ट कर रहा है।

**आठ मैथुन**

**स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।**
**सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिष्प्रत्तिरेव च॥** (दक्षसंहिता)

अर्थात् स्मरणम्, कीर्तनम्, केली यानी समीप रहना मनोविनोद करना वा ऐसे कोई खेल खेलना, अवलोकन, गुप्त संभाषण, सङ्कल्प यानि विचार, अध्यवसाय और प्रत्यक्ष कर्म सहवास।

इस प्रकार के इन आठ प्रकार के घृणित कर्म को प्रोत्साहन करते हैं जिन्हें देखकर। अतः फल यह होरहा है सो हम आये दिन समाचार-पत्रों में पढ़ते हैं अपहरण बलात्कार की घटनायें। इससे राष्ट्र पतनोन्मुख होता जारहा है और निरन्तर गुणा[illegible] वृद्धि को प्राप्त हो रहे हैं। अतः हमको हमारी सन्तानों को हर समय उपायों से अवश्य ही बचाना है। इसी वैद्यक ग्रन्थ में यह भी वर्णन है कि-

**चतस्रोऽवस्थाः शरीरस्य वृद्धिर्यौवनं सम्पूर्णता किञ्चित् परिहाणिश्चेति आषोडशाद् वृद्धिराचतुर्विंशतेर्यौवनमाचत्वारिंशतः सम्पूर्णता, ततः किञ्चि त्परिहाणिश्चेति।** (पुस्तक वही, अध्याय ३५, सूत्र २[illegible])

अर्थात् सोलह वर्ष से आगे मानव के शरीर के सर्व अङ्ग-प्रत्यङ्ग धातुओं की वृद्धि पच्चीसवें वर्ष से युवावस्था का प्रारम्भ और चालीस वर्षपर्यन्त युवावस्था की पूर्णता और सर्वधातुओं की पूर्ण पुष्टि और तत्पश्चात् वीर्य की हानि होने लगती है।

अर्थात् स्वाभाविक तौर पर चालीस वयपर्यन्त सर्व शारीरिक अवयव वृद्धि को प्राप्त हो पूर्णता कर लेते हैं। अतः आगे खान, पान, वायु, जल की शुद्धता से ही नियमित से शरीर स्थायी रहता है।

यही सब सुधारों का सुधार सब सौभाग्यों का सौभाग्य और सब उन्नतियों की उन्नति करने वाला है। यही सर्व आर्यों का कर्त्तव्य कर्म है। अतः इस प्रकार से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता हुआ ही सन्तानों को भी उत्तम विद्या, सुशिक्षा, सत्संग की प्रवृत्ति जागृत करके इन्हें आर्य यानी श्रेष्ठ बना देता है।
(गर्भाधान-संस्कार)

अतः बालकों को माता-पिता-आचार्य उत्तमोत्तम शिक्षा, करे कि जिससे वे सन्तानें सुसभ्य सत्सङ्गी होकर किसी भी प्रकार से कुचेष्टा नहीं करने पावे और वह वर्णोच्चारण में भी ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, अक्षरों का उच्चारण करने के साथ-साथ ही मधुर, गम्भीर, सुन्दर स्वर से मात्रा, पद, वाक्य, संहिता अवसान आदि सुन्दर कर्णप्रिय वाणी से अन्य जन श्रवण कर सकें जिससे वह माता, पिता, आचार्य, राजा, विद्वज्जनों से पुनः भाषण व उनके समीप बैठकर एवं सत्संग आदि में भी यथायोग्य स्थान ग्रहण करने की शिक्षा से वह कहीं भी उसके साथ अयोग्य व्यवहार नहीं होकर सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। (सत्यार्थप्रकाश)

इस प्रकार के नियम पालनार्थ ही महाभाष्यकार निर्देश करते हैं कि-

**सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।**
**लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रेयिणो गुणाः॥**

अर्थात् जो भी माता-पिता आचार्य सन्तानों वा शिष्यों को ताडना यानि उचित प्रकार से समझाना, भय दिखाना किञ्चित् देह दण्ड से भी लेकिन इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखना है कि कहीं कोई अङ्ग भङ्ग नहीं हो जाय। इस प्रकार जो अपने सन्तानों के प्रति कर्त्तव्य कर्म करते हैं वो तो ऐसा मानो कि अमृत पिला रहे हैं और जो इस पर ध्यान नहीं देकर बच्चों के गलत व्यवहार को प्रेमवश कुछ नहीं करते तो वे अपने ही सन्तानों को नष्टभ्रष्ट करते हैं। अतः हमारा यही कर्त्तव्य है कि भावी पीढ़ी को सुविचार देकर योग्यतम बनाकर आर्यपुरुषों की वृद्धि करे।

इसी विचार को ही महाशय पं० चाणक्य जी कहते हैं कि-

**माता शत्रुः पिता बैरी येन बालो न पाठितः।**
**न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥**

यानी जो माता-पिता अपने सन्तानों की अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि नहीं करते वे जन अपनी ही सन्तानों के पूर्णतया वैरी ही जानो।

इसलिये कि वे सभा के विद्वानों के बीच में ऐसे रहेंगे मानो हंसों के मध्य में बगुला। अतः हम सर्व आर्यजनों का यही कर्त्तव्य है कि नई पीढ़ी को आर्य बनाने हेतु यथा स्वसामर्थ्य से पूर्णतया प्रयत्नशील होकर न्यूनतम पांच जनों को अवश्य ही आर्य बना देवें। इसी दृढ़निश्चय के साथ।

## आर्य प्रतिनिधि सभा की...... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

मांगने पर मजबूर कर दें और यदि आरोपों में जरा सी भी सच्चाई है तो आचार्य जी से अनुरोध किया जावे कि वे इस मामले के संवैधानिक पहलुओं को अपनाकर अपने उत्तरदायित्व का ईमानदारी से निर्वहण करें।

समिति की बैठक में अन्य महत्त्वपूर्ण निर्णयों के अनुसार वेदप्रचार अधिष्ठाता की नियुक्ति का अधिकार स्वामी इन्द्रवेश को दिया गया तथा सभी जिलों के वेदप्रचारमण्डलों के संयोजक व सह-संयोजक से अनुरोध किया गया कि वे आगामी २२, २३ मई २००५ को दिल्ली में आयोजित किये जाने वाले राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन में अधिक से अधिक आर्यजनों को लेकर पहुँचें। इस अवसर पर एक अन्य महत्त्वपूर्ण निर्णय के अनुसार हिन्दी और संस्कृत में ९० प्रतिशत से ऊपर अंक लेने वाले विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और अध्यापकों को भी राज्यस्तरीय सम्मेलन में सम्मानित करने का निश्चय किया गया। बैठक में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि आपसी मतभेद होते हुए भी हमें शिष्टाचार का विशेष ध्यान रखना चाहिए और अपनी बात को शालीनता के साथ ही कहने का अभ्यस्त होना चाहिए। बातचीत के जरिए विवाद का हल निकालने के लिए भी स्वामी इन्द्रवेश की पहल का जोरदार स्वागत किया गया। अन्त में शान्तिपाठ तथा वैदिक जय घोषों के साथ बैठक समाप्त हुई।

सम्पादकीय....

# गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ भूमि के पट्टे किसने दिये और किसने दिलवाये ?

आचार्य बलदेव जी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की भूमि को पट्टे पर दिये जाने के बारे में कभी अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हैं, कभी स्वीकार करते हैं। हरिश्चन्द्र शास्त्री इस सम्बन्ध में आचार्य बलदेव को निर्दोष घोषित करके सारा दोष अपने ऊपर लेते हैं। इसकी सच्चाई को प्रकट करने के लिए आचार्य बलदेव ने हरिश्चन्द्र शास्त्री को जो "मुखत्यार नामा आम" ९ अक्तूबर २००३ को लिखकर दिया है उसका राजवीर वसीका नवीस रोहतक रजिस्टर नं० ४८६ है। जिसके आधार पर हरिश्चन्द्र शास्त्री ने २००३, २००४ और २००५ में १८ पट्टे करवाये हैं। इनका विवरण १४ मई के सर्वहितकारी में छाप चुके हैं।

इस मुखत्यारनामे की अन्तरंग सभा में सम्पुष्टि तो दूर, कभी चर्चा भी सुनने में नहीं आई। न कभी अन्तरंग सभा के एजेंडे पर यह विषय आया है। इस मुखत्यारनामे की सारी कार्यवाही कुलड़ी में गुड़ फोड़ने के समान गुपचुप की गई जो कि सर्वथा अवैधानिक है। हरिश्चन्द्र शास्त्री ने जो पट्टे करवाये हैं, इनकी भी अन्तरंग सभा से कभी स्वीकृति नहीं ली गई और न ही पट्टे करवाने के बाद अन्तरंग सभा में इनकी संपुष्टि कीगई।

एक आश्चर्य यह भी है कि नायब साहब ने ८ कनाल (एक किल्ला) का पट्टा अपनी पत्नी श्रीमती सरीन के नाम भी किया है। ७ मई को कोर्ट में केस डाला गया है और अगले दिन ८ मई को रोहतक में पंचायत बुलाकर अवैधानिक पट्टों को वैधानिक घोषित करवाने की अवैधानिक कार्यवाही कीगई थी।

एक रहस्य और भी है कि सभा में एक और **पुराना मुखत्यारे आम** अनेक वर्षों से सभा की सर्विस में विद्यमान है। उससे यह पट्टे क्यों नहीं करवाये गये? इस मुखत्यारनामे को आर्यों की जानकारी के लिए यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

**-जयसिंह ठेकेदार सभामन्त्री**

---

***मुखत्यार नामा आम*** 202/4

**स्टाम्प - 15-00 रूपये**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा मुख्य कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक के प्रस्ताव नं० 12 दिनांक 31 अगस्त 2003 द्वारा आचार्य बलदेव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा मजकुर को सभा की फरीदाबाद सम्पति के कार्य हेतु श्री हरिश चन्द्र शास्त्री पुत्र श्री लाल सिंह निवास 12 आदर्श कालोनी पलवल (हरियाणा) को मुखत्यार आम नियुक्त करने का अखत्यार दिया गया है अत: मैं आचार्य बलदेव प्रधान आर्य प्रतिनिध सभा दयानन्द मठ रोहतक का हूं जो कि मैं अपने होशो हवाश खुद रजामन्दी बिना किसी के सिखाये बहकाये प्रतिज्ञा करता और लिख देता हूं कि मैं आर्य प्रतिनिधि सभा फरीदाबाद की चल व अचल सम्पति के स्वयं मुन्तकिल व उसकी देखभाल आदि नहीं कर सकता इसलिए मैं सभा मजकुर की ओर से श्री हरिशचन्द्र शास्त्री पुत्र श्री लाल सिंह निवासी 12 आदर्श कालोनी पलवल (हरियाणा) को मुखत्यार आम कुकर्रर करके अख्तियार देता हूं कि वह सभा की तमाम चल व अचल सम्पति फरीदाबाद की देखभाल हर प्रकार से करे, किसी ने कोई मुकदमा कर रखा हो उसकी पैरवी करे, सभा की तरफ से कोई मुकदमा करना हो करे,

True Photo Copy

SUB-REGISTRAR ROHTAK 6/5/05

(पृष्ठ दो)

दरखास्त देवे, ब्यान देवे, ब्यान हल्फी देवे, जवाब दावा देवे, सभा के नाम कोई जायदाद खरीदे, डिग्री करावे, इजरा डिग्री करावे, अपील करे, नजरशानी करावे, अदालत दीवानी, फौजदारी, माल, पुलिस, नगर पालिका अर्थात् जो भी सरकार द्वारा महकमा या अदालत कायम हो या आगे कायम होवे में पैरवी हर प्रकार से करे, वकील करे, बैरिस्टर करे, सालिस या सरपंच मुकर्रर करे, राजीनामा करे, हिब्बा करे, रहन करे, तबादला करे, किराया या पट्टा पर देवें, जर किराया या जर पट्टा वसूल करें रसीद देवें, किसी प्रकार का निर्माण करे, स्टाम्प खरीदे, रजिस्ट्री तहरीर करावे, तकमील करे, अपने हस्ताक्षर या अंगुठाजात करे, रुबरु सब रजिस्ट्रार हाजिर होकर रजिस्ट्री करावे, जर बदल वसूल करे, कब्जा देवे, कब्जा लेवे, मुखत्यार खास मुकरर करे, निशानदेही करावे, किसी प्रकार का मुआवजा प्राप्त करे, उसकी रसीद देवे, मुखत्यार आम का किया हुआ सभा को हर प्रकार से मन्जूर व कबूल होगा और उसके किये का बाध्य रहूंगा। अत: यह मुखत्यार नामा आम लिख दिया है कि सन्नद रहे आज वीरवार दिनांक 9.10.2003 शाका 1925 राजवीर वसीका नवीस, रोहतक रजिस्टर नं० 486

नं० 486

| गवाह | मुकीर | गवाह |
|---|---|---|
| महेन्द्र सिंह | आचार्य बलदेव | जिले सिंह आर्य |
| पुत्र श्री उमराव सिंह | | पुत्र चौ० अर्जुन सिंह |
| नि० दयानन्द मठ रोहतक। | | नि० खरक जाटान त० महम |
| | | जिला रोहतक। |

नकल मुताबिक असल है।
आचार्य बलदेव

True Photo Copy
SUB-REGISTRAR
ROHTAK. 6/5/05

## पृष्ठ एक के पीछे की कार्यवाही

प्रलेख न: 202 दिनांक 09/10/2003

यह प्रलेख आज दिनांक 09/10/2003 दिन गुरुवार समय
श्री/श्रीमती/कुमारी आर्य प्रतिनिधि सभा हरि. पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री/श्रीमती
वासी रोहतक द्वारा पंजीकरण हेतु प्रस्तुत किया गया।

संयुक्त/उप पंजीयन अधिकारी
रोहतक

हस्ताक्षर प्रस्तुतकर्ता

प्रस्तुत प्रलेख के तथ्यों को दोनों पक्षों ने सुनकर तथा समझकर स्वीकार किया तथा प्रलेख में वर्णित राशि मु० 0 के लेन-देन कोभी स्वीकार किया। यह राशि मेरे सम्मुख श्री/श्रीमती/कुमारी हरिश चन्द्र शास्त्री पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री/श्रीमती लाल सिंह वासी पलवल द्वारा पेश की गई।
दोनों पक्षों की पहचान श्री/श्रीमती/कुमारी रिसाल सिंह नम्बरदार पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री/श्रीमती वासी पलवल व श्री/श्रीमती/कुमारी जिले सिंह आर्य पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री/श्रीमती अर्जुन सिंह वासी खरक जाटान ने की।
साक्षी न: 1 को हम नम्बरदार/सरपंच/पंच/अधिवक्ता के रूप में जानते हैं तथा वह साक्षी न:2 की पहचान करता है।

दिनांक 09/10/2003

संयुक्त/उप पंजीयन अधिकारी
रोहतक

True Photo Copy
SUB-REGISTRAR
ROHTAK. 6/5/05

## पृष्ठ दो के पीछे की कार्यवाही

दोनों पक्षों एवं गवाह के हस्ताक्षर/चिन्ह अंगूठा हमारे सामने करवाये गये।

दिनांक 09/10/2003

संयुक्त/उप पंजीयन अधिकारी
रोहतक

True Photo Copy
SUB-REGISTRAR
ROHTAK. 6/5/05

# राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता महासम्मेलन

संकल्प यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

दिनांक : २२ व २३ मई, २००५

स्थान : तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली-१

आयोजक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, ३/५ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२

दूरभाष : ०११-२३२७४७७१, २३२६०९८५ फैक्स : ०११-२३२७४२१६

## रविवार २२ मई २००५ का कार्यक्रम

### प्रथम सत्र : प्रातः ७ बजे से १० बजे तक

यज्ञ एवं प्रवचन : प्रातः ७ से ८.३० बजे तक
ब्रह्मा : डॉ० निष्ठा विद्यालंकार, उपमंत्री, सा० आ०प्र० सा
वेदपाठ : कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) की ब्रह्मचारिणियों द्वारा

प्रवचन : प्रातः ८.३० से ९ बजे
सुश्री डॉ० राज बुद्धिराजा, प्रसिद्ध वैदिक विदुषी

ध्वजारोहण : प्रातः ९.३० से १० बजे तक
द्वारा चौ० मित्रसेन जी, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा

ध्वजगान : पं० रामचन्द्र शर्मा, बिजनौर

### द्वितीय सत्र : प्रातः १० बजे से १ बजे तक

अध्यात्म जागरण सम्मेलन

(वैदिक एकेश्वरवाद)

भजन एवं संगीत : प्रातः १० से १०.३० बजे तक वीरांगना पुष्पा शास्त्री

अध्यक्षता : स्वामी इन्द्रवेश जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

मुख्य अतिथि : श्री हंसराज भारद्वाज, विधि राज्य मंत्री, भारत सरकार

वक्तागण
१. डॉ० रामप्रकाश जी, पूर्व कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
२. डॉ० असगर अली इंजीनियर, वैकल्पिक नोबुल पुरस्कार से सम्मानित
३. श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यवाहक प्रधान सार्व० आ.प्र.स.
४. डॉ० सत्यपालसिंह, आई०जी० पुलिस, मुम्बई
५. श्री वाल्सन थम्पू, नेशनल कमीशन ऑन मानईनार्टीज एजुकेशन
६. आचार्य सुभाष जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र
७. श्रीमती अमृता निकोर, अध्यक्षा केन्द्रीय आर्य युवती परिषद्
८. श्री सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया, प्रधान उत्तरांचल, आ.प्र. सभा
९. श्री बलबीरसिंह चौहान, प्रधान, आ.प्र. सभा, पंजाब

### तृतीय सत्र : दोपहर २ से ५ बजे तक

"जाति तोड़ो-समाज जोड़ो एवं साम्प्रदायिक सद्भाव सम्मेलन"

अध्यक्षता : स्वामी ओमवेश जी, गन्ना राज्य मंत्री, उ०प्र० सरकार

मुख्य अतिथि : श्री अर्जुनसिंह, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार

विशिष्ट अतिथि : श्रीमती शीला दीक्षित, मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार

वक्तागण
१. प्रो० कैलाशनाथसिंह, मंत्री, सार्व. आ. प्र. सभा
२. श्री विट्ठलराव, मंत्री, आ.प्र. सभा, आन्ध्रप्रदेश
३. श्री जावेद अख्तर, प्रसिद्ध गीतकार
४. श्री धर्मबन्धु जी, प्रधान वैदिक मिशन, गुजरात
५. श्री सच्चिदानन्द गुप्ता, पूर्व मंत्री उ० प्र० शासन
६. श्री मामचंद रिवाड़िया, आर्य दलित नेता, दिल्ली
७. डॉ० प्राची आर्या, प्रखर उपदेशिका
८. श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र, मंत्री उत्कल, आ०प्र० सभा

संचालन : श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यवाहक प्रधान सार्व आ०प्र०स०

योगासन एवं युवा शक्ति प्रदर्शन : सायं ५ से ६ बजे तक

अध्यक्षता : श्रीमती कुसुमलता आर्या, आर्यसमाज नागालैंड

संयोजक : श्री अनिल आर्य, कार्यकर्ता प्रधान, आ०प्र०स० दिल्ली

कार्यक्रम प्रस्तुति : गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा

### चतुर्थ सत्र : रात्रि ७.३० से ९.३० बजे तक

"भारतीय भाषाएं लाओ : अंग्रेजी हटाओ एवं नशाबन्दी सम्मेलन"

अध्यक्षता : स्वामी वरुणवेश जी,

वरिष्ठ अतिथि : श्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

मुख्य अतिथि : श्री प्रकाश जायसवाल, गृहराज्य मंत्री, भारत सरकार

विशिष्ट अतिथि : प्रो० शेरसिंह जी, पूर्व रक्षा राज्यमंत्री
श्री वेदप्रताप वैदिक, प्रख्यात पत्रकार

वक्तागण
१. स्वामी धर्मानन्द जी, प्रधान गुरुकुल आमसेना उड़ीसा
२. स्वामी ब्रह्मवेश जी, पटियाला पंजाब
३. श्री नवीन जिंदल, संसद सदस्य, लोकसभा कुरुक्षेत्र
४. डॉ० शिवकुमार शास्त्री, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्
५. श्री महेन्द्र शास्त्री, उपमंत्री, सार्व० आ०प्र०स०
६. डॉ० कमल नयन आर्य, प्रधान, आ०प्र०स० छत्तीसगढ़
७. पं० नरेन्द्रभूषण, केरल
८. प्रो० कर्मसिंह, आ० समाज लोअर बाजार, शिमला
९. श्री वामन मूर्ति एडवोकेट, प्रधान आ०प्र० सभा, चेन्नई

संचालन : डॉ० धर्मपाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

## बुद्ध पूर्णिमा सोमवार २३ मई २००५ का कार्यक्रम

पंचम सत्र : प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक

यज्ञ एवं प्रवचन : प्रातः ७ से ८.३० बजे तक

ब्रह्मा : डॉ० निष्ठा विद्यालंकार, उपमंत्री सा०आ०प्र०सभा

वेदपाठ : कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) की ब्रह्मचारिणियों द्वारा

प्रवचन : प्रातः ८ से ८.३० बजे तक
स्वामी व्रतानन्द, उत्कल प्रदेश, आ०प्र० सभा

### षष्ठ सत्र : प्रातः ९ से १० बजे तक

"कन्या भ्रूणहत्या विरोधी एवं पाखण्ड खण्डिनी सम्मेलन"

अध्यक्षता : श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि : श्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा, मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार

विशिष्ट अतिथि : श्रीमती गिरिजा व्यास, अध्यक्षा राष्ट्रीय महिला आयोग
श्रीमती निर्मला देशपाण्डे, सदस्य राज्य सभा
श्री सचिन पायलट, सदस्य लोकसभा

वक्तागण
१. बहन कलावती, उपप्रधान, आ०प्र० सभा हरियाणा
२. श्री रामसिंह आर्य, उपमंत्री, सार्वदेशिक सभा
३. श्री सुभाष अष्टिकर, उपमंत्री, आ०प्र०स० कर्नाटक
४. डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार, पुस्तकाध्यक्ष, हर०आ०प्र० सभा

### समापन सत्र : दोपहर १ बजे से ५ बजे तक

विद्वत् सम्मान सम्मेलन : दोपहर १ बजे से २ बजे तक

अध्यक्षता : पं० सोमदेव शास्त्री, मुंबई

सान्निध्य : श्री बटुकृष्ण वर्मन, प्रधान, आ०प्र० सभा, बंगाल

संयोजक : श्री सेवाराम पटेल, प्रधान, आ०प्र० सभा मध्यभारत

"आर्यराष्ट्र एवं भ्रष्टाचार विरोधी सम्मेलन"

दोपहर २ से ५ बजे तक

अध्यक्षता : स्वामी अग्निवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

मुख्य अतिथि : श्री साहिबसिंह वर्मा, पूर्व केन्द्रीय श्रम मंत्री, भारत सरकार

मुख्य वक्ता : श्री वेदप्रताप वैदिक, प्रख्यात पत्रकार, नई दिल्ली

संचालन : प्रो० कैलाशनाथ सिंह, मंत्री सार्वदेशिक सभा

विषय स्थापना : श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यवाहक प्रधान, सार्वदेशिक सभा

वक्तागण
१. स्वामी इन्द्रवेश जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
२. श्री जगवीरसिंह एडवोकेट, उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली
३. आचार्य हरिदेव जी, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली
४. श्री ओमप्रकाश आर्य, मंत्री आ०प्र०सभा पंजाब
५. श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव, प्रधान आ०प्र०सभा, म०प्र० विदर्भ
६. श्री मधुर प्रकाश, पत्रकार
७. डॉ० योगेन्द्रकुमार शास्त्री, प्रधान आ०प्र०सभा, जम्मू कश्मीर
८. प्रो० यशवीर, लाल बहादुर शास्त्री, संस्कृत विद्यापीठ

धन्यवाद : डॉ० जयप्रकाश भारती, पुस्तकाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा

शान्तिपाठ : पं० प्रेमपाल शास्त्री, प्रधान, आर्य पुरोहित सभा

निवेदक

स्वामी इन्द्रवेश, मुख्य संरक्षक — स्वामी अग्निवेश, प्रधान — सत्यव्रत सामवेदी, कार्यवाहक प्रधान — प्रो० कैलाशनाथ सिंह, मंत्री एवं संयोजक

चौ० मित्रसेन आर्य, कोषाध्यक्ष — प्रो० शेरसिंह, उप-प्रधान

## सूचना

प्रधान अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर (पंजाब) छात्रवृत्तियों हेतु छात्रों से सादे कागज पर दिनांक १५-६-२००५ तक प्रार्थना पत्र आमन्त्रित करते हैं।

-हरदयालसिंह, मन्त्री

# शिक्षाजगत् की समस्याओं का एकमात्र समाधान : गुरुकुल शिक्षा पद्धति

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, एम.ए. पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गंगवा रोड, हिसार

यजुर्वेद अध्याय २६ का मंत्र २५वां **''उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धियो विप्रा अजायत''** अर्थात् पर्वत की उपत्यका और नदी के संगम में विप्र बनता है मनुष्य की बुद्धि सात्विक हो जाती है। जो मनुष्य पर्वतों के निकट और नदियों के मेल में योगाभ्यास से ईश्वर की और विचार से विद्या की उपासना करे वह उत्तम बुद्धि वा कर्म से युक्त विचारशील बुद्धिमान् होता है। वैदिक ऋषियों के गुरुकुल, शिक्षा केन्द्र, आश्रम प्रकृति के उन वैभवपूर्ण स्थलों में होते थे जहां एक तरफ पहाड़ की ऊंची-ऊंची चोटियां, दूसरी तरफ कलकल करती हुई नदी की अजस्रधारा बहती थी। इस प्रकार के भौतिक पर्यावरण में रहकर शिष्य का प्रकृति के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित हो जाता था। आज शहर के विषैले वातावरण में शिक्षा संस्थाओं का निर्माण होता है जहां लाखों रुपये के भवन बनने पर भी विद्यार्थी का प्रकृति से सम्पर्क नहीं हो पाता। इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्तमान में शिक्षा संस्थाओं के लिए पहाड़ों और नदियों को ढूंढना कठिन है लेकिन शहरों के गली-कूचों से हटकर गांव व शहरों की आबादी से दूर शुद्ध वातावरण में शिक्षा-संस्थाओं का निर्माण करके बाल मस्तिष्क को गंदे संस्कारों के पड़ने से बचाकर शुद्ध संस्कारों में विकसित किया जा सकता है। इसके लिए गुरुकुलों की स्थापना करना ही उपयुक्त है। गुरुकुल शब्द में ''कुल'' शब्द का प्रयोग ही इसलिए किया जाता है क्योंकि शिक्षा का काम बच्चे को एक छोटे से कुल, छोटे से परिवार में से निकालकर एक बड़े परिवार में डाल देना है। आज इस बात की बड़ी दुहाई दी जाती है कि शिक्षा समाज से कटी नहीं होनी चाहिये। शिक्षा इस प्रक्रिया से बढ़नी चाहिए जिससे बच्चा समाज से कटा न रहे। गुरुकुल का अर्थ है-गुरु का कुल। यहाँ बच्चे को माता-पिता का सा प्रेम गुरु के माध्यम से मिलता है। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल शिक्षा पद्धति एक नया आविष्कार है जिसका प्रयोग सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के रूप में किया। वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति के सूत्रधार थे। आज भारत के प्रत्येक प्रांत में सैकड़ों की संख्या में गुरुकुल है, कन्या गुरुकुल हैं। देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति में बालक के छोटे सीमित क्षेत्र से विस्तृत क्षेत्र में आगे-आगे बढते जाने का कोई विचार नहीं था परन्तु वेदों में प्रतिपादित गुरुकुल शिक्षा पद्धति का तो यह मुख्य स्तम्भ था कि बालक ने छोटे कुल से बड़े कुल में, छोटे समाज से बड़े समाज में प्रवेश करना है। कहां माता-पिता संतान का छोटा-सा कुल या छोटा समाज, कहां गुरु का अनेक शिष्यों से घिरा बड़ा सा कुल, बड़ा सा समाज। यह थी महर्षि दयानन्द की नई सूझ, शिक्षा जगत् को नई देन। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की खोज यह थी कि बच्चों को न परिवार से तोड़कर रखना चाहिये, न समाज से तोड़कर रखना चाहिये। बच्चे का विकास 'कुल' में होना चाहिये-पहले माता-पिता के 'कुल' में, फिर गुरु के 'कुल' में, फिर समाज के 'कुल' में। मूल सिद्धांत 'कुल' का है, ''परिवार'' का है। 'कुल' का विचार इतना क्रान्तिकारी विचार है कि अगर शिक्षा के क्षेत्र में यह चरितार्थ हो जाये तो यह ''शिक्षा'' को आमूलचूल बदल सकता है। अगर समाज के क्षेत्र में चरितार्थ हो जाये तो समाज को एक बिल्कुल नई दिशा दे सकता है, शिक्षाजगत् की सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान भी कर सकने में सक्षम है। महर्षि दयानन्द ने तथा वैदिक शिक्षाविदों ने शिक्षणालय को ''कुल'' या ''परिवार'' का नाम देकर एक अत्यन्त क्रान्तिकारी विचार को जन्म दिया था इससे समानता की भावना पैदा होती है अथर्ववेद का ११ अनुवाक ३व० ५ मंत्र ३ में कहा है-**तं रात्रीस्त्रिस्त्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः॥** अर्थात् बालक को शिक्षा देने के लिए स्वीकार करते हुए आचार्य उसे इस प्रकार सुरक्षित, संभाल कर रखता है जैसे माता पुत्र को अपने गर्भ में सुरक्षित, संभाल कर रखती है। क्या गुरु शिष्य के सम्बन्ध का इससे ऊंचा चित्र खींचा जा सकता है? वैदिककाल में गुरुकुल का आचार्य, आचार्य ही नहीं था, शिष्य का पिता भी था। विद्या (शिक्षा) उसकी माता थी। बालक जन्म के माता-पिता को छोड़ आता था परन्तु उनका स्थान आचार्य लेता था। गुरु के अन्य शिष्य उस बालक के भाई थे। जहां जन्म का कोई भेदभाव न था। आज शिक्षा के क्षेत्र में ''कुल'', ''परिवार'' की भावना नहीं पनप रही, क्योंकि स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटियां वैदिक दृष्टिकोण से शिक्षणालय न रहकर फैक्ट्रियां हो गई हैं जिनमें कुछ फैक्ट्रियों के मालिक हैं, कुछ मजदूर हैं। हम 'कुल' में हैं या फैक्ट्री में हैं-यही शिक्षा शास्त्रियों की सबसे बड़ी परेशानी है, जिसका हल न सरकार के पास है, न विश्वविद्यालयों के वाइस-चांसलर ही कर पा रहे हैं। गुरुकुल में प्रवेश का अभिप्राय है गुरु के आश्रम में प्रविष्ट होना। आश्रय का अर्थ है-जिसमें श्रम ही श्रम है जिसमें आलस्य का कोई स्थान नहीं है। इस परिश्रम को वैदिक परिभाषा में महर्षि दयानन्द ने '**तपस्या**' का नाम दिया है। अथर्ववेद के ११वें काण्ड के ब्रह्मचर्य सूक्त के २६ मंत्रों में १५ बार 'तपः' शब्द का प्रयोग हुआ है। **स आचार्य तपसा पिपर्ति, ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत**-ब्रह्मचारी तप से जीवन की साधना करता है। तप कर ही कच्चा लोहा पक्का बनता है, भट्ठी से तपकर ही सोना कुंदन बनता है तपस्या की आग में से तपकर ही इंसान इंसान बनता है। इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली का जिसने यह घोषणा की हो कि उसका उद्देश्य नवयुवकों को तपस्वी बनाना है सिर्फ इसी आर्यावर्त देश में आविष्कार हुआ जिसका पुनरुद्धार महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने किया।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में ऊंच नीच, अमीर-गरीब का भेदभाव मिट जाता है। जिस शिक्षा पद्धति में जिस शिक्षण संस्था में अमीरी-गरीबी, जात-पात, ऊंच-नीच चल रही हो तो वहां से शिक्षित युवक जब समाज में जाएंगे तो अमीरी-गरीबी, जात-पात, ऊंच-नीच को समाज में क्यों न ले जाएंगे? गुरुकुल शब्द का आधारभूत तत्त्व ही यह है अगर शिक्षण संस्था में किसी प्रकार का भेदभाव है तो वह कूड़े में फैंकने लायक है। आज राष्ट्र की इस समस्या का हल केवल मात्र गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पास है अन्यत्र नहीं। है किसी देश में ऐसी शिक्षा प्रणाली जो बालक के शिक्षणालय में भर्ती होने के दिन ही यह घोषणा कर दे कि हमारी शिक्षा का लक्ष्य बालक के जीवन को आध्यात्मिक संस्कृति त्याग की संस्कृति की दिशा का मोड़ देना है। हमारी शिक्षा का लक्ष्य बालक को किताबी शिक्षा के साथ-साथ उसे सदाचारी बनाना है ब्रह्मचारी बनाना है, सत्यनिष्ठ बनाना है, नैतिक गुणों का विकास करना है, उसके चरित्र का निर्माण करना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति केवल मात्र गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही हो सकती है। वह शिक्षा क्या जो सिर्फ फीसें जमा करके बालकों को इम्तिहान में पास करने भर का ठेका लेती है, उनके चरित्र का निर्माण डंके की चोट ठेका नहीं लेती। ऐसी शिक्षण संस्थाएं, शिक्षण संस्थाएं नहीं अच्छी खासी दुकानें हैं। एक नई फिलोस्फी ने जन्म लिया है-प्राइवेट लाइफ अलग है, पब्लिक लाइफ अलग है। शिक्षक भी इस बात का दावेदार है कि घर में वह जूआ खेले, शराब पीये, ठगी करे, झूठ बोले, कुछ भी करे, उसकी प्राइवेट लाइफ में दखल देने का किसी को अधिकार नहीं। जब शिक्षक के लिए चरित्र का मापदंड यह है तब विद्यार्थी के लिए उसके जीवन का यही मापदंड क्यों न होगा। गुरुकुल शिक्षा पद्धति में आचार्य व शिक्षक का जीवन आदर्श जीवन है और उपनिषदों में लिखा है जहां-जहां आचार्य की खोज की गई, वहां-वहां शिष्य ''समित्पाणि'' होकर उसके पास पहुंचा है। समित्पाणि का अर्थ है-हाथ में समिधा लेकर जाना। इसका अभिप्राय है जैसे समिधा लकड़ी है, परन्तु आग के स्पर्श से वह प्रदीप्त हो उठती है, वैसे शिष्य भी समिधा के समान है आचार्य से विद्याध्ययन व उपदेश लेकर वह भी अग्नि की भाँति प्रदीप्त होने का संकल्प लेता है। अगर अध्यापक, शिक्षक स्वयं एक बुझी हुई लकड़ी है स्वयं अनैतिक है स्वयं दुराचारी है स्वयं बीड़ी, सिगरेट, शराब आदि का व्यसनी है उसमें स्वयं कोई आग नहीं, वह पब्लिक में अलग है, प्राइवेट में अलग है तो वह शिष्य को क्या प्रदीप्त करेगा। जलता हुआ दीपक ही बुझे हुए दीपक को जला सकता है। जो स्वयं बुझा हुआ है वह दूसरे को क्या जला सकेगा। ऐसे शिक्षकों के लिए कहा है-**अन्धेनेव नीयमाना यथान्धाः**-जैसे अन्धे अन्धों को रास्ता दिखा रहे हो। सदाचार सिखाया नहीं ग्रहण किया जाता है-Character is not so much taught as caught. आज शिक्षा जगत् की समस्याएं विद्यार्थियों के कारण इतनी विकट नहीं जितनी शिक्षकों के कारण विकट बनी हुई हैं।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति यज्ञमय जीवन जीना सिखाती है। गुरुकुल में पढ़ने वाला ब्रह्मचारी प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या), देवयज्ञ (हवन) का निरन्तर अभ्यासी हो जाता है। गुरुकुल में प्रवेश मिलते ही बालक को अच्छे संस्कार अच्छा वातावरण मिलने से नवनिर्माण होने लगता है। संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु के रूप को बदल देना, उसे नया रूप दे देना। चरक ऋषि ने कहा है-**संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते** अर्थात् संस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान कर देने का नाम है। इस दृष्टि से गुरुकुल शिक्षापद्धति में मानव के नवनिर्माण की योजना है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का उपदेश है '**इदं न मम**' हे परमात्मन्! जो कुछ मेरे पास है, वह सब आपका है-मेरा कुछ नहीं है-इस प्रकार त्याग की भावना से मनुष्य को जीवन यापन करना चाहिये। **वसुधैव कुटुम्बकम्** संपूर्ण पृथ्वी ही परिवार है। **सर्वे भवन्तु सुखिनः** सभी प्राणी सुखी हों। इस प्रकार की प्रेरणा गुरुकुल शिक्षा पद्धति देती है।

# वेदों का संक्षिप्त वर्णन

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-6, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

वेद का कितना पवित्र आदेश है। वेदपाठ से घर में सर्वत्र शांति का साम्राज्य छाया रहता है। चारों दिशाओं में सुख-शांति की वर्षा होती रहती है। घर में वेदमंत्रों की ध्वनि से प्रदूषण दूर होता है। यज्ञ से वायु-प्रदूषण दूर होता है तथा पर्यावरण का सरंक्षण होता है। वेद मंत्रों के मनन से मानसिक प्रदूषण नष्ट होता है। वेद मंत्रों के प्रवचनों से सामाजिक सुधार प्रवृत्ति होती है भूमण्डल स्वर्गधाम का केन्द्रबिंदु बन सकता है। अब हम क्रमपूर्वक विधि से चारों वेदों का वर्णन करते है :-

**ऋग्वेद (ज्ञान काण्ड)**-नियत अक्षर और पद में जिसकी समाप्ति हो उसे ऋक् कहते हैं। ऋग्वेद में ज्ञानप्रधान है, इसलिए ज्ञानकाण्ड कहलाता है। व्यवहार का ज्ञान करें। तिनके से लेकर ब्रह्म पर्यन्त जमीन के सब पदार्थों का वर्णन विशेष रूप से ऋग्वेद में है। ऋग्वेद मुख्य रूप से प्रकृति, सभी विज्ञानों का प्रतिपादन करता हुआ विज्ञान वेद कहलाता है। इसमें सभी प्राकृतिक विज्ञान का समावेश हो जाता है। ऋग्वेद का अग्नि देवता है, वही ज्योति है, गायत्री छन्द है और पृथ्वी स्थान है। ऋग्वेद की वाणी का नाम भारती है क्योंकि वह प्रकृति का ज्ञान देती हुई उचित प्रकार से भरण कराती है। इस वेद में १०,५८९ मंत्र हैं। मंत्रों का पाठ द्रुतलय में करना चाहिये। यह वेद प्राण की नाई (समान) है।

**यजुर्वेद (कर्मकाण्ड)**-जिन मंत्रों का नियम से अन्त प्रतीत न हो उन्हें यजु० अर्थात् गद्य कहेंगे। यजुर्वेद में कर्म प्रधान है इसलिए कर्मकाण्ड कहते हैं। इस वेद में अनेक प्रकार के यज्ञों का वर्णन है। अंतरिक्ष पदार्थों का ज्ञान यजुर्वेद में है। यह वेद जीव के कर्त्तव्य सभी यज्ञों का निरूपण करता हुआ कर्मवेद कहलाता है। सब सामाजिक विज्ञानों का इसमें प्रतिपादन है। यजुर्वेद में गुण ज्ञान के अनन्तर क्रियारूप उपकार करके सब जगत का अच्छी प्रकार से हित हो सके इस विद्या को जताया है। यजुर्वेद में वायु देवता है, वही ज्योति है। त्रिष्टुप् छंद है। अंतरिक्ष स्थान है। यजुर्वेद में वाणी का नाम इडा है। इडा यजुर्वेद में प्रतिपादित यज्ञों द्वारा यह पृथ्वी में अन्नोपत्ति का कारण बनती है। इस वेद में १९७५ मंत्र हैं। मंत्रों का पाठ मध्यम लय से करना चाहिये। यह वेद हृदय समान है।

**सामवेद (उपासना काण्ड)**-सामवेद में उपासना प्रधान है। इसलिए इस वेद को उपासना काण्ड कहते हैं। आत्मबल प्राप्त करें। द्युलोकस्थ पदार्थों का सामवेद में वर्णन है। यह वेद आध्यात्म ईश्वर-जीव-प्रकृति सम्बन्धी अध्यात्म का प्रतिपादन करता है। इसलिए उपासना वेद कहलाता है। सामवेद में ज्ञान, कर्म और उपासना काण्ड की वृद्धि का फल कितना और कहाँ तक होना चाहिये इसका सम्पूर्ण विधान है। जहां मंत्र वाक्य को ज्ञान में प्रयोग करें, उसे साम कहते हैं। साम वेद का आदित्य देवता है, वही ज्योति है, जगती छन्द है, द्युलोक स्थान है। सामवेद की वाणी का नाम सरस्वती है। ब्रह्मा की पत्नी के रूप में यह हमें ब्रह्म का ज्ञान देने वाली होकर ब्रह्मा की ओर चलती है। सामवेद में १८७५ मंत्र है। मंत्रों का पाठ विलम्बित लय से करना चाहिए। यह वेद लोगमों समान है।

**अथर्ववेद (विज्ञान काण्ड)**-वेदों में सब मंत्र गायत्र्यादि छंदों से युक्त ही हैं फिर 'छन्दांसि' इस पद के कहने से चौथा जो अथर्ववेद है, उसकी उत्पत्ति का प्रकाश होता है। अथर्ववेद के मंत्र-**यस्मात् ऋचो अपातक्षन्** आदि में कहा गया है कि जो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है उसी से ऋचः=ऋग्वेद, यजुः=यजर्वेद, सामानि= सामवेद, आंगिरस=अथर्ववेद, ये चारों वेद उत्पन्न हुये हैं। अथर्ववेद में विज्ञान प्रधान है। यह विज्ञान का वेद है। इसमें विशेष रूप से आयुर्वेद, युद्ध और शांति का वर्णन है। विज्ञान प्राप्त करें। अथर्ववेद अस्वस्थ पुरुष व राष्ट्र का वेद है इसमें रोगों, युद्धों, राज्य व्यवस्थाओं तथा राष्ट्रीयता के सुन्दर एवं सुदृढ़ पाठ का प्रतिपादन किया गया है। इसके साथ सभी प्रकार की चिकित्साओं का सम्पूर्ण विषय आ गया है। वेदों में जो-जो विद्या हैं उन सबके शेष भाग की पूर्ति, विधान रक्षा और संशयनिवृत्ति के लिए है। इन चारों वेदों में ही स्थान-स्थान पर तीनों लोकों का विषय छन्द है। 'छन्दांसि' पद होने से इस वेद की उत्पत्ति होती है। अथर्ववेद का चन्द्रमा देवता है, वही ज्योति है। इसके सब छन्द है। आप स्थान है। अथर्ववेद की वाणी मही हो जाती है जो रोगों व युद्धों से बचाकर उन्नति का कारण बनती है। विविध ज्ञान की प्राप्ति कराती है। इस वेद में ५९७७ मंत्र है। मंत्रों का पाठ मिश्रितलय में करना चाहिये। यह वेद मुख के समतुल्य है।

**वेदों के छः भाग इस प्रकार से है :-**

**शिक्षा**-जिस शास्त्र में स्वर वर्णादि के उच्चारण पद्धति सिखाई जाती है उसे शिक्षा कहते हैं। स्वर व्यंजन इनके भेद तथा शुद्ध उच्चारण विधि। शिक्षा वेदों की नाक है।

**कल्प**-वेद में विहित कर्मों का क्रमपूर्वक व्यवस्थित कल्पना करने वाला शास्त्र कल्प कहलाता है। याज्ञिक कर्म काण्ड का सम्पूर्ण वर्णन आदि। कल्प वेदों का हाथ है।

**व्याकरण**-जिस शास्त्र में किसी भाषा के शब्दों, वाक्यों आदि के शुद्ध प्रयोग के नियमों का विवेचन रहता है उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण वेदों का मुख माना जाता है।

**निरुक्त**-जिस शास्त्र में पद के सम्भावित अवयवार्थ पूर्णतया कहे जाते हैं उसे निरुक्त या निर्वचन विद्या कहते हैं। वैदिक शब्दों के अनेक अर्थों का ज्ञान इस शास्त्र से प्राप्त होता है। निरुक्त वेदों के कान हैं।

**छन्द**-जिस प्रकार बिना पैरों के सहारे मनुष्य न ही तो खड़ा हो सकता है, न चल सकता है। उसी प्रकार छन्द ज्ञान के बिना व्यक्ति वेद ज्ञान में पङ्गुवत् (अधूरा) है। वेदमंत्रों के अर्थों का ज्ञान इस शास्त्र से प्राप्त होता है। छन्द वेदों के पैर हैं।

**ज्योतिष**-ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों आदि की स्थिति, गति आदि का विचार करने वाले शास्त्र ज्योतिष कहलाते है इस शास्त्र से ग्रह, उपग्रह, सौरमंडल, खगोल, भूगर्भ विद्या का ज्ञान प्राप्त होता है। ज्योतिष वेदों की आँख है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बल देकर हमें वेद पढ़ने का अधिकार दिया है। वेद कहता है तथा शास्त्र स्पष्टीकरण करते हैं कि वेद के उपरोक्त अङ्ग, उपाङ्ग-पूर्व मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त। उपवेद-आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अथर्ववेद अर्थात् शिल्पशास्त्र। ब्राह्मण-ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ। वेद-ऋक्, यजुः, साम और अथर्व इन सबको क्रम से पढ़के, महाविद्वान होकर अपने और सब जगत् के कल्याण और उन्नति करने में सदा प्रयत्न किया करें।

## सभा कार्य सम्पर्क हेतु फोन नम्बर

**स्वामी इन्द्रवेश**, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक।
फोन : 01262-277801

**श्री सूबेसिंह भूतपूर्व एस.डी.एम.**, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा।
फोन : 01262-243553

**श्री जयसिंह ठेकेदार**, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
फोन : 94160-14507

**श्री प्रकाशवीर विद्यालंकार**, कार्यकर्ता प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
फोन : 01262-212575

**श्री रणवीरसिंह शास्त्री**, उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
फोन : 01262-293896

# महर्षि दयानन्द के अनुपम परोपकार

❑ आचार्य निहालसिंह आर्य परमार्थी, आर्यसमाज जसौरखेड़ी, झज्जर

हमारे आर्यावर्त्त भारत के विघटन विनाशकारी महाभारत युद्ध के ५००० वर्ष पीछे अखण्ड आदित्य ब्रह्मचारी, पूर्ण सिद्धयोगी, चतुर्वेद ब्रह्मा, महानतम स्वदेश सुधारक राष्ट्र उन्नायक जगदाचार्य महर्षि दयानन्द का जन्म १८२४ ई० में गुजरात के मौरवी क्षेत्र के राष्ट्रीय ग्राम टंकारा में हुआ था। वे बाल्यकाल से ही दयालु धर्मात्मा तीव्र प्रज्ञावान्, उत्साही, विद्याविलासी, ईश्वरभक्त थे। उन्होंने अपनी तीव्र ज्ञानपीपासा तथा ईश्वरदर्शन की अभिलाषा से वेदादि शास्त्रों में बहुविध वेदविद्या प्राप्त की। २२ वर्ष की आयु में स्वगृह त्यागकर नर्मदा नदी तप-प्रवास बड़ौदा नगर, अहमदाबाद, आबू पर्वत तथा हरिद्वार में उत्कृष्ट योगियों के सत्संग में रहकर ईश्वर दर्शन कर लिया था तथा मथुरा में १४ नवम्बर से २९ मार्च में गुरु विरजानन्द से सम्पूर्ण अष्टाध्यायी महाभाष्य कण्ठाग्र कर हृदयङ्गम कर लिया। फिर आगरे में २ वर्ष विचार कर वेदों का सत्यमर्म जान लिया। मथुरा से जाते समय गुरु विरजानन्द ने उन्हें सत्यवेद विद्या प्रचार स्वदेश सुधार तथा परोपकार की दीक्षा देकर विदा दी थी। वेदप्रचार, समाज सुधार, ब्रह्मचर्य, परोपकार तथा ईश्वरभक्ति आपके ये प्रमुख आध्यात्मिक दिव्य गुण थे।

ये अपने गुरु से अध्ययन काल से ही बहुत पुरुषार्थी थे। मथुरा में नित्यप्रति यमुना नदी से कई घड़े पानी कंधे पर लाकर अपने गुरुदेव को स्नान कराया करते थे और आश्रम में झाड़ लगाते थे। इन्होंने धौलपुर, ग्वालियर, जयपुर, अजमेर में और सारे राजस्थान में सर्वभ वेदप्रचार करके वहाँ के राजाओं की दिनचर्या सुधारी, वैदिक राजनीति तथा मनुस्मृति पढ़ाई। बम्बई में काकड़बाड़ी स्थान में १८७५ ई० में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की फिर १८७७ ई० में लाहौर, अमृतसर, जालन्धर आदि नगरों में भी आर्यसमाज स्थापित किए। वहाँ से अंबाला रुड़की, देहरादून आदि में वेदप्रचार करते हुए पर्वतराज हिमालय स्थान में योग साधना तथा समाज सुधार में पुरुषार्थ करते रहे। १८५५ वि० हरिद्वार कुम्भ मेले में प्रसिद्ध वेद विद्वान् स्वामी पूर्णानन्द से स्वाधीनताप्राप्ति की प्रेरणा लेकर अंग्रेजों के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में १८५५ से १८६० तक युद्ध योजनाओं में सक्रिय रहे। निरन्तर हिमालय में २ वर्ष तक स्वाधीनता संग्राम के प्रचार के लिए सहस्रों क्रान्तिकारी साधुओं को तैयार किया। फिर मुरादाबाद, गढ़गंगा, मुजफ्फरनगर, कानपुर, बैठूर, इलाहाबाद आदि क्रान्ति के लिए इन स्थानों में बैठूर के नाना साहब, बरेली के स्वदेश भक्त बख्ता खाँ पठान, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, अथक योद्धा तात्यां टोपे आदि युद्ध नेताओं का कुशल मार्ग दर्शन किया। परन्तु आपस की फूट में, उत्तम अस्त्र-शस्त्रों के अभाव में एक कुशल योद्धा नेता के बिना पंजाब के सिख राजाओं के देशद्रोह से १८५७ से ६३ ई० तक गुरु विरजानन्द से एकान्त-वार्ता में परस्पर स्वाधीनता की ही गुप्तवार्ता रहती थी। ये सारा ही सर्वजन हिताय स्वदेश रक्षा प्राप्ति हेतु उनका महान् परोपकारी जीवन व्यतीत हुआ।

**स्वदेश की रीढ़ की आधार विश्व माता गऊरक्षा के लिए महान् यत्न-** १८६६ ई० में अजमेर में कार्य मुक्ति के समय, स्वदेश इंग्लैंड वापिस जाते समय कर्नल ब्रुक्स को स्पष्ट कह दिया था कि आप भारत के सर्वोपरि राजाधिकारी के नाते हमारे देश में पूर्ण गऊ हत्या बंदी कर दें क्योंकि गऊ हमारे देश की आर्थिक रीढ़ की आधार है और कृषि कार्य तथा दूध घी देने में बल बुद्धि वीरतावर्द्धक बहुत परोपकारी पशु है। नहीं तो १८५७ संग्राम की क्रान्ति फिर भी दोहराई जा सकती है। गऊ हत्या बंदी के लिए महर्षि जी ने २ करोड़ भारतीय जनता के हस्ताक्षर कराकर इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया को विज्ञापन भी भेजा था।

फरवरी १८७३ में कलकत्ता में भारत के तत्कालीन मुख्य राजप्रशासक लार्ड नार्थ ब्रुक को स्पष्ट कह दिया था कि मैं परमात्मा से भारत में अंग्रेजी राज के स्थिर रहने की प्रार्थना तो कभी नहीं कर सकता परन्तु नित्य दोनों समय परमात्मा से भारत में अंग्रेजी राज की समाप्ति तथा स्वराज्य प्रभुसत्ता प्राप्ति की प्रार्थना करता हूँ। इस प्रकार स्वदेश में स्वराज प्राप्ति में प्रयास सतत प्रयत्न करने में अग्रसर रहा।

**स्वदेश के लिए स्वतन्त्रता प्राप्ति के आंदोलन में महर्षि जी का उग्र सतत आंदोलन :-** महर्षि दयानन्द ने अपने अनुपम राजनेता शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को इसीलिए इंग्लैंड भेजा था कि वहां स्वाधीनता प्राप्ति के लिए वहां बसे हुए भारतीय छात्रों, क्रान्तिकारी युवकों, राजनेताओं, वीरों को प्रेरित संगठित करके स्वाधीनता प्राप्ति के आंदोलन में संघर्षरत रहे। इस शुभ कार्य में वीर विनायक दामोदर सावरकर, सरदारसिंह राणा, पंजाब के करतारसिंह सराबा, मदनलाल धींगड़ा प्रमुख थे। वीर सावरकर ने तो महर्षि जी की प्रेरणा से ही ''१८५७ का स्वतन्त्रता समर'' प्रसिद्ध प्रेरक इतिहास ग्रंथ लिखा था।

फिर १८८५ अंग्रेजों द्वारा भारत में राजदल तथाकथित कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् अंग्रेजों के विरुद्ध अहिंसक सत्याग्रह जेल भरो आंदोलन में कांग्रेस नेता श्री सीतापट्टाभि रमैय्या के कथनानुसार स्वाधीनता सत्याग्रह आंदोलन में महर्षि दयानन्द से ही प्रेरित ८० प्रतिशत जेल की यातना के भोगी आर्यसमाजी वीर ही थे। इन्हीं में पंजाब के सरदार अर्जुनसिंह और इन्हीं के वीर सुपुत्र भगतसिंह, जगतसिंह और कुलतारसिंह स्वाधीनता संघर्ष में तल्लीन रहे। इन्हीं में इनके साथी चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, असफाक उल्ला, राजेन्द्र लाहिड़ी, भाई परमानन्द तथा लाला लाजपतराय प्रमुख थे। दिल्ली के आसपास वैदिक वीर हरयाणा में भी खापों के पंचायती वीर मल्लों ने इस आंदोलन में बहुत यातनाओं तथा कष्टों को सहन करते हुए लुटेरे फिरंगियों को मारते और मरते रहे थे।

१९०५ में अंग्रेजों ने जब बंगाल के दो भाग किए तो लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक, बंगाल के विपिन चंद्रपाल, ये लाल, बाल, पाल नाम से तीनों क्रान्तिकारी अग्रसर रहे। आगे चलकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, रास बिहारी बोस की आजाद हिन्द फौज युद्ध संघर्ष तथा जर्मनी के प्रधान हिटलर महान् नेता जी सुभाष के पारस्परिक सहयोग से अंग्रेजों को भारत के लिए १९४७ में पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा कर इंग्लैंड चले गए। इस प्रकार स्वदेश और स्वराज्य के प्रचार से किया गया आंदोलन स्वाधीनताप्राप्ति स्वरूप स्वर्णिम इतिहास में लिखा जाने वाला महर्षि दयानन्द का अनुपम राष्ट्रीय परोपकार ही था। इस संघर्ष के अमर बलिदानी वीरों के लिए नतमस्तक सतत श्रद्धालु रहेंगे।

**महर्षि दयानन्द का रचा हुआ महान् परोपकारी अमर साहित्य :-** महर्षि दयानन्द ने अमर क्रान्तिकारी ग्रंथ बहु वेद विद्याओं से भरपूर सत्यार्थप्रकाश की रचना उदयपुर के गुलाब बाग नौलखा महल में वहां के महाराणा सज्जनसिंह के सहयोग से साढ़े तीन मास लगाकर की। क्योंकि उन्हें सारे वैदिक तथ्य कण्ठाग्र रहते थे। सत्यार्थप्रकाश अब तक स्वदेशी तथा विदेशी अनुमान २५-३० भाषाओं में ४०-४५ लाख की संख्या में छप चुका है। जिसने भारत तथा विदेश के लाखों करोड़ों जनमानस का ज्ञानवर्द्धन किया है। इसे पढ़कर लाखों मुस्लिम-ईसाई भी पुन: आर्य धर्म में लौट चुके हैं। इस अमरग्रंथ में बहुविध सत्य वेद विद्याओं का, आर्यावर्त्त तथा विदेश के अतीत के गुणग्राही इतिहास का वर्णन है। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् बाल ब्रह्मचारी गुरुदत्त एम.ए. के कथन में **''मैं अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर भी सत्यार्थप्रकाश खरीदूंगा।''** यह कायापलट जादू अमरग्रंथ का है। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द द्वारा ही रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, पंचमहायज्ञविधि, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु, वेदाङ्ग-प्रकाश पुस्तकें, उपदेश मंजरी, वर्णोच्चारण शिक्षा, संस्कृत वाक्यप्रबोध, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि आदि छोटे-बड़े पचासों आर्ष ग्रन्थों को पढ़कर लाखों करोड़ों शुद्धि छात्र तथा आर्य स्वाध्यायशील पाठक लाभान्वित हो चुके हैं तथा सृष्टि पर्यन्त होते ही रहेंगे। महर्षि दयानन्द के प्रबल प्रेरक आदर्श जीवन चरित्र से भी इसी प्रकार असंख्य स्वाध्यायशील आर्य पाठक भी धर्मानुनायी बन चुके हैं और मुझे तो वैदिक उपदेश शिक्षाओं के समान ही ऋषि महर्षि का जीवन-चरित्र श्री समान आकर्षित करता है।

अपनी भ्रान्ति निवारण पुस्तिका में कहते है **''मुझसे खुशामन्द करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता किन्तु संसार को लाभ पहुंचाना ही मुझे चक्रवर्ती राज्य के तुल्य है।''**

**''मैं अपनी परीक्षा और निश्चय के अनुसार अनुमान से ३००० ग्रंथों के लगभग मानता हूँ।( मान्यता देता हूँ )''**

ईश्वरकृपा से, कुशलता से वह दिन देखने को मिले कि वेदभाष्य सम्पूर्ण हो जावे तो नि:सन्देह इस आर्यावर्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जावेगा। जिसे मिटाने में कोई समर्थ नहीं होगा।

केवल महर्षि जी ने ही सृष्टि वर्षों की एक अरब छियानवे वर्ष वाली संख्या बताई। हमारे देश का प्रथम निज नाम आर्यावर्त महर्षि जी ने सर्वप्रथम बताया। सारे भारत में घोषणापूर्वक अनुमान ९० शास्त्रार्थों में सर्वथा वेद सत्यमत ही विजयी संस्थापित किया। उस समय सारे भारत तथा विदेशों में महर्षि जी की धूम मच गई।

हिमालय की कष्टभरी यात्रा में ऊखी मठ के महन्त द्वारा कई लाख की सम्पत्ति का प्रलोभन भी ठुकरा कर स्पष्ट कह दिया था कि मैं अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सतयुग से ईश्वर दर्शन करके वेदप्रचार, समाज सुधार तथा स्वदेश उपकार करता ही रहूंगा।

पूना के पन्द्रहवें व्याख्यान में स्वजीवन कथन में महर्षि जी बोले कि आर्यधर्म की उन्नति के लिए मैं अपने दृढ़ निश्चय से अपनी बुद्धि और शक्ति से स्वगुरु से ली शिक्षा को चलाऊंगा और आर्यसमाजों की स्थापना से स्वदेश की चहुंमुखी उन्नति के लिए आजन्म तथा जन्म-जन्मान्तर में भी पूर्ण पुरुषार्थ करूंगा।

महर्षि दयानन्द अबला महिलाओं की दुर्दशा पर भी रोये थे। उन्होंने वैदिक नियोग प्रथा के लिए कहा कि-"**अन्यं इच्छस्व सुभगे पतिं मत्।** ऋग्०" अर्थात् ऐ सौभाग्यकामिनी देवी! तू मुझसे भिन्न संतान प्राप्ति के लिए अन्य पति की इच्छा कर। इस न्याय से सैकड़ों सहस्रों विधवा देवियों के नियोग तथा पुनर्विवाह कराये और घोर कष्ट हरण किए। सारे संसार के सर्वजनों को वेद पढ़ने का समान अधिकार जताया। सैकड़ों, सहस्रों को यज्ञोपवीत देकर वैदिक सन्ध्या हवन द्वारा एकेश्वरवाद की मान्यता कराई। चतुर्वर्ण आश्रम बताकर आर्ष गुरुकुल शिक्षा चलाई। संस्कृत भाषा का गौरव बताकर सब भाषाओं की जननी बताया। अतीत में आर्यावर्त का चक्रवर्ती राज्य इतिहास प्रकाशित कर करोड़ों का स्वाभिमान जगाया।

आर्याभिनय में कहा कि हम कभी पराधीन न हों और विदेशी शासक राजा कभी न बने और **मनसा वाचा कर्मणा** अहर्निश सक्रिय स्वाधीनता संग्राम में भाग लेकर विदेशी लुटेरों को भगाया तथा भविष्य में स्वदेश में वैदिक गणतन्त्रीय पंचायत का सन्मार्ग दिखा विदेशी लुटेरे भारत तथा विश्व के शत्रु अंग्रेजों के प्रकोप से घातक विषपान कर अजमेर में सहस्रों श्रद्धालुओं को अश्रुपात करता छोड़कर अमर बलिदान से मोक्षानन्द के अधिकारी बन गए। ऐसे महान् परोपकारी देवता को अखिल आर्यजगत् की ओर से कोटिशः नमन श्रद्धा प्रेम से श्रद्धांजलि समर्पित है।

## अमर कहानी होजाये

**टेक**-ऐसा काम करो तुम जग में, अमर कहानी होजाये।
आर्यावर्त बने जग सारा, प्रीत पुरानी होजाये॥

१. परमपिता ने इस मानव पर, बहुत बड़ा उपकार किया।
सन्ध्या-हवन-भजन-कीर्तन का, सबको ही अधिकार दिया।
आपस में सब प्यार करेंगे, सुन्दर सुघर सुतार दिया।
वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सत्य-सनातन सार दिया।
वैदिक-धर्मी, सच्चा सेवक, हर शाम सुहानी हो जाये।
ऐसा काम करो तुम जग में....... ।

२. आपस में फैला आडम्बर, फिर मानव का क्या कहना।
जगह-जगह पर अपने नारे, पाखण्डी बनकर रहना।
ऋषिवर देवदयानन्द बोले, वेद है मानव का गहना।
सारे जग को आर्य बनाओ, आपस में मिल करके रहना।
नवयुवकों को आगे लाओ, सफल जवानी होजाये।
ऐसा काम करो तुम जग में....... ।

३. आज दशा आर्यों की ऐसी, कुछ भी समझ नहीं आता है।
अपने स्वारथ के दलदल में, मानव नीचे गिर जाता है।
अन्त समय में कोई न साथी, फिर पीछे पछताता है।
धन-दौलत और कुटुम्ब-कबीला, इसके काम न आता है।
ऋषिवर ने चाहा इस जग में, वेद की वाणी होजाये।
ऐसा काम करो तुम जग में....... ।

४. धन्य 'सरस' मानव वे जग में, प्रभु में ध्यान लगाते हैं।
आपस में मिल-जुलकर रहते, ईश्वर के गुण गाते हैं।
सद्बुद्धि मिल जाये उनको, जो हमको भरमाते हैं।
वैदिक धर्म हमारा प्यारा, ऋषिवर यह बतलाते हैं।
आर्यों का है देश हमारा, ऋषिवर की निशानी होजाये।
ऐसा काम करो....

**-सुरेन्द्रकुमार 'सरस'**, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहानामार्ग, रोहतक



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☐ ०१२६२-२७७८०१
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१







आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१

वर्ष ३२ अंक २७ ७ जून, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# श्री सत्यवीर शास्त्री गढ़ी बोहर द्वारा अशिष्ट, असभ्य और नितान्त अमर्यादित भाषा में लिखे श्वेतपत्र का उत्तर

❑ जयसिंह ठेकेदार सभामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

श्री सत्यवीर शास्त्री गढ़ी बोहर ने सर्वहितकारी विज्ञापन के नाम से एक श्वेतपत्र जारी किया है और उसमें अपने आपको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मन्त्री होने का दावा किया है। वास्तव में सभी छः पृष्ठों में लिखे इस तथ्यहीन दस्तावेज को कोई निष्पक्ष व्यक्ति पढ़ेगा तो वह उसे निश्चितरूप से कलुषित मस्तिष्क की घृणित उपज ही कहेगा। इसके अतिरिक्त पाठक को यह भी आश्चर्य होगा कि क्या किसी गुरुकुल में इतने अमर्यादित स्नातक भी तैयार किये जाते हैं। निष्पक्ष पाठक इसे श्वेतपत्र की बजाय कृष्णपत्र ही कहना ठीक समझेगा। श्री शास्त्री के इस आचरण को देखकर मुझे एकदम वह सच्चाई याद आ जाती है कि बजते हुए ढोल को देखकर हम सोचते हैं कि ढोल बज रहा है। किन्तु वास्तविकता यह है कि वह किसी और के द्वारा बजाया जा रहा है। शायद इसकी पृष्ठभूमि में कोई ऐसा शातिर दिमाग है जो श्री शास्त्री को सीधे निशाने पर लाकर अपने उन पिछलग्गुओं को सुरक्षित रखना चाहता है, जिनके माध्यम से वह गुरुकुल झज्जर और प्रतिनिधि सभा पर चौधर करना चाहता है, क्योंकि उसके अनुसार उसके पिछलग्गुओं में एक को छोड़कर दिमाग नाम की कोई चीज़ है ही नहीं। उसे यह डर भी सताता रहता है कि यदि वे सोचना शुरू कर देंगे तो वह अपंग हो जावेगा। खैर! यह तो एक ऐसा वृत्तांत है, जिस पर विस्तार से अलग लेख में सारी जानकारी दी जावेगी। अभी तो श्वेत-पत्र की तथ्यहीन गालियों और अपशब्दों की विवेचना के साथ पट्टों के बारे में तथ्यपूर्ण जानकारी देना ही मेरा उद्देश्य है और उसके श्री शास्त्री तथा उसके आका को मैं खुली चुनौती इन मांगों व शर्तों के साथ दे रहा हूं कि वे आएँ और खुले मंच पर बहस करें कि क्या आपने जो कुछ भी कलुषित-पत्र में लिखा है, उस बारे में ये शपथ-पत्र देकर बहस करने के तैयार हैं?

(क) क्या आप, आचार्य विजयपाल और आचार्य बलदेव इस आशय का शपथ-पत्र देने के लिए तैयार हैं कि जो भी पट्टे दिये हैं, उनको नये सिरे से न देकर केवल पुरानों का नवीनीकरण किया गया है।

(ख) आपने अपने श्वेत-पत्र में लिखा है कि 'गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति' ने प्रो० शेरसिंह आदि पर मुकद्दमा कर रखा है-क्या आप वाद नं० तथा उसके संक्षिप्त विवरण के साथ यह शपथ-पत्र देने के लिए तैयार हैं कि अमुक वाद में प्रो० शेरसिंह का और डॉ० प्रकाशवीर विद्यालङ्कार आदि का नाम शामिल है।

(ग) क्या आप, आचार्य विजयपाल तथा श्री जिलेसिंह आर्य शपथ-पत्र देकर यह आर्यजनों को बतायेंगे कि आप लोगों ने अपने आपको दिनांक २२-३-२००५ को उपपंजीयन रोहतक के कार्यालय में मुख्त्यारेआम के रूप में पंजीकृत करवाया है वह अन्तरंग सभा के किस प्रस्ताव के तहत करवाया है। बड़ी तत्परता से २३-३-२००५ को श्री ऋषिप्रकाश, श्री अमित जैन और श्रीमती पायल प्रतापसिंह आदि के नाम लगभग साढ़े पन्द्रह कनाल के पट्टे करवाये हैं-क्या इसका कोई ठोस कारण है? क्या आप यह भी शपथ-पत्र देना चाहेंगे कि लीज पर दी गई भूमि पर आप लोगों ने पट्टाग्रहिताओं को ऋण लेने की भी लिखित शर्त स्वीकार की है?

(घ) क्या आप शपथ-पत्र देकर यह भी बताने का कष्ट करेंगे कि जब आप लोगों की नजर में पूर्व मुख्त्यारेआम श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री और भूमि निरीक्षक श्री प्रेमकृष्ण आर्य ईमानदारी से काम कर रहे थे तो उन्हें यकायक बदल क्यों दिया और कमान आप लोगों ने स्वयं संभाल ली। सभा की सेवा में श्री परसराम पटवारी पूर्व ही कई वर्षों से मुख्त्यारेआम हैं। क्या एक सभा के ३-४ मुख्त्यारेआम होने उचित हैं?

(ङ) पट्टे पर भूमि देने के बाद भी आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर गोपाल गोशाला व व्यायामशाला का पट्टा लगवाने का क्या कारण हो सकता है? केवल यह भ्रम पैदा करने के लिए कि चिह्नित भूमि सभा के कब्जे में है, जबकि हकीकत यह नहीं है।

(च) क्या न्यायालय द्वारा स्थगन आदेश के बाद भी पट्टे दिये जा सकते हैं, यह बात अलग है कि स्थगन आदेश किसे मिला है?

(छ) आप लोगों द्वारा नियुक्त वकील श्री सुरेश भडाना द्वारा २५-२-२००५ को स्थगन आदेश लेने वाले पक्ष के वकील श्री पी.के. मित्तल को लिखित उत्तर देना कि उनके (श्री मित्तल के) नोटिस से ही उन्हें (आप लोगों को तथा आपके वकील को) यह पता चला है कि सभा के नाम पर बिना मंजूरी के पट्टे दिये गये हैं और इस बारे में वे कानूनी कार्यवाही करेंगे। क्या आपका वकील ठीक कह रहा है? यदि हां तो आपने क्या कानूनी कार्यवाही की? क्या आप इसे ही तो

## आचार्य बलदेव के श्वेत-पत्र पर बहस की खुली चुनौती-जयसिंह ठेकेदार

ताजा मिले पुष्ट प्रमाणों से पता चला है कि अब आचार्य विजयपाल, सत्यवीर शास्त्री गढ़ी बोहर और जिलेसिंह आर्य खरक जाटान ने भूमि को पट्टों पर देने की कमान संभाल ली है और प्रथम चरण में २३-३-०५ को मुख्त्यारेआम की हैसियत से पट्टे दे दिये हैं, जिन पर लोन लेने की सुविधा भी दे दी है।

कानूनी कार्यवाही नहीं मानते हैं कि आप, आचार्य विजयपाल ने तथा श्री जिलेसिंह आर्य ने यह सोचा हो कि श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को पट्टे देने के क्या अधिकार हैं? यह तो हमारा अधिकार है और उस कानूनी कार्यवाही को पूरा करने के लिए आपने २२-३-२००५ को आप तीनों ने अपने आपको मुख्त्यारेआम पंजीकृत करवा लिया और अत्यन्त गतिशीलता दिखाकर २३-३-२००५ को पट्टे दे दिये। यह तो वह बात हो गई कि किसी औरत ने दुःखी साधु से पूछा कि बाबा उदास क्यों हो? साधु एक घर की ओर इशारा करके कहने लगा कि इस घर की औरत ने कुछ दिया भी नहीं और अपमान भी किया। औरत बड़े मान-सम्मान के साथ को साधु वापिस घर ले आई, क्योंकि वह घर उसी औरत का था। साधु बड़ा प्रसन्न था कि अब तो जरूर कुछ खाने को अच्छा सामान मिलेगा। क्योंकि यह औरत बड़ी भली और उदार प्रतीत होती है किन्तु उस साधु को क्या पता था कि क्या होने जा रहा है? औरत ने घर में आकर अपनी बहू से कहा कि तुमने बाबा को आटा देने से मना किया है। उत्तर में 'हां' सुनने पर वह कहने लगी, तूं कौन होती है, मना करने वाली? यह अधिकार मेरा है और बहू से भी अधिक अपमानजनक भाषा का प्रयोग करके उस औरत ने साधु को कहा कि चले जाओ यहां से, तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। काश! वराक श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री ने भी इसे ध्यान में रखा होता कि बहू से ऊपर की सास सारी भली नहीं होती।

अब इन पट्टों का विवरण दिया जा रहा है जिनके बारे में तथाकथित श्वेत-पत्र जारी करके आर्यजनों में भ्रम फैलाने की कोशिश की जा रही है कि पट्टे सभाहित में दिये गये हैं और सभी धन संस्था/सभा में जमा है। अगर श्री सत्यवीर शास्त्री अपनी और अपने आका की ईमानदारी का प्रमाण देना ही चाहते हैं तो इन बातों को भी लिखित में स्पष्ट करें। हम उसे ज्यों का त्यों 'सर्वहितकारी' में छपवा देंगे। मैं श्री सत्यवीर शास्त्री को इस विषय की भी जानकारी देना ठीक समझता हूं कि जिन व्यक्तियों पर वे निराधार कीचड़ उछाल रहे हैं, वे कभी उनके अत्यन्त सम्माननीय भी रहे हैं। क्या वे इस बात को नकार सकते हैं कि स्व० चौ० माडूसिंह मलिक के शिक्षामन्त्रित्वकाल में तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री प्रो० शेरसिंह ने शास्त्री-वर्ग को बी.ए. के बराबर स्वीकार करवाने में जो अहम् भूमिका निभाई थी, उसके प्रति आज संस्कृत-अध्यापक हृदय से बिना संकोच कृतज्ञता प्रकट करते हैं। खैर! बहकाव और भटकाव पता नहीं विधाता मनुष्य से क्या-क्या करवा देता है। काश! श्री शास्त्री ये समझ पाते कि क्या कारण है कि आचार्य बलदेव का कोई अन्य समर्थक अपनी लेखनी की धार को पैना क्यों नहीं करता? इस बात का पता श्री शास्त्री को उस समय चलेगा जब सब कुछ उनसे दूर जा चुका होगा और पश्चात्ताप के अलावा कुछ नहीं बचेगा। अब आप पढ़िये वह बात जिसका आपको इन्तजार है।

## पट्टों का सही जवाब

**१. श्रीमती सुरीन आर्यनगर हिसार (८ कनाल)**

इस जमीन पर कोई भी किसी प्रकार का विवाद नहीं है। और न ही किसी का इस जमीन पर कब्जा है। उपरोक्त जमीन पर गुरुकुल का कब्जा है। सिर्फ नायब तहसीलदार को खुश करने के लिए उसकी पत्नी के नाम पट्टा किया गया अब सभाप्रधान आचार्य बलदेव ने उस भूमि पर तारबन्दी कराकर गौपाल गऊशाला का बोर्ड लगा दिया। यह जमीन सूरजकुण्ड बड़खल रोड पर है। इसकी कीमत लगभग २००००/- प्रति वर्ग गज है।

**२. कुलवीरसिंह कालका जी (१२०० गज)**

इसके पास पहले कोई पट्टा नहीं था यह झूठ है कि उसका नवीनीकरण हुआ है। मौके पर १००० वर्ग गज है। जिसका कि पट्टा नहीं हो सकता था। किराया ५/- प्रति वर्ग गज वार्षिक। यदि नवीनीकरण हुआ है तो पुराना पट्टा दिखाया जावे।

**३. श्रीमती वीना आनन्द (५ कनाल ८ मरले)**

पहले एक पट्टा था। अब उसको तीन पट्टों में कर दिया गया।

**४. देवेश छाबड़ा (२ कनाल १४ मरले)**

इस जमीन पर पहले कोई पट्टा नहीं था। यह झूठ है कि नवीनीकरण किया गया है। यदि पुराना पट्टा है तो दिखाया जाये।

**५. आर.पी.एस. एसोसिएट्स (२४ कनाल)**

इस जमीन का पट्टा २४ कनाल कर दिया गया है परन्तु जमीन ४८ कनाल पर कब्जा कराया गया है। यदि झूठ हो तो सरकारी गिरदावर पटवारी से जांच कराई जाये।

**६. अरविन्द बत्रा (५ कनाल ७ मरला)**

इस जमीन का पहले कोई पट्टा नहीं था और न ही नवीनीकरण किया गया।

**७. जतिन्द्रपाल**

वीना आनन्द के नाम पट्टा था परन्तु इस पट्टे को तीन पट्टों में कर दिया गया।

**८. तेजसिंह तेवतिया, गुड़गांव (८ कनाल)**

इस जमीन का पहले कोई पट्टा नहीं था। यह जमीन अभी भी गुरुकुल के कब्जे में है और इस जमीन पर सावित्री देवी साला का पट्टा नहीं है। यह सरासर झूठ है। उपरोक्त व्यक्ति उस समय के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला के निकट था और उसको अभी भी राज्यमन्त्री का दर्जा प्राप्त है। सिर्फ राजनैतिक फायदा उठाने के लिये पट्टे पर जमीन दी गई।

**९. महेन्द्रपाल**

वीना आनन्द के नाम पर पट्टा था उसको तीन जगह करके पट्टा कर दिया।

**१०. कुलदीप कालका जी १२०० वर्ग गज**

इस जमीन पर पहले कोई पट्टा नहीं था जमीन मौके पर १००० वर्ग गज है जिसका पट्टा नहीं होता। १२०० वर्ग गज का पट्टा कर दिया। यदि पहले पट्टा हो तो दिखाया जाये।

**११. जगदीश पुत्र प्रहलाद (४ कनाल) प्रेमकृष्ण सम्पत्ति रक्षक (भक्षक)**

यह जमीन गोशाला के अन्दर लगती है। इस जमीन पर जगदीश पुत्र प्रहलाद जो कि इस समय भूमि रक्षक था यानि अवैध रूप से कब्जा करके ५०० वर्ग गज भूमि की किराये की पर्ची जिसका रसीद नं० ९८४/७/७/९८ कटा ली थी बाद में गोशाला पर भी कब्जा कर लिया था जिसका भगत मंगतूराम जी ने कब्जा खाली कराया था। आज उस जमीन के साथ गोशाला की जमीन को मिलाकर २५०० वर्ग गज का पट्टा कर दिया है। जगदीश पुत्र प्रहलाद का पुत्र प्रेमकृष्ण आर्य को गुरुकुल में भूमि निरीक्षक के पद पर लगा दिया गया जो कि हरिश्चन्द्र शास्त्री के साथ इन पट्टों के घोटाले में बराबर का सांझीदार है जिसके गवाह के तौर पर फोटो लगे हुए हैं। ५०० वर्ग गज का किराया ८०००/- किया गया इस जमीन का १९८२ में कोई पट्टा इसके नाम नहीं है।

**१२. सुभाष पुत्र भुल्ली (२ कनाल ७ मरले)**

इस जमीन पर कोई किरायानामा नहीं था। इस जमीन पर कुछ पर सतपाल पुत्र प्रेमराज किरायेदार है जो कि पिछले काफी वर्षों से किरायेदार है। शेष जमीन पर गरीब मजदूरों की झुग्गियां बनी हैं। जो कि गुरुकुल को किराया देते हैं। यहां पर एक इंच जमीन भी खाली नहीं है। किराया २/- प्रति वर्ग गज सालाना तय किया गया।

**१३-१४. अमितकुमार पुत्र सुशीलकुमार व अमितकुमार पुत्र सुभाष (दो-दो कनाल)**

उपरोक्त जमीन मौके पर २१०० वर्ग गज है और पट्टा कर दिया है २४०० वर्ग गज का। इसका क्या कारण है कि दो-दो कनाल के पट्टे करने के।

**१५. जगदीश पुत्र प्रहलाद (२ कनाल)**

इस भूतपूर्व भूमि रक्षक के पास कोई पट्टा नहीं था जमीन मौके पर ८०० वर्ग गज थी परन्तु पुत्र प्रेमकृष्ण आर्य और हरिश्चन्द्र शास्त्री से मिलकर २ कनाल का पट्टा कराया क्योंकि ८०० वर्ग गज का पट्टा नहीं होता कभी भी सभा को पूरा समय पर किराया नहीं दिया किराया ढाई रुपये प्रति वर्ग गज सालाना तय किया गया।

**१६. विजय आहूजा (३ कनाल १८ मरले)**

पुराने पट्टे की म्याद कई वर्षों से खत्म थी। २/- प्रति वर्ग गज वार्षिक दर से पट्टा कर दिया। कुल किराया ५०००/- वार्षिक तय किया गया।

**१७. सुरेन्द्रसिंह व सुभाष फरीदाबाद (२४ कनाल)**

उपरोक्त भूमि सूरजकुण्ड रोड पर है। इस भूमि पर न तो किसी का दावा है और न ही किसी का आज तक कब्जा है।

**नोट**-यदि उपरोक्त पट्टा सभा की आज्ञा से हुआ है तो सभाप्रधान बलदेव जी ने पट्टा लेने के बाद इस जमीन पर तारकसी करा करके गौपाल गऊशाला व व्यायामशाला का बोर्ड जो कि सभा के आधीन है, क्यों लगवाया? इस जमीन की कीमत २०००० प्रति वर्ग गज है।

**१८. अजयपाल पुत्र अमृत सरपंच अनंगपुर (८ कनाल ५ मरले)**

उपरोक्त जमीन की कई वर्षो से पट्टे की म्याद खत्म थी इस जमीन का किराया भगत मंगतूराम जी सभा को २००००/- वार्षिक दिलवाते थे। परन्तु १५०००/- वार्षिक पर पट्टे का नवीनीकरण कर दिया है किराया बढ़ता तो है कभी घटता नहीं है।

# १२ राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार-२००३ ई०

यह पुरस्कार भारत छोड़ो आन्दोलन की स्वर्ण जयन्ती वर्ष १९९२ में आरम्भ किया गया और सन् १९६३ से प्रतिवर्ष राजीव गांधी की जयन्ती पर २० अगस्त को दिया जाता है। यह पुरस्कार या तो किसी एक व्यक्ति को या संस्थान को दिया जाता है अथवा एक व्यक्ति या संस्थान से अधिक में बांटा जाता है। पुरस्कार की राशि २.५ लाख रुपये होती है और उसके साथ प्रशस्तिपत्र भी दिया जाता है।

२००३ का यह राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार श्री स्वामी अग्निवेश और श्री मदारी मोईदीन को संयुक्त रूप से दिया गया है।



स्वामी अग्निवेश

## प्रशस्ति
## स्वामी अग्निवेश

प्रत्येक समाज में आत्मिक चेतना के पोषक विरले ही होते हैं। वे अपनी अन्तर्दृष्टि से अन्याय का अवलोकन कर ओजस्वी वाणी द्वारा अपने साथियों को बुराई से लड़ने के लिए एकत्रित एवं प्रेरित करते हैं।

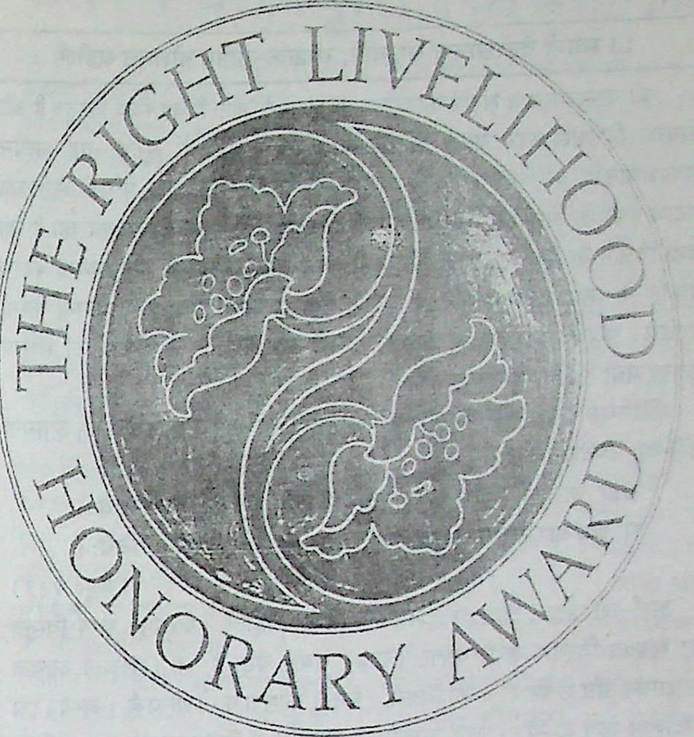
हमारे देश में ऐसे ही विलक्षण आत्मिक चेतना के पोषक स्वामी अग्निवेश हैं। इन्हें उचित ही वैश्विक स्तर पर मानवतावाद का अग्रणी कहा जाता है। सामाजिक न्याय के विस्तार हेतु देश या व्यापक स्तर पर विश्व में किये जा रहे कोई ऐसे प्रयास नहीं हैं जिनमें स्वामी जी अग्रगण्य न हों-चाहे वह बंधुआ मजदूरों तथा सभी प्रकार बाल मजदूरों की समाप्ति हो या महिलाओं के लिये समान अधिकारों को लागू करने की समस्याएं। द्रुत वैश्वीकरण एवं पर्यावरण सुरक्षा के इस युग में स्वामी जी गरीबों के अधिकार के प्रखर समर्थक हैं किन्तु धार्मिक उन्माद तथा साम्प्रदायिक घृणा के विरुद्ध किये जा रहे संघर्ष में इनकी भूमिका सर्वोपरि है। जिस उदार मानवतावादी दृष्टिकोण एवं तज्जनित विभिन्न कार्यों के लिये स्वामी अग्निवेश जी ने अपने प्रति व्यापक प्रतिष्ठा अर्जित की है उनमें सन् १९८७ में राजस्थान में सती की घटना के समय यात्रा का आयोजन, १९८८ में दलितों के लिये नाथवाड़ा मन्दिर के द्वार खुलवाना, १९८९ में दिल्ली-मेरठ शान्ति-यात्रा, १९९९ में श्रीमती ग्लेडिस स्टेन्स के पति की धर्मान्धों द्वारा की गई हत्या के उपरान्त उन्हें सान्त्वना देने हेतु विभिन्न स्तरीय ५१ नेताओं के साथ मनोहरपुर की यात्रा तथा २००२ में गुजरात दंगों के समय साम्प्रदायिक तत्त्वों का सामना करना विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

स्वामी अग्निवेश इस तथ्य की भर्त्सना करते हैं कि धर्मों ने स्वतः राजनैतिक रूप से अपना शोषण कराया है। मानवता को पोषित करने तथा सामर्थ्यवान् बनाने के बदले धर्मों ने घृणा तथा हिंसा को बढ़ावा दिया है। इनके मतानुसार धर्म के मौलिक रूप को आध्यात्मिक एवं सामाजिक न्याय के आधार पर पुनर्निर्मित करने की आवश्यकता है।

हमारी भूमि से घृणा के बीज को दूर करने की दिशा में किये गये अथक और समर्पित कार्यों की स्वीकृति के रूप में दुर्लभ धर्म-पुरुष स्वामी अग्निवेश जी इस वर्ष के राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार से सम्मानित किये जारहे हैं।

× × × × × × ×

इसी प्रकार दी राइट लवली हुड अवार्ड फाउंडेशन स्टाक होम के द्वारा भी स्वामी अग्निवेश जी को ९ दिसम्बर २००४ को दी राइट लवली हुड आनरेरी अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।




The Right Livelihood Honorary Award for vision and work forming an essential contribution to making life more whole, healing our planet and uplifting humanity is presented to

Swami Agnivesh

STOCKHOLM, DECEMBER 9 2004

JAKOB VON UEXKULL
CHAIRMAN
THE RIGHT LIVELIHOOD AWARD FOUNDATION

## अत्यावश्यक निवेदन

सर्वहितकारी यथापूर्व नियमित रूप से छप रहा है और प्रतिमास ७, १४, २१, २८ तारीखों में ग्राहकों के पास डाक द्वारा भेजा जाता है। जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वे ८० रुपये मनीआर्डर द्वारा भिजवाने का कष्ट करें।

यदि आपको सर्वहितकारी साप्ताहिक समय पर नहीं मिलता है तो आप नीचे लिखे पते पर पोस्टकार्ड द्वारा ग्राहक संख्या सहित सूचित करें अथवा नीचे लिखे नम्बरों पर फोन द्वारा सूचित करेंगे तो समुचित कार्यवाही की जायेगी।

सर्वहितकारी के परिवर्तन में जो समाचार-पत्र आते हैं उनके सम्पादकों से भी मेरा नम्रनिवेदन है कि वे भी अपने समाचार-पत्र नीचे लिखे पते पर ही प्रेषित करें।

सर्वहितकारी के ग्राहकों, लेखकों आदि को किसी प्रकार का कष्ट न हो इसके लिए सर्वहितकारी सम्बन्धी समस्त डाक-पत्र, लेख, मनीआर्डर आदि नीचे लिखे पते पर ही प्रेषित करें।

दूरभाष : 01262-200700
मो० 94160 51111
मो० 94160 52111
मो० 94160 53111

**वेदव्रत शास्त्री**
सम्पादक 'सर्वहितकारी'
दयानन्दमठ, रोहतक-124001

# वेद में ब्रह्म का स्वरूप

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

जो परमात्मा सब संसार का जनक तथा जानने वाला है वह स्वयं विस्तृत है और सबका विस्तार करने वाला है, वह ब्रह्म=सबसे बड़ा है, सुरुचः=वह अत्यन्त प्रकाशमान है, वेनः=वह सबके कामना करने योग्य है, सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि सब पदार्थ ईश्वर के अन्तरिक्ष में स्थित है, जो आकाश को भी आच्छादित कर रहा है वह ब्रह्म विज्ञान के लिये उपमा है और वही व्यक्त कार्य जगत् का और अव्यक्त कारण प्रकृति के कारण आकाशादि को खोल देता है। उसी ब्रह्म की उपासना करनी चाहिये। यजुर्वेद त्रयोदश अध्याय के तीसरे और चौथे मन्त्र में ब्रह्म का स्वरूप बताया गया है। वह इस प्रकार है-

किं स्वरूपं ब्रह्मजनैरुपास्यमित्याह=मनुष्य किस स्वरूप वाले ब्रह्म की उपासना करें, यह उपदेश किया है-

**ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः।**
**स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥**

(यजु० १३३)

**अर्थ**-जो ब्रह्म (जज्ञानम्) सबका जनक, विज्ञाता, (प्रथमम्) स्वयं विस्तृत और सबका विस्तार करने वाला, (ब्रह्म) सबसे बड़ा है, जो (सुरुचः) अत्यन्त प्रकाशमान और उत्तम रुचि का विषय, (वेनः) कामना करने योग्य है, (अस्य) इस जगदीश्वर के (बुध्न्याः) जल-सम्बन्धित अन्तरिक्ष में विद्यमान सूर्य, चन्द्र, पृथिवी और तारा आदि लोक (विष्ठाः) विविध स्थानों में स्थित है, (आवः) जो अपनी व्याप्ति से आकाश को आच्छादित करते हैं, (उपमाः) जो ब्रह्म-विज्ञान के लियें उपमा=दृष्टान्त है, वह ब्रह्म सबमें विद्यमान है, वह (पुरस्तात्) सृष्टि के आदि में (विसीमतः) मर्यादा से (सतः) विद्यमान=व्यक्त=कार्यजगत् के (च) और (असतः) अविद्यमान=अदृश्य=अव्यक्त कारण=प्रकृति (च) महतत्त्व आदि के (योनिम्) स्थान आकाश को (विवः) खोल देता है, उस ब्रह्म की सबको उपासना करनी चाहिये।

**भावार्थ**-जिस ब्रह्म के विज्ञान के लिये प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध लोक दृष्टान्त हैं जो ब्रह्म सबमें व्यापक होकर सबको आच्छादित कर रहा है, सबका विकास करता है, सबको नियमपूर्वक अपनी-अपनी कक्षा में चलाता है, सब मनुष्य उसी अन्तर्यामी ब्रह्म की उपासना करें, उससे पृथक् वस्तु का भजन न करें॥

पुनस्तत् कीदृशमित्याह=फिर वह ब्रह्म कैसा है, इस विषय का उपदेश किया है-

**हिरण्यगर्भः समवर्त्ततात्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।**
**स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥**

(यजु० १३।४)

**अर्थ**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग जो इस (भूतस्य) उत्पन्न जगत् का (जातः) जनक (पतिः) पालक (एकः) अद्वितीय (हिरण्यगर्भः) जिसके गर्भ=मध्य में सूर्य आदि तेजस्वी पदार्थ विद्यमान हैं वह परमेश्वर (अग्रे) सृष्टि से पूर्व (समवर्त्तत) वर्तमान था उसने (इमाम्) इस सृष्टि को रचकर (उत) और (पृथिवीम्) प्रकाश-रहित भूगोल आदि को (द्याम्) प्रकाशमय सूर्य आदि को (दाधार) धारण किया है, उस (कस्मै) सुखस्वरूप प्रजापति (देवाय) प्रकाशमान परमेश्वर की (हविषा) आत्मा आदि सामग्री से (विधेम) परिचर्या=सेवा करते हैं, वैसे तुम भी इसकी सेवा करो॥

**भावार्थ**-हे मनुष्यो! तुम इस सृष्टि से पूर्व परमेश्वर ही जागरूक था जिसने इन लोकों को धारण किया है, जो प्रलय समय में इनका भेदन करता है, उसी परमेश्वर को उपास्य मानो॥

**महर्षि दयानन्द जी महाराज द्वारा अन्यत्र व्याख्यात-**

१. '**स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां**' इस मन्त्रांश की व्याख्या महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में इस प्रकार की है-''सब जगत् का धारण और आकर्षण का कर्त्ता बिना परमेश्वर के दूसरा कोई भी नहीं। इसलिये जो सब जगत् को रचता है वही-''**स दाधार पृथिवीमुत द्याम्**'' यह यजुर्वेद का वचन है। जो पृथिव्यादि प्रकाशरहित लोक-लोकान्तर, पदार्थ तथा सूर्यादि प्रकाश सहित लोक और पदार्थों का रचन धारण परमात्मा करता है। जो सब में व्यापक हो रहा है वही सब जगत् कर्त्ता और धारण करने वाला है॥''

(सत्यार्थ० समु० ८)

२. '**हिरण्यगर्भः....हविषा विधेम**' यह यजुर्वेद का मंत्र है। हे मनुष्यो! जो सृष्टि के पूर्व सब सूर्य आदि तेजवाले लोकों का उत्पत्ति स्थान, आधार और जो कुछ उत्पन्न हुआ था और होगा उसका स्वामी था, है और रहेगा। वह पृथिवी से लेके सूर्यलोक पर्यन्त सृष्टि को बनाके धारण कर रहा है उस सुखस्वरूप परमात्मा ही की भक्ति जैसे हम करें वैसे तुम लोग भी करो॥

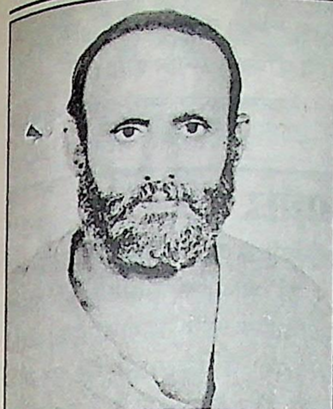
(सत्यार्थ० समु० ७)

३. '**हिरण्यगर्भः...हविषा विधेम**' **अर्थ**-जो (हिरण्यगर्भः) स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे, सूर्य चन्द्रमा आदि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो (भूतस्य) उत्पन्न हुये सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतनस्वरूप (आसीत्) था, जो (अग्रे) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्त्तत) वर्तमान था (सः) सो (इमाम्) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत) और (द्याम्) सूर्यादि को (दाधार) धारण कर रहा है। हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवस्य) शुद्ध परमात्मा के लिये (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें। (संस्कारविधि, ईश्वरस्तुति०)

४. '**हिरण्यगर्भः**'-जब सृष्टि नहीं हुई थी तब एक=अद्वितीय 'हिरण्यगर्भः' (जो सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का गर्भ नाम उत्पत्ति स्थान=उत्पादक) है, सो ही प्रथम था। वह सब जगत् का सनातन प्रादुर्भूत प्रसिद्ध पति है। वही परमात्मा पृथिवी से लेके प्रकृति पर्यन्त जगत् को रचके धारण करता है। 'कस्मै' (कः प्रजापतिर्वै कः कस्मै देवाय, शतपथे) प्रजापति जो परमात्मा उसकी पूजा आत्मादि पदार्थों के समर्पण से यथावत् करें, उससे भिन्न की उपासना लेशमात्र भी हम लोग न करें। जो परमात्मा को छोड़के, वा उसके स्थान में दूसरे की पूजा करता है उसकी और उस देशभर की दुर्दशा अत्यन्त होती है, यह प्रसिद्ध है। इससे चेतो मनुष्यो, जो तुमको सुख की इच्छा हो तो एक निराकार परमात्मा की यथावत् भक्ति करो अन्यथा तुमको कभी सुख न होगा। (आर्याभिविनय २।२०)

५. महर्षि ने इस मन्त्र का शास्त्रार्थ आदि में बड़ा उपयोग किया है। महर्षि के जीवन चरित्र में इसका कई स्थानों पर उल्लेख किया गया है।

# जब हरयाणा रत्न से अलंकृत किया गया


स्वामी ओमानन्द सरस्वती

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥
(यजुर्वेद ३६।२२)

प्रिय सज्जनो !

चौ० सर छोटूराम जी ने अपने जीवनकाल में स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व समस्त उत्तर भारत के गरीबों, मजदूरों और किसानों को पूंजीपति साहूकारों से मुक्ति दिलाई। बेबसों को सहारा दिया, दबे हुओं को उभारा, कमेरों की लुटाई से रक्षा की। मिट्टी से उठाकर बोलने की हिम्मत पैदा की। अपने हक लेने का रास्ता खोला, शिक्षा के लिए स्कूल कॉलेज खुलवाए जिससे समस्त उत्तर भारतवासी उनके ऋणी हैं। वे महापुरुष थे।

आचार्य भगवान्देव जी (स्वामी ओमानन्द जी) भी समस्त उत्तर भारत की एक महान् विभूति हैं। जिस क्षेत्र का सर छोटूराम ने आर्थिक उत्थान किया उसी क्षेत्र का विशेषत: तथा सारे भारत एवं विश्व का सामान्यतया शैक्षणिक, बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक उत्थान किया स्वामी ओमानन्द जी ने। स्वामी ओमानन्द जी **हरयाणा रत्न** हैं। हम हरयाणावासियों को उन पर गर्व है।

मनुष्य का जन्म-स्थान महत्त्वपूर्ण होते हुए भी उसका कर्मक्षेत्र अधिक सार्थक है। कौरव और पाण्डवों का जन्म कुरुक्षेत्र में तो नहीं हुआ था, फिर भी यह स्थल कौरव पाण्डव और योगिराज कृष्ण की लीला-स्थली होने के कारण सदा-सदा के लिए इतिहास का एक अंग बन गया। इसी प्रकार स्वामी ओमानन्द जी का जन्म दिल्ली के प्रसिद्ध गांव नरेला में चौ० कनकसिंह जी के घर होकर सारे उत्तर भारत के जनमानस को पिछले ५० वर्षों से किसी न किसी रूप में प्रभावित करता रहता है। उनके असंख्य सेवा एवं संघर्ष का विश्लेषण एवं उल्लेख तो सम्भव नहीं है किन्तु संक्षेप में उनका जीवन एक चलता-फिरता समाज है जो सदा जनहित और भारत के उत्थान के लिए अग्रसर रहा है।

(१) भारत स्वतन्त्रता संग्राम में जेल जाना (२) हैदराबाद रियासत में जब आर्यों के धार्मिक कार्यों पर निजाम हैदराबाद ने पाबंदी लगा दी थी तब जत्थे लेकर जेल काटना, शराबबन्दी के अनेक आन्दोलनों का संचालन, विवाह-शादियों, मृतक भोजों और अन्य सामाजिक कुरीतियों पर समाज में जन-चेतना पैदा करने के लिए अनेक सर्वखाप पंचायतों का आयोजन जैसे बेरी, सिसाणा आदि। हिन्दी सत्याग्रह में सरदार प्रतापसिंह कैरों से टक्कर लेना जबकि हरयाणा प्रदेश पर जबरन गुरुमुखी (पंजाबी) भाषा थोपी जा रही थी, उसमें सफलता प्राप्त करना, आप शिवाजी मराठे की तरह कैरो सरकार के हाथ नहीं आ सके और मोर्चे पर डटे रहे। गोरक्षा आन्दोलन में जेल भरो, सारे देश में गोरक्षा का बिगुल बजाया, कुण्डली और पीरागढ़ी के बूचड़खानों को बन्द कराना, तथा अनेक अन्य संघर्ष चलाना जो जनहित के थे।

**शिक्षा का प्रचार**-स्वामी जी महाराज महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्ष पाठ्य प्रणाली के दृढ़ पोषक हैं। इन्होंने गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल नरेला के अतिरिक्त हरयाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्कल प्रदेश में अपने अनेक ब्रह्मचारियों व स्वामियों को आर्ष पाठविधि द्वारा गुरुकुल खेलने, चलाने तथा वेद वेदांगों की शिक्षा देने, सामाजिक कुरीतियों से टक्कर लेने, सत-साहित्य के प्रकाशन और जन-साधारण में वितरण के कार्य को निर्बाध गति से चलवाया हुआ है। स्वामी जी महाराज के इन गुरुकुलों में न केवल भारत के ही अपितु विश्व के अनेक देशों के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं। नेपाल, मौरिसस, जयपाणि (जापान), हालैण्ड, जर्मनी, अमरीका, कनैडा आदि अनेक देशों के ब्रह्मचारी यहां आकर स्वामी जी के चरणों में बैठकर शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं। स्वामी जी पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के कट्टर विरोधी हैं और यह सर्वथा उचित ही है क्योंकि इस शिक्षा प्रणाली ने हमारी संस्कृति को मिटा-सा दिया है। यदि भारतीयता बची है तो केवल गुरुकुलों में अन्यथा हम स्कूलों कॉलेजों में काले अंग्रेज पैदा कर रहे हैं जो हम सबके लिए एक चिन्ता का विषय बन गया है। शिक्षा चाकरी, बेईमानी, धोखाधड़ी, चालबाजी और गिरावट की ओर ले जाए तो वह शिक्षा नहीं वह तो आनेवाली पीढ़ी को विषपान कराना है। अत: स्वामी जी महाराज का दृढ़ निश्चय है कि आर्ष पाठविधि से ही हमारा कल्याण हो सकता है सर्वथा तर्कसंगत प्रतीत होता है।

स्वामी जी ने आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला गुरुकुल झज्जर के माध्यम से तथा अपने निजी आयुर्वेद के ज्ञान के आधार पर देश के लाखों लोगों के रोगों का निदान एवं इलाज करके बहुत बड़ी सेवा की है। आज भी यहां की बनी हुई औषधियां सारे देश में पहुंच रही हैं।

स्वामी जी ने हरयाणा साहित्य संस्थान द्वारा सैकड़ों पुस्तकों का हजारों की संख्या में प्रकाशन कराया है। लगभग ६० पुस्तकें स्वयं लिखी हैं तथा लाखों लोगों तक आर्ष साहित्य को पहुंचाकर मानव कल्याण में रत हैं। वेद, उपवेद, ब्राह्मण ग्रंथ, दर्शन, व्याकरण के दुर्लभ ग्रंथों को प्रकाशित कर सुलभ बनाया है। **स्वामी जी अकेले विश्व के निराले व्यक्ति हैं जिन्होंने सत्यार्थप्रकाश को ताम्रपत्रों पर** खुदा दिया। क्या विश्व में किसी और ग्रंथ का इस प्रकार का प्रकाशन हुआ है ? कुछ लोग सत्यार्थप्रकाश के कुछ भाग को इससे निकालना चाहते थे। यह कार्य कई लाख रुपये लगाकर पूरा कर दिया है।

**भारत के इतिहास की खोज** :- हमारा इतिहास बदल गया। अंग्रेजों ने बदला, मुसलमानों ने बदला। उसका आकार बिगाड़ा। इतिहास हमारा प्रेरणास्रोत है। किसी देश को गिराना हो तो उसका इतिहास बदल दो। स्वामी जी महाराज संसार में अकेले ऐसी विभूति हैं जिनके पास पुरातत्त्व विभाग में करोड़ों रुपये की सम्पत्ति है। दुनियां के किसी देश में किसी एक व्यक्ति या निजी संस्था के पास इतिहास की वह सामग्री नहीं है जो स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय में एकत्रित की है। इस इतिहास के शोधन हेतु स्वामी जी महाराज ने 'वीर भूमि हरयाणा', 'हरयाणा के वीर यौधेय', 'भारत के प्राचीन मुद्रांक' आदि पुस्तकें लिखी हैं। स्वामी जी के पास वे दुर्लभ सिक्के हैं जो इंग्लैण्ड के म्यूजियम में भी नहीं हैं जो संसार का सबसे बड़ा म्यूजियम है।

स्वामी जी ने धर्म-प्रचार के लिए समस्त उत्तर-पश्चिम, मध्य भारत, पूर्वी भारत यहां तक कि दक्षिणी भारत और विदेश जैसे इंग्लैण्ड, जापान, अमरीका, इण्डोनेशिया, बाली, मौरिसस, जर्मनी तथा अनेक देशों में स्वयं प्रचार किया और अपने शिष्यों को भेजते रहते हैं।

स्वयं स्वामी जी ने अपनी करोड़ों रुपयों की पैतृक सम्पत्ति गुरुकुल नरेला में दान दे दी ताकि कन्याओं को भी वेद-वेदांगों की शिक्षा दी जा सके। स्वामी जी गोभक्त हैं। गोदुग्ध, दधि, तक्र और गोघृत का ही सेवन करते हैं। पूर्ण याज्ञिक हैं। इस संक्षिप्त परिचय-पत्र द्वारा उनके सारे कार्यों का विवेचन सम्भव नहीं है। वे तो एक महान् तीर्थ हैं, पारसमणि, सच्चे साधु हैं, ऋषि हैं, तपस्वी हैं, परोपकार के लिए ही जीते हैं, महापुरुष हैं। उनका जीवन एक खुली पुस्तक है। केवल कौपीन धारण करना और दिन-रात विश्व को आर्य बनाने की धुन यह एक महान् कार्य है।

अत: **दीनबन्धु सर छोटूराम सोसायटी बहादुरगढ़** कृतज्ञता महसूस करते हुए पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज को आज सर छोटूराम जी के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर वसंत पंचमी के दिन **'हरयाणा रत्न'** की उपाधि से अलंकृत करती है तथा एक तुच्छ भेंट सादर समर्पित करती है। वसन्त पंचमी सं० २०४८ वि०

## युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं गायत्री महायज्ञ

हरयाणा आर्य युवक परिषद् (रजि०) के तत्त्वावधान में १२ जून से १९ जून २००५ रविवार तक आर्यसमाज जवाहरनगर (कैम्प) पलवल जिला फरीदाबाद में युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। १२ जून को सायंकाल चार बजे डॉ० आर्यवीर जी भल्ला-प्राचार्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-१४ फरीदाबाद शिविर का उद्घाटन करेंगे। हसनपुर विधायक उदयभान मुख्य अतिथि होंगे। १३ जून २००५ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उपप्रधान श्री जगवीरसिंह एडवोकेट युवकों को विशेष उद्बोधन देंगे। १९ जून को प्रात: १० बजे श्री राजेन्द्रसिंह बीसला प्रधान वेदप्रचार मण्डल फरीदाबाद की अध्यक्षता में शिविर का दीक्षान्त समारोह होगा। इच्छुक युवक निम्न हस्ताक्षरी एवं दूरभाष से सम्पर्क कर सकते हैं। ये कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी के निर्देशन में चलाये जा रहे हैं।

व्यवस्थापक-**शिवराम विद्यावाचस्पति**, युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर पलवल
कार्यालय : १२६, आर्यसदन, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, सैक्टर-२, पलवल
दूरभाष : ०१२७५-२५८६७४ मो० ९४१६२६७४८२

## ग्रीष्मकालीन शिविरों की सूचना

आर्यसमाज का युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी के निर्देशन में अनेक जिलों तथा गांवों में शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष आचार्य सन्तराम आर्य ने बताया कि परिषद् की जिला कैथल की इकाई के प्रधान पूर्व सरपंच दर्शनसिंह आर्य की अध्यक्षता में ग्राम आंहू, बाबा नदाना व बड़सीकरी तथा चौशाला में शिविरों का कार्यक्रम बनाया गया है। यह शिविर १९ जून तक सम्पन्न किये जायेंगे। क्योंकि २० जून की सायंकाल सभी व्यायाम शिक्षक एवं कार्यकर्त्ता तथा परिषद् के पदाधिकारी इस शिविर में भाग लेने जा रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् जिला जीन्द की तरफ से जुलाना मण्डी में कन्या गुरुकुल शादीपुर जुलाना में लगभग दो सौ युवकों का विशाल व्यायाम एवं योग प्रशिक्षण शिविर १४ जून से १९ जून तक लगाया जा रहा है जिसके संयोजक अजमेर आर्य व देवेन्द्र आर्य को बनाया गया है। जिला सोनीपत में प्रिंसिपल आजादसिंह के निर्देशन में व श्री बलराम आर्य के संयाजकत्व में ग्राम नूरनखेड़ा में १२ जून से १७ जून तक व २ जून से ८ जून २००५ तक नाहरी (सोनीपत) में योग प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें १७ जून को स्वामी इन्द्रवेश जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सम्बोधित करेंगे एवं युवकों को भावी कार्यक्रम के लिए मार्गदर्शन करेंगे।

-**रामवीर आर्य एवं अजय आर्य**, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरयाणा
कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक

# आर्यवीरों एवं वीरांगना शिविर का शानदार समापन समारोह


शिविर में आर्य वीरांगनाएं व्यायाम प्रदर्शन करती हुईं।

आर्यवीर दल, गुड़गांव (मण्डल) की ओर से आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं का (शारीरिक एवं व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण शिविर) रविवार २२ मई २००५ से रविवार २९ मई २००५ तक (आर्यवीर शिविर आर्य पब्लिक स्कूल, सेक्टर-७, और आर्य वीरांगना शिविर, आर्यसमाज सेक्टर-४, गुड़गांव) आयोजित किया गया जिसमें २०० (दो सौ) आर्यवीरों एवं वीरांगनाओं ने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ बहन सुषमा आर्या ने किया। इस अवसर पर श्री वेदप्रकाश आर्य महामंत्री आर्यवीर दल, हरयाणा ने आर्य वीर दल के शिविर के उद्देश्य समझाए। डॉ० ऋषिकुमार मखीजा एवं डॉ० शान्तिस्वरूप इसके मुख्य अतिथि ने भी सम्बोधित किया।

२९ मई २००५ रविवार को शिविर का समापन समारोह सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ। भारत के श्रेष्ठ प्रशिक्षण चांदसिंह आर्य, कपिल आर्य, हविषा आर्य, विभा आर्य के नेतृत्व में आर्यवीरों-वीरांगनाओं ने वैदिक संस्कृति के चिन्तन के साथ-साथ योगासन, जूडो-कराटे, लाठी, भाला, तलवार आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया और उसका शानदार प्रदर्शन किया।

समापन समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध उपद्योगपति श्री मदनलाल आर्य (मालिक, मैसर्ज आल आउट लिमिटेड) ने किया। कार्यक्रम में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री राजेन्द्र विद्यालंकार ने कहा जिसका मन-वचन-कर्म एक है वास्तव में वही नेक है। उन्होंने युवकों को आचरण की पवित्रता पर जोर दिया। श्री वेदप्रकाश आर्य ने देश में बढ़ती हिंसा, आतंकवाद, मां-बहनों की इज्जत से खिलवाड़ जैसी घटनाओं के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति को दोषी ठहराया। स्कूलों, कालेजों, यूनिवर्सिटी आदि में कहीं भी सलेबस में नैतिक शिक्षा को स्थान नहीं दिया है।

समापन दिवस के इस कार्यक्रम में श्री शिवदत्त आर्य (मण्डलपति) को उनकी ४२ वर्षों की उल्लेखनीय सेवाओं के लिए शाल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर प्रान्त एवं जिला अधिकारियों ने सम्मानित किया। इस अवसर पर श्रेष्ठ वीरों एवं वीरांगनाओं को पुरस्कार भी वितरित किये गये।

इस अवसर पर प्रशेष आर्य (जय भारत मारुति लि०), वयोवृद्ध आर्यनेता रामचन्द्र आर्य, राजपाल आर्य, हर्षप्रिय आर्य, रामचन्द्र 'वीर', ओमप्रकाश चुटानी, ओमप्रकाश आर्य, कन्हैयालाल आर्य, जगदीश आर्य, श्यामसुन्दर आर्य, विद्यावती कालड़ा, विभा आर्य, सुषमा आर्य एवं राजीव आर्य ने इस कार्यक्रम में अपना योगदान दिया। २०० आर्यवीरों वीरांगनाओं के जबरदस्त प्रदर्शन की लोगों ने काफी सराहना की। ऋषिलंगर व शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-श्यामसुन्दर आर्य, मण्डल मन्त्री, आर्यवीर दल, गुड़गांव मण्डल

## शोक समाचार

आर्यसमाज के मुख्य सहयोगी महम चौबीसी के गांव निन्दाना निवासी श्री उग्रसेन आर्य सुपुत्र श्री फूलचन्द आर्य का २५ मई, २००५ को स्वर्गवास हो गया। श्री स्वर्गीय उग्रसेन आर्य प्रसिद्ध आर्य कैसेट विक्रेता-ऋषि रेडियोज़ कच्चा बेरी रोड, रोहतक श्री रामपाल आर्य के रिश्तेदार (साले) थे। श्री उग्रसेन ६७ वर्ष की आयु पूरी कर चुके थे। मेडिकल कालेज रोहतक में स्वर्गवास होने के बाद उसका सुपुत्र प्रियव्रत अपनी जीप में शव को गांव निन्दाना ले जा रहे थे तो ट्रेन नं० ८ हिसार रोड पर दिल्ली से हिसार की तरफ जारही सेना की क्रेन ने जीप को साइड मार दी, जिससे जीप पलट गई। उस समय जीप में सवारी श्री रामपाल आर्य समेत छह व्यक्ति घायल हो गये जिसमें महिलाएं भी थीं जिसमें कमल उर्फ कर्मवीर वाल्मीकि परिवार का युवक मारा गया तथा रविन्द्र, रामपाल आर्य, वजीर, ओमपती व मीना तथा प्रियव्रत गभीर रूप से घायल हो गये। राहगीरों ने जीप को खड्डे में से निकाला व उन्हें पी.जी.आई. पहुंचाया। ५ जून रविवार २००५ को उनके पैतृक गांव निन्दाना में शोकसभा का आयोजन किया गया है।

हम सभी दयानन्दमठ एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी एवं समस्त पदाधिकारीगण शोकसंतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना करते हैं एवं स्वर्गीय उग्रसेन को श्रद्धांजलि प्रकट करते हैं। श्री रामपाल आर्य समेत सभी घायलों की अतिशीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं।

-सन्तराम आर्य, उपमन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

# निर्भय महर्षि दयानन्द

❑ सोहनलाल शारदा, शाहपुर, भीलवाड़ा, राजस्थान

मैं भी उस समय भी ऐसी ही कार्यवाही करता अर्थात् दो क्षत्रिय वीरों की पीठ ठोक देता। ये वीर पुरुष उनकी उस समय अच्छी पूरी खबर ले लेते॥

महर्षि ने ये वचन निर्भयता पूर्वक तब कहे थे जब जोधपुर रियासत के महामन्त्री पद पर कार्यरत श्री फैजुल्ला खां ने जो महर्षि के प्रवचन सुनने को दो या तीन बार पदार्पण कर चुके थे। उन्होंने श्री स्वामी जी को कहा कि-'हे स्वामी जी! यदि यहां अगर मुसलमानों का शासन होता तो आपको लोग जीवित नहीं छोड़ते। आप उस समय ऐसा भाषण कभी भी नहीं कर सकते।'

इस प्रकार के कथन पर ही उपरोक्त वचन निर्भय होकर इन जोधपुर राज्य के महामन्त्री जी महोदय को कहे थे।

(पं० लेखरामकृत उर्दू चरित भाषानुवाद प्रथम संस्करण नया बास आर्यस्माज पृष्ठ १०९)

यह ही नहीं श्री जोधपुर नरेश को भी सुधार हेतु कड़ी फटकार ज्ञान युक्तायुक्त निर्भय होकर श्रवण कराई थी। कथानक यह हुआ था कि-एक दिवस महाराजाधिराज के बुलावे पर जब श्री महर्षि राजाधिराज के वासस्थान महल पर गये तब वहां महाराजाधिराज के संग वेश्या नन्हीं जान को देखा।

महर्षि के पदार्पण से जल्दी-जल्दी उसे पालकी में बैठा अन्यत्र ले जाया जा रहा था कि तभी पालकी एक तरफ से कुछ झुक गई, तो श्री महाराजाधिराज ने कन्धा लगा उसे यथास्थान पहुंचा दिया।

इस दृश्य को महर्षि ने दृष्टिगोचर कर लिया। अतः श्री जोधपुर नरेश को निर्भयतापूर्वक युक्तायुक्त शिक्षा करते हुए कहा कि-'हे राजन्! राजपुरुष सिंह के सदृश हैं और वेश्यायें कुतिया के सदृश। सिंहों को कभी भी कुतिया के संग समागम नहीं करना चाहिए। कुतियों पर तो आसक्त कुत्तों का ही कार्य है। न कि वीर राजपुरुष सिंहों का। ऐसे जीवों पर तो हजारों धिक्कार हैं।'

(पुस्तक उपरोक्त पृष्ठ ९१२)

इस प्रकार की निर्भीकता प्राप्त करने हेतु योग व ब्रह्मविद्याप्राप्ति में कितने भगीरथ कष्ट सहे होंगे जिसका वर्णन स्वयं लिखते हैं कि-

**कथानक नर्मदा तट पर भ्रमण का**

'मैं काशी से पैदल चलकर बिलासपुर होता हुआ अमर कण्टक तीर्थस्थल पर पहुंच गया। यहां से धीरे-धीरे नर्मदा तटवर्ती तीर्थों में भ्रमण करता हुआ आगे बढ़ता गया। यहां घने जंगलों में दोपहर समय भी अन्धकार बना रहता है।

मार्ग में अनेकोनेक बड़े-बड़े सर्प, हाथी, शेर, रीछे, बराह, जोंक, जहरीले कीट-पतंगों के झुण्ड व बड़े-बड़े मांस-भुक् पक्षी मिलते ही रहते थे। लेकिन इनमें से किसी ने भी मुझे कोई हानि नहीं पहुंचाई।

इस रूप से मैं नर्मदा नदी के इस पार से उस पार आया-जाया करता था। कहीं-कहीं जहां नाव आदि की व्यवस्था नहीं होती तो मैं एक लकड़ी के सहारे पर ही नदी पार कर लेता और जहां यह भी नहीं मिलती तो मैं तैरकर ही उस पार चला जाता।' (योगी का आत्मचरित पृष्ठ ३९)

इस प्रकार नदी के तटवर्ती तीर्थों व मुख्य-मुख्य योगविद्या केन्द्रों में खोज करते-करते एक बार जो अति विशेष घटना घटी उसका वर्णन लिखते हैं कि-

'मैं किसी से रास्ता नहीं पूछ कर दक्षिण दिशा की ओर चलता गया। शीघ्र ही मैं एक उजाड़ निर्जन व चारों ओर से घिरा घने जंगल में पौन कोश चलकर एक ऐसे स्थान पर पहुंच गया जहां कुछ भी प्रसिद्ध मार्ग दिखाई नहीं देता था। इस जंगल में लम्बा घना घास एवम् बेर के कंटीले वृक्षों की बहुतायत थी।

यहां मेरा सामना एक बड़े काले रीछ से हुआ। यह बड़े बेग से चिंघाड़ता हुआ पिछले दो टांगों पर खड़ा होगया और मुझे खाने के निमित्त मुंह खोला। मैं कुछ क्षण किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ा रहा। पश्चात् मैंने अपना सोटा को उसकी ओर उठाया। जिससे वह भयभीत होकर उल्टे पांव जंगल में पलायन कर गया।' (आत्मकथा कर्नल अल्काट को लिखी से)

इतने महान् अकथनीय भयंकर भयावह कष्टों को सहन कर अपने अन्तिम समय में सर्वगृह्य सूत्र ग्रंथों के सार रूप मानवमात्र के कल्याणार्थ संस्कारविधि लिख गये। जिसके विषय में स्वयम् एक पत्र में लिखते हैं कि-

'अबकी बार संस्कारविधि बहुत अच्छी बनी है। अमावस्या तक बन चुकेगी।' (मिति भाद्रपद कृष्णा पंचमी संवत् १९४०)

इस बहुत अच्छी बनी महान् कर्मकाण्डीय ग्रंथ में प्रथम पृष्ठ पर रही आदेश है कि-

'सब संस्कारों के आदि में निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ और अर्थ द्वारा एक विद्वान् वा बुद्धिमान् पुरुष ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना स्थिरचित्त होकर परमात्मा में ध्यान लगाकर करें और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें और विचारें।'

यहां ही आठ मन्त्रों का वर्णन है एतद् विषयक। अर्थो से ज्ञात होता है कि एक-एक मन्त्र उपदेशात्मक है। जैसे यहां वर्णन है मन्त्रार्थ के अन्त में ५ मंत्रों में कि-

'विशेष भक्ति किया करें। आज्ञा पालन में तत्पर रहे। विशेष भक्ति करें। उसकी भक्ति किया करें। यहां ७वें मन्त्र में हे मनुष्यो! ऐसा सम्बोधन है और भाष्य में तो ही मंत्रों में ऐसा ही सम्बोधन कारक से ही वर्णन है।'

इस प्रकार के अति स्पष्ट उपदेशात्मक अर्थ होते हुए भी कई प्रकाशकों ने इन्हें दैनिक अग्निहोत्र विधि में अपनी अल्पज्ञता से लिख मारा।

जबकि संस्कारविधि में दैनिक अग्निहोत्र के लिये वर्णन किया गया है कि-

**सन्ध्या समापन पश्चात्**

इस मंत्र (नमः शम्भवाय च०) से परमात्मा को नमस्कार करके (शन्नो देवी०) इस मन्त्र से तीन आचमण करके अग्निहोत्र का आरम्भ करें।

आगे यहां विधि निर्देश करते हुए वर्णन है कि-प्रथम सामान्य प्रकरण में लिखे प्रमाणों अग्न्याधान, समिदाधान और लिखे प्रमाणों अदितेऽनुमन्य स्व० मन्त्रों से चारों से चारों और जल प्रोक्षण करें।

इस प्रकार से इन आठ मन्त्रों को दैनिक अग्निहोत्र में प्रयोग नहीं है। लेकिन जो भी जन व प्रकाशक वगैरा इन मन्त्रों को दैनिक में लिखते व कराते व करते हैं बिना पूर्ण बिचारे ऐसे जन व प्रकाशक आर्यसमाज को हानि ही पहुंचाते हैं।

इसलिए ही कहा गया है कि जो जन विधि नहीं जानते वे उससे होने मिलने वाले लाभों से वंचित रह जाते हैं। (लेखरामकृत) यहां महर्षिकृत को तत्त्वतापूर्वक जानकर प्रयोग में लेना ही हम सर्व आर्यजनों का कर्त्तव्य है।

यह ही एक महान् विभूति विगत पांच हजार वर्षों पश्चात् इस आर्यराष्ट्र में महान् कष्ट उठाकर हमें जागृत कर सही सच्चा वैदिक मार्ग बता गई।

स्मरण रहे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की रक्षार्थ लक्षण और सेवा हेतु माता सीता जी थे। भगवान् कृष्ण के साथ भी बन में साथी मित्र सुदामा जी थे। लेकिन इन आदर्श भगवान् आनन्दकन्द लंगोट बन्द दयानन्द तो अकेला ही था। अतः इसके कहे अनुसार ही चलना है।

## आर्यसमाज अडींग जनपद मथुरा ( उ०प्र० ) का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

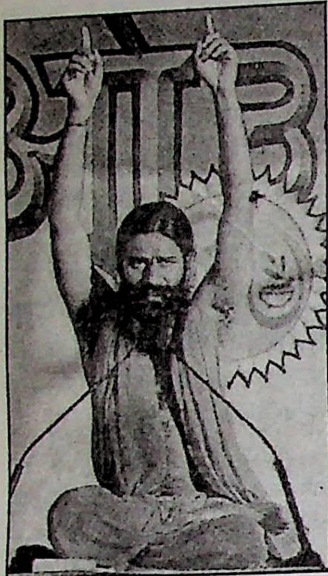
आर्यसमाज अडींग जनपद मथुरा (उत्तरप्रदेश) का वार्षिकोत्सव दिनांक १४, १५ मई २००५ को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी रामानन्द सरस्वती बेरी ने की तथा संचालन श्री महावीरप्रसाद आर्य ने किया। इस अवसर पर प्रभातफेरी निकाली गई तथा देवयज्ञ किया गया। यज्ञ में श्रद्धालुओं ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

इस समारोह में राष्ट्ररक्षा, गऊरक्षा, नशा-निषेध, पाखण्ड-खण्डन आदि सम्मेलनों का आयोजन किया गया। जिसमें वैदिक विद्वान् पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य भजनोपदेशक ग्राम बहीन (फरीदाबाद), श्री जयदेव आर्य युवा गायक (फरीदाबाद), श्री बदनसिंह आर्य, श्री वेदप्रकाश आर्य शास्त्री अडींग, सुकुमारी प्रभारानी स्नातिका कन्या गुरुकुल नरेला ने अपने प्रवचनों एवं भजनोपदेशों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

**-शिवदीप आर्य,** मंत्री आर्यसमाज अडींग, जनपद मथुरा (उत्तरप्रदेश)

# बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, शराब सेवन न करने का संकल्प

## योग साधना और चिकित्सा पर आयोजित सात दिवसीय शिविर सम्पन्न



योगिराज स्वामी रामदेव सात दिवसीय योग साधना एवं योग चिकित्सा शिविर के समापन अवसर पर साधकों को नशा न करने का संकल्प दिलाते हुए।

रोहतक। परम मित्र मानव सेवा संस्थान के तत्त्वावधान में यहां जाट कॉलेज के मैदान में चल रहा स्वामी रामदेव जी का ध्यान योग शिविर हजारों लोगों के संकल्प के साथ सम्पन्न हो गया। हजारों साधकों ने हाथ जोड़कर संकल्प लिया कि वे आज के बाद सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, पान मसाला और शराब का सेवन छोड़ देंगे। साथ ही स्वामी जी ने मांस भक्षण न करने का भी संकल्प दिलाया। शिविर में सात दिन तक प्राणायाम तथा योग साधना से हजारों लोगों ने स्वास्थ्य लाभ लिया।

स्वामी रामदेव जी ने योग शिविर के अलावा खुला सत्र, बच्चों के लिए विशेष सत्र, कैदियों के लिए कार्यक्रम तथा चिकित्सकों से संवाद किया। जिसमें करीब एक लाख लोगों ने भाग लिया। जिसमें ५० हजार के करीब बच्चे शामिल हैं। शिविर के अंतिम दिन हजारों साधकों को स्वामी जी ने कई संकल्प दिलाए। लोगों ने संकल्प लिया कि वे मद्यपान नहीं करेंगे, गुटखा, पान-मसाला नहीं खायेंगे। धूम्रपान नहीं करेंगे। जीरो टैक्नोलॉजी से बनी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की वस्तुओं का उपयोग नहीं करेंगे। देश के लिए नेत्रदान तथा अंगदान करेंगे। अपने खून को देश के लिए देंगे। मुकद्मेबाजी में नहीं पड़ेंगे। लोगों ने संकल्प लिया कि वे कम से कम सौ लोगों को योग सूत्र सिखायेंगे।

स्वामी रामदेव जी महाराज २४ मई की देर सायं रोहतक पहुंचे थे। २५ मई को जीन्द गुरुकुल के कार्यक्रम में हिस्सा लिया। २६ मई को प्रातः साढ़े चार बजे से जॉट कालेज के मैदान में योग शिविर शुरू हुआ। २७ मई को स्वामी जी ने जिला कारागार में कैदियों को योग सिखाए तथा क्रोध, अपराध को छोड़ने का संकल्प दिलाया। २८ मई को स्वामी जी ने आम जनता के लिए खुला सत्र आयोजित कर योग गुर सिखाए जिसमें चालीस हजार के करीब लोगों ने योग संवाद किया। ३१ मई को सायं स्वामी जी ने देश के भविष्य बच्चों को योग साधना सिखाई जिसमें करीब पचास हजार बच्चों ने भाग लिया। शिविर के अंतिम दिन परम मित्र मानव निर्माण संस्थान की ओर से स्वामी जी का आभार प्रकट करते हुए कैप्टन अभिमन्यु ने कहा कि स्वामी जी देश में एक नई सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात कर रहे हैं जिसमें परम मित्र मानव निर्माण संस्थान भूमिका निभाएगा। स्वामी जी ने प्रदेश में नई सांस्कृतिक क्रान्ति को बढ़ावा देने में योगदान के लिए परम मित्र मानव निर्माण संस्थान का आभार जताया। हरिभूमि २-६-०५ से साभार

### हजारों साधकों ने लिया संकल्प

योग साधना व योग चिकित्सा शिविर का अंतिम दिन देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत रहा। शिविर के समापन अवसर पर हजारों साधकों ने हाथ जोड़कर संकल्प किया कि वे भविष्य में मद्यपान, तम्बाकू, पान व गुटखा आदि का सेवन कतई नहीं करेंगे, साथ ही अपने सहयोगियों को भी इस नेक काम की ओर प्रेरित करेंगे। स्वामी जी ने सभी साधकों से प्रण भी कराया कि वे भारतमाता, गौमाता और जननी माता का सदैव सम्मान करेंगे। विदेशी कम्पनियों व वस्तुओं का बहिष्कार करके देशभक्ति की भावना से सदैव ओतप्रोत रहेंगे। मन में देश के प्रति सम्मान की भावना रखेंगे। स्वामी रामदेव ने कहा कि इस संकल्प को भविष्य में साधकों द्वारा अपनाया जाना ही उनकी गुरुदक्षिणा होगी। इस मौके पर स्वामी जी के सान्निध्य में सभी शिविरार्थियों ने 'मेरा रंग दे वसंती चोला...' और 'सरफरोशी की तमन्ना...' देशभक्ति के गीतों से समस्त वातावरण संगीतमय बना दिया। सभी देशभक्ति की भावना से सराबोर झूमते हुए नजर आए।



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।

पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१

वर्ष ३२ अंक २८ १४ जून, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## बाजारी बर्फ़ की गुणवत्ता : जागरूक रहे उपभोक्ता

गर्मियों का मौसम, चिलचिलाती धूप, ऐसे में आकर्षित करते बर्फ के गोले, फालूदा कुलफी, शरवत, शिकंजवी की ठण्डक बच्चों से बड़े-बूढ़ों को अपनी ओर बरबस खींच ही लेती है। ऐसे में शादियों, पार्टियों और समारोहों में प्रयोग होने वाली बर्फ के लिए हम सबको बाजार पर निर्भर होना पड़ता है। मगर सावधान! बेपरवाह न रहिये यह आपके स्वास्थ्य का सवाल है। आपको यह जानना चाहिये कि क्या इस बर्फ की गुणवत्ता स्वास्थ्यकर है अथवा नहीं।

इस प्रकार की बर्फ को उपभोक्ताओं तक पहुंचने के लिए कई माध्यमों से होकर गुजरना पड़ता है, बर्फ को कई प्रकार के तापमान अथवा परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप यह या तो खपत योग्य नहीं रहती अथवा संक्रमित हो जाती है। इसलिए बर्फ निर्माण से बिक्री तक के मापदण्ड निर्धारित किए जाने भी आवश्यक हो जाते हैं। उपभोक्ताओं को ऐसे धोखे से बचाने हेतु भारतीय मानक ब्यूरो बीआईएस ने कोड-आईएस : ६५४०-१९७२ निर्धारित किया है जिसके अन्तर्गत सेवन योग्य बर्फ का निर्माण करने वाली इकाइयों, वाहनों, रखरखाव व रखने के स्थान तथा विक्रेताओं के लिए कुछ दिशा-निर्देश तय किए गए हैं जो इस प्रकार हैं :-

- बर्फ के निर्माण के लिए केवल जल एकमात्र सामग्री है। इसलिए जल की गुणवत्ता के प्रति सबसे अधिक ध्यान रखा जाना चाहिए। यह आवश्यक है कि पिघलने पर बर्फ से बना पानी जैविक व रासायनिक तौर पर पीने योग्य हो।
- पानी रखने के लिए बनाई गई टंकियां या तो पूरी तरह से ढकी हों अथवा सील की गई हों। इनकी नियमित रूप से सफाई तथा जांच की जानी चाहिए।
- पानी के नमूनों की लाइसेंसिंग अथारिटी की हिदायतों के अनुसार जैविक तथा रासायनिक रूप से समय-समय पर जांच की जानी चाहिए। निर्माण इकाइयां ऐसे परीक्षणों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- जिस परिसर में बर्फ का निर्माण हो वह साफ, स्वच्छ स्थान पर स्थित हो। यह स्थान मुख्य सड़क, अधिक यातायात, कूड़े के ढेरों, पशुओं के बाड़ों खुले सीवरेज नालों तथा मक्खी-मच्छर पैदा करने वाले वातावरण से दूर होना चाहिए। इस इकाई में धूल, चूहे व पक्षी प्रवेश नहीं करने चाहिएं।
- निर्माण इकाई के फर्श उचित ढंग से साफ हों जिनमें फालतू पानी के निकलने के लिए उचित ढलान बनाई गई हो। इकाई के फर्श, छतें तथा दीवारें पक्की हों।
- निर्माण इकाई में पर्याप्त रोशनी तथा वायु की व्यवस्था हो जो कि कार्यकर्ताओं की संख्या, उनके काम करने के घण्टों तथा कार्यशैली के अनुसार होनी चाहिए।
- बची-खुची सामग्री तथा कूड़ा-करकट ढके हुए कूड़ेदानों में ही इकट्ठा किया जाए और फैक्टरी के फर्श पर बिखरने न दें। इसका निपटान आसपास के वातावरण की स्वच्छता की दृष्टि से परिसर से दूर ही किया जाए।
- कीटनाशकों के प्रयोग के समय पूरी सावधानी बरती जाए। किसी भी स्थिति में इन्हें निर्माण कार्य के दौरान प्रयोग न किया जाए।
- फैक्टरी में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की डॉक्टरी जांच की गई हो जिनमें विशेषकर तपेदिक के लिए छाती का एक्स-रे, शौच की जांच और अन्य संक्रामक रोगों से संबंधित जांच शामिल है। वह सभी संक्रामक रोगों से मुक्त होने चाहिएं। सभी कर्मचारियों को वर्ष में एक बार इन संक्रामक रोगों से बचाव हेतु टीके लगवाने अनिवार्य हैं।
- सभी कार्यकर्ताओं तथा विक्रेताओं को अपने निजी स्वच्छता के बारे में ध्यान रखने हेतु हिदायतें दी जाएं। काम शुरू करने से पहले उनके हाथ अच्छी तरह से साफ और नाखून कटे हुए हों। प्रत्येक अन्तराल व शौच आदि के बाद ये कर्मचारी अपने हाथ साबुन तथा साफ पानी से अच्छी तरह धोएं। वे साफ वर्दी, एप्रिन, टोपियां तथा जूते ही पहनें।
- बर्फ को दुर्गन्ध तथा अन्य गंधों से सुरक्षित रखने हेतु निर्माण कक्ष के नजदीक शौचालय, सिंक, गंदी नालियां तथा कूड़ेदान मौजूद न हो। झाड़ू, बाल्टियां तथा साफ करने की अन्य सामग्री अलग जगह पर रखी जाए।
- निर्माण कक्ष में खाना, थूकना, नाक साफ करना, तम्बाकू अथवा सुपारी का प्रयोग वर्जित हो।
- बर्फ बनाने तथा रखने के उपकरण इस ढंग से लगाए जाएं कि उन्हें साफ करने के लिए खोलने तथा उनमें से बर्फ निकालने में आसानी हो।
- सभी बरतन तथा उनके ढक्कन सोडियम कार्बोनेट या अन्य उपयुक्त डिटर्जेंट के घोल से धोए जाएं। सफाई के लिए नियमित रूप से क्लोरीन का इस्तेमाल किया जाए।
- उपकरण बहते हुए पानी में साफ किए जाएं। निर्माण तथा साफ सफाई के लिए पर्याप्त पानी की आपूर्ति उपलब्ध हो।
- बर्फ की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए इसकी नियमित जांच की जानी आवश्यक है। जो बर्फ मानवीय उपयोग के योग्य न हो उसे अलग रंग दिया जाए।
- बर्फ लाने व ले जाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले वाहनों को स्थानीय स्वास्थ्य अधिकरणों से स्वच्छता हेतु लाइसेंस दिया गया हो।
- बर्फ विक्रेता केवल लाइसेंस धारक निर्माण इकाइयों से ही बर्फ खरीदें।
- बर्फ या तो साफ इंसुलेटिड धातु के बर्तनों अथवा साफ होजियों में या सुरक्षित व स्वच्छ फर्श पर रखी जाए।
- आम ठण्डे पेयों में इस्तेमाल से पहले बर्फ को अच्छी तरह से बहते हुए पानी में धो लिया जाए। यदि इसे तोड़कर डालना हो तो केवल साफ कपड़े में रखकर ही तोड़ा जाए।

इस प्रकार उपयोग में आने वाली बर्फ के निर्माण, रखरखाव, बेचने तथा खरीदने के समय यदि ऐसी कुछ सावधानियां बरती जाएं तो अनेक संक्रामक रोगों, जिनके बाद में भयंकर परिणाम हो सकते हैं, से बचा जो सकता है। यह दायित्व केवल स्वास्थ्य अधिकारियों, लाइसेंसिंग अथारिटी अथवा भारतीय मानक ब्यूरो जैसी संस्थाओं का ही नहीं कि वे निर्माताओं तथा विक्रेताओं पर नजर रखें, बल्कि उपभोक्ता बर्फ को खरीदते तथा इसे प्रयोग करते समय स्वयं भी जागरूक हों। यदि वे बाजार में बिकने वाली बर्फ की गुणवत्ता से संतुष्ट न हों तो विभिन्न रोगों को निमंत्रण देने से अच्छा है कि वे इसे खरीदने से इंकार कर दें।

**-पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार, चंडीगढ़**

# वेद में छन्दविद्या की महिमा

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

वेदों का नाम 'छन्द' इसलिए रक्खा है कि वे स्वतन्त्र प्रमाण तथा सत्यविद्याओं से परिपूर्ण हैं। इन्हें एक दूसरे से भिन्न करके नहीं देखा जा सकता तथा उनका मंत्र नाम इसलिए है कि उनसे सत्यविद्याओं का ज्ञान होता है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृष्ठ ८३-८४)। वेद परमात्मा का आदि काव्य है। अमर काव्य है, अविनाशी काव्य है जो ऋचाओं से भरा पड़ा है। छन्द से परिणित है-ढका हुआ है-आवृत है। वेद ऋचा और छन्द परमेश्वर की काव्यकला में ग्रथित है, सूक्ति है, गुम्फित है। वेद ने मनुष्य की तो बात ही क्या है, प्राणिमात्र को आत्मतत्त्व की दृष्टि से अपनाया है। वैदिक संस्कृति में जीवन-यापन का जो आदर्श रक्खा है, वह संसार को स्वर्गधाम बनाने वाला है। परमेश्वर ने इस ब्रह्माण्ड को तीन भागों में बांटा है। पृथिवीलोक, अन्तरिक्षलोक तथा द्युलोक। पृथिवी लोक का ऋग्वेद है। इस वेद का गायत्री छन्द है। गायत्री मंत्र इतना पवित्र माना गया है कि उसे 'गायत्री देवी' के नाम से पुकारा जाता है। इसका द्रष्टा कौन है, आज इसे भी जानने की आवश्यकता नहीं समझी जाती। वास्तविकता यह है कि गायत्री कोई देवी नहीं बल्कि एक छन्द का नाम है, जिसमें २४ अक्षर हैं। गायत्री छन्द में निबद्ध इस प्रसिद्ध मन्त्र का द्रष्टा महर्षि विश्वामित्र है, जो गाधि परिवार में पैदा हुआ था और जिसने आसमान में त्रिशंकु के रहने के लिए फ्लेट बनवा दिया था। मूलतः वह कान्यकुब्ज का रहने वाला क्षत्रिय राजा था।

शायद यह ब्राह्मण साहित्य में प्रसिद्धतम मन्त्र है। द्विजगण इसका जप प्रातःकाल, मध्याह्न तथा सायंकाल किया करते हैं। इस मन्त्र में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना का विधान है जो अन्य किसी एक मन्त्र में नहीं है। हां इसका विधान अन्य आठ मन्त्रों से पूर्ण होता है। गीता में **गायत्री छन्दसामहम्** (१०-३५) ऐसा कहा है। वाल्मीकि ऋषि ने अपने आदिकाव्य रामायण की रचना गायत्री के २४ वर्णों को लेकर की थी। यह हमारा गौरवमय इतिहास ग्रन्थ विश्व में प्रसिद्ध है जिसमें अथाह ज्ञान भरा है। गायत्री छन्द में प्राणों की रक्षा का ज्ञान है। गायत्री छन्दों वाले मन्त्रों की रक्षा की जाती है। मोक्ष प्राप्त होता है क्योंकि यह शान्ति की सुरसरिता है। गायत्री महामंत्र को ध्यानावस्थित होकर अत्यन्त श्रद्धापूर्वक गान करने से जीवन में ज्ञान, नियन्त्रण एवं समर्पण भावना का उद्गम होता है क्योंकि गायत्री में अलौकिक शक्ति, अद्भुत सौन्दर्य, मधुमय आलोक है। प्रत्येक मनुष्य गायत्री की शब्दमयी प्रतिमा से उस परम प्रभु को स्वहृदय में देख सकता है। शान्ति के अमर काव्य का अधिकारी हो सकता है। इसलिए समस्त वैदिक वाङ्मय को अपनी प्रखर प्रतिभा से अभिभूत कर दिया इस गुरुमन्त्र ने।

अन्तरिक्ष लोक का यजुर्वेद है। इसका त्रिष्टुप् छन्द है जिसमें ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों का गुण वर्णन है। इससे प्रकृतिविद्या-आत्मविद्या और ब्रह्मविद्या का ज्ञान मिलता है। प्रकृतिविद्या में ऐहिक सुख, आत्मविद्या से अमरत्व की प्राप्ति होती है और यह ब्रह्मविद्या इहलोक परलोक सुख का साधन होती है। अतः हमें मन वाणी और कर्म से यज्ञों द्वारा शरीर को पवित्र करना चाहिये। महर्षि वेदव्यास जी ने भाष्य करते हुए एक पद्य लिखकर शरीर की वास्तविकता का चित्र-सा खींच दिया है-

**स्थानाद्बीजादुपष्टम्भात्स्यन्दनान्निधनादपि।**
**कायमाधेयशौचत्वात् पण्डिता ह्यशुचिं विदुः॥**

बुद्धिमान् मनुष्य पांच कारणों से शरीर को अपवित्र मानते हैं-

**(१) स्थानात्**-जिस स्थान में, अर्थात् माता के गर्भाशय में यह शरीर बना, वही अपवित्र था। अपवित्र स्थान में बना शरीर कैसे पवित्र हो सकता है।

**(२) बीजात्**-जिन कारणों से, पिता के शुक्र और माता के शोणित से इसका निर्माण हुआ है-जब वे ही अशुद्ध थे तो यह कैसे शुद्ध हो सकता है।

**(३) उपष्टम्भात्**-धारक तत्त्व मांस, मज्जा, अस्थि, मलादि जो इस शरीर को सहारा देते हैं, वे सभी गन्दे हैं। सबसे गन्दा मल है और शरीर का आधार वही है।

**(४) स्यन्दनात्**-जो चीजें अनेक द्वारों और छिद्रों से मूत्र, पुरीष, स्वेदादि बाहर निकलती हैं, वे सभी मलिन हैं, तो इससे परिपूर्ण शरीर कैसे शुद्ध हो जायेगा?

**(५) निधनात्**-मृत्यु होने पर इस शरीर का रूप स्पष्ट हो जाता है। जीवित अवस्था में आत्मा के प्रभाव से गन्दे परमाणु दबे रहते हैं। इसलिए वेद कहता है कि नर-नारी को साधना के द्वारा मोक्षप्राप्ति के लिए तत्पर रहना चाहिये तथा मन्त्रों के अर्थों को सूक्ष्म रूप से समझने की योग्यता प्राप्त करनी चाहिये।

द्युलोक का सामवेद है। जगती छन्द है। इस छन्द में जगत् सम्बन्धी अद्भुत ज्ञान भरा पड़ा है। छन्द विद्या के अधिकारी मोक्ष के ही अधिकारी नहीं वे जागतिक भौतिक उन्नति के भी अधिकारी होते हैं। वेदमन्त्रों के ज्ञान को प्राप्त करने वाले मनुष्य इस लोक में परमोच्च गति को पा लेते हैं। जगती छन्द द्वारा समुद्र को द्युलोक में थाम रखा है। जगती छन्द का यह चक्र पृथिवी के पानी की भाप के समान कभी मेघ, कभी वर्षा के रूप में पदार्थ की उत्पत्ति, स्थिति और लय, फिर उत्पत्ति के रूप में यह जगचक्र चल रहा है।

अथर्ववेद के काण्ड १९ के सूक्त २१ में छन्दांसि सूक्त का मन्त्र आया है उसमें वेद के ७८ छन्द हैं। मंत्र का ऋषि ब्रह्मा। देवता-छन्दांसि है। गायत्री-त्रिष्टुप्-जगती आदि ७ छन्द मुख्य हैं। इनके बहुत भेद (पिंगल छन्द सूत्र) में हैं। परन्तु वेदों में आर्ष छन्दों का ही प्रयोग अधिक हुआ है। छन्दों में वेदज्ञान भरा पड़ा है। अज्ञान को आच्छादित कर ज्ञान के प्रकाशक ये छन्द ही हैं। **गायत्रस्य तिस्रः समिधः** १।१०।३। अथर्व-गायत्री छन्द के तीन पाद हैं। प्रत्येक में ८ अक्षर हैं। **द्विपदा चतुष्पदा सप्तवाणीः अक्षरेण मिमते** १।१०।३। अथर्व०। वेद के छन्द १ चरणवाले, २ चरणवाले, ८ चरणवाले, ९ चरणवाले और सहस्र अक्षरों से युक्त हैं। उनके प्रत्येक चरण में अक्षर संख्या का परिमाण अक्षरों की संख्या करने से होता है। ये सातों छन्द अक्षरों की गिनती से मापे जाते हैं :-

| नाम छन्द | अक्षर संख्या | नाम छन्द | अक्षर संख्या |
|---|---|---|---|
| गायत्री | २४ | उष्णिक् | २८ |
| अनुष्टुप् | ३२ | बृहती | ३६ |
| पंक्ति | ४० | त्रिष्टुप् | ४४ |
| जगती | ४८ | | |

(वैदिक छन्द ऋक् प्रातिशाख्य १६-१८)
पिंगल छन्द सूत्र (अ० १-४)

इनके स्वर भी क्रमशः षड्ज-ऋषभ-गान्धार-मध्यम-पंचम-धैवत और निषाद हैं। लौकिक साहित्य में इन्हीं के आधार पर ध्वनि संगीत और वाद्यवृन्दों का संचालन हो रहा है। जैसे-सा-रे-गा-मा-पा-धा-नि ध्वनि साम्य से हर्षोल्लास के साथ नाचते गाते और कूदते हैं।

वेदमन्त्रों का यह ज्ञान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस गौ नाम वेदवाणी का सच्चा रक्षक ही वैदिकधर्मी होसकता है। यही वेदवाणी वसुओं की पालनहारी है। **अघ्नेयं सा वर्धतां महते सौभगाय** (अथर्व० १।१०।५)

यह वेद वाणी रूपी गौ प्रलयकाल में भी विद्युत् के समान विशेष प्रकाश देकर मार्ग बताती है। एक-दो-चार-आठ अथवा नौ पदों वाले छन्दों में विभक्त हुई हजारों संख्या अक्षरों तक इसकी मर्यादा है। सब लोकों को पूर्ण करने वाली है इससे विविध रस निःसरते हैं। (अथर्व० ९.१०.७,२१)। मनुष्य के शरीर में एक जीव है जो अज-अमर है। इस संसार सागर में प्रगति करता है। युवा होकर भी परमात्मा के अन्दर प्रविष्ट होता है। उस महान् देव की यह काव्यमयी शक्ति देखने योग्य है (अथर्व० ९.१०.९) इस बड़े आकाश में पदार्थों का मूल बीज ७ तत्त्वों में है। इसकी ऋचा के प्रत्येक अक्षर में अनेक देवताओं का वास है जो मनुष्य इस बात को नहीं जानता वह वेदमन्त्रों का क्या करेगा? (अथर्व० ९.१०.१८)। इसीलिए छन्दशास्त्र की परिभाषा में कहा गया है कि छन्द ज्ञान के बिना मनुष्य वेदज्ञान में अधूरा है। अतः हमें छन्दविद्या का ज्ञान लेकर अपनी आदतों में सुधार कर लेना चाहिये। हमें आदर्श आर्य बनने का प्रयत्न करना चाहिये।

## शान्तियज्ञ समारोह सम्पन्न

गुरुकुल झज्जर के तत्त्वावधान में स्वर्गीय राव नौबतसिंह जी की पुण्य स्मृति के अवसर पर शान्तियज्ञ समारोह का आयोजन ग्राम भिण्डावास जिला झज्जर में सम्पन्न हुआ। शान्तियज्ञ के दौरान आचार्य विजयपाल योगार्थी ने यज्ञोपवीत को सबके लिए श्रेष्ठ मानव बनने के लिए अनिवार्य बताया। यज्ञोपवीत हमें अपने कर्त्तव्यों के पालन का स्मरण कराता है। वह हमें धूम्रपान, शराब, गाली देना आदि बुराइयां छोड़ने की ओर संकेत करता है। जनेऊ में तीन तार हमें तीन प्रकार के ऋणों से अनृण होने की प्रेरणा करते हैं, इत्यादि। यज्ञोपवीत का महत्त्व समझकर उपस्थित बहुत से नरनारियों ने जनेऊ धारण किया। यज्ञ के पश्चात् भजन-प्रवचन के कार्यक्रम में पं० जयभगवान जी आर्य ने '**भक्ति कर भगवान की काम तेरे जो आवेगी। सत्संगी जो रहा सदा ही ऊंचा उठता जाएगा**' गाया। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ईश्वर जी तूफान ने भजनों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने '**होश आता है बसर को उमर ढल जाने के बाद। वक्त की कीमत समझता है वक्त गुजर जाने के बाद।**' गाया। निकटवर्ती तथा दूरस्थ ५० ग्रामों के सैकड़ों प्रतिनिधि इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

# विनाशकाले विपरीतबुद्धि! धर्म से प्यारी कुर्सी!!

आर्यसमाज के मान-सम्मान, वैभव और प्रतिष्ठा को देखकर कुछ चालाक वाक्‌पटु व्यापारी अपने धन तथा छलबल का दुरुपयोग कर अपनी कुर्सी की भूख के लिए, आर्यसमाज, इसकी मान्यताओं व सिद्धान्तों को ही मिटाने पर तुले हुए हैं। इन कुर्सी के दीवानों ने बड़ी चालाकी व तैयारी से आर्यसमाज पर चारों ओर से भयंकर आक्रमण कर आर्यसमाज को ही मिटाने का एक नापाक सामयिक गठजोड़ कर **'चोर-चोर'** का शोर मचाना आरंभ किया है। कुर्सी के दीवाने ये चालाक लोग **'आर्यसमाज बचाओ'** का झूठा नारा लगाकर आर्यसमाज के तपे हुए, परखे हुए त्यागी व तपस्वी नेताओं साधुओं व संन्यासियों पर झूठे गंदे असभ्य भाषा में लाउडस्पीकर लगाकर ऊंची आवाज में गंदी गालियां बक रहे हैं। सभ्यता व शिष्टता की सभी सीमाओं का उल्लंघन कर **'कपड़े फाड़कर नंगे करने, सिर फोड़ देने व टांगें तोड़ देने'** के मंच से ऐलान करते हैं। प्रो. शेरसिंह जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी, श्री सामवेदी जी, स्वामी अग्निवेश जी आदि-आदि बुजुर्गों पितृजनों का अनादर कर पितृयज्ञ की, आर्यमर्यादा का खुला उल्लंघन कर, आर्यसमाज जैसी सभ्य संस्था का खुला अपमान कर कौनसी सेवा कर रहे हैं श्री राजसिंह जी व श्री धर्मपाल जी?

**राजनैतिक शरारत**-शायद श्री राजसिंह आदि नौनिहालों को थोड़े दिनों की कुर्सी का ऐसा सुख लाभ इतना मन बस गया है कि वे कुर्सी के लिए आर्यसमाज को कांग्रेसी व जनसंघी विचारधारा में दो भागों में बांटकर कांग्रेस के विरोध का, नाटककार संघ की सहायता से दिल्ली का राजनैतिक लाभ, स्वर्गीय श्री रामगोपाल शालवाले जी की राही पकड़ना चाहते हैं।

**अब्दुल्ली दीवानगी**-कोई पूछे, इन समाजसेवकों से कि झगड़ा सार्वदेशिक सभा का सालों पुराना है। केस कोर्ट में है, श्री धर्मपाल व श्री राजसिंह शायद ही सार्वदेशिक सभा के सदस्य हों, अधिकारी नहीं हैं, इनकी सभाओं पर कोई असर ही नहीं पड़ रहा है। इन कुर्सी के दीवानों को कब और किसने अधिकार दिया था कि **आप सारे आर्यजगत् का ऐसा खुला गंदा गाली-गलौच का कार्यक्रम बनाकर आर्यसमाज की जग-हंसाई व बदनामी करें?** आर्यसमाज को नष्ट करने का सधी षड्यंत्र करें? जब सार्वदेशिक सभा का कोर्ट में कैसे चल रहा है जो कि ठीक नहीं है। समाज को कोर्ट में घसीटना स्वर्गीय श्री मरवाह जी से चला है। जब से कुछ अनार्य वकील समाज की चमक दमक देखकर आकर्षित हुए हैं, इन अनार्यों ने वर्षों तक स्वामी ओमानन्द जी जैसे त्यागी, तपस्वी नेताओं को काम ही नहीं करने दिया और इसी रास्ते पर श्री बंसल, वधावन व शर्मा को चला रहे हैं। क्योंकि हैं तो उन्हीं के सच्चे चेले! **बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना।** राजसिंह धर्मपाल का सार्वदेशिक सभा से क्या लेना-देना है? ये कौन हैं आर्यसमाज को दुनियां में बदनाम कर महान् हानि पहुंचाने वाले? **सार्वदेशिक सभा** संसारभर के आर्यों की **सर्वोच्च संस्था** है। उसके अधिकारी कार्यकर्ता सभी प्रतिनिधि सभाओं से आए हैं केवल **दिल्ली** की सभाएं ही क्यों हैं?

**अनोखा स्वार्थी गठजोड़**-श्री धर्मपाल व श्री राजसिंह जी के चुनाव को रोकने के लिए सर्वश्री वधावन, शर्मा जी, बंसल जी आदि-आदि ने बड़ा जोर लगाया था। इनको बहुत बड़ा चालाक व्यापारी, कुर्सी के दीवाने, और आर्यसमाज को हानि पहुंचाने वाले मानकर इनका बड़ा भारी विरोध किया और आज ये दोनों विरोधी गुट एक हैं, भला क्यों? शायद कुर्सी की बंदरबांट पर समझौता हो गया होगा? जैसा मौनी महंत बलदेव से कर लिया गया है?

**होना चाहिए था?**-श्री धर्मपाल जी ने नरेला आर्यसमाज में रहकर अपनी शास्त्री परीक्षा प्राइवेट तौर पर की थी। इनके पूज्य स्वर्गीय पिता **श्री दीपचन्द जी आर्य** एक कट्टर आर्य और स्वामी ओमानन्द जी के बड़े भक्त थे। इसी कारण से हमारा धर्मपाल जी से परिचय और इनके पिताश्री के कारण इन पर बड़ा विश्वास था, परन्तु कुर्सी ने सब कुछ बिगाड़ डाला। भाई धर्मपाल जी के शब्द थे कि **'हम आर्यसमाज में आपसी मेल-मिलाप कर, इसकी काया ही पलट देंगे।'** काया पलट तो हुआ परन्तु समाज का नहीं वधावन जी व धर्मपाल जी का अवश्य हो गया।

यदि **श्री धर्मपाल, श्री राजसिंह व मौनी महन्त बलदेव जी** चाहते तो **परोपकारी सभा** तथा **यतिमण्डल** से मिलकर आर्यनेताओं साधुओं व संन्यासियों की एक **महापंचायत** का गठन कर आर्यसमाज को कोर्टों की झूठ सच्च से बचाया जा सकता था। बड़े शर्म की बात है कि **सारे संसार को आर्य बनाने वाला आर्यसमाज इन अनाड़ी अनार्यों (वकीलों) के अहम् के कारण कोर्टों में उलझा पड़ा है** और आर्यसमाज के त्यागी तपस्वी महाविद्वान् जन-तमाशा देख रहे हैं और राजसिंह जी जैसे सीने कलाकारों की नाटकबाजी और अशिष्ट तथा असभ्य भाषा का आनन्द उठा लोगों से ताली बजवाकर कुर्सी की ओर भागे जा रहे हैं और नारे लगा रहे हैं, **'हमें पद नहीं चाहिए।'**

**दोगली चाल**-तो मान्यवर साधु जी यह २९-५-२००५ का असामयिक राजनैतिक नाटक क्या था? जब स्वामी अग्निवेश जी व प्रो० शेरसिंह जी यदि कांग्रेस की मदद से कब्जा करके बैठे हैं, **तो कांग्रेस के मुख्यमंत्री हुड्डा जी को क्यों बुलाकर अपनी शक्ति** का प्रदर्शन कर एक झूठा रोब डाला गया?

यह तो दोगली गंदी चाल है, साधुओं की संन्यासियों की नहीं, यह तो **राजसिंह व शर्मा जी जैसे अनाड़ियों का खेल है, महंत जी आपका नहीं।**

**आर्यसमाज के हितैषी सद् आर्यों से निवेदन**-आप सभी आर्यसमाज के हितैषी सज्जनों से प्रार्थना है कि आप भाषा के भावों में बहकर वाक्-पटु, सिने-कलाकारों की नीयत को ध्यान से अवलोकन करें, श्री राजसिंह जी जैसे लोग हरयाणा के सभी जनों को **जाट** मानते हैं और जाटों को सबसे बड़ा **अजगर** मानकर श्री राजसिंह जैसे **जरगर** चालाक व्यापारियों के महागुरु, स्वामी ओमानन्द जी व प्रो० शेरसिंह जी आदि-आदि को अजगरों में होने से आदमी ही नहीं मानते हैं। **जिस स्वामी ओमानन्द जी जैसे महान् त्यागी तपस्वी लोगों ने अपना सर्वस्व आर्यसमाज के लिए स्वाहा कर दिया,** परन्तु वे रहे फिर भी **जाट** ही, भाई राजसिंह जिस मौनी महन्त को आप आगे करके ईंट से ईंट भिड़ाकर कुर्सी पर आरूढ़ होना चाहते हैं, वे भी तो **जाट हैं, अजगर हैं** और इनके साथी राममेहर जी आदि-आदि भी।

आर्यसमाज जन्म से जाति-पाति को नहीं मानता, हम तो कर्म से मानते हैं, जो आर्यसमाज के मालिक बनने की चिंता में दुबले हुए जा रहे हैं वे आज भी शर्मा हैं, बंसल हैं, वधावन हैं, परंतु **आर्य** नहीं हैं।

आप सभी भली-भांति जानते हैं कि **स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, प्रो० शेरसिंह जी, सामवेदी जी** जैसे आर्यनेताओं का अपमान अनादर करने वाले बंसल आदि-आदि आज आर्यसमाज के रखवाले बनने का यत्न कर रहे हैं और इसी प्रकार हरयाणा में भी उनके सभी साथी जो सदा **स्वामी ओमानन्द जी** के विरोधी थे, स्वर्गवास के बाद श्री मौनी महन्त जी सबको आगे ले आए हैं, जिन्होंने अंतिम समय भी स्वामी जी को **नमन नहीं किया**, आज स्मृति दिवस मना रहे हैं। यह सब क्या है? सावधान रहें!

-मा० पूर्णसिंह आर्य, एम.ए.एम.एड.,
संस्थापक वैदिक चेतनाश्रम नरेला, दिल्ली-४०

# राष्ट्रभाषा की जीत हुई

रोहतक १० जून। अवसर था महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में तीन दिन से चल रहे उत्तर क्षेत्रीय विश्वविद्यालय कुलपति सम्मेलन के समापन सत्र का। राष्ट्रभाषा परिषद् हरयाणा का शिष्टमंडल कुलपतियों से मिला और उन्हें एक पंचसूत्री ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में राष्ट्रभाषा हिन्दी में कार्य करने का भी एक विशेष सूत्र था। ज्ञापन पढ़कर जयपुर से पधारे राजस्थान राज्य उच्च शिक्षा निदेशक सेवानिवृत्त श्री प्रेम भटनागर ने कहा कि मुझे पश्चात्ताप है कि कल के सत्र में मैं देखादेखी अंग्रेजी में बोल गया। आज हिन्दी में ही बोलूंगा और वे समापन सत्र से पहले सत्र में हिन्दी में ही बोले। कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर के कुलपति श्री अब्दुल वाहिद ने हिन्दी का समर्थन करते हुए बताया कि कश्मीर वि०वि० ने पिछले वर्ष से शिक्षा स्नातक परीक्षा में हिन्दी माध्यम की छूट दी है।

अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष श्री वाचस्पति उपाध्याय ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि भाषाएं कितनी भी पढ़ें अच्छा है लेकिन राष्ट्रभाषा हिन्दी हमारा आत्मगौरव है। मेरे अन्दर हिन्दी के प्रति एक वेदना है। उन्होंने अपना सर्वप्रभावी चमत्कारिक भाषण पूरा का पूरा हिन्दी में ही दिया। महर्षि दयानन्द वि०वि० के स्वच्छ व कर्मठ छविवाले प्रस्तोता श्री प्रदीप कासनी ने कहा कि अध्यक्ष जी ने हिन्दी में बोलने की हिम्मत दी है अतः मैं हिन्दी में ही बोलूंगा। उन्होंने अपना धन्यवादी वक्तव्य हिन्दी में दिया। मुख्य अतिथि शिक्षामंत्री श्री फूलचंद मुलाना ने अंग्रेजी में शुरुआत करके समापन में हिन्दी का खुलकर प्रयोग किया। 'राष्ट्रभाषा परिषद्' ने शिक्षामंत्री जी को भी हिन्दी के विकास व शिक्षा परिवर्तन बारे ज्ञापन दिया। मंत्री जी ने परिषद् के शिष्टमंडल को आश्वस्त किया कि हरयाणा में हिन्दी की अवहेलना नहीं होगी।

अनेक कुलपति, निदेशक व प्रोफेसरों ने हिन्दी को बढ़ावा देने का समर्थन किया जिनमें विशेष रूप से श्री दयानन्द डोंगांकर महासचिव वि०वि० संघ, श्री चन्द्रशेखर मिथाला डीन जीव विज्ञान विभाग कुमायूं वि०वि०, म०द०वि० के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर श्री अजीतसिंह राणा, नेता जी सुभाष तकनीकी संस्थान दिल्ली के निदेशक श्री डॉ० रणजीतसिंह, पंतनगर कृषि वि०वि० जैव विज्ञान प्रोफेसर श्री दत्तप्रसाद, देवभूमि संस्कृति वि०वि० के श्री मिश्र, करनाल डेयरी संस्थान के निदेशक प्रमुख हैं। परिषद् के ज्ञापन में वि०वि० में वेद यज्ञ योग व आयुर्वेद विभाग खोलने, रैगिंग, नशों पर प्रतिबन्ध व विश्वविद्यालय में परिधान नियम बनाने की मांग रखी गई है। परिषद् ने हरयाणा विधान सभा में श्री आनन्दसिंह दांगी आदि द्वारा हिन्दी में कार्यवाही चलाने की मांग की प्रशंसा की है। राष्ट्रभाषा परिषद् के शिष्टमंडल में श्री डॉ० जगदेवसिंह श्री महावीर 'धीर' व श्री हरीश आर्य विशेष रूप से सम्मिलित थे।

-महावीर 'धीर'-महासचिव, रा०प०, हरयाणा

# आर्यसमाजियों का कुर्सी से चिपको आन्दोलन

अहाहा, वे भी क्या दिन थे जब आर्यसमाज से जुड़कर लोग न केवल स्वहित के लिये बल्कि समाजहित की भावना से अपना तन, मन, धन और अपना सर्वस्व भी न्यौछावर कर देने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते थे। संस्था का पदाधिकारी बनना उनके लिये कोई महत्त्व की बात नहीं थी पर उनके कार्यों से समाज सुवासित था। यदि कोई सिद्धान्त पालन में किसी कारण से असमर्थ होता था तो वह स्वत: आर्यसमाज की सदस्यता से त्यागपत्र दे देता था, पर आज वे दिन हवा हो गये। आर्य नाम के गुणहीन कथित आर्यों की करनी के कारण आज आर्यसमाज रूपी माँ की दुर्दशा का कोई वारा न्यारा नहीं है। सभी अपने आप में मस्त हैं, किस-किस बात का रोना रोया जाय। यहां तो कुयें में ही भांग पड़ी हुई है। कतिपय लोग अपने निजी स्वार्थों से वशीभूत होकर पूरी संस्था को अविश्वसनीय रूप से हानि पहुंचा रहे हैं और हम मौन होकर ऐसा देखने के लिये अभिशप्त हैं।

उत्तरांचल में कभी सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा ने वनस्पति की रक्षा एवं प्रकृति के संरक्षण के लिये 'चिपको आन्दोलन' चलाया था तो राजस्थान में विश्नोई समाज के हजारों लोगों ने पेड़-पौधों की रक्षा के लिये वृक्ष से चिपककर राजा के सैनिकों की तलवार से अपनी जान भी गवां दी थी, जिसे केवल पढ़ या सुनकर अभी भी रोमांच होता है। पर आज आर्यसमाज के नाम पर नीचे से लेकर ऊपर तक ऐसे-ऐसे कथित आर्यसमाजी भर गये हैं जो आर्यसमाज को खुला चारागाह समझकर आर्यसमाज की भौतिक धन-सम्पदा को लूटकर मालामाल होने के षड्यंत्र में आजीवन कुर्सी से चिपके रहना चाहते हैं उनका कुसी से मोह तभी छूटता है जब मृत्यु उन्हें अपने आगोश में ले लेती है अन्यथा ये कुर्सीप्रेमी, झगड़ालू और विवादास्पद लोगों ने अपने आस-पास ऐसे-ऐसे नवरत्नों को इकट्ठा कर लिया है, जिसे देखकर असली रत्न भी अपनी आभा नहीं फैला पाता है। आर्यसमाज से जुड़े हुये लोग आत्मचिन्तन करें कि इसका क्या समाधान हो? मेरे विचार से विवादास्पद लोग स्वयं ही पद छोड़कर नि:स्वार्थ भाव से बिना किसी पद के आर्यसमाज का कार्य करें या आर्यसमाज पर मेहरबानी करके वे कथित लोग अपनी मेरबानी का टोकरा आर्यसमाज पर न फोड़ें। सार्वदेशिक व प्रान्तीय सभाओं के आय-व्यय, अन्तरंग बैठक के निश्चय इत्यादि की विस्तृत सूचना सभा के पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो। सार्वदेशिक के प्रधान, मंत्री और कोषाध्यक्ष का सीधा चुनाव प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के मनोनीत प्रतिनिधियों के स्थान पर देश के सभी आर्यसमाजों के सदस्यों के मतदान द्वारा हो, सभी प्रान्तीय सभाओं की नियमावली एक हो, सार्वदेशिक की नियमावली से १०(ग) का प्रावधान तत्काल हटाया जाये। किसी भी सभा में कोई भी पदाधिकारी कितना ही योग्य हो, वह एक निश्चित अवधि के पश्चात् किसी भी स्थिति में उस सभा की अन्तरंग का सदस्य या पदाधिकारी न हो। अपवाद में उसे आमंत्रित किया जा सकता है। ऐसा होने पर मेरे विचार से प्रबंध सम्बन्धी विवादों पर एक सीमा तक अंकुश लग सकेगा। सार्वदेशिक सभा का कार्यालय दिल्ली में रहने के कारण दिल्ली के आर्यसमाजों को सतत जागरूक रहकर नीर-क्षीर-विवेकी बनना चाहिये। दिल्ली में आज जो भी स्थिति है या थी उसके सर्वाधिक दोषी मेरी दृष्टि में दिल्ली के आर्यसमाज हैं, जो सार्वदेशिक के पदाधिकारियों के आर्यसमाज विरोधी कार्यों पर '**कोऊ नृप होये हमें का हानि, चेरी छाड़ का होऊव रानी**' के सदृश मन्थरा प्रवृत्ति के दास बने हुये हैं और थे।

आर्यसमाज के संगठन का आधार लोकतंत्र पर आधारित है और कोई भी लोकतंत्र तभी सफल होगा जब इसके प्रहरी जागरूक होंगे। निष्क्रियता से लोकतंत्र में उत्पन्न विकृतियों का परिणाम आज कुर्सी से चिपको आन्दोलन का रूप ले चुका है। आज आवश्यकता है कि जो अपने कार्यों से आर्यसमाज को धरती से चिपकाने में लगे हुये हैं, उनसे हम यथायोग्य व्यवहार कर उन्हें इस बात का महसूस करावें कि दूसरों के साथ वह व्यवहार न करें जो स्वयं के लिये न कर सकें। संस्था के हित में व्यक्तिगत लाभ-हानि की परवाह न करते हुये हम वही करें जो ठीक हो। '**उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत**' का पालन ही हमें '**तमसो मा ज्योतिर्गमय**' की ओर ले जा सकता है।

-दयाराम पोद्दार, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी श्रद्धानन्द पथ, रांची

## हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिह्नों पर चलें-डॉ० सांगवान



आर्यसमाज का राष्ट्र के नवनिर्माण में विशेष योगदान रहा है। धार्मिक व सामाजिक बुराइयों को मिटाने का श्रेय केवल आर्यसमाज को ही है। नारीशिक्षा के संदेशवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे-इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आपसी मतभेद भुलाकर सरस्वती जी के पदचिह्नों पर चलें-ये शब्द आर्यसमाज कोर्ट रोड के प्रधान एवं स्कूल प्रबंधक डॉक्टर आर.एस. सांगवान ने योग प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर कहे। तीन दिन तक चले इस शिविर में ४० विद्यार्थियों ने भाग लिया। २१ मई, २२ मई एवं २३ मई तीनों तीन सिरसा नगर के योगाचार्य श्री कुलवन्त राय जी ग्रोवर ने छात्रों को योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिया। डॉक्टर सांगवान ने उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर नगर के प्रसिद्ध अधिवक्ता श्री जगदीश चोपड़ा, श्री राजकुमार वर्मा, श्री कंवरसिंह आर्य, श्री भूपसिंह गहलोत ने भी सम्बोधित किया। डॉक्टर सांगवान ने प्रिंसिपल कृष्णलाल वोहरा एवं अन्य अध्यापकों के योगदान की सराहना की।

**-कृष्णलाल वोहरा, प्रिंसिपल, आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, सिरसा (हरयाणा)**

# वेद में ईश्वर-प्रार्थना

**❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली**

विद्वान् लोग शुभकर्मों के अनुष्ठान के पश्चात् सब सुखों के दाता परमेश्वर की कृपा से स्तुति को तथा सब सुखों के साधन श्रेष्ठ प्राण को प्राप्त करते हैं। जो परमेश्वर अपनी व्याप्ति से सब जगत् में प्राप्त है अर्थात् सर्वान्तर्यामी है, सब जगत् का निर्माता है, शुद्धस्वरूप है, सर्वशक्तिमान् है, अपनी अनन्त महिमा और पराक्रम से विमान आदि यानों के समान सब लोकों का रचयिता है। योगिजन उसी परमेश्वर की सदा उपासना करें। जो विद्वान् लोग परमेश्वर की ही उपासना करते हैं, वे ही सुखी रहते हैं, दूसरे नहीं। यजुर्वेद एकादश अध्याय के ७-८वें मन्त्रों में परमेश्वर की उपासना और प्रार्थना विषय में वर्णन है, वह इस प्रकार है-

**अथ किमर्थं परमेश्वर उपास्य: प्रार्थनीयश्चास्तीत्याह**=अब किसलिये परमेश्वर की उपासना और प्रार्थना करनी चाहिये, इस विषय का उपदेश किया है-

**देव सवित: प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।**
**दिव्यो गन्धर्व: केतपू: केतन्न: पुनातु वाचस्पतिर्वाचं न स्वदतु॥** (यजुर्वेद ११।७)

**अर्थ**-हे (देव) सत्य योगविद्या के द्वारा उपासना के योग्य, दिव्य विज्ञान के दाता (सवित:) सब सिद्धियों के उत्पादक भगवन्! आप (न:) हमारे (भगाय) अखिल ऐश्वर्य के लिये (यज्ञम्) सुखदायक व्यवहार को (प्र+सुव) उत्पन्न कीजिये, (यज्ञपतिम्) इस यज्ञ के पालक को (प्र+सुव) उत्पन्न कीजिये। आप (गन्धर्व:) पृथिवी को धारण करने वाले, (दिव्य:) शुद्ध गुण, कर्मों में सर्वश्रेष्ठ, (केतपू:) विज्ञान से पवित्र करने वाले हो, सो (न:) हमारे (केतम्) विज्ञान को (पुनातु) पवित्र कीजिये। आप-(वाच:) सत्यविद्या से युक्त वेदवाणी के (पति:) प्रचार से रक्षक हो। सो (न:) हमारी (वाचम्) वाणी को (स्वदतु) स्वादिष्ट=मधुर कीजिये।

**भावार्थ**-जो सकल ऐश्वर्य से युक्त, शुद्ध ब्रह्म की उपासना करते हैं, योग की प्राप्ति के लिये प्रार्थना करते हैं वे अखिल ऐश्वर्य, आत्मा शुद्धि और योग को प्राप्त कर सकते हैं। जो जगदीश्वर की वेदवाणी के समान अपनी वाणी को शुद्ध कर लेते हैं वे सत्यवादी होकर सब क्रियाओं के फलों को प्राप्त करते हैं।

**ईश्वर प्रार्थना**-हे सत्य योग विद्या से उपासना करने योग्य, दिव्य विज्ञान के दाता, सकल सिद्धियों के उपासक, भगवन्! आप हमारे अखिल ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये सुखद व्यवहार को उत्पन्न कीजिये, इस यज्ञ के पति=पालक को उत्पन्न कीजिये। आप पृथिवी को धारण करने वाले हो। शुद्ध गुण, कर्मों में सर्वश्रेष्ठ हो। अपने विज्ञान से पवित्र करने वाले हो। सो हमारे विज्ञान को पवित्र कीजिये। हमें अखिल ऐश्वर्य प्रदान कीजिये। आत्मा को शुद्ध कीजिये। योग को प्राप्त कराइये। आप सत्यविद्या से युक्त वेदवाणी के प्रचार से हमारे रक्षक हो। सो हमारी वाणी को अपनी वेदवाणी के समान शुद्ध कीजिये। हमारी वाणी को स्वाष्टि=मधुर बनाइये।

परमेश्वर की उपासना और प्रार्थना किसलिये करें-जो लोग सकल ऐश्वर्य से सम्पन्न शुद्ध ब्रह्म की उपासना और योग आदि की प्राप्ति के लिये प्रार्थना करते हैं, वे ऐश्वर्यवान शुद्धात्मा योगी बन जाते हैं। जगदीश्वर की वेदवाणी के समान उनकी वाणी शुद्ध हो जाती है। उनके सब कर्म फलवान् होते हैं।

**पुनस्तमेव विषयमाह**=परमेश्वर की उपासना और प्रार्थना किसलिये करनी चाहिये, इसका फिर उपदेश किया है-

**इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यꣳ सखिविदꣳ सत्राजितं धनजितꣳ स्वर्जितम्। ऋचा स्तोमꣳ समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्गायत्रवर्त्तनि स्वाहा॥** (यजुर्वेद ११।८)

**अर्थ**-हे (देव) सत्यकामनाओं को पूर्ण करने वाले (सवित:) अन्तर्यामी रूप से आत्मा में प्रेरणा करने वाले जगदीश! आप-(न:) हमारे (इमम्) इस (देवाव्यम्) विद्वानों वा दिव्य गुणों के रक्षक, (सखिविदम्) मित्रों को जानने वाले, (सत्राजितम्) सत्य को विजय करानेहारे, (धनजितम्) धन को उन्नत करने वाले, (स्वर्जितम्) सुख को बढ़ाने वाले (ऋचा) ऋग्वेद से (स्तोमम्) स्तुति करने योग्य, (यज्ञम्) विद्या और धर्म से मेल कराने वाले यज्ञ को (स्वाहा) सत्याचरण और सत्यभाषण से (प्रणय) प्रदान कीजिये। और (गायत्रेण) गायत्री आदि छन्द के दृष्टान्त से (गायत्रवर्त्तनि) गायत्री के समान मार्ग का अनुसरण करने वाले (बृहत्) महान् (रथन्तरम्) रमणीय यानों से प्राप्त करने योग्य इस यज्ञ (सम्+अर्धय) बढ़ाइये।

**भावार्थ**-जो लोग ईर्ष्या, द्वेष आदि दोषों को छोड़कर ईश्वर के समान सबके साथ मित्रता करते हैं, वे बढ़ सकते हैं।

**ईश्वर-प्रार्थना**-हे सब कामनाओं को पूर्ण करने वाले, अन्तर्यामी रूप से आत्मा में शुभकर्मों की प्रेरणा करने वाले जगदीश! आप हमें सत्याचरण और सत्यभाषण से यज्ञ को प्राप्त कराइये और इस महान् यज्ञ को बढ़ाइये। जो यज्ञ विद्वानों और दिव्यगुणों का रक्षक है, मित्रों को जनानेवाला है अर्थात् सबके साथ मित्रता का आचरण सिखलाता है। सत्य को बढ़ाता है। धन को बढ़ाता है, सुख को बढ़ाता है, ऋग्वेद जिसकी स्तुति गाता है। यह यज्ञ, विद्या और धर्म से संयुक्त करने वाला है। गायत्री आदि छन्द इसी की महिमा को गा रहे हैं। इसी के मार्ग का निर्देश कर रहे हैं। यह यज्ञ महान् है। जहां यज्ञ हो वहां सब लोग रथों=रमणीय यानों में बैठकर जायें और यज्ञ को बढ़ावें।

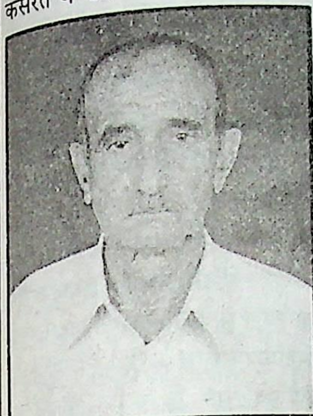
परमेश्वर की उपासना और प्रार्थना किसलिये करें-जो लोग ईर्ष्या, द्वेष आदि दोषों को छोड़कर ईश्वर के समान यज्ञ आदि शुभ कार्यों में सबके साथ मित्रता का व्यवहार करते हैं वे वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

जीवन परिचय-

# मा० दीपचन्द आर्य

## २-१०-१९३८ से ६-६-२००५

मा० दीपचन्द आर्य का जन्म एक कृषक परिवार में हुआ। इनके पिता चौ० बदलूराम आर्यसमाजी थे। मा० दीपचन्द जी की बाल्यकाल से ही कसरत व खेल में रुचि रही। जो आगे चलकर उनके जीवन का एक अंग बन गई। उन्होंने सरकारी सेवा (पी.टी.आई.) से वर्ष १९९२ में ऐच्छिक सेवानिवृत्ति प्राप्त कर समाजसेवा में जुट पड़े। युवा काल में मास्टर जी ने पहाड़ा मौहल्ला स्थित जाटान चौपाल के बनवाने में विशेष योगदान दिया। मा० दीपचन्द जी के दिशानिर्देश पर ही उनके परिवार ने श्रीपाल भारती स्कूल की स्थापना १९७२ में की जो कि आज मंदीप सीनियर सैकेण्डरी स्कूल (स्थायी मान्यता प्राप्त) के रूप में आपकी सेवा कर रहा है। मास्टर जी ने आधुनिक शिक्षा को ध्यान में रखते हुए एस. पाल स्कूल की स्थापना की जो सी.बी.एस.ई. बोर्ड से संबन्धित है। इस स्कूल में कम्प्यूटर शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक एवं आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया गया है। इस स्कूल में अनाथालय के बच्चे नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।



मा० दीपचन्द आर्य ने आर्यसमाज को बढ़ावा देने के लिए पहाड़ा मौहल्ला स्थित जाटान चौपाल में आर्यसमाज की स्थापना की। मा० जी इस आर्यसमाज के संस्थापक अध्यक्ष थे। आर्यसमाज बाबरा मौहल्ला के प्रधान पद पर वर्तमान समय में सुशोभित थे उन्होंने इस पद को कई बार संभाला। आर्यसमाज के चल रहे आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के प्रबंधक पद पर भी कार्यरत थे। मा० दीपचन्द आर्य दयानन्दमठ की वर्तमान कार्यकारिणी के आजीवन सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भी सदस्य थे।

मा० दीपचन्द आर्य का दयानन्दमठ स्थित लखीराम अनाथालय की स्थापना में विशेष योगदान रहा। वे वर्तमान में संस्था के मंत्री पद पर रहते हुए सेवा में जुटे थे। उनके मन में समाजसेवा की जो टीस बाल्यकाल से पनपी थी वह जीवन के अन्तिम समय तक जुटे रहने पर भी समाप्त नहीं हुई। उनके मन में ऐसी भावना थी कि समाज के लिए कुछ ऐसा किया जाये कि आने वाली पीढ़ी उसमें लग्न से स्वयं को जोड़कर अपना जीवन सुधारे। उनका एक उद्देश्य था कि मनुष्य अपने तथा अपने परिवार के लिए सब कुछ करता है, मनुष्य का असली जीवन उद्देश्य समाज की सेवा करना है।

मा० दीपचन्द आर्य सभी पंथों में आस्था रखने वाले समाजसेवी थे। स्व० मा० जी का नया बस अड्डा के पास गुरुद्वारा बनाने के लिए आवश्यक जमीन प्रदान कर उसकी स्थापना में विशेष योगदान रहा है। उन्होंने हमेशा ही अपना जीवन लाचार निराश लोगों की सेवा के लिए अर्पित रखा। इसी कड़ी में एक बेसहारा विकलांग महिला मुख्त्यारी की जमीन व मकान बनाने के लिए वित्तीय सहायता की।

अच्छे समाजसेवी के नाते उपायुक्त रोहतक द्वारा मा० दीपचन्द को दो लाख रुपये की सम्मानित राशि प्रदान की जानी थी और मा० जी का उद्देश्य यही रहा कि उपरोक्त राशि अनाथालय एवं अनाथ बच्चों की सेवा में लगाई जाये।

दिनांक १७-६-२००५ को उनकी श्रद्धाञ्जलि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, बलिदान भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में सायं ४ से ५ बजे तक में होगी। सभी सम्बन्धित साथी हमारे परिवार को आशीर्वाद प्रदान कर कृतार्थ करें।

**-कुलदीप आर्य एवं मनदीप आर्य एवं समस्त सिन्धु परिवार**

## हांसी में चरित्र-निर्माण शिविर का आयोजन

आर्यवीर दल हांसी द्वारा सात दिवसीय चरित्र-निर्माण शिविर का शुभारम्भ दिनांक १४ जून से २० जून २००५ तक दयानन्द विद्या निकेतन पब्लिक स्कूल हांसी में किया जायेगा। धर्मप्रेमी सज्जन अवश्य लाभ उठायें। -मंत्री

## स्वामी धर्मानन्द जी को सम्मानित किया गया

कालाहाण्डी, नवापारा, बौद्ध, फुलवाणी इन चार जिलों का आञ्चलिक ग्राम्य बैंक के संगठन का नाम ''कालाहाण्डी आञ्चलिक ग्राम्य बैंक'' है। इसकी रजत-जयन्ती अत्यन्त समारोह के साथ भवानीपटना में स्थानीय सांसद श्री विक्रमसिंह देव जी की अध्यक्षता में टाउन हाल में मनाई गई। इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में भुवनेश्वर स्टेट बैंक के मुख्य प्रबन्धक श्री वी.एस.जी. चन्द्रशेखर थे।

इसी शुभावसर पर उड़ीसा और छत्तीसगढ़ आदि के आदिवासी क्षेत्रों में सेवा करने के उपलक्ष्य में महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी का अभिनन्दन प्रशस्ति-पत्र तथा शाल श्रीफल के साथ किया गया।

इसी अवसर पर गुरुकुल आश्रम आमसेना के ब्रह्मचारियों ने आकर्षक आसन, प्राणायाम आदि का प्रदर्शन भी किया। समारोह मनाने के लिए बैंक के विभिन्न शाखाओं के हजारों अधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## आर्यसमाज भोपाल की ओर से स्वागत एवं अभिनन्दन

मध्य भारत में वैदिक संस्कृति के प्रचारक एवं रक्षक वयोवृद्ध आर्यसज्जन श्री गौरीशंकर जी कौशल के आग्रह पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ८ मई को आर्यसमाज दयानन्द चौक (जुमेराती) गये थे। इसी शुभ अवसर पर श्री कौशल जी ने पूज्य स्वामी जी के भव्य स्वागत की व्यवस्था की। कार्यक्रम के अध्यक्ष मध्यप्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री देवप्रकाश जी खन्ना थे। इस अवसर पर मध्यप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा तथा मध्य भारतीय सभाओं प्रधानों के साथ भोपाल की सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों ने भी भव्य स्वागत किया, उन्हें फूल माला से लाद दिया तथा आर्यसमाज भोपाल की ओर से भव्य अभिनन्दन-पत्र के साथ शाल श्रीफल भी अर्पित किए गए। स्वागत के इसी प्रकार के कार्यक्रम आर्यसमाज मन्दसोर, रतलाम आदि में भी आयोजित किये गए थे।

**-कुञ्जदेव मनीषी उपाचार्य**

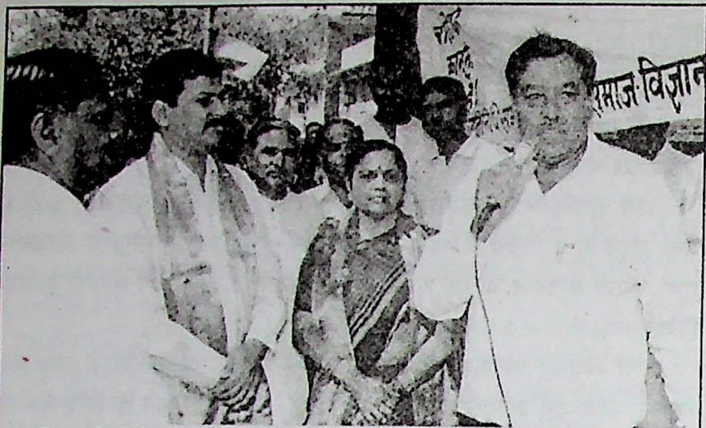
## ऋषिवर जैसे बनो तपस्वी

आर्यावर्त के वीर सपूतो! वैदिक धर्म निभाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
जगद् गुरु दयानन्द ने, आर्यसमाज बनाया था।
करो सभी शुभकर्म रातदिन, दुनियां को समझाया था।
सच्चे ईश्वर भक्त बनो तुम, वैदिक पथ दर्शाया था।
विष के प्याले पी-पी जग को, वेदामृत पिलाया था।
परोपकारी बनो आर्यो! मानवता अपनाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
दुष्ट विधर्मी, अत्याचारी, जग में बढ़ते जाते हैं।
गऊहत्या कर रहे रात-दिन, पापी ना दहलाते हैं।
ऋषियों के सुत-सुता हजारों, धर्म सनातन छोड़ रहे।
लालच में फंस कुरान, बाइबिल से वे नाता जोड़ रहे।
जन्मजाति दो मिटा और बिछुड़ों को गले लगाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
धन-दौलत और सोना-चांदी, यहीं पड़ा रह जाता है।
सच्चा साथी धर्म जगत् में, अंतिम साथ निभाता है।
लोभी, क्रोधी, अत्याचारी, कभी नहीं सुख पाता है।
ईश्वरभक्तों, सदाचारियों का यह जग यश गाता है।
ऋषिवर से सब बनो तपस्वी, करके त्याग दिखाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
ऊंचा पद भारी सम्पत्ति, पाना नहीं बड़प्पन है।
बड़ा वही माना जाता है, काबू में जिसका मन है।
पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द को तुम याद करो।
आपस में मत लड़ो आर्यो! जीवन मत बर्बाद करो।
'नन्दलाल निर्भय' जागो अब, जग में धूम मचाओ तुम॥
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥

-पं० नन्दलाल 'निर्भय' पत्रकार, ग्राम-पत्रालय बहीन, जनपद फरीदाबाद

# तम्बाकू सेवन एक धीमा जहर : सुमन शृंगी

## तम्बाकू विरोधी एवं कैंसर जागरूकता सप्ताह का शुभारम्भ



बालविवाह के विरोध में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक भूपेन्द्र दक, पूर्व महापौर सुमन शृंगी, जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा सम्बोधित करते हुए।

कोटा २५ मई। संवेदना सेवा एवं रिसर्च फाउण्डेशन समिति की ओर से आर्यसमाज विज्ञाननगर के तत्त्वावधान में विश्व तम्बाकू विरोधी एवं कैंसर जागरूकता विरोधी सप्ताह के शुभारम्भ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती सुमन शृंगी पूर्व महापौर एवं प्रदेशाध्यक्ष भाजपा महिला मोर्चा ने कहा कि तम्बाकू व इसके विभिन्न उत्पाद सेहत पर एक बड़ा हमला है जिससे हार्ट, कैंसर सहित दर्जनों बीमारियां होती हैं और पैसे की तबाही होती है। यह एक मीठा जहर है जिसके द्वारा धीमी गति से आत्महत्या का यह सबब बनता है।

श्रीमती सुमन शृंगी आर्यसमाज विज्ञाननगर के द्वार पर उपस्थित सैकड़ों दिहाड़ी मजदूरों को सम्बोधित कर रही थी। कार्यक्रम के मुख्यवक्ता तथा संवेदना सेवा समिति के चेयरमैन डॉ. आर.सी. साहनी ने तेज रफ्तार से बढ़ते तम्बाकू के उत्पादों के प्रचलन पर गहन चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हर सात सैकेण्ड में एक मौत तम्बाकू जनित रोगों से होती है और क्योंकि भारत में गुटखा, जर्दा, बीड़ी आदि का अधिक उपयोग होने के कारण पश्चिमी देशों की अपेक्षा पांच गुणा अधिक मुख कैंसर मरीज होते हैं। उन्होंने चित्रों के माध्यम से उपस्थित श्रमिक स्त्री-पुरुषों को तम्बाकू जनित रोगों की भयानकता की जानकारी देते हुए तम्बाकू का सेवन तुरन्त बन्द करने तथा भविष्य में सेवन न करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि कोई भी धर्म नशा करने की इजाजत नहीं देता। तम्बाकू मुक्त समाज बनाने के लिये हम सभी को अपनी भागीदारी का निर्वाह करते हुए इस कार्यक्रम को आन्दोलन बनाना होगा तथा शुरू होने से पहले समाप्त होके प्रयास करने होंगे। कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्यसमाज से करने के लिए डॉ० साहनी व संवेदना दोनों के हम आभारी हैं।

इस अवसर पर श्रद्धानन्द होम्योपैथिक चिकित्सालय के विशेषज्ञ डॉ० के.एल. दिवाकर, डॉ. मनोज गुप्ता ने तम्बाकू सेवन से होने वाले रोगों से बचाव हेतु होम्योपैथिक चिकित्सा की जानकारी दी तथा लगभग २५० स्त्री-पुरुषों को निःशुल्क होम्योपैथिक दवाइयों का वितरण भी आर्यसमाज की ओर से किया गया।

आर्यसमाज विज्ञाननगर के मंत्री जे.एस. दूबे ने कहा कि आर्यसमाज नशामुक्ति केन्द्र की शीघ्र स्थापना की जावेगी। कैंसर रोगियों को आवश्यक जांच परामर्श हेतु डॉ. साहनी जी के पास भेजा जाता है।

कार्यक्रम के अन्त में सुमन शृंगी की उपस्थिति में डॉ. आर.सी. साहनी ने उपस्थित श्रमिकों जो तम्बाकू पान, बीड़ी, पर्दा, गुटखा, सिगरेट का नशा छोड़ना चाहते थे को तम्बाकू नशा छोड़ने की हाथ उठाकर शपथ दिलाई।

इसी अवसर पर दो बालिकाएं भी डॉ. साहनी के पास सुन्नी ११ वर्ष एवं रेणुका १० वर्ष जो पी.एन.टी. कॉलोनी के पास रहती हैं, सुन्नी ने बताया कि वह लगभग १० पुड़िया, रेणुका ५ पुड़िया जर्दा, गुटखा रोजाना खा जाती है तथा इस बुरी आदत को छोड़ना चाहती है। कार्यक्रम में महेश गुप्ता, श्रीमती अनिता शर्मा, श्रीमती गीता चड्ढा, मनमोहन अग्रवाल, सुशान्तकुमार, मोहनलाल का सराहनीय योगदान रहा।

**-डॉ० आर.सी. साहनी, अध्यक्ष, संवेदना सेवा एवं रिसर्च फाउण्डेशन समिति**

# 'तम्बाकू छोड़ो-जीवन मोड़ो' कार्यक्रम सम्पन्न

कोटा, ३१ मई। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी की ओर से केशवपुरा चौराहा के पास दिहाड़ी मजदूरों के लिए 'तम्बाकू छोड़ो-जीवन मोड़ो' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि संवेदना सेवा समिति के अध्यक्ष डॉ. आर.सी. साहनी ने करीब एक हजार लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मजदूरों का सेहतमंद होना जरूरी है। तम्बाकू युक्त गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, दंत-मंजन सेहत पर बुरा असर डालते हैं। इसके सेवन से राजस्थान में हर रोज सौ लोगों की मौत हो रही है। देश में तम्बाकूजनित कैंसर, दमा, टी.बी., लकवा, हृदयरोग भी बढ़ रहे हैं। आने वाली पीढ़ी को बचाना है तो नशे की इस आग को समय रहते बुझाना होगा। उन्होंने एक व्यक्ति को मंच पर बुलाया और सिगरेट का धुंआ सफेद रुमाल पर छोड़ने को कहा। धुएं से रुमाल पर लाल-काले दाग देखकर लोग स्तब्ध रह गए। डॉ. साहनी ने कहा कि एक कश धुआं यह हाल करता है तो अधिक धूम्रपान से क्या हाल होगा। तम्बाकू सेवन करने वाला व्यक्ति अपने जीवन में साढ़े तीन लाख रुपया बीड़ी-सिगरेट तम्बाकू पर खर्च करता है तथा बीमारियों का खर्चा अलग से होता है। यह लत बुरी व बर्बाद करने वाली है अतः इस बुरी लत को छोड़ने में ही भलाई है।

अध्यक्षता कर रहे आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि तम्बाकू छोड़कर जीवन को मोड़ना होगा। गाढ़े पसीने की कमाई से तम्बाकू जनित बीमारियां नहीं खरीदें। पैसों को बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर खर्च करें। समय आ गया है कि तम्बाकू के खिलाफ समाज के हर वर्ग को जागरूक किया जाए। विशिष्ट अतिथि हाडोती क्षेत्रीय वेदप्रचार समिति के अध्यक्ष रामप्रसाद याज्ञिक ने तम्बाकू के सेवन से होने वाली की जानकारी दी। कार्यक्रम में केशवपुरा दुकानदार संघ के संरक्षक रामकंवर आर्य, आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर के प्रधान श्रीचंद गुप्ता, आर्यवीर दल के प्रभारी किशनलाल तथा समाजसेवी महावीरप्रसाद वर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम के दौरान सैकड़ों मजदूरों ने शपथ ली कि भविष्य में तम्बाकू का सेवन नहीं करेंगे। साथ ही प्रस्ताव पारित किया गया कि केन्द्र व राज्य सरकार से तम्बाकू उत्पादों पर कैंसर टेक्स लगाकर इनके दाम बढ़ाने की मांग की जाएगी ताकि लोग तम्बाकू उत्पाद नहीं खरीद पाएं और कैंसर टेक्स से मिले पैसों को सरकार कैंसर रोगियों के उपचार में खर्च करे।

**-अर्जुनदेव चड्ढा**

# विधवा की अन्तर्वेदना

**( रचयिता पं० बस्तीराम शर्मा आर्योपदेशक )**

पं० बस्तीराम जी लोककवि थे। अपने भजनों के द्वारा जनमानस का जो स्वाभाविक चित्रण करते थे वह अद्वितीय होता था। उनकी पुस्तक **अग्निबाण** से यहां एक भजन उद्धृत किया है। उन्होंने ११७ वर्ष की आयु तक इकतारे पर भजन गाकर समाज-सुधार का कार्य किया था।

पण्डित जी की उपलब्ध सभी रचनाओं का प्रकाशन '**पण्डित बस्तीराम सर्वस्व**' नाम से एक ही जिल्द में शुद्ध और सुन्दर रूप में बढ़िया कागज पर प्रकाशित किया जा रहा है। इस अपूर्व ग्रन्थ का मूल्य २०० रुपये होगा। अग्रिम धनराशि जमा करवाने वाले सज्जन इसे १०० में प्राप्त कर सकेंगे।

**-वेदव्रत शास्त्री**

**वार्ता** - एक दिन मैं एक घर में भोजन करने के लिए गया, वो घर एक आर्य पुरुष का था। एक लड़की बैठी एक लड़के को खिला रही थी। उसकी सास बैठी भोजन बना रही थी। भोजन बनने में कुछ कसर थी। इसलिए मैं वहीं बैठ गया। बात चलने पर लड़की ने अपना हाल मुझसे बताया। वो ही अगाड़ी भजन में विदित होगा।

## भजन १९

**टेक** : पिता जी सुनता है कौन हमारी।

कौन सुने और कौन कहे, जो मन में उठे सो मन में रहे।
अंखियन अंसुअन की धार बहे, दिन रात वियोग की आग दहे॥
इससे ज्यादा दुख और क्या हो, जग में मन का मेली न हो।
हंस बोलने से बदनामी हो, करनी दिन रात गुलामी हो॥
नहीं वस्त्र नया नहीं गहना हो, जोगन सी बनकर रहना हो।
किसी उत्सव में नहीं जाना हो, जो जाय तो फिर पछताना हो॥ जी॥
इधर देखकर नाक चढ़ावें, दुनियां के सब नर नारी॥ पिता जी० ॥१॥
रोऊँ तो सौन (शकुन) बिगड़ते हैं, जो हंसूं तो घर के लड़ते हैं।
नित्य देवर जेठ झगड़ते हैं, सब कोई बिन बात अकड़ते हैं॥
बोलूं तो कहें डबोवेगी, अगली पिछली को खोवेगी।
नहीं बोलूं तो घुन्नी बताते हैं, मुझे मरने को सब चाहते हैं।
नहाऊं तो कहें नादानी है, नहीं नहाऊं तो करते ग्लानि है।
सिर धोऊं तो कहें बिघन की जड़, नहीं धोऊं तो कहें बड़ी फूहड़॥
शुद्ध रहूँ तो कहें उड़े है क्यों, रहूं मैली तो कहें सड़े है क्यों॥ जी॥
एक बिना कितने दुख देखे, अहे मैं हूं अभागन नारी॥ पिता जी० ॥ २॥
कहूं तो मुख से न कही जाती, कहने से उमड़ आवे छाती।
कोई नहीं है सुख दुख का साथी, कीड़ी के सिर पर चढ़ा हाथी॥
मैं कीड़ी ये दुख हाथी समान, मेरा और इस दुख का क्या अनुमान॥
आ रही है सिर पर विपत घोर, दो पैर रखने को नहीं ठौर।
सुसराल में देख दुखी हो सास, पीहर में बाप और मां उदास।
सब कहे छाती पर सरकी शिला, महापापिन कैसा दर्जा मिला॥ जी॥
इधर उधर से तानाजनी की, टिक रही कण्ठ पै कटारी॥ पिता जी० ॥३॥
घायल की गति घायल जाने, बिन घायल कोई क्या पहिचाने।
कहां जुलाहा कमान ताने, बांझ प्रसूत की पीड़ ना जाने॥
जिसके होई ना पांव बिवाई, वोह क्या जाने पीर पराई।
हमसी हो सो हम गति जाने, सदा सुहागिन क्या गर्दाने।
संग सहेली मंगल गाती, मैं नित बुरा बिराना चाहती।
जब कोई बालक गोद में लेती, मैं पितु मात को गाली देती॥ जी॥
जाने प्राण जब कहां रह जाते, बोलती गली में जब मनिहारी॥ पिता जी० ॥४॥
जब लगे महीना सावन का, मचे शोर मल्हारें गावन का।
हो सब्ज रंग जंगल बन का, हो गगन में जोर घटा घन का॥
ले सिन्धारे चलते हैं नाई, चूड़ियों के जोड़े दें दिखलाई।
झड़ लगा के बदली बरस रही, मैं अकेली घर में तरस रही।
इतरा-इतरा कर बोलें मोर, बगियन में कोयल करें शोर।
रात को पपैया देवे कूक, पी-पी सुन हृदय उठे हूक॥ जी॥
पी-पी सुने पी कहीं नहीं दीखें, झुक रही रात अन्धियारी॥ पिता जी ॥५॥
क्या रक्खा है वृथा रोने में, कुछ ओढ़ पहर लिया गोने में॥
फिर सब दिन गये दुख ढोने में, नहीं होती सुगन्धि सोने में॥
जब पहिला बच्चा हो सुजान, होता संकट मां को महान्।
कोई थाली लिखकर प्याते हैं, कोई बूझ ताछ करवाते हैं॥
कई सन्तान को नहीं पाती हैं, कितनी ही मां मर जाती हैं।
जब नेम से होने में यह हाल, तो जबरदस्ती में क्या हवाल।
जाति पर यह बवाल, फिर **बस्तीराम** तू क्या दयाल॥ जी॥
घरों के अन्दर कबर बिराजे, धिक-धिक जिन्दगी तुम्हारी॥ पिता जी ॥६॥
पी पावे कहां उठते विचार, नहीं झिले कुटिल काम की मार।
जी चाहता है करके श्रृंगार, जाकर झूलूं गाकर मल्हार।
चित्त चाहता है घर आवें पीव, बिन पीव रहना नहीं चाहता जीव।
नहीं रुक सकता ईश्वरीय नेम, बिन पीव किस से कहो करूं प्रेम।
विन प्रेम किए रहना है कठिन, टामक देकर चढ़ रहा मदन।
नहीं सत्संग नहीं हृदय ज्ञान, कैसे जीतूं रतिपति अति बलवान्॥ जी॥
धैर्य धरने की युक्ति जगत् में, मिलती नहीं है उधारी॥ पिता जी॥ ७॥
घर के ही घर को खाने लगे, जब जेठ देवर ललचाने लगे।
छुप-छुप कर कुबद सिखाने लगे, जाने बर्फ को आग दिखाने लगे॥
बन प्यारे मन को हर लेते हैं, बिच गंगा जमना धर देते हैं।
कर नेम धर्म करवाय मुझ से, कहें होगी न दगा कभी तुझसे।
ईश्वरीय नेम पर पहुंची बात, फिर वोही ढाक के तीन पात।
कहें इस इज्जत की लानिहार, अब जल्दी भेजदो हरद्वार। जी।
कोई कहे इसे जहर खिलादो, तुरत मरेगी हत्यारी॥ पिता जी॥८॥
कोई कहे कर डालो तबाह इसे, कोई कहे लग जायेगी हवा इसे।
कोई कहे मिल जायेगा गवाह इसे, लोक लाज की क्या परवाह इसे॥
कोई कहे बात मैं सुनी एक, रहता है शहर में एक शेख,
वह नस नाड़ियों को पहिचानता है, और गर्भपात कर जानता है॥
कोई कहे मेरे लग जायेंगे दिन चार, मैं छोड़ आऊं इसे जमना पार॥
वहां कोई मुसलमान ले जायेगा, फिर धर्म सनातन रह जायेगा॥ जी॥
एक बिना इस इकली जान पर कितने झुक रहे प्रहारी॥ पिता जी॥९॥
मेरे बूढ़े सुसरे के मुख से, एक निकली बात भरी दुख से।
कोई ऐसा जतन सोचो रुख से, इसकी भी उमर कट जाये सुख से॥
इसे एक दिन ब्याहकर लाये थे, खुश होकर निशान घुराये थे।
इसके बाप ने बड़ा दिया था धन, मेरा खिला था उस दिन तन और मन॥
यह प्यारी पुत्रवधू मेरी थी, मैं रथ पर मोहर बिखेरी थी।
इस अकेली का क्या कसूर है, मेरी किस्मत फूटी जरूर है॥ जी॥
कर कर याद पुत्र अपने को, कोठे में टक्कर मारी॥ पिता जी॥१०॥
यह देखकर सास खड़े की खड़ी, लठिया की तरह भूमि में पड़ी।
यहां शोकसिन्धु पर नैया चढ़ी, जुग समान बीती आधी घड़ी॥
फिर धर के धीर मेरी बोली सास, कोई सोचो जतन मत हो उदास।
मेरी एक समझ में आई बात, तुम ऐसे करो कहूं जोड़ हाथ॥
आर्यों ने कोई खुलवाई सभा, वहां जाती हैं भली-भली विधवा।
वो पुनर्विवाह करवाते हैं, गर्भहत्या से सब को बचाते हैं॥ जी॥
रोते झीकते यह सब सोए, मैं क्यों सोऊं थी दुखियारी॥ पिता जी॥११॥
पीहर सासरे की ममता त्याग, आर्यों से नाता जोड़ लिया।
चोर की तरह उठ निकल भवन से, सदा के लिए घर छोड़ दिया।
धर्म सनातन के घर, आने के लिए कान मरोड़ लिया।
जा समाज के मन्त्री से, निज हाल का जोड़ निचोड़ दिया।
कहा सचिव ने बेटी! भला तू मेरा भी कहना पुगावेगी।
मैंने कहा सुन चचा, रत्ती भर भी नहीं गलती पावेगी॥
ये बात है कोई ११ बजे की, डेढ़ बजे गाड़ी आई।
रात का हाल सुना दिया तुमको, भोर भये जमना न्हाई॥
५ बजे दाखिल हुई, स्वामी श्रद्धानन्द की शरण आई।
दिया वास, वर तलास करके, वेदविधि से परणाई॥
धर्म और कर्म रहा मेरा, इस लड़के की जिन्दगानी है।
**बस्तीराम** तेरा धर्म सनातन, बिल्कुल नर्क निशानी है॥ जी ॥
शारदा बिल पास किया, मैं उस नृप की बलिहारी।। पिता जी० ॥१२॥

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन ३/५, आसफ अली रोड, रामलीला मैदान, नई दिल्ली के त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक १२-९-२००४ को चुनाव अधिकारी श्री राममोहनराय की देखरेख में निर्वाचित एवं घोषित पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची :-

१. प्रधान-स्वामी अग्निवेश, ७ जन्तर-मन्तर रोड, नई दिल्ली-११०००१
२. उपप्रधान-श्री सत्यव्रत सामवेदी, ५च १३, जवाहरनगर, जयपुर (राजस्थान)
३. उपप्रधान-प्रो० शेरसिंह, एम० १४-साकेत, नई दिल्ली
४. उपप्रधान-श्री जगवीरसिंह, २८/१६, आर्यसमाज शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७
५. उपप्रधान-डॉ० टी०वी० नारायण, ५८/३, आर०टी०पी० एस० नगर, विजयनगर कालोनी, हैदराबाद (आ०प्र०)
६. उपप्रधान-श्री सत्येन्द्रचन्द्र गुड़िया, काशीपुर, जिला उधमसिंहनगर (उत्तराञ्चल)
७. उपप्रधान-डॉ० कमलनारायण आर्य, रायपुर (छत्तीसगढ़)
८. उपप्रधान-श्रीमती जगदीशरानी आर्या, कटरा मितसिंह, अमृतसर (पंजाब)
९. मन्त्री-प्रो० कैलाशनाथसिंह, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ (उ०प्र०)
१०. उपमंत्री-रामसिंह आर्य, उम्मेद चौक, जोधपुर (राजस्थान)
११. उपमंत्री-प्रो० विट्ठलराव, आर्य प्रतिनिधि सभा, सुलतान बाजार (हैदराबाद)
१२. उपमंत्री-डॉ० निष्ठा विद्यालंकार, ग्रा०-दूल, पो० भूल कानपुर महानगर(उ०प्र०)
१३. उपमंत्री-श्री सेवाराम पटेल, आर्यसमाज नागदा जंक्शन (म०प्र०)
१४. उपमंत्री-श्री प्रभाशंकर आर्य, सेक्टर-६, ब्लाक-३, एलआईजी०, फ्लैट्स नं०-१७८, बहादुरपुर, हाउसिंग कालोनी, भूतनाथ रोड, कंकड़बाग, पटना २०
१५. उपमंत्री-श्री सदाविजय आर्य, मु०-औराद शाहजनी, जि० लातूर (महाराष्ट्र)
१६. कोषाध्यक्ष-चौ० मित्रसेन आर्य, सिन्धु भवन, सेक्टर-१४, रोहतक (हरयाणा)
१७. पुस्तकाध्यक्ष-डॉ० जयप्रकाश भारती, आर्यसमाज सादात, जिला गाजीपुर (उ०प्र०)
१८. सदस्य-स्वामी इन्द्रवेश, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)
१९. सदस्य-स्वामी ओमवेश, केवलानन्द निगमाश्रम गंज, जिला बिजनौर (उ०प्र०)
२०. सदस्य-श्रीमती प्रभातशोभा पंडित, १४ एम-साकेत, नई दिल्ली
२१. सदस्य-श्री विरजानन्द, आनन्द फार्म हाउस, नारेड़ा कलां, तह० बहरोड़, जि० अलवर (राजस्थान)
२२. सदस्य-आर्यकुमार ज्ञानेन्द्र, ३ आर०एफ० २/३ यूनिट IX फ्लैट्स, भुवनेश्वर-७५१०२२
२३. सदस्य-आचार्य हरिदेव, गुरुकुल गौतमनगर, युसुफ सराय, नई दिल्ली
२४. सदस्य-कु० प्राची आर्या, ग्राम-सिरसली, तह० बड़ौत, जि० बागपत (उ०प्र०)
२५. सदस्य-श्री वामनमूर्ति, एडवोकेट, १-५९७, डी० निलैयुर, तिरूपरन्कुन्दरम् मदुरै-६२५००५
२६. सदस्य-डॉ० लक्ष्मणदास आर्य, लक्ष्मण रेडियो, अशोक नगर (म०प्र०)
२७. सदस्य-पं० गोविन्दप्रसाद, आर्यसमाज रांची (झारखंड)
२८. सदस्य-श्री सुभाष अष्टिकर हुमनाबाद, जि० बीदर, कर्नाटक
२९. सदस्य-श्री रामानन्दप्रसाद, विद्युत् बोर्ड कालोनी, पी०टी०सी०-१ शास्त्रीनगर, पटना-१३ (बिहार)
३०. सदस्य-श्री प्रेमकिशोर कुलश्रेष्ठ, नावेल्टी सिनेमा के सामने, लक्ष्मीगंज, कासगंज, एटा
३१. सदस्य-श्री नवलकिशोर शास्त्री, बंगाली टोला, समस्तीपुर (बिहार)
३२. सदस्य-श्री धर्मबन्धु, वैदिक मिशन ट्रस्ट, ग्राम प्रांसला, जिला राजकोट (गुजरात)
३३. सदस्य-श्री सत्यपालसिंह, डी०आई०जी०, कृतिका, बान्द्रा रोड, बम्बई
३४. सदस्य-आचार्य सुभाष, गुरुकुल येडसी, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)
३५. सदस्य-श्री सन्तकुमार आर्य, आर्यसमाज दाल बाजार, लुधियाना (पंजाब)

# शोकसभा में चित्र पूजन क्यों?

आर्यसमाज में प्रायः शोकसभायें होती रहती हैं। हम देखते हैं, मृतक का चित्र लगाया जाता है, उस पर माला पहनाई जाती है। धूपबत्ती अगरबत्तियां जलाई जाती हैं। चित्र पर पुष्पांजलि भी दी जाती हैं और हाथ जोड़कर नमन करते हैं। एक समाज में देखा था, गरुड़पुराण की कथा हो रही थी। यह सब कार्यक्रम आर्यसमाज के पंडित, पुरोहित और अधिकारियों की देखरेख में होता है। वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध क्रियाएं देखकर बड़ा अफसोस होता है। हमने जब पूछा कि आर्यसमाजों में ऐसा क्यों हो रहा है? तब अधिकारी कहते हैं कि आर्य जी! कुछ फर्क नहीं पड़ता, सब चलता है। आप (पाठक) ही बताओ! क्या यह उचित है?

## सावधान!

धूम्रपान और मद्यपान, शत्रु हैं महान्, इनके पीने से परेशान है कुल जहान।
इनको छोड़ दो यदि चाहते हो कल्याण, आपको हर जगह प्राप्त होगा सम्मान।

-देवराज आर्य मित्र, WZ-428, नानकपुरा प्रथम तल, हरिनगर, दिल्ली-६४



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१

वर्ष ३२ अंक २६ २१ जून, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## क्तारं पक्व: पुनराविशाति

❑ डॉ० शिवकुमार शास्त्री, जे.-१८९, विकासपुरी, दिल्ली

विचार-विचक्षण पाठकवृन्द! वैदिक धर्म का मुख्य सिद्धान्त कर्मविज्ञान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उन अधिकारियों पर अक्षरश: सत्य सिद्ध हो रहा है जो इस समय सड़कों पर पैदल हो गए हैं।

२७ मई १९९५ को हैदराबाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन हुआ। उसी सभागार में कुछ प्रतिनिधियों ने श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती और कुछ प्रतिनिधियों ने श्री वन्देमातरं रामचन्द्र राव को सभा का प्रधान निर्वाचित किया।

१ जून १९९५ को श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के समर्थकों ने दिल्ली आकर सार्वदेशिक भवन पर अपना अधिकार कर लिया। श्री वन्देमातरं के समर्थकों ने उसी दिन राजनेताओं एवं पुलिस की सहायता से श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती एवं उनके सहयोगी सर्वश्री ओमानन्द सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, कैप्टन देवरत्न आर्य, डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार आदि को बलात् सभा कार्यालय से निकालकर अपना कब्जा जमा लिया।

१९९७ के अन्तिम महीनों में सर्वश्री वन्देमातरम्, सूर्यदेव, वेदव्रत शर्मा, विमल वधावन आदि उन्हीं सर्वश्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, कैप्टन देवरत्न आर्य आदि से मिल गए जिनको १ जून १९९५ को पुलिस की सहायता से सार्वदेशिक भवन से निकाला था। १ जून १९९५ को जो व्यक्ति अनधिकृत एवं असामाजिक तत्त्व थे वे सर्वश्री वन्देमातरम्, सूर्यदेव, वेदव्रत शर्मा एवं विमल वधावन के साथ लगकर सोना एवं कुंदन बन गए। क्योंकि जो इनके साथ रहे वह त्यागी, तपस्वी, विद्वान् और समाजसेवी बाकी असामाजिक एवं गुण्डातत्त्व मापने का कितना बढ़िया मापदण्ड है।

१९९८ के सार्वदेशिक सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन से कुछ दिन पूर्व राजनेताओं एवं पुलिस की सहायता से इन लोगों ने सार्वदेशिक भवन पर बलात् कब्जा कर लिया, डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री को बन्धक बना लिया, पचास के लगभग अनधिकृत व्यक्तियों को सभा कार्यालय में निर्वाचन के दिन तक ठहराए रखा।

निर्वाचन के दिन प्रतिनिधियों का प्रवेश श्री देवव्रत शर्मा करा रहे थे। प्रतिनिधियों के अतिरिक्त अनेक अनधिकृत व्यक्तियों को भी श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा सभाभवन में प्रविष्ट कराया गया। उन अनधिकृत व्यक्तियों में श्री स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश जी भी थे। तब सर्वश्री कैप्टन देवरत्न आर्य, वेदव्रत शर्मा, विमल वधावन, वगैरह को ये लोग असामाजिक तत्त्व नहीं लगे क्योंकि तब वे इनके साथ थे। जैसा कि मैंने पहले लिखा ये लोग पारसमणि हैं, जो इनका स्पर्श कर लेता है, वह सोना बन जाता है।

विधि की विडम्बना देखिए जिन लोगों को तत्कालीन सभाप्रधान श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने सार्वदेशिक सभा का अधिकारी बनाया, अन्तरंग सदस्य मनोनीत किया, अपना बेटा कहा उन्हीं कुपुत्रों ने २००१ के सार्वदेशिक सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन में उन्हें निर्वाचन स्थल पर भी नहीं जाने दिया। पुलिस के कड़े पहरे में श्री कैप्टन देवरत्न आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान निर्वाचित घोषित किए गए।

जो सर्वश्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, धर्मानन्द सरस्वती, सुमेधानन्द सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, इन लोगों के साथ सोना और कुन्दर बन चुके थे उन्हीं को तथाकथित पारसमणियों ने अपने से दूर कर मिट्टी में मिलाने का असफल प्रयास किया।

२००४ का सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन समय से कुछ महीने पहले चोरी-चोरी, चुपके-चुपके पुलिस की सहायता से कराकर श्री कैप्टन देवरत्न आर्य को पुन: प्रधान निर्वाचित घोषित कर दिया गया। माननीय प्रधान जी ने श्री वेदव्रत शर्मा को उपप्रधान एवं श्री विमल वधावन को मन्त्री मनोनीत किया।

२००४ के निर्वाचन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नए प्रतिनिधियों को आमन्त्रित नहीं किया गया क्योंकि श्री वेदव्रत शर्मा एवं श्री विमल वधावन को आशंका थी कि दिल्ली सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह जी एवं उनकी अन्तरंग सभा हमें और हमारे सहयोगियों को प्रतिनिधि बनाकर नहीं भेजेंगे। पुराने प्रतिनिधियों के आधार पर निर्वाचन कर स्वयम्भू अधिकारी बन बैठे। देश-विदेश की दूसरी प्रान्तीय सभाओं के साथ भी यही अन्याय किया गया। परिणामस्वरूप एक दूसरी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन उन प्रतिनिधियों ने कर लिया जिनको श्री वेदव्रत शर्मा एवं उनके सहयोगियों ने स्वीकार नहीं किया था। दूसरी सभा के अधिकारी बने सर्वश्री स्वामी अग्निवेश, सत्यव्रत सामवेदी, प्रो० कैलाशनाथसिंह आदि।

केन्द्र में सत्ता परिवर्तन हुआ। अब बारी थी स्वामी अग्निवेश की। उनके भी राजनेताओं से घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। राजनेताओं एवं पुलिस की सहायता से स्वामी जी ने अपने सहयोगियों के साथ २८-२-२००५ को सार्वदेशिक भवन पर अपना अधिकार कर लिया।

जब २००४ में निर्वाचन हुआ तो कुछ व्यक्तियों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हमने पुलिस का इतना जबर्दस्त इन्तजाम किया हुआ था कि परिन्दा भी पर नहीं मार सकता था।

जब आप लोग राजनेताओं एवं पुलिस की सहायता से अनैतिक एवं असंवैधानिक काम करो तो ठीक, दूसरे करें तो वे गुण्डे और असामाजिक तत्त्व। श्री स्वामी अग्निवेश एवं उनके सहयोगियों के लिए मार्ग प्रशस्त तो इन लोगों ने किया है जो आज उन्हें गुण्डा एवं असामाजिक तत्त्व बता रहे हैं।

जहां तक योग्यता, प्रतिष्ठा, गरिमा, तप और त्याग का प्रश्न है तो सर्वश्री कैप्टन देवरत्न आर्य, विमल वधावन एवं देवव्रत शर्मा का उनसे कोई साम्य नहीं। हर दृष्टि से वे योग्य ही नहीं योग्यतम हैं।

श्री स्वामी अग्निवेश जहां एक कॉलिज के प्राध्यापक और हरयाणा के शिक्षामन्त्री रह चुके हैं वहां वे ओजस्वी वक्ता, यशस्वी पत्रकार, लेखक और कुशल प्रशासक हैं।

श्री स्वामी इन्द्रवेश गुरुकुल के स्नातक हैं। वेद-दर्शन-व्याकरण के अधिकारी विद्वान् हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान, विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति पद को सुशोभित कर चुके हैं। सांसद के रूप में उन्होंने अपने दायित्व का निर्वहण पूरी निष्ठा के साथ किया है।

श्री सत्यव्रत सामवेदी गुरुकुल परम्परा से योग्यता प्राप्त ओजस्वी वक्ता हैं। उनके पूज्य पिता, चाचा तथा चचेरे भाई डॉ० प्रशान्त वेदालंकार विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के प्रतिष्ठित स्नातक थे। सामवेदी ने जहां राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने खून-पसीने से सींचा है वहां जयपुर में आर्य शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा जगत् में भी क्रान्ति की है।

प्रो० कैलाशनाथसिंह कॉलिज के प्राध्यापक तो हैं ही, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री, लोकसभा के सदस्य और उत्तरप्रदेश के शिक्षामन्त्री भी रह चुके हैं। अनेक वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के गरिमामण्डित प्रधान पद को सुशोभित कर रहे हैं। वे ओजस्वी वक्ता, कुशल प्रशासक और योग्य पत्रकार हैं।

ऐसे सुशिक्षित, कुलीन और अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों को श्री वेदव्रत शर्मा, श्री विमल वधावन एवं उनके सहयोगी गुण्डा एवं असामाजिक तत्त्व बता रहे हैं।

आर्यसमाज के वर्चस्वी नेता एवं कुशल प्रशासक श्री स्वामी आनन्दबोध जी स्वामी अग्निवेश के सती विरोधी आन्दोलन में २३ दिसम्बर १९८७ को दिवराला गए थे और वहां सहस्रों आर्य नर-नारियों के बीच उन्होंने स्वामी अग्निवेश जी की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी। १९८७ से २००२ तक स्वामी अग्निवेश आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित अनेक कार्यक्रमों में मुख्यवक्ता के रूप में पधारते रहे हैं। तब वे कम्युनिस्ट, असामाजिक तत्त्व और गुण्डे नहीं थे? मेरे साथ वे आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के वरिष्ठ उपप्रधान रहे हैं

( शेष पृष्ठ दो पर )

# वेद में युवा उत्थान तथा राष्ट्र उन्नति के चार आधार

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

सृष्टिकर्त्ता परमात्मा ने सर्गारम्भ से इस सृष्टि का संविधान बनाया। तृण से लेकर पृथ्वीपर्यन्त सारा ज्ञान विज्ञान कर्तव्याकर्तव्य के विधि निषेध, ईश्वर, जीव, प्रकृतिविषयक समस्त ज्ञान-विज्ञान के आदि भंडार को वेद नाम से जानता है। ईश्वरीय ज्ञान होने से वेद निर्भ्रान्त, सार्वभौमिक और सर्वकालिक हैं। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्रोत्थान का ऐसा कोई विषय नहीं जिसको वेद ने हमें नहीं बताया। किसी भी राष्ट्र के निवासी मानव समाज की उन्नति एवं सुख-शांति के लिए अथर्ववेद में एक छोटा-सा मन्त्र है। मंत्र क्या है गागर में सागर भर दिया है-

**श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त स्मृते श्रिताः।**

(परिश्रम) (कर्तव्यपालन) (ईश्वर विश्वास) (धन) (सत्य)

उक्त मंत्र में चार बातों का उल्लेख है। राष्ट्रोत्थान के संदर्भ में दिये गये महत्त्वपूर्ण उपदेश पर क्रमशः संक्षिप्त विचार प्रस्तुत हैं।

(१) परिश्रमी बनो! वेद का यह सटीक विचार है कि परिश्रम ही सफलता की कुञ्जी है। वेद में अन्यत्र भी उपदेश दिया गया है कि हे मनुष्य तू पुरुषार्थ करता हुआ सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। अर्थात् जीव अन्तिम क्षणों तक पुरुषार्थ करता रहे।

पुरुषार्थ की अनिवार्यता पर बल देते हुए वेद में आया है कि **अकर्मा दस्युः।** कर्म न करने वाला डाकू है। अथर्ववेद का यह आदेश तो सर्वाधिक सारगर्भित है कि **कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।** अर्थात् दाएं हाथ में यदि पुरुषार्थ है तो सफलता तो बाएं हाथ में है। ऋग्वेद में आया है कि जो परिश्रम करते हैं वेद की पावन ऋचाएं भी उन्हें चाहती हैं। ऋग्वेद में ही एक स्थान पर आया है कि जो परिश्रम करते-करते थक न जावे तब तक देवता भी उनका साथ नहीं देते।

ऐतरेय ब्राह्मण का चरैवेति-चरैवेति वाला सूक्त तो बड़ा प्रचलित है कि परिश्रमी को ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। बड़े रोचक प्रकार से पुरुषार्थ की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि "सो जाना कलियुग है श्रम करने का विचार करना द्वापर, श्रम के लिए निकल पड़ना त्रेता तथा श्रम करने में लग जाना सतयुग है।"

महात्मा चाणक्य ने ऐसे ही भाग्यवादी और अकर्मण्यता के पोषकों को लक्ष्य करके कहा कि दो व्यक्तियों को पत्थर बांधकर समुद्र में डुबो देना चाहिये।

(१) वह जिसके पास-सम्पदा है दान नहीं करता।

(२) दूसरा वह जो गरीब है किन्तु पुरुषार्थ नहीं करता।

प्रत्येक दृष्टि से वेद का यह सन्देश सार्थक है कि मनुष्य को परिश्रमपूर्वक धनोपार्जन करना चाहिये। अभ्युदय का यही एकमात्र आधार है।

(२) तपस्वी बनो। राष्ट्ररक्षा का दूसरा सूत्र है। तपस्वी बनो। तप के बिना उत्कृष्ट जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। अष्टाङ्ग योग के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि ने नियम की व्याख्या में तप को भी स्थान दिया है। किन्तु यह समझना कि तप क्या है? बहुत आवश्यक है। वैदिक सज्ज्ञान के अभाव में नाना पंथ सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ जिसके कारण जिसकी जो समझ में आया तप की परिभाषा की और आज यह विचार करना चाहिये कि तप किसे कहते हैं?

महाभारत का यक्ष युधिष्ठिर संवाद अपनी रोचक और सारगर्भित चर्चा के कारण प्रसिद्ध है। कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर हैं। वहां एक प्रश्न यह है कि तप किसे कहते हैं? युधिष्ठिर जी ने इस प्रश्न के उत्तर में कहा है कि द्वन्द्व सहन करना तप है। सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान, जीवन-मरण, प्रत्येक द्वन्द्वात्मक स्थितियों में विचलित नहीं होना, एकरस रहने का नाम तप है। दार्शनिकों ने कर्तव्यपालन को तप कहा है तो महर्षि मनु ने इन्द्रियनिग्रह को जितेन्द्रियता को तप कहा है। बहुत ही स्पष्ट शब्दों में भगवान् मनु लिखते हैं कि-

**वनेषु दोषा प्रभवन्ति रागिणाम्। गृहेषु पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः।**

अर्थात् विषयानुरागी को तो वन में रहने पर भी दोष घेर लेते हैं किन्तु घर गृहस्थ में रहने वाला जितेन्द्रिय व्यक्ति तपस्वी है। वेद तपसा शब्द में राष्ट्रोत्थान का मर्मान्तक सन्देश छिपा है। सरधड़ की बाजी लगाकर अपने कर्तव्य का पालन करने वाला, जितेन्द्रियता के पावन पथ पर चलने वाला ही तो कसौटी पर खरा उतरता है।

(३) वेद की तीसरा उपदेश है ब्रह्मणा। अर्थात् आस्तिक बनो, ईश्वरविश्वासी बनो। हम जब चराचर जगत् पर अपनी दृष्टि डालेंगे तो हमें एक अनुपम सौन्दर्य, व्यवस्था एवं नियम दिखाई देता है। सर्वदा ढाक में तीन पत्ते होते हैं तो ब्राह्मी में एक ही पत्ता तथा करील में कोई पत्ता नहीं होता है। यह सब नियम अपने आप तो नहीं बनते हैं। संसार का एक प्रभु की शक्ति की गवाही दे रहा है। घड़ी के पुर्जों की भांति सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र की गतिशीलता, नाना प्रकार के फूल-फल-पत्तियों की विविध आकृति उसी महान् कलाकार के कौशल का संकेत दे रही है। द्युलोक का एक-एक नक्षत्र, भूमि का एक-एक कण, फूलों की एक-एक पंखुड़ी प्रभु के प्रभुत्व को दर्शा रही है। सूर्य की लाली, चन्द्रमा की उजाली, बादलों की गर्जना, बिजली की चमक, अग्नि में दाहक क्षमता, जल में जीवनीय शक्ति, पवन का वेग, सर्वत्र हमें ईश्वरीय शक्ति का दिव्य दर्शन होता है। जिस भूमि माता पर हम रहते हैं। यह भूमि माता तो सब कुछ अपने में समेटी हुई है। हमें इन सब व्यवस्थाओं के व्यवस्थापक चराचर जगत् के स्वामी परमात्मा की भक्ति अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिये। प्रभु के मुख्य और निज नाम ओ३म् का जप करना चाहिये। **'विश्वा जातानि परि ता बभूवः'** प्रभु के आश्रय गृहीता का कोई अपमान नहीं करता है अर्थात् प्रभु सर्वोपरि शक्ति है इत्यादि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय हमें ईश्वर की भक्ति का सन्देश देता है।

(४) वेदमन्त्र का अन्तिम और चौथा प्रेरक सन्देश है कि सत्य आचरण द्वारा धनोपार्जन करो। जीवनयापन में धन के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। वेद के शब्दों में हमारी कामना होती है।

**'वयं स्याम पतयो रयीणाम्।'** हम धन के स्वामी होवें।

**'अर्थो ह्यस्य तरणिः'** संसार सागर से पार उतरने के लिए धन नौका है। कहने का तात्पर्य यह है कि धन हमारे जीवन का आवश्यक पहलू है। हमें पुरुषार्थ पूर्वक धनोपार्जन करना चाहिये। किन्तु वेद के इस मन्त्र में वित्त से पूर्व स्मृत शब्द विशेष भावना से रखा गया है। क्योंकि अर्थशुचिता का बड़ा महत्त्व है। **अन्यायेनागता लक्ष्मीः खद्योत इव दिप्यते। क्षणं प्रकाशस्य वस्तुनि निर्वाणे केवलं तमः॥**

यहां बताया गया है कि अन्यायपूर्वक अर्जित सम्पदा तो जुगनूं के प्रकाश की भांति क्षणिक होती है। यद्यपि येनकेनप्रकारेण अर्थ उपार्जन से सुख-सुविधा तो बढ़ जाती किन्तु उसका अस्तित्व तब तक बना रहता है, सटीक टिप्पणी आचार्य चाणक्य ने इस प्रकार से है-

सत्य से परे हटकर अन्यायपूर्वक अर्जित सम्पदा १० वर्ष तक चलती है। ११ वर्ष में तो उसके समूल नष्ट होने की सम्भावना बन जाती है। अतः वैदिक वाङ्मय का यह चिन्तन सारगर्भित है कि अर्थशुचिता जीवन का अभिन्न अंग है।

प्रस्तुत वेदमन्त्र के चार प्रेरक सन्देश से हमें प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उत्तम बनाना चाहिये। अतः राष्ट्रोन्नति का यही वेदोक्त मार्ग है, अन्य नहीं।

## पक्तारं पक्वः....... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

तब आप लोगों को उनका गुण्डापन याद नहीं आया? २५ दिसम्बर १९९८ और आगामी वर्षों में भी स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आयोजित शोभायात्रा का नेतृत्व कर आर्यसमाज दीवान हॉल द्वारा टाउन हाल पर लगाए मंच से अनेक बार व्याख्यान देने पर भी वे अस्पृश्य नहीं थे?

मिण्टोरोड आर्यसमाज स्थल पर श्री वेदव्रत शर्मा ने कार्यक्रम के संयोजक की हैसियत से कहा था-"अब स्वामी अग्निवेश जी महाराज आपको सूप पिलाएंगे।" जिसका मतलब था वे इस सन्दर्भ में अपनी बात संक्षेप में कहेंगे। परन्तु स्वामी जी ने भाषण लम्बा दिया। उस पर टिप्पणी करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा-"मैंने तो कहा था स्वामी जी सूप पिलायेंगे परन्तु उन्होंने तो पूरा भोजन ही करा दिया।" जब स्वामी अग्निवेश जी श्री वेदव्रत शर्मा के संयोजकत्व में बोले तब वे कम्युनिस्ट नहीं थे? आज हमारे दिशाहीन एवं पदों के भूखे तथाकथित नेताओं को स्वामी अग्निवेश में दुनिया भर की बुराइयां दिखाई दे रही हैं।

आर्यो! याद रखो इतिहास हमेशा दुहराया जाता है। जिस तरह से सर्वश्री कैप्टन देवरत्न आर्य, वेदव्रत शर्मा, विमल वधावन एवं इनके सहयोगियों ने राजनेताओं का प्रश्रय प्राप्त कर पुलिस की सहायता से अनधिकृत कार्य किए थे, उसकी प्रतिक्रिया होनी स्वाभाविक थी। क्रिया की प्रतिक्रिया यह सृष्टि का सर्वमान्य सिद्धान्त है। जैसा करोगे वैसा भरोगे। जैसा पकाओगे वैसा खाओगे।

एक बार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन में श्री सूर्यदेव प्रधान एवं मैं (डॉ० शिवकुमार शास्त्री) वरिष्ठ उपप्रधान निर्वाचित हुए थे। तत्कालीन निर्वाचन अधिकारी श्री वन्देमातरं ने प्रस्ताव रखा कि-"श्री सूर्यदेव एवं डॉ० शिवकुमार शास्त्री को अधिकार दिया जाए कि दोनों मिलकर पदाधिकारियों, अन्तरंगसभा के सदस्यों एवं समितियों का गठन कर लें।" सभागार में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने समवेत स्वर एवं करतल ध्वनि से इस प्रस्ताव का समर्थन किया। परन्तु श्री सूर्यदेव ने मेरे साथ विश्वासघात किया और अपने चाटुकारों के साथ मिलकर मंत्रिमंडल का गठन कर लिया। इस पर मेरे अनेक सहयोगियों ने कहा कि सूर्यदेव पर मुकदमा दायर कर दो। तब मैंने कहा था-"न सूर्यदेव विदेशीतत्त्व है न उनको पथभ्रष्ट करने वाले उनके सहयोगी। मैं उन पर मुकदमा तो दायर नहीं करूंगा, परन्तु ऐसे अविश्वसनीय व्यक्ति के साथ काम भी नहीं करना चाहूंगा।" कुछ समय पश्चात् मैंने त्यागपत्र दे दिया था। यही बात मैं आज कहना चाहता हूं। न तो श्री विमल वधावन विदेशी हैं और न ही श्री वेदव्रत शर्मा। पर हां, आपने जो नियम विरुद्ध काम किए हैं वैदिक सिद्धान्तानुसार उनका फल तो आपको भोगना ही पड़ेगा।

आप लोग सकारात्मक भूमिका निभाते हुए श्री स्वामी अग्निवेश एवं उनके सहयोगियों का साथ देकर आर्यसमाज की उन्नति में योगदान दें इसी में हम सबका भला है। यदि आप लोग महर्षि दयानन्द के अनुयायी हैं तो वे भी आपसे किसी अंश में कम नहीं।

हम सबकी सकारात्मक भूमिका ही **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के उद्घोष को सार्थक करने में सहायक सिद्ध होगी।

## सम्पादकीय....

# सच्चा श्राद्ध

सितम्बर १९५३ ई० से गुरुकुल झज्जर से '**सुधारक**' हिन्दी मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया था उस समय प्रचार की भावना से इसका वार्षिक शुल्क नाममात्र दो रुपये वार्षिक रखा था। आचार्य भगवान्देव जी की सर्वदा यही भावना रहती थी कि कम से कम मूल्य पर जनसाधारण तक सस्ता साहित्य पहुंचाकर प्रचार किया जाये। यद्यपि आचार्य जी ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में घूमकर अपने व्याख्यानों के द्वारा भी निरन्तर प्रचार कार्य करते रहते थे किन्तु व्याख्यान की अपेक्षा साहित्य द्वारा प्रचार को वे स्थायी और अधिक प्रभावी मानते थे। इसीलिये गुरुकुल से **सुधारक** मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। समाज सुधार की भावना से इसका नाम भी '**सुधारक**' रखा था। इस पत्र में सामयिक लेखों के साथ सामाजिक सुधार की दृष्टि से समय-समय पर विशेषांक के रूप में कुछ पुरानी और कुछ नई लिखी पुस्तकें भी प्रकाशित की जाती थीं और साथ-साथ कुछ प्रतियां विक्रयार्थ पृथक् पुस्तक रूप में भी छाप ली जाती जिन्हें लागतमात्र मूल्य पर आचार्य जी वितरित करते रहते थे और होनहार छात्रकों को पारितोषिक के रूप में भी दे देते थे। १९५३ से १९६४ तक मैं सुधारक का व्यवस्थापक एवं सम्पादक के साथ-साथ गुरुकुल झज्जर का सहायक मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य भी रहा। अगस्त १९६२ में सुधारक के विशेषांक रूप में पण्डित बस्तीराम जी आर्योपदेशक की पुस्तक **बस्तीराम रहस्य** अर्थात् **असली शोकभंजनी** प्रकाशित की गई थी। सर्वप्रथम यह पुस्तक सन् १९१९ में लिखकर छपवाई थी और १९३१ ई० में तीसरी बार छपी थी और १९६२ में यह पुस्तक अनुपलब्ध थी। आचार्य भगवान्देव जी ने किसी श्रद्धालु से प्राप्त करके यह पुस्तक मुझे दी और मैंने सुधारक के विशेषांक के रूप में अगस्त १९६२ में छपवा दी।

आर्यसमाज के प्रख्यात पण्डित डॉ० हरिदत्त शास्त्री एकादशतीर्थ ने इसे सुधारक में पढकर १५.८.१९६२ ई० को आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर से आचार्य जी के नाम पांच पैसे के पोस्टकार्ड पर अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये थे-

**"श्रीयुत आचार्य भगवान्देव जी,**

**सप्रेम नमस्ते।**

**स्व० पं० बस्तीराम जी की 'शोक भञ्जनी' को 'सुधारक' के विशेषांक रूप में प्रकाशित कर एक पुराने सच्चे आर्य का आपने सच्चा श्राद्ध किया है। वस्तुतः यह पुस्तक बड़े उपयोग की है। नं० १ के दोहों में ४, ५, ८, १६, १७, २८, ३३ बड़े ही उत्तम हैं। भजन नं० ३, ७, ११, १४ तो सिद्धान्त की दृष्टि से बड़े ही उत्तम हैं। उनके अन्य भजनों को भी यदि संग्रह रूप में प्रकाशित कर दें तो उत्तम हो।"**

आचार्य भगवान्देव जी की प्रेरणा से विगत ४५ वर्षों से मैं पं० बस्तीराम जी की पुस्तकें प्रकाशित कर रहा हूं। उनकी छोटी-बड़ी १३ पुस्तकें छापी गई हैं। पाखण्ड-खण्डनी, असली शोकभंजनी आदि पुस्तकों के तो दूसरे-तीसरे संस्करण भी प्रकाशित हुए हैं।

अब पुराना युग समाप्त हो गया। पं० बस्तीराम जी तो २६ अगस्त १९५८ ई० में ही स्वर्गवासी होगये थे। उनके श्रद्धालु शिष्य भजनोपदेशक भी उनके ही पथानुगामी हो चुके हैं। पं० बस्तीराम जी की लय पर भजन गाकर प्रचार करने वाले भजनोपदेशक अब आर्यसमाज में नहीं रहे। मुद्रण कार्य भी लेटर प्रेस से कम्प्यूटर और ऑफसेट प्रणाली से होने लग गया।

डॉ० आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री की भावना के अनुसार पं० बस्तीराम जी के उपलब्ध सभी भजनों की पुस्तकों को संग्रहरूप में एक ही जिल्द में उत्तम कागज पर कम्प्यूटर द्वारा ऑफसेट मशीन पर शुद्ध और सुन्दर रूप में प्रकाशित करने का मेरा विचार चल रहा था। इसे कार्यरूप में परिणत करने में सहायक बने प्रसिद्ध उद्योगपति चौ० मित्रसेन आर्य, जिन्होंने इस श्रेष्ठ भजन-संग्रह के प्रकाशन का व्यय प्रदान करने का आश्वासन दिया है। कम्प्यूटर द्वारा प्रेस कापी तैयार होगई है। आशा है पुस्तक छपकर शीघ्र ही पाठकों के हाथों में पहुंच जायेगी।

मुझे पं० बस्तीराम जी की पुस्तकों को बार-बार पढ़ने का अवसर मिला है। मेरे विचार से पंडित जी के भजनों का यह संग्रह अनेक दृष्टियों से बहुत उपयोगी है। आर्यसमाज पर पी-एच.डी. करने वाले सज्जन मुझसे पंडित जी की पुस्तकें ले जाते रहे हैं। अब ये सभी पुस्तकें एक जिल्द में छपकर तैयार हो रही हैं तो शोध-छात्रों के लिए अधिक सुविधा रहेगी।

मेरी इच्छा है प्रत्येक आर्य के पास यह **पाखंड-खंडनी तोप** अवश्य होनी चाहिए और प्रत्येक आर्यसमाज के पुस्तकालय में इसकी दो-दो, चार-चार प्रतियां रखी जानी चाहिएं।

यह मैं इसलिए लिख रहा हूं कि अनेक आर्य बड़े गौरव से कहते हैं **मैं आर्य हूं, मैं तो जन्मजात आर्यसमाजी हूं, मेरे पिता दादा भी आर्यसमाजी थे।** इत्यादि।

किन्तु जब पारिवारिक गृह्यकृत्यों, रस्म-रिवाज संस्कार आदि का समय आता है, विशेपतया विवाह-संस्कार और अन्त्येष्टि क्रिया और उसके पश्चात् के क्रियाकलाप में ऊपर लिखी आर्यसमाज की भावनाएं न चाहते हुए भी कहीं एक कोने में दबकर रह जाती हैं। उस समय प्रायः घर परिवार समाज के बड़े-बूढ़े स्त्री-पुरुषों की ही चलती है। शोकसभा, शान्तियज्ञ मासिक और वार्षिक स्मृति यज्ञ आदि में आर्यसिद्धान्तों के विपरीत कार्यक्रम देखे जा सकते हैं। जब तक दिवंगत के फूल गढगंगा वा हरद्वार नहीं पहुंचाये जाते तब तक शान्ति नहीं मिलती। इस पर पं० बस्तीराम जी का तर्कसंगत भजन पढ़िए-

### भजन नं० २७

**टेक :** कोई आओ हमें समझाओ फिर क्यों लड़ते जी।

**अन्तरा-**

सतयुग बीत गया था सारा, जब नहीं थी गंगा की धारा।
तब कैसे तिरते भवनिधि पारा।
लिखा है सब जाते बैकुंठ को कौन से रस्ते चढ़ते जी॥ कोई० १॥
त्रेता में गंगा जी आई, लाये भगीरथ बलदाई।
सोच समझकर बताओ भाई।
उनके बड़े सब धर्मात्मा थे पहले फूल कहां पड़ते जी॥ कोई० २॥
कहो गंगा को जगत् की माता, शान्तनु से कहो क्या था नाता?
वोह जग से क्या बाहर थे भ्राता।
आओ बताओ मत शरमाओ। टाल-मटोला क्यों करते जी॥ कोई०३॥
लेख आठ पुत्रों का पाता, भोग बिना कैसे हुये भ्राता।
भोग से हुए तो कैसे जगमाता।
आओ दे दो जवाब हमको अब घर में क्यों बड़ते जी॥ कोई० ४॥
जटा शंकरी कैसे बताओ, जाहर भई कैसे कर गाओ।
शिवजी के किस जगह चढ़ाओ।
ऐसी-ऐसी बेशरमाई लिखी है फिर भी अकड़ते जी॥ कोई० ५॥
चाहे जय-जय कितने ही पुकारो, गाली दो दुर्वचन उचारो।
हम तुम्हारे हमें भले ही मारो।
**बस्तीराम** टीके टुन मुन से आर्य लोग नहीं डरते जी॥ कोई०६॥

(पाखण्ड-खंडनी से उद्धृत)

इसी प्रकार गुड़गावें की माता, चण्डी दुर्गा ज्वाला काली, नकली गणेश, पत्थर की देवी, शीतला माता, बासोड़ा आदि के खंडन के अनेक भजन भी पठनीय हैं।

३१ जुलाई तक १०० रुपये अग्रिम के हिसाब से आप अपनी इच्छानुसार इस ग्रन्थ की प्रतियां सुरक्षित करवा सकते हैं। यह मूल्य लागत से भी कुछ कम रखा गया है। ऐसे अवसर कभी-कभी आते हैं। लाभ उठाना चाहिए। प्रकाशन सीमित है। फिर पछताना न पड़े इसलिए लिख रहा हूं।

-**वेदव्रत शास्त्री**, दयानन्दमठ, रोहतक
दूरभाष : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४

## हांसी में चरित्र-निर्माण शिविर का आयोजन

आर्यवीर दल हांसी द्वारा सात दिवसीय चरित्र-निर्माण शिविर का शुभारम्भ दिनांक १९ जून से २६ जून २००५ तक आर्य स्कूल हांसी एवं योग शिविर २२ जून से २६ जून तक हुडा कालोनी हांसी में किया जायेगा। धर्मप्रेमी सज्जन अवश्य लाभ उठायें। **-राकेश कालड़ा, मंत्री आर्यवीर दल हांसी**

# आर्यसमाज द्वारा विषमता के विरुद्ध क्रान्ति

डॉ० सत्यवीर विद्यालंकार

संसार में व्याप्त सामाजिक तथा आर्थिक विषमता बरबस हमारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती है। विधाता ने मनुष्यों के लिये समान रूप से सब प्राकृतिक पदार्थों का सृजन किया है। इनका लाभ प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी प्रकार के भेदभाव के मिलना चाहिये। परन्तु दुनियादारी को देखने से पता चलता है कि समाज में असमानता बहुत है और वह मानव जीवन के प्रायः सब क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होती है। वेदों में सब मनुष्यों की समानता का संदेश दिया गया है। सबके विचार तथा कार्य शुभ हों तथा सबके लिये हितकारी हों और सब मिलकर सब मामलों का निर्णय करें, यहां तक कि सब मिल बांट कर वस्तुओं का उपभोग करें। अकेला खाने का निषेध किया है, क्योंकि ऐसा करने से स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ती है तथा ऐसा करने वाला पाप का भागी होता है; इत्यादि।

इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि मध्यकाल में विषमता बढ़नी शुरु हुई, क्योंकि कोई समानता की बात कहने वाला न रहा तथा अव्यवस्था इतनी फैली कि जिसने जो चाहा वही व्यवहार में चालू कर दिया। इसके कारण प्रत्येव क्षेत्र में गिरावट आ गयी। इस असमानता ने जन्म से अधिकार की भावना को इतना बढ़ावा दिया कि कालान्तर में सब सामाजिक व्यवहार एवं सम्पत्ति का अधिकार जन्म से माना जाने लगा। इसका सबसे बुरा प्रभाव यह पड़ा कि गुण कर्मानुसार चलने वाली वर्णव्यवस्था समाप्त हो गई और जन्म से जाति-पाति खड़ी हो गई। जाति-पाति की यह अव्यवस्था इतनी दृढ़ रूप धारण कर गयी कि ब्राह्मण का लड़का जन्म से ब्राह्मण बनने लगा चाहे वह काला अक्षर भैंस बराबर हो। पूर्वकाल में केवल योग्यता के आधार पर ही वर्ण का निर्धारण होता था। इसी प्रकार शूद्र का लड़का-लड़की चाहे कितना ही गुणवान् क्यों न हो, फिर भी वह शूद्र ही रहेगा। देश के अध:पतन का यह सबसे प्रमुख कारण था, जिसकी जड़ें धीरे-धीरे और भी गहरी होती चली गईं। इसी प्रकार राज्याधिकार जो जनतंत्रीय आधार पर सर्वसम्मति से चला करता था, वह पैतृक परम्परा से होने लगा। राजा का लड़का चाहे कितना ही अयोग्य क्यों न हो, वही राजा बनेगा या फिर जो बलपूर्वक लड़ाई और छीना-झपटी करके राजा बन जाये, वही ठीक माना जाने लगा।

स्वामी दयानंद सम्पूर्ण सामाजिक अव्यवस्था के विरोधी होने के कारण सर्वत्र सुधार करना चाहते थे। उन्होंने लीक से हटकर चलने का निर्णय किया था, जो निश्चय ही बड़ा कठिन था। उन्होंने गली-सड़ी सामाजिक रूढ़ियों तथा गन्दी परम्पराओं के विरुद्ध बिगुल बजा दिया। क्या धार्मिक क्षेत्र, क्या सामाजिक और राजनैतिक तथा आर्थिक क्षेत्र सबको अव्यवस्था के प्रति खुला विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह का उनके अनुयायी आर्यसमाजियों ने पूरी शक्ति लगाकर प्रचार और प्रसार किया। आर्यसमाज के सद्भावों का पोंगापन्थियों ने बड़ा विरोध किया परन्तु वे टिक न पाये। आर्यसमाज के अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही आजकल यत्किंचित् सामाजिक क्रान्ति दिखाई देती है। अछूतोद्धार, सामाजिक भेदभाव की समाप्ति, विधवा-विवाह का समर्थन, देवदासी-प्रथा तथा बाल-विवाह का विरोध, जन्म से जातिपाति का विरोध, अनमेल विवाहों का निषेध, नशा निषेध व मांसाहार भक्षण का निषेध, शिक्षा का प्रचार-प्रसार, गोरक्षा, प्राणिरक्षा तथा सब प्रकार के पाखण्ड का विरोध आदि अनेक कार्य उत्साही तथा विचारशील आर्यो ने अपने हाथ में लिये। पराधीनता के खिलाफ तो वह प्रारम्भ से ही थे, क्योंकि स्वामी जी के अनुसार यथा राजा तथा प्रजा होती है। बुरा शासन सब बुराइयों की जड़ होता है, यह उनकी मान्यता थी। अब इनके द्वारा किये गये महान् कार्य को हम निम्नलिखित संदर्भों में देखते हैं।

**१. धार्मिक अधिकार**-मध्यकाल में धर्म जो केवल ब्राह्मणों तक ही सीमित रह गया था, उसके द्वार स्वामी दयानन्द ने सबके लिए खोल दिये। वेद प्रभु की वाणी है और वह सब मनुष्यों के लिये है-यह घोषणा स्वामी जी ने की तो धर्म पर एकाधिकार समझने वाले लोगों में खलबली मच गयी। केवल इतना ही नहीं स्वामी जी ने स्त्री और शूद्र वर्ग के लिए वेदों तथा धर्मशास्त्रों के पढ़ने की खुली छूट दे दी। धर्म के मंदिरों में प्रवेश करने तथा पूजापाठ करने का सबको समान रूप से अधिकार देने वाले स्वामी दयानन्द अब केवल विरोधी ही नहीं थे बल्कि धर्म के तथाकथित ठेकेदारों की आँखों में चुभने लगे। इसके लिये स्वामी जी ने खुले रूप से जनता के सामने शास्त्रार्थ की परम्परा का सहारा लिया जो बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ। केवल भारतीय ही नहीं विदेशी भी वेद पढ़ सकते हैं, केवल हिंदू ही नहीं ईसाई और मुसलमान भी वेद पढ़ सकते हैं। परमेश्वर ने वेद सबके लिये बनाये हैं तो फिर उनके अध्ययन-अध्यापन में बाधा कैसी? इसी प्रकार सारे धार्मिक कर्मकांड करने का सबको अधिकार है, केवल ब्राह्मणों को नहीं-यह विचित्र घोषणा करने वाले स्वामी जी अकेले व्यक्ति थे। आर्यसमाज के प्रचार के कारण सबको यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करने, शिखा (चोटी) रखने और हवन यज्ञ आदि करने का अधिकार मिल गया। इसका प्रसार इतना हुआ कि दलित वर्ग में उत्पन्न हुए बालक भी वेदादि सत्यशास्त्रों को पढ़कर पंडित बन गए और वेदों के पारायण यज्ञ करवाने लगे। मंदिरों में जाने का सबको अधिकार मिल गया। स्त्रियां वेद-पाठिनी बनकर यज्ञों की ब्रह्मा बनकर नियम तथा मर्यादा के अनुसार सारे क्रियाकलाप तथा कर्मकांड करने लगी। इन मामलों में स्वामी जी और उनके अनुयायी आर्यसमाजी एक तरफ थे और बाकी सब लोग दूसरी तरफ विरोध में खड़े थे। इसलिए यह ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का चमत्कारी कार्य था। आर्यसमाज के प्रसार से इतना अवश्य हो गया कि आज शिक्षा और दीक्षा सबके लिये है। धर्म का पालन और धार्मिक ग्रन्थ सबके लिए हैं। आर्थिक सुविधायें सबके लिये हैं तथा शासन की सत्ता संभालने का सबको बराबर अधिकार है। सारांश यह है कि जिसमें योग्यता हो, वह कोई भी आगे बढ़कर समाज का नेतृत्व कर सकता है। किसी प्रकार के कार्य व्यापार अथवा उद्योग धंधे पर किसी एक वर्ग का अधिकार नहीं हो, सबके लिए समान अवसर उपलब्ध होने चाहिएं। ये कुछ ऐसी बातें थीं जिनसे भारतीय समाज की बहुत-सी कुव्यवस्थायें समाप्त हो गयीं और नई सुन्दर तथा सबके लिये ग्राह्य व्यवस्थाओं का प्रचलन हुआ।

स्वामी दयानन्द ने एक ही ईश्वर, एक ही ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा एक ही धर्म सत्य-सनातन-वैदिक-धर्म सबके लिये मान्य बतलाया। सब मनुष्य बराबर हैं, उनके लिए किसी अवतार या पैगम्बर की जरूरत नहीं है। केवल एक निराकार सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान ईश्वर ही सृष्टि का संचालक है। संसार के संचालन के लिए किसी अन्य की सहायता की जरूरत नहीं है। एक ही ईश्वर सृष्टिकर्ता, संचालक तथा संहरता है।

**२. शिक्षा का अधिकार** - कहते हैं कि शिक्षा मनुष्य की तीसरी आँख है। स्वामी जी ने अपने व्याख्यानों और पुस्तकों में सबको पढ़ने का तथा ज्ञान-विज्ञान, गणित वैधक, कला-भाषा, व्याकरण व तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया। सत्यार्थप्रकाश में शिक्षा के संकुचित स्वरूप को समाप्त करने के लिए माता को पहला गुरु, पिता को दूसरा गुरु और शिक्षक या आचार्य को बालक-बालिकाओं का तीसरा गुरु बतलाया। स्वामी जी ने तथा आर्यों ने नकली गुरुओं तथा गुरुडम के खिलाफ बगावत की। वेदादि धर्मग्रन्थों को पढ़ने-पढ़ाने का सबको अधिकार है तथा अन्य विषयों की शिक्षा सबके लिए है-इस बात का प्रचार करने वाला आर्यसमाज है। आज तो यह काम आसान सा दीखता है परन्तु उस समय की स्थिति का अनुमान लगाकर देखने से पता चलता है कि यह क्रान्तिकारी कदम था जिसके कारण भारतवर्ष का बड़ा हित हुआ। यदि दिमाग पर ताला लगा हुआ हो तो फिर ज्ञान-विज्ञान के विकास की बात करना ही बेमानी है। वह इससे भी आगे बढ़े और कहा कि चाहे राजकुमार या राजकुमारी हो या किसी गरीब की संतान हो, सबके लिए पढ़ाई के मामले में समान व्यवहार तथा समान व्यवस्था मिलनी चाहिये। सबके लिए अनिवार्य शिक्षा की घोषणा करने वाले स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने प्राचीन गुरुकुल आश्रम प्रणाली के पुनरुद्धार की तरफ ध्यान आकृष्ट किया। आर्यों ने अनेक स्थानों पर उत्तम शिक्षा के केन्द्र गुरुकुल स्थापित किये। यह स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के प्रयासों का सुन्दर प्रभाव है कि आज शैक्षिक क्षेत्र में चहुंमुखी उन्नति हो रही है। तथा विषमता भाग रही है।

**३. राजनैतिक अधिकार** - स्वामी जी के समय कहीं पर रजवाड़े थे या अंग्रेजी राज्य था। यह समय जिसकी लाठी उसकी भैंस का था। राजकाज के कार्य में शासक की मनमर्जी ही सबसे बड़ा कानून था। स्वामी जी ने निरंकुश राजतंत्र को ध्येय बताकर जनतांत्रिक शासन प्रणाली लागू करने की बात कही थी। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में बड़े विस्तार से उन्होंने राजधर्म तथा राजनीति का वर्णन किया है। अन्यत्र भी प्रसंगवश लोकतांत्रीय व्यवस्था को प्रश्रय तथा पैतृक एकाधिकार वाली निरंकुश व्यवस्था को अच्छा नहीं माना था। उन्होंने आठवें समुल्लास में लिखा था कि "जब दुर्दिन आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है....विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" वह अंग्रेजी राज्य की परवाह नहीं करते थे तथा निर्भीकता से अपनी सही बात को कहते थे। स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है-यह घोषणा करने वाले स्वामी दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे। आर्यों ने देश की स्वतन्त्रता के लिए बड़े-से-बड़े बलिदान दिये। बहुत से आर्यों की सम्पत्ति नीलाम हुई, बहुतों को जेल की सजायें हुई और हजारों को अंग्रेजों ने फांसी की सजा दी। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि आजादी की लड़ाई में सबसे अधिक त्याग करने वाले तथा सबसे अधिक कष्ट भोगने वाले आर्यसमाजी थे। इतिहासकारों ने आर्यसमाज के इस पक्ष को नजरअंदाज करके आर्यों को केवल उग्र सुधारक मान लिया, इसलिए स्वामी दयानन्द और आर्यों की राजनैतिक विचारधारा उभरकर जनता के सामने न आ सकी। स्वयं आर्यों ने भी स्वतंत्रता मिलने के बाद राजनैतिक क्षेत्र से किनारा कर लिया।

(शेष पृष्ठ पांच पर)

# आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के चुनाव ७ अगस्त २००५ को ही होंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी अग्निवेश द्वारा आर्थिक अनियमितताओं, मनमानी और सभा के सर्वसम्मत निर्णयों के अपनी सुविधानुसार बदलने के आरोपों का संज्ञान लेते हुए आचार्य बलदेव की अध्यक्षता वाली कार्यकारिणी को कारण बताओ नोटि के उत्तर को अस्पष्ट, नकारात्मक दृष्टिकोण से युक्त तथा सार्वदेशिक सभा के अनुशासन उल्लंघन करने वाला पाए जाने पर दिनांक १-५-२००५ के आदेश द्वारा भंग कर दिया था और उसी आदेश के अनुसार स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में ६ मास के लिए नई तदर्थ समिति का गठन कर दिया गया था। इस आदेश के विरुद्ध श्री सत्यवीर शास्त्री ने स्थानीय अदालत में स्थायी स्थगन आदेश प्राप्त करने के लिए दिनांक ५-५-२००५ का दावा पेश कर दिया था, जिस पर ८-६-०५ तक दोनों पक्षों को यथास्थिति बनाए रखने के लिए आदेश दिये गये थे। उसके बाद दोनों पक्षों के वकीलों की बहस सुनने के बाद अतिरिक्त सिविल जज श्री विमल चड्ढा ने अपने दिनांक १५-६-२००५ के आदेश के अनुसार तदर्थ समिति को दो मास के अन्दर सभा का नया चुनाव करवाने, कर्मचारियों को वेतन सभाकोष से देने, भूमि का कोई पट्टा न देने तथा कोई बड़ा निर्णय न लेने की हिदायत दी थी। इस आदेश की अनुपालना में तदर्थ समिति ने दिनांक १६-६-२००५ की अपनी आपात बैठक में ७ अगस्त २००५ को नया त्रैवार्षिक चुनाव करवाने का सर्वसम्मत निर्णय लेकर तुरन्त प्रभाव से चुनाव प्रक्रिया शुरू कर दी। इस बीच श्री सत्यवीर शास्त्री ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का अपने आपको मन्त्री बताते हुए सैशन कोर्ट में निचली अदालत के आदेश को रोकने की अपील कर दी और अदालत से अनुरोध किया कि तदर्थ समिति को भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का नाम प्रयोग करने से रोक जावे।

इस मामले में भी दोनों पक्षों के विचार सुनने के बाद माननीय श्री आर.के. बिश्नोई अतिरिक्त जिला जज रोहतक ने दिनांक १८-६-२००५ के अपने आदेश के अनुसार तदर्थ समिति को चुनाव प्रक्रिया जारी रखने की अनुमति इस शर्त के साथ दे दी कि अपील का फैसला होने तक चुनाव के परिणाम घोषित न किये जावें। आदेश के बाकी भाग का विवरण जिसमें आचार्य बलदेव के मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री को स्थगन आदेश मिला है, पूरे विश्लेषण सहित अगले अंक में प्रकाशित किया जावेगा। सभी आर्यसमाजें तुरन्त अपने अपने प्रतिनिधियों के बारे में श्री रणवीर शास्त्री से सम्पर्क करें क्योंकि दिनांक १५-७-२००५ तक मतदाता सूची को अन्तिम रूप दे दिया जावेगा।

-डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार

## शोक समाचार

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज रोहणा (सोनीपत) निवासी श्री धनपतसिंह आर्य का ८८ वर्ष की आयु उपरान्त ३१-५-०५ को देहान्त हो गया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य एवं विशेष सहयोगी श्री रामचन्द्र आर्य शास्त्री के चाचा थे। श्री धनपतसिंह जी संयमी जीवन जीने वाले वास्तविक आर्य थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प्रबन्ध समिति दयानन्दमठ, रोहतक के सभी पदाधिकारीगण एवं मान्य सदस्यों ने उनके निधन पर शोक प्रकट किया और शोक संतप्त परिवार को साहस एवं सहनशक्ति प्रदान करने की परमात्मा से प्रार्थना की गई एवं स्व० श्री धनपतसिंह आर्य को श्रद्धांजलि प्रकट की गई। आर्य परिवार की ओर से आर्यमर्यादाओं का पालन करते हुए अन्तिम संस्कार भी वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। ८ जून, २००५ को उनके निवास रोहणा में शान्ति यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य यशपाल व श्री चन्द्रपाल राणा थे। इस अवसर पर उनकी स्मृति में श्री रामचन्द्र आर्य ने ११०० रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान दिया।

निवेदक : **सन्तराम आर्य**, उपमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

# शोक-समाचार



जन्म : 8.8.1948
मृत्यु : 19.6.2005

श्रीमती सुवीरा देवी सुपुत्री श्री मा० जागेराम आर्य ग्राम देवली, पो० महरौली, नई दिल्ली की पुत्री थी। वह कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका थी। उनका विवाह २३ जून १९६४ ई० को श्री वेदव्रत शास्त्री के साथ हुआ। इन्दिरा गान्धी बालिका निकेतन अरडावता, जिला झुझनूं से B.S.T.C. अध्यापक ट्रेनिंग की। तत्पश्चात् ५ जुलाई, १९६६ से रोहतक में आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक के संचालन में सहायक रहीं। समाजसेवा तथा अतिथिसेवा में अत्यधिक रुचि के साथ संलग्न रहती थीं।

सुवीरा देवी को १९९४ से पारकिंसन रोग हो गया था। एम्स दिल्ली के निर्देशानुसार चिकित्सा चलती थी। १९ जून २००५ को सायंकाल ५.३० बजे ५७ वर्ष की आयु में देहान्त होगया।

**पति**-वेदव्रत शास्त्री, **४ पुत्र**-विनोद आर्य, विजय आर्य, विक्रमसिंह शास्त्री एवं डॉ० विवेकानन्द शास्त्री, **४ पुत्रवधू**-सुनील देवी, प्रतिभा सुमन, बबीता देवी एवं मनीषा देवी, **५ पौत्र** और **२ पोतियों** सहित १६ व्यक्तियों के भरे-पूरे संयुक्त परिवार को छोड़कर १९ जून को अचानक परलोक सिधार गईं। सुवीरा देवी **प्रतिभा सुमन** (पूर्व चेयरमैन, नगरपरिषद्, रोहतक) की सास थीं। हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान और उत्तरप्रदेश से पधारे सैकड़ों रिश्तेदार एवं शहर के अनेक नगर पार्षद तथा राजनीतिक पार्टियों के नेतागण और आर्य बहन-भाइयों ने वैदिक रीति से २०.६.२००५ को दिन के १२ बजे अन्त्येष्टि-संस्कार सम्पन्न किया।

**अस्थि-संचय** (फूल चुगना) का कार्य २२ जून बुधवार को प्रातः ७ बजे होगा और **आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में २६ जून रविवार को प्रातः १० बजे से १२ बजे तक श्रद्धाञ्जलि सभा सम्पन्न होगी। इससे पूर्व ९ बजे अपने निवास पर शान्तियज्ञ होगा।**

| **प्रतिभा सुमन** | **वेदव्रत शास्त्री** |
|---|---|
| नगर पार्षद् वार्ड नं० 7 | आचार्य प्रिंटिंग प्रेस |
| पूर्व च्येयरमैन | दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, |
| नगर परिषद्, रोहतक | रोहतक (हरयाणा) |
| Mob.-94160 50 111 | दूरभाष : 01262-276874 |
| Vijay-94160 51 111 | 277874 |

## आर्यसमाज द्वारा विषमता.... (पृष्ठ चार का शेष)

४. **समानाधिकार** - स्वामी जी का विश्वास था कि जब तक सबको समान अवसर न दिये जायें तब तक अन्य सब प्रकार की समानता बेकार है। भारतीय समाज में अव्यवस्था के कारण धन की असमानता इतनी अधिक है कि एक तरफ धन सम्भाला नहीं जा रहा और दूसरी तरफ पेट भर भोजन भी नहीं मिलता। इसी प्रकार स्त्रियों को कोई अधिकार नहीं था। वह केवल भोग की वस्तु समझी जाती थी। उसके जीवन की यात्रा केवल घर की चारदीवारी में बन्द थी। स्वामी जी ने तथा उनके अनुयायियों ने मातृशक्ति के उत्थान के लिए बहुत प्रयत्न किया। निरीह शूद्रों के लिए तो कोई भी अवसर ऐसा न था कि जिसके आधार पर वह अपना जीवन उन्नत कर सकें। उसे पैदा होकर जीवनभर केवल सेवा करने के अतिरिक्त ओर कोई किसी प्रकार का अधिकार नहीं था। शूद्र का जीवन नारकीय था। स्वामी जी ने सब प्रकार की विषमता का विरोध किया था। उन्होंने बिना पक्षपात मनुष्यमात्र के लिये आगे बढ़ने का अवसर देने का समर्थन किया था। आर्यों ने इस बात का खुलकर प्रचार किया कि यदि सबको भेदभाव के बिना समान अवसर दिये जायें तो सब मनुष्य उन्नति कर सकते हैं और सुखी समाज की स्थापना हो सकती है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि स्वामी जी दूरदृष्टिवाले क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। सामाजिक विषमता को मिटाने के लिए सब आर्यों ने एडी चोटी का जोर लगाया था, परन्तु फिर भी मनोवांछित सफलता उन्हें न मिल सकी, जिसके अनेक कारण थे। यदि आर्यसमाज के विचारधारा के अनुसार सब सामाजिक तथा राजनैतिक व्यवस्थायें चलतीं, तो भारतवर्ष की हालत बदल गयी होती।

**टी.ओ.सी., आई.डी.सी., एस.सी.ओ.-११२६-२७,
सैक्टर-२२बी, चण्डीगढ़-१६००२२**

# जुआं में युवा तथा युवतियों का सदाचार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न



मुख्य अतिथि जिला राजस्व अधिकारी महेन्द्रसिंह धनखड़ को सम्मानित करते हुए महाशय खजानसिंह।

आर्यसमाज जुआं जि०सोनीपत में आर्य वीरदल सोनीपत के तत्त्वावधान में युवक तथा युवतियों का ६ से १२ जुन २००५ तक प्रशिक्षण शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। ५ जून की सांय ६ से ७ बजे तक ग्राम के मुख्य मार्गों पर शोभायात्रा निकाली गई। सारा ग्राम **वैदिक धर्म की जय** तथा **शराब छोड़ दो, बोतल फोड़ दो** आदि के नारों से गूंज गया। इसमें जिला सोनीपत आर्यवीर दल तथा शिविर में भाग लेने वाले युवक तथा युवतियों के अतिरिक्त आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। रात्रि को आर्यसमाज के संस्थापक स्व० श्री धर्मपाल आर्य के घर के सामने श्रीमती दयावती आर्या एवं श्रीमती गार्गी जी ने महिला सत्संग में प्रभावशाली गीत सुनाये। उद्घाटन के रूप में ६ जून को प्रात: आर्यसमाज की यज्ञशाला में सामूहिक यज्ञ के बाद आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। यज्ञ के बाद ओ३म् के झण्डे का ध्वजारोहण हुआ। श्री जौहरीसिंह जो कि हरयाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक थे, के पुत्र श्री कुलदीपसिंह तथा उनके चाचा श्री रामचन्द्र जी की मंडली ने ईश्वरभक्ति के वैदिक शिक्षाप्रद मनोहर गीत प्रस्तुत किए। आचार्य वेदमित्र जी व महिलाओं से सामाजिक कार्यों में सम्मिलित होने का आग्रह करते हुए कहा कि आज पुरुष वर्ग शराब के सेवन में फंस चुका है और उन्हें महिलाएं ही सामाजिक बुराई से निकाल सकती हैं क्योंकि वे इस बुराई से स्वयं दूर हैं। दिनांक ७ जून को प्रात: युवाओं तथा युवतियों का शिविर पृथक्-पृथक् विद्यालयों में आरम्भ हुए। युवाओं का शिक्षण आचार्य सत्यवीर डावड़ा तथा युवतियों का आचार्य गार्गी तथा दयावती आर्या ने किया। श्री वेदपाल शास्त्री भी दोनों स्थानों पर जाकर अपना योगदान दे रहे थे। रात्रि को ग्राम में पाने वार दिनांक १० जून को प्रात: आर्यसमाज मंदिर में ग्राम की दोनों महिला सरपंच यज्ञ में सम्मिलित हुईं। आचार्य वेदमित्र जी ने युवाओं तथा युवतियों का सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत संस्कार करवाया तथा इस संस्कार की विस्तार से व्याख्या की। रात्रि को हरिजनों के मोहल्ले में श्री कुलदीप सिंह तथा श्री रामचन्द्र आर्य ने हरिजन भाई बहनों को प्रेरणा दी कि वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपना उत्थान करें तथा जातपात का ध्यान न रखकर सभी के साथ मिलकर परोपकार के कार्य करें। उन्होंने एक हरिजन लड़की की कथा सुनाकर इसकी व्याख्या की।

११ जून को प्रात: यज्ञ के कार्यक्रम के अवसर पर आचार्य वेदमित्र जी, मा० ज्ञानसिंह आर्य मोरखेड़ी, माननीय चन्द्रपाल जी पूर्व न्यायाधीश इलाहाबाद हाईकोर्ट, श्री खजानसिंह आर्य के प्रवचन तथा श्री रामचन्द्र आर्य की मण्डली के प्रभावशाली भजन हुए। इसी प्रकार रात को कालण पाने में भजन मंडली के कार्यक्रम में स्वामी नित्यानंद जी पौत्र चौ० महेन्द्रसिंह धनखड़ राजस्व अधिकारी जि० सोनीपत का आर्यसमाज की ओर से स्वागत किया गया। उनके दादाजी ने इस पाने में कई बार एक महीने तक निरन्तर आर्यसमाज का प्रचार किया था। श्री धनखड़ साहब ने अपने दादा जी के गाये हुए ३-४ गीत स्वयं सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। वे स्वामी जी के पौत्र होने के साथ छिक्कारा गौत्र के भांजे भी है। अत: परम्परा के अनुसार १०१ रुपए देकर सम्मानित किया।

दिनांक १२ जून को प्रात: युवक तथा युवतियों ने आर्यसमाज मंदिर में श्रद्धापूर्वक सामूहिक यज्ञ स्वयं करके दिखाया। चौ० महेन्द्रसिंह छिक्कारा सुपुत्र श्री दलीपसिंह नम्बरदार सेवानिवृत्त सचिव हरयाणा सरकार की सुपुत्री कु० भावना ने गायत्री मंत्र तथा उसकी व्याख्या सुनाकर सभी को प्रभावित किया। उन्हें जो उत्साहित करने के लिए इनाम मिला, उसने आर्यसमाज को दान देकर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर युवाओं तथा युवतियों ने एक सप्ताह तक जो योगासन, व्यायाम तथा वैदिक शिक्षा ग्रहण की है, का प्रदर्शन करके सभी को चकित किया। सभी ने इस शिविर के कार्यक्रम की सराहना की।

इस कार्यक्रम में ग्राम की दोनों पंचायतों की ओर से चौ० महेन्द्रसिंह धनखड़ जि० राजस्व अधिकारी को पगड़ी भेंट करके हार्दिक स्वागत किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व प्रधान आचार्य यशपाल, पूर्वमंत्री सत्यवीर विद्यालंकार ने इस कार्यक्रम के आयोजन की सफलता पर धन्यवाद दिया तथा अपनी ओर से ११०१ रुपए की आर्थिक सहायता दी। आर्यसमाज मंदिर के एक द्वार का नाम स्वामी नित्यानंद द्वार की आधारशिला भी रखी गई। आर्यवीर दल सोनीपत के सहयोग का भी आर्यसमाज की ओर से आभार प्रकट किया गया। अंतिम दिन आर्य चिकित्सक केन्द्र की ओर से रोगियों का नि:शुल्क उपचार किया गया। वैदिक साहित्य की भी प्रदर्शनी लगाई गई।

केदारसिंह आर्य

## श्री धर्मचन्द शास्त्री के निधन पर शोकसभा में श्रद्धाञ्जलि दी

आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता श्री धर्मचन्द शास्त्री का दिनांक..........को निधन हो जाने पर दिनांक १९ जून २००५ को माडल टाउन रोहतक में धर्म निवास पर शान्तियज्ञ के पश्चात् शोकसभा का आयोजन किया गया। इसका संचालन प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने किया। इस अवसर पर हरयाणा के मंत्री श्री रणदीपसिंह सुरजेवाला तथा विधायिका श्रीमती प्रसन्नीदेवी के अतिरिक्त सैकड़ों की संख्या में आर्य नर-नारी उपस्थित थे। वक्ताओं ने उन्हें श्रद्धाञ्जलि देते हुए श्री शास्त्री जी को आर्यसमाज का महान् शिक्षाशास्त्री तथा समाजसुधारक बताया। वे गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत की महासभा के कई वर्षों तक उपमंत्री तथा मन्त्री रहे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा हरयाणा के भी सदस्य रहे हैं। अपने ग्राम पाथरी जीन्द के संस्थापक थे और अन्तिम समय तक आर्यसमाज का संरक्षण करते रहे।

-केदारसिंह आर्य, लखीराम आर्य अनाथालय, रोहतक

# हमारे पूर्वज संध्या-हवन करते थे

❑ डॉ० बिजेन्द्रपालसिंह, चन्द्रलोक, खुरजा

शास्त्रानुसार हमें उस मार्ग पर चलना चाहिए जिस पर हमारे पूर्वज जो महान् आत्मा थे चलते थे और जो दुष्ट हों उनके मार्ग का अनुसरण कभी नहीं करना चाहिए।

हमारे पूर्वज कौन थे सभी जानते हैं। हम उन आर्य महापुरुषों की ही सन्तान हैं जिनका नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। महाराजा मनु, रघु, राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन, महाराजा भर्तृहरि, विश्वामित्र, याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा आदि अनेक महान् पुरुष व सन्नारियां इस आर्यभूमि पर हुए हैं। हम उनके जीवन वृत्त को देखें तो पायेंगे कि वह सभी निराकार सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, अनादि, सृष्टिकर्ता ईश्वर की ही उपासना करते थे। इतना जानते हुए भी आज लोग भ्रमवश राम व कृष्ण तथा अनेक देवी-देवताओं की मूर्ति बना अवतार ...कर उनकी पूजा करते हैं। राम व कृष्ण, जबकि ...की ही उपासना करते थे। संक्षेप में अध्ययन से ही ...त जाएगा कि वह हमारे पूर्वज ईश्वर की सन्ध्या ...हवन किया करते थे मूर्तिपूजा नहीं करते थे।

**महाराजा भर्तृहरि**-महाराजा भर्तृहरि ने जब संन्यास ले लिया उज्जैन से बीस कोश दूर जाकर विश्राम करना चाहा तो वहां सहस्त्रों व्यक्ति उनके स्वागत हेतु उपस्थित हो गए थे। भर्तृहरि ने उनसे कहा था कि मैं ऐसे व्यक्ति के घर भोजन कर सकता हूं जिसके घर की छत की कड़ियां हवन की अग्नि के धूम से काली पड़ गई हों तब भी आतिथ्य हेतु वहां लोगों की भीड़ लग गई थी।

इससे प्राचीनकाल की स्थिति का पता चलता है उस समय कोई घर ऐसा नहीं होता था जहां प्रातः सायं अग्निहोत्र न होता हो।

**महाराजा अश्वपति**-ऐसा ही वृत्तान्त महाराजा अश्वपति के विषय में है। एक बार महाराजा अश्वपति के यहां कुछ विद्वान् आए। महाराजा ने विद्वानों से भोजन हेतु निवेदन किया इस पर विद्वान् ब्राह्मणों ने भोजन करने से मना कर दिया। इस पर अश्वपति बात को समझकर हाथ जोड़कर कहने लगे-

**न मे स्तेनो जनपदे न कर्दयो न मद्यपः।**
**नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥**
-छान्दोग्योपनिषद

अर्थात् मेरे राज्य में कोई चोर नहीं, कहीं कोई मद्यपानी नहीं, कोई कृपण नहीं है। जो अग्निहोत्र न करता हो, ऐसा पुरुष कोई भी मेरे राज्य में नहीं है...।

**गीता के श्लोक**-गीता में भी संध्या उपासना, यज्ञ के विषय पर प्रकाश किया है निराकार ईश्वर की उपासना पर बल दिया है-

**देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।**
**परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥**
(गीता, अ० ३, श्लोक ११)

अर्थात् हम लोग यज्ञ द्वारा देवताओं को उन्नत करो। वे देवता तुम लोगों को उन्नत करें....।

**सहयज्ञाः प्रजा स्त्रष्टा पुरोवाच प्रजापतिः।**
**अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥**
(गीता, अ० ३, श्लोक ११)

प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में प्रजाओं को रचकर उनसे कहा कि तुम लोग इस यज्ञ द्वारा उन्नति को प्राप्त होओ। यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित भोग प्राप्त करने वाला हो।

**महाभारत शल्यपर्व**-

**अरण्ये यो विमुच्यते संग्रामे वा तनु नरः।**
**क्रतुनाहृत्य महतो महिमानं स गच्छति॥**

दुर्योधन कहता है-"जो बड़े-बड़े यज्ञों का अनुष्ठान करके वन या संग्राम में शरीर का त्याग करता है वही क्षत्रिय महत्त्व को प्राप्त होता है।"

**महाभारत सौप्तिक पर्व**-प्रथम अध्याय में वर्णित है-

**तेऽवतीर्य रथेभ्यश्च विप्रमुच्य च वाजिनः।**
**उप-स्पृश्य यथान्यायं सन्ध्यामन्वासत प्रभो॥**

अर्थात् प्रभो वहां रथ से उतरकर उन तीनों ने अपने घोड़ों को खोल दिया और यथोचित रूप से स्नान आदि करके सन्ध्या उपासना की।

स्थान-स्थान पर सन्ध्या-उपासना करना ही दिया है कहीं भी मूर्तिपूजा नहीं है। उद्योगपर्व में देखें-

**कृत्वा पौर्वाह्हिकं कृत्यं स्नातः शुचिरलंकृतः।**
**उपतस्ये विवस्वन्तं पावकं च जनार्दनः॥**
(महाभारत, उद्योगपर्व अध्याय ८)

"हस्तिनापुर के लिए प्रस्थान करने से पूर्व श्रीकृष्ण व युधिष्ठिर ने संध्या व हवन करके ब्राह्मण विद्वानों को दान दिया।"

यही नहीं रामायण काल में तो ग्राम नगर वनों में आश्रमों में हवन होते थे। जब भरत राम को वापिस लाने को गए थे तो राम ने भरत से राज्यव्यवस्था के साथ अग्निहोत्र व आहुतियां वेदमंत्रों आदि के सम्पन्न किए जाने के विषय में भी पूछा था। विश्वामित्र बचपन में राम लक्ष्मण को वन में यज्ञों में विध्वंस करने वाले राक्षसों को मारने व उनसे रक्षा के लिए साथ ले गए थे। वनवास के समय भारद्वाज ऋषि के आश्रम से अग्निहोत्र का धूआं उठते देख ऋषि के वहां होने का अनुमान श्रीराम ने किया था। किष्किन्धा काण्ड का एक उदाहरण देखें-

**ततः कुशपरिस्तीर्णं समिद्धं जातवेदसम्।**
**मन्त्रपूतेन हविषा हुत्वा मन्त्रविदो जनाः॥**

मन्त्रवेत्ता पुरुषों ने वेदी पर अग्नि की स्थापना करके उसे प्रज्वलित किया और अग्नि वेदी के चारों ओर कुश बिछाए फिर अग्नि का संस्कार करके मन्त्रपूत हविष्य के द्वारा प्रज्वलित अग्नि में आहुति दी।

यही नहीं रामायण के प्रत्येक काण्ड व सर्ग में दृष्टिपात करें तो कहीं भी अवतारवाद मूर्तिपूजा नहीं है अपितु वेद की ऋचाओं द्वारा ईश्वर की स्तुति, स्वस्तिवाचन है। सन्ध्या-हवन का ही वर्णन है।

आज आर्यसमाज जनता की जागृति हेतु अथक प्रयास कर रहा है कि सभी जागृत हों और ईश्वर, ईश्वरीय ज्ञान वेद को समझें। मूर्तिपूजा, अंधविश्वास, अंधश्रद्धा, काली, दुर्गा, संतोषी, पीर, पैगम्बर, ईंट-पत्थरों को छोड़कर एक ईश्वर को जानें उसी की उपासना करें उसी के बताए वेदज्ञान के अनुसार आचरण करें।

हमारे पूर्वज सन्ध्या-उपासना करते थे, वेदमन्त्रों की ऋचाएं बोलते थे, हवन करते थे। आज पुनः हमें उसी आनन्द प्राप्ति के मार्ग पर चलना चाहिए जिससे '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' का उद्घोष सफल हो सके।

# आर्यसमाज की दृष्टि में श्रीराम

❑ दयाराम पोद्दार, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द पथ, रांची

भारतीय संस्कृति के उन्नायक के रूप में श्रीराम और श्रीकृष्ण का स्थान सर्वोपरि है। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि इन दोनों के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों ही भारतीय संस्कृति रूपी रथ के दो चक्र हैं। श्रीरामचन्द्र के बारे में लोगों में तीन तरह के विचार पाये जाते हैं-

१. अधिकांश हिन्दू लोग श्रीराम की मूर्ति बनाकर उन्हें भगवान् का अवतार मानकर उनकी स्थूल पूजा करते हैं। २. महात्मा गांधी, सन्त विनोबा भावे और कई लोग श्रीराम को काल्पनिक पुरुष मानते हैं। ३. आर्यसमाज से जुड़े हुए लोग श्रीराम को एक ऐतिहासिक महापुरुष मानते हैं।

आर्यसमाज का मानना है कि श्रीराम के जीवन चरित्र से शिक्षा लेकर हमें भी उनकी तरह बनना चाहिये। इसके लिये आवश्यक है कि लोग उनके चरित्र की पूजा करें न कि उनके चित्र की। सम्पूर्ण हिन्दूसमाज वेदों को मानता है। वेदों की मान्यता के अनुसार ईश्वर अवतार नहीं लेता है। वेदों का पक्षधर होने के नाते आर्यसमाज भी श्रीरामचन्द्र को ईश्वर का अवतार के स्थान पर एक महापुरुष मानकर उनके चरित्र की सच्ची पूजा करता है। इससे सामान्य हिन्दुओं में यह मिथ्या भ्रान्ति व्याप्त हो गई है कि आर्यसमाज श्रीराम को नहीं मानता है और ईश्वर के अवतार के रूप में श्रीराम को नहीं मानने वाले आर्यसमाज को लोग नास्तिक मानते हैं। जबकि आर्यसमाज का दावा है कि वे ही श्रीरामचन्द्र के सच्चे उपासक हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में किसी मिथ्या भ्रान्ति का शिकार होकर यदि कुछ लोग कोई गलतफहमी पाल लेते हैं तो इसमें आर्यसमाज का कोई दोष नहीं है। आर्यसमाज श्री रामचन्द्र को मर्यादापुरुषोत्तम के रूप में अपना महापुरुष मानकर उनके जन्मदिवस को आर्यसमाज के एक प्रमुख पर्व के रूप में मनाता है अतः आर्यसमाज पर मिथ्या आरोप नहीं लगाना चाहिए।

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र का जीवन रामायण में वर्णित है जिसे बाल्मीकि ऋषि ने लिखा था, जो उनके समकालीन थे। गोस्वामी तुलसीदास ने भी रामचरित मानस लिखा है, जिसमें उन्होंने श्रीराम को ईश्वर का अवतार माना है जबकि वाल्मीकि ने श्रीराम का चरित्र चित्रण एक ऐतिहासिक महापुरुष के रूप में किया है। **आर्यसमाज वाल्मीकि के राम को मानता है, तुलसी के राम को नहीं।**

आर्यसमाज का मानना है कि एक ऐतिहासिक महापुरुष को यदि अवतारी मानकर लोग स्थूल पूजा करते हैं, तो श्रीराम अपने अलौकिक रूप में सामान्य लोगों के लिये कोई प्रेरणा नहीं दे सकेंगे क्योंकि उनका जीवन सामान्य लोगों के लिये अनुकरणीय नहीं होगा। लोगों का विश्वास होगा कि श्रीराम तो भगवान् थे, हम सामान्य लोग उनके जैसे कार्य कैसे कर सकते हैं? आज तो श्रीराम को मानने वाले लोगों ने ही श्रीराम से राम-राम कर लिया है। अतः आवश्यक है कि श्रीराम के अनुयायी यदि श्रीराम के चरित्र की पूजा करें तो यह न केवल उनके लिये बल्कि सम्पूर्ण मानवजाति के लिये श्रेयस्कर होगा।

## ईश्वर-प्रार्थना

**टेक-भगवान् आज फिर से, दे दो हमें सहारा।**
**आर्यों की इस जहां में, फिर शान हो दोबारा॥**

**१. वेदों की गूंज चहुंदिशि, छाए गगन में ऐसे,**
**जैसे कि ऋषिवरों ने, गाकर यहां सुधारा।**
**भगवान् आज फिर से.....।**

**२. ऋषिवर ने फिर कहा था, आपस में प्रेम होवे,**
**सन्ध्या-हवन करें सब, जय का लगावें नारा।**
**भगवान् आज फिर से.....।**

**३. अज्ञानता के निशदिन, बादल जहां फैले,**
**दे दो प्रकाश भगवन्, मैं भक्त हूं तुम्हारा।**
**भगवान् आज फिर से.....।**

**४. कोई न साथ देगा, मेरे प्रभु के भक्तो,**
**इक ओ३म् का भजन ही, साथी बने तुम्हारा।**
**भगवान् आज फिर से.....।**

**५. सुमिरन करो प्रभु का, जीवन अमूल्य पाकर,**
**वरना 'सरस' धरा पर, देखोगे तुम नज़ारा।**
**भगवान् आज फिर से.....।**

-सुरेन्द्रकुमार 'सरस', आचार्य प्रेस, गोहानामार्ग, रोहतक

# जागते रहो, जागते रहो!

❑ राजपालसिंह शास्त्री, आचार्य, एम.ए., ३४ चन्दन पार्क, दिल्ली-४२

आर्यवीरो! सचेत हो जाओ। आज विशेष क्रान्ति की आवश्यकता है। भूल न करो। चारों ओर भ्रष्टाचार, भ्रूणहत्यायें तथा अनाचार फैल रहा है। कन्याओं का अपहरण। बैंक लूटे जा रहे हैं। औषधियों का निर्माण अवैधानिक रूप से हो रहा है। आज आर्य लोग भी अनार्य होते जा रहे हैं। नाम के तो आर्य हैं, उनके कर्म देखिए। घर में सन्ध्या तथा यज्ञ का अभाव। मम्मी-डैडी का उच्चारण, नमस्ते से घृणा। घरों में न कोई संस्कार। हां, जन्मदिन अत्यन्त ठाठ-बाट से मनाये जाते हैं।

ऐसे विकराल काल में आर्यो! तुम्हें ही पुनः सचेत होना होगा। तुम्हीं हुंकार भर के पुनः उठो। महर्षि दयानन्द का भी ऐसे ही अवसर पर प्रादुर्भाव हुआ था। आज एक महर्षि नहीं अनेक दिव्य आत्माएं चाहिएं। गली-गली, ग्राम-ग्राम तथा प्रत्येक नगर में महर्षि दयानन्द जैसी दिव्य आत्माओं की आवश्यकता है। अतः जागो! और उठो! **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत।**

एक कथा प्रसिद्ध है कि एक थानेदार के पास बहुत उत्तम घोड़ा। अत्यन्त मनमोहक घोड़ा था। चोर और डाकू भी उसे हरण करना चाहते थे। थानेदार भी व्याकुल था। दिनभर सरकारी ड्यूटी और रात को घोड़े की रखवाली। अत्यन्त व्याकुल होने पर थानेदार ने विचार किया कि कोई चौकीदार रख लूं तो कुछ शान्ति सम्भव है। तभी एक व्यक्ति पुकारता हुआ आया, कह रहा है, किसी को नौकर की आवश्यकता हो तो मेरी सेवाओं से लाभ उठा सकता है। थानेदार को भी ये शब्द सुनाई दिए। थानेदार ने उस व्यक्ति को बुलाया और कहा कि तुम नौकरी चाहते हो। श्रीमान् जी! हां, नौकरी तो चाहता हूं। तुम्हारा नाम क्या है। श्रीमान् जी! मुझे जागू के नाम से पुकारते हैं। बहुत अच्छा, मुझे भी जागू की आवश्यकता है। मुझे भी ऐसे नौकर की आवश्यकता है जो रातभर जाग सके। रात में जागू को उसकी ड्यूटी समझा दी गई। बैठने-उठने के एक छोटी-सी चारपाई दे दी। बता दिया कि कुछ डाकू घोड़े को चुराना चाहते हैं। तुझे सारी रात जागना होगा। थानेदार सब कुछ समझाकर विश्राम के लिए चला गया। इधर जागू ने भी करवट ले, सो गया। थानेदार ने सोचा आज पहला दिन है। देखूं, जागू क्या कर रहा है? दो-तीन आवाज दी, सोता हुआ जागू सचेत होकर कहने लगा। श्रीमान् जी, चिन्ता न करें, मैं विचार-मन्थन कर रहा था कि दरोगा जी ने यह खूंटा जहां गाड़ा था, वहां की मिट्टी कहा खिसक गई? अस्तु-दरोगा जी जागू को सचेत कर पुनः विश्राम करने चले गये। इधर जागू भी विश्राम करने लगा। रात को १२ बजे पुनः जागू को देखने आये। दो-तीन बार पुकारा-जागू, ओ जागू, अरे जागू! तीसरी ध्वनि करने पर जागू जागा। श्रीमान् जी! आप चिन्ता न करें। मैं जाग रहा हूं। मैं तो यह विचार कर रहा हूं कि दरोगा जी घोड़े को बड़ी-बड़ी दूब (घास) खिलाते हैं, यह घोड़ा गोल-गोल लीद करता है। दरोगा जी कहने लगे-अरे जागू! इन दार्शनिक बातों को छोड़कर सचेत होकर जाग। अब दरोगा जी ने एक खरहरा उसके हाथों में थमा दिया। ले इसे। घोड़े पर फेरते रहना। घोड़े को भी आनन्द आयेगा और तेरी नींद भी खुली रहेगी।

दरोगा जी भी विश्राम करने चले गए और जागू भी लेट गया। गहरी नींद आ गई। डाकू आये, घोड़ा भगा ले गये। प्रातः चार बजे जागू ने देखा, घोड़ा तो है नहीं, घबराया। बाहर निकला तो देखा एक सिहा, सफेद रंग का, जंगल से पकड़ लाया और खूंटे से बांध दिया। अब दरोगा जी भी ५-६ बजे उठे, देखा, घोड़ा तो है नहीं। अरे जागू! घोड़ा कहां है! श्रीमान् जी! खरहरा करते-करते घिस गया, अब तो यही बचा है।

अरे आर्यो! तुम तो सब में अग्रणी थे। तुम्हारी देखा-देखी अन्य सब मतमतान्तर जलसे-जलूस करने सीख गये। तुम्हारे सभी गुणों को अन्य लोग अपनाने लगे। तुम तो परस्पर लड़ना-झगड़ना सीख गये। अपने कर्त्तव्यों को भूल गये। तभी तो वेद उपदेश देता है कि-

**यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।**
**यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥**

ऋग्० ५-[illegible]

**भावार्थ**-जो जागता है-वेद भी उसी की कामनाएं पूर्ण करते हैं। नि[illegible] अप्रमादी, सावधान होकर चलने वाले मनुष्य को ही ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति होती, शान्ति के साधन भी उसी को प्राप्त होते हैं। संसार में भी ऐसे पुरुषों का मान-सम्मान होता है। जो जागता है। जो सचेत और सावधान रहता है।

अतः अब सुसमय है। अपने कर्त्तव्य का दृढ़ता से पालन करते हुए इस आतंकवाद को समाप्त करो।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी आप तन-मन-धन से, लग्न से आर्यों की बिगड़ी छवि को सुधारने में समर्थ हैं। पुरुषार्थ कीजिए। हम सब आपके साथ हैं। महर्षि दयानन्द की भांति कर्त्तव्यशील बनकर मार्ग में आने वाले सभी कांटों को और विघ्न-बाधाओं को समाप्त करने में समर्थ हैं।

जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।

**ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तोऽराव्णः॥**
(ऋग्वेद ९-६३-५) पाप करने वालों का नाश करके सारे संसार को आर्य बनाओ।



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१



685 पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरांचल)


आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र




प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१

वर्ष ३२ अंक ३० २८ जून, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# पूरी सच्चाई बताने से परहेज क्यों?

❑ डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार

मैं प्रत्येक उस व्यक्ति का दिल से सम्मान करता हूं जो अपनी योग्यता और क्षमता का अपने उत्तरदायित्व को निभाने में पूरी निष्ठा और ईमानदारी से उपयोग करता है और प्रत्येक उस व्यक्ति को अत्यन्त घातक मानता हूं जो इस युगल (योग्यता व क्षमता) का किसी संगठन के लिए (भले ही उसके मूल में निजी स्वार्थ छुपा हुआ हो) विध्वंसक मार्ग प्रशस्त करने के लिए दुरुपयोग करता है। यही उपयोग, जिसे हम सदुपयोग भी कह सकते हैं तथा दुरुपयोग प्रत्येक संगठन में समय-समय पर देखे जा सकते हैं, जो शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की भूमिका अदा करते हैं, यह शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की जोड़ी हर महीने दो बार आपस में मिलती हैं और बड़ी ईमानदारी व देरी किये बिना अपनी सत्ता का हस्तान्तरण दूसरे के हाथों सौंपकर अगले पूरे पन्द्रह दिनों तक बिना किसी बेचैनी के और उतावलेपन के शान्त रहती है। इस जोड़ी के दोनों पक्षों को प्रकृति के शाश्वत नियमों में बन्धकर काम करना पड़ता है। इन्हीं नियमों को हम संविधान की भी संज्ञा दे सकते हैं। किन्तु आज तक अर्थात् आदि सृष्टि से लेकर अब तक इन दोनों में कभी भी किसी प्रकार का टकराव व बिखराव सुनने या देखने में नहीं आया। यही स्थिति हम दिन-रात, सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्रों की भी देखते हैं, फिर भी उनसे कोई सीख नहीं लेते और समय से पूर्व किसी वस्तु को हस्तगत करने की कोशिश करते हैं या समय समाप्त होने पर भी उसके साथ चिपके रहना पसन्द करते हैं। ये दोनों प्रवृत्तियां प्राकृतिक नियमों के अनुकूल बिल्कुल भी नहीं हैं।

हम सभी इस सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती भी त्रैतवाद के पोषक थे और उनकी सभी मान्यताएं वेदों के प्रमाणों पर आधारित थीं। उसी त्रैतवाद में प्रकृति का प्रमुख स्थान नहीं तो महत्त्वपूर्ण स्थान अवश्य है। इन मान्यताओं का सम्मान करना हमारे लिए आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य भी है। ये मान्यताएं और आपसी विश्वास हमारे स्वयं के सुखद जीवन के लिए भी अत्यन्त सहायक है, किन्तु हम इन दोनों की हत्या करने में जुटे हुये हैं। इसमें कौन दोषी है? यह तो आत्मविवेचना का विषय अधिक है, दूसरे की आलोचना का कम है।

जब कुछ व्यक्ति किसी संगठन में काम करते हैं तो उनकी कभी स्थायी प्रवृत्ति देखने को नहीं मिलती, ऐसी प्रवृत्ति के कुछ ही व्यक्ति होते हैं, जो किसी पक्षविशेष की ओर कभी भी नहीं झुकते हैं, मेरे मानस पटल पर इस प्रकार का सन्दर्भ प्रस्तुत करने के लिए केवल एक ही नाम उभरता है, जिनके मैंने दर्शन किये हैं और वह स्व० स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का, जो हरयाणा में जन्मे, पंजाब को कर्मभूमि बनाया और सारे देश में निर्लेप संन्यासी के रूप में ख्याति अर्जित की। नाम और भी रहे होंगे किन्तु वे अतीत के गर्भ में समा गये, लेकिन ऐसे नामों की संख्या हमारे पास बहुत बड़ी होनी चाहिए थी किन्तु नहीं है क्योंकि हमारी वेश बदलने में तो आस्था है, आदर्शों के प्रति आस्था नहीं है।

अब मैं प्रस्तुत विषय पर आने से पहले यह बताना भी सामयिक समझता हूं कि प्रस्तुत लेख के शीर्षक के आसपास के विचारों को लिखने से पहले यह बता दूं कि मैं जो कुछ लिख रहा हूं वह एकदम आए विचारों के आधार पर नहीं लिख रहा हूं बल्कि पूरे तीन सप्ताह के चिन्तन के बाद लिख रहा हूं और यह सोचकर लिख रहा हूं कि आखिर क्या कारण है कि जिस प्रकार के नामों का मैंने संकेत दिया है, उस श्रेणी में आचार्य बलदेव जी का नाम आजीवन रहना चाहिए था क्योंकि गुरुकुल झज्जर में आयोजित स्व० स्वामी ओमानन्द सरस्वती की शोकसभा में सभी ने यह सोचकर उनको सारे अधिकार सौंप दिये थे कि आचार्य बलदेव सभी के लिए समान व्यवहार करने वाले सिद्ध होंगे और सभी को साथ लेकर चलेंगे तथा किसी के साथ भी कोई पक्षपात नहीं करेंगे। सभा का चुनाव निष्पक्ष ढंग से सम्पन्न करवा देंगे और जो भी अधिकारी चुने जावेंगे, उनको सभा का कार्यभार सौंप देंगे ताकि फिर कोई विवाद न रहे। यह सब इस कारण हुआ कि सबको इस बात का विश्वास था कि आचार्य बलदेव जी के मन में कोई पद लेने की लालसा नहीं है। वे तो गोमाता की सेवा में अपने आपको गोसेवक के रूप में आजीवन लगाए रखना चाहते हैं। लेखक को भी यही विश्वास था कि वे किसी पद को लम्बे समय तक नहीं रखेंगे। यदि एक अन्य धारणा के अनुसार जिसका उल्लेख करना इस समय ठीक नहीं है, भी देखा जावे तो मुझे उनके नाम पर प्रसन्नता हुई, यह बात अलग है कि यह प्रसन्नता स्थायी नहीं थी और थोड़े ही दिनों में चूर-चूर होती दिखाई दी। सबसे बड़ा सदमा तब लगा जब देखा कि जिस खिलाड़ी से हमने विश्वकप जीतने की उम्मीद जताई थी, वह अपने ही प्रान्त की ऐसी प्रतियोगिता में जिसके मुकाबिले पर कोई दमदार प्रतियोगी भी नहीं फिर भी अपने ही द्वारा खेल के नियमों का उल्लंघन करने के कारण पहले ही राउण्ड में रिंग से बाहर होने के कगार पर है। ऐसी स्थिति में उन लोगों का क्या हाल होता है, जो विश्वकप के जश्न मनाने की तैयारियों के अलग-अलग तरीके सोचते रहते हैं, बड़े-बड़े सपने लिए रहते हैं, किन्तु सामने गिरती बालू रेत की दीवार को देखकर मन मसोस कर रह जाते हैं।

सभी आर्यजन इस बात से भलीभांति परिचित हैं कि आचार्य बलदेव जी में सभी ग्रुपों ने आस्था व्यक्त की थी और उनकी इच्छानुसार उन्हें काम करने की पूरी छूट भी दी गई थी। चुनाव भी सर्वसम्मत और सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ था, इसके लिए आचार्य बलदेव जी ने क्या-क्या विधियां अपनाईं, उसे वे भी जानते हैं और मैं भी जानता हूं। ये सब बातें अलग लेख का विषय है, जिसे फिर

(शेष पृष्ठ दो पर)

## आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सभी आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि जिला सैशन कोर्ट के निर्णय के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तदर्थ समिति को सभा के पदाधिकारियों का आगामी तीन वर्ष की अवधि के लिए चुनाव करवाने का अधिकार दिया गया है। उसी के अनुसार ७ अगस्त, २००५ को चुनाव की तिथि के रूप में घोषित किया जा चुका है। समिति के निर्णय के अनुसार १५ जुलाई, २००५ तक मतदाता सूची के अन्तिम रूप दिया जाना है। अतः सभी समाजों से निवेदन है कि वे इस दिशा में तदर्थ समिति के कार्यालय में सभा उपमन्त्री श्री रणवीर शास्त्री से तुरन्त सम्पर्क करें तथा प्रतिनिधि संबंधी सभी औपचारिकताएं पूरी करलें ताकि उनके प्रतिनिधियों को समय पर एजेण्डा जारी किया जा सके। चुनाव में केवल वे ही प्रतिनिधि भाग ले सकेंगे जिनकी आर्यसमाजों का २००५-२००६ तक सभी प्रकार के देय शुल्क सभा में जमा होंगे, जिसका प्रमाण उन्हें दस जुलाई से पूर्व भेजना होगा। यह नियम उन सब प्रतिनिधियों पर भी लागू होगा जिन्होंने २७-६-२००४ के चुनाव में भाग लिया था या भाग लेने के अधिकारी थे।

—जयसिंह ठेकेदार, सभामन्त्री

# अत्यन्त आवश्यकता है परिवर्तन की ( भाग-३ )

❑ राजपालसिंह शास्त्री, आचार्य एम.ए. (द्वय), ३४-चन्दन पार्क, दिल्ली-११००४२

सम्भवतः आप लोगों ने "आवश्यकता है परिवर्तन की" की दो भाग पढ़ लिए होंगे। अब आप लोग समझो मूल सिद्धान्त को। आन्तरिक चेतना में परिवर्तन ही अनुशासन है।

विचारों में प्रतिबद्धता ही प्रत्येक समस्या का सीधा-सच्चा समाधान है। प्रत्येक प्राणी प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबद्ध है। यह प्रतिबद्धता न हो तो प्रतिदिन रेलें, बसें तथा स्कूटर आदि परस्पर टकरायें। अतः प्रत्येक कार्य में, प्रत्येक क्षेत्र में एक प्रतिबद्धता आवश्यक है।

प्रत्येक परिवार, प्रत्येक समाज तथा प्रत्येक देश की एक निश्चित सीमा है। यह बाह्य प्रतिबद्धता है। विचार तथा संस्कारों में आन्तरिक प्रतिबद्धता है। बाह्य प्रतिबद्धता के नियम, परम्परायें तो निश्चित हैं। हां, आन्तरिक प्रतिबद्धता में परिवर्तन लाया जा सकता है। विचारों और संस्कारों में परिवर्तन सम्भव है। स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी पढ़ो और पढ़ो ऋषि दयानन्द की जीवनी। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। मनुष्य के विचारों में परिवर्तन लाया जा सकता है। अध्यात्म-क्षेत्र में व्यक्ति की आन्तरिक चेतना में परिवर्तन लाना ही अनुशासन है। इसके बिना कोई भी परिवर्तन सफल नहीं हो सकता है।

अध्यात्म-क्षेत्र में व्यक्ति को आन्तरिक चेतना को परिवर्तित करना ही अनुशासन का ही आधार है। बिना अनुशासन कोई भी परिवर्तन सफल होना सम्भव नहीं है। आध्यात्मिक आस्था ही प्रत्येक व्यक्ति में परिवर्तन करने में समर्थ है। उपयुक्त परिस्थिति उपलब्ध होने पर वह स्वयं परिवर्तन ला सकता है। जैसे ही विचारों और संस्कारों की प्रतिबद्धता का अभाव होता जायेगा। वैसे व्यक्ति समर्पित होता जाता है। यह समर्पण की प्रक्रिया ही अनुशासन के विकास की प्रक्रिया है।

महात्मा विदुर जी लिखते हैं-

**यथा यथा हि पुरुषः कल्याणे कुरुते मनः।**
**तथा तथास्य सर्वार्था सिध्यन्ते नात्र संशयः॥**

अर्थात् जैसे-जैसे मनुष्य कल्याण में मन लगाता है, वैसे-वैसे ही इसके सब विचारों में परिवर्तन आ जाता है। इसमें संशय नहीं है।

अतः प्रतिबद्धता आवश्यक है। प्रायः हम प्रत्येक समस्या का समाधान बाह्यजगत् में खोजते हैं। जबकि प्रत्येक समस्या का समाधान हमारे अन्तःकरण में है। जब तक हमारी वृत्तियों में परिवर्तन नहीं होगा तब तक हमारे विचार तथा संस्कारों में परिवर्तन संभव नहीं। सर्वप्रथम अपने दृष्टिकोणों में परिवर्तन लावें। हमारे दृष्टिकोणों में परिवर्तन आवश्यक है।

आप लोग आर्य हैं। श्रेष्ठता का व्यवहार कीजिए। विदुर महाराज जी लिखते हैं-

**उत्तमानेव सेवेत प्राप्तकाले तु मध्यमान्।**
**अधमांस्तु न सेवेत य इच्छेत् भूमिमात्मनः॥**

**भावार्थ**-उत्तम व्यक्तियों की संगति कीजिए। आवश्यकता पड़ने पर मध्यम पुरुषों की संगति कर सकते हैं। अधम व्यक्तियों की कभी भी संगति न कीजिए, यदि अपना कल्याण चाहते हो। अधम व्यक्ति स्वयं प्रोत्साहन देगा और स्वयं पीछे हट जायेगा।

अतः आवश्यकता है स्वयं विवेक से कार्य कीजिए। आप सभी स्वयं अपनी ओर देखिए। एक अंगुलि जब मेरी ओर संकेत करती है तब शेष तीन अंगुलियां संकेत कर रही हैं कि स्वयं ही आत्मनिरीक्षण कर।

आज पूर्व अधिकारियों से साग्रह निवेदन है कि अपने चरित्र को ध्यान से चिन्तन एवं मनन करना होगा। स्पष्ट लिखने की आवश्यकता नहीं। विद्वान् लोग तो संकेत मात्र से अपने जीवन को समझें और अपने में सुधार करें। व्यर्थ में धरना आदि के दुराग्रह से दूर रहें। यदि संकेत को न समझा, भविष्य में तुम्हारे सभी कच्चे चिट्ठे लिखने पड़ेंगे। तुम तो अत्यन्त पतित हो। संकल्प करके करके जीवन में भी परिवर्तन लाओ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों को भी सार्वदेशिक सभा के इस परिवर्तन का भी स्वागत करना चाहिए। डॉ० प्रकाशवीर जी द्वारा लिखित सम्पादकीय लेख अत्यन्त उपकारी तथा उपदेशात्मक लेख है। शास्त्री रामचन्द्र जी, आर्यनगर, सोनीपत वालों के विचार तथा परामर्श को आचार्य बलदेव जी तन्मयता से स्वीकार करना चाहिए।

सभी प्रान्तीय सभाओं के लिए परामर्श है कि सहर्ष इस परिवर्तन को स्वीकार करें।

**न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः, वृद्धाः न ते ये न वदन्ति धर्मम्।**

## पूरी सच्चाई बताने से...... ( प्रथम पृष्ठ का शेष )

अलग से लिखूंगा। यहां पर स्थान के अभाव के कारण उस तथ्य को प्रकट करना अधिक उपयुक्त है, जो नवीनतम है, महत्त्वपूर्ण है और अभी तक एकांगी रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसकी व्याख्या करना बड़ा आवश्यक है।

१-५-२००५ को आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता वाली कार्यकारिणी को भंग करके सार्वदेशिक सभा द्वारा तदर्थ समिति का गठन किया गया था, यह ठीक हुआ या गलत, इस विषय में कोई टिप्पणी देना अब इसलिए ठीक नहीं कि मामला अदालत में विचाराधीन है। ५-५-२००५ को श्री सत्यवीर शास्त्री द्वारा स्थानीय न्यायालय में दायर किये गये वाद का निपटारा करते हुए अतिरिक्त सिविल जज (सीनियर डिवीजन) श्री विमल सपड़ा ने १५-६-२००५ को अपने फैसले में तदर्थ समिति को दो मास के अन्दर-अन्दर नये चुनाव करवाने और इस अवधि में सभा कोष से आवश्यक धन खर्च करने का आदेश दिया था तथा कोई भी बड़ा निर्णय लेने पर पाबन्दी लगाई गई थी। इस आदेश में यह प्रावधान भी रखा गया था कि यदि दो मास में चुनाव सम्पन्न नहीं होते हैं तो श्री सत्यवीर शास्त्री न्यायालय में प्रार्थना-पत्र दे सकते हैं और प्रशासक नियुक्त करवा सकते हैं। इस आदेश की अनुपालना में १६.६.२००५ की आपातकालीन बैठक में ७ अगस्त, २००५ को सभा चुनाव करवाने का निर्णय ले लिया गया और उसके लिए एक उपसमिति का गठन तथा चुनाव अधिकारी को नियुक्त करने का फैसला भी लिया गया। **यहां पर यह उल्लेख भी ध्यान देने योग्य है कि वादी की ओर से बहस में भाग लेते हुए दो में से एक वरिष्ठ अधिवक्ता को कई बार यह सुनने को मिला कि बहस में वाद से जुड़े हुए तथ्य प्रस्तुत किये जावें। ऐसी स्थिति कई बार देखने को मिली।**

श्री सत्यवीर शास्त्री पुनः उक्त आदेश के खिलाफ सैशन कोर्ट में चले गये। ८.६.२००५ को दिये गये फैसले में अतिरिक्त जिला जज रोहतक श्री आर.के. बिश्नोई ने कहा कि तदर्थ समिति केवल चुनाव करवा सकती है, किन्तु चुनाव का परिणाम अपील के अन्तिम निर्णय तक घोषित नहीं किया जा सकेगा। शेष कामों के लिए आचार्य बलदेव जी की कार्यकारिणी को पूर्ववत् कार्य करने का हक दिया गया, वह भी कुछ शर्तों के साथ। आचार्य बलदेव जी की कार्यकारिणी सभा की सम्पत्ति की मालिक तो रहेगी, लेकिन उसे खुर्द-बुर्द नहीं कर सकेगी। सभा कोष से उतना ही पैसा निकाल सकेगी, जिससे कर्मचारियों का वेतन दिया जा सके और प्रतिदिन होने वाले छोटे-मोटे बिलों का भुगतान किया जा सके। जो पट्टे लीज पर धड़ल्ले से दिये जा रहे थे उन पर आदेश जारी करते हुए कहा गया कि कोई भी पट्टा २६.६.२००५ तक की अवधि के लिए दिया जा सकता है, उसमें भी एक और महत्त्वपूर्ण बात लिखी गई है कि लीज डीड करते समय उसमें यह प्रावधान करना होगा कि यदि श्री सत्यवीर शास्त्री द्वारा सैशन कोर्ट में दायर की गई अपील खारिज हो जाती तो पट्टे भी स्वतः रद्द समझे जावेंगे। कोई भी बड़ा निर्णय लेने पर पाबन्दी लगा दी गई है। **सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अपील में तदर्थ समिति पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम का प्रयोग करने पर रोक लगाने की भी प्रार्थना की गई थी किन्तु माननीय न्यायालय ने इसे स्वीकार नहीं किया।**

कहने का तात्पर्य यह है जिन आरोपों को आधार मानकर आचार्य जी की कार्यकारिणी को भंग किया गया था, उनको अदालत ने भी नजरअन्दाज नहीं किया है बल्कि उस विषय में स्पष्ट आदेश भी दिये हैं। मैं श्री सत्यवीर शास्त्री के इस बयान से पूर्णतया सहमत हूं कि आचार्य बलदेव जी प्रधान हैं, किन्तु इस संशोधन के साथ जब तक अपील का अन्तिम फैसला न हो जावे। यहां पर श्री शास्त्री जी को इस तथ्य को मानकर चलना पड़ेगा आचार्य जी के पास २७.६.२००४ से जो शक्तियां थीं वे १८.६.२००५ के बाद नहीं रही हैं और आप देखेंगे कि किस प्रकार उन लोगों को भी परेशानी पैदा होगी जो गणेश परिक्रमा से ही अपना स्वार्थ सिद्ध करवा लेते थे।

मैं आचार्य बलदेव जी से अन्त में यही निवेदन करना चाहूंगा कि मेरा और उनका कोई मुकाबिला नहीं है, न मैं ऐसा सोच सकता हूं। किन्तु जो शैली आचार्य जी ने अपनाई उसका परिणाम यही निकलना था, इसके लिये मैंने आचार्य जी को समय-समय पर चेताया भी था। उन्हें कहा भी था कि जो व्यक्ति आपको 'बावावाक्यं प्रमाणम्' कहकर प्रसन्न करने की कोशिश करते हैं, वे संगठन के लिए घातक हैं। मैंने उन्हें बार-बार कहा कि मैं प्रधान का इस कारण तो सम्मान करता हूं कि वह सबसे बड़ा है, पूजनीय है। लेकिन प्रधान को कभी भी संविधान से ऊपर नहीं मानता। शक्ति कभी प्रधान में निहित नहीं होती बल्कि अन्तरंग और साधारण सभा में होती है। आचार्य जी भले ही इस प्रकारण को 'लड़ाई नहीं सफाई' की संज्ञा देते हों, किन्तु मैं इसे दुर्भाग्य ही कहूंगा कि आचार्य बलदेव जी जैसे ईमानदार व स्वच्छ छवि के व्यक्ति से एकदम ऐसे व्यक्ति क्यों पृथक् हो गये जो उनका नाम सर्वसम्मत चुनाव के लिए प्रस्तावित करने वाले थे और उन्हीं प्रो० शेरसिंह को आपने अपनी सभा का संरक्षक भी बनाया था।

यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि आचार्य जी के अधीन मन्त्री के रूप में काम करने वाले श्री सत्यवीर शास्त्री ने वाद प्रस्तुत करते हुए तो केवल ग्यारह आदमियों को ही पार्टी बनाया। बाद में श्री धर्मचन्द और मुझे (डॉ० प्रकाशवीर) भी विवाद में शामिल कर लिया। इसमें क्या रहस्य है, ये तो वे ही जानते हैं। मैं श्री शास्त्री से अनुरोध करना चाहता हूं कोई भी बात तथ्य के आधार पर लिखी जावे तो ज्यादा तर्कसंगत होती है। मैंने कभी भी २७.६.२००४ के चुनाव के बारे में कोई टिप्पणी नहीं की। यद्यपि ऐसा करने का मेरे पास आधार भी था। उन्हें (श्री शास्त्री को) या तो अपने कथन को सत्य सिद्ध करना चाहिए अथवा अपने शब्द वापिस लेने चाहिएं। अगले लेख में मैं लिखूंगा कि यदि मैं श्री सत्यवीर शास्त्री की जगह होता तो क्या करता?

# शिर जाये तो जावे मेरा वैदिक धर्म न जाए

❑ डॉ॰ सत्यवीर विद्यालंकार, सेक्टर-२३, सोनीपत

१० अप्रैल, १८७५ को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई में भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा वैदिक धर्म के संरक्षण हेतु क्रान्तिकारी संगठन आर्यसमाज की स्थापना की थी। स्वामी जी का व्यक्तित्व निराला था। वह स्वयं वेदों तथा सत्य शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। हजारों वर्षों के बाद खोये हुए सत्य-सनातन-वैदिक-धर्म के ऊपर जमी हुई राख को अपनी वाणी तथा लेखनी के प्रभाव से स्वामी जी ने दूर किया और धर्म का शुद्ध स्वरूप पुनः जनता के सामने उजागर कर दिया। सन् १८८३ ई॰ में दीपावली के दिन विषपान के कारण जब अजमेर की भिनाय कोठी में स्वामी जी का देहावसान हो गया तो उनकी परम्परा में कुछ योग्य अनुयायी आगे आये जिन्होंने उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प लिया। उन्हीं में से एक अनन्य ऋषिभक्त पं॰ लेखराम थे।

धर्मवीर पं॰ लेखराम का जन्म सन् १८६१ में पश्चिमी पंजाब के जेहलम जिले के सैदपुर (अब पाकिस्तान) नामक गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। १७ वर्ष की आयु में सन् १८७५ ई॰ में वह पढ़ा लिखा युवक पुलिस में भर्ती हो गया। लगभग ९ वर्ष तक पुलिस विभाग में काम करने के बाद सितम्बर सन् १८८४ में उन्होंने पुलिस की सर्विस छोड़ दी तथा अब केवल वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। इससे पूर्व १७ मई, १८८१ को वह अजमेर में स्वामी दयानन्द से मिल चुके थे। स्वामी जी के साथ इस मिलन का नवयुवक लेखराम के भावुक हृदय पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा था। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि लेखराम का सर्विस छोड़कर जनसेवा के क्षेत्र में आने का उद्देश्य तो नेक था परन्तु काम बड़ा कठिन था। मगर जिसे चलना है, आगे बढ़ना है, वह रुकना-झुकना क्या जाने? अब लेखराम अपने मन में धर्म तथा जनसेवा का पक्का संकल्प कर चुके थे।

धर्म के रास्ते पर चलने वालों को दुनियां के लोग मतवाला कहते हैं, यही बात लेखराम के सम्बन्ध में भी कही गई। उन्होंने आर्यसमाज के द्वारा किये जाने वाले कई अच्छे कामों में से शुद्धि का विशेष कार्य चुना। विधर्मियों को अपने वैदिक धर्म में पुनः लाना, यह काम ऐसा था जो निश्चय ही उनको संकट में डालने वाला था। इसके लिए गहन अध्ययन और चिन्तन की आवश्यकता थी। यदि विधर्मियों के ग्रन्थों की जानकारी न हो तो भी काम नहीं चलता। इस बात को ध्यान में रखकर उन्होंने एक तरफ वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय किया तो दूसरी तरफ बाइबिल और कुरानशरीफ को भी पढ़ा। कुरानशरीफ की काफी आयतें उन्होंने कण्ठस्थ कर ली थीं। अब लेखराम सारे संसार को ही अपना परिवार समझने लग गये थे तथा वैदिक धर्म के प्रचार के लिए दीवाने बन गये थे।

वह समय ऐसा था जब दुनियां के कई देशों में सामाजिक क्रान्ति हो रही थी। रूस और चीन भी संक्रमणकाल से दो-दो हाथ कर रहा था। भारत में अंग्रेजी राज्य के होते हुए भी देश में आजादी की लहर-सी चल रही थी। देशभक्तों ने सोती हुई भारतीय जनता को चेताने के लिए उनके धर्म का वास्ता दिलाया था। भारत के प्राचीन पवित्र वैदिक धर्म की दुन्दुभि ऋषि दयानन्द ने पुनः बजा दी थी। इसके कारण मुसलमान और ईसाई बनने का क्रम रुक-सा गया था, परन्तु फिर भी कभी-कभी एक व्यक्ति किसी प्रलोभन के कारण अपना धर्मपरिवर्तन कर लेता था। लेखराम के लिये यह बात असह्य थी। जब भी पता चलता तो वह फौरन उस व्यक्ति के पास पहुंचकर उसको धर्म न छोड़ने के लिए समझाते थे।

धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने के बाद अब वह वास्तव में पण्डित लेखराम बन गए थे। पंडित जी ने कई मुसलमान बन्धुओं को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित किया था। यह ऐसा काम था जिससे मुसलमानों का भड़कना अनिवार्य था। लेकिन पंडित जी ने किसी बात की चिन्ता नहीं की तथा अपनी जान पर खेलकर भी बिछुड़े हुए भाइयों की शुद्धि का कार्य करते रहे। अप्रैल १८९५ ई॰ को उनको पता चला कि कोई राजपूत गरीबी से तंग आकर ईसाई बनने के लिए तैयार हो गया है। वह काम छोड़कर भागे-अपने बन्धु का धर्म बचाने के लिए। जिस गांव में उनको जाना था वह दोराहे के स्टेशन से कुछ दूर था। लेकिन समस्या यह थी कि जिस गाड़ी से पंडित जी जारहे थे वह दौराहे के स्टेशन पर रुकती नहीं थी। समस्या थी, मामला विकट था। जाना भी जरूरी था। मन में कुछ सोचकर उसी गाड़ी में बैठ गए थे। जब स्टेशन आया तो धुन के धनी पं॰ लेखराम अपना थैला लेकर चलती हुई गाड़ी से नीचे कूद गये। परिणाम वही हुआ जो ऐसे मामलों में होता है। उनको काफी चोट लगी तथा लहूलुहान हो गए और कपड़े भी फट गए। जैसे-तैसे उस राजपूत बन्धु के घर पर पहुंचे तो उनकी हालत देखकर सब हैरान रह गए। पण्डित जी की बातें सुनकर वह व्यक्ति इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसी समय अपना मन पक्का कर लिया तथा ईसाई बनने से सर्वथा इंकार कर दिया। धर्मवीर पं॰ लेखराम की ऐसी बातें देखकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने कहा था कि "वे आदर्श धर्मप्रचारक थे। उनकी आवश्यकता आज भी विद्यमान है और वैदिक धर्म पुकार-पुकार कर कह रहा है-लेखराम कहां है?"

कस्बा कादियां, जिला गुरदासपुर (पंजाब) में मुसलमानों के एक अलग सम्प्रदाय "कादियानी" की अलग ही कहानी है। कादियानी मुसलमानों को आज भी पाकिस्तान के मुसलमान अपना मुसलमान भाई नहीं मानते। कादियां के मिर्जा कादियानी ने बड़ा पाखण्ड मचा रखा था। पंडित जी ने उनके साथ शास्त्रार्थ किया और उनकी पोपलीला का भाण्डा फोड़ दिया। इन मिर्जा साहब ने हिन्दुओं के खिलाफ कई पुस्तकें भी लिखी थीं। यह मिर्जा खुद को ही खुदा का पैगम्बर कहने लगा था। उसने नया मिर्जाई पन्थ ही चला दिया जिसे मिर्जाई सम्प्रदाय भी कहते हैं। पं॰ लेखराम ने उनकी पुस्तकों के जवाब में पुस्तकें लिखीं और अखबारों में मुंहतोड़ जवाब देने वाले लेख लिखे। इन कार्यों से चिड़कर उसने पंडित जी को मौत की धमकी दी। उसके नजदीक ही दीनानगर के एक मौलवी चिरागदीन भी खुद को बड़ा अफलातून मानते थे। पंडित जी ने शास्त्रार्थ करके उनको पराजित कर दिया और उनका दिमाग ठिकाने लगा दिया। न जाने ऐसे कितने और भी शुद्धि के काम थे जो पंडित जी ने किये थे। जितना-जितना पं॰ जी शुद्धि का काम करते थे उतना-उतना अधिक मुसलमान उनसे चिड़ते जाते थे।

सन् १८८८ में लेखराम ने स्वामी दयानन्द का खोजपूर्ण जीवन चरित लिखने का कार्य स्वयं अपने जिम्मे लिया। इसके लिये उन्होंने बहुत परिश्रम किया। जहां-जहां पर स्वामी जी गए थे उन स्थानों का कोना-कोना छान मारा। इन लम्बी खोज यात्राओं में भी लेखराम धर्म के प्रचार का कार्य करते रहते थे। उन्होंने ऋषि दयानन्द के जीवन की कई घटनाओं पर से पर्दा उठाकर शानदार काम किया था। परन्तु मेरे मन में और है विधना के कछु और। विरोधियों ने कुटिल चाल चली और एक व्यक्ति को पंडित जी के पास वैदिकधर्मी बनने का षड्यन्त्र करके छद्मवेश में भेजा। वह कई दिन उनके पास रहा और मौका देखता रहा। ६ मार्च, १८९७ को सायंकाल उस हत्यारे को अपना काम पूरा करने का मौका मिल गया। आज पं॰ जी स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र पूरा लिख करके दिल में बड़े खुश थे। वह कागज-कलम रखकर उठे ही थे कि उस कपटी मुस्लिम युवक ने जोर से छुरा पंडित जी के पेट में मारा और घुमाकर सारी अन्तड़ियां काट दी। लाहौर के हस्पताल में इलाज के लिए पंडित जी को ले जाया गया लेकिन उनको बचाने के सब प्रयत्न विफल हो गए। आधी रात को वह ऋषि दयानन्द के मिशन का दीवाना वैदिक धर्म की वेदी पर कुर्बान हो गया। वीर हकीकतराय की भांति उनकी भी इच्छा थी कि शिर जाये तो जावे पर मेरा वैदिक धर्म न जावे। उनके अनुसार धर्म नहीं तो कुछ नहीं। मुगलों के जमाने में धर्मान्ध शासकों के सामने यह खेल नित्यप्रति होता रहता था-

**शीश जिनको प्यारा था वे मुसलमान बन गये।**
**धर्म जिनको प्यारा था वे बलिदान हो गये॥**

पं॰ लेखराम बलिदान देकर धर्मवीर लेखराम बन गए और अमर शहीदों की पंक्ति में खड़े होगए। उनकी धार्मिक भावना बड़ी अनूठी थी कि चाहे मेरा शिर कलम हो जावे लेकिन मेरा वैदिक धर्म मुझसे अलग न होने पावे।

धर्म की रक्षा के लिये उन्होंने अनेक स्थानों पर ईसाई पादरी तथा मुस्लिम मौलवियों से शास्त्रार्थ किये थे। उनको सच्चे धर्म के स्वरूप की सही जानकारी थी। उन्होंने विभिन्न धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया था, इसलिये उनका मुकाबला करना इतना आसान न था। उन्होंने अपने तर्क और प्रमाणों के बल पर विधर्मियों के तोते उड़ा दिए थे। जनता के सामने खुले रूप से शास्त्रार्थ करके अपना लोहा मनवाना पंडित जी के बायें हाथ का खेल था। वह वैदिक मिश्नरी थे और शास्त्रार्थमहारथी थे।

अपने बलिदान से कुछ समय पहले पंडित जी ने कहा था कि आर्यसमाज का अच्छा काम आगे बढ़ रहा है, यह और अधिक तेजी से बढ़ना चाहिये और आर्यसमाज में तकरीर तथा तहरीर (भाषण और लेखन) का काम रुकना नहीं चाहिये।

## शोक समाचार

आर्यनेता एवं स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तकालय पलवल के प्रबन्धक श्री ताराचन्द आर्य का हृदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया। स्वर्गीय ताराचन्द जी आर्य को श्रद्धानन्द पार्क में हजारों लोगों ने श्रद्धाञ्जलि दी। आर्य युवक परिषद् के सक्रिय कार्यकर्ता श्री मनोजकुमार आर्य टीकरी ब्राह्मण का निधन हो गया। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए टीकरी ब्राह्मण में यज्ञ किया गया। स्वतन्त्रता सेनानी श्री विजयसिंह आर्य औरंगाबाद का निधन हो गया। उन्होंने शराबबन्दी, किसान आन्दोलन, हिन्दी सत्याग्रह आदि में भाग तथा आजन्म समाजसेवा में संलग्न रहे टीकरी ब्राह्मण के श्री कृपाराम आर्य का ८५ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। उल्लेखनीय है कि स्वर्गीय स्वामी आदित्यवेश जी को स्वर्गीय कृपाराम जी ने पुत्र के रूप में अपनाकर अपने घर की मतदाता सूची में उनका नाम अंकित कराया था। आर्यनेता श्री शिवराम विद्यावाचस्पति के चाचा श्री रामकिशन चौहान औरंगाबाद का निधन हो गया है। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए २२ जून को औरंगाबाद में शान्तियज्ञ व प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया।

-नारायणसिंह आर्य,
मंत्री वैदिक धर्मप्रचारिणी सभा (रजि॰)

# शान्तियज्ञ और श्रद्धाञ्जलि सभा

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक के मालिक श्री वेदव्रत शास्त्री की धर्मपत्नी श्रीमती सुवीरा देवी का देहान्त १९ जून २००५ रविवार को सायं ५.३० बजे ५७ वर्ष की आयु में हो गया। उनकी अन्त्येष्टि २० जून को मध्याह्न १२ से १ बजे तक गोहाना रोड (रोहतक) की श्मशान भूमि में वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। हरयाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश के रिश्तेदारों के साथ रोहतक के सैकड़ों प्रमुख आर्यसज्जन भी इस अन्तिम क्रिया में सम्मिलित हुए।



२२ जून को प्रातःकाल ७ बजे अस्थिसंचय करके शेष भस्म को सुवीरा मुद्रणालय, सुखपुरा बाईपास, रोहतक की वाटिका में डाला गया।

२६ जून रविवार को प्रातःकाल ९ से १० बजे तक आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के परिसर में प्रिंसिपल राजकुमार आचार्य ने शान्तियज्ञ सम्पन्न करवाया जिसमें प्रो० शेरसिंह जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, आचार्य सुदर्शनदेव जी, आचार्य यशपाल जी, सुखदेव शास्त्री जी, वैद्य ताराचन्द जी, चौ० सूबेसिंह जी, चौ० धर्मचन्द जी, वैद्य मनुदेव शास्त्री जी, प्रो० हरिसिंह जी, कैप्टेन इन्द्रसिंह जी आदि सैकड़ों सज्जनों व महिलाओं ने शान्तियज्ञ में आहुति डाली।

१० से १ बजे तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के बलिदान भवन में प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में श्रद्धाञ्जलि सभा की गई जिसका संचालन प्रिंसिपल राजकुमार जी ने किया। इसमें आर्यसमाज नरेला दिल्ली, आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक, चौ० लखीराम आर्य अनाथालय रोहतक, बाबा बन्दा बहादुर सेवा समिति रोहतक, प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास भिवानी, श्रीमती प्रभातशोभा साकेत नई दिल्ली द्वारा प्रेषित शोक-प्रस्ताव पढ़कर सुनाये गये।

श्री सुखदेव जी शास्त्री, डॉ० सुरेन्द्रकुमार म०द०वि० रोहतक, श्री रणवीर शास्त्री बवाना दिल्ली, श्री रामचन्द्र शास्त्री रोहणा, चौ० धर्मचन्द जी रोहतक, श्री सत्यवीर शास्त्री गढ़ी, श्री रणवीर शास्त्री गढ़ी, श्री ओम्प्रकाश पत्रकार रोहतक, श्री राजकुमार शर्मा, श्री रमेश सहगल, श्री दयाकिशन सैनी, श्री गुरुदत्त आर्य, श्री वेदप्रकाश साधक, श्रीमती ज्योत्स्ना रोहेल्ला, श्रीमती सरिता नारायण पूर्व विधायिका कलानौर, श्री राममेहर एडवोकेट, मा० पूर्णसिंह नरेला, श्री केदारसिंह आर्य, श्री यशपाल आचार्य, प्रिं० सोहनलाल भिवानी, डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, श्री प्रदीप जैन, श्री सुरेन्द्र बंसल, आचार्य हरिदेव गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली, आचार्य धर्मपाल गुरुकुल पूठ, आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर, स्वामी इन्द्रवेश, डॉ० राजकुमार, प्रो० हरिसिंह, प्रो० शेरसिंह आदि ने सभा में उपस्थित होकर स्वर्गीया श्रीमती सुवीरा देवी के जीवन और कार्यों को स्मरण कराते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और शोकसंतप्त परिवार, रिश्तेदार, बन्धु-बांधवों को धैर्य धारण करने की प्रेरणा देकर दुःख बंटाया। निर्धारित समय समाप्त होने के कारण कुछ सज्जन अपने उद्‌गार प्रकट नहीं कर पाये उसके लिये सभा आयोजकों ने क्षमायाचना की। श्री वेदव्रत शास्त्री ने श्रद्धाञ्जलि सभा में पधारे सभी नर-नारियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा एक मिनट की सामूहिक मौन श्रद्धाञ्जलि देकर शान्तिपाठ के पश्चात् सभा विसर्जित हुई। इसके पश्चात् उपस्थित नर-नारियों ने भोजन ग्रहण किया।

## आर्यसमाज में उम्र की मर्यादा

आर्यसमाज में प्रबन्ध सम्बन्धी विवादों के सुलझाने के लिये मुझे यह आवश्यक प्रतीत होता है कि न केवल स्थानीय अपितु केन्द्र स्तर पर बल्कि आर्यसमाज द्वारा संचालित संस्थाओं में भी पदाधिकारियों के बनने की अधिकतम आयु निर्धारित की जाये और उसका पालन कठोरता से किया जाये। यह कितने आश्चर्य की बात है कि कोई भी शारीरिक असमर्थताओं के बावजूद अपना पद छोड़ना नहीं चाहता। इस पर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ऐसा क्यों? क्या उनके पदाधिकारी बनने से पूर्व या मृत्यु के पश्चात् पदाधिकारी नहीं रहने के कारण क्या उक्त संगठन समाप्त हो गया है या हो जायेगा?

आज आर्यसमाज की स्थिति विचित्र है। पदाधिकारियों में आज यत्र-तत्र-सर्वत्र अशक्त और ओज विहीन बूढ़े लोग ही सत्तारूढ़ हैं। एक तो सर्वत्र विवाद है, दूसरे वे कुछ करने में भी असमर्थ हैं। विवादित सार्वदेशिक के एक धड़े का वृद्ध प्रधान लकवाग्रस्त है तो उसके सहयोगी उन्हें मुखौटा के रूप में प्रयुक्त कर रहे हैं तो झारखण्ड से सटकर एक राज्य प्रतिनिधि सभा का कथित स्वयंभू ८० वर्षीय विवादास्पद प्रधान लाठी के बिना नहीं चल सकता है पर लोगों पर धौंस जमाने के लिये निजी सशस्त्र अंगरक्षक रखता है। उसके साथ कोई वेदप्रचारक नहीं चलता पर अपराधी किस्म के लोगों और वकील से घिरा होता है। उक्त वृद्ध लाखों रुपयों के गबन का आरोपित भी है और झारखण्ड में गिरफ्तारी के भय से आने का भी साहस नहीं कर पाता है। इससे आर्यसमाज की उज्ज्वल छवि धूमिल हो रही है। किसी भी समाज को बदलने के लिये जो ऊर्जा चाहिये वह उम्रदराज लोगों में नहीं होती है और न ही वे अन्य लोगों के लिये प्रेरक होते हैं। अतः पके हुये फल की तरह कभी भी गिर जाने वाले लोगों को चाहिये कि वे स्वतः पदत्याग करें। चूंकि ऐसा नहीं हो रहा है अतः संस्था की नियमावली में अधिकतम उम्र सीमा का निर्धारण समाजहित में है। ऐसे कथित लोगों को पदाधिकारी के स्थान पर सलाहकार, आमंत्रित सदस्य या पथप्रदर्शक के रूप में समाज को नयी दिशा देनी चाहिए।

वैदिक मर्यादा के अनुसार वर्णाश्रम व्यवस्था में प्रत्येक वर्ण का सम्बन्ध आयु से ही है जिसमें व्यक्ति अपनी योग्यता से कार्य करता है, अतः असमर्थ, झगड़ालू और विवादास्पद लोग वृद्धावस्था में पदों का त्याग करें। यह सभी के हित के साथ-साथ उनके निजी हित में भी है।

-दयाराम पोद्दार, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६
दयानन्दजन्माब्द १८१



685 पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराञ्चल)





आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र
प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१
वर्ष ३२ अंक ३१ ७ जुलाई, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# वेद में यज्ञ-योग का संयोग

□ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

ज्ञान, कर्म,उपासना रूप त्रिविध यज्ञ अथवा समग्र योग को ईश्वर प्रणिधान द्वारा ही निष्पन्न किया जा सकता है। देव-यज्ञ में और ब्रह्मयज्ञ में भी उसी सर्वनियन्ता, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, अनन्त चेतना ज्ञानप्रकाश-आनन्दमय की सन्निधि सदा बनी रहे यही मानव जीवन की सफलता है :- **यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति।** (ऋ० १.१८.७)

वेद की इस शिक्षा के अनुसार ही मानव मात्र को जीवन की पूर्ण सफलता के लिए यज्ञ एवं योग का सम्मिलित प्रयास आजीवन अपनाना आवश्यक है। उस ईश्वर को हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं, जो समस्त प्रकार के दु:खों से आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक दु:खों को छुड़ा सकता है। इसका एक उपाय योग है, अत: योग को जानना आवश्यक है।

**यज्ञ-योग की भूमिका :-** देवपूजा-संगतिकरण और दान इन अर्थों का समन्वित कर्म यज्ञ है जिसमें अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश, इन पंचस्थूलभूतों का सदुपयोग करना यज्ञ का तात्पर्य है और इन पांचभूतों का शोधन कर्म ही जड़देवपूजा रूप यज्ञ है। इसके अतिरिक्त अपने माता-पिता, आचार्य, अतिथि आदि पूज्यों का सत्कार-सम्मान करना तथा आज्ञा पालन करना चेतनदेवपूजा रूप यज्ञ है।

परस्पर प्रेम, संगतिकरण, संगठन रखना भी यज्ञ का मुख्य तात्पर्य है। जैसे पांच, सात औषधियों का अनुभूत योग वा परीक्षित योग रोगनाशक होता है उसी प्रकार पांच-सात व्यक्तियों का सम्मिलित चिन्तनरूप न्याय लोकोपकारी, सर्वजनहितकारी सिद्ध होता है। इसी प्रकार लगभग २० औषधियों का संयुक्त मिश्रण सामग्री तथा घृत का अग्नि में एक साथ प्रज्वलन सर्वरोग हरप्राण वायु का जनक होता है। यही प्राण वायु शरीर के स्थूल व सूक्ष्म अवयवों की पुष्टि, रोगनाशक तथा मानसिक व्याधियों को दूर करने में अहम भूमिका का उत्पादक होता है।

दान से देवत्ववृत्ति का जागरण होता है। यह वृत्ति ही मानव विकास की उच्चस्तरीय कोटि है जिसमें मनुष्य मानवता का जनक एवं संरक्षक बनता है। यज्ञ में "स्वाहा" शब्द से उत्तम पदार्थों का अग्नि में समर्पण त्याग और दान का श्रेष्ठ स्वरूप है। उक्त सम्पूर्ण व्यवहार मनुष्य को यज्ञीय जीवन जीने की सर्वोत्तम शैली से संयुक्त करता है, यह यज्ञीय व्यवहार योग की उत्तम पृष्ठभूमि को तैयार करता है।

**योग का यज्ञीय स्वरूप :-** (पतंजलिकृत योगदर्शन) में अष्टांग योग में प्रथम अंग यम के पांच भेद हैं :- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य,अपरिग्रह।

**अहिंसा का पालन :-** मन वचन कर्म से किसी प्राणी को भी कष्ट न पहुंचाना अहिंसा है। इसी प्रकार यज्ञ (अग्निहोत्र) को भी अध्वर कहा गया है, जिसका अर्थ है हिंसारहित कर्म। इस प्रकार यज्ञ एवं योग की समता है।

**सत्याचरण :-** मनसा-वाचा-कर्मणा सत्य (यथार्थ) वचन का प्रकट करना ही सत्य का पालन है। देवयज्ञ में भी सत्यवाणी का उच्चारण करना बताया जाता है। शतपथ ब्राह्मण में कहा है - **सत्यं वै देवा:, अनृतं मनुष्या:।** अर्थात् श्रेष्ठ विद्वानों की वाणी सत्य से संयुक्त होती है। ऐसे देवकोटि के नर-नार ही देवयज्ञ करते हैं। इसलिए कहा है **'देवो भूत्वा देवं यजेत्'** अर्थात् देवत्व भावना को अपने अन्दर प्रकट करके ही याज्ञिक देव यज्ञ करता है, तभी देवयज्ञ की सफलता है।

**चोरी का अभाव :-** अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना। दूसरे के पदार्थों को बिना पूछे उपयोग में न लाना ही अस्तेय भावना है। यह भावना यज्ञ में भी रखनी आवश्यक है। यदि चोरी किये गये द्रव्य या पदार्थों से यज्ञ किया जायेगा तो वह यज्ञीय तात्पर्य को सफल नहीं करेगा। यज्ञ में स्वत्व त्याग की भावना प्रमुख होती है। इसी प्रकार साधना के क्षेत्र में अभ्यास और वैराग्य का मुख्य स्थान है। ये दोनों उपाय ही मन को एकाग्र करने में प्रमुख रूप में सहायक हैं। इसी त्याग भावना को बद्धमूल करने के लिए **'अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम'** अर्थात् यह पदार्थ में अग्निदेव को समर्पित करता हूं। अब ये मेरा नहीं है। इस भावना से राग की मात्रा में न्यूनता आती है और यही आसक्ति छोड़कर त्याग, उदारता, परोपकार की भावना को अपने अन्दर प्रबल करता जाता है।

**ब्रह्मचर्य का पालन :-** ब्रह्मचर्य का मन, वचन, कर्म से पालन तो मानव जीव का मुख्य आधार है **"छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्"** अर्थात् वृक्ष की जड़ें कट जाने पर न शाखा सुरक्षित रहती है न पत्ते। इसी प्रकार ब्रह्मचर्य का पालन एवं संयम का जीवन स्वस्थ, सुखी, सशक्त बनाता है। इस ब्रह्मचर्यव्रत का पालन, जितना योगाभ्यासी के लिए अनिवार्य है उतना ही याज्ञिक के लिए। बृहद् यज्ञों के दिनों में ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्णतया पालन करने को शास्त्रों ने कहा है, इसीलिए यज्ञों के आयोजक भी यजमानों को पहले ही संकेत करते हैं। इसी प्रकार उपस्थ इन्द्रिय का संयम योगाभ्यासी के लिए नितान्त आवश्यक है, शरीर में रज-वीर्य के अभाव में स्त्री-पुरुषों के मन में न यज्ञ करने का उत्साह रहेगा न योग का। इस प्रकार दोनों ही श्रेष्ठ कर्मों में श्रेष्ठ व्रत-ब्रह्मचर्य का पालन अपरिहार्य है।

**संग्रह का त्याग :-** पदार्थों का अधिक संग्रह एवं आवश्यकता से अधिक व्यर्थ विचारों का संग्रह तथा विशेष धनसंग्रह वृत्ति की समाप्ति होने लगती है। इस प्रकार यज्ञ तथा योग में यमों का पालन समान रूप से होता है। तभी परस्पर का व्यवहार शुद्ध होता है।

**नियम पालन :-** नियमों में शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान का पालन योगाभ्यासी के लिए आवश्यक बताया गया है। यजमान भी यज्ञ के समय उक्त नियमों का पालन करता है तो उसका यज्ञ कामनाओं को पूर्ति करने वाला होता है। जैसे याज्ञिक को बाहर की शुद्धि करनी आवश्यक है उसके जीवन में पुरुषार्थ करने पर जो फल प्राप्त होता है उस पर सन्तोष रखना सुखकारी है। सन्तोष होगा तो लोभ नहीं रहेगा, लोभ नहीं होगा तो ईर्ष्या नहीं होगी, ईर्ष्या नहीं होगी तो क्रोध नहीं आयेगा। यज्ञ प्रतिदिन तथा प्रत्येक ऋतु में करने से याज्ञिक को ऋत्विज कहते हैं। जो नर-नारी प्रतिदिन यज्ञ करते हैं वे सर्दी, गर्मी तथा वर्षा अन्धड़ का भय नहीं करते। वे तपस्वी कहलाते हैं। उपनिषदों में भी **यज्ञं तप:**, कहकर यज्ञों को करना भी तप बताया गया है।

**स्वाध्याय :-** यज्ञों में चारों वेदों के मन्त्रों का सार्थक पाठ किया जाता है तो स्वाध्याय की पूर्ति यज्ञों से विशेष रूप से होती है। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद जब यजमान प्रार्थना करता है तो यजमान का आत्मचिन्तन रूप स्वाध्याय होता है। गायत्री मंत्र तथा "ओ३म्" का बार-बार उच्चारण होने से जप रूप स्वाध्याय यज्ञ में होता रहता है। इस प्रकार तप: नियम का यज्ञ में पालन भी होता है।

यज्ञों में **"इन्द्राय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा"** आदि मन्त्रों द्वारा स्पष्ट रूप से ऐश्वरीयशाली परमात्मा के प्रति समर्पण भाव बनता है। साथ ही **"प्रजापतये स्वाहा"** कहकर जो मौन आहुति दी जाती है उसका स्पष्ट भाव है कि पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा द्यौ: लोक में विद्यमान ईश्वर सत्ता को हमारा समर्पण है तथा तीनों लोकों में वर्तमान अनन्त प्राणियों को हमारे यज्ञ का भाग प्राप्त हो। इसी भाव से मौन होकर ईश्वर सत्ता का स्मरण करके आहुति देना, ईश्वर प्रणिधान जो नियमों का अन्तिम उपांग है, उसका भली-भांति पालन होता है।

इसके अतिरिक्त यज्ञ में आसन से बैठने से तृतीय अंग पूरा होता है। बार-बार स्वाहा बोलने से प्राणायाम जैसी स्थिति बनती है। साथ ही प्राणायाम के अनुकूल प्रदूषण रहित शुद्ध वातावरण मिलता है। यज्ञ के उपरान्त किया गया प्राणायाम अत्यधिक लाभकारी होता है। मन्त्रों के उच्चारण तथा अग्नि पर निरन्तर दृष्टि रखने से प्रत्याहार की सिद्धि होती है। धीरे-धीरे धारणा की स्थिति अग्नि पर दृष्टि से बनती है। इस प्रकार यज्ञ और योग का संयोग परस्पर एक-दूसरे के लिए अत्यन्त लाभप्रद होता है जिसका पालन हमारे ऋषि-मुनि वैदिक काल में जंगलों में निवास करते हुए किया करते थे। अत: आज भी निष्ठापूर्वक प्रतिदिन योगाभ्यास करना तथा श्रद्धापूर्वक यज्ञ करना जीवन को सुख शान्तिमय, रोगरहित, चिन्तारहित बनाने के लिए परमावश्यक है। यज्ञ में सहस्रों शक्तियां, सैकड़ों वीर्य हैं।

# स्वामी अग्निवेश की अध्यक्षता में राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न

## महर्षि दयानन्द भारत में एक क्रान्ति थी,

## मुझे आश्चर्य होता है कि महर्षि दयानन्द जैसा व्यक्ति भारत में रहा है : पादरी वालसन थम्पू

## ''हम सब आर्यसमाजी थे। घर छोड़कर चले गए थे। सबको वापस लाना होगा।'' : पादरी वालसन थम्पू



दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज के पूर्व वाइस प्रिंसिपल एवं नेशनल कमीशन ऑन माइनार्टीज एजुकेशन के सदस्य फादर श्री वाल्सन थम्पू सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी से आर्यसमाज के सदस्यता फार्म पर हस्ताक्षर कर आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण करते हुए। इसके अतिरिक्त उक्त सम्मेलन में उत्तरप्रदेश बिजनौर के एक मुस्लिम किसान श्री मोहम्मद इब्राहिम एवं सरदार भाई दयासिंह ने भी स्वामी अग्निवेश जी से आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। स्वामी अग्निवेश जी ने उक्त तीनों सदस्यों का परिचय भी 'राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता महासम्मेलन' में उपस्थित आर्यजनों से कराया।



'कन्या जीवन दायिनी समिति' की नुक्कड़ नाटक की टीम ने कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में अत्यन्त सजीव, भावविह्वल, हृदयग्राही एवं प्रभावोत्पादक नुक्कड़ नाटक का 'राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्त्ता महासम्मेलन' के अवसर पर तालकटोरा स्टेडियम में मंचन किया। 'नुक्कड़ नाटक' का एक प्रभावशाली दृश्य।

देहरादून २६ मई। सार्वदेहिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता महासम्मेलन सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में देश की राजधानी दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में २२ मई व २३ मई को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। आयोजन में अध्यात्म जागरण सम्मेलन, जाति तोड़ो - समाज जोड़ो एवं साम्प्रदायिक सद्भाव सम्मेलन, भारतीय भाषाएं लाओ : अंग्रेजी हटाओ एवं नशा बन्दी सम्मेलन, कन्या भ्रूण हत्या विरोधी एवं पाखण्ड खण्डन सम्मेलन तथा आर्यराष्ट्र एवं भ्रष्टाचार विरोधी सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

२२ मई के अध्यात्म जागरण सम्मेलन में अपने उद्घाटन भाषण में स्वामी अग्निवेश ने आगामी दिनों में आर्यसमाज के नये १ लाख युवा सदस्य बनाने की घोषणा की और कहा कि आज ही हम इस कार्य का शुभारम्भ कर रहे हैं। इस अवसर पर आयोजन में उपस्थित दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज के पूर्व वाइस प्रिंसीपल तथा वर्तमान में भारत सरकार द्वारा गठित नेशनल कमीशन आन माइनारिटीज एजूकेशन के सदस्य पादरी वालसन थम्पू ने मंच पर ही देश के कोने-कोने से आये सहस्रों प्रतिनिधियों के सामने आर्यसमाज की सदस्यता फार्म पर हस्ताक्षर कर सदस्य बने। मलयाली भाषी होते हुए भी उन्होंने प्रतिनिधियों को हिन्दी में सम्बोधित कर कहा .....'महर्षि दयानन्द का स्वप्न अधूरा रहा, वर्षों पूर्व महर्षि दयानन्द ने जो स्वप्न देखा वह दो किस्म का सपना है। पहला - अपने लिए जो आम आदमी देखता है तथा दूसरा ईश्वर का सपना। चन्द लोग कभी कभी ईश्वर का सपना अपनाते हैं। महर्षि दयानन्द अपने समय की एक बड़ी हस्ती थे। मनुष्य का सपना मिट जाता है। ईश्वर का कभी नहीं मिटता। आज हम देख रहे हैं कि महर्षि का सपना जाग रहा है। मैं ईसाई पादरी हूं। खुद से सवाल पूछता हूं मजहब का मतलब क्या है। मजहब एक रोशनी है। मजहब की एक ही भाषा है 'प्यार'। पर मजहब के नाम से रोशनी नहीं दिखाई देती, अन्धेरा ही अन्धेरा है।' अग्निवेश के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलता हूं। क्या इससे क्रिश्चेनिटी मिट जाएगी? एक व्यक्ति जो स्वयं के ही रिलीजियन को जानता है वह किसी रिलीजियन को नहीं जानता। दुख के साथ कहना चाहता हूं कि हम सब मजहब के लिए लड़ने वालों से नहीं पूछते कि मजहब क्या है? मुझे स्वामी अग्निवेश जी के साथ ७ वर्ष काम करने का सौभाग्य मिला। इसे मैं सबसे बड़ा तजुर्बा मानता हूं। आगे चलना है। आगे चलने से ही रोशनी देख पाते हैं। इसलिए मैं आर्यसमाज का मेम्बर बना। यह मेरी व्यक्ति स्वतन्त्रता का मामला है। अपने भाई बहनों से प्रेम का रिश्ता बनाना मेरा हक है। जो शुरुआत आज हो रही है इसका प्रभाव बहुत दूर तक जाएगा। वह भारत में ही सीमित नहीं रहेगा। महर्षि दयानन्द के द्वारा जो आध्यात्मिक रोशनी दी गई है वह पूरे संसार के लिए है - केवल भारत के लिए नहीं। हम महर्षि दयानन्द के साथ अन्याय कर रहे हैं उनके विचारों व रोशनी को सीमित करके। हम सब आर्यसमाजी थे। घर छोड़कर चले गए थे। सबको वापिस लाना होगा। मैं आपके साथ हूं। मैं ईसाई हूं। मेरे भाई का धर्म भी मेरा धर्म है, इसलिए अपने भाइयों के धर्म के विकास को देखकर मुझे खुशी होती है। सबसे बड़ी बेवकूफी धर्म से लड़ना है। खुदा प्रेम है पर हम उनके नाम पर गला काटते हैं। महर्षि दयानन्द भारत में एक क्रान्ति थी। मुझे आश्चर्य होता है कि महर्षि दयानन्द जैसा व्यक्ति भारत में रहा है। हम महर्षि दयानन्द की भावना को समझने में असफल रहे। महर्षि दयानन्द ने भारत की हिन्दू जाति को स्वतन्त्र एवं समर्थ बनाया। हम भारत की आध्यात्मिक रोशनी पूरे विश्व में फैलाने का काम पूरे जोश से करेंगे।

इसी सम्मेलन में वीरांगना पुष्पा शास्त्री ने अपने प्रेरणादायक व्यक्तित्व, ओजस्वी वाणी एवं प्रभावशाली उद्बोधन ने प्रतिनिधियों को चमत्कृत कर दिया। उन्होंने शायराना अन्दाज में कहा कि यह मुमकिन है कि कोई आकाश के तारे तथा कोई बालू के कणों को गिन ले परन्तु महर्षि दयानन्द जी के मनुष्य जाति पर इतने अहसान हैं कि कोई गिन नहीं सकता। अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी इन्द्रवेश जी ने स्वामी अग्निवेश के कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि उनके ४० वर्षों के संघर्ष का परिणाम है कि उन्होंने आगे बढ़कर ओ३म् की पताका पकड़ ली है अर्थात् सार्वदेशिक सभा के प्रमुख हैं।

जाति तोड़ो एवं साम्प्रदायिक सद्भाव सम्मेलन का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के प्रधान श्री विट्ठलराव ने किया। मुम्बई के आई.जी. श्री सत्यपाल सिंह ने इस सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए कहा कि जब तक हम अपने अन्दर साइंटिफिक टैम्पर अर्थात् वैज्ञानिक पद्धति को पैदा नहीं करेंगे - साम्प्रदायिकता को समाप्त नहीं किया जा सकता। इसके पश्चात् मंच पर उत्तरप्रदेश के एक किसान श्री मोहम्मद इब्राहिम आए। स्वामी अग्निवेश ने उनका परिचय दिया और उन्होंने भी पादरी वालसन थम्पू की तरह आर्यसमाज की सदस्यता स्वीकार की।

राजकोट के प्रसिद्ध सामाजिक नेता एवं समाज सुधारक धर्मबन्धु जी ने कहा कि योजनाएं बनाना अलग बात है और उन्हें क्रियात्मक रूप देना अलग बात है। उन्होंने आगामी दिनों में गुजरात में एक साथ १०० अन्तर्जातीय विवाह कराने की घोषणा की। स्वामी अग्निवेश ने धर्मबन्धु जी का विस्तार से परिचय दिया और बताया कि उन्होंने ५००० गायों को बचाया और उनका दूध गांवों में नि:शुल्क वितरण कराया। इसके साथ ही उन्होंने २८,००० युवकों को यज्ञोपवीत कराकर उन्हें सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ भेंट किए। उनके नेतृत्व में गुजरात में विशाल युवक चरित्र निर्माण शिविर प्राय: लगते रहते हैं। धर्मबन्धुजी ने आगामी दिनों में गुजरात में ३०,००० नये आर्यसमाज के युवा सदस्य बनाने तथा एक सप्ताह का शिविर लगाकर उन्हें आर्यसमाज के सिद्धान्तों से परिचित कराने का वचन भी दिया। उन्होंने कहा कि देश में साढ़े छ: करोड़ अनाथ बच्चे हैं यदि आर्यसमाज इन्हें अपना ले तो आर्यसमाज को आगामी १५ वर्षों में ६५ करोड़ कार्यकर्ता मिल सकते हैं।

इस ''जाति तोड़ों एवं साम्प्रदायिक सद्भाव'' में कांग्रेस के नेता सचिन पायलट ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने कहा - देश व समाज सबको एकजुट करने के काम को प्राथमिकता दे। सभी धर्मों व सम्प्रदायों को समान दृष्टि से देखें। १०५ करोड़ का देश है यहां २० भाषाएं हैं। दु:ख होता है हिन्दुस्तान में जातिवाद ही नहीं गोत्र पर झगड़ा होता है। ग्रामीणों व काश्तकारों में जागृति पैदा की जाएं। देश समाज सभी को मिलकर काम करना होगा। हम सबको कर्मयोगी बनना होगा। बच्चों के वश में नहीं कि वह हिन्दु, मुसलमान व ईसाई आदि हों, विधाता के वश में है। काम से व्यक्ति जाना जाता है, धर्म-सम्प्रदाय से नहीं। अपने अच्छे कामों को करते रहें, जो मदद हमसे हो सकेगी हम करेंगे। युवा वर्ग अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक है, वह अवश्य उसे पूरा करेगा इसका मुझे विश्वास है।

देहरादून से श्री ईश्वरदयालु आर्य के नेतृत्व में ''कन्या जीवन दायिनी समिति'' की नुक्कड़ नाटक की टीम ने कन्या भ्रूण हत्या के विरोध से नुक्कड़ नाटक का मंचन किया जिसके सजीव चित्रण से भावविह्वल

( शेष पृष्ठ सात पर )

# आचार्य बलदेव के कार्यकाल में दिए गये पट्टों का विवरण

आचार्य बलदेव जी को 1.4.2003 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का कार्यभार सौंपा गया था। उसके बाद 31.8.2003 की अन्तरंग सभा के प्रस्ताव सं० 12 के अनुसार आचार्य बलदेव ने दिनांक 9.10.2003 को पंजीकरण सं० 202 के माध्यम से उपपंजीयन अधिकारी रोहतक के कार्यालय में स्वयं जाकर श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को मुख्त्यारेआम के रूप में पंजीकृत करवाया। यह सभा के अब तक के इतिहास में पहला मौका है जब मन्त्री की बजाय प्रधान स्वयं पंजीकरण के काम के लिए गये हैं। इस प्रकार के अन्तरंग के महत्त्वपूर्ण निर्णय हमेशा से सभा के साप्ताहिक '**सर्वहितकारी**' में छपते रहे हैं। लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं किया गया। कारण क्या हो सकता है? स्वयं आचार्य बलदेव जी बता सकते हैं। श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री द्वारा 29.10.2003 से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की भूमि को पट्टों पर दिया जाना शुरू किया गया। सभा के एक उपप्रधान ने जब आचार्य बलदेव से पट्टों के बारे में जानना चाहा तो आचार्य जी का उत्तर था कि "**कोई पट्टा नहीं दिया गया है। जब उनको छाया प्रति दिखाई तो उत्तर था कि ये मेरे से पूछकर नहीं दिये।**" जबकि ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य प्रधान की अनुमति और अंतरंग के उचित प्रस्ताव के बिना नहीं हो सकते। लीज डीड के प्रारूप की भाषा व शर्त अन्तरंग द्वारा स्वीकृत होने अनिवार्य हैं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ-क्योंकि काम बड़ी ईमानदारी से हो रहा था। बाद में जब बावेला मचा तो श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को बड़ी ईमानदारी से बाहर का रास्ता दिखा दिया और बिना किसी प्रस्ताव के सभा के **उपप्रधान आचार्य विजयपाल, मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री जिलेसिंह आर्य ने** अपने आपको मुख्त्यारेआम के रूप में पंजीकृत करवा लिया। किस प्रस्ताव के अधिकार से यह पंजीकरण हुआ इसका कोई भी उल्लेख कहीं पर भी नहीं है। आमतौर पर मुख्त्यारेआम किसी ऐसे व्यक्ति को बनाया जाता है जो भूमि की विधाओं का जानकार हो तथा उससे सम्बन्धित सभी प्रकार के दस्तावेजों से वाकिफ हो तथा सभा के अधिकारियों के नियन्त्रण में रहकर काम कर सके। किन्तु यहां तो नियन्त्रणकर्ता ही नियन्त्रित की भूमिका अदा कर रहे हैं। आश्चर्य की बात है कि जो पट्टे दिये गये हैं उनमें एक भी आर्यसमाजी नहीं है। **इन पट्टों का भाव दो रु० प्रति वर्ग गज से लेकर पांच रु० प्रति वर्ग गज सालाना तय किया गया है।** कुछ पट्टे ऐसे हैं, जिनमें हर पांच वर्ष बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान रखा गया है, कुछ में हर दस साल बाद बीस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है और उनको ऋण लेने की भी सुविधा दे दी गई, जो अत्यन्त आपत्तिजनक है। सबसे बड़े आश्चर्य की बात है कि दो पट्टे ऐसे भी हैं, जिनमें सारी अवधि में कोई वृद्धि का प्रावधान नहीं है। इनमें एक नाम श्रीमती सुरीन का है, जिसके पति नायब तहसीलदार ने ये पट्टे पंजीकृत किये हैं।

मामला सभी आर्यजनों के समक्ष है कि वे सब विचारें कि ये सभाहित है या सभा अहित? इससे विशुद्ध ईमानदारी की किरणें निकल रही हैं या.....।

अब प्रस्तुत किया जा रहा है कि वह विवरण जिसकी आपको प्रतीक्षा है।

1. **दिनांक 29.10.2003 के प्रलेख नं० 5048 के अनुसार बारह कनाल एक मरला भूमि बीस साल की** अवधि के लिए **15000/- रु० सालाना** की दर से श्री महेन्द्रपालसिंह आनन्द पुत्र सरदार सोहनसिंह आनन्द सी-21 चिराग एन्कलेव नई दिल्ली-48 को लीज पर दी गई। इसमें हर पांच साल बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है।

2. **दिनांक 29.10.2003 के प्रलेख नं० 5049** के अनुसार **दस कनाल एक मरला भूमि बीस साल की** अवधि के लिए **34,500/- रु०** की सालाना दर से श्री जतिन्दरपालसिंह आनन्द पुत्र श्री महेन्द्रपालसिंह आनन्द सी-21 चिराग एन्कलेव नई दिल्ली-48 को लीज पर दी गई है। इसमें हर पांच साल बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है।

3. **दिनांक 29.10.2003 के प्रलेख नं० 5050** के अनुसार **पांच कनाल अठारह मरले भूमि बीस साल की** अवधि के लिए **8000/- रु० सालाना की** दर से श्रीमती वीना आनन्द पत्नी श्री महेन्द्रपालसिंह आनन्द सी-21 चिराग एन्कलेव नई दिल्ली-48 को लीज पर दी गई है। हर पांच साल बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है।

4. **दिनांक 12.11.2003 के प्रलेख नं० 5378** के अनुसार **अठारह कनाल चौदह मरले भूमि बीस साल की** अवधि के लिए **8000/- रु०** सालाना की दर से श्री देवेन्द्र छाबड़ा पुत्र श्री फकीरचन्द छाबड़ा, आर-725, न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली को लीज पर दी गई है। हर पांच साल बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है।

5. **दिनांक 12.11.2003 के प्रलेख नं० 5379** के अनुसार **इक्कीस कनाल सात मरले भूमि को बीस साल की** अवधि के लिए **16000/- रु०** सालाना की दर से श्री अरविन्द बतरा पुत्र श्री रणधीरसिंह जी, 101, कालका जी नई दिल्ली को लीज पर दिया गया है। हर पांच साल बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है।

6. **दिनांक 13.11.2003 के प्रलेख नं० 5419** के अनुसार **दस कनाल भूमि बीस साल की अवधि के लिए 5000/- रु०** सालाना की दर से श्री कुलवीरसिंह पुत्र सरदार गुरुदेवसिंह 32-ए, हिमगिरि अपार्टमेंट कालका जी नई दिल्ली तथा श्री अजयपालसिंह 24-सी हिमगिरि अपार्टमेंट कालका जी नई दिल्ली को लीज पर दी गई है। हर पांच साल बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है।

7. **दिनांक 13.11.2003 के प्रलेख नं० 5420** के अनुसार **दस कनाल भूमि बीस साल की अवधि के लिए 5000/- रु०** सालाना की दर से श्री सुरजीतसिंह पुत्र सरदार गुरुदेवसिंह 46-ए, हिमगिरि अपार्टमेंट कालका जी नई दिल्ली तथा श्री कुलदीपसिंह पुत्र श्री लक्ष्मणसिंह, 14-सी हिमगिरि अपार्टमेंट कालका जी नई दिल्ली तथा श्रीमती अपिन्द्रकौर पत्नी सरदार जसबीरसिंह, 32-ए, हिमगिरि अपार्टमेंट कालका जी नई दिल्ली को लीज पर दी गई है। हर पांच साल बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है।

8. **दिनांक 14.11.2003 के प्रलेख नं० 5464** के अनुसार **बीस साल की अवधि के लिए ग्यारह कनाल अठारह मरले भूमि 5000/- रु०** सालाना की दर से मै० विजय आहूजा पुत्र श्री तिलकराज आहूजा निवासी 30, पार्क एरिया करोल बाग नई दिल्ली को लीज पर दी गई। 23.9.2003 से 22.9.2023 तक की अवधि प्रलेख में दर्ज है। कब्जा पहले पंजीकरण बाद में। हर पांच साल बाद दस प्रतिशत की वृद्धि का प्रावधान है।

9. **दिनांक 14.11.2003 के प्रलेख नं० 5465** के अनुसार **दस कनाल भूमि 3000/- रु०** सालाना की दर से बीस साल की अवधि के लिए श्री जगदीश पुत्र श्री प्रहलाद निवासी अनंगपुर को लीज पर दी गई है। हर पांच साल बाद दस प्रतिशत की वृद्धि का प्रावधान है। यह गोशाला के लिए सुरक्षित है, फिर भी दे दी गई।

10. **दिनांक 11.12.2003 के प्रलेख नं० 6120** के अनुसार **3000/- रु०** सालाना की दर पर **2 कनाल 10 मरले भूमि बीस साल की** अवधि के लिए श्री सुभाषचन्द्र पुत्र श्री भुल्लीराम निवासी अनंगपुर को लीज पर दी गई है। हर पांच साल बाद दस प्रतिशत की वृद्धि का प्रावधान है।

11. **दिनांक** 5.2.2004 को चौबीस साल की अवधि के लिए **दो कनाल भूमि 6050/- रु०** सालाना कीमत पर श्री अमितकुमार पुत्र री सुभाषचन्द्र निवासी मकान नं० 674 सेक्टर-16-ए, फरीदाबाद को लीज पर दी गई, जिसमें हर पांच साल बाद दस प्रतिशत की वृद्धि का प्रावधान है। प्रलेख क्रमांक 7264 दिनांक 5.2.2004 है।

12. **दिनांक 5.2.2004 के प्रलेख नं० 7265** के अनुसार चौबीस साल की अवधि के लिए **दो कनाल भूमि 6050/- रु०** सालाना कीमत पर श्री अमितकुमार पुत्र श्री सुशीलकुमार निवासी मकान नं० 211 सेक्टर-16-ए, फरीदाबाद को लीज पर दी गई, जिसमें हर पांच साल बाद दस प्रतिशत की वृद्धि का प्रावधान है।

13. **दिनांक 11.2.2004 के प्रलेख नं० 7364** के अनुसार पच्चीस साल की अवधि के लिए **24 कनाल भूमि 90,000/- रु०** सालाना की दर से श्री सुरेन्द्र पुत्र श्री धर्मवीर गांव अनंगपुर एवं श्री सुभाष शर्मा पुत्र श्री ए.एन. शर्मा मकान नं० 2ए/59 एन.आई.टी. फरीदाबाद को लीज पर दी गई है। इसमें सारी अवधि में कोई बढ़ोतरी का प्रावधान नहीं है।

14. **दिनांक** 5.3.2004 को चालीस साल के लिए **आठ कनाल भूमि 30,000/- रु०** सालाना कीमत पर श्रीमती सुरीन पुत्री रामप्रताप निवासी आर्यनगर हिसार को लीज पर दिया गया है। सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि इस अवधि में कोई भी वृद्धि करने का प्रावधान नहीं रखा गया है। **पट्टा लेने वाली महिला उसी नायब तहसीलदार की पत्नी है, जिसने बाकी पट्टे पंजीकृत किये हैं।** इस तथ्य को अदालत में भी नहीं नकारा गया है। श्रीमती सुरीन के पिता हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल के चहेते हैं और अभी पिछले दिनों चौ० भजनलाल से मिलने गये थे। कारण क्या था इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। यह सच्चाई भी गुरुकुल झज्जर से उजागर हुई है। पट्टे का प्रलेख नं० 8050 दिनांक 5.3.2004 है।

15. **दिनांक 25.3.2004 को बीस साल की अवधि के लिए आठ कनाल भूमि 30,000/- रु०** सालाना की दर से श्री तेजसिंह तेवतिया पुत्र श्री सोहनलाल मकान नं० 1495 सेक्टर-17 गुड़गांव को लीज पर दी गई है। हर पांच वर्ष बाद दस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है। लीज पर लेने वाला व्यक्ति पूर्व मुख्यमंत्री चौ० ओ३म्प्रकाश चौटाला का अत्यन्त निकट का बताया जाता है और उन्हीं के शासनकाल में राज्यमन्त्री के पद के बराबर सुविधा प्राप्त करके **विद्युत् नियामक आयोग** का सदस्य रहा है। पंजीकरण नं० 9081 दिनांक 25.3.2004 है।

16. **दिनांक 9.4.2004 को** (जिसका प्रलेख नं० स्पष्ट नहीं है) तीस साल की अवधि के लिए **चौबीस कनाल भूमि 60,000/- रु०** सालाना की दर से मैसर्ज आर.पी.एस. एसोसिएट्स, ए-2610, ग्रीन फील्ड कालोनी फरीदाबाद को लीज पर दी गई है। इसमें हर पांच साल बाद वृद्धि का प्रावधन है, जो छायाप्रति में स्पष्ट नहीं है। वह आठ प्रतिशत या दस प्रतिशत प्रतीत होती है।

17. **दिनांक 15.7.2004 के प्रलेख नं० 4454** के अनुसार **चौदह कनाल भूमि पच्चीस साल की अवधि के लिए 8000/- रु०** सालाना की दर से श्री जगदीश पुत्र प्रहलाद निवासी अनंगपुर को लीज पर दी गई है। इसमें हर पांच साल बाद दस प्रतिशत की वृद्धि का प्रावधान है। यह भूमि गोशाला के लिए सुरक्षित है, फिर भी दे दी गई।

( शेष पृष्ठ चार पर )

# स्कूलों में यौन शिक्षा की बजाय मानवीय गुणों को बढ़ावा देने के लिए योग अनिवार्य करें

-स्वामी रामदेव

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के अज्ञान, दुराग्रह, हठ, अहं, दंभ को दूर उसकी सुप्त प्रतिभा को जागृत करना, ज्ञान-विज्ञान के द्वार खोलना है। विनम्रता, सच्चरित्रता, साहस, स्वाभिमान, लक्ष्य के प्रति दृढ़ता, राष्ट्र के प्रति गौरव, कर्त्तव्य के प्रति सजगता, सहिष्णुता, करुणा, दया, सहानुभूति, प्रेम, सेवा व सद्भाव आदि मौलिक गुणों का विकास शिक्षा द्वारा होना चाहिए। यदि शिक्षा द्वारा जीवन में गुणात्मक सुधार नहीं हो रहा है तो इसका अर्थ है कहीं न कहीं हमारी शिक्षा की वर्तमान दशा व दिशा में भ्रम की स्थिति है।

अक्षरज्ञान शिक्षा का एक पक्ष है। दूसरा बहुत बड़ा पक्ष है इरादों को हकीकत में बदलने के लिए अदम्य साहस, आत्मबल, मन में प्रचंड अग्नि, लक्ष्य के प्रति समर्पण पैदा करना। क्या कभी हमने शिक्षा में गुणात्मक सुधार की बात सोची है। एड्स के भूत से भयभीत होकर देश के शिखर बुद्धिजीवियों ने स्कूलों में यौन शिक्षा को अनिवार्य करने की वकालत तो तुरंत कर दी, परंतु क्या कभी हमने सोचने की कोशिश की कि किसी भी चीज का ज्ञान कभी भी आकर्षण को कम नहीं करता अपितु बढ़ाता है। बढ़ती उम्र के साथ बच्चों के शरीर में कुछ मूलभूत परिवर्तन आते हैं। इस परिवर्तन के समय उनको यौन शिक्षा देने से युवामन भ्रमित होने से नहीं रुकेगा।

यौवन में चाहिए योग जो युवाओं को जोड़े अपनी चेतना से, लक्ष्य से और *सच्चरित्रता से। योग से जीवन में विवेक बढ़ता है, सजगता आती है।* योग से संयम, सदाचार, सम्यक् दृष्टि, आशा व उत्साह आता है। आज युवा मन में जो निराशा व भ्रम व्याप्त है वह योग से ही दूर होगा। योग से अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, शुचिता, तप, स्वाभिमान व समर्पण आदि मानवीय गुणों का सहज विकास होता है। स्कूलों में यौन नहीं योग शिक्षा को अनिवार्य करना चाहिए। बच्चों के मात्र मौलिक विकास के लिए ही नहीं बल्कि राष्ट्र के लिए सबसे बड़ी चुनौती भ्रष्टाचार, अपराध, जातिवाद, मजहबी संकीर्णता व नकारात्मक मानसिकता के लिए भी यदि कोई एकमात्र समाधान है तो वह योग ही हो सकता है।

गिरते हुए चारित्रिक मूल्यों, टूटती हुई परंपराओं एवं ढहते हुए आदर्शों को यदि रोकना है तो हमें अपनी आत्मा से जुड़ना होगा। इसी को भारतीय परंपरा में आध्यात्मिकता या आस्तिकता कहते हैं। यह आध्यात्मिकता योग का प्रतिफल है। भारत की संस्कृति में करोड़ों वर्षों से गुरुकुलीय परंपरा में योग से ही सदाचार, संयम एवं चरित्र निर्माण होता आया था यौन शिक्षा से नहीं। अत: शरीर विज्ञान के अंतर्गत शरीर एवं शारीरिक परिवर्तनों का सामान्य ज्ञान विद्यार्थियों को स्वत: ही हो जाता है फिर समय पूर्व ज्ञान व्यक्ति को भ्रम पैदा करता है। दुनिया की अलग-अलग संस्कृतियों में योग अध्यात्म एवं साधना के बल पर लाखों लोग आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सदाचार एवं संयम का जीवन जीते हैं। जहां विषय, भोग एवं वासना का खुला अध्ययन व प्रदर्शन होता है वहां बचपन मिट जाता है। इस वर्ष शिक्षा सत्र के प्रारंभ में स्कूलों में शारीरिक शिक्षकों के माध्यम से विद्यालयों में विद्यार्थियों को योग शिक्षा देने का निर्णय लेकर राजस्थान सरकार ने एक सकारात्मक पहल की है। अन्य सरकारों को भी इस पर विचार करना चाहिए।

(दैनिक भास्कर से साभार)

## युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल अगवानपुर (पलवल) जिला फरीदाबाद में १ जून से ५ जून २००५ तक विशाल आवासीय युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं योग साधना शिविर की अध्यक्षता माननीय सांसद अवतारसिंह भड़ाना ने की। यह संस्था नि:शुल्क रूप से जनता की सेवा कर रही है।

-धनसिंह योगाचार्य

## नवीन प्रवेश हेतु सूचना

### कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून (उत्तरांचल)

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार की अंगभूत एवं अनिवार्य छात्रावास पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। प्राइमरी से एम.ए. तक की शिक्षा का यहां समुचित प्रबंध है। **एम.ए. के उपरान्त एम.सी.ए. एवं एम.बी.ए. की भी व्यवस्था है।** संस्कृत अंग्रेजी विषयों की अनिवार्यता के साथ-साथ यहां कॉमर्स, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, विज्ञान, संगीत, चित्रकला व कम्प्यूटर के शिक्षण की समुचित व्यवस्था है। उच्च प्रशिक्षित शिक्षिकाएं, विशाल पुस्तकालय, विस्तृत खेल का मैदान, आधुनिक सुविधा सहित बड़े छात्रावास इस संस्था की विशेषता है। शिक्षा नि:शुल्क है केवल छात्रावास व भोजन व्यय लिया जाता है। **नवीन प्रवेश १.७.२००५ से प्रारम्भ है।** प्रवेश हेतु १५०+५० रु० डाक खर्च अतिरिक्त भेजकर नियमावली मंगवा सकते हैं।

-आचार्या श्रीमती दमयन्ती कपूर

## जुआं के आर्य पहलवान राजवीर ने ईरान में कुश्ती में पदक जीता



स्वागत समारोह में प्रि० राममेहर, श्री खजानसिंह आर्य तथा अन्य ग्रामीण खड़े हैं। आर्य पहलवान राजवीर सभी का आभार प्रकट करते हुए।

ग्राम जुआं जिला सोनीपत के आर्य पहलवान राजवीर ने ईरान में आयोजित मि... कैडिट एशियन टूर्नामेंट कुश्ती में कांस्य पदक जीता है। ग्राम पधारने पर आर्यसमाज मन्दिर (छोटूराम) व्यायामशाला में शानदार स्वागत किया गया। आर्यसमाज के अधिकारियों के अतिरिक्त दोनों पंचायतों की सरपंच श्रीमती बबीता तथा श्रीमती सुमित्रा एवं ग्रामीण भारी संख्या में उपस्थित हुए। ग्राम की ओर से ३१००० इनाम दिया गया और ग्राम की मुख्य गलियों में जुलूस निकाला गया। ग्राम की बड़ी चौपाल में एक भव्य समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर श्री खजानसिंह आर्य ने इसका परिचय कराते हुए बताया कि श्री राजवीर तथा इनका बड़ा भाई बलवन्तसिंह बचपन से आर्यसमाज मन्दिर स्थित अखाड़े में आते थे। श्री ओमप्रकाश दहिया इनके कोच हैं। इस सफलता पर ग्राम का नाम ऊंचा हुआ है।

-केदारसिंह आर्य

## वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज फतेहाबाद का वार्षिक चुनाव दिनांक १९ जून रविवार को प्रात:काल हवन व सत्संग के बाद आर्यसमाज फतेहाबाद के संरक्षक और आर्यसमाज की ... डा० चिरंजीवलाल महतानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से आर्यसमाज फतेहाबाद का प्रधान-श्री रामलाल अरोड़ा, मन्त्री-श्री जयसिंह दहिया, कोषाध्यक्ष-श्री देशराज भाटिया, सहमन्त्री-श्री रमेशकुमार सैनी को बनाया गया। समस्त सदस्यों ने डा० चिरंजीवलाल महतानी व प्रधान जी को कार्यकारिणी के सदस्यों को चुनने का भी अधिकार दिया। -**सुदामा शास्त्री**, पुरोहित आर्यसमाज मंदिर, फतेहाबाद

## आचार्य बलदेव के कार्यकाल में...... (पृष्ठ तीन का शेष)

18. **दिनांक** 15.7.2004 **के प्रलेख नं० 4455** के अनुसार तेईस **कनाल दस मरले भूमि पच्चीस साल की** अवधि के लिए 15,000/- रु० सालाना की दर से श्री अजयपालसिंह पुत्र श्री अमृतसिंह निवासी अनंगपुर तथा श्री भूपेन्द्रसिंह खचेड़ू मकान नं० 859 सेक्टर-46 फरीदाबाद को लीज पर दी गई है। इसमें हर पांच साल बाद दस प्रतिशत की वृद्धि का प्रावधान है।

19. **दिनांक** 23.3.2003 आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से मुख्त्यारेआम की हैसियत से **सर्वश्री आचार्य विजयपाल, श्री सत्यवीर शास्त्री तथा श्री जिलेसिंह आर्य ने** उपपंजीयक्र अधिकारी रोहतक के द्वारा दिये गये **पंजीकरण नं० 435 दिनांक** 22.3.2005 का हवाला देकर (जिसमें अन्तरंग सभा के किसी प्रस्ताव का कोई उल्लेख नहीं है) श्री ऋषिप्रकाश पुत्र श्री ओ३म्प्रकाश मकान नं० 714 सेक्टर-7 ... फरीदाबाद व श्री अमित जैन पुत्र श्री विजेन्द्रकुमार जैन, जे-82 कालका जी नई दिल्ली को **सात कनाल उन्नीस मरले भूमि पचास साल के लिए 30,000 रु० सालाना की** दर से लीज पर दी है। इसमें हर दस साल बाद बीस प्रतिशत वृद्धि का प्रावधान है और लीज पर लेनेवाले व्यक्ति को दी गई भूमि पर ऋण आदि लेने का भी प्रावधान रखा गया है। **इसका प्रलेख नं० 155 दिनांक 5.4.2005 है।**

20. क्रम सं० 18 पर दर्ज तथ्यों के अनुसार **सात कनाल सतरह मरले भूमि पचास साल की अवधि के लिए 30,000/- रु०** सालाना की दर से **श्रीमती पायल प्रतापसिंह** धर्मपत्नी श्री राजेश प्रतापसिंह, मै० बन्ना एक्सपोर्ट प्रा०लि० 128 सैनिक फार्म खानपुर नई दिल्ली को लीज पर दी गई है और **इस पर भी ऋण लेने व भूमि को गिरवी रखने की सुविधा दी गई है।**

**नोट**-यह विवरण केवल उन दस्तावेजों के आधार पर तैयार किया गया है जो अभी तक प्राप्त हुए हैं। बाकी जैसे मिलते जावेंगे, वैसे ही जानकारी में लाया जावेगा ताकि सही दोषी का आर्यजन रिमाण्ड ले सकें।

-**जयसिंह ठेकेदार**, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्दमठ, रोहतक

# चिकित्सा, शिक्षा एवं समाजसेवा में समर्पित व ओजस्वी व्यक्तित्व-डॉ० आर.एस. सांगवान



ईश्वर की कृपा ही समझिये कि सिरसा नगर के प्रतिष्ठित चिकित्सक डॉ० सांगवान शिक्षा एवं समाजसेवा में भी अग्रणी हैं। उम्र लगभग ७५ वर्ष की है लेकिन प्रातः ५ बजे से रात्रि ११ बजे तक इतनी व्यवस्थित दिनचर्या कि देखने वाला आश्चर्यचकित हो उठता है। चाल में इतनी स्फूर्ति कि लगता है डाक्टर साहब अधिक से अधिक ६० वर्ष के होंगे। अतीत में सिरसा नगर में डॉक्टर शिवनारायण गुप्ता, श्री सीताराम बागेल, श्री बलभद्रदास सर्राफ, श्री बजरंगदास एडवोकेट, प्रोफेसर हरदयालसिंह आदि लोकप्रिय थे वैसे ही आज डॉक्टर सांगवान हैं। नगर की प्रायः सभी सामाजिक संस्थाओं से उनके निकट के सम्बन्ध हैं। चाहे वह श्रीकृष्ण मानव कल्याण समिति हो या श्री सत्य सांई सेवा संगठन, इन संस्थाओं के कार्यक्रमों में भाग लेना उन्हें बड़ा अच्छा लगता है। वह यह चिन्ता नहीं करते कि कार्यक्रम प्रातः है या दोपहर, सायं है या रात्रि। इन संस्थाओं की यथासम्भव आर्थिक सहायता करके वह अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

डॉक्टर सांगवान नगर के प्रतिष्ठित चिकित्सक हैं। एक योग्य चिकित्सक के रूप में उनकी मनमोहक छवि है। सिरसा नगर से ही नहीं बल्कि दूरदराज के इलाकों से भी मरीज अपने इलाज के लिए यहां पहुंचते हैं और स्वस्थ होकर अपने घरों को लौटते हैं। निर्धन लोगों की वह हरसम्भव आर्थिक सहायता करते हैं। प्रतिष्ठित चिकित्सक होते हुए भी उनमें किसी भी प्रकार का अहम्भाव नहीं है।

डॉक्टर सांगवान एक शिक्षाविद् भी हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सेवाएं कभी विस्मरण नहीं की जा सकतीं। जहां आप आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल के प्रबन्धक हैं, वहां सिरसा एजुकेशन सोसाइटी के संरक्षक हैं। नगर की ये दोनों संस्थाएं आपके कुशल मार्गदर्शन में पल्लवित हो रही हैं। ग्रीष्मावकाश में लगने वाले अध्यापक प्रशिक्षण शिविरों में आपका योग्य मार्गदर्शन भी अध्यापकों को प्रतिवर्ष प्राप्त होता है। एक प्रतिष्ठित चिकित्सक एक शिक्षाविद् भी हो सकता है इसका उदाहरण कहीं और मिलना कठिन है।

डॉक्टर सांगवान आर्यसमाज कोर्ट रोड के प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान होने के नाते अत्यन्त व्यस्त रहते हैं। इस आर्यसभा द्वारा पूरे हरयाणा में अनेक विद्यालय एवं गुरुकुल संचालित होते हैं। इनके विभिन्न कार्यक्रमों में डॉक्टर साहब पहुंचते हैं। एक मार्गदर्शक के रूप में इनके विचारों को बड़े ध्यान से सुना जाता है।

डॉक्टर सांगवान विलक्षण स्मरण शक्ति के धनी हैं। इसी के साथ ही वह सबके मित्र हैं। पत्रकार, साहित्यकार, राजनीतिज्ञ, अधिवक्ता, अध्यापक, प्राध्यापक, प्रशासनिक अधिकारी, चिकित्सक, समाजसेवक एवं सभी वर्गों के लोगों के साथ उनके घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। -कृष्णलाल वोहरा, प्रिंसिपल, आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, सिरसा

# ज्ञानेश्वरार्य चौथी बार विदेश प्रचार यात्रा पर

१९ अगस्त २००५ को एयर इण्डिया के विमान द्वारा अहमदाबाद से प्रातः १० बजे ज्ञानेश्वरार्य, आचार्य, दर्शन योग महाविद्यालय, इंग्लैण्ड के लिए प्रस्थान करेंगे। इससे पूर्व आप २००१, २००२, २००४ वर्ष में ब्रिटेन में वैदिकधर्म के प्रचारार्थ गये थे। प्रचार यात्रा में आपने वैदिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक प्रवचनों के साथ-साथ अनेक नगरों में अल्पकालीन क्रियात्मक योग शिविरों का भी आयोजन किया था।

इंग्लैण्ड में आचार्य जी लैस्टर, बर्मिंघम, लेंकाशायर मिडलसैक्स, लंदन, ग्रेट यार माऊथ, गेन्ट्स हिल आदि अनेक नगरों में सार्वजनिक स्थलों पर मंदिरों, चर्चों, आर्यसमाजों में तथा परिवारों में वैदिकधर्म का प्रचार करेंगे। २००४ में आपने लैस्टर तथा इल्फर्ड में दो नई आर्यसमाजों की स्थापना की थी और भवन हेतु हजारों पौण्ड की राशि भी संगृहीत करायी थी। संभावना है इसी वर्ष भवन क्रय कर लिया जायेगा।

इंग्लैण्ड के साथ ही अनुकूलता रही तो आचार्य जी हालैंड, स्विट्जरलैंड आदि देशों में भी कुछ दिनों के लिए प्रचारार्थ यात्रा करेंगे, वहां से भी आपको निमंत्रण मिला है। इंग्लैण्ड में उनका संपर्क निम्न व्यक्तियों के साथ हो सकता है-

१. पं० हेमांग भट्ट - लैस्टर, मो० ७७६५६५०३२८
२. डॉ० रामचन्द्र शास्त्री - लंदन, मो० ७८९०७४६११०५
३. पं० श्यामजी भाई - इल्फर्ड, मो० २०८२२०९०४९
४. श्री दीपक भाई - शैन्ली, मो० ७८६७६६७७१७

-ब्र० दिनेशकुमार, दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, पत्राचार-सागपुर, जिला साबरकांठा (गुज०) ३८३३०७

**बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।**

## पं० बस्तीराम की मानस दीपिका से

दोहा- ये माया जगमोहनी, इन मोहा संसार।
जो माया ने मोह ले, वह पावे करतार॥

**टेक :** अरी माया! तेरे साथ में कौन मरे।

**कली**-बड़े-बड़े कठिन महादुःख झेले, रही नहीं कमी क्लेश की।
मिलत मिलत अरु बिछड़त बिछड़त गिनती रही सुवेश की॥
भोगते भोगते तेरे भोग नित्य पड़ गई बान नरेश की,
करत-करत कमजोर हुए हम भरमणता प्रदेश की,
और तैं और शरीर हुआ पूनी, पलटी रंगत केशन की।
तेरी याद में सब दिन खोए, याद न आई महेशन की॥
नित्य-नित्य नए-नए रंग भरे, तूं नूतन रूप धरे।
माया तेरे साथ में कौन मरे॥१॥

झाड़ पिछोड़ देख लई तू, संग तेरे में सुख का नहीं निशान।
दुःख पर दुःख नित्य विमुख प्रभु से, घटे ज्ञान और बढ़े गुमान॥
भोगते-भोगते तेरे भोग नहीं हो, कभी तृप्ति है अनुमान।
चेतन शुद्ध आत्मा मैं संग तेरे से, हो गया पशु समान।
अगणित लगे कलंक मुझे, मैं था अकलंक प्रसिद्ध महान्।
है कौन शूर जो तूं संग रहते भवनिधि से उतरे।
माया तेरे संग कौन मरे॥ २॥

दो तुरंग पर हो सवार, फिर इससे बढ़कर कौन गंवार।
दो नावन पर रख शरीर को, किसने देखा परला पार॥
कौन ऐसा समर्थ संसार में, तूं रहे करे प्रभु से प्यार।
सेवा सर्प की कर अमृत चहे, चोर चहत निधि में अधिकार।
विषयी मित्र से करके प्रीति, पुनि रहन चहत सेठ साहूकार।
कर्म संकुली कटे बीच ते, किस के पास ऐसा हथियार॥
जो दारुण कष्ट संग तेरे में, सुन-सुन जियरा डरे।
माया तेरे साथ में कौन मरे ॥ ३॥

तेरे संग रहे वास मूत्र बिष्ठा के बीच में करना जरूर।
संयोग सूल और वियोग बरछिन में तूं संग रहे पड़ना जरूर।
तेरा संग रहे रोज बोझ सिर अपने पर धरकर चलना जरूर।
लोभ लपट अरु काम अग्नि में, तेरा संग रहे जलना जरूर॥
तेरे संग ते मिले देह, देह धरे पीछे हो मरना जरूर।
'बस्तीराम' बड़ा बुरा काम, चाहिये कुसंगत से डरना जरूर, जी॥
तेरे त्याग से प्रभु, प्रसन्न हो गहकर भुज पकरे।
माया तेरे साथ में कौन मरे ॥ ४॥

## आर्यवीर दल का शिविर

आर्यसमाज वकील कालोनी हांसी (हिसार) द्वारा सार्वदेशिक आर्यवीर दल का सात दिवसीय शिविर का आयोजन १९ जून से २६ जून तक मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय हांसी में किया गया। इस शिविर में ३५ आर्यवीरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय सतीशकुमार जैन एस.डी.एम. हांसी ने किया तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी दयानन्द गिरि जी ने की। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान चौ० देवदत्त जी आर्य, उपप्रधान चिमनलाल नारंग, विद्यालय प्रबन्धक ओमकुमार गर्ग तथा वैदिकविद्वान् भरतलाल जी शास्त्री तथा नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। माननीय एस.डी.एम. महोदय ने अपने सम्बोधन में कहा कि संस्कारित बालक राष्ट्र की धरोहर हैं यही बच्चे आगे देश का भविष्य तय करेंगे।

इस शिविर का समापन समारोह भी बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हो गया। समापन समारोह की अध्यक्षता श्रीमती सुवर्णा आर्या महम तथा विशिष्ट अतिथि चौ० हरिसिंह सैनी प्रधान आर्यसमाज हिसार तथा मोहनश्याम आर्य मण्डलपति आर्यवीर दल (हर०) थे।

आर्यवीरों की व्यायाम, आसन, नियुद्ध की प्रतियोगिता इसमें प्रथम, द्वितीय आने वालों तथा कार्यक्रम में विशिष्ट लोगों को स्मृति चिन्ह तथा सत्यार्थप्रकाश व स्वामी दयानन्द के चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया। व्यायाम शिक्षक जय भारत शास्त्री हिसार व हेतराम ने बच्चों को प्रशिक्षण दिया।

-कर्मवीर प्रजापति ''आर्य'', उपप्रधान आर्यसमाज, वकील कालोनी, हांसी

# शादियों से विदा होती सादगी व पवित्रता

## विवाह समारोहों में वैभव के विकृत प्रदर्शन और तड़क-भड़क पर जोर

अंग्रेजी के प्रख्यात भारतीय लेखक कीर्तिशेष नीरद सी. चौधरी ने अपनी एक पुस्तक 'टू लिव ऑर नॉट टू लिव' के एक अध्याय में, ऑक्सफोर्ड में बस जाने के एक लंबे अर्से बाद अपनी कलकत्ता यात्रा के दौरान वहां अपने किसी संबंधी के विवाह में वैभव के विकृत प्रदर्शन और अपसंस्कृति का जो नजारा देखा था, उसकी दास्तान बहुत ही मार्मिक शब्दों में रेखांकित की थी। किस प्रकार मेजबान अपने गरीब और सामान्य सगे-संबंधियों की उपेक्षा कर महिमामय राजनेताओं की अगवानी और अभिनंदन में दीवाने हो रहे थे, किस प्रकार अपने निवास पर आने वाले छोटे से छोटे अतिथि को नारायण का रूप मानने की हमारी सदियों पुरानी सांस्कृतिक परंपरा की धज्जियां उड़ रही थीं और किस प्रकार लोग बुफे शैली के भोज में खाद्य पदार्थों पर गिद्धों की तरह टूट रहे थे, इसका बड़ा ही रोचक, किंतु कारुणिक चित्रण उन्होंने संस्मरण में किया था। नीरद बाबू ने चार दशक पूर्व जो हालात बयान किए थे, आज उससे भी कहीं अधिक मिथ्या प्रदर्शन, अन्न और धन की बर्बादी तथा दान-दहेज और भेंट-पूजा के दृश्य नजर आते हैं, जो हमारे युगों पुराने उदात्त मूल्यों का विघटन करते और हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा को अंगूठा दिखाते प्रतीत होते हैं।

गरीब हो या निम्न-मध्यमवर्गीय परिवार अथवा अभिजात्य के अहम् से बोझिल अमीर घराना, प्रायः कुछ अपवादों को छोड़कर लगभग सारी शादियां रात्रि में ही होती हैं। बारातों की शोभायात्राओं में जिस प्रकार जीर्णशीर्ण वस्त्रों में निर्बल वर्गों के लड़के-लड़कियां ध्वनि प्रदूषण फैलाते जेनेरेटरों से उत्पन्न बिजली से प्रदीप्त विशालकाय रोशनी के हंडों को अपने सिरों पर ढोते हुए बैंडबाजों की फिल्मी धुनों के बीच वधू पक्ष के द्वार तक पहुंचते हैं और किस प्रकार उन्हें बिना जलपान कराये ही मामूली मजदूरी देकर लौटा दिया जाता है, वह हमारी संवेदन शून्यता का दिग्दर्शन कराने के लिए काफी है। स्वागत समारोह चाहे किसी सामान्य व्यक्ति द्वारा आयोजित हो अथवा सम्पन्न व्यक्ति द्वारा विद्युत् संकट के इस भयावह दौर में भी जिस प्रकार बिजली की बरबादी करते की जाती है, उसके बारे में अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। जाने हमारे मध्यमवर्गीय परिवारों की मानसिकता भी क्यों इतनी रुग्ण हो गई है कि अपनी थोथी हैसियत का रौब गालिब करने के लिए वे बराबर यह प्रयत्न करते हैं कि कोई न कोई मंत्री, मुख्यमंत्री या राज्यपाल उसके यहां पधारकर उनके आयोजन को अपनी चरण रज के स्पर्श से उपकृत करे।

वैवाहिक समारोह में जो साधारण मेहमान आते हैं उन्हें सलाम दुआ करने के बाद भोजन स्थल का रास्ता कुछ इस अंदाज में दिखा दिया जाता है जैसे गांवों में खेत से लौटने वाले बैलों या अन्य पशुओं को चारा रखने की जगह पर भेज दिया जाता है। उनकी मान-मनुहार किए जाने जैसी स्थिति कम ही देखने में आती हैं। शादियों के निमंत्रण पत्रों पर भी दृष्टि डाली जाए तो यह पता लग जाएगा कि किस प्रकार अमीरों का अनुकरण कर गरीब लोग भी महंगे और नानारंगी कार्ड छपाते हैं। पता नहीं, सादगी और पवित्रता में पगे हमारे वे जीवन-मूल्य किस रसातल में चले गए, जब परिवार का मुखिया पीले चावल हाथ में देकर अपने स्नेही लोगों को विवाह का निमंत्रण देता था। आज भले ही यह संभव न हो, पर हैसियत का मिथ्या दिखावा करने वाले महंगे कार्डों पर मितव्ययता तो बरती ही जा सकती है।

( दैनिक भास्कर से साभार ३०.६.२००५ )

### गीत

शरण तेरी आए प्रभु दुख मिटाओ
है नैया भंवर में किनारे लगाओ
करें हम भलाई न सोचें बुराई
फलें फूलें करलें धर्म की कमाई
हमें पाप पथ से हे भगवन् बचाओ।
है नैया भंवर में किनारे लगाओ।
अंधेरा अविद्या का चहुं ओर छाया,
किधर जाएं कैसे नहीं राह पाया,
हमें ज्ञान दीपक पिता अब दिखाओ
है नैया भंवर में किनारे लगाओ।
हो शुद्ध आत्मा मन रहे बुद्धि पावन
सदाचारी हों जन सफल होंवे जीवन
हृदय में हमारे ज्योति जलाओ
है नैया भंवर में किनारे लगाओ।
-डॉ० सुशीला आर्या, चरखी दादरी

### अनमोल खजाना भूल रहा....

टेक-कैसा मानव है देख जरा, वह अपना ठिकाना भूल रहा।
जिसमें ईश्वर का नाम लिखा, वह वेद पुराना भूल रहा।

१. ईश्वर क्या है, कहते हैं किसे, क्या उसकी रचना होती है।
सबका प्यारा वह एक प्रभु, यह मन में भावना होती है।
जीवों के उत्तम कर्मों का, अनमोल खजाना भूल रहा।

२. भटका जग में, वह दलदल में, कहता ईश्वर इसमें उसमें।
पाखण्डों का भोगी बनकर, इस मन्दिर में उस मस्जिद में।
मन को वश में कर न सका, ईश्वर गुण गाना भूल रहा।

३. शुभ कर्म करे दुनिया में अगर, उत्तम मानव कहलाएगा।
वरना इस नश्वर जीवन में, वह यूं ही आकर जाएगा।
ठहराव नहीं जीवन का यहां, क्यों विषय वृक्ष पर झूल रहा।

४. एक ईश्वर का गुणगान करो, इसमें आध्यात्मिक शक्ति है।
इन वेदों को धारण करलो, इसमें ईश्वर की भक्ति है।
इक ओ३म् 'सरस' है दुनियां में, ध्यान लगाना भूल रहा।

-सुरेन्द्रकुमार 'सरस', आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहानामार्ग, रोहतक

# आर्य वीरांगनाओं को सिखाए कराटे

रोहतक। शिवाजी कालोनी स्थित आर्यसमाज मंदिर में आर्य वीरांगनाओं ने संभावित संकट का सामना करने के लिए गुर सीखे। उन्होंने जूडो कराटे तथा मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण लिया। वृतिका आर्य व लिपिका आर्य ने प्रशिक्षण ले रही वीरांगनाओं में आत्मविश्वास पैदा करने तथा राष्ट्र के प्रति जवाबदेह बनने का आह्वान किया। गुरुदत्त, दयावती व सावित्री शास्त्री ने आर्य वीरांगनाओं को असंख्य बलिदानों से प्राप्त आजादी की रक्षा के लिए बलिष्ठ शरीर तथा आत्मविश्वास से परिपूर्ण व्यक्तित्व बनाने की बात कही।

## शराब का ठेका हटाने की मांग

रोहतक। बनियानी गांव के ग्रामीणों ने एडीसी विजय दहिया से मांग की है कि गांव में बने शराब के ठेके को हटाया जाए। उन्होंने आरोप लगाया कि ठेकेदार गांव के अंदर ठेका खोल रहा है। यह पंचायत की सहमति से नहीं है। एडीसी से मांग करने वालों में प्रतापसिंह, बलवानसिंह, गोपीराम, लक्ष्मी, रमेश, करतार, हुकमसिंह, पार्वती, सरवती, लीलूराम, रमेश व परसराम आदि शामिल थे।

## घातक दुर्घटना

आप सबके जाने-माने तथा समाज सेवक मा० दरियावसिंह आर्य (नांगल वाले) हाल कुरैनी दिल्ली की पुत्रवधू श्रीमती प्रतिभादेवी के १२-१३ जून की मध्य रात्रि में आकस्मिक दुर्घटना के कारण असामयिक स्वर्गवास से, पूरे क्षेत्र में महाशोक की लहर दौड़ गई है। स्वर्गवासी आत्मा बड़ी ही होनहार तथा बहुत ही कुशल चिकित्सक तथा सेवा-भावना से परिपूर्ण थी। डा० प्रतिभा जी सेक्टर-१ रोहतक निवासी शास्त्री भद्रसेन जी की सुपुत्री थी। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी शीतल चरण शरण प्रदान करें तथा मा० दरियावसिंह के परिवार तथा हितैषियों को घातक दुर्घटना को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। -मा० पूर्णसिंह आर्य, महामंत्री, आर्यसमाज नेला

# भ्रष्टाचार कैसे समाप्त होगा?

१. आज मीट, मछली, अण्डों का बाजार गर्म है। जगह-जगह चिकन प्वाइंट (स्थान) बनते जा रहे हैं। चौराहों पर मेन रोड पर सरेआम मीट, मछली, अण्डों की मार्किट बनी हुई है। होटलों पर तन्दूरी मुर्गे लटके हुए हैं। इसका मतलब है कि मांसाहारी लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। इनके साथ-साथ निकट ही शराब के ठेके खुले हुये हैं। जनता का खानपान दूषित होता जा रहा है जिसके कारण बुद्धि भ्रष्ट हो रही है और राक्षसवृत्ति बढ़ती जा रही है। मानव दानव बनता जा रहा है। रुपया-पैसा के हानि-लाभ के अतिरिक्त स्वास्थ्य और सामाजिक बुराई की कोई चिन्ता नहीं है। आध्यात्मिक चिन्तन की चर्चा समझ में नहीं आती। वैसे अपने आपको अच्छा आदमी साबित करने के लिए मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में हाथ जोड़कर सिर को झुकाता है, माथा टेकता है, प्रसाद चढ़ाता है। ईश्वर से सौदेबाजी करता है।

२. इस प्रकार अन्धविश्वास का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है। श्रीराम, श्री कृष्ण, वीर हनुमान और माता की मूर्तियां बनाकर आरती उतारता है। उनके नाम का जयघोष लगाता है परन्तु अपने इष्टदेव की अच्छी बात एक भी नहीं मानता, बेशर्माई से नित्य खोटे कर्म करता है। झूठ बोलकर बेईमानी और हेराफेरी से धन कमाने में अक्ल (बुद्धि) के घोड़े दौड़ाता है। हम देख रहे हैं कि भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। इन सब कुकर्मों की जड़ अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करना है। जब तक खानपान नहीं सुधरेगा तब तक धार्मिक प्रचार का कुछ प्रभाव नहीं होगा, सरकार एक ओर तो भ्रष्टाचार खत्म करने की घोषणा करती है दूसरी ओर भ्रष्टाचार के अड्डे बनाती है।

३. इसलिये आज सर्वप्रथम सर्वत्र जनता को बार-बार यह बताने की आवश्यकता है कि **मीट, मछली, अण्डे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं।** यह मनुष्य का भोजन नहीं है। इनके खाने से शरीर में अनेक प्रकार के टी.बी., कैंसर जैसे भयंकर रोग लग जाते हैं। स्वस्थ रहने के लिये शाकाहारी बनने की प्रेरणा जन-जन को देनी होगी। यदि खानपान सुधर गया तो विचारधारा सुधर जाएगी, जब विचार सुधर गये तो आचरण सुधर जाएगा। **भ्रष्टाचार** स्वयं भाग जाएगा।

४. मैं हर जगह खानपान सुधारने का प्रचार करता हूँ। मुझे उस समय बड़ी शर्म आती है जब मुझे बताया जाता है कि अनेक आर्यसमाजी परिवारों में मीट, मछली, अण्डा पकाया खाया जाता है। जब हमने पूछा, आपके घर में ऐसा क्यों होता है? उत्तर मिलता है-क्या करें, बच्चे नहीं मानते। हम कहते हैं ऐसे बच्चों के साथ क्यों रहते हो जो आपका कहना नहीं मानते। तब मरी हुई आवाज में बोलते हैं, आप ही बताओ, कहां जायें? मैं बता सकता हूँ परन्तु आप घर छोड़ने को तैयार नहीं क्योंकि मोहमाया के जाल में फंसे हुये हो। वास्तव में बात यह है कि ये महाशय पहले स्वयं भी खाते थे, अब इनके बच्चे इसका कहना क्यों मानेंगे। आश्चर्य तो इस बात का है कि ऐसे लोग आर्यसमाज में अधिकारी बने हुये हैं।

५. अब मैं अपने प्रचारक और उपदेशक वर्ग से विनती करूंगा कि आप जहां भी जाओ, वहां के अधिकारियों की जांच पड़ताल करो। उनमें जो दुर्व्यसन (त्रुटि) नजर आये उसे छोड़ने की प्रतिज्ञा कराओ। मैं जानता हूँ बहुत से प्रधान/मंत्रियों के बीवी बच्चे आर्यसमाज में नहीं आते, कहीं और पौराणिक संस्था में जाते हैं। ऐसे अयोग्य अधिकारियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करके दक्षिणा प्राप्त करना कभी सफल और सुखदायी नहीं है। आपके प्रचार और वाणी का प्रभाव तब ही होगा जब स्वयं नियम और संयम से काम करोगे। अन्त में ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि सबको सद्बुद्धि प्रदान करो ताकि सब सन्मार्ग पर चलें।

**-देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज हरिनगर, दिल्ली-६४**

# युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से हरयाणा आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में १२ जून २००५ से १९ जून २००५ तक युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल में किया गया। शिविर का उद्घाटन आर्य नेता डॉ० आर्यवीर भल्ला ने किया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज ९ सैक्टर फरीदाबाद के माननीय प्रधान श्री लक्ष्मीचन्द आर्य ने की। सात दिवसीय युवक निर्माण शिविर में गुड़गांवा मण्डल के १२५ युवाओं को योगासन प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी-जूडो कराटे व आर्यसमाज की विचारधारा का प्रशिक्षण दिया गया। १३ जून को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपाध्यक्ष श्री जगवीरसिंह एडवोकेट का प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक भाषण शिविर में हुआ। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्डवाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, अश्लील प्रसारण, मांसाहार शराब आदि से सदैव दूर रहने की प्रेरणा नौजवानों को दी। शिविर का समापन एवं दीक्षांत समारोह १९ जून को वेद प्रचार मण्डल फरीदाबाद के प्रधान श्री राजेन्द्रसिंह बीसला की अध्यक्षता में हुआ। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पलवल के प्राचार्य श्री कश्मीरीलाल खुराना समारोह में मुख्यातिथि थे। भगत मंगतू राम जी, डॉ० रमेशराणा पार्षद ने विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर कुमारी शशीबाला आर्या, श्री वीरेन्द्रसिंह तेवतिया, प्रेमप्रकाश आर्य, श्री रमेश कुमार, धर्मपाल जी व्यायामाचार्य (करनाल), श्री राजेश शास्त्री (रोहतक) आदि को सम्मानित किया गया।

**-बिजेन्द्रसिंह आर्य**, शिविर संयोजक

# आदिवासी कौन है?

कभी-कभी मैं सोचता हूं कि 'आदिवासी' शब्द का अर्थ क्या है? यदि 'आदिवासी' शब्द का अर्थ सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न हुये लोगों से है तो क्या गैर आदिवासी लोग सृष्टि की उत्पत्ति के बाद आदिवासियों के पश्चात् पैदा हुये हैं? यदि हां तो इसका क्या प्रमाण है? प्रश्न यह भी उठता है कि आदिवासी शब्द का प्रचलन कब से प्रारम्भ हुआ है? कहा जाता है कि भारत में अंग्रेजों के आने के बाद उन्होंने ही भारतीयों में परस्पर फूट डालने के लिये कुछ लोगों को आदिवासी कहा? यदि यह सत्य है तो भारत में अंग्रेजों के आने से पूर्व वर्तमान आदिवासियों को क्या कहा जाता था? यदि वास्तव में आदिवासी ही सृष्टि के प्रारम्भिक निवासी हैं तो सभी आदिवासियों की भाषा, वेशभूषा, आचार-व्यवहार एक क्यों नहीं है? सभी गैर आदिवासी यदि आदिवासियों के बाद उत्पन्न हुये हैं तो बाद में पैदा होने वालों को मध्यवासी या वर्तमान या भविष्य में उत्पन्न होने वालों को क्रमश: वर्तमानवासी या भविष्यवासी क्यों नहीं कहा जाता? प्रश्न यह भी उठता है कि यदि कुछ लोगों का आदिवासी शब्द रखने का आग्रह किसी भी कारण से यदि हो जाये तो क्या दूसरे लोगों को भी यह अधिकार है या नहीं कि वे आदिवासी के बजाय अन्य नाम अपनी धारणा के अनुसार कुछ भी रख सकें?

यह जानना भी रोचक होगा कि कतिपय प्रमुख पन्थों का मानना है कि सृष्टि के प्रारम्भ में एक नर पुरुष और मादा स्त्री से ही सभी वर्तमान लोग हैं? क्या यह सत्य हो सकता है? यदि नहीं तो क्या इस विषय पर आर्यसमाज के दावे से सहमत हुआ जा सकता है, जिसका दावा है कि सृष्टि के प्रारम्भ में अमैथुनी सृष्टि द्वारा केवल एक बार असंख्य युवा पुरुषों और युवा स्त्रियों से ही वर्तमान मानवों की उत्पत्ति मैथुनी प्रक्रिया से होती है, इस दृष्टि से आर्यसमाज का मानना है कि समस्त मानव जाति का प्रत्येक मानव वर्तमान आदिवासियों सहित सभी आदिवासी हैं क्योंकि उनके सभी पूर्वजों का जन्म सृष्टि के प्रारम्भ में हुआ था। अत: केवल कुछ लोगों को ही किसी भी कारण से आदिवासी कहना क्या उचित है? पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर इस विषय पर सभी दृष्टियों से विचार किया जाना चाहिये।

# विवादास्पद आदिवासी साहित्यकार?

रांची में साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित आदिवासी साहित्य सम्मेलन के दस सत्रों में से दो सत्रों का एक दर्शक होने की हैसियत से मैंने अनुभव किया कि उक्त सम्मेलन में उन ज्वलन्त विषयों पर गम्भीर चर्चा नहीं हुई जिसका सामना आज आदिवासी समाज कई सदियों से कर रहा है। सरकारी खर्चे पर सभी सुविधाओं को प्राप्त कर मौजमस्ती कर कतिपय दुराग्रही लोग अन्य सभी पर अपने पूर्वाग्रहग्रस्त विचारों को जबरदस्ती थोपते हुये मुझे नजर आये। ऐसा दृष्टिकोण रखने वाले क्या वास्तव में आदिवासी समाज के सही शुभचिंतक हैं?

संयोग से एक सत्र में नागपुर से आये साहित्यकार लटारू कवरी मडावी का विचारोत्तेजक विवादास्पद विचार सुनने को भी मिला जिसमें उन्होंने रामायणकालीन रावण को महान् आदिवासी बताया और राम को हत्यारा। उसके विचार के अनुसार आदिवासियों को रावण के आदर्शों से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। उन्होंने नागपुर हाईकोर्ट में विजयदशमी के अवसर पर रावण के पुतले को जलाने के खिलाफ विचारार्थ याचिका भी दाखिल की है। उनके विचारों को सुनकर मेरे मन में विचार आया कि यदि ऐसे विवादास्पद विषयों पर परस्पर विरोधी विचारों वाले वक्ताओं का भी विचार यदि सुनने को मिलता तो श्रोताओं को किसी निर्णय तक पहुंचने में सहायता मिलती। यह स्थिति तो तभी हो सकती है कि जब श्रोताओं, वक्ताओं और आयोजकों में काफी सहिष्णुता हो। पर सत्य बात यही है कि वास्तव में ऐसी सहिष्णुता और उदारता का यत्र-तत्र सर्वत्र अभाव है। काश! ऐसा होता?

दूसरे आर्यसमाज से जुड़े हुए लोगों एवं संस्थाओं को चाहिये कि नागपुर उच्च न्यायालय में वाद (writ) संख्या-२७२/१९९७ में अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिये हस्तक्षेपकर्ता (intervenor) की भूमिका का निर्वाह करें। पर प्रबन्ध सम्बन्धी अनावश्यक विवादों में उलझे आर्य प्रतिनिधि सभाओं के नकली शूरमाओं क्या आशा की जा सकती है? यह एक यक्ष प्रश्न है?

**-दयाराम पोद्दार, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची**

## स्वामी अग्निवेश की अध्यक्षता में...... (पृष्ठ दो का शेष)

होकर सभी प्रतिनिधियों की आंखें गीली हो गई। लोगों ने इस नाटक को इमना पसन्द किया कि नाट्य कर्मियों को बड़ी धनराशि प्रशंसा के रूप में प्राप्त हुई। आयोजन में सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो० कैलाशनाथ सिंह, डॉ० वेदप्रताप वैदिक, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सत्येन्द्रचन्द्र गुड़िया, डॉ० रामप्रकाश, आर्यसमाज के बड़ी संख्या में विद्वान्, संन्यासी तथा स्त्री-पुरुष इस ऐतिहासिक एवं सफल आयोजन में सम्मिलित हुए। समारोह स्थल पर आर्यसमाज का साहित्य, यज्ञ सम्बन्धी पात्र, भजनों के कैसेट व सीडी तथा चित्र एवं कैलेण्डर आदि विक्रयार्थ उपलब्ध थे। सभी आगन्तुक प्रतिनिधियों के लिए जलपान व भोजन की भी समुचित एवं सुव्यवस्थित व्यवस्था भी की गई थी।

**संचालक, वेद प्रचार समिति, देहरादून**

# इन हिन्दुओं को कौन समझायेगा ?

मैंने अनेक स्थानों पर देखा है, बृहस्पतिवार (जुमेरात) को किसी मुसलमान फकीर की कब्र को पूजने के लिये हिन्दू भाई बहिनों की लम्बी लाइन लगी होती है। अन्धविश्वास में फंसे भोले भाइयों को देखकर बड़ा आश्चर्य और अफसोस होता है। यह लोग अपने देवी देवताओं को छोड़कर मूर्खतावश मुसलमानों की कब्रों पर माथा टेकते हैं। बताओ! कभी कोई मुसलमान हिन्दू के मन्दिर में आकर पूजा करता है? इन हिन्दुओं को कौन समझाएगा? गर्व से कहो हम हिन्दू हैं, का नाद गुंजाने वाले आर.एस.एस. के भाइयों से नम्र निवेदन है यदि हिन्दुओं को बचाना चाहते हो और संगठन को मजबूत करना चाहते तो हिन्दुओं को अन्धविश्वास (श्रद्धा) से छुड़ाओ। श्रीराम और कृष्ण के बताये हुये सत्यमार्ग पर चलने की प्रेरणा दो। शाखा में स्वयं सेवकों को दुर्व्यसनों को छोड़कर सन्मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करो। केवल भारतमाता का जयघोष लगाने से काम नहीं चलेगा, याद रखो! जब तक हमारी एक शुद्ध विचारधारा नहीं होगी हम कभी विजय प्राप्त नहीं कर सकते। एक सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की उपासना करनी चाहिये तब ही कल्याण होगा अन्यथा आजीवन भटकते रहोगे।

# शोकसभा में चित्रपूजन क्यों ?

आर्यसमाज में प्राय: शोकसभायें होती रहती हैं। हम देखते हैं, मृतक का चित्र लगाया जाता है, उस पर माला पहनाई जाती हैं। चित्र पर पुष्पांजलि भी दी जाती है और हाथ जोड़कर नमन करते हैं। एक समाज में देखा था, गरुड़ पुराण की कथा हो रही थी। यह सब कार्यक्रम आर्यसमाज के पं० पुरोहित और अधिकारियों की देखरेख में होता है। वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध क्रियाएं देखकर बड़ा अफसोस होता है। हमने जब पूछा कि आर्यसमाज ऐसा क्यों हो रहा है? तब अधिकारी कहते हैं कि आर्य जी, कुछ फर्क नहीं पड़ता, सब चलता है। आप (पाठक) ही बताओ। क्या यह उचित है?

**लेखक : देवराज आर्यमित्र, हरिनगर, नई दिल्ली-६४**

# आर्यवीर दल हांसी के शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्यवीर दल की स्थानीय इकाई द्वारा प्रतिवर्ष की भांति ग्रीष्मावकाश चरित्र निर्माण शिविर एवं योग साधना शिविर भिन्न-भिन्न स्थानों में लगाये गये। जो बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। प्रथम शिविर १४ से जून २००५ तक दयानन्द विद्या निकेतन पब्लिक स्कूल में लगाया गया जिसमें बच्चों के साथ-साथ बड़ों ने भी योग का लाभ उठाया। द्वितीय चरित्र निर्माण शिविर १९ जून से २६ जून तक आर्य स्कूल में तथा योगसाधना शिविर २२ से २६ जून तक हुड्डा कालोनी में लगाया गया जिसमें सैकड़ों स्त्री-पुरुषों व बच्चों ने लाभ उठाया।

उक्त शिविरों में सर्वश्री प्रकाशचन्द गुप्ता शहरी कांग्रेस हांसी, श्रीमती सन्तोष ढुल प्रदेश सचिव महिला कांग्रेस हरयाणा, श्रीमती सपना खुराना पार्षद वार्ड ७ हांसी, चौ० हरिसिंह सैनी हिसार, श्री मोहनश्याम आर्य हिसार, श्री कमल महता भारतीय जीवन बीमा निगम हांसी, आचार्य विश्वमित्र शास्त्री हिसार, आचार्य रामसुफल शास्त्री हांसी आदि ने अपने-अपने विचार रखे। प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कार व सभी बच्चों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

# हे आर्यो ! अपनी सन्तान को भी सम्भालो

आर्यसमाज के समर्पित कार्यकर्त्ताओं, अधिकारियों एवं आर्य उपदेशकों की सन्तान को देखकर बड़ा दु:ख होता है कि आर्यों की सन्तान भी दुर्व्यसनी होती जा रही है। आर्यसमाज के लोगों को चाहिए कि वे आपसी लड़ाई-झगड़े छोड़कर अपने परिवार का एवं बच्चों का वैदिकीकरण करें। ऐसे-ऐसे व्यक्तियों की सन्तानों को बीड़ी, सिगरेट-शराब आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते हुए देखा गया जिनके बुजुर्गों ने अपना जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित कर दिया।

कुछ उपदेशकों के भी बच्चों को आर्य संस्कृति के विरुद्ध कार्य करते हुए देखकर बहुत दु:ख होता है। दूसरे को सुधारने वाले वाक्पटुता में सफल मंच के धनी जिन्होंने प्रचार को धन्धा बना रखा है।

अत: जब तक अधिकारी व उपदेशक अपने परिवारों का पूर्ण वैदिकीकरण नहीं करेंगे तब तक आर्यसमाज आगे नहीं बढ़ेगा। इसलिए मेरा विनम्र आग्रह है कि हे आर्यो ! स्वार्थ व लोभ लालच से रहित होकर समाज के साथ-साथ अपनी सन्तान को व परिवार को भी संभालो।

**शुभेच्छु : रामसुफल शास्त्री, हांसी**

# विद्यार्थियों के लिए विशेष सूचना

शिक्षक दिवस के महान् अवसर पर ५ सितम्बर की पूर्व सन्ध्या पर ४ सितम्बर २००५ को वैदिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें वेद-ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज से सम्बन्धित लघु प्रश्न पूछे जायेंगे। जिन्हें बच्चे आसानी से याद कर सकें।

प्रथम पुरस्कार ११०० रुपये, द्वितीय पुरस्कार ५०० रूपये, तृतीय पुरस्कार २५० रुपये, सान्त्वना पुरस्कार १०० रुपये तथा सील्ड व सभी बच्चों को प्रमाण पत्र प्रदान किये जायेंगे। इच्छुक विद्यार्थी अपना नामांकन करवा लें। सिर्फ छठी कक्षा से दसवीं तक के विद्यार्थी ही भाग ले सकेंगे। एक शिक्षण संस्था से कम से कम २ तथा अधिक से अधिक ५ विद्यार्थी ही भाग लेंगे। परीक्षा शुल्क ३० रुपये प्रति छात्र होगा।

**सम्पर्क सूत्र : शास्त्री भवन, लाल सड़क, हांसी**
**फोन : ०१६६३-२५५१२५, २५३३६६**



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२ - २७७८०१

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१





आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१

वर्ष ३२ अंक ३२ १४ जुलाई, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## आर्षग्रन्थ छः शास्त्र विद्यारूपी अमरकोषों का संक्षिप्त वर्णन

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

वेद शास्त्र से भिन्न कोई शास्त्र प्रमाण नहीं है। समस्त शास्त्र सनातन वेद से ही निकले हैं। अनेक शास्त्रों के प्रणेता महर्षि वेदव्यास ने कहा-लोक में जितने भी आगमशास्त्र अर्थात् विभिन्न विषयों के आदिमूल ग्रन्थ हैं अथवा शास्त्र हैं और लोक में जो प्रवृत्तियां देखी जाती है, वे सब कभी वेद के आधार पर ही आरम्भ हुई है। ''शास्त्रयोनित्वात्'' वेदान्तदर्शन के इस सूत्र पर भाष्य करते हुए उद्भट प्रतिभाशाली महान् दार्शनिक आचार्य शंकर लिखते हैं-

ऋग्वेदादि वेद-शास्त्र अनेक विद्याओं से युक्त हैं। दीपक की भांति सब पदार्थों का बोध कराने वाले हैं। इनमें इतना ज्ञान भरा हुआ है कि ये सर्वज्ञ जैसे दीखते हैं। इनका कारण ब्रह्म ही हो सकता है। ऐसे सर्वज्ञता के लक्षण से युक्त ऋग्वेदादि शास्त्र की उत्पत्ति सर्वज्ञ से भिन्न किसी अन्य से नहीं हो सकती। हम संसार में देखते हैं कि पाणिनि आदि ग्रन्थकारों के ग्रन्थों में जितना ज्ञान होता है उससे कहीं अधिक ज्ञान उनके मस्तक में रहता है, तभी वे वैसे ग्रन्थ लिख पाते हैं। ऋग्वेदादि का कहना ही क्या? वे तो सब प्रकार के ज्ञान के समुद्र हैं। उनकी उत्पत्ति सर्वज्ञ से ही हो सकती है। अत: सर्वज्ञ ब्रह्म ही ऋग्वेदादि का कारण है। पुरुष के श्वास-प्रश्वास की तरह अनायास ही ब्रह्म से वेदों की उत्पत्ति हुई।

दर्शन शास्त्र बड़े गौरव से यह मानते हैं कि हम वेदों के व्याख्यान होने से उपांग हैं। कौन निष्पक्ष मनुष्य ऐसा है जो यह कह सके कि जिस समय दर्शनशास्त्र बने उस समय वेदों से बढ़कर आर्यों ने उन्नति कर ली थी। वेद सत्यसिद्धान्तों के प्रतिपादक हैं, सत्य से ऊपर कोई क्या उन्नति कर सकता है। यदि ऋग्वेद ने दर्शाया है कि अग्नि उष्ण है तो क्या वैशेषिक दर्शन उसकी पुष्टि नहीं करता? क्या वैशेषिक दर्शन वेद से निराला कोई सिद्धान्त प्रचार करता है? क्या योगदर्शन में ऐसी विद्या है जिसका मूल अथवा बीज चारों वेदों में न हो? जब यह बात नहीं है तो फिर विदेशीय इतिहासवेत्ताओं की यह कल्पना कि वैदिक समय में उपनिषद् का समय बढ़िया था और उपनिषद् के समय से दर्शनशास्त्रों का समय उच्च था क्या सर्वथा निर्मूल नहीं है?

अत: हम छ: शास्त्र विद्याओं का वर्णन दर्शाते हैं :-

**१. मीमांसाशास्त्र**-यह पहला दर्शन जैमिनि मुनि का बनाया मीमांसा शास्त्र है। इसमें धर्म और धर्मी का विचार किया गया है और प्रत्यक्ष का अनुमान इन्हीं दो प्रमाणों को माना है। धर्म की प्रशंसा का वर्णन किया है कि वेद की आज्ञा ही धर्म है। जैमिनि जी बहुत उच्च कोटि के तार्किक थे। इन्होंने अपने मीमांसा-दर्शन में वेद की महिमा को मुक्तकंठ से स्वीकार किया है। वे वेद को पौरुषेय नहीं मानते, उनकी सम्मति में वेदज्ञान से भरी हुई ऐसी ऊँची रचना है कि वह किसी मनुष्य का बनाया हुआ हो ही नहीं सकता। उनके शब्द में वेद की प्रेरणा, अर्थात् वेद की आज्ञा जो अर्थ (कर्त्तव्य) बताती है वही धर्म है।

अपने दर्शन में महर्षि लिखते हैं- वेद में आया प्रत्येक वाक्स्थ पद स्व अर्थ से स्वाभाविक सम्बन्ध रखता है-''शब्द का अर्थ के साथ स्वाभाविक सम्बन्ध है, इसका ज्ञान व उपदेश परमात्मा ने किया है, अत: वेद स्वत: प्रमाण एवं ईश्वरीय ज्ञान है।'' अपने इस दर्शन में महर्षि ने अभ्युदय और मोक्ष के हेतु वेदोक्त धर्म का ही विवेचन किया है। धर्म की जिज्ञासा करने वाले उनके शिष्यों ने महर्षि से पूछा-हे महर्षे! हम आपसे धर्म के विषय में जानने की इच्छा करते हैं। महर्षि ने उत्तर दिया-हे शिष्यो! वेदाज्ञापूर्वक जिस कर्म के करने की इच्छा एवं प्रेरणा हो वह धर्म का लक्षण है, अर्थात् वेदविधि विधानपूर्वक जिस कर्म के करने से जन्मजन्मान्तर में परमानन्द मिले, उस वेदप्रतिपाद्य विधिवत् कर्म का अनुष्ठान, धर्म के लक्षण का द्योतक है। धर्म के विषय में केवल वेदाज्ञा ही प्रमाण है।

सृष्टिक्रम में जैमिनि जी ने कर्म को प्रधान माना है। अत: प्रमाण किया गया है कि ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नहीं होता कि जिसके बनाने में कर्म चेष्टा न की जाये।

**२. वैशेषिक दर्शन**-इस शास्त्र के रचयिता महर्षि कणाद जी हैं। वैशेषिक दर्शन भी वेद को ईश्वर रचना मानता है। ईश्वर का वचन होने के कारण वेद प्रामाण्य है। इसमें द्रव्य को धर्मी मानकर गुण आदि को धर्मस्थापना करके विचार किया है। इन्होंने भी दो ही प्रमाण माने हैं और छ: का निरूपण किया है।

अपने दर्शन में महर्षि कणाद वेदों के सम्बन्ध में अपनी सम्मति देते हैं-वेद ईश्वर का वचन होने से प्रामाण्य हैं, वेदचतुष्टय प्रमाण हैं। अपने दर्शन में सृष्टि उत्पत्ति विषय पर महर्षि जी ने काल को प्रधान माना है। अत: प्रमाणित किया है कि समय न लगे बिना, कार्य बने ही नहीं।

**३. न्यायदर्शन**-इस दर्शन के रचयिता हैं मुनि गौतम जी। इसमें यह तर्क प्रारम्भ कराके धर्मी का धर्म और धर्म का धर्मी क्यों नहीं होता? अपने दर्शन में महर्षि ने प्रमाण और प्रमेय का सम्बन्ध बताया है और सोलह पदार्थ माने हैं। न्यायदर्शन में गौतम जी एक प्रकार से न्याय का निर्णय देते हुए वेदों के ईश्वरोक्त होने में प्रमाणित करते हैं। मन्त्र विचार तथा आयुर्वेदवत् वेदों का प्रमाण है ऐसा ही सब आप्त विद्वानों ने माना है, वेदों में जिस आयुर्वेद-चिकित्सा विज्ञान का प्रतिपादन किया गया है, वह संसार में सत्य माना गया है। इसलिए मन्त्र आयुर्वेदरूपी एक देश के प्रत्यक्ष से वेद के उस भाग का भी प्रामाण्य समझना चाहिये, जिसमें आयुर्वेद का प्रतिपादन नहीं है। क्योंकि वेदों में कहा गया आयुर्वेद प्रत्यक्ष विज्ञान द्वारा वेद के रचयिता का आप्तत्व सिद्ध है। वही आप्त उस भाग का भी रचयिता है, जिसमें आयुर्वेद का साक्षात् प्रतिपादन नहीं है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में क्रमश: चिकित्साशास्त्र, धनु:शास्त्र, संगीतशास्त्र और अर्थशास्त्र का विशेष रूप से प्रतिपादन है इसलिए ये शास्त्र चारों वेदों के उपवेद माने जाते हैं। उपवेद ये हैं-आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद तथा अर्थवेद।

**४. योगदर्शन**-इस शास्त्र के रचयिता हैं महर्षि पतञ्जलि जी। महर्षि ने अपने दर्शन में योग के आठ अंग कहे हैं। इन नियमों का वर्णन करते हुए ऋषि ने उपासना की युक्ति बताई और मुक्ति के अनेक साधनों का यथार्थ वर्णन किया है। मुनि पतञ्जलि जी ने योगदर्शन में परमात्मा का वर्णन करते हुए उसे सर्वज्ञ माना है और कहा है कि परमात्मा में निरतिशय ज्ञानवाला ज्ञान है, उसमें इतना ज्ञान है कि वहां ज्ञान की हद हो गई है, उससे अधिक ज्ञान और किसी में हो ही नहीं सकता। इस प्रकार परमात्मा को निरतिशय ज्ञानवाला सर्वज्ञ करके महर्षि आगे लिखते हैं कि वह परमात्मा हमारे पूर्वज गुरुओं का गुरु है। जगत् में ज्ञान की धारा उसी परम गुरु से प्रवाहित हुई है।

पाणिनि प्रणीत अष्टाध्यायी तथा उस पर महामुनि पतञ्जलि का रचा महाभाष्य, ये दो ही व्याकरण के प्रामाणिक आर्षग्रन्थ हैं। अपने योगदर्शन शास्त्र में महर्षि पतञ्जलि भी वेद के सम्बन्ध में लिखते हैं-वह परमेश्वर सर्वप्रथम ऋषियों का भी गुरु है, क्योंकि वह सर्वकाल में ज्ञानी है, सर्वज्ञ है। सृष्टि उत्पत्ति में महर्षि ने योग (पुरुषार्थ) को प्रधान माना है। अत: अपने दर्शन में प्रमाणित किया है कि विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाये तो कार्य नहीं बन सकता।

(शेष पृष्ठ दो पर)

# अतुलनीय पवित्र स्त्रियाँ

❑ सुश्री आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

इन्दौर निवासी श्री बाबूलाल जोशी ने 'परोपकारी' के सम्मान्य विद्वान् सम्पादक को २३/२/०५ को पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने महिलाओं के ऋत्विक् कर्म सम्बन्धी प्रश्न रखे हैं। उस पत्र की छाया प्रति मेरे समीप भेज देने का भी संकेत किया है, जो मुझे 'परोपकारिणी सभा' द्वारा भेज दी गई है।

प्रश्न शैली में जोशी ने यही समर्थन करना चाहा कि महिलाओं को ऋत्विक् कर्म करने का अधिकार नहीं है। जोशी जी के इन निरर्थक प्रश्नों को समाहित कर रही हूँ, जिससे वे विगत संदेह हो सकें। प्रश्नों की निरर्थकता यही है कि इस विषय में पर्याप्त लिखा जा चुका है, अस्तु।

प्रश्न १. पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालङ्कार के भाष्य में '**न वै कन्या ......वेदपरागः**' मनु० २२/३६-३७, इन श्लोकों को प्रक्षिप्त नहीं माना है। अन्य कुछ विद्वान् भी इसे वैसा ही मानते हैं।........आर्यसमाज के मान्य निर्णय से है, कि वह क्या हो?

**उत्तर**-विद्वान् जोशी जी प्रथम तो यही विदित करें कि पं० हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार ने '**न वै कन्या**'........मनु० २२/३६-३७ श्लोकों को प्रक्षिप्त नहीं माना है या अन्य कुछ एक विद्वान् प्रक्षिप्त नहीं मानते, इस हेतु से ये श्लोक प्रमाण योग्य हैं, यह सिद्ध नहीं हो सकता। यही आर्यसमाज का मान्य निर्णय है।

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में मनुस्मृति के श्लोक बड़ी संख्या में उद्धृत किये हैं। नारियों के प्रसङ्ग में भी बहुत से श्लोकों के उद्धरणों की झड़ी लगा दी है, जिनमें नारियों के कर्त्तव्य व गौरव का कथन है। इस प्रकार -

**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः॥** मनु० ३/६५॥

आदि श्लोक महर्षि ने स्त्रियों के सत्कार प्रसङ्ग में उद्धृत किये हैं। एतादृश मनुस्मृति के श्लोकों को उद्धृत करने वाले उन गुरुवर महर्षि दयानन्द ने मनुस्मृति के **न वै कन्या** श्लोक भी अवश्य देखे होंगे। यदि ये श्लोक प्रमाणभूत होते, तो महर्षि दयानन्द कभी भी ऋ० १/११८/९ मन्त्र में आये '**अश्विना**' पद का '**यज्ञादि कर्म कराने वाली स्त्री**' यह अर्थ न करते और न अन्यत्र 'सत्यार्थप्रकाश' आदि ग्रन्थों में महिलाओं द्वारा यज्ञादि कर्म कराने का सुस्पस्ट निर्देश करते।

महर्षि के अर्थ से स्पष्ट है कि महर्षि ने न वै कन्या को प्रक्षिप्त माना है, तभी '**यज्ञादि कर्म कराने वाली स्त्री**' अर्थ किया है, एतदर्थ न वै कन्या प्रक्षिप्त ही है यह निश्चित जानना चाहिये। इस विषय में महर्षि दयानन्द से बढ़कर वेदालङ्कार आदि प्रामाणिक नहीं हो सकते।

**प्रश्न २.** अभी तक परिणाम पढ़ने को नहीं मिला कि मासिक धर्म से होने की स्थिति में ऋत्विक् कर्म का अधिकार महिलाओं को है, या नहीं?

**उत्तर** - इस विषय में श्री बाबूलाल जोशी ही प्रष्टव्य है कि मासिक धर्म की स्थिति में ऋत्विक् कर्म अनधिकार के समर्थक कौन-कौन से प्रमाण हैं?

१. मासिक धर्म की स्थिति में कौन-कौन से कार्य वर्जित हैं? और जो कर्म वर्णित हैं क्या उनमें ऋत्विक् कर्म का वर्जन है?

२. मासिक धर्म की स्थिति में ऋत्विक् कर्म कराने से यज्ञ में हानि क्या होती है?

**प्रश्न ३.** जब एक माह तक महिलाएँ ऋत्विक् कर्म करवाती हों, तब निर्णय क्या हो? १० दिन के पारायण यज्ञ में यदि मासिक धर्म की स्थिति हो, तब क्या करें, आदि।

यदि अधिकार नहीं, तो ४ दिन अन्य कोई विद्वान् यज्ञकर्म करवा दें?

**उत्तर**-श्री जोशीजी इस शंका को करते हुए यत्किञ्चित् भी आपको संकोच न हुआ। यह तो ठीक है कि इस नैसर्गिक प्रक्रिया से आप सुविदित हैं पुनरपि बहुत कुछ अविदित ही होता है। महिलाओं के मासिक धर्म से होने पर ऋत्विक् कर्म के निर्णय में यह लोकोक्ति '**जिसके फटे न बिवाई वह क्या जाने पीर पराई**' अत्यन्त प्रासंगिक है।

२. क्या ऋत्विक् कर्म कराने वाली महिला, वह मासिक धर्म से युक्त है या नहीं, इसके पोस्टर टंगवायेगी?

३. आपने जो मास भर यज्ञ के ब्रह्मत्व में ४ दिन की जो विघ्न बाधा उठाई है, उसमें विदित हो आर्यसमाज या पौराणिकों के अब तक के इतिहास में प्रथम बार ही कुम्भ मेला ५ अप्रैल-४ मई, २००४ उज्जैन में १ मास तक ब्रह्मचारिणी ब्रह्मा द्वारा यज्ञ कराया गया, जिसकी पूर्णता में परमात्मा का पूर्ण सहयोग था। उसने इस आयोजन के कई मास पूर्व ही इस नैसर्गिक प्रक्रिया से ब्रह्मचारिणी ब्रह्मा को मुक्त कर दिया था।

जिन बहिनों को इस प्रक्रिया से मुक्ति नहीं मिली है, उसका समाधान वेदपाठी ब्रह्मचारिणी समूह की बहुसंख्या होती है। पर यह समाधान पट्टिका टाँगकर न किया जाता है, न किया जायेगा।

४. ऋत्विक् कर्म कराने के लिए शारीरिक क्षमताओं का विचार विमर्श करके ही, उस गण का निश्चय होता है या उस कार्यक्रम की स्वीकृति ली जाती है। न कि यज्ञ, उत्सव आदि का नाम सुनते ही, कोई भी, कहीं भी दौड़ पड़ता है।

५. संयोगवश मासिक क्रम बन ही गया, तो जैसे युद्ध छोड़कर, परीक्षा छोड़कर, ट्रेन छोड़कर नहीं भागा जाता, वैसे ही ऋत्विक् कार्य छोड़कर नहीं भागना चाहिये।

क्या कभी सुना? महारानी लक्ष्मीबाई युद्ध छोड़कर बैठ गई? अमुक बालिका ने परीक्षा छोड़ दी, ट्रेन छोड़ दी? और उस स्थिति में अन्य पुरुष ने युद्ध किया, परीक्षा दी या वे ट्रेन में चढ़ गये?

यदि मासिक धर्म से युक्त होने पर युद्ध किया जा सकता है? परीक्षा दी जा सकती है? यात्रा की जा सकती है? इतना ही नहीं, पढ़ने के लिए कक्षा में पहुँचा जा सकता है? दवा के लिए हॉस्पिटल जाया जा सकता है? कक्षा ली जा सकती है? प्रवचन दिये जा सकते हैं? तो ऋत्विक् कर्म कराने में ही कौन सा ववण्डर खड़ा हो जाता है? जिससे वह कर्म नहीं किया जा सकता? क्या ऋत्विक् कर्मकर्त्री ब्रह्मा को ही सीधे वेदी में अग्न्याधान आदि करना होता है, अतः ये प्रश्न कर दिये?

महिलाओं को ऋत्विक् कर्म का अनधिकार है, जब यह अवैदिक कथन सिद्ध न हुआ, तब कुछ न सूझा, बस मासिक धर्म का झण्डा उठा दिया। महाशय जी! उत्तम होता कम से कम यह प्रश्न न उठाते। **पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी**

## आर्षग्रन्थ छः शास्त्र....

प्रथम पृष्ठ का शेष....

**५. सांख्यदर्शन**-इस शास्त्र का मूल मुख्यकर पदार्थों की गिनती के वास्ते है। सांख्यशास्त्र के रचयिता मुनि कपिल जी कहते हैं। मैं वैशेषिक दर्शन आदि के छः पदार्थों को मानने वाला नहीं हूँ और फिर बहुत से विवाद के पीछे यह निश्चय करते हैं कि अवस्तु के अभाव से विवेक होता है। अब इस पर यह उत्तर ठहरता है कि इस सांख्य शास्त्र व अन्य शास्त्रों के साथ विरुद्ध तो क्या है? परन्तु यह विरुद्धता बाह्य दृष्टि से ही विदित होती है। किन्तु अन्त में सांख्यकर्ता उसी निर्णय पर पहुंचाता है जो अन्य शास्त्रों का सिद्धान्त है, क्योंकि सांख्यकर्ता अविवेक का चित्र-सा खींचता है और अज्ञान अविद्या, भ्रम और विवेक सब एक ही अर्थ में आते हैं। इस प्रकार सांख्यशास्त्र में २५ पदार्थों का निरूपण किया गया है, जो कि शास्त्र के अवलोकन से विदित हो सकता है। सांख्यदर्शन की धारणा है कि वेद पौरुषेय नहीं है, क्योंकि उनका बनाने वाला कोई पुरुष नहीं हो सकता। अतः नित्य और अपौरुषेय वेद का कर्ता नित्य और सर्वज्ञान निधि भगवान् हो ही सकता है।

महर्षि कपिल अपने सांख्यदर्शन में लिखते हैं-वेद परमात्मा की अपनी शक्ति से प्रकट हुआ है, अतः स्वतः प्रमाण है। उसमें कोई त्रुटि नहीं। वेद अनित्य व मनुष्यकृत नहीं है, क्योंकि उनका कर्ता कोई पुरुष नहीं है। मुक्त तथा अमुक्त किसी में भी वेद के रचने की शक्ति नहीं है। सांख्यदर्शन में महर्षि कपिल ने प्रकृति को प्रधान माना है। अतः दर्शन में प्रमाणित किया गया है कि तत्त्वों का मेल न होने से कार्य नहीं बन सकता।

वेद और सांख्य एक तीसरी अवस्था को और मानते हैं। जिसे वह कारण अवस्था कहता है। जिसमें समस्त पदार्थ ऊर्जा रूप हो जाता है। इसे कारण अवस्था को सांख्य प्रलय-अवस्था कहता है। उस समय सम्पूर्ण ऊर्जा गतिहीन निष्क्रिय सुप्त पड़ी होती है। अतः कहा है कि इंद्र सर्व का स्वामी इषा परमात्मा है। प्रलय में यह गतिहीन निष्क्रिय ऊर्जा अर्थात् स्थितिज्ञ ऊर्जा परमात्मा के आश्रय में सुप्त पड़ी रहती है। सांख्य में कहा गया है कि आपः, महत्तत्त्व तथा अहंकार की प्रकृति पुत्र होने से जड़ है। तीनों में सत् रजस् तमस् गुण विद्यमान होते हैं।

**६. वेदान्तदर्शन**-उपनिषदों को समूचे तौर पर वेदान्त कहा जाता है। वेदान्तदर्शन शास्त्र के कर्ता महर्षि व्यास जी हैं। इन्होंने ब्रह्म को कारण बताकर जगत् को कार्य कहा है और कार्य, कारण इन दोनों पदार्थों की जांच की है। मुनि व्यासजी ने पहले सृष्टि का वर्णन किया है। अनेक प्रकार के प्रलय वर्णन किये गये हैं, अर्थात् वैशेषिक में अप्रमेय मण्डल तक, गौतम मुनि ने परमाणुओं तक और सांख्यकर्ता ने प्रकृति तक वर्णन किए हैं। परन्तु वेदान्त में महाप्रलय का वर्णन किया है। इस महाप्रलय में परमात्मा और उसकी सामर्थ्य ही स्थित रहती है। इस प्रकार दूरदृष्टि बुद्धि से देखा जाये तो छहों शास्त्रों में अपनी-अपनी रीति का वर्णन किया गया है जिससे मानव समाज छः गुणों की शिक्षा ग्रहण करता है। बिना सिखाये तो मनुष्यमात्र कुछ भी नहीं सीख सकता। महर्षि व्यास जी ने सृष्टि उत्पत्ति में ब्रह्म को माना है और अपने दर्शन में कहा गया है कि बनाने वाला न बनाये तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न हो न सके। इस प्रकार सृष्टि छः कारणों से बनती है। इन छः कारणों की व्याख्या एक-एक शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं है। विरोध उसे कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्ध वाद होवे।

इस प्रकार छः दर्शनों के कर्ता सभी महर्षि एक स्वर से ही उनकी महिमा एवं उनके रहस्य के विषय में मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते आये हैं। उनके सब दर्शन वेदों के आधार पर ही लिखे गये हैं। उनमें अनेक विषयों के अतिरिक्त पृथक्-पृथक् रूप से ईश्वर, जीव, प्रकृति के सम्बन्ध में तथा सृष्टि उत्पत्ति के सम्बन्ध में विशदरूप से लिखा गया है। छह शास्त्रों (षड्दर्शन) के रचयिता सब ऋषि-मुनियों ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान एवं नित्य स्वीकार किया है।

# ईश्वर के कुछ गौणिक नामों की व्याख्या

☐ इन्द्रजित्‌देव, चूना भट्ठियां, पुरानी सब्जीमण्डी मार्ग, यमुनानगर ( हरयाणा )

**१. निराकार** अर्थात् आकाररहित। ईश्वर आकाररहित होकर ही सर्वशक्तिमान् व सर्वव्यापक हो सकता है। जो साकार होगा, वह प्रकृति व प्रकृति से बने पदार्थों के अधीन (आधारित) होगा तो वह सर्वशक्तिमान् न रहेगा। सर्वशक्तिमान् का अर्थ ही है जो अपने कार्य स्वयं बिना किसी की सहायता के करे।

यह संसार अत्यन्त विस्तृत, विचित्र व विविध प्रकार का है। इसका रचनाकार, धर्त्ता व संहर्ता ईश्वर यदि साकार होता तो सीमित ही होता। सीमित आकारवाला असीमित संसार का निर्माता व संचालक नहीं हो सकता।

साकार ईश्वर सीमित ही होता। सीमित होकर कोई भी सर्वज्ञ नहीं हो सकता। सर्वज्ञ हुए बिना सब जीवों का न्यायकारी, कर्मफलदाता भी नहीं हो सकता। अनादि, अनन्त तथा अनन्मा भी न रहेगा। उसका रचनाकार कोई अन्य मानना होगा।

यजुर्वेद का मन्त्र (४०-१८) स्पष्ट घोषणा करता है-

**स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं.....।**

अर्थात् वह ईश्वर सबमें व्यापक है, शीघ्रकारी व अत्यन्त बलवान् है, शुद्ध सर्वज्ञ है वह अकाय है अर्थात् वह कभी शरीर धारण नहीं करता, जन्म नहीं लेता। उसमें छिद्र नहीं होता, नस-नाड़ी के बन्धन में वह नहीं आता।

**२. अनादि** महर्षि दयानन्द ने 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में अनादि पदार्थ की परिभाषा दी है जो कभी न उत्पन्न हुआ हो, जिसका कारण भी कोई न हो अर्थात् जो सदा से स्वयं सिद्ध हो, वह 'अनादि' कहाता है। हम यहां केवल ईश्वर के अनादित्व पर विचार करेंगे। वह ईश्वर अनादि अर्थात् उसका कभी आरम्भ नहीं हुआ, वह सदैव से है। वह कभी उत्पन्न नहीं हुआ। यदि वह उत्पन्न होगा तो उसकी मृत्यु भी होगी। यदि उसका आदि होगा तो उसका अन्त भी होगा अर्थात् वह अनन्त नहीं होगा। जो अनादि व अनन्त होगा, वही नित्य होगा। जो नित्य होगा, वह अपनी सत्ता हेतु उपादान, निमित्त व साधारण कारण की अपेक्षा नहीं रखेगा। जो बनता है, वह उपादान अर्थात् किसी पदार्थ से बनाया जाता है, जैसे घड़ा मिट्टी से बनता है, उसके बिना नहीं बनता। जो बनता है, जिसका निर्माण कुम्हार के बिना नहीं होता। स्वर्णकार के बिना आभूषण नहीं बनते। जो आरंभ होता है, उसका साधारण कारण भी होना ही चाहिए अर्थात् बनाने के यन्त्रादि भी होने चाहिएं, जिनकी सहायता से बनाया जाए जेसे घड़ा बनाने के लिए पानी, चाकादि व आभूषण बनाने के लिये पानी, आग, वृशादि।

ईश्वर को यदि अनादि न मानेंगे तो उपरोक्त तीनों कारण की खोज करनी होगी जो हम नहीं कर पायेंगे। संसार के जितने भी पदार्थ हैं। अतः वे अनादि नहीं हो सकते।

'वैशेषिक दर्शन' में महर्षि कणाद ने कहा है-**सदकारणवन्नित्यम्**। ४।१।१ अर्थात् नित्य वस्तु अपनी सत्ता के लिए किसी कारण की अपेक्षा नहीं रखती।

**३. सर्वशक्तिमान्**-अपने सामर्थ्य से ही जो अपने सभी करने योग्य कार्य करले, वह सर्वशक्तिमान् कहाता है। यह विशेषता केवल परमेश्वर में ही है, किसी जीव व प्रकृति में नहीं है। प्रकृति का काम सृष्टि बनाना है परन्तु वह स्वयं सृष्टिरूप में परिवर्तित नहीं हो सकती है। उसको सृष्टिरूप में परमेश्वर ही परिवर्तित करते हैं अर्थात् प्रकृति के ३ गुण सत् रज व तम के यथोचित प्रयोग से सृष्टि (=संसार, जगत् या ब्रह्माण्ड) बना देते हैं। प्रकृति स्वयं जड़ ही है। वह तो कोई भी क्रिया स्वयं नहीं करती। जीव भी सर्वशक्तिमान् नहीं हो सकता, भले ही वह जड़ न होकर चेतन है। जीव को जन्म लेने के लिए माता-पिता की आवश्यकता है। देखने, सुनने, चलने, बोलने, सोचने आदि के लिए शरीर व इसके विभिन्न अवयव अपेक्षित है जो वह स्वयं निर्मित नहीं कर सकता।

इसके विपरीत परमेश्वर अपने पांचों कार्य स्वयं करता है तथा इनके करने हेतु वह किसी अन्य की सहायता नहीं लेता, सहायता लेवे की उसे आवश्यकता ही नहीं है। ये पांचों कार्य निम्नलिखित हैं-

१. सृष्टि का निर्माण करना। २. सृष्टि निर्माण करके इसका सुव्यवस्थित संचालन करना। ३. निश्चित अवधि के बाद सृष्टि का संहार करना। ४. जीवों को उनके पूर्वकृत कर्मों के अनुसार विभिन्न योनियों में जन्म देना। ५. सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य जाति को वेदों का ज्ञान देना।

ईश्वर द्वारा उपरोक्त प्रथम से तृतीय कार्यों के करने का शब्द-प्रमाण यह है-

**जन्माद्यस्य यतः**-वेदान्तदर्शन १-१-२ अर्थात् जिससे इस जगत् का जन्म, स्थिति और प्रलय होता है, वही ब्रह्म जानने योग्य है।

ईश्वर के उपरोक्त चतुर्थ कार्य ईश्वर द्वारा करने का शब्द प्रमाण यह है-

**ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात्**-न्यायदर्शन ४-१-१९। अर्थात् पूर्वजन्म के गार्य स्वयं ही फलरूपी शरीर को उत्पन्न नहीं करते किन्तु कार्यों (कर्मों) के अनुसार ईश्वर उनका फल देता है।

ईश्वर के उपरोक्त पांचवें कार्य में वैदिक प्रमाण यह है-

**स एष पूर्वाषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्**-योन्द० १-२६। अर्थात् सृष्टि के आदि में ही परमेश्वर सत्य धर्मप्रतिपादक, सकल विद्यायुक्त होने से वेदों का उपदेश करता है, वह अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा तथा ब्रह्मादि गुरुओं का भी गुरु है। उसका नाश कभी नहीं होता, वह काल की सीमा से परे है।

**४. पवित्र**-वह ईश्वर सदा शुद्ध रहता है। वह कभी भी अपवित्र व अशुद्ध नहीं होता। अपवित्रता मुख्यतः तीन प्रकार की होती है।

(क) ज्ञान की पवित्रता। यह दोष ईश्वर में इसलिए नहीं आता क्योंकि वह सर्वज्ञ, संशयरहित, सम्पूर्ण, अनन्त व अखण्डित है। इसके विपरीत जीव अल्पज्ञ, संशययुक्त, अपूर्ण होता है। जीव में अपवित्रता आती है, ईश्वर में नहीं।

(ख) गलना-सड़ना, मुड़ना-तुड़ना, मल, दुर्गन्धादि की अपवित्रता भौतिक वस्तुओं में होती है परन्तु ईश्वर में इस प्रकार की अपवित्रता भी नहीं है।

(ग) कर्म की अपवित्रता जीव में पाई जाती है। जीव ज्ञान और विद्या की कमी के कारण अशुद्ध व अपवित्र कार्य करता है परन्तु ईश्वर में ऐसी अपवित्रता और अशुद्ध का भी प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

ईश्वर के शुद्ध-पवित्र होने का वैदिक प्रमाण यजुर्वेद के ४०-८ मन्त्र में उपलब्ध है-**स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।**

**५. अजर**-वह ईश्वर कभी जरा अर्थात् वृद्धावस्था को प्राप्त नहीं होता। यह वृद्ध होना अर्थात् बूढ़ा होना शरीर का धर्म है। जीव भी कभी बूढ़ा नहीं होता क्योंकि बाल्य, युवा व वृद्धावस्था-ये तीनों अवस्थाएं न जीव की हैं और न ही ईश्वर की होती हैं क्योंकि ये दोनों शरीरधारी नहीं हैं। जो निराकार सूक्ष्म होगा, वह शरीरधारी नहीं होगा। वह तो अजर है, बुढ़ापे से दूर है। इसमें वैदिक प्रमाण यह है-

**अकामो धीरो........आत्मानं धीरमजरं युवानम्।** -अथर्ववेद १०-८-४४

अर्थात् वह ईश्वर सदैव अजर है तथा सदैव युवा ही रहता है। (बिना शरीर धारण किये बुढ़ापे का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता)।

**६. अमर**-वह ईश्वर अमर है अर्थात् वह कभी मरता नहीं। मरना उसका इसके विपरीत न मरने का, अमर रहने का गुण है। वैज्ञानिक व दार्शनिक नियम यह है कि जो संघात पदार्थ ही टूटते-फूटते हैं, पृथक्-पृथक् होते हैं। यह गुण भौतिक द्रव्यों में होता है। वे टूट फूटकर अपने कारण रूप में लीन हो जाते हैं। शरीर भी एक संघात पदार्थ अर्थात् विभिन्न द्रव्यों का सम्मिश्रण है। वह टूट सकता है, टूटता भी है। परन्तु जीव व ईश्वर तो संघात पदार्थ नहीं हैं। अतः ये टूटते-फूटते नहीं हैं। हां, सृजित वस्तु टूटती-फूटती हैं परन्तु वह भी सर्वथा नष्ट नहीं होती-केवल कारण रूप में परिवर्तित होती है। अतः प्रकृति भी मरती नहीं है।

जीवन का तात्पर्य यह है कि शरीर का जीव से संयोग होना व मृत्युमात्र जीव का शरीर से वियुक्त होना न कि किसी का सर्वथा नष्ट होना। ईश्वर का किसी शरीर को धारण करने का प्रश्न ही नहीं है तो उसके वियोग होने (=मरने) का भी प्रश्न नहीं है। अतः वह अमर है। इसमें भी वैदिक प्रमाण रूप में वही मन्त्र उल्लिखित है जो क्रमसंख्या ५ में वर्णित है-

**अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भूः.....।** अ० १०-८-४४। अर्थात् वह अमृत है (अ+मृत)।

**७. गणपति और गणेश**-वह ईश सब समूह का रक्षक और ईश्वर है। ये पद गण तथा पति अथवा गण तथा ईश-इन दो शब्दों से मिलकर बने हैं। ये दोनों परमेश्वर वाचक ही हैं। आज इनका पौराणिक जगत् में विघ्ननाशक के अर्थ में प्रयोग होता है तथा शिव व पार्वती के पुत्र गणेश के लिए रूढ़ि अर्थ में, व्यक्तिवाचक ही सीमित कर दिया गया है परन्तु परमेश्वर से बड़ा विघ्ननाशक अन्य कौन हो सकता है? महर्षि दयानन्द महाराज ने इसका अर्थ किया है-''गण के आगे ईश शब्द रखने से गणेश शब्द सिद्ध होता है। जो सब गणों नाम संघातों का अर्थात् सब जगतों का ईश स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है।'' स०प्र० प्रथमसमुल्लास।

**गणानां त्वा गणपतिं हवामहे......।** य०वेद २३-१९।

**८. सरस्वती**-वह परमेश्वर ज्ञान-विज्ञान का देवता है अर्थात् सब ज्ञान-विज्ञान का दाता वही परमेश्वर है। आज विकासवाद के समर्थक ज्ञान-विज्ञान को मनुष्यकृत मानते हैं जो स्वाभाविक न्याय व तथ्यों के सर्वथा विपरीत है। धर्म, ज्ञान, विज्ञान, कला, शिल्प, संगीत का मनुष्यों के हृदयों में ईश्वर के अतिरिक्त भला अन्य कौन हो सकता है? कोई देहधारी गुरु, वैज्ञानिक, आचार्य व अध्यापक बिना किसी न किसी से सीखे विद्वान् नहीं बन सकता। संसार के प्रथम ऋषियों का भी गुरु या उद्गम कोई होना ही चाहिए, वह परमपिता परमेश्वर ही हो सकता है। निराकार रहते हुए वह परमेश्वर ऋषियों के आत्मा में ज्ञान-विज्ञान स्थापित कर देता है। वैदिक प्रमाण ये हैं-

**स एष पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्।** यो० १-२६।

**सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।**

**सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वाचं दात्॥** ऋ० १०-१७-४।

## हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

**आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उन आर्यसमाजों से निवेदन है कि जिनका सम्बन्ध कम से कम गत दो वर्षों से सभा के साथ स्वीकृत है। जिन आर्यसमाजों ने वर्ष २००४ में अपने प्रतिनिधि फार्म सभा को किसी कारण से नहीं भेजे थे। वे अपने प्रतिनिधि आर्यसमाज तथा सभा के नियमानुसार चुनकर यथाशीघ्र स्वामी इन्द्रवेश सभाप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक ( तदर्थ समिति ) के नाम गत दो वर्ष का प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का शुल्क भेज देवें। जिनके प्रतिनिधि २००४ में स्वीकृत है, वे वर्ष २००५ का शुल्क भेजने की कृपा करें। -जयसिंह ठेकेदार सभामन्त्री**

# महर्षि एवं शाहपुरा

❑ सोहनलाल शारदा, शाहपुरा भीलवाड़ा (राजस्थान)

मैं अनुमान करता हूं कि गत दिवस आपका पत्र शाहपुराधीशों को दिखाया। उससे अनुमान होता है कि वे जोधपुर को आने की सम्मति कठिनता से देवेंगे। सम्मति शीघ्र प्राप्ति हेतु उपाय यह है कि जब मेरा दूसरा पत्र पुनः आपके पास आवे तभी आप किसी अन्य योग्य पुरुष को यहां शाहपुरा भेज देवें।

वह जन योग्यता से कहेगा और पश्चात् मैं भी कहूं तो आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि ये शाहपुराधीश मान जावेंगे। इसलिए भी कि ये महाराजाधिराज बड़े बुद्धिमान् हैं।

इसमें आप बीस दिवस का विलम्ब समझें। इसी समय मेरा पत्र वहां आता और वहां से किसी योग्य पुरुष का यहां शाहपुरा आना मेरी सम्मति है। अधिक विलम्ब होना मैं उचित नहीं समझता।

(हस्ताक्षर-दयानन्द सरस्वती स्थान शाहपुरा मेवाड़) (पत्र विज्ञापन भाग दूसरा पृष्ठसंख्या ६९३)

यह पत्रांश राव राजा तेजसिंह जी जोधपुर को लिखे गये पत्र के हैं। इसके पश्चात् ३१ मई सन् १८८३ को जोधपुर पहुंचने के पश्चात् श्री मुंशी समर्थदान जी व्यवस्थापक वैदिक यंत्रालय काशी को लिखते हैं कि पत्रांश-

श्रीयुत महाराजाधिराज नाहरसिंह जी वर्मा शाहपुरा ने तीस रुपये माहवारी सदा के लिये यानि ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी शनिश्चर वार से ही वैदिक धर्म प्रचारार्थ उपदेश के लिये देना स्वीकार कर लिया है एवं दो सौ रुपये चितौड़ी (मेवाड़ी मुद्रा) यानि डेढ़ सौ कल्दार (भारतीय मुद्रा) होते हैं। वेदभाष्य के सहायतार्थ प्रदान किये हैं।

इस राजाधिराज को मनुस्मृति के अष्टम सप्तम व नवमाध्याय जो कि राजधर्म विषयक है पढ़ाकर योगशास्त्र वैशेषिक और न्यायशास्त्र के मुख्य विषय भी पढ़ा चुके हैं। परन्तु न्यायशास्त्र कुछ रह गया जोधपुर शीघ्र जाने से।

इस समाचार को वेदभाष्य के टाइटल पेज पर छाप देना।

(पुस्तक वही, पृष्ठ ७१३)

महर्षि ने पूरे अढ़ाई मास पर्यन्त शाहपुरा में प्रवास कर नित्य नियमित निरन्तर यथासमय इस शाहपुरेश को राजनीति व धर्मनीति पढ़ाई थी।

(जोधपुर प्रस्थान पूर्व मेवाड़ाधिपति को लिखा पत्रांश)

मैंने विचारा है कि जब उदयपुर से पत्र का प्रत्युत्तर आ जावेगा तभी जोधपुर को जाने के लिये नियत समय की सूचना तुम्हें लिख दी जावेगी।

आगे पढ़ाई विषयक वर्णन करते हैं कि-पांच-छह दिनों में मनु का नौवां अध्याय पूरा हो जावेगा और आठ दिनों में अग्निहोत्र विधि भी हो जावेगा। यहां सदा के लिये दो स्थानों पर अग्निहोत्र नित्य हुआ करेंगे। यानि एक राजमहल में और दूसरा पुण्डरीक छत्रदत्त के यहां।

(पुस्तक वही, पृष्ठ ६९२)

विदित हो कि ये पंडित पुण्डरीक छत्रदत्त जी ही प्रथम में आर्यसमाज शाहपुरा के प्रधान मनोनीत हुये थे। यहां आर्यसमाज का कार्य महर्षि समय से ही प्रारम्भ हो चुका था।

शाहपुरा से ही प्रारम्भ से ही सर्व महर्षिकृत ग्रन्थ पठन-पाठन हेतु सप्रेम भेंट से ही दिये जा रहे हैं। अतः वर्तमान में भी सर्व महर्षिकृत यानि ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश, पञ्चमहायज्ञ-विधि, संस्कारविधि से संकलित कर नित्य सन्ध्या अग्निहोत्र विधि एवं विशेष यज्ञ विधि तैयार की गई है। ये विधि पुस्तकें सप्रेम भेंट डाकव्यय माफ से ही भेजी जाती हैं जो पढ़ना चाहे तो यहां आवास भोजन भी भेंटस्वरूप ही है।

इस परम्परा का निर्वाहन स्वयं तत्कालीन नरेश व पुनः उनके पुत्र व पौत्र ने भी बराबर निभाया। तथा सदा सर्वदा चलती रहे यह प्रथा अतः अपने पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार समय एक ग्राम की आमदनी ही भेंट में आर्यसमाज को प्रदान कर दी।

इसका मुआवजा वर्तमान में भी बराबर सभा को प्राप्त हो रहा है। अतः इस आर्य वैदिक राजपरिवार का आदेश अभी तक यह ही रहा है कि-महर्षिकृत ग्रन्थ पठन-पाठन हेतु सप्रेम भेंट से ही दिये जायं। मूल्य से कभी भी नहीं।

महर्षि के आदेशानुसार ही उनके एकमात्र राजा शिष्य सर नाहरसिंह वर्मा ने अपने सर्वराजकीय विद्यालयों में धर्मशिक्षा महर्षि से ही अनिवार्य कर दी गई थी। जो सन् १९५० पर्यन्त बराबर चलती रही इसे तभी स्थगित किया गया जब शिक्षा का वृहद् राजस्थानान्तर्गत में समावेश हो गया तभी।

यहां प्रथम कक्षा में नियम दश संक्षिप्त व्याख्या सहित कण्ठस्थ कराये जाते थे। द्वितीय कक्षा में सन्ध्या के मंत्र व विधिभाग आसन आचमन वगैरा की शिक्षा।

तीसरी कक्षा में बृहद् सामान्य प्रकरणस्थ यज्ञविधि चतुर्थ कक्षा में आर्योद्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु पोपलीला की पुस्तक जिसे मुरादाबादवासी लाला जगन्नाथ की बनाई हुई है। पूरी कण्ठस्थ कराई जाती थी आगे जीवन चरित्र व सत्यार्थप्रकाश पढ़ाया जाता था।

इस प्रकार महर्षिकृत ग्रन्थानुसार ही पठन-पाठन का फल यह रहा कि शाहपुरा से जो भी इस विद्यालय से पढ़कर निकला वह आर्य वैदिकधर्मी ही बनकर जहां भी गया आर्यसमाज का कार्य ही किया और वर्तमान में भी कर रहे हैं।

महर्षि के आदेश पर ही इस शाहपुरेश ने गोरक्षा निमित्त सर्वप्रथम चालीस हजार के हस्ताक्षरी पत्र बम्बई प्रवास समय भेजा था। अतः महर्षि प्रत्युत्तर में लिखते हैं कि- गोकरुणायुक्त रजिस्ट्री पत्र प्राप्त हुआ। देखकर अति आनन्द हुआ। धन्य है महाशयों का कि जिनका तन-मन-धन परोपकारार्थ ही है। आपके सदृश आप ही है। महाशयों के सामने अधिक लिखना उचित नहीं।

(पत्र विज्ञापन भाग दूसरा पृष्ठ ५८३)

इस प्रकार यह नगर जो राजस्था-नान्तर्गत मध्य में स्थित है। महर्षि का विशेषरूप से पठन-पाठन का केन्द्र रहा और आगे भी रहता रहे अतः महर्षि ने राष्ट्रोत्थान निमित्त शाहपुरा में ही एक क्षात्रशाला का निर्माण की योजना बनाकर कि जहां शस्त्र और शास्त्र दोनों की ही शिक्षा की जाय पांच बार शाहपुरेश को लिखा कि-

इस निमित्त क्या हो रहा है?

क्षात्रशाला बनेगी तभी अत्यानन्द होगा। लेकिन जब शाहपुरेश ने लिखा कि यह क्षात्रशाखा का उद्योग निष्फल रहा। तभी महर्षि ने लम्बी आह भरकर लिखा कि-

यह महाशोक की बात हुई।

(पत्र विज्ञापन भाग-द्वितीय, पृष्ठ ७७१)

अतः इसे अक्षुण्य बनाये हेतु ही यहां सन्ध्या यज्ञ की विधिविधान लाभ पढ़ाया जाता है उसके साथ ही साथ छठे समुल्लासान्तर्गत जो पाठ्यक्रम महर्षिकृत है उस पर भी अति संक्षेप से जानकारी प्रस्तुत की जाती है। इससे ही हमारी वर्तमान सर्व समस्यायें हल होना संभव है।

# आर्यवीर चरित्र-निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यवीर दल भिवानी के तत्त्वावधान में ग्राम धनासरी के राजकीय उच्च विद्यालय के प्रांगण में आर्यवीर चरित्र-निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ४ से १० जुलाई, २००५ तक किया गया। शिविर में १५५ आर्यवीरों ने भाग लिया जिनको सार्वदेशिक आर्यवीर दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक चांदसिंह आर्य और नरेश आर्य झोझूकलां ने प्रशिक्षण दिया। शिविर का उद्घाटन सुनील शर्मा चेयरमैन पंचायत समिति बाढ़ड़ा द्वारा किया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि यज्ञप्रेमी जगदीश आर्य बाढ़ड़ा तथा विशिष्ट अतिथि डॉ० महीपाल जी जेवली थे।

शिविर में प्रतिदिन सुबह-शाम आसन-प्राणायाम, जूडो-कराटे, दण्ड-बैठक, लाठी-भाला, जम्बल, सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार, सर्वाङ्गसुन्दर व्यायाम के साथ-साथ चरित्र-निर्माण हेतु विभिन्न विषयों पर व्याख्यान होते रहे जिनसे प्रभावित होकर आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत धारण करके आजीवन शराब, धूम्रपान, अण्डे-मांस आदि दुर्व्यसनों से दूर रहकर महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। प्रतिदिन पारिवारिक यज्ञ-सत्संग का कार्यक्रम चलता रहा। महाशय आजादसिंह जी छिल्लर द्वारा ९ जुलाई को रात्रि में अत्यन्त प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसका सभी ग्रामवासियों एवं आर्यवीरों ने लाभ उठाया। शिविर का समापन १० जुलाई को श्री धर्मवीरसिंह विधायक हल्का बाढ़ड़ा द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री धर्मवीर ने आर्यवीरों के व्यायाम प्रदर्शन को देखकर अत्यन्त खुश होकर दस हजार रुपये का सहयोग देते हुए कहा कि आर्यवीर दल द्वारा प्रत्येक ग्राम में ऐसे शिविरों का आयोजन होना चाहिए। मैं इस प्रकार के कार्यक्रमों में तन-मन-धन से सहयोग करूंगा। समारोह की अध्यक्षता श्री उमेद शर्मा संचालक आर्यवीर दल हरयाणा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे श्री विमलेश आर्य मण्डलपति भिवानी ने भी आर्यवीरों का सहयोग किया। श्री उमेद शर्मा ने सभी आर्यवीरों को नियमित शाखा में आने की प्रेरणा दी।

मंच का संचालन श्री चांदसिंह आर्य ने किया। सभी शिविरार्थियों को महर्षि का अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, आदर्श दिनचर्या एवं गीताञ्जलि, समाज के शत्रु दुर्व्यसन, व्यवहारभानु, ब्रह्मचर्यामृत और धधकती अन्तर्ज्वाला नामक पुस्तकें भेंट की गईं। इस अवसर पर प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु द्वारा लिखित पुस्तक 'यह उलझन किस विधि सुलझाऊं' का विमोचन चांदसिंह आर्य द्वारा किया गया। धर्मपाल शास्त्री धीर, बलवान आर्य, हवासिंह आर्य, विमलेख आर्य, सुभाष आर्य, रामफल आर्य आदि ने भी शिविरार्थियों को सम्बोधित किया। प्राध्यापक ईश्वरसिंह जी ने उपस्थित विशाल जनसमूह व अतिथियों का धन्यवाद किया। युवा सरपंच बलजीत आर्य, जयकरण, सुरेश, कृष्ण, कुलदीप, महेंद्र, विक्रम, सन्दीप, सतेन्द्र आदि का विशेष सहयोग रहा।

**सावधान!**

धूम्रपान और मद्यपान भी शत्रु हैं महान्।
इनके पीने से परेशान है कुल जहान।
इनको छोड़ो यदि चाहते हो कल्याण।
आपको हर जगह मिलेगा मान-सम्मान।
तुम्हें देखकर बच्चे बन रहे हैं शैतान।
बच्चों को बचाओ खुद बनकर नेक इंसान।

-देवराज आर्यमित्र, हरिनगर, नई दिल्ली

# मिथ्या इतिहास का बोझ

**विदेशी लेखकों के पूर्वाग्रह आधारित मिथ्या इतिहास के पुनर्लेखन पर बल दे रहे हैं डा० देवर्षि शर्मा**

भारत में मौजूदा समय मान्य इतिहास का लेखन मुख्यतः विदेशी इतिहास लेखकों पर आधारित है। दुर्भाग्यवश भारतीय लेखक भी यूरोपीय लेखकों द्वारा प्रदत्त लीक से हटकर नहीं सोच सके। उपनिवेशवादी अंग्रेजों का चिंतन दुराग्रही था, क्योंकि वह उनके हितों के अनुकूल था। उन्हें साबित करना था कि भारत का इतिहास आक्रमणों की श्रृंखला का इतिहास है। चूंकि गोरी जातियां सभ्य न होकर आक्रमणकारी की संज्ञा देने में अपना हित माना। उनका मानना था कि सिंधु घाटी की हड़प्पा सभ्यता पर पहला आक्रमण आर्यों द्वारा किया गया और आर्य भारत के मूल निवासी नहीं।

भारत पर ग्रीक, हूण, शक, अरब, तुर्की, पुर्तगाली, मुगल तथा ब्रिटिश आक्रमणों की एक श्रृंखला देखी जा सकती है। वे यहां तक कहते हैं कि द्रविड़ भी किसी समय बाहर से आकर यहां बस गए और उन्होंने यहां के मूल निवासियों पर आक्रमण कर अपना राज स्थापित किया। मैक्समूलर से लेकर मार्क्सवादी अवधारणा से ग्रस्त रोमिला थापर तक यही दुराग्रही इतिहास दोहराया जाता रहा और हमारे देशवासी तथा हमारी नई पीढ़ी इसे ही पढ़ने और मानने के लिए बाध्य है। जवाहरलाल नेहरू की 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' भी यही बोलती है। ज्ञातव्य है कि कभी अमेरिका जैसा विशालकाय और शक्तिशाली देश भी अपना स्वयं का भूला, बनावटी एवं यूरोपीय अवधारणा से ग्रस्त इतिहास पढ़ता था। अमेरिकी बच्चे पढ़ते थे कि अत्यंत विकसित यूरोपीयों द्वारा अमेरिका के मूल निवासियों जिन्हें रेड इंडियंस के नाम से जाना जाता है, का नृशंस और व्यापक नरसंहार कर उनकी प्राचीन सभ्यता को नष्ट किया गया। तथाकथित सभ्य और विकसित यूरोपीय सभ्यता का अमेरिका में आगमन और प्रसार कहीं से भी शालीन और शांतिपूर्ण नहीं था। यह भी विश्व को खुले तौर पर जानना चाहिए कि यूरोप के गोरे अफ्रीका के काले निवासियों के झुंडों पर जाल फेंक कर उन्हें बंधक बना लिया करते थे और उन बंधकों को पानी के जहाजों में भरकर अमेरिका के विशाल महाद्वीप पर छोड़ दिया जाता था। अब अमेरिका में यह भी पढ़ने को मिल जाता है कि गोरी जातियां चेचक जैसी मारक बीमारी से ग्रस्त होने पर अपने प्रयोग किए हुए कंबल आदि को रेड इंडियंस पर डाल दिया करती थीं ताकि मूल निवासी रेड इंडियंस का इस मारक बीमारी से स्वतः सफाया हो जाए। ताज्जुब की बात है कि अधिकांशतः यूरोपीय गोरों के वंशजों का देश अमेरिकी इतिहास का पुनर्वाचन कर उसे सही-सही रूप में अपने बच्चों और विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत कर सकता है तो फिर हमारे देशवासियों के समक्ष सही-सही इतिहास क्यों नहीं प्रस्तुत किया जा सकता?

नेहरूवादी विचारधारा के अनुयायियों, तथाकथित सेकुलरवादियों और वामपंथी विचारकों को साहस का परिचय देना होगा और इतिहास के साथ राजनीति करने से बचना होगा। अन्यथा भावी पीढ़ियां उन्हें कोसने से चूकेंगी नहीं। आर्यों द्वारा आक्रमण कर भारत में प्रवेश करने की अवधारण पूर्णतः आधारहीन प्रमाणित हो चुकी है। न तो पुरातात्त्विक दृष्टि से और न ही साहित्य या भाषा की दृष्टि से इसे सही ठहराया जा सका है। मुख्यतः चार बिन्दुओं पर इसे नकारा गया है। **पहला,** हड़प्पा सभ्यता कुछ और न होकर वैदिक ख्याति की सरस्वती नदी के किनारे की सभ्यता है। सिंधु घाटी पर मात्र तीन दर्जन हड़प्पा अवशेष पाए गए हैं, जबकि सरस्वती नदी के तट पर ५०० हड़प्पा अवशेष पाए गए हैं। हड़प्पा या सिन्ध की सभ्यता का विनाश आर्यों के कथित झूठे आक्रमणों का परिणाम न होकर १९०० ईसा पूर्व के आसपास सरस्वती नदी का पूर्णतः विलीन हो जाना था। कुछ समर्पित इतिहासवेत्ताओं ने इसे हड़प्पन सभ्यता के स्थान पर सरस्वती घाटी की सभ्यता का नाम दिया है। **दूसरा,** प्राचीन भारत में कहीं भी आर्यों के आक्रमण के फलस्वरूप नगरों के विनाश के अवशेष या व्यापक नरसंहार के प्रमाण नहीं प्राप्त हुए हैं। मोहनजोदड़ों का व्हीलर द्वारा वर्णित नरसंहार पूर्णतः कपोलकल्पित साबित हुआ। सरस्वती नदी के सूखने के कारण पर्यावरण संबंधी कारणों से ये स्थान खाली किए गए प्रमाणित हुए हैं। **तीसरा,** आर्यों द्वारा बाहर से लाए गए विशेष पशु आदि तथाकथित वस्तुएं या चिह्न इन स्थानों पर हड़प्पन समय से पहले से विद्यमान थे। स्थानीय प्रचलित वस्तुओं या रीति-रिवाजों से भिन्न किसी अन्य आर्यन परंपरा का प्रमाण नहीं मिलता है और **चौथा,** मानव इतिहास के सर्वाधिक प्राचीन एवं विशाल उपलब्ध वैदिक साहित्य अर्थात् वेदों में हड़प्पन सभ्यता का स्पष्टतः चित्रण मिलता है।

वैदिक साहित्य को पहले किसी अन्य सभ्यता से न जोड़कर हड़प्पा के विनाश से जोड़ा जाता था। ऐसे उत्कृष्ट साहित्य का सृजन क्या किसी जंगली, आक्रमणकारी अथवा असभ्य आदिवासियों द्वारा माना जाना उचित कहा जा सकता है? यह मूर्खतापूर्ण पूर्वाग्रह नहीं तो और क्या है? क्या मध्य एशिया के किसी स्थान पर जहां से आर्यों का आना माना जाता है, आज संस्कृत भाषा या उस जैसे साहित्य का कुछ भी अंश पाया जा सकता है? जाहिर है कि भारत पर आर्यों के आक्रमण की अवधारणा उपनिवेशवादी अंग्रेजों द्वारा आर्यों को अपने जैसा सिद्ध करने के षड्यंत्र के अलावा और कुछ नहीं है। उपर्युक्त चार बिंदुओं के आधार पर भारत तथा पश्चिम के अनेक विद्वानों एवं इतिहासकारों ने पुरातात्विक, स्थानीय अवशेषों, भौगोलिक, गणितीय, भाषा एवं साहित्य पर आधारित साक्ष्यों को दृष्टिगत रखकर आर्यों द्वारा आक्रमण की अवधारणा का विश्लेषण किया है। इस विद्वत्-मण्डल में सम्मिलित है-एसआर राव, नवरत्न राजाराम, सुभाष काक, जेम्स शेफर, मार्क केनोयर, एसपी गुप्ता, भगवानसिंह, बीजी सिद्धार्थ, केडीसेठना, केडीअभ्यंकर, पीवी पाठक, श्रीकांत तलगेरी, एस कल्याणरमन, बीबी चक्रवर्ती, जार्ज फुएसिटिन और एन डेविडफ्रल। अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस द्वारा प्रकाशित तथा राबर्ट डब्ल्यूएन रिच द्वारा संपादित पुस्तक 'क्रॉनोलाजीस इन ओल्ड वर्ल्ड आर्केलॉजी' में स्पष्टतः कहा गया है कि अमान्य साबित हो चुकी भारत पर आर्यों द्वारा आक्रमण की अवधारणा से युक्त इतिहास के पुनर्लेखन की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। यह पुस्तक बताती है कि ६५०० ईसा पूर्व से भारत की उल्लेखनीय सभ्यता एवं संस्कृति में एक निरंतरता है जो उनके स्थानीय एवं मौलिक धरातल पर आधारित है। इस संस्कृति में न कहीं टूटन है और न ही किसी बाह्य आर्यन आक्रमण का प्रमाण है।

प्राचीन वैश्विक मानव सभ्यताओं में शुद्ध भारतीय मूल की वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति प्राचीनतम है और उत्कृष्ट भी। आज तक प्राचीन भारत की संस्कृति से संबद्ध एक भी साक्ष्य नहीं मिला है जो आर्यों द्वारा आक्रमण को प्रमाणित करता हो। न तो ऐसे अवशेष हैं, न दफनाने के स्थान, न कृषि संबंधी कार्य, न व्यवहार में लाए आने वाले बर्तन जो भारत पर आर्यों के आक्रमण को प्रमाणित कर सकें। आर्य शब्द जातिवाचक न होकर 'श्रेष्ठता' का द्योतक है, जिसकी जानबूझकर अनदेखी की गई। वैदिक साहित्य वैभिन्नता में एकत्मता की बात करता है-'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' (ऋग्वेद १।६४) अर्थात् एक सत्य विद्वानों द्वारा अनेक प्रकार से प्रतिपादित किया जाता है। ऐसे उत्कृष्ट दर्शन के संदर्भ में आक्रमण और हिंसा की कल्पना मिथ्या नहीं तो और क्या हो सकती है? उचित यहहोगा कि इन सब परिस्थितियों को देखते हुए इतिहास का पुनर्लेखन शीघ्र किया जाए।

**( दैनिक जागरण १०-७-०५ से साभार )**

## आर्यसमाज डोभी का आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज डोभी एवं आर्यवीर दल डोभी की ओर से २० जून से २६ जून, २००५ तक योग एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के संयोजक मानव कल्याण वेदप्रचार संस्थान के अधिकारीगण एवं श्री बलजीतजी आर्य थे। यह शिविर डोभी ग्राम के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में लगाया गया था। इस शिविर में ६० विद्यार्थियों ने ७ दिन तक सन्ध्या, हवन, आसन, प्राणायाम, व्यायाम, जुडो-कराटे, लाठी चलाना और वैदिक सिद्धान्तों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में प्रतिदिन यज्ञ के ब्रह्मा एवं बौद्धिक शिक्षक आचार्य हरपाल, वैदिक प्रवक्ता हिसार थे। इनके अतिरिक्त चौ० महेन्द्रसिंह आर्य, चौ० सांवतराम आर्य, डॉ० नारायणसिंह दहिया, भूतपूर्व सरपंच महेन्द्र आर्य, सूबेसिंह आर्य, सेठ सज्जनकुमार आदि अनेक सज्जनों ने तन-मन-धन से सहयोग किया। शिविर के समापन समारोह में श्री श्रवणकुमार आर्य (आदमपुर) मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे। प्रोफेसर देवदत्त शास्त्री ने मंच का विधिवत् संचालन किया। इस शिविर से गांव डोभी एवं आसपास आर्यसमाज की लहर दौड़ गई है। आर्यवीरों में उत्साह ही उत्साह भर गया। चौ० दलवीरसिंह एवं श्रीमती करुणा शास्त्री ने २००० रुपये का वैदिक साहित्य विद्यार्थियों में वितरित किया।

**-मन्त्री आर्यसमाज डोभी, हिसार**

## वर्षा आयी, वर्षा आयी

**राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर ( उ०प्र० )**

मेघों से घिर गया गगन है,<br>
प्रमुदित जिससे जन-गण-मन है।<br>
प्रकृति मनोहर छटा दिखाती-<br>
मोरों का होता नर्तन है॥<br>
कोयल तथा पपीहे सुमधुर-<br>
ध्वनि करते रहते सुखदायी।<br>
वर्षा आयी, वर्षा आयी॥१॥

कृषकों का दल हर्ष मनाता,<br>
इन्द्रधनुष उल्लास जगाता,<br>
गांव-गांव में उत्साहित जन-<br>
वीर काव्य आल्हा है गाता।<br>
खेत-बाग-वन-मैदानों में-<br>
हीरक हरीतमा है छायी।<br>
वर्षा आयी, वर्षा आयी॥२॥

जल से भरे हुए नद-नाले,<br>
भय पैदा करते घन काले,<br>
उमड़-घुमड़ कर रार मचाते-<br>
रहते वारिद-सुत मतवाले॥<br>
बन्ध तथा प्रतिबन्ध तोड़कर-<br>
नदियां सारी उमड़ायीं।<br>
वर्षा आयी, वर्षा आयी॥३॥

# सदाचार से आर्यत्व

❑ स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती

आर्यों की जीवन मीमांसा का सार तैत्तिरीय उपनि. १/११/१ में बताया है कि **सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद, प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः** इत्यादि और महाभारत १२/२१/११ अनुसार **अद्रोहेणैव भूतानां स धर्मः स सतां मतः**। अर्थात् प्राणिमात्र से द्वेष न करना यह ऐसा धर्म है जिसे सत्पुरुष मानते हैं, सज्जनों का मार्ग ही सदाचार है। सदाचार मन, वचन और कर्म में एकसा रहने का नाम है।

किसी मत मतान्तरों के मानने वालों के शिष्टाचार भले ही भिन्न हों, परन्तु सार्वभौम सदाचार प्रायः एक से ही हैं। जिस प्रकार का व्यवहार अपनी आत्मा के प्रतिकूल पड़ता है, उस प्रकार का प्रतिकूल व्यवहार अन्यों से न करना चाहिये, यह महत्वपूर्ण बात सदाचार में अंतर्भूत है। इसीलिये महाभारत में वेदव्यास जी ने कहा है-

**श्रुयतां धर्म सर्वस्वं, श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।**
**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥**

शिष्टाचार को इंग्लिश में एटीकेट कहते हैं, आर्यों के शिष्टाचार सदाचार सार्वभौम एवं स्वयंपूर्ण हैं। यदि भीतरी सदाचार न हो तो बाहरी शिष्टाचार केवल दिखावा, ढोंग और पाखण्ड होके रहेगा। इसीलिये **रामवत् आचरेत् न रावणवत् या युधिष्ठिरवत् आचरेत् न दुर्योधनवत्।** महाभारत में धर्म के लक्षण बताने में व्यासजी ने वेद, स्मृति के साथ सदाचार को स्थान दिया है।

सदाचार शिक्षा का केवल एक अंगमात्र नहीं है, वह तो शिक्षा का मूल-स्रोत है, या यूं कहिये विद्या की मूल शक्ति है। ऐसा भी माना है कि यह सदाचार शिक्षा का फल नहीं किन्तु उसका मूल है। शिक्षा से ज्ञान और ज्ञान से सदाचार प्राप्त हो सकता है, यह एक प्रकार का अर्धसत्य है या भ्रम है, कारण ज्ञानी सदाचारी होगा ही यह गणित ठीक नहीं। मनुष्य साक्षर होकर भी राक्षस हो सकता है, यह प्रत्यक्ष प्रतीत हो रहा है। ज्ञान रूप शिक्षा में सदाचार का कितना योग है, यह वर्तमान में एक रहस्य बना हुआ है, जो समझना कठिन है। कहा है कि धर्मशून्यता से यह साक्षरता राक्षसता में बदल जाती है। जो आचार धर्म की ओर ले जाने वाले हैं, वे ही आचार सदाचार हैं। शास्त्रों में विद्वत्ता को परमधर्म नहीं कहा है, परन्तु आचार को ही परम धर्म कहा है। सभी जानते हैं-**आचारः परमो धर्मः**। धर्म से जो सदाचार बनते हैं वे सब अवस्था, सर्वदेश तथा सर्वकालों के लिये एक समान सार्वभौम हैं। शील और चरित्र मनुष्य जीवन का एक संगठित विधान है। संकल्प सदाचार का आदि पीठ है। परन्तु वर्तमान शिक्षा संकल्पहीन, व्रतहीन और दिशाहीन है। परिणामतः सदाचार समाज से कोसों दूर भाग रहा है।

महाभारत में यक्ष और युधिष्ठिरजी के प्रश्नोत्तर बहुत प्रसिद्ध हैं। यक्ष ने प्रश्न पूछा- प्रसन्नता क्या वस्तु है? उत्तर में कहा गया - अच्छे आचरण का फल ही प्रसन्नता है, यह है सदाचार की महत्ता। जिसके जीवन में सद् आहार, सद् विचार, सद् आचार और सद् व्यवहार हो, वह ही सदाचारी सज्जन होता है।

सदाचार के कुछ चुनिन्दे उदाहरण इस प्रकार हैं-

१. भरत, कैकेयी एवं सेना के साथ रामचन्द्रजी को अयोध्या वापस लाने के लिये चित्रकूट पहुँच रहे थे, यह देखकर लक्ष्मणजी आग बबूला हुये और कहा कि भरत हमारा पीछा यहां पर भी नहीं छोड़ रहा है किन्तु रामचन्द्रजी ने चित्रकूट पर सर्वप्रथम माता कैकेयी के चरण छूये, भरत को गले से लगाया, इस प्रकार के अनूठे सदाचार से माता कैकेयी को परिताप हुआ। यह पश्चात्ताप की भावना देखकर रामचन्द्रजी बोले- ''माँ! यह सब विधि का विधान था, इसमें आपका कोई दोष नहीं है!'' देखिये कैसा उच्च अनुकरणीय सदाचार है।

२. छत्रपति शिवाजी महाराज का सदाचार जो रूपसुंदरी यौवना कल्याण के सूबेदार की पुत्रवधू शत्रुपक्ष से पकड़ लायी गयी थी - उसे वस्त्राभूषणादि से सम्मानित कर उसके पिता के पास लौटाना इतिहास प्रसिद्ध है। क्या ऐसा सदाचार किसी मुगल बादशाह से अपेक्षित है?

३. अनूप शहर में एक ब्राह्मण ने पान में स्वामी दयानन्द को विष खिला दिया, परिणाम ज्ञात हुआ, स्वामी जी ने वमन से उस विष को शरीर से निकाल फेंका। इस दुराचार की खबर वहां के सय्यद जी तहसीलदार को लगी उसने ब्राह्मण को पकड़ लिया। मन में प्रसन्न हुआ कि अब स्वामीजी उसकी बहुत प्रशंसा कर धन्यवाद देंगे। इस विचार से तहसीलदार ने गिरफ्तार दुष्ट ब्राह्मण को हथकड़ियां लगाकर स्वामीजी के समक्ष उपस्थित किया। तब स्वामीजी ने तहसीलदार को कहा-'मैं संसार को कैद कराने नहीं, परन्तु कैद से छुडाने आया हूँ, इसे त्वरित छोड़ देवें।' दुष्टता पर, दुराचार पर सदाचार से ही विजय प्राप्त होती है। अस्तु!

वाणी का वेग या मनमाना प्रयोग, मन का क्रोधरूपी वेग, जिह्वा के चटोरेपन का वेग, उदर का क्षुधारूपी वेग इसी प्रकार कामवासना का कामाग्नि का वेग इत्यादि समस्त वेगों को जो मनुष्य सह लेता है और सम्यग् संतुलित स्थितप्रज्ञ बना रहता है, वह सदाचारी वीर स्वयं के साथ पृथ्वी पर शासन कर सकता है।

आत्मदर्शन का अर्थ है एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ अपनी एकता का अनुभव करे। भगवान् बुद्ध ने कहा कि पुत्र को पाप से बचावे, पुण्य कार्य करने में शिक्षा देवे, शिल्प के साथ शास्त्र की शिक्षा देवे, उसे पैत्रिक अधिकार देवे, तब पुत्र कहे-माता-पिता ने मेरा पालन किया है, अब मैं उनका पालन करूँगा, गृहस्थ धर्म कार्य यथावत करूँगा। महात्मा बुद्ध के शिष्य आनन्द श्रावस्ती ने भंगी (मेहतर) कन्या के हाथ का जल पिया, तब बुद्ध के शिष्य राजा प्रसेनजित् ने उस कन्या को प्रचारिका नियुक्त किया, जन्मगत जाति में कुछ भी धरा रहा नहीं। स्वयं महात्मा बुद्ध ने भ्रष्टाचारिणी आम्रपाली के यहां भोजन किया, वह प्रचारिका बनी, इतना ही नहीं बुद्ध ने स्वयं अपने हाथ से पतिता नारी वासवदत्ता के गलित गात्रों से बहती पीप पोंछी थी। कहा है, सदाचार का अर्थ है **सताम् आचारस्य अनुष्ठानम्।** इस प्रकार सदाचार से अपने मत का प्रचार महात्मा ने किया था।

हम किसी व्यक्ति को सुखी देखें, तो उससे प्रेम करें, ईर्ष्या न करें और दुखी व्यक्ति को देखकर उस पर दया करें और बन सके तो उसकी सहायता करें, परन्तु उससे घृणा तिरस्कार कभी न करें। सदाचार से विश्व कल्याण हो सकता है, वह एक प्रबल महत्वपूर्ण शक्ति है, इसके लिये प्रत्येक को संतुलित मनोवृत्ति धारण करनी होगी। सदाचार से मानव समाज जीवन और व्यवहार सुचारूता से चलता है, सदाचार का यही उद्देश्य है।

संप्रति अनुभव होता है कि एक पिता चार पुत्रों को पालन-पोषण, वस्त्र, आरोग्यता, शिक्षा, आभूषणादि देकर सुयोग्य बनाता है, उनके विवाहादि करता है, अपना कर्त्तव्यधर्म निभाता है, किन्तु अब चार पुत्र मिलकर एक पिता का पालन नहीं कर सकते। वृद्धाश्रम का अपनी संस्कृति में स्थान नहीं है। अब इसे सदाचार कहें या कदाचार?

वर्तमान स्थिति में आर्यसमाजी कहने वाले भी आत्मपरीक्षण कर, सदाचार के पथिक बन, क्या संसार का उपकार करेंगे! आर्यसमाजी विचार को सदाचार की पुष्टि के आर्यत्व प्रकटावें। **आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर-३१३००२, राज०**

# शराब पर पाबन्दी जरूरी

महाराष्ट्र सरकार द्वारा बार बालाओं पर प्रतिबंध लगाना क्या उचित दिशा में लिया हुआ कदम माना जाए? बुराई की जड़ बार बालाएं हैं या शराब? सारा देश जानता है कि हर साल जहरीली शराब पीकर कितने लोग अपनी जानें गंवा देते हैं, कितने परिवार शराब की वजह से उजड़ जाते हैं।

देश में होनेवाली हत्याओं, बलात्कारों और दुर्घटनाओं के पीछे ५० प्रतिशत से अधिक मामले शराब सेवन की अवस्था में ही अंजाम पाते हैं, अक्सर देश की सरकारें आमदनी का बहाना बनाकर शराब पर प्रतिबंध लगाने से बचती हैं, जबकि **मोटे तौर से देखा जाए तो इससे आमदनी बहुत कम है और नुकसान बहुत ज्यादा।** शराब के कारण बिगड़ी कानून व्यवस्था के पीछे, पुलिस, जेल, न्यायालय, स्वास्थ्य आदि पर खर्च होने वाली रकम बहुत ज्यादा है।

देश की जनता को इसके लिए जागरूक करना जरूरी है, और पहचान करना आवश्यक है कि समस्या की असली जड़ कहा है।

(१०-१५ जुलाई, २००५ कान्ति से) **-शकील अहमद जहांगीर, नागपुर, महाराष्ट्र**

# शीशे के महल में रहने वाले....

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के पिछले अंक में उपरोक्त शीर्षक के अन्तर्गत एक लेख में, जिसमें लिखने वाले का नाम नहीं दिया गया है, श्री जयसिंह ठेकेदार से प्रश्न करते हुए गुरुकुल भैंसवाल के वरिष्ठ स्नातक के बारे में पूछा गया है कि वे बताएं कि निम्न पत्रों के आधार पर लिया गया अगाऊ धन और उसका हिसाब न देना गबन है या कुछ और है? इस सन्दर्भ में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि जिस व्यक्ति के मार्फत से पत्र प्राप्त करके प्रकाशित किये गये हैं, उसके बारे में यदि सही जानकारी चाहते हैं तो उसके लिखित प्रमाण मेरे पास हैं। पत्रों को प्रकाशित करने से पूर्व यदि मेरे से बात की होती तो शायद इन्हें छापने की नौबत न आती। फिर भी मैं विषय के अगले अंक में विस्तार के साथ तथा प्रमाण सहित प्रकाशित करवा रहा हूं। आशा है उसे 'आर्य प्रतिनिधि' में अपने अंक में छापने की कृपा करेगा। संकेत रूप में इस समय इतना लिखना पर्याप्त होगा कि यदि इस अगाऊ धन का उचित उपयोग न किया हुआ होता तो आज जो 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' की ओर से नौ प्रतिनिधि भेजे जाते हैं, उनकी कोई भी वैधानिक स्थिति नहीं होती और केवल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 'आर्य विद्या सभा' का ही वर्चस्व होता। यदि सारी हकीकत अखबार में लिखकर छपवाऊं तो हरयाणा और दिल्ली की प्रतिनिधि सभा घाटे में ही रहेंगी। लेकिन मैं ऐसा बिल्कुल भी नहीं करूंगा। इसके अतिरिक्त जो मुझे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सूचना प्राप्त हुई है, उसे आधार पर मैं आचार्य बलदेव के इस साहस की प्रशंसा भी करना चाहता हूं कि उन्होंने हरियाणा के वरिष्ठ आर्यनेताओं के सामाजिक बहिष्कार के प्रस्ताव को यह कहकर ठुकरा दिया कि पहले पंजाब सभा अपने यहां कार्यवाही करे फिर हम विचारेंगे कि हमारे किसी आदमी से कोई गलती हुई या नहीं।

**-डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार**

# गुरुकुल शिक्षा की चुनौतियाँ

❑ धर्मवीर

बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हमारी सोच में भारी परिवर्तन किया है और यह परिवर्तन जारी है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां पाश्चात्य देशों की उपज हैं, वहां की विचारधारा पर चल रही हैं। पाश्चात्य विचार भौतिकवादी दर्शन की उपज है। जीवन को भौतिक साधनों से ही जिया जा सकता है, उनके लिए सुविधा देने वाले साधन ही मुख्य हैं, उनके लिए विचार का कोई महत्व नहीं है। इसी कारण साधन प्राप्ति किन उपायों से हो रही है इसका भी उनके लिए कोई मतलब नहीं है। इन कंपनियों ने आर्थिक चिंतन को इतना ज्यादा महत्त्व दिया है कि आज सरकार, समाज, संस्थायें शिक्षा का उद्देश्य अर्थोपार्जन ही समझने लगे हैं। अर्थोपार्जन के लिए ही संस्थायें खोली जा रही हैं और उनमें पढ़ने वालों की योग्यता भी अर्थोपार्जन तक ही सीमित है।

इन कम्पनियों की राय में जो विषय धन कमाने का सामर्थ्य नहीं रखते उनका पढ़ना-पढ़ना बेकार है। जैसे भाषा, साहित्य, व्याकरण, दर्शन आदि विषय जिनके पढ़ने से किसी प्रकार का आर्थिक लाभ संभव नहीं उन विषयों को पाठ्यक्रम से निकाल देना चाहिए। जिनसे आर्थिक लाभ अधिक हो सकता है उन्हीं को पढ़ना-पढ़ाना चाहिए। इस चिंतन से समाज में दो प्रकार की विकृतियाँ बढ़ रही हैं अधिक धन कमाने के चक्कर में व्यक्ति विचारशून्य होता जा रहा है। जिसके कारण जीवन में विलासिता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। पहले शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में शारीरिक कष्ट सहने का सामर्थ्य और बुद्धि से विवेक करने की योग्यता बनाना होता था, परन्तु विलासिता ने दोनों ही उद्देश्य नष्ट कर दिये। आज विद्यालय के भव्य भवन तो बन गये परन्तु छात्रों में विवेक, योग्यता, सहनशीलता आदि गुणों की कमी होती जा रही है। जीवन में शिक्षा देते हुए छात्र को तपस्वी तथा सहनशील बनाने का प्रयास किया जाता था जिससे शिक्षा सस्ती होती थी और भविष्य में तपस्वी जीवन बिताने की प्रेरणा मिल पाती थी परन्तु बच्चों के स्कूल वातानुकूलित बनाये जा रहे हैं। सोचने की बात है मनुष्य को कष्ट सहने की आदत डालने की जरूरत तो इसलिए पड़ती थी कि जीवन में कभी दुर्भाग्य से कष्ट आ जाये तो सहन कर सके परन्तु प्रारम्भ से विलासिता का जीवन जीने की आदत से कभी कष्ट पड़ने पर उसका क्या होगा कोई किसी के जीवन में कष्ट कभी न आयें इसकी गारण्टी ले सकता है? क्या सारे काम के साधनों को वातानुकूलित सुविधा सम्पन्न कर सकता है? फिर कष्ट पड़ने पर मनुष्य का क्या बनेगा। पिछले दिनों समाचार पढ़ने को मिला एक नवयुवक जो एक कंपनी में काम करता था, उसे पचास हजार वेतन, गाड़ी, चालक, नौकर-चाकर मिले थे, कंपनी ने छंटनी में निकाल दिया उसके सामने दो ही विकल्प थे या तो वह आत्महत्या करले या अनुचित अनैतिक उपायों से जीवन यापन करे ऐसा होता हुआ समाज में देखा जा सकता है। फिर इस शिक्षा से क्या लाभ।

भाषा, साहित्य, व्याकरण, दर्शन आदि विषय मनुष्य को विचारसम्पन्न बनाते हैं विचारवान् मनुष्य विवेकशील बनता है। यदि इन विषयों का अध्ययन नहीं कराया गया तो व्यक्ति मजदूर तो बन सकता है परन्तु विचारवान् मनुष्य नहीं बन सकता। विदेशी कंपनियाँ मनुष्य को न विचारवान् बनाना चाहती हैं न स्वावलम्बी उनके लिए तो गुलाम बनाना उद्देश्य है। उसके लिए आसान उपाय है मनुष्य के मन में लोभ और सुविधाजीवी स्वभाव बना दिया जाय परिणामस्वरूप मनुष्य संघर्ष से भागने लगेगा।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति मनुष्य को संघर्षशील और विवेकी बनाती है। कष्ट सहने की आदत मनुष्य में संघर्ष की योग्यता को उत्पन्न करती है आर्ष अध्ययन विचार स्वातन्त्र्य और विवेक को जागृत करता है। आज कुछ लोग स्कूलों का पाठ्यक्रम चलाकर गुरुकुल नाम रख लेते हैं प्रात:काल सायंकाल की दिनचर्या और सन्ध्या हवन को वे गुरुकुल समझते हैं यह धोखा है। वे गुरुकुल पद्धति से डरते हैं उनके मन में विचार उठता है गुरुकुल पद्धति से आर्षग्रन्थों को पढ़कर आजीविकोपार्जन कैसे किया जा सकता है। इसके लिए वे गुरुकुल में आधुनिक शिक्षा पद्धति को स्थान देना चाहते हैं। आधुनिक शिक्षा पद्धति से मनुष्य बनाने के उद्देश्य को पूरा नहीं किया जा सकता, गुरुकुल शिक्षा आजीविका नहीं दे सकती, आधुनिक शिक्षा मनुष्य नहीं बना सकती ऐसी स्थिति में क्या किया जाये, इसको दो तरह से हल किया जा रहा है जो लोग सांसारिक जीवन में नहीं जाना चाहते उनको आर्ष पद्धति से शिक्षित कर समाज सेवा के लिए तैयार किया जाय ऐसे विद्यालयों में थोड़े-थोड़े छात्र विद्याध्यन करते हैं, परन्तु इनसे समाज में मनुष्य निर्माण की योजना को पर्याप्त आधार नहीं मिलते वे किसी चुनौती को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं आते। दूसरी स्थिति गुरुकुलों की यह है वे यह मानकर चलते हैं समाज में सबको उच्च एवं आधुनिक शिक्षा के अवसर मिलना संभव नहीं है। ऐसी परिस्थिति में छात्रों का तो अभाव नहीं रहेगा जो निर्धन छात्र गुरुकुल में आयें उनको आर्ष पद्धति से गुरुकुल में शिक्षित कर स्कूलों में अध्यापक, समाज में पुरोहित प्रचारक आदि बनाकर आजीविका एवं शिक्षा का प्रसार ये दोनों कार्य किये जा सकते हैं। ये प्रयास सार्थक होने पर भी प्रतिष्ठा दिलाने वाला नहीं है। इससे आर्ष पद्धति और गुरुकुल समाज में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं कर सकते इस स्थिति में चुनौती को किस रूप में स्वीकार किया जाय यह प्रश्नचिह्न हमारे सामने खड़ा है।

यदि हम समझते हैं गुरुकुलों में बच्चों की संख्या अधिक हो उनके आजीविका के सभी द्वार भी खुले रहें इसके लिए आसान सस्ता रास्ता गुरुकुल को स्कूल बना देना है परन्तु इससे आजीविका के रास्ते खुलते तो नहीं क्योंकि सभी स्कूलों के सभी बच्चे आजीविका पाने में सफल तो नहीं होते परन्तु संस्था संचालक आजीविका दिलाने के उत्तरदायित्व से बच जाते हैं। परन्तु गुरुकुल का विचार नष्ट हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए जिससे गुरुकुलीयता की रक्षा भी हो और समाज में विशेष स्थान भी बना रहे। इसके लिए हमें इस यथार्थ को समझना होगा कि आज सम्मान और आजीविका की भाषा इस देश में अंग्रेजी बन गई है इसका वर्चस्व आज स्वतन्त्रता पूर्व काल से भी अधिक है। पहले हमें अपनी भाषा से राष्ट्रीय अस्मिता का बोध तो होता था परन्तु आज हमारे परिवेश में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं बची जिससे हम राष्ट्रीयता को जोड़ सकें। ऐसी स्थिति में समाज में हमारा वर्चस्व बढ़े और बना रहे इसके लिए हमें आर्ष पद्धति के साथ-साथ छात्रों को अंग्रेजी भाषा और आधुनिक विषयों का परिचय कराना आवश्यक है। आधुनिक विषय पढ़ने के लिये बहुत अधिक योग्यता की आवश्यकता नहीं क्योंकि पाठ्यक्रम विशेषज्ञता से जुड़े होते हैं पर वे बहुत भिन्न होते हैं और प्रत्येक विषय के संस्थान पृथक् होते हैं। अतः सामान्य पाठ्यक्रम के साथ अंग्रेजी भाषा की योग्यता आर्ष पाठविधि के साथ हम रख सकें तो हम अपने अस्तित्व और प्रतिष्ठा की रक्षा करते हैं। यह कोई नया कार्य नहीं होगा पुराने गुरुकुल कांगड़ी में सारे आधुनिक विषय अपनी पाठविधि के साथ पढ़ाये जाते रहे हैं। पुरानी गुरुकुल भूमि के अवशेषों पर आज भी, भौतिकी, रसायन, मनोविज्ञान कक्षों का शिलालेख अंकित है। पुराने स्नातकों का तीनों भाषाओं पर समानाधिकार प्रत्यक्ष रहा है वे हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी समान रूप से बोल सकते थे, हर स्नातक लेखक, वक्ता या पत्रकार कुछ अवश्य बनता था वही बात आज पैदा की जा सकती है। यह ठीक है वर्तमान में कुछ अधिक साधनों की आवश्यकता होगी परन्तु बहुत अधिक नहीं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विद्यालय पाखण्ड, दिखावा, विलासिता का वातावरण पैदा करते हैं, माता-पिता के अहंकार का लाभ उठाकर उनको लूटना उनका उद्देश्य है, अतः उनका खर्च ज्यादा होता है। इसका उत्तर तो गुरुकुल प्रभात आश्रम, गुरुकुल पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी, गुरुकुल चोटीपुरा की छात्राओं ने और छात्रों ने अपने साधन रहित स्थानों में अभ्यास के बल पर देश-विदेश में कीर्तिमान स्थापित किये हैं और इन संस्थाओं के विषय में उस क्षेत्र के लोगों की धारणायें बदली हैं। इस प्रकार विचारपूर्वक थोड़ा परिवर्तन और परिश्रम किया जाय तो आर्ष पाठविधि की दुन्दुभि इस देश में फिर से बज सकती है। निराशा की नहीं चुनौती स्वीकार करने और संघर्ष का बिगुल बजाने की है। आज चाणक्य के वाक्य को दोहराने की आवश्यकता है:

नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा
बुद्धिस्तु मागान्मम॥

## गुजरात बाढ़पीड़ितों की सहायतार्थ राहत केन्द्र

गुजरात में भीषण बाढ़ से टंकारा एवं राजकोट के आसपास के क्षेत्रों में काफी तबाही हुई है। श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के तत्त्वावधान में बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में राहत कार्य आरम्भ कर दिया है। हमारे उपदेशक विद्यालय का सारा स्टाफ एवं २०० ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र की एम्बुलेंस सहित दवाई आदि लेकर इस राहत कार्य में लग गये हैं।

हमारी समस्त आर्य जनता, आर्यसमाजों, आर्यशिक्षण संस्थाओं तथा आर्यसमाज से जुड़ी समस्त संस्थाओं से प्रार्थना है कि उक्त राहत कार्य हेतु अपनी ओर से एवं अपनी संस्था की ओर से अधिक से अधिक धनराशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम केवल खाते में उपकार्यालय आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के कार्यालय में अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला राजकोट-३६३६५० गुजरात के पते पर चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भिजवाकर पुण्यार्जन करें। यह बड़ा ही पुण्य का कार्य है।

जो संस्थायें खाद्य सामग्री चावल, चीनी, दाले, गेहूं, दवाइयां एवं नये कपड़े भिजवाना चाहें वे जयपुर गोल्डन ट्रांसपोर्ट कं० की मोरवी शाखा हेतु बिल्टी कराकर श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा जिला राजकोट-३६३६५० गुजरात भिजवा सकते हैं। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा ८०जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।**

**सत्यानन्द मुंजाल**
मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान

**रामनाथ सहगल**
मन्त्री

# वेद में परमेश्वर के नाम

□ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः॥

इस मन्त्र में मित्रादि नाम हैं, वे भी परमेश्वर के हैं, क्योंकि स्तुति, प्रार्थना, उपासना श्रेष्ठ ही की जाती है। श्रेष्ठ उसको कहते हैं जो गुण, कर्म, स्वभाव और सत्य-सत्य व्यवहारों में सबसे अधिक हो। उन सब श्रेष्ठों में भी जो अत्यन्त श्रेष्ठ है उसको परमेश्वर कहते हैं। जिसके तुल्य कोई न हुआ, न है और न होगा। जब तुल्य नहीं तो उससे अधिक क्योंकर हो सकता है? जैसे परमेश्वर के सत्य, न्याय, दया सर्वसामर्थ्य और सर्वज्ञत्वादि अनन्त गुण हैं वैसे किसी जड़पदार्थ वा जीव के नहीं हैं। जो पदार्थ सत्य है उसके गुण, कर्म, स्वभाव भी सत्य ही होते हैं। इसलिये मनुष्यों को योग्य है कि परमेश्वर की ही स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें उससे भिन्न की कभी न करें। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव नामक पूर्वज महाशय विद्वान् दैत्य दानवादि निकृष्ट मनुष्य और अन्य साधारण मनुष्यों ने भी परमेश्वर ही में विश्वास करके उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना की उससे भिन्न की नहीं की। वैसे हम सबको करना योग्य है।

**प्रश्न**-मित्रादि नामों से सखा और इन्द्रादि देवों के प्रसिद्ध व्यवहार देखने से उन्हीं का ग्रहण करना चाहिये?

**उत्तर**-यहां उनका ग्रहण करना योग्य नहीं, क्योंकि जो मनुष्य किसी का मित्र है वही अन्य का शत्रु और किसी से उदासीन देखने में भी आता है। इससे मुख्यार्थ में सखा आदि का ग्रहण नहीं हो सकता। किन्तु जैसा परमेश्वर सब जगत् का निश्चित मित्र, न किसी का शत्रु और न किसी से उदासीन है, इससे भिन्न कोई भी जीव इस प्रकार का कभी नहीं हो सकता। इसलिये परमात्मा ही का ग्रहण यहां होता है। गौण अर्थ में मित्रादि शब्द से सुहृदादि मनुष्यों का ग्रहण होता है।

(ञिमिदा स्नेहने) इस धातु से औणादिक 'क्त्र' प्रत्यय होने से 'मित्र' शब्द सिद्ध होता है। **'मेद्यति स्निह्यते वा स मित्रः'**। जो सबसे स्नेह करके और सबको प्रीति करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'मित्र' है।

(वृञ् वरणे, वर ईप्सायाम्) इन धातुओं से उणादि 'उनन्' प्रत्यय होने से 'वरुण' शब्द सिद्ध होता है। **'यः सर्वान् शिष्टान् मुमुक्षून्धर्मात्मनो वृणोत्यथवा यः शिष्टैर्मुमुक्षुभिर्धर्मात्मभिर्व्रियते वर्य्यते वा स वरुणः परमेश्वरः'**। जो आप योगी विद्वान् मुक्ति की इच्छा करने वाले मुक्त और धर्मात्माओं का स्वीकारकर्त्ता, अथवा जो शिष्ट मुमुक्षु मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है। वह ईश्वर 'वरुणसंज्ञक' है। अथवा **'वरुणो नाम वरः श्रेष्ठः'** जिसलिये परमेश्वर सबसे श्रेष्ठ है, इसलिये उसका नाम 'वरुण' है।

(ऋ गतिप्रापणयोः) इस धातु से 'यत्' प्रत्यय करने पर 'अर्य्य' शब्द सिद्ध होता है और 'अर्य्य' पूर्वक (माङ् माने) इस धातु से 'कनिन्' प्रत्यय होने पर 'अर्य्यमा' शब्द सिद्ध होता है। **'योऽर्य्यान् स्वामिनो न्यायाधीशान् मिमीते मान्यान् करोति सोऽर्य्यमा'** जो सत्य न्याय करनेहारे मनुष्यों का मान्य और पाप तथा पुण्य करनेवालों को पाप और पुण्यों के फलों का यथावत् सत्य-सत्य नियमकर्ता है इसी से उस परमेश्वर का नाम 'अर्य्यमा' है।

(इदि परमैश्वर्ये) इस धातु से 'रन्' प्रत्यय करने से 'इन्द्र' शब्द सिद्ध होता है। **'य इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति स इन्द्रः परमेश्वरः'** जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है इससे उस परमात्मा का नाम 'इन्द्र' है।

'बृहत्' शब्दपूर्वक (पा रक्षणे) इस धातु से 'डति' प्रत्यय, बृहत् के तकार का लोप और सुडागम होने से 'बृहस्पति' सिद्ध होता है। **'यो बृहतामाकाशादीनां पतिः स्वामी पालयिता स बृहस्पतिः'** जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्माण्डों का स्वामी है इससे उस परमेश्वर का नाम 'बृहस्पति' है।

(विष्लृ व्याप्तौ) इस धातु से 'नु' प्रत्यय होकर 'विष्णु' शब्द सिद्ध हुआ है। **'वेवेष्टि व्याप्नोति चराऽचरं जगत् स विष्णुः परमात्मा'** चर और अचर जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है।

**'उरुर्महान् क्रमः पराक्रमो यस्य स उरुक्रमः'** अनन्त पराक्रमयुक्त होने से परमात्मा का नाम 'उरुक्रम' है।

जो परमात्मा (उरुक्रमः) महापराक्रमयुक्त (मित्रः) सबका सुहृत् अविरोधी है वह (शम्) सुखकारक, वह (वरुणः) सर्वोत्तम (शम्) सुखस्वरूप, वह (अर्य्यमा) (शम्) सुखप्रचारक, वह (इन्द्रः) (शम्) सकल ऐश्वर्यदायक, वह (बृहस्पतिः) सबका अधिष्ठाता (शम्) विद्याप्रद और (विष्णुः) जो सबमें व्यापक परमेश्वर है, वह (नः) हमारा कल्याणकारक (भवतु) हो।

## आर्यसमाज अर्बन एस्टेट का चुनाव

आर्यसमाज सै० ४-७ गुड़गांव का वार्षिक निर्वाचन श्री आर.के. मखीजा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

वरिष्ठ उपप्रधान-श्री राजपाल कौड़ा, उपप्रधान-श्री विजय भगत, मन्त्री-श्री नरवीर चौधरी, कोषाध्यक्ष-श्री प्राणनाथ वर्मा, पुस्तकाध्यक्ष-श्री सन्तराम दहिया।

-ओमप्रकाश आर्य, प्रधान



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८१





आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१

वर्ष ३२ अंक ३३ २१ जुलाई, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## मेरा पूरा जीवन स्वामी दयानन्द को समर्पित



महर्षि दयानन्द सरस्वती



स्वामी अग्निवेश

प्रिय आर्य बंधुओ,

मैंने डॉ० रविप्रकाश आर्य को पहले ही यह साफ कर दिया है कि अग्निवेश डाटकाम अब मेरी वेबसाइट नहीं रही है और उसमें दिए गए विचारों से मेरा कोई सरोकार नहीं है। वेबसाइट के आधार पर मेरे ऊपर लगाए गए आरोप झूठे हैं। मेरे कुछ मित्र चाहते हैं कि मैं व्यक्तिगत तौर पर इस मुद्दे पर सफाई पेश करूं।

एक बार फिर मैं कुछ बातें साफ कर देना चाहता हूं। पांच साल पहले आर्यसमाज मन्दिर, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली में मेरी पहली वेबसाइट का लोकार्पण तत्कालीन सूचना मंत्री श्री अरुण जेतली ने किया था और उस वेबसाइट का नाम **अग्निवेश डाटकाम** रखा गया था। वेबसाइट बनाने वाली कंपनी को हमने ३६००० रुपये दिए थे। करार के अनुसार वेबसाइट में जोड़े गए प्रति पेज के लिए हमें कंपनी को ३०० रुपए देने थे। ज्यादा धन कमाने के लालच में वेबसाइट डिजायनर ने आर्यसमाज एवं दयानन्द सरस्वती पर जेटीएफ जार्डन सरीखे लेखकों के पेज डालने शुरू कर दिए और उन पेजों के पैसे मुझसे मांगने लगा। इस अनुचित कार्य का मैंने विरोध किया और उसे पैसे देने से मना कर दिया। साथ ही डिजायनर को वेबसाइट से आपत्तिजनक पेज हटाने के लिए कहा। इसके तुरंत बाद हमने नई वेबसाइट **स्वामी अग्निवेश डाटकाम** लांच की और मेरा **अग्निवेश डाटकाम** के साथ संबंध खत्म हो गया। अग्निवेश डाटकाम में जो कुछ भी है वह मेरे विचार नहीं हैं। इसके अलावा मेरी वेबसाइट **स्वामी अग्निवेश** डाटकाम के साथ अगर अग्निवेश डाटकाम का कोई पेज संलग्न है तो उससे भी मेरा कोई सरोकार नहीं है। मैं यह भी बताना चाहता हूं कि अगर वेबसाइट डिजायनर ने धोखाधड़ी करनी जारी रखी अथवा मेरी वेबसाइट स्वामी अग्निवेश डाटकाम के साथ अग्निवेश डाटकाम नेट लिंक जारी रहा तो मैं डिजायनर के खिलाफ माकूल कार्रवाई करूंगा। अत: कृपया अग्निवेश डाटकाम पर लाग आन न करें और न ही मेरी वेबसाइट स्वामी अग्निवेश डाटकाम के साथ संलग्न अग्निवेश डाटकाम का कोई पेज देखें। मैंने कभी भी आर्यसमाज विरोधी, दयानंद विरोधी, अथवा गैर वैदिक विचारों की प्रायोजित नहीं किया है। मैं वेदों को दयानन्द जी की व्याख्यानुसार प्रामाणिकता के साथ स्वीकार करता हूं। मैंने यह कभी नहीं कहा कि आर्य एक जाति है और व बाहर से आए थे। मैंने कभी भी मूर्तिपूजा का समर्थन नहीं किया और न ही दयानन्द जी द्वारा मूर्तिपूजा की आलोचना पर मैंने कोई शक किया। मैंने यह भी नहीं कहा कि मनु राष्ट्रविरोधी थे और मनुस्मृति को जला देना चाहिए। हां मैंने यह जरूर कहा है कि महर्षि दयानंद द्वारा स्वीकृत मनुस्मृति अलग है और वह ज्यादा विश्वास करने योग्य है जबकि चौखंबा द्वारा प्रकाशित मनुस्मृति स्वीकार्य नहीं है। क्योंकि उसमें महिलाओं और दलितों के बारे में आपत्तिजनक बातें हैं। आर्षग्रन्थ भी दयानन्द जी की व्याख्यानुसार ही प्रामाणिक है। मैं आशा करता हूं कि आप भी मेरे साथ आर.एस.एस. के धर्मान्धों द्वारा पोषित आर्यविरोधी तत्त्वों की आलोचना करेंगे जो कायराना तरीके से गैर हस्ताक्षरित पत्रों द्वारा आर्यसमाज के खिलाफ दुष्प्रचार कर रहे हैं। मैंने अपनी पूरी जिंदगी स्वामी दयानन्द के मिशन के लिए समर्पित कर दी है। गलतियां मुझसे भी हो सकती हैं कृपा करके गलतियां सुधारने में मेरी मदद करें और हो सके तो आर्यसमाज आंदोलन को विश्वव्यापी बनाने में मेरा एवं मेरे साथियों का साथ दें।

**आपका, स्वामी अग्निवेश**

## अग्निवेश डाटकाम पर स्पष्टीकरण

मेरे पास दिल्ली से महेन्द्रपाल आर्य का लेख इस सम्बन्ध में प्रकाशनार्थ आया है। राजस्थान सभा के पाक्षिक पत्र **आर्य मार्तण्ड** में भी इस सम्बन्ध में लेख छपा है। अन्य पत्रिकाओं में भी इस सम्बन्ध में पर्याप्त चर्चा देखकर मैंने स्वामी अग्निवेश से इसका स्पष्टीकरण चाहा तो उनका जो स्पष्टीकरण आया है वह साथ में प्रकाशित किया जा रहा है। इस स्पष्टीकरण के पश्चात् यदि कोई **अग्निवेश डाटकाम** के आधार पर स्वामी अग्निवेश की आलोचना वा दुष्प्रचार करता है तो वह मिथ्या और राग-द्वेष एवं पूर्वाग्रह ग्रसित मानसिकता का दोषी है।

यदि **स्वामी अग्निवेश डाटकाम** में कोई इस प्रकार की बात है तो उसके लिए स्वामी अग्निवेश को दोषी माना जायेगा क्योंकि उसे वे अपनी वेबसाइट स्वीकार करते हैं। वैसे मैंने स्वामी अग्निवेश डाटकाम की सीडी बनवा ली है उसका मैं भी अध्ययन करूंगा। वैदिक सिद्धान्तों और स्वामी दयानन्द की मान्यताओं के विरुद्ध किसी भी विचारधारा को आर्यसमाज स्वीकार नहीं कर सकता। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए प्रत्येक आर्य को सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। **-वेदव्रत शास्त्री**

ओ३म्

### आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ( तदर्थ समिति )

दयानन्दमठ, रोहतक। दूरभाष 01262-277801

पत्रक्रमांक-त्रै.वा.चु./2005/ दिनांक 20.7.2005

## सूचना

माननीय महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तदर्थ समिति के तत्त्वाधान में (जिसका गठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1.5.2005 को किया गया था) सभा के पदाधिकारियों का त्रैवार्षिक चुनाव आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत में 7 अगस्त, 2005 रविवार को सम्पन्न करवाया जायेगा, जिसके लिए श्री राममोहनराय एडवोकेट पानीपत को निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया है। चुनाव प्रक्रिया निम्न प्रकार से सम्पन्न करवाई जायेगी।

1. नामांकन पत्र दाखिल करने की अवधि 24.7.2005 से 28.7.2005 समय-प्रात: दस बजे से सायं चार बजे तक। स्थान-आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत।
2. नामांकन पत्रों की जांच 29.7.2005 समय प्रात: दस बजे से दोपहर बारह बजे तक। स्थान-आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत।
3. नामांकन वापिस लेने की तिथि 31.7.2005 समय प्रात: दस बजे से बाद दोपहर दो बजे तक।
   स्थान-आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत।
4. चुनाव चिह्न का आवंटन 31.7.2005 समय बाद दोपहर दो बजे से आवंटन कार्य पूरा होने तक।
   स्थान-आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत।
5. चुनाव तिथि 7 अगस्त 2005 समय प्रात: आठ बजे से सायं चार बजे तक।
   स्थान-आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत।

नोट-

1. किसी भी पद के लिए चुनाव लड़ने का इच्छुक कोई भी स्वीकृत प्रतिनिधि निर्धारित शुल्क कार्यालय में जमा करवाकर निर्वाचन अधिकारी के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपना आवेदनपत्र प्रस्तुत कर सकता है।
2. प्रधान-1, उपप्रधान-5, मन्त्री-1, उपमंत्री-5, कोषाध्यक्ष-1, पुस्तकाध्यक्ष-1, अन्तरंग के सदस्य-15 तथा सार्वदेशिक सभा के लिये प्रतिनिधि-15 का चुनाव होगा।
3. प्रतिनिधि महानुभाव अपना पहचानपत्र/राशकार्ड/ड्राइविंग लाइसेंस आदि अपने साथ अवश्य लावें।
4. **बिना प्रवेश-पत्र कोई भी प्रतिनिधि मत डालने के लिए अन्दर नहीं जा सकेगा।**

-जयसिंह ठेकेदार, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (तदर्थ समिति)

# भव्य चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर

प्रान्तीय आर्य वीर दल बंगाल का भव्य चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर दि० ३ जून शुक्रवार से १२ जून रविवार २००५ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें वैदिक संस्कृति, संस्कार, सैनिक प्रशिक्षण कुशल शिक्षकों द्वारा दिया गया।

बंगाल की पवित्र धरती पर, वीरों की सन्तानों के डगमगाते कदमों को देखकर, प्रान्तीय अधिष्ठाता/संचालक श्री आचार्य योगेश शास्त्री, प्रवक्ता-आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल ने आर्य वीर दल एवं सभा अधिकारियों के साथ प्रान्त की युवा शक्ति का संस्कृति एवं संस्कार विमुखता का दर्द रखा तथा मिलकर संकल्प किया गया कि युवा शक्ति के इस रुख को मोड़ देने के लिए एक चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दि० ३ जून शुक्रवार से १२ जून रविवार तक किया जाय।

संकल्प को साकार रूप देते हुए ३-६-०५ को प्रात:काल से ही बंगाल के कोने-कोने से शिविरार्थियों का आगमन प्रारम्भ हुआ, सन्ध्या होते-होते दक्षिण दीनाजपुर, उत्तर दीनाजपुर, मालदा, झारखण्ड, बांकुड़ा, नदिया, हुगली, पूर्व मेदिनीपुर, पश्चिम मेदिनीपुर, उत्तर २४ परगणा, दक्षिण २४ परगणा, हुगली, वर्धमान, हावड़ा, कलकत्ता, गंगासागर आदि जिलों के विभिन्न स्थानों से लगभग २५० से अधिक शिविरार्थी शिविर प्रांगण-गारूलिया म्युनिसिपल गर्ल्स हाई स्कूल गारूलिया में उपस्थित हो गये।

४.६.०५ को प्रात: हर्षोल्लास के साथ यज्ञब्रह्म-श्री आचार्य नरेन्द्र शास्त्री-प्रवक्ता, आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई के सान्निध्य में यज्ञशाला से स्वाहा-स्वाहा की ध्वनि गुंजायमान होने लगी। तत्पश्चात् शिविराध्यक्ष श्री दीनदयाल गुप्ता उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल ने ध्वजारोहण के साथ शिविर का शुभारम्भ किया। कुशल व्यायामाचार्य आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, श्री सोमपाल शास्त्री तथा श्री सुरेन्द्रकुमार आर्य ने कड़ी मेहनत एवं अथक प्रयास के साथ समस्त आर्यवीरों को एस.एस. जूट मिल मैदान आजाद हिन्द क्लब के प्रांगण में-लाठी, तलवार, भाला, नियुद्धम, जुडो-करांटे, रस्सा मलखम, योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, धनुष-बाण, आदि विविध कलाओं का अभूतपूर्व प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा सभी आर्यवीरों ने भी उत्साह, उमंग के साथ बढ़चढ़कर भाग लिया। नौ दिन, चौबीस घंटे आचार्यों के सान्निध्य में रहकर अनुशासन, सभ्यता, शालीनता एवं पूर्ण व्यावहारिकता का परिचय देते हुए हिन्दी, बंगभाषा, मैथिली, भोजपुरी, मारवाड़ी आदि विभिन्न आंचलिक भाषाओं के उद्‌गम का समागम नौ दिन तक सभ्यता से पूर्ण रहा।

११ जून मध्याह्न २ बजे से नगर कीर्तन शोभायात्रा प्रारम्भ हुई, जिसका नेतृत्व श्री नारद पण्डित-महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल ने किया, जिसमें लगभग १५०० से अधिक आर्य नर-नारियों ने भाग लिया, जून की कड़कड़ाती धूप में छोटे-छोटे आर्यवीर कड़ी मेहनत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते चले जा रहे थे, एक सैनिक सम्पूर्ण कार्यक्रम का नेतृत्व करता हुआ कदमताल के साथ आगे सलामी देते हुए चल रहा था, सभी लोगों ने लगभग १० कि०मी० की यात्रा पैदल ही तय की, जिसके बीच-बीच में युवा आर्यवीरों ने सम्पूर्ण प्रशिक्षण का प्रदर्शन करते हुए यत्र-तत्र लाठी, तलवार, भाला, छुरिका, जुडो-करांटे, नियुद्धम, योगासन, व्यायाम आदि विविध कलाओं का प्रदर्शन किया, जो कि सम्पूर्ण गारूलिया, श्यामनगर के दर्शकों का मन मोहित करता रहा तथा अबालवृद्ध, नर-नारी, सभी सैकड़ों की संख्या में स्वर से स्वर मिलाकर "जग को जगाने वाला आर्यसमाज है जी, आर्यसमाज है, सत्य सनातन वैदिक धर्म की-जय, महर्षि दयानन्द की-जय, आर्यवीरो-जागो, संसार के श्रेष्ठपुरुषो-एक रहो" के गगनभेदी नारों से वातावरण में राष्ट्रीयता एवं स्वसंस्कृति, स्वसभ्यता एवं स्वदेशिता के भावों को उजागर करने की अद्‌भुत हिलोरें जनमानस में उठती रहीं। सैकड़ों लोगों के विशाल जनसमूह को देखकर लग रहा था कि महर्षि दयानन्द के प्रेरणास्वरूप १८५७ की आजादी की प्रथम क्रान्ति समीपस्थ बैरकपुर छावनी से प्रथम मसाल के रूप में उठी थी, माना कि १८५७ की क्रान्ति स्वराज की स्थापना के लिए उठी होगी, किन्तु आज इस विशाल समूह को देखकर प्रतीत हो रहा था कि किसी रूप में जगद्‌गुरु महर्षि दयानन्द के शिष्य मंगल पांडे ने आकर आज पुन: सुराज की स्थापना का संकल्प लेकर इस ज्योति को प्रदीप्त किया है।

**-बंशरोपन आर्य, महामंत्री, प्रान्तीय आर्यवीर दल, बंगाल**

# पुस्तक-समीक्षा

पुस्तक का नाम - **मेरी इंगलैंड यात्रा**
लेखक - **ज्ञानेश्वरार्य दर्शनाचार्य**, एम.काम.
प्रकाशक - **दर्शन योग महाविद्यालय**, आर्यवन, रोजड़, सागपुर साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७
साइज - २०×३०=१६, पृष्ठ ६४, मूल्य ५ रुपये।

श्री ज्ञानेश्वर आर्य वैदिक धर्मप्रचारार्थ अनेक बार विदेशयात्रा कर चुके हैं। आप सुयोग्य विद्वान् और अच्छे प्रवचनकर्ता हैं। आपने अपनी यह इंगलैंड यात्रा ऐसी रोचक शैली में लिखी है जिसे पढ़ना प्रारम्भ करके बीच में छोड़ने की इच्छा नहीं होती। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। आदि से अन्त तक ६४ पृष्ठ की पुस्तक मैंने बिना ब्रेक के पढी है। विदेश में धन कमाने की भावना के लिए जानेवाले भारतीय नवयुवकों के लिए यह पुस्तक अवश्य पठनीय है। अनेक भारतीय नवयुवक विदेशी चकाचौंध से प्रभावित होकर विदेश जाने के चक्कर में विदेशी कारागारों की बंद कोटड़ियों में पड़े हैं। अनेक इसी चक्कर में लाखों रुपये ठगवाकर खाली घूम रहे हैं। बहुत लोग विदेश जाकर साधनसम्पन्न जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

एक नवयुवक पत्रकार ने मुझे बताया कि मैं भी धन कमाने के लिए विदेश गया था। वहां पर हमारे भारतीय भाइयों को ऐसी ही हेय दृष्टि से देखा जाता है जैसा कि हम हरयाणा में बिहारी मजदूरों को देखते हैं। हमारे साथी अध्यापक दम्पति ने भी अपने अनुभव बताते हुए कहा कि विदेश में धन-ऐश्वर्य की प्रचुरता है। खान-पान, सफाई, सड़क, मकान, यातायात की सभी सुविधायें हैं किन्तु सभी साधनों के होते हुए भी हम अपने आपको ऐसा एकाकी अनुभव कर रहे थे जैसे की हम जेल में हैं। हमारे आगे पीछे दांये बांये कौन रहता है इससे किसी को कोई मतलब नहीं। ये दोनों अपने पुत्र से मिलने के प्रसंग में विदेश यात्रा पर गये थे गर्मियों की छुट्टियों में।

श्री ज्ञानेश्वर जी अपनी यात्रा पुस्तक में लिखते हैं कि मैंने अपने प्रवचनों में इंगलैंड में प्रवास कर रहे मूल भारतीयों को यह बताने का प्रयास किया कि आपके साहस, पराक्रम, बल, बुद्धिचातुर्य का प्रतीक है कि आप आर्यावर्त से बहुत दूर यहां इंगलैंड में रह रहे हैं, नौकरी धन्धा कर रहे हैं और अपना जीवनयापन कर रहे हैं। भौतिक दृष्टिकोण से आपका जीवन स्तर आम भारतीयों से बहुत ऊंचा है। आपके पास वस्त्र, भोजन, भवन, वाहन आदि की आधुनिक सेवाएं उपलब्ध हैं। लेकिन मैं आपसे कहना चाहूंगा कि आप यह न भूलें कि इन आकर्षक मूल्यवान् सुन्दर अनेक प्रकार से सुविधाजनक भवनों में रहने मात्र से आत्मा को शान्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती। इन मंहगे, मजबूत, लुभावने वस्त्रों को पहनकर आत्मा का बल नहीं बढ़ सकता। इन चित्ताकर्षक गाड़ियों, सड़कों, होटलों.... से उपलब्ध शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध विषयों को इन्द्रियों से भोग करके आध्यात्मिक दु:खसागर से कभी भी पार नहीं पा सकते।

आप यहां रहते हुए वैदिक धर्म संस्कृति आदर्श परम्पराओं से विपरीत अवैदिक बनते जा रहे हैं। आपके विचारों, व्यवहारों में पाश्चात्य भोगवादी परम्पराएं प्रवेश कर चुकी हैं।....आप कितनी ही सुख-सुविधाओं वाले स्वर्गयुक्त वातावरण में रह रहे होंगे किन्तु आप को यह नहीं भूलना चाहिए कि आप विदेश में रह रहे हैं, विदेश ही नहीं, विधर्मियों के देश में रह रहे हैं। यहां के व्यक्तियों के जीवन का लक्ष्य, मार्ग, साधन, शैली, सिद्धान्त, परम्पराएं हमारी भारतीय परम्पराओं से नितान्त विपरीत हैं। शास्त्रों में कहा है-"**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**" मातृभूमि में रहना स्वर्गतुल्य विदेशों में रहने की अपेक्षा श्रेष्ठ है।

कुछ व्यक्तियों को छोड़कर अधिकांश व्यक्ति सामान्य मजदूरी और चौथे वर्ग का ही काम करते हैं। इनमें से कुछ व्यक्तियों के कार्य तो इतने निम्न स्तर के थे कि ऐसे कार्यों को सुनकर, जानकर मेरे मन में ऐसे व्यक्तियों के प्रति कोई श्रद्धाभाव नहीं रहा।

इसी प्रकार के अन्य अनेक अनुभव तथा आचार विचार की घटनाओं का वर्णन आपने इस यात्रा वर्णन में किया है। अनेक रंगीन चित्र दिए हैं। पुस्तक का कवर सुन्दर और आकर्षक है। पुस्तक की लेखसामग्री उपदेशात्मक शिक्षाप्रद और रुचिकर है। विदेश जाने की लालसा वाले व्यक्ति इसे पढ़ेंगे तो उनकी ज्ञानवृद्धि होगी।

**-वेदव्रत शास्त्री**

# सत्यार्थप्रकाश क्यों पढ़ें ?

१. ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए।
२. वेद यज्ञ और योगविद्या जानने के लिए।
३. सन्तानों को सुशिक्षित करने के लिए।
४. अन्धविश्वास और पाखण्डों को चुनौती देने के लिए।
५. वैदिक धर्म की सर्वत्र पुन: स्थापना के लिए।
६. गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था की स्थापना के लिए।
७. गृहस्थाश्रम के नियमों को समझने के लिए।
८. आश्रम व्यवस्था को समझने के लिए।
९. राजधर्म को जानने के लिए।
१०. ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने की उचित विधि को जानने के लिए।
११. ईश्वर, जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए।
१२. जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय को समझने के लिए।
१३. बन्धन और मोक्ष विषय को जानने के लिए।
१४. धर्म के सत्यस्वरूप को जानने के लिए।
१५. भारतवर्ष में फैले मतमतान्तरों में सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए।
१६. वैदिक संस्कृति को समझने के लिए।
१७. युवाओं/युवतियों में बढ़ती हुई नास्तिकता को रोकने के लिएं।
१८. धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए।
१९. विश्व में एक ही मानव धर्म को विस्तृत करने के लिए।
२०. वैचारिक क्रान्ति के लिए।

अत: सिद्धान्त रूप से आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती और विद्यमान धर्मात्मा योगी, ऋषि मुनिजनों तथा वैदिक विद्वानों से प्रेरणा लेकर, वेद और आर्षग्रन्थों को पढ़कर हमें राष्ट्र की उन्नति तथा विश्व को आर्य बनाने का तन मन और धन से प्रयत्न करना चाहिए।

**-जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)**

# नापाक चेहरों की पैंतरेबाजी

❑ डॉ० सुरेन्द्रसिंह कादियाण

मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक द्वारा प्रकाशित 'सर्वहितकारी विज्ञापन' का एक अंक प्राप्त हुआ है। इस अंक में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के पट्टों के बारे में आंकड़ों पर आधारित तुलनात्मक श्वेतपत्र प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ-साथ अंतिम पृष्ठ पर स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश, प्रो० शेरसिंह से कुछ प्रश्नों के जवाब मांगे गये हैं। इस अंक को आद्योपांत पढ़कर सिर धुनने को मन चाहा। कारण, एक तो पट्टों संबंधी स्पष्टीकरण तिकड़मबाजी की भेंट चढ़ा दिया गया है जिसमें झूठ, मक्कारी, जालसाजी सभी का सुन्दर मिश्रण किया गया है। दूसरे, तथ्यों की घोर अनदेखी कर आरोप लगाये गये हैं और बिना सिर-पैर के प्रश्न पूछे गये हैं। तीसरे लहजा और भाषा ऐसी है कि साफ झलक मिलती है कि लिखने वाला दुराग्रहों, पूर्वाग्रहों से पीड़ित ही नहीं है बल्कि मानसिक संतुलन तथा सामान्य शिष्टाचार व सभ्यता के मानदण्ड भी खो चुका है।

आर्यसमाज में परस्पर का विरोध कोई नई बात नहीं है। नई बात यह है कि लेखन में अनार्यत्व घुस आया है। आम जनता को दिग्भ्रमित करना आसान है लेकिन जो लोग तीस-तीस, चालीस-चालीस साल से आर्यसमाज में कार्य कर रहे हैं क्या उनको हिटलर और मुसोलिनी की प्रचार-शैली से बहकाया जा सकता है? आर्यसमाज के ये गोयब्लस आर्यसमाज को ले जाना किधर चाहते हैं, और इसे बनाना क्या चाहते हैं? जिस लेखन-शैली में यह पूरा अंक प्रकाशित है उससे तो यही आभास मिलता है कि जिसे न तो आर्य परम्परा का ज्ञान है और न ही सामान्य शिष्टाचार की परवाह है। अपने पक्ष को प्रस्तुत करने का क्या कोई सभ्य तरीका इन लोगों के पास नहीं है? तनिक-सी कुर्सी खिसकने से इतनी बौखलाहट दिखाने का सीधा तात्पर्य क्या यह नहीं है कि कुर्सी ही इनका धर्म, ईमान और सर्वस्व बन गई है? मूल विषय पर आने से पूर्व मैं पाठकों को कुछ वर्ष पीछे ले जाना चाहूंगा।

### डेलीगेट न होने पर भी प्रधान बने

स्वामी ओमानन्द जी के देहावसान के तुरन्त पश्चात् गुरुकुल झज्जर में शोक सभा आयोजित हुई। उस समय स्वामी ओमानन्द आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा के अध्यक्ष थे। सो अध्यक्ष का पद खाली होने से यह प्रश्न उठ रहा था कि सम्भावित अध्यक्ष कौन होना चाहिए? स्पष्टतया अधिकांश की दृष्टि स्वामी इन्द्रवेश, चौ० मित्रसेन जी पर टिकी हुई थी लेकिन गुरुकुल लॉबी किसी अपने चहेते व कठपुतली व्यक्ति को इस पर बैठाने की इच्छुक थी जिससे कि स्वामी ओमानन्द जी के समय से मिल रही सुविधाओं पर किसी प्रकार की आंच न आ सके। इस कसौटी पर आचार्य बलदेव जी से बढ़कर और खरा व्यक्ति कौन हो सकता था। इसमें कोई दो राय नहीं कि आचार्य बलदेव जी की कर्तव्यनिष्ठा और नि:स्वार्थता पर तब किसी प्रकार का दाग नहीं था। आचार्य जी से एक भूल हुई और वह यह है कि वे उन चेहरों को नहीं पहचान सके जो उन्हें इस अग्नि-परीक्षा में महज अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए झोंक रहे थे। आचार्य जी ने यह समझा कि लोकैषणा और वित्तैषणा से मुक्त उनके उदात्त जीवन पर लोग विश्वास और सम्मान का अर्घ्य चढ़ा रहे हैं और उन्हें एक बड़ी जिम्मेदारी सौंप रहे हैं। इसी का नतीजा था कि चौ० मित्रसेन जी के सामने से अध्यक्ष की कुर्सी हटा ली गई और आचार्य बलदेव जी को उस पर पदासीन करने की घोषणा उस शोक सभा में कर दी गई। लेकिन घोषणामात्र से बात बनने वाली नहीं है यह बात गुरुकुल झज्जर की लाबी भी जानती-समझती थी अत: उन्हें सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित करने की नौटंकी का रचा जाना आवश्यक था। इसी दौरान श्री महेन्द्र शास्त्री मेरे पास आए और आचार्य बलदेव जी के पक्ष में लिखने का आग्रह किया। मैं इतना तो जानता था कि श्री महेन्द्र शास्त्री की आचार्य बलदेव जी से घनिष्ठता है। आचार्य जी से मैं परिचित नहीं था लेकिन मैंने उनके पक्ष में चार या पाँच लेख लिखे जिन्हें 'सर्वहितकारी' में प्रमुखता से प्रकाशित किया गया। इन लेखों की सर्वत्र चर्चा हुई और उनसे आचार्य जी के पक्ष में वातावरण भी बना। यहां तक कि इस तथ्य की अनदेखी भी कर दी गई कि आचार्य बलदेव जी का नाम प्रतिनिधि सभा की डेलीगेट्स की सूची में भी नहीं था और उन्हें प्रधान बनाये रखा गया। सार्वदेशिक सभा ने भी इस भूल, चूक को नोटिस में नहीं लिया। प्रश्न यह उठता है कि इस अनियमितता को आचार्य बलदेव जी कैसे नजरअंदाज कर गये? नैतिकता के मानदण्ड जन-समर्थन के जयघोष में क्योंकर विलुप्त हो जाने दिये गये? क्या पदलिप्सा की चाह इस काण्ड से कहीं जुड़ी हुई नहीं थी? फिर क्या जनता-जनार्दन के विश्वास पर आचार्य बलदेव जी ने फूल चढ़ाने की या उस विश्वास को बनाये रखने की सोची? निसंदेह इसका उत्तर होगा नहीं, क्योंकि जिस निम्नस्तर पर उतरकर, अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए बलदेव जी ने जातीयता को बढ़ाया उससे उनके प्रति लोगों में अविश्वास बढ़ा। बलदेव जी द्वारा गठित सभा की श्री महेन्द्र शास्त्री ने जब सूची मेरे सामने रखी और मैंने एक-एक व्यक्ति का परिचय प्राप्त किया तो मेरा उनसे पहला प्रश्न यही था कि ऐसे व्यक्ति का समर्थन आपने मुझसे किस आधार पर मांगा जो जातीय समीकरणों की गुलामी इस हद तक ढो रहा है? शास्त्री जी का कहना था कि इस असंतुलन को सुधारने की मैंने पूरी कोशिश की, हर क्षेत्र के कर्मठ व परखे हुए लोगों के नाम तक उनको सुझाये लेकिन जिस लावी से वे घिरे हुए हैं उसके चलते मुझे कोई अधिमान नहीं दिया जाता। महेन्द्र शास्त्री के कथन से समझा जा सकता है कि आचार्य बलदेव जी की मानसिकता कितनी तेजी से, गलत दिशा में विकसित हो रही थी। इस पर नोटिस लेते हुए मैंने एक लेख 'राजधर्म' के लिए लिखा जिसका शीर्षक था 'आर्य प्रतिनिधि सभा या जाट सभा।' मैं नहीं जानता कि किन कारणों से श्री जगवीर सिंह ने यह लेख 'राजधर्म' में नहीं छापा। कई महीने बाद जब जगवीर जी ने मुझसे पूछा कि यशपाल जी आपके इस लेख को 'सार्वदेशिक' में छपाने के इच्छुक हैं क्या उनको दे दूं तो मैंने मना कर दिया। उन दिनों 'सार्वदेशिक सभा' आचार्य बलदेव जी के विरोध में थी अत: ऐसे लेखों की उसे आवश्यकता थी। आज उसी तथाकथित सार्वदेशिक सभा की गोद में आचार्य बलदेव जी बैठे हुए हैं और उसी सार्वदेशिक सभा को असली मान रहे हैं जिसके गठन में उनको बुलाया तक नहीं गया था और न ही जिसने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के चुनाव को मान्यता दी थी। आश्चर्य की बात है कि आजकल आचार्य बलदेव जी उस ब्र० राजसिंह के नेतृत्व में चल रहे हैं जिस ब्र० राजसिंह को सब्जी मण्डी स्थित आर्यसमाज जहां के वे सदस्य थे, वहीं से धक्के देकर बाहर निकाला जा चुका है। ऐसा बोदा व्यक्ति कौन से किले फतह करेगा समझा जा सकता है। ये श्रीमान उसी सार्वदेशिक सभा की गोद में जा बैठे हैं जिस सार्वदेशिक सभा ने अपने पिछले चुनाव में इन्हें घास का तिनका तक नहीं डाला था। दयानन्द भवन, रामलीला मैदान से निष्कासित कैप्टन देवरत्नप्रणीत सार्वदेशिक सभा को कैसे-कैसे लोग कंधा देने लगे हैं और दिल्ली के किस श्मशान घाट पर ले जा रहे हैं, कौन क्या कह सकता है?

यह उदाहरण हमें इसलिए देना पड़ा कि जो लोग आर्यसमाज को नेतृत्व देना चाहते हैं वे देखना तक नहीं चाहते कि उनका नैतिक आधार कितना खिसक चुका है, क्षरित हो चुका है? क्या आर्य जनता इस नेतृत्व पर सहज रूपेण विश्वास कर पायेगी? जो लोग संवाद से परहेज करते हैं क्या वे सड़क पर उतर कर या अदालत के दरवाजे खटखटा कर अपनी ऋषि-भक्ति का परिचय दे सकेंगे? आर्य जनता पिछले पचास साल से चली आ रही इस कवायद से ऊब चुकी है और चाहती है कि संवाद, सौहार्द, शालीनता, एकता के मानदण्डों को मजबूत करने वाली सोच आर्यसमाज में पैदा हो जिसके लिए स्वामी अग्निवेश जी पिछले कुछ अर्से से संघर्षरत हैं। इस सोच को अपनाने वाले लोगों के हाथ में ही आर्यसमाज का भावी नेतृत्व रहेगा। नैतिकता की खाल ओढ़े जो लोग गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के पट्टों पर सफाई दे रहे हैं उन्हें सफाई देने से पहले इन प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए था जो नहीं दिया गया कि :-

१. श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को मुख्त्यारे आम पंजीकृत कराने की जो प्रक्रिया आचार्य बलदेव, जिलेसिंह व रिसालसिंह नम्बरदार ने अपनाई क्या वह सभा के विधान के अनुसार है? विधानानुसार यह कार्यवाही सभामंत्री के अधिकार क्षेत्र में आती है जबकि सभामंत्री को इसका आभास तक नहीं होने दिया। आखिर क्यों?

२. गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की भूमि को पट्टों पर देने के संबंध में आचार्य बलदेव जी बारबार अपना ब्यान क्यों बदलते रहे? भूमि को पट्टों पर उनकी जानकारी के बिना और उनकी मनाही के बावजूद कैसे दे दिया गया?

३. श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री के कथनानुसार पट्टे आचार्य विजयपाल और सत्यवीर शास्त्री के कहने पर दिये गये। आचार्य बलदेव जी ने इन दोनों के विरुद्ध क्या कार्रवाई की?

४. आचार्य बलदेव जी ने श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को जो मुखत्यारनामा आम ९ अक्टूबर २००३ को लिखकर दिया उसकी संपुष्टि अन्तरंग सभा से क्यों नहीं कराई? कुलड़ी में गुड़ फोड़ने की यह कोशिश किस नीयत का परिचय देती है?

५. गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की भूमि के जो पट्टे दिये गये उनकी संपुष्टि भी अन्तरंग सभा में क्यों नहीं कराई गई?

६. जो पुराना मुखत्यारे आम अनेक वर्षों से सभा की सर्विस में विद्यमान है उसके रहते श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री को मुखत्यारे आम क्योंकर बनाया गया और पुराने मुखत्यारे आम की सेवाएं क्यों नहीं ली गई?

७. नायब तहसीलदार का ८ कनाल (एक किल्ला) का पट्टा अपनी पत्नी श्रीमती सरीन के नाम कराना किस बात का संकेत करता है?

८. ७ मई को कोर्ट में केस डालना और ८ मई को ही रोहतक में पंचायत बुलाकर अवैधानिक पट्टों को वैधानिक घोषित करना क्या संकेत देता है?

९. 'सर्वहितकारी' (२१ मई २००५) के अंक में 'मुखत्यारनामा आम' के सम्बन्ध

में जो विवरण चित्र सहित प्रकाशित हुआ है और इस पर जो आपत्तियाँ उठाई गई हैं उन पर आचार्य बलदेव जी का क्या स्टैंड है?

१०. पहले किए हुए पट्टों की स्थिति और आचार्य बलदेव जी के समय किए पट्टों की स्थिति का एक तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करते हुए यह संकेत देने का जो प्रयास किया गया है कि हम पूर्व अधिकारियों से अधिक पारदर्शी, ईमानदार व सभा के शुभचिन्तक रहे हैं उसका क्या औचित्य है? पहले किए हुए पट्टों की तारीख क्यों नहीं दी गई? क्या इस अन्तराल में महंगाई नहीं बढ़ी? पूर्व अधिकारी क्या स्वामी इन्द्रवेश या अग्निवेश गुट के व्यक्ति थे? क्या वे पूर्व अधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ही अधिकारी नहीं थे? यदि उन्होंने कोई अनियमितता दिखाई थी तो बाद के अधिकारियों ने उनके विरुद्ध क्या कार्यवाई की? वर्तमान में जिस मूल्य पर पट्टे दिये गये हैं, भविष्य के अधिकारी उससे अधिक मूल्य पर यदि पट्टे देंगे तो क्या वर्तमान अधिकारी बेईमान माने जायेंगे? फिर इस बात का क्या सबूत है कि वर्तमान में पट्टे को देते समय कमीशन नहीं खाई गई? लोग तो इन पट्टों को लेकर शंकाएं भी उठाने लगे हैं और अन्य अनियमितताओं को देखते हुए इन शंकाओं को एक सिरे से नकारा भी कैसे जा सकता है?

उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर दिये बिना किसी प्रकार का स्पष्टीकरण देना कोई औचित्य नहीं रखता। हमें तो ऐसा लगता है, जैसा कि आचार्य बलदेव जी के पक्ष में लिखे लेखों में मैंने शंका भी जताई थी कि आचार्य जी को सभा संचालन का प्रशासनिक अनुभव नहीं है अतः घाघ लोग उनकी अज्ञानता एवं लापरवाही का नाजायज लाभ उठा सकते हैं, वह शंका आज सत्य बनकर उभर रही है। आचार्य जी ने जितना यश गो सेवा में कमाया था वह समूचा यश उनके सिपहसालारों की महत्त्वाकांक्षाओं एवं बलदेव जी की पदलिप्सा के भेंट चढ़ जायेगा। वे ऐसे चक्रव्यूह में फंसे दिख रहे हैं जिससे निकलना उनके लिए उतना ही कठिन है जितनी मजबूरी उसके भीतर गहराई तक धसने की है। आचार्य बलदेव जी के बारे में विरोधी पक्ष जिस प्रकार की आपत्तियां उठा रहा है उसका सीधा जवाब न देकर जिस प्रकार से गड़े मुर्दे खोदे जा रहे हैं, प्रत्यारोप लगाये जा रहे हैं अथवा झूठी बातें उड़ाई जा रही हैं उससे आचार्य बलदेव जी के पक्ष की कमजोरियां उभर कर सामने आ रही हैं। हम नहीं जानते आचार्य बलदेव जी का इस मुहिम को आशीर्वाद प्राप्त है अथवा नहीं लेकिन इससे उनके पक्ष की निःसारता स्पष्ट झलक रही है। मुझे ऐसे अनेक व्यक्ति मिलते रहे हैं जो आचार्य जी के शुभचिंतक हैं, उन्हें भी इस प्रसंग में आहत होना पड़ रहा है। उन्हें आश्चर्य इस बात को लेकर है कि इतना होने पर भी वे कुर्सी से चिपके हुए क्यों हैं? गलत आदमियों के हाथ की कठपुतली क्यों बने हुए हैं? एक बिगड़े काम को सुधारने के लिए दस नई गलतियां क्यों कर रहे हैं? आचार्य जी की मानसिकता और व्यक्तित्व में आ रहे इस परिवर्तन को वे सहज भाव से स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। गुटबाजी अंधा मोह जहां होगा वहां आचार्य बलदेव जी अपने दामन को कब तक बचाये रख पायेंगे? जिस सार्वदेशिक सभा ने उनके चुनाव को अवैध घोषित किया अवैधता की कोख से जन्मी उस तथाकथित सार्वदेशिक सभा की गोद में जाकर आचार्य जी का बैठ जाना तो उनकी नैतिकता व ईमानदारी पर ऐसा कलंक है जो आसानी से धुलने वाला नहीं है। अब तो उनकी तटस्थता, नीर-क्षीर विवेक के प्रति आग्रह, निर्गुटता सभी कुछ पानी में बह गया है, मिट्टी में मिल गया है। स्वामी अग्निवेश उनकी सभा को मान्यता देने को तैयार थे, उनके साथ मिलकर चलने को तैयार थे लेकिन संघी मानसिकता से घिरे उनके शुभचिन्तकों ने उनको संघी मानसिकता से गठित सार्वदेशिक सभा के यहां गिरवी रख कर अपनी स्वामी भक्ति का परिचय दिया है। इससे हासिल क्या हुआ? दयानन्द मठ पर स्वामी इन्द्रवेश जी का वर्चस्व बना हुआ है, 'सर्वहितकारी' बलदेव गुट के पंजे से निकल चुका है, सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में सभा का विधिवत् गठन हो चुका है। अदालत ने इसक मान्यता दे दी है। इससे समझा जा सकता है कि वे कैसे सलाहकारों से घिरे हुए हैं।

## किन प्रश्नों का जवाब चाहिए

प्रो० शेरसिंह ने यदि यह बयान दिया है कि सन् २००१ के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव ही नहीं हुए हैं तो उसमें झूठ क्या कहा है? जिस सभा के आचार्य बलदेव जी डेलीगेट ही नहीं थे उस सभा का उनको प्रधान बना देना क्या नैतिकतापूर्ण था? फिर जन-विश्वास व जन-समर्थन की धज्जियां उड़ाते हुए प्रतिनिधि सभा को चापलूसों की सभा बना देना क्या नैतिकतापूर्ण था? फिर उस सार्वदेशिक सभा को अपने प्रतिनिधि भेजना नैतिकता पूर्ण था जिसके चुनाव को अदालत में चुनौती मिली हुई थी और उसके पक्ष में अभी फैसला नहीं हुआ था? आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा में जब दूसरी बार आचार्य बलदेव जी प्रधान बने तो उनके चुनाव को कै० देवरत्न वाली सार्वदेशिक सभा ने अवैध घोषित कर दिया था। जो प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा के लिये भेजे गये उन्हें अस्वीकार कर दिया गया। उस सार्वदेशिक सभा (कैप्टन देवरत्न प्रणीत) के चुनाव को अस्वीकार करते हुए जब स्वामी अग्निवेश जी ने अपनी सार्वदेशिक सभा गठित कर दयानन्द भवन पर अधिकार कर लिया तो दयानन्द भवन से निर्वासित व सहयोग न देने वाली सार्वदेशिक सभा से आचार्य बलदेव जी गठजोड कर रहे हैं। क्या यह नैतिकतापूर्ण है? स्वामी अग्निवेश को आचार्य बलदेव जी कम्युनिस्ट मानते हैं तो संघी मानसिकता का पोषण करने वाले आचार्य जी के क्या लगते हैं कि उनसे बार-बार अपमानित होने पर भी उनके पैरों में जा बैठे हैं? आखिर किस लालच से? जिस नेतृत्व ने पिछले पचास वर्षों में आर्यसमाज को रसातल में पहुंचा दिया उस नेतृत्व में आचार्य बलदेव जी को कौन-सी विशेषताएं नजर आ रही हैं? क्या इस सार्वदेशिक सभा से मान्यता प्राप्त करके वे अपने चुनाव को अब वैध घोषित कराना चाहते हैं? इन तमाम अनैतिकताओं के चलते यह कहना कि प्रो० शेरसिंह जी की याददाश्त जवाब दे चुकी है कितना हास्यास्पद है? जिस चुनाव का आधार ही अनैतिकता से ओतप्रोत हो, पारदर्शिता से शून्य हो क्या उसे इस कारण मान्य मान लिया जाये कि वह चुनाव सर्वसम्मति से होने के कारण मान्य है? स्वामी अग्निवेश जी का चुनाव भी तो सर्वसम्मति से हुआ था, फिर वह आपको स्वीकार्य क्यों नहीं हुआ? जबकि वह कहीं अधिक पारदर्शी चुनाव था।

## स्वामी इन्द्रवेश जी पर बेहूदा आरोप

स्वामी इन्द्रवेश जी के बारे में कहा गया कि वे हरयाणा सभा में फैले भ्रष्टाचार को खत्म करने से पूर्व अपने ऊपर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों से पहले मुक्त हों। उन पर आरोप लगाया गया है कि उन्होंने कुलपति की कोठी, प्रोफेसरों के क्वार्टर और गुरुकुल कांगड़ी की जमीन बेची है। इस प्रसंग को उठाने से पूर्व आरोपकर्ताओं को निम्न प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए :-

१. गुरुकुल कांगड़ी की जिस जमीन को बेचने की बात की जाती है उस जमीन का खसरा नं० ५५३, ५५४, ५५५ तथा ५५६ है। यह १४४ बीघे जमीन है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने १९ मार्च १९९१ में प्रस्ताव सं० १६ के अनुसार उपर्युक्त भूमि को बेचने का निर्णय लिया। इस प्रस्ताव के आधार पर उक्त सभा के मंत्री ने २२.१०.९१ को २४२६५ रुपये बीघा की दर से कुल ३५ लाख रुपये में बेचने का अनुबन्ध किया और साढे तीन लाख रुपयों की राशि के तीन ड्राफ्ट तथा एक चैक क्रेता से प्राप्त किये। उक्त चार खातों की कुल जमीन १४४ के बजाय १९८ बीघा थी लेकिन ५४ बीघे अधिक जमीन का कब्जा अनुबन्धकर्ताओं को पंजाब सभा के पदाधिकारियों ने दिया। इस पर विश्वविद्यालय तथा आर्य विद्या सभा ने आपत्ति की लेकिन आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने अनुबन्ध रद्द नहीं किया। इस प्रकार १९८ बीघे जमीन जो १९९१ में ही बेची जा चुकी थी उसे स्वामी इन्द्रवेश जी ने कैसे बेच दिया?

२. चूंकि उक्त भूमि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने यू०जी०सी० को अपने खाते में दिखाकर डीमड विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त की हुई थी और इस जमीन के जाने से विश्वविद्यालय की मान्यता खत्म हो सकती थी इसलिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने इसके विरुद्ध याचिका डाल इसके बेचने पर रोक लगवा दी थी। सन् १९९३ में पंजाब सभा के मंत्री ने अनुबन्धकर्ता के पक्ष में इस जमीन का अनिश्चितकालीन अनुबन्ध किया क्योंकि पहले अनुबन्ध केवल दो वर्ष का था। समय बढाने के पीछे पंजाब सभा की यह मंशा थी कि अनुकूल अवसर आने पर इसकी रजिस्ट्री क्रेता के पक्ष में करा दी जायेगी। विश्वविद्यालय द्वारा डाली गई याचिका पर निर्णय में कोर्ट द्वारा विलम्ब होता रहा। इन तथ्यों को प्रकाश में न लाकर स्वामी इन्द्रवेश जी पर जमीन बेचने का अरोप लगाना किस दर्जे की बेहूदगी है इसका निर्णय आरोपकर्ता स्वयं लें।

३. आर्य विद्या सभा का बैठक ९.५.१९९८ के प्रस्ताव संख्या ३ के अनुसार १४४ बीघे जमीन के विक्रय हेतु हरिद्वार निवासी श्री राकेश गोयल के साथ बातचीत करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। एक मामला अदालत में डालकर इस जमीन को आर्य विद्या सभा के नाम चढ़वाया गया। आर्य विद्या सभा ने पंजाब से अनुरोध किया कि १९९१ में किये गये अनुबन्ध को रद्द करे लेकिन उसने यह अनुरोध नहीं माना और न ही आर्य विद्या सभा के अस्तित्व को माना क्योंकि वही अपने को पूरे गुरुकुल का स्वामी मानती थी, अब भी माने हुए है। वास्तविकता यह है कि यदि विद्या सभा यह कदम न उठाती तो यह जमीन ३५ लाख में जाती और सारा पैसा पंजाब सभा डकार जाती जैसे कि इससे पूर्व जमीनें बेचकर एक करोड़ चालीस लाख रुपये डकार चुकी थी। यह राशि गुरुकुल की जिन महत्त्वपूर्ण सम्पत्तियों को बेचकर पंजाब सभा ने बटोरी थी वे सम्पत्तियां थीं - १. शंकर आश्रम की भूमि, २. फार्मेसी के सामने वाली भूमि, ३. फार्मेसी के पीछे वाली भूमि, ४. हरिराम इण्टर कॉलेज के पास की भूमि, ५. शिवा होटल वाली भूमि, ६. रोटरी रंगशाला वाली भूमि, ७. हरिराम इण्टर कॉलेज के पीछे वाली भूमि. ८. हरिराम इण्टर कॉलेज के मैदान के पास वाली भूमि, ९. मेरठ स्थित दुकान और १०. बड़े परिवार के पीछे की कृषि भूमि इत्यादि।

इस प्रकरण पर पहले भी स्पष्टीकरण कई बार दिये जा चुके हैं। आज यदि बलदेव जी व उनकी जुण्डली स्वामी इन्द्रवेश पर आरोप लगाती है तो वह क्यों नहीं सोचती कि इन्द्रवेश जी किस सभा के प्रतिनिधि की हैसियत से आर्य विद्या सभा में प्रतिनिधित्व कर रहे थे? वे लोग क्यों नहीं आरोप लगाने वालों को दिखाई

वे जिन्होंने उक्त फैसला किया था? यदि इन आरोपियों में दम-खम है तो वे क्यों नहीं पंजाब सभा द्वारा डकारी गई एक करोड़ चालीस लाख रुपये की राशि गुरुकुल कांगड़ी को वापस दिलवाते? यदि कथित प्रकरण में किसी ने कमीशन खाई होगी तो उसमें स्वामी इन्द्रवेश कम से कम नहीं थे क्योंकि जमीन बेचने का फैसला लेने वाले तो दूसरे लोग थे। आरोपकर्ता आज जिस कथित सार्वदेशिक सभा की गोद में बैठे है वह सभा कौन सी पाक-साफ है। जमीनें बेचने का धंधा तो इन्होंने ही शुरू किया। घटकेश्वर गुरुकुल, बंजारा हिल (हैदराबाद), छत्तीसगढ़ के ग्यारह गाँवों की जमीन इसी सार्वदेशिक सभा ने बेची थी और घोटाला किया था। आचार्य बलदेव जी या उनके मंत्री इन सम्पत्तियों की राशि क्या वापस दिलवा सकते हैं?

आरोपी यह भी कह रहे हैं कि स्वामी इन्द्रवेश जी में साहस है तो ७० लाख रुपये राकेश गोयल को वापस कर इस जमीन को वापस लादें। वे ये मांग पंजाब सभा से भी क्यों नहीं करते कि बेची गई जमीनें वापस लौटायें? जहां तक मुझे पता है स्वामी इन्द्रवेश जी मन से यही चाहते हैं कि अवसर मिलने पर १४४ बीघे जमीन गुरुकुल को वापस करायें। स्वामी इन्द्रवेश जी के पश्चात् भी आर्य विद्या सभा का अस्तित्व बना रहा है और आचार्य बलदेव जी तथा अन्य इसकी बैठकों में भाग लेते रहे हैं। तब उन्होंने यह पुण्य लाभ स्वयं ही अर्जित क्यों न कर लिया? आरोप लगाने वाले शायद यह नहीं जानते कि क्रेता यदि बयाना राशि दे देता है और विक्रेता बाद में समझौते से मुकर जाता है तो क्रेता पूरी रकम कोर्ट में जमा करके जमीन की रजिस्ट्री अपने पक्ष में करा सकता है। ऐसी स्थिति में ये आरोपकर्ता क्या करेंगे तनिक बतलायें तो सही?

विवेक और ईमानदारी का तकाजा है कि वास्तव में जिसने अपराध किया है सजा उसे दी जाये। स्वामी इन्द्रवेश जी इस प्रकरण में कहीं दोषी नहीं है। संगठनों में सामूहिक जिम्मेदारी निभानी ही पड़ती है उसी का शिकार बनने पर षड्यंत्रकारियों ने उन्हें बदनाम करने की साजिश रची थी जो अब विफल होती जा रही है। जब तक गुरुकुल कांगडी की परिसम्पत्तियों पर पंजाब के स्वामित्व को चुनौती नहीं दी जायेगी और सारी भूमि आर्य विद्या सभा के नाम ट्रांसफर न होगी तब तक जमीन के घोटाले चलते ही रहेंगे। जरूरत इस कानूनी पेंच को भी समझने की है। स्वामी इन्द्रवेश जी पर कुछ अन्य आरोप लगाये गये हैं । इनके बारे में जांच-पड़ताल करने पर यह पाया गया है कि :-

१. बिना नाम लिये दो संन्यासियों द्वारा आर्य महासम्मेलन के नाम पर अमरीका के डॉ० सुखदेव सोनी से पच्चीस हजार डालर (बारह लाख से अधिक) लाने की जो अफवाह उड़ाई जा रही है उसे नीचता की पराकाष्ठा ही माना जा सकता है। आरोपियों की नीयत साफ होती तो उन दो संन्यासियों का नाम भी लिया जाता जो नहीं लिया गया। डॉ० सुखदेव सोनी का खुद का लिखित बयान भी इस प्रकरण में प्रकाशित किया जा सकता था जो नहीं किया गया। यह आर्य महासम्मेलन स्वामी ओमानन्द सरस्वती के कालखण्ड में सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रस्तावित था जो उनके पद से हटने पर नहीं हो सका था अतः स्वामी ओमानन्द स्वयं भी इस विषय में वक्तव्य दे सकते थे जो उन्होंने कभी नहीं दिया अतः जिस बात का सिर-पैर हो ही नहीं उसे ओच्छी हरकत की संज्ञा ही दी जा सकती है। ऐसे दुष्प्रचारियों को अपने गिरेवान में स्वयं झांककर देखना चाहिए कि उनमें कितना आर्यत्व शेष रह गया है। उनमें यदि साहस है तो उन दोनों संन्यासियों का नाम लेकर और प्रमाण प्रस्तुत करके आरोप लगायें तब दूध का दूध और पानी का पानी सबको नजर आयेगा। पारस्परिक ईर्ष्या व चरित्र हनन की मानसिकता पालने वाले लोग ही इस तरह की अफवाहें फैलाने में माहिर होते हैं और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह शैली संघी मानसिकता से ग्रसित लोगों की ही शैली है।

२. सार्वदेशिक सभा के कार्यालय पर अधिकार करके स्वामी ओमानन्द जी के अपमान का बदला लेने संबंधी बयान के संदर्भ में यह बात उठाई गई है कि वास्तव में यदि ऐसा होता तो स्वामी अग्निवेश की बजाय स्वामी ओमानन्द के किसी शिष्य को प्रधान बनाया जाता। इस विषय पर हम यह कहना चाहते हैं कि जिस बैठक में स्वामी अग्निवेश का सर्वानुमति से अध्यक्ष पद के लिए चुनाव हुआ था तब स्वामी ओमानन्द के शिष्य कहां थे? आमंत्रित करने व मिन्नत खुशामद करने पर भी ये लोग उस सभा में क्यों नहीं आये थे? तब तो ये लोग तटस्थ रहने का ढोंग रचे हुए थे और अब ये शिष्य गण कैप्टन देवरत्न की सार्वदेशिक की जी-हजूरी बजा रहे हैं। ऐसी विश्वसनीयता वाले बदनीयत लोगों को सार्वदेशिक सभा का अध्यक्ष बनाकर क्या गुल खिलते कोई भी समझदार व्यक्ति समझ सकता है फिर ओमानन्द जी के इन शिष्यों की करतूतें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माध्यम से स्वतः जग-जाहिर हो रही हैं। उनकी जो शिकायतें स्वामी अग्निवेश जी के पास पहुंची हैं व पहुंच रही हैं वे भी इन्हीं लोगों के साथ काम कर रहे थे। यदि घोटाले न होते तो ये लोग उनका साथ छोड़कर स्वामी अग्निवेश जी के पक्ष में क्यों आते? स्वामी ओमानन्द जी का गढ़ गुरुकुल झज्जर रहा है और गुरुकुल झज्जर का पोस्टमार्टम यदि किया जाये तो अनियमितताओं का भारी विस्फोट हो जायेगा। क्या गुरुकुल झज्जर के संचालक-गण चाहेंगे कि ऐसा हो?

३. आरोप लगाया गया है कि जो लोग २०-२५ साल तक स्वामी ओमानन्द के विरुद्ध जहर उगलते रहे, उनका चरित्र हनन करते रहे वे आज किस मुंह से उनके प्रति हमदर्दी दिखा रहे हैं? इस पर हमारा कहना यह है कि हमदर्दी इस कारण दिखाई जा रही है कि स्वामी ओमानन्द जी की तरह ही स्वामी अग्निवेश जी भी कैप्टन देवरत्न वाली सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाये गये गन्दे अभियान का शिकार रहे हैं। अब यदि वे हमदर्दी न दिखायें तो क्या आचार्य बलदेव जी की तरह उनकी गोद में जाकर बैठ जायें? आचार्य बलदेव जी भी स्वामी ओमानन्द जी के शिष्य रहे हैं और यह शिष्यत्व कैसा रूप ग्रहण कर चुका है यह जानकर तो मेरी लेखनी भी लज्जा महसूस कर रही है।

अब रही २०-२५ वर्ष तक स्वामी ओमानन्द जी के विरुद्ध जहर उगलने वाली बात। मैं १४-१५ साल से 'राजधर्म' से जुड़ा हुआ हूँ। 'राजधर्म' के किस अंक में स्वामी ओमानन्द के विरुद्ध जहर उगला गया है कोई आकर दिखा दे। इसके विपरीत स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश की यही सोच काम करती रही कि आर्यसमाज में एकता और सौहार्द का वातावरण स्थापित करके जो उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं वे आपस में संघर्षरत होकर, एक दूसरे के विरुद्ध विष वमन करके, एक दूसरे का चरित्र हनन करके हासिल नहीं की जा सकतीं। व्यक्तिगत रूप से मैं इस बात का साक्षी हूँ कि इस सोच को विकसित करने में स्वामी इन्द्रवेश जी और अग्निवेश जी बहुत सतर्क, संयमी एवं सहनशील रहे हैं। स्वामी ओमानन्द जी को सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनाने में भी इसी भावना से स्वामीद्वय ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी तथा लगभग एक दर्जन अपने समर्थक प्रतिनिधियों को स्वामी ओमानन्द जी के समर्थन के लिए पाबन्द किया था।

एक समय था जब हरयाणा में स्वामी ओमानन्द, पं० जगदेवसिंह सिद्धांती और प्रो० शेरसिंह जी त्रिमूर्ति के रूप में पूज्य थे। इनमें से प्रो० शेरसिंह जी आज जीवित हैं और उनके विरुद्ध ही सर्वाधिक जहर उगला जा रहा है। इस प्रक्रिया को अंजाम देकर आर्यसमाज के इतिहास का कौन-सा अध्याय लिखा जा रहा है इस पर हुडदंगी खुद विचार करें। लेकिन स्थिति यह है कि वे लोग विचार करने, आत्ममंथन करने की स्थिति में हैं ही नहीं क्योंकि इन बिगडैल घोड़ों की लगाम तो संघियों के हाथ में है और स्वार्थ में ये लोग इतने अन्धे हो चुके हैं कि शिष्टता भी उनके पास से गुजरने में हिचकिचाती है। उनको इस बात की जरा भी परवाह नहीं कि वे जो गुल खिला रहे हैं वे आर्यसमाज के इतिहास में काले पृष्ठों के रूप में दर्ज होंगे और भावी पीढ़ियाँ उनके नाम पर थूका करेंगी। आर्यसमाज के इस संक्रमण काल में जिस धैर्य, संयम, शालीनता, गम्भीरता, दूरदर्शिता, पारस्परिक संवाद और नीर-क्षीर-विवेक की आवश्यकता है उसका पालन सिवाय स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व के और कौन कर रहा है? सामूहिक जिम्मेदारी का तकाजा तो यह है कि हर संभव तरीके से आर्यसमाज की अस्मिता की रक्षा हो लेकिन जो हो रहा है वह अपनी-अपनी कुर्सियों को बचाने के लिए हो रहा है, उन पर चिपके रहने के लिए हो रहा है और यह होना कुछ ऐसा है कि नापाक लोगों से नापाक गठबंधन करने तक में संकोच नहीं किया जा रहा। ऐसी सोच पर लानत ही भेजी जा सकी है।

स्वामी इन्द्रवेश जी और अग्निवेश जी की सोच क्या रही है इसका प्रमाण वे संवाद गोष्ठियाँ देती हैं जो उन्होंने चण्डीगढ़ और नई दिल्ली में आयोजित की थीं और जिनमें सभी पक्षों को सादर आमंत्रित किया गया था। यह मानकर चलना कि स्वामी अग्निवेश जी ने गुण्डों का सहयोग प्राप्त कर सार्वदेशिक भवन पर कब्जा किया है कतई निराधार है। सार्वदेशिक सभा में बैठे नपुंसक नेतृत्व को हटाने की आवाज तो उस सभा में उठ चुकी थी जिसमें स्वामी अग्निवेश जी को प्रधान चुना गया था। सभा कार्यालय का प्रबंधन हाथ में लेने में रंचमात्र भी हाथापाई या गालीगलौच नहीं हुआ और न ही इसके विरोध में कोई बड़ा प्रदर्शन, धरना ही हुआ। यहां तक कि जो स्टाफ वहां काम कर रहा था उसने पूरा सहयोग दिया और आज भी वही स्टाफ वहां काम कर रहा है। बाद में श्री राजसिंह के नेतृत्व में तब प्रदर्शन हुआ जब एक सांठ गांठ के तहत उसे सब्जबाग दिखाये गये। यह प्रदर्शन भी टॉय-टॉय फिस होकर रह गया। श्री राजसिंह आज जिन गरम तेवरों में स्थिति को बिगाड़ रहे हैं उसके नतीजों का उन्हें खुद ही पता नहीं कि वे कितने संगीन हो सकते हैं और आर्यसमाज को उनसे कितनी हानि पहुंच सकती है? उनके लिए हम परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना कर सकते हैं कि जोश के साथ-साथ उन्हें होश भी बख्शे। युवा-शक्ति ही यदि राह भटक जायेगी तो समझा जा सकता है कि आर्यसमाज का भविष्य क्या होगा?

४. एक आरोप यह है कि स्वामी अग्निवेश जी ने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के २००० वर्ग गज भवन पर तथा आसापास की जमीन पर कब्जा कर रखा है। इसी तरह २५० कब्जे मजदूरों के करा रखे हैं जिनका किराया भी नहीं आता। सच्चाई यह है कि स्वामी अग्निवेश जी ने यह भवन मुक्त बाल बंधुआ मजदूरों को पढ़ाने व कुछ धंधा सिखाने के लिए किराये पर लिया हुआ है। स्वामी ओमानन्द जी के समय में इसका किराया बढ़ाया भी गया था और बाकायदा प्रतिनिधि सभा हरयाणा

को इसका किराया दिया जाता रहा है। अब अवैध तरीके से सत्तासीन हुए नेतृत्व को यदि किराया नहीं दिया गया तो इसमें स्वामी अग्निवेश जी का क्या दोष है?

इस सबके विपरीत एक कानूनी तथ्य यह है कि १९८०-८१ में स्वामी शक्तिवेश जी ने एक प्रबन्ध समिति गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा इससे जुड़ी जमीन के प्रबंधन के लिए गठित की थी तथा स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश जी के विरुद्ध बगावत का बिगुल बजाकर वे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के सर्वेसर्वा बन बैठे थे। स्वामी शक्तिवेश जी ने आर्य प्रतिनिधि पंजाब से गुरुकुल व उसकी भूमि का ९९ साल का पट्टा भी करवा लिया था। सन् १९९० तक अर्थात् स्वामी शक्तिवेश जी की हत्या तक यह स्थिति बनी रही। उनकी हत्या के बाद प्रबन्ध समिति निष्क्रिय रही तथा हरयाणा सभा ने गुरुकुल का कब्जा ले लिया। *जहां तक गुरुकुल प्रबंध समिति की वर्तमान* स्थिति की बात है इस समय इसके अध्यक्ष जगवीरसिंह जी, मंत्री विरजानन्द जी और प्रबंधक प्रो० श्योताजसिंह जी है। किन्तु वास्तविकता यह है कि इन लोगों ने कोई भी पट्टा नहीं काटा यह बात दावे के साथ कही जा सकती है। इन्होंने डंके की चोट पर कहा है कि यदि एक इन्च जमीन का पट्टा उनके द्वारा किया हुआ सिद्ध कर दे तो वे बड़ी से बड़ी सजा भुगतने को तैयार हैं। विचित्र स्थिति यह है कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की प्रबंधक समिति पर तो श्री जगवीर जी व प्रो० श्योताजसिंह का अधिकार है। लेकिन गुरुकुल व उसकी जमीन पर कब्जा श्री ओमप्रकाश चौटाला के हस्तक्षेप से आचार्य बलदेव व उनकी मण्डली का बना हुआ है जबकि कोर्ट ने इनके विरुद्ध स्टे लगा रखा है। इस अदालती स्टे की परवाह न करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा ने हरयाणा सरकार की मदद से अपना कब्जा ही नहीं बनाये रखा बल्कि उसने अनके पट्टे भी काटे। पट्टे काटने में जो बेईमानी हुई है उसका जीता जागता उदाहरण है, उस नायब तहसीलदार की पत्नी को एक एकड़ जमीन (जिसकी कीमत लगभग पांच करोड़ रुपये है) कोड़ियों के भाव लीज पर दी गई जिसने सारे अवैध पट्टों पर हस्ताक्षर किए। अदालती आदेश की धज्जियाँ उड़ाकर गैर-कानूनी काम करने वाली प्रतिनिधि सभा अब स्वयं अदालत की शरणागत होकर अपनी रक्षा करने को आतुर है। आखिर यह कैसी विडम्बना और कैसा आर्यत्व है? क्या इसी का नाम नैतिकता है? क्या इसी नैतिकता के तकाजे से स्वामी अग्निवेश जी से भवन का किराया वसूला जायेगा नहीं तो उन्हें बदनाम किया जायेगा? स्वामी अग्निवेश और इन्द्रवेश जी का गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रबंध में कभी कोई हस्तक्षेप नहीं रहा। अतः गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रकरण में इनका नाम उछालना व उन्हें बदनाम करना बेमानी है। २५० कब्जे यदि मजदूरों ने कर रखे हैं तो देखा जाये कि वे किराया क्यों नहीं देते? इसमें कमजोरी आर्य प्रतिनिधि हरयाणा की रही है। जब वह पट्टों को बेच सकती है तो इन कब्जों को हटाना या मजदूरों से किराया लेना किसका दायित्व है। सभा यदि खुद अवैध होगी तो उसे किराया देगा भी कौन? श्री राजसिंह जी सार्वदेशिक सभा भवन जबरन खाली कराने के मंसूबे बांधे घूम रहे हैं। वे क्यों नहीं जाकर इन २५० कब्जों को छुडवाते? इसी प्रकरण में उनके बल का पता आर्यजगत् को लग जायेगा।

जहां तक भगत मंगतूराम जी द्वारा पट्टों का किराया वसूलने की बात है तो पहले तो स्वयं हरयाणा सभा ने उनको इस काम पर लगा रखा था और वे बाकायदा सारा धन सभा को देते रहे। किन्तु जब गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की प्रबन्ध समिति में भक्त मंगतूराम जी आये तो उन्हें तत्कालीन चौटाला सरकार की मदद से गुरुकुल से निकालकर बलदेव जी आदि ने कब्जा कर लिया था फिर उन्हें दोष देना कितना उचित है?

कब्जाधारियों को बेदखल कराने के लिए जो मुकदमे प्रबन्ध समिति की ओर से लड़े जा रहे हैं उन पर होने वाला व्यय मात्र ही प्रबन्ध मिति ने किराये के रूप में वसूला है। इसकी जिम्मेदारी प्रबन्ध समिति की है और वह इसके लिए हिसाब देने को सदैव तैयार है। लेकिन पट्टों को लेकर जो लाखों रुपये के घोटाले हरिश्चन्द्र शास्त्री के माध्यम से कराये गये हैं उसकी जवाबदेही किस पर है? कमीशन में रुपये खाने के जो आरोप लग रहे उस रुपये की वसूली कब, किससे व कैसे होगी? यदि कमीशन नहीं खाई गई है तो क्या इसकी जिम्मेदारी लिखित में सभा लेने को तैयार है और इस आशय का हल्फनामा अदालत में पेश करने को तैयार है? इस घोटाले का जवाब यदि यह कहकर दिया जाता है कि गुरुकुल की जमीन में भी कमीशन खाई गई थी तो यह कोई जवाब नहीं है। मेरा तो मानना है कि इन दोनों काण्डों की जांच सी.बी.आई. से कराइ जानी चाहिए। आर्यसमाज की परिसम्पत्तियां किसी की अपनी जायदाद नहीं है कि उनके दोहन की स्वीकृति किसी व्यक्ति को दी जाये। नये पुराने घोटालों में जो भी जीवित या मृतक व्यक्ति दोषी पाये जायें उनके लिए आर्यसमाज की वेदी बन्द होनी चाहिए। लेकिन यह होगी तभी जब सार्वदेशिक सभा सशक्त होगी और सभी प्रतिनिधि सभाओं का सक्रिय सहयोग उसे प्राप्त होगा अन्यथा मौजूदा स्थिति का लाभ उठाते हुए इस तरह के घोटाले अवसरवादी लोग करते रहेंगे और उन पर शिकंजा नहीं कसा जा सकेगा। इस स्थिति को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

५. स्वामी शक्तिवेश जी की हत्या के आरोपियों का उल्लेख करते हुए पूछा गया है कि वे लोग किसके निकटतम सहयोगी व शिष्य हैं? आरोपियों का जब नामोल्लेख ही नहीं किया गया है तो जवाब क्या दिया जाये? आरोपकर्ताओं के पास यदि हत्यारों के संबंध में कोई ठोस जानकारी है तो वह सामने लाई जानी चाहिए। परदे के पीछे से वार करना कायरता की निशानी है। यदि गोपनीयता का तकाजा है तो ये नाम पुलिस को भी दिये जा सकते हैं। स्वामी शक्तिवेश जी का सभाओं तथा व्यक्तियों से मनमुटाव काफी बढ़ गया था ऐसा सुनने में आता है। उनकी हत्या किन परिस्थितियों में किन लोगों द्वारा की गई या कराई गई आज पन्द्रह वर्ष पश्चात् जानना कठिन है। अदालती कार्रवाई में भी कुछ सिद्ध नहीं हो सका तब अब क्या होगा? उन गड़े मुर्दों को उठाकर स्वामी शक्तिवेश को श्रद्धांजलि दी जा रही हो ऐसी बात नहीं है बल्कि मकसद है अपने विरोधियों को बदनाम करना और उस बदनामी से अपने हितों को साधना। ऐसी राजनीति घटिया लोगों की घटिया सोच व संकीर्ण मानसिकता का ही परिणाम है जिससे बचा जाना चाहिए।

६. कैप्टन देवरत्न आर्य और स्वामी इन्द्रवेश जी की रुग्णावस्था का प्रसंग उठाकर एक यह बात कही गई है कि स्वामी इन्द्रवेश जी पदों का लोभ क्यों नहीं छोड़ रहे हैं? हकीकत यह है कि लोग उन्हें नहीं छोड़ना चाहते, उनका नेतृत्व स्वीकार करना चाहते हैं। स्वामी इन्द्रवेश जी मानसिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ हैं अतः उनके अनुभवों का लाभ यदि लोग उठाना चाहते हैं तो इसमें किसी को क्यों ऐतराज होना चाहिए? जहां तक कैप्टन देवरत्न जी की बात है तो जाहिर है कि वे इतनी बड़ी जिम्मेदारी संभालने के योग्य ही नहीं हैं। बात शारीरिक आयोग्यता की नहीं मानसिक आरोग्यता की भी है। देवरत्न जी के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा किस अवनति का शिकार हुई सब जानते हैं। ऐसे गैर जिम्मेदार व्यक्ति का लाभ उठाने को अवसरवादी लोग सक्रिय रहते हैं और यह लाभ विमल वधावन हो या वेदव्रत

शर्मा दोनों ने उठाया है जिनका कि आर्यसमाज में न कोई वजूद कभी रहा है न ही है। तिकड़मबाजी से ये लोग सार्वदेशिक सभा में घुसे और रातों रात आर्यसमाज के ठेकेदार बन बैठे और शकुनि के पासे फैंकने लगे।

७. स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी को घेरते हुए एक आरोप यह लगाया गया है किन्हीं नारायणसिंह ने, जो अपने को स्वामी इन्द्रवेश द्वारा मनोनीत मुखत्यारे आम कहता है, श्रीमती मीनाकुमार पत्नी द्वारकादास, फरीदाबाद के नाम २३ कनाल १८ मरले का ९९ साल का पट्टा कराया। स्वामी इन्द्रवेश के चेले जयवीर आर्य ने १९८६ में मुखत्यारेआम बनकर १२००-१२०० गज के चार पट्टे कराये। गांव नंगला एहसानपुर, फरीदाबाद में ६५ बीघे जमीन अपने प्रिय व्यक्तियों को दी। इन सबका किराया ये लोग खाते रहे और कोई पैसा सभा में जमा नहीं कराया। इन सब आरोपों का एक ही जवाब है कि जब स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की प्रबन्ध समिति में कभी रहे ही नहीं, किसी को मुखत्यारेआम बनाया ही नहीं तो उन पर लगाया गया हर आरोप निराधार है। दूसरे, इस बीच गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में अनेक उतार-चढाव आते रहे और अधिकांश समय तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का अधिकार उस पर रहा। यदि किन्हीं गैर जिम्मेदार लोगों ने बतौर मुखत्यारेआम अवैध पट्टे किये थे तो उन्हें नियमित कराने, उन पर से अवैध कब्जे हटाने व अवैध मुखत्यारेआम के विरुद्ध कार्रवाई करना किसका काम था? इन अनियमितताओं का सिलसिला अभी तक जारी है और तब तक जारी रहेगा जब तक कि सभाओं में तिकड़मबाज व स्वार्थी लोगों को नेतृत्व सौंपा जाता रहेगा। आर्यसमाज की चुनाव प्रणाली को यदि पारदर्शी बना लिया जाये तो ऐसे लोगों से सभाओं को मुक्त रखा जा सकेगा। जिन लोगों को प्रबन्धन का क ख ग नहीं आता और कानून की बारीकियों की समझ नहीं है उन्हें यदि सभाओं का प्रधान या मंत्री बनाया जाता रहेगा तो आर्यसमाज की परिसम्पत्तियों की रक्षा पर खतरा मंडराता रहेगा।

निष्कर्ष रूप में मेरा सुझाव सभी पक्षों से यह रहेगा कि सार्वजनिक रूप से जारी आरोप-प्रत्यारोपों की खुली जंग पर स्थायी नियन्त्रण लगना चाहिए। कारण, आरोपों का ठोस आधार किसी के पास होता नहीं और महज किसी का चरित्र हनन कर अपने स्वार्थ पूरे करना उनका उद्देश्य होता है। इस खुली जंग से एक आम आर्यसमाजी आहत होता है और आर्यसमाज से उसकी आस्था उठ जाती है। जबसे संघी मानसिकता वाले लोगों का प्रादुर्भाव हुआ है और उनका वर्चस्व बढ़ा है तब से आर्यसमाज में ये गतिविधियां तेजी से बढ़ी हैं। स्वामी इन्द्रवेश जी व स्वामी अग्निवेश जी पर जो बेहूदा किस्म के आरोप वस्तुस्थिति को छिपाते हुए लगाये गये हैं और इन आरोपों को व्यापक स्तर पर प्रसारित किया जा रहा उसके विरुद्ध ठोस कानूनी कार्रवाई तथाकथित आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व उसके अधिकारियों पर होनी चाहिए। कहा यह गया है कि जनहित में यह सब किया जा रहा है जबकि यह सारी कवायद अपने पापों पर परदा डालने के लिए और नापाक लोगों से हुए गठबन्धन को पवित्र करार देने के लिए हो रही है।

तथाकथित दूध धुले नापाक चेहरों की इस पैंतरेबाजी में कई लोगों को सच्चाई दिखाई दे रही है जबकि हकीकत कुछ और ही है। यह जंग देवासुर संग्राम का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है अतः इसका हर स्तर पर मुंहतोड़ उत्तर दिया जाना आवश्यक हो गया है। अपने पूरे संसाधनों का उपयोग करते हुए हमें यह जंग हर हालत में जीतनी है और पिछले पांच दशकों से आर्यसमाज की गरिमा से खिलवाड़ करने वाली ताकतों को नेस्तनाबूद कर देना है। जनसंपर्क अभियान चलाकर और प्रत्येक प्रान्त में आर्य महासम्मेलन आयोजित करके हमें इन पथभ्रष्ट ताकतों का मुकाबला करना होगा। इन ताकतों के जितने भी आर्थिक स्रोत हैं उन पर कब्जा करना या उनको बन्द कराना जरूरी हो गया है। सिख गुरुद्वारों पर से महन्तों के कब्जे छुड़वाने के लिए सिंह सभा व अकाली मूवमेंट ने जैसा संघर्ष छेड़ा था वैसा ही संघर्ष इनके विरुद्ध छेड़ने की जरूरत है। आर्यसमाज में घुसे संघी आर्यसमाजी होने का कवच धारण कर अपना खेल-खेल रहे हैं और इसी से आर्यसमाज का बंटाधार हो रहा है। इस आसन्न संकट को समझते हुए ही हमें बिजली बनकर इन अराजक तत्वों पर टूटना होगा। आर्यसमाज के समक्ष जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित है। यह महज सत्ता परिवर्तन का नाटक नहीं है। अतः सतत सावधान व सतत सक्रिय होकर अपना विजय अभियान चलाना होगा। सदस्यता अभियान चलाकर भी इन शरारती तत्त्वों के बुलन्द हौंसलों को पानी का झाग बनाकर दबाया जा सकता है अतः इस अभियान को पूरी तैयारी से यथाशीघ्र चलाना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा को अपनी पत्रिका जल्द शुरू करनी चाहिए और इसके लिए योग्य स्टाफ रखा जाये जो सभी परिस्थितियों को जानता समझता हो। सहयोगी पत्रिकाओं अर्थात् 'सर्वहितकारी', आर्य नीति, मधुरलोक, राजधर्म, आर्यजीवन आदि का सहयोग भी पूरा-पूरा लिया जाना चाहिए। इन सभी मोर्चों के खुलने से आर्यसमाज में सेंध लगा चुके संघी नेतृत्व को निर्णायक चुनौती देकर उन्हें धरती सूंघने पर विवश किया जा सकेगा। आर्यजन जब जाग जाते हैं तो मोर्चे पर मोर्चे स्वतः फतह होने लगते हैं। आर्यजन यहां यह स्पष्ट समझ लें कि आर्यसमाज को हानि पहुंचाने के लिए ही स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश जैसे तेजस्वी, त्यागी एवं तपस्वी संन्यासियों के विरुद्ध झूठे, बेबुनियाद एवं बेहूदे आरोप लगाये जा रहे हैं। किसी भी प्रकार के भ्रम का शिकार होने की वजाय अपनी पूरी ताकत को संगठित करने में लगायें तथा ऐसे सड़ियल मानसिकता वाले लोगों को सिरे से नकार दें।

## अन्तरंग सभा की स्वीकृति के बिना तथा सभा के विधान की उपेक्षा करके तीन मुख्यारेआम और बनाये गये

*** मुखत्यारनामा आम ***

**स्टाम्प - 15-00 रुपये**

**स्टाम्प नं० 30328 तिथि 16-3-2005**

**स्टाम्प वैण्डर आई.डी. मनोचा**

मैं आचार्य बलदेव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा रजिस्टर्ड रोहतक का हूं जो कि मैं अपने होशो हवाश खुद रजामन्दी बिना किसी के सिखाये बहकाये प्रतिज्ञा करता और लिख देता हूं कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की जायदाद सकनी व जरई वाका गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सराय ख्वाजा तह० व जिला फरीदाबाद में स्थित है। जिसकी देखभाल आदि करने के लिये मैं आचार्य विजयपाल पुत्र श्री बलवन्तसिंह निवासी गुरुकुल झज्जर उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा व श्री सत्यवीर शास्त्री पुत्र श्री भगवानसिंह निवासी गढ़ी बोहर तह० व जिला रोहतक मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा व मा० जिलेसिंह पुत्र श्री अर्जुनसिंह निवासी खरक जाटान तह० महम जिला रोहतक पुस्तकाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा को मुखत्यार आम नियुक्त करके अखत्यार देता हूं कि वे उपरोक्त जायदाद की देखभाल हर प्रकार से करे, पट्टा/किराया पर देवे, जर पट्टा वसूल करे, रसीद देवे, पट्टा को पंजीकृत करावे, कब्जा देवे, बाद म्याद पट्टा/किराया कब्जा लेवे, कास्त करावे, कास्त बटाई तिहाई जो भी हो वसूल करे, उपरोक्त कार्यवाही हर तीन मुखत्यारआम मुस्तरकन तौर से करेंगे उपरोक्त जायदाद की बाबत किसी ने कोई मुकदमा कर रखा हो उसकी पैरवी करे, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से कोई मुकदमा करना हो करे, दरखास्त देवे, ब्यान देवे, ब्यान हल्फी देवे, अदालत दिवानी, फौजदारी, माल, पुलिस, अर्थात् जो भी सरकार द्वारा महकमा या अदालत कायम हो, या आगे कायम होवे में पैरवी हर प्रकार से करे, वकील करे, बैरिस्टर करे, सालिस या सरपंच मुकर्रर करे, कोई मुकदमा वापिस लेना हो लेवे, अदालत या महकमा हाये से सम्बन्धित कार्यवाही उपरोक्त तीनों मुखत्यारआम मुस्तरकन व मुलफरदन (अकेला कोई एक) भी कर सकते हैं। मुखत्यारआम के हुये का मुझे स्वीकार होगा और उनके किये का बाध्य रहूंगा। अतः यह मुखत्यारनामा आम लिख दिया है कि सनद रहे आज बुधवार दिनांक 16.3.2005 मुताबिक 24 फागुन साका 1926 राजवीर वसीका नवीस, रोहतक। रजिस्टर नं० 297

| गवाह | मुकीर | गवाह |
|---|---|---|
| परसराम | आचार्य बलदेव | रणवीरसिंह |
| पुत्र श्री जुगतीराम | ह० बलदेव | पुत्र श्री रामपत |
| नि० रामगोपाल कालोनी, रोहतक | | जिला रोहतक |
| ह० परसराम | ह० बलदेव | ह० रणवीरसिंह |

नकल मुताबिक असल है। आचार्य बलदेव

True Photocopy

ह० सब रजिस्ट्रार — यहां हस्ताक्षर

Sub Ragistrar — मोहर अस्पष्ट है

## आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स का निर्वाचन

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स, कमलानगर, दिल्ली-११०००७ के पदाधिकारियों का निर्वाचन रविवार १० जुलाई, २००५ को निर्वाचन अधिकारी श्री धर्मपाल आर्य जी (प्रधान) आर्य केन्द्रीय सभा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान-श्री योगेशकुमार आर्य, मंत्री-श्री नरेन्द्र आर्य (मृगनैनी काजल वाले), कोषाध्यक्ष-श्री विश्वनाथ जी बंका।

## स्वामी रामदेव जी व आर्यसमाज

आज पूरे देश में स्वामी रामदेव जी का डंका बज रहा है क्योंकि आज सारा देश बीमार है। उन्होंने देश की दुखती हुई रग को पकड़ा जिसके कारण आज देश के सभी मरीज उनके पीछे दौड़ रहे हैं। यह उनका सिक्का ज्यादा तो नहीं कुछ दिन और चलेगा। इस देश के लोग जिसके भी पीछे लगते हैं आंख मींचकर लगते हैं। यहां कुछ दिन नलका भी भगवान् रहा। कुछ दिन स्टोव भी भगवान् रहा। भला रामदेव जी तो मनुष्य हैं। यह भी कुछ दिन रहेंगे। किन्तु ऋषि दयानन्द की तरह इनका सिक्का लम्बा नहीं चलेगा। वे स्वामी दयानन्द जी की तरह कोई सुधारक बनकर या संन्यासी बनकर नहीं चमके। केवल एक डॉक्टर बनकर चमके हैं।

उन्होंने अपने इलाज का नाम योग चिकित्सा रखा, यदि योग से ही चिकित्सा करनी थी तो करोड़ों की दवाइयां बना-बनाकर लोगों को क्यों बेच रहे हैं। यदि दवाइयों से ही इलाज करना था तो इसका वैदिक नाम आयुर्वेदिक चिकित्सा का नाम योग चिकित्सा क्यों रखा? लोगों को व्यायाम करवाते हैं। क्या व्यायाम का नाम ही योग है? इनके इस कार्य से बहुत बड़ी हानियां हो रही हैं। लोग व्यायाम को ही योग समझ बैठेंगे और योग को भूल जायेंगे। ना ही योग का कोई प्रयत्न करेगा। दूसरे आयुर्वेदिक चिकित्सा का भी नाम खत्म हो जायेगा। आज देश में इनका सिक्का शिखर में होने के कारण कोई इनकी दवाइयां बेचकर लाखों इकट्ठे कर रहा है। कोई इनके नाम से योग शिविर लगाकर लोगों को भरमा रहा है। जबकि वे जानते ही नहीं कि योग होता क्या है। इनकी अनेक पुस्तकें हैं। मैं पढ़ता नहीं। यदि पढ़ी जायें तो कितनी ही बातें *आर्यसमाज और वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध हैं।* नमूने के तौर पर दे रहा हूं। इनकी एक पुस्तक है प्राणायाम की। उसके पेज नम्बर ५७ पंक्ति नं० १६ में लिखा है **जीव ईश्वर का अंश है।** उदाहरण भी दिया है जैसे पानी समुद्र से उठकर आ जाता है, फिर नदी नालों, झरनों द्वारा बहकर समुद्र में ही मिल जाता है। वाह रे स्वामी चेतन के लिये जड़ का उदाहरण दे दिया। इससे तो आर्यसमाज का सारा का सारा सिद्धान्त ही धराशायी हो जाता है। अब आर्यसमाज को या तो त्रैतवाद को छोड़कर, द्वैतवाद को मानना पड़ेगा या स्वामी रामदेव को छोड़ना पड़ेगा। दोनों एक साथ नहीं चल सकते।

## श्रावणी पर्व बहनों का नहीं ब्राह्मणों का है

मनु महाराज जी ने चार वर्ण बनाकर चारों को चार पर्व दिये। अपना आत्ममन्थन करने के लिये ब्राह्मणों का पर्व श्रावणी, क्षत्रियों का पर्व विजय दशमी, वैश्यों का पर्व दीपावली, शूद्रों का पर्व छरेंडी (फाग)। इसी कारण देश, विदेश की सभी आर्यसमाजों में श्रावणी पर ही ब्राह्मणों द्वारा वेद सप्ताह रखकर वेदप्रचार करवाया जाता है जो कि उचित भी है।

कुछ दिनों से इस पर्व का नाम ही बदलकर श्रावणी से रक्षाबन्धन बना दिया है और कहने लग गये यह बहनों का पर्व है यह बात शतप्रतिशत मिथ्या है मुझे तो यह केवल मातृशक्ति के विरुद्ध उन्हें कायर बनाने का एक षड्यन्त्र लगता है। हर साल यह कह-कहकर कि बहन की रक्षा भाई करेगा-भाई करेगा यानि यह स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकती। इन्हें कायर बनाया जा रहा है।

परमपिता परमात्मा ने जब मातृशक्ति को पैदा किया इनकी रक्षा का दायित्व तीनों को सौंपा जन्म से विवाहपर्यन्त पिता, विवाह से ५० वर्ष तक की आयु तक पति, ५० से मृत्युपर्यन्त पुत्र रक्षा करते हैं। भाई का तो कहीं भी कुछ भी रोल नहीं है। भाई रक्षा कैसे करेगा। बहन अपने स्कूल, कॉलेज में विद्या अध्ययन को चली गई। फिर भाई बेचारा कैसे रक्षा करेगा। दोनों की रक्षा पिता करेगा। जब पढ़कर दोनों आये। बहन विवाह करवाकर अपने घर चली गई। भाई ने अपना घर बसा लिया। वहां भाई बेचारा बहन की कैसे रक्षा करेगा। वहां तो पति ही कर पायेगा। वृद्ध अवस्था में जब पति अपनी ही रक्षा करने में असमर्थ हो जाता है तो उसकी रक्षा पुत्र ही करेंगे। भाई का कहीं भी कोई भी रोल नहीं है। हां, यदि भाई पर विपत्ति आये तो बहन सहायता करे। बहन पर विपत्ति आये तो भाई सहायता करे। यह तो अपना-अपना कर्तव्य है। फिर क्यों हमारी इस मातृशक्ति को कायर बनाया जा रहा है। बहनें यह धागा बांधना छोड़कर अपने को अबला नहीं सबला बनायें।

**-सीताराम आर्य, हिसार**

## गीता-गान

योगी श्रीकृष्ण का अंकित है उपदेश मधुर इस गीता में।
निष्काम कर्म का मिलता है सन्देश मधुर इस गीता में॥
न जन्म आत्मा लेता है न मरता है यह सदा अमर।
न कभी पुराना यह होता, बस तन का चोला है नश्वर॥
न शस्त्र काट इसको सकते, न आग जला सकती इसको।
न पानी इसे गला सकता, न वायु सुखा सकती इसको॥
तू कर्म किए जा फल मत चाह, बस धर्म यही बतलाता है।
जो फल के भय से न कर्म करे, वह जीवित न रह पाता है॥
सब भांति प्रभु की शरण में आ, अनुपम सुख को पाले मानव।
इससे बढ़ शान्ति मुक्ति नहीं, जब चाहे आजमा ले मानव॥
दुनियां के भूले भटकों को यह राह दिखाया गीता ने।
अर्जुन के भ्रम मोह के तम को है दूर भगाया गीता ने॥
फिर आज हमारी नस-नस में बह उठे ज्ञान की वह सरिता।
तब सफल कृष्ण जन्माष्टमी हो और सफल सुशीला की कविता॥

**-सुशीला आर्या, चरखी दादरी (भिवानी)**



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०६
विक्रमसंवत् २०६२-
दयानन्दजन्माब्द १८२

685 पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराञ्चल)





आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१

वर्ष ३२ अंक ३४ २८ जुलाई, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# उड़ीसा में वैदिक चेतना के सूत्रधार : प्रियव्रतदास

❑ डॉ० भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर (राजस्थान)

भारत के पूर्वीय प्रान्तों में आर्यसमाज का प्रचार अपेक्षाकृत कम रहा। स्वामी दयानन्द ने केवल एक बार बंग प्रदेश की यात्रा की थी किन्तु बंगाल की खाड़ी से सटे उड़ीसा (उत्कल) प्रान्त में वे कभी नहीं गये। उड़ीसा में सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद वर्षों पहले श्री वत्स पण्डा नामक सज्जन ने किया था। आज उड़ीसा में अनेक आर्यसमाजें तथा गुरुकुल कार्यरत हैं तथा प्रचुर मात्रा में उड़िया भाषा में आर्यसाहित्य भी सुलभ है। विगत आधी शताब्दी में जिस द्रुतगति से वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार इस प्रान्त में हुआ है उसका प्रमुख श्रेय श्री प्रियव्रतदास को है जो पेशे से इंजीनियर रहे, अपने राज्य की सेवा में वर्षों तक उच्च पदों पर आसीन रहकर जहां उन्होंने अपनी व्यवसायगत क्षमता का परिचय दिया वहां आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में वाणी एवं लेखनी के द्वारा अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। पं० लेखराम के वे सच्चे अनुयायी सिद्ध हुए हैं।

प्रियव्रत बाबू का जन्म १ जुलाई १९३२ को गंजाम जिले के पोलसरा ग्राम में पं० लिंगराज अग्निहोत्री तथा माता उमादेवी के यहां हुआ। 'अग्निहोत्री' के उपनाम से प्रसिद्ध पं० लिंगराज स्वयं वैदिक धर्म में दीक्षित हो चुके थे। प्रियव्रत जी की उच्च शिक्षा पटना तथा लंदन में हुई जहां से उन्होंने सिविल इंजीनियरिंग की उपाधियां ग्रहण कीं। ब्रिटेन में वे कोलम्बो प्लान के अन्तर्गत अध्ययन के लिए गये थे। अध्ययन समाप्ति के पश्चात वे अपने राज्य की अभियांत्रिकी सेवा में प्रविष्ट हुए। मुख्यरूप से सड़क अनुसंधान से जुड़े रहे तथा विश्व सड़क संगठन के लंदन में सम्पन्न अधिवेशन में १९६७ में उन्होंने अपने देश भारत का प्रतिनिधित्व किया। इसी बीच उन्होंने भारत के प्रसिद्ध इंजीनियरों सर एम. विश्वेश्वरैया तथा डॉ० अयोध्यानाथ खोसला की जीवनियां लिखीं। जैसा कि देख चुके हैं प्रियव्रत जी को आर्यधर्म के संस्कार अपने पिता से मिले थे, उन्होंने हिन्दी, संस्कृत का अध्ययन कर वैदिक शास्त्रों का गहन अध्ययन किया और किशोर अवस्था में ही आर्यकुमार सभा के संगठन के द्वारा महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार में लग गये। उनका प्रथम हिन्दी प्रवचन आर्यसमाज कलकत्ता में १९५४ में हुआ। उससे पहले वे पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड तथा पं० बुद्धदेव विद्यालंकार जैसे मूर्धन्य विद्वानों के सम्पर्क में आ चुके थे। पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय के व्यक्तित्व तथा साहित्य ने उन्हें विशेषतया प्रभावित एवं अनुप्राणित किया।

इनका लेखन १९५८ में आरम्भ हुआ जब उन्होंने अपनी मातृभाषा उड़िया में 'वेद मनुष्य कृत नहीं' शीर्षक ग्रन्थ लिखकर वेद की अपौरुषेयता को सप्रमाण सिद्ध किया। इस ग्रन्थ की महत्ता को अनुभव उड़ीसा साहित्य अकादमी ने १९६० में उसे पुरस्कृत किया। कन्हैयालाल मुन्शी द्वारा स्थापित भारतीय विद्या भवन से प्रेरणा लेकर प्रियव्रत जी ने १९६९ में वैदिक अनुसंधान प्रतिष्ठान की स्थापना कर उड़िया भाषा में वैदिक साहित्य के लेखन-प्रकाशन का बहत् अनुसंधान आरम्भ किया। १९७२ से १९७५ की चार वर्ष की अवधि में उन्होंने 'चतुर्वेद सौरभ' शीर्षक से चारों वेदों के सौ-सौ मंत्रों की भावपूर्ण व्याख्या कर चार शतक तैयार किये। विगत ३ दशाब्दों में उनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थों में निम्न उल्लेखनीय हैं-आर्यसंस्कृतिक मूलतत्त्व, चतुर्वेद सूक्ति सहस्रिका (१०००) वैदिक सूक्तियों का संग्रह, वैदिक नित्यकर्म विधि, वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी, वैदिक उपनयन विधि और व्याख्या, आर्यसमाज परिचय, रामायण प्रश्नोत्तरी, महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवनी), २ खंडों में उपनिषद्प्रकाश-इसके अन्तर्गत ईश से लेकर श्वेताश्वेतर उपनिषद् (छान्दोग्य और बृहदारण्यक को छोड़कर) पर्यन्त उपनिषदों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। उनके अन्य ग्रन्थ हैं-मोरा पिता: मोरा गुरु, लाला लाजपतराय ओ आर्यसमाज, पातञ्जल योगदर्शन, मनुस्मृति के आर्ष श्लोकों की व्याख्या सहित, उन्होंने शुद्ध मनुस्मृति का संस्करण तैयार किया। उड़िया के अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजी में भी कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। यथा-आर्यसमाज एण्ड फ्रीडम मूवमेंट, ह्वाट आर दि वेदाज आदि। उड़िया में वैदिक साहित्य की रचना का यह अनूठा प्रयास था।

उत्कल प्रान्त में वैदिक अध्ययन तथा शोध की रुचि को बढ़ाने के लिए उन्होंने १९७०-१९८५ की अवधि में वेद तथा आर्यधर्म के विभिन्न पहलुओं पर शोधनिबंध लिखे जिन्हें प्रबुद्ध वर्ग के लोगों में वितीर्ण किया गया। उड़िया के लोकप्रिय दैनिक 'समाज' में उनके सैकड़ों लेख विगत पच्चीस वर्षों में छपे हैं। इनसे लाखों उत्कल भाषी जनता वेद तथा वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से परिचय प्राप्त कर सकी है। वैदिक 'संवाद' में छपे उनके निबंधों का संग्रह 'प्रियव्रत सामाजिक प्रबंधमाला' शीर्षक से छपा है। आर्यसंदेश तथा वैदिक रश्मि शीर्षक उड़िया पत्रों के सम्पादन में उनका योगदान रहा है। वे आकाशवाणी के भुवनेश्वर केन्द्र से विभिन्न विषयों पर रेडियों वार्ताएं प्रकाशित कर चुके हैं।

**सामाजिक क्षेत्र में योगदान**

अपनी साहित्यिक और बौद्धिक प्रवृत्तियों के अतिरिक्त उत्कल प्रान्त में आर्यसमाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार में उनकी सक्रिय भूमिका सदा से रही है। इस प्रान्त के गुरुकुलों के संचालन में उनका योगदान रहा। इसी प्रान्त में आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन के कार्य में वे आरम्भ से ही जुड़े रहे तथा इस सभा के विभिन्न पदों पर रहकर प्रान्त में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार को गति दी। अपनी साहित्यिक तथा सामाजिक सेवाओं के कारण विभिन्न सभा-संस्थाओं ने समय-समय पर उन्हें पुरस्कृत एवं सम्मानित किया। संक्षेप में उनकी उपलब्धियों को निम्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया। १९६६, १९६७ तथा १९६८ में वे ब्रिटेन तथा जर्मनी की हिन्दू संस्थाओं द्वारा सम्मानित किये गये। ७३ में मारीशस में आयोजित आर्य महासम्मेलन में उनका वैदिक विद्वान् के रूप में अभिनन्दन किया गया। महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी समिति ने १९८३ में अजमेर में उनकी साहित्यक सेवाओं की सराहना की। १९९८ के अमेरिका प्रवास के समय वहां की उड़ीसा सोसाइटी ने उनका स्वागत सम्मान किया। २००२ में मारीशस की पण्डित सभा ने आर्यसभा के भव्य भवन में प्रियव्रत जी की वैदिक धर्म के प्रति की गई सेवाओं की सराहना की। आर्यसमाज फुलेरा ने उन्हें महर्षि दयानन्द सम्मान प्रदान किया तथा आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई ने उन्हें मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया। स्वयं प्रियव्रत जी ने आर्यसाहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए महर्षि दयानन्द पुरस्कार की स्थापना की है जो प्रतिवर्ष किसी लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् को दिया जाता है। इसी प्रकार स्वामी सत्यप्रकाश विज्ञान पुरस्कार तथा महिलाओं के लिए शन्नोदेवी वेदविदुषी पुरस्कार की स्थापना कर विद्वानों एवं मन्नारी विदुषियों को प्रोत्साहन दिया है। इस वर्ष वे पुरस्कार डॉ० भारतीय, डॉ० सुद्युम्न तथा डॉ० सुनीति को दिये गये।

उड़ीसा प्रान्त की राजधानी भुवनेश्वर में विशाल आर्यसमाज मंदिर की स्थापना तथा संचालन प्रियव्रत जी की समाजसेवा का प्रत्यक्ष स्वरूप है। विशाल तथा सुरम्य परिसर में संचालित इस समाज में भव्य यज्ञशाला, श्रद्धानन्द भवन अतिथिशाला तथा सभागार, सत्यप्रकाश पुस्तकालय के भवन दास बाबू की साधना, लगन तथा पुरुषार्थ के साकार प्रतीक हैं। ईश्वर उन्हें चिरायु करे ताकि वे दयानन्द के गौरव और यश का दिग्दिगन्त में प्रसार करने में सफल हों।

# वेद में दान की महिमा

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

सुपात्र को दान देना एक शुभ कर्म है, परन्तु कुपात्र को देना अशुभ। सुपात्र कौन? गरीब, रोगी, अंगहीन, अनाथ, कोढ़ी, विधवा या कोई जरूरतमन्द, विद्या और कला-कौशल की वृद्धि, गोशाला, यज्ञशाला, आर्यसमाज मन्दिर, अनाथालय, हस्पताल आदि दान के पात्र हैं। अगर कोई व्यक्ति दान लेकर उस धन को शराब, मांस, तम्बाकू, जूआ, सट्टा, व्यभिचार आदि दुष्कर्मों में लगाता है जिससे उसके मन, बुद्धि, आत्मा और शरीर की हानि होती है। अतः उसे सुख के बजाय दुःख भोगना पड़ता है। इसमें भागी दान देने वाला भी होता है। जैसे पत्थर की नाव में बैठने वाला तथा नाव दोनों ही डूबते हैं।

**न पापत्वाय रासीय।** (अथर्ववेद) अर्थात् मैं पाप कर्म के लिए कभी दान न दूं।

(महाभारत) हे युधिष्ठिर! धनवानों को धन मत दो, दरिद्रों की पालना करो। भरे पेट को रोटी देना उतना ही गलत है जितना स्वस्थ को औषधि। रोटी भूखे के लिए है और औषधि रोगी के लिए। समुद्र में हुई वर्षा व्यर्थ है। सृष्टि में ईश्वर का ऐसा अटल नियम कि जो कोई किसी को जितना सुख पहुंचाता है ईश्वर के न्याय से उतना ही सुख उसे मिलता है। इसलिए दान का उद्देश्य प्राणियों को अधिक से अधिक सुख पहुंचाना होता है।

महात्मा चाणक्य ने लिखा है कि- दो व्यक्तियों को पत्थर बांधकर समुद्र में डुबो देना चाहिये। एक वह जिसके पास धन-सम्पदा है किन्तु दान नहीं करता। दूसरा वह जो गरीब है किन्तु पुरुषार्थ नहीं करता।

चाणक्यनीति में लिखा है-जिसके पास धन है वही कुलीन, पंडित, वेदवेत्ता गुणवान्, वक्ता एवं दर्शन करने योग्य है क्योंकि धन में सब गुण बसते हैं। दान करने से धन की वृद्धि होती है तथा धन की शोभा बढ़ती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज लिखते हैं कि प्राकृतिक घटनाओं के संकट में जैसे भीषण बाढ़, भूकम्प, भीषण काल की स्थिति में सभी प्रभावित मनुष्य दान के पात्र बन जाते हैं। जैसे मौत का पर्याय 'सुनामी कहर' पीड़ित लोगों के लिए विश्व स्तर पर दान की व्यवस्था तथा सभी प्रकार की सामग्री प्रदान की जा रही हैं। लोगों को फिर से बसाया जा रहा है। गीता में तीन प्रकार का दान बताया गया है :-

**सात्त्विक दान**-उचित समय पर तथा उचित स्थान पर किसी ऐसे सुपात्र को सत्कारपूर्वक दिया हुआ दान जिससे किसी प्रतिफल की आशा न हो वह सात्त्विक दान कहलाता है। आध्यात्मिकता की पुण्यस्थली यज्ञवेदी पर पुरोहित की सबसे बड़ी दक्षिणा गौ ही होती थी। दानों में भी भौतिक दृष्टि से गोदान सर्वोत्तम दान माना गया है। राजा जनक (गद्दी के स्वामी) ने महर्षि याज्ञवल्क्य की विद्या का पुरस्कार सोने से मढे हुए सींगों वाली सहस्रों गाय देकर ही अपने नृपतिपन की सफलता मानी थी।

भारत के उन सुनहरे दिनों की याद आज तो कल्पना-सी प्रतीत होती है। परन्तु इतिहास के धुंधले पृष्ठों में लिखी हुई वह गाथायें ही हमारी गौरवमयी भावनाओं और सुन्दर अतीत का स्मरण कराकर विभोर कर देती हैं। यज्ञ, दान, तप, व्रत, नियम, साधना, खेती-बाड़ी, स्वास्थ्य और सन्तति कौन-सा अंश जीवन का ऐसा है जिसमें गाय की पूंछ पकड़ने पर सफलता न मिले।

**राजसी दान**-प्रतिफल की आशा से या भविष्य में किसी लाभ की आशा से दिया हुआ दान और जिसे देने में दुःख होता हो ऐसा दान राजसी दान कहलाता है।

**तामस दान**-गलत स्थान पर और गलत समय पर कुपात्र को बिना उचित सत्कार के अथवा तिरस्कारपूर्वक दिया हुआ दान तामस दान कहलाता है।

तैत्तिरीय उपनिषद् में प्राचीन काल का एक दीक्षान्त भाषण है। उसमें आचार्य शिष्य को स्नातक होने पर उपदेश के साथ-साथ यह उपदेश भी देता है। यदि दान देने में श्रद्धा है तो दान देना, यदि श्रद्धा नहीं भी है तो भी दान देते रहना। संसार में यश पाने के लिए दान देना। दूसरे लोग दान दे रहे हैं उन्हें देखकर लज्जावश भी दान देना। इस भय से भी दान देना कि नहीं दूंगा तो परलोक न सुधरेगा, कमाया हुआ धन भी सार्थक न होगा। इस विचार से भी दान देते रहना कि गुरुजी के सामने प्रतिज्ञा की थी कि दान दूंगा।

संसार में जितने भी दान हैं अर्थात् नवरत्न, अष्ट धातु, जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, स्वर्ण, घृत आदि इन सब दानों में वेदविद्या का दान अति श्रेष्ठ है। इसलिए जितना बन सके उतना प्रयत्न, तन मन और धन से विद्या की वृद्धि करें।

दान की व्यवस्था की ओर भी ऋषि दयानन्द सरस्वती महाराज ने देशवासियों का ध्यान खींचा और उस समय जब देश में मनुष्य को निकम्मा बनाने के लिए दान देने की कुप्रथा प्रचलित थी, उसका बलपूर्वक खंडन किया और उसके स्थान पर देश, काल तथा पात्र देखकर सात्त्विक दान देने की प्रथा प्रचलित की।

# यज्ञ से प्रदूषण समाप्ति

आर्यसमाज गोविन्दनगर की यज्ञशाला के शिलान्यास समारोह पर आयोजित विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए आदर्श गुरुकुल मथुरा के कुलपति स्वामी शिवानन्द सरस्वती ने कहा कि यज्ञ जीवन का श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ करने से जहां प्रदूषण की समाप्ति होती है तथा वातावरण शुद्ध बनता है इसके साथ ही साथ यज्ञकर्ता की आत्मा पर यज्ञ का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। उसकी आत्मा में निखार आता है तथा आत्मशुद्धि होकर उसके आत्मबल में वृद्धि होती है।

स्वामी शिवानन्द सरस्वती ने यज्ञ की महिमा का बखान करते हुए आगे बताया कि यज्ञ में डाली हुई कोई वस्तु बेकार नहीं जाती है, वरन् यज्ञ में डाली गई प्रत्येक वस्तु अपनी साधारण शक्ति से कई गुना अधिक शक्तिशाली होकर वायुमण्डल में समा जाती है। स्वामी जी ने अपने निजी प्रयोग के आधार पर बताया कि साधारण घृत खाने की उपेक्षा यदि केवल गाय के घी से एक दीपक जलाया जाये तो उसका प्रभाव उससे कई गुना अधिक होता है। गाय के घी के दीपक की अपेक्षा यज्ञ सैकड़ों गुना अधिक प्रभावी होता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को दैनिक यज्ञ करना चाहिये। यदि यह संभव न हो तो साप्ताहिक यज्ञ अवश्य करें।

यज्ञशाला के शिलान्यास के पश्चात् आर्यकन्या इण्टर कालेज के प्रबंधक श्री शिवकुमार आर्य जी ने बताया कि यह यज्ञशाला लगभग ४० फीट व्यास की गोलाकार यज्ञशाला है। जिसकी भारी भरकम छत को सम्भालने के लिये केवल चार मजबूत खम्भे लगाये जायेंगे। इसके अतिरिक्त यज्ञशाला के कलश की ऊंचाई ३० फिट होगी तथा यज्ञशाला के निर्माण पर लगभग १० लाख रुपये का व्यय अनुमानित है। शिवकुमार आर्य द्वारा दान की अपील किये जाने पर यज्ञशाला निर्माण के लिये लगभग २ लाख रुपये का दान सभा स्थल पर ही एकत्रित कर लिया गया। समारोह में समस्त धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के द्वारा दिये गये सहयोग के प्रति आभार प्रकट किया गया।

-**बालगोविन्द आर्य, मंत्री आर्यसमाज गोविन्दनगर, कानपुर**

## आवश्यक सूचना

आचार्य रामसुफल शास्त्री 'वैदिक प्रवक्ता' लाल सड़क हांसी का नया चलभाष (मोबाइल) नं० ९८९६२-३१९३० है। कृपया वेदप्रचारार्थ आमन्त्रित करने हेतु इसी का ही प्रयोग करें।

-**डॉ० राकेश कालड़ा,**
मंत्री, आर्यवीर दल, हांसी

**आर्यसमाज के द्वन्द्व के सन्दर्भ में-**

## एकता गीत

आओ इन बिखरे मनकों की फिर माला एक बना लें हम।
संगठन सूत्र में इन्हें पिरो जननी का कण्ठ सजा लें हम॥
किस कुटिल हाथ ने झटका दे सुन्दर माला को तोड़ दिया?
क्या हवा वही जिसने मनकों का इधर-उधर मुख मोड़ दिया?
माला के रखवाले सोचें अब भी जो बचा, बचा लें हम।
आओ इन बिखरे मनकों की फिर माला एक बना लें हम।
हर मोती मूल्यवान् इसका क्या बड़ा और क्या छोटा है।
चाहे सुमेरू है अथवा कोई लम्बा पतला मोटा है।
जो भी कण इसमें गुंथे हुए वे सभी सहेज संभालें हम।
आओ इन बिखरे मनकों की फिर माला एक बना लें हम।
सूई इतनी तीखी लें जो हर मुंह के जा उस पार रुके।
लें सूत्र सुदृढ़ ऐसा सारे मनकों का भार सहार सके।
दें गांठ मिला दोनों धागे, फिर फिर न इन्हें गंवा दें हम।
आओ इन बिखरे मनकों की फिर माला एक बना लें हम।
हे बिखरे मनको! मत सूई की तीक्ष्णता से भय खाओ।
'पुर गये और भी' इसे देख मत मन में तनिक तुनक लाओ।
इस धागे के बन्धन में अपना मुक्ति पर्व मना लें हम।
आओ इन बिखरे मनकों की फिर माला एक बना लें हम।
जो बिन्ध जाएगा माला में वह मोती शेष रहे पत्थर।
अज्ञात किसी कोने में कुचला जाएगा निजता खोकर।
अपने से माला की माला से अपनी शान बढ़ा लें हम।
आओ इन बिखरे मनकों की फिर माला एक बना लें हम।
हमने तो व्रत धारा था एक सूत्र में विश्व पिरोयेंगे।
कंकर को भी हीरा करके माला में उसे संजोएंगे।
ऐसा हो पाएगा तब ही जब घर से रीत चला लें हम।
आओ इन बिखरे मनकों की फिर माला एक बना लें हम।

**(डॉ०) कुमारी सुशीला आर्या, चरखी दादरी**

# भारतीय जनमानस की बदलती विचारधारा व उनके परिणाम

❑ जयपाल देशवाल, प्राध्यापक, रसायनविज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, नरवाना

समय और काल की गहरी मन्त्रणा ही है कि प्राचीन विश्व धर्मगुरु वाली सभ्यता के अनुयायी प्रकारान्तर में अपने पूर्वजों द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक व सृजनशील विचारधारा को तिलांजलि दे करके घृणित तुच्छ व संकीर्ण मानसिकता से अभिशापित कुचक्र में फंसते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप हर कार्य, विचार वस्तु एवं ज्ञान को नकारात्मक व अश्लीलता पूर्वक समझ के आधार पर उनका संज्ञान (मनोरथ) लेते हैं। जहां कहीं भी आज दो या दो से अधिक आदमी (मनुष्य) कहीं भी इकट्ठे हो जाते हैं तो उनकी मन्त्रणा का मुख्य विन्दु अश्लील व अमर्यादित मनोरंजन पर केंद्रित होता है।

उल्लेखनीय है आजकल मुख्यतः आवभगत का आधार तथा कथा आधुनिक समाज में शराब व शबाब बनता जा रहा है। देवतुल्य अतिथि सत्कार को व्यापारिक दौर में कहीं गौण कर दिया है। उसके साथ ही मन्त्रणा में अपने सुख-दुःख, समाज एवं राष्ट्रीय विषयों को छोड़, चुगली, पर-निंदा, घृणा, ईर्ष्या, लोभ-लालच, दिखावटी एवं बनावटी कुत्सित बातों पर ही अहंकार पूर्ण मन्त्रणा के पाठों का बखान करते हैं। पुराने जमाने में उनको सभ्य समाज के माथे पर कलंक माना जाता था, परन्तु आधुनिक समाज में उन कुकृत्यों को वैभवशील व सृजनशीलता द्योतक समझा जाता है, क्योंकि उपरोक्त दूषित व घृणित वृत्तियां उपभोक्तावादी आधुनिक समाज के जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। उनका हर क्षेत्र में बोलबाला है। कारण खुलापन व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में फल फूल रही पश्चिमी संस्कृति के फूहड़पन एवं भौंडेपन वाली अश्लील विचारों की स्वच्छन्द बयार का बहना है। जिसमें इन्द्रिय सुख को मुख्य माना जा रहा है। जहां नैतिकता का कोई नामोनिशान नहीं है, कोई समय सीमा नहीं, कोई प्रतिबद्धता नहीं, केवल नंगेपन का साम्राज्य सौन्दर्य प्रस्तुतिकरण के माध्यम से छाया हुआ है। कैसा समाज बनता जा रहा है, जहां पर सामाजिक मूल्यों को धत्ता बता करके डांस बारों में रसास्वादन करना समृद्धि का प्रतीक बनता जा रहा है। कैसा घटिया आलम समाज में छाने लग रहा है। जहां पर पवित्र बन्धन भी अश्लीलता के समक्ष कच्चे धागों की तरह टूट रहे हैं। शर्म, हया, मर्यादा बोनी पड़ती जा रही है। क्या यही विकास है समाज का? जहां पर मां को 'मम्मी' व पिता श्री को 'डैडी' कहने व कहलाने में शान समझी जाती है। जबकि दोनों का अर्थ व भावना अमर्यादित है। बड़े नगरों की बात छोड़िए अब तो छोटे-छोटे कस्बों में डांस बारों के अश्लील अड्डे खुल गए हैं। उन बाजारों में आधुनिकता भूमंडलीकरण के नाम पर बोलियां जिस्मों की लगती हैं, जहां पर शराब व शबाब ही मुख्य मनोरंजन का भाग है। परिणाम स्वरूप मानवीय विवेक की जगह जड़ पशुता का आधिपत्य मनों पर छा रहा है।

उल्लेखनीय है कि भारतीय वैदिक सभ्य समाज की जड़ों को खोखला, तथाकथित सम्पन्न व विकसित परिवारों ने किया है। जहां पर सही मां-बाप व संतान का पता नहीं लग पाता है। कारण Boy-friend लड़कियों का तथा Girl-friend लड़कों का (मर्यादित जीवन शैली का अभाव) होना, उनके वैभव एवं समृद्धि का परिचायक बनता जा रहा है। वहां मानवता दम तोड़ रही है। आज मानव पशुता की ओर अग्रसर से अधोगति को प्राप्त हो रहा है। कई क्षेत्रों में इनसे भी भी बदतर लक्षणों वाली, निष्कृष्ट मनोवृत्ति का शिकार हो रही है। इस मानवता का क्या भविष्य होगा? ये आने वाला समय इसके परिणामों का उल्लेख करेगा। इतना तो निकट भविष्य में तय है कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति व वैदिक व्यवस्था अपने अस्तित्व को वैश्वीकरण की आंधी में बचाने के लिए संघर्षरत होगी, क्योंकि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की, राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं विश्व मानचित्र में अपनी अलग पहचान बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण होती है। आज का तथाकथित बुद्धिजीवी व विकसित समाज अपनी वेश-भूषा, खान-पान, रीति-रिवाजों, भाषाओं एवं अन्य परोपकारी स्वदेशी व्यवस्था को छोड़ विदेशी असभ्य समाज की कुरीतियों के रंगों में रंगा जा रहा है। जिससे भारतीयता कमजोर हो रही है क्योंकि समाज में मानसिक रूप से पश्चिमकरण की चाहत दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। जहां मानवीय मूल्यों पर बाजारी व्यवस्था की शोषणोन्मुख विचारधारा भारी पड़ती जा रही है। पशुओं के अपने जीवन में सर्वाधिक नियमावली (मर्यादा) होती है। विशेष करके मनोरंजन के मामले में चाहे वो खेलकूद, खानपान व अन्य किसी भी प्रकार का क्यों न हो? आप स्वयं जंगली व पालतू पशुओं के व्यवहार से पता लगा सकते हैं। आज इन्सान इतना दुर्दान्त क्यों बनता जा रहा है? कैसा आलम है आज की दुनिया का? क्या ये सब अन्तहीन अनियमित अन्धी दौड़ का तो परिणाम नहीं है? इसमें मुख्यतः शोषण, भोग-विलास एवं ऐश्वर्य को ही आधुनिकता का मापदण्ड मान लिया है, जिसमें सर्वथा कल्याणकारी व व्यावहारिक मानवीय गुणों जैसे भ्रातृत्व, कर्तव्यनिष्ठा, प्रेम, सौहार्द, सत्य व न्यायाधारित आचरण, सहनशीलता, दया, ईमानदारी इत्यादि का आज अभाव हो गया है। मान-मर्यादा, शर्म, हया एवं नैतिकता अश्लीलता के समक्ष बोनी पड़ती जा रही है। भ्रष्टाचार व व्यभिचार के आवरण ने शिष्टाचार को ढक लिया है। तथाकथित आधुनिकता के नाम पर स्वर्णिम वैदिक युग के विधान की वैज्ञानिक रीतियों की सरेआम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। झूठे व अपराधियों को महिमा मंडित करके सत्य व न्याय का दमन किया जा रहा है। दीन व ईमान जा चुके हैं। धर्म, जो मानवी मूल्यों के अनुसार जीवन जीने का आधार प्रदान करता है, को संकीर्ण सम्प्रदायों में विभाजित करके भ्रातृत्व एवं सह अस्तित्व की जगह वैमनस्य का जहर घोल करके समाज व राष्ट्र में व्यर्थ का तनाव पैदा किया जा रहा है। हिन्दुत्व को साम्प्रदायिकता का प्रतीक बनाया जा रहा है। भारतवर्ष उसी हिन्दुत्व पद्धति जीवन शैली से एक राष्ट्र के रूप में विश्व का मुकुट रहा है। लेकिन घृणित व कुत्सित विचारधारा के तहत हर प्रकार के राष्ट्रहित व समाज हित के कार्यों व नीतियों को नजरअंदाज करके स्वार्थोन्मुख किं-कर्तव्यविमूढता व तुष्टिकरण को अधिक महत्त्व प्रदान करके संकीर्ण हितों को साधा जा रहा है। जहां पर संयुक्त परिवारवाद (राष्ट्रवाद) की बजाय अलगाववाद की भावना का राग अलापा जा रहा है। कैसी घटिया व्यवस्था का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है देश में? जहां पर सत्य, न्याय व धर्म पर आधारित सर्व समाज के कल्याण हेतु सृजनात्मक कार्यों को अधोगति व सामाजिक सामंजस्य को अस्थिर करने वाले कृत्यों को ऊर्ध्वगति प्रदान करके अपने अहंकार व स्वार्थों को पल्लवित व पोषित करके तथाकथित व्यवस्थापकों, समाजसेवियों व राजनेताओं का बोलबाला है। ये राष्ट्र व समाज को विघटन व पतनकारी कार्यों में उलझाये रख अपने को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में राष्ट्र के कर्णधार मनवाने में जीतोड़ प्रयासरत हैं। ये राष्ट्रविरोधी कर्मों को किसी भी सीमा तक जा करके अमलीजामा पहनाकर गौरवान्वित व महिमा मंडित हो रहे हैं।

इन उपरोक्त बातों से हमें अपने विवेक से यह आभास व अन्दाजा लग जाता है कि आधुनिकता की आड़ में वैश्वीकरण के माध्यम से हमारे समाज व राष्ट्र के चरित्र का विकास या विनाश हुआ है। परिणामों व अनुमानों में लगभग १००% समानता मिलती है जो चरित्र के पतन का उल्लेख करते हैं। स्मृति ग्रंथों में स्पष्ट लिखा है कि जो आचार से हीन है, उसे वेद भी पवित्र नहीं मानते, आचारः परमो धर्मः। अर्थात् आचार पहला धर्म है इसलिए पूरी सावधानी से अपने चरित्र की रक्षा करने का उपदेश वेदों में दिया गया है। भगवान् से मनुष्य ने प्रार्थना की हैकि भगवान् मेरे चरित्र में किसी भी प्रकार की गिरावट न आये। महाभारत में भी यही आदेश है जिसमें कहा गया है कि चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करें, धन तो आता जाता है। धन से क्षीण हुआ क्षीण नहीं है। परन्तु चरित्र के गिरा हुआ तो मरा ही हुआ है।

आधुनिक काल में सब कुछ तो धन ही समझ लिया है। जिसमें ऊपर की चीजें नीचे आ गई हैं तथा नीचे की ऊपर चली गई है। जैसे-चरित्र स्वास्थ्य व धन की तुलना में कहां जाने लगा है-चरित्र बिगड़ जाए तो कुछ नहीं बिगड़ा। स्वास्थ्य बिगड़ जाए तो थोड़ी हानि हुई!! धन का नाश हुआ तो सर्वनाश हो गया! बिल्कुल उल्टा हो रहा, जो कि हमने बाल्यकाल में पाठशाला पढ़ा था।

धन व वैभव की लालसा के वशीभूत होकरके आज तथाकथित भारतीय व विदेशी एक गहरी नीति के तहत सम्पूर्ण भारत की हर चीज (जीव व निर्जीव) का दोहन व शोषण कर रहे हैं जिसमें घटिया व्यवस्था का वर्चस्व और बढ़ता जा रहा है। जिसका मुख्य आधार भाईचारे की जगह दुश्मनी, न्याय की जगह अन्याय, अहिंसा पर हिंसा, सत्य पर असत्य, सुख-शान्ति एवं आध्यात्मिक धार्मिक नीतियों की जगह अन्तहीन तथाकथित भोगविलास एवं ऐश्वर्ययुक्त भ्रष्टाचार आधारित नीतियों इत्यादि का है।

परिणामस्वरूप भारतीय जनमानस विशेष करके बुद्धिजीवी वर्ग क्षणिक भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करना ही जीवन का मुख्य लक्ष्य मानने लगा है। ये सुख-सुविधाएं व स्थायी शान्ति तो प्रदान नहीं करते वरन् और अधिक वैभव व अहम् की लालसा को उद्वेलित कर मानसिक व शारीरिक दुःख का सृजन करती है। जिससे परिवार व समाज में दिन-प्रतिदिन तनाव, अराजकता का आलम छाने लगा है। जहां समाज में

आपा-धापी, मारा-मारी, लूट-खसोट, भय, छीना-जोरी व ठगी का आतंक व्याप्त हो गया है। समाज व राष्ट्र में अशान्ति का दौर चल रहा है।

शान्ति का मुख्य स्रोत तो मूल भारतीय वैदिक जीवनशैली है जो कि यम-नियमों जैसे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य व्रत, तप, शौच (पवित्रता), संतोष, स्वाध्याय व ईश्वर-प्रणिधान इत्यादि पर आधारित है। यदि इनका सही मन, कर्म व वचन से अनुपालन हर मनुष्य करे, तो संसार में पूर्ण शान्ति चिरस्थायी स्थापित हो जाएगी। दीन-दुर्बल प्राणियों व राष्ट्र की रक्षा हेतु हिंसा प्रयोग अहिंसा के लिए आवश्यक है क्योंकि दुष्टों को समाप्त हिंसा से ही किया जा सकता है। ताकि शान्त वातावरण में सत्य आचरण द्वारा, ईमानदारी से कमाए गये धन से संतोष, तपस्यापूर्ण जीवन जीने के यत्न हो सके। आवश्यकता से अधिक अर्जित धन को समाज व राष्ट्र के कल्याण हेतु दान करना, स्वाध्याय द्वारा ज्ञान प्राप्त करके तथा अपने कार्यों को ईश्वर को समक्ष करके करना चाहिए ताकि किसी भी प्रकार के अवगुण मन में पैदा न हों। ऐसा व्यवहार जीवन में अपनाने से असीम सुख की अनुभूति मिलती है। पश्चिमीकरण व भूमण्डलीकरण से प्रभावित जनमानस (समाज) के मन में नयेपन के माध्यम से अहंकार व घमंड के भाव उमड़ने लगते हैं। कारण, अपने को प्रदर्शित करने की होड़ जो लग गई है, इस प्रतियोगिता के जमाने में। जहां पर हर किसी को मन में "मैं और मेरा वर्चस्व हो वाली भावना" एकाधिकार स्थापित कर रही है। इस परिवेश में हर कोई कहीं न कहीं अपने को स्थापित करने के लिए नियमों को भी ताक पर रख करके, भाई-भतीजावाद व साम-दाम-दण्ड-भेद के तहत किसी छोटे रास्ते व भ्रष्ट आचरण के माध्यम से सफल हो जाते हैं। यह प्रभावशाली वर्ग समाज में अपने पैर भ्रष्टाचार के माध्यम से जमाए हुए हैं। दूसरी ओर योग्य व वंचित वर्ग के प्रतियोगी अपने को ठगा-सा पाते हैं। ऐसे में समाज विभाजन की ओर जा रहा है। जहां पर अनेक प्रकार की दीवारें खड़ी हो रही हैं। आज गरीब अधिक गरीब हो रहा है लेकिन उनमें कुछ मानवीय गुण हैं। दूसरी ओर धनी व समृद्ध वर्ग जो अपने को आधुनिकता का विद्वान् व पराक्रमी वर्ग बताता है। इस वर्ग के मानव ने मन में भोग-विलासपूर्ण जीवन से कुछ तृप्ति भले ही कर ली हो लेकिन और अधिक धन व वैभव की लालसा ने उनके तन व मन को दीमक की तरह चट कर दिया है। परिणामस्वरूप सबसे ज्यादा बीमारियां व तनाव के शिकार इसी वर्ग के लोग हैं। इनको किसी भी प्रकार की सुख-शान्ति सुलभ नहीं है। मन तन व आत्मा तीनों मलिन है। यह वर्ग सर्वाधिक अमानवीय कर्मों द्वारा समाज को प्रताडित कर रहा है। ऐसे में आत्मिक शान्ति कहां मिले? क्योंकि भगवान् की व्यवस्था से जो छेड़छाड़ करके अपने को सर्वोच्च माने, उसको भगवान् की अनुभूति कभी प्राप्त नहीं हो सकती है। कुछ पाने के लिए त्याग, तपस्या व स्वस्थ चिन्तन की भी जरूरत होती है। इस दौरान हमने अपने को शून्य (अहंकाररहित) मानना, अपने को अस्तित्वहीन स्थिति में पहुंचाना होगा तभी परमानन्द मिलता है। जैसे बीज पृथ्वी में पड़ करके उचित वातावरण में अपने अस्तित्व को समाप्त करता है तभी नए पौधे का जन्म होता है? यानि कि बीज पौधे में रूपान्तरित हो जाता है। तदुपरान्त पौधा फल व फूल में अपना अंश स्थापित करके नये बीज का सृजन करता है। ठीक उसी प्रकार भगवान् की प्राप्ति (परमानन्द) हेतु अपने को तपस्या पूर्वक कर्मों के माध्यम से त्यागना पड़ता है ताकि समाज का कल्याण हो सके। जैसे पतंगा अग्नि के प्रेम में अपने को स्वाहा कर लेता है। ऐसे ही भावना से समाज में श्रेष्ठ गुणों की स्थापना करके सामाजिक चरित्र का उत्थान होगा। यह तभी संभव है जब हम पश्चिमी सभ्यता के दुर्गुणों से छुटकारा पाएं। तभी हम अपने आपको एक सही मनुष्य की परिभाषा में बान्ध सकेंगे। मनुष्य का शाब्दिक अर्थ है जिसके मन में होश, स्वस्थ, विवेक या चिन्तनधारा और विचारणा शक्ति हो। वह सामाजिक व राष्ट्रीय चरित्र एवं चिन्तन को ध्यानार्थ समझ करके अपनी भूमिका निभाता हो। लेकिन आज के मानव का मन तो स्वार्थोन्मुख विचारधारा से ग्रस्त है जो तड़क-भड़क, साज-सज्जा व चकाचौंध से भरे महज दिखावटी, झूठे अहंकारी एवं वैभवशाही जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है।

इस तुच्छ उपलब्धि हेतु कितना बहुमूल्य समय, धन, बुद्धि, शारीरिक व मानसिक शक्ति को यूं ही व्यर्थ में नष्ट कर रहा है। ये क्षणिक चीजें पानी के बुलबुले की तरह अस्थायी ही नहीं, प्रत्युत उनसे मनोविकार व शारीरिक व्याधियों की उत्पत्ति हो रही है। जिससे समाज में भय आशंका के वातावरण में अविश्वास, काम, क्रोध, भय-मोह, लोभ, ईर्ष्या, घृणा व कर्तव्यहीनता आदि तुच्छ मनोवृत्तियां विकसित हो रही हैं जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्ट आचरण को ही बढ़ावा मिल रहा है। विशेष करके भारतीय युवा वर्ग के तथाकथित अमर्यादित आधुनिक चकाचौंधपूर्ण, रोमांचक जीवनशैली की ओर आकर्षण ने सभ्य समाज की नैतिक व मर्यादित जीवन शैली को केवल बन्धनमात्र व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में अड़चन मान लिया है। परिणामस्वरूप समाज में अपने आपको अधिक प्रदर्शित व आकर्षित बनाने की होड़ लगी हुई है, मर्यादा को ताक पर रख अनैतिक कृत्यों को अपना करके सामाजिक व्यवस्था को झकझोर दिया है। युवा लड़के व लड़कियों ने फैशन सो को जीवन का अभिन्न अंग मान लिया है। सौंदर्य प्रदर्शन की प्रतियोगिता आम हो गई है। जहां पर अंग-प्रदर्शन व अश्लीलतापूर्वक कार्यों को ही सौन्दर्यता का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। वहां नैतिकता एकदम मृतप्राय हो गई है जिसने सभ्य समाज के जनमानस की आत्मा को हिला दिया है। यह सोचकर मन व्यथित हो रहा है कि क्या होगा भारतीय सभ्य समाज का, आगामी समय में? क्या ये युवा वर्ग अपनी स्वयं की रक्षा कर पायेगा, राष्ट्र की बात तो छोड़ो। यह वर्ग भगवान् द्वारा प्रदत्त सौन्दर्य को असली व्यावहारिक रूप में प्रदर्शित करके गौरवान्वित हो रहा है। यह सब क्षणिक ही है, समयानुसार सब कुछ तो समाप्त हो जाता है इस तथाकथित सुन्दरता की तो बात ही कुछ नहीं है। अतः इस प्रकार की चरित्र व चिंतन हीनता से राष्ट्र व समाज का विनाश ही हो रहा है।

उल्लेखनीय है कि इससे समाज का सन्तुलन एकदम बिगड़ रहा है और मानव ने स्वार्थवश प्रकृति के नियमों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन कर, घृणित व अमानवीय कार्यों से समाज को और अधिक दुःखी व नारकीय जीवन जीने पर मजबूर कर दिया है। यदि यह व्यवस्था भविष्य में भी कार्यरत रही तो परिणाम भयंकर होंगे, क्योंकि प्रकृति के असन्तुलन से पृथ्वी पर कभी भी भयंकर उथल-पुथल हो जाएगी जिससे मनुष्य व प्राणी जगत् की जीवन-लीला ही समाप्त हो जाएगी। क्योंकि वातावरण में अवांछनीय गतिविधियों से अस्थिरता प्रतिदिन अबाध गति से बढ़ रही है जिससे केन्द्रीय व विकेन्द्रीय (ब्रह्माण्ड) शक्तियों में असंतुलन भी होने लगेगा तब स्थायित्व का आधार डगमगाने लगेगा तो सृष्टि भी समाप्त की ओर बढ़ेगी। जब धर्म व अधर्म, न्याय व अन्याय, सत्य व असत्य एवं नैतिक व अनैतिक कर्मों में भेद न रहेगा, तो प्रकृति के नियमानुसार सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्था स्वतः समाप्त हो जाएगी और भारत जैसे महान् राष्ट्र का अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा। क्योंकि नियमों के उल्लंघन व मर्यादाओं के अतिक्रमण से विनाश होता है न कि विकास। जैसे कुछ कहावतें हैं, जैसी करणी वैसी भरणी, जैसा बोयेंगे वैसा ही काटेंगे इत्यादि भी बार-बार चरितार्थ होती रहेगी। समय रहते चरित्र व चिन्तन को सुधारें व उपरोक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्याधियों का निदान करें। वरना यह समस्या गंभीर रूप धारण करके नियन्त्रण से बाहर हो जाएगी, जिसके दुर्दान्त परिणामों से सम्पूर्ण प्राणिजगत् कहीं भी बच नहीं पायेगा।

अतः भारतीय व विश्व समाज ने अपना अन्तःमुखी अवलोकन व विश्लेषण कर अच्छे संस्कार जैसे धर्म के दस लक्षण क्षमा, धैर्य, तप, दान, दया, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, संतोष, परमार्थ इत्यादि को जीवन में अधिग्रहण करके शान्तिमय, सुखी जीवन जीये व जीने दे, यह तभी संभव है जब हम सब अपनी कुत्सित व संकीर्ण विकृतियों का परित्याग करें व क्षणिक सुख एवं वैभव वाली भोग विलासिता उपभोक्तावादी संस्कृति को भी तिलांजलि देवें, ताकि स्वर्णिम भविष्य की नींव को प्रगाढ़ करके उस पर अन्तर्यामी परमपिता परमेश्वर की अनुपम कृपा से विशाल भव्य भवन का निर्माण किया जाए। जिसमें हर प्राणी (सम्पूर्ण जगत्) भगवान् का आलिंगन करके प्रेम की बयार में बह करके प्रेम सागर में विलीन हो जाए, जहां कोई ऊंच-नीच न हो, मेरा-तेरा न हो, बल्कि सब कुछ अपना हो "**वसुधैव कुटुम्बकम्**"। उस विश्व में प्रेम, सद्भाव, सौहार्द, परहित, पर सुख-दुःख को अपना समझे। तथा न्याय, सत्य व धर्माचरण पर आधारित हो, वरिष्ठ और विद्वानों को मान-सम्मान और सबको समान अस्तित्व प्रदान करने वाली सार्वभौमिक व्यवस्था हो। ऐसे ही समाज में परमानन्द व परमशान्ति से परम-मोक्ष को प्राप्त कर सच्चे स्वर्ग की स्थापना की जा सकती है। परिणामस्वरूप विश्व-बन्धुत्व व विश्वगुरु के पद की गरिमा को प्रतिष्ठित किया जा सके। यही जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य है।

## वेदप्रचार मण्डल मेवात का चुनाव सम्पन्न

आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात का चुनाव रविवार को नूंह में आचार्य ओमस्वरूप आर्य, गुरुकुल गोशाला डिकाडला (पानीपत) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री देवराज शास्त्री अलदोहका को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। शेष कार्यकारिणी बनाने का अधिकार भी उन्हें ही दिया गया।

-ओमस्वरूप आर्य, डिकाडला (पानीपत)

# वेदविरुद्ध बढ़ती समस्याएं

❑ डॉ० विजेन्द्रपालसिंह, चन्द्रलोक, खुर्जा (उ०प्र०)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय में अनेक पाखण्ड व अंधविश्वास प्रचलित थे। देश अंग्रेजी हुकूमत के अधीन था। ईश्वर के विषय में लोग भ्रमित थे। मूर्तियों, पत्थरों व पेड़-पौधों जड़ वस्तुओं की पूजा करने लगे थे। स्त्रीशिक्षा का विरोध करते थे। वेद का नाम ले बलिप्रथा चला रखी थी। शूद्र एवं स्त्रियों को वेद पढ़ने की आज्ञा नहीं थी। महापुरुषों श्रीकृष्ण, राम, हनुमान् आदि वेद के विद्वानों के जीवन चरित्र पर धब्बा लगा रखा था। जाति को जन्म से मानते थे। ऊंच-नीच, छुआछूत का जोर था। ऋषि ने सभी अंधविश्वास, पाखण्डों तथा सामाजिक कुरीतियों की कटु आलोचना की वेद का प्रचार किया और विश्व को बता दिया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है।

इतना श्रेष्ठ मार्ग बता महर्षि दयानन्द ने संसार पर बहुत बड़ा उपकार कर दिया। मानव में उस समय ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य था। ऋषि ने इस क्षेत्र से जागृति उत्पन्न की। आर्यसमाज का छठा नियम संसार का उपकार करने की प्रेरणा देता है चाहे शारीरिक स्वास्थ्यसंबंधी कार्य हो सामाजिक कार्य हो अथवा आध्यात्मिक है। सब हेतु जागृति लाना आर्यजनों व आर्यसमाजों का दायित्व है। इस प्रकार की श्रेष्ठ विचारधारा अन्यत्र नहीं है।

आज भी समाज अनेक कुरीतियों से ग्रसित हो रहा है जिनका हमें प्रतिकार कर लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाना है कुछ इस प्रकार से है :-

(१) **गुरुडम**-कोई भी व्यक्ति लम्बी दाढ़ी, केश बढ़ा, चन्दन लगा व गेरुएं वस्त्र धारण करने से ही साधु नहीं बन जाता जब तक कि उसका स्वयं का चरित्र श्रेष्ठ न हो, वेदज्ञान न हो, इन्द्रियों को वश में न रखता हो, सत्य न बोलता हो और जैसा जिह्वा से बोले व आचरण करे वैसा ही अन्तर्मन से होना चाहिए। महाराज मनु कहते हैं-

**धृति क्षमा दमोऽस्तं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।**
**धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥** मनु०॥

आज हो यह रहा है कि अनेक व्यक्ति छद्मचर साधु बने घूम रहे हैं और हमारे समाज की स्थिति बड़ी आश्चर्यजनक है। जहां गेरुएं वस्त्र व दाढ़ी वाला देखा उसके होगए चाहे वह पाखण्डी ढोंगी दुष्टाचारी हो, वेदविद्या को न जानता हो, ऐसे लोग समाज को विकृत करते व भ्रमित करते हैं। वह कहते हैं गुरु ही सब कुछ है गुरु की सेवा करली तो समझो भगवान् की सेवा कर ली। महिलाओं से टांगें दबवाते हैं, वही इन्हें स्नान आदि कराती हैं और ऐसे ही शिष्य-शिष्याएं ऐसा ही मूर्ख धूर्त गुरु होता है। वेद के विरुद्ध ही बातें बताते हैं। स्त्री-पुरुष इन्हें भोजन वस्त्र व धन से सन्तुष्ट करते हैं। कहीं-कहीं तो चेलियों के साथ कामुक सम्बन्ध भी बनाते हैं। ऐसे अनेक पापी जेलों में बन्द भी होते रहते हैं। वेद वाक्य (मन्त्र) तो जानते नहीं परन्तु अपने आप वाक्य बनाकर उन्हें नामदान (गुरुमन्त्र) के रूप में कान में बताते हैं और अन्य किसी से नहीं बताने को कहते हैं और डराते हैं कि तेरा बहुत नुकसान हो जाएगा। ऐसे अनेक वाक्य हैं जो वेद से कोई किसी प्रकार का सम्बन्ध ही नहीं रखते अपितु उनका कोई व्याकरण व भाषा भी नहीं है।

**ॐ निरंजन सोऽहम् रारग सतनाम**
**सोऽहम**
**हम सोऽहम**
**सत पुरुख अकाल मूरत शबद सरूपी राम**
**हरिओम्**

इसके अतिरिक्त हर गांव नगर महानगरों में गुरुमन्त्र देने वाले व्यवसायी लोग मिल जायेंगे। आज इन लोगों ने वेदज्ञान को छोड़कर अपने आपको भगवान् बना दिया है।

(२) **मूर्तिपूजा**-मूर्तिपूजा से पुजारी-पंडितों की चांदी कटती है। अर्थात् उनका यह व्यापार है जो खूब फल-फूल रहा है। मूर्ति को भगवान् बताकर उसके नाम का चढ़ावा धन, फल, भोजन, वस्त्र, स्वर्ण आदि स्वयं लेते और लोगों को मूर्ख बनाते हैं। यदि मूर्ति सत्य रूप में चढ़ावे को लेने लगे तो शायद ही कोई पुजारी होगा जो मूर्तियों को नदी में न फेंक आवेगा ये मूर्ति की पूजा कराते व माल बटोरते हैं गुरुडम में चेतन व्यक्ति स्वयं को भगवान् बता माल बटोरते फिरते हैं कहीं-कहीं तो भगवान् का अवतार ही बता देते हैं अन्तर यह है कि जड़पूजा (मूर्ति) को छोड़कर धूर्त पाखण्डी व्यक्तियों की पूजा होने लगी है।

(३) **कावड़ ले जाने वालों की बढ़ती संख्या**-यह दुर्भाग्य कहिए कि आर्यसमाज का प्रचार आज अवरुद्ध प्रायः हो गया है यही कारण है कि शिवलिङ्गों पर जलाभिषेक करने वालों की भीड़ प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। पुराणों में सृष्टि की रचना संबंधी मनघड़न्त गप्पों पर विश्वास करने वालों की विवेक बुद्धि शिथिल होकर रह गई है। उनमें पाखण्डों के प्रति सत्यासत्य का निर्धारण करने की शक्ति नहीं रह गई है।

(४) **तान्त्रिकों का जाल**-देशभर में ऐसे तान्त्रिकों की संख्या बढ़ती जा रही है जो आए दिन छोटे बच्चों की बलि चढ़वा देते हैं। उनकी जिह्वा व उंगली काट मूर्तियों पर चढ़वाते हैं। बांझ स्त्रियों को टोने आदि सिखाते फिरते हैं। जघन्य अपराधों को जन्म देते हैं। कहीं-कहीं यह भी कहते हैं कि बच्चे को मार उसके रक्त से स्नान कर तेरे सन्तान हो जाएगी और भी अनेक आपराधिक कुकृत्य ऐसे छद्मधारी दुष्टाचारी नीच ये तांत्रिकी कराते फिरते हैं। गंडे ताबीज टोने ये सब अन्धविश्वास हैं और ऐसे लोग अज्ञानता रूपी अंधेरे कुएं में पड़े हैं।

(५) **मद्यपान धूम्रपान व अन्य मादक द्रव्यों का प्रयोग**-रेल, बस या किसी भी सार्वजनिक स्थान पर जावें तो मादकद्रव्यों का प्रयोग करते अधिक लोग मिल जायेंगे। आज तम्बाकू जैसे द्रव्य दुकानों पर बिकते हैं, जिन्हें बच्चों से लेकर वृद्ध लोगों तक यहां तक कि महिलाओं को भी ऊंट की भांति मुंह चलाते देख सकते हैं। प्रचलन पूरे जोर पर है। सरकारी गैर-सरकारी कार्यालयों में तम्बाकू खाने, सिगरेट, बीड़ी पीने, मद्य पीने वाले बहुसंख्यक मिल जायेंगे।

(६) **मांसाहार**-सदियों के आते ही चौराहों पर ठेली वाले अण्डों की दुकानें थोड़ी-थोड़ी दूर पर लगाकर अण्डों की खूब बिक्री करते हैं। खाने वालों की भी भीड़ एकत्र हो जाती है। टीवी जैसे चैनल भी ऐसे द्रव्यों का प्रचार करने में पीछे नहीं हटते। लोगों को भ्रमित किया जाता है कि अण्डा शाकाहारी है इसमें प्रोटीन व कार्बोहाइड्रेट व विटामिन होती है। यह एकदम लोगों को मूर्ख बनाना है। अण्डे से अधिक मूंगफली, सोयाबीन, दालों, फलों, सब्जियों, बादाम आदि में कई गुना अधिक प्रोटीन व अन्य जीवनीय तत्व मिल जाते हैं। अण्डे का तो पाचन संस्थान तथा यकृत् व मस्तिष्क पर विषाक्त दुष्प्रभाव होता है और विषाक्तता से मृत्यु तक की स्थिति हो जाती है। मांस मनुष्य का भोजन नहीं, फिर भी खाता है और हृदयरोगों को जन्म देता है। उच्च रक्तचाप, मोटापा, मूत्ररोग, त्वचा रोग, श्वास रोग तथा अनय अनेक कैंसर जैसी व्याधियों को जन्म देता है।

(७) **नई पीढ़ी और अनैतिकता**-कभी ऐसा समय था कि बच्चे अपने से सभी बड़ों के चरणस्पर्श करते थे। आज के युवा नमस्ते कहने में भी अपमान समझते हैं। यहां तक कि बुरे शब्द बोलने में भी संकोच नहीं करते। वृद्ध माता-पिता को सीधा-उल्टा जवाब देते व उनका अपमान तक कर देते हैं। ऐसी स्थिति आ पहुंची है कि कुछ तो टीवी सिनेमा द्वारा पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार उधर कान्वेंट स्कूलों की भरमार। इन्होंने भारतीय वैदिक संस्कृति में विष घोल दिया है। इन बच्चों से महाराणा प्रताप, शिवाजी, लक्ष्मीबाई, महाद जी सिन्धिया व ऐतिहासिक महापुरुषों के बारे में पूछो तो अनभिज्ञता जतायेंगे और फिल्मी कलाकारों के बारे में कुछ भी पूछ लो बताते जायेंगे।

पहले गुरुकुल व भारतीय संस्कृति की शिक्षा के केन्द्र थे। वहां नैतिक शिक्षा पर बल दिया जाता था। आज वह शिक्षा न रही। टाई-बैल्ट वाले कान्वेंट स्कूलों की खेती फल फूल रही है और मैकाले की सोच के अनुसार काले अंग्रेज पैदा किये जा रहे हैं। आज योग व आसनों का प्रचलन अधिक है। यह हमारे जीवन में पहले घुला-मिला हुआ था। शिक्षक छात्र को दण्ड देता था तो उसमें भी शिष्य का लाभ ही था। अपराध करने पर शिक्षक छात्र को कान पकड़ाकर मुर्गा बनाते थे जो कि कुक्कुटासन कहा जाता है इससे मेधाशक्ति बढ़ती है। दण्ड का दण्ड आसन भी हो जाता था। दौड़ लगवाते थे या भार उठवाते थे हाथों से अपने ही पैर छूकर झुके रहने को कहते थे। यह सब शारीरिक स्वास्थ्य हेतु दण्ड के साथ आसनों की शिक्षा थी। आज तो शिक्षक व शिष्य दोनों एक साथ एक प्याली में मद्य का प्रयोग करते देखे जा सकते हैं। शिक्षक ही न रहा तो शिक्षा कहां से आएगी और कोई ऐसा व्यक्ति अभी तक स्वतंत्रता के बाद नहीं आया जो मैकाले की शिक्षा का विरोध करे क्यों कि चारित्रिक पतन सीमा से अधिक हो चुका जो मैकाले का अनुमान व प्रयोजन था।

इसके साथ राजनीतिक सामाजिक धार्मिक अनेक गम्भीर विषय हैं, जो आर्यों के सामने मुंह फाड़े खड़े हैं। जब चिकित्सक ही रोगी हो जाये तो रोगी की चिकित्सा कौन करे?

## संदेश

बालविवाह एक ऐसी सामाजिक कुरीति है जो सैकड़ों वर्ष पूर्व परिस्थितिवश फैली थी। बालविवाह जैसी कुरीतियों को शिक्षा व सामाजिक जागरूकता के माध्यम से ही रोका जा सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक कुरीतियों व समाज में फैले अंधविश्वासों के विरुद्ध आंदोलन के रूप में ही 'आर्यसमाज' की स्थापना की थी तथा यह आंदोलन समाज का पथप्रदर्शक बना।

आर्यसमाज द्वारा चलाया जा रहा ''बाल-विवाह सामाजिक कुरीति जनजागृति अभियान'' इस दिशा में एक सार्थक कदम है।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा किये जा रहे समाज सुधार, जनकल्याण व सामाजिक चेतना के कार्यक्रमों की मैं प्रशंसा करता हूं व उन्हें निरन्तर कल्याणकारी कार्यों के लिए शुभकामनाएं व बधाई प्रेषित करता हूं।

आपका
**रघुवीरसिंह कौशल**, सांसद
लोकसभा क्षेत्र, कोटा (राजस्थान)

## पहले शिक्षा फिर विवाह : श्री भूपेन्द्र दक्

कोटा ८ मई। शिक्षा से ही बालविवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों को मिटाया जा सकता है एवं समाज में फैली कई सामाजिक कुरीतियों पर रोक लगाई जा सकती है। पहले शिक्षा दीक्षा हो फिर विवाह हो। यह विचार व्यक्त किये माननीय जिला शहर पुलिस अधीक्षक श्री भूपेन्द्र दक् ने।

आर्यसमाज के तत्त्वावधान में आज जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा तथा कोटा के सभी आर्यसमाजों की तरफ से बालविवाह विरोध हेतु १०० फीट लम्बा एक बैनर नागरिक हस्ताक्षर हेतु चौपाटी पर लगाया गया। जनजागृति अभियान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला शहर पुलिस अधीक्षक श्री भूपेन्द्र दक् जी थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्रीमती सुमन शृंगी थी। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री दक् साहब ने बालविवाह विरोधी अपनी टिप्पणी लिखकर किया। तत्पश्चात् विशिष्ट अतिथि श्रीमती सुमन शृंगी ने बालविवाह विरोध में अपनी टिप्पणी लिखी एवं विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बालविवाह एक सामाजिक बुराई ही नहीं अपितु एक अभिशाप है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी ने बालविवाह, दहेजप्रथा, पर्दाप्रथा का डटकर विरोध किया था। यह हस्ताक्षर अभियान नागरिकों में जागृति पैदा करने का सराहनीय कदम है। बालविवाह से महिला का जीवन नारकीय हो जाता है। उसे जीवन भर नरक भुगतना पड़ता है अतः इस बुराई को जड़ से मिटाना होगा। हस्ताक्षर अभियान के तहत वहां उपस्थित वार्ड पार्षद सुश्री नीता वधवा ने बालविवाह विरोधी टिप्पणी लिखी एवं अपने उद्‌बोधन में कहा कि जागृति अभियान एक सराहनीय प्रयास है। इससे नागरिकों में चेतना होगी। महिलाओं को इसमें बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिये। पार्षद रामचन्द्र मलिक ने भी अपनी टिप्पणी लिखकर उद्‌बोधन में कहा कि इससे मानसिक विकास रुक जाता है। आर्यसमाज के साथ-साथ अन्य संस्थाओं को भी सहयोग करना चाहिये तभी इस बुराई का अंत होगा। कार्यक्रम में उपस्थित धर्मगुरु ज्ञानी गुरनामसिंह जी अम्बालवी ने भी हस्ताक्षर कर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह एक सराहनीय काम है इसे अशिक्षित लोगों के बीच पहुंचाना होगा तभी संदेश जागृति ला सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि शिक्षा के प्रचार और प्रसार से ही बालविवाह जैसी सामाजिक बुराइयों पर काबू पाया जा सकता है। विशेषकर ग्रामीण अंचल में तथा कच्ची बस्तियों में सामाजिक बुराइयों के प्रति ऐसे जनजागृति अभियान चलाये जाने की आवश्यकता है। आर्यसमाज के जिला मंत्री श्री कैलाशचन्द्र बाहेती ने इस अवसर पर आर्यसमाज द्वारा की जा रही सामाजिक गतिविधियों की जानकारी दी। बालविवाह विरोधी जनजागृति अभियान में नशामुक्ति आन्दोलन के प्रवर्तक डॉ० आर.सी. साहनी, महेश शर्मा गम्मुजी, जे.डी.बी. छात्रसंघ के अध्यक्षा स्वाति बाहेती, मानव कल्याण संस्थान के संयोजक सलिल गोस्वामी, सेण्ट्रल सिख सभा के सैक्रेट्री जितेन्द्र मोहनसिंह, समाजसेविका श्रीमती शांति नागपाल, आरोमा स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती लीला मलिक, पंजाबी समाज समिति के संयोजक श्री दर्शन पिपलानी, आर्यसमाज रामपुरा के प्रधान बनवारीलाल सिंहल, श्रीचन्द गुप्ता, रामदेव शर्मा, जे.एस. दुबे, आनन्द सप्रे, हरीदत्त शर्मा, श्रीमती मधु शर्मा, आर्यवीर दल के रमेश गोस्वामी, योगशिक्षक विनोद गैरा, आर्य जन, स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में जिला आर्य सभा के प्रचार संयोजक डी.पी. मिश्रा ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्यसमाज सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए लगातार प्रयास करता रहा है।

**-डी.पी. मिश्रा, प्रचार संयोजक, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा**

## महिला आर्यसमाज का चुनाव

३० जून, २००५ को सायं ४ बजे महिला आर्यसमाज सज्जननगर, उदयपुर की वार्षिक आम सभा की बैठक सतसंग भवन में आयोजित की गई जिसमें चुनाव अधिकारी श्रद्धेय स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती के द्वारा आम सहमति से वर्ष २००५-०६ के लिए वार्षिक चुनाव सम्पन्न कराया गया।

प्रधान-श्रीमती ऋतु त्यागी आर्य, उपप्रधान-श्रीमती मीना बंधु आर्य, मंत्री-श्रीमती आशा बंधु आर्य, उपमंत्री-कुमारी ज्योति आर्य, कोषाध्यक्ष-श्रीमती निर्मला यति वानप्रस्थी, पुस्तकालय अध्यक्ष-श्रीमती इन्द्रादेवी आर्य।

**-ऋतु त्यागी आर्य, प्रधान महिला आर्यसमाज, सज्जननगर, उदयपुर**



## प्रभु की महिमा

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली।
चन्दा बनाया शीतल सूरज में आग डाली॥
ऊँचे शिखर व टीले कहीं वृक्ष हैं रसीले
झाड़ी व कटीले सरोवर और झीलें
सबको बनाया तूने हे ईश शक्तिशाली॥१॥ चन्दा....
जुगनू की दुम पे तूने कैसा है बल्ब लगाया।
बरसात के दिनों में जंगल में जगमगाया।।
तारे भी चमक रहे हैं जैसे हो दिवाली॥२॥चन्दा....
पत्तों को खाके कीड़ा रेशम बना रहा है।
है कौन जो उदर में चरखा चला रहा है।
बुन-बुन कर आ रहा है रेशम का लच्छा जाली॥३॥ चन्दा....
बरसात के दिनों में लेण्टर टपकते देखा।
पक्षी के घोसले में पाई न जल की रेखा।
क्या तकनीकी सिखाई तूने शिल्पशाली॥४॥ चन्दा....
संसार की नदी सब सागर में जा रही हैं।
सागर की तरंगें गुण तेरे गा रही हैं।
सरितायें भी बह रही हैं शीतल से नीरवाली॥५॥ चन्दा....
सभी प्राणियों के तूने ईश्वर बनाये जोड़े।
दुर्जन बहुत अधिक हैं सज्जन बनाये थोड़े।
थोड़े से बनाये गज सिंह शक्तिशाली॥६॥ चन्दा....
आवागमन का कैसा ये सिलसिला है।
जैसा कर्म है जिसका वैसा उसे मिला है।
इस सुन्दर विश्ववाटिका केवल प्रभु है माली॥७॥ चन्दा....

-देवराज शास्त्री

## धन्य जगत् में वह माता है...

टेक-धन्य जगत् में वह माता है, जिसने सब कुछ वार दिया।
अपने इस जीवन का सारा, उम्र तमाम गुजार दिया।

१. परमपिता ने सृष्टि बनाकर, अद्‌भुत खेल रचाया है।
माता-पिता की सेवा करना, उत्तम धर्म बताया है।
वेदों में भी माता-पिता की, सेवा करना समझाया है।
आया है जो भी जगत् में, सब ने यही दर्शाया है।
इनकी सेवा में रत होकर, जीवन मधुर सुधार लिया।
धन्य जगत् में वह माता है......॥

२. माता की ममता कुछ ऐसी, जिसका कोई पार नहीं।
अपने इन बच्चों की खातिर, कोई अशुभ विचार नहीं।
कैसे सुख मिल जाये इनको, मिलता जब आधार नहीं।
उसकी चिंता की सुध-बुध में, रहता कभी सुतार नहीं।
उसका जीवन कैसे सुधरे, ऐसा मधुर विचार दिया।
धन्य जगत् में वह माता है......॥

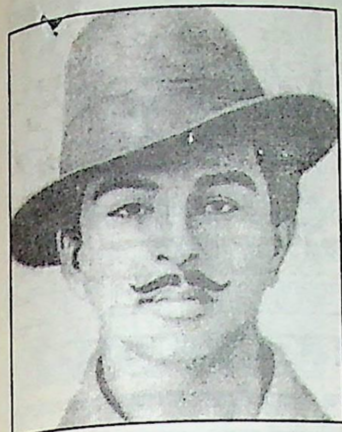
३. माता कौशल्या की शिक्षा से, श्रीरामचन्द्र महान् बने।
कठिन तपस्या करके वन में, रघु के कुल की शान बने।
रामराज्य स्थापित करके, रक्षक करुणा-निधान बने।
राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, माता के वरदान बने।
माता की सेवा कर-करके, सारा तस्वीर उतार लिया।
धन्य जगत् में वह माता है......॥

४. योगिराज श्रीकृष्ण जी देखो, योगेश्वर कहलाते हैं।
माता यशोदा की शिक्षा को, जीवन में अपनाते हैं।
उत्तम शिक्षा, उत्तम भोजन, उत्तम मार्ग बताते हैं।
उसका जीवन निर्मल बनता, जो इसको अपनाते हैं।
परमपिता ने शुभकर्मों का, सबको ही अधिकार दिया।
धन्य जगत् में वह माता है......॥

५. आज दशा माता की ऐसी, मैं तो कह नहीं पाता हूं।
भटक गई हैं मेरी माता, कहते हुए घबराता हूं।
बिन माता के कैसे बालक, देख के मैं रह जाता हूं।
मां-बेटे में प्रेम नहीं है, 'सरस' मैं दिल बहलाता हूं।
फिर से ऐसा युग आ जाए, हृदय ने यही विचार दिया।
धन्य जगत् में वह माता है......॥

**-सुरेन्द्रकुमार 'सरस'**, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना मार्ग, रोहतक

# भगतसिंह को क्रांतिकारी विचार विरासत में मिले थे


शहीदे आज़म सरदार भगतसिंह

❑ सत्यपाल बागी

हुसैनीवाला में शहीदे आजम भगतसिंह की शहीदी कान्फ्रेंस में श्री एच.एस. हंसपाल प्रधान पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने यह कहकर बहस के दरवाजे खोल दिए हैं कि ब्रिटिश सरकार ने बने बनाए प्लान के अधीन भगतसिंह के सिर पर हैट वाली तस्वीर छापकर उनको बदनाम करने की कोशिश की। उन्होंने मांग की कि सरकार हैट वाले भगतसिंह की तस्वीर सरकारी दफ्तरों से उतरवा कर उसके स्थान पर पगड़ी वाली तस्वीर लगवाए क्योंकि वह कट्टर सिख थे। श्री हंसपाल जी के लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है परन्तु स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की पृष्ठभूमि तथा शहीदे आजम भगतसिंह द्वारा हैट पहनने के कारणों को लेकर उनके परिवारजनों व संबंधियों ने जो विचार प्रकट किए हैं, वह हंसपाल जी के विचारों से मेल नहीं खाते। हंसपाल जी की ऐसी टिप्पणी पर एक लेख लिखकर मैंने अपनी पत्रकारिता का कर्त्तव्य निभा दिया था परन्तु उस लेख के छपने के पश्चात् शहीदे आजम भगतसिंह के रिश्तेदारों ने मुझे कई बार टेलीफोन करके यह लेख लिखने के लिए प्रेरित किया कि हैट पहनने के विषय से संबंधित शहीदे आजम की सोच और नजरिए संबंधी स्पष्ट बात करनी अनिवार्य है। भगतसिंह के भांजे डॉक्टर जगमोनसिंह (लुधियाना) और भतीजे बाबरसिंह (फरीदाबाद) आदि सभी से मैंने टेलीफोन पर एक प्रश्न पूछा कि भगतसिंह परिवार का सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक इतिहास समझना जरूरी है जिस पर अब तक बहुत कम लिखा गया है।

भगतसिंह के रिश्तेदारों ने भगतसिंह परिवार की चार पुश्तों के बुजुर्गों के नाम और उनके कार्यों के बारे में यह बताया। भगतसिंह के पिता किशनसिंह, दादा अर्जुनसिंह, पड़दादा अजीतसिंह, पड़दादा के पिता फतेहसिंह जुबान और असूलों के पक्के थे। उन दिनों स्वामी दयानन्द होशियारपुर आए। भगतसिंह के पड़दादा और उनके पिता दोनों उनके प्रवचनों से प्रभावित हुए और उनकी शिक्षाओं को अपने का एक हिस्सा बना लिया कि दूसरों की मुक्ति के साथ ही हमें भी मुक्ति प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार भगतसिंह परिवार आर्यसमाजी सिख परिवार बन गया। इसीलिए यह परिवार साम्प्रदायिकता, कट्टरपंथी घृणा, पाखण्ड और गलत धार्मिक रीति-रिवाजों के विरुद्ध संघर्ष कर जनसुधार के कार्य में व्यस्त रहा। देशभक्त होने के नाते स्वतंत्रता के लिए फतेहसिंह जैसे बड़े जिम्मेदार नेता फिरोजशाह, मुदकी और सभरावां में ऐंग्लो-सिख युद्ध में अंग्रेजी सेवा के विरुद्ध खूब लड़े परन्तु सिख जरनैलों की गद्दारी के कारण सिख नेता पराजित हुए। अंग्रेजों ने सारे पंजाब पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। इस घटना से दो बातें उभर कर सामने आती हैं कि स्वतंत्रता, देशभक्ति और राष्ट्रीय सेवा का जज्बा भगतसिंह को विरासत में प्राप्त हुआ था और उसमें गुरु गोविन्दसिंह की बेमिसाल कुर्बानी स्वामी दयानन्द की निष्काम सेवा का खून दौड़ रहा था। जमीन की जब्ती के कारण सारा परिवार मुश्किलों में घिर गया परन्तु वह अपने रास्ते और सिद्धांतों से पीछे न हटा।

शहीदे आजम के रिश्तेदारों ने यह दिलचस्प बात बताई कि उस समय जालंधर डिवीजन का कमिश्नर जॉन लारेंस को नियुक्त किया गया था जो बाद में पंजाब का गवर्नर भी नियुक्त हुआ। अमृतसर की प्रसिद्ध लारेंस रोड उसकी चमचागिरी के लिए निर्मित की गई थी। प्रोफेसर जगमोहनसिंह ने बताया कि दैनिक अंग्रेजी 'ट्रिब्यून' के संस्थापक दयालसिंह मजीठा के दादा श्री रणजीतसिंह मजीठा ने भगतसिंह के बुजुर्ग फतेहसिंह को मिलकर पेशकश की थी कि अंग्रेज सरकार आपकी विरोधी है। आप मेरे साथ जॉन लारेंस के पास चलकर ऐंग्लो-सिख युद्ध में अंग्रेजों का विरोध करने की गलती की क्षमा मांग लें, इस प्रकार आपकी जब्त की हुई सम्पत्ति वापस मिल जाएगी। फतेहसिंह ऐसे सिद्धांतवादी, साहसी सिख व आर्यसमाजी थे, जिन्होंने गुरु गोविन्दसिंह जी की महान् शिक्षा ग्रहण करके स्वतंत्रता के लिए लड़ना सीखा था। उनका उत्तर था-रणजीतसिंह जी मुझे देश की आजादी चाहिए गुलामी की जमीन नहीं और गवर्नर के पास जाने से इंकार कर दिया। उनकी आगामी चार नस्लें अजीतसिंह, अर्जुनसिंह, किशनसिंह तथा भगतसिंह ने गुरु गोविन्दसिंह और स्वामी दयानंद की शिक्षाओं पर अमल करके अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी का युद्ध जारी रखा।

**अंग्रेजी साम्राज्यवाद का विरोध**

अंग्रेज सरकार के हिमायती सिख जागीरदारों को अंग्रेजों का पिट्ठू कहा जाता था जिन्होंने विदेशी मल्लिका को प्रसन्न करने के लिए सिंह सभा स्थापित की थी और यह धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता फैला रही थी ताकि जनता आजादी का नाम ही भूल जाए। अंग्रेजों के संकेत पर ही ऐसे हिन्दू-सिख-मुसलमान और ईसाई दलों ने शिक्षा पर भी साम्प्रदायिकता के जहर की पालिश करके हिंदू कालेज, खालसा स्कूल, इस्लामिया स्कूल और क्रिश्चियन स्कूल स्थापित किये। इस प्रकार राष्ट्र को कट्टरपंथी सिख, कट्टरपंथी मुसलमान और कट्टरपंथी हिन्दू बनाकर देश को बांट दिया। भगतसिंह इसी कट्टरपंथी साम्प्रदायिकता को सुधार कर भाईचारे, मोहब्बत और एकता का संदेश देते रहे। सत्य यह है कि भगतसिंह के बुजुर्गों की चार नस्लें कट्टरपंथी और तंग दिल नहीं थीं वह तो प्रत्येक वस्तु को दलील और असूल की कसौटी पर परखकर ही निर्णय करते थे। भगतसिंह ने यही बात अपने बड़े बुजुर्गों से ग्रहण की थी। भगतसिंह को किसी प्रकार के साम्प्रदायिक संकुचित विचारों से बचाने के लिए ही उनके पिता किशनसिंह ने उन्हें नेशनल स्कूल और पुनः नेशनल कालेज लाहौर में दाखिल करवाया ताकि वह सूझवान और विशाल हृदय युक्त विद्यार्थी बन सके।

**गांव पंचायत स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुई**

प्रोफेसर जगमोहन ने अपनी नानी पंजाब माता विद्यावती और अपनी माता बीबी अमरकौर के हवाले से नाना-नानी के विवाह की यह दिलचस्प घटना भी बताई। भगतसिंह के पिता किशनसिंह की सगाई गांव मीरां वाला की इंद्रकौर (मायके का नाम) के साथ हुई। यह घटना भगतसिंह परिवार की विशाल सोच, स्वस्थ व प्रगतिशील विचारधारा का ठोस प्रमाण है। किशनसिंह की बारात का स्वागत मीरां वाले गांव में लड़की वालों ने अंग्रेजों की पिट्ठू सिंहसभा द्वारा बनाए छैने खड़काने और ढोलक बजाने के तरीके से किया। मीरां वाला गांव सिंहसभा के रीति-रिवाज अपना चुका था। यह देखकर भगतसिंह के दादा अर्जुनसिंह ने इस अवसर पर ही यह ऐलान कर दिया कि विदेशी सरकार की पिट्ठू सिंहसभा को मानने वालों का यह रिश्ता हमें स्वीकार नहीं। बारात अभी शादी किए बगैर ही वापस जाएगी। गांव में शोर मच गया। बुजुर्ग ग्रामीण सूझवानों ने निर्णय किया कि यह शादी पूरे गांव की इज्जत का सवाल है। हमें सिंहसभा से क्या लेना है। गांव की पंचायत ने सिंहसभा के साथ गांव का संबंध तोड़ने का ऐलान कर दिया और कहा कि हम स्वतंत्रता संग्राम का भाग बनेंगे। फलस्वरूप शहीदे आजम के माता-पिता का विवाह सम्पन्न हुआ।

हैट से संबंधित मेरे सवाल के जवाब में प्रो. जगमोहनसिंह ने बताया कि हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी की मीटिंग 8-9 सितम्बर 1928 को फिरोजशाह कोटला में हुई थी जिसमें यू.पी. से चंद्रशेखर आजाद और शिव शर्मा, बंगाल से जितेन्द्रनाथ घोष और विजय सिन्हा, बिहार से कमल तिवाड़ी और पंजाब से भगतसिंह और सुखदेव जैसे क्रांतिकारी शामिल हुए थे। मीटिंग में कहा गया कि रूस में लेनिन के नेतृत्व में सोसलिस्ट इन्कलाब सफल हो गया है। डी विलेश ने अंग्रेजों की गुलामी समाप्त करके आयरलैंड को स्वतंत्र करवाया है। मेजनी और गैरी बोडी जैसे इंकलाबी नेताओं ने इटली को रोमन साम्राज्य के अधिकार से मुक्त करवाया है। यह सोशलिज्म का समय है। लाला लाजपतराय की हत्या का प्रभावी जवाब देने में कांग्रेस असफल रही है। कांग्रेस ने न तो पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की है, न ही 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा लगाकर राष्ट्र को जागृत किया है और न अपना निशाना सोशलिज्म की प्राप्ति रखा है। यह कार्य पूर्ण करने के लिए हम अपनी पार्टी का नाम 'हिन्दोस्तान रिपब्लिकन पार्टी' रखते हैं।

(दैनिक पंजाब केसरी से साभार)

## बालविवाह जैसी कुरीतियों को शिक्षा व सामाजिक जागरूकता से ही रोका जा सकता है

कोटा, ११ मई। सांसद रघुवीरसिंह कौशल ने कहा कि बालविवाह एक ऐसी सामाजिक कुरीति है जो सैकड़ों वर्ष पूर्व परिस्थितियों वश फैली, लेकिन आज इसे रोकने के लिए शिक्षा व सामाजिक जागरूकता की महती आवश्यकता है। वे जिला आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बाल विवाह के विरोध में प्रकाशित 'बालविवाह-एक सामाजिक अभिशाप' फोल्डर का विमोचन कर रहे थे।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में सभा के जिला मंत्री कैलाशचंद बाहेती, हाडोती क्षेत्रीय वेदप्रचार समिति के मंत्री जे.एस. दुबे, आर्यसमाज तलवण्डी के प्रधान श्रीचंद गुप्ता समेत अन्य कार्यकताओं के प्रतिनिधि मण्डल बुधवार को कौशल से मिला। चड्ढा ने कौशल को आर्यसमाज की ओर से कोटा में किए जा रहे सामाजिक जनचेतना व जन-कल्याणकारी कार्यों की जानकारी दी।

इस पर कौशल ने कहा कि सामाजिक कुरीतियों व अंधविश्वासों के खिलाफ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आंदोलन के रूप में आर्यसमाज की स्थापना की। तब से यह आन्दोलन समाज का पथप्रदर्शक बना हुआ है। कोटा आर्यसमाज द्वारा चलाया जा रहा बालविवाह सामाजिक कुरीति जन-जागृति अभियान एक सार्थक कदम है। आर्यसमाज द्वारा चलाया जा रहा कार्यक्रम प्रशंसनीय। ऐसे सामाजिक चेतना के कार्यक्रमों को भविष्य में भी जारी रखने की आवश्यकता है।

-अर्जुनदेव चड्ढा, प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा

# जीवन को जानो

- इन्सान का जीवन मिलना एक सुनहरापन होता है।
- समय ही सम्पत्ति है इसका सदुपयोग करो।
- आज आपके हाथ में है इसे खाली मत जाने दो।
- इन्सान का जन्म मिलने के बाद ही ईश्वर की रचना को देखा और समझा जा सकता है।
- आप नेकी-बदी कोई भी रास्ता चुन सकते हैं जहां जाना हो वहां की टिकट ले सकते हैं।
- अगर आपका बैलेंस होगा तो ही आपका चैक पास होगा।
- आलू का बीज़ डालकर टमाटर कभी नहीं उगते चाहे लाख तंत्र-मंत्र कर लेना।
- मन हो चंगा तो कठौती में गंगा-मन साफ हो तो सब जगह अच्छी लगती है।
- जीवन से ही सब कुछ मिल सकता है किन्तु सब कुछ देकर भी जीवन नहीं मिल सकता।
- सरल जीवन पद्धति अपनाओ सादगी रखो जो संसार में सदाबहार रहती है।
- कोशिश करो इन्सान का जीवन मिला है कुछ देकर ही जाएं खाते में कुछ होना चाहिए।
- जरूरत को इतना मत बढ़ाओ कि सही रास्ता ही भूल जाओ।
- जीने के लिए खाओ, खाने के लिए मत जिओ।
- सत्य बोलो, सत्य भी मीठा बोलो, कम से कम बोलो।
- कुछ भी काम करने से पहले एक क्षण रुको, अंजाम पर विचार करो।
- सेहत का ध्यान रखो, कब्ज मत होने दो, बार-बार मत खाओ, चबा-चबाकर खाओ।
- बदले की भावना त्याग दो, क्षमा करो, समझौता करो।
- कोई क्या करता है उसे मत देखो, जो तुम करते हो उस पर विचार करो, तुम संसार को चला नहीं सकते, खुद चल सकते हो।
- संसारी चीजों पर मोह मत बना लेना यह सब एक दिन छूटने वाली हैं।
- अच्छी मौत के लिए अच्छी राह अपनाओ ताकि मौत से डर ना लगे।
- जो व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगता वो व्यवहार दूसरों के साथ भी मत करो।
- संसार में कोई भी छोटा-बड़ा नहीं होता जो गन्दा काम करता है वो छोटा होता है जो अच्छा काम करता है वही बड़ा होता है।
- इन्सान बनकर ही कर्म होता है इसलिए कर्म को ही प्रधानता दो बाकी जन्म सिर्फ भोग लिए होते हैं।
- ईश्वर के घर से इंसान पैदा होता है, दुनिया जात-पात का रंग चढ़ाती है, कहीं रंग में इंसान को ही भूल ना जाना।
- जैसे ईश्वर की सृष्टि निःस्वार्थ सेवा करती है, भेदभाव रहित होती है, उसी तरह जीवन बनाना चाहिए।
- बेदाग जिन्दगी जीओ, एक बार दाग लग जाए तो वह जाता नहीं, यह ध्यान रखना।
- इंसान को कल की सोच रहती है, उसी में तनाव बना लेता है। इन्सान के सिवा और किसी को तनाव नहीं होता।
- जीवन को स्वर्ग बनाओ, कुदरत के साथ वास्ता रखो, बाग में जाकर फलों-फूलों को देखो, जो धरती पर स्वर्ग है।
- आज को सुखी रखो कल का क्या भरोसा, काम को नोट करो, काम का निपटारा करो, तरक्की सामने होगी।
- संसार में सत्संग भी होता है, संगदोष भी होता है, कहीं संगदोष में ना फंस जाना।
- कथनी विष होती है, करनी अमृत होती है, कहते सभी हैं करता कोई-कोई है।
- कमजोर लोग भय को ही भूत समझ लेते हैं, भूत होता नहीं।
- झूठ बोलने के लिए सोचना पड़ता है, सच हमेशा याद रहता है।
- हर चमकती चीज सोना नहीं होती (संसार चमक दिखाकर लूट लेता है)।
- सत्य परमात्मा की ओर ले जाता है। असत्य संसार की ओर।
- अपने बेगानों से सावधान रहना।
- बुढ़ापे के लिए जवानी में ही विचार करो।
- इन्सान को छोड़कर कोई भी आलस्य कर ही नहीं सकता।
- रास्ता पूछने से मंजिल आसान हो जाती है।

संग्रहकर्ता-**ओमप्रकाश अग्रवाल** (माना सोसाइटी) २१९, आवास विकास कालोनी ऋषिकेश, उत्तरांचल

# सराहनीय कार्य

आर्यसमाज जवाहरनगर के प्रधान प्राध्यापक जयप्रकाश आर्य सुपुत्र श्री धनपत आर्य संरक्षक आर्यसमाज ने अपने सुपुत्र चि० दिनेश आर्य का विवाह आयु० नेहा के साथ दिनांक २३ जून, २००५ को बिना किसी दहेज एवं दिखावे के किया। समाज में जड़ बना चुकी सामाजिक कुरीतियों को तिलांजलि देते हुए एक आदर्श विवाह करके आज के चकाचौंध वातावरण में समाज के समक्ष आदर्श स्थापित करते हुए अपने आर्यत्व एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती के सच्चे अनुयायी होने का परिचय दिया। हम सभी नवदम्पति की दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य एवं सुखी गृहस्थ जीवन की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। -**भारतभूषण आर्य**, 'ओ३म् निवास' २८३/आर, न्यू कालोनी पलवल

# निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज अशोक विहार, दिल्ली के चुनाव १७ अप्रैल, २००५ को सम्पन्न हुए। प्रधान-श्री अविनाशचन्द्र कपूर, मंत्री-श्री वेदप्रकाश चौधरी, कोषाध्यक्ष-श्री रामनाथ कपूर।

-**वेदप्रकाश चौधरी**, मंत्री, आर्यसमाज अशोक विहार, दिल्ली



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजमाब्द १८२






आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य विचारधारा का अग्रणी हिन्दी साप्ताहिक पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक
प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष ३२ अंक ३५ ७ अगस्त, २००५ वार्षिक शुल्क ८०) विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## हरी-भरी वसुन्धरा पर विश्व का रमणीक देश : भारत माता ( सोने की चिड़िया )

# वेद और अमैथुनी सृष्टि

सम्पूर्ण विश्व तीन तत्त्वों-जल, वायु तथा औषधियों से घिरा हुआ है। ये संसार को जीवनी शक्ति प्रदान करते हैं। इनके बिना जीवन असम्भव है। पांच स्थूल महाभूतों से सृष्टि की संरचना हुई। विविध सृष्टि का अर्थ है-हरी-भरी वसुन्धरा उसमें लहलहाते फूल, पेड़-पौधे, गरजते बादल, चमकती बिजली, पहाड़, वन, औषधियां, नाचते मोर, कल-कल बहती नदियां, सागर, समुद्र, मनुष्य, पशु, जानवर, कीट-पतंगे, अन्य सभी प्रकार के जीव-जन्तु आदि। इन्हीं पांच महाभूतों के सूक्ष्मांश (तन्मात्राओं) से मानव शरीर की निर्मिति हुई है।

जिन जीवों के कर्म ऐश्वरीय सृष्टि में उत्पन्न होने के थे, उनको जन्म सृष्टि की आदि में ईश्वर देता है। आदि सृष्टि में ऋषि अग्नि ने ऋक्, वायु ने यजु०, आदित्य ने साम० तथा अङ्गिरा ने अथर्व० एक-एक वेद का ज्ञान संस्कृत भाषा में परमेश्वर से रु-ब-रु ग्रहण किया। इन ऋषियों को हिन्दी भाषा में बोध नहीं था। आदि सृष्टि में युवा अवस्था में सैकड़ों-सहस्रों स्त्री-पुरुषों के शरीरों की कृत्रिम गर्भाशय प्रणाली से रचना हुई। परमेश्वर ने इन जीवों को तिब्बत देश में स्वतन्त्र छोड़ दिया। यह गीता का वचन है-"प्रभु ने मानव समाज को यज्ञ के साथ उत्पन्न करके कहा कि इस यज्ञ की भावनाओं का पालन करते हुए फूलो-फलो। इससे तुम्हारी सब कामनाएं पूर्ण होंगी।" (गीता ३-१०) आदि सृष्टि में ये सब नर-नारी अनेक मां-बाप के सन्तान थे। इनके शरीर सुन्दर और सुडौल थे। आदिसृष्टि में वेदों का ज्ञान इन चार ऋषियों के माध्यम से सर्वत्र फैला। आदिसृष्टि अमैथुनी होती है। क्योंकि जब स्त्री-पुरुषों के शरीर बनाकर परमात्मा उनमें जीवों का संयोग कर देता है तदनन्तर मैथुनी सृष्टि चलती है। प्रभु की वाणी तो प्राप्त हुई इन ऋषियों के द्वारा, विशुद्ध ऋषियों ने वेदवाणी में अपनी ओर से कुछ नहीं मिलाया क्योंकि मूलरूप से मनुष्य का अपना कोई ज्ञान है ही नहीं, अतः यह ठीक है कि ऋषियों ने अपनी ओर से कुछ नहीं जोड़ा। सर्वप्रथम अङ्गिरा ऋषि ने अग्नि प्रदीप्त करके उत्तम कर्मों से शान्ति स्थापित की। कविपुत्र उशना ने यज्ञ के साथ गाय के घी का सम्बन्ध स्थापित किया।

आज हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बहुविध सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं। परन्तु अमैथुनी सृष्टि के मनुष्य के पास सर्दी, गर्मी, वर्षा और अन्धड़ से बचने के लिए कुछ भी साधन नहीं था। हां, ईश्वरीय ज्ञान से रूप में गृहविद्या का परिमित-सा ज्ञान था। उसी के आधार पर क्रियात्मक क्षेत्र में उतरकर सब सुख-सुविधाओं से युक्त स्थापत्य कला का जिन्होंने आविष्कार और विकास किया, वास्तव में उन्हीं के जीवन को आदर्श जीवन कहा जा सकता है।

कोई बुद्धिमान् किसी सिद्धान्त के तत्त्व को जानता हुआ या शब्द के गूढ़ अर्थ को अनुभव करता हुआ अपनी तीव्र बुद्धि का परिचय देता है और कोई उसी के द्वारा पदार्थों के गुणों को जानकर उनके संगत करने से कलायन्त्र बनाता हुआ संसार को लाभ पहुंचाता है। विषय भोग की अधिकता से बुद्धि मलिन होती हुई मनुष्य को पशुतुल्य बना देती है और शुद्ध सात्त्विक बुद्धि उसको उच्च श्रेणी में पहुंचा देती है। अमेरिका के "एण्ड्रो जैक्सन डेविस" जैसे विद्वान् इस बात को मानते हैं कि वास्तव में कोई मनुष्य "ओरिजनल" नहीं कहला सकता क्योंकि वैज्ञानिक सिद्धान्त या परिभाषाओं में वृद्धि या ह्रास हो नहीं सकता। जैसे आदर या सत्कार का सिद्धान्त सर्वदा एक सम है, भाषा भी जो कि आन्तरिक और सार्वजनिक साधन है, स्वाभाविक और अनादि है। भाषा के मुख्य उद्देश्य में कभी उन्नति का होना सम्भव नहीं, क्योंकि उद्देश्य सर्वदेशी और पूर्ण होते हैं और किसी प्रकार भी उसमें परिवर्तन नहीं हो सकता, वे सदैव अखण्ड और एकरस रहते हैं।

स्वभाव में कोई भी विकार नहीं है, अत एव स्वाभाविक पदार्थ स्वच्छ और निर्दोष होते हैं और यही "अफलातून" का मत था। स्वाभाविक मां के पेट से निकला हुआ बच्चा कृत्रिम दशा में रहने वाले बच्चों से अधिक पवित्र होता है। वे जीव जिन्होंने सृष्टि आदि में अमैथुनी शरीर धारण किये थे उनके बढ़कर पवित्र बुद्धि रखने वाले और शुद्धात्मा कोई जीव नहीं हो सकते। वे जीवात्मा स्वभावज कहलाने के योग्य थे, क्योंकि उस समय स्वभाव

( शेष पृष्ठ दो पर )

## हल गया-बैल गए

❑ -डॉ० श्यामसखा 'श्याम', 'पलाश' १२, विकास नगर, रोहतक


डॉ. श्यामसखा 'श्याम'

हल गया
बैल गए;
देसी धरती पर
विदेशी फैल गए।
हंसिया गया कुदाल गई;
गाँव की छोरी को
विदेशी मेम उछाल गई।
पनघट गया, नल आया
पानी तो पानी-पानी हुआ
बोतलों में बंद होकर
मिनरल जल आया।
गाँव के गबरू
पहनकर जीन्स
भइया, बन छैल गए।
हल गया बैल गए।
ब्रेट-बटर की टक्कर में
माखन-रोटी फकीर हुई,
मस्कारा रखैल के चक्कर में
जलील काजल की लकीर हुई।
आँख की लाज गई,
पर नहीं, मन के मैल गए
हल गया बैल गए।
पीपल की छाँव गई
हल्दी पराए गाँव गई
नीम का कड़वा स्वाद
ले गए विदेशी जल्लाद
फ्लैटों की आँधी चली
महल-दुमहले बन
खपरैल गए
हल गया बैल गए।
माँ
तो जीते जी मम्मी हुई
पिता बिन मरे
हो 'डैड१' गए
देख-देख
टी वी भइया
बच्चे घर के बन 'हैड'२ गए
'हॉट-डॉग'३ की सजी महफिल
दही-भल्ले बन दबैल गए
हल गया बैल गए।

**अंग्रेजी शब्द**

१. डैड-डैडी (पिता) डेड मरा हुआ
२. हैड-मुखिया
३. एक व्यंजन

## अमर रहे यह दिवस महान्

❑ राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

अमर शहीदों के शोणित का,
प्रतिफल है यह पावन पर्व,
इसकी गौरव गरिमा पर है,
हर भारतवासी को गर्व,
आजादी के महासमर में
दिया सपूतों ने बलिदान।
अमर रहे यह दिवस महान्॥
बिस्मिल-भगत-सुभाष सदृश ने,
इसके हित में प्राण लुटाया।
स्वतंत्रता की बलिवेदी पर,
निज प्राणों का अर्घ्य चढ़ाया।
दिया देश के लाखों युवकों
ने तन-मन-धन सब कुछ दान।
अमर रहे यह दिवस महान्॥
आज राष्ट्र की स्वतंत्रता पर,
संकट के घन छाए हैं।
उग्रवाद-आतंकवाद के,
बादल नभ मंडराए हैं।
आओ! ले संकल्प पुनः हम
देंगे स्वतंत्रता हित प्राण।
अमर रहे यह दिवस महान्॥
राजनीति के शुचि प्रांगण से,
स्वार्थों का हो पूर्ण निवारण।
जन-जन में फिर से हो अविरल,
राष्ट्र भक्ति का फिर संचारण।
बढ़े धरा पर भारत माँ की
निष्ठा तथा प्रतिष्ठा शान।
अमर रहे यह दिवस महान्॥
स्वतंत्रता संग्राम समय की,
प्रखर देशभक्ति हो जागृत।
डट जावें कर्त्तव्य पथों पर,
युवक हमारे अब अप्रतिहत।
ध्वज तिरंगा लहराए नभ में
गूंजे भारत का जय गान।
अमर रहे यह दिवस महान्॥

## आर्यसमाज की विजय

जयपुर में एक न्यायाधीश द्वारा आर्यसमाज द्वारा कराये जाने वाले विवाहों के विरुद्ध एक जनहित याचिका डाली थी। इस न्यायाधीश से न्यायालय से आर्यसमाज द्वारा विवाह कराने पर पाबंदी लगाने हेतु मांग की थी। आर्यसमाज की ओर से गुरुकुल झज्जर के स्नातक और वेदव्रत शास्त्री रोहतक के भतीजे श्री वेदपाल शास्त्री एडवोकेट ने बड़ी दक्षता से उस मुकदमे में आर्यसमाज में विवाह कराने के पक्ष में अपने तर्क प्रस्तुत किए। हाई कोर्ट की डबल बैंच ने दोनों पक्षों के तर्कों को बड़ी तन्मयता के साथ सुना तथा पाया कि उक्त न्यायाधीश द्वारा डाली गई उच्च न्यायालय में यह जनहित याचिका वैमनस्य पर आधारित है न कि जनहित पर। अन्ततः उच्च न्यायालय की डबल बैंच ने आर्यसमाज के पक्ष में २६ जुलाई, २००५ को अपना निर्णय सुना दिया। इस निर्णय की विस्तृत रिपोर्ट आने पर प्रकाशित की जायेगी।

## वेद और अमैथुनी सृष्टि.... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

का स्वच्छ पर बनावट और मानुषी निर्बलता के धब्बे से कलुषित नहीं हुआ था। जो ज्ञान उस समय के ऋषि अपनी मेधा बुद्धि से धारण कर सकते थे, जो शक्ति शब्दों का गूढ़ अर्थ अनुभव करने की उनमें थी वह शक्ति मैथुनी सृष्टि के ऋषियों में कदापि नहीं हो सकती। उन ऋषियों के आत्मा अपनी पूर्ण उन्नत अवस्था में स्वाभाविक और अनायास लब्ध उच्च साधनों से युक्त थे। मैथुनी सृष्टि में उत्पन्न होने वाले जीव उन ईश्वरीय पुत्रों से बढ़कर शुद्ध मेधा नहीं कर सकते, इसलिए जो इस आदर्श और पूर्ण ज्ञान में उन सब सत्यविद्याओं का मूल विधान था जिसको कि जीवात्मा अपनी उन्नतावस्था में ग्रहण करके विस्तार दे सके। जिस प्रकार जल की गंगा गंगोत्री से निकलकर अशुद्ध और मलिन होती गई, ठीक उसी प्रकार ज्ञान की गंगा अमैथुनी सृष्टि के आदि महर्षि के हृदयों से अपनी स्वाभाविक स्वच्छ दशा में निकली थी, इसके पश्चात् वह जीवों की अविद्या के कारण मलिन दशा में दीखने लगी।

स्वभाव और पूर्णतया पर उन्नति करना असम्भव है इसलिए उस समय से लेकर आगामी प्रलय पर्यन्त कोई भी ऋषि इस आदर्श ज्ञान की अपेक्षा उन्नति नहीं कर सकेगा। जहां तक दौड़कर टांगों वाला पहुंच चुका है, वहां रेंगने वाले का पहुंचना कठिन है। अमैथुनी सृष्टि स्वच्छ और अभ्रान्त दशा का दूसरा नाम है, दिन-रात के चौबीस घण्टों में जो प्रातःकाल है, उसके बराबर और कोई समय का भाग नहीं हो सकता। जो गूढ़ विचार मनुष्य प्रातःकाल के समय कर सकता है वह कभी मध्याह्न या अपराह्ण में नहीं कर सकता। संसार के विद्वान् प्रातःकाल के इस महत्त्व को स्वीकार करते हैं। कवि और योगी इसी प्रातःकाल में अद्भुत रचना और सिद्धि प्राप्त किया करते हैं। वे महर्षि जिनको कि सृष्टि के प्रातःकाल में काम करने का अवसर मिला था, उनके बराबर आगामी काल के वे महर्षि जिनको कि मध्याह्न या अपराह्ण का समय मिला हो कब हो सकते हैं? प्रातःकाल का समय दिन भर के लिए आदर्श है। वसन्त ऋतु सब ऋतुओं का राजा है। अमैथुनी सृष्टि के ऋषि मैथुनी सृष्टि के ऋषियों के गुरु हैं। प्रातःकाल यदि पूर्ण रीति पर ज्ञान धारण करने के लिए है तो शेष दिन उस ज्ञान के अनुसार काम करने के लिए समझना चाहिए किन्तु यदि हम कल्पना भी कर लें कि मध्याह्न में भी आत्मा उतना ही गूढ़ विचार कर सकती है जितना प्रातःकाल में करती है तो भी इससे प्रातःकाल के बराबर मध्याह्न हो सकता बढ़कर नहीं। अर्थात् जल अपने धरातल से ऊंचा नहीं जा सकता और जहां तक ऊंचा जाता है उससे उसके धरातल का पता लगता है। आत्मा के स्वाभाविक गुण और अवस्था में कभी न्यूनाधिकता नहीं हो सकती अत एव यह ज्ञान जो आदि सृष्टि में मनुष्यों को ईश्वरीय प्रेरणा से स्वच्छ आत्माओं के द्वारा मिला था, उसकी उपेक्षा उन्नति करना मानो स्वभाव या ईश्वरीय कामों में तुच्छ मनुष्यों का हस्पक्षेप करना है जो कि कभी सम्भव नहीं। मैथुनी सृष्टि के ऋषि यदि पूर्ण उन्नति करें तो उस ज्ञान के निकट पहुंच सकते हैं उससे ऊपर जाना तो सर्वथा असम्भव है और उसके पार्श्व तक पहुंचने के लिए भी मैथुनी सृष्टि के ऋषियों को उस समय आदि ज्ञान का सहारा लेना पड़ता है। मलिन कांच प्रकाश का आकर्षण नहीं कर सकता, जितना कांच स्वच्छ होगा, उतना ही वह प्रकाश को धारण कर सकेगा। आज यदि मलिनात्मा वैदिक सूर्य के ज्ञान रूप प्रकाश को धारण नहीं कर सकता तो उसकी मलिनता का दोष है न कि प्रकाश का और यदि कोई बुद्धिमान् उस प्रकाश के अंश को अपनी शुद्धता के कारण धारण करके संसार को अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाता हुआ ओरिजिनेल्टी (नवीनता) का परिचय दे तो हमें यह कभी नहीं कहना चाहिये कि उन्होंने नया प्रकाश बनाया है, किन्तु यह कहना चाहिये कि प्रकाश को धारण या आकर्षण करने की बुद्धि उसमें है। मेधावी पुरुष अपने साधनों की उत्तमता का उदाहरण देते हैं न कि स्वाभाविक ज्ञान के सूर्य को बनाया करते हैं। ज्ञान के सूर्य को न कोई घटा सकता है न कोई बढ़ा सकता है।

जीव शुद्ध साधनों के होने पर केवल उसके तेज को अनुभव कर सकता है। शब्दार्थ सम्बन्ध रूपी श्रुतियों के आदि सृष्टि से लेकर त्रेता युग की समाप्ति पर्यन्त लोग श्रवण द्वारा ग्रहण करते और स्मृति के पुस्तकालय में सुरक्षित रखते हुए अपने जीवन में वेद के एक-एक शब्द के अपने आचरण से अर्थ दिखाते थे, परन्तु समय आया जब कि लोगों ने प्रमाद से अपने साधनों को निर्बल कर लिया और जब वे वेद को श्रुति की दशा में न रख सके तब ऋषियों ने श्रुति के बोधन वाले अक्षरों ने वेद को लिखकर चार पुस्तकों के स्वरूप में परिणत किया और ये चार पुस्तक ऋक् यजुः, साम०, अथर्व के नाम से प्रकरणानुसार प्रसिद्ध हुई। अमैथुनी सृष्टि में पुस्तक की आवश्यकता न थी। परन्तु मैथुनी सृष्टि में आवश्यकता होने के कारण पुस्तकबद्ध हुई।

वेद कहता है **प्रजया इध्यस्व**-हमें प्रजा द्वारा चमकाइए। प्रजा का अर्थ है-**प्रकृष्टेन जायते**-माता पिता ने संकल्प लिया है तथा विशेष तैयारी से उत्पन्न किया है। जो सन्तान खेल-खेल में, बिना किसी उद्देश्य के ऐसे ही उत्पन्न हो जाती है, वह प्रजा नहीं है। अतः हमें नित्य यज्ञ करना चाहिये तथा मन, वाणी और कर्म से वेदों के नियमों का पालन करना चाहिए। राष्ट्र को व्यवस्थित रखने का वेदोक्त मार्ग ही एकमात्र उपाय है, अन्य नहीं।

# अतिरिक्त जिला जज रोहतक श्री राजेन्द्रकुमार बिश्नोई के द्वारा दिनांक २७.७.२००५ को दिये गये फैसले का तथ्यात्मक पहलू

❑ डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार

मुझे कई साथियों ने बार-बार अनुरोध किया कि आर्यसमाज के क्षेत्र में दिनांक २७.७.२००५ के आदेश को लेकर कुछ असमंजस की स्थिति है और यह उस समय तक बनी रहेगी जब तक इस फैसले के सही तथ्य सामने नहीं आ जाते। मैं यह सोचकर बचता रहा कि मैं लिखूंगा तो तथ्यपरक आलेख, किन्तु बदले में मिलेंगी गालियां। कारण कि कुछ भाई सच्चाई को न तो बरदाश्त कर पाते हैं और न ही हजम कर पाते हैं। ऐसी स्थिति में फिर पानीपत, जीन्द, नरवाना, हिसार, सिरसा आदि स्थानों से भी सही जानकारी के इच्छुक आर्यजनों ने दूरभाष पर वास्तविक स्थिति को जानना चाहा तो मैंने सोचा कि सभी आर्यजनों के समक्ष यदि सही तस्वीर प्रस्तुत कर दी जाए तो क्या हानि है? अत: साथियों की जिज्ञासा ने भी मुझे दो शब्द लिखने के लिए मजबूर कर दिया और तथ्य आपके सामने है।

सन्दर्भित फैसले के अंश प्रस्तुत करने से पूर्व यह बताना आवश्यक प्रतीत होता है कि इस फैसले की पृष्ठभूमि क्या रही है? पृष्ठभूमि में यदि दूर तक जाया जावे तो भूमिका लम्बी हो जावेगी और प्रस्तुयमान विषय गौण बनकर रह जावेगा, अत: संक्षेप में उल्लेख करना उपयुक्त होगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के चुनाव तथा प्रबन्धन को लेकर काफी समय से रस्साकशी चल रही थी। मैं भी कभी-कभी स्व० चौ० माडूसिंह जी के साथ सार्वदेशिक सभा की बैठकों में दर्शक के रूप में शामिल होता था। उस समय सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती होते थे और मंत्री श्री ओ३म्प्रकाश त्यागी थे। बाद में डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री की लाटरी खुल गई और काफी समय तक मंत्री पद पर आसीन रहे। इसी धुंधलके में श्री विमल वधावन नामक एक नाटे कद के आदमी के दर्शन हुए। उस समय मैं उनको सभा का कोई कर्मचारी और स्वामीजी का विश्वसनीय सेवक समझता था, क्योंकि स्वामी आनन्दबोध उसे बुरी तरह से झिड़क देते थे। बाद में धीरे-धीरे पता चला कि यह तो वकील है और आर्यसमाज के सम्पर्क से अपना व्यवसाय अच्छी प्रकार चलाने के लिए स्वामीजी के इर्द-गिर्द रहता है। किन्तु इतिहास साक्षी है कि ऐसे जीव कभी न कभी स्वयं उसी आसन के स्वयं प्रबंधक बन जाते हैं, जिसके कभी वे सेवादार रहे हैं। विचारणीय विषय की ओर बढ़ते हैं।

स्वामी आनन्दबोध की मृत्यु के पश्चात जो अन्तरिम व्यवस्था रही, उसमें श्री सोमनाथ मरवाह काफी प्रभावी व्यक्ति थे और उनका श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् के साथ अच्छा सम्बन्ध होने के कारण दिल्ली सभा और पंजाब सभा पर पूरा नियन्त्रण था। हरयाणा सभा पर वे अपना वर्चस्व कभी भी कायम नहीं कर पाए। सुनियोजित ढंग से अन्तरंग सभा से प्रस्ताव पास करवाकर हैदराबाद में सभा का चुनाव रखा। मंच पर उस समय स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री सोमनाथ मरवाह तथा श्री वन्देमातरम् मौजूद थे। कार्यवाही का संचालन डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री कर रहे थे। जब श्री वन्देमातरम् का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत किया गया तो प्रो० शेरसिंह ने मंच पर जाकर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का नाम प्रस्तुत कर दिया, इस पर विवाद हो गया और आधे से अधिक सदस्यों ने आर्यसमाज सुलतान बाजार (जो आन्ध्रप्रदेश प्रतिनिधि सभा का कार्यालय था) में जाकर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को सर्वसम्मति से प्रधान चुन लिया। यह सारी कार्यवाही कै० देवरत्न आर्य की देखरेख में हुई, जिन्हें उस समय चुनाव अधिकारी बनाया गया था। बीच में क्या-क्या हुआ वह विस्तृत विषय है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि उस समय श्री वन्देमातरम् सभा पर काबिज होने में सफल रहे और डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री फिर मंत्री बन गये। उस समय के सार्वदेशिक साप्ताहिक में कै० देवरत्न के बारे में जो लेख छापे जाते थे उन्हें पढ़कर शर्म से सिर झुक जाता है, किन्तु क्या पता था कि कभी यही कै० देवरत्न सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी बन जावेंगे, लेकिन उस कुछ समय में सन् १९९८ का चुनाव आते-आते काफी कुछ बदल चुका था। श्री वन्देमातरम् का देहावसान हो चुका था। श्री मरवाह और श्री सूर्यदेव में भी अनबन हो चुकी थी। चुनाव की तिथि से कुछ समय पूर्व श्री सूर्यदेव हरयाणा सभा के नेताओं के साथ सभा कार्यालय पर कब्जा करने में सफल रहे थे। चुनाव हुआ और स्वामी ओमानन्द प्रधान तथा श्री सूर्यदेव मंत्री निर्वाचित हुए। समानान्तर सभा में श्री मरवाह प्रधान और आचार्य भगवान्देव मंत्री बने। इस समय तक स्वामी अग्निवेश और इन्द्रवेश की हरयाणा सभा के कार्यों में स्वामी ओमानन्द सरस्वती के आदेश और अनुमति से सक्रिय भागीदारी हो चुकी थी।

इस चुनाव के बाद फिर खींचतानी जारी रही। बीच में दोनों सभाओं के मंत्री इस संसार से चल बसे। श्री सूर्यदेव के स्थान की जो पूर्ति की गई वह हरयाणा के नेताओं की सबसे बड़ी भूल थी, खैर भूल से ही इतिहास बनता है और भूल का खामियाजा हमें उस समय भुगतना पड़ा जब श्री रामफल बंसल और श्री मरवाह के बीच एक गुप्त समझौता २५ जुलाई २००१ को श्री मरवाह के आवास पर हुआ। इसी समझौते में श्री बंसल ने श्री मरवाह के निर्देशानुसार काम करने की कसम खाई। उसका परिणाम निकला कि ८ अगस्त, २००१ को दिल्ली की अदालत ने फैसला देकर दोनों पक्षों को अलग करके निष्पक्ष चुनाव के लिए दो व्यक्तियों को जिनमें एक चंडीगढ़ के सेवानिवृत्त न्यायाधीश और दूसरे श्री बंसल थे। फैसले के अनुसार दोनों की उपस्थिति जरूरी नहीं थी। एक का किया हुआ काम भी दूसरे का माना जावेगा, ऐसा प्रावधान आदेश में दिया गया था। स्वामी ओमानन्द सरस्वती इस फैसले से सहमत हो गये, क्योंकि श्री बंसल स्वामीजी के वकील थे और उन्हें १५.७.२००१ को चार्ज सौंप दिया। चार्ज लेते ही श्री बंसल ने तेवर बदलने शुरू कर दिये और सबसे पहला प्रहार स्वामी ओमानन्द की सदस्यता समाप्त करने के रूप में किया।

३ नवम्बर, २००१ को सार्वदेशिक सभा का चुनाव हुआ। कुछ प्रतिनिधि सभाओं के अधिकृत/स्वीकृत प्रतिनिधियों को चुनाव स्थल पर जाने से रोक दिया गया और चुनाव भी निर्धारित समय से पहले कर लिया गया। कै० देवरत्न आर्य को प्रधान घोषित कर बाकी पदाधिकारियों को मनोनयन का अधिकार नवनिर्वाचित प्रधान को देकर उन्हें कुर्सी सौंपकर, जिन स्वामी धर्मानन्द को बोलते तक नहीं, उनके चरणों में माथा टेककर श्री बंसल वहां से विदा हो गये। स्वामी ओमानन्द की अध्यक्षता में दूसरा समानान्तर चुनाव दीवान हाल के सामने सड़क पर किया गया और प्रो० कैलाशनाथसिंह को प्रधान, स्वामी अग्निवेश को कार्यकारी प्रधान तथा श्री सत्यव्रत सामवेदी को मंत्री चुना गया और कार्यालय ७ जन्तर-मंतर रोड, नई दिल्ली में रखा गया। दोनों सभाओं के अलग-अलग आयोजन होते रहे और प्रो० कैलाशनाथसिंह के आयोजन में, जो सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया था, तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी भी गये। अगला चुनाव नवम्बर २००४ में होना था, जिसके लिए विधिवत् सभी सभाओं से प्रतिनिधि मांगे जाने थे, किन्तु ऐसा नहीं किया गया, चुनाव श्री वधावन आदि ने १८.७.२००४ को किया, हरयाणा से किसी भी अधिकृत प्रतिनिधि ने इस चुनाव में भाग नहीं लिया क्योंकि सभा में इसकी कोई सूचना ही नहीं दी गई। आज जो मेरे आदरणीय भाई इस प्रकार की बात कह रहे हैं कि १८.७.२००४ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव हो चुका था और उसमें कै० देवरत्न को प्रधान श्री विमल वधावन को मंत्री चुना गया था। क्या वे इस विषय में बता सकते हैं कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से किन-किन प्रतिनिधियों ने इस चुनाव में भाग लिया, जिन्हें सभा के साधारण अधिवेशन में निर्वाचित किया हो।

इस चुनाव की वैधता के बारे में इसी बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह चुनाव कितना न्यायसंगत था। जब कै० देवरत्न आर्य का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत किया गया तो उसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। उस समय कै० देवरत्न अधरंग से पीड़ित होने के कारण अपने भाई/रिश्तेदार के पास अजमेर में थे, चलने फिरने व बोलने में असमर्थ थे। प्रधान के चुनाव के बाद उनको दिये गये अधिकार के ऊपर एक सूची ठीक पन्द्रह मिनट बाद जारी की गई, जो कार्यकारिणी/ अन्तरंग की थी, जिस पर नवनिर्वाचित प्रधान कै० देवरत्न आर्य के हस्ताक्षर थे। इस पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता, पाठक इसका स्वयं ही विश्लेषण करें तो अच्छा है। इस चुनाव पर काफी खींचातानी रही, क्योंकि दिल्ली सभा की ओर से श्री वधावन और श्री वेदव्रत शर्मा का नाम सार्वदेशिक के प्रतिनिधियों में नहीं भेजा गया था, इस कारण वे अधिकारी नहीं हो सकते थे। सभी प्रान्तों में इस चुनाव के प्रति आक्रोश था और उसकी परिणति १२.९.२००४ गुरुकुल गौतमनगर में हुई जहां स्वामी अग्निवेश को सार्वदेशिक सभा का प्रधान चुना गया, जिसमें निर्वाचन अधिकारी के रूप में श्री राममोहनराय वकील पानीपत ने कार्य किया। स्वामी अग्निवेश ने प्रधान के रूप में काम करना शुरू किया और उनके चुनाव के खिलाफ दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका डाली गई, जो अभी विचाराधीन है। नवीनतम स्थिति के अनुसार माननीय न्यायालय ने श्री वधावन से १८.७.२००४ के चुनाव सम्बन्धी सभी रिकॉर्ड और प्रक्रिया को तलब कर लिया है। आगे जो होगा उस पर फिर चर्चा करेंगे। इस समय इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अक्तूबर २००४ में डाले गये वाद के आधार पर श्री वधावन स्वामी अग्निवेश को प्रधान के रूप में काम करने से रोक लगवाने में समर्थ नहीं हो पाए हैं और आज वे उसी अवस्था में है, जिसमें कभी उन्होंने स्वामी ओमानन्द को किया था। मैं समझता हूँ कि स्वामी ओमानन्द सरस्वती के सहयोगियों व प्रशंसकों को उस पाटड़ा फेर से अवश्य हार्दिक प्रसन्नता हुई होगी।

प्रिय आर्य बन्धुओ! आप समझ रहे होंगे कि आलेख का शीर्षक कुछ और था और बताया कुछ और जा रहा है, इससे मैं निन्दा का पात्र भी बन सकता हूं। अत:

निवेदन करना चाहता हूं कि सारी बात को समझने के लिए इन तथ्यों को लिखा जाना नितान्त आवश्यक था।

जब से स्वामी अग्निवेश ने सार्वदेशिक सभा के मुख्य कार्यालय ३/५ दयानन्द भवन आसफ अली रोड, नई दिल्ली से काम करना शुरू किया है, जिसे कुछ साथी अवैध कब्जा मानते हैं, प्राय: सभी प्रान्तों में और विशेषकर हरयाणा प्रान्त में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। इस बात की पुष्टि इस बात से भी होती है कि मार्च २००५ में न केवल दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में आयोजित यतिमंडल की बैठक में इस साहसिक कार्य के लिए धन्यवाद प्रस्ताव पास किया गया अपितु गुरुकुल झज्जर के उत्सव पर भी उसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई, किन्तु न जाने बाद में किसकी नजर लगी, परिस्थितियां बदलती चली गईं और परिणाम कुछ और ही दिखाई देने लगा। जिस स्वामी अग्निवेश के साथ गुरुकुल गौतमनगर में २७.६.२००४ के सभा चुनाव के महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये थे, वहीं स्वामी अग्निवेश एकदम उनकी नजर में गैर आर्यसमाजी हो गये। विचार कहां से उत्पन्न हुआ, भगवान् ही जानता है। आपसी बातचीत की प्रबन्धन के बारे अनेक कोशिशें की गईं, लेकिन सब बेकार। इस पर विस्तार से की गई विवेचना किसी साथी मित्र को परेशान कर सकती है। अत: उससे संकोच करना ज्यादा ठीक है।

अब परिस्थितियां इतनी तीव्र गति से परिवर्तित होने लगीं कि उसका परिणाम सार्वदेशिक सभा के प्रधान के दिनांक १.५.२००५ के आदेश के रूप में सामने आया, जिसकी पृष्ठभूमि के बारे में विस्तार से लिखना सामयिक नहीं है। फिर भी कुछ महत्त्वपूर्ण कारणों से उस आदेश का जारी करना अपरिहार्य हो गया। दिनांक १.५.२००५ के आदेश के विरुद्ध स्थानीय अदालत में ५.५.२००५ को एक वाद प्रस्तुत किया गया, जिसमें स्वामी अग्निवेश समेत ग्यारह व्यक्तियों को प्रतिवादी बनाया गया। न्यायालय ने १०.६.२००५ तक यथास्थिति बनाए रखने के आदेश दे दिये। १५.६.२००५ को पारित आदेश के अनुसार १.५.२००५ के आदेश को आंशिक मान्यता मिली। उसके आधार पर सभा के चुनाव १४.८.२००५ से पूर्व करवाये जाने थे। १६.६.२००५ की तदर्थ समिति की आपात कालीन बैठक में निर्णय लेकर ७.८.२००५ को चुनाव करवाना था फैसला लिया गया और उसके लिए चुनाव अधिकारी भी नियुक्त कर दिया गया। १६.६.२००५ को ही १५.६.२००५ के आदेश के खिलाफ एक अपील जिला जज रोहतक की अदालत में की गई, जिसका फैसला १८.६.२००५ को सुनाया गया। इसके अनुसार चुनाव तो करवाये जा सकते थे किन्तु उसका परिणाम घोषित नहीं किया जाना था। इस आदेश में तदर्थ समिति की आर्थिक शक्तियां जो परीक्षण कोर्ट ने दी थी, वापिस लेकर वादी को दे दी गई। दोनों पक्ष उच्च न्यायालय में चले गये, जहां से आदेश पारित हुआ कि अपील का फैसला २५.७.२००५ को या २८.७.२००५ तक किया जावे। २५.७.२००५ को दोनों पक्षों के वकीलों की बहस सुनने के बाद (जिसमें वादी की ओर से श्री आर.एस. अहलावत, श्री आर.एम. हुड्डा तथा जगबीरसिंह नरवाल उपस्थित हुए तथा प्रतिवादी गण की ओर से श्री बी.आर. अरोड़ा पेश हुए) अतिरिक्त जिला जज श्री आर.के. बिश्नोई ने २७.७.२००५ को अपना आदेश सुना दिया। इसी आदेश के बारे में अनेक स्थानों पर अलग-अलग विचार सुनने को मिल रहे हैं, अत: साथियों की इच्छा पर और विशेष रूप से श्री केदारसिंह आर्य के आग्रह पर उपयुक्त समझा कि इस आदेश के मुख्य अंशों का हिन्दी में अनुवाद कर दिया जावे, यदि छपाई में या भाव समझने में कोई गलती होगी तो उसका सुधार अवश्य कर लिया जावेगा।

माननीय अतिरिक्त जिला जज श्री आर.के. बिश्नोई का यह फैसला सतरह पृष्ठ का है, जिसमें सतरह ही मुख्य पैराग्राफ विद्यमान हैं। इनमें पैरा नं० एक में वादी द्वारा प्रस्तुत अपील का संदर्भ तथा परीक्षण कोर्ट के फैसले का जिक्र है।

पैरा नं० २ में इस बात का उल्लेख है कि वादी नं० २ ने अदालत में इस तर्क के साथ वाद प्रस्तुत किया कि वादी नं० एक पंजीकृत संस्था है और उसके अधिकारियों का तीन वर्ष के लिए चुनाव होता है और पिछला चुनाव २७.६.२००४ को सम्पन्न हुआ था, जिसमें आचार्य बलदेव सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये थे और वादी नं० २ को मन्त्री चुना गया था। अत: प्रतिवादी नं० १ को विधिपूर्वक चुनी हुई प्रबन्ध समिति को भंग करके तदर्थ समिति गठित करने का कोई अधिकार नहीं है। इसमें यह भी उल्लेख है कि चुने गये अधिकारियों की सूची रजिस्ट्रार कोपरेटिव सोसायटीज़ हरयाणा को भी भेजी गई थी और वादी नं० १ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध है। २५.४.२००५ को वादी नं० २ को एक कारण बताओ नोटिस मिला जो प्रतिवादी नं० १ द्वारा कुछ व्यक्तियों के द्वारा की गई शिकायत के आधार पर भेजा गया था। उसका उत्तर भी भेज दिया गया, किन्तु १.५.२००५ को प्रतिवादी नं० १ ने बिना अधिकार के वादी नं० १ को भंग कर दिया। इसी पैरा में प्रतिवादी नं० १ के १२.९.२००४ के चुनाव के बारे में उल्लेख के साथ कुछ अन्य बातों का भी उल्लेख है। वादी नं० २ द्वारा अनुरोध किया गया है कि यदि प्रतिवादी नं० १ के आदेश को नहीं रोका गया तो उसे अपूरणीय क्षति होगी।

पैरा नं० ३ में प्रतिवादी गण ने पैरा नं० २ में कहे गये आरोपों का खण्डन किया है और कहा गया है कि प्रतिवादी गण को व्यक्तिगत रूप से पार्टी बनाया गया है जबकि उन्होंने अधिकारी के रूप में कार्य किया है और १.५.२००५ के बाद वादी नं० २ मंत्री नहीं हैं अपितु प्रतिवादी नं० ३ मंत्री है। इसी पैरा में वादी नं० १ द्वारा वादी नं० १ को भंग करने के आदेश को ज़ायज ठहराते हुए कहा गया है कि यदि ऐसा न किया जाता तो सभा की भूमि को जिस प्रकार से लीज पर बिना कायदे कानून दिया जा रहा था, उससे बड़ी भारी हानि हो सकती थी और १.५.२००५ के आदेश से कोई अपूरणीय क्षति होने वाली नहीं है।

पैरा नं० ४ में इस बात का जिक्र है कि दोनों पक्षों को सुनने के बाद परीक्षण कोर्ट ने १५.६.२००५ को अपने निर्देश जारी कर दिये, जिनका उल्लेख पहले हो चुका है।

पैरा नं० ५ में उल्लेख किया गया है कि १५.६.२००५ के निर्देशों से प्रभावित होकर वादी गण ने यह अपील प्रस्तुत की है और आधार दिया गया है कि माननीय परीक्षण कोर्ट ने वादी नं० १ की सम्पत्ति वादी नं० २ के अधिकार में मानी है फिर भी उनके वाद को पूर्णरूप से स्वीकार नहीं किया गया। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए भी कि प्रतिवादी नं० १ का चुनाव विवादों के घेरे में है फिर भी राहत प्रदान नहीं की गई और नई प्रक्रिया अपनाकर सन्देह पैदा करने वाला आदेश जारी कर दिया जिन मुद्दों को लेकर मामले को निर्णीत करना था उन्हें अधिमान नहीं दिया गया, इसलिए यह आदेश खारिज करने योग्य है।

पैरा नं० ६ में अतिरिक्त जिला जज का अपना मन्तव्य है, जिससे स्पष्ट है कि सारी फाइल का गहनता से अध्ययन किया गया है।

पैरा नं० ७ में वादी गण की ओर से पेश वकीलों ने उग्रता से बहस में भाग लेते हुए कहा कि इस प्रकार के मामलों में सार्वदेशिक सभा की न्यायसभा को कोई फैसला करने का अधिकार है, न कि सार्वदेशिक सभा को स्वयं अधिकार है। इसलिए १.५.२००५ का आदेश खारिज करने काबिल है। जब प्रतिवादी नं० १ का चुनाव स्वयं दिल्ली उच्च न्यायालय में विचाराधीन है, तो उसे कोई अधिकार इस प्रकार के आदेश जारी करने का नहीं है। प्रतिवादी नं० १ ने आदेश जारी करने से पूर्व सही प्रक्रिया नहीं आपनाई है और संविधान की धारा १० (ग) का भी अनुपालना नहीं की गई है। इस धारा में विद्यमान प्रावधान के अनुसार न तो जांच करवाई गई, न उपयुक्त समय व सुनने का अवसर दिया गया और न ही शिकायत में सन्दर्भित प्रलेख उपलब्ध करवाए गये। इस प्रकार वादीगण के मौलिक अधिकारों पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। लीज डीड के बारे में किसी अन्तिम निष्कर्ष से भी अवगत नहीं करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हो सके कि लीज डीड से सभा को बड़ा भरी नुकसान हुआ है। केवल लीज के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि सभा के अधिकारी ठीक ढंग से काम नहीं कर रहे हैं। वादीगण ने तो लीज डीड आठ से बीस साल तक ही की है जबकि प्रतिवादी नं० १ ने १७.३.१९८२ को ९९ साल की अवधि के लिए १००३ कनाल ४ मरले ३१००/- रु० वार्षिक दर पर तथा ४०० कनाल ६ मरले १२५०/- रु० वार्षिक दर पर अपने नाम करवाये हैं। इसका पैसा भी अभी तक जमा नहीं करवाया है। इससे स्पष्ट है कि प्रतिवादी नं० १ आर्यसमाज और सभा के हितों के विपरीत कार्य कर रहा है। यदि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भंग करने का यही आधार है तो प्रतिवादी नं० को भी अपने पद से त्यागपत्र दे देना चाहिए। इस अनुच्छेद में यह भी कहा गया है माननीय परीक्षण कोर्ट ने प्रतिवादीगण को यह सुविधा प्रदान की है, जिसकी कभी मांग ही नहीं की गई। इस सन्दर्भ में विभिन्न उच्च न्यायालयों के फैसलों को भी उद्धृत किया गया है।

अनुच्छेद नं० ८ में प्रतिवादी गण के वकील ने भी प्रचण्डता से बहस करते हुए कहा कि १.५.२००५ के आदेश के बाद श्री सत्यवीर शास्त्री सभा के मन्त्री नहीं रहे और उन्हें इस वाद को प्रस्तुत करने का कोई अधिकार नहीं है। प्रतिवादी नं० १ ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान की हैसियत से आदेश जारी किया है लेकिन उसे व्यक्तिगत रूप में पार्टी बनाया गया है। इसी प्रकार अन्य प्रतिवादीगण को भी पार्टी बनाया गया है अत: वाद टिकने योग्य नहीं है। वादीगण की अन्य दलीलों का भी एक-एक करके खण्डन किया गया है और प्रतिवादी नं० १ के आदेश को सही बताया गया है और कहा गया है कि प्रतिवादी नं० १ को तदर्थ समिति गठित करने का पूरा अधिकार है। यदि वादीगण पुन: ७.८.२००५ को होने वाले चुनाव में सफल होते हैं तो वे सभा के प्रबन्ध को पुन: संभाल सकते हैं। अगर उनको गलत कामों के कारण पद से हटाया गया है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें अपूरणीय क्षति हो रही है। माननीय परीक्षण कोर्ट ने वादीगण पर उचित चैक लगाया है, क्योंकि वादी नं० २ तथा अन्य पदाधिकारियों के कारण सभा को बड़ी भारी हानि होने जा रही थी। इसलिए अपील में कोई दम नहीं है और इसे रद्द किया जावे।

**नोट**-यहां तक जो कुछ भी लिखा गया है, वह मुख्य अंशों को लेकर लिखा गया है, जो दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं। आगे का विवरण न्यायिक प्रक्रिया के उस भाग से सम्बन्धित है, जिसमें जज की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत प्रलेखों व बहस के आधार पर अपनी विवेचना के बाद लिखे गये फैसले का महत्त्वपूर्ण भाग होता है, जिससे सम्बन्धित पक्ष प्रभावित होते हैं।

अनुच्छेद नं० ९ से फैसले की शुरुआत करते हुए माननीय जिला जज ने कहा है कि इस बात में कोई विवाद नहीं है कि विवादों को न्यायसभा द्वारा निपटाया

जाता है किन्तु वे विवाद कैसे हों इसका उल्लेख नियम ६ के उपनियम ४ में साफ दिया गया है और उसे फैसले में अक्षरश: उद्धृत किया गया है। इस पर टिप्पणी देते हुए कहा गया है कि सदस्यों तथा अधिकारियों के बीच उत्पन्न विवाद व मतभेद के मामले तो न्याय सभा में जा सकते हैं किन्तु सम्पत्ति के प्रबन्धन सम्बन्धी मामले धारा १० (ग) के अनुसार ही निर्णीत किये जावेंगे। यहां पर धारा १० (ग) को भी अक्षरश: उद्धृत करते हुए कहा है कि इस धारा में स्पष्ट उल्लेख है कि यदि कि प्रान्तिक सभा में प्रबन्ध-सम्बन्धी कोई अनियमितता हो रही है तो प्रधान सार्वदेशिक सभा को उसका संज्ञान लेने का पूरा अधिकार है, अत: वादीगण के विद्वान् वकील की दलीलें इस मामले में उपयोगी नहीं हैं।

अनुच्छेद नं० १० में कहा गया है कि अगर प्रतिवादी नं० १ का सार्वदेशिक सभा के प्रधान का चुनाव सम्बन्धी मामला दिल्ली न्यायालय में लम्बित है तो उससे यह अर्थ नहीं निकाला जा सकता कि उसे १.५.२००५ का आदेश जारी करने का अधिका नहीं था। यह कानून की सुस्थापित प्रस्तावना है कि जब तक किसी व्यक्ति का चुनाव रद्द नहीं कर दिया जाता तब तक वह अपने पद पर बने रहने और उसके अनुरूप काम करने का अधिकारी है। प्रतिवादी नं० १ का चुनाव वैध है या अवैध है, इसका दिल्ली न्यायालय द्वारा अभी फैसला किया जाना है, अत: यह नहीं माना जा सकता कि प्रतिवादी नं० १ प्रधान के रूप में काम करने के लिए अधिकृत नहीं है।

अनुच्छेद नं० ११ में कहा गया है कि वादीगण इस आरोप को सिद्ध करने में असफल रहे हैं कि उनके अधिकारों से किसी भी रूप में पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया गया है। धारा १० (ग) में कहीं पर ऐसा प्रावधान नहीं है कि अनुशासनात्मक मामलों की तरह नियमित जांच की जावेगी और यह उल्लेख भी नहीं है जांच अधिकारी नियुक्त किया जावेगा और उसकी रिपोर्ट के बाद ही सार्वदेशिक सभा का प्रधान कोई कार्यवाही कर सकता है। इस धारा के प्रावधान के अनुसार प्रधान जांच बैठा सकता है किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह कोई दूसरी विधि नहीं अपना सकता। यह धारा प्रधान की शक्तियों को प्रदर्शित करती है और आदेश जारी करने से पूर्व अन्य बातें हैं आज्ञात्मक/आदेशात्मक अनिवार्यता नहीं हैं। आदेशात्मक अनिवार्यता सम्बन्धित पक्ष को पर्याप्त समय देने की है। प्रस्तुत मामले में प्रतिवादी नं० १ ने वादी नं० २ तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को कारण बताओ नोटिस जारी किया। लीज डीड की प्रतियां तथा शिकायत की प्रति साथ भेजी, जैसा कि उसमें कहा गया है। इस तरह वादीगण को उनके विरुद्ध आरोपों से अवगत कराया गया और उन्हें सुनने का अवसर प्रदान किया गया। अगर वादी नं० २ तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को एक सप्ताह का समय २५.४.२००५ के नोटिस के अनुसार उत्तर देने के लिए दिया गया है तो इसका अर्थ नहीं है कि सुनने का पर्याप्त समय नहीं दिया गया। ऐसे मामलों में कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है। देखना केवल यह होता है कि दूसरी पार्टी उस समय में उत्तर देने की स्थिति में है या नहीं। जब लीज डीड की प्रतियां उन्हें सप्लाई कर दी गई तो यह आवश्यक नहीं था कि उसका पूरा विवरण भी नोटिस के साथ दिया जावे। इस स्थिति में यह नहीं माना जा सकता कि उत्तर देने के लिए पर्याप्त समय नहीं था।

अनुच्छेद नं० १२ में कहा गया है कि अगर प्रतिवादी नं० १ ने अपने नाम से या अन्य किसी के नाम से ९९ साल के लिए लीज डीड करवाई तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह वादीगण तथा अन्य अधिकारियों का जवाब तलब नहीं कर सकता। अगर एक आदमी गलती करता है तो उसका यह अर्थ नहीं है कि वह दूसरों के लिए गलत काम करने का प्रमाण-पत्र हो गया। प्रतिवादी नं० १ के नाम पर की गई लीज डीड इस बात को मानने का कोई आधार नहीं है कि उसे कोई भी कार्यवाही करने का अधिकार नहीं है। प्रतिवादी नं० १ के बारे में उठाई गई Plea और १.५.२००५ के आदेश की वैधता यदि लिखित जवाब दावे में पूर्णरूप से या विस्तार से नहीं नकारी गई तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसे स्वीकार कर लिया गया है। इस स्थिति में संपूर्ण बहस/दलीलों का विचार किया जाना है। स्थायी रोक के लिए दी गई प्रार्थना के फैसले के समय यह वादीगण का उत्तरदायित्व बनता है कि वह सिद्ध करें कि Prima facie case बनता है। वादीगण प्रतिवादीगण की किसी कमजोरी का फायदा नहीं उठा सकता। यह उसे ही बताना है कि उसे अपूरणीय क्षति होने जा रही है।

अनुच्छेद नं० १३ में कहा गया है कि प्रतिवादीगण के वकील की इस दलील को भी नहीं माना जा सकता कि वादीगण को कोई अपूरणीय क्षति नहीं होने जा रही है। यह एक विदित तथ्य है कि वादी नं० २ तथा अन्य २७.६.२००४ के चुनाव में तीन साल के लिए चुने गये थे। नियमों के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की चुनी हुई बॉडी की अवधि तीन साल की है। यदि बिना कारण के अवधि को घटाया जाता है तो पार्टी को अपूरणीय क्षति होने जा रही है। चुनी हुई समिति की अवधि को घटाना भी अपूरणीय क्षति मानी जा सकती है।

अनुच्छेद नं० १४ में कहा गया है यह मानना भी ठीक नहीं है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मंत्री के रूप में श्री सत्यवीर शास्त्री द्वारा दायर वाद स्वीकार्य नहीं है क्योंकि उसे १.५.२००५ के आदेश द्वारा हटा दिया गया है, क्योंकि उक्त आदेश की वैधता इस आदेश से सुनिश्चित की जानी है। इसी प्रकार यदि स्वामी अग्निवेश का पद नहीं दर्शाया गया है तो केवल इसी आधार पर प्रार्थना को खारिज नहीं किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के खिलाफ कोई राहत नहीं चाहता है तो उसे बदलने के लिए नहीं कहा जा सकता। यह आपत्ति मुख्य वाद के निपटारे के समय निर्णीत की जा सकती है। बचाव पक्ष की इस दलील को भी स्वीकार नहीं किया जा सकता कि माननीय परीक्षण कोर्ट ने पक्षों की वकालत से अधिक कोई राहत नहीं दी है, क्योंकि १५.६.२००५ के आदेश के अनुसार परीक्षण कोर्ट ने प्रतिवादी नं० १ द्वारा गठित तदर्थ समिति को प्रबंध का नियंत्रण दे दिया है, जबकि प्रतिवादीगण ने कभी भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नियन्त्रण दिये जाने की प्रार्थना नहीं की थी। कोर्ट इस मामले को देखने में भी असफल रही है कि वादीगण स्थायी स्थगन आदेश के लिए अधिकृत थे या नहीं।

अनुच्छेद नं० १५ में कहा गया है कि अब दिनांक १.५.२००५ के आदेश की वैधता के बारे में प्रश्न उपस्थित होता है। वादीगण की दलीलों को तथा प्रतिवादी नं० १ की आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भंग करके तदर्थ समिति गठित करने की शक्तियों को स्वीकार करते हुए यह देखना है कि इस आदेश को स्टे किया जावे या नहीं। दिनांक २५.४.२००५ को जारी किये गये। कारण बताओ नोटिस को विचारने से यह स्पष्ट है कि वादी नं० २ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान को, उनके द्वारा अनेक व्यक्तियों के पक्ष में लीज डीड से सभा को हानि पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसका मतलब है कि उनके विरुद्ध केवल लीज डीड के आधार पर ही कार्यवाही की जा रही है। सभा की भूमि को लीज पर देने के कारण उन द्वारा की गई अवैधता और अनियमितता के लिए उत्तरदायी थे। किन्तु १.५.२००५ के आदेश के विचारने से स्पष्ट है कि इस मुद्दे को तर्क द्वारा परीक्षण नहीं किया गया अपितु क्षणिक/तीव्रगामी सन्दर्भ दिया गया है। इसमें सामान्य तौर पर यह संकेत दिया गया है कि वादी नं० २ तथा सभाप्रधान ने मुख्य बिन्दुओं का उत्तर देने की बजाय बचाव की स्थिति अपनाई है। हिन्दी में जारी किये गये इस आदेश सम्बन्धित सन्दर्भ निम्न प्रकार से है।''फैक्स से प्राप्त पत्र में वाञ्छित बिन्दुओं का उत्तर देने में कोई निराधार बहाना बनाकर आनाकानी का रुख अपनाया गया है।''

इस आदेश के किसी भी भाग में यह संकेतित नहीं किया गया है कि लीज डीड ठीक ढंग से नहीं दी गई या इससे सभा को हानि हुई है। इस आदेश में उत्तर में प्रयुक्त भाषा पर अधिक जोर दिया गया है। सक्षम अधिकारी को 'कारण बताओ नोटिस' में संकेतित बिन्दुओं को ध्यान में रखकर कार्यवाही करनी चाहिए थी और उत्तर को अस्वीकार करने के कारण भी स्पष्ट करने चाहिएं थे। माननीय उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ने राजवीरसिंह के मामले में निर्णय दिया है कि सक्षम अधिकारी को उत्तर या स्पष्टीकरण को स्वीकार न करने के लिए उचित आदेश जारी करने से पहले कारण बताने चाहिएं। १.५.२००५ के आदेश के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि ३०.४.२००५ का उत्तर इसलिए स्वीकार नहीं किया गया कि उसमें उचित भाषा का प्रयोग नहीं किया गया था। इस बात का आदेश में कहीं भी उल्लेख नहीं है कि लीज डीड के बारे में दिये गये स्पष्टीकरण ठीक नहीं है। अगर उचित भाषा का प्रयोग नहीं किया गया है और सार्वदेशिक सभा के प्रधान के खिलाफ आरोप लगाए गये हैं तो इसका यह अर्थ नहीं है कि उत्तर को अमान्य कर दिया जावे। अत: परिस्थितियों में, जब आदेश दिनांक १.५.२००५ वादी नं० २ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान के विरुद्ध लगाये गये आरोपों से सम्बद्ध नहीं हैं और न ही विशेष कारण दिये गये हैं, भले ही वे संक्षेप में होते, तो ऐसी अवस्था में यह आदेश उपेक्षणीय है। अगर चुनाव प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, जैसा कि बचाव पक्ष के विद्वान् वकील ने कहा तो इसका मतलब यह नहीं है कि आदेश को नहीं छेड़ा जा सकता है। भले ही चुनाव प्रक्रिया शुरू हो चुकी हो अगर गलत आदेश जारी किया गया है तो उसे खारिज किया जा सकता है। बचाव पक्ष के वकील की दलील इस मामले में उपयोगी नहीं है। माननीय परीक्षण कोर्ट ने अपने १५.६.२००५ के आदेश में इन सभी तथ्यों का परीक्षण नहीं किया है। उक्त आदेश हर प्रकार के कानून तथा तथ्यों के विपरीत है और इससे न्याय प्रक्रिया को गलत दिशा मिल सकती है, अगर इसे खारिज नहीं किया गया तो वादीगण के पक्ष में Prima facie case और Balance of convenience बनता है। जैसे उन्होंने (वादीगण ने) प्रार्थना की है अगर उसे नहीं माना गया तो उन्हें अपूरणीय क्षति हो सकती है।

अनुच्छेद नं० १६ के अनुसार कोई अन्य मुद्दा निवेदित नहीं किया गया।

अनुच्छेद नं० १७ के अनुसार माननीय अतिरिक्त जिला जज द्वारा कहा गया है कि मेरे उपरोक्त परीक्षण के अनुसार दिनांक १५.६.२००५ का आदेश रद्द किया जाता है और प्रतिवादीगण पर वादी नं० १ की चुनी हुई प्रबंध समिति, उसके कार्य तथा उसकी सम्पत्ति के बारे में हस्तक्षेप करने से रोक लगाई जा रही है। प्रतिवादीगण अपने आपको आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पदाधिकारी भी नहीं क्लेम करेंगे और न ही १.५.२००५ के आदेश के आधार पर कोई काम कर सकेंगे और न ही चुनाव कर सकेंगे। **किन्तु सक्षम अधिकारी, जो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**

शेष पृष्ठ ६ पर.....

# सम्पादक के नाम पत्र

## विषय : शिवलिंग पूजा महाभ्रष्टाचार लेख के सम्बन्ध में

मान्यवर!

सादर नमस्ते।

वर्ष ३१, अंक ३३, दिनांक २१ जुलाई, २००४ गत वर्ष के सर्वहितकारी पत्र में महाविद्वान् श्री सुखदेव शास्त्री जी द्वारा लिखित "शिवलिंग पूजा महाभ्रष्टाचार" नामक शीर्षक से एक लेख पढ़ने को मिला।

उक्त लेख से प्रभावित होकर मैंने उस लेख की एक हजार प्रेसकापी छपवाई और विद्वान् लेखक के विचारों के आधार पर ही कुछ दोहे देहाती तुकान्त पर बनाकर छपवाये। समान संख्या में संलग्र करके भाई कावड़ियों को वितरित करा दिये। दोहे नीचे छपवाये हैं-

### भाई कावड़ियों का मार्गदर्शन

१. वैदिक धर्म की यही पुकार।
सच्चे शिव को पूजो यार।
२. सच्चे शिव की क्या पहचान?
सत् चित् आनन्द देव महान्।
३. पाप और पुण्य का बोध करावे, अलख निरंजन शिव महाराज।
हृदय में सबको समझावे, सुन लो अन्तर्यामी की आवाज॥
४. कहां पर रहते शिव भगवान्?
कण-कण व्यापक शिव भगवान्।
५. सच्चा ज्ञान केवल वेदों में जानो।
झूठ पुलिन्दा सब पुराणों को मानो।
६. वेदविरुद्ध है आचरण जिनका।
निश्चित नरक लोक में जाना उनका॥
७. तज श्रुति पंथ वाम पंथ चलहिं।
संत तुलसी साक्षी देहहिं॥
८. पाप क्षमा नहीं होते कभी, मान अरे नादान।
गीता में अर्जुन को समझाते, श्रीकृष्ण महान्॥
९. अन्धी श्रद्धा से होय भगत सर्वसत्यानाश।
सत्य ज्ञान की भक्ति से होय जीव का परम विकास।
१०. कथा घिनौनी शिवपुराण में, पत्थर के शिवलिंग की।
वाममार्ग में होवे पूजा, शिव के गुप्तांग की॥
११. बम-बम भोले शिव को बोले, भोली कह सब पार्वती।
भांग धतूरे का भोग लगावे, फिर प्रेतनाथ की भूत उतारे आरती॥
१२. भीड़ में दबकर किसी भगत के निकल जाये जब प्राण।
जीवन दान नहीं देते ये लिंगेश्वर, पत्थर के भगवान्॥
१३. नाश की निशानी कांवड़ लानी, तुमने बात नहीं भगवान् की मानी।
शिवजी को ठगने चला तू अभिमानी, ले शीशी में चुल्लू भर गंगा पानी॥
१४. सोमनाथ के मन्दिर पर नकली सिद्ध हुआ भगवान्।
हार हमारी हुई यहां पर, जब आया गढ गजनी का सुलतान॥
१५. मन्दिर तोड़े, इज्जत लूटी, धातु के भगवानों की।
राज्य विदेशी हुआ यहां पर, बाढ आई बेईमानों की॥
१६. अन्धविश्वास और मतमतान्तर ही, थे कारण हार हमारी का।
चेतन की जगह जड़ पूजा से ही, था निकला दिवाला अकल हमारी का॥
१७. आधुनिक समय है ज्ञान और विज्ञान का।
आइये नवनिर्माण करें सब मिल, भारत देश महान् का॥
१८. ओ३म् नाम ही है सच्चे ईश महान् का।
वेदों की शिक्षा में ही है सच्चा मार्ग, सम्पूर्ण विश्वकल्याण का॥
१९. पाप के बदले सुख को मांगे, भाई मेरे कांवड़िया।
उल्टी गंगा सिर शिव के चढ़ावे, भोलेनाथ के भोले कांवड़िया॥
२०. सिद्ध करे, वेदों में कोई कांवड़ का आचार।
तो पावे महेन्द्रसिंह आर्य से, रुपये पचास हजार॥
२१. शास्त्रार्थ की करे घोषणा, वीर महेन्द्रसिंह बम्बावड़िया।
तर्क प्रमाणों से करे सामना, भाई कोई मेरा कांवड़िया॥
२२. मार्गदर्शन शुद्ध हमारा, करे आर्य वीर बम्बावड़िया।
केवल वैदिक धर्म से होगा कल्याण तुम्हारा, करे निवेदन संत यह आकिलपुरिया॥

प्रस्तुतकर्ता-वैदिक धर्म का सेवक ब्र० देवमूर्ति महाराज, द्वारा श्री महेन्द्रसिंह आर्य, ग्राम व डा० बम्बावड, जनपद गौतमबुद्धनगर (उ०प्र०)

## भूल सुधार

सर्वहितकारी के इसी अंक (७-८-२००५) में प्रथम पृष्ठ एवं पृष्ठ आठ पर छपे "वेद और अमैथुनी सृष्टि" लेख के लेखक-जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा) एवं पृष्ठ आठ पर "आर्यसमाज भ्रूणहत्या के खिलाफ जन आन्दोलन करेगा-स्वामी इन्द्रवेश" के प्रस्तुतकर्ता-नरेन्द्र गुप्त, प्रधान आर्यसमाज शक्तिनगर, दिल्ली हैं। कृपया पाठकजन सुधारकर पढ़ें।

-सम्पादक

## अतिरिक्त जिला जज रोहतक..... (पृष्ठ ५का शेष)

के प्रधान है, वादी नं० २ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान द्वारा ३०.४.२००५ को प्रेषित उत्तर को विचारते हुए नया आदेश जारी कर सकते हैं। यह २७.७.२००५ का आदेश नये आदेश के जारी होने में बाधक नहीं होगा। लेकिन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के हित को ध्यान में रखते हुए वादी के पदाधिकारियों पर कुछ प्रतिबन्ध/शर्त लगाई जा सकती हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सम्पत्ति तो उनके अधिकार में रहेगी किन्तु किसी को भी भूमि लीज डीड पर तीन साल की अवधि से अधिक नहीं दी जावेगी। अगर कोई लीज है तो वह मुख्य वाद के फैसले का विषय होगी। वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मामलों के व्यय का नियमित विवरण रखेंगे। इन Observations के साथ अपील व्यय/कीमत सहित स्वीकार की जाती है। जिसका ऊपर परीक्षण नहीं हुआ है वह वाद की मैरिट पर मेरे विचार/मत का भाव माना जावेगा। पक्षों की निर्देशित किया जाता है कि वे परीक्षण कोर्ट के समक्ष ३.८.२००५ को पेश होवें। फाइल तो निचली अदालत को भेज दी जावे और अपील की फाइल रिकार्ड कक्ष में रखी जावे। यह आदेश दिनांक २७.७.२००५ को खुली अदालत में सुनाया गया।

मैं इस सन्दर्भ में कोई टिप्पणी करना उपयुक्त नहीं समझता। मेरा ध्येय केवल सभी को वास्तविक स्थिति से अवगत करना मात्र था। यदि किसी शब्द के सही अनुवाद में कोई कभी रह गई अथवा कोई बात ऐसी लिखी गई है, जो कसी दूसरे के लिए परेशानी या दिक्कत पैदा करने वाली हो उसे वापिस लिया हुआ समझा जावे।

आशा करता हूं पाठकगण कोई कमी हो तो उसके बारे में सचेत करने की कृपा करेंगे। यद्यपि हर पहलू से पूरी सावधानी बरती गई है फिर भी गलती के लिए अग्रिम क्षमायाचना में कोई संकोच नहीं है। सभी का कल्याण हो। सभी में प्रेमभाव हो, इसी कामना के साथ सबको नमस्ते।

# मन का कमजोर होना ही भय का कारण बनता है

❑ ओमप्रकाश अग्रवाल, (माना सोसाईटी), २१९, आवास कॉलोनी, ऋषिकेश (उत्तरांचल)

आज यह बीमारी बढ़ती जा रही है। लोग असली बात की तरफ न जाकर दूसरा रास्ता ढूंढ़ रहे हैं। तनाव भरा जीवन, डिप्रेशन, बीमारी, घर का क्लेश आजकल ऐसी बातों को दूर करने के लिए तांत्रिक की दुकानें खुल रही हैं। आम अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी इसका शिकार बन रहे हैं। दुनिया में भय नाम की कोई चीज़ नहीं है। मन कमजोर हो तो रस्सी को भी सांप समझ लिया जाता है और इंसान डर जाता है। तंत्र-मंत्र का सहारा लेना ठीक नहीं होता। आज अनेक चीजें ऐसी बनती जा रही हैं जो लोगों को भय दिखाकर अपना पेट पालते हैं। यह सब मन की कमजोरी ही होती है। पीछे अखबार में रिपोर्ट आई थी। ऐसे लोगों की संख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही है और नए-नए चेहरे भी आगे आते जा रहे हैं। कई टी.वी. चैनल भी सलाह देते हैं और अपने मोबाइल नम्बर देते हैं, सलाह देते है और सलाह देने की बात करते हैं। यह कैसा भयानक रास्ता बनता जा रहा है। कोई भी काम बिना किए नहीं होता। चाहे उसके लिए लाख तंत्र-मंत्र कर लो वो नहीं होगा। आज दुनिया गलत रास्ता चुन लेती है। आप दस तंत्र-मंत्र करने वालों के पास जाओ, नौ के पास अपना घर नहीं होगा। कुछ के पास रोटी के लाले पड़े रहते हैं। कई लोग फुटपाथों पर बैठे रहते हैं। भ्रम का बनना जिंदगी में सबसे दुखदाई बन जाता है।

आजकल कोई काम हो लोग पेट पालने के लिए कुछ भी कर सकते हैं, कुछ भी कह सकते हैं। जो लोग कमजोर दिल के होते हैं उनको आसानी से लूटा जा सकता है। इंसान के ऊपर कोई ग्रह भारी नहीं होता। ग्रह तो हमारे पूजनीय होते हैं जैसे सूर्य, चन्द्रमा, शनि यह सब ग्रह अपने स्थान पर चलते हैं किसी के ऊपर भारी क्यों होंगे। एक आदमी किसी के पास हाथ दिखाने गया। हाथ देखने वाला बोला - आप पर शनि का ग्रह है। आपको पूजा करानी होगी। कितना खर्च आयेगा। बोला - दो सौ पचास रुपये। उसने कहा - मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं। वो बोला - आप दो सौ रुपये दे देना। नहीं हैं, पचास, नहीं हैं, दस नहीं हैं, एक रुपया वो भी नहीं है। हाथ देखने वाला बोला - तू तो मौज कर तेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। जिसके पास कुछ है ही नहीं उसका क्या बिगड़ेगा। जिसके पास कुछ होता है उसको ही भय सताता है। आज का संसार ऐसे चक्करों में पड़कर पैसा और जान तक गंवा देते हैं। मुझे फायदा हो दूसरे को भी नुकसान पहुँचा देते हैं। कई बच्चे इसलिए मार दिए जाते हैं कि बलि देने से उनको अपना बच्चा हो जाये मगर ऐसा कुछ नहीं होता। यह सब अंधविश्वास है। परमात्मा के घर में दुख-सुख नहीं है। कर्म लेख चलता है। आपको सुख चाहिए तो दुनिया को सुख दो। जैसा फल चाहते हो वैसा बीज डालो। यही सही रास्ता है। भय बन जाये तो मुश्किल-सा हो जाता है।

एक आदमी मुझे मिला। वो कहता था मुझे बहुत डर लगता है। किससे डर लगता है यह नहीं बता सका। मन का कमजोर होना ही डर का कारण बनता है। सुबह उठो, प्रभु की लीला देखो। साफ कपड़ा पहनो दिनचर्या दूरी करो। हाथ, पैर, मुँह सब साफ करो। लैटरीन का ध्यान रखो। अपनी दिनचर्या के बारे में विचार करो। जितने काम करने हैं उन्हें नोट करो। कोई गलत काम हो गया हो उसके लिए प्रभु से क्षमा याचना करो। आगे न करने की सोचो और सहज भाव से दिन की शुरुआत करो। अगर कोई भय या शंका रहती है उसका कारण जानो। वेदों का सहारा लो जो अनादि काल से हमारे ग्रन्थ हैं। हर बात का समाधान वेदों में है। मैंने एक महात्मा से तकरीबन छह-सात वर्ष में वेद की कुछ बातें सीखी हैं। इसकी किताब भी बनाई है जिसका नाम 'जीवन की राह' (वेद का आधार) मैं अपनी किताब कई बार पढ़ता हूँ। मुझे कई बातों की जानकारी मिलती है। मेरा मन भी जब कमजोर होता है तो मैं ऐसी जगह चला जाता था जहाँ कुदरत दिखाई देती है। पहाड़ों पर जहाँ नाम-मात्र का क्लेश नहीं होता। मन को सुकून मिलता है।

जो लोग तंत्र-मंत्र में फंस गये उनका ज्यादातर बुरा हाल होता है। यह हमने देखा है। आज का मानव सही बात को छोड़ देता है। लड़ने को तैयार रहता है। कुछ भारत में भ्रष्टाचार और कई ऐसी बातें हैं जो तंत्र-मंत्र को बढ़ावा देती हैं। हम देख रहे हैं लोग हाथों में, गले में काले, लाल, पीले धागे बाँधे रहते हैं। बड़े-बड़े पढ़े-लिखे व्यापारी, गरीब-अमीर सबको देखा जा सकता है। यही पतन का कारण है। धागा बांधकर अगर कोई काम होता तो सारे तंत्र-मंत्र वाले ही अमीर होते। आज हजारों तंत्र-मंत्र करने वाले जेलों में बंद हैं। बड़े-बड़े भाषण करने वाले करोड़ों रुपये लोगों से ले रहे हैं। उनका अपना इतिहास कुछ भी नहीं है। मैंने कई लोगों को करीब से देखा है। अगर आपको कोई शंका है तो उसका कारण जानो। गायत्री मंत्र का सहारा लो। गीता सार पढ़ो, जानो। क्या कारण है। क्यों ऐसा हुआ। हर चीज का कारण होता है। रात को सोते समय ईश्वर का ध्यान करो। हम उसके पुत्र-पुत्रियाँ हैं। हमें कष्ट क्यों देगा।

अगर कोई चोरी करता है, यारी करता है, किसी के साथ ठगी करता है उसको भय बनना स्वाभाविक होता है। उसका धन्धा स्वभाव ही ऐसा होता है। अगर कोई गलती हो भी जाये तो समाधान ढूंढो। क्षमा याचना करो। मन को कमजोर मत होने दो। रात को अपने पास पानी रखो, बैटरी रखो। जब भी कोई बात आए तो गायत्री मंत्र का सहारा लो। सुबह का जीवन अपनाओ। किसी संस्था के साथ जुड़ जायें जो इंसान की भलाई की बात करती है। सुपात्र को दान दो। वातावरण में बदलाव लाओ। जो लोग डराने या तोड़ने की बातें करते हैं उनसे दूर रहो। प्रभु से नाता जोड़ो। प्रभु के बंदों से प्यार करो। बाग में चले जाओ। फूलों को देखो। आकाश में पक्षी उड़ते हैं उनको देखो। जिसके पास कल के लिए कुछ नहीं है, न ही रखने का अधिकार है। ऐसे किसी भ्रम में न फंसो जो आपको भय बनाता हो। यह सब बातें रोजी-रोटी के लिए कही जाती हैं। अनजान लोग फंस जाते हैं। इसलिए ध्यान रखो सही क्या है। हर काम करने से होता है। ज्ञान और कर्म पर विश्वास करो और किसी पर विश्वास मत करो।

कोई किसी का भला नहीं करता। अपना भला खुद को करना है। आलू का बीज़ डालकर टमाटर कभी नहीं उगते। जो लोग कहते हैं वो झूठ बोलते हैं। उनके पास जाओगे तो झंझट में पड़ जाओगे। नुकसान कर बैठोगे। कर्म ही पूजा है। कर्म ही प्रधान है। जितना बैंक बैलेंस होगा उतना ही निकाल सकते हो। जो करेगा वो ही भरेगा। यह कुदरत का नियम है। किसी बात से डरने की जरूरत नहीं। अच्छे लोगों का संग करो। कोई धागे-तावीज़ बाँधने की जरूरत नहीं। हाथों को, गले को खुला रखो। साफ रखो। सब परमात्मा देखता है। अच्छे-बुरे की पहचान हमारी आत्मा पर पड़ती है। वह सब जानता है। तुम कर्म को बदल नहीं सकते। चाहे लाख यत्न करो। ईश्वर हम सबको सुखी रखे। ऐसा कोई काम मत करो जिससे किसी का दिल दुखे। ईश्वर की रचना को देखो, समझो, आगे बढ़ो, संसार आपका है। परमात्मा जब जन्म देता है तो जरूरी चीजें हैं वो लगाकर भेजता है, धागे, तावीज जरूरी होते तो वे भी लगा देता। मगर ऐसा नहीं है इसे विचार करो सही क्या है।

## अघमर्षण मन्त्रों पर चिन्तन

हे भगवन्! आपने सृष्टि की अद्भुत रचना की है। इसका विधिवत् नियम पूर्वक संचालन कर रहे हो। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी आदि ग्रह-उपग्रह अपने-अपने कक्ष (परिधि) में भ्रमण करते हुए आपके सर्वशक्तिमान् होने का परिचय दे रहे हैं। हम भी आपकी न्यायव्यवस्था में कर्मों के अनुसार सुख-दुःख भोग रहे हैं। प्रभो! हमें खोटे कर्मों से बचाओ। हमारी बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश करो। हम सन्मार्ग पर चलें, नेक काम करें, सदैव आपका गुणगान करते रहें।

### अघमर्षण मन्त्रों का भावार्थ

दुनिया बनानेवाले ने क्या अजब है दुनिया बनाई।
क्या आसमां बनाया, कैसी जमीं बनाई।
दिन-रात भी बनाये, ऋतुएं भी हैं सजाई।
सूरज और चांद-तारे, सब दे रहे हैं गवाही।

-देवराज आर्यमित्र, WZ-४२८, नानकपुरा, हरिनगर, नई दिल्ली-६४

## प्यारी बहिन की याद में

❑ सुशीलादेवी, संस्कृत सेवा संस्थान, ७७६/३४ हरिसिंह कालोनी, रोहतक

टेक-कहां चली गई बहिन सुवीरा॥
माता-पिता ने लाड लडाये।
गुरुकुल भेजी वेद पढ़ाये।
जागेराम थे पिता रणधीरा॥ १॥
स्वामी ओमानन्द गुरु मिले थे।
नियम-टेम से नहीं हिले थे।
आशीर्वाद का मिल गया हीरा॥ २॥
वेदों के वेत्ता जीवन साथी।
सादापन में काया है रंगी।
ज्ञान-कर्म का बांधा है चीरा॥ ३॥
कोई अतिथि कभी भी आया।
देख उसे खुश होती थी काया।
आओ बैठो पीओ क्षीरा (दूध)॥ ४॥
विनोद, विजय बेटे हैं तेरे।
विक्रम, विवेका प्यारे घनेरे।
'शीला' भरा रहे नयनों में नीरा (जल)॥ ५॥


स्व० श्रीमती सुवीरा देवी
8.8.1948 — 19.6.2005

# आर्यसमाज भ्रूणहत्या के खिलाफ जन आन्दोलन करेगा-स्वामी अग्निवेश



स्वामी इन्द्रवेश जी ध्वजारोहण करते हुए।

दिल्ली, दिनांक २५.७.२००५, विश्वप्रसिद्ध आर्यसमाज, शक्ति नगर की स्थापना के ५० वर्ष पूरे होने पर यहां स्वर्ण जयन्ती समारोह भव्य रूप में आयोजित किया गया। २२, २३, २४ जुलाई २००५ को स्थानीय तिकोना पार्क में आयोजित उक्त समारोह का उद्घाटन पूज्य स्वामी इन्द्रवेशजी महाराज पूर्व सांसद ने ध्वजारोहण के साथ किया तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी अग्निवेश जी ने मुख्य उद्बोधन दिया। स्वामी जी ने घोषित किया कि आर्यसमाज ने वर्तमान की सबसे ज्वलन्त समस्या भ्रूणहत्या एवं नारी उत्पीडन के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया है तथा 1 नवम्बर 2005 तक महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा, गुजरात से स्वामी विरजानन्द के जन्म स्थान करतारपुर एवं जलियांवाला बाग अमृतसर तक प्रभावशाली जनजागरण यात्रा का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने महिलाओं को आगे आने का आह्वान किया। स्वामी इन्द्रवेशजी ने आर्यसमाज, शक्ति नगर के पचास साल की उपलब्धियों को स्वर्णीम अक्षरों में लिखा जाने वाला इतिहास बताया। तीन दिवसीय समारोह में जिन नेताओं एवं विद्वानों ने विभिन्न सम्मेलनों को सम्बोधित किया, उनमें मुख्यतया प्रो० कैलाशनाथसिंह पूर्व शिक्षा मंत्री एवं मंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री शादीलाल विधायक कमलानगर क्षेत्र, श्री कुलानन्द भारतीय पूर्व शिक्षा मंत्री दिल्ली, निगम पार्षद विनोद गोयल, मुम्बई से पधारे युवा विद्वान् आचार्य वागीश शर्मा, आर्य वीरांगना श्रीमती पुष्पा शास्त्री, राजधर्म के सम्पादक श्री जगवीरसिंह एडवोकेट, आचार्य रामकिशोर शर्मा सोरों, श्री वेदप्रकाशजी श्रोत्रिय, श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता व श्री सत्यपाल पथिक थे। इस अवसर पर अथर्ववेदीय यज्ञ श्री पं० प्रेमपाल शास्त्री संयोजक धर्मार्य सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

सभा का संचालन डॉ० श्री वत्स शास्त्री मन्त्री ने किया। धन्यवाद श्रीमती कौशल बंसल प्रधाना आर्य स्त्री समाज, शक्ति नगर ने किया।

## स्वर्णपदक विजेता राजवीर का जोरदार स्वागत



जापान के टोक्यो शहर में एशियन कुश्ती प्रतियोगिता में स्वर्णपदक विजेता राजवीर छिक्कारा का जुलूस निकालकर स्वागत करते ग्रामीण।

जापान के टोक्यो शहर में आयोजित एशियन कुश्ती प्रतियोगिता में स्वर्णपदक जीतकर वापिस गांव लौटने पर जुंआ निवासी पहलवान राजवीर छिक्कारा का ग्रामीणों ने भव्य स्वागत किया। उनके स्वागत में गांव के सैकड़ों युवा व वृद्ध दोपहर १२ बजे ही सोनीपत पहुंच गए थे।

सोनीपत से ढोल-नंगाड़ों के साथ एक खुली जीप में बैठाकर राजवीर पहलवान को गांव में ले गए। पहलवान के साथ जीप में आर्यसमाज के संरक्षक खजानसिंह आर्य और राजवीर के कोच भी मौजूद थे। गांव में दोनों पंचायतों के पंच व सरपंचों द्वारा माला पहनाकर उनका स्वागत किया गया। गांव में प्रवेश करने के बाद पहलवान राजवीर सबसे पहले गांव की आर्यसमाज मन्दिर की व्यायामशाला में धरती माता को छूने के लिए गया और इसके बाद ढोल के साथ पूरे गांव में उनका जुलूस निकाला गया। इसके बाद गांव की बड़ी चौपाल में एक सभा का आयोजन किया गया। जहां पर सभी को प्रसाद के रूप में लड्डू वितरित किये गए। (साभार-हरिभूमि दैनिक)



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२







आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ | अंक ३६ | १४ अगस्त, २००५ | वार्षिक शुल्क १०० रुपये | विदेश में २० डॉलर | एक प्रति २.००

## स्वतंत्रता दिवस पर विशेष :-

# हरयाणा का स्वतन्त्रता संग्राम (१८५७ के बलिदान)

❑ आचार्य भगवान्‌देव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती)

**स्वतन्त्रता के ५८ वर्ष बाद भी स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं की सन्तान गुलाम** है। नरेला में १९१० ई० में जन्मे आचार्य भगवान्‌देव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) द्वारा १९५७ में लिखा गया संक्षिप्त इतिहास '**देशभक्तों के बलिदान**' से यहां उद्‌धृत किया जाता है इसी भावना से कि शायद हरयाणा सरकार और भारत सरकार इन बलिदानी परिवारों और ग्रामों को न्याय दिलवा सके। **-वेदव्रत शास्त्री**

दिल्ली के चारों ओर डेढ़ सौ-डेढ़ सौ, मील की दूरी तक का प्रदेश हरयाणा प्रान्त कहलाता है। सारे प्रान्त में जाट, अहीर, गूजर, राजपूत इत्यादि योद्धा (जंगजू) जातियां बसती हैं। इसीलिये हरयाणे ने इस युद्ध में सब प्रान्तों से बढ़-चढ़कर भाग लिया था। इसी प्रान्त के एक भाग मेरठ में यह क्रान्ति की चिनगारी सबसे पहले सुलगी और शनैः-शनैः सारे भारत में फैल गई। इस स्वतन्त्रता युद्ध के शान्त होने पर हरयाणा प्रान्त की जनता पर जो भीषण अत्याचार अंग्रेजों ने किये उनका स्मरण करने से वज्रहृदय भी मोम हो जाता है। कोटपुतली जयपुर राज्य के ठिकाने खेतड़ी के राजा को दे दिया। इसी के फलस्वरूप अंग्रेजों ने इस प्रान्त को अनेक भागों में विभाजित करके इस वीरप्रान्त की संगठन शक्ति को चूर-चूर कर दिया। मेरठ आगरा सहारनपुर आदि इसके भाग उत्तर प्रदेश में मिला दिये। भरतपुर अलवर आदि राजस्थान में मिला दिये। कुछ भाग को दिल्ली प्रान्त का नाम देकर के पृथक् कर दिया। नारनौल को पटियाला राज्य, बावल को नाभा और दादरी नरवाना को जीन्द स्टेट जो फुलकिया राज्य कहलाते हैं, उनमें मिला दिया, जो झज्जर प्रान्त के भाग थे। शेष गुड़गांव, रोहतक, हिसार, करनाल आदि को पञ्जाब में मिला दिया। इस प्रकार इस हरयाणे की वीर भूमि को खण्डशः करके नष्ट भ्रष्ट कर दिया।

हरयाणे के एक-एक ग्राम में बड़ी वीरता से अंग्रेजों के साथ युद्ध किया है, आज उन सबका इतिहास नहीं मिलता। आज तक सन् ५७ के क्रान्तियुद्ध में भाग लेने वाले अनेक ग्रामों के वीर भूमिहीन कृषक के रूप में अपने कष्टपूर्ण दिन काट रहे हैं। जैसे लिबासपुर, कुण्डली, भालगढ़, खामपुर, अलीपुर, हमीदपुर, सराय इत्यादि जी.टी. रोड जो दिल्ली से लाहौर की ओर जाता है उस पर बसते हैं। कुछ ग्रामों के विषय में संक्षेप से लिखता हूं।

## लिबासपुर का बलिदान

जी.टी. रोड में से एक टुकड़ा सड़क का सोनीपत को जाता है, उसी स्थान पर यह गांव बसा हुआ है। उस समय से अब तक इसमें जाटकुल क्षत्रिय बसते हैं। क्रान्तियुद्ध के समय उदमीराम नाम का एक वीर युवक इसी ग्राम का निवासी था जो अंग्रेज सैनिक दिल्ली से भागकर इधर से जाते थे यह उनके साथ युद्ध करता था। इसने अपने २२ वीर योद्धाओं का एक संगठन बना रखा था, जो अत्यन्त वीर स्वस्थ, सुन्दर, सुदृढ़ शरीर वाले युवक थे। अतः उस सड़क पर से गुजरने वाले अंग्रेज सैनिकों को चुन-चुनकर मारते थे और सबको समाप्त कर देते थे। एक दिन एक अंग्रेज अपनी धर्मपत्नी सहित ऊंट कराची-में जी.टी. रोड पर देहली से पानीपत को जा रहा था। जब वह लिबासपुर के निकट आया तो इन वीरों ने उसे पकड़ लिया और अंग्रेज को तो उसी समय मार दिया, किन्तु भारतीय सभ्यता के अनुसार उस अंग्रेज औरत को नहीं मारा। ग्राम के कुछ दुष्ट प्रकृति के लोगों ने उस अंग्रेज स्त्री से गांव के चारों ओर मई की धूप में चक्कर लगवाया और खलिहान (पैर) में बैलों का गाहटा भी हंकवाया। इस प्रकार की घटनाओं को कुछ इतिहास लेखक झूठी और अंग्रेजों की घड़ी हुई बतलाते हैं। हरयाणे के ही नहीं किन्तु सभी भारतीयों ने अंग्रेजी देवियों और बच्चों पर कहीं अत्याचार नहीं किये। सायंकाल भालगढ़ में रहने वाली बाई जी (ब्राह्मणी) को उस अंग्रेज स्त्री को देखभाल के लिये सौंप दिया। उसे समुचित भोजन वस्त्रादि देकर सेवा की। इस घटना के समाचार आस-पास के सभी ग्रामों में फैल गये। कितने ही बाहर के ग्रामों के लोग समाचार जानने के लिये लिबासपुर आये। इनमें राठधना निवासी सीताराम भी था। उसने ग्राम में आकर सब वृत्त को जानने का विशेष यत्न किया और भालगढ़ ग्राम में बाई जी के पास, जहां वह अंग्रेज स्त्री ठहरी थी, उसके पास भी पहुंच गया। उस अंग्रेज स्त्री को इन्होंने बता दिया कि लिबासपुर के उदमीराम, गुलाब, जसराम, रामजस, रतिया आदि ने बहुत से अंग्रेजों को मृत्यु के घाट उतारा है और तुझे भी मारने का षड्यन्त्र कर रहे हैं। सीताराम और बाई जी ने उस अंग्रेज महिला के साथ गुप्त मंत्रणा की। उस अंग्रेज देवी ने इन्हें अनेक प्रकार के वचन दिये और प्रलोभन दिया कि यदि आप मुझे रातोंरात पानीपत के सुरक्षित स्थान पर जहां अंग्रेजों का कैम्प है पहुंचा दो तो बहुत सारी सम्पत्ति मैं आप दोनों को दिलवाऊंगी। उन दोनों ने सवारी का प्रबन्ध करके उसे पानीपत में अंग्रेजों के कैम्प में पहुंचा दिया। युद्ध शान्त होने पर क्रान्तियुद्ध के समय की कई रिपोर्टों के आधार पर अंग्रेजों ने लोगों को दण्ड और पारितोषिक देना आरम्भ किया और अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार एक दिन अंग्रेज सेना ने प्रातःकाल चार बजे लिबासपुर ग्राम को चारों ओर से घेर लिया। उदमी, जसराम, रामजस, सहजराम, रतिया आदि वीर योद्धा अपने साधारण शस्त्रों से एक बहुत बड़ी अंग्रेज सेना के साथ जो आधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित थी, कब तक युद्ध कर सकते थे। बहुत से मारे गये और शेष सब गिरफ्तार कर लिये गये। गिरफ्तार हुये व्यक्तियों की पहचान के लिये देशद्रोही बाई जी और सीताराम को बुलाया गया उन्होंने जिन-जिन व्यक्तियों को बताया कि इन्होंने अंग्रेज मारे हैं। गिरफ्तार कर लिये गये। सारे ग्राम को बहुत बुरी प्रकार से लूटा गया। तीस पैंतीस बैलगाड़ियां गांव के तमाम धनधान्य मूल्यवान् सामान से भरकर देहली भेज दी गईं। ग्राम की सब स्त्रियों से आभूषण बलपूर्वक छीन लिये गये। किसी व्यक्ति के पास कुछ भी न रहने दिया। शेष गांव के निवासी मृत्यु के भय से गांव को छोड़कर भाग गये और जीन्द राज्य के **रामकली** ग्राम, झज्जर तहसील के **खेड़का** ग्राम में और सोनीपत तहसील के **कल्याणा** और **रत्नगढ़** ग्राम में जाकर बस गये। ये लोग इन ग्रामों में तीन वर्ष तक बसे रहे। जब तीन वर्ष के पश्चात् पूर्ण शान्ति हो गई, लौटकर अपने ग्राम में आये। ग्राम तीन वर्ष तक सर्वथा उजड़ा हुआ (निर्जन) पड़ा रहा। शान्ति होने पर सीताराम ने अपने सम्बन्धियों को मुरथल से तथा अन्य स्थानों से लाकर उसमें बसा दिया और लिबासपुर का निवासी लिखवा दिया। उसने इस प्रकार की धूर्तता की। सीताराम ने इस ग्राम के कागजात में अपने नाम लिखवा दिया और लिबासपुर ग्राम को अपना खरीदा हुआ बताया और कागजी कार्यवाही पूरी कर दी। तभी से लिबासपुर ग्राम सीताराम के बेटे पोतों की अध्यक्षता में है और कागजात में भी इसी प्रकार लिखा हुआ है।

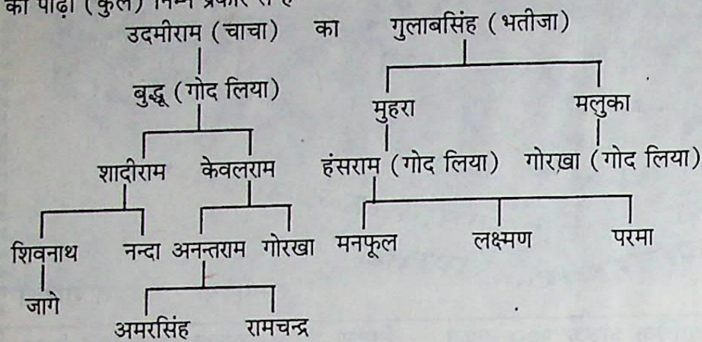
ग्राम के यथार्थ निवासी भूमिहीन (मजोर) के रूप में चले आ रहे हैं। गांव का कोई भी व्यक्ति एक बीघे जमीन का भी (बिश्वेदार) स्वामी नहीं है। ग्रामवासियों ने जो कष्ट सहन किये उनका लिखना सामर्थ्य से बाहर है। इन कष्टों को तो वही जानता है जिसने उन्हें सहर्ष सहन किया है। जिन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया था उन्हें राई के सरकारी पड़ाव में ले जाकर सड़क पर लिटाकर भारी पत्थर के कोल्हुओं के नीचे डालकर पीस दिया गया। उन कोल्हुओं में से एक कोल्हू का पत्थर अब भी २३वें मील के दूसरे फर्लाङ्ग पर पड़ा हुआ है।

वीर योद्धा उदमीराम को पड़ाव के पीपल के वृक्ष पर बान्ध कर हाथों में लोहे की

कीलें गाढ़ दी गईं, उनको भूखा-प्यासा रखा गया। पीने को जल मांगा तो जबरदस्ती उसके मुख में पेशाब डाला गया। अंग्रेजों का सख्त पहरा लगा दिया गया, भारत मां का यह सच्चा सपूत ३५ दिन तक इसी प्रकार बंधा हुआ तड़पता रहा। इस वीर ने अपने प्राणों की आहुति देकर सदा के लिये हरयाणा प्रान्त और अपने गांव का नाम अमर कर दिया। उसके शव को भी कहीं छिपा दिया।

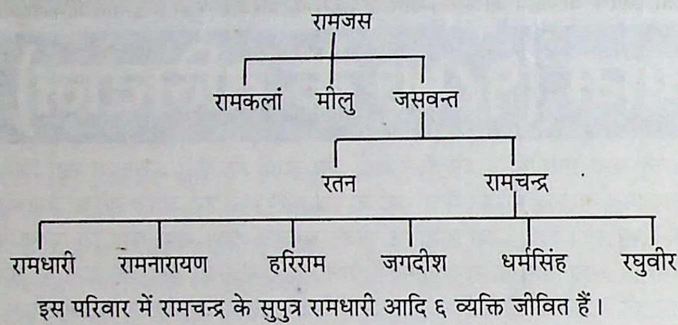
## लिबासपुर के शहीदों की वंशावली

जो व्यक्ति अंग्रेजों के अत्याचार के कारण हुतात्मा (शहीद) हुए उनके सम्बन्धियों की पीढ़ी (कुल) निम्न प्रकार से है-




इन परिवारों में से-

जागे, अमरसिंह, रामचन्द्र, मनफूल, लक्ष्मण और परमा ये सब जीवित हैं।




इस परिवार में रामचन्द्र के सुपुत्र रामधारी आदि ६ व्यक्ति जीवित हैं।

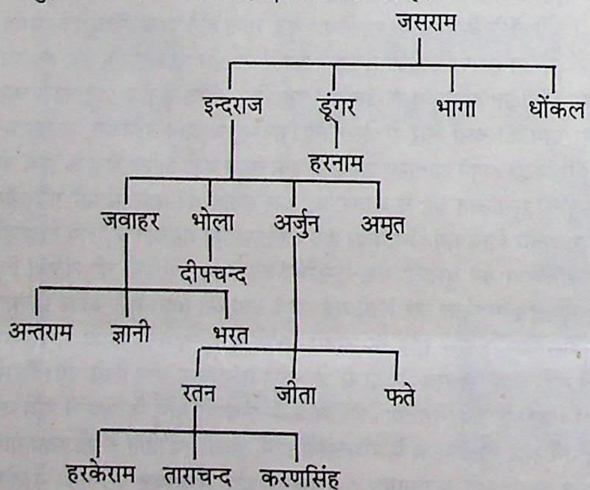
सहजराम

मुखराम नोनक

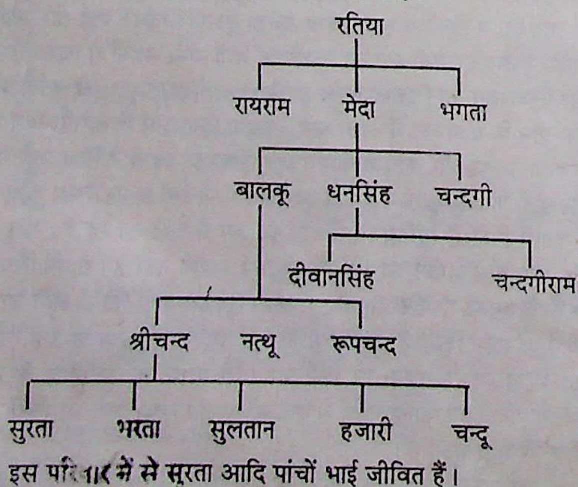
मोलड़

हरलाल जगराम हरफूल देवकराम

भगवानसिंह आदि सात भाई हैं। भगवानसिंह ने ही लिबासपुर का लेख लिखने में मुझे पर्याप्त सहायता दी। यह एक आर्य सज्जन है।




हरकेराम आदि तीनों भाई इस समय जीवित हैं।




इस परिवार में से सुरता आदि पांचों भाई जीवित हैं।

यह लेख लिखने में श्री बलवीरप्रसाद चतुर्वेदी मुख्याध्यापक "संस्कृत हाई स्कूल लिबासपुर" बहालगढ़ से मुझे पूरी सहायता मिली। यह सारी सामग्री एक प्रकार से आपने ही इकट्ठी करके दी है। इसके लिये मैं आपका आभारी हूं। जब मैं आपके पास पहुंचा तो आपने तुरन्त स्कूल के सब कार्य छोड़कर मुझे यह लेख लिखने के लिए सामग्री लाकर दी और श्री भगवान्सिंह आर्य भी लिबासपुर बुलाने से तुरन्त उसी समय आ गये। यह स्कूल पं० मंसाराम जी आर्य जाखौली निवासी ने खोला हुआ है जहां बैठकर मैंने यह सामग्री एकत्रित की। आपका सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार में बीता है।

## मुरथल का बलिदान

मुरथल ग्राम निवासियों ने भी इसी प्रकार अत्याचारी अंग्रेजों के मारने में वीरता दिखाई थी। अंग्रेज शान्ति होने पर मुरथल ग्राम को भी इसी प्रकार का दण्ड देना चाहते थे। किन्तु नवलसिंह नम्बरदार मुरथल निवासी अंग्रेज सेना को मार्ग में मिल गया। अंग्रेज सेना ने उससे पूछा कि मुरथल ग्राम कहां है? तो नम्बरदार ने बताया कि आप उस गांव को तो बहुत पीछे छोड़ आये हैं। उस समय अंग्रेज सेना ने पीछे लौटना उचित न समझा और यह बात नम्बरदार की चतुराई से सदा के लिए टल गई। देशद्रोही सीताराम को इनाम के रूप में लिबासपुर ग्राम सदा के लिए दे दिया और उस बाई जी (ब्राह्मणी) को बहालगढ़ गांव दे दिया। आज भी इन दोनों ग्रामों के निवासी भूमिहीन (मजारे) कृषक के रूप में अपने दिन कष्ट से बिता रहे हैं। देश को स्वतन्त्र हुए ११ वर्ष हो गये किन्तु इनको कोई भी सुविधा हमारी सरकार ने नहीं दी। इनके पितरों (बुजुर्गों) ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने सर्वस्व का बलिदान दिया। किन्तु किसी प्रकार का पारितोषिक तो इनको देना दूर रहा इनकी भूमि भी आज तक इनको नहीं लौटाई गई। गतवर्ष सन् ५७ में स्वतन्त्रता के प्रथम युद्ध की शताब्दी मनाई गई, किन्तु देशभक्त ग्रामों को पारितोषिक व प्रोत्साहन तो देना दूर रहा किसी राज्य के बड़े अधिकारी ने धैर्य व सान्त्वना भी नहीं दी। मेरे जैसे भिक्षु के पास देने को क्या रक्खा है, यह दो चार पंक्तियां इन देशभक्तों के लिये श्रद्धाञ्जलि के रूप में इस बलिदानाङ्क में लिख दी हैं। इस प्रकार के सभी देशभक्त ग्रामों के लिए यही श्रद्धा के पुष्प भेंट हैं।

## कुण्डली का बलिदान

सूबा देहली में नरेला तथा नरेला के आसपास लवौरस गोत्र के जाटकुल क्षत्रियों के दस बारह ग्राम बसे हुए हैं। उनमें से ही यह कुण्डली ग्राम सोनीपत तहसील जिला रोहतक में जी.टी. रोड पर है। इस ग्राम के निवासियों ने भी सन् ५७ के स्वतन्त्रता युद्ध में खूब बढ़चढ़कर भाग लिया था। यहां के वीर योद्धाओं ने भी इसी प्रकार अत्याचारी भागने वाले अंग्रेज सैनिकों का वध किया था।

एक घटना जिसका पता चल गया और जिसके कारण इस ग्राम को दण्ड दिया गया वह निम्न प्रकार से है-

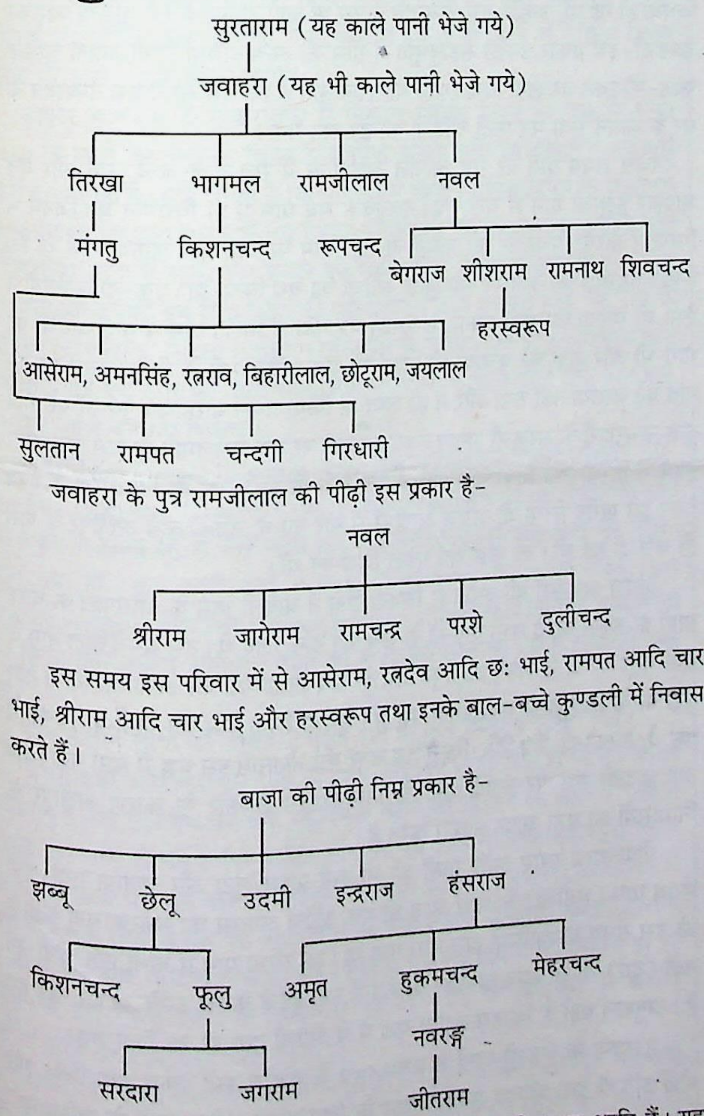
एक अंग्रेज परिवार ऊंट करांची में बैठा हुआ इस गांव के पास से सड़क पर जा रहा था। वे चार व्यक्ति थे एक स्वयं, दो उसके पुत्र और एक उसकी धर्मपत्नी। जब वे चारों इस ग्राम के पास आये तो गांव के लोगों ने उस ऊंट कराची को पकड़ लिया। ऊंट को भगा दिया और करांची को एक दर्जी के बगड़ में बिटोड़े में रखकर जलाकर भस्मसात् कर दिया। उस अंग्रेज और उसके दोनों लड़कों को मार दिया। उस देवी को भारतीय सभ्यता के अनुसार कुछ नहीं कहा। उसे समुचित भोजनादि की व्यवस्था करके गांव में सुरक्षित रख लिया। जब युद्ध की समाप्ति पर शान्ति हुई तो एक अंग्रेज नरेला के पास पलाश-वन में जो कुण्डली से मिला हुआ है, शिकार खेलने के लिए आया। उसकी बन्दूक के शब्द को सुनकर वह अंग्रेज-स्त्री आंख बचाकर उसके पास पहुंच गई और उसने अपने परिवार के नष्ट होने की सारी कष्ट-कहानी उसको सुना दी। वह उसे अपने साथ लेकर तुरन्त देहली पहुंच गया। एक किंवदन्ती यह भी है कि उस करांची में ८० हजार का नकद माल था जो उस ग्राम वालों ने लूट लिया। अंग्रेज आदि उस समय कोई कत्ल नहीं किया। वह माल लूटकर इस भय से कभी तलाशी न हो, नरेला भेज दिया गया। कुफली ग्राम के कुछ निवासी इस घटना को असत्य भी बताते हैं। कुछ भी हो इस ग्राम को दण्ड देने के लिए एक दिन प्रातः चार बजे अंग्रेजी सेना ने आकर घेर लिया।

ग्राम के वस्त्र, आभूषण, पशु इत्यादि सब अंग्रेजी सेना ने लूट लिया और सारे पशु इत्यादि को अलीपुर ले जाकर नीलाम कर दिया गया। स्त्रियों के आभूषण बलपूर्वक उतारे गये, यहां तक कि भूमि खोद-खोदकर गड़ा हुआ धन भी निकाल लिया गया। बहुत से व्यक्ति तो जो भागने में समर्थ थे ग्राम को छोड़कर भाग गये। ग्राम के कुछ मुख्य-मुख्य आदमी जो भागे नहीं थे गिरफ्तार कर लिये गये। कुछ व्यक्ति ग्राम के सर्वनाश का एक कारण और भी बताते हैं। जब अत्याचारी मिटकाफ, जो काणे साहब के नाम से प्रसिद्ध था और हरयाणे के वीर ग्रामों को दण्ड देता और आग लगाता हुआ फिर रहा था, वह नांगल की ओर से आया तो कुछ व्यक्ति उसके स्वागत के लिए दूध

इत्यादि लेकर नांगल की ओर चले गये। वे मार्ग में ही इसका स्वागत करके अपने गांव को बचाना चाहते थे। किन्तु उस दिन मिटकाफ ने दूसरे किसी ग्राम का प्रोग्राम नांगल जखौली इत्यादि का बना लिया। कुण्डली वाले विवश हो लौट आये, जिस समय वह लौट रहे थे तो अंग्रेज सरकार की चौकी पर एक मालिम नाम का व्यक्ति रहता था। उसने ग्रामवासियों से दूध मांगा कि यह दूध मुझे दे जाओ, किन्तु चौधरी सुरताराम जो कठोर प्रकृति के थे उसे यह कहकर धमका दिया कि तेरे जैसे तीन सौ फिरते हैं, तेरे लिये यह दूध नहीं है। उस व्यक्ति ने कहा अच्छा मुझे भी उन तीन सौ में से एक गिन लेना, समय पड़ने पर मैं भी आप लोगों को देखूंगा। उसी व्यक्ति ने मिटकाफ साहब को सूचना दी कि अंग्रेजों को कुण्डली ग्राम वालों ने मारा है और अंग्रेज अपनी सेना लेकर ग्राम पर चढ़ आये। निम्नलिखित व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया-

१. श्री सुरताराम जी, २. उनका पुत्र जवाहरा, ३. बाजा नम्बरदार, ४. पृथीराम, ५. मुखराम, ६. राधे, ७. जयमल। कुछ व्यक्ति जो और भी गिरफ्तार हुये थे उनके नाम किसी को याद नहीं। यह लोकश्रुति है कि १४ व्यक्ति गिरफ्तार किये गये थे। ११ को दण्ड दिया गया और ३ को छोड़ दिया गया। इनमें से आठ को एक-एक वर्ष का कारागृह का दण्ड मिला। ३ को अर्थात् नम्बरदार, सूरताराम, उनके पुत्र जवाहरा और बाजा नम्बरदार को आजन्म काले पानी का दण्ड दिया गया। इनको अण्डमान द्वीप (कालेपानी में) भेज दिया गया। वहां पर चक्की, कोल्हू बेड़ी इत्यादि भयंकर दण्ड देकर खूब अत्याचार ढाये गए। अतः ये तीनों वीर अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए बलिवेदी पर चढ़ गए, इनमें से कोई लौटकर नहीं आया। इसके विषय में लोगों ने बताया जब इनको गिरफ्तार करके ले जाने लगे तो बाजा नम्बरदार ने सुरता नम्बरदार को कहा यह ग्राम सुख से बसे। हम तो अब लौटकर आते नहीं। सुरता ने कहा-बाजिया तू तो यों ही घबराता है मेरे माथे में मणि है (अर्थात् मैं भाग्यवान् हूं) हम अलीपुर व देहली से ही छूटकर अवश्य घर लौट आयेंगे हमारा दोष ही क्या है। बात यथार्थ में यह है कि अंग्रेजों ने खूब यत्न किया। इस ग्राम के द्वारा अंग्रेजों के कतल के अभियोग को सिद्ध नहीं किया जा सका, सुरता की बात सुनकर बाजा ने कहा जिनके ढोर पशु धनादि ही नहीं रहा वह लौटकर कैसे आयेंगे। हुआ भी ऐसा ही। ये तीनों वहीं पर समाप्त हो गए। जो इस ग्राम के वीर, स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर चढ़े, उनकी पीढ़ियां निम्न प्रकार से है।

## कुण्डली के शहीदों की वंशावली




जवाहरा के पुत्र रामजीलाल की पीढ़ी इस प्रकार है-

इस समय इस परिवार में से आसेराम, रत्नदेव आदि छः भाई, रामपत आदि चार भाई, श्रीराम आदि चार भाई और हरस्वरूप तथा इनके बाल-बच्चे कुण्डली में निवास करते हैं।

बाजा की पीढ़ी निम्न प्रकार है-

आजकल कुण्डली ग्राम के स्वामी सोनीपत निवासी ऋषिप्रकाश आदि हैं। यह ग्राम उनको किस प्रकार मिला इसके विषय में यह किंवदन्ती है कि सोनीपत निवासी मामूलसिंह नाम का ब्राह्मण (मोहर्रिर) लेखक था। सड़क पर एक आदमी की लाश पड़ी थी। कोई यह कहता है वह किसी अनाथ का ही शव था। उसके ऊपर वस्त्र डालकर उसके पास बैठकर मामूलसिंह रोने लगा। जब उसके पास से कुछ अंग्रेज गुजरे तो कहने लगा-यह मेरा आदमी आप लोगों की सेवा में मर गया। इसी के फलस्वरूप अंग्रेजों ने प्रसन्न होकर उसे पहले तो खामपुर ग्राम पारितोषिक के रूप में दिया था। किन्तु पीछे कुण्डली ग्राम का उसे स्वामी बना दिया। जिस समय नोटिस (विज्ञापन) लगाया गया था कि यह गांव तीन वर्ष के लिए जब्त किया जा रहा है और मामूलसिंह को दिया जा रहा है। ग्रामवालों का कहना है कि उस समय उसने अपनी चालाकी, दबाव अथवा लोभ से दबा और सिखाकर सदा के लिये अपने नाम लिखा लिया। ग्राम के लोगों ने अनेक बार मुकदमा भी लड़ा और कलकत्ते तक भागदौड़ भी की, किन्तु नकल ही नहीं मिली। मुकदमे में यह झूठ बोल दिया गया कि यह गांव हमारे बाप-दादा का है हमारी यह पैतृक सम्पत्ति है। इसीलिये आज तक भी मामूलसिंह के परिवार के व्यक्ति इस ग्राम के स्वामी हैं और गांव के देशभक्त कृषक जो ग्राम के निवासी और स्वामी हैं वे भूमिहीन (मजारे) के रूप में अनेक प्रकार से कष्ट सहकर अपने दिन काट रहे हैं। मामूलसिंह के बेटे-पोतों ने इस ग्राम को खूब तङ्ग किया। अनेक प्रकार के पूछी आदि टैक्स लगाये, चौपाल तक नहीं बनने दी। ग्रामवासियों ने भी खूब संघर्ष किया। अनेक बार जेल में गये। अन्त में चौपाल तो बनाकर ही छोड़ी। श्री रत्नदेव जी आर्य जो सुरता और जवाहरा के परिवार में से हैं इन्होंने ग्राम पर होने वाले अत्याचारों को दूर करने के लिये संघर्षों में नेतृत्व किया और खूब सेवा की। इस ग्राम के निवासी प्रायः सभी उत्साही हैं। अंग्रेजी राज्य के रहते-रहते इस ग्राम के पढ़े-लिखे को किसी भी सरकारी नौकरी में नहीं लिया गया। सभी प्रकार के कष्ट यह लोग सहते रहे और यह आशा लगाये बैठे थे कि जब देश स्वतन्त्र होगा तब हमारे कष्ट दूर हो जायेंगे। जब सन् ४७ में १५ अगस्त को देश को स्वतन्त्रता मिली और लाल किले पर तिरङ्गा झंडा फहराया गया उस समय यह गांव बड़े हर्ष में मग्न था। समझ रहा था कि अब हमारे भी सुदिन आ गये हैं। किन्तु आज देश को स्वतन्त्र हुए ११ वर्ष हो चुके हैं। यहां के ग्रामवासी पहले से भी अधिक दुःखी हैं। हमारे राष्ट्र के कर्णधारों व राज्याधिकारियों का इनके कष्टों की ओर कोई ध्यान नहीं। भगवान् ही इनके कष्टों को दूर करेगा। कुण्डली ग्राम के निवासी वृद्ध जीतराम जी, जिनकी आयु ८५ वर्ष है तथा सुरताराम और जवाहरा के परिवार के श्री महाशय रत्नदेव जी और उनके बड़े भाई आशाराम जी ने इस ग्राम के इतिहास की सामग्री इकट्ठी करने में मुझे पूरा सहयोग दिया है, इन सबका मैं आभारी हूं।

खामपुर, अलीपुर, हमीदपुर, सराय आदि अनेक ग्राम हैं जिन्होंने सन् ५७ के युद्ध में बड़ी वीरता से अपने कर्त्तव्य का पालन किया था। जब कभी मुझे समय मिला, मेरी इच्छा है मैं हरयाणे का एक बहुत बड़ा इतिहास लिखूं, तब इनके विषय में विस्तार से लिखूंगा। खामपुर आदि ग्राम भी जब्त कर लिये गये थे। ग्राम खामपुर, दिल्ली निवासी एक ब्राह्मण लछमनसिंह के बाप दादा को दिया गया था। आज भी वह परिवार उस ग्राम का स्वामी है। खामपुर ग्राम के जाट आदि जो निवासी थे वे भाग गये थे, वह खेड़े आदि अन्य ग्रामों में बसते हैं। इस गांव में तो अन्य मजदूरी करने वाले लोग बसते हैं। अलीपुर ग्राम के आदमियों को भी लिबासपुर के निवासियों के समान सड़क पर डालकर कोल्हू से पीस दिया गया था और अलीपुर ग्राम को बुरी तरह से लूटकर जलाकर राख कर दिया गया था। अलीपुर ग्राम को जब्त करके दिल्ली के कुछ देशद्रोही मुसलमानों को दे दिया गया था। उन मुसलमानों के परिवार में जो इस ग्राम के स्वामी थे, चरित्र सम्बन्धी गड़बड़ कुण्डली ग्राम में आकर की। कुण्डली ग्राम के दलितों ने इन पापियों के ऊपर अभियोग चलाया और उसी अभियोग में विवश होकर वह अलीपुर ग्राम मुसलमानों को जाटों के हाथ बेचना पड़ा। हमीदपुर ग्राम भी जब्त करके मुसलमानों को दिया गया था। इसी प्रकार ही ऐसे देशभक्त ग्रामों को जब्त करके देशद्रोहियों को दे दिया गया था। इसके विषय में विस्तार से कभी समय मिलने पर लिखूंगा।

अलीपुर ग्राम की घटना जो माननीय वयोवृद्ध पं० बस्तीराम जी आर्योपदेशक के मुखारविन्द से सुनी। निम्न प्रकार से है-

## अलीपुर की घटना

मानेलुक नाम का एक अंग्रेज घोड़े पर सवार अलीपुर ग्राम के पास से जा रहा था। वह प्यास से अत्यन्त व्याकुल था। उसने एक किसान से जो सड़क के पास ही अपने खलिहान (पैर) में गोंहटा चला रहा था, संकेत से जल पीने को मांगा। किसान को दया आई और वह घड़े में से जल लेने के लिये गांहटा छोड़कर चल दिया किन्तु उस समय घड़े में जल न मिला। विवश होकर किसान अपने घड़े को उठाकर कुएं पर जल भरने को चला गया। किसान के इस सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार को देखकर अंग्रेज विचारने लगा कि इस व्यक्ति ने मेरे लिये अपना काम भी छोड़ दिया। वह अंग्रेज उसके पैर में आ गया और घोड़े से उतरकर यह समझकर कि किसान के कार्य में हानि न हो पैर में

घुस गया और बैलों को हांकना प्रारम्भ कर दिया और अपना घोड़ा पास के किसी वृक्ष से बान्ध दिया। उसी समय एक दूसरा अंग्रेज घुड़सवार उसी सड़क से जा रहा था जिसका नाम किलब्रट था। उसने यह समझा कि मानेलुक से बलपूर्वक गाहटा हकवाया जा रहा है और वह शीघ्रता से वहां से भागकर चला गया और अपनी डायरी में अलीपुर ग्राम के विषय में अंग्रेजों पर अत्याचार करने के लिये एक नोट लिख लिया। अर्थात् अलीपुर ग्राम पर अत्याचार का आरोप लगाया, वह किलब्रट नाम का अंग्रेज जो वहां से भय के मारे शीघ्रता से भाग गया। भय के कारण सत्यता का अन्वेषण भी नहीं किया। इधर जब किसान जल का घड़ा भरकर लाया तो अंग्रेज गाहटे में खड़ा था और बैल उससे विधककर (डरकर) भाग गये थे। किसान ने अंग्रेज को सहानुभूतिपूर्ण शब्दों में कहा-आपने ऐसा कष्ट क्यों किया? उस किसान ने अंग्रेज के कपड़े झाड़े, धूल साफ की, जल पिलाया और रोटी भी खिलाई। इस प्रकार उसकी अच्छी सेवा की और उस अंग्रेज ने अलीपुर के विषय में बहुत अच्छा लिखा और वह चला गया। शान्ति होने के पश्चात् किलब्रट की डायरी जो अलीपुर के विषय में बुरी लिखी थी उसी के अनुसार अलीपुर ग्राम को बुरी तरह लूटा गया और मनुष्य, पशु आदि प्राणियों सहित अग्नि में जलाकर भस्मसात् कर दिया गया। कुछ दिन के पीछे मानेलुक की सच्ची रिपोर्ट भी अंग्रेजों के आगे पेश हुई। तब अंग्रेजों को ज्ञात हुआ कि जिस अलीपुर ग्राम को पारितोषिक मिलना चाहिए था उसको तो भीषण अग्निकाण्ड दिया गया। यह अंग्रेजों की मूर्खता का एक उदाहरण है और सारे हरयाणे के ग्रामों पर यही दोष लगाया जाता है कि *यहां के किसानों ने सब अंग्रेज स्त्रियों से गांहटा चलवाया था।* यह सब बात इस अलीपुर की गाहटे की घटना के समान मिथ्या और भ्रम फैलाने वाली हैं। भारतीयों ने अंग्रेज महिलाओं और बच्चों पर कभी अत्याचार नहीं किये।

## १८५७ के स्वातन्त्र्य-संग्राम में अलीपुर ग्राम का भाग

अलीपुर ग्राम कई शताब्दियों से बड़ी सड़क जी.टी. रोड पर बसा हुआ है। इसी सड़क से अंग्रेजों की सेनाएं गुजरती थीं। यहां के वीर लोगों ने भी सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-संग्राम में खूब बढ़चढ़कर भाग लिया और इस सड़क पर गुजरने वाले अनेक अत्याचारी अंग्रेजों को काल के गाल में पहुंचाया गया। यही नहीं, इस स्वतन्त्रता समर में बलिदान देने वाले वीरों की संख्या इस ग्राम में सबसे बढ़कर है। अलीपुर ग्राम में, १८५७ में सड़क के निकट ही सरकारी तहसील विद्यमान थी और उसके पास ही बाहर बाजार था। क्रान्ति के समय ग्राम के लोगों ने तहसील में घुसकर सब सरकारी कागजों को फूंक दिया और बाजार को भी लूट लिया। ऐसा अनुमान है कि बाजार में जो दुकानें थीं या तो वे सरकार की थीं या सरकारी पिट्ठुओं की थीं। इसलिये उन्हें लूटा गया। तहसील पर जिस समय जनता के लोगों ने आक्रमण किया तो तहसील के सरकारी नौकरों ने अवश्य कुछ न कुछ विरोध किया होगा। उसके फलस्वरूप युद्ध हुआ और ग्रामीण वीरों ने गोलियां चलाईं। जिन गोलियों के निशान आज भी लकड़ी के किवाड़ों पर विद्यमान हैं। उन्हीं दिनों अनेक अंग्रेज, ग्रामीण योद्धाओं के द्वारा मारे गये।

अलीपुर ग्राम को दण्ड देने के लिए मिटकाफ (काना साहब) सेना लेकर अलीपुर पहुंच गया। उसने अपनी सेना का शिविर दो कदम्ब (कैम) के वृक्षों के नीचे लगाया, जो आज भी विद्यमान हैं। ये ऐतिहासिक वृक्ष अंग्रेजों के अत्याचार के मुंह बोलते चित्र हैं। गांव के चारों ओर सेना ने घेरा डाल दिया। तोपखाना भी लगा दिया। किसी व्यक्ति को भी गांव से बाहर नहीं निकलने दिया गया। सेना के बड़े-बड़े अफसर गांव में घुस गये और गांव के ७०-७५ चुने हुए व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया गया। हंसराम नाम का एक व्यक्ति उस समय हलुम्बी ग्राम की ओर शौच गया हुआ था, उसे पकड़ने के लिए कुछ अंग्रेज जंगल में ही पहुंच गए और उसे गिरफ्तार कर लिया, वह खेड़े के निकट कुण्डों के पास पकड़ा गया। वह अत्यन्त स्वस्थ, सुन्दर आकृति का युवक था। पकड़ने वाले अधिकारी के मन में दया आ गई तथा उसकी सुन्दर आकृति व स्वास्थ्य से प्रभावित होकर उसे छोड़ दिया। किन्तु उस युवक ने कहा कि मैं तो अपने साथियों के साथ रहना चाहता हूं, जहां वे जायेंगे मैं भी वहीं पर जाऊंगा। मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने साथियों के साथ जीऊं और साथियों के साथ ही मरूं।

अंग्रेज सिपाहियों ने उसे बहुत छोड़ना चाहा और उसे भागने के लिए बार-बार प्रेरणा की किन्तु उसने भागने से इंकार कर दिया और गिरफ्तार हुए साथियों के साथ मिल गया। अंग्रेज सत्तर-पचहत्तर व्यक्तियों को गिरफ्तार करके लाल किले में ले गए और उन सबको फांसी पर चढ़ा दिया गया।

यह घटना १८५७ के मई मास के अन्तिम सप्ताह की है।

लाल किले में हंसराम को घसियारे के रूप में अंग्रेजों ने निकालना चाहा। वह अंग्रेज उसके सुन्दर शरीर तथा स्वास्थ्य को देखकर उसे छोड़ना चाहता था, किन्तु उसने फिर इंकार कर दिया, फिर तो उसे भी फांसी पर चढ़ा दिया गया।

मुहम्मदु नाम का एक मुसलमान किसी प्रकार बचकर भाग आया। वह फिर सकतापुर भोपाल राज्य में जाकर बस गया।

दूसरा एक हिन्दू भुरड़ बौंक के जाटों में से बचकर भाग आया।

कुछ व्यक्तियों का ऐसा भी मत है कि इन व्यक्तियों को फांसी नहीं दी गई थी किन्तु इन सबको पत्थर के कोल्हू के नीचे सड़क पर डालकर पीसकर मार डाला गया था। वे पत्थर के कोल्हू अभी तक इस सड़क पर पड़े हुए हैं।

जिन व्यक्तियों को फांसी दी गई-उनमें से तुलसीराम और हंसराम के अतिरिक्त और किसी के भी नाम का पता यत्न करने पर भी नहीं चल सका। अलीपुर ग्राम का भाट सोनीपत का निवासी है जो आजकल जाखोली गांव में रहता है, उसकी पोथी में पैंतीस व्यक्तियों के नाम मिलते हैं। उस विश्वम्भरदयाल भाट के पास जाखोली इन्हीं नामों के जानने के लिए गया, किन्तु जिस पोथी में ये नाम हैं, उस पोथी को उस भाट का पुत्र लेकर किसी गांव में अपने यजमानों के पास चला गया था, दुर्भाग्य से वे नाम नहीं मिल सके।

अलीपुर ग्राम में भी मैं इसी कार्य के लिए तीन बार गया। जिन घरों में इन नामों के मिलने की आशा थी, खोज करवाने पर भी वे नाम नहीं मिल सके। यह हमारा दुर्भाग्य ही रहा कि जिन हुतात्मा वीरों ने हंसते-हंसते देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। आज उनके नाम भी हमें उपलब्ध न हो सके।

जिस किसी ने भी १८५७ के स्वातन्त्र्य समर के विषय में लिखा है हरयाणा प्रान्त की वीरता के विषय में दो चार शब्द लिखने का भी कष्ट नहीं किया। यथार्थ में यह युद्ध हरयाणा प्रान्त के वीर सैनिकों ने ही लड़ा था। सभी रिसाले और पलटनों में मेरठ आदि सभी छावनियों में हरयाणा के वीर सैनिक ही अधिक संख्या में थे। उस समय तक हरयाणा प्रान्त के सभी ग्रामों में पञ्चायती सैनिक थे। सभी गांवों में अखाड़े चलते थे, जहां पञ्चायती सैनिक तैयार किए जाते थे। किसी प्रकार की आपत्ति पड़ने पर जो धर्मयुद्ध में भाग लेते थे। अलीपुर गांव के जो नवयुवक इस क्रान्ति में हंसते-हंसते बलिवेदी पर चढ़ गए वे भी इसी प्रकार के पंचायती सैनिक थे। इन सबको फांसी देने के लिए जिस समय गिरफ्तार किया गया, तोपों के द्वारा गांव पर गोले बरसाये गए। उसने इस ढंग से तोपें चलवाई कि तोप के गोले गांव के ऊपर से गुजर कर जंगल में गिरते रहे। ग्राम नष्ट होने से बच गया। कुछ का ऐसा भी मत है कि ग्राम को लूटा भी गया और जलाया भी गया। जितने व्यक्ति इस ग्राम के मारे गये, उनमें भंगी से लेकर ब्राह्मण तक सभी सम्मिलित थे। जाट इनमें कुछ अधिक संख्या में थे।

एक पटवारी और एक नम्बरदार ने जब उनको बहुत तंग किया तब इन सब लोगों के नाम लिखवाए थे, जिनको फांसी दी गई थी। फांसी आने के पश्चात् जो देवियां विधवा हो गई थीं, उन्होंने उस नम्बरदार के घर के आगे आकर अपनी चूड़ियां फोड़कर डाल दीं। इस प्रकार उनकी सहानुभूति में ग्राम की अन्य देवियों ने भी अपनी चूड़ियां फोड़-फोड़कर ढेर लगा दिया। यहां यह लोकश्रुति है कि उस समय उस नम्बरदार के घर के सामने सवा मन फूटी चूड़ियों का ढेर लग गया।

जिस समय ग्राम पर यह आपत्ति आई ग्राम में सब बाल-बच्चे, स्त्री और बूढ़े भागकर हलुम्बी ग्राम में चले गए। नवयुवक सब ग्राम में ही विद्यमान थे। जिनमें से गिरफ्तार करके पिचहत्तर को फांसी दी गई। ग्राम पर यही दोष लगाया गया था कि इन्होंने तहसील को जलाया और कुछ अंग्रेजों का वध किया था। एक-दो व्यक्तियों ने ऐसा भी बताया कि दोनों प्रकार के प्रमाण पत्र गांव में मिले। ग्राम में कुछ अंग्रेजों को मारा भी और कुछ को बचाया भी। इसलिए एक अंग्रेज स्त्री के निषेध करने पर इस गांव को जलाया नहीं गया और न ही जब्त ही किया गया। बारह वर्ष पूर्व ही यह गांव कुछ नम्बरदारों के सरकारी लगान स्वयं खा जाने पर एक मुसलमान के पास चार हजार रुपये में गिरवी रख दिया गया था। क्रान्ति युद्ध के पीछे यहां के निवासियों ने रुपये देकर इसे खरीद लिया जो अंग्रेज अलीपुर में मारे गए थे, उनकी कब्रें अलीपुर के पास ही बना दी गई थीं। जो कुछ वर्ष पहले विद्यमान थीं।

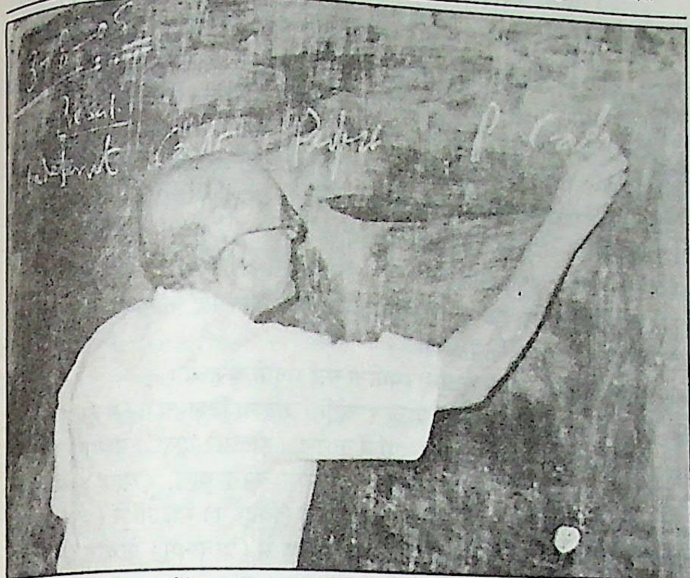
अंग्रेज अफसरों की आज्ञा से सिक्ख सेना ने बादली ग्राम के आसपास के बारह ग्रामों के अहीर आदि सभी कृषकों के सब पशु हांक लिए थे। उस समय तोता नाम के एक चतुर व्यक्ति ने अपने अलीपुर ग्राम के सब निवासियों को उत्साहित किया और युद्ध करके सिक्खों से सब अपना पशु धन छुड़वा लिया और उन ग्रामों के जिनके ये पशु थे, उनको ही सौंप दिये, किन्तु वह चतुर वीर तोताराम इस युद्ध में मारा गया। अब तक बादली समयपुर आदि ग्रामों के निवासी उस उपकार के कारण अलीपुर के निवासियों का बड़ा आदर सत्कार करते हैं।

पीपलथला सराय आदि ग्रामों को भी इसी प्रकार लूटा और जलाया गया। इसी सराय ग्राम (भड़ोला) के पास आज भी एक अंग्रेज अफसर का स्मारक बना हुआ है जो उस समय ग्रामवासियों द्वारा मारा गया था। इस सराय ग्राम में कभी एक छोटी-सी गढ़ी (दुर्ग) थी जो आज खण्डहर के रूप में पड़ी हुई है केवल उसके दो द्वार खड़े हुए हैं। अनुमान यही है कि इस क्रान्ति युद्ध में ये अंग्रेजों द्वारा ही नष्ट किए गए।

हरयाणा के सैकड़ों ग्रामों ने सन् १८५७ के युद्ध में इसी प्रकार भाग लिया और पीछे अंग्रेजों द्वारा दण्डित हुए। विस्तार के लिए पढ़िये **"देशभक्तों के बलिदान"** मूल्य १५० रूपये।

# अविस्मरणीय दृश्य-डाक्टर सांगवान बने शिक्षक

❑ कृष्णलाल वोहरा, प्रिंसिपल आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, सिरसा



आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल सिरसा में नए सत्र २००५-०६ के शुभ प्रारम्भ के अवसर पर दिनांक ३.८.२००५ प्रातः १० बजे विद्यालय के विशाल कक्ष में १०+१ एवं १०+२ के छात्र अपने-अपने स्थान पर अनुशासनबद्ध होकर पंक्तियों में बैठ चुके थे। आज उन्हें प्रतीक्षा थी स्कूल के माननीय प्रबन्धक महोदय डाक्टर आर.एस. सागवान के आगमन की। आज नए सत्र का शुभ आरम्भ उन्होंने ही करना था तथा विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने का, कर्मशील होने का आशीर्वाद देना था।

ठीक १०.२५ पर डाक्टर सांगवान अपनी गाड़ी से विद्यालय के मुख्य द्वार पर पहुंचे जहां प्रिंसिपल महोदय एवं अन्य अध्यापकों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। अब उन्हें बड़े सम्मान के साथ विशाल कक्ष में लाया गया जहां विद्यार्थियों ने तालियां बजाकर उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

अब सबको इन्तजार था कि आज डाक्टर सांगवान क्या कहते हैं। सभी विद्यार्थी उद्बोधन सुनने के लिए तैयार बैठे थे। कुछ ही क्षणों में डाक्टर साहब माइक पर आए। चारों ओर सन्नाटा।

डाक्टर सांगवान के मुखारविन्द से निकला पहला वाक्य था-जब मैं अपने १०+२ के छात्रों का इंगलिश विषय में वार्षिक परीक्षा परिणाम देखता हूं तब मुझे गहरा दुःख होता है। मुझे लगता है कि यदि हमारे छात्र इंगलिश विषय के व्याकरण के आधारभूत सिद्धान्त समझ लें तब उनकी इस विषय पर पकड़ मजबूत हो सकती है। इसलिए आज मैं चाक और डस्टर की सहायता से ग्रामर समझाऊंगा।

सब अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नगर के प्रतिष्ठित चिकित्सक, सिरसा एजुकेशन सोसाइटी के मुख्य संरक्षक, आर्यसमाज कोर्ट रोड के प्रधान एवं नगर की अन्य सामाजिक संस्थाओं के प्रेरणास्रोत डॉ० आर.एस. सांगवान आज बन गए शिक्षक।

सबसे पहले Present Indefinite Tense की पहचान एवं नियम समझाए गए-फिर Past Indefinite Tense और फिर Future Indefinite Tense. विद्यार्थी इतने सहज ढंग से सीख रहे थे जैसे प्यासे को पानी मिल गया हो और भूखे को भोजन मिल गया हो। अब बारी आई Present Continuous Tense की-फिर Past Continuous Tense और फिर Future Continuous Tense की। लगातार एक घण्टा २० मिनट तक डाक्टर सांगवान छात्रों को व्याकरण सम्बन्धी नियम समझाते चले गए।

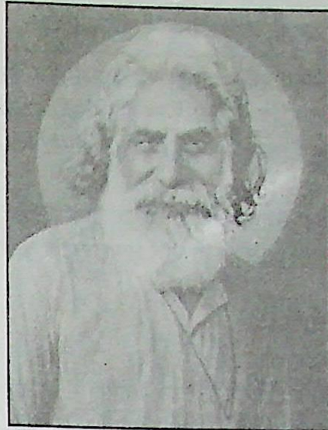
अब उन्होंने छात्रों को जीवन में उन्नत होने के कुछ अमूल्य सुझाव दिए।

सचमुच ही अविस्मरणीय दृश्य था यह। विद्यालय के इतिहास में भी यह पहला उदाहरण है जब माननीय प्रबन्धक महोदय ने छात्रों को जीजान से, समर्पण भाव से पढ़ाया हो। सत्य तो यह है कि डाक्टर सांगवान को आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल सिरसा से इतना प्रेम एवं स्नेह है जितना एक पिता को अपने पुत्र से। उनके मन में सदा यही बात रहती है कि यह स्कूल नगर के सभी स्कूलों से पढ़ाई, खेल एवं अन्य कार्यों में अग्रणीय भूमिका निभाए। इस स्कूल से ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण हो जो जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति के शिखर पर पहुंचें। वे राष्ट्र की बलिवेदी पर सर्वस्व अर्पित करने के लिए सदा तैयार रहें।

डाक्टर सांगवान ने अध्यापकों से अनुरोध किया कि वे कर्तव्यपरायण बनें तथा मन लगाकर छात्रों को पढाएं तथा स्कूल छोड़ने के बाद उनकी स्मृति सदा छात्रों के हृदय पटल पर अंकित रहे।

# सच्चे आर्यसमाजी की परिभाषा

( महात्मा प्रभुआश्रित जी २५ मार्च, १९३७ ई० की डायरी से )



वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

आर्यसमाजी लोग जैसे अपने परिवार, वंश के सदस्यों के लिए अपने प्राण देते दिलाते हैं। ऐसे आर्यसमाज की शान के लिए नहीं वारते। घर में कई त्रुटियां एक-दूसरे से हो जाती हैं कोई मनुष्य बाहर घोषित नहीं करता, दूसरे को नहीं सुनाता। अपने वंश की अपनी अपकीर्ति समझता है। परन्तु आर्यसमाज में जब सदस्यों के पारस्परिक कलह हो जाएं, तो समाचार पत्रों में एक-दूसरे को कलंकित करते हैं आर्यसमाज में ऋषि दयानन्द का भक्त विरला है। नेता बहुत हैं, सदस्य बहुत हैं, वेद-वेद पुकारने वाले बहुत हैं और ऋषि की जय बुलाने वाले भी बहुत हैं और जबानी कहने वाले भी बहुत हैं कि हम आर्यसमाज के सिद्धान्त के विरुद्ध कुछ नहीं सुन सकते, न देख सकते हैं। परन्तु यह सब जबानी जमा खर्च है। चाहे छोटे सेवक की हो अथवा उच्च नेता की। जो आर्यसमाजी ऋषि दयानन्द के नाम को कलंकित करता है जो अपनी ही शान बड़ी समझता है और आर्यसमाज की हानि की ओर ध्यान नहीं देता, **वह आर्यसमाजी नहीं है,** न ही ऋषि दयानन्द का भक्त है। **सच्चा आर्यसमाजी वही है जो आचरण में आर्य है,** जो आर्यसमाज को अपनी माता समझता है और सदस्यों को अपना भाई। जो अपना सर्वस्व उसके लिए न्यौछावर कर देता है, जो अपनी माता के नाम को कलंकित नहीं होने देता। जो स्वयं अपनी लेखनी से अपनी माता की समाचार-पत्रों के जगत् में मिट्टी पलीद करते हैं, वे कहां के नेता हैं और सहायक हैं? **वे शत्रु और विद्रोही हैं।** अपनी शान ऊंची करने और अपनी सफाई करने, अपने नाम की अपकीर्ति को मिटाने के लिए जो समाचार-पत्रों में जाते हैं वे आर्यसमाज के हितैषी नहीं, वे सम्बन्ध धर्म को भी भूल गए हैं। -द्वारा दर्शनलाल अग्निहोत्री

## भगवान का भजन ही...

टेक-भगवान् का भजन ही, जग में महान् है।
जग को बनाने वाला, करुणा-निधान है॥
१. मानव बनाया प्रभु ने, सज्ज्ञान भर दिया।
जीवों का हर तरफ से, कल्याण कर दिया।
इक पल कभी न खोना, यह मूल्यवान् है।
भगवान् का भजन ही.... ॥
२. वेदों में भी प्रभु का, गुणगान हो रहा।
आके यहां जगत् में, किस मद में खो रहा।
मुश्किल से यह मिला है, यह नाशवान् है।
भगवान् का भजन ही.... ॥
३. बचपन गंवाया व्यर्थ में, ध्यान ना किया।
आई जवानी सो गया, बरबाद कर दिया।
आया बुढ़ापा देखकर, अब क्यूं हैरान है।
भगवान् का भजन ही.... ॥
४. दौलत कमाई कर लिया, कुछ दान ना दिया।
वाणी से भी 'सरस' कभी, सम्मान ना किया।
जाओगे सबको छोड़के, विधि का विधान है।
भगवान् का भजन ही.... ॥

-सुरेन्द्रकुमार 'सरस', आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना मार्ग, रोहतक (हरयाणा)

## श्रावणी पर विशेष आयोजन

आगामी १९ अगस्त को श्रावणी के अवसर पर ऋषिकुल गोशाला न्यास निमड़ी वाली जिला भिवानी में विशेष यज्ञ, वैदिक विद्वानों के उपदेश, आर्य भजनोपदेशकों के भजन का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर देशभर से अनेक विद्वान् पधारेंगे। ऋषिकुल गोशाला न्यास प्रतिवर्ष ऐसे कार्यक्रम आयोजित करता है। -नरेश सिहाग एडवोकेट, चै० नं० १७५ जिला न्यायालय, भिवानी

# मुक्ति में जीव का लय नहीं होता

❑ इन्द्रजित्‌देव, पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर-१३५००१

वह पृथक्‌ विद्यमान रहता है-ऋ०भा०भूमिका, मुक्तिविषय। वह ब्रह्म में रहता तो है परन्तु अपनी पृथक्‌ सत्ता रखता है। जैसे जल में मिश्री मिलाने पर भी वे एक प्रतीत होते हैं, परन्तु जल और मिश्री दोनों का अस्तित्व रहता है, जल में जल के मिल जाने की तरह 'एक' नहीं होते।

यदि मुक्ति में जीव का परमात्मा में लय होना स्वीकार किया जाए तो मुक्ति में जीव व परमात्मा का अभेद हो जाएगा, जीव का पृथक्‌ अस्तित्व ही नहीं रहेगा जबकि वेदों में जीव व परमात्मा में भेद बताया है-

**यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति।**
**इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश॥** (ऋ० १.१६४.२१)

अर्थात्‌ परमेश्वर में मुक्त जीव मुक्ति का आनन्द भोगते हैं, जिस भगवान्‌ में निरन्तर विचरण करते हैं, जो इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्वामी है, उसी के जानने से कल्याण होता है।

यदि जीव का मुक्ति में परमात्मा में लय होना स्वीकारा जाएगा तो जीव नित्य नहीं रहेगा जबकि श्रुतियां व वैदिक दर्शन जीव को नित्य घोषित करते हैं। जीव लय हो जाएगा तो फिर उसकी उत्पत्ति भी माननी पड़ेगी।

**वायुरनिलं अमृतमथेदं** (यजुर्वेद ४०-१५) अर्थात्‌ जीव अभौतिक व अमृत है।

**नित्यो नित्यानाम्‌।** (उपनिषद्‌) अर्थात्‌ जीव नित्य रहता है।

**नात्मा श्रुतेर्नित्यत्वाच्च ताभ्यः** (वेदान्तदर्शन २.३.१७) अर्थात्‌ जीवात्मा उत्पन्न नहीं होता क्योंकि उसकी उत्पत्ति श्रुतियों में नहीं मानी गई।

**तदभावः सात्मकप्रदाहेऽपि तन्नित्यत्वात्‌** (न्यायदर्शन ३.१.५) इस सूत्र में महर्षि गौतम ने स्पष्टरूप में जीव के नित्यत्व का प्रतिपादन किया है।

**नित्यत्वाच्चानित्यैर्नास्ति सम्बन्धः।** (मीमांसादर्शन ६.७.५) अर्थात्‌ जीवात्मा के नित्य होने से उसका अनित्य भूतों से कार्यकारणसम्बन्ध नहीं है अर्थात्‌ जीव उत्पन्न नहीं होता। सदा रहता है। लय होने पर उसकी नित्यता समाप्त हो जाएगी जो वेदों, उपनिषदों व दर्शनों को स्वीकार नहीं।

**प्रकृतिपुरुषयोरन्यत्‌ सर्वमनित्यम्‌** (सां०द० ५.७२) प्रकृति, पुरुष अर्थात्‌ जीव व परमात्मा को छोड़कर अवशिष्ट सब अनित्य है।

**जगद्‌ व्यापारवर्जं प्रकरणादसंनिहितत्वाच्च।** (वेदान्तद० ४.४.१७) जीव में यह सामर्थ्य कदापि नहीं हो सकता कि वह ब्रह्म की भांति संसार की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय कर सके। अतः जीव मुक्ति में ब्रह्म नहीं होता। मुक्ति में जीव का ब्रह्म में लय होने में विश्वास करें तो ये दोष होंगे-

(१) जो लोग यह मानते हैं कि जीव ब्रह्म का अंश है व मुक्ति में जीव का ब्रह्म में लय होता है, वे प्रकारान्तर से मुक्ति के अस्तित्व से ही इनकार करते हैं। जब जीव लय ही हो गया तो मुक्ति का सुख कौन व कैसे भोगेगा? उसका पृथक्‌ अस्तित्व जब रहा ही नहीं तो मुक्ति सुख भोगकर लौटने व न लौटने का प्रश्न भी स्वतः समाप्त हो गया। वह तो जीव का विनाश ही है। मोक्ष का अर्थ जीव की मृत्यु, जीव का समाप्त होना, लय होना है तो उसका मोक्षार्थ जन्म-जन्मान्तरों तक पुरुषार्थ करना बुद्धिमत्ता नहीं है। रोग समाप्त होने पर रोगी ही समाप्त हो जाए, इसे कौन समझदार स्वीकार करेगा?

(२) मुक्ति के जितने साधन हैं, वे सब निष्फल हो जावेंगे। ...जब जीव प्रभु की आज्ञापालन, उत्तम कर्म, सत्संग व योगाभ्यास आदि पूर्वोक्त सब साधन करने पर ही मोक्ष होता है।

(३) यदि मुक्ति में जीव का परमेश्वर में लय होना मानें तो यह मुक्ति नहीं, उसका प्रलय जानना चाहिये। -सत्यार्थप्रकाश, नवम समुल्लास। जीव व ब्रह्म की एकता के लिये यह अनुमान कि 'चेतन' होने से जीव और ब्रह्म अभिन्न हैं अर्थात्‌ पृथक्‌-पृथक्‌ नहीं, एक ही हैं-यह मान्यता उचित व संगत नहीं है क्योंकि दो वस्तुओं में साधर्म्य-मात्र होता है, वह भेदक होता है। जैसे जड़ होने मात्र से सूर्य व चन्द्रमा की अभिन्नता सिद्ध नहीं होती।

(४) जीव में अल्पता, अल्पज्ञता, भ्रान्तिमत्त्वादि धर्म जीव में हैं जबकि ब्रह्म में सर्वगतत्व, सर्वज्ञता और निर्भ्रान्तिमत्त्वादि वैधर्म्य ब्रह्म है। इससे ब्रह्म और जीव दोनों भिन्न-भिन्न हैं। कुछ गुण दो तत्त्वों में मिलने का अर्थ पूर्णतः एकता नहीं। जैसे गन्धत्व आदि भूमि के धर्म, रसत्व द्रवत्वादि जल के धर्म दोनों में विशेष हैं परन्तु दोनों एक नहीं हैं। जीव व ब्रह्म में चेतनतादि साम्य होने पर भी अनेक वैधर्म्य होने से जीव व ब्रह्म एक न कभी थे, न हैं और न कभी मोक्ष में भी होंगे-स०प्र०, ९ समु०।

मोक्ष का अर्थ जीव का लय होना, समाप्त होना, मर जाना ही है तो जीव का जन्म-जन्मान्तरों तक पुरुषार्थ करना बुद्धिमत्ता नहीं है। रोग समाप्त होने पर रोगी ही समाप्त हो जाए, यह सिद्धान्त समझदारी का नहीं है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की स्पष्ट घोषणा है कि जीव मोक्षावस्था में सब प्रकार के दुःखों से मुक्त होकर, ईश्वर का आनन्द एक निश्चित अवधि तक भोगकर पुनः आवागमन में आता है।

# वेद में शिल्पियों को उपदेश

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

देवों में कुशल, शिल्प-विद्या के दाता, शिल्पकार्य में प्रख्यात, प्रशस्त वाणी वाले, भवन आदि का निर्माण करने वाले, संगतिमय यज्ञ को करने के लिये मनुष्यों को विज्ञानों में प्रेरणा करने वाले, वेदादिशास्त्रों के प्रमाण से प्राचीन शिल्प-विद्या के प्रकाश का उपदेश करने वाले दो शिल्पीजन-जितना शिल्प जानें उस सबका अन्यों को उपदेश करें, सिखलावें जिससे उत्तरोत्तर विद्या-सन्तति की वृद्धि हो। यहां 'कारू' शब्द में जो द्विवचन है उसका अभिप्राय यह है कि एक शिल्पी अध्यापक हो और एक हस्तक्रिया का शिक्षक हो। यजुर्वेद उनतीसवें अध्याय के ३२ से ३४ मन्त्रों में शिल्प-विद्या का वर्णन है। वे मन्त्र इस प्रकार हैं-

**अथ शिल्पिभिः किं कर्त्तव्यमित्याह**=अब शिल्पी लोगों को क्या करना चाहिये, इस विषय का उपदेश किया जाता है-

**दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै।**
**प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥** (यजु० २९।३२)

**अर्थ**-हे मनुष्यो! जो (दैव्या) देवों में कुशल, (होतारा) दाता, (प्रथमा) विख्यात (सुवाचा) प्रशस्त वाणी वाले (मिमाना) निर्माण करने वाले, (यज्ञम्‌) संगतिमय (यजध्यै) यज्ञ करने के लिये (मनुषः) मनुष्यों को (विदथेषु) विद्वानों में (प्रचोदयन्ता) प्रेरणा करने वाले (प्रदिशा) वेदादिशास्त्रों के प्रमाण से (प्राचीनम्‌) प्राचीन (ज्योतिः) शिल्प-विद्या के प्रकाश का (दिशन्ता) उपदेश करने वाले (कारू) शिल्पी लोग हों, उनसे शिल्प-विज्ञान शास्त्र का अध्ययन करो।

**भावार्थ**-यहां 'कारू' शब्द में द्विवचन-अध्यापक और हस्तक्रिया के शिक्षक के अभिप्राय से है। जो शिल्पी लोग हैं वे जितना जानते हैं उतना सब अन्य लोगों को सिखलावें, जिससे उत्तरोत्तर विद्या सन्तति की वृद्धि हो॥

**पुनस्तमेव विषयमाह**=शिल्पी लोगों को क्या करना चाहिये, उसका फिर उपदेश किया है-

**आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती।**
**तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳस्योनꣳसरस्वती स्वपसः सदन्तु॥** (यजु० २९।३३)

**अर्थ**-हे मनुष्यो! जो (भारती) शिल्प-विद्या को धारण करने वाली क्रिया, (इडा) सुशिक्षित मधुरवाणी, (सरस्वती) विज्ञानवती प्रज्ञा=बुद्धि-(इह) इस शिल्प विद्या के ग्रहण रूप व्यवहार में (नः) हमारे लिये (तूयम्‌) वर्द्धक (यज्ञम्‌) शिल्प-विद्या के प्रकाशमय यज्ञ को (मनुष्वत्‌) मानव के समान (चेतयन्ती) बतलाती हुई हमें (आ+एतु) सब ओर से प्राप्त करावे। ये (तिस्रः) तीन (देवीः) विद्या से देदीप्यमान वाणियां (इदम्‌) इस (बर्हिः) बड़े (स्योनम्‌) सुखकारक पदार्थ को (स्वपसः) उत्तम कर्मोंवाले हम लोगों को (आ+सदन्तु) सब ओर से प्राप्त करावें।

**भावार्थ**-इस शिल्पव्यवहार में उत्तम उपदेश क्रिया-विधि का बतलाना और विद्या को धारण करना अभीष्ट है। यदि इन तीन रीतियों को मनुष्य ग्रहण करें तो महान्‌ सुख को प्राप्त कर सकते हैं।

**शिल्पी लोग क्या करें**-विद्वान्‌ शिल्पी लोग-शिल्प-विद्या की धारक क्रिया, सुशिक्षित मधुर वाणी, विज्ञानवती प्रज्ञा=बुद्धि को इस शिल्प-विद्या के ग्रहण रूप व्यवहार में मनुष्यों को प्राप्त करावें। क्योंकि ये वर्द्धक, शिल्प-विद्या के प्रकाशमय यज्ञ को एक मनुष्य के तुल्य बतलाने वाली हैं। इस शिल्प व्यवहार में उत्तम उपदेश (इडा), क्रिया विधि का ज्ञाप (सरस्वती) और शिल्प-विद्या का धारण (भारती) अभीष्ट है, आवश्यक है। शिल्प-विद्या से देदीप्यमान इन तीन वाणियों एवं रीतियों को मनुष्य ग्रहण करें जिससे महान्‌ सुख और उत्तम कर्म करने वाले शिल्पी विद्वानों को प्राप्त हों॥

**पुनस्तमेव विषयमाह**=शिल्पी लोगों को क्या करना चाहिये, इसका फिर उपदेश किया है-

**यऽइमे द्यावापृथिवी जनित्री, रूपैरपिꣳशद्‌ भुवनानि विश्वा।**
**तमद्य होतरिषितो यजीयान्देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्‌॥** (यजु० २९।३४)

**अर्थ**-हे (होतः) शिल्प-विद्या को ग्रहण करने वाले विद्वान्‌। (यः) जो (यजीयान्‌) अत्यन्त संगति करने वाला (इषितः) प्रेरणा से युक्त (विद्वान्‌) सब ओर से विद्या को प्राप्त विद्वान्‌-जैसे ईश्वर (इह) इस रचनाव्यवहार में (रूपैः) विचित्र आहुतियों से (इमे) इन (जनित्री) अनेक कार्यों की उत्पादक (द्यावापृथिवी) विद्युत्‌ और भूमि तथा (विश्वा) सब (भुवनानि) लोकों को (अपिंशत्‌) अवयव रूप में बनाता है-वैसे (तम्‌) उस (त्वष्टारम्‌) वियोग-संयोग आदि के कर्त्ता (देवम्‌) विद्वान्‌ का (अद्य) अब तू (यक्षि) संग करता है, अतः सत्कार के योग्य है।

**भावार्थ**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलंकार है। मनुष्य इस सृष्टि में परमात्मा के रचना विशेषों को जानकर वैसे ही शिल्प-विद्या का संप्रयोग करें।

**शिल्पी लोग क्या करें**-शिल्प-विद्या को ग्रहण करने वाले विद्वान्‌ अत्यन्त संगति करने वाले, प्रेरणा से युक्त, सब ओर से विद्या को प्राप्त करने वाले हों। जैसे ईश्वर इस सृष्टि में विचित्र आहुतियों से इन अनेक कार्यों के उत्पादक विद्युत्‌ और भूमि का तथा सब लोकों का अवयव रूप में निर्माण करता है-वैसे वे वियोग-संयोग करने वाले विद्वान्‌ का संग करें। परमात्मा के रचना विशेषों को जानकर शिल्पविद्या का सम्प्रयोग करें। उक्त शिल्पी विद्वानों का सत्कार करें। इस मन्त्र में उपमा-वाचक 'इव' आदि लुप्त है अतः वाचकलुप्तोपमा अलंकार है। उपमा यह है कि शिल्पी विद्वान्‌ ईश्वर की रचना को जानकर उसके तुल्य रचना किया करें।

१५ अगस्त पर विशेष-

# देश की स्वतंत्रता को खतरा आतंकवाद से

❑ कृष्णलाल वोहरा, प्रिंसिपल आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, सिरसा

हजारों वीरों एवं वीरांगनाओं के अमर बलिदान के बाद भारत १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्र हुआ। भारत की राजधानी दिल्ली के लालकिले की प्राचीर पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा उठा।

लेकिन जाते-जाते अंग्रेज देश का दो भागों में विभाजन कर गए। पहला हिन्दुस्तान और दूसरा पाकिस्तान। १९७१ ई० के युद्ध के बाद पाकिस्तान का एक भाग टूटकर बांगला देश बन गया। आज पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ एवं बांगला देश के राष्ट्रपति खालिदा जिया चाहे कितना ही मित्रता का पैगाम देते हैं लेकिन यह सत्य है कि आतंकवाद का जन्मस्थल भी दोनों देश हैं। आजादी के ५८ वर्षों के बाद भी जम्मू-कश्मीर आतंकवाद की बाहों में है। कोई ऐसा दिन खाली नहीं जाता जब इस प्रान्त के किसी न किसी कोने में हत्या, लूटमार या आगजनी की घटना न घटती हो। प्रतिदिन निर्दोषों का खून बह रहा है। आए दिन जब रोते-बिलखते बच्चों, पुरुषों, महिलाओं एवं सैनिकों के चित्र समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते देखते हैं तो लगता है कि आतंकवाद अपने पूरे यौवन पर है।

भारत सरकार के गृहमंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार जम्मू-कश्मीर में १९९० ई० से लेकर मार्च २००४ ई० तक ११९४५ लोग आतंकवादियों की गोलियों के शिकार हुए। हजारों भवन, पुल एवं शिक्षा संस्थान भी नष्ट कर दिए गए।

सत्य तो यह है कि देश में बढ़ रहा आतंकवाद हमारी स्वतंत्रता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। लाखों की संख्या में विस्थापित आज जम्मू एवं दिल्ली में नारकीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उनके लिए स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त एवं गणतन्त्र दिवस २६ जनवरी का कोई महत्त्व नहीं है। उन्हें तो केवल एक चिन्ता है कि कब वे अपने घरों में पहुंचे। कश्मीर की वादियां ही उनके लिए स्वर्ग है।

आतंकवाद को कुचलने के लिए केन्द्र सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिएं। पाकिस्तान-जहां आतंकवाद पल रहा है। जहां प्रशिक्षण शिविरों में जिहाद के नाम पर नवयुवकों को भ्रमित किया जा रहा है-वहां उचित यही है कि मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को ही समाप्त कर दिया जाए। एक छोटा-सा देश पाकिस्तान-यदि हमारी स्वतन्त्रता के लिए खतरा है। उसके साथ कैसी मित्रता। देश के प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहनसिंह एवं अन्य शीर्षस्थ नेताओं का यह दायित्व है कि आतंकवाद के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए दमदार निर्णय लें।

हमें यह स्वतन्त्रता हजारों वीरों एवं वीरांगनाओं के अमर बलिदान से मिली है। वीर भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे सैकड़ों वीरों ने फांसी के फन्दे चूमे। हजारों ने जेलों में अमानवीय कष्ट सहे। वीर सावरकर, खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर आजाद, राजेन्द्र लाहिड़ी, श्यामकृष्ण वर्मा, उधमसिंह आदि ने देश की आजादी के लिए अपने प्राण राष्ट्र की बलिवेदी पर समर्पित किए। तब कहीं देश १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्र हुआ। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पण्डित जहवाहरलाल नेहरू, बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्रपाल, सुभाषचन्द्र बोस आदि महापुरुषों का हमें सदा स्मरण रखना है जिनके संघर्षपूर्ण व्यक्तित्व से हमें आज का दिन देखने को मिला है। इन सभी महापुरुषों एवं क्रान्तिकारियों को आज हम प्रणाम करते हैं।

लेकिन आज हमें आतंकवाद को कुचलने का संकल्प भी लेना है। अमेरिका, इंगलैण्ड, कनाडा आदि देशों में आतंकवाद का फैलाव हो चुका है-इसलिए सब देशों को मिलकर इस राक्षस का संहार करने के लिए योजनाबद्ध प्रयास करना अनिवार्य है।

## आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार का चुनाव सम्पन्न

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार के पुस्तकालय में दिनांक २४/७/०५ सायं ६ बजे आर्यसमाज के सदस्यों की बैठक हुई जिसमें शहर के गणमान्य आर्य सदस्य उपस्थित थे। सर्वश्री कश्मीरीलाल बत्रा ने सभा की अध्यक्षता की तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सहमंत्री श्री हरबंसलाल कपूर ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया। सर्वसम्मति से निम्न महानुभावों को आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय का पदाधिकारी बनाया गया।

संरक्षक-श्री हरबंसलाल कपूर, श्री कश्मीरीलाल बत्रा, श्री डॉ० के.एस. पंवार। प्रधान-डॉ० प्रमोद योगार्थी। उपप्रधान-श्री नरेशकुमार, मा० रामगोपाल। मंत्री-श्री प्रतापसिंह शास्त्री। कोषाध्यक्ष-श्री वेदप्रकाश आर्य।

## विशेष सूचना

जिन ग्राहकों का शुल्क समाप्त हो गया है वे १००/- रुपये मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भिजवायें जिससे आपकी सेवा में सर्वहितकारी निरन्तर भेजा सके।

-वेदव्रत शास्त्री, सम्पादक सर्वहितकारी

# श्रीकृष्ण से वीर बनो तुम

❑ पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक, ग्राम पोस्ट बहीन, जिला फरीदाबाद

श्रीकृष्ण थे वेदाचारी।<br>
मात-पिता के आज्ञाकारी॥<br>
वासुदेव थे पिता निराले।<br>
ईश्वरभक्त पुरुष मतवाले॥<br>
मात देवकी सच्ची देवी।<br>
सदाचारिणी थी जनसेवी॥<br>
श्रीकृष्ण थे प्रजापालक।<br>
वैदिक मर्यादा संचालक॥<br>
वीर, बहादुर थे बलशाली।<br>
भारत उपवन के थे माली॥<br>
दुःखी जनों को गले लगाया।<br>
दैत्यों को था मार भगाया॥<br>
दीन सुदामा मित्र बनाया।<br>
योगी ने कर्त्तव्य निभाया॥<br>
बालकपन में कंस पछाड़ा।<br>
जरासंध का राज्य उखाड़ा॥<br>
चेदी नरेश शिशुपाल कुचाली।<br>
जिसने दी केशव को गाली॥<br>
धर्म-कर्म ना समझा पापी।<br>
केशव ने मारा संतापी॥

दुर्योधन भारी अभिमानी।<br>
निशदिन करता था शैतानी॥<br>
राज्य पांडवों का कब्जाया।<br>
प्रजा को था बहुत सताया॥<br>
श्रीकृष्ण ने की चतुराई।<br>
हस्तिनापुर पहुंचे बलदाई॥<br>
दुर्योधन को धर्म सिखाया।<br>
पुण्य-पाप का भेद बताया॥<br>
लेकिन दुर्योधन ना माना।<br>
हित-अनहित को ना पहचाना॥<br>
विवश हुए फिर युद्ध कराया।<br>
पांडवों को था जितवाया॥<br>
श्रीकृष्ण थे धर्म-धुरन्धर।<br>
ज्यों तारों के बीच निशाकर॥<br>
धूर्त लोग नित शोर मचाते।<br>
श्रीकृष्ण को दोष लगाते॥<br>
आर्यकुमारो! कदम बढ़ाओ।<br>
श्रीकृष्ण बनकर दिखलाओ॥<br>
जग से आतंकवाद मिटा दो।<br>
सकल विश्व को स्वर्ग बना दो॥

# वेदों की फिर विजय पताका

❑ राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आज धरित्री पर छाई है, अज्ञानों की गहन तमिस्रा,<br>
वेदों के पावन सुज्ञान को, धरती का मानव है बिसरा,<br>
तम ही तम है आज चतुर्दिक्, नहीं कहीं दिखता आलोक,<br>
नहीं लजाता भू का मानव, धरती की दुर्दशा विलोक।

ऋषियों का संदेश सुपावन, हमने ही विस्मृत कर डाला,<br>
अपने ही हाथों से हमने नष्ट किया है शिक्षा-माला,<br>
हाहाकार मचा जो जग में, वेद भूलने के कारण,<br>
इतने नीचे गिरे सभी हम, त्याग दिए अपने सब प्रण।

भू पर समरसता की खातिर, वेदालोक परम आवश्यक,<br>
सुख-समृद्धि सफलता जिससे, आए भू पर बने सुकारक,<br>
वेदों की फिर विजय पताका, अवनी-अम्बर में लहराए,<br>
शांति-शुचिता के प्रांगण में, मानव भू का कदम बढ़ाए।

वेद पथों पर चलें सभी हम, करें धरित्री का कल्याण,<br>
शोषित-पीड़ित मानवता को दें, हम नूतन पावन त्राण,<br>
ऋषिवर दयानन्द के स्वप्नों को हम सब साकार करें,<br>
महिमण्डल पर वेद ज्ञान का पावनतम बिस्तार करें।

वेद महान् अपौरुषेय है, ईश्वरीय शुचि ज्ञान है,<br>
मानवता की वे विभूति हैं, सत्प्रेरक विज्ञान है,<br>
देश-काल व इतिहासों की, सीमाओं से है बाहर,<br>
वेद ज्ञान की गरिमा से मानव उन्नति करता सत्वर।

सभी सत्य विद्याओं का है पुस्तक दिव्य हमारा वेद,<br>
आदिकाल से पावनधारा धर्म की रहा बहाता वेद,<br>
गौरवमण्डित वेद हमारे करते कण-कण का उत्थान,<br>
सुख-समृद्धि भरा जीवन हो, कर आनन्द सुधा का पान।

ज्योतिर्मयी ऋचाओं से यह ज्योतित हो अब सब संसार,<br>
पुनः प्रकाशित जन का पथ हो, क्षत-विक्षत हो तिमिरागार,<br>
वेद ऋचाएं गूंज उठें फिर, धरती के शुचि प्रांगण में,<br>
सामवेद की मृदुल लहरियां लहराएं भू-आंगन में।

शाश्वत ज्ञान पुनः प्रस्थापित हो सारे महिमण्डल में,<br>
पन्थ तथा पाखण्ड, मतान्तर भस्मभूत हो वेद अनल में,<br>
**'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** से गुंजित हो सम्पूर्ण धरा,<br>
सुख-समृद्धि-सफलता-समता से हो पावन वसुन्धरा॥

आज सुदर्शन चक्रधारी कृष्ण की आवश्यकता है

# गीत

## श्रीकृष्ण सुदर्शनधारी

भारत में फिर से आ जा, ओ चक्र सुदर्शनधारी।
उत्पात कर रहे निशदिन कंस, दुर्योधन से अत्याचारी॥
आतंकवाद छाया है, जन जीवन नहीं सुरक्षित।
कब कहां बम फट जाये, खतरा रहता है भारी॥
भारत में.............................................।
कत्लेआम और लूटमार नित होरही दिन दहाड़े।
जनता में शोर मचा है, भयभीत हो रही सारी॥
भारत में.............................................।
अधर्म और अन्याय का छाया है घोर अन्धेरा।
यह कैसे दूर हटेगा? सरकार भी इसमें हारी॥
भारत में.............................................।
इस दिन दुःखी हालत में वो गीता का ज्ञान सुना जा।
दुष्टों को मार भगाने की सब मिलकर करें तैयारी॥
भारत में.............................................।
आज बंसी की तान को छोड़ो, आर्यों शंखनाद बजाओ।
उग्रवादियों से लड़ने को, बनो भीम अर्जुन से बलधारी॥
भारत में.............................................।

ले० देवराज आर्यमित्र, ZW-४२८ नानकपुरा, हरिनगर, नई दिल्ली-६४

## मनसा परिक्रमा के छः मन्त्रों पर चिन्तन

हे भगवान् आप हर जगह मौजूद हो। जिधर जाके देखा उधर ही आपका जलवा नजर आया। आप हमारी हर ओर (दिशा) से रक्षा कर रहे हो। हमारी रक्षा के लिये आपने अपने बाण तान रखे हैं। हम आपको नमन करते हैं, प्रणाम करते हैं और धन्यवाद करते हैं। बार-बार मनन करते हैं, सोचते हैं कि जब आप सबकी रक्षा कर रहे हो, सब अपने-अपने कर्मों का भोग भोग रहे हैं। फिर हमें किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं करना चाहिये। जब हमें किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं करेंगे तो सम्भवतः हम से भी कोई नहीं करेगा। फिर भी कोई अज्ञानतावश किसी से द्वेष करता है तो उसे आप भलीभांति जानते हो। हम सब आपके न्यायरूपी शिकंजे में जकड़े हुये हैं। आपसे बचकर कहीं नहीं जा सकते। कर्मों का फल भोगने में आपके आधीन हैं।

ले० देवराज आर्यमित्र, ZW-४२८ नानकपुरा, हरिनगर, नई दिल्ली-६४

# पन्द्रह अगस्त का संकल्प

❑ डॉ० कुमारी सुशीला आर्या

स्वतन्त्रता के पुण्य-पर्व पर यह संकल्प बनाना है।
समता-स्नेह-सहयोग-त्याग से आगे देश बढ़ाना है।
सूरज और हवा की भांति सबके लिए स्वराज हो।
रोटी कपड़े या मकान से कोई न मोहताज हो।
हमें तुम्हारी तुम्हें हमारी सबकी सबको लाज हो।
एक राह के हम राही सबने मंजिल को पाना है।
बापूजी के रामराज का अभी अधूरा सपना है।
जन-जन के हित सर्वोदय की फलित न हुई कल्पना है।
ऊंच-नीच का भेद रहे क्यों राज ताज सब अपना है।
जिएं स्वयं जीने दें सबको यही ध्येय अपनाना है।
वीरों की बलिदान कथाएं, वीरो! भूल नहीं जाना।
सिर झुकने से सिर जाए तो अच्छा है, सिर का जाना।
अमर शहीदों के बलिदानों की यादें मन में लाना है।
हिमगिरि का सिर ऊंचा रखना गंगा को न लजाना है।
सीमाओं की गतिविधियों से सावधान रहना होगा।
अब तक जो कुछ सहा सही है आगे भी सहना होगा।
जो इस ओर को आँख उठाए उसे साफ कहना होगा।
हमसे टक्कर लेना तो तूफानों से टकराना है।
काश्मीर से रामेश्वर तक जीवन का प्रण जाग उठे।
अंगड़ाई ले मचले शैशव सोया यौवन जाग उठे।
भारत के आबाल वृद्ध का आंदोलित मन जाग उठे।
शपथ आज लें मातृभूमि के दूध का मोल चुकाना है।
स्वतन्त्रता के पुण्य पर्व पर यह संकल्प बनाना है।

## ६३वां वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज बीकानेर गगांयचा अहीर का ६३वां वार्षिक उत्सव दिनांक १०/९/०५ व ११/९/०५ को धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें क्षेत्र के बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त देश के प्रसिद्ध आर्य उपदेशक व संन्यासी पधार रहे हैं।

-धर्मवीर आर्य, मन्त्री



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२



685 पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराञ्चल)







आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य विचारधारा का अग्रणी सामाहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार    सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२    अंक ३७    २१ अगस्त, २००५    वार्षिक शुल्क १०० रुपये    विदेश में २० डॉलर    एक प्रति २.००

# राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर का ऐतिहासिक निर्णय

## आर्यसमाज द्वारा विवाह करवाने पर प्रतिबन्ध लगवाने का षड्यंत्र ध्वस्त

□ वेदव्रत शास्त्री

१. दिनांक १०.४.०३ को पारिवारिक न्यायालय, क्रम संख्या-१, जयपुर के न्यायाधीश श्री गुलाबचन्द शर्मा द्वारा राजस्थान पीठ, जयपुर को एक पत्र लिखा कि-

(क) आर्यसमाज द्वारा कराई जा रही शादियां अधिकांश बहुत अल्प समय पश्चात् ही विफल होकर विवाह विच्छेद के प्रकरण पारिवारिक न्यायालय में आरहे हैं।

(ख) आर्यस्माज द्वारा हिन्दू विवाह अधिनियम, १९५५ की धारा-७ (सप्तपदी) की अनुपालना नहीं की जा रही है।

(ग) आर्यसमाज द्वारा भटके हुए लड़के-लड़कियों द्वारा सहयोग किया जा रहा है।

(घ) आर्यसमाज द्वारा विवाह जैसे पवित्र संस्कार की गरिमा को क्षतिग्रस्त किया हुआ है।

(ङ) आर्यसमाज द्वारा विवाह के लिए पक्षकारों से अच्छी राशि लीं जा रही है।

२. माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा उक्त पत्र को जनहित याचिका मानते हुए राजस्थान राज्य को सूचना जारी किये जाने पर समाचार-पत्रों के माध्यम से प्रकरण की जानकारी होते ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा वेदपाल शास्त्री, अधिवक्ता के माध्यम से ५ सितम्बर, २००३ को प्रकरण में पक्षकार बनाये जाने का आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया कि-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विश्व में स्थित समस्त आर्यसामाजिक संस्थाओं की उच्चतम संस्था है। विश्व की समस्त आर्यसामाजिक संस्थाएं इसी के नियन्त्रण एवं अधीक्षण में हैं। माननीय न्यायालय द्वारा आर्य विवाह पद्धति के सम्बन्ध में दिया गया निर्णय सम्पूर्ण विश्व की आर्यसमाजों द्वारा अपनायी जा रही आर्य विवाह पद्धति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करेगा। फलस्वरूप आर्यसमाजों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली प्रकरण में हित निहित आवश्यक पक्षकार है कृपया उसे पक्षकार प्रकरण बनाया जाकर माननीय उच्च न्यायालय में विचाराधीन आर्य विवाह पद्धति की वैधता के सम्बन्ध में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भी न्याय के उद्देश्यों की समीचीनता में प्रकरण के सम्यक् न्याय निर्णयन के लिए सुना जाना आदेशित करने की कृपा करें।

३. माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा पूर्वोक्त आवेदन दिनांक १६.९.०३ को स्वीकारते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को उक्त जनहित याचिका में पक्षकार प्रत्यर्थी बनाया जाना आदेशिक किया गया।

४. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रकरण का विस्तृत उत्तर प्रस्तुत कर-

पारिवारिक न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा पूर्वाग्रह, दुर्भावना एवं दुराशय से प्रेरित होकर माननीय न्यायालय को लिखे गये पत्र को जनहित याचिका के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। आर्य विवाह पद्धति आर्यसमाज के संस्थापक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्मित पवित्र ग्रन्थ संस्कारविधि के अनुसार है। हिन्दू विवाह अधिनियम की धारा-७ में विहित "सप्तपदी" संस्कारविधि में समाहित है। सम्पूर्ण आर्य विवाह पद्धति, हिन्दू विवाह अधिनियम, १९५५ के अनुरूप है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित "सत्यार्थप्रकाश" नामक अमरग्रन्थ के चतुर्थ समुल्लास (चौथे अध्याय) में विवाह से सम्बन्धित उद्देश्यों के अनुसार विवाह का विचार करते समय लड़के-लड़की की प्रसन्नता अवश्य होनी चाहिए, क्योंकि लड़के-लड़की की प्रसन्नता से हुए विवाह से उत्तम सन्तान उत्पन्न होती है, अन्यथा नित्य क्लेश रहता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है माता-पिता का नहीं, क्योंकि लड़के व लड़की की प्रसन्नता में उन्हें सुख और विरोध में उन्हें निरन्तर दुःख रहता है।

५. दिनांक २६.७.०५ को प्रकरण श्रवणार्थ माननीय न्यायालय में सूचीबद्ध होने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के अधिवक्ता शास्त्री द्वारा लिखित में प्रस्तुत किये गये उत्तर के आधार पर तर्क दिया कि पूर्वाग्रह से ग्रसित दुर्भावना एवं दुराशय से प्रेरित पत्र, जिसका विवरण उत्तर के पैरा संख्या-१२ में विस्तारपूर्वक अंकित है, के परिप्रेक्ष्य में उक्त प्रकरण जनहित याचिका के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। पारिवारिक न्यायालय के न्यायाधीश द्वारा लिखित पत्र सुनियोजित षड्यंत्रपूर्वक संकीर्ण जातीय कुण्ठाओं से ग्रसित होकर लिखा गया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाजिक संस्थाओं द्वारा कारित विवाहों के सम्बन्ध में १०.१०.९३ द्वारा नियमावली का भी विधान किया

---

**O.B. CIVIL WRIT PETITION NO. 3705/2003**
**GULAB CHAND SHARMA VS STATE**
**DATE OF ORDER : 26/07/2005**
**HON'BLE MR. Y.R. MEENA, ACTG.C.J.**
**HON'BLE MR. PREM SHANKAR ASOPA, J.**

By post.
Mr. Ved Pal Shastri
Mr. G.S. Bafna for the respondents.

Perused the contests of this letter petition and also the reply. Though the cognizance has been taken but in our considered opinion it is not apropriate to take congizance on such letter petition as there are allegations and counter allegations in the letter and reply field to it. No direction can be issued in such matter.

Considering, the contest of the letter petition and reply field, there is no justification to issue any direction on such letter petition.

We see no substance in this letter petition, the same stands dismissed.

हस्ताक्षर
(PREM SHANKER ASOPA) J

हस्ताक्षर
(Y. R. MEENA) ACTG. CJ.

---

हुआ है। उक्त नियमावली उपबन्ध-१ के रूप में माननीय न्यायालय की पत्रावली पर उपलब्ध हैं। अधिवक्ता शास्त्री द्वारा पूर्वोक्त नियमावली की ओर माननीय न्यायालय का ध्यान आकर्षित करते हुए वर-वधू की स्वेच्छिक सहमति, वधू की आयु १८ वर्ष व वर की आयु २१ वर्ष न्यूनतम होने की अनिवार्यता, दोनों के चित्र, आवेदन-पत्र शपथ-पत्र सहित आदि समस्त अभिलेख रखा जाना नियमानुसार विहित किया हुआ है। माननीय न्यायालय द्वारा स्वयं के समाधान केतु जयपुर स्थित दो आर्यसमाजों का उक्त वैवाहिक अभिलेख भी निरीक्षण हेतु मांगा गया था। माननीय न्यायालय के निर्देशानुसार २-३ आर्यसामाजों का अभिलेख भी विगत तारीख पेशियों पर माननीय न्यायालय के निरीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा चुका है। माननीय न्यायालय द्वारा उक्त अभिलेख के निरीक्षण के पश्चात् किसी भी प्रकार की अनियमितता या अवैधता प्रकट होना कथित नहीं किया गया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवक्ता शास्त्री का तर्क था कि आर्य विवाह पद्धति जातीय संकीर्णताओं से रहित, गुण कर्म स्वभाव की समानता पर आधारित, दहेज रहित विवाह पद्धति है। दहेजरूपी अभिशाप के परिणाम स्वरूप सामान्य एवं निर्धन परिवारों की सुशिक्षित एवं सुयोग्य कन्याएं आज भी अपनी युवावस्था का अधिकांश भाग कुंवारेपन में व्यतीत करने को विवश की जा रही हैं। **आर्य विवाह पद्धति भारतीय पुरासांस्कृतिक महत्त्वों पर आधारित पूर्ण वैदिक विधि-विधान एवं हिन्दू विवाह अधिनियम के अनुरूप है।**

याचिका के पत्रलेखक का यह दुर्भाग्य है कि वह हिन्दू विवाह अधिनियम की धारा-७ में विहित वैवाहिक अनिवार्य तत्त्व ''सप्तपदी'' से पूर्णतया अनभिज्ञ है। वह सप्तपदी का अर्थ स्वयं की अज्ञानता एवं संकीर्णता के कारण सात फेरे मान रहा है। उसने विवाह जैसे पवित्र एवं गरिमामय संस्कार को सात फेरे मानकर माननीय न्यायालय को पत्र लिखा है। सप्तपदी का अर्थ सात फेरे नहीं है तथा सात फेरे किसी भी वैदिक विधि-विधान अथवा हिन्दू विवाह अधिनियम, १९५५ में प्रावधानित नहीं हैं। वर एवं वधू द्वारा अग्नि के समक्ष चार परिक्रमाएं ली जाती हैं एवं प्राग उदीची (ईशान कोण) दिशा में वर-वधू का सप्तपद रखना ही आर्य विवाह पद्धति एवं हिन्दू विवाह अधिनियम, १९५५ की धारा-७ में विहित है। आर्य विवाह पद्धति से आर्यसामाजिक संस्थाओं द्वारा कारित विवाहों में वैवाहिक अनिवार्य एवं अपरिहेय आवश्यक तत्त्व ''सप्तपदी'' समूचे विश्व की आर्यसामाजिक संस्थाओं द्वारा कारित विवाहों में अपरिहार्य रूप से सम्पन्न करायी जा रही है। याचिका के पत्रलेखक का यह कथन कि-

आर्यसमाज द्वारा कारित अधिकांश विवाह अल्प समय पश्चात् ही विफल होकर विवाह विच्छेद के प्रकरण पारिवारिक न्यायालय में आ रहे हैं, पूर्णतया मिथ्या आधारहीन एवं काल्पनिक हैं। याचिकाकर्ता का उक्त कथन केवल उसी स्थिति में स्वीकार्य हो सकता था, जब पारिवारिक न्यायालय में आर्यसमाजों के विवाह के अतिरिक्त अन्य कोई विवाह विच्छेद के प्रकरण न आते हों अथवा विचारणाधीन न हों। क्या पारिवारिक न्यायालयों में आर्यसमाज द्वारा कारित विवाहों के अतिरिक्त अन्य प्रकरण लम्बित नहीं हैं?

याचिका के पत्रलेखक का पत्र पूर्णतया काल्पनिक एवं स्वयं की अज्ञानता एवं संकीर्णताओं से ग्रसित होने के कारण उक्त पत्र जनहित याचिका के रूप में किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

माननीय न्यायालय द्वारा अधिवक्ता श्री शास्त्री की बहस से पूर्णतया सहमत होते हुए आर्य वैवाहिक पद्धति से सम्बन्धित उक्त याचिका निस्सार होने के कारण निरस्त किया जाना निर्णीत किया गया।

नोट-आर्य विवाह पद्धति की विशेष जानकारी के लिए पढ़िये-

१. **वैदिक विवाह पद्धति**, मूल्य ६ रुपये (लेखक-श्री जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती पूर्व एम.पी.)

२. **संस्कारविधि**, मूल्य २० रु० (लेखक-महर्षि दयानन्द सरस्वती)

३. **सत्यार्थप्रकाश**, मूल्य २५ रु० (लेखक-महर्षि दयानन्द सरस्वती)

प्राप्ति स्थान-**आचार्य प्रकाशन**, दयानन्दमठ, रोहतक-१२४००१
दूरभाष : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४



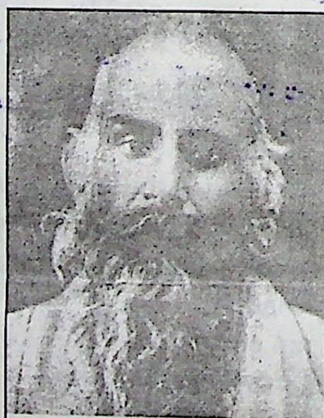
श्रावणी पर्व पर विशेष-

## स्वाध्याय-महिमा

□ डॉ० सुशीला आर्या, चरखी दादरी (भिवानी)

स्वाध्याय की अनुपम महिमा निगमागम ने गाई है।
इसकी उपयोगिता अत्यधिक ऋषियों ने बतलाई है॥
अष्टाङ्गयोग के नियम-पञ्च में स्वाध्याय भी गिना गया।
मोक्ष मार्ग तक जाने की सीढ़ी सदृश है चुना गया॥
साधन-चतुष्टय विद्याप्राप्ति के उनमें भी यह एक है।
स्वाध्याय से पाता मानव सत्यासत्य-विवेक है॥
'स्वाध्यायान्मा प्रमद' यह गुरु शिष्यों को बतलाता है।
ऋत शम दम तप सत्य नियम का स्वाध्याय से नाता है॥
स्वाध्याय का भानु अविद्या उमा निशा हर लेता है।
भ्रान्ति उलूक भगा कण-कण में दिव्य विभा भर देता है॥
स्वाध्याय से सुलते जग के भेद, मरण और जीवन के।
भ्रम के पर्दे चीर अविद्या जनित क्लेश काटे मन के॥
हो विमल आत्मा स्वाध्याय से वशीभूत मन हो जाता।
प्रज्ञाबुद्धि, ऋजुपंथ, दीर्घायु स्वस्थ तन हो जाता॥
सत्य सबल इतना होता नहीं पांव झूठ के जम पाते।
तर्क ज्ञान के समक्ष जग में दुराग्रही भी नम जाते॥
किंकर्त्तव्यविमूढ न हो स्वाध्याय सदा करने वाले।
ऋषिकृत ग्रन्थ अमूल्य ज्ञान निधि सब संशय हरने वाले॥
पड़ी पड़ी पूँजी न बढ़ती विद्या क्या बढ़ पाएगी?
स्वाध्याय विनिवेश करे तो कई गुणा हो जाएगी॥
वेदों का पढ़ना आर्यों का परम धर्म यदि बता गए।
तृतीय नियम में स्वाध्याय की कुंजी हमें संभला गए॥
सचमुच पार अगर होना है हमें पाप के दलदल से।
स्वाध्याय अभी आरम्भ करें न कहें कि कर देंगे कल से॥
सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय हमें निज का स्वाध्याय सिखाएगा।
हो जीवन सफल तभी जग में जो समझ स्वयं को पाएगा॥
आबाल वृद्ध नर नारी को स्वाध्याय सुदृढ़ व्रत धारें हम।
हो सफल श्रावणी पर्व तथा ऋण ऋषि का सकल उतारें हम॥

## जुआं में भक्त फूलसिंह को याद किया



महात्मा भक्त फूलसिंह जी

आर्यसमाज गांव जुआं जिला सोनीपत के तत्त्वावधान में महात्मा भक्त फूलसिंह जी का बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यह कार्यक्रम उपप्रधानाचार्य अनिलकुमार कौशिक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। शुभम तथा वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गांव जुआं के लड़कों तथा लड़कियों ने योग आसन प्रतियोगिता में बड़ी रुचि से भाग लिया। आचार्य वेदपाल जी ने आसनों की टीम बहुत अच्छी तैयार कर रखी है। हाजिर लोगों ने फलों तथा नोटों से प्रतियोगियों को पुरस्कृत कर साहस बढ़ाया। आर्यसमाज जुआं के संरक्षक मा० खजानसिंह आर्य ने महात्मा भक्त फूलसिंह के जीवन की अनेक घटनाओं पर प्रकाश डाला। खजानसिंह आर्य ने कविता के माध्यम से बताया कि ''जगत् में फूल सभी अच्छे मगर एक फूल वह फूल सुगंधि दे रहा, जिसे अज़ब देखा, जिसे जमाना टोहता।'' महात्मा फूलसिंह इसी ग्राम में पढ़े थे।

## आर्यसमाज बड़ा बाजार कलकत्ता का चुनाव

प्रधान-श्री खुशहालचन्द्र आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान-श्री चान्दरतन दाभाणी, उपप्रधान-श्री अमीलाल आर्य, श्री अरुणकुमार गुप्ता, मंत्री-श्री दीनदयाल गुप्ता, संयुक्त मंत्री-श्री नरेशकुमार गुप्ता, उपमंत्री-श्री विक्रमादित्य आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री आनन्ददेव आर्य, प्रचारमंत्री-श्री रमेशकुमार अग्रवाल, पुस्तकाध्यक्ष-श्री ध्रुवप्रसाद जायसवाल, अधिष्ठाता आर्यवीरदल-(१) श्री राजेश जायसवाल, (२) श्री सुनीलसिंह।

आर्यसमाज बड़ा बाजार अपना ९९वां वार्षिक उत्सव तथा श्रावणी उपाक्रम भी २८ अगस्त रविवार से ४ सितंबर रविवार तक अपने ही समाज स्थल पर मना रहा है जिसमें बाहर के वैदिक विद्वान् आदरणीय श्री राजदत्त जी उपाचार्य गुरुकुल एटा और पूज्य स्वा० रुद्रवेश जी हरिद्वार से आ रहे हैं।

-खुशहाल चन्द्र आर्य, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७

# शास्त्रार्थ महारथी पं० फूलचंद शर्मा "निडर"

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७

बहुत लोग स्व० पं० फूलचंद शर्मा "निडर" के पहले पंडित और बाद में शर्मा लिखा समझते होंगे कि वे ब्राह्मण वर्ण में पैदा हुए होंगे परन्तु आप लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि वे बंसल गोत्र के एक धनाढ्य व प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में ग्राम दिनोद (भिवानी) में उत्पन्न हुए थे। उनका कार्य क्षेत्र भिवानी ही रहा। उनके पिता सेठ फकीरचंद के पास काफी जमीन थी और वे अपने पिता के इकलौते पुत्र थे और बड़े जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। जब उन्होंने अपनी उम्र सम्भाली तब संयोगवश वे आर्यसमाज की तरफ आकृष्ट हो गये। यदि कोई विषयी कपूत बेटा होता तो जमीन बेचकर शराब पीकर या विषय भोगों में फंसकर पैसे बर्बाद कर देता किन्तु "निडर" जी ने जमीन बेचकर वैदिक साहित्य की पुस्तकें खरीदकर अपने स्वाध्याय द्वारा ज्ञानोपार्जन किया और वे महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के कट्टर समर्थक और वैदिक धर्म पर पूर्ण आस्था व विश्वास रखने वाले एक दृढ़ आर्यसमाजी बन गये। उनकी स्कूली शिक्षा चाहे कम ही हुई होगी किन्तु उनका स्वाध्याय इतना तगड़ा था कि उन्होंने चारों वेद, उपनिषद, मनुस्मृति आदि तो पढ़े ही थे, साथ ही महर्षि दयानन्द द्वारा रचित पूरे ग्रंथों तथा रामायण, महाभारत, गीता व पुराणों को भी पढ़ा था। वे तर्क शास्त्री इतने प्रबल थे कि तर्क में उनके सामने को टिकता नहीं था। अकाल मृत्यु के सम्बन्ध में आर्य विद्वानों के दोनों मत हैं कुछ विद्वान् अकाल मृत्यु को मानते हैं और कुछ नहीं मानते। पंडित जी अकाल मृत्यु को नहीं मानते थे और इसके समर्थन में वे बड़े मजबूत तर्क देते थे जिससे तर्क करने वालों को मानना ही पड़ता था। वे वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार वर्ण (जाति) को जन्म से न मानकर गुण कर्म स्वभाव से मानते थे। इसीलिये उन्होंने अपने पांडित्य के अनुसार पंडित और शर्मा (जो ब्राह्मण का लक्षण है) लगाना आरम्भ कर दिया। वे केवल लगाते ही नहीं थे बल्कि पंडितों का पूरा काम यानि गर्भ से मृत्यु पर्यन्त वेदों में सोलह संस्कार करने का आदेश है वे सभी संस्कार पूर्ण विधि अनुसार करवाते थे और यज्ञों में ब्रह्मा भी बनते थे और अपना पूरा जीवन वेदप्रचार या जनसेवा में लगा रखा था। उनके जीवन को यदि किसी ने नजदीक से देखा होगा तो वह जानता है कि पंडित जी कितने दृढ़ आर्यसमाजी थे। उनका कोई भी काम ऐसा नहीं होता था जो आर्य (श्रेष्ठ) पुरुष के अनुरूप न हो। वे कहा करते थे कि आर्यसमाजी के प्रत्येक कार्यकलाप से यह झलकना चाहिए कि यह आर्यसमाजी है। उसका उठना-बैठना, खाना-पीना, सोना-जागना सभी कार्य आर्य जैसे होने चाहिएं जिसको देखने मात्र से ही यह पहचाना जा सके कि यह आर्यसमाजी है।

वे विद्वान् होने के साथ-साथ एक अच्छे कवि और लेखक भी थे, वे समय-समय पर स्वरचित कविता सुनाते थे और उन्होंने संस्कारों सम्बन्धी कई पुस्तकें लिखी हैं जिनसे पंडित लोग काफी लाभ उठाते हैं। उन्होंने अग्रवालों में व्याप्त अनेक बुराइयों के विरोध में काफी संघर्ष किया जैसे पर्दा, मृतकश्राद्ध, दहेज, पाणि-ग्रहण संस्कार सूर्यास्त से पहले होने चाहिएं, आदि और सबसे ज्यादा किसी कुप्रथा का विरोध किया तो वह था विधवाओं का पुनर्विवाह न होना। उन्होंने अपने जीवन में अनेक बाल-विधवाओं का पुनर्विवाह करवाकर उनका जीवन सुखी बनाया और उदाहरण के रूप में एक बाल विवाह अपने ही सुपुत्र मेधाकर (अविवाहित) के साथ करके एक दुःखी लड़की का जीवन सुखी बनाया।

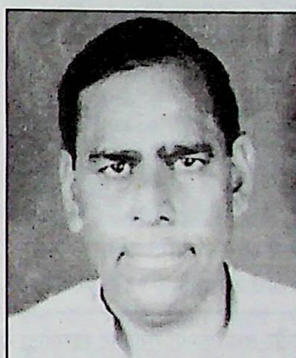
आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि करीब ५०-५५ वर्षों पहले बाल-विधवा का बिना विवाहित युवा लड़के से विवाह करने की एक लहर चली थी जिसके संचालक या प्रेरणादायक स्व० लालमन आर्य थे। उन्होंने सबसे पहले अपने सबसे बड़े पुत्र गजानन्द आर्य का विवाह एक बड़वा निवासी बाल विधवा से किया। उस विवाह में जिला हिसार के ५-६ शीर्ष सुधारक आर्यसमाजी जिनमें प्रमुख स्व० पं० फूलचंद शर्मा "नीडर" भिवानी, स्व० गोविन्दराम आर्य देवराला, स्व० पं० फूलचंद भारिवासिया व चन्दूलाल जी गुरीरा वाले थे और उन सभी ने निश्चय किया कि हम अपने अविवाहित एक पुत्र या छोटे भाई का विवाह बाल विधवा लड़की से करेंगे जिससे यह बाल विधवा विवाह होना आरम्भ हो जाये। इसी निश्चय के अनुसार "निडर" जी ने अपने सुपुत्र मेधाकर आर्य का, गोविन्दराम आर्य ने अपने सुपुत्र जयदेव आर्य का, फूलचंद भारिवासिया ने अपने सुपुत्र संतोष आर्य का और चन्दुलाल आर्य ने अपने छोटे भाई स्व० कन्हैयालाल के विवाह कुछ वर्षों के अन्दर ही किये जिससे यह अमानुषिक कुप्रथा अग्रवाल समाज से सदा-सदा के लिये समाप्त हो गई। अब तो विधवा का विवाह होना कोई समस्या नहीं रही। मुझे प्रसन्नता ही नहीं बल्कि गर्व है कि मैं स्व० गोविन्दराम आर्य देवरालिया जिसने अपने जीवन में ९०-९२ विधवाओं का विवाह सुयोग्य लड़कों से करवाकर उनको नारकीय जीवन से निकाल कर सुखी बनाया और अपने परिवार में एक नहीं दो नहीं बल्कि तीन विधवाओं को बहुएं बनाकर लाया और उनका जीवन सुखी बनाकर समाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया, मैं उसका पुत्र हूँ।

नीडर जी का पूरा जीवन बड़ा संघर्षमय रहा। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदप्रचार व आर्यसमाज की सेवा में ही समर्पित किया। उन्होंने कई शिक्षण संस्थाओं का संचालन बड़ी योग्यता के साथ किया जिनमें इनको अनेक विघ्न बाधाएं भी आईं किन्तु उन्होंने लेशमात्र भी न घबराकर बड़े साहस के साथ उन विपत्तियों पर विजय प्राप्त की। वैसे तो हरयाणा में आर्यसमाज को सुदृढ़ करने में दादा बस्तीराम, स्वामी भीष्म, भगत फूलसिंह, स्वामी ओमानन्द सरस्वती व प्रो० शेरसिंह आदि के नाम ही शीर्ष नेताओं व प्रचारकों में आते हैं, परन्तु जिला हिसार व भिवानी में "निडर" जी का स्थान अग्रणी है।

यह अग्रवाल सपूत देव दयानन्द के परम भक्त लगभग ९४ वर्षों की आयु में अपने सुपुत्र स्व० देवप्रिय आर्य के निवास स्थान पानीपत में अपने नश्वर शरीर को त्याग कर परलोकगामी बने।

**नोट :-** प्रो० शेरसिंह जी का दयानन्दमठ की यज्ञशाला में भाषण हो रहा था। पं० फूलचंद जी को भ्रम था कि प्रो० साहब यज्ञोपवीत धारण नहीं करते। निडर जी ने उन्हें के बीच में ही टोक दिया। प्रो० शेरसिंह जी ने अपने कमीज के बटन खोलकर सबके सम्मुख अपना यज्ञोपवीत दिखलाया था। **-वेदव्रत शास्त्री**

## श्री वेदपाल शास्त्री का संक्षिप्त परिचय



श्री वेदपाल शास्त्री, अधिवक्ता

श्री वेदपाल शास्त्री का जन्म श्री बृजलाल आर्य गांव अजीतपुरा (घासीकाबास) पो० नूनियां गोठड़ा जि० झुझनूं (राजस्थान) में हुआ। सन् १९६१ से १९६६ तक गुरुकुल झज्जर में शिक्षा व्याकरण आदि का अध्ययन कर स्नातक बने। पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से शास्त्री और हरयाणा शिक्षा विभाग से ओ०टी० तथा राजस्थान से मैट्रिक एवं भोपाल से इण्टर परीक्षा पास करके हरयाणा सरकार के शिक्षा विभाग में संस्कृत अध्यापक पद पर अनेक वर्ष तक अध्यापन कार्य किया। सरकार के न चाहने पर भी स्वेच्छा से संस्कृत अध्यापक की स्थायी सरकारी सर्विस से त्यागपत्र देकर जयपुर जाकर वकालत की डिग्री प्राप्त की। चिड़ावा झुझनूं और राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर में वकालत करते हुए आप सर्वप्रथम राजस्थान उच्च न्यायालय परिसर से महर्षि मनु की प्रतिमा हटाने के वाद में विशेष चर्चा में आये।

इसके पश्चात् धौती पहनकर (बांधकर) वकालत करने के वाद में आपने विजय प्राप्त की और न्यायालय ने धौती पहनकर वकालत करने की स्वीकृति देनी पड़ी।

अब आर्य विवाह पद्धति पर प्रतिबंध लगवाने के षड्यंत्र को ध्वस्त करके आपने आर्यजगत् में विशेष ख्याति प्राप्त की है। वर्तमान में राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर के प्रसिद्ध अधिवक्ताओं में आपकी गणना की जाती है।

गुरुकुल झज्जर के स्नातक और अपने भ्रातृपुत्र (भतीजे) की इस सफलता पर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई है। परमात्मा वेदपाल शास्त्री को शक्ति दे और वह उत्तरोत्तर इसी प्रकार ऊंचाइयों को छूता रहे।

जयपुर से प्रकाशित "**आर्य नीति**" साप्ताहिक के सम्पादक पं० सत्यव्रत सामवेदी ने ८ अगस्त के अंक में लिखा है-"**आर्यसमाज के क्रान्तिकारी पुत्र एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रसिद्ध अधिवक्ता श्री वेदपाल शास्त्री ने जातिवादी दकियानूसी ताकतों की धज्जियां उड़ाते हुए आर्यसमाज द्वारा अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न कराने की जोरदार वकालत की और राजस्थान उच्च न्यायालय ने श्री वेदपाल शास्त्री के विचारों से सहमति व्यक्त करते हुए निम्नलिखित निर्णय दिया। आर्यजगत् इस पावन कार्य के लिए श्री वेदपाल शास्त्री के प्रति आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करता है।**"

**वेदपाल शास्त्री** अधिवक्ता

राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर के निवास का पता-
४५/६४, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर-३०२००६
दूरभाष : ०१४१-२७८२२३९, २७८२१०४, मोबाइल : ९४१४०४८४३०

**नोट**-आगामी २८ अगस्त के अंक में पढ़िये-"**धोती जीत गई**"

डी.वी.एम. पब्लिक स्कूल बहरोड़ राजस्थान में—

# ५९वां स्वतन्त्रता दिवस सम्पन्न



१५.८.२००५ को डी.वी.एम. पब्लिक स्कूल में स्वामी दयामुनि वैदिक यज्ञशाला बहरोड़ के आधारशिला कार्यक्रम को आरम्भ करते हुये आचार्य यशपाल।



१५.८.२००५ को बहरोड़ विद्यालय में स्वतन्त्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए आचार्य यशपाल।

१५ अगस्त २००५ को डी.वी.एम. पब्लिक स्कूल बहरोड़ राजस्थान में ५९वां स्वतन्त्रता दिवस समारोह अनेक आकर्षक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ, इस समारोह में वैदिक परम्परा के अनुसार सभी कार्यक्रम छात्रों द्वारा प्रस्तुत किये गए, सलामी परेड, देशभक्ति के व्याख्यान, भजन, राजस्थानी व बंगाली गीत, विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया, इस समारोह के अध्यक्ष वैदिक विद्वान् विश्व प्रसिद्ध योगी स्वामी रामदेवजी के गुरु आचार्य प्रद्युम्न जी थे तथा समारोह के मुख्य अतिथि आचार्य यशपालजी पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प्रमुखवक्ता आचार्य गोविन्द जी अजमेर, संयोजक हरयाणा डी.ए.वी. संस्थाओं के क्षेत्रिय निदेशक डॉ० कुलवन्तजी वाचस्पति, चेयरमैन राव बहादुरसिंह आर्य प्रिंसिपल के.पी. बरवे समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम मुख्य अतिथि आचार्य यशपाल जी के समारोह स्थल पर पहुंचने पर तिलक लगाकर तथा बैंड बाजे के साथ स्वागत किया, इसके बाद समारोह के अध्यक्ष आचार्य यशपालजी के साथ अमन छिक्कारा सचिव गुरुकुल कलानौर तथा कन्या गुरुकुल खरखौदा के परम सहयोगी श्री रमेश मलिक भी थे। प्रद्युम्न जी की अध्यक्षता में वैदिक यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध सन्त कई शिक्षण संस्थाओं और गुरुकुलों के संस्थापक, पूज्यपाद स्वामी दयामुनि जी की पुण्य स्मृति में निर्माणाधीन ''स्वामी दयामुनि वैदिक यज्ञशाला'' का शिलान्यास भी किया।

वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ आचार्य यशपालजी आचार्य प्रद्युम्न जी व आचार्य गोविन्द जी ने एक-एक शिला नींव में रखी। उसके बाद ध्वजारोहण की प्रक्रिया आचार्य यशपाल जी व आचार्य प्रद्युम्न जी ने मिलकर की तथा राष्ट्रीय ध्वज को छात्रों द्वारा सलामी प्रदान की। कार्यक्रम के मध्य में आचार्य यशपाल जी, आचार्य गोविन्द जी, डॉ० कुलवंतजी वाचस्पति ने देशभक्ति पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा देश को आजादी दिलाने वाले क्रान्तिकारियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के अन्त में आचार्य यशपालजी ने प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किये। बहुत थोड़े समय में एक विशाल संस्था का रूप देने में डॉ० कुलवंत जी वाचस्पति का महान् योगदान है।

-केदारसिंह आर्य, रोहतक

## करो सुमिरन प्रभु का....

टेक-करो सुमिरन प्रभु का तुम, तुम्हारे काम आएगा।
न साथी है कोई जग में, तू खाली हाथ जाएगा॥

१. प्रभु के हाथ में डोरी, प्रभु सब को चलाता है।
कोई रो-रोके जीता है, कोई हंस-हंसके जीता है।
यहां पर सब अकेले हैं, किसे साथी बनाएगा।
करो सुमिरन प्रभु का तुम....।

२. ये जीवन तो प्रभु का है, प्रभु का ही भजन करले।
बड़ी मुश्किल से पाया है, इसका तू जतन करले।
जिस उलझन में तू उलझा है, वो उलझन ही रुलाएगा।
करो सुमिरन प्रभु का तुम....।

३. ये रिश्ते-नाते झूठे हैं, सभी मतलब से आते हैं।
जरूरत जब पड़े इनको, तो आके सर झुकाते हैं।
मतलब जब निकल जाए, तो कोई भी न आएगा।
करो सुमिरन प्रभु का तुम....।

४. प्रभु का नाम ऐसा है, जो जीवन को बना देगा।
अगर प्रभु का सुमिरन है, भव से पार लगा देगा।
'सरस' जीवन बनालो तुम, ये मौका फिर न आएगा।
करो सुमिरन प्रभु का तुम....।

-**सुरेन्द्रकुमार 'सरस'**, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना मार्ग, रोहतक

## स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया

१५ अगस्त २००५ को आर्यसमाज मन्दिर में स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर विशाल यज्ञ का आयोजन करवाया जिसमें स्वतंत्रता संग्राम में हुए शहीदों को याद किया गया और बाद में आर्यसमाज इकाई बहुअकबरपुर के प्रधान श्री राममेहरसिंह जी ने तिरंगा झंडा फहराया। मंदिर में इस अवसर पर अनेक बच्चों ने देशभक्ति गीत सुनाए जिनमें रितु के देशभक्ति गीत 'वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्' गीत ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। राष्ट्रीय गान के बाद शान्तिपाठ के साथ सभा का कार्य पूरा किया गया। इस अवसर पर धर्मवीर पहलवान, खुशीराम, महेन्द्र, जगदेव पटवारी, राजपाल, राजेश, महावीर व एकता युवा क्लब के प्रधान राकेशसिंह बल्हारा व पदाधिकारी नरेशकुमार शास्त्री, पवन बल्हारा इश्वंत, जयभगवान् तथा अन्य सदस्य उपस्थित थे। गांव के छोटे-छोटे बच्चों ने उसमें भाग लिया। इस अवसर पर श्री महेन्द्रसिंह बल्हारा ने देशी घी का प्रसाद बांटा।

-राजवीर आर्य, मंत्री आर्यसमाज मन्दिर, भऊअकबरपुर, रोहतक

## सर्वहितकारी की सेवा में आवश्यक निवेदन

१. सर्वहितकारी साप्ताहिक प्रत्येक मास की ७, १४, २१ और २८ तारीखों में पोस्ट किया जाता है। यदि किसी पाठक को ४ दिन तक न मिले तो सूचित करें, पुनः प्रेषित किया जायेगा।
२. जिन ग्राहकों की वार्षिक सहयोग राशि पूरी हो गई है वे १०० रु० मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भिजवायें अन्यथा हम उनकी सेवा में सर्वहितकारी नहीं भेज सकेंगे।
३. जिन पाठकों के पास भूलवश एक से अधिक सर्वहितकारी डाक द्वारा जाता है वे पोस्टकार्ड द्वारा सूचित करने की कृपा करें।
४. सर्वहितकारी के सम्बन्ध में आपके सुझाव, समाचार, लेख आदि सादर आमन्त्रित हैं।

-**वेदव्रत शास्त्री**, सम्पादक सर्वहितकारी, दयानन्दमठ, रोहतक १२४००१

# ऋषि दयानन्द के जीवन का जोधपुर प्रसंग : सत्य क्या है?

❑ डॉ० भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर (राजस्थान)

ऋषि दयानन्द के लोकपावन चरित्र को दूषित, विकृत तथा गलत ढंग से प्रस्तुत करने के अतीत में अनेक प्रयास हुए हैं। पहले यह कार्य आर्यसमाज के विरोधी सनातनी, ईसाई, जैनी और मुसलमान लोग करते थे अब गुरुद्रोह का कार्य करने का बीड़ा स्वयं आर्यसमाजियों ने उठाया है। आर्यसमाज के एक प्रमुख संगठन के एक सांप्रदिक मुख पत्र में 'अंतिम अध्याय' शीर्षक धारावाही के रूप से नवम्बर, दिसम्बर २००० तथा जनवरी २००१ में छपे लेखों से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है। विगत में ऋषि दयानन्द की पवित्र जीवन कथा को दूषित कर प्रकाशित करने वाले थे जैनी जियालाल (दयानन्द चरित्र दर्पण), देवसमाज का संस्थापक सत्यानन्द अग्निहोत्री (Dayanand demolished), जैन साधु कर्मानन्द तथा तबलीगी (खान दुर्रानी) की पुस्तक का नाम स्वामी दयानन्द : ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ हिज लाइफ एण्ड टीचिंग। इनके अतिरिक्त पौराणिक पंडित माधवाचार्य तथा कालूराम आदि ने भी स्वामीजी की जीवनगाथा को अश्लीलतापूर्वक प्रस्तुत करने के अनेक प्रयास किये थे। हैरानी की बात है कि बिना तथ्यों को जाने अब यही काम आर्यो ने स्वयं करना आरम्भ किया है और इसके लिए माध्यम भी आर्यपत्रों को ही बनाया है।

ऋषि दयानन्द को विष नहीं दिया गया इस प्रकार का भ्रामक प्रचार करने के लिए एक लॉबी बनाई गई या स्वतः बन गई। सर्वप्रथम इसमें भारत सरकार का सूचना और और प्रसारण विभाग शामिल हुआ जिसने नैशनल बुक ट्रस्ट से ऋषि का जीवनचरित्र भोपाल के हमीदिया कॉलेज के इतिहास के प्रोफेसर वीरेन्द्र कुमार सिंह से लिखवाया, जिसमें यह सिद्ध करने का कुप्रयास किया गया था कि ऋषि की मृत्यु विष से नहीं बल्कि आम अधिक मात्रा में खाने से हुई। इसके बाद हरयाणा सरकार की आर्थिक सहायता से डी.ए.वी. से सम्बद्ध, इतिहास के प्राध्यापक प्रिंसीपल श्रीराम शर्मा ने अंग्रेजी में स्वामीजी का जीवनचरित लिखा जिसमें इसी बात पर बल दिया गया था कि स्वामीजी की सहज मृत्यु हुई और वे किसी षड्यंत्र के शिकार नहीं हुए। अच्छा यह रहा कि शीघ्र ही इस पुस्तक का प्रबल विरोध हुआ और यह अंग्रेजी जीवनी छाप नहीं सकी। इसकी टंकित प्रति मेरे संग्रह में है। अब स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) तथा उपर्युक्त लेखमाला का लेखक भी इसी स्वर में बोल रहे हैं कि स्वामी दयानन्द की मृत्यु विष देने से नहीं हुई। इसमें डॉ० अलीमर्दान खां, नन्नी भगतन तथा मियां फैजुल्ला खां आदि का कोई दोष नहीं है। ये सब भले आदमी थे, साधुपुरुष थे। इन्हें जीवन लेखकों ने व्यर्थ में बदनाम किया है।

यहां एक बात निवेदन कर देना आवश्यक है। ऋषि के जीवन चरित को समग्र रूप से जानने और समझने के लिए केवल एक जीवनचरित का अध्ययन ही पर्याप्त नहीं है। पं० लेखराम तथा देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय रचित जीवन चरितों का अध्ययन तो आवश्यक है ही, समन्वित अध्ययन के लिए इन पंक्तियों के लेखक का लिखा 'नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती' (१९८३ में प्रकाशित) शीर्षक वृहद् जीवनचरित पढना भी अत्यंत आवश्यक है। इसका एक कारण तो यह है कि राजस्थान का ओर विशेषतः जोधपुर का निवासी होने के कारण मैंने अपने इस ग्रंथ में स्वामी दयानन्द विषयक इस प्रांत के प्रसंगों की सूक्ष्म और तलस्पर्शी समीक्षा की है। स्थानीय समस्याओं, घटनाओं तथा स्थानीय परिपार्श्व को समझने के कारण जोधपुर से सम्बद्ध प्रसंग जैसी सावधानी से मेरी पुस्तक में आये हैं, वे अन्य जीवनचरितों में नहीं आसके। इस पूर्वकथन के पश्चात् हम 'अंतिम अध्याय' शीर्षक लेखमाला की आलोचना आरम्भ करते हैं।

पं० लेखराम ने ऋषि का जीवनचरित उर्दू में लिखा था। उर्दू लिपि दोषपूर्ण है इसलिए उसमें अनेक व्यक्ति नामों और स्थान नामों को सही तौर पर नहीं लिखा गया। आलोचक लेख के लेखक से भी यही असावधानी हुई। फलतः रोहट को रोपर, शाहपुरा को शाहपुर नारलाई को नामलाई और उमरदान को अमरदान लिखा गया। यह लिपि दोष के कारण हुआ। किन्तु इससे भी भयंकर दोष तो तथ्यों को जानबूझ कर विकृत रूप में पेश करने का है। उदाहरणार्थ, महाराजा जसवन्तसिंह की प्रेयसी न तो नन्नी जान थी और न वेश्या। वह हिन्दू वैष्णव मत को मानने वाली जागरी (भगतन) कौम की थी जिसे महाराजा ने अपनी पासवान (उपपत्नी) बनाकर महलों में रखा था। स्वामीजी ने जोधपुर के महाराजा तथा अन्य जागीरदारों की विलास वृत्ति तथा परकीयाओं से सम्पर्क बनाने को लक्षित कर उनकी आलोचना अवश्य की थी। अपने भाषणों में उन्होंने क्षत्रियों के परनारी संसर्ग को सिंह द्वारा कुतिया का अनुगमन करने से उपमित अवश्य किया था। इसलिए इस कथन की सत्यता को नकारना तथा ऐसा कहने को स्वामीजी की व्यवहारशून्यता बताना लेखक (प्रवीण कुमार) का उन्मत्त प्रलाप है। ऋषि दयानन्द सत्य को कहने में भी कभी लाग लपेट से काम नहीं लेते थे। जोधपुर के लिए अजमेर से प्रस्थान करते समय ही उन्होंने वहां के आर्य पुरुषों को कह दिया था कि मैं सत्य को कहने में कभी संकोच नहीं करूंगा चाहे मेरी अंगुलियों को बत्ती बनाकर जला ही क्यों न दें।

आर्यजगत् में प्रकाशित अंतिम अध्याय शीर्षक इस लेखमाला का प्रधान स्वर यह बताना है कि स्वामीजी को विष कदापि नहीं दिया गया। इसलिए वह देशहितैषी (अजमेर से प्रकाशित मासिक) के संवाददाता की उस रिपोर्ट को भी गलत मानता है जिसमें उसने लिखा था स्वामीजी ने राजपूतों और विशेषतः राजपुरुषों के व्यभिचार दोष का तीव्रता से खण्डन किया था। वह स्वामीजी के भाषणों की निर्भीकता को भी चुनौती देता है मानो स्वामीजी सदा डरते-डरते ही अपनी बात कहते थे। ऋषि दयानन्द की सत्यनिष्ठा में शक करना अनुचित है। दयानन्द ने जो कुछ कहा और किया सर्वथा निडर होकर।

स्वामी दयानन्द द्वारा नन्नी की आलोचना करने और इससे नन्नी भगतन के रुष्ट हो जाने को लेखक मात्र कल्पना कहता है। इतना ही नहीं वढ भैया (वह मारवाड़ में इसी नाम से पुकारा जाता था) फैजुल्ला खां की तरफदारी करता हुआ उसे असाम्प्रदायिक तथा निर्दोष बताता है फैजुल्ला खां क्या और कैसा था, इसे जोधपुर मारवाड़ के लोग जानते हैं। बेचारे प्रवीण कुमार को उसकी असलियत का क्या पता? फैजुल्ला खां के बारे में हकीकत जाननी हो तो महाराणा प्रतापसिंह की आत्मकथा पढ़नी पड़ेगी, जिसके प्रासंगिक अंश मैंने अपनी पुस्तक 'ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी' में दिये हैं।

वह परले दर्जे का मतान्ध, तास्सुबी, चापलूस तथा मारवाड़ में अशान्ति के बीज बोने वाला था। पं० लेखराम ने मियां फैजुल्ला खां और स्वामी दयानन्द के जिस वार्तालाप का उल्लेख किया है, वास्तव में वह चर्चा मियांजी के भतीजे मोहम्मद हुसैन खां के साथ हुई थी। यदि प्रवीण कुमार ने देवेन्द्रनाथ लिखित तथा पं० घासीराम द्वारा सम्पादित ऋषि का बड़ा जीवनचरित पढ़ा होता तो वह भ्रमित नहीं होता और न फैजुल्ला खां का पक्ष लेता। आर्यजगत् के अज्ञानी लेखक का विचित्र तर्क है कि यदि फैजुल्ला खां धर्मान्ध व्यक्ति होता तो महाराजा जसवन्तसिंह उसे इस पद पर रखते ही क्यों? महाराजा ने उसे मुसाहिब आला का पद दिया था, उसकी चापलूसी के कारण लेखक को सर प्रतापसिंह के मियां के बारे में ये शब्द पढ़ने चाहिएं-"फैजुल्ला खां जसवन्तसिंह जी का मर्जिदान (कृपा पात्र) था। मेरे पिताजी (महाराज तख्तसिंह) यह पसन्द नहीं करते थे कि भाई साहब (महाराज जसवन्तसिंह) मुसलमान मुसाहिबों की संगत में शराब आदि पीने लगें।" मियां ने प्रशासन के कामों में प्रतापसिंह का सदा विरोध किया। उसका दबदबा तो महाराज जसवन्तसिंह की मृत्यु के बाद ही खत्म हुआ। उसकी धूर्तता, चालबाजी तथा कट्टरता की अवगणना कर आर्यजगत का लेखक उसे सच्चरित्रता का प्रमाण पत्र दे रहा है। विस्तार के लिए मेरी उपर्युक्त पुस्तक का प्रतापसिंह विषयक अध्याय पढ़ना चाहिए। मैं प्रवीण कुमार को बता दूं कि मियां साहब को उनकी धूर्ततापूर्ण कार्यवाहियों का दण्ड तो महाराजा जसवन्त सिंह की मृत्यु के बाद प्रतापसिंह ने उसकी चल-अचल सम्पत्ति को ज़ब्त करके ही दे दिया। जिस कोठी में स्वामीजी साढ़े चार मास तक जोधपुर में ठहरे थे वह उस मियां फैजुल्ला खां की थी। यदि वह उस समय सरकार द्वारा ज़ब्त नहीं की गई होती तो उसका अधिकार मियां के वारिसों के पास होता, किन्तु इसी कोठी को राजकीय सम्पत्ति होने के कारण १९७२ में राजस्थान के स्मारक के रूप में मुख्यमंत्री मियां बरकतुल्ला खां ने आर्यसमाज को दयानन्द के स्मारक के रूप में भेंट कर दिया था। स्मरण रहे कि मियां बरकतुल्ला खां फैजुल्ला खां का ही वंशज था और कोठी को आर्यसमाज को भेंट किये जाने के समय इन पंक्तियों का लेखक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मंत्री था।

पता नहीं ऋषि को औषधि में विष देने वाले दगाबाज डॉक्टर अलीमर्दान खां की हिमायत यह लेखक क्यों कर रहा है? सच तो यह है कि नादान दोस्त से दाता दुश्मन अच्छा होता है। ऋषिभक्त जीवनी लेखकों (जिनमें पं० लेखराम, देवेन्द्रनाथ, स्वामी सत्यानन्द आदि सभी आ जाते हैं) की निंदा तथा ऋषि को दवा में जहर देने वाले विश्वासघाती डॉक्टर की प्रशंसा क्या आर्यजगत् के भाग्य में ही बदी थी? इस गैर जिम्मेवार लेखक के अनुसार "डॉ० अलीमर्दान खां के साथ ऋषिभक्त जीवनी लेखकों ने भारी अन्याय किया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि डॉ० अलीमर्दान खां ने जानबूझ कर स्वामीजी का गलत इलाज किया।" अपनी बात की पुष्टि में यह नादान लेखक लिखता है कि किसी मरणासन्न रोगी को बचाना किसी डॉक्टर के बस में नहीं होता। आश्चर्य की बात है कि उसने उदाहरण दिया केन्द्रीय मंत्री पी.आर.कुमारमंगलम् की मृत्यु का जिसे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉक्टर भी नहीं बचा पाये। अब पहले अलीमर्दान का कच्चा चिट्ठा सुनें। इसके बारे में पं० घासीराम ने लिखा है - "अलीमर्दान तीसरे दर्जे का हास्पिटल एसिस्टेंट था परन्तु पहले नम्बर का खुशामदी और कपटी था। उसने दरबार की चापलूसी करके उन्हें प्रसन्न कर दिया था और धन भी बहुत कुछ संग्रह कर लिया था।" अलीमर्दान ने कैलोमल (एक प्रकार का विष) की मात्रा बढ़ाकर स्वामीजी के शरीर में लगातार विष प्रविष्ट करा दिया और जब रोग बढ गया तो अपने हाथ झटका कर उन्हें मृत्यु के निकट पहुंचा दिया। क्या यह भीषण अपराध और विश्वासघात नहीं है?

स्वामीजी को औषधि में विष दे देने के लिए अलीमर्दान को षड्यंत्रकारियों ने पर्याप्त धन दिया था। मैंने स्वरचित नवजागरण के पुरोधा में एक पूरा अध्याय विष प्रकरण पर लिखा है। पं० महेशप्रसाद मौलवी ने जिन्होंने स्वामीजी के जीवन विषयक महत्त्वपूर्ण अनुसंधान किया है, अलीमर्दान खां के बारे में पर्याप्त जानकारी एकत्र की तथा वेदवाणी (कार्तिक २००६ वि०) में प्रकाशित कराई। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अलीमर्दान को दवा में विष देने के लिए कितने रुपये रिश्वत के रूप में दिये गये थे। यह है अलीमर्दान का कच्चा चिट्ठा-रिश्वत का यह धन नैनी बाई तथा फैजुल्ला खां ने एकत्र किया था। ''डॉ० अलीमर्दान खां मौजा ग्राम, चनी परगना इस्लामनगर जिला एटा का रहने वाला था। उसने जोधपुर में स्वामीजी का इलाज किया था। इन्हें १७०० रुपये इस निमित्त दिये गये थे कि स्वामीजी को विष दिया जावे। जब डॉक्टर अलीमर्दान खुद अंतिम बार बीमार हुए तो उसके शरीर में कीड़े पड़ गये थे। रोते रोते कहता था कि मैंने स्वामीजी से विश्वासघात किया है। आज उसका यह फल भोग रहा हूँ। अलीमर्दान की मृत्यु ९ मई १९१७ को हुई।

आर्यजगत् का लेखक निहायत मासूमियत से लिखता है - ''कोई भी डॉक्टर चाहे वह ईसाई, मुसलमान कुछ भी क्यों न हो, अपने रोगी को जानबूझ कर मौत के मुंह में कभी नहीं धकेलेगा।'' इस पक्षपातपूर्ण कथन पर कोई टिप्पणी करना व्यर्थ है। प्रवीण कुमार आर्यजगत् का लेखक लिखता है कि ''डॉ० अलीमर्दान से अधिक योग्य डॉक्टर उस समय जोधपुर में अन्य कोई नहीं था।'' इसके विपरीत १८९६ से १९०० तक जोधपुर में रहे पं० घासीराम उसे अयोग्य तथा थर्ड क्लास डॉक्टर बता रहे हैं। कौन झूठा और कौन सच्चा है, इसका फैसला पाठक स्वयं कर लें। ऋषि के परलोक गमन के कुछ वर्ष पश्चात् पं० लेखराम और देवेन्द्रनाथ दोनों ने खुद जोधपुर जाकर स्थिति का अध्ययन किया था तथा स्वामीजी की चिकित्सा में हुए प्रमाद तथा औषधि में १६ अक्टूबर तक निरंतर कैलोमल जैसा घातक पदार्थ देने की जानकारी प्राप्त की थी। अब २००१ में एक आर्यसमाजी पत्र का यह लेखक विषदाता को निर्दोष सिद्ध कर रहा है। विधि विडम्बना इसे ही कहते हैं। लेखक का यह भी कहना है कि खुद स्वामीजी को ही इस बात का पता नहीं था कि उन्हें विष दिया गया है। रोगी को तो अपने रोग के सही कारण का चाहे न पता चले किन्तु अन्ततः विष देने का भण्डाफोड़ तो हो ही गया। स्वयं महाराजा प्रतापसिंह तथा रावराजा तेजसिंह ने कालान्तर में स्वामीजी को विष देने की बात कही। जब श्रीराम शर्मा द्वारा ऋषि को विष न दिये जाने की बात पत्रों में लिखी गई तब आर्यसमाज में एक बड़ा आन्दोलन चला था और ऋषि को विष देने के पुष्ट प्रमाणों को लेकर अनेक लेख लिखे गये तथा दो पुस्तकें भी छपीं - 'ऋषि का विषपान' (राजेन्द्र जिज्ञासु), 'विष : ऋषि मृत्यु का कारण' (वैदिक परमार्थ आश्रम बम्बई से प्रकाशित) यदि लेखक ने इन्हें पढ़ा होता तो वह अलीमर्दान के बचाव में पत्रे काले नहीं करता।

तथ्य तो यह है कि इस लेख 'अंतिम अध्याय' का लेखक छद्म नाम से लिख रहा है। प्रवीण कुमार उसका गुप्त नाम है जबकि वास्तव में यह कोई अन्य व्यक्ति है जो जानबूझ कर ऋषि के जीवनी-लेखकों को बदनाम करे तथा अलीमर्दान खां की तरफदारी करने के लिए यह लेख लिख रहा है। इसे स्वामी दयानन्द के अंतिम दिनों की यात्रा क्रम का थोड़ा भी ज्ञान नहीं है तभी तो यह लिखता है - ''खार्ची से अजमेर और अजमेर से चलकर रेलगाड़ी से स्वामीजी की टोली २१ अक्तूबर को प्रातःकाल पांच बजे आबूरोड स्टेशन पर पहुंची।'' (आर्यजगत् ७ जनवरी २००१ पृ० ५) इस लेखक को यह पता नहीं कि खार्ची स्टेशन कौन सा है? वस्तुतः स्वामीजी जोधपुर से पाली (खुश्की रास्ते) आये। वहां से ट्रेन में मारवाड़ जंकशन आये जो आज का प्रमुख रेलवे स्थानक है। इसे ही खार्ची कहते हैं। ग्राम का नाम खार्ची है जबकि रेलवे स्टेशन मारवाड़ जंकशन कहलाता है। इस अज्ञानी लेखक के अनुसार स्वामीजी पहले अजमेर आये और पुनः आबू रोड गये। इसको पता नहीं कि यदि खारची से आबू रोड जाना है तो अजमेर जाने की क्या आवश्यकता है? यह तो उल्टी बात हुई कि पश्चिम (आबू रोड) में जाने के पहले आप पूर्व (अजमेर) में जायें। वंदर के हाथ में उस्तरा देने का यही नतीजा निकलता है। अनधिकारी व्यक्ति जब ऋषि जीवन पर कलम चलायेंगे तो खारची से अजमेर और अजमेर से पुनः रुग्ण स्वामीजी को खार्ची ले जाकर तब आबू रोड की गाड़ी में बिठायेंगे।

प्रवीण कुमार की इस लेखमाला का निष्कर्ष निम्न है -

(१) स्वामीजी को विष दिया गया, यह प्रवाद व्यर्थ ही फैलाया गया।

(२) कुछ लोगों को इसमें ऋषि का गौरव प्रतीत होता है, जबकि विष से मृत्यु गौरव की बात नहीं है।

(३) यदि लक्ष्य को प्राप्त किये बिना योद्धा की मृत्यु हो जाती है तो इसका अर्थ है कि योजना में कहीं कमी थी।

(४) ऋषि की मृत्यु को शहादत या बलिदान कहना समझदारी नहीं है।

ऋषि के प्रति उपर्युक्त निंदात्मक वाक्यों पर हम क्या कहें? हमारी वेदना तो यह है कि महर्षि के लिए ये अपमानजनक वाक्य आर्यसमाज के एक पत्र में छपे हैं और आर्य संसार में इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

ऋषि की असामयिक मृत्यु को गौरवान्वित करना आर्यसमाज का कभी लक्ष्य नहीं रहा किन्तु इसे शहादत और बलिदान कहने में कोई अनौचित्य नहीं है। किन्तु लेखक को तो स्वामीजी की कार्यप्रणाली और उनकी वैदिक धर्मप्रचार योजनाओं पर सूक्ष्म प्रहार करना था, इसलिए वह निर्लज्ज होकर कहता है कि दयानन्द की यह अपमृत्यु उसकी योजना त्रुटि तथा न्यूनता सूचित करती है। स्वामीजी को विष नहीं दिया गया, इसके प्रमाण रूप में लेखक १९२५ की मथुरा जन्म शताब्दी में राजाधिराज नाहरसिंह के वक्तव्य की बात करता है किन्तु यह भूल जाता है कि उनके इस कथन का खंडन जोधपुर के रावराजा तेजसिंह ने पत्र लिखकर स्वामी श्रद्धानंद जी को कर दिया था। वे तो मथुरा में नाहरसिंह की उपस्थिति में ही विष देने की पुष्टि करना चाहते थे किन्तु दो राजपुरुषों के विसंवादी स्वरों से उत्पन्न होने वाले भ्रम का निवारण करने के लिए स्वामीजी ने उन्हें वहां बोलने से मना कर दिया। तब रावराजा ने पत्र लिखकर विष के षड्यंत्र की पुष्टि की। विस्तार के लिए देखें नवजागरण के पुरोधा (विष प्रकरण पृ० ५२५) इसी प्रकार गोपाल राव हरि देशमुख का विष प्रकरण को नकारना भी भ्रान्तिपूर्ण था। उपर्युक्त पुस्तक के पृष्ठ ५२० पर देशमुख के कथन की समीक्षा द्रष्टव्य है।

प्रवीण कुमार को आर्यसमाज के इतिहास का स्वल्पज्ञान भी कहीं है। शाहपुराधीश का ऋषिभक्तों ने कभी तिरस्कार नहीं किया। वे आजीवन परोपकारिणी सभा के सभासद, प्रधान तथा मंत्री पदों पर रहे। उनकी ऋषि में अगाध श्रद्धा थी। स्वामीजी को विष देने में जोधपुर के राजा या राजघराने की कोई भूमिका नहीं थी। विष देने का षड्यंत्र (१) नन्ही भगतन, (२) मियां फैजुल्ला खां, (३) फतहसागर स्थित चक्रांकित मठ रामानुजकोट के दाक्षिणात्य पुजारियों ने मिलकर किया था। अतः विष प्रसंग को काल्पनिक और बनावटी कहना गलत है। प्रवीण कुमार के लेख में इतनी ही सत्यता है कि स्वामीजी द्वारा विषदाता को क्षमा करने और रुपये देकर नेपाल चले जाने का मौका देने को उसने ठीक नहीं गलत बताया है। हम भी इससे सहमत हैं।

# भारतीय आदर्श देवियों का प्राचीन वैदिक इतिहास

□ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

वैदिक काल में कन्याओं का बालकों के समान ही उपनयन-संस्कार अर्थात गुरुकुलों में वेदारम्भ कराया जाता था और वे भी यज्ञोपवीत धारण कर वेदाध्ययन करती थीं। वैदिक यज्ञादि कर्मकांड में भी भाग लेती थीं। उनमें से अनेक वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करके और वेदों के महत्त्व एवं रहस्यों को जानकर उनका प्रचार करती थीं। वे ब्रह्मवादिनी बनकर ऋषिकाएं भी कहलाती थीं। ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त १३४ में ऋषिकाओं के नामों की सूची इस प्रकार है :-

घोषा, गोधा, विश्ववारा, अपाला, उपनिषद्, ब्रह्मजाया, जुहूनाम, अगस्त्य की बहिन अदिति, इन्द्राणी, इन्द्रमाता, सरमा, रोमशा, उर्वशी, लोपामुद्रा, नदी, यमी, नारी, शाश्वती, श्री, लक्ष्मी, सार्पराज्ञी, वाक्, श्रद्धा, मेधा, दक्षिणा, रात्री, सूर्या, सावित्री, ये ब्रह्मवादिनी कहीं गई हैं। ये सभी लड़कों के समान ही यज्ञोपवीत, वेदाध्ययन, गायत्री जाप, सन्ध्या, प्राणायाम आदि सभी यौगिक कार्यों को करती थीं। शिवा नाम की ब्राह्मणी वेदों की विदुषी थी। उसने सब वेदों को पढ़कर निःसंदेह होकर मुक्तिपथ को प्राप्त किया था। सिद्धा नाम की ब्राह्मणी बाल्यकाल से ही ब्रह्मचारिणी बनकर, योगयुक्त होकर, पूर्णतया तप का अनुष्ठान करके मोक्ष को प्राप्त हुई।

प्राचीन काल में गार्गी, मैत्रेयी आदि अनेक ब्रह्मवादिनी हो चुकी हैं। सरस्वती, गायत्री, वैवस्वती, अतिदि, दाक्षायणी, वागाम्भृणी, कामायानी आदि के नाम मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के रूप में प्रसिद्ध हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य के सामने जब सब विद्वान् पराजित हो गये तो वाचक्रवी गार्गी ने जनक की सभा में कितने आत्मविश्वास और गर्व से कहा था- 'हे ब्राह्मणो! मैं याज्ञवल्क्य से दो प्रश्न पूछूंगी, यदि उन्होंने उत्तर दे दिया तो आप में से कोई उस ब्रह्मवेत्ता को जीत न सकेगा।'

भारद्वाज की 'श्रुतावती' नाक की कन्या जो रूप में अनुपम थी, कुमारी ब्रह्मचारिणी थी, बड़ी वेदविदुषी थी। इसी प्रकार प्राचीन वैदिक काल में, रामायण काल में ब्रह्मवादिनी संन्यासिनी 'सुलभा' का नाम भी आता है। उसने वेदादि समस्त शास्त्रों का अध्ययन करके यह संकल्प लिया था कि जो मुझे शास्त्रार्थ में पराजित कर देगा उसी के साथ विवाह करूंगी। इससे सुलभा का ब्रह्मचर्य तथा उसके अगाध पाण्डित्य एवं विद्वत्ता का पता लगता है। सुलभा का जनक के साथ शास्त्रार्थ करने का पता लगता है। राजा जनक के पूछने पर सुलभा ने अपना परिचय देते हुए जनक से कहा था-मैं अति प्रसिद्ध राजर्षि के कुल में उत्पन्न हुई सुलभा नाम की कन्या हूँ। अत: इस नाम से जानिये। अपने योग्य पति न मिलने से मैंने अपने गुरुओं से वेदादिशास्त्रों को पढ़कर संन्यास आश्रम ग्रहण कर लिया है। सुलभा वेदों की विदुषी थी, वह कन्याओं को भी वेदाध्ययन कराती थी। ऋषिकाओं के नामों से ग्रन्थ भरे पड़े हैं।

देश की तत्कालीन पवित्र परिस्थितियों को देखते हुए कविकुलशिरोमणि, पंडित-प्रवर कवि बाण ने लिखा था-उस आश्रम गृह में समस्त वेद वाङ्मय के जानने वाले पिंजरे में बैठे हुए तोता-मैनाओं द्वारा पद-पद में अशुद्धि निकाल देने के कारण, आश्रम के वेदपाठी ब्रह्मचारी यजु०-साम० के मन्त्रों का पाठ डरते-डरते करते थे कि ये तोता-मैना हमारी कोई अशुद्धि न निकाल दें ? इस सबका यही अभिप्राय है कि उस समय सारा ही वातावरण वेदमय था। ऋषियों के पवित्र वैदिक आश्रमों में सायं पक्षी भी जो कलरव मधुर ध्वनि से करते थे, मानो स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के ही मंत्रों का पाठ कर रहे हों? कोयल की सुन्दर मधुर आवाज आश्रम पद को सुशोभित करती थी। श्रोताओं के मन को हर लेती थी। मन को मोह लेती थी। कुहू-कुहू करके वह मानो पूछ रही हो कि हे प्रभु! तुम कहाँ हो?

सभी आश्रमों में राष्ट्र के बालकों का वेदारम्भ संस्कार होता था, जिसमें उन्हें सांगोपाग चारों वेदों को पढ़ने के लिए नियम धारण करना पड़ता था। वेदों के अंग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और उपांग-पूर्व मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त ये छः दर्शनशास्त्र पढ़ाये जाते थे। इसी प्रकार उपवेद-आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थवेद अर्थात् शिल्पशास्त्र का अध्ययन कराया जाता था। इसके साथ ब्राह्मणग्रन्थ ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ भी पढ़ाए जाते थे। चारों वेदों का भी क्रमशः अध्ययन कराया जाता था। इस प्रकार आर्षशिक्षा पद्धति से शिक्षित होकर राष्ट्र का निर्माण किया जाता था। नारियों का भी वेद पठन-पाठन में समान अधिकार होता था। वे भी परम विदुषी बनती थी। यह काल महाभारत के बाद कुछ समय तक भी रहा। देवियाँ भी कितनी संस्कृत भाषा की विदुषियाँ होती थीं। एक घटना इतिहास की यहाँ प्रकाशित की जाती है।

शंकर दिग्विजय में यह घटना आती है कि आज से लगभग २७०० वर्ष पूर्व की घटना है, शंकराचार्य वेदों का प्रचार करने के लिए 'दिग्विजय यात्रा' किया करते थे। देश में कहीं पर कोई भी विद्वान् होता था, शंकराचार्य उससे शास्त्रार्थ करने पहुंच जाते थे। एक दिन वे पंडित मंडनमिश्र से शास्त्रार्थ करने के लिए उसके ग्राम में पहुंच गये। ग्राम में कुएं पर पानी भरती हुई कन्याओं से पूछा मण्डनमिश्र का घर कहां है? कन्याओं ने घर का पता बताते हुए कहा-जिस घर के द्वार पर पिंजरे में बैठे हुए तोता, मैना पक्षी वेद स्वत: प्रमाण हैं, बस समझ लेना कि यही मण्डनमिश्र का घर है।

इस प्रकार शंकराचार्य और मण्डनमिश्र के बीच हुये शास्त्रार्थ की अध्यक्षता मण्डनमिश्र की धर्मपत्नी विदुषी भारती देवी ने की थी। शंकरदिग्विजय में भारती देवी के विषय में लिखा है कि भारती देवी छः शास्त्रों और छः अंगों सहित चारों वेदों और सम्पूर्ण काव्यादि ग्रन्थों को जानती थी। इतना ही नहीं ऐसा कोई विषय न था, जिसका उसे ज्ञान न हो। शास्त्रार्थ में अपने पति मण्डनमिश्र के हार जाने के बाद शंकराचार्य के साथ शास्त्रार्थ में अपने पति की अपने को अर्धाङ्गिनी मानकर शंकराचार्य के साथ शास्त्रार्थ करके उसे हराया था। शास्त्रार्थ में अपनी पराजय का दुःख मानकर शंकराचार्य ने स्त्रियों के विरुद्ध 'प्रश्नोत्तरी' नामक पुस्तक लिखी थी, जिसमें देवियों के सम्बन्ध में अत्यन्त घृणित प्रश्नोत्तरों के रूप में वर्णन किया गया है। उन्होंने लिखा था-एकमात्र नरक का द्वार क्या है? शंकराचार्य ने उत्तर दिया-'नारी' अर्थात् स्त्री नरक का द्वार है। उन्होंने आगे कहा-अर्थात् विश्वासपात्र कौन नहीं है? स्वयं ही उत्तर दिया-'नारी' नारी विश्वासपात्र नहीं होती। एक अन्य प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि कौन श्रेष्ठ वीर पुरुष है? शंकर ने उत्तर दिया-अर्थात् जो पिशाचिनी नारी से न ठगा गया हो। इस प्रश्नोत्तरी में सौ के लगभग प्रश्नों के उत्तर रूप में देवियों की बड़ी भारी निंदा की है। आज से लगभग २७०० वर्ष पूर्व सर्वप्रथम शंकराचार्य ने ही देवियों की निन्दा आरम्भ की थी।

आचार्य शंकर जैसे उद्भट विद्वान् और तार्किक भी इस विषय में अपनी योग्यता और प्रतिभा का दिवाला निकाल बैठे-"**श्रवणाध्ययनार्थप्रतिषेधात्स्मृतेश्च**" वे०द० १/३/३८-इस सूत्र पर भाष्य करते हुए शंकराचार्य जी शूद्र को वेद के अध्ययन का अनधिकारी सिद्ध करते हुए लिखते हैं-**अथास्य वेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रप्रतिपूरणम्।** (१) स्त्री अथवा शूद्र यदि वेद को सुन ले तो रांगा और लाख उसके कर्ण-छिद्रों में भर देना चाहिये। (२) स्त्री अथवा शूद्र श्मशान के समान हैं, उसके समीप बैठकर अध्ययन भी नहीं करना चाहिये (३) शूद्र को उपदेश भी नहीं देना चाहिये। यहाँ उपदेश का अर्थ मन्त्रों की व्याख्या है। यह है भाष्यकारों की योग्यता और उदारता। ढर्रा ही ऐसा था। किसी ने सही स्थिति पर विचारने के लिए बुद्धि पर बल नहीं दिया। निरन्तर गौतम अपने धर्म सूत्र में इनसे भी दस कदम आगे निकल गये। आप लिखते हैं कि-**अथ हास्य वेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोतप्रतिपूरणं उच्चारणे जिह्वाछेदो धारणे शरीरभेदः।।** (२/३/४) कि स्त्री अथवा शूद्र यदि वेद को सुन ले तो कानों में रांगा और लाख भरवा दें, बोले तो जिह्वा काट दें और स्मरण कर ले तो वध कर दें।

किन्तु वेद कहता है कि किन्हीं भी ग्रन्थों के अध्ययन का अधिकार किसी एक वर्ण को नहीं, अपितु जिसके पास बुद्धि है, जो उसको समझ सकते हैं, उन सभी को पढ़ने का अधिकार है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने सर्वप्रथम दृढ़विश्वास और बल देकर वेदों के बन्द द्वार सब वर्णों के लिए खोल दिये। उन्होंने "**स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् इति श्रुतेः**" इस वाक्य को ही निकाल दिया, उन्होंने कहा-तुम्हारी ऐसी विपरीत श्रुति कुएं में पड़ी और यजुर्वेद के २७वें अध्याय के दूसरे मंत्र-**यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य०** का प्रमाण देते हुए स्त्री शूद्रों के यज्ञोपवीत लेकर विद्या पढ़ने, यज्ञ कराने के बंद द्वार खोल दिये। आओ देवियों के गुणों पर एक दृष्टि डालें। वैदिक धर्म के अनुसार स्त्रियां पुरुषों के बराबर ही नहीं, अपितु उनसे बढ़कर हैं। विवाह-संस्कार में देखो कि दूल्हा मन्त्रों का उच्चारण करते हुए दुल्हन का हाथ पकड़ते हुए खड़ा हो जाता है तथा मानव समाज के सामने प्रतिज्ञा धारण करता है, जबकि दुल्हन बैठी है। यह सब क्या है? लड़का अपने साथ विवाही जानेवाली लड़की को सम्मान प्रदान कर रहा है। पुरुषों को चाहिए के वे स्त्रियों को सम्मान प्रदान करें। मनुजी कहते हैं जिन घरों में स्त्रियों को सम्मान प्रदान नहीं किया जाता वे घर नष्ट हो जाते हैं।

संस्कृत में स्त्री के लिए "महिला" शब्द का प्रयोग होता है, जिसका अर्थ है कि औरत त्याग, आज्ञाकारिता, समर्पण, निःस्वार्थ सेवा, विनयशीलता, सच्चरित्र आदि अच्छे गुणों के कारण ही समाज एवं परिवार में आदर और सम्मान प्राप्त करती है। संस्कृत में औरत के लिए एक अन्य सुन्दर शब्द है-'नारी' जिसका अर्थ है-'अपने श्रेष्ठ गुणों और आदतों के कारण जिसका कोई भी शत्रु नहीं है।' 'नारी' शब्द यह भी संकेत करता है कि नारी वह है, जो सांसारिक इच्छाओं और मनोरंजनों (मौज-मस्ती) में न डूबकर, सच्चाई के मार्ग पर ले जाने वाले कर्त्तव्यों को अधिक महत्त्व प्रदान करती है। 'स्त्री' शब्द का अर्थ है-जो अपने पति एवं बच्चों की बुरी आदतों को न कभी प्रकट करती और न कभी ढिंढोरा पीटती है और पुरुष की सबसे अच्छी मित्र है, अच्छे मित्र का एक ही विशेष गुण है-अपने मित्र की बुरी आदतों को ढककर और छिपाकर रखना तथा केवल अच्छे गुणों को प्रकट करना और लोगों में फैलाना। अत: हमें वेदों के सिद्धान्तों का पालन मन, वाणी और कर्म से करना चाहिये। हमारे ऋषि तथा ऋषिकाओं का ऋण हमारे सिर पर है। हमें अपना आदर्श आचरण बनाकर वेदों का प्रचार-प्रसार करना चाहिये तभी मानवजाति में उन्नति सम्भव है। विश्वस्तर पर देवियों का स्वरूप कन्या, युवती, रमणी, वृद्धा किसी भी अवस्था में हो, वैदिक धर्म की परम्पराओं के अनुकूल होना चाहिये। आर्यावर्त देश भारत में पुरुषों के साथ देवियों का उत्तरदायित्व बढ़ गया है। इसलिए भारतवर्ष की देवियों को ऐसा कदम उठाना चाहिये जिससे वे वेदों की रक्षा कर सकें और इनके गौरव को बढ़ा सकें। मैं इन शब्दों के साथ लेख को समाप्त करता हूँ - **आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।**
**ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥**

# ईश्वरभक्ति क्या-क्यों-कैसे?

**ईश्वरभक्ति की परिभाषा**-महर्षि व्यास जी-''ईश्वरप्रणिधान भक्तिविशेष है। सब क्रियाओं को परमगुरु ईश्वर में अर्पण करना और उसका लौकिक फल (=धन, मान आदि) न चाहना ईश्वरप्रणिधान (ईश्वरभक्ति) है।'' महर्षि दयानन्द जी-''आत्मा और अन्त:करण से ईश्वर की आज्ञापालन करने में तत्पर रहना भक्ति है। सकलैश्वर्यसम्पन्न होके सब संसार के उपकार में तन, मन, धन से प्रवृत्त होना ईश्वर की आज्ञापालन (ईश्वरभक्ति) करना है।'' इस प्रकार अपने तन, मन, धन से दूसरे प्राणियों की नि:स्वार्थ सेवा करना ईश्वरभक्ति है।

**ईश्वरभक्ति का महत्त्व**-जो व्यक्ति जितनी ईश्वरभक्ति (दूसरे प्राणियों की नि:स्वार्थ सेवा) करता है, उसको ईश्वर की कृपा से उतना ही ईश्वरीय आनन्द अर्थात् सच्चा सुख मिलता है।

**ईश्वरभक्ति की विधि**-दूसरे प्राणियों की उच्चकोटि की ऐतिहासिक सेवा करने के लिए व्यक्ति का शारीरिक एवं आत्मिक उन्नत होना अनिवार्य है। उचित आहार-निद्रा-ब्रह्मचर्य का पालन शारीरिक उन्नति के स्तम्भ हैं। आत्मिक उन्नति के लिए व्यक्ति को न्यून से न्यून एक घण्टा प्रात:काल तथा न्यून से न्यून एक घण्टा सायंकाल आसन लगाकर (स्थिरता एवं सुखपूर्वक बैठकर) ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। व्यक्ति शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म और शुद्धोपासना का जितना पालन करता है वह काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि कुसंस्कारों को उतना ही नष्ट करने में सफल होता है। परिणामस्वरूप वह उतने ही स्तर की नि:स्वार्थ सेवा करने में सफल होता है। कुसंस्कारों को पूर्णतया नष्ट करने पर ईश्वर भक्त उच्चतम सेवा करने में सफल होता है और तभी उस जीव की मुक्ति होती है। ईश्वरभक्ति की शुद्ध विधि निम्नलिखित बातों को समझने से सुस्पष्ट होती है :-

(१) (क) **ईश्वर की सत्ता**-ईश्वर एक सत्तात्मक पदार्थ है, कोई काल्पनिक पदार्थ नहीं है। यह सर्वविदित है कि जो वस्तु उत्पन्न होती है उसको कोई बनाने वाला होता है। उदाहरणार्थ घड़े को कुम्हार, रोटी को रसोइया तथा मकान को मिस्त्री बनाता है। सूर्य, चन्द्रमा आदि वस्तुओं को मनुष्य आदि प्राणी नहीं बना सकता। बिना कर्त्ता के वस्तु बनती नहीं है। सूर्य, चन्द्रमा आदि वस्तुओं को जिस शक्ति (कर्त्ता) ने बनाया, हम उस कर्त्ता को ईश्वर कहते हैं। तीन अनादि पदार्थ है-ईश्वर, आत्मा तथा प्रकृति। (ख) **ईश्वर का स्वरूप**-ईश्वर न्यायकारी, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, निराकार, आनन्दस्वरूप आदि नामों वाला है। एक परिवार का मुखिया जितना पक्षपात रहित न्याय करने वाला होगा उतना ही वह परिवार का सफलतापूर्वक संचालन करेगा। अत: सम्पूर्ण सृष्टि का पूर्ण रूप से सफलतापूर्वक संचालन करने वाला ईश्वर निश्चित रूप से पूर्ण रूप से **न्यायकारी** होना अनिवार्य है। जब ईश्वर कण-कण में व्यापक (**सर्वव्यापक**) होगा तथा प्रत्येक जीव के कर्मों को प्रत्येक क्षण देखेगा (**सर्वज्ञ होगा**) तभी वह पूर्ण रूप से न्यायकारी हो सकता है। जब ईश्वर सर्वव्यापक है तो वह **निराकार** ही होगा अर्थात् उसकी कोई आकृति, रंगरूप या मूर्ति नहीं हो सकती है। जैसे अग्नि के पास बैठने से उष्णता मिलती है वैसे ही ईश्वर उपासकों का अनुभव है कि ईश्वर के पास बैठने (ईश्वर उपासना) से आनन्द आदि गुणों की प्राप्ति होती है। अत: ईश्वर **आनन्दस्वरूप** है।

(२) **व्यवहार काल**-ऋषियों ने यम-नियम को भक्ति का प्रमुख साधन स्वीकार किया है। ईश्वर भक्त को धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार आदि तथा हिंसा, झूठ, चोरी, कामुकता आदि का परित्याग करके सदाचार के नियमों का पालन करना चाहिए। वह आलस्य को त्यागकर पुरुषार्थ करते हुए सुख-दु:ख, लाभ-हानि, मान-अपमान आदि द्वन्द्वों को सहन करने वाला तपस्वी होना चाहिए। वेदादि सत्य ग्रन्थों के अनुसार तर्क का प्रयोग भक्ति में साधक है, बाधक नहीं। दैनिक कार्य करते हुए भी यह अनुभूति बनाए रखनी चाहिए कि ईश्वर 24 घण्टे अर्थात् प्रत्येक क्षण मन, वाणी और शरीर से किए जाने वाले समस्त कर्मों को जानता है तथा उन कर्मों का ठीक फल देता है। पंचमहायज्ञ के महत्त्व को समझकर करने चाहिएं। ईश्वरभक्त को न्यून से न्यून तीन प्राणायाम (श्वास-प्रश्वास की गति को रोकना) प्रात:काल तथा न्यून से न्यून तीन प्राणायाम सायंकाल विधिपूर्वक करने चाहिएं। (३) **उपासना काल**-ईश्वर की वाणी (वेद) के अनुसार जीव को परमेश्वर की उपासना नित्य करनी चाहिए। (क) **उपासना का अर्थ**-उप=समीप। आसना=आसन (बैठना)। उपासना का अर्थ अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होना है। (ख) **उपासना का फल**-इससे सर्वश्रेष्ठ ईश्वर की संगति मिलती है, आत्मिक बल बढ़ता है, ईश्वर के उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जाती है, जीवात्मा का साक्षात्कार, ईश्वर का साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति होती है। (ग) **उपासना की विधि**-जब उपासना करना चाहें तब एकान्त शुद्ध स्थान में जाकर, **आसन** लगा, **प्राणायाम** कर, **प्रत्याहार** (इन्द्रियों को विषयों से हटाना) सिद्ध हो जाने पर **धारणा** (चित्त को हृदय आदि किसी एक स्थान में एकाग्र) करने के पश्चात् ओंकार का जप और उसका अर्थ जो परमेश्वर है, उस का निरन्तर विचार करना (ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना को बारम्बार करके, अपनी आत्मा को भली भांति से उसमें लगा देना) ध्यान है। आत्मा चेतन और मन जड़ है। इस सत्य को स्वीकार करते हुए ध्यान के समय में ईश्वर को छोड़ किसी अन्य पदार्थ का स्मरण नहीं करना, किन्तु परमात्मा में निमग्न हो जाना (**समाधि** सिद्ध करना) है। उपासना की विधि महर्षि पतञ्जलि जी के शब्दों में ''**तस्य वाचक: प्रणव:। तज्जपस्तदर्थभावनम्।**''

**सारांश**-आर्यसमाज (श्रेष्ठ व्यक्तियों) का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। दूसरे शब्दों में मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना तथा अन्यों को प्राप्त करवाना है।

**कृतज्ञता**-सहयोगी पुस्तकों एवं सज्जनों के प्रति महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, झज्जर कृतज्ञ है। कृपया स्वामी सत्यपति जी कृत लेख ''वैदिक भक्ति स्वरूप'' भी पढ़ें।

**संकलनकर्ता-सुभाष आर्य,** मदशिके, भट्टी गेट, झज्जर



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२






आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद
प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष ३२ अंक ३८ २८ अगस्त, २००५ वार्षिक शुल्क १०० रुपये विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

भव्य पारितोषिक वितरण एवं सम्मान समारोह ( ३१ जुलाई २००५ को हिंदी भवन, नई दिल्ली में )

# प्रधानमंत्री द्वारा अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी शासन का यशोगान शर्मनाक : स्वामी अग्निवेश

❑ श्यामलाल, संगठन सचिव एवं मुख्य संयोजक प्रतियोगिता


स्वामी अग्निवेश

नई दिल्ली-३ अगस्त ''प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहनसिंह ने आक्सफोर्ड में भारत में अंग्रेजी भाषा और शासन के महत्त्व और वर्चस्व का जो यशोगान किया है और देश की प्रगति में इनके योगदान की जो चाटुकारितापूर्ण सराहना की है, वह लज्जास्पद है। डॉ० सिंह की इस चाटुकारिता ने तो बादशाहों और राजा-महाराजाओं के दरबार में उनकी विरुदावलि गाने वाले चारणों को पीछे छोड़ दिया है। स्वामीजी ने कहा कि प्रधानमंत्री के इन विचारों का डटकर विरोध होना चाहिए। इन विचारों से लगता है कि प्रधानमंत्री में भारत की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, इतिहास, अस्मिता तथा उसके स्वर्णिम अतीत का तनिक भी गौरव शेष नहीं है। भारत को अंग्रेजी भाषा की जबरदस्ती ने कितना पीछे धकेल दिया, हम ज्ञान-विज्ञान में कितना पिछड़ गए, हमारी संस्कृति और शिक्षा तंत्र को कितना विनष्ट किया गया, उद्योग धंधों, व्यापार और खेती को कितना मटियामेट किया गया, इन सबसे साधारण भारतीय भी सुपरिचित है। इन प्रतिगामी विचारों के निराकारण तथा अपने कथन को वापिस लेने का मनमोहन सिंह पर दबाव बनाने के लिए, हिंदी सेवी संगठनों को एकजुट होना चाहिए।'' ये विचार सामाजिक कार्यकर्त्ता और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश ने प्रस्तुत किए। वे नई दिल्ली के हिंदी भवन में राजभाषा संघर्ष समिति द्वारा आयोजित श्री जगन्नाथ स्मृति-राजभाषा सम्मान समारोह तथा पुरस्कार वितरण उत्सव को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। स्वामी जी ने ठसाठस भरे सभा भवन में छात्रों, अध्यापकों तथा हिंदीसेवी कार्यकर्त्ताओं के सामने प्रधानमंत्री के इस कथन पर रोष प्रकट किया और इसके विरुद्ध प्रबल आंदोलन खड़ा करने का आह्वान किया।

समारोह का उद्घाटन करते हुए राज्यसभा के पूर्व सदस्य डॉ० रत्नाकर पाण्डेय ने राजभाषा संघर्ष समिति की देशव्यापी भूमिका की प्रशंसा की तथा कहा कि हिन्दी ही देश को एकसूत्र में जोड़ सकती है। आयोजन में हिंदी के लिए जन्मभर संघर्ष करने वाले स्व० श्री जगन्नाथ जी की सेवाओं को याद किया गया तथा ७ समर्पित हिंदीसेवी विद्वानों-सर्वश्री एस.बी.मुरकुटे, बेलगांव (कर्नाटक), राजेंद्रपाल वर्मा बडोदरा, डॉ० विनोदचंद्र विद्यालंकार ज्वालापुर, पूर्व ए.वी.एम. विश्वमोहन तिवारी, नोएडा तथा दिल्ली के सर्वश्री विश्वंभरप्रसाद गुप्त बंधु, आनन्दस्वरूप गर्ग तथा श्रीमती माधवी सिंह को सम्मानित किया गया।

समिति की प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट योगदान वाले केन्द्रों को सम्मान भेंट किए गए। इनमें डी.ए.वी. स्कूल मेरठ, सोनीपत, दिल्ली के डी.ए.वी. स्कूल श्रेष्ठविहार, द्वारिका तथा आर्य व.मा. विद्यालय नरवाना उल्लेखनीय हैं। वरिष्ठ वर्ग निबंध में आदिवासी क्षेत्र झाबुआ जिले में बामनिया गांव के प्रतिभाशाली किन्तु निर्धन छात्र राकेश राठौर ने, भाषण में मेरठ के पुलकित गुप्ता ने, कनिष्ठ वर्ग निबंध में पानीपत की निहारिका ने, भाषण में मेरठ के लव खुराना ने १०००के प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किए। इन प्रतियोगिताओं में २६ केंद्रों पर लगभग ३००० छात्रों ने भाग लिया तथा ११९ विजेताओं को १७००० के पुरस्कार वितरित किए गए। आयोजन की अध्यक्षता कृष्णदत्त स्वास्थ्य केन्द्र, नई दिल्ली की निदेशक डॉ० मधु गुप्ता शास्त्री ने की। विक्रम वि.वि. उज्जैन ने कुलपति प्रो० रामराजेश मिश्र ने अपने विद्वत्तापूर्ण विचार प्रस्तुत किए। डॉ० कृष्णलाल, विश्वमोहन तिवारी तथा डॉ० वेदप्रताप वैदिक ने भी अपने सारगर्भित विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन महासचिव जगदीशनारायण राय तथा डॉ० रवि शर्मा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अध्यक्ष नारायणकुमार ने किया।

राजभाषा संघर्ष समिति पंजी. ए-४/१५३,
सेक्टर-४, रोहिणी, दिल्ली-११००८५

## कम्प्यूटर पर सवार हुई हिन्दी की दुनिया

नई दिल्ली। कंप्यूटर पर अब तक सवार रही अंग्रेजी का युग खत्म हो गया है। कंप्यूटर साफ्टवेयर के क्षेत्र में नित हो रहे विकास ने कंप्यूटर प्रणाली को आसान बना दिया है। इस नई पहल से महज साक्षर व्यक्ति भी अपनी भाषा में कंप्यूटर का इस्तेमाल कर सकेगा।

कंप्यूटर क्रांति ने भाषाज्ञान की समस्या खत्म कर दी है। सेंटर फार डेवलपमेंट आफ एडवांस कंप्यूटिंग (सी-डैक) ने **आम लोगों की भाषा में कंप्यूटर साफ्टवेयर उतारकर उन करोड़ों भारतीयों की कसक दूर कर दी है जो अंग्रेजी की अज्ञानता के कारण अब तक कंप्यूटर से दूर थे।** कंप्यूटर साफ्टवेयर में विकसित नई तकनीकी से भाषाई समस्या से जूझ रहे करोड़ों लोगों की संवादहीनता की समस्या खत्म हो जाएगी। कंप्यूटर विद्या में भाषाई अंतराल मिटाने में सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने 'ओआरजी' तकनीकी का इस्तेमाल कर भाषाई अंतराल की समस्या को खत्म कर दिया है। साफ्टवेयर, फोंट और टूल को विभिन्न भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर उपभोक्ताओं के बीच उतारने से एक तरफ जहां कंप्यूटर साक्षरता को बढ़ावा मिलेगा वहीं दूसरी तरफ लोगों को घर बैठे देश और दुनिया की उपयोगी जानकारियां उनकी अपनी भाषा में उपलब्ध हो सकेंगी। **इस साफ्टवेयर के जरिए कंप्यूटर पर सारी विषय-वस्तु हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो सकेगी जो अब तक सिर्फ अंग्रेजी में उपलब्ध थी।** संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की पहल पर तैयार हिन्दी साफ्टवेयर का लोकार्पण कांग्रेस अध्यक्ष और संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा

( शेष पृष्ठ दो पर )

सर्वहितकारी

# वैदिक पूजा पद्धति

❑ मदन रहेजा, उप-प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई - १४

लोग प्राय: मंदिर, मस्जिद, गिरिजे, गुरुद्वारे, अग्यारी जाते हैं तथा अनेक तथाकथित तीर्थस्थलों पर ईश्वर की पूजा करने के लिये जाते हैं ताकि परम पिता परमात्मा उनकी मनो-कामनाएँ/मुरादें पूरी करे या उनके दु:ख-दर्द का निवारण करे। अधिकांश लोग इन पवित्र स्थानों में अपनी स्वार्थपूर्ति तथा धन की प्राप्ति के लिये परमात्मा की पूजा करने जाते हैं। नि:संतान दम्पति सन्तानोत्पत्ति के लिये पूजा करते हैं तो कुछ लोग अपनी संतान से परेशान होकर अपने कष्टों के निवारण हेतु प्रभु की शरण में जाकर शान्ति की याचना करते हैं। ऐसी पुण्यात्माएँ विरले ही हुआ करती हैं जो परमेश्वर का धन्यवाद करने तथा सद्गति हेतु उसकी पूजा करते हैं। परमात्मा के सान्निध्य में रहकर ही मनुष्य अपने जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष अर्थात विशुद्ध सुख अर्थात् ''आनन्द'' को प्राप्त करता है क्योंकि वह परमात्मा ही आनन्द का स्रोत है।

सर्वविदित है कि जितने लोग, उतनी बातें और उनसे बढ़कर आपसी मतभेद और उनसे भी बढ़कर पूजा-पाठ की असंख्य पद्धतियां, रीति-रिवाज और तौर-तरीके। चूँकि सबका तात्पर्य एक ही है - ईश्वर की भक्ति करना। भक्ति कहिये या पूजा या आराधना इत्यादि परन्तु सबका अर्थ एक ही है, वह है-परमात्मा की सेवा करना या उसकी आज्ञा का पालन करना।

हम सभी अच्छी तरह से जानते और मानते हैं कि वह परमात्मा अद्वितीय एक है और क्योंकि उसके गुण-कर्म-स्वभाव अनेक हैं अत: उसके गौणिक, कार्मिक, स्वाभाविक और आलंकारिक नाम भी अनेक हैं। जिसको जो नाम अच्छा लगता है वह उस परमेश्वर को उसी नाम से पुकारता है। हिन्दू उस परमात्मा को भगवान्, ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर, शिव, शंकर, शम्भू, ब्रह्मा, विष्णु, महेश इत्यादि नामों से पुकारते हैं। इस्लाम मजहब के अनुयायी उसे अल्लाह, खुदा, मालिक, परवरदिगार, रब इत्यादि नामों से याद करते हैं। सिक्ख समुदाय के लोग उसे वाहेगुरु, रब्बा इत्यादि और ईसाई मत के मानने वाले परमात्मा को गॉड के नाम से जानते हैं। आप जिस नाम से चाहें, उस परमपिता परमात्मा को पुकार सकते हैं - इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती है परन्तु हमें इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि ईश्वरीय अमृतवाणी ''वेद'' के अनुसार उस परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ निज नाम ''ओ३म्'' है। **''ओ३म् क्रतो स्मर''** (यजुर्वेद) अर्थात हे क्रतो (कर्मशील मनुष्य) तू ''ओ३म्'' का स्मरण कर।

पूजा शब्द के अनेक अर्थ होते हैं - जैसे सेवा करना, आज्ञा का पालन करना, उपासना करना, धर्म का पालन करना, यथायोग्य उपयोग करना, कुकर्मी को दण्ड देना इत्यादि। ईश्वर की पूजा के सन्दर्भ में अर्थ निकलता है-परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करना। वेद ईश्वरकृत होने से वेदोक्त बातों को उपयोग में लाना अर्थात् उसकी आज्ञाओं का पालन करना ही परमात्मा की सही पूजा कहाती है। ईश्वर एक है अत: उसका ज्ञान (वेद) सब मनुष्यों के लिये समान है और वेदोक्त बातों को जानना और मानना ही 'धर्म' कहाता है।

उपासना-उप+आसना अर्थात् समीप में बैठना। 'उपासना' कहते हैं - परमात्मा के नजदीक बैठना क्योंकि मात्र ईश्वर ही हमारा उपासनीय देव है। पूजा या उपासना करने के लिये तीन वस्तुओं की जरूरत होती है १. पूज्य (जिसकी पूजा की जाए), २. पुजारी (पूजा करने वाला), और ३. पूजा सामग्री (जिससे पूजा की जाए)। इनमें से एक का भी अभाव हुआ तो पूजा करना सम्भव नहीं।

**मूर्तिमान् पूजा :** मूर्तिमान् देवी-देवताओं की पूजा जैसे हमारे पितर अर्थात् जीवित माता-पिता, बड़े-बुजुर्ग, गुरु, वैदिक विद्वान्, विद्वान् अतिथि और अन्य मूर्तिमान् देव हैं - स्त्री के लिये उसका पति तथा पति के लिये उसकी धर्मपत्नी। स्मरण रहे कि पूजा अर्थात् ''सेवा-सत्कार'' जीवित (शरीरधारी) व्यक्तियों का होता है, मृतकों या दिवंगतात्माओं का नहीं। मूर्तिमान् देवों की पूजा होती है-उनकी आज्ञाओं का पालन करना, उनके बताए मार्ग पर चलना, उनकी उचित माँगों, जैसे खान-पान, वस्त्रादि, रहने की व्यावस्था तथा उनके स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना इत्यादि।

हमारे पूज्य देवों की पूजा के बारे में अनेक भ्रान्तियाँ हैं अत: उनका निवारण करना आवश्यक है। मूर्तिमान् देवों की पूजा के लिये उनका समक्ष होना जरूरी है इसलिये वैदिक धर्म में दिवंगतात्माओं की पूजा का कोई विधान नहीं है। जिसकी पूजा करनी है यदि वह पूज्य व्यक्ति हमारे समक्ष नहीं है तो उसकी पूजा नहीं हो सकती।

**अमूर्तिमान् पूजा :** परमपिता परमात्मा जो समस्त ब्रह्माण्ड का स्वामी है वही सब देवों का देव अर्थात् महादेव कहाता है जिसकी पूजा (आज्ञा पालन) करनी योग्य है। वही हमारा निराकार देव और हम सब (जीवात्माएँ) उसी परमपिता परमात्मा की अमृतमयी संतान हैं। हम मनुष्य हैं अत: यह परमावश्यक है कि हम उस परमेश्वर के बारे में कुछ जानने का प्रयास करें, जिससे हमारी पूजा पद्धति में किसी प्रकार की त्रुटि न होने पाये तभी तो हम उसकी पूजा करने के अधिकारी तथा सुपात्र बन सकते हैं। ईश्वर सच्चिदानन्दरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता-सृष्टिधर्ता-सृष्टिहर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है। ईश्वर की पूजा का विधान है- नियमित रूप से (वेदादि सत्य ग्रन्थों को) स्वाध्याय करना, मानव धर्म का आचरण करना, जीव मात्र से प्रीतिपूर्वक यथायोग्य वर्तना, ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना तथा यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करना, अष्टांग-योग का अभ्यास करना इत्यादि कर जीवन को सफल करना।

ईश्वर की पूजा करते हैं तो वहाँ ईश्वर का होना आवश्यक है (ईश्वर निराकार है तथा सर्वव्यापक होने से सर्वदा, सर्वत्र विद्यमान है), आत्मा शरीरधारी है और पूजा सामग्री है - हमारे मन के शुभ और शुद्ध संकल्प। अत: परमात्मा की पूजा (उपासना) कहीं भी, कभी भी की जा सकती है और आवश्यकता है तो केवल शुद्ध भावों की।

**जड़ पूजा :** जड़ पूजा का अर्थ है - वस्तुओं के गुणों के आधार पर उनका सही उपयोग करना आदि। जड़ देवता हैं-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, तारे, नक्षत्रादि। जड़ देवताओं तथा वस्तुओं की पूजा अवश्य करनी चाहिये परन्तु वैसी पूजा नहीं जैसी पौराणिक लोग करते या मानते हैं। उदाहरण के तौर पर गंगा नदी की पूजा, तुलसी इत्यादि पेड़-पौधो की पूजा, पाषाण मूर्तियों की पूजादि। यहाँ पूजा का अर्थ है - उन वस्तुओं का यथायोग्य सदुपयोग करना, उनसे लाभ उठाना, न कि उनकी आरती उतारना या फूलमाला इत्यादि जड़ वस्तुओं को जड़ वस्तुओं पर चढ़ाना। जड़ के साथ चेतन जैसा व्यवहार करना पाप है, एक पाखंड है, दिखावा है - इससे अंधविश्वास और अन्धश्रद्धा फैलती है जिसका परिणाम अमूल्य समय का दुरुपयोग करना है और जिसके फलस्वरूप दु:ख ही प्राप्त होता है।

---

## कम्प्यूटर पर सवार.... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

राजधानी में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में किया। देश में कंप्यूटर से आम लोगों को जोड़ने के लिए **सरकार ने इस साफ्टवेयर का मुफ्त में वितरण करने की घोषणा की है।**

दूरदराज के लोग इस साफ्टवेयर को आईटी मंत्रालय के वेबसाइट पर डाउन लोड कर सकते हैं। या फिर वेबसाइट पर उपलब्ध फार्म को भरकर डाक द्वारा मुफ्त में मंगा सकते हैं। लोकार्पण कार्यक्रम में श्रीमती सोनिया गांधी ने देश के जिन तीस हिन्दी के विद्वानों, संपादकों और पत्रकारों को साफ्टवेयर की सीडी प्रदान की उनमें 'हिन्दूस्तान' की संपादिका श्रीमती मृणाल पांडे शामिल हैं। विभिन्न भाषा में तैयार साफ्टवेयर के बाजार में आ जाने के बाद कंप्यूटर में शामिल सूचना प्रणाली पर अंग्रेजी का वर्चस्व खत्म हो जाएगा। गैर अंग्रेजी भाषा में कंप्यूटर साफ्टवेयर उपलब्ध नहीं होने के कारण देश की ९५ प्रतिशत से ज्यादा आबादी कंप्यूटर का लाभ उठाने से वंचित थी। कंप्यूटर अब विभिन्न भाषा-भाषियों के लिए सूचना का प्रिय जरिया बन जाएगा। हिन्दी की तर्ज पर सी-डैक ने संविधान द्वारा मान्य २२ भारतीय भाषाओं में साफ्टवेयर तैयार किया है। कंप्यूटर प्रणाली में विभिन्न भाषाओं पर आधारित कार्यक्रम शामिल करने की पहल को कंप्यूटर साक्षरता को बढ़ावा देने में भारी भूमिका से जोड़ कर देखा जा रहा है। सरकार का लक्ष्य २००८ तक देश को कंप्यूटर साक्षर बनाने का है। सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के संयुक्त सचिव आर.सी.चंद्रशेखर ने 'हिन्दुस्तान' से बातचीत करते हुए बताया कि सी-डैक द्वारा तैयार साफ्टवेयर उपकरणों में अंग्रेजी की तर्ज पर सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इस साफ्टवेयर के जरिए इंटरनेट के सहयोग से गैर अंग्रेजी भाषी लोग देश और दुनिया की सारी जरूरी सूचनायें और जानकारियां प्राप्त कर सकेंगे। साफ्टवेयर में उपलब्ध अन्य खूबियों में **साइबर स्पेस, मल्टी मीडिया, स्टोरेज, कोड कनवर्टर, हिन्दी ब्राउजर, हिन्दी ई-मेल, हिन्दी में स्पेल चेक, हिन्दी-अंग्रेजी शब्द-कोश और हिन्दी भाषा में वेबसाइट बनाने की सुविधा भी शामिल है।** इस सुविधा में बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल झारखंड, छत्तीसगढ़, हिमाचल, राजस्थान जम्मू काश्मीर, दिल्ली, हरयाणा और चंडीगढ़ सरीखे संघ शासित हिन्दी भाषी राज्यों में कंप्यूटर साक्षरता को भारी बल मिलने की संभावना है। देश में फिलहाल १ करोड़ ४० लाख लोग कंप्यूटर इस्तेमाल करते हैं। इस साल के अंत में इनकी संख्या पौने दो करोड़ तक पहुंच जाने का अनुमान है। करोड़ों भारतीयों का स्वप्न साकार हुआ। राजभाषा संघर्ष समिति और अन्य हिंदीसेवी संस्थाओं के प्रयास सफल हुए। अब बैंक के, डाकघर के, रेलवे के अन्य सरकारी कार्य हिन्दी में आसानी से हो सकेंगे। अधिकारियों को 'कंप्यूटर हिंदी में नहीं है' का बहाना नहीं रहेगा। आप सबको बधाई । अब हमारा कर्त्तव्य है कि अधिकारियों से हिंदी में काम करने का आग्रह करें। स्वयं भी हिंदी में काम करें।

(साभार हिन्दुस्तान)

**-श्यामलाल,** संगठन सचिव राजभाषा संघर्ष समिति, दिल्ली-८५

# महर्षि दयानन्द एक सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी थे

भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के इतिहास पर हम नजर डालें और सब महान् पुरुषों के जीवन का अवलोकन करें, चाहे वह योगी हो, संन्यास हो, देशभक्त हो, ईश्वर भक्त हो, ब्रह्मचारी व संयमी हो, महान् चरित्रवान् हो, महान् गुणवान् हो, महान राजनीतिज्ञ हो और चाहे महान् वक्ता या लेखक हो जैसे राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, शंकराचार्य, चाणक्य, कालिदास, हनुमान, भीष्म, युधिष्ठिर, सुकरात, तुलसीदास, शेर शिवा, महाराणा प्रताप, गुरु गोविंदसिंह, सुभाष, भगतसिंह, सावरकर, बिस्मिल, असफाक उल्ला, महात्मा गांधी आदि के सभी गुण यदि एक व्यक्ति में देखना चाहो तो आपको महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र और उनके किए कार्यों का अवलोकन करना पड़ेगा तो आपको उनके गुणों की सिर्फ झलक नहीं मिलेगी बल्कि काफी अधिक मात्रा में देखने को मिलेंगे। विश्व में जितने महान् पुरुष हुये हैं उनमें किसी में ईश्वरभक्ति थी तो देशभक्ति का अभाव था। किसी में ईमानदारी की पराकाष्ठा थी तो सत्य बोलने का साहस नहीं था। किसी में विद्वत्ता थी तो समझाने की तर्कशक्ति नहीं थी। किसी में कार्य करने की लगन व क्षमता थी तो उसमें दूरदर्शिता का अभाव था। किसी में ब्रह्मचर्य व संयम था तो उसमें निष्पक्षता नहीं थी। किसी में शारीरिक बल था तो आत्मिक व बौद्धिक बल का अभाव था किन्तु महर्षि एकपक्षीय न होकर सब गुणों के पुञ्ज व संगम थे। उन्होंने सिर्फ मानव जाति के लिये ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के उत्थान व सुखी बनाने के लिये जीवनभर संघर्ष किया और जहां भी व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का हास्य व पतन का कारण समझा उसी का निदान व इलाज ढूंढने का सिर्फ प्रयत्न ही नहीं किया बल्कि अपने जीवन के सुखों को त्यागकर अपने जीवन का एक-एक पल और एक-एक श्वास उसी के उद्धार व निवारण के लिये समर्पित कर दिया। इसके पीछे कारण यह था कि स्वामी जी को अपना कोई स्वार्थ नहीं था। उन्होंने तो प्राणी-मात्र के दुःख-सुख को अपना दुःख-सुख समझा और दूसरों के हित व कल्याण के लिये अपने सभी सुखों को ठोकर मार दी। ऐसा व्यक्ति जिस कार्य को करेगा उसको ईश्वर अवश्य ही सहयोग देकर सफलता प्रदान करेगा। कारण यह ईश्वरीय काम है यानि ईश्वर स्वयं भी बिना स्वार्थ के परोपकार करता है और अपनी संतान को भी यही काम करने के लिये वेदों द्वारा आदेश देता है। हम परिवारों में भी देखते हैं कि जो पुत्र पिता की इच्छा के अनुसार काम करता है तो पिता उसको अवश्य सहयोग देता है और उसकी सफलता की कामना करता है।

जब हम विश्व के इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तब त्रैता युग का एक महान् आदर्श पुरुष हमारे सामने उपस्थित होता है जिसको लोग पुरुषोत्तम श्रीराम के नाम से जानते हैं। इस महान् पुरुष को अपने पिता के आदेश के पालन के लिये अपनी धर्मपत्नी व भ्राता लक्ष्मण के साथ वनों व जंगलों में भटकना पड़ा था। उसी प्रकार इधर हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द को भी पिताओं के पिता परमपिता परमात्मा का आदेश जो वेदों में निहित है उसका पालन करने के लिये उस संदेश को घर-घर पहुंचाने के लिये अनेक कष्टों को सहते हुए वनों व जंगलों में भटकना पड़ा था। इतना ही नहीं दर-दर की ठोकरें खाईं, विष पिया, अपमान सहा, परन्तु ईश्वर के आदेश तथा अपने पितातुल्य गुरुवर विरजानंद का आदेश यानि दोनों की आज्ञा को शिरोधार्य करके जीवनभर पालन किया। श्रीराम तो अपनी पत्नी के वियोग में फूट-फूटकर रोया था किन्तु महर्षि तो एक निर्धन विधवा माता को मरे हुये जिगर के टुकड़े को बिना कफन बहाते देखा पूछने पर इसका कारण मालुम हुआ तो जो व्यक्ति अपनी बहन और प्रिय चाचा की मृत्यु पर भी इतना नहीं रोया और अपने माता-पिता व सम्पन्न परिवार को छोड़ते वक्त पीछे मुड़कर भी नहीं देखा, ऐसा कठोर संकल्पी हृदय आज देश की दयनीय, पतित दशा को देखकर सिर्फ फूट-फूटकर रोया ही नहीं बल्कि अपने जीवन में मोक्ष पाने के लिये सिर्फ समाधि द्वारा प्राप्त करने के उद्देश्य को छोड़कर देश व मानव मात्र की बिगड़ी दशा को सुधारने के लिये और मानव मात्र को मोक्ष का मार्ग बताने के लिए कर्म क्षेत्र में उतर पड़ा। श्रीराम ने तो एक अपनी धर्मपत्नी सीता को ही राक्षस रावण के चंगुल से मुक्त किया था किन्तु महर्षि ने तो लाखों करोड़ों विधवाओं का पुनर्विवाह प्रचलित करके कितने ही कामुक राक्षसों के चंगुल से बचाया था साथ ही नारी जाति को पुरुषों के समान अधिकार, सम्मान दिलाया। उसी का आज यह परिणाम है कि नारी, पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। इस उपकार के लिये नारी जाति महर्षि की सदा ऋणी बनी रहेगी।

द्वापर में एक और महापुरुष दिखाई देते हैं जिससे लोग योगिराज श्री कृष्ण के नाम से परिचित हैं। उन्होंने वेदों का संदेश गीता के रूप में सिर्फ एक अर्जुन को ही दिया था। वह भी यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के ३ या ४ मंत्रों का सार ही है किन्तु महर्षि ने तो सिर्फ चारों वेदों का ही नहीं बल्कि पूरे आर्ष ग्रन्थों के साथ-साथ रामायण, महाभारत और अठारह पुराणों का सार अपने अमर ग्रंथ ''सत्यार्थप्रकाश'' में लिखकर सारे विश्व को संदेश दे दिया। कृष्ण ने तो बारह वर्षों तक अपनी धर्मपत्नी रुक्मणी के साथ योग साधना करके योगिराज कहलाये किन्तु महर्षि ने तो पूरा जीवन योग साधना करते हुए पूर्ण ब्रह्मचर्य के साथ अपने पूरे जीवन को त्याग व तपस्या की भट्ठी में तपाकर अपने आप को कुंदन बनाया तब योगिराज कहलाये। कृष्ण ने तो गऊओं की सेवा व रक्षा चराकर की परन्तु महर्षि ने तो ''गोकरुणानिधि'' नाम की एक लघु पुस्तिका लिखकर गाय के महत्त्व को और उसकी दयनीय दशा को लोगों के सामने प्रकट किया और गऊशालाएं खुलवाकर तथा अन्य कई प्रकार से गौ के प्रति लोगों की सुषुप्त श्रद्धा भावों को पुनः जागृत करके उसकी सेवा व रक्षा की।

ब्रह्मचारियों में हनुमान और भीष्म के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। श्री हनुमानजी ने श्री राम की सेवा के लिये और भीष्म ने अपने पिता शान्तनु को प्रसन्न करने के लिये ब्रह्मचर्य का कठोर व्रत रखा था परन्तु महर्षि ने तो किसी एक व्यक्ति को खुश करने के लिये नहीं बल्कि प्राणि-मात्र को सुखी बनाने के लिये यह कठोर व्रत रखा था। इसी व्रत को रखने के कारण महर्षि ने अपने जीवन में आने वाली सभी विघ्न-बाधाओं को सरलता से पार किया और जीवन में सफलता प्राप्त की। इतिहास के पन्नों को पलटते जाते हैं तो हमें शंकराचार्य दिखाई पड़ते हैं जिसने अपनी विद्वत्ता के बल पर सिर्फ बौद्ध और जैनियों को ही शास्त्रार्थों में परास्त किया किन्तु महर्षि ने तो वेदों का ज्ञान प्राप्त करके मुसलमानों, ईसाइयों को ही नहीं पैराणिकों को भी शास्त्रार्थ में पराजित करके विश्व में फैला अज्ञान, अंधविश्वास व पाखण्ड को नष्ट किया और मानव-मात्र को ही मोक्ष का मार्ग बतलाकर सबका ही कल्याण व हित किया।

इतिहास में सत्यवादी धर्मराज के रूप में महाराजा युधिष्ठिर का नाम अग्रणी है परन्तु उसने भी अपनी विजय पाने के लिये एक झूठ बोली थी जो गुरु द्रोणाचार्य की मृत्यु का कारण बनी। किन्तु महर्षि को सत्य से हटाने के लिये कितने ही प्रलोभन, भय व लालच दिये किन्तु वह सत्य का पुजारी सत्य को कहने व करने से विचलित नहीं हुआ और यहां तक कहा कि मेरी अंगुलियों में रूई बांध कर आग लगा दो तब भी मैं सत्य ही कहूगाँ और सत्य की रक्षा के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी। विश्व के इतिहास में दया और प्रेम के लिये ईसा को विशेष स्थान प्राप्त है। परन्तु ईसा ने तो मानव-मानव के बीच दया और प्रेम करना सिखाया किन्तु मेरे प्यारे ऋषि ने तो प्राणि-मात्र से प्रेम व दया करना सिखाया। उन्होंने तो वेदों के आधार पर कहा कि जीव मात्र की आत्मा एक समान है। सब जीव ईश्वर की संतान होने के नाते सब परस्पर भाई-बहन हैं इसलिये सबके दुःख-सुख को अपना दुःख-सुख समझना चाहिये और प्रत्येक जीव की रक्षा करना ही मानव का परम धर्म बताया।

इतिहास में महाराणा प्रताप और शेर शिवाजी का नाम भी बड़े गर्व से लिया जाता है। उन्होंने तो मेवाड़ और महाराष्ट्र की स्वाधीनता के लिये मुगल बादशाहों अकबर और औरंगजेब से जीवनभर संघर्ष किया किन्तु महर्षि दयानन्द तो मानव-मात्र ही स्वतंत्र रहे, इसके पक्षधर थे। इसीलिये स्वामीजी ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा कि विदेशी राजा चाहे कितना भी अच्छा हो, माता-पिता तुल्य प्रेम रखता हो फिर भी अपने स्वदेशी राजा के समान नहीं हो सकता। इसी से प्रेरणा पाकर लोकमान्य तिलक ने कहा कि ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' और क्रान्तिकारियों के गुरु श्याम कृष्ण वर्मा भी स्वामीजी के ही शिष्य थे और उन्हीं के आदेश से वे भारतीयों के हृदय में स्वतन्त्रता की ज्वाला को प्रज्वलित करने के लिये लंदन गये थे और वहाँ जाकर इंडिया हाउस की स्थापना की थी। वीर सावरकर, मदनलाल धींगड़ा, उधमसिंह आदि ने उसी से क्रान्तिकारी बनने का पाठ पढ़ा था। सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, बिस्मिल, असफाक उल्ला आदि भी स्वामीजी से ही प्रेरणा पाकर क्रान्तिकारी बने। इसलिये हम स्वामीजी को क्रान्तिकारियों का पथ-प्रदर्शक कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आधुनिक समय में महात्मा गांधी को सबसे बड़ा महान् पुरुष माना गया है। उनके भी अधिकतर कार्यक्रम महर्षि के दर्शाये मार्ग के अनुसार ही थे जैसे अछूतोद्धार, नारीशिक्षा, खद्दर का प्रयोग, स्वतन्त्रता पाने की लगन आदि महर्षि से ही सीखे थे। गांधी ने स्वयं ही कहा है- मैं जहाँ-जहाँ गमन करता हूँ वहाँ-वहाँ मुझे महर्षि दयानन्द के ही चरणारविन्द दृष्टि गोचर होते हैं। गांधी जी के गुरु गोपाल कृष्ण गोखले, गोखलेजी के गुरु के गुरु महर्षि दयानन्द हुए। गांधीजी ने तो अपने हत्यारे गोडसे को फाँसी न देने की ही कही थी किन्तु महर्षिजी ने तो अपने हत्यारे जगन्नाथ को पाँच सौ रुपये देकर प्राण रक्षा का रास्ता भी बता दिया था। इस प्रकार अहिंसा और क्षमा करने में महर्षिजी, गांधीजी से कहीं अधिक आगे निकल जाते हैं।

भारत के इतिहास में गुरु गोविन्दसिंह का नाम भी बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है। जिसने दुष्ट औरंगजेब के अन्याय को दमन करने के लिये गुरु नानक के चलाये हुए सिक्ख पंथ में अपनी बुद्धि व साहस के बल पर एक विशेष वीरता व क्रान्ति का संचार किया जिससे वे औरंगजेब के अन्याय व अधर्म को मिटाने में सफल हुए। किन्तु सिक्ख भाइयों के लिए अब करने के लिए कोई विशेष कर्त्तव्य बाकी नहीं रहा और आज वह एक सम्प्रदाय बनकर रह गया। किन्तु महर्षि ने ब्राह्मण वर्ग द्वारा जो अज्ञान, पाखंड व अंधविश्वास को अपना पेट भरने के लिये देश में फैला रखा था वेद ज्ञान के प्रचार से उसको समाप्त करने का जीवनभर प्रयत्न किया साथ ही हिन्दू समाज में व्याप्त, बुराइयाँ, कुरीतियाँ, कुप्रथाएं व जातिवाद के ऊँच-नीच के भाव, नारीजाति के प्रति असमानता के भाव आदि मिटाने के लिये ''आर्यसमाज'' जैसी परोपकारी, राष्ट्रवादी व धार्मिक संस्था

( शेष पृष्ठ ६ पर )

# ............और धोती जीत गई

२१ अगस्त के सर्वहितकारी में राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर द्वारा आर्यसमाज द्वारा विवाह करवाने पर प्रतिबंध लगवाने की याचिका खारिज करके जातिवादी पुराणपंथी लोगों के षड्यंत्र को ध्वस्त करने का समाचार प्रकाशित किया था। साथ ही अधिवक्ता वेदपाल शास्त्री का भी संक्षिप्त परिचय छापा गया था।

**"महाजनो येन गतः स पन्थाः"** सामान्यतया महापुरुष वा पूर्ववर्ती लोग जिस मार्ग पर चलते आये हैं उसी मार्ग का अनुसरण किया जाता है। किन्तु महाजनानुगत मार्ग में यदि कुछ अनुचित वा प्रतिकूल हो तो उसे छोड़कर नये मार्ग तलाशना बहादुरी का कार्य माना जाता है। पंचतंत्र में विष्णु शर्मा लिखते हैं - **"तातस्य कूप इति बुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति"** हमारे पूर्वज बाप दादा इसी कुएं का खारा पानी पीते आये हैं इसलिए हम भी पीते हैं ऐसी विचारधारा वाले लोग कायर होते हैं। वीर पुरुष इसके विपरीत जल के नये मीठे स्रोत ढूंढकर मीठा जल प्राप्त कर लेते हैं।

अधिवक्ता वेदपाल शास्त्री लिखता है कि मैंने कभी अपने पिताजी से सुना था कि-

**लीक लीक गाड़ी चले, लीक लीक चले कपूत।**
**लीक छोड़ तीनों चलें, शायर, सिंह, सपूत॥**

इसी भावना का अनुसरण करते हुए गुरुकुल से स्नातक बनकर ओ.टी. करके हरयाणा सरकार के शिक्षा विभाग की संस्कृत अध्यापक की पक्की नौकरी छोड़ी और जयपुर जाकर वकालत पढ़नी प्रारम्भ कर दी। परीक्षा पास करके १९७९ से चिड़ावा और झुझुनूं के कोर्टों में प्रैक्टिस शुरु की और १९८१ से राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर में पहुंच गया।

**(१) राजस्थान उच्च न्यायालय में हिन्दी की मान्यता :** प्रकरण प्रस्तुत करने पर संविधान के अनुसार उच्च न्यायालय की भाषा केवल अंग्रेजी कहते हुए प्रकरण को रजिस्ट्रार द्वारा लेने से मना करने पर वेदपाल शास्त्री ने दृढ़तापूर्वक अंग्रेजी में प्रकरण प्रस्तुत किये जाने पर प्रकरण इस प्रश्न के साथ न्यायपीठ के समक्ष सूचीबद्ध किया गया कि - "क्या उच्च न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग संभव है ? क्या कोई पक्षकार अथवा अधिवक्ता उच्च न्यायालय की भाषा अंग्रेजी संविधान में अभिलिखित होने के उपरान्त हिन्दी में प्रकरण प्रस्तुत करने हेतु अधिकृत है ?" निरन्तर तीन दिन जारी बहस के बाद उच्च न्यायालय द्वारा हिन्दी को उच्च न्यायालय की भाषा स्वीकार किया जाना निर्णीत हुआ। अधिवक्ता वेदपाल शास्त्री की यह पहली विजय थी।

**(२) १९९५ में सार्वजनिक अभिनन्दन :** हिन्दी को उच्च न्यायालय में मान्यता दिलवाने और हिन्दी में कार्य करने के कारण १४ सितम्बर १९९५ में हिन्दी दिवस पर उच्च न्यायालय, जयपुर के प्रांगण में आयोजित समारोह में राजस्थान के उप मुख्यमंत्री श्री हरिशंकर भामड़ा द्वारा श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए शाल ओढ़ाकर वेदपाल शास्त्री का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

**(३) १९९९ में मनु प्रतिमा प्रकरण :** राज० उच्च न्यायालय की अनुमति से लॉयन्स क्लब द्वारा न्यायालय परिसर में स्थापित मनु-प्रतिमा के सम्बन्ध में मनु विरोधियों द्वारा अनावश्यक विवाद खड़ा करने पर उच्च न्यायालय द्वारा प्रतिमा हटाये जाने के आदेश प्रदान किए जाने पर उक्त आदेश के विरुद्ध आचार्य धर्मेन्द्र महाराज, धर्मपाल आर्य दिल्ली आदि विभिन्न व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत की गई याचिकाओं की १९९० में निरन्तर १० दिन तक पूर्णपीठ के समक्ष चली बहस में **'मनोरपत्यं मानवः'** प्रतिपादित कर, मनु को प्रथम विधिप्रणेता, मनुस्मृति की व्यवस्थाएं मानवीय नैतिक मूल्यों पर आधारित भारतीय संविधान के अनुकूल होकर शाश्वतिक एवं मानवमात्र के लिए श्रेयस्कारी है, प्रमाणित किया गया था। शास्त्री द्वारा कारित बहस का उत्तर प्रतिपक्ष निरन्तर १५ वर्षीय लम्बी अवधि व्यतीत होने के उपरांत आज तक नहीं दे पाया है। उच्च न्यायालय के स्थगन आदेश की अनुपालना में प्रतिमा यथावत् न्यायालय परिसर में स्थित है।

**(४) २००१ में धोती प्रकरण :** २० फरवरी २००१ को बी.बी.सी. ने प्रमुख समाचार के रूप में प्रसारित करते हुए निरन्तर ७ मिनट तक इस निर्णय को ऐतिहासिक निर्णय कहते हुए वेदपाल शास्त्री की ऐतिहासिक विजय कहा था। बी.बी.सी. ने प्रसारित किया था - **"वह भारतवर्ष जिसे मनुस्मृति के अनुसार विश्व का गुरु कहा जाता है, में स्वतंत्रता के अर्धशताब्दी पश्चात् भी किसी संभ्रान्त नागरिक को पैंट पहनने के लिए बाध्य किया जाता है। धन्य हैं वे स्वामी ओमानन्द सरस्वती जिन्होंने गुरुकुल झज्जर जैसी संस्थाएं स्थापित कर वेदपाल शास्त्री जी जैसे राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत शिष्य राष्ट्र को समर्पित किए जो चट्टान से टकराये।"**

२२ फरवरी २००१ के हिन्दुस्तान टाइम्स ने लिखा था

## And the prize goes to the dhoti

FOR FIVE days, the proceedings of the Rajasthan High Court (HC) got entangled in the folds of a dhoti.

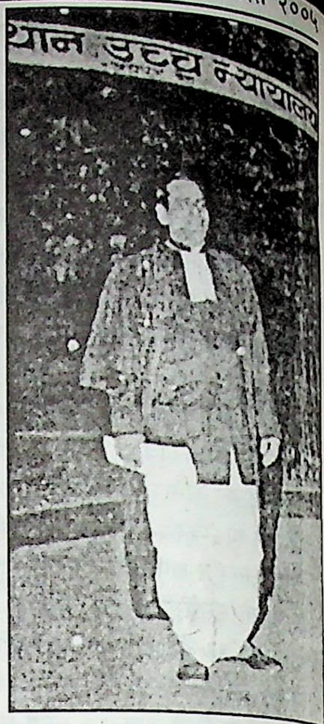
The deadlock could be resolved on Tuesday only after the Court acknowledged dhoti as part of its sartorial etiquette.

The whole saga began with a bail application that came up for hearing in the court of Justice Rajaram Yadav last week and led to an interesting debate on the dress code for lawyers.

This happened after Justice Yadav objected to the lawye, who was arguing the case, wearing a dhoti.

Saying that lawyers were required to stick to a dress code, which did not include the dhoti, the HC judge asked Vedpal Shastri, the lawyer concerned, to change to trousers.

Shastri, however, contended that dhoti was indeed mentioned in the dress code for lawyers prescribed in 1961 by the Bar Council of India.



**Advocate Vedpal Shastri in his now famous *Dhoti* outside Rajasthan High Court.**

After a high-voltage debate which had all the ingredients of a Bollywood courtroom drama, the Court agreed to allow lawyers wearing dhoti to argue their case.

The nearly 25 page judgement, which would also be reported in law journals, came after a marathon six-hours debate.

The lawyer argued that the Bar Council had the authority to prescribe the dress code for lawyer, subject to the prior permission of the Chief Justice of India, under sub clause 1 GG of Section 49.

Under this section the Council has mentioned gown, black coat, band with dhoti or trousers as the uniform for lawyers.

On the forwarding of this argument, Justice Yadav asked the lawyers if prior permission for defining the dress code had been taken from the chief Justice of India.

Shastri also argued that assuming that the Bar Council of India rules were not applicable, then Rule 439 of Rajasthan High Court would prevail.

Shastri argued that while Rule 491 of the High Court, and Rule 46 of the Criminal Prosecution rules mentioned gown, black coat and band as the part of the dress code, they were silent on whether a dhoti or trousers could be worn with them.

The case was, however, decided in the favour of dhoti only after a fax, mentioning that the prior permission of the Chief Justice had indeed been taken on January 18, 1980 by the Bar Council, was presented before the Court.

**It was a significant victory for Shastri,** who had taken a vow during his college days to wear dhoti and use **Hindi in his professional life.**

Shastri had earlier entered into a debate with the Court after a bail application filed by him **in Hindi was** disallowed. Accepting his argument, the Court had then allowed the use **of Hindi language** for filling applications.

२२ फरवरी २००१ के दी हिन्दू की टिप्पणी :

## Lawyer allowed to plead in dhoti

**JAIPUR, FEB.21.** Can a lawyer wear dhoti while appearing in the Court for arguing a case? Yes, says the Rajasthan High Court. In the first verdict of its kind, the court has ruled that the lawyers uniform includes dhoti.

The matter was taken up by Mr. Justice R.R. Yadav who had initially taken objection to a lawyer, Mr. Vedpal Shastri dressed in dhoti while appearing before him in a criminal case. When Mr. Shastri asserted that it was permitted in the rules framed under the Advocates Act 1961, the court ordered a detailed hearing on the issue.

During the six-hour-long hearing spread over three days, Mr. Shastri contended that while the Rajasthan High Court Rules, Civil Rules and Criminal Rules were silent on any dress except gown, coat and bands, the rules framed by the Bar Council of India under the Advocates Act had specifically prescribed black gown, coat, trousers and dhoti as the lawyers uniform.

Mr. Shastri told the court that the Bar Council of India had obtained sanction from the chief Justice of India for framing these rules on january 17, 1980. The lawyers representing the Bar Council of India and the Bar Council of Rajasthan also pointed out that several senior advocates had worn dhoti in the court as a tradition and as a mark of respect to the Indian dress.

Mr. Justice Yadav in his judgement delivered on Tuesday decreed that the rules on uniform framed under the Advocates Act shall override all other rules. Consequently, Mr. Shastri was allowed to wear dhoti while appearing in the court.

Significantly, the rules framed by the Bar Council of India also incorporate other Indian dresses such as achkan and pyjama in the lawyer's uniform. This is probably the first judgement of a High Court putting a seal of approval on the rules regarding lawyer's uniform.

A jubilant Mr. Shastri told this correspondent that he had taken a pledge to use Hindi in the court proceedings and wear traditional Indian dresses after getting the "Shastri" degree. He has been continuously wearing dhoti for the past 22 years of his legal practice.

Interestingly, the High Court is yet to hear the matter relating to grant of bail to an accused, for which Mr. Shastri had appeared in the court.

२१ फरवरी २००१ की राजस्थान पत्रिका लिखती है :

## ....................और धोती जीत गई

जयपुर। अदालत में अधिवक्ता धोती पहनकर वकालत कर सकता है। उच्च न्यायालय ने इस मुद्दे पर तीन दिन चली बहस के बाद मंगलवार को वकीलों की पोशाक में धोती को शामिल माना।

उच्च न्यायालय में पिछले शुक्रवार से शुरु इस प्रकरण पर करीब छह घंटे तक बहस हुई। अदालत के अधिवक्ता वेदपाल शास्त्री के धोती पहनकर आने पर आपत्ति की थी। अधिवक्ता शास्त्री और बार कौंसिल के सदस्यों ने पोशाक के सम्बन्ध में विभिन्न कानूनों एवं नियमों का हवाला दिया।

शास्त्री का कहना था कि वकीलों की पोशाक के बारे में राजस्थान उच्च न्यायालय नियम (४३९), सिविल रूल्स (४९१) और क्रिमिनल रूल्स (४६) में सिर्फ गाउन एवं कोट के साथ बैंड का उल्लेख है। नीचे के परिधान के सम्बन्ध में नियम मौन है। शास्त्री का कहना था कि अधिवक्ता अधिनियम १९६१ के तहत बने नियमों में धोती का उल्लेख है। अधिवक्ता अधिनियम की धारा ४९(१)(जीजी) के तहत बार कौंसिल ऑफ इंडिया (भारतीय विधिज्ञ परिषद्) को इस सम्बन्ध में भारत के मुख्य न्यायाधीश की पूर्वानुमति से नियम बनाने की शक्ति प्रदान की गई है।

बार कौंसिल ऑफ इंडिया ने प्रस्ताव ११६/७८ के माध्यम से उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय, अधीनस्थ अदालतों और अधिकरणों के समक्ष उपस्थित होने के लिए अधिवक्ताओं के लिए पोशाक का प्रावधान किया है। इस प्रावधान के तहत पुरुषों के लिए काले कोट और गाउन के साथ पेंट या धोती का नियम है। न्यायाधीश राजाराम यादव ने अधिवक्ता से यह जानना चाहा कि उक्त नियम बनाने के लिए भारत के मुख्य न्यायाधीश की अनुमति कब ली गई।

अधिवक्ता शास्त्री ने मंगलवार को अदालत को बताया कि बार कौंसिल ने भारत के मुख्य न्यायाधीश से १७ जनवरी १९८० को स्वीकृति प्राप्त कर ली थी।

उनका कहना था कि परम्परा के अनुसार भी राजस्थान उच्च न्यायालय में पूर्व में वरिष्ठ अधिवक्ता धोती में पैरवी करते रहे हैं। राज्य के विख्यात अधिवक्ता स्वर्गीय मुकुट बिहारी भार्गव भी धोती पहनकर पैरवी किया करते थे। धोती को भारतीय परिधान स्वीकार किया गया है इसलिए उन्हें धोती में पैरवी की अनुमति दी जाए। बार कौंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य आर.के. माथुर और राजस्थान बार कौंसिल के सदस्य एस.के.गुप्ता ने इन तथ्यों की पुष्टि की। सुनवाई के बाद न्यायाधीश यादव ने बार कौंसिल के नियमों के परिप्रेक्ष्य में माना कि वर्दी सम्बन्धी अन्य नियमों पर अधिवक्ता अधिनियम के तहत बने कौंसिल के नियम प्रभावी होंगे। न्यायालय ने अधिवक्ता शास्त्री को धोती में पैरवी की अनुमति प्रदान कर दी। **उल्लेखनीय है कि अधिवक्ता शास्त्री ने गुरुकुल (झज्जर) से शास्त्री उत्तीर्ण करने के बाद दीक्षांत समारोह में भारतीय परिधान पहनने और हिन्दी का प्रयोग करने की शपथ ली थी। इसके बाद से वे 'धोती' ही पहनते हैं और इसी पोशाक में पिछले २२ साल से वकालत कर रहे हैं। उच्च न्यायालय में वे हिन्दी में ही वाद पेश करते हैं और पैरवी करते हैं।** इस बीच कुछ अधिवक्ताओं ने बार एसोसिएशन के अध्यक्ष को ज्ञापन देकर इस मामले में एसोसिएशन की साधारण सभा बुलाने की मांग की थी।

इस धोती प्रकरण का पूरा विवरण इस प्रकार है :

अधिवक्ता वेदपाल शास्त्री धोती पहनकर न्यायालय में उपस्थित होते हैं एक दिन राजस्थान उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधिपति श्री राजाराम यादव द्वारा उन्हें न्यायालय में यह कहा गया कि आप धोती पहनते हैं, धोती अधिवक्ता की वर्दी नहीं है आप पेंट पहनकर आइये, वर्दी में आने पर ही आपको सुन सकते हैं। अधिवक्ता शास्त्री द्वारा यह निवेदन किया गया कि मेरे लिये पेंट पहनना संभव नहीं है तथा अधिवक्ता की पोशाक में धोती भी सम्मिलित है। शास्त्री का तर्क था कि राजस्थान उच्च न्यायालय के नियम ४३९ में अधिवक्ता की पोषाक निर्धारित है जिसके अंतर्गत अधिवक्ता के लिये काला कोट, गाउन एवं बैंड धारण करना अनिवार्य है। इन नियमों में पेंट का प्रावधान नहीं है। माननीय न्यायाधीश द्वारा शास्त्री से कहा गया कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय में भी एक अधिवक्ता धोती पहनकर आये थे। ७ दिन की अवधि की बहस पश्चात् उन्हें अर्थदण्ड से दंडित करते हुये उन्हें धोती में पैरवी करने की अनुमति नहीं दी गयी। आप तैयार होकर आइये, आपको कल सुना जायेगा। दूसरे दिन भी माननीय न्यायाधीश द्वारा श्री शास्त्री के खड़े होते ही उनसे कहां गया कि आप धोती में है या पेंट में? शास्त्री द्वारा विनम्रतापूर्वक कहा गया है कि मैं पूर्व में निवेदन कर चुका हूँ कि मेरे लिये पेंट पहनना संभव नहीं है मैं धोती में हूँ। माननीय न्यायाधीश द्वारा उनसे यह कहा गया कि आप इलाहाबाद का केस देखकर आये हैं? शास्त्री द्वारा निवेदन किया गया कि मेरे लिये इलाहाबाद का केस देखना आवश्यक नहीं है। नियमों में प्रावधानित व्यवस्था के अनुसार में प्रमाणित कर दूँगा कि धोती अधिवक्ता की पोषाक है और मैं धोती पहनकर वकालत कर सकता हूँ। इस पर माननीय न्यायालय द्वारा पुनः इलाहाबाद के प्रकरण की चर्चा करते हुये यह कहने पर कि आपकी धोती में पैरवी की अनुमति नहीं दिये जाने पर क्या होगा? शास्त्री द्वारा कहा गया कि वह माननीय न्यायालय के निर्णयों के विरुद्ध खंडपीठ एवं उच्चतम न्यायालय में धोती धारण करने के लिये संघर्ष करेगा। वहां पर भी सफलता नहीं मिलने पर भारतीय संसद में इस विषय को अधिनियमित करने का प्रयास करेगा। किंतु धोती पहनना नहीं छोड़ेगा।

**मानवीय जीवन का अंतिम ध्येय भारतीय संस्कृति में मोक्ष माना गया है वकालत करना मानव जीवन का अंतिम ध्येय नहीं है। धोती के प्रतिकूल निर्णय होने पर वह वकालत छोड़ने के लिये तैयार है किंतु धोती पहनना नहीं छोड़ेगा।** न्यायालय द्वारा पुनः उन्हें दूसरे दिन सुना जाना आदेशित कर दिया गया। दूसरे दिन शास्त्री के खड़े होने पर न्यायालय द्वारा फिर वही प्रश्न किया गया कि आप पेंट पहने हुये हैं या धोती? शास्त्री द्वारा पेंट पहनने के विषय में पहले वाली बात दोहरायी तथा स्पष्ट रूप से कहा कि इलाहाबाद के ७ दिन के स्थान पर आप मुझे ७ मिनट सुन लेवें। मैं यह पूर्णतया प्रमाणित कर दूँगा कि धोती अधिवक्ता की पोषाक है तथा धोती धारण करके माननीय न्यायालय को संबोधित कर सकता हूँ। शास्त्री ने इस संबंध में विविध प्रावधानों का उल्लेख करते हुये सिविल नियम ४९१ अपराधिक नियमों का नियम ४९ आदि आदि का उल्लेख करते हुये अधिवक्ता अधिनियम १९६१ के अंतर्गत निर्मित नियमों में अधिवक्ताओं की पोषाक में धोती का उल्लेख होना निवेदित किया था स्पष्ट रूप से न्यायालय में तर्क दिया गया कि अधिवक्ता अधिनियम की धारा ४९(ii) (gg) के अन्तर्गत भारतीय विधियक परिषद् (Bar Counsil of India) को अधिवक्ता के संबंध में भारत के मुख्य न्यायाधिपति की पूर्वानुमति से नियम बनाने की शक्तियाँ प्रदत्त की गयी हैं। भारतीय विधिज्ञ परिषद् ने अपने प्रस्ताव संख्या ११६/७८ के माध्यम से उच्चतम न्यायालय, अधीनस्थ न्यायालय एवं अधिकरणों में तथा अन्य शासकीय प्राधिकारियों के समक्ष उपस्थित होने वाले अधिवक्ताओं के लिये पोषाक का प्रावधान किया गया है। प्रावधान के अंतर्गत अधिवक्ताओं के लिये काला कोट, गाउन, बैंड के साथ पेंट या धोती धारण किये जाने का प्रावधान है। माननीय न्यायाधिपति श्री राजाराम यादव ने शास्त्री से यह जानना चाहा कि क्या भारतीय विधिज्ञ परिषद् ने नियम बनाने से पूर्व भारत के मुख्य न्यायाधिपति से अनुमति ली थी कृपया उसकी तारीख बतावें? उक्त तारीख के अभाव में वे भारतीय विधिज्ञ परिषद् द्वारा बनाये गये नियमों को रद्दी कागज मानते हैं। इस पर शास्त्री का तर्क था कि भारतीय विधिज्ञ परिषद् द्वारा नियमानुसार नियमों में विहित प्रक्रिया की अनुपालना करते हुये ही नियम बनाये हैं तथा उन्हें प्रकाशित भी हुये २ दशक से ज्यादा समय व्यतीत हो चुका है। फलस्वरूप माननीय न्यायालय यह उपधारणा करने की कृपा करे कि उक्त नियम बनाने से पूर्व माननीय भारतीय मुख्य न्यायाधीश की पूर्व अनुमति ली गई है। यदि माननीय न्यायालय भारतीय विधिज्ञ परिषद् द्वारा निर्मित नियमों को स्वीकार नहीं करें तथा उन्हें रद्दी कागज मानते हैं तो उस स्थिति में राजस्थान उच्च न्यायालय का नियम ४३९ स्वतः प्रभावी हो जाता है जिसके अंतर्गत अधिवक्ताओं की पोषाक में केवल मात्र काला कोट, गाउन और बैंड का ही प्रावधान है। उक्त नियम के अनुसार पेंट पहनना अनिवार्य नहीं होने के कारण मुझे धोती में पैरवी करने की अनुमति प्रदान की जाये। शास्त्री का तर्क था कि उच्च न्यायालय में पैरवी करने वाले अधिवक्ताओं के लिये पोषाक के विषय में राजस्थान उच्च न्यायालय का नियम ४३९ प्रभावी होगा तथा उक्त नियम के अंतर्गत भी माननीय न्यायालय में पेंट धारण करने के लिये बाध्य नहीं कर सकते। प्रकरण की सुनवाई पुनः अगले दिन के लिये स्थगित करते हुये माननीय न्यायाधीश द्वारा श्री शास्त्री से कहा कि वे भारतीय उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश द्वारा भारतीय विधिज्ञ परिषद् को नियम बनाने से पूर्व प्रदान की गयी अनुमति की तारीख से कल न्यायालय को अवगत करावें। अगले दिन शास्त्री द्वारा माननीय न्यायालय को बताया गया कि १७ जनवरी १९८० को भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा भारतीय विधिज्ञ परिषद् को पूर्वोक्त नियम के लिये अनुमति प्रदान कर दी गयी थी। **शास्त्री का तर्क था कि विधिक प्रावधानों एवं परम्पराओं के अनुसार भी स्वतंत्र भारत में किसी भी अधिवक्ता को धोती धारण कर पैरवी करने से नहीं रोका जा सकता। धोती भारतीय परिधान है तथा भारत की सांस्कृतिक धरोहर है। फलस्वरूप किसी भी भारतीय के लिये धोती पहनना गौरव का विषय होकर भारतीय पहचान है।** शास्त्री द्वारा न्यायालय में यह भी प्रकट किया गया कि **वह गुरुकुल झज्जर (हरयाणा) का स्नातक है।** वहां से

सर्वहितकारी

स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उस द्वारा भारतीय परिधान पहनने और हिन्दी का प्रयोग करने की शपथ ली थी। पूर्वोक्त बहस के उपरांत राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा चार दिन तक चली बहस के पश्चात् अधिवक्ताओं की पोशाक में धोती धारण करना स्वीकार करते हुए बहस की अनुमति दी तथा स्वयं के निर्णय में यह अभिनिर्धारित किया कि **लघुतम न्यायालय से उच्चतम न्यायालय तक अधिवक्ता धोती पहनकर पैरवी कर सकते हैं।** अधिवक्ताओं द्वारा धोती धारण कर पैरवी करने के संबंध में उच्च न्यायालय का यह प्रथम ऐतिहासिक निर्णय है। राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा इस विषय में १४ पृष्ठ का निर्णय न्यायालय में ही लिखा गया। निर्णय लिखने के पश्चात् शास्त्री द्वारा धोती के संबंध में इस ऐतिहासिक निर्णय को प्रतिवेदनीय (Reportable) किये जाने का भी अनुरोध करते हुये न्यायालय से निवेदन किया कि माननीय न्यायालय उक्त ऐतिहासिक निर्णय को प्रतिवेदित भी करने की कृपा करे। परिणामस्वरूप भविष्य में किसी भी अधिवक्ता भ्राता को धोती धारण के संबंध में असुविधा का सामना नहीं करना पड़े। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व १९९१ में भी शास्त्री को हिन्दी के स्थान पर आंग्ल (English) भाषा में राजस्थान उच्च न्यायालय में याचिका अथवा आवेदन प्रस्तुत करने के लिये बाध्य किये जाने का प्रयास किया गया था उस संबंध में भी शास्त्री ने दृढ़तापूर्वक आंग्लभाषा का प्रयोग करने से इंकार करते हुये हिन्दी में ही याचिका, आवेदन, अपीलें अथवा अन्य कार्यवाही किये जाने हेतु अनुमति प्रदान की गयी थी।

**१३ अगस्त २००५ के पत्र में वेदपाल शास्त्री ने लिखा है :** मैं प्रतिदिन दोनों समय नियमित रूप से सन्ध्या व हवन करता हूं। चाचाजी! लीक से हटकर चलना अत्यधिक कंटकाकीर्ण एवं संकटापन्न मार्ग है किन्तु पैतृक एवं आप जैसे पूर्वजों से वंशानुक्रम में प्राप्त पारिवारिक संस्कार जिन्हें गुरुकुलीय प्रणाली में अध्ययन के समय ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी महाराज द्वारा अत्यधिक पल्लवित एवं पुष्पित कर विकसित किया है, लीक से हटकर चलने के लिए सदैव प्रेरित करते हैं।

## महर्षि दयानन्द सर्वांगीण .....

(पृष्ठ ३का शेष)

की स्थापना सन् १८७५ ई० मुम्बई शहर में की जिसके द्वारा यह सब कार्य किये गये और अब भी किये जा रहे हैं। आर्यसमाज का काम तब तक चलता रहेगा जब तक प्राणि-मात्र पर मनुष्यों द्वारा अत्याचार करना बंद नहीं होगा। मानव सही मानव यानि वेद के उपदेश के अनुसार "मनुर्भव" नहीं बन जाता, मनुष्य अपने स्वाभाविक शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि दुर्गुणों से छुटकारा नहीं पा लेता और दया, करुणा, परोपकार, ईमानदारी, निष्पक्षता, सत्य, अहिंसा आदि सद्गुणों को धारण नहीं कर लेता और वेदों के मार्ग पर चलकर अपना व दूसरों का जीवन सुखी व शान्तिप्रद नहीं बना लेता और मोक्ष मार्ग पर चलना प्रारम्भ नहीं कर देता तब तक आर्यसमाज को ईश्वरीय ज्ञान वेदों के प्रचार करने की आवश्यकता बनी रहेगी।

इस प्रकार हमने देखा कि विश्व में हुए महापुरुषों में जो गुण पायें गये हैं वे तथा अन्य गुण और अधिक सार्वभौम रूप में प्राणि-मात्र के कल्याण व हित की दृष्टि से महर्षि दयानन्द में पाये जाते हैं। ऐसी महान् आत्मा अब जहाँ कहीं पर भी हो उसको मैं नत मस्तक होकर अपनी श्रद्धा व प्रेम के भाव समर्पित करते हुए नमन करता हूँ। **-खुशहाल चन्द्र आर्य,**

१८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता

## आज अष्टमी आई

योगेश्वर की याद दिलाने आज अष्टमी आई।
जन्म लिया मथुरा नगरी के काले कारागार में,
खेले कूदे खिले फूल से जसुमति के परिवार में,
रूठे, रोए, माने, मचले की हरक़त मन भाई।
योगेश्वर की याद दिलाने.......................

आखिर पहुँचे मथुरा नगरी कंस ने जाल बिछाया था,
मुष्टिक और चाणूर मार बालक ने रंग जमाया था,
भरी सभा में कंस पछाड़ा पाप की हुई सफाई।
योगेश्वर की याद दिलाने.......................

संदीपन गुरु के आश्रम में सखा सुदामा को पाया,
बने द्वारिकाधीश आप फिर भी उनको न बिसराया,
बचपन की मित्रता खूब जीवन पर्यन्त निभाई।
योगेश्वर की याद दिलाने.......................

जरासंध, शिशुपाल सरीखे अन्यायियों को मार दिया,
चक्र सुदर्शनधारी ने था भू का हल्का भार किया,
न्याय नीति से राज्य चलाया, सकल प्रजा हर्षाई।
योगेश्वर की याद दिलाने.......................

सम्मुख लख परिवार वीर अर्जुन को जब मोह ने घेरा,
फेंक दिया गांडीव शिथिल तन रणभूमि से मुख फेरा,
मोह अंधेरा दूर भगाया 'गीता' की ज्योति जलाई।
योगेश्वर की याद दिलाने.......................

नीति-निपुण, भारत-हित-चिंतक सोलह कला निधान थे,
सकल गुणों की खान थे वे अद्भुत पुरुष महान् थे।
चलें उन्हीं के पदचिह्नों पर इसमें छिपी भलाई,
यही संदेश सुनाने आर्यो आज अष्टमी आई।

**-डॉ० सुशीला आर्या,** चरखी दादरी

## धर्मपाल आर्य की जयन्ती मनाई

जुआं गांव जिला सोनीपत में स्थित शुभम विद्यालय के प्रांगण में शनिवार को प्रसिद्ध आर्यसमाजी स्व० धर्मपालसिंह आर्य का जन्मदिवस मनाया गया। इस दौरान उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए प्रसिद्ध आर्यसमाजी एवं समाज सेवक मा० खजानसिंह आर्य ने धर्मपाल आर्य जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि-'भारत को आज जरूरत है, धर्मपाल आर्य जैसे विद्वानों की, बलवानों की।' आर्यसमाज की सेवा करते हुए १९८१ में उनका स्वर्गवास हो गया था। वे केदारसिंह आर्य के विशेष मित्र तथा पूर्व प्रधान धर्मसिंह के सगे भाई थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्यसमाज जुआं के प्रधान वेदसिंह आर्य ने की।

आर्यसमाज जुआं के मंत्री डॉ० जिलेसिंह ने धर्मपाल आर्य के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि धर्मपाल आर्य ऋषि दयानन्द के अनन्य भगत थे तथा स्व० स्वामी ओमानन्द जी की प्रेरणा से उन्होंने आर्यसमाज का बीड़ा उठाया था। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में धर्मपाल जी ने भाग लिया था तथा इनकी धर्मपत्नी श्रीमती सत्यावती तथा सुपुत्र मुख्याध्यापक जितेन्द्र आर्य तथा हितेन्द्र आर्य भी उनके पदचिह्नों पर चलते हुए समाज के कार्यों में लगे हुए हैं। श्री धर्मपाल आर्य की स्मृति में यज्ञशाला बन चुकी है। उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज जुआं में स्मारक के रूप में भक्त फूलसिंह की स्मृति में अतिथियज्ञ एवं आर्य वैदिक औषधालय निर्माणाधीन हैं। जिसका शिलान्यास चौ० मित्रसेन आर्य द्वारा किया गया था, जबकि दीनबन्धु सर छोटूराम वैदिक व्यायामशाला आर्यसमाज के प्रयास से १९८३ से चल रही है। जिसका फायदा उठाते हुए गांव के पहलवान देश व विदेश में गांव का नाम रोशन कर रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व ही गांव के राजबीर सिंह छिक्कारा ने गोल्ड मैडल जीतकर गांव का ही नहीं पूरे देश का नाम रोशन किया है। इसके अलावा सैकड़ों युवक व्यायामशाला से अभ्यास कर ही पुलिस व फौज में देश की सेवा कर रहे हैं।

## दस बातों का जीवन में असर रहता है

१. **जाति, आयु, भोग :** यह तीन चीजें ईश्वर तय करता है। यह इंसान के वश में नहीं। कौन सी **जाति** में जन्म होगा, ईश्वर की न्याय व्यवस्था में होता है, **आयु** कितनी होगी, हर योनि की आयु अलग होती है। **भोग** कैसा मिलेगा, हर योनि का खान-पान, रहन-सहन अलग-अलग होता है।
२. **स्थान का महत्त्व :** प्रायः देखा गया है कि महापुरुषों का जन्म नदी के किनारे या शांत वातावरण वाले स्थान में होता है। अतः स्थान का महत्त्व भी होता है।
३. **लालन-पालन :** जिस तरह का लालन-पालन रहता है उसी प्रकार का जीवन बन जाता है। अंग्रेज भारत में पले या एक भारतीय अंग्रेज के पास पले उसी की आदत बन जाती है।
४. **मौसम का असर :** मौसम का असर रहता है जैसे पहाड़ी लोगों को गुस्सा कम आता है। मैदानी लोगों को गुस्सा ज्यादा आता है यह मौसम के अनुसार ही चलता है।
५. **खानपान का असर :** खानपान का असर भी रहता है। जैसा अन्न होता है वैसा मन बन जाता है यह कहावत भी बहुत पुरानी है।
६. **संग का असर :** जीवन में जैसा संग रहता है उसी तरह का व्यवहार इंसान का बन जाता है अच्छा हो तो सत्संग और बुरा तो कुसंग बनता है।
७. **राजा का असर :** जिस देश में जन्म होता है वहां के कानून कैसे हैं उसका असर बहुत ज्यादा होता है।
८. **काम का असर :** जैसा काम होता है उसी तरह का निभाना भी पड़ता है। गलत काम भय बनाकर रखता है और ठीक काम भयमुक्त रहता है। भय को धीमी मौत भी कहा जाता है।
९. **कमाई का असर :** जैसी कमाई घर में आती है उसी तरह का खर्चा भी बढ़ जाता है गलत कमाई गलत राह अपने आप बना लेती है।
१०. **व्यवहार का असर :** जैसा व्यवहार आप करते हैं दुनिया उसी का बदला चुकाती है यह संसार कुएं की आवाज है।

-ओमप्रकाश अग्रवाल

## स्मारिका का विमोचन

गुरुकुल झज्जर यज्ञशाला में श्रावणी पर्व कार्यक्रम में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर स्मारिका २००५ का विमोचन सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत जी आचार्य तथा गुरुकुल झज्जर के संचालक आचार्य विजयपाल जी ने किया। मंच संचालक प्रि० राजकुमार आचार्य ने संक्षेप में स्मारिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मदशिके द्वारा समय-समय पर यज्ञ-अभिनंदन कार्यक्रम होते रहते हैं। इसमें १५ अगस्त १९९८ से १ मई २००५ तक किए गए कार्यक्रमों का समावेश विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन तथा महत्त्वपूर्ण छायाचित्रों के साथ है।

## आर्यसमाज नजफगढ़ नई दिल्ली-४३ का चुनाव सम्पन्न

प्रधान-कै० ओमप्रकाश आर्य, मंत्री-डा० सत्येन्द्रकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष-डा० बी.डी. लाम्बा।

-ओमप्रकाश आर्य, प्रधान

**बीड़ी, सिगरेट पीना एवं तंबाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। कृपया इनसे दूर रहें।**

# वेद में सफल जीवन और उषावेला की महिमा

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

**महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।**
**यथा चित्रो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥ साम० ४२१॥**
**ऋषि :- सत्यश्रवाः आत्रेयः॥ देवता-उषाः॥ छन्दः-पङ्क्तिः॥**

इस मन्त्र में उषःकाल का बहुत ही चमत्कारपूर्ण प्राकृतिक सौन्दर्य और प्रभाव का वर्णन किया गया है। दूसरे क्रम पर ब्राह्ममुहूर्त में जागकर आवश्यक कार्यों से निवृत्त होना सफलता और स्वास्थ्य दोनों दृष्टियों से ही उत्तम है। तीसरे, देवियां उषः-समय के गुणों को धारण कर घरों को सुखमय तथा शोभायुक्त बना सकती हैं।

प्रभु की इस वाणी में उषः के तीन महत्त्वपूर्ण विशेषण हैं, जो उसके उत्कर्ष पर प्रभाव डालते हैं। पहला है "सत्यश्रवसि"-ठीक-ठीक श्रवण करानेवाली। इसका भाव यह है कि प्रातः के समय शब्द दूरगामी तथा स्पष्ट सुनाई देने वाला होता है। दूसरा भाव यह भी है कि इस समय सुना हुआ शब्द भले प्रकार मनन किया जाता है। शब्द-प्रयोग का लक्ष्य भी मनन-शक्ति को उत्साह करने का ही होता है। यदि उच्चरित शब्द विचार-शक्ति को प्रभावित नहीं करते तो उनका उच्चारण और श्रवण दोनों निरर्थक हैं। इसके अतिरिक्त प्रातः स्मरण किया पाठ, शीघ्र स्मृति पटल पर अङ्कित हो जाता है और शीघ्र विस्मृत नहीं होता, अतः उषःकाल श्रवण, मनन और स्मरण के लिए सर्वोत्तम समय है।

दूसरा विशेषण है-"सुजाते"- शोभन सुन्दर जन्मवाली। उषःकाल का समय प्रकृति में शोभा और सौंदर्य को भर देता है। जिस ओर दृष्टि डालिये, इस समय का मनोहर दृश्य नयनाभिराम होता है। स्वर्णिम प्राची संसार की प्रत्येक वस्तु को सुनहरा बना रही है। बहते हुए नदी के प्रवाह में उसकी शोभा कुछ और ही प्रकार की होती है। वनस्थली की दूर्वा पर झिलमिलाते ओस कण अपना सौन्दर्य बिखेर रहे होते हैं। इस शोभा को देखकर किसी शायर ने लिखा है :-

**उफ़री शबनम ! इस क़दर नादनियां ?**
**मोतियों को घास पर फैला दिया ?**

इस समय न केवल ओस-कण दूब पर मोती से झिलमिलाते हैं, अपितु रात को वृक्षों और वनस्पतियों पर पड़ी हुई ओस की बूंद-बूंद करके टपकने लगती हैं। उधर फूल भी खिलने लगते हैं। इस दृश्य का भी किसी शायर का मनोरम शब्द चित्र देखिये :-

**दूसरों के दर्द का अहसास होता है किसे !**
**हंस दिया करते हैं गुल शबनम को रोता देखकर॥**

सब अवस्थाओं में स्वस्थ एवं सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए हमारे ऋषियों ने प्रातः जागरण की बड़ी महत्ता बताई है। हमें नित्य प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में उठना चाहिए। ब्राह्ममुहूर्त की व्याख्या में कहा गया है कि रात्रि के अन्तिम पहर का जो तीसरा भाग है उसको ब्राह्ममुहूर्त कहते हैं। निद्रा त्याग के लिए यही समय शास्त्रविहित है। प्रातः जागरण का यह नियम हमारी दिनचर्या का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है क्योंकि प्रत्येक प्रभात हमारे जीवन का प्रारम्भ काल है। जिस प्रकार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि, कर्म विरत एवं चेतना शून्य होकर निश्चेष्ट भाव से, तमोमयी कालरात्रि की गोद में समा जाती है और समय आने पर प्रकृति की प्रेरणा से उद्बुद्ध होने लगती है, उसी भांति दैनिक जीवन में भी दिनभर के परिश्रम से थके-मांदे प्राणी चेतना-शून्य होकर रात्रि की गोद में विश्राम लेते हैं और प्रातः होने पर प्रकृति की प्रेरणा से पुनः प्रबुद्ध होजाते हैं।

कभी सूक्ष्म दृष्टि से प्रातःकाल का अध्ययन कीजिए, आप देखेंगे कि उस समय का प्राकृतिक वातावरण बहुत मधुर और निराला होता है। प्रातःकाल होते ही कमल खिल उठते हैं, भंवर, गुंजार करने लगते हैं, पक्षी अपने कलरव से उपवनों और उद्यान को मुखरित कर देते हैं। शीतल मंद-मंद हवा बहने लगती है, सूर्य लालिमा लिए उदित होने लगता है। सृष्टि एक नवीन जीवन की अनुभूति से खिल उठती है।

प्रातःकाल का समय शारीरिक स्वास्थ्य, बुद्धि, आत्मा, मन आदि सभी की दृष्टि से निद्रा छोड़कर जाग जाने के लिए परम उपयुक्त है। इस समय बहने वाली वायु के एक-एक कण में संजीवनी शक्ति का अपूर्व मिश्रण रहता है। जो नर-नारी इस समय निद्रा त्यागकर तथा चैतन्य होकर इस वायु का सेवन करते हैं उनका स्वास्थ्य सौन्दर्य और आयुष्य बुद्धि को प्राप्त होता है। मन प्रफुल्लित हो जाता है एवं आत्मा में नई चेतना का अनुभव होता है। आयुर्वेद कहता है-ब्राह्ममुहूर्त में उठने से मानव को सौन्दर्य, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु आदि की प्राप्ति होती है। उसका शरीर कमल के समान सुन्दर हो जाता है।

प्रातःकाल के सूर्योदय के साथ प्राणप्रद (ऑक्सीजन) वायु स्तर में वृद्धि होने लगती है और सायंकाल सूर्यास्त होने पर प्राणपद वायु अपने स्वाभाविक स्तर से मंद पड़ जाती है। इसलिए दीर्घ जीवन का एक ही सूत्र है-जल्दी सोओ, जल्दी उठो।

सुबह-सुबह पेड़ों के वर्षा से धुले हरे-हरे पत्तों तथा उनसे लिपटी हुई लताओं को देखकर सहृदयों के मन मुग्ध हो जाते हैं। पेड़-पौधे, लताएं आदि की हरियाली दर्शनीय होती है। कभी वर्षा रुकती है तो पर्वतीय दृश्य बड़े ही सुहावने लगते हैं। उन पर लहराते हुए पेड़ तथा पेड़ों पर कलरव करते हुए पक्षी-वृन्द, झरने तथा वर्षा जल से धुले हुए पत्थर अपनी निराली शोभा से दर्शकों ने आकर्षण-केन्द्र बन जाते हैं। वर्षा ऋतु के इन सुहावने दृश्यों को देखकर तथा आकाश में छाये हुए बादलों को देखकर मयूर नृत्य करने लगते हैं, पपीहे-पी-हू-पी-हू करके अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हैं। कोयल की सुन्दर मधुर आवाज मन को मोह लेती है। कुहू-कुहू करके वह मानो पूछ रही हो कि हे प्रभो तुम कहां हो ?

अस्वस्थ-से-अस्वस्थ व्यक्ति का भी इस वेला में रोग का प्रकोप कम हो जाता है। मन में कुछ उत्साह सञ्चारित हो जाता है। इस प्रकार विचारने पर यह "सुजाता" विशेषण स-सार और सार्थक है।

इसके आगे तीसरा विशेषण है-"अश्वसूनृते"-श्रुतिमधुर शब्दों से भरपूर। यह विशेषण भी कमाल का है। इस समय नानाप्रकार के पक्षी मस्त होकर गाते हैं। कुक्कुट की उदात्त, अनुदात्त और प्लुत से युक्त तीव्र ध्वनि, कोयल की अमृतवर्षिणी स्वरलहरी, केवल ब्राह्ममुहूर्त में ही बोलनेवाली एक विशेष चिड़िया की कानों को मीठी लगने वाली ध्वनि, पौ फटने पर एक साथ चहचहाने वाले पक्षियों का कलरव और न जाने कितने प्रकार की ध्वनियां सारे वायुमण्डल को संगीतमय बना देती है। इसीलिए वेद में उषः को "अश्वसूनृते" कहकर इन विशेषणों से इस काल की भिन्न-भिन्न प्राकृतिक सुन्दरताओं का वर्णन किया।

मन्त्र में दूसरी बात है मनुष्य को निद्रा-तन्द्रा त्यागकर अपनी दिनचर्या इसी उत्तम समय से प्रारभ करनी चाहिए। ब्राह्ममुहूर्त में जागे और प्रथम आध्यात्मिक उन्नति के लिए विचारे और फिर सांसारिक कारोबार के विषय में भी सोचे। इस समय के शान्त वातावरण और स्वस्थचित्त से मनुष्य जितना अच्छा सोच सकता है उतना दूसरे समय में नहीं।

मन्त्र की तीसरी बात घरेलू तौर पर सामाजिक जीवन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि देवियां अपने जीवन में उषः के गुणों को धारण करके सारे वायुमण्डल को सुरभित, शान्त और मधुमय बना दें। देवियों में उषः का पहला गुण "सत्यश्रवसि" होना चाहिए। सत्य का अभिप्राय है वाणी और मन का अर्थ के अनुकूल होना, अर्थात् जैसा प्रमाणों से ज्ञात हुआ हो, वैसा ही ठीक-ठीक वाणी और मन में रखना सत्य है।

मीठे और शान्त वचनों से देवियां परिवार के वायुमण्डल को सरस और प्रेममय बनावें। उषः का दूसरा गुण "सुजाता" है। सब वस्तुएं साफ़-सुथरी यथास्थान हों। उषःकाल की ये सब विशेषताएं देवियों में होनी चाहिएं।

महाभारत में एक प्रसङ्ग में महर्षि व्यास ने लक्ष्मी के रूपक से कुछ महत्त्वपूर्ण बातें कहलवाई। उपयोगी समझकर उसके श्लोक यहां उद्धृत करते हैं। लक्ष्मी कहती है :-

**स्त्रीषु कान्तासु शान्तासु देवद्विजपरासु च।**
**विशुद्धगृहभाण्डासु गोधान्याभिरतासु च॥** महा० १३।४।१०

जो देवियां सुन्दर, शान्त स्वभाव, बड़ों और विद्वानों का आदर करने वाली, जिनके घर के बर्तन-भाण्डे साफ-सुथरे तथा घर की सब निर्मल-स्वच्छ गोओं तथा अन्न की पूरी देखभाल करने वाली होती है, मैं वहां निवास करती हूं।

**प्रकीर्णभाण्डामनवेक्ष्य कारिणीं सदा च भर्तुः प्रतिकूलवादिनीम्।**
**परस्य वेश्माभिरतामलज्जामेवंविधां स्त्रीं परिवर्जयामि॥११॥**

जिसके घर के बर्तन इधर-उधर फैले पड़े हों, जो बिना विचारे काम कर डालती हो, जो सदा अपने पति के प्रतिकूल चलती हो, जो दूसरों के घर अधिक रहती हो, जो निर्लज्ज हो, ऐसी स्त्री को मैं छोड़ देती हूं।

**लोलामदक्षामवलेपिनीं च व्यपेतशौचां कलहप्रियां च।**
**निद्राभिभूतां सततं शयानामेवंविधां परिवर्जयामि॥२॥**

"जो बहुत चञ्चल हो, जो फूहड़ हो, जो घमण्ड वाली हो, जो पवित्र न रहती हो, जो झगड़ालू हो, जो अधिक सोती हो, ऐसी स्त्री को मैं छोड़ देती हूं।"

**सत्यासु नित्यं प्रियदर्शनासु सौभाग्ययुक्तासु गुणान्वितासु।**
**वसामि नारीषु पतिव्रतासु, कल्याणशीलासु प्रतिप्रियासु॥१३॥**

जो सदा सत्यमार्ग पर चलती हों, जो सुन्दर और सुशीलतादि गुणों से युक्त हों, जो पतिव्रता और कल्याणशील एवं पति की प्यारी हों, मैं उनके घर रहती हूं।

इन गुणों से युक्त देवियां प्रातः घर में जागें और बच्चों को भी मीठे सम्बोधनों से पुकारकर जगावें। शौच, दातुन, योग, व्यायाम और स्नान से निवृत्त हो सब मिलकर सन्ध्यादि नित्यकर्म करें और ईश्वरभक्ति के मीठे गीत गावें।

निश्चित ही उषःकाल में जिन घरों का वायुमण्डल इस प्रकार का होगा, वहां पारिवारिक कलह-क्लेश का क्या काम? उस परिवार के व्यक्ति सुख और शान्त को प्राप्त करेंगे और बच्चों का सर्वाङ्गीण विकास होगा।

●●●

# अंधकार की निशा समाप्त नया प्रभात आरम्भ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य पूर्ण करने का आह्वान

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पदाधिकारियों का भव्य स्वागत

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सभागार में दिनांक १४ अगस्त २००५ को आयोजित स्वागत समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के पदाधिकारियों सर्व श्री सत्यव्रत सामवेदी कार्यकर्त्ता प्रधान, प्रो० कैलाशनाथ सिंह मंत्री, श्री महेन्द्रसिंह उपमंत्री, डॉ० निष्ठा विद्यालंकार उपमंत्री, श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट अध्यक्ष सार्वदेशिक न्याय सभा तथा श्री जयप्रकाश भारती पुस्तकाध्यक्ष, श्री भूपनारायण शास्त्री प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार का माल्यार्पण द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

श्री सच्चिदानंद गुप्त भू०पू० मंत्री उत्तर प्रदेश शासन एवं कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय वृंदावन ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हम और हमारा प्रदेश सार्वदेशिव सभा के पूर्ण अनुशासन में रहते हुये सम्पूर्ण विश्व में आर्यसमाज आंदोलन को सक्रियता से चला रहे हैं। सभा मंत्री श्री जयप्रकाश भारती ने स्वागत करते हुये कहा हम जीवन की अंतिम श्वास तक आर्यसमाज के कार्यक्रमों को प्रगति देने के लिए सार्वदेशिक सभा जिसके महामंत्री प्रो० कैलाशनाथ सिंह यहां उपस्थित हैं जो हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भी प्रधान हैं, अनेक संघर्षों और बाधाओं को चीरते हुये उन्होंने आर्यसमाज की ज्योति को जाग्रत रखा है उनके अनुशासित सिपाही की तरह हम प्रतिबद्ध रहेंगे।

स्वागत समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने अपने उद्‌बोधन में उपस्थित जनसमूह का आह्वान किया कि बिना किसी स्वार्थ, पद के आर्यसमाज के प्रति समर्पण भाव से हम सबको विश्व में कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य पूर्ण करना है। पिछले दशकों में सार्वदेशिक पार्टी बंदी के अंधकार से लिप्त हो गयी थी फलतः सर्वत्र अज्ञान अंधकार लोभ लालच, जातिभेद वर्ण भेद, नारी का अपमान समाज में व्याप्त हो गया था। सौभाग्य से वह अंधकार के बादल समाप्तप्राय हो गये हैं। सभा मंत्री प्रो० कैलाशनाथ सिंह के नेतृत्व में हम सबने महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुरूप समाज के निर्माण का संकल्प लिया है। हम सबने शपथ ली है कि हम कुर्सी से चिपककर नहीं आर्यसमाज आंदोलन के प्रति निष्ठा और लगन से आजन्म लगे रहेंगे और निरन्तर युवा पीढ़ी को आगे लाने के लिए उन्हें पदों पर बैठाकर प्रतिभा के आकलन द्वारा समाज के निर्माण की बागडोर उन्हें संभालने की प्रेरणा देते रहेंगे।

न्याय सभा अध्यक्ष श्री आर०एस० तोमर एडवोकेट ने सार्वदेशिक के न्यायालयों में विवादों के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान स्थिति से अवगत कराया और कहा कि बहुत शीघ्र ही सारे विवादों का निपटारा हो जायेगा और हमारी विजय होगी हम अपने सार्वदेशिक लक्ष्य को पूरा करने के लिए संकल्पबद्ध रहेंगे।

श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री युवा उपमंत्री ने घोषणा की कि वे राष्ट्र उत्थान के लिए अंतिम श्वास तक महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज आंदोलन को चलाते रहेंगे। हमें पद का मोह लेश मात्र नहीं है हम युवा पीढ़ी में नयी ऊर्जा भरकर वैदिक पथ पर चलने के मार्ग खोलते रहेंगे और दयानन्द के सपनों का भारत बनाने में समर्थ होंगे।

बिहार सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने कहा कि हमारा प्रदेश उत्तर प्रदेश से मिला हुआ है प्रो० कैलाशनाथ सिंह को इंगित करते हुये उन्होंने कहा कि हम और हमारा सारा प्रदेश आपके एक आह्वान पर आपके साथ खड़ा है और आगे भी खड़ा रहेगा। डॉ० निष्ठा विद्यालंकार उपमंत्री सार्वदेशिक ने भविष्य को प्रांजल बनाकर प्रीति व स्नेह भाव से संगठन को सबल बनाने का संकेत दिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो० कैलाशनाथ सिंह ने घोषणा की हमारा जीवन समाज के लिए है जीवन के अंतिम श्वास तक दयानन्द का काम करते रहेंगे। बीच में आने वाली बाधाएं हमें कर्त्तव्य विमुख न कर सकेंगी। विगत डेढ़ वर्ष के अंतराल में आने वाली बाधाएं विपदाएं कहीं बाहर से नहीं हमारे बीच के लोगों ने पैदा की और हमारा सारा कार्य ठप्प हो गया गोष्ठियां, सम्मेलन, अधिवेशन रुक गये। समाज में लेखनी द्वारा समाज की गतिविधियों को पहुंचाने वाला १०५ वर्ष की आयु के आर्य मित्र का प्रकाशन अवरुद्ध हो गया। कर्मचारियों को १२ मास से तथा उपदेशकों प्रचारकों को १६-१७ महीने से उनका वेतन नहीं दिया गया। सत्ता में आसीन साथी आर्यसमाज की प्रगति को नजर अंदाज कर अपनी सत्ता अक्षुण्ण बनाने के प्रयास में लगे रहे। मैं घबराया नहीं निर्लेप भाव से सभी बाधाओं का मुकाबला करते हुये बाधाओं को चीरा और उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा को नया प्रभात प्राप्त हुआ हमने आर्य मित्र का प्रकाशन आरम्भ कर दिया है दो अंक आपके समक्ष है तीसरा प्रेस में है शीघ्र ही सम्पूर्ण वेतनादि का भुगतान करके सबके साथ संगठन के कार्य को निर्वाह हम जारी रखेंगे।

प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह जी ने आह्वान किया कि उन अपने बिछुड़े साथियों का जो किसी भी कारण उनसे पृथक् होकर उनसे अलग हो गये हैं उनका स्वागत है। वे अपने श्रम व शक्ति का दुरुपयोग न कर संगठन को मजबूत करें। हमारा दिल निष्कलुष है आओ अपना मन निष्कलुष बनाकर मिल बैठकर संगठन के कार्य को ऊर्जा दो आर्यसमाज के प्रति समर्पण भाव से कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के वेदादेश को पूर्ण करने का संकल्प लो। पूर्व भी भांति हम कन्धे से कन्धा मिलाकर संगठन को सुगठित करें। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य नई दिल्ली, श्रीमती कमला त्यागी पूर्व विधायक एवं श्री रामशरण आर्य लहटू ताऊ पूर्व विधायक ने इस अवसर पर अपनी शुभ कामनाएं भेजी। स्वागत समारोह में सभी अभ्यागत अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। श्री नेमप्रकाश आर्य, श्रीमती आशा आर्या, श्री रामचन्द्र शर्मा, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, डॉ० निष्ठा विद्यालंकार, श्रीमती कैलाश मोंगा के भजनों ने सभी को मन्त्रमुग्ध किया और आर्यसमाज के प्रति समर्पण भाव की चेतना जगाई।

अन्त में श्री मनमोहन तिवारी अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने सबको धन्यवाद दिया। शान्तिपाठ के साथ सभा समारोह में प्रदेश के सभी जिलों से आए सैकड़ों प्रतिनिधियों ने सभा प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह के नेतृत्व में सर्वसम्मति से निष्ठा एवं विश्वास व्यक्त किया।

कार्यक्रम का आरम्भ आचार्य वेदव्रत अवस्थी के ब्रह्मत्व में आयोजित बृहद् यज्ञ से हुआ। यज्ञ के यजमान श्री अविनाश चन्द्र शर्मा आई०ए०एस० एवं श्रीमती इन्द्रा शर्मा थे।



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७७८०१

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२





आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ | अंक ३६ | ७ सितम्बर, २००५ | वार्षिक शुल्क १०० रुपये | विदेश में २० डॉलर | एक प्रति २.००

## श्री ज्ञानेश्वरार्य द्वारा लंदन में वेदप्रचार

समादरणीय श्रीयुत वेदव्रत जी शास्त्री।

सादर नमस्ते।

ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु इति कामये।

पिछले सप्ताह, चौथी बार, मैं यहां इंग्लैंड में प्रचारार्थ आया हूँ। इस बार भी मैं डेढ/दो मास तक यहां के लंदन, लैस्टर, बर्मिंघम, लंकाशायर, ग्रेट यार माऊथ, सर्रे आदि १५ से अधिक नगरों तथा उपनगरों के सार्वजनिक संस्थानों, आर्यसमाजों, मंदिरों तथा परिवारों में योगशिविरों, प्रवचनों, सत्संगों, शंका समाधान तथा व्यक्तिगत चर्चाओं के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रसार करूंगा। साहित्य बाटूंगा, संकल्प कराऊंगा।

यहां के लोगों को (मुख्यत: भारतीय मूल) यह बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि आप यह निश्चिय रूप में जानने, समझने का प्रयास करें कि वैदिक धर्म ही सर्वश्रेष्ठ आचार संहिता है, संविधान और विधि विधान का ग्रंथ है, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के मनुष्यों को एकसूत्र में बांधकर समाज, राष्ट्र में सुख, शान्ति, निर्भीकता, स्वतंत्रता की स्थापना की जा सकती है क्योंकि यही वैदिक ज्ञान सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी, निराकार ईश्वर का ज्ञान है, जिसने सृष्टि के प्रारंभ में, मनुष्यों के कल्याणार्थ प्रदान किया, इसके प्रति मन में श्रद्धा, निष्ठा, विश्वास उत्पन्न करें और अपने जीवन को तदनुसार ही चलाने का यथासंभव पूर्ण पुरुषार्थ करें तभी जीवन में सुख, शान्ति, संतोष, निर्भीकता तथा स्वतंत्रता की प्राप्ति हो सकती है।

इतना ही नहीं अपितु आज इसमें रहने वाले अंग्रेजों को भी वैदिक धर्म की विशेषताओं, महानताओं, उत्कृष्टताओं, सार्वभौमिकताओं के विषय में, साहित्य, सत्संग, चर्चा के माध्यम से अवगत करावें। यथावसर उनको वैदिक सत्संग, यज्ञ उत्सव, शिविर समारोह, संस्कारों के कार्यक्रमों में आमंत्रित करें, बुलावें, साथ ले जावें और अपने जीवन में वैदिक धर्म के आचरण के कारण विद्यमान प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, शांति, आनन्द, निश्चिन्तता की स्थिति को दर्शाने का प्रयास करें।

मैं प्राय: अपने प्रवचनों में भारतीयों को यह बात विशेष रूप से बताने का प्रयास कर रहा हूं कि आप जिस देश में रह रहे हैं वहां के लोगों में अतीव मात्रा में मांसाहार, शराब का प्रयोग, देह प्रदर्शन, विषयाशक्ति, शृंगार, अनेक विवाह, बड़ों के प्रति सम्मान का अभाव, स्वतंत्र-स्वच्छन्द रूप से अकेले रहना, स्वार्थपरायणता आदि अवैदिक, घातक, दु:खदायी परम्परायें बहुत अधिक मात्रा में विद्यमान हैं। इनकी विद्यमानता में कोई कितनी भी भौतिक उन्नति कर ले किन्तु मानसिक शान्ति, प्रसन्नता को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता और आपकी सन्तति इन सब के साथ रहने, पढ़ने, व्यवहार करने के कारण वैसी ही बन गयी है/बनती जा रही है, जिसके दुष्परिणामों को देख-सुनकर आप सभी दु:खी चिंतित हैं, चाहे मुख से प्रकट करें या न करें। इस समस्या के दो ही समाधान मुख्य रूप से संभव है, प्रथम भावी महाविनाश से बचना हो तो भारतवर्ष लौट आवें अथवा वहां के अंग्रेजों को वैदिक धर्मी बना लेवें। आर्य बनावें। ऐसा करना संभव है।

मात्र उत्तम कोटि के भवन, वाहन, वस्त्र, साधन, सुविधाओं को प्राप्त करने के बदले यदि आत्मा का हनन होता है, धर्म, ईश्वर, शान्ति, प्रसन्नता छूटते हैं, दु:ख, बंधन, तनाव, अशान्ति उत्पन्न होते हैं, तो ऐसा करना हम जैसे उत्कृष्ट संस्कारों वाले भारतीयों के लिए महामूर्खता ही होगी। आप लोग बुद्धिमान् हैं, साहसी, पुरुषार्थी, अनुभवी हैं क्यों न आप सर्वोत्कृष्ट ईश्वरीय वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करें। ये अन्य मत, पंथ, सम्प्रदाय वाले जब अपने हीन, तर्क युक्ति प्रमाणों से रहित अवैज्ञानिक, अंधश्रद्धा,

(शेष पृष्ठ २ पर)

## सवा करोड़ गायत्री अनुष्ठान महायज्ञ

दिनाक : ४ अक्तूबर, २००५
(शारदीय नवरात्रारम्भ आश्विन शुक्ला प्रतिपदा) से
५ मार्च, २००६ (फाल्गुन शुक्ला षष्ठी रविवार) तक
एवं

## चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

दिनांक २ फरवरी, वसन्त पञ्चमी, २००६ से प्रारम्भ होकर ५ मार्च, २००६ रविवार तक (चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ सहित गायत्री अनुष्ठान महायज्ञ निरन्तर चलता रहेगा) यज्ञ समय : प्रात: ७ बजे से ९ बजे तक तथा सांय ३ से ५ बजे तक आवश्यक दिशा-निर्देशों के साथ

**स्थान : गुरुकुल यमुनातट मञ्झावली, फरीदाबाद (हरियाणा)**

**याज्ञिक महानुभावों से विनम्र निवेदन :** यजमान, व्रती एवं गायत्री के साधकों से प्रार्थना है कि १ और २ अक्तूबर २००५ को गुरुकुल यमुनातट मञ्झावली में पहुंचकर ३ तारीख को उपवास करके ४ अक्तूबर से प्रारम्भ होने वाले गायत्री महायज्ञ में बैठने की पूरी तैयारी करें।

**आवश्यक नियम :**

१. यज्ञ में बैठने के लिए एक मास पूर्व से ही सभी यजमान दम्पति ब्रह्मचर्य की साधना के साथ-साथ मौन रहकर गायत्री जप का अभ्यास घर पर करें। यज्ञीय वातावरण को शुद्ध बनाये रखने के लिए आप सभी अभी से, यदि किसी भी प्रकार के अभक्ष्य पदार्थ का सेवन करते हों, तो उन्हें तुरन्त छोड़ दीजिए।

२. यज्ञ के दिनों में यज्ञ के समय भारतीय वेश-भूषा-धोती और कुर्त्ते का ही उपयोग करेंगे। माताएं भी साड़ी का प्रयोग करेंगी। ये वस्त्र सभी स्त्री-पुरुषों के पीत-वस्त्र होंगे।

३. आप अपने साथ ऋतु के अनुकूल अपना बिस्तर तथा भोजन के बर्तन भी साथ लाएं। भोजन व्यवस्था गुरुकुल भूमि में यज्ञ समिति के सौजन्य से होगी।

४. यह यज्ञ १०० क्विंटल घी और इसी अनुपात से उत्तम हवन-सामग्री तथा यज्ञीय समिधाओं से सम्पन्न होगा। आप केवलमात्र (शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः) की भावना से प्रेरित होकर शुद्ध-बुद्ध होकर आवें। इस यज्ञ के लिए आन्तरिक एवं बाह्य पवित्रता आवश्यक है।

५. यज्ञ में धन-दान एवं अन्य सहायता करना आपकी इच्छा पर निर्भर है। किसी भी प्रकार की कोई अनिवार्य बाध्यता नहीं है। आप अपनी यथाशक्ति आर्थिक स्थिति के आधार पर जो देंगे, वह स्वीकार्य होगा।

६. यज्ञ में भाग लेने वाले सभी यजमानों, साधकों एवं अनुष्ठानकर्त्ताओं से निवेदन है कि पवित्र यज्ञभूमि में कोई भी उपयोगी उपकरण आपके पास चमड़े का नहीं होना चाहिए। अत: सभी से निवेदन है कि पट्टे वाली खड़ाऊँ अथवा कपड़े वाले जूते (दो जोड़े) साथ लाएं।

निवेदक :

| अध्यक्ष : | ब्रह्मा : | संयोजक : |
|---|---|---|
| **स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती** | **स्वामी सत्यम् सरस्वती** | **आचार्य हरिदेव** |
| | एवं समस्त यज्ञ समिति | ०१२९-२४०३१८२ |

(पृष्ठ १का शेष)

## श्री ज्ञानेश्वरार्य द्वारा लंदन में.....

पाखण्ड से युक्त मन्तव्यों का विश्वभर में प्रचार प्रसार कर रहे हैं तो हम तर्क, युक्ति, प्रमाण, विज्ञान से सम्मत वैदिक धर्म का प्रचार क्यों न करें? हमारा कर्त्तव्य है, ईश्वराज्ञा है, हम अवश्य ऐसा करें।

रोटियाँ तो भारत में भी मिलती हैं, तन ढकने को कपड़े तो भारत में भी हैं, रहने को आश्रय तो देश में भी है यदि आप यहां रहते हुवे, अपने देशवासियों के लिए न सही किन्तु अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपने को अन्यों की अपेक्षा उत्कृष्ट सिद्ध करने का प्रयास नहीं करेंगे तो यह निश्चित है कि भविष्य में अन्य क्रूर, हिंसक, आक्रामक, उद्दण्डी, अन्यायी लोगों के साथ ही भयंकर दुष्परिणामों को भोगने के लिए तैयार रहें, यह आज नहीं तो कल, २ वर्ष बाद नहीं तो १० वर्ष बाद होना ही है। इंग्लैंड में/विदेश में आप विदेशी ही रहेंगे, चाहे कितने ही इनके अनुकूल बनकर विचारें, बोले, करें, चलें। पारिवारिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुवे अब तन-मन-धन, समय का त्याग करके विशिष्ट योजनाएं बनावें, अधिकाधिक धर्मसंस्थानों की स्थापना करें, शिविर, समारोह, उत्सवों का आयोजन करें, विद्वानों को बुलावें, साहित्य आदि का प्रकाशन-वितरण करें। ईश्वर विश्वास के साथ दृढ़ संकल्प मन में धारण करके, परम पुरुषार्थ करें तो निश्चित है कि सत्य, शाश्वत, सर्व आनन्ददायी सिद्धान्तों मन्तव्यों को लोग अवश्य स्वीकार करेंगे, हम पुनः विश्व को वेदानुयायी बना सकेंगे।

"मैं यही संदेश, प्रेरणा, उद्बोधन आपको देने आया हूं" ऐसा बताकर इन लोगों को प्रेरणा दे रहा हूं कि वे कुछ करें, आपकी सन्तति भारत आने वाली नहीं है तो इनके लिए यहीं पर कुछ ऐसा कार्य करें कि वे आस्तिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सभ्य, शिष्ट, विनम्र, संयमी, तपस्वी, त्यागी बनें, अपने व पारिवारिक उन्नति के साथ राष्ट्र, धर्म के लिए विशेष करें। शेष पुन:

२२-८-२००५ -शुभेच्छु ज्ञानेश्वरार्य

## अंधविश्वास की दुनियां

**कौन समझायेगा इनको, कैसे समझेंगे ये जन।**
**देखकर इनकी जहालत कुंद हो जाता है मन॥**

१. इनकी बुद्धि पर न जाने कैसा पर्दा पड़ गया,
पूजते हैं उसको जाकर जहां पत्थर गड गया।
जो चढ़ाया पत्थरों पर उसको कुत्ता खा गया,
खाके कुत्ते ने वहां पेशाब अपना कर दिया।
घर में भूखे प्यासे बैठे हैं बहुत से वृद्ध जन,
उनकी कुछ परवाह नहीं, चाहे निकल जाये दम॥
कौन समझायेगा इनको...........................

२. नित्य पढ़ते हैं जो अखबारों में अपना राशिफल,
तांत्रिक इनको फंसा लेते हैं करके कपट छल।
भूतनी या भूत के चक्कर में आ जाते हैं ये जन,
लूट ले जाते हैं इनका मान मर्यादा व धन।
अन्ध विश्वासों में पड़कर धक्के खाते हैं सजन॥
कौन समझायेगा इनको...........................

३. घेर लेती है इन्हें जब कोई विपदा आनकर,
दूर करवाते हैं उसको झाड़कर फूंककर।
गंडे और ताबीज का भी जब न होता है असर,
पंडत जी से पूछते हैं कौन सा है यह कुफर।
साफ बतलाता है पंडत, कोई देवता नाराज है,
उसको खुश करना ही इसका एक मात्र इलाज है।
गंगा जी में जाके नहाओ और चढ़ाओ धन सुमन॥
कौन समझायेगा इनको...........................

**-देवराज आर्य मित्र,** हरिनगर, नई दिल्ली-६४

## वेद में विष्णु = सर्वव्यापी ईश्वर

-स्वामी वेदरक्षानंद सरस्वती
संरक्षक राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

जो मनुष्य अविद्या और अधर्माचरणरूप नींद को छोड़कर विद्या और धर्माचरण में जाग रहे हैं, वे ही सच्चिदानन्दस्वरूप सब प्रकार से उत्तम सबको प्राप्त होने योग्य निरन्तर सर्वव्यापी विष्णु अर्थात् जगदीश्वर को प्राप्त होते हैं। विद्वानों के उपदेश के बिना किसी मनुष्य को यथावत् सृष्टि विद्या का बोध कभी नहीं हो सकता। ईश्वर के उत्पादन करने के बिना किसी पदार्थ का साकार होना नहीं बन सकता और इन दोनों कारणों के जाने बिना कोई मनुष्य पदार्थों से उपकार लेने को समर्थ नहीं हो सकता। ऋग्वेद प्रथम मंडल बाइसवें सूक्त के १७ से २० मंत्रों में विष्णु पद से सर्वव्यापी परमात्मा का वर्णन है। उन मंत्रों का अर्थ भावार्थ पद्यानुवाद प्रस्तुत किया है।

**ईश्वरेणैतज्जगत् कियत्प्रकारकं रचितमित्युपदिश्यते** = [illegible] इस विषय का उपदेश मंत्र में किया है -

**इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।**
**समूढमस्य पांसुरे॥** (ऋग्वेद १/२२/१७)

**अर्थ :** मनुष्य लोग जो (विष्णुः) व्यापक ईश्वर (त्रेधा) तीन प्रकार का (इदम्) यह प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष (पदम्) प्राप्त होने वाला जगत् है, उसको (विचक्रमे) यथायोग्य प्रकृति और परमाणु आदि के पद वा अंशों को ग्रहण कर सावयव अर्थात् शरीर वाला करता और जिसने (अस्य) तीन प्रकार के जगत् का (समूढम्) अच्छी प्रकार तर्क से जानने योग्य और आकाश के बीच में रहने वाला परमाणुमय जगत् है उसको (पांसुरे) जिसमें उत्तम उत्तम मिट्टी आदि पदार्थों के अतिसूक्ष्म कण रहते हैं, उनको आकाश में (निदधे) धारण किया है॥

**भावार्थ :** परमेश्वर ने इस संसार में तीन प्रकार का जगत् रचा है अर्थात् एक पृथ्वी रूप, दूसरा अंतरिक्ष आकाश में रहने वाला प्रकृति परमाणु रूप और तीसरा प्रकाशमय सूर्य आदि लोक तीन आधार रूप है, इनमें से आकाश में वायु के आधार से रहने वाला जो कारण रूप है वही पृथ्वी और सूर्यादि लोकों बढ़ाने वाला है और इस जगत् को ईश्वर के बिना कोई बनाने को समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि किसी का ऐसा सामर्थ्य ही नहीं॥

**पद्यानुवाद :**

सर्वव्यापक - विष्णु ने विक्रम परम दिखला दिया।
तीन लोकों में त्रिधा पद, रख दिखा पधरा दिया।
व्याप्त सबको कर लिया, सबको स्वपद में धर लिया।
कर लिया स्वाधीन सब जग को, सृजा ठहरा दिया।
हृदयतम अज्ञान धूमिल में, नहीं अनुभूत वह।
धूलिधूसर पतितवत् पद, वह अदृश्य बना दिया।
यदपि वह अज्ञात पद है, तदपि ऊहागम्य वह।
किन्तु साधक के लिये, प्रत्यक्ष कर दरसा दिया॥

**पुन विष्णुर्जगदीश्वरः किं कृतवानित्युपदिश्यते**= फिर वह सर्वव्यापक जगदीश्वर क्या क्या करता है, इस विषय का उपदेश अगले मंत्र में किया है

**त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः।**
**अतो धर्माणि धारयन्॥** (ऋग्वेद १/२२/१८)

**अर्थ :** जिस कारण यह (अदाभ्यः) अपने अविनाशीपन से किसी की हिंसा में नहीं आ सकता (गोपाः) और सब संसार की रक्षा करने वाला, सब जगत् को (धारयन्) धारण करने वाला (विष्णुः) संसार का अन्तर्यामी परमेश्वर (त्रीणि) तीन प्रकार के (पदानि) जाने, जानने और प्राप्त होने योग्य पदार्थों और व्यवहारों को (विचक्रमे) विधान करता है, इसी कारण से सब पदार्थ उत्पन्न होकर अपने अपने (धर्माणि) धर्मों को धारण कर सकते हैं॥

**भावार्थ :** ईश्वर के धारण के बिना किसी पदार्थ की स्थिति होना सम्भव नहीं हो सकता। उसकी रक्षा के बिना किसी के व्यवहार की सिद्धि भी नहीं हो सकती॥

**पद्यानुवाद :**

तीन पद में तीन लोकों में, पराक्रमशील ने।
सर्वव्यापक देव ने, विक्रम चरम दिखला दिया।
सहज सब गुण कर्म को, धारण कराता नित्य वह।
विश्वपालक ने भुवनत्रय में, स्ववल प्रकटा दिया।
वह नहीं दबता किसी से, अप्रतिहत गतिशील है।
तीन पद त्रय लोक में, विक्रम प्रभाव जमा दिया॥

**पुनस्तत्कृतानि कर्माणि मनुष्येण नित्यं द्रष्टव्यानीत्युपदिश्यते** = फिर व्यापक परमेश्वर के किये हुये कर्म मनुष्य नित्य देखें इस विषय का उपदेश अगले मंत्र में किया है

**विष्णोः कर्माणि पश्यत यतोव्रतानि पस्पशे।**
**इन्द्रस्य युज्य सखा॥** (ऋग्वेद १/२२/१९)

**अर्थ :** हे मनुष्य लोगो! तुम जो (इन्द्रस्य) जीव का (युज्यः) अर्थात् जो अपनी व्याप्ति से पदार्थों में संयोग करने वाले दिशा, काल और आकाश हैं, उनमें व्यापक होके रमने वा (सखा) सर्वसुखों के सम्पादन करने से मित्र है (यतः) जिससे जीव (व्रतानि) सत्य बोलने और न्याय करने आदि उत्तम कर्मों को (पस्पशे) प्राप्त होता है उस (विष्णोः) सर्वत्र व्यापक शुद्ध और स्वभाव सिद्ध अनन्त सामर्थ्य वाले परमेश्वर के (कर्माणि) जो कि जगत् की रचना पालना न्याय और प्रयत्न करना आदि कर्म हैं, उनको तुम लोग (पश्यत) अच्छे प्रकार विदित करो॥

**भावार्थ :** जिस कारण सब को मित्र जगदीश्वर ने पृथ्वी आदि लोक तथा जीवों को साधन सहित रचा है। इसी से सब प्राणी अपने-अपने कार्यों के करने को समर्थ होते हैं।

**पद्यानुवाद :**

देख लो प्रभु विष्णु के, सब कर्म अनुपम को सखे।
देखकर जिसको जनों ने, निजव्रतों को पा लिया।
देव वह ही जीव का है, सर्वथा संगी सखा।
युक्त हो उससे मनुज ने, लक्ष्य जीवन पा लिया।

**तद् ब्रह्म कीदृशमित्युपदिश्यते** = वह ब्रह्म कैसा है, इस विषय का उपदेश अगले मंत्र में किया है।

**तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।**
**दिवीव चक्षुराततम्॥** (ऋग्वेद १/२२/२०)

**अर्थ :** (सूरयः) धार्मिक बुद्धिमान् पुरुषार्थी विद्वान लोग (दिवि) सूर्य आदि के प्रकाश में (आततम्) फैले हुये (चक्षुरिव) नेत्रों के समान जो (विष्णोः) व्यापक आनन्दस्वरूप परमेश्वर का विस्तृत (परमम्) उत्तम से उत्तम (पदम्) चाहने जानने और प्राप्त होने योग्य उक्त वा वक्ष्यमाण पद है (तत्) उसको (सदा) सब काल में विमल शुद्ध ज्ञान के द्वारा अपनी आत्मा में (पश्यन्ति) देखते हैं॥

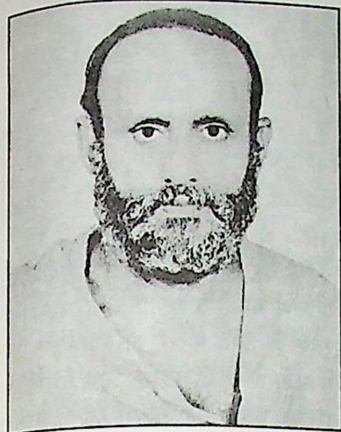
**भावार्थ :** इस मंत्र में उपमालङ्कार है। जैसे प्राणी सूर्य के प्रकाश में शुद्ध नेत्रों से मूर्तिमान् पदार्थों को देखते हैं। वैसे ही विद्वान् लोग निर्मल विज्ञान से विद्या वा श्रेष्ठ विचारयुक्त शुद्ध अपने आत्मा में जगदीश्वर को सब आनन्दों से युक्त और प्राप्त होने योग्य मोक्ष पद को देखकर प्राप्त होते हैं। इसकी प्राप्ति के बिना कोई मनुष्य सब सुखों को प्राप्त होने में समर्थ नहीं हो सकता। इससे इसकी प्राप्ति के निमित्त सब मनुष्यों को निरन्तर यत्न करना चाहिये॥

**पद्यानुवाद :**

सर्वव्यापक का परम पद, देखते ज्ञानी सदा।
जिस तरह दृग् ने दिवा में, सूर्य दर्शन पा लिया॥

# हरयाणा के आर्यनेता स्वामी ओमानन्द सरस्वती

❑ डॉ० भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर (राजस्थान)



सन् १९५९ में प्रथम बार श्वेत वस्त्रावृत, तप:पूत आचार्य भगवान्देव के दर्शन मुझे गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में हुए। अवसर था अखिल भारतीय संस्कृत महासम्मेलन तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के वार्षिक अधिवेशन का समान तिथियों में गुरुकुल में आयोजन। इस अवसर पर अनेक आर्य विद्वानों के अनायास दर्शन हुए तथा उनसे विचार विमर्श का अलभ्य अवसर मिल गया। एक सुखद संयोग था कि आर्षपाठ-विधि को अंगीकार करने वाले आर्ष गुरुकुल एटा के आचार्य दण्डी ब्रह्मानन्द जी, चित्तौड़ गुरुकुल के संस्थापक और आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी तथा गुरुकुल झज्जर के आचार्य भगवान्देव जी की त्रिपुरी के दर्शन एक ही स्थान पर हो गये। इनके साथ आर्षपाठविधि के प्रचारक तथा पुरस्कर्ता पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा उनके सहयोगी पं० शंकरदेव जी से भेंट मणिकाञ्चन संयोग बन गई। तब तक आर्य पत्रों में मेरा लेखन यौवन पर आ गया था अत: आर्यसमाज के सारस्वत जगत् में मेरी पहचान बन चुकी थी। आचार्य भगवान्देव ने मुझे झज्जर गुरुकुल के मुखपत्र सुधारक में लिखने के लिए कहा और मेरे पास इस पत्र के भेजे जाने की व्यवस्था कर दी। आज तक सुधारक बिना नागा मुझे मिल रहा है। यदा कदा इसमें लिखता भी हूं।

दो वर्ष बाद आर्य महासम्मेलन दिल्ली में पुन: आचार्य जी से मुलाकात हुई। उनके साथ थे पं० वेदव्रत शास्त्री जिनके वेद विषयक ग्रन्थ 'वेदविमर्श' को मैंने रुचिपूर्वक पढ़ा था। वेद के बारे में आवश्यक जानकारी का यह लघु कोश सदृश है। जब गुरुकुल झज्जर में संगृहीत पुरातात्त्विक सामग्री की चर्चा चली तो मैंने अपने सिक्कों का संग्रह आचार्य भगवान्देव के संग्रहालय हेतु दे दिया। इस समय तक आचार्य भगवान्देव के कुछ उपयोगी लघु ग्रन्थ स्वास्थ्य, व्यायाम, आहार जैसे लोकोपयोगी विषयों पर छप चुके थे। मैंने इन सबको पढ़ा था तथा जीवन निर्माण में उनकी उपयोगिता को समझा था। कालान्तर में आचार्य भगवान्देव ने स्वामी सर्वानन्द जी से चतुर्थाश्रम की दीक्षा ले ली और वे गैरिक वस्त्रधारी स्वामी ओमानन्द बन गए। एक बार आर्यसमाज देहरादून के उत्सव पर उनसे भेंट हुई। वे अपने दो-तीन शिष्यों के साथ वहां आये थे। गुरु-शिष्यों का सरल संस्कृत में वार्तालाप मुझे मोहक तथा प्रभावोत्पादक लगा। उसके बाद उन्हें इस प्रकार संस्कृत सम्भाषण करते नहीं सुना।

धीरे-धीरे स्वामी ओमानन्द झज्जर गुरुकुल के सीमित क्षेत्र से अखिल भारतीय आर्यसामाजिक क्षेत्र में विचरने लगे। जीप के माध्यम से देश में सर्वत्र भ्रमण कर वे वैदिक संदेश के प्रबल वाहक बन गये। आर्यसमाज द्वारा संचालित विभिन्न सत्याग्रहों और आन्दोलनों ने उन्हें प्रभावी आर्यनेता की भूमिका में स्थापित किया। उनके इतिहास तथा पुरातत्त्व विषयक कुछ प्रसिद्ध ग्रन्थ छपे। विदेश यात्राओं में कभी एकाकी तो कभी सदल-बल जाने के अवसर उन्हें मिले। राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों में वे भारत सरकार द्वारा परिगणित होकर सम्मानित हुए और वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का अध्यक्ष पद ग्रहण किया। यदा कदा सभा सम्मेलनों में उनसे भेंट होती और उपयोगी चर्चा होती।

१९८३ में ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी का आयोजन अजमेर में परोपकारिणी सभा द्वारा होना था। इस सभा के मंत्री स्व० श्रीकरण शारदा तथा मैंने परस्पर विचार विमर्श कर निश्चय किया कि इस वृहत् आयोजन की सर्वोच्च बागडोर यदि स्वामी ओमानन्द जी जैसे लोकप्रिय तथा कर्मठ संन्यासी के हाथ में रहे तो इस आयोजन की सफलता सुनिश्चित हो जायेगी। फलत: स्वामीजी को सभा का सदस्य मनोनीत किया गया तथा प्रधान का पद भी उन्हें सौंप दिया। निर्वाण शताब्दी का यह महोत्सव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल रहा और इसकी सफलता में स्वामीजी का योगदान निर्विवाद रहा। सभा के वार्षिक अधिवेशनों में स्वामीजी से मेरी प्रतिवर्ष मुलाकात होती। अतिथि भवन में जहां मैं ठहरता था (चण्डीगढ़ चले जाने के बाद अजमेर आने पर) वहां स्वामीजी प्रात:कालीन नियमित मालिश के लिए आते थे। उनकी मालिश (ब्रह्मचारियों के द्वारा) चलती रहती और हम दोनों विभिन्न विषयों पर चर्चा करते रहते।

स्वामी ओमानन्द आर्य साहित्य के प्रचार प्रसार के प्रबल पक्षपाती थे। हरयाणा साहित्य संस्थान के द्वारा उन्होंने ग्रन्थ प्रकाशन तथा साहित्य प्रचार का अभूतपूर्व कार्य किया। उन्होंने अनेक पुराने कालजयी ग्रन्थों को पुन: प्रकाशित करवाया। इनमें एक था पं० आर्यमुनिकृत मीमांसादर्शन का भाष्य। यह अपूर्ण था और स्वामी जी चाहते थे कि इसका उत्तरार्द्ध (जो कि आर्यमुनि द्वारा नहीं लिखा जा सका था) भी पाठकों को उपलब्ध हो। फलत: उन्होंने गुजराती में पं० मयाशंकर शर्मा द्वारा लिखे गये मीमांसा भाष्य (उत्तरार्द्ध) को हिन्दी में अनूदित कराने का विचार किया। इस गुजराती भाष्य (अवशिष्ट छ: अध्याय) का अनुवाद कार्य मेरे गुजराती भाषा ज्ञान की जानकारी मिलने पर उन्होंने मुझे सौंपा और इस प्रकार मीमांसा का सम्पूर्ण भाष्य हिन्दी में आ सका।

दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय में रहते समय मैंने महर्षि दयानन्द की कीर्ति तथा उनके यश सौरभ को अभिव्यक्त करने वाले संस्कृत के कुछ कवियों की काव्य रचनाओं का सानुवाद सम्पादन किया। इसे स्वामीजी ने हरयाणा साहित्य संस्थान से प्रकाशित किया। नतीजतन यह ग्रन्थ **'महर्षि दयानन्द प्रशस्ति काव्य'** प्रकाश में आया। जीवन के पिछले वर्षों में वे सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष पद पर भी रहे। यद्यपि अपने बहुआयामी सार्वजनिक जीवन तथा अविरत पर्यटन वृत्ति के कारण वे प्रधान के दायित्व के साथ पूरा न्याय नहीं कर सके, तथापि यह स्वीकार करना होगा कि वे सफल नेता थे। निकट सम्पर्क में आनेवाले लोगों ने उनमें अपने प्रदेश तथा जातिविशेष के प्रति अतिरिक्त आसक्ति के भाव का अनुभव किया। सम्भव है इसमें सत्यता रही हो तथापि यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के प्रति उनकी भक्ति उत्कट थी। चंडीगढ़ में जब वे मुझे अपने विभागीय कार्यालय में पश्चिमी वेशभूषा में देखते तो कहते **"भारतीय जी आप हो तो विद्वान् किन्तु पतलून पहनते हो।"** उन्हें उत्तर तो नहीं देता किन्तु मन ही मन कहता-मेरी वेशभूषा देश, काल, परिस्थिति के अनुकूल यदि बदले तो इसमें मैं कोई अनौचित्य नहीं पाता। बिना लाग लपेट दिल में आई बात को साफ कह देना भी मानव का एक दुर्लभ गुण है और यह गुण स्वामीजी में पूर्णतया दिखाई पड़ा था। अंग्रेजी मुहावरे का प्रयोग करें तो कहेंगे कि स्वामी ओमानन्द स्ट्रांग लाइक्स एण्ड डिस्लाइक्स के व्यक्ति थे।

# वेद कभी लुप्त नहीं हो सकते

वेद स्वयं अपने आप में प्रमाण हैं। वेद पुस्तक नहीं अपितु सृष्टि के आदि में अन्तःकरण से शुद्ध तथा पवित्र चार ऋषियों को दिया या ईश्वर का मनुष्यों के लिये दिया गया अमृत के समान सत्य ज्ञान है। आइए सबसे प्रथम महर्षि दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश की ओर चलते है :

**अहं दा गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम्।**
**अहं भुवं यजमानस्य चोदिताऽयज्वनः साक्षि विश्वस्मिन्भरे॥**

ऋ० मं०१०/सू० ४९/ मं० १

**भावार्थ :** हे मनुष्यो! मैं सत्यभाषणरूप स्तुति करने वाले मनुष्य को सनातन धन ज्ञानादि धन को देता हूं, मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करनेहारा और मुझको वह वेद यथावत् कहता, उससे सबके ज्ञान को मैं बढ़ाता, मैं सत्पुरुष का प्रेरक, यज्ञ करने हारों को फलप्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है, उस सब कार्य का बनाने और धारण करने वाला हूं, इसलिये तुम लोग मुझ को छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो॥

**प्रश्न** - वेद नित्य हैं, वा अनित्य?

**उत्तर** - नित्य हैं। क्योंकि परमेश्वर के नित्य होने से उसके ज्ञानादि गुण भी नित्य हैं। जो नित्य पदार्थ हैं उनके गुण, कर्म, स्वाभाव नित्य और अनित्य द्रव्य के अनित्य होते हैं।

**प्रश्न** - क्या यह पुस्तक भी नित्य है?

**उत्तर** - नहीं। क्योंकि पुस्तक तो कागज और स्याही का बना है, वह नित्य कैसे हो सकता है? किन्तु जो शब्द, अर्थ और संबंध हैं, वे नित्य हैं।

-सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास

महाभारत युद्ध के बाद लोभी और नीच प्रकृति के लोगों ने हर उस ग्रंथ में मिलावट की जो कि वेदों की सच्चाई को प्रकट करते थे। महाभारत ग्रंथ में ही एक लाख से भी अधिक श्लोक रच डाले गए जो कि मनघडन्त बातों से भर दिए गए। श्रीकृष्ण को अर्जुन को समझाने के लिए १८ अध्यायों का उपदेश करना पड़ा होगा क्या अर्जुन को समझाने के लिए इतना भारी उपदेश; इतना उपदेश तो किसी महामूर्ख को भी एक बार में ही नहीं किया जाता, क्या अर्जुन इतना गया गुजरा था, इतना महामूर्ख से भी ज्यादा महामूर्ख था। क्या कभी गुरुकुल (विद्यालय) में पढ़ने नहीं गया था। क्या अपने गुरु द्रोणाचार्य से सिर्फ धनुष विद्या ही सीख पाया। वेद शास्त्रों का ज्ञान नहीं ग्रहण कर पाया। क्या ऐसे ज्ञानशून्य मनुष्य को श्रीकृष्ण अपनी बहन सुभद्रा से ब्याह देते। युद्ध न करना तभी अपने रिश्तेदारों को पीड़ा न पहुंचाना अलग बात थी। उसके लिए श्रीकृष्ण का अर्जुन को आत्मा का असली स्वरूप समझाने के लिए पूरे दो दिन युद्ध रोकना तथा दो सेनाओं के बीच में उपदेश देना असत्य बात प्रतीत होती है। योगिराज श्रीकृष्ण को दो घंटे काफी थे जिसका उपदेश 'गीता' सिर्फ सात अध्याय ही गिना जा सकता है। वह गीता का उपदेश भी महाभारत का ही एक भाग है कोई बाहर से अलग नहीं लिखा गया और गीता के उपदेश को उन मिलावटियों ने वेदों का सार बता दिया क्योंकि उस उपदेश में कुछ श्लोक वेद के मंत्र से मिलते जुलते थे।

असल में उन लोभियों का उद्देश्य मूर्ति पूजन द्वारा ईश्वर की पूजा समझाकर किसी एक व्यक्ति की पूजा कराकर पेट पूजा करने का था। इसलिए उन्होंने गीता को वेदों का सार बताना आरम्भ किया ताकि लोग वेदों को पढ़ने तथा समझने की जरूरत ही न समझें। जिसने गीता पढ़ ली समझो चारों वेद पढ़ लिए। सबसे पहले उन्होंने मनुस्मृति को चुना जो कि सृष्टि के प्रथम महाराज एवं महर्षि मनु द्वारा लिखा गया था भरपूर मिलावट की ताकि मांस-शराब आदि के सेवन की खुली छूट प्राप्त हो सके। सत्यार्थप्रकाश में भी महर्षि दयानन्द जी ने मिलावटी ग्रंथों को जालग्रन्थ का दर्जा दिया है तथा उनके नाम भी लिखे हैं ''व्याकरण में कातन्त्र, सारस्वत, चन्द्रिका, मुग्धबोध, कौमुदी शेखर, मनोरमादि। कोश में अमरकोशादि, छन्दोग्रन्थों में वृत्तरत्नाकरादि। शिक्षा में **अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा** इत्यादि। ज्योतिष में शीघ्रबोध, मुहूर्तचिन्तामणि आदि। काव्य में नायिका, कुवलयानन्द, रघुवंश, माघ, किरातर्जुनीयादि। मीमांसा में धर्मसिन्धु व्रतार्कादि। वैशेषिक में तर्कसंग्रहादि। न्याय में जागदीशी आदि। योग में हठप्रदीपिकादि (जोकि आजकल रामदेव द्वारा कराया जा रहा है), सांख्यतत्त्वकौमुद्यादि। वेदान्त में योगवासिष्ठ, पंचदश्यादि। वैद्यक में शार्ङ्गधरादि। स्मृतियों में एक मनु इसमें भी प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़ अन्य सब तन्त्र ग्रन्थ, सब पुराण, सब उपपुराण, तुलसीदासकृत भाषारामायण, रुक्मणीमङ्गलादि और सर्वभाषग्रन्थ ये सब कपोलकल्पित मिथ्या ग्रंथ हैं।''

यह सब ग्रंथ इसलिये रचे गए जैसे ही विद्यार्थी गलत व्याकरण पढ़ेंगे वैसे ही फिर वेदों के भी अर्थ के अनर्थ करते जायेंगे फिर जैसे-जैसे दूसरे ग्रंथ पढ़ते जायेंगे त्यों-त्यों वेदों से भी दूर होते जायेंगे। भागवत पुराण में एक कहानी ही गढ़ दी गयी कि शंखासुर दैत्य वेदों को ब्रह्मा से चुराकर समुद्र में छिप गया। उसको मारने के लिए विष्णु को मत्स्य का अवतार लेना पड़ा। कितना भयानक गपोड़ा तथा मानने वाले कितने बुद्धिविहीन। भला एक शंख जो एक समुद्री जीव है। वह नन्हा सा जीव दैत्य या राक्षस कैसे हो सकता है। हरिद्वार या अन्य तीर्थ में चले जायें। बेचारे कितने ही शंख बिकने हेतु मृतक पड़े होते हैं। दैत्य या राक्षस तो वह लोग हैं जो ऐसे पाखण्ड से भरे ग्रन्थों से भोले-भाले मनुष्यों को ठगते हैं।

यही कुछ बात आज सत्यार्थप्रकाश नामक ग्रन्थ के साथ हो रही है। कुछ विद्वान लोगों ने बारी-बारी सत्यार्थप्रकाश सार से ग्रन्थ बनाये हैं। बच्चों को समझाने के लिए सिर्फ दस समुल्लास तक बाकी चार छोड़ दिए गए हैं। उन विद्वानों से मेरा बस इतना ही कहना है कि आपने ज्यादातर बच्चों को कुछ-कुछ बड़ों को भी असली सत्यार्थप्रकाश पढ़ने से वंचित कर दिया। आप लिखने वाले तो प्रशंसा पाकर विद्वान् बन गए परन्तु बेचारे वह बच्चे बड़े होने तक भी आपके बनाये सार को ही गले लगाये फिरेंगे। जो खाने में असली आम का मजा है वह आम के सार (अमचूर या आमपापड़) में कहां। हां इतना तो अपनी बुद्धिमत्ता से लिख सकते थे कि यह ''यह पुस्तक तो सार मात्र है लेकिन अध्यापकों, गुरुओं को क्रमवार सत्यार्थप्रकाश को अवश्य पढ़ाना चाहिये ताकि वह पूरा ज्ञान हासिल कर सकें।'' या फिर पुस्तक के अन्त में यह ही लिख देते कि बच्चो यह तो सिर्फ सार मात्र है। यदि असली मजा लेना है तो पूरा आम ही खाना उसके जूस या सूखे आम से तृप्ति न हो सकेगी इसलिए बड़े होकर आर्यसमाज में जाकर महर्षि दयानन्द का १४ समुल्लास वाला सत्यार्थप्रकाश अवश्य पढ़ना। यदि कोई बात समझ में न आये तो पुरोहित या उच्चकोटि के उपदेशक विद्वानों से अवश्य ही समझ लेना।

कई विद्वान् तो उपनिषदों को भी वेदों का सार मानते हैं। लेकिन क्या मात्र उपनिषद् पढ़ लेने से उन्हें वेदों का ज्ञान हासिल हो सकता है कभी नहीं। उपनिषत्कर्ता ऋषियों का मुख्य उद्देश्य ही यही था उनके इस ग्रन्थों द्वारा लोग वेदों को समझें और ज्यादा से ज्यादा लोग वेदों से जुड़े और वेदों का स्वाध्याय करें। क्या किसी भी उपनिषत्कर्ता ने या किसी शास्त्रकर्ता ने जो वेदों के अनुयायी थे। अपने ग्रन्थों को वेदों का सार लिखा है?

कलियुग के इन पोप पंडितों ने अपने-अपने कलुषित ग्रन्थों द्वारा खूब प्रचार किया कि अब वेद धरती से लुप्त हो चुके है और हमारे ग्रन्थ ही वेद का सार हैं और कहीं कहीं पर उन्होंने तीर्थों में जाकर स्नान करने को वेद पढ़ने का पुण्य बताकर दुष्प्रचार किया। इन अनार्ष ग्रन्थों के प्रचार से यह असर हुआ कि आम लोगों की बुद्धि से धीरे-धीरे वेद लुप्त होते गए। उन्होंने मान लिया वेदों को ब्रह्मा से शंखासुर राक्षस चोर कर ले गया है। इसलिए पंडित जब वेद के तर्क से झूठे पड़ जाते थे हारे हुए पंडित लोग महर्षि को शंखासुर राक्षस का ही उदाहरण देते थे कि अब तो वेद ही दुनिया में नहीं हैं तो महर्षि दयानन्द भी सटीक उत्तर देते कि शंखासुर को मारकर मैंने चारों वेद छुड़ा लिये हैं।

वेदों के अनुवाक, सूक्त, अध्याय, मंडल, वर्ग, प्रपाठक, देवता, मंत्र, छंद तथा अर्थ करने वाले ऋषि पूरी-पूरी गिनती में होने तथा ऋषियों से उत्पन्न ऋषि संतानों को पूरे वेद कंठस्थ होने से पाखंडी मत के लोग मिलावट नहीं कर सके। नहीं तो ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र में आता हैं कि एक बार शास्त्रार्थ में अपने तर्क में एक पंडित ने मंत्र पढ़ा। ऋषि दयानन्द ने फौरन ही उस धूर्त को कहा कि यह वाक्य तो गरुड़ पुराण का हैं वेद का नहीं। वह धूर्त पंडित हक्का बक्का रह गया। वेद तो उसने कभी जिंदगी में देखे ही न थे। उसे क्या पता था कि ''बड़ी निराली शान वेदां वाले दी, महमा करां ब्यान वेदां वाले दी।'' आइए आखिर में उनके द्वारा एक वेदमंत्र का सुन्दर अर्थ पढ़ें इससे सिद्ध हो जायेगा कि वेद ज्ञान कभी लुप्त नहीं हो सकता।

**ओम् यो अर्यो मर्त्तभोजनं पराददाति दाशुषे।**
**इन्द्रो ऽअस्मभ्यं शिक्षतु विभजा भूरि ते वसु भक्षीय तव राधसः॥ ६॥**

ऋग्वेद मं० १/अ० १३/सू० ८३/म० ६

**भावार्थ :** जो ईश्वर इस जगत् को रच, धारणकर जीवों को न देता तो किसी को कुछ भी भोग सामग्री प्राप्त न हो सकती। जो यह परमात्मा वेद द्वारा मनुष्यों को शिक्षा ना करता तो किसी को विद्या का लेश भी प्राप्त न होता इससे विद्वानों को योग्य है कि सबके सुख के लिए विद्या का विस्तार करना चाहिए।

-ब्र० राजेश आर्य 'शील'
म०नं० १३२४ भोगलां रोड राजपुरा टाउन-१४०४०१, जिला पटियाला (पंजाब)

# अथ ब्रह्मविद्यायां ज्ञानार्थः

लेखक : सोहनलाल शारदा, शाहपुर भीलवाड़ा (राजस्थान)

**तथास्तु**-यह सूत्र रूप शब्द महर्षि ने तब कहे थे कि जब वे पूज्य गुरुदेव से शिक्षा याने वेदार्थ ज्ञान की कुञ्जी प्राप्त कर समर्पण भावों से भावित हो उनकी प्रिय आवश्यक वस्तु ''लौंग'' भेंट किये थे। तभी गुरुदेव आशीर्वाद के साथ यह आदेश भी करते हैं कि ''हे प्रिय शिष्य दयानन्द! मुझे तुम्हारी यह भौतिक भेंट नहीं चाहिए। मैं तो यह चाहना करता हूं कि तुम याजीवन अपने प्राणों को ही दक्षिणा में समर्पित करके आर्ष वैदिक ज्ञान प्रचार का व्रत लेकर ऋषि महर्षियों के द्वारा वेदानुकूल रचित आर्ष ग्रन्थों की ही महिमा स्थापित कर पठन का प्रचार करोगे।'' इसलिए कि मानवों द्वारा निर्मित ग्रन्थों में उस निराकार परब्रह्म परमेश्वर की व ऋषि महर्षियों की निन्दा है और इन विद्वद्विज्ञजनों के ग्रन्थों में ऐसी कोई कुछ भी बात नहीं है। अत: इस कसोटी को हाथ से कभी भी नहीं छोड़कर इनके ग्रन्थों का ही मण्डन करते रहोगे। इस प्रकार के प्रचार में दारुण विपत्ति भी आवे तो उसे सहर्ष स्वीकार करोगे।

इस प्रकार के गुरु के आदेश को धारण कर कठिन कठोर कर्त्तव्य कर्म करने का व्रत लेकर ही उपर्युक्त वचन कहे थे कि-**तथास्तु**-अर्थात् ऐसा ही होगा। जो आज्ञा।

इस सूत्ररूप वचन को निभाते हुए हमारे इस आर्यावर्त राष्ट्र समाज व परिवारों में जो 'दुरित' याने दुर्गुण दुर्व्यसन व दु:ख एवं पाखण्डवाद को वेदज्ञानरूपी शास्त्र से छिन्न-भिन्न कर सन्मार्ग प्रशस्त कर गये।

इसी हेतु ही सर्वप्रथम गुरुवर की पाठशाला मथुरा से प्रस्थान कर आगरा में निराकार अव्यक्त ईश्वर विषयक प्रचार-प्रसार वेदानुकूल प्रारम्भ किया। प्रथम में 'पंचदशी' की कथा प्रारम्भ की। इसमें एक स्थल में आया कि ''कभी-कभी ईश्वर को भी भ्रम हो जाता है।'' (पं० लेखरामकृत आर्यभाषानुवाद पृष्ठ ४९ प्रथम संस्करण) इस प्रसङ्ग के आते ही महर्षि कह उठे कि ऐसे ग्रन्थों के पठन-पाठन की गुरु आज्ञा नहीं है।

अत: इसे स्थगित कर ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रानुकूल श्रीमद्भगवद्गीता की कथा प्रारम्भ की जो दो मास पर्यन्त बराबर चलती रही। इस कथा का आगरा में प्रभाव यह रहा कि जन साधारण में अव्यक्त ईश्वर की भक्ति के भाव जागृत हो गये। गीता में भक्ति की विधि करने की नहीं है। अत: सर्वप्रथम सन्ध्या की पुस्तक लिख प्रकाशित कराई। प्रभुभक्ति करने हेतु।

इस पुस्तक के अन्त में लक्ष्मी सूक्त था। इसके प्रकाशन में सेठ रूपलाल अग्रवाल का पन्द्रह सौ रुपया व्यय हुआ और तीस हजार की संख्या में छपी थी। इसमें प्रथम में वर्णन था कि-''**तत्रादौ ब्रह्मविद्यायां सन्ध्याविधानम् प्रोच्यते।**''

एक आना मूल्य की यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि इसको सभी जन युवा बाल वृद्ध पढ़ते पढ़ाते व कार्यरूप में परिणत करते थे। इस लघु ग्रन्थ में प्रथम में सन्ध्या शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की है कि-**सन्ध्यायन्ति सन्ध्यायते वा परब्रह्म यस्याम सा सन्ध्या।** अर्थात्-भली-भांति ध्यान करते हैं वा किया जाय। परमेश्वर का जिससे वह सन्ध्या शब्द से जानी जाती है। इसको कार्यरूप में परिणत करने के समय का वर्णन पञ्च महायज्ञ विधियां इस प्रकार से है कि-''**तत्र रात्रिन्दिवयो: सन्धिवेलाया-मुभयोस्सन्ध्यो: सर्वैर्मनुष्यैरेव स्तुतिप्रार्थनोपासना: कार्य्या:॥**''

अर्थात्-यह सन्ध्योपासन रात्रि व दिन के संयोग समय दोनों सन्ध्याओं में सब मनुष्यों को इसी प्रकार से उस परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना अवश्य करनी है कि जिससे उसके महाकठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सकें। यथाविधि उचित समय पर करने रहे।

इसके लिए ही पूरे ग्यारह वर्ष पर्यन्त याने विक्रमी संवत् १९२० से लेकर १९३९ विक्रमी याने आर्यसमाज की स्थापना के पूर्व तक सन् १९३९ में धुरन्धर प्रचार हुआ।

इस प्रकार के प्रचार-प्रसार का फल यह रहा कि जिसे सोरों निवासी नारायण नामक सज्जन ने पं० लेखराम जी को वर्णन करते हुए कहा कि -

**स्वामी दयानन्द सरस्वती बाबा आये ऐसे शास्त्री।**
**बहुतेरे लड़के कुपढ़ डोले पढ़ाई उनको गायत्री॥''**

(पं० लेखराम कृत आर्यभाषानुवाद पृष्ठ ११७ प्रथम संस्करण)

इस प्रकार महर्षि ने प्रथम में ही ब्रह्म विद्या का प्रचार-प्रसार पठन-पाठन सहित दृढ़तापूर्वक किया। इस हेतु ही पञ्चमहायज्ञविधि गायत्री जापविधि पढ़ाते व हाथ से लिखवा कर भी देते थे। जैसाकि श्री गोपालसिंह वर्मा ने श्रद्धेय पं० लेखराम जी को वर्णन करते हैं कि - मैं पूज्य स्वामीजी के सान्निध्य में बैठा हुआ गायत्री मन्त्र का उच्चारण उच्च स्वर से कर रहा था कि तभी एक पंडित जी आये और मुझ पर कुपित होकर कहने लगे कि -

**गायत्री मन्त्र को ऐसे जोर से मत बोले।**
**इसको शूद्रजन जाति के लोग सुन लेंगे॥**

इस प्रकार के कथन को सुनकर पूज्य स्वामीजी ने उसे बहुत फटकारा। जिससे वह चुप होकर इस स्थान से ही चल दिया। फिर स्वामीजी ने मुझको कहा कि-**निश्शंक होकर उच्च स्वर से मन्त्र पाठ करो।** (पुस्तक वही पृष्ठ ९६)

इस प्रकार के प्रसङ्गानुसार ही रामघाट के पं० टीकाराम स्वामी ने पं० लेखराम जी को वर्णन किया कि-जब प्रथम बार पूज्य स्वामीजी महाराज रामघाट पधारकर एक झोंपड़ी में प्रवास कर रहे थे। तभी मैं ब्रह्मचारी केशवदेव के साथ उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। तब प्रथम में स्वामीजी ने पूछा कि-''**तुम ब्राह्मण हो। क्या तुम्हें सन्ध्या गायत्री कण्ठस्थ है ?**'' मैंने प्रत्युत्तर में कहा कि-मुझे गायत्री कण्ठस्थ है। प्रत्युत्तर में स्वामीजी ने कहा-अच्छी बात है। सुनाइये। मैंने इस पर कहा कि-अन्यों को सुनाने का गुरु आदेश नहीं है। इस पर स्वामीजी ने कहा कि-**संन्यासी ब्राह्मणों का भी गुरु होता है। तुम हमारे सामने पढ़ो। कहो।** साथी ने भी इसी बात का समर्थन किया। तब मैंने मन्त्र पढ़ा। जिसे सुनकर कहा कि-पाठ शुद्ध है। तुम ठीक ब्राह्मण हो। तुम चाहे तो हमारे से सन्ध्या अग्निहोत्र व बलिवैश्वदेव की विधि व मन्त्रोच्चारण सीख सकते हो।

अत: मेरे को सन्ध्या लिखवा दी। प्रथम में। जब स्वामीजी महाराज द्वितीय बार यहां पधारे तब उन्होंने मुझे पूछा कि-तुमने सन्ध्या कण्ठस्थ करली ? मैंने प्रत्युत्तर में कहा कि-''कोई पढ़ाने वाला ही नहीं मिला।'' इसको सुनकर स्वामीजी ने कहा कि-''तू पढ़ेगा तो मैं यहां ही ठहरकर तुझे पढ़ा दूंगा। अत: प्रथम दिवस अग्निहोत्र कराया व पढ़ाया। पुन: आगे लक्ष्मी सूक्त जो सन्ध्या में था। पन्द्रह ऋचायें कण्ठस्थ कराने के पश्चात् पं० करुणाशंकर से पञ्चमहायज्ञविधि लिखवाकर समय मिलता तब व रात्रि में भी पढ़ाते रहते थे।''

यह जन आगे का वर्णन करता हुआ कहता है कि-''मुझे इक्कीस दिन पर्यन्त सन्ध्या अग्निहोत्र बलिवैश्वदेव की विधि पढ़ाई। मेरे पास की अन्य सभी अवैदिक ग्रन्थ कहकर फिकवा दी। केवल यजुर्वेदीय रुद्री अष्टाध्यायी ही पढ़ने हेतु रहने दी।'' (पुस्तक वही पं० लेखराम कृत पृष्ठ १०९)

इस प्रकार के उदाहरणों से स्पष्ट विदित होता है कि महर्षि नई पीढ़ी को आर्य बनाने हेतु ब्रह्म विद्या पढ़ाने का ही एक मार्ग मानकर स्वयं पढ़ाते रहे थे निरन्तर ग्यारह वर्षपर्यन्त। बाद में लेखन कार्य प्रारम्भ किया।

अत: हमारा नई पीढ़ी को आर्य बनाने हेतु यह सर्व महर्षिकृत से ब्रह्मविद्या पढ़ानी है। स्वसामर्थ्यानुसार न्यूनतम पांच जनों को अवश्य ही। इसी दृढ़ आशा विश्वास के साथ।

## शुगर में लाभकारी बातें

१. शुगर वाले मरीज को सैर जरूर करनी चाहिए, यह उसके लिए वरदान है क्योंकि सैर से आधी शुगर खत्म हो जाती है। अत: नियमित रूप से सैर करना अत्यन्त आवश्यक है।

२. शुगर वाले मरीज को कुछ भी हो सकता है। मोटे होते रहना-पतला होते रहना, गुर्दे खराब हो जाना, बाल सफेद होना, आँखों का खराब होना बहुत सी बातें रहती हैं। तनाव के कारण भी शुगर को बढ़ावा मिलता है।

३. शुगर वाले मरीज को ज्यादातर जूता ही पहनना चाहिए क्योंकि शुगर वाले मरीज के पैर पर चोट लगने पर जल्दी से ठीक नहीं होती। चप्पल कम से कम पहननी चाहिए। जूता तंग भी नहीं होना चाहिए और अधिक खुला भी नहीं होना चाहिए। अच्छी कंपनी का आरामदेह जूता ही लेना चाहिए।

४. सुबह उठते ही गरम पानी पीना चाहिए ताकि पेट की सफाई हो सके। मीठा कम से कम खाना चाहिए। मीठा शुगर वाले मरीज के लिए जहर है। खाना आराम से चबा-चबाकर खाने से शुगर नियंत्रित होती है। ध्यान रखें भोजन और भजन शांति से करना चाहिए।

५. काम का निपटारा करते रहना चाहिए ताकि दिमाग पर बोझ न रहे।

६. आलस्य से शुगर को बढ़ावा मिलता है। मोटापा शुगर का मित्र है।

७. शुगर क्यों होती है ? जब व्यक्ति खाता ज्यादा है मगर शारीरिक मेहनत कम करता है। ज्यादातर यह अमीरों की बीमारी है। गरीबों में कम होती है।

८. छ: दाने पनीर डोडा रात को भिगोकर सुबह उसको मसलकर, छानकर उसका पानी लेने से लाभ होता है।

९. तुलसी के १५ पत्ते मसलकर सुबह खाली पेट लेने से शुगर में लाभ मिलता है।

१०. शुगर का खानदानी असर भी रहता है।

११. कपालभाती और मण्डूक आसन करने से बहुत लाभ मिलता है।

१२. हर तीन महीने में शुगर टेस्ट कराना व हर महीने वजन तुलवाते रहना चाहिए और उसका ब्यौरा संभालकर रखें। डॉक्टर की सलाह भी लें।

१३. वक्त पर सोना, वक्त पर उठना शुगर को नियंत्रित करता है।

१४. टेलीफोन, सैलफोन, टेलीवीजन, ज्यादा बोलना शुगर को बढ़ावा देता है।

१५. करेला-खीरा-टमाटर का जूस सुबह पीना चाहिए।

१६. नाश्ता हल्का करना चाहिए। कच्चा पनीर, पपीता, फीका दूध लेना चाहिए।

१७. जामुन, अमरूद, संतरा, मौसमी, रसभरी आदि मौसम अनुकूल फल खाना ही ठीक रहता है, बेमौसम फल नहीं खाएं।

**-ओमप्रकाश अग्रवाल**

# आओ योग की शरण में चलें

"योग" शब्द में मात्र दो ही अक्षर है किन्तु इस छोटे से शब्द का प्रभाव क्षेत्र अति विस्तृत है। स्थूल से लेकर सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रक्रियाओं में योग की अपनी भूमिका व महत्त्व है। स्थूल व्यायाम से प्रारम्भ होकर सूक्ष्म व्यायाम द्वारा योग के इस क्रम से आगे बढ़ते हुए ही वह स्थिति आती है जब व्यायाम के साथ उपासना भी जुड़ जाती है और तब वह "योग साधना" बन जाती है।

योग का अर्थ आसन व्यायाम ही नहीं, अपितु आत्मा-परमात्मा के मेल का नाम भी योग है।

महर्षि पतञ्जलि ने योग दर्शन में बताया है कि "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात योग के द्वारा चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग का मूल अभिप्राय है।

योग साधना हमारी प्राचीन परम्परा है किन्तु प्राचीन समय की अपेक्षा वर्तमान आधुनिक युग में जहां कृत्रिम साधनों की भरमार होती जा रही है, योग की अधिक आवश्यकता है। प्राचीनकाल में प्रायः नर-नारी प्रकृति के साथ मिलकर संघर्षमय जीवन बिताया करते थे। परन्तु अब कृत्रिम साधनों के आदी होकर हर व्यक्ति आरामदायक जिंदगी जीना पंसद करता है। परिणामस्वरूप आज का मनुष्य प्राकृतिकता की अपेक्षा अपने आपको कमजोर महसूस करता है। सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि विषम परिस्थितियों के साथ संघर्ष नहीं कर पाता।

पुराने समय में मनुष्य पक्का था बाकी सब कुछ कच्चा था। किन्तु अब मनुष्य कच्चा हो गया है बाकी सब कुछ पक्का हो गया है। पहले रहने के मकान कच्चे थे, चलने के रास्ते व सड़कें कच्ची थी और उन पर रहने व चलने वाले पक्के थे। आज सड़कें-भवन, रसोई तक सब कुछ पक्का है किन्तु आज मनुष्य इतना कमजोर व आलसी बना दिया है कि हम घर से बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, दफ्तर, दुकान या कहीं भी जाना हो तो पैदल नहीं जा सकते। हमारे ही पूर्वज १०-१०, २०-२० किलोमीटर पैदल चलते थे। दिनभर खूब शारीरिक श्रम करते थे। इसीलिए योगसाधना की इतनी जरूरत उस समय नहीं थी, जितनी आज है।

महर्षि पतञ्जलि ने योगसाधना के आठ अंग बतलाते हुए कहा है कि यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि का निरन्तर अभ्यास करते हुए व्यक्ति समाधि की प्राप्ति कर सकता है। "ध्यानं निर्विषयं मनः" सूत्र के आधार पर ध्यान उस अवस्था का नाम है जब मन निर्विषय हो जाये। अर्थात् मन को किसी एक स्थान पर स्थिर करने के पश्चात् ओंकार जप के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करने (जानने) अर्थात् अनुभव करने के लिए उस परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करना और बीच में किसी अन्य वस्तु या विषय का स्मरण न करना ध्यान कहलाता है। ध्यान का निरन्तर अभ्यास करने से समाधि की प्राप्ति होती है तथा उपासक व्यवहार सम्बन्धी समस्त कार्य दृढ़तापूर्वक व सरलतापूर्वक पूरा कर लेता है।

इस उच्च स्थिति को प्राप्त करने के लिए महर्षि पतञ्जलि द्वारा बताये गये यम, नियम, आसन, प्राणायामादि "अष्टांग योग" का नियमित अभ्यास करना चाहिए।

अन्त में मैं अपने अनुभव के आधार पर यह लिखना आवश्यक समझता हूं कि बाल-वृद्ध-युवा, नर-नारी सभी के लिए स्वस्थ-सुखी एवं संतुष्ट रहने के लिए प्रतिदिन एक घण्टा प्रातःकाल सूर्य निकलने से पहले योग साधना अवश्य करनी चाहिए। सूर्योदय से पहले योग करना अधिक लाभकारी माना गया है। क्योंकि प्रातःकाल का वायु सूक्ष्म, शुद्ध होता है।

जो व्यक्ति नियमित रूप से योग करता है उसे कोई भी शारीरिक या मानसिक बीमारी नहीं होती और यदि पहले से व्यक्ति को कोई भी बीमारी लग गयी हो तो वह नियमित व्यायाम, प्राणायाम एवं योग साधना से दूर की जा सकती है। योग से मन की चंचलता दूर होकर एकाग्रता बढ़ती है तथा ईश्वर की भक्ति में मन लगने लगता है। परिणामस्वरूप मन व आत्मा तथा इन्द्रियों की पवित्रता उत्तरोत्तर बढ़ती रहती है। जिससे व्यक्ति अपने जीवन के हर एक कार्य क्षेत्र में कार्यकुशलता एवं सफलता प्राप्त कर लेता है।

विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए योग अत्यन्त लाभकारी होता है। प्रतिदिन नियमित योग करने वाला विद्यार्थी पढ़ाई लिखाई तथा अपना पाठ याद करने की विशेष क्षमता हासिल कर लेता है। मन्द बुद्धि व शारीरिक दृष्टि से कमजोर विद्यार्थियों के लिए नित्य योग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है। वर्तमान युग की मांग के मुताबिक हर व्यक्ति को योग की शरण में आना ही पड़ेगा। अतः आओ जीवन में योग को अपनायें और जीवन को सुखी बनायें।

-**आचार्य रामसुफल शास्त्री**, शास्त्री भवन, लाल सड़क हाँसी

## आर्यसमाज घण्टाघर चौक भिवानी का चुनाव

प्रधान - श्री वेदप्राश आर्य, उपप्रधान - श्री प्रेमराज आर्य, मंत्री - डॉ० रामफल आर्य, उपमंत्री - श्री सुभाषचन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष - श्री राधेश्याम आर्य, लेखा निरीक्षक - श्री गुणाकर आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष - श्री नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट, प्रचार मंत्री- ज्ञानेन्द्र आर्य।

# दानवीर समाजसेवक चौ० प्रियव्रत का अभिनन्दन होगा



७ अगस्त तथा ४ सितम्बर २००५ को चौ० लखीराम आर्य अनाथालय रोहतक के कार्यालय में दानवीर समाज सेवक चौ० प्रियव्रत के श्रद्धालुओं की बैठक में निश्चय किया गया है कि शीघ्र ही इनका अभिनन्दन रोहतक में किया जावे। इसकी तैयारी के लिए एक अभिनन्दन समारोह समिति आर्य अनाथालय के प्रधान डॉ० रामचन्द्र सिवाच की अध्यक्षता में गठित की गई है। समारोह के अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित होगी। सम्पादक मण्डल में प्रसिद्ध विद्वान लेखक डॉ० बलवीरसिंह होजखास, नई दिल्ली, श्री राजवीर आर्य खेड़ी आसरा, आचार्य वेदव्रत शास्त्री, डॉ० प्रकाशवीर विद्यालंकार, आचार्य सुदर्शनदेव तथा श्री ओमप्रकाश पत्रकार आदि हैं। समारोह समिति की आगामी बैठक ११ सितम्बर २००५ को ११ बजे छोटूराम धर्मशाला बहादुरगढ़ में होगी। बाबू रघुवीरसिंह समारोह संयोजक हैं।

## चौ० प्रियव्रत के अभिनन्दन समारोह के अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका के लिए शुभ सन्देश/लेख भेजने बारे

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि चौधरी प्रियव्रत पिछले ५० वर्ष से भी अधिक समय से अत्यन्त प्रशंसनीय व अनुकरणीय सामाजिक शैक्षिक व धार्मिक कार्यों के लिए हम सभी के लिए आदर के पात्र ही नहीं हैं अपितु हमारे प्रेरणास्रोत भी हैं। शिक्षा के क्षेत्र में, विशेष रूप से तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में स्वयं अपनी दानशीलता से तथा आम जनता के उदार सहयोग से जो कार्य किया है, वह मील का पत्थर साबित हुआ है। यदि हम सर छोटूराम इंजीनियरिंग कॉलेज मुरथल, नेहरू कॉलेज झज्जर, महाराजा सूरजमल संस्थान, नई दिल्ली तथा चौ० छोटूराम तकनीकी संस्थान कंझावला (दिल्ली) के वर्तमान स्वरूप को देखें तो उसके संस्थापकों में स्वतः चौधरी प्रियव्रत का नाम हमारे सामने आ जाता है। इन सबके अतिरिक्त अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव में चौ० लखीराम आर्य अनाथालय की दयानन्दमठ, रोहतक में स्थापना करके अनाथ बच्चों को जो आश्रय दिया है और उनकी शिक्षा की अच्छे स्कूलों में व्यवस्था की है उसे अति पवित्र कार्य कहा जा सकता है। अनेक धार्मिक व शिक्षण संस्थाओं में प्रतिवर्ष लाखों रुपये की धनराशि का दान करना उनकी स्थायी प्रवृत्ति रही है। ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियों के लिए शिक्षा के प्रसार के साधन जुटाने में उनकी निरन्तर रुचि रही है। इस विषय में भी चौधरी साहिब ने त्रिपुरा और मिजोरम जैसे दूरस्थ प्रदेशों में हिन्दी तथा संस्कृत के प्रचार व प्रसार के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के अध्ययन की व्यवस्था वहां पर अच्छे स्कूल स्थापित करने की है।

उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र के सैकड़ों विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्तियां देकर उन्हें उच्च पदों पर आसीन होने के योग्य बनाया, जिनमें अनेक प्रोफेसर, डॉक्टर, इंजीनियर और सैन्य अधिकारी शामिल हैं। इससे उनमें हमें सर छोटूराम की प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। यद्यपि चौधरी साहिब एक व्यापारी हैं और उनका व्यापार का दायरा हरयाणा से बाहर दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, कलकत्ता, उड़ीसा और आसाम तक फैला हुआ है फिर भी उन्होंने अपने संकल्पों को पूरा करने में कभी उपेक्षाभाव नहीं दिखाया है। परमेश्वर उनको दीर्घायु दे और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करे।

आपसे प्रार्थना है कि आप अभिनन्दन समारोह के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए अपना शुभ संदेश, लेख एवं फोटो अविलम्ब भेजने की कृपा करें ताकि स्मारिका समय पर प्रकाशित हो सके।

-**केदारसिंह आर्य**, सहसंयोजक
चौ० प्रियव्रत अभिनन्दन समारोह समिति

## सर्वहितकारी की सेवा में आवश्यक निवेदन

१. सर्वहितकारी साप्ताहिक प्रत्येक मास की ७, १४, २१ और २८ तारीखों में पोस्ट किया जाता है। यदि किसी पाठक को ४ दिन तक न मिले तो सूचित करें, पुनः प्रेषित किया जायेगा।
२. जिन ग्राहकों की वार्षिक सहयोग राशि पूरी हो गई है वे १०० रु० मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भिजवायें अन्यथा हम उनकी सेवा में सर्वहितकारी नहीं भेज सकेंगे।
३. जिन पाठकों के पास भूलवश एक से अधिक सर्वहितकारी डाक द्वारा जाता है वे पोस्टकार्ड द्वारा सूचित करने की कृपा करें।
४. सर्वहितकारी के सम्बन्ध में आपके सुझाव, समाचार, लेख आदि सादर आमन्त्रित हैं।

-**वेदव्रत शास्त्री**, सम्पादक सर्वहितकारी, दयानन्दमठ, रोहतक १२४००१

# आर्य-संसार

## सर्वहितकारी के पाठक की सम्मति

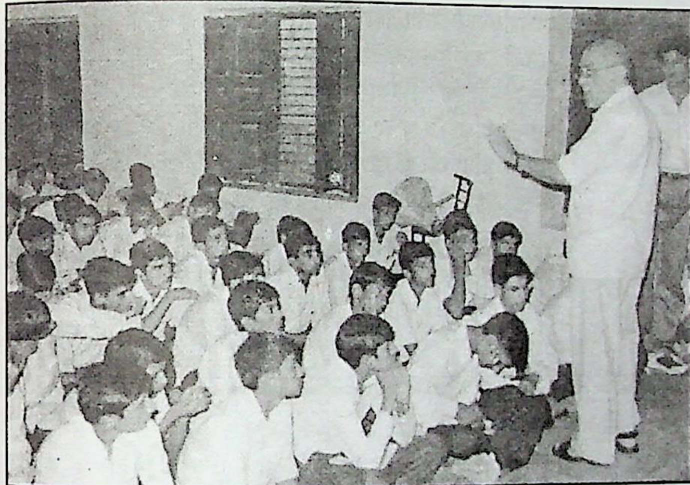
सर्वहितकारी का अंक दिनाक २१/८/२००५ प्राप्त हुआ। इस अंक में **श्री वेदपाल शास्त्री+अधिवक्ता** का जीवन परिचय पढ़कर बड़ी खुशी हुई। इस नवयुवक में एक नई प्रतिभा प्रकाश की किरणें निकलती दिखाई दे रही हैं। ईश्वर इनको साहस शक्ति प्रदान करे, कुछ कर दिखाने की भावना बनी रहे। दूसरी जगमगाती ज्योति **श्री सुरेन्द्रकुमार 'सरस'** में नजर आ रही है। इनकी कविताओं में हृदयस्पर्शी आध्यात्मिकता है। इनको भी ईश्वर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहे। इसी अंक में **डॉ० सुशीला आर्या** की कविता **स्वाध्याय महिमा** बहुत प्रभावशाली और प्रेरणादायक है। मैं इनसे प्रार्थना करता हूं कि महिला समाज में फैली अन्धी श्रद्धा को दूर करके जागृति पैदा करें। हम उन महानुभावों के शुभचिंतक हैं जिन्होंने स्वार्थ भावना को त्यागकर समाज, देश, धर्म के लिये अपना सर्वस्व तन-मन-धन आहुत कर दिया है।

**-देवराज आर्य मित्र,** हरिनगर नई दिल्ली-६४

## सूचना

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि द्रोणस्थली आर्य कन्या गुरुकुल राजपुरा रोड, देहरादून की आचार्या डॉ० अन्नपूर्णा (एम.ए.,पी-एच.डी.) जी के वैदिक प्रवचन 'वेद सुधा' शीर्षक से टेलीविजन के **साधना चैनल पर १ सितम्बर २००५** से प्रात: ७ बजकर २० मिनट से आरम्भ होने जा रहे हैं। इन प्रेरणादायक प्रवचनों को १ सितम्बर से प्रतिदिन श्रवण कर आध्यात्मिक लाभ उठाएं।

## छात्र अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें : डॉ० सांगवान



ऐसे छात्र सदा उन्नति की ओर अग्रसर हो जाते हैं जो अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हैं और फिर उसे प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। परिश्रम और भाग्य एक दूसरे पर आधारित है। परिश्रमी छात्र अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करते हैं। ये शब्द आज आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल सिरसा में नये सत्र २००५-२००६ के १०+१ के १०+२ के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ० आर.एस. सांगवान ने कहे। गौरतलब है कि डॉ० आर.एस. सांगवान यहां आर्यसमाज कोर्ट रोड के प्रधान, सिरसा एजुकेशन सोसाइटी के संरक्षक, आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के प्रबंधक तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान भी हैं।

उन्होंने कहा कि वर्तमान राष्ट्रपति डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने छात्र जीवन में एक वैज्ञानिक बनने का संकल्प लिया और इसे पूरा करके दिखाया। वर्तमान प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहनसिंह ने अपने विद्यार्थी जीवन में एक अर्थशास्त्री बनने का संकल्प लिया और इसे पूरा करके दिखाया। ऐसे कितने ही और उदाहरण हैं जो यह प्रमाणित करते है कि संकल्प शक्ति से ही भाग्योदय होता है।

डॉ० सांगवान ने छात्रों को अपने स्वयं के जीवन का उदाहरण दिया कितने ही कष्ट आये उनके जीवन में लेकिन वह अपनी आँखों में एक स्वप्न संजाये हुए आगे बढ़ते रहे कि एक दिन उन्हें एक योग्य डॉ० बनना है। दिन-रात के कठोर परिश्रम से जब वह डॉ० बने तो उनके परिवार के सदस्यों की आँखों में खुशी के आंसू उमड़ आये।

उन्होंने आगे कहा कि जीवन में कोई भी कार्य असंभव नहीं है केवल आवश्यकता है लगन, आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय एवम् कठोर परिश्रम की। +१ तथा +२ के विद्यार्थियों को समय सारिणी बनाकर प्रत्येक विषय की अच्छी तैयारी करनी चाहिए। ताकि कम से कम प्रथम श्रेणी प्राप्त हो सके। आज के युग में इतनी अधिक प्रतियोगिता है कि विभिन्न कोर्सों में प्रवेश लेने वालो की मैरिट ७५ प्रतिशत तक चली जाती है।

इस अवसर पर डॉ० सांगवान ने छात्रों को इंग्लिश ग्रामर का क्रियात्मक प्रयोग ब्लैकबोर्ड पर सरल ढंग से समझाया। इसमें छात्रों की रुचि देखते ही बनती थी।

डॉ० सांगवान ने इस अवसर पर छात्रों को महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिह्नों पर चलकर अपने जीवन को सत्यनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा समाज एवं राष्ट्रनिष्ठ बनने का आह्वान किया। हम भारतीय आर्यों की संतान हैं। हमारा प्राचीनतम युग वैदिक युग है।

**-कृष्णलाल वोहरा**

प्रिंसीपल आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल सिरसा (हरयाणा)

## एकादश सत्यार्थप्रकाश निबंध प्रतियोगिता २००६

**विषय :** महाभारत के पश्चात् से आद्य शंकराचार्य पर्यन्त वैदिक धर्म के उत्थान-पतन की समीक्षा (सत्यार्थप्रकाश के ११ वे समुल्लास के आलोक में)

**अंतिम तिथि :** १० दिसम्बर २००५

पुरस्कार प्रथम ३१०० रुपये, द्वितीय २१००, तृतीय १५०० रुपये एवं पांच सांत्वना पुरस्कार प्रत्येक १०० रुपये (लेखिका वर्ग में दो विशिष्ट सांत्वना पुरस्कार)

निबंध फुलस्केप कागज में लगभग पन्द्रह पृष्ठों में हो। निबंध आसानी से निर्णायकों द्वारा पढ़ा जा सके। इस हेतु टंकित हो तो अच्छा है। हस्तलिखित भी स्वीकार्य है।

**कृपया ध्यान देवें :** ११वें समुल्लास पर आधारित प्रतियोगिता दो बार में आयोजित की जावेगी। अत: वर्तमान प्रतियोगिता में निबंध को आदि शंकराचार्य तक ही सीमित रखें। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

निवेदक : **अशोक आर्य**

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, उदयपुर

## आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन की योजना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक इसी विश्वविद्यालय में लगभग पांच दशकों तक वेदोपाध्याय, उपकुलपति, कुलपति एवं परिद्रष्टा (विजिटर) पदों पर प्रतिष्ठित, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में 'आर्य' के आदिकालीन संपादक एवं महोपदेशक, वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् एवं लेखक आचार्यप्रवर स्व० श्री प्रियव्रत वेदवाचस्पति वेदमार्तण्ड के जन्मशताब्दी वर्ष (२००६) में उनकी स्मृति में उनके पुत्र-पुत्रियों द्वारा एक बृहत् ग्रन्थ प्रकाशित करवाने का निर्णय लिया गया है।

आचार्य जी जीवन भर महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए देश के कोने-कोने में जाते रहे। अत: ऐसे अनेक आर्यजन होंगे, जिनका उनसे किसी न किसी रूप में सम्पर्क रहा होगा, पर हम पते के अभाव में उनसे व्यक्तिगत पत्राचार नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे महानुभावों से अनुरोध है कि वे आचार्य जी के संबंध में स्वानुभूत संस्मरण भेजने का कष्ट करें। यदि किसी के पास ऐसी पत्र-पत्रिकाएँ, ग्रन्थ हों जिसमें आचार्य जी द्वारा लिखित लेख हों तो वे कृप्या उनकी फोटोस्टेट प्रति भिजवा दें।

**-डॉ० विनोचन्द्र विद्यालंकार**

४६२, देवलोक, आर्यनगर, ज्वालापुर - २४९४०७ (हरिद्वार)

## आर्यसमाज के संरक्षक डॉ० रामनारायण चावला नहीं रहे



बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि हमारे आर्यसमाज के संरक्षक डॉ० रामनारायण चावला का देहांत दिनांक २१/८/०५ प्रात: उनके निवास स्थान च० दादरी शहर में हो गया है। डॉ० साहब ब्रेन ट्यूमर से पीड़ित थे। उनका ऑपरेशन देहान्त से चार दिन पूर्व गंगाराम अस्पताल दिल्ली में हुआ था। दिनांक २१/८/०५ प्रात: सात बजे तीन बार ओ३म् शब्द का उच्चारण कर संसार रूपी यात्रा समाप्त कर दी। वैदिक संस्कृति एवं आर्यसमाज को समर्पित डॉ० साहब के अंतिम क्रियाकर्म में हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे तथा उनके देहावसन पर शहर के वरिष्ठ नागरिकों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। पिछले दो महीने से वह काफी बीमार थे। ७० वर्षीय डॉ० चावला का जन्म पाकिस्तान के पुदाफर जिले में बहालपुर गांव में हुअर था। १९४७ में चरखी दादरी में विस्थापित होने के बाद वह ४० वर्षों से दन्त चिकित्सक का कार्य कर रहे थे। वह अपने पीछे तीन भाई, तीन पुत्र व पोते-पोतियों से भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। दादरी आर्यसमाज में उनकी मृत्यु से फिलहाल बहुत हानि हुई है जिसकी भरपाई होनी मुश्किल है। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा वे जिस जगह पर हों शांतिपूर्वक हों। उनका शान्ति यज्ञ आर्यसमाज मंदिर में दिनांक २८/८/०५ को प्रात: ८ से ११ बजे तक सम्पन्न हुआ।

**-हरीश लाम्बा,** उप प्रधान आर्यसमाज, चरखी दादरी

## आर्य कुमार सभा गुरुकुल आमसेना का चुनाव सम्पन्न

आर्यकुमार सभा गुरुकुल आश्रम आमसेना का चुनाव दिनांक २८/७/२००५ शुक्रवार को सायंकाल गुरुकुल महाविद्यालय के विशाल सभा भवन में सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये। प्रधान - ब्र० चन्द्रांशु शास्त्री, उप प्रधान - मुकेश शास्त्री, मंत्री - चूरामणि शास्त्री, उपमंत्री - लिषिराजन शास्त्री, कोषाध्यक्ष - हीराधर शास्त्री, पुस्तकालयाध्यक्ष - घनश्याम शास्त्री।

५ सितम्बर को शिक्षक दिवस पर विशेष -

# राष्ट्र निर्माण में शिक्षक का स्थान

५ सितम्बर का दिन सारे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन हमें स्मरण कराता है भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० एस. राधाकृष्णन् का जिन्होंने शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया लेकिन उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए वह देश के सर्वोच्च पद को प्राप्त करने में सफल हुए। उन्होंने हिन्दू धर्म, दर्शन एवं संस्कृति पर उच्चकोटि का साहित्य लिखा। उनका जन्मदिन ही शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में शिक्षा के विस्तार के लिए १९४९ ई० में विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया। इस आयोग के अध्यक्ष थे डॉ० राधाकृष्णन्। उनके शब्दों में -शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा ऐसी हो जो विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण करे। चेहरे पर तेज, शरीर में बल, मन में दृढ़ इच्छा शक्ति, बुद्धि में पाण्डित्य, जीवन में स्वावलम्बन तथा हृदय में पवित्रता लाने वाली शिक्षा ही है। शिक्षा ऐसी हो जो विद्यार्थी को जीविकोपार्जन के अवसर दे तथा आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर करने में सहायक हो। यह कार्य तभी सम्भव है जब शिक्षक समुदाय अपने कर्त्तव्यों का ठीक ढंग से पालन करे। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों को उच्च वेतन, सुविधाएं तथा विशेष अधिकार प्रदान किए जाएं।

१९५२ ई० में डॉक्टर लक्ष्मीकांत मुदालियर की अध्यक्षता में बने शिक्षा आयोग, १९६४ ई० के कोठारी आयोग एवं अन्य आयोगों ने भी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए समय समय पर सुझाव दिए। इन सुझावों का क्रियान्वन बहुत कम हुआ। आज भी शिक्षा क्षेत्र में अंधकार फैला हुआ है।

स्वतन्त्रता के ५८ वर्षों के बाद भी केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों के वार्षिक बजट में शिक्षा के लिए पर्याप्त राशि नहीं रखी जाती। देश के सभी गाँवों में प्राईमरी विद्यालयों की स्थापना नहीं हो पाई है। जम्मू कश्मीर के बर्फीले क्षेत्र, मध्यप्रदेश एवं उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्र, मणिपुर, त्रिपुरा एवं नागालैंड के वन क्षेत्र जहां शिक्षा की दृष्टि से पूर्ण अंधकार है। मीलों-मील तक कोई स्कूल नहीं है। आज पूरे देश में निर्धनता के कारण लाखों की संख्या में छात्र एवं छात्राएं जो १४ वर्ष की आयु से कम हैं निरक्षक हैं। उन तक अभी शिक्षा रूपी प्रकाश नहीं पहुंचा है। हजारों बालक छोटी बड़ी दुकानों पर, होटलों व ढाबों पर बर्तन मांजते देखे जा सकते हैं। अनेक उद्योगों - चूड़ी उद्योग, दियासलाई उद्योग एवं हथकरघा उद्योग आदि में भी छोटे बालकों का शोषण होता है। सत्य यही है कि प्राथमिक शिक्षा की दृष्टि से हमारी नींव कमजोर है। सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत भारत सरकार प्राथमिक शिक्षा के विस्तार पर करोड़ों रुपया खर्च कर रही है लेकिन मंजिल बहुत दूर है।

शिक्षक दिवस हमें स्मरण करता है कि प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, विश्वविद्यालय शिक्षा आदि के केन्द्र बिंदु अध्यापक ही हैं। शिक्षा स्तर में सुधार लाने के लिए शिक्षकों का ध्येयनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण होना आवश्यक है। जापान, इंग्लैंड, जर्मनी एवं इजराइल आदि देशों की उन्नति का मूल कारण ध्येयनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण शिक्षक हैं। वहां शिक्षकों के पर्याप्त वेतन हैं। उन्हें शिक्षा सम्बन्धी सुविधाएं भी प्राप्त हैं। केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों का यह दायित्व है कि वे अध्यापकों की समस्याओं के निराकरण में भरपूर सहयोग दें।

पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर राधाकृष्णन् द्वारा कही गयी इन पंक्तियों को हम सदा याद रखें-शिक्षक एक ऐसा दीपक है जो स्वयं जलकर भावी पीढ़ी का निर्माण करता है। वह चाहे स्वयं शिक्षक रहता है लेकिन अपने हाथों से प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस अधिकारी, सैनिक अधिकारी, चिकित्सक, इंजीनियर आदि तैयार करता है। इसलिए राष्ट्रनिर्माण में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

-कृष्णलाल वोहरा

## कविता

इस आर्यावर्त देश का यह बहुत बड़ा सौभाग्य था कि यहां ऋषि-मुनियों से यह देश पूरा भरा हुआ था। भारत के सभी निवासी सच्चरित्र होते थे। सह शिक्षा का प्रचार न था। देश में दुराचार, व्यभिचार न था, सब सुखी थे, कोई भी दुखियारा न था, हवन-यज्ञ का प्रचार था, कहीं पर वायु प्रदूषण न था, ऐसा सुन्दर था मेरा देश।

भारत बीते हुये समय का वर्णन करते हुये राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं-

संयम-नियमपूर्वक प्रथम बल और विद्या प्राप्त की,
होकर गृही फिर लोक की कर्त्तव्य रीति समाप्त की।
हम, अन्त में भवबंधनों को थे सदा को तोड़ते,
आदर्श भावी सृष्टि हित थे मुक्ति पथ में छोड़ते।
समझा प्रथम किसने जगत् में गूढ़ सृष्टि महत्त्व को,
जाना कहो किसने प्रथम जीवन-मरण के तत्त्व को।
आभास ईश्वर-जीव का कैवल्य तक किसने दिया,
सुनलो, प्रतिध्वनि हो रही, **यह कार्य आर्यों ने किया।**
फैला यहीं से ज्ञान का आलोक सब संसार में,
जागी यहीं थी जग रही जो ज्योति अब संसार में।
इंजील और कुरान आदि थे न तब संसार में,
हमको मिला था दिव्य वैदिक बोध जब संसार में।

**-जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य,** आर्यसमाज सेक्टर 6 बहादुरगढ़ (हरयाणा)



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७६८७४

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२






आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती





ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ | अंक ४० | १४ सितम्बर, २००५ | वार्षिक शुल्क १०० रुपये | विदेश में २० डॉलर | एक प्रति २.००

### आवश्यक है परिवर्तन (भाग-५)

## अन्ततोगत्वा समाधान कैसे हो ?

**-राजपालसिंह शास्त्री**, आचार्य, एम.ए. (द्वय), ३४ चन्दन पार्क, दिल्ली-४२

मेरे मतानुसार सर्वप्रथम तो मतैक्य होने का, विचारों में भिन्नता न हो, विचारों में सुधार आवश्यक है। परस्पर लांछन लगाने से लाभ नहीं। जनता में आपकी ही छवि धूमिल हो रही है। सर्वोच्च संस्था में इस प्रकार मतभेद अच्छे नहीं हैं। उत्तम विचारों से लाभ सम्भव है।

संगठन का होना परमावश्यक है। आज भी सर्वोपरि संस्थान है आर्यसमाज। यदा-कदा जनसाधारण से वार्तालाप करने पर यही सिद्ध होता है कि महर्षि दयानन्दस्थापित संस्था आज भी सर्वोत्कृष्ट और अग्रणी संस्था है। फिर इस संस्था में मत-विभिन्नता, संगठन का सर्वथा अभाव, यह विषय चिन्तनीय और गम्भीर है। अनेक व्यक्ति फोन द्वारा पत्रों तथा वार्तालाप द्वारा समाधान चाहते हैं।

अतः आवश्यक है कि परस्पर विचार-मंथन हो। स्वामी अग्निवेश को आज कम्युनिस्ट कहना, सर्वथा मिथ्या प्रचार है। होंगे कभी, परन्तु आज आप मधुर-प्रकाशन द्वारा निर्मित यज्ञ-महिमा नामक कैसेट सुनें और निर्णय लें। उनके विचारों को सुनें और समझें। इसी प्रकार मधुर-प्रकाशन द्वारा प्रकाशित **महर्षि दयानन्द का वैदिक समाजवाद**। व्यर्थ में केवल कम्युनिष्ट कहकर उनके मनोबल को गिराना है। यदि कम्युनिष्ट हैं भी, तबभी वह उनका स्वतन्त्र मत और राजनीति का पक्ष समझें। आपमें अनेक आर्य ऐसे हैं जो कांग्रेसी हैं, अनेक भारतीय जनता पार्टी के समर्थक हैं। प्रत्येक आर्य किसी न किसी राजनीतिक पार्टी से सम्बन्धित है। अतः श्री स्वामी अग्निवेश जी के मनोबल को सुदृढ़ बनावें। बनारस (उ०प्र०) से प्रकाशित **बृहद् हिन्दी कोष** में देखें। उस शब्दकोष में कम्युनिस्ट शब्द का अर्थ लिखते हैं-समाज की वह व्यवस्था जिसमें सम्पत्ति पर समाज का अधिकार होता है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार काम करता है और आवश्यकतानुसार वृत्ति पाता है।

आप महर्षि दयानन्द के आर्थिक तथा सामाजिक विचारों पर गम्भीरता से विचार कीजिए। कम्युनिज्म के उपर्युक्त अर्थ का कोई मूलभूत विरोध नहीं है। वैदिक वर्ण-व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र अपने-अपने गुण, कर्म, स्वभाव तथा अपनी शिक्षा-दीक्षा तथा योग्यता के अनुसार अपना-अपना कार्य करता है। अतएव स्वामी अग्निवेश जी के मनोबल को न गिराकर उनके मूलभूत विचारों पर चिन्तन कीजिए।

प्रत्येक आर्य श्री स्वामी अग्निवेश जी को वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत समझे। उनका श्री स्वामी जी संन्यासी हैं, साधु-वृत्ति वाले हैं। धन की भी कामना नहीं है। उनका तन-मन-धन सब आर्यसमाज के लिए तथा वैदिक प्रचार हेतु ही है। अपनी पूज्या माता जी के निधन के पश्चात् एक हजार सत्यार्थप्रकाश वितरित किए थे। जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य से संन्यासी होवे वह विद्या व धर्म की जितनी उन्नति कर सकता है, अन्य नहीं। संन्यासी धर्म उपदेश से प्रीति पैदा कर लोगों को व्यर्थ के झगड़ों से बचाकर मनुष्यों की उन्नति करेगा। इस प्रकार उसके उपदेश मानने वाले उसकी सन्तान के समान होंगे।

**-महर्षि दयानन्द**

वास्तव में आश्रम परिवर्तन से ही अर्थपूर्ण संन्यासी नहीं होते। व्यवहार से ही संन्यासी का बोध होता है। जो स्वयं धर्म पर चलकर शुद्धाचरण करते हुए संसार को भी इसी मार्ग पर चलाते हैं। इस प्रकार प्राणिमात्र को सुख का भोग कराते हैं। सच्चे अर्थों में ऐसे धर्मात्मा लोग संन्यासी, महात्मा कहाते हैं।

**-महर्षि दयानन्द**

यह तो आपको स्वीकार करना ही होगा कि सार्वदेशिक सभा के पूर्व अधिकारियों का न तो चरित्र ही उत्तम था, वे वेशभूषा से भी आर्य न थे, न ही उनका व्यक्तिगत जीवन प्रशंसनीय रहा। इनके चरित्रों की कथा तो लिखना उचित नहीं है। आप भली प्रकार से परिचित होंगे ही।

आर्यसमाज एक उदारवादी संस्था है, जिसमें सभी मानव-मात्र समा जाते हैं। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि सभा के माध्यम से अनेक परिवारों को शुद्ध करके आर्य बनाया। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का उद्घोष आर्यसमाज द्वारा प्रचारित है। इस संस्था में कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है। सभी को समदृष्टि से ही देखा जाता है। हां, जो चरित्र से भ्रष्ट हो गया हो, जो सिद्धान्त-विमुख हो गया हो अथवा जो वैदिक मन्तव्यों को नहीं स्वीकारता हो, उसे संस्था के अधिकारियों ने अवश्य पृथक् किया है।

आर्यसमाज चरित्र की पूजा करता है, चित्र की नहीं। अतः सभी आर्य लोगों से प्रार्थना है कि विश्व में अपने चरित्र के द्वारा उन्नतिशील बनें। सब मतभेद दूरकर, प्रत्येक प्रान्त से समर्पित एवं निष्ठावान् कार्यकर्ताओं का निष्पक्ष निर्वाचन कर सार्वदेशिक सभा को बल प्रदान करें। चरित्रवान् व्यक्तियों को आगे लावें। आर्यसमाज में गुणों की पूजा होती है जाति, आयु नहीं देखी जाती है। नीतिकार लिखते हैं-

**गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।**

अतः आज आवश्यकता है परिवर्तन की। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद तथा प्रान्तवाद को समाप्त कर इस मृतप्राय संगठन को पुनः जीवन प्रदान करने की।

**तख्त बदल दिया, ताज बदल दिया। बेईमानों का राज बदल दिया॥**

सच्चरित्र आर्य बनो। हमारा चरित्र तो सदा उत्तम और आदर्शवादी रहा है।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथ्व्यां सर्वमानवाः॥ -मनुस्मृति

## प्रतीक्षा का समय समाप्त




"पंडित बस्तीराम सर्वस्व" जिस में पं० बस्तीराम शर्मा आर्योपदेशक द्वारा रचित एवं उपलब्ध पाखण्ड खण्डनी आदि १३ पुस्तकों का अनुपम संग्रहरूप ग्रन्थ छपकर तैयार हो गया है। इस ग्रन्थ में पं० बस्तीराम जी के ४६० भजन, प्रार्थना, कव्वाली आदि हैं जो $\frac{१८ \times २३}{८}$ साइज के ५३२ पृष्ठों में समाये हैं। इसके साथ प्राक्कथन, सम्पादक का कथन और पं० बस्तीराम जी के संक्षिप्त जीवन परिचय के २८ पृष्ठ और मिलाकर ५६० पृष्ठ के सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य २०० रुपये है किन्तु जो सज्जन १०० रु० अग्रिम देकर ग्राहक बने थे उन्हें १०० में ही यह ग्रन्थ मिलेगा। वे किसी भी दिन आकर अपना ग्रन्थ प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तक में ८०० ग्राम भार है। रजिस्टर्ड बुक पोस्ट अथवा कोरियर डाक से भेजने पर न्यून से न्यून ३० रुपये लगेंगे।

पुस्तक का कागज, छपाई, रंगीन चित्र, लेमिनेशन सहित सुन्दर पक्की जिल्द को देखकर जहां अग्रिम ग्राहक बनने वाले सज्जन प्रसन्न होंगे वहां नये ग्राहक इस सुन्दर प्रकाशन को देखकर इसका अधिक मूल्य देने के लिए भी आकर्षित होंगे।

-वेदव्रत शास्त्री

# वैदिक धर्मग्रंथों का संक्षिप्त परिचय

-जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

**वाल्मीकि रामायण :** यह हमारा गौरवमय इतिहास ग्रन्थ है जिसमें अथाह ज्ञान भरा है। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी का आदर्श अनुकरणीय जीवन हमारे सामने आता है। मर्यादापुरुषोत्तम का दर्जा प्रथम श्रेणी के ऋषियों में आता है। श्री रामचन्द्र जी के समकालीन महर्षि वाल्मीकि जी ने यह ग्रंथ संस्कृतभाषा में लिखा था। मूल वाल्मीकि रामायण में छः काण्ड हैं, सातवां उत्तर कांड उत्तर किन्हीं स्वार्थी धूर्तों ने मिला दिया है। अन्य स्थानों पर भी मिलावटें हुई हैं। जिन्हें बुद्धिमान् व्यक्ति पहचान कर त्याग देते हैं। भगवान् राम त्रेतायुग की समाप्ति के समय हुए थे जिसे लगभग नौ लाख वर्ष हो चुके हैं। उतना ही समय वाल्मीकि रामायण को बने हो गया है। रामायण हमारा ऐतिहासिक ग्रन्थ है।

**महाभारत :** यह भी हमारा इतिहास ग्रन्थ है। भगवान् श्रीकृष्ण की सूझबूझ तथा नीतिमत्ता हमारे लिए मार्गदर्शक है। भीष्म पितामह का राजधर्म पर उपदेश अनुकरणीय है। परिवार की आपसी लड़ाई कितनी अधिक घातक सिद्ध हो सकती है यह भी इसी ग्रन्थ से भली-भांति ज्ञात हो जाता है। मूल ग्रन्थ महर्षि वेदव्यास जी ने 'जय' नाम से संस्कृत भाषा में रचा था। इस इतिहास ग्रन्थ में अब बहुत मिलावटें हो गई हैं। आज से १६०० वर्ष पूर्व राजा भोज हुए थे। उन्होंने अपने बनाये संजीवनी नाम इतिहास में लिखा है कि व्यास जी ने चार हजार चार सौ और उनके शिष्यों ने पांच हजार छः सौ अर्थात् कुल दस हजार श्लोकों का पुस्तक भारत बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस हजार, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिता जी के समय में पच्चीस हजार और मेरी आधी उम्र में तीस हजार श्लोकों वाला महाभारत मिलता है। आज जो महाभारत मिलता है उसमें लगभग सवा लाख श्लोक हैं। इस प्रकार मिलाटों ने हमारे वीरतापूर्ण इतिहास को खराब करके हमें दब्बू और कमजोर बना दिया है।

**सत्यार्थप्रकाश :** आज से लगभग १२८ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने इस रत्न अमर ग्रन्थ की रचना की थी। मनुष्य को जन्म से लेकर मरण पर्यन्त जो-जो करने योग्य काम हैं तथा जो-जो न करने योग्य काम हैं, उन सबका विवरण वेद के अनुसार दिया है। संसार में प्रचलित मतमतान्तरों की त्रुटियां बताकर भी सभी मनुष्यों को सन्मार्ग से न भटकने के लिए सचेत किया गया है। ज्ञान की आंखें खोलने वाला तथा बुद्धि को सक्रिय बनाने वाला ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में सभी मजहबों के करोड़ों लोगों में वैचारिक क्रान्ति पैदा कर दी है। यह ग्रन्थ संस्कृत ग्रन्थों के प्रमाणों सहित आर्यभाषा में लिखा हुआ है।

**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका :** जिस प्रकार प्रत्येक पुस्तक की भूमिका होती है उसी प्रकार चारों वेदों के भाष्य की एक भूमिका ३७६ पृष्ठों की प्रथम पुस्तकाकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तैयार करके छपवाई और उसका नाम ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका रखा। इस पुस्तक में जो-जो संस्कृत में लेख है वह महर्षि का और जो भाषानुवाद है वह अनुवादकों का किया हुआ है। यह पुस्तक ज्ञान का भण्डार है जो सर्वविद्याओं के मूल का दर्शक, निरुक्त, शतपथादि आर्षग्रन्थों के आशय का प्रचारक, सृष्टि के अखण्ड और अटल नियमों में वेदार्थ को जताने वाला अद्भुत ग्रन्थ आज अन्धकार से पीड़ित भूमण्डल को निर्भ्रान्त निष्कलंक वेद सूर्य के दर्शन का मंगल समाचार दे रहा है। यह भाष्य बतला रहा है कि वेद एक ऐसा गंभीर अथाह-ज्ञान का सागर है जिसके गर्भ में असंख्य बहुमूल्य रत्न भरे पड़े हैं। वेदभाष्य के साधन से वेदसागर में सूक्ष्मबुद्धि प्रवेश करके अनेक विद्या रूपी रत्नों को धारण कर सकती है, वैदिक रत्नों की वह अटूट खान है जिसको कि खोदने से अनेक विद्या रूप रत्नों को ऋषि-मुनि प्राप्त करते थे। संसार में कोई विद्यारत्न नहीं जो इस ईश्वरीय खान से न निकला हो और अब भी अनेक विद्या रत्न इसमें ऐसे गुप्त धरे हैं कि यदि कोई महर्षि के वेदभाष्य को साधन बनाकर उन रत्नों को निकालना चाहे तो पृथिवी को आश्चर्यमय जगमग-जगमग करने वाले स्वच्छ रत्नों से भूषित कर सकता है।

**आर्योद्देश्यरत्नमाला :** सुगम और संक्षेप रीति से कठिन और गूढ़ विषयों को केवल भाषा जानने वालों के कान तक पहुंचाने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यह पुस्तक आर्यभाषा में रची है। ईश्वर, धर्म, अधर्म, पुण्य, पाप, सत्यभाषण, मिथ्याभाषण, विश्वास, अविश्वास, लोक, परलोक, मुक्ति के साधन, कर्ता, कारण, उपादानकारण, निमित्तकारण, साधारणकारण, कार्य, सृष्टि, जाति, मनुष्य, आर्य, आर्यावर्तदेश, दस्यु, वर्ण, वर्ण के भेद, आश्रम आदि सौ रत्न इस माला में महर्षि ने बड़ी उत्तमता से पिरोये हैं। प्रत्येक मनुष्य को यह सिद्धान्तरूपी रत्नों की माला मन में धारण करनी चाहिए। माता-पिता जो सन्तान को सोने-चांदी की माला पहनाते हैं जिससे कि उनके प्राण जाने का भय है, उसकी जगह यदि वे उनके आत्मा को यह रत्नमाला पहनावें तो वास्तव में उनकी सन्तान सत्यन्त रमणीय और विद्यारत्न से अलंकृत और सुभूषित हो जावे।

**वेद की ज्योति जलती रहे :** यह याज्ञिक नारा सनातन वैदिक संस्कृति का आधार है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लोटो तथा वेद की ज्योति जलती रहे इन वैदिक नारों के साथ वेदों का प्रचार किया। यज्ञ की भावनाओं को पूर्ण करने के लिए आचार्य सुखदेव शास्त्री जी ने वेद की ज्योति जलती रहे, कार्य रूप देकर इस नाम की पुस्तक को रचा। इस पुस्तक में ईश्वर, जीव, प्रकृति, ओ३म् का स्वरूप, वेदों का रहस्य, वेदों का कर्ता, ज्ञान-विज्ञान के भण्डार, वेदों का पठन-पाठन, गुरुकुल में वेदाध्ययन की पद्धति, गुरुमंत्र (गायत्री) प्राणविद्या, शिक्षा, दीक्षा तथा आर्षग्रन्थों से युक्त जीवनोपयोगी विषयों पर सप्रमाण अत्युत्तम चिन्तन प्रस्तुत किया है। सुगम और संक्षेप रीति से कठिन व गूढ विषयों को लेकर यह पुस्तक आर्यभाषा में लिखी गई है। प्राचीन ऋषियों तथा वैदिक विदुषियों के इतिहासों से यह पुस्तक भरी पड़ी है। मानव सुधार के लिए उपयोगी तथा सुख-शान्ति की सुरसरिता है।

**प्रोक्त ग्रन्थ :** शिष्यों को बताने के लिए या उपदेश करने के लिए आचार्य कथन करते थे, शिष्य उन्हें हृदयंगम करते थे और कालान्तर में विद्या विचार को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें आचार्यों के नाम से लिख लेते थे। जैसे मनुस्मृति। यह प्रोक्त है, कृत नहीं। मनुरब्रवीत्-मनु नापरिकीर्तितः जैसे अनेकानेक प्रयोग बता रहे हैं कि मनुस्मृति मनु प्रोक्त ग्रन्थ है, कृत नहीं।

**वैदिक साहित्य :** आर्यों की प्राचीन बुद्धिमत्ता का कोष उनका धार्मिक साहित्य है जिसको समुचे रूप में वैदिक साहित्य कहा जाता है। इनमें चार प्रसिद्ध वेदों के अतिरिक्त दूसरी बहुत सी धार्मिक पुस्तकें ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति, उपनिषद्, आरण्यक, उपवेद, वेदांग और धर्मशास्त्र सम्मिलित हैं।

**वेद या संहिता :** वैदिक सूक्तों या मन्त्रों को संहिता कहते हैं। वैदिक साहित्य का सबसे बड़ा अंग वेद है, जो संख्या में चार हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद, इन्हें संहिता भी कहा जाता है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। यह वेद आर्य सभ्यता और संस्कृति पर भी प्रकाश डालता है। सभी विद्याओं का प्रकाश वेद से हुआ है।

**सूत्र ग्रन्थ :** सूत्र ग्रन्थ वैदिक साहित्य का अन्तिम चरण है। इनमें वेद विद्या के सिद्धान्त का संक्षेप से वर्णन किया गया है। सूत्रों में वाक्य तो छोटे-छोटे हैं परन्तु उनमें उच्च विचारों और भावों का समावेश है। श्रोतसूत्र में वैदिक यज्ञ सम्बन्धी कर्मकाण्ड का उल्लेख है। गृह्यसूत्र में गृहस्थ के दैनिक यज्ञों का, धर्मसूत्र में सामाजिक नियमों का और शुल्वसूत्र में यज्ञविधियों के निर्माण का वर्णन है।

**आरण्यक :** यह शब्द अरण्य शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है वन या जंगल। इसलिए आरण्यक ग्रन्थ उनको कहा जाता है जिनकी रचना, अध्ययन और चिंतन जंगलों में एकान्तवास में शान्तिमय वातावरण में किया जाता था। वस्तुतः ये ग्रन्थ वानप्रस्थाश्रमियों के लिए होते हैं। इनमें आत्मा और ब्रह्म के बारे में ऊंचे विचार प्राप्त होते हैं।

**उपनिषद्**-उप का अर्थ है समीप और निषद् का अर्थ है बैठना। इस तरह विद्वानों के विचारानुसार उपनिषदों में वह रहस्यपूर्ण ज्ञान तथा विद्या निहित है जिसे शिष्यों ने गुरुओं के समीप बैठकर प्राप्त किया था। उपनिषदों का ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को नहीं दिया जाता था अपितु केवल योग्य व्यक्तियों को ही दिया जाता था। उपनिषदों की संख्या ग्यारह बताई गई है। प्रमुख उपनिषदें हैं-ऐतरेय उपनिषद्, केन तथा छान्दोग्य उपनिषद् ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, मुण्डक उपनिषद् और माण्डूक्य उपनिषद्। ऐतरेय उपनिषद् ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण का एक भाग है। ऋग्वेद के दूसरे ब्राह्मण ग्रन्थ कौशीतकी ब्राह्मण का उपनिषद् कौशतकी कहलाता है। केन और छान्दोग्य उपनिषदों का सम्बन्ध सामवेद के साथ है। यजुर्वेद का अन्तिम अध्याय उपनिषदों का वर्णन करता है तथा इशोपनिषद् की व्याख्या भी प्राप्त होती है। शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण के भाग को बृहदारण्यकोपनिषद् कहा जाता है। कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थों के अन्तर्गत कठ उपनिषद् श्वेताश्वतरोपनिषद् तैत्तिरीय तथा मैत्रायणीय उपनिषद् हैं। अथर्ववेद के साथ मुण्डक उपनिषद् एवं माण्डूक्य उपनिषद् सम्बन्धित हैं। उपनिषद् ज्ञान-प्रधान ग्रन्थ हैं तथा कहानियों से भरे पड़े हैं। इनमें उच्चकोटि का दार्शनिक विवेचन मिलता है। उपनिषद् के अर्थ रहस्य अर्थात् गूढ़ आशय के हैं।

**उपवेद :** प्रत्येक वेद का एक उपवेद है। जो इस प्रकार से है-

**अर्थवेद :** ऋग्वेद का उपवेद है, इसका अभिप्राय अर्थ विद्या के उन नियमों की व्याख्या करने का है जो वेदों में पाये जाते हैं। इस शास्त्र में पदार्थों के गुण, स्वभाव प्रभाव तथा उपयोग के बारे में वर्णन प्राप्त होता है।

**धनुर्वेद :** यजुर्वेद का उपवेद है, इसका अभिप्राय उन नियमों और साधनों की व्याख्या करने का है जो कि युद्धसम्बन्धी वेदों में मिलते हैं। इसमें शस्त्रों के प्रयोग तथा संहार की शिक्षा दी जाती है।

**गान्धर्ववेद :** सामवेद का उपवेद है, इसका अभिप्राय गान विद्या की व्याख्या करने का है। गायन, नृत्य इत्यादि इस विद्या के प्रमुख अंग हैं।

**आयुर्वेद :** अथर्ववेद का उपवेद है, इसका उद्देश्य नाना प्रकार के कला कौशल और विमान आदि यान तथा वैद्यक विद्या के नियमों की, जो कि वेदों में मिलते हैं, व्याख्या करने का है।●

●*स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि अनेक ऋषि आयुर्वेद को ऋग्वेद का और अथर्ववेद का उपवेद मानते हैं। -वेदव्रत शास्त्री*

# लन्दन की सामाजिक स्थिति

समादरणीय श्रीयुत सम्पादक जी!

सादर नमस्ते।

पिछले मास (अगस्त २००५) में चौथी बार, यहाँ वैदिक धर्म के प्रसार प्रचारार्थ आया हूँ। इस बार लगभग २ मास तक यहां रहूंगा तथा पूर्व की भांति अनेक नगरों में शिविर प्रवचन आदि के द्वारा यहां पर रहने वाले भारतीयों को अपनी गौरवमयी भाषा, भोजन, भूषा, भेषज, भगवान्, भक्ति, भजन के माध्यम से जीवन के लक्ष्य, मार्ग, साधन, विधि को बताने का प्रयास कर रहा हूं साथ ही पाश्चात्य जगत् की अवैदिक-असत्य, अधर्म, अन्याययुक्त दुःखदायी परम्पराओं को भी दर्शा रहा हूं।

पिछले अनेक वर्षों से, अनेक देशों में, उग्रवादियों द्वारा मानवता, सभ्यता, शिष्टता के विरुद्ध हिंसक कार्य हुवे, किन्तु अंग्रेजों ने जानते हुए भी इनके विरुद्ध विशेष कदम नहीं उठाये। अब जबकि अपने ही देश में, इनके द्वारा, एक साथ विस्फोट करके हिंसा की गई तब इनकी आँखें खुली हैं। इन अंग्रेजों के मन में बैठ गया है कि ये कुछ विशेष मतानुयायी हिंसक हैं, और ये हिंसा, बल, भय, आतंक धमकी आदि किसी भी अनुचित विधि द्वारा सारे विश्व में अपने मत का प्रसार करके सम्पूर्ण विश्व को स्वमतानुयायी बनाना चाहते हैं। इसलिए इसको दवाने, रोकने हेतु अनेक कठोर कदम उठाये जा रहे हैं किन्तु इन्हें इसकी कोई परवाह नहीं है। अस्तु।

सामान्य अंग्रेजों के लिए हिन्दू-अहिन्दुओं में कोई भेद करने वाला चिह्न नहीं दिखाई दे रहा है जोकि परम आवश्यक बन गया है। इस बार में इस बात पर अधिक बल दे रहा हूं कि हिन्दू अपनी पृथक् पहचान बनाये। अंग्रेजों के मन में यह अच्छी तरह बिठाने का प्रयास हो कि हिन्दू श्रेष्ठ हैं, सहिष्णु हैं। हमारा धर्म, शिक्षा, संस्कृति, भोजन, भगवान् आचार-विचार, परिवार सिद्धान्त सभी कुछ महान् हैं। अन्य मनुष्यों को कष्ट पहुंचाने की बात दूर रही, हम पशु, पक्षी, कीट-पतंगों को भी मारने, कष्ट देने में हिंसा मानते हैं। हमारे धार्मिक ग्रंथों में, इतिहास में, सिद्धान्तों में कहीं पर भी आतंक, भय, प्रलोभन, हिंसा का विधान नहीं मिलता है। उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाला व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। चाहे वह किसी भी देश, धर्म, जाति में उत्पन्न क्यों न हुआ हो। काश हमारी उदात्त ईश्वरीय वैदिक धर्म की उत्कृष्ट विचारधारा व जीवनशैली विश्व के लोगों को समझ में आ जाये तो मुझे किञ्चित् मात्र भी संशय नहीं ये सभी तत्काल आर्य बन जायें।

हर प्रकार से श्रेष्ठ होते हुए भी आज न केवल विश्व में अपितु अपने ही देश में हिन्दू (आर्य) वैदिक दृष्टिकोण से उत्पीडित है। अपमानित है, बंधक है, दुःखी है। इसका एकमात्र मुख्य कारण विघटन ही है। हजारों वर्षों पश्चात् स्वामी दयानन्द जी ने हमें **'संगच्छध्वं संवदध्वम्....'** का मन्त्र सिखाया और **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** का आदर्श प्रस्तुत करते हुए **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का नारा दिया। शोक, महाशोक कि विश्व को आर्य बनाने की बात दूर रही, हम स्वयं ही स्वार्थ, अभिमान, आलस्य, प्रमाद आदि दोषों से ग्रस्त होकर खो गये, सो गये और आर्य धर्म की भी प्रतिष्ठा समाप्त सी कर दी है।

मुझे बड़ा आश्चर्य होता है जब यहाँ पर बी.बी.सी. पर खुल्लम खुल्ला स्पष्ट शब्दों में कुछ विधर्मियों को यह कहते हुए सुनता हूं कि आतंकवादी जो कुछ भी कर रहे हैं, वह हमारे धर्मग्रंथों से सम्मत है, हम इसका विरोध नहीं करते हैं। हमारा नारा **'कृण्वन्तो विश्वम्म्लेच्छम्'** है, हम धार्मिक कार्य ही कर रहे हैं। यही हमारा लक्ष्य है। किसी भी देश की नागरिकता, संविधान, राष्ट्रभक्ति से हमारा धर्म बड़ा है, शिक्षा बड़ी है, कर्त्तव्य बड़ा है और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में हम ऐसा करने में स्वतन्त्र है।

दूसरी तरफ हजारों वर्षों की इन विधर्मियों की दासता में सब कुछ खोकर भी हमें होश नहीं आया है, यह उससे भी बड़ा आश्चर्य है। आजकल में मंदिरों, समाजों, संगठनों, परिवारों में सर्वत्र इस बात पर बल दे रहा हूं कि इन मन्दिरों आदि धार्मिक संस्थानों में आप एक निराकार ईश्वर की उपासना नहीं कर सकते हो तो कम से कम इतना तो करें कि विश्व भर के मन्दिरों में केवल एक ही देवता की मूर्ति रखें, एक ही प्रकार का मन्त्र बोलें, एक ही प्रकार की धार्मिक पुस्तक को स्वीकारें। अन्यथा इस विचित्र, गले, सड़े, भद्दे, दुर्गन्धयुक्त, विकृत फल के समान, हिन्दू धं को विश्व में फैलाने की बात दूर रही, हमारी सन्तानें ही इसे नहीं मानेंगी, बल्कि विधर्मी बन जायेंगी और ऐसा हो भी रहा है न केवल इंग्लैण्ड में अन्यत्र देशों में भी प्रतिवर्ष सैकड़ों की संख्या में हिन्दू लड़कियां अन्य धर्म को अपनाकर विवाह कर रही हैं।

भारत वर्ष के हिन्दू समाज में जो विभेद, अन्धविश्वास, पाखण्ड, अवैदिक परम्पराएं विद्यमान हैं वे सारी की सारी यहां पर भी हैं। यदि देश के २००-४०० धार्मिक गुरु/आचार्य/सन्त/संन्यासी/उपदेशक मिलकर संगठित हो जायें, तो हिन्दू-आर्य धर्म की रक्षा संभव है, ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इनकी बुद्धि में यह विचार प्रस्फुटित करें कि वे सच्चे अर्थों में संगठित होकर देश, धर्म, मानवता की रक्षा करने में समर्थ हों, इसी आशा के साथ-ज्ञानेश्वरार्य।

LEICESTER (U.K.)
4th Sep. 2005

M-0044-7962633767

# आर्यसमाज द्वारा भेंट कृतियों को राष्ट्रपति भवन में स्थान मिला

पिछले चार वर्षों से आर्यसमाज द्वारा संचालित, गांधीधाम स्थित जीवनप्रभात प्रकल्प में भूकम्प पीड़ित निराधार बच्चों का पालन किया जा रहा है। जीवनप्रभात प्रकल्प में आश्रय ले रहे १६२ बच्चों में से कुछ बच्चों ने आर्यसमाज गांधीधाम एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी के साथ भारत के राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलामजी से राष्ट्रपति भवन में मुलाकात की थी।

जीवनप्रभात के बच्चों ने अपने हाथों से बनाई कलाकृतियां राष्ट्रपति जी को भेंट की थी। जिसमें कच्छी पगड़ी एवं कच्छी, कच्छी कलाकृति और महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी एवं अन्य महापुरुषों के चित्र शामिल थे। जीवनप्रभात प्रकल्प के बच्चों द्वारा भेंट की गई इन कृतियों में से दो कृतियों को राष्ट्रपति भवन स्थित बाल गेलरी में स्थान मिला है। जिनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र व कच्छ की कलाकृति शामिल है। जो आर्यजगत् एवं जीवनप्रभात के लिए गौरव की बात है। हाल ही में आर्यसमाज गांधीधाम के महामंत्री श्री वाचोनिधि आर्य ने राष्ट्रपति भवन की मुलाकात ली थी। उन्होंने ही बाल गेलरी में कुलल १५० कृतियाँ प्रदर्शित की गई हैं। बच्चों को वहां पर जंक फूड न लेने की भी राष्ट्रपति जी ने सलाह दी है। राष्ट्रपति भवन के अंदर एक वजन करने का यंत्र भी रखा गया है जो व्यक्ति के पृथिवी के वजन के अलावा अन्य ग्रह पर उनका वजन एवं उस ग्रह की विधि जानकारी को कम्प्यूटर के माध्यम से प्रिन्ट द्वारा आपको देता है।

राष्ट्रपति भवन की बाल गेलरी में मुलाकात लेने का अवसर यदि आपको मिले तो आर्यसमाज द्वारा दी गई दो कलाकृतियों को अवश्य देखें।

-वाचोनिधि आर्य, महामंत्री

# जीवन को दवाइयों के हवाले मत करो

- वेद में कहा गया है-**'जीवेम शरदः शतम्।'** अर्थात्-मनुष्य, तूं सौ वर्ष तक निरोग रहकर जी। ऐसा आशीर्वाद ईश्वर का है।
- दवाई खाने से जीवन अधूरा और तनाव भरा बना रहता है।
- दवाई कम और परहेज ज्यादा, रोग खत्म करता है।
- खाना सही होने से दवाई कम ही खानी पड़ती है।
- भोजन को ही दवाई बना लेना चाहिए।
- कुदरत के साथ जुड़ने से बीमारी नहीं आती क्योंकि इन्सान को छोड़कर कहीं दवाईखाना, हास्पिटल ही नहीं है। कुदरत के साथ जो जीवन चलता है सिर्फ मनुष्य को ही दवाई ही जरूरत पड़ती है और किसी योनि में नहीं।
- इन्सान को दवाई इस लिए खानी पड़ती है क्योंकि स्वाद को पहले और सेवक को बाद में चाहता है। संसार में स्वाद को प्रधान माना जाता है।
- निश्चित समय पर न खाना, बार-बार खाना, बासी खाना, देर सवेर सोना, सुबह देर से उठना, यह बीमारी को दावत देता है।
- दवाई को ही जीवन बना लेना यह खतरनाक वृत्ति है।
- डॉक्टर और दवाई पर कभी भरोसा मत करना 'सॉरी' कहकर चल देगा।
- बीमार व्यक्ति से जाकर पूछो सेहत का क्या दाम है।
- संसार का सबसे बड़ा खजाना पैसा नहीं 'सेहत' है।
- संसार में सादगी इका है वो ही सबसे बड़ा है।
- अच्छी सेहत के लिए योग-प्राणायाम व सैर करना चाहिए।
- यह मत सोचो कि मैं बीमार हूं।
- जीवन में अच्छे-भरोसे वाले एक दो साथी बना लेने चाहिएं ताकि सलाह वगैरह हंसना, खेलना हो सके।
- झुठ बोलना, भय वाला काम करना, रीस करना, देखा देखी में रहना, यह सब बीमारी को बढ़ावा देने वाली बाते हैं इनसे बचना चाहिए।
- 'चरैवेति-चरैवेति' हमारे शास्त्रों में कहा है चलते रहने से रोग पास नहीं आते इसलिए पैदल जरूरत चलना चाहिए।
- पानी का खूब प्रयोग करना चाहिए, सुबह अगर गुनगुना पानी पिआ जाए तो ज्यादा लाभकारी रहता है।

संग्रहकर्ता : **ओम्प्रकाश अग्रवाल**

## तीन बातें

१. इन तीनों को प्यार करो-**ईमानदारी, पवित्रता, सच्चाई।**
२. इन तीनों की प्रशंसा करो-**बुद्धिमत्ता, संगीत, चरित्र।**
३. इन तीनों को उत्पन्न करो-**प्रसन्नता, सहानुभूति, सन्तोष।**
४. इन तीन का आदर करो-**वृद्धावस्था, धर्म, कानून।**
५. इन तीन पर नियन्त्रण रखो-**वाणी, स्वभाव, कर्म।**

# राजभाषा हिन्दी एवं भारतीय भाषायें बनाम अंग्रेजी - क्यों और कैसे ?

-प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, पूर्वाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

हिन्दी देश की राजभाषा है, राष्ट्रभाषा है। संविधान में इसे राजभाषा का स्थान प्राप्त है। संसार में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं की दृष्टि से चीनी भाषा और अंग्रेजी के बाद इसे तीसरा स्थान प्राप्त है। विश्व के भाषायी मानचित्र (न्यूयार्क) के अनुसार हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। नेपाल में भी हिन्दी बोली जाती है। हिन्दी के द्वारा काबुल/कंधार से लेकर ढाका तब बातचीत की जा सकती है। मारिशस, फिजी तथा ट्रिनीदाद में भी हिन्दी का व्यवहार होता है। यहां तक कि वहां विश्व हिन्दी सम्मेलन भी हो चुके हैं किन्तु अपने ही देश में हम हिन्दी को उचित स्थान नहीं दे पाए हैं। स्वाधीनता के ५८ वर्ष बाद भी हम इसे सही मायने में राजभाषा नहीं बना पाए हैं। सरकारी कामकाज तथा प्रशासन् से लेकर निजी क्षेत्रों में अंग्रेजी का वर्चस्व है। उच्चतर शिक्षा, विज्ञान, तकनीकि, प्रबंधन, सूचना तकनीकि आदि कई क्षेत्रों में अंग्रेजी का वर्चस्व है। यद्यपि देश की समस्त सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक गतिविधयां हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में संचालित होती हैं फिर भी देश पर अंग्रेजी हावी है।

प्रतिवर्ष देश में विभिन्न संस्थाओं तथा संगठनों द्वारा हिन्दी के उपलक्ष्य में आयोजन किए जाते हैं। उनमें मुख्य मुद्दा यही होता है कि क्या हिन्दी राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो पाई है? उसे राजभाषा के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में लागू कैसे किया जाए ताके उसका अधिकाधिक प्रयोग हो सके। सितम्बर के दूसरे पखवाड़े से लेकर अक्तूबर मध्य तक हिन्दी समाचार पत्रों में प्रकाशित हिन्दी विषयक लेखों और सामग्री को देखें तो यही मुद्दा प्रमुख रूप से मिलेगा। जैसे (१) दैनिक ट्रिब्यून (चंडीगढ़ १२/९/०४)-अपने ही देश में बेगानी भाषा। (२) पंजाब केसरी (जालंधर १३/९/०४)-हिन्दी विरोध के पीछे अंग्रेजी गुलामी की मनोवृत्ति। (३) अमर उजाला (नई दिल्ली १९/९/०४)-संसार की तीसरी भाषा को दयनीय मत कहिए। (४) दैनिक जागरण (नोएडा/पानीपत १७/९/०४)-कब खत्म होगा हिन्दी का बनवास। (५) दैनिक जागरण (पानीपत/दिल्ली ४/१०/०४)-भाषा के साथ नए सिरे से राजनीति। (६) नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली ६/१०/०४)-हिन्दी पर खतरे का शोर। आदि आदि हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग/इलाहाबाद) द्वारा भी पिछले कई वर्षों से यही मुद्दा उठाया जा रहा है। सम्मेलन द्वारा १३-१४ सितम्बर २००४ को जम्मू में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इसमें अपने देश में मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी की क्या स्थिति है? इस पर विचार किया गया। राजभाषा संघर्ष समिति (रजि०) दिल्ली-८५ द्वारा अप्रैल मई २००५ में देश के भिन्न-भिन्न भागों में २६ केन्द्रों पर हिन्दी निबंध एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें लगभग ३००० (तीन हजार) छात्रों ने भाग लिया जिसका पारितोषिक वितरण समारोह ३१ जुलाई २००५ को हिन्दी भवन (नई दिल्ली) में सम्पन्न हुआ। उन प्रतियोगिताओं में मुख्य विषय थे (१) काश! हम कॉलेजों में भी विज्ञान और तकनीकी शिक्षा हिन्दी में प्राप्त करते। (२) वोट मांगें हिन्दी में, संसद में बोले अंग्रेजी में। (३) जनता की सरकार जनता से जनता की भाषा में व्यवहार करे, विदेशी भाषा में नहीं। (४) अपनी भाषाओं के व्यवहार से ही देश विकसित होते हैं। (५) सब बच्चों को पहली कक्षा से ही अंग्रेजी की अनिवार्य पढ़ाई कितनी सार्थक? बात वहीं घूम फिरकर हिन्दी तथा भारतीय भाषायें बनाम अंग्रेजी की आती है। आखिर ऐसा क्यों?

इसका कारण है अंग्रेजी का वर्चस्व। सरकार, प्रशासन/राजकाज, विज्ञान, सूचना-तकनीकी विधि, न्याय आदि महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अंग्रेजी का वर्चस्व जारी है। केन्द्र सरकार के कामकाज की भाषा आज भी अधिकांशतया अंग्रेजी है। गृह मंत्रालय, प्रधानमंत्री कार्यालय में अंग्रेजी का बोलबाला है। स्वयं प्रधानमंत्री (डॉ० मनमोहनसिंह) ने १० अगस्त २००५ को लोकसभा में/संसद में १९८४ के सिख विरोधी दंगों पर नानावती आयोग की चर्चा में भाग लेते हुए इतने महत्त्वपूर्ण एवं जनभावना से सम्बन्धित विषय पर अपना भाषण अंग्रेजी में दिया। केन्द्रीय सचिवालय में आज भी अंग्रेजी का प्रभुत्व है। संघ लोकसेवा आयोग की सेवाओं/परीक्षाओं में अंग्रेजी का वर्चस्व जारी है। हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की घोर उपेक्षा हो रही है जबकि इनके जानने वाले पूरे देश के लोग हैं। छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन (१४-१८ सितम्बर १९९९) लंदन में हुआ। सातवां विश्व हिन्दी सम्मेलन (सूरीनाम-लेटिन-अमेरिका में) ५ जून २००३ को हुआ। यह चार-पांच दिन चला। हमारे अधिकारी तथा भारत सरकार के प्रतिनिधि वहां जाकर हिन्दी को विश्व भाषा/राष्ट्र संघ की भाषा के रूप में मान्यता दिलाने की बात करते हैं यह अच्छी बात है किन्तु अपने ही देश में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को उचित स्थान देने को तैयार नहीं। हिन्दी राजभाषा होते हुए भी अपने ही देश में पराई हो रही है। आज कम्प्यूटर और इंटरनेट पर हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की क्या स्थिति है? यह विचारणीय विषय है। यद्यपि हिन्दी तथा भारतीय भाषायें इसके लिए सक्षम हैं किन्तु केन्द्र सरकार ने इस ओर उचित ध्यान नहीं दिया। हाल ही में आई.टी. मंत्रालय ने हिन्दी साफ्टवेयर का लोकार्पण किया है। इसके लिए देश के राजनेता तथा राजनीतिक दल जिम्मेवार हैं। यहां पार्टी या दल के हितों को प्राथमिकता दी जाती है, देश तथा जनता के हितों को गौणस्थान दिया जाता है। यही कारण है कि अंग्रेजी आज भी देश की राजकाज की भाषा बनी हुई है। यद्यपि संविधान में १५ वर्ष के लिए अर्थात् १९५० के बाद १९६५ तक अंग्रेजी को जारी रखने का प्रावधान किया गया था किन्तु राजभाषा अधिनियम १९६३, राजभाषा विधेयक १९६७ तथा राजभाषा अधिनियम १९७६ द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि जब तक अहिन्दी भाषी राज्य नहीं चाहेंगे तथा संसद के दोनों सदनों द्वारा इसकी पुष्टि नहीं होगी तब तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा और इस तरह अंग्रेजी अनिश्चित काल के लिए देश पर लाद दी गई। यह सब कांग्रेस पार्टी के शासनकाल में हुआ। केन्द्र में कांग्रेस की सरकार ने हिन्दी को उचित स्थान/सम्मान दिलवाने के लिए कोई ठोस काम नहीं किया। अन्य सरकारों ने भी इस बारे में कोई सक्रियता नहीं दिखाई। यहां तक कि केन्द्र में ५-६ साल तक रहने वाली भाजपा गठबंधन की राजग सरकार ने भी हिन्दी को उसका संवेधानिक स्थान दिलाने के लिए कोई ठोस प्रयत्न नहीं किया। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भले ही संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में बोलते थे, संसद में भी वे हिन्दी में भाषण देते थे किन्तु हिन्दी के हितों के लिए उसको संवैधानिक स्थान दिलाने के लिए वे कुछ नहीं कर सके। आज भी यही स्थिति है। सभी दलों के अपने-अपने राजनीतिक स्वार्थ तथा वोट बैंक प्रमुख हैं। कांग्रेस के नेतृत्व वाली वर्तमान केन्द्र सरकार डॉ० मनमोहनसिंह के तत्त्वावधान में तथा कांग्रेस की वर्तमान अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी अपनी पिछली गलतियों को सुधर सकते हैं तथा राजभाषा हिन्दी को उचित स्थान दिलवा सकते हैं। हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं से देश की सौ करोड़ से ऊपर जनता जुड़ी हुई है।

अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण देश में भयानक शैक्षिक सामाजिक एवं आर्थिक विषमता आई है। उच्चतर शिक्षा में, वैज्ञानिक और तकनीकी में, प्रबन्धन में, संघ लोक सेवा आयोग तथा अखिल भारतीय परीक्षाओं में अंग्रेजी का वर्चस्व अभी कम नहीं हुआ है। हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को जानने वाली देश की ९५% जनता की भागीदारी इनमें नगण्य है। न के बराबर है। अत: देश के राजनेताओं, शासकों तथा राजनीतिक दलों को इस असमानता एवं विषमता को दूर करने हेतु विचार करना चाहिए। क्या यह उनका कर्त्तव्य नहीं है? क्या वे जनता के प्रतिनिधि नहीं हैं? आखिर हम कब तक देश की सौ करोड़ जनता के ऊपर अंग्रेजी का बोझ लादे रहेंगे? कब तक हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं पर अंग्रेजी का वर्चस्व बनाए रखेंगे? अत: केन्द्र की वर्तमान सरकार तथा राज्य सरकारों को शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिए।

आवास-४३२, सैक्टर-८, करनाल-१३२००१

# कौन निराश होते हैं ?

१. जो समय अनुसार कार्य नहीं करते।
२. जो ईश उपासना में पांच मिनट भी नहीं बिताते।
३. जो निरन्तर गम, चिंता में डूबे रहते हैं।
४. जो किसी अच्छे काम को बीच में ही छोड़ देते हैं।
५. जो अपना काम दूसरों से करवाते हैं।
६. जो अपनी मंजिल नहीं जानते।
७. जो अपना कोई भी फर्ज (कर्त्तव्य) नहीं निभाते।
८. जो सफलता के शिखर पर नहीं पहुंच पाते।
९. जो सफलता के शिखर पर पहुंच कर भी उदास रहते हैं।
१०. जो विद्यार्थी पढ़ाई की जगह हरदम खेलकूद, आवारागर्दी, टी.वी., सिनेमा में नाचगान से दिल बहलाते हैं।
११. जो रुपये-पैसे के लिए अपनी ईमानदारी, सत्य, अच्छा दोस्त तथा अपना देश तक छोड़ देते हैं।
१२. जिन्होंने मेहनत की कमाई जुए या ऐशप्रस्ती में गवां दी हो।
१३. जो हमेशा फटे-पुराने मैले-कुचैले कपड़े पहने रहते हैं।
१४. जो कभी भी खुश होना नहीं जानते। जहां जाते हैं अपनी मनहूसीयत फैलाते हैं।
१५. जो सारी उम्र अपराध के कारण जेलों में सड़ते हैं।
१६. जिन्होंने सारी उम्र आलस्य में गंवाई हो।
१७. जो अपनी संतान को किसी योग्य नहीं बना पाते या जिनकी संतान बुरी संगत, बुरी आदतों से बिगड़ चुकी हो।
१८. जिसने सिर्फ पेट के लिए अपने देश के साथ गद्दारी, भ्रष्टाचार फैलाकर अपनी आत्मा को बेचा हो।
१९. जिसने किसी की कीमती वस्तु देनी हो और वह कहीं अचानक खो जाये या पाकेटमार ने चुरा ली हो।
२०. जो बार-बार रोगी होता हो या भयंकर बीमारी का शिकार हो।
२१. जिन्हें कभी भी किसी का भी प्यार न मिला हो।

-ब्र० राजेश आर्य 'शील', म०नं० १३२४ राजपुरा टाउन

# देशभक्ति की धड़कनें

-महिमा पुष्करना

कश्मीर से कन्याकुमारी तक मेरी यात्रा व्यस्त रही। यात्रा दो या तीन बार रेलगाड़ी बदलकर की जा सकती थी। परन्तु भारत दर्शन का असली आनन्द लेने तथा कम दर्शनीय स्थलों को यादगार बनाये रखने के उद्देश्य से अपने गंतव्य स्थल तक पहुंचने हेतु मैंने आधी दर्जन रेलगाड़ियां बदलीं। यात्रा आनन्दमयी तथा कष्टप्रद थी क्योंकि हस्तशिल्पकला की विभिन्न वस्तुओं को एकत्र करने की लालसा से मेरा सामान बढ़ता ही गया जिस कारण एक से दूसरे प्लेटफार्म की भारी भीड़ को चीरकर जाने में मुझे असुविधा का सामना करना पड़ा। कभी-कभी यात्रा थकानभरी लगती। कभी रेल के इंजनों के शोर-शराबे के कारण घर की याद सताने लगती। भारतीय रेल की द्वितीय श्रेणी से यात्रा करने पर आपका अकेलापन अपने आप दूर हो जाता है, क्योंकि सहयात्री एक बड़े परिवार का रूप ले लेते हैं।

परन्तु शिथिलता की घड़ी में हर रेलगाड़ी में मुझे ऐसा मिला जिससे नई ऊर्जा मिली। सहयात्री अंताक्षरी या फिल्मी गीत गाकर समय बिता रहे थे। इनमें ६० के दशक के स्वर्णिम गीतों से लेकर अब तक बॉलीवुड के हिट (लोकप्रिय) गीत, शास्त्रीय रागों से लेकर लोकगीतों, पदचापों (फुटटैपिंग), अंग्रेजी नम्बर तक शामिल थे। उनमें से कुछ बहुत अच्छे गायक थे, कुछ गीतों का आनन्द ले रहे थे, दूसरों द्वारा अपनी आवाज या गाने के स्तर की परवाह किये बिना अटेचियां तथा सूटकेस ढोलक का काम कर रहे थे, पांवों से लय-ताल तथा हाथों से तालियां बजाई जा रही थीं।

प्रथम दो रेलगाड़ियों में इन नृत्यों व साजों पर मेरा ध्यान स्वत: नहीं गया। मेरे लिये यह रेलगाड़ी के पिछले भाग में शोर शराबा था। यहां तक कि मुझे इससे राहत पाने के लिये एक गोली लेनी पड़ी। अगली रेलगाड़ी में मेरे सहयात्री वयोवद्ध दम्पति थे, जो यात्रा के दौरान सोये रहे। तब मुझे लगा कि कहीं कुछ कमी है। यह संगीत और गीत ही थे जिसने कुछ देर पहले अजनबी लोगों के साथ मनोरंजन तथा पहचान होने का अहसास कराया। इससे मुझे जोड़ने वाली एक ताकत का अहसास हुआ। गीतों तथा संगीत की ध्वनि में जोड़ने वाली शक्ति निहित है।

अगर कोई क्विजमास्टर पूछे कि आतंकवादी ओसामा बिन लादेन, शतरंज चैंपियन विश्वनाथ आनन्द, बेरहम तानाशाह एडोल्फ हिटलर, एक आईआईटी टापर तथा एक बच्चे में जो मेरे घर के पीछे वाली गली में स्कूल जाने में असमर्थ है, में क्या समानता है, मैं कोई दूसरा अनुमान नहीं लगाऊंगी। निश्चित ही संगीत मेरा दृढ़ उत्तर होगा और यहां तक कि बिग 'बी' को भी इसे 'लॉक' करना होगा। इन सभी ने किसी न किसी तरह के संगीत का आनन्द लिया होगा चाहे वह धार्मिक हो, रॉक संगीत हो, ग्रामीण हो या देशी। रिदम तथा गीतों को मिलाकर संगीत नहीं बन जाता। यह वो संदेश है, जिसके लिये किसी भाषा की जरूरत नहीं होती, लेकिन जो अपने आप में, एक अकेली भाषा है। एक ही भाषा। एक संदेश जो हम अपने लिये बनाते हैं। शांति के संदेश, सांस्कृतिक स्वीकार्यता, प्रेम, घृणा, युद्धविरोधी, आपसी समझ जैसा भी हम सोचें। मुसीबत की घड़ी में गीतों से आनन्द मिलता है, चाहे श्रोता सुनामी के शिकार हो या कारगिल शहीदों के परिवारजन। माइकल जैक्सन का 'हील द वर्ल्ड' गीत हो या साफरी डुओ का 'आल द पीपल इन द वर्ल्ड' से गीत दुनिया को सुन्दर जगह बनाने के लिये रचे गये, क्योंकि संगीत एक अनन्त संभावनाओं वाला सशक्त माध्यम है। भारत में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो किसी पानवाले की दुकान पर रेडियो से लता मंगेशकर की सुमधुर आवाज 'ए मेरे वतन के लोगो' सुनकर रोमांचित न हो जाता हो।

भारत विभिन्न संस्कृतियों का संवेदनशील संगम है जो बहुत नाजुक है। जरा से बवूले से हिंसा भड़क उठती है। परन्तु हमारे देश की एक वास्तविकता यह है कि अनेक भाषाओं तथा बोलियों के बावजूद सभी संगीत एक ही भाषा बोलते हैं। संगीत, जो हमारे दिलों में देशभक्ति की भावना भरता है, जो हमें परस्पर जोड़ता है, संगठित करता है। अंग्रेजों ने हमारे खजानों को तहस-नहस किया, बर्बाद किया परन्तु वे हमें अपने संगीत और ज्ञान से विहीन न कर सके। हमारा संगीत हमें हमारे इतिहास, हमारी विरासत तथा परंपरा का स्मरण ही नहीं कराता बल्कि हमारे देश की भव्य सुन्दरता की अनुकरणीय प्रस्तुति है जिसकी सराहना विश्व में की गई है। उदाहरण के लिए एम.एस. सुब्बालक्ष्मी को ही लें जिनकी मधुर आवाज 'सुप्रभातम्' लाखों घरों में गूंजती रहती है। जब उन्होंने शांति और प्रेम बढ़ाने के लिए संयुक्त राष्ट्र में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया तो सभी ने भारतीय संगीत का करतल ध्वनि से स्वागत किया। देखा गया है कि यह संगीत ही है, जो भारत-पाकिस्तान की सरहदों को पार कर दोनों देशों के बीच की प्रतिद्वंद्विता समाप्त करने में एक मजबूत कड़ी बना है। हर युवा पाकिस्तानी संगीतज्ञों, जाल, फ़ाकिर, स्ट्रिंग्स की धुनों पर गुनगुनाता सुना जा सकता है, जबकि पुरानी पीढ़ी बेमिसाल नुसरत फते अली और आबिदा परवीन को सुनते हैं। सूफी संगीत विश्व में लोगों की आत्माओं को झकझोर देता है।

धर्म परिवर्तन कर हिन्दू से मुस्लमान बने आज के चहेते संगीतकार ए.आर. रहमान के हर जीवंत कार्यक्रम का समापन वन्दे मातरम् से होता है जिसके उपरांत तिरंगी आतिशबाजी के साथ 'मां तुझे सलाम' प्रस्तुत किया जाता है। गीत के आधुनिक ढंग का उनका यह प्रयास जो 'राष्ट्रीय गीत' के बाद आता है, भारत माता की धर्मनिरपेक्षता की विलक्षण मिसाल है। यह ६० से ७० के दशक के लोगों की संवेदनाओं को आहत किए बिना अगली पीढ़ी को आकर्षित करता है। चाहे हम 'वन्दे मातरम्' में कितना भी संशोधन करें जब भी हम इसे सुनते हैं तो यह इस विचार को पुनर्जीवित करता है कि हम पंजाबी, गुजराती, बंगाली या तमिल नहीं हैं, बल्कि भारतीय हैं।

सोनी और चैनल-V जैसे टीवी चैनलों ने इंडियन आईडल और पॉपस्टार की तलाश का एक सिलसिला शुरु किया है जिससे हमारे संगीत की संस्कृति को न केवल बढ़ावा ही मिलेगा बल्कि हमारी पीढ़ी को भारतीय शास्त्रीय संगीत के सार एवं महत्त्व की जानकारी मिलेगी। प्रतिभागी चाहे पूर्वोत्तर से हों अथवा सुदूर दक्षिण से, संगीत में समानता है जो सभी को जोड़े रखती है। हमारा देश अपने आप में विश्व जैसा है। यह संगीत और संस्कृति का गुलकंद है जो देशभक्ति की सुगंध फैलाता है। मेरी प्रार्थनाओं में यह सदा रहेगा - 'हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन, मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास। हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन!' और हां जब मैं कन्याकुमारी पहुंची तो सह-यात्रियों के साथ गा-गाकर मेरा गला भी दुखने लगा था।

-पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार, चंडीगढ़

# मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों...

लेखक : सोहनलाल शारदा

प्रथम सन्ध्या पढ़कर विद्यार्थी पाठशाला में भर्ती करना है। इससे उसकी बुद्धि की परीक्षा हो जाये। इस शाला के समीप एक कोठरी में यज्ञकुण्ड भी जमीन खोदकर नित्य अग्निहोत्र करने का भी विधान किया था।

यहां यह भी नियम था कि शहर के व बाहर के सभी विद्यार्थियों को भोजन एवं योग्यतम विद्यार्थियों को पुस्तकें व वस्त्र भी परिधान हेतु भेंट किये जाते थे। (पं० लेखरामकृत जीवनी पृष्ठ ८०९ अनुवादक नयाबांस, आर्यसमाज, दिल्ली)

यहां पठन-पाठन में महर्षि द्वारा प्रथम से ही यथाविधि उचित समय एवं शुद्ध उच्चारण पर अत्यधिक ध्यान दिया जाने का निर्देश किया गया था।

इसलिए भी के दानापुर में ईश्वरविषयक एक प्रश्न श्री ठाकुरदास घड़ीसाज ने किया कि-'जब ईश्वर का नाम है तो उसका कुछ रूप तो होगा। उसके रूप को किस प्रकार से देखा जा सकता है?'

श्री महाराज ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि-'ईश्वर सर्वव्यापक और अरूप है। उसका साक्षात् ध्यान से होता है।'

इसके प्रमाण में आगे वर्णन करते हैं कि-'जिस प्रकार से अत्यन्त सूक्ष्म रज:कण आकाश में उड़ते फिरते हैं और दिखाई नहीं देते हैं परन्तु जब किसी कमरे में सूर्य की किरणें किसी झरोखे में होकर आती हैं तो वे कण दिखाई देते हैं।'

इसी प्रकार से ईश्वर भी सर्वव्यापक है। परन्तु यह ध्यान द्वारा ही प्रत्यक्ष होता है। (देवेन्द्र बाबूकृत जीवन चरित्र पृष्ठ ६११ गो० हासानन्द)

इसलिए पूर्ण लाभ प्राप्ति हेतु हमारा उच्चारण शुद्ध ही होना अत्यावश्यक है। इसलिए भी कि एक बार एक उच्चाधिकारी अंग्रेज श्री गुरुवर विरजानन्द जी महाराज की पाठशाला में जिज्ञासापूर्वक आता और कुछ सुनता समझता हुआ उसने एक वेदमन्त्र का उच्चारण कर दिया।

उसका अशुद्ध उच्चारण सुनकर अति उग्र रूप से कहते हैं कि-'विदित नहीं ऐसे अशुद्ध उच्चारण पढ़ने वाले को वेद पढ़ने का अधिकार किसने दे दिया।' (पुस्तक वही लेखरामकृत पृष्ठ ९४४)

श्री दण्डी जी के उग्रताभरे वचन सुनकर वह अंग्रेज उच्चाधिकारी अप्रसन्न नहीं हुआ। प्रत्युत उसने पूज्य स्वामी जी की प्रशंसा करे हुए कहा कि-'हमने ऐसा वीर पुरुष अभी तक किसी को भी नहीं देखा।'

इन्हीं स्वामी जी के शिष्य महर्षि श्री अशुद्ध उच्चारितजनों के लिए कहते हैं कि-'जिनका उच्चारण शुद्ध नहीं वह म्लेच्छ है।' (पुस्तक वही लेखरामकृत पृष्ठ २५९)

इस कथन को स्वीकार करते हुए कहा कि मिस्टर बोपदेव ने भी अपनी कम्पेरेटिव ग्रामर में यह ही अर्थ किया है। इसी श्रीमदभगवद्गीता में भी वर्णन है कि-

**विधिहीनमसृष्टान्नं मंत्रहीनमदक्षिणम्।**
**श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते॥** अध्याय १७ का. १३

अर्थात्-विधि की न्यूनता, अन्नदान से रहित, अशुद्ध उच्चारण, अश्रद्धायुक्त यज्ञ तामसिक कहा गया है। इसका फल यही है कि-

**अधो गच्छन्ति तामसा:।** (अ. १४ धो १८ गीता)

इस प्रकार के होने वाले हमारे यज्ञ हमें अधोगति को ही ले जा रहे हैं। महर्षि भी लिखते हैं कि-'जिसको दक्षिणा देनी हो देवे और जिसको भोजन कराना हो करावे।' तथा दक्षिणा देकर श्रद्धापूर्वक सबको विदा करे। (सामान्य प्रकरणम्)

और महर्षि यह भी दृढ़तापूर्वक घोषणा करते हैं कि-'साधारण जन यह नहीं

समझता कि विधि ही बड़ी बात है जो विधि नहीं जानते वह उनसे होने वाले लाभों से वंचित रह जाते हैं और इससे उनको कुछ भी सुख नहीं मिल सकता।'

अतः विधि ठीक-ठीक लिखनी व करनी चाहिए।

यद्यपि हमारे ही समाचार पत्रों में विशेषतया परोपकारी आर्यजगत् आदि प्रसिद्ध पत्रों में बड़े-बड़े शिविरों, उत्तमोत्तम नामधारी युक्तों का पठन हेतु मिलता है। और इनमें विशेष तौर पर यह भी कथन होता है कि-

बहुत अच्छा असर पड़ा। लोग भाव विभोर होकर तन्मयता से श्रवण करते रहे।

लेकिन जैसा कि कहा जाता है कि-'**मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की।**'

यह कहावत पूर्णतया हमारे यहां चरितार्थ हो रही है। जिसका वर्णन भी इन्हीं समाचार पत्रों में प्रत्यक्ष ही पढ़ते रहते हैं कि-'आर्यसमाजों के सत्संग में यज्ञ समय न्यूनतम पुनः सभासद् व अधिकारी वर्ग शनैः-शनैः आते रहते हैं। कुछ तो मात्र हस्ताक्षर करने हेतु ही आते हैं। इनमें भी काले बाल युवाजन न्यूनतम तथा श्वेत बाल वाले वृद्धजन ही अधिक मात्रा में दृष्टि गोचर होते हैं।' अर्थात्-

**नया खून न्यूनतम ही होता है। आखिर ऐसा क्यों?**

इसके कारणों पर हमें विचार कर निदान ढूंढना है। हमारे विचार से कुछ कारण निम्न हैं। प्रथम तो-'हमारी महर्षिकृत की अपेक्षा'

जैसे महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में प्रथम में ईश्वर प्रार्थना विषय में-**सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्वषावहै। ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।**

यहां इस मन्त्र के-'**सह नौ भुनक्तु**' का अर्थ करते हुए वर्णन करते हैं कि-

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर! आपकी कृपा, रक्षा और सहाय से हम लोग परस्पर पर प्रीति से मिल के सबसे उत्तम ऐश्वर्य अर्थात् चक्रवर्ती राज्य आदि सामग्री से आनन्द को आपके अनुग्रह से सदा भोगें।

ऐसे ही यहां ही आगे विश्वानि देव० के मन्त्रार्थ में जो 'भद्र' शब्द है उसकी व्याख्या में वर्णन है कि (यद्भद्रम्) जो सब दुःखों से रहित कल्याणकारी है जो सर्व सुखों से युक्त भोग है। उसको हमारे लिये सब दिनों में प्राप्त कीजिये।

सुख की परिभाषा करते हैं कि यह सुख दो प्रकार हा है। प्रथम तो सत्य विद्या की प्राप्ति में अभ्युदय अर्थात् चक्रवर्ती राज्य व इष्ट मित्र, पुत्र, स्त्री और शरीर का अत्यन्त सुख होगा।

द्वितीय जो निःश्रेयस सुख है, उसको मोक्ष कहते हैं। जिसमें यह दोनों सुख होते हैं उसी को भद्र कहते हैं।

अतः हम सर्ववैदिक धर्म मतावलम्बियों का यह ही कर्त्तव्य है कि वर्तमान में जो इस आर्यावर्त राष्ट्र में राज रोग सदृश अनाचार, अत्याचार, कदाचार भ्रष्टाचार आदि भयंकर रोगों से ग्रसित हो रहा है। उन सबको समूल नष्ट करने हेतु सर्व महर्षिकृत ग्रथ जो वेदानुसार तीन हजार के लगभग के सार संक्षेप से हैं इसके निर्देशानुसार पढ़ने व पढ़ाने की व्यवस्था करनी है।

पाठ्यक्रम तो निश्चित ही है। प्रथम में दैनिक सन्ध्या अग्निहोत्र विधि यथा जैसी महर्षि ने लिखी है, पुनः वेदांगप्रकाश व साथ ही साथ छठे समुल्लास में वर्णित सभी ग्रन्थों को पढ़ाकर पूर्ण राजनीति धारणकर चक्रवर्ती या मांडलिक शासन करना है। इसी दृढ़ निश्चय के साथ॥

## जीवन ये मिला....

टेक-जीवन ये मिला मानव का तुझे, ईश्वर गुण गाना है।
पल भरके सभी साथी हैं यहां, किसे साथ निभाना है।

1. ईश्वर की कृपा जिस पर हो, वो ईश्वर का ही होवे।
   छोड़े ना कभी वैदिक पथ, चाहे सुख होवे दुःख होवे।
   संध्या और हवन स्वाध्याय मनन, प्रभु ध्यान लगाना है।
   जीवन ये मिला मानव....।
2. माता और पिता ने तुझको, किस उलझन से सुलझाया।
   करते ही रहे पालन वो, कभी सुख आया दुःख आया।
   होता है यहां, ईश्वर का सदा, मन को समझाना है।
   जीवन ये मिला मानव....।
3. पतझड़ के समय में पत्ते, गिर करके बिखर जाते हैं।
   फिर कोई नहीं है सहारा, ये हमको समझाते हैं।
   जीवन भी इसी पतझड़ की तरह, इक दिन झड़ जाना है।
   जीवन ये मिला मानव....।
4. ईश्वर ने दिया ये जीवन, तुम अर्पण करदो तन मन।
   ओ३म् के रस को पी करके तुम 'सरस' बनालो जीवन।
   वरना ये जीवन तो कुछ भी नहीं, आना और जाना है।
   जीवन ये मिला मानव....।

**-सुरेन्द्रकुमार 'सरस'**, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना मार्ग, रोहतक

# आर्यसमाज का काम कौन करेगा?

**लेखक : दयाराम पोद्दार**, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची

आर्यसमाज के काम के नाम पर जो लोग भी जो कुछ कर रहे हैं वह काम आर्यसमाज का है या नहीं, इस विषय पर बहुत कुछ कहा या लिखा जा सकता है पर स्वयं स्वामी दयानन्द द्वारा व्यक्त इच्छानुसार वेद का प्रचार ही उनका प्रमुख और एकमात्र कार्य था, और इसी कार्य को ही आज हम दयानन्द के नामलेवा लोग विस्मृत कर लौकिक व अल्पकालीन आर्यों से उत्पन्न आत्मश्लाघा में आत्ममुग्ध होकर चरम आनन्द में लीन हैं। प्रश्न है कि आर्यसमाज के इस मुख्य काम को कौन करेगा? निश्चय ही यह कार्य आर्यसमाज से जुड़े हुए लोगों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता की सूची में सबसे ऊपर होना चाहिए था पर वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। आर्यसमाज में नीचे से ऊपर तक प्रबन्ध सम्बन्धी विवाद है जिसके समाधान का दूर-दूर तक कोई अता-पता नहीं है। प्रचार सम्बन्धी कार्य कहीं नहीं हो रहा है। आर्यसमाज के पुरोहितों और समाजों को केवल उन्हीं कार्यों से मतलब है जिससे उन्हें निजी आर्थिक लाभ होता है। आर्यसमाज के नाम पर स्थापित स्कूल, गुरुकुल या अन्य संस्थाओं को संस्थागत कार्यों से ही कोई अवकाश नहीं है। गुरुडम, पाखण्ड और अन्धविश्वास पर आधारित अन्य संस्थायें अपने कार्यकर्ताओं की निष्ठा और उनके तन, मन, धन से सर्वस्व न्यौछावर करने के कारण दिन दुगुना रात चौगुना विस्तार हो रहा है पर आर्यसमाज के कार्य के लिए न तो कोई कार्ययोजना है और न ही कोई चिन्तन। सामयिक कार्यों में ही आर्यसमाज अपनी शक्ति समाप्त कर रहा है। किसी भी संस्था में युवा पीढ़ी ही अपने कार्यों से उसे विकास की अन्तिम मंजिल तक पहुंचाती है पर उसे आर्यसमाज में आगे बढ़ाना कोई नहीं चाहता है। चूंकि आर्यसमाज के कार्य व्यावहारिक रूप से सामयिक कसौटी और आवश्यकता के अनुरूप हैं. अतः न चाहते हुए भी गैर आर्यसमाजी इसे अपनाने को बाध्य हो रहे हैं। कौड़ियों के मूल्य में या दान में प्राप्त आर्यसमाजों की भूमि आज योग्य कार्यकर्ताओं के अभाव में सूनी पड़ी हुई है और यह लोगों की निजी सम्पत्ति के रूप में परिवर्तित होती जा रही है। ऐसे निराशा के वातावरण में आशा का संचार करने के लिए क्या कोई आगे बढ़ेगा? निश्चय ही जिनके मन में वैदिक धर्म के प्रति अनुराग उत्पन्न होगा, वे लोग आगे आयेंगे। धन्य है बाबू श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी, (निधन १९१६ ई०) जो न तो आर्यसमाज के सदस्य थे और न ही कोई धनीमानी पुरुष पर जिन्होंने स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर लगातार दस वर्षों तक अपना समस्त निजी धन व्यय कर स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र के लिए जो सामग्री यात्रा के द्वारा एकत्र की, उसी पर आज दयानन्द का उदात्त जीवन चरित्र हमारे सामने आता है। याद आते हैं आज वे ज्ञात-आत सामान्य आर्यजन जिन्हें सोते जागते उठते बैठते आर्यसमाज के प्रचार की ही चिन्ता थी, उन्हीं लोगों की अनगढ़ नीव के पत्थरों पर आज आर्यसमाज का गौरवशाली महल अपनी भव्यता के साथ शोभायमान है। उन्हीं लोगों के त्याग, तपस्या और समर्पण भाव से किया गया भूतकाल का कार्य वर्तमान में आर्यसमाज के जीवन का आधार है पर भविष्य का आर्यसमाज वर्तमान में हम आर्य नामधारी लोगों के क्रियाकलापों पर अवम्बित होगा। हमें सोचना चाहिए कि आर्यसमाज का उद्धार करने के लिये न तो कोई पैगम्बर आयेगा और न ही ईश्वर अवतार लेगा चूंकि आर्यसमाज ऐसा मानता ही नहीं है। अतः आर्यसमाज से जुड़े हुए आर्यजन आर्यसमाज रूपी माता के श्री चरणों में अपनी योग्यता के अनुरूप अपना तन, मन, धन सब कुछ न्यौछावर करने को सम्बद्ध हों, अन्यथा समय किसी का इन्तजार नहीं करेगा? क्या आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए हम स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार स्वयं कुछ करेंगे? कृपया विचार करें कि यदि आर्यसमाज नहीं होता तो हम आप क्या होते और कहाँ होते? निश्चय ही वर्तमान में हम आप जो कुछ भी हैं वह तो निश्चय ही नहीं होते तो क्या हम वहीं होना चाहते हैं जो आर्यसमाज के न होने पर होता। परमात्मा हमें सद्बुद्धि दे ताकि हम इस दिशा में भी चिन्तन कर कुछ करें।

## प्रभु सबकी सुनते हो

हे नाथ दया कर दो, जीवन को सफल कर लूं।
वैदिक पथ पर चलकर, नेकी के कर्म कर लूं॥
यदि काम क्रोध शत्रु, मुझे आके सताने लगें।
तो तेरी कृपा से प्रभु, विषयों का मर्दन कर दूं॥
कोई कितना लालच दे, पर मन न डिगे मेरा।
सत्-पथ का पुजारी बन, मन को निर्मल कर लूं॥
ये दुनियादारी सब, मतलब की यारी है।
बिन मतलब का इक तू, तेरा ध्यान दर्शन कर लूं॥
कहे ''रामसुफल'' तुम तो प्रभु सबकी सुनते हो।
ईश्वर प्रणिधानी बन सब कुछ अर्पण कर दूं॥

**-आचार्य रामसुफल शास्त्री वाचस्पति**, पुरोहित एवं वैदिकप्रवक्ता, हाँसी

# पुस्तक-समीक्षा

## १. बाल सत्यार्थ ज्ञान

**लेखक :** डॉ० अशोक आर्य

**प्रकाशक :** श्रुति प्रकाशन, ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरयाणा)

**आकार :** १८×२२/८, **पृष्ठ :** ५४, **मूल्य :** १५ रुपये

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने विद्यार्थियों अथवा छोटे बालकों को वैदिक विचार वा सिद्धान्तों का ज्ञान करवाने के लिए सत्यार्थप्रकाश के प्रथम १० समुल्लासों के आधार पर लिखने का प्रयास किया है और अन्त में आर्यसमाज की मान्यताएं और वैदिक धर्म आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी भी दी है।

आपने युवक-युवतियों में वैदिक विचारों को प्रभावी बनाने के लिए **राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा परिषद्** के द्वारा वैदिक धर्म प्रवेश, परिचय, विनोद और विशारद नाम से चार धार्मिक परीक्षाओं का भी आयोजन किया है। आप इस परिषद् के रजिस्ट्रार हैं। अधिक जानकारी इनसे प्राप्त की जा सकती है। अशोक आर्य की भावना, उद्देश्य और प्रयास प्रशंसनीय है।

अब इसकी त्रुटियों पर ध्यान दें तो प्रथम तो पुस्तक का कवर बहुत घटिया लेही, वह भी बहुत कम मात्रा में लगाकर चिपकाया है। पुस्तक हाथ में लेते ही कवर पुस्तक से पृथक् हो गया। अच्छी ताजी लेही वा फेवीकोल से कवर पेस्ट करना चाहिए था अथवा टाइटल के ऊपर ही पिन लगा देते या फिर सेंटर स्टिच करने के हिसाब से छपवाते।

विरामचिह्न और लिंग, वचनसम्बन्धी बहुत अशुद्धियां हैं। मात्रा ह्रस्व दीर्घ की भी त्रुटियां हैं। जैसे सिद्धी, रूपये, गुरूओं, रूचि आदि। एक समस्तपद को तोड़कर लिखा गया है। जैसे-आर्य समाज, सत्यार्थ प्रकाश, ईश्वर कृत, बाल विवाह, बहु विवाह, विधवा विवाह, पर्दा प्रथा, जन्म पत्र, मृतक श्राद्ध आदि।

पृष्ठ ९ पर रोमन अंक छोड़कर हिन्दी अंक अपनाने की उत्तम शिक्षा देते हैं किन्तु पृष्ठ २२ पर स्वयं रोमन अंकों का प्रयोग किया है।

पृष्ठ १० पर 'आलस्य से धर्म मत छोड़, आलस्य से धर्म मत छोड़' वाक्य दो बार छप गया है।

पृष्ठ १२ पर आर्षग्रन्थों के स्थान पर आर्य ग्रन्थ लिख दिया है।

पृष्ठ १३ पर **यथेमां वाचं कल्याणीमा०** मन्त्र की दूसरी पंक्ति में चार अशुद्धियां हैं।

पृष्ठ १४ पर पुनर्विवाह प्रकरण में विधवा और विधुर विवाह तथा नियोग की भी चर्चा करनी चाहिए थी।

पृष्ठ १९ पर संन्यासी के लिए काषाय वस्त्र के स्थान पर केसरी वस्त्र लिखना ठीक नहीं।

पृष्ठ ३२ पर जीव संसार रूपी वृक्ष से पाप रूपी फलों को भोगता है के साथ पाप पुण्य दोनों का फल भोग लिखना चाहिए।

पृष्ठ ३४ पर 'शास्त्रों में अविरोध नहीं' के स्थान पर 'शास्त्रों में विरोध नहीं' हैडिंग होना चाहिए। यहां जो प्रलय का प्रकार लिखा है वह भी सिद्धान्त विरुद्ध है।

इसी ३४ पृष्ठ पर आर्य और दस्युओं के झगड़े होने लगे। तंग आकर आर्य लोग भारतीय क्षेत्र में आकर रहने लगे। ऐसा लिखना भी स्वामी दयानन्द की मान्यता के विपरीत है। पृष्ठ ३६ पर जीव को साकार लिखना सिद्धान्त विरुद्ध है। पृष्ठ ३८ पर पुण्य अधिक होंगे तो विद्वत शरीर मिलेगा ऐसा लेख भी बुद्धिसंगत नहीं है।

पृष्ठ ४० पर महाभारत ने सर्वनाश कर दिया। यह भयंकर रोग अब तक भी पीछा नहीं छोड़ रहा। यह अशुद्ध है। **महाभारत** नाम का चिकित्साशास्त्र में कोई रोग नहीं है। पृष्ठ ४७ पर दयानन्द सरस्वती ने घोषणा की थी कि 'अच्छा विदेशी शासन गन्दे स्वदेशी शासन से भी गन्दा होता है।' ऐसी घोषणा दयानन्द सरस्वती ने कही नहीं की है। लेखक का लेख यथावत् उद्धृत करना चाहिए।

इस छोटी सी पुस्तक में शताधिक अशुद्ध शब्दों का प्रयोग हुआ है और वे ही शब्द बार-बार आने से हजारों अशुद्धियां हो गई हैं। अनेक शब्द तो ऐसे हैं अशुद्ध छपने पर उनका अर्थ बदल गया है अथवा निरर्थक हो गये हैं। व्याकरणमहाभाष्यकार पतंजलि में लिखा है-'**मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह**' स्वर अथवा वर्ण से हीन मिथ्याप्रयुक्त शब्द से वास्तविक अर्थ का ज्ञान नहीं हो सकता। इसके विपरीत लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। न्यून आयु के छात्र जब सिद्धान्तविरुद्ध बातें और अशुद्धशब्दों को पढ़ेंगे तो अज्ञानवश वे उन्हें उसी रूप में स्मरण कर लेंगे और आगे चलकर ये संस्कार उनके लिए दुःखदायक होंगे। अतः लेखक को सोच-विचारकर लेखनी उठानी चाहिए जिससे यह अशुद्धियों का प्रदूषण उत्तरोत्तर न बढ़े।

विस्तारभय से मैं यहां इस पुस्तक में से कुछ अशुद्ध शब्द उद्धृत करता हूं।

मङलाचरण, कथाऐं, भाषाऐं, बताऐं, धूर्तो ने, अथार्त, दुरूपयोग, दुर्गण, अपनाईये, चहुंदिक, दण्ड, पाखण्ड, विद्युत, उपस्थोन्द्रिय, पुरूषार्थ, प्राणिधान, शुद्र, निरूक्त, गुरूकुल, सूर्य सिद्धान्तादि, तीर्थाटन, लक्ष्णों, कुष्ट, पत्नि, महांभ्रष्ट, बढेंगें, ग्रहस्थ, प्रवृत, निवृत, रूकावट, दुर्गति के और धकेलते हैं। व्यक्त्वि, अत्तम, निपनात्, व्यस्नरहित, शास्त्रें का, सुस्जित, निन्दा, महत्व, सिद्व, समुदों, ओ३म, विषद्, सपतम, तथी ही स्म्भव, परस्पर, निराभिमानी, सुष्टि, विरकत, स्वेच्छिक, **वेद ही** के स्थान पर वे ही। मृक्ति, प्राणि, शान्तचित, उत्पति, सत् चित, उत्पनन्न, जगतोत्पत्ति, दृष्टा, दस्यू, सयम, धारनाऐं, सन्मानित, धर्मोचरण, हेतू, आपरति, चतुष्ट्य, तमोंगुणों, निदियासन, उल्ट, गर्म श्रेत्र, धेत्र, स्वास्थय, व्यव्स्था, अच्छे, एंव, आस्तिन्त, स्वाहध्याय, वरण व्यवस्था, गौधृत, वाणप्रस्थ, आध्यात्यिक, अदिभौतिक, आदिदैविक, भगवत्गीता, अपत्ति। आर्यव्रत। आर्यसमाज का **मुख्य उपदेश** के स्थान पर **मुख्य उद्देश्य** होना चाहिए।

**-वेदव्रत शास्त्री**

## २. आर्यसमाज क्या है ?

**संकलनकर्ता :** डॉ० अशोक आर्य

**प्रकाशक :** श्रुति प्रकाशन, ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरयाणा)

**आकार :** १८×२२/८, **पृष्ठ :** ५६, **मूल्य :** १६ रुपये

लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में आर्यसमाज को ईश्वर-विश्वासी श्रेष्ठ लोगों का संगठन बतलाते हुए इसकी मान्यताओं वेद ईश्वरीय ज्ञान, आस्तिकवाद, त्रैतवाद, यज्ञ, वर्णाश्रम-व्यवस्था, पुनर्जन्म, धर्म का स्वरूप, स्वर्ग और नरक, शुद्धि, अन्धविश्वास, अवतारवाद, तीर्थ, श्राद्ध आदि का संक्षिप्त परिचय लिखा है।

आर्यसमाज द्वारा किये गये सुधारकार्यों का वर्णन करके गुरु विरजानन्द, प्रभुभक्त दयानन्द, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, पं० लेखराम, पं० तुलसीराम का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखा है।

हिन्दी भाषा व साहित्य को आर्यसमाज की देन शीर्षक से आर्यसमाज से संबद्ध रहे साहित्यकारों का नामोल्लेख किया है और आर्यसमाज के कार्योंसम्बन्धी कुछ नये पुराने कवियों की रचनायें उद्धृत की हैं तथा अन्त में आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी दी गई है।

पुस्तक सामान्य ज्ञानवर्धन के लिए उपयोगी है। कागज छपाई टाइटल आदि भी अच्छे हैं किन्तु अशुद्ध-शब्दावलि की यहां भी भरमार है। इसके अतिरिक्त पृष्ठ १४ पर आर्यसमाज के षष्ठ और नवम नियम में शब्द बदल दिये हैं। यही प्रमादी प्रवृत्ति पाठभेद/परिवर्तन को जन्म देती हैं। लेखक को इस विषय में विशेष सावधान रहना चाहिए। षष्ठ नियम में 'संसार का उपकार करना **'इस समाज का'** के स्थान पर **'आर्यसमाज का'** शब्द परिवर्तित है और नवम नियम में 'प्रत्येक को अपनी ही **उन्नति से'** के स्थान पर **'उन्नति में'** कर दिया है।'

**-वेदव्रत शास्त्री**

## यजुर्वेद पारायण यज्ञ

पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति खानपुर कलां राष्ट्र कल्याण व इष्ट मित्रों की मंगलकामना हेतु २८ सितम्बर २००५ से २ अक्तूबर २००५ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ करवा रही है। पूर्णाहुति दिनांक २/१०/२००५ को प्रातः ८ बजे होगी। इस यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा जीन्द होंगे। इस शुभ अवसर पर प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशकों को भी वेद प्रचार हेतु आमंत्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक राजनैतिक एवं प्रतिष्ठित समाजिक व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया गया है। यज्ञ में अनेक सम्मेलनों का भी आयोजन होगा। आप से सादर प्रार्थना है कि सपरिवार यज्ञ में सम्मिलित होकर विद्वानों के उपदेशों से लाभ उठावें।

**कार्यक्रम :** २८ सितम्बर २००५ से २ अक्तूबर २००५ तक प्रातः ६ बजे से ९ बजे तक, सायं ३ बजे से ६ बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन। २ अक्तूबर २००५ को प्रातः ८ बजे पूर्णाहुति होगी, तत्पश्चात् दक्षिणा समारोह होगा।

**-वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति (रजि०)**
खानपुर कलां (सोनीपत) हरयाणा

## नियमों (कानूनों) का सर्वत्र उल्लंघन

१. सरकारी कार्यालय में लिखा है रिश्वत लेना देना अपराध है। परन्तु लिये दिये बिना काम नहीं होता।
२. बस में लिखा है NO SMOKING अर्थात् धूम्रपान वर्जित है। परन्तु जब ड्राइवर और कंडेक्टर धूम्रपान कर रहा है तो यात्री कैसे मानेगा ?
३. किसी पार्क या बाग बगीचे में लिखा है कि फूल-फल तोड़ना मना है। फिर भी मनचले लोग फूल तोड़कर बलात्कारी करते हैं।
४. सरकार का आदेश है कि यहां पोस्टर लगाना मना है। फिर भी मूर्ख लोग चिपका देते हैं।
५. चोराहे पर लिखा है NO PARKING अर्थात् यहां गाड़ी खड़ी करना मना है। अनुशासनहीन लोग वहां गाड़ी खड़ी कर देते हैं।
६. एक ढाबे पर लिखा है कि यहां शराब पीना सख्त मना है। अंदर देखा तो वहां दो व्यक्ति शराब पी रहे थे। सम्भवतः ये पुलिसवाले थे।
७. एक मंदिर और पार्क की दीवार पर लिखा है ''गधे के पूत यहाँ मत मूत'' परन्तु बेशर्म लोग वहाँ पर ही खड़े पेशाब करते हैं।
८. अब तो अल्ट्रासाउंड के डॉक्टरों ने भी बोर्ड लगा दिया है कि यहां भ्रूण-परीक्षण नहीं होता है। सच्चाई भगवान् जाने।
९. क्या क्या सुनायें हम तुम्हें भ्रष्टाचार की कहानियाँ। सरेआम भ्रष्टाचारी पहुंचा रहे हैं हानियाँ॥

**-देवराज आर्यमित्र**, हरिनगर, नई दिल्ली-६४

# अध्यापक कर्त्तव्यपरायण, ध्येयनिष्ठ एवं अध्ययनशील बनें - डॉ० सांगवान

हम सदा स्मरण रखें भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर एस. राधाकृष्णन् को जिन्होंने अध्यापकों को राष्ट्र की वास्तविक पूंजी कहा। यह सत्य है कि नई पीढ़ी को चरित्रवान्, ध्येयनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण बनाने में अध्यापकों की ही अहम् भूमिका है। हमें अपने देश के इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि सभी महापुरुषों - स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, स्वामी श्रद्धानंद, सुभाषचन्द्र बोस, पंडित जवाहरलाल नेहरु, आचार्य विनोबा भावे आदि को आगे बढ़ने की प्रेरणा अपने अध्यापकों से मिली। सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत चल रहे अध्यापक प्रशिक्षण शिविर अध्यापकों को अपने व्यवसाय के साथ न्याय करने में, शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने में तथा छात्रों के सर्वांगीण विकास करने में बड़े सार्थक सिद्ध हो रहे हैं - ये शब्द आर्यसमाज कोर्ट रोड के प्रधान एवं आर्य सीनियर सै० स्कूल सिरसा के प्रबंधक डॉ० आर.एस. सांगवान ने दूसरे चरण के प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए कहे।

उन्होंने कहा कि अंग्रेजी विषय में अध्यापक विद्यार्थियों को ग्रामर का ज्ञान आवश्यक रूप से दें। इससे उन्हें स्वयं हिन्दी से अंग्रेजी के वाक्य बनाने आएंगे और अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने में भी सुविधा होगी। ग्रामर अंग्रेजी विषय का ही नहीं बल्कि हिन्दी, संस्कृत एवं अन्य विषयों का भी आधार है।

डॉक्टर सांगवान ने अपने सम्बोधन में कहा कि समय परिवर्तनशील है। समय के साथ-साथ शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन एवं पत्रकारिता आदि में भी परिवर्तन होता है। इसलिए केवल अध्यापकों के लिए ही नहीं बल्कि चिकित्सकों, प्रशासकों एवं पत्रकारों आदि के लिए भी प्रशिक्षण शिविर लगने चाहिएं। इससे नवीन तथ्यों एवं खोजों की जानकारी मिलती है। अपने काम को करने के लिए नई ऊर्जा, स्फूर्ति एवं विश्वास की प्राप्ति होती है।

डॉक्टर सांगवान ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि अध्यापकों द्वारा दिए गए अच्छे संस्कारों से ही बालकों का भविष्य बनता है। आज भी समाज में ध्येयनिष्ठ, समर्पित एवं कर्त्तव्यनिष्ठ अध्यापकों का मान-सम्मान है। अपने मान-सम्मान को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि आज के अध्यापक कर्त्तव्यपरायण, अध्ययनशील एवं समय पालक बनें। अपने विषय का स्वयं भी विस्तार से अध्ययन करें और प्रेम, स्नेह एवं आत्मीयता से छात्र-छात्राओं को पढाएं।

**-कृष्णलाल वोहरा**, प्रिंसीपल आर्य सी० से० स्कूल सिरसा (हरयाणा)

# प्रसाद वितरण एवं भोजन व्यवस्था

आर्यसमाज के कार्यक्रमों के अन्त में शान्तिपाठ के बाद प्रायः प्रसाद दिया जाता है। प्रसाद का अर्थ है कृपा या प्रसन्नता अर्थात् जिसको खाकर मन प्रसन्न हो जाये। अतः प्रसाद स्वच्छ, पवित्र और स्वास्थ्यवर्धक होना चाहिए। इस दृष्टिकोण से ऋतु अनुकूल शुद्ध देशी घी का हलवा या खीर या फलों की व्यवस्था कर सकते हो। ऐसा प्रसाद जो तामसिक हानिकारक है, नहीं देना चाहिए। जैसे ब्रेड पकौड़ा वनस्पति तेल से बनी बाजार की मिठाइयां, खील-बताशे आदि। ऐसे ही भोजनव्यवस्था में ध्यान रखें। तन्दूर की सख्त रोटियां और पूड़ियां पेट को खराब करती हैं। पतली रेशेदार दाल सब्जी के साथ हलके-फुलके व्यंजन बनाये जायें। तन्दूरी परांठे भी खाये जा सकते हैं, शेष आपकी इच्छा है। मेरा तो सुझाव है क्योंकि कभी कहीं मुझे भोजन करना पड़ता है। एक प्रार्थना और है कि लंगर की बजाय सहभोज/प्रीतिभोज लिखो।

**-देवराज आर्य मित्र**, WZ-४२८ हरिनगर नई दिल्ली-६४ दूरभाष : ५५४६९२५१

# यज्ञ-सत्संग समारोह

दिनांक १९/५/२००५ को हरयाणा राजकीय प्राथमिक पाठशाला तथा उच्च विद्यालय बामनौला की ओर से अध्यापिका नारायणी जी को सेवानिवृत्त होने पर भावभीनी विदाई धूमधाम से दी गई। विदाई समारोह में गांव के बहुत से नर-नारी तथा अतिथिगण उपस्थित थे। समारोह का प्रारम्भ दुनियां के श्रेष्ठकर्म यज्ञ से किया गया। कार्यक्रम में भजनमंडली तथा छात्राओं ने भाषण और रंगोली में अपनी प्रतिभा के रंग बिखेरे। फोटोग्राफर ने विभिन्न दृश्यों के फोटो लेकर दर्शकों का भी अच्छा मनोरंजन कराया। श्रोताओं ने रंगारंग कार्यक्रम का आनन्द उठाया। इस शुभ अवसर पर बहन नारायणी ने स्कूल में यज्ञ तथा घर पर भोजन का आयोजन किया। बहन जी ने ११०० रुपये पुरोहित जी तथा ५०० रुपये आर्यसमाज के लिए दान किया।

दिनांक ३१/८/२००५ को हरयाणा राजकीय प्राथमिक पाठशाला कसार की ओर से मुख्य अध्यापिका लक्ष्मी जी को सेवानिवृत्त होने पर भावभीनी विदाई हर्षोल्लासपूर्वक दी गई। अपनी सहधर्मिणी के सेवानिवृत्ति दिवस पर आर्यसमाज सेक्टर - ६ के प्रधान ब्रह्मजीत आर्य ने घर पर एक विशेष यज्ञ-सत्संग तथा भोजन का आयोजन किया। यज्ञ-सत्संग वेला में बहन वेदवती, बहन नारायणी तथा माता सुमन जी ने मनोहर भजन सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। प्रोफेसर रामविचार जी ने ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यासाश्रम के विषय पर उपदेश दिया। प्राध्यापक ब्रह्मजीत आर्य द्वारा दिये गये दान का विवरण : पुरोहित जी ११०० रु०, आर्यसमाज खेड़ी आसरा ११०० रु०, आर्यसमाज सेक्टर ६ बहादुरगढ़ ११०० रु०, आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुरगढ़ ५०० रुपये।

**-जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य**, आर्यसमाज सेक्टर ६ बहादुरगढ



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ९१२६२-२७६८७४
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२






आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक
प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष ३२ अंक ४१ २१ सितम्बर, २००५ वार्षिक शुल्क १०० रुपये विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

सभी राष्ट्रवादियों, विशेषत: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आर्यसमाज, सनातन धर्म, विश्व हिन्दू परिषद्, हिन्दू महासभा आदि के विचारार्थ आत्मिक खुला पत्र

## देश की रक्षा हेतु हम संगठित हों

लेखक - भारतीय राजनीति के मर्मज्ञ मनीषी- प्रो० बलराज मधोक

खण्डित रूप में स्वतंत्र होने के ५८ वर्षों के बाद हिन्दुस्तान फिर चौराहे पर खड़ा है। मुस्लिम समस्या, जिसके हल के लिए मातृभूमि के विभाजन की भयानक कीमत हमने १९४७ में अदा की थी, उससे भी अधिक खतरनाक रूप में फिर खड़ी हो गई है। पाकिस्तान के लिए काम करने और वोट देने के बाद हिन्दुस्तान में रह गये मुसलमानों का हम न भारतीयकरण कर पाये और न उन्हें राष्ट्रधारा में ला पाये। फलस्वरूप उनकी खण्डित हिन्दुस्तान को भी पाकिस्तान की तरह इस्लामी देश बनाने की मनःकामना और तीव्र हो गई है। अब उनकी पीठ पर पाकिस्तान और बांग्लादेश भी हैं और उनके वोटों के भूखे तथाकथित सैकुलर राजनेता और उनके दल भी हैं। मिल्लत और कुफ्र, दार-उल-इस्लाम, दार-उल-हरब और जिहाद के सिद्धान्त अब उनके बच्चे-बच्चे में मदरसे द्वारा अंकित किये जा रहे हैं। इस्लामी आतंकवाद विश्वव्यापी खतरा और संकट बन गया है। हिन्दुस्तान और हिन्दू इस आतंकवाद से सदियों जूझते रहे हैं। परन्तु ''मर्ज बढ़ता ही गया ज्यूँ-ज्यूँ दवा की'' की तरह यह संकट बढ़ता ही जा रहा है। फलस्वरूप न केवल हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता और एकता अपितु इसका अस्तित्व और हिन्दू पहचान भी खत्म होती दिखती है। यह एक राष्ट्रव्यापी संकट है और सारे राष्ट्रवादियों और देशभक्तों को मिलकर इसका मुकाबला करना होगा।

नेहरू और उनकी गलत नीतियों, जिनका आज की स्थिति परिणाम है, से उत्पन्न होने वाले खतरों को भांपकर डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने अप्रैल १९५० में नेहरु मंत्रीमंडल, जिसमें वे उद्योग मंत्री थे, से त्यागपत्र देकर और कुर्सी को लात मारकर राष्ट्रवादियों और हिन्दुत्ववादियों को एक राजनैतिक मंच पर लाने का संकल्प किया था, जो १९५१ में भारतीय जनसंघ के निर्माण के रूप में फलीभूत हुआ।

डॉ० मुखर्जी प्रखर हिन्दुत्ववादी और राष्ट्रवादी थे। 'हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र है' यह उनकी मान्यता थी और आजीवन उन्होंने इसे मूर्त रूप देने का संकल्प किया। १९५२ में लोकसभा में भारतीय जनसंघ के प्रतिनिधि चुनकर आने के बाद उन्होंने सभी राष्ट्रवादी सांसदों को एकसूत्र में बांधा था और लोकसभा में पहले गैर सरकारी विरोध पक्ष के रूप में मान्यता पाई थी। कुछ समय के बाद प्रजा समाजवादी पार्टी, जिसके २२ सदस्य थे, ने भी डॉ० मुखर्जी के नेतृत्व वाले संसदीय दल में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की थी। प्रजा समाजवादी पार्टी के नेता श्री अशोक मेहता ने डॉ० मुखर्जी से मिलकर यह पेशकश की ताकि डॉ० मुखर्जी सरकारी तौर पर विरोध पक्ष के नेता बन जायें और उन्हें संविधान के अनुसार कैबिनेट मंत्री का दर्जा और अन्य सुविधायें मिल जायें, परन्तु श्री अशोक मेहता की शर्त थी कि इनके इस संसदीय दल में से हिन्दू महासभा, जिसके लोकसभा में केवल चार सदस्य थे, को इसमें से निकाल दिया जाये। कारण स्पष्ट था हिन्दू महासभा खुले रूप में हिन्दू राष्ट्र से प्रतिबद्ध थी। डॉ० मुखर्जी ने श्री अशोक मेहता का यह सुझाव यह कहकर रद्द कर दिया कि वे भी हिन्दू राष्ट्रवादी हैं और कैबीनेट मंत्री का दर्जा पाने के लिये वे अपनी विचारधारा से समझौता नहीं कर सकते।

डॉ० मुखर्जी के कुशल नेतृत्व और 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' के स्वयंसेवकों के व्यापक समर्थन के कारण भारतीय जनसंघ शीघ्र ही एक प्रबल राजनैतिक शक्ति बन गया और डॉ० मुखर्जी को हिन्दुस्तान का अगला प्रधानमंत्री माना जाने लगा। इससे नेहरू और उनके खेमों में खलबली मच गई और यही २३ जून १९५३ में श्रीनगर में बंदी के रूप में उनकी मेडिकल हत्या का कारण बना। डॉ० मुखर्जी की अकाल मृत्यु के बाद भारतीय जनसंघ कुछ काल के लिये मानो यतीम हो गया परन्तु यह शीघ्र ही अपने पांव पर खड़ा हो गया। सभी दल इसके साथ तालमेल करना चाहते थे और १९६७ का आम चुनाव इसने स्वतंत्र पार्टी, अकाली दल, हिन्दू महासभा तथा अन्य कुछ दलों के साथ मिलकर लड़ा और गठजोड़ को लोकसभा में १०० सीटें मिलीं। मेरा विश्वास था कि भारतीय जनसंघ अगले चुनावों में सत्ता में आ सकेगा, परन्तु नियति को कुछ और मंजूर था। श्री दीनदयाल उपाध्याय, जो मेरे बाद भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने, की अध्यक्षता पद संभालने के छः सप्ताह के अन्दर ही हत्या कर दी गई, जिस पर आज भी रहस्य का पर्दा पड़ा हुआ है। इसके बाद जो लोग भारतीय जनसंघ में आगे आये उन्होंने भारतीय जनसंघ को राष्ट्रवाद और हिन्दुत्व के मार्ग से हटाकर नेहरूवाद और मुस्लिम तुष्टिकरण के रास्ते पर ले जाना शुरु किया। उन्होंने भारतीयकरण के आंदोलन, जो अखिल भारतीय जनसंघ की प्रतिनिधि सभा में डॉ० मुखर्जी द्वारा पेश किये गये और सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव पर आधारित था, से हाथ खींच लिया और मुस्लिम तुष्टिकरण के मार्ग पर सरपट भागना शुरु कर दिया। फलस्वरूप भारतीय जनसंघ की हिन्दुत्ववादी छवि धूमिल होने लगी। परन्तु जन साधारण ही नहीं अपितु विश्व के राजनेता भी भारतीय जनसंघ को हिन्दू पार्टी मानते रहे, इसे कोई भी साम्प्रदायिक पार्टी नहीं कहता था।

१९७५ में इमरजेंसी लगने के बाद जब भारतीय जनसंघ सहित सभी गैर कम्युनिस्ट विरोधी दलों के नेताओं को मीसाबंदी बना लिया गया तब आपातकाल और इंदिरा गाँधी से छुटकारा पाने के लिए श्री जयप्रकाश नारायण की पहल पर विरोधी दलों को 'इन्दिरा हटाओ' के नकारात्मक आधार पर एकसूत्र में बांधने के प्रयास शुरू हुये। जनता पार्टी का उदय इसी का परिणाम था। १९७७ के चुनाव में इंदिरा गाँधी की हार और इन्दिरा के सत्ता से हट जाने के बाद यह आधार खत्म हो गया और जनता पार्टी के विघटन की प्रक्रिया शुरू हो गई। इसमें शामिल दलों ने इससे अलग होकर अपनी पार्टियों को पुनर्जीवित कर लिया, परन्तु भारतीय जनसंघ के नेहरूवादी नेताओं ने जनसंघ में लौटने की बजाये भारतीय जनसंघ की राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी विचारधारा को छोड़कर जनता पार्टी की गाँधीवादी समाजवाद की विचारधारा, इसके दुरंगे झंडे तथा डॉ० मुखर्जी तथा डॉ० हेडगेवार की जगह जे०पी० और गांधी को अपना प्रेरणास्रोत घोषित करके भारतीय जनता पार्टी के नाम से नयी पार्टी बना ली। इसकी स्थापना सम्मेलन ५-६ अप्रैल १९८० को मुम्बई में हुयी। इसकी अध्यक्षता अटल बिहारी वाजपेयी ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री वाजपेयी ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि भारतीय जनता पार्टी असली जनता पार्टी है और इसका भारतीय जनसंघ के साथ कोई संबंध नहीं और इसे भारतीय जनसंघ का उत्तराधिकारी दल कहना गलत होगा।

भारतीय जनसंघ को छोड़कर भारतीय जनता पार्टी से नाता जोड़ना संघ की सबसे बड़ी भूल थी। ऐसा करके इसने न केवल भारतीय जनसंघ नाम और इसके भगवे झंडे से मुंह मोड़ लिया अपितु इसकी हिन्दुत्ववादी, राष्ट्रवादी विचारधारा से भी नाता तोड़ लिया। फलस्वरूप संघ के कार्यकर्ताओं, जो हिन्दुत्व की विचारधारा से प्रतिबद्ध थे, के लिये अपने आपको भारतीय जनता पार्टी के साथ जोड़ना कठिन हो गया। भाजपा के ६ वर्षों के शासनकाल की दुर्नीतियों ने उनका इससे पूर्णतः मोह भंग कर दिया। २००४ में भाजपा की हार और साधारण

(शेष पृष्ठ ७ पर)

# आर्ष ग्रन्थ : निघण्टु और निरुक्त शास्त्रों की संक्षिप्त व्याख्या

-जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

जिस शास्त्र में पद के सम्भावित अवयवार्थ पूर्णतया कहे जाते हैं उसे निरुक्त या निर्वचन विद्या कहते हैं। वैदिक शब्दों के बल को दर्शाने वाले ग्रन्थ निघण्टु और निरुक्त हैं जिनको महर्षि यास्क जी ने रचा है। इस शास्त्र में वैदिक शब्दों के अनेक अर्थों का ज्ञान भरा पड़ा है। वर्तमान समय में जो "फिलोलोजी" (Philology) विद्या का दीपक यूरोप में प्रकाशित हो रहा है उसका क्या सामर्थ्य है कि निरुक्त का लग्गा खा सके। बंगाल के शिरोमणि पंडित सत्यव्रतसामाश्रमी ने निरुक्तालोचन नामी ग्रन्थ प्रकाशित करके निरुक्त की महिमा का बोध कराया है। शब्दविद्या में निरुक्त न केवल अनुपम रचना की पुस्तक ही है बल्कि वेदों की कुंजी है। एक लोहे की सन्दूक के अन्दर रत्न भरे पड़े हैं परन्तु कुंजी उसकी नहीं मिलती। यदि संदूक तोड़ते हैं तो रत्न टूटते हैं, यदि नहीं खोलते तो रत्न नहीं मिल सकते ऐसी दशा में यदि कुंजी मिल जाय तो सम्पूर्ण व्याकुलता दूर हो जाती है। इस समय भी रूढ़िग्रस्त संस्कृत के विद्वान् वेदार्थ मनमानी रीति से कर रहे हैं, इसलिए उनको वेदों के रत्न प्राप्त नहीं होते परन्तु प्राचीन आर्य निरुक्त रूपी यौगिक कुंजी के चारों वेदों को खोलकर उसमें से अर्थरूपी रत्न निकालते थे। यही कारण था कि जिस समय यास्काचार्य सदृश महर्षि भारतवर्ष में विराजमान थे उस समय मानव समाज में प्राणों से त्याग वेद को समझते थे। आज यद्यपि वे ऋषि नहीं रहे तथापि वे अपनी कुंजी हमें दे गये हैं और जिन लोगों ने उनकी इस यौगिक कुंजी से वेदार्थ किये हैं उन्होंने वेदों से रत्नों की झोलियाँ भर ली हैं। सच्चे "फिलोलोजी" के गुरु पृथ्वी पर महर्षि यास्क जी हो गये हैं जिनके सदृश आजकल दूसरा मिलना दुर्लभ है।

इस विषय में अर्थसहित प्रमाण लिखते हैं - (निरुक्त अ० १, ख० २०) जो अर्थ को समझे बिना अध्ययन वा श्रवण करते हैं, उनका परिश्रम निष्फल होता है। प्रश्न - वाणी का क्या फल है ? उत्तर - अर्थ को ठीक-ठीक जान के उसी के अनुसार व्यवहारों में प्रवृत्त होना वाणी का फल है। और जो लोग इस नियम पर चलते हैं, वे साक्षात्कृत-धर्मा अर्थात् ऋषि कहलाते हैं। इसलिए जिन्होंने सत्यविद्या को यथावत् जाना था वे ऋषि ही हुये थे। जिन्होंने अपने उपदेश से अवर अर्थात् अल्पबुद्धि मनुष्यों को वेदमंत्रों के अर्थों का प्रकाश कर दिया है। प्रश्न - किस प्रयोजन के लिए ? उत्तर - वेदप्रचार की परम्परा स्थिर रहने के लिए तथा जो लोग वेदशास्त्र आदि पढ़ने में कम समर्थ हैं, वे जिससे सुगमता से वेदार्थ जान लेवें इसलिए निघण्टु और निरुक्त आदि ग्रन्थ भी बना दिये हैं कि जिनके सहाय से सब मनुष्य वेद और वेदाङ्गों को ज्ञानपूर्वक पढ़कर उनके सत्य अर्थों का प्रकाश करें। निघण्टु उसको कहते हैं कि जिसमें तुल्य अर्थ और तुल्यकर्म वाले धातुओं की व्याख्या, एक पदार्थ के अनेकार्थ तथा अनेक अर्थों का एक नाम से प्रकाश और मंत्रों में भिन्न अर्थों का संकेत है और निरुक्त उसका नाम है जिसमें वेद मन्त्रों की व्याख्या है। मंत्र भाष्य की संक्षिप्त से व्याख्या इस प्रकार है -

मंत्र भाष्य में इस प्रकार का क्रम है कि प्रथम तो मंत्र में परमेश्वर ने जिस बात का प्रकाश किया है, फिर मूल मंत्र, उसका पदच्छेद, क्रम से प्रमाण सहित मंत्र के पदों का अर्थ, अन्वय अर्थात् पदों की सम्बन्धपूर्वक योजना और छठा भावार्थ अर्थात् मंत्र का जो मुख्य प्रयोजन है। इस क्रम से मंत्र भाष्य बताता है।

सर्गादि में जब मानव बुद्धि निर्मल और स्मृति धारण शक्ति से युक्त थी तब सत्व शुद्ध तेज से देदीप्यमान अपरिमित सामर्थ्यवाले विद्वान् सीधे वेदों से ही सब तरह का ज्ञान प्राप्त कर लेते थे। उस समय वेद को छोड़कर अन्य कोई शास्त्र न था। जब उत्तरकाल में मानव क्रमशः सत्त्वहीन, अल्पमति और प्रवर्धमान रजोगुण तथा तमोगुण से अभिभूत होने लगे और उपदेश द्वारा भी वेद में विद्यमान विद्याओं को ग्रहण करने में असमर्थ हो गये, तब विस्तारपूर्वक सुगम उपाय से विविध विद्याओं का ज्ञान कराने के लिए विविध शास्त्रों की रचना की गई। इस शास्त्रावतार रूप इतिहास को निरुक्तकार यास्काचार्य ने इस प्रकार प्रतिपादित किया है -

सृष्टि के आरम्भ में (साक्षात्कृतधर्मा) मन्त्रार्थ का साक्षात् न जानने वाले मनुष्यों के लिए उपदेश से मंत्रों के अर्थ जताए। उत्तरकाल में अथवा हीन मेधावाले उपदेश से ग्लानि करते हुए (उपदेश मात्र से न समझ सकने वाले) लोगों ने वेद तथा वेदाङ्गों का अभ्यास किया। परन्तु जब लोग उपदेश मात्र से वेद को ग्रहण करने में असमर्थ हो गये तब उन्हें वेद तथा वेदाङ्गों का साथ-साथ अभ्यास किया और वे अभ्यास करने लगे। वहीं पर उपदेश शब्द का अर्थ वेद की व्याख्या किया गया है।

आदिकाल में संस्कृत के समस्त नाम पद यौगिक अर्थात् धातुज माने जाते थे। कालांतर में उनके अर्थ विशेष में सीमित हो जाने पर वे रूढ़ होने लगे। यतः वेदों का प्रादुर्भाव सृष्टि के आदि में हुआ, अतः इनमें कोई भी शब्द रूढ़ नहीं है। इस कारण वेद के समस्त शब्दों का अर्थ यौगिक धातु के अर्थों के अनुकूल होगा। वेदार्थ की जितनी भी प्रक्रियाएं हैं उनमें ऐतिहासिक प्रक्रिया को छोड़कर अन्य सभी प्रक्रियाओं में वैदिक नामों - प्रातिपदिकों को धातुज अथवा यौगिक माना गया है।

निरुक्तकार - यौगिकवाद में जो कुछ प्राचीन और अर्वाचीन (वर्तमान काल में) विचार उपस्थित किये जाते हैं उनका मुख्य स्रोत निरुक्त है। निरुक्त की रचना ही इस वाद के प्रचार एवं प्रसार के लिए हुई है। निर्वचन-प्रकृति-प्रत्यय की योजना का नाम है जो अर्थ को लक्ष्य में रखकर की गई हो। महर्षि यास्क ने अपनी भूमिका नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात इन चारों के पदों को बताकर कहा -

**तत्र नामान्याख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्तसमयश्च**

अर्थात् जितने भी नामवाची पद हैं, वे सब आख्यातज-धातुज हैं। जब सब नाम धातुज हैं तो जिस धातु से उनकी उत्पत्ति हुई है उस धातु के अर्थ को तो वे अवश्य कहेंगे। प्रकृति-प्रत्यय (व्याकरण के कुछ नियम) के योग से निष्पन्न शब्दों की व्युत्पत्तियां इसीलिये की गई हैं कि उन शब्दों की निरुक्तियों को लेकर तत्तत् (उन-उन) शब्दों का अर्थ होता है क्योंकि अर्थ को लक्ष्य में रखकर ही ये निर्वचन किये गये हैं। निरुक्त के सिद्धान्तानुसार वेद के सभी शब्द धातुज होने से जितने भी धातुओं से उनके निर्वचन हो सकें किये जा सकते हैं।

हमें बड़ों का आदर करके स्वयं उनसे लाभ लेना चाहिए। हमारे विनयपूर्ण व्यवहार से वे द्रवित होकर हमको बड़े से बड़े वर देने को उद्यत हो जावेंगे। यदि वे ज्ञानी हैं तो वे हमें अपने ज्ञान कोष की कुञ्जियां पकड़ा देंगे, विशेषकर विद्या के क्षेत्र के लिए तो यह और भी आवश्यक है।

महर्षि मनु जी और आचार्य यास्क ने निरुक्त में कुछ श्लोकों द्वारा बड़े काव्यमय ढंग से इस तथ्य को प्रकट किया है -

**विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि।**
**असूयकायानृजवेऽयताय मां मा दा वीर्यवती तथा स्याम्॥**

विद्या ने विद्वान् के पास आकर कहा - मैं तेरा कोष हूं, इस कोष की सावधानी से रक्षा कर ! इस कोष की कुंजी किसी अनधिकारी को मत पकड़ा देना। कुछ निर्देश करते हुए बताया - **असूयकाय**, दूसरे के यश को देखकर जलने-कुढ़ने वाले को मुझे मत देना। ऐसा व्यक्ति पढ़-लिखकर पात्रों को भी ज्ञान के प्रकाश से वंचित कर देगा। जो दूसरों की प्रतिभा को देखकर प्रसन्न हो, वही इस कोष का अधिकारी है। दूसरा कहा- **अनृजवे**, जो कपटी और कुटिल हो, वह भी मेरा अधिकारी नहीं है। ऐसा व्यक्ति भी अपनी कुचालों से समाज के वातावरण को विक्षुब्ध कर देगा। जो सरल और निष्कपट हों, उन्हें ही मेरा अधिकार देना। तीसरे **अनधिकारी** का निर्देश किया - आलसी और प्रमादी को भी मुझे मत देना। ऐसे व्यक्ति भी अपनी विद्या के बल पर मुफ्त के गुलछर्रे उड़ाना चाहते हैं। जो परिश्रमी और तपस्वी हों वही मेरे अधिकारी हैं। ये सभी चेतावनियां बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। तो सबसे पहले जो ज्ञान में बड़े हैं, उन्हें समाज में उचित आदर मिलें।

निघण्टु वेदों के कान हैं, अतः हमें आप्त पुरुषों के उपदेश ध्यानपूर्वक सुनकर उनका आदेश मन, वाणी और कर्म से सिद्ध करना चाहिये। वेद में कहा -

**सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।**
**अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि॥** ऋ० १०/७१/२०

जैसे सत्तु को पानी में घोलने से पहले छलनी में छानकर देख लेते हैं कि कोई ऐसी अभक्ष्य वस्तु पेट में न चली जाए जो विकार करे, उसी प्रकार बुद्धिमान् व्यक्ति शब्दरूपी आटे को मनरूपी छलनी में छान-छानकर बोलता है। वे मित्र ही मित्रता बनाए रखने के नियमों को जानते हैं और ऐसे ही पुरुष तथा स्त्रियों की वाणी में लक्ष्मी, शोभा और सम्पत्ति निवास करती है।

अन्त में लेख का सार यह है कि मानव योनि प्राप्त करके यह शुभ अवसर नहीं गंवाना चाहिए। हमें कानों से कल्याणकारक वचन सुनने का व्रत लेना चाहिये तथा हमें गंदे अश्लील शब्द तथा निन्दा श्रवण आदि का त्याग करना चाहिए। इसलिए सभी धर्म प्रेमी नर-नारियों का कर्त्तव्य है कि वेद मार्ग को अपनाकर मृत्यु से छूट, अमर मोक्ष प्राप्त करें।

## सर्वहितकारी की सेवा में आवश्यक निवेदन

१. सर्वहितकारी साप्ताहिक प्रत्येक मास की ७, १४, २१ और २८ तारीखों में पोस्ट किया जाता है। यदि किसी पाठक को ४ दिन तक न मिले तो सूचित करें, पुनः प्रेषित किया जायेगा।
२. सर्वहितकारी के सभी पाठकों से नम्र निवेदन है कि आप अपनी वार्षिक सहयोग राशि १०० रु० मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भिजवायें अन्यथा आपकी सेवा में सर्वहितकारी नहीं भेज सकेंगे।
३. जिन पाठकों के पास भूलवश एक से अधिक सर्वहितकारी डाक द्वारा जाता है वे पोस्टकार्ड द्वारा सूचित करने की कृपा करें।
४. सर्वहितकारी के सम्बन्ध में आपके सुझाव, समाचार, लेख आदि सादर आमन्त्रित हैं।

**-वेदव्रत शास्त्री**, सम्पादक सर्वहितकारी, दयानन्दमठ, रोहतक १२४००१

# वेद-यज्ञ-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का स्थापना दिवस वार्षिकोत्सव

दिनांक २६ सितम्बर से दिनांक २ अक्तूबर २००५ तक अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण और ऋग्वेद बृहद् यज्ञ। योगसाधना निर्देशक **पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी 'दुग्धाहारी'** मुख्याधिष्ठाता आश्रम, यज्ञ ब्रह्मा-**श्री आचार्य शिवनारायण शास्त्री** (वैदिक प्रवक्ता, योग प्रशिक्षक एवं ध्यान साधना विशेषज्ञ, रोहिणी, दिल्ली), वेदपाठ-गुरुकुल खेड़ा खुर्द, दिल्ली एवं आत्मशुद्धि आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा, भजनोपदेशक-**श्री नरदेव जी**, राजस्थान, **सत्यपाल जी मधुर** दिल्ली, श्री पं० रमेशचन्द्र जी झज्जर, प्रमुख प्रवक्ता-**आचार्य आर्य नरेश जी** (उद्‌गीथ साधना स्थली हिमाचल), **श्री पं० खुशीराम जी** वेदप्रचार अधिष्ठाता, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री आर्य तपस्वी जी (सुखदेव वर्मा), **श्री डॉ० मुमुक्षु आर्य**, वेद संस्थान नोएडा, **श्री आचार्य सुधांशु जी**, गुरुकुल खेड़ा खुर्द, दिल्ली, **स्वामी वेदरक्षानंद जी एवं स्वामी सुखानंद जी, पं० रामजीवन जी योगाचार्य**, योगासन एवं प्राकृतिक चिकित्सक-**श्री डॉ० एम.एल. गुप्ता जी, D.A.C. P.M.T. N.I.O. DNYs** एवं **श्री डॉ० जगदीश जी आर्य**, दिल्ली।

**२६ सितम्बर से ३० सितम्बर प्रातः तक कार्यक्रम**

प्रातः ५ से ६ ध्यान साधना प्राणायाम अभ्यास, ६ से ७ आसन आदि प्रशिक्षण, प्रातः ७ से १० यज्ञ-भजन उपदेश, सांय ३ से ६ यज्ञ-भजन-उपदेश, रात्रि ८ से १० जनोपदेशक और व्याख्यान। आर्य महिला सम्मेलन-दिनांक ३० सितम्बर सांय ३ बजे, योग सम्मेलन-दिनांक १ अक्तूबर प्रातः ९ बजे, गोरक्षा सम्मेलन-दिनांक १ अक्तूबर सांय ३ बजे। वार्षिकोत्सव स्थापना दिवस महोत्सव दिनांक २ अक्तूबर, यज्ञ पूर्णाहुति प्रातः ९ बजे होगी।

**निवेदक :**

**सत्यानन्द आर्य, दर्शन कुमार अग्निहोत्री** — प्रधान (ट्रस्ट) मंत्री
**डॉ० शिवकुमार, यशपाल गांधी** — प्रधान (प्रबंधक समिति) मंत्री

आत्मशुद्धि आश्रम (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़-१२४५०७, जिला झज्जर, (हरयाणा)
दूरभाष : ०१२७६-२३०१९४, चलभाष : ९४१६० ५४१२५

# बीमारी में धैर्य की जरूरत होती है

१. मरीज के पास कोई झगड़े वाली या मुसीबत वाली बात नहीं करनी चाहिए।
२. जैसा मरीज हो वैसा वातावरण बनाना चाहिए।
३. जो लोग मरीज़ की देखभाल करते हैं उनको अपना खानपान का आराम का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि मरीज़ की सेवा तभी हो सकती है अगर सेवा करने वाला खुद ठीक हो।
४. बाजारी चीजें खासकर तला हुआ सामान कम से कम ही खाना चाहिए।
५. सुबह नाश्ते में रस-बिस्कुट-केला-पपीता-कच्चा पनीर ही लेना चाहिए।
६. दोपहर और रात को भोजन भी हल्का ही लेना चाहिए।
७. पराठे, पूडी से परहेज करें।
८. व्यसन बिल्कुल न करें।
९. मरीज के पास उसके हालात के मुताबिक अखबार, छोटा रेडियो वगैरह रखना चाहिए।
१०. बैटरी हमेशा अपने पास रखें।
११. मरीज के कपड़े, बरतन अलख रखें। अलग ही साफ करें।
१२. मरीज के पास दुख भरी बातें न करें।
१३. जो बीमारी आई है उसका कारण जानें। कारण जानने से आगे के लिए सहूलियत मिलती है।
१४. दवाईयाँ अच्छी दुकान से लें। बिल जरूर लें ताकि नकली दवाई न मिले।
१५. आजकल दवाइयों में बहुत सा डिस्काउंट मिलता है। एक-दो अच्छी दुकानों से पता कर लें।
१६. मरीज के पास ज्यादा जमघट न करें।
१७. मरीज के ऊपर खर्च होता है। कमाने वाला भी जरूर होना चाहिए।
१८. बीमारी में दिखावा न करें।
१९. सादगी रखें जो सबसे उत्तम है।
२०. कॉपी, पेन हमेशा पास रखें। जरूरी नम्बर नोट करके रखें। जरूरी काम भी नोट करते रहें।
२१. डॉक्टर को जो बताना है पहले नोट कर लें।
२२. मरीज के परहेज का ध्यान रखें और मरीज की देखभाल करने वाले को भी अपने परहेज का ध्यान रखना चाहिए।
२३. ज्यादा सामान न रखें।
२४. फल, जूस, बिस्कुट, रस वगैरह ही लें। थोड़ा फल रखें। ईश्वर ने इंसान के लिए बहुत कुछ बनाया है।
२५. मरीज की सफाई का ध्यान रखें।
२६. प्रभु से प्रार्थना करो और किसी जरूरतमंद को दान दो।
२७. शान्त स्वभाव से बीमारी, मुसीबत का सामना करें।
२८. जो आपके सच्चे हितैषी हैं, मित्र रिश्तेदार हैं, उनका सहारा लें।
२९. मुसीबत में दोस्ती रिश्तेदारी की परख होती है।
३०. डॉक्टर की बात का भरोसा करें। डॉक्टर भी छोटा परमात्मा होता है।
३१. लम्बी बीमारी हो तो बैंक अकाउन्ट खोल लेना चाहिए।

संग्रहकर्ता : **ओम्प्रकाश अग्रवाल**

# चौ० प्रियव्रत अभिनन्दन समारोह की तैयारी हेतु बैठकें



हरयाणा के प्रसिद्ध समाजसेवी तथा दानवीर चौ० प्रियव्रत जी का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह शीघ्र होगा। इसकी तैयारी के लिए अभिनन्दन समारोह समिति की बैठकें रोहतक, बहादुरगढ़ तथा झज्जर में सम्पन्न हो चुकी हैं। गोहाना तथा सोनीपत आदि में कार्यकर्ताओं की बैठकों की व्यवस्था करने के लिए उपसमितियों का गठन किया गया है। समारोह के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जावेगा जिसमें चौ० प्रियव्रत जी द्वारा किये गये सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों पर नेताओं, विद्वानों तथा उनके सम्पर्क में रहनेवाले साथियों से संदेश, लेख, संस्मरण तथा चित्र भेजने के लिए पत्र लिखे गये हैं।

चौ० साहब ने अनेक निर्धन छात्रों को वजीफा देकर पढ़ाया है जो उच्चा पदों पर आसीन है। कन्या गुरुकुल खानपुर, नरेला, लोवाकलां, सूरजमल शिक्षण संस्थान नई दिल्ली, भैंसवाल, मटिण्डू, छोटूराम पॉलटैक्निक कंझावला, छोटूराम इंजीनियरिंग कॉलेज मुरथल (सोनीपत), छोटूराम वैदिक व्यायामशाला जुआँ (सोनीपत), आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, छोटूराम धर्मशाला बहादुरगढ़, नेहरु कॉलेज झज्जर, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक का बलिदान भवन, चौ० लखीराम आर्य अनाथालय रोहतक आदि शिक्षण संस्थाओं के निर्माण हेतु इन्होंने तन-मन तथा धन से विशेष योगदान दिया है। आर्यसमाज मंदिर खेड़ी आसरा, आर्यसमाज मंदिर जुआँ (सोनीपत), आर्यसमाज मंदिर ६ सैक्टर बहादुरगढ़ आदि को दान दिया है। इस समारोह के संयोजक बा० रघुवीरसिंह जी हैं। इसका मुख्य कार्यालय आर्य अनाथालय दयानन्दमठ रोहतक में है।

-केदारसिंह आर्य, सहसंयोजक

# मुख्याध्यापिका के सेवानिवृत होने पर सम्मानित



श्रीमती लक्ष्मी आर्या धर्मपत्नी श्री ब्रह्मजीत आर्य, प्रधान आर्यसमाज सैक्टर ६ बहादुरगढ़ को सेवानिवृत्त होने पर विदाई समारोह पर सम्मानित किया गया। नगर के अनेक आर्य नर-नारी उपस्थित थे। दोनों दम्पति अब पूरा समय आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में लगायेंगे। इनके सहयोग से बहादुरगढ़ में पारिवारिक सत्संग पूर्व ही हो रहे हैं।

-केदारसिंह आर्य

# पं० बस्तीराम सर्वस्व




पं० बस्तीराम शर्मा आर्योपदेशक द्वारा रचित **पाखण्ड खण्डनी** आदि १३ पुस्तकों का संग्रहरूप विशाल सजिल्द ग्रन्थ छपकर तैयार हो गया है। कम्प्यूटर द्वारा आफसेट मशीन पर सुंदर छपाई बढ़िया कागज पर की गई है। $\frac{१८ \times २३}{८}$ साइज के ५६४ पृष्ठों के ग्रन्थ का मूल्य केवल २०० रुपये है। जो सज्जन वा समाज इस अनुपम भजन संग्रह को मंगवाना चाहते हैं वे मनीआर्डर द्वारा २०० रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। इस के प्रेषण पर ३० रुपये डाकव्यय होगा वह हम देंगे।

-**वेदव्रत शास्त्री**, आचार्य प्रकाशन दयानंद मठ, रोहतक १२४००१,
दरभाष : ०१२६२-२७६८७४

प्रत्येक गृहस्थ सभासद को उचित है कि वह अपने गृहकृत्य से अवकाश पाकर, जैसे घर के कामों में पुरुषार्थ करता है, उससे अधिक पुरुषार्थ इस समाज की उन्नति के लिए करे और विरक्त तो समाजोन्नति ही में नित्य तत्पर रहे। -मुम्बई नियम ९

# आर्यसमाजों के नाम खुला पत्र

## विषय : वेद प्रचार

देश आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का चिर ऋणी रहेगा जिन्होंने देशवासियों को जागृत कर समाज में व्याप्त कुरीतियों और अज्ञानांधकार को नष्ट करने की दिशा में अनथक प्रयास किया। वेदों का भाष्य किया, देश को एक सूत्र में पिरोये रखने के लिए हिन्दी भाषा को सर्वश्रेष्ठ माध्यम माना तथा सत्यार्थप्रकाश की रचना कर ईश्वर को निराकार, अजन्मा और सर्वान्तर्यामी बताया। आर्यसमाज की थाती को सदृढ़ और विश्वव्यापी बनाये जाने हेतु आर्यसमाज मिशन में विश्वास रखने वाले प्रत्येक सभासद व सदस्य का परम कर्त्तव्य है कि वह स्वयं यथाशक्ति व्यक्तिगत रूप से अथवा आर्यसमाजों के माध्यम से सामूहिक रूप से वेदप्रचार हेतु नवीन साधनों को अपनाए। आज आर्यसमाजों में सप्ताह में एक बार मात्र यज्ञ करने, आर्यसमाज के नियम पढ़ लेने, जयघोष करने तथा वर्ष में वार्षिकोत्सवों का आयोजन कर भजनिकों व व्यावसायिक उपदेशकों को संतुष्ट कर देने अथवा शोभा यात्रा निकाल देने से ही कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो पायेगी। वार्षिकोत्सवों में आयोजक चाहते हैं कि उन्हें यश मिले। अधिक चन्दा देने वाला व्यक्ति स्वागताध्यक्ष बना चाहता है। उपदेशकगण अपना नीरस व संस्मराणात्मक घिसा पिटा उपदेश देने के लिये श्रोताओं के अमूल्य समय की चिंता न करते हुए संयोजकों से अधिक से अधिक समय की मांग करते दिखाई देते हैं जबकि न्यूनतम समय में ही अधिकाधिक बात कह देना योग्यता का सूचक है।

आज हमें समय के साथ चलना होगा। प्राचीन साधनों द्वारा वेदप्रचार करना आज निरर्थक है। सर्वप्रथम हमें मीडिया से सम्पर्क करना होगा -

(१) सम्पूर्ण देश में आकाशवाणी केन्द्रों का जाल सा बिछा हुआ है। आप अपने नगर अथवा नगर के समीप वाले आकाशवाणी केन्द्र से नित्यप्रति प्रसारित होने वाले वंदना कार्यक्रम में ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना के मंत्रों का अर्थ सहित प्रसारण करा सकते हैं। उस केन्द्र से समय-समय पर स्वामी दयानंद, आर्यसमाज, वेदों की भूमिका, अंधविश्वास निवारण आदि विषयों पर वैदिक विद्वानों द्वारा वार्ताएं प्रसारित करा सकते हैं। इसके लिए कुछ विषयों का निर्धारण कर प्रस्तावित वार्ताकारों के नामों व पतों सहित सम्बंधित केन्द्र के निदेशक के साथ आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा सम्पर्क किया जा सकता है। इसी प्रकार दूरदर्शन केन्द्रों के निदेशकों से सम्पर्क स्थापित कर यज्ञ, योग आदि के सावधि कार्यक्रम किये जा सकते हैं।

(२) आर्यसमाज के विद्वान् व विदुषियाँ स्थानीय व राष्ट्रीय समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं में वैदिक विचारधारा से सम्बन्धित अपने आलेख प्रकाशनार्थ भेजें। विधवा विवाह, कन्या शिक्षा, अपसंस्कृति विरोध आदि कार्यक्रम भी सुधारवादी हैं।

(३) आर्यसमाजों में रामकथा और कृष्णकथाएं आयोजित की जायें। आर्यसमाज के विद्वान् बिना किसी पूर्वाग्रह व दुराग्रह के शुद्ध सत्यनारायण की कथा आदि का भी आयोजन सार्वजनिक स्थलों पर करें।

(४) गैर आर्यसमाजी परिवारों में यज्ञों का आयोजन करें तथा अत्यन्त रोचक ढंग से उन्हें अपनी बात समझाएं। अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के मोहल्लों में कराये गए ऐसे आयोजन लाभदायक भी होते हैं। यज्ञ के उपरांत यहाँ वैदिक साहित्य भी बांटा जा सकता है।

(५) केन्द्रीय व प्रादेशिक राजकीय कार्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों के पुस्तकालय हेतु सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ को निःशुल्क दिया जाये।

(६) आर्यसमाज के भजनिकों को स्पष्ट निर्देश दिये जायें कि वे फिल्मी तर्ज पर वैदिक गीत/भजन न सुनायें। हमारा लोक संगीत बहुत समृद्ध है।

(७) आर्यसमाज के उपदेशक पौराणिकों का खंडन न करें अपितु उन्हें अपनी बात सप्रमाण समझाएं। खंडन करने से वे विरोधी बनते हैं। छोटी लकीर के बराबर में बड़ी लकीर खींचकर ही उसे छोटा दिखायें।

(८) सार्वजनिक स्थलों पर आर्यसमाज के दो-दो तीन-तीन नियम पत्थर पर खुदवाकर लगवाये जायें।

(९) लक्खी मेलों, तमाशों, कुम्भ आदि के बीच यज्ञों व प्रवचनों के आयोजन कराये जायें।

(१०) भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा शिलान्यास किया गया तथा उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती द्वारा उद्घाटित मथुरा का गुरु विरजानंद धाम (जो पांच मंजिला है) आज भी अपनी दयनीय दशा पर आँसू बहा रहा है। उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभापोषित व संचालित इस गुरुधाम में नियमित रूप से न तो वैदिक ऋचाएं गूंजती हैं और न वेदों का अध्ययन अध्यापन ही होता है। ज्ञातव्य है कि यह वही स्थल है जहां महर्षि ने गुरु विरजानंद से दीक्षा प्राप्त कर वेदों के प्रचार प्रसार का संकल्प लिया था। वेदों का अध्ययन अध्यापन कर गुरुधाम का उचित प्रयोग किया जाये।

(११) गुरुकुल वृंदावन की परीक्षाएं भी अब उचित रीति से सम्पन्न नहीं होती। परस्पर विवाद, छीना झपटी, अकुशल व स्वार्थी संरक्षण के चलते अब गुरुकुल में न कोई विद्यार्थी है और न अध्यापक। वहां अवस्थित विशाल भवन, उद्यान, यज्ञशाला, व्यायामशाला, सभास्थल आज भी अपने शानदार अतीत की गाथा सुनाते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि महर्षि के अनुयायी कहे जाने में स्वयं को गौरवान्वित समझने वाले सभी कार्यकर्ता पदलोलुपता और स्वार्थ प्रवृत्ति को त्यागकर वेद प्रचार के कार्य में तन मन और धन से सक्रिय हों। अहंकार और अधिनायकवाद के स्थान पर विनम्रता व कर्त्तव्यशीलता का मार्ग अपनाएं। पाश्चात्य संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, खान-पान, सम्बोधन तथा रहन-सहन के व्यामोह से अपने परिवार को बचायें तथा अपसंस्कृति के नागपाश में जकड़ते समाज को 'वेदों की ओर लौटो' की मानसिकता से परिचित करायें। वस्तुतः आज वेदों के विधिवत् प्रचार प्रसार की महती आवश्यकता है।

-सत्यदेव आजाद, मंत्री आर्यसमाज अर्जुनपुरा डीगगेट, मथुरा

# सवा करोड़ गायत्री अनुष्ठान महायज्ञ

**दिनाक : ४ अक्तूबर, २००५**
**(शारदीय नवरात्रारम्भ आश्विन शुक्ला प्रतिपदा) से**
**५ मार्च, २००६ (फाल्गुन शुक्ला षष्ठी रविवार) तक**
**एवं**

## चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

दिनांक २ फरवरी, वसन्त पञ्चमी, २००६ से प्रारम्भ होकर ५ मार्च, २००६ रविवार तक (चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ सहित गायत्री अनुष्ठान महायज्ञ निरन्तर चलता रहेगा) यज्ञ समय : प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक तथा सांय ३ से ५ बजे तक आवश्यक दिशा-निर्देशों के साथ

**स्थान : गुरुकुल यमुनातट मञ्झावली, फरीदाबाद (हरियाणा)**

**याज्ञिक महानुभावों से विनम्र निवेदन :** यजमान, व्रती एवं गायत्री के साधकों से प्रार्थना है कि १ और २ अक्तूबर २००५ को गुरुकुल यमुनातट मञ्झावली में पहुंचकर ३ तारीख को उपवास करके ४ अक्तूबर से प्रारम्भ होने वाले गायत्री महायज्ञ में बैठने की पूरी तैयारी करें।

**आवश्यक नियम :**

१. यज्ञ में बैठने के लिए एक मास पूर्व से ही सभी यजमान दम्पति ब्रह्मचर्य की साधना के साथ-साथ मौन रहकर गायत्री जप का अभ्यास घर पर करें। यज्ञीय वातावरण को शुद्ध बनाये रखने के लिए आप सभी अभी से, यदि किसी भी प्रकार के अभक्ष्य पदार्थ का सेवन करते हों, तो उन्हें तुरन्त छोड़ दीजिए।

२. यज्ञ के दिनों में यज्ञ के समय भारतीय वेश-भूषा-धोती और कुर्ते का ही उपयोग करेंगे। माताएं भी साड़ी का प्रयोग करेंगी। ये वस्त्र सभी स्त्री-पुरुषों के पीत-वस्त्र होंगे।

३. आप अपने साथ ऋतु के अनुकूल अपना बिस्तर तथा भोजन के बर्तन भी साथ लाएं। भोजन व्यवस्था गुरुकुल भूमि में यज्ञ समिति के सौजन्य से होगी।

४. यह यज्ञ १०० क्विंटल घी और इसी अनुपात से उत्तम हवन-सामग्री तथा यज्ञीय समिधाओं से सम्पन्न होगा। आप केवलमात्र (शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः) की भावना से प्रेरित होकर शुद्ध-बुद्ध होकर आवें। इस यज्ञ के लिए आन्तरिक एवं बाह्य पवित्रता आवश्यक है।

५. यज्ञ में धन-दान एवं अन्य सहायता करना आपकी इच्छा पर निर्भर है। किसी भी प्रकार की कोई अनिवार्य बाध्यता नहीं है। आप अपनी यथाशक्ति आर्थिक स्थिति के आधार पर जो देंगे, वह स्वीकार्य होगा।

६. यज्ञ में भाग लेने वाले सभी यजमानों, साधकों एवं अनुष्ठानकर्त्ताओं से निवेदन है कि पवित्र यज्ञभूमि में कोई भी उपयोगी उपकरण आपके पास चमड़े का नहीं होना चाहिए। अतः सभी से निवेदन है कि पट्टे वाली खड़ाऊँ अथवा कपड़े वाले जूते (दो जोड़े) साथ लाएं।

निवेदक :

| अध्यक्ष : | ब्रह्मा : | संयोजक : |
|---|---|---|
| **स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती** | **स्वामी सत्यम् सरस्वती** | **आचार्य हरिदेव** |

एवं समस्त यज्ञ समिति ०१२९-२४०३१८२

**जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा........जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है एक का नहीं। -स०प्र० एकादश समु०**

# डी.ए.वी. भी प्रेरणा ग्रहण करे

**लेखक : दयाराम पोद्दार,** झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची

झारखंड में डी.ए.वी. दिल्ली की संस्था के आने के कतिपय सकारात्मक परिणाम निम्न प्रकार से हैं - (१) झारखंड के सामान्य लोगों में आर्यसमाज और स्वामी दयानंद का नाम पहुंचा। (२) पब्लिक स्कूल के क्षेत्र में पहले ईसाई संस्थाओं का ही एकाधिकार था, अब उनका वर्चस्व समाप्त हो गया है क्योंकि अब यहां डी.ए.वी. सहित कई गैर इसाई शिक्षण संस्थान खुल गये हैं। फलत: हिन्दू छात्रों को अध्ययन में कोई परेशानी नहीं होती है। फिर भी डी.ए.वी. संस्था अन्य संस्थानों से निम्न प्रेरणायें भी ले सकती है- (क) रॉची से १५४ किलोमीटर पर झारखंड सरकार (पूर्व में बिहार) द्वारा हिन्दी माध्यम का एकमात्र आवासीय विद्यालय है, इसके सभी छात्रों का परीक्षा में परिणाम प्रतिवर्ष प्रथम श्रेणी में ही होता है और यहाँ के छात्रों का अच्छे संस्थानों में सहज ही प्रवेश हो जाता है। इस वर्ष संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रशासनिक संवर्ग की परीक्षाओं में नेतरहाट के पूर्ववर्ती १४ छात्रों ने एक साथ आई.ए.एस. में सफलता प्राप्त की है जिसमें एक छात्र ने १४वाँ और दूसरे ने ७२वाँ स्थान प्राप्त कर यहां के छात्रों ने अपनी मेधा से सभी को चमत्कृत कर दिया है। काश! ऐसी ही या इससे भी अधिक सफलता डी.ए.वी. के पूर्ववर्ती छात्रों को भी प्राप्त होती? यह भी उल्लेखनीय है कि नेतरहाट के छात्रों ने यह उपलब्धि हिन्दी माध्यम वाले स्कूल की पढ़ाई करके ही की है जबकि डी.ए.वी. का झारखंड के ७६-७७ स्कूलों में किसी भी स्कूल में पढ़ाई का माध्यम हिन्दी में सम्भवत: नहीं है। क्या यह गौरव डी.ए.वी. प्राप्त नहीं कर सकती है? यह एक चुनौती है जिसे डी.ए.वी. को स्वीकार करनी चाहिये। (ख) अर्द्ध सरकारी संस्था मेकॉन का रॉची में जवाहर विद्या मंदिर नाम से एक पब्लिक स्कूल है जिसकी गणना भी झारखंड के सर्वोत्कृष्ट पब्लिक स्कूलों में होती है। रॉची में जवाहर विद्या मंदिर नाम से एक पब्लिक स्कूल है जिसकी गणना भी झारखंड के सर्वोत्कृष्ट पब्लिक स्कूलों में होती है। रॉची के छात्रों की प्रथम वरीयता यहाँ और देहली पब्लिक स्कूल में ही प्रवेश लेने की होती है, यहां प्रवेश में असफल छात्र ही डी.ए.वी. में प्रवेश लेते हैं। एक समझौते के तहत उक्त जवाहर विद्या मंदिर अब डी.ए.वी. जवाहर विद्या मंदिर कहलाता है पर डी.ए.वी. के प्रत्यक्ष नियंत्रण में कई वर्षों से नहीं है। (ग) आर्यसमाज की दृष्टि से यह दु:खद स्थिति है कि झारखंड के डी.ए.वी. स्कूलों में अध्ययनरत हजारों छात्रों और अध्यापनरत शिक्षकों के साथ-साथ गैर शैक्षणिक कर्मचारियों में से कोई भी यहां के स्थानीय आर्यसमाजों का न तो सदस्य है और न ही उनका आर्यसमाज में कहीं कोई उल्लेखनीय योगदान है। प्रश्न है कि ऐसा क्यों और कबतक? (घ) डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति दिल्ली, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की एक अनुषंगी ईकाई है। इस सभा के लिये यह गौरव की बात है कि इस सभा के साप्ताहिक आर्य जगत् को आर्यसमाज के सर्वोत्कृष्ट साप्ताहिक पत्र का खिताब लोगों ने दिया हुआ है पर यह पत्र घाटे पर निकलता है। क्या डी.ए.वी. स्कूलों के प्रबंधन से जुड़े हजारों लोग (निदेशक, प्राचार्य आदि) अपने स्कूलों में अध्यापन और अध्ययन में लगे छात्रों के अभिभावकों को उक्त पत्र का आजीवन सदस्य नहीं बना सकते हैं या स्कूल की ओर से सहयोग राशि प्रदान कर अपने सम्पर्क के हजारों लोगों तक आर्यजगत् पत्रिका का प्रसार नहीं कर सकते हैं? (ङ) डी.ए.वी. द्वारा प्रतिवर्ष छात्रों के लिये धर्म शिक्षा या नैतिक शिविर आयोजित किया जाता है जो निश्चय ही एक प्रशंसनीय कार्य है पर शिक्षकों एवं प्राचार्यों के लिये भी पृथक् शिविर आयोजित करने की आवश्यकता है, जो वैदिक सिद्धान्तों से स्वयं अनभिज्ञ हैं वे दूसरों को क्या जानकारी देंगे? (च) ईसाई स्कूलों का प्राचार्य ईसाई ही होता है पर डी.ए.वी. के प्राचार्य आर्यसमाजी नहीं होते हैं और उनका आर्यसमाज के प्रति दृष्टिकोण भी सकारात्मक नहीं होता है। अत: आर्थिक दृष्टि से भी प्रोत्साहन प्रदान करने के लिये क्षेत्रिय या जिला स्तर पर प्रतिवर्ष प्राचार्यों एवं शिक्षकों की लिखित परीक्षा ली जाये जिनमें साप्ताहिक आर्यजगत् पत्रिका में प्रकाशित लेखों के आधार पर वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी के लिये उन्हें पुरस्कार में अच्छी मात्रा में वैदिक साहित्य व नगद राशि या अन्य वस्तुयें भी दी जायें। आर्यसमाज की दृष्टि से डी.ए.वी. संस्थानों की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए डी.ए.वी. के प्रबंधन से जुड़े हुये लोगों को सतत चिंतन भी करना चाहिये।

## आर्यसमाज सेक्टर १९ फरीदाबाद का ४८वाँ वार्षिक उत्सव

सभी धर्मानुरागी नगर निवासियों को जानकर हर्ष होगा कि आर्यसमाज सेक्टर १९, फरीदाबाद का ४८वाँ वार्षिक उत्सव रविवार २५ सितम्बर २००५ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस महोत्सव में आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आचार्य अर्जुनदेव जी स्नातक (आगरा), आर्य जगत् के गौरवशाली विद्वान् एवं राजनेता, डॉ० रामप्रकाश (पूर्व मंत्री हरयाणा सरकार), महाशय वेगराज आर्य, भजनोपदेशक (गाजियाबाद), श्री जगबीरसिंह आर्य, एडवोकेट (अध्यक्ष युवक परिषद्), श्री राजेन्द्रसिंह बीसला (अध्यक्ष वेदप्रचार मंडल, फरीदाबाद), श्री शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), श्री महताबसिंह, आयुक्त नगर निगम, फरीदाबाद तथा श्री मुरारीलाल बेचैन, भजनोपदेशक।

१४ सितम्बर - हिन्दी दिवस पर विशेष-

# जन जन की अभिलाषा

## हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा

स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है और सम्पर्क भाषा यानी राजभाषा के रूप में भी हिन्दी स्वीकृत है। लेकिन आजादी के ५८ वर्ष बाद भी हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं हुआ है। लेकिन धन्यवाद के पात्र हैं देशभर में फैले हिमालय से कन्याकुमारी तक तथा परशुराम कुंड से वाघा सीमा तक करोड़ों की संख्या में हिन्दी प्रेमी, लाखों की संख्या में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचार पत्रों के पाठकगण, हजारों की संख्या में पत्र-पत्रिकाएं एवं संस्थाएं जो १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाकर केन्द्र सरकार तक अपनी आवाज पहुंचाने का प्रयत्न करती हैं कि हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में कानूनी तौर पर मान्यता दे दी जाए और हम अपनी आँखों से संसद, सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय तथा सभी सरकारी कार्यालयों में हिन्दी भाषा में काम होते हुए देखें।

दक्षिण के पाँच, पूर्व के दस और पश्चिम के पाँच राज्यों को छोड़कर उत्तर भारत के सभी राज्यों की मातृभाषा हिन्दी है। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी की इतनी नाजुक स्थिति नहीं है जितनी की हिन्दी भाषी क्षेत्रों में है। हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर का यह कथन सत्य है कि आज उत्तरभारत के राज्यों से ही हिन्दी को अधिक खतरा है। यहां के आर्थिक ढंग से सम्पन्न लोग अपने बच्चों को इंग्लिश मीडियम के स्कूलों, कॉलेजों में पढ़ाना अपनी शान समझते हैं और यदि विदेश में सरकारी नौकरी मिल जाए तो इसे अपना सौभाग्य समझते हैं। सत्य तो यह है कि वर्तमान हिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी केवल दलित, गरीब, ग्रामीण तथा पिछड़े वर्ग के लोगों की भाषा के रूप में जीवित है। इसलिए आज छोटे-छोटे गाँवों से लेकर बड़े-बड़े नगरों तक इंग्लिश मीडियम के स्कूल बड़ी तेजी से खुल रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी साहित्यकारों मुंशी प्रेमचंद, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि ने सराहनीय भूमिका निभाई। श्री मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित भारत भारती ने लोगों के हृदय में राष्ट्रीयता की ज्योति जला दी। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश ने जन-जन में श्रेष्ठता का भाव जगाया। स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहनराय, लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक तथा विपिन चंद्र पाल ने हिन्दी भाषा से ही जनक्रान्ति का सिंहनाद किया। ब्रिटिश शासन की नींव को हिला डाला। परिणामस्वरूप देश स्वतंत्र हुआ।

महान् हिन्दी साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र द्वारा कही गई ये पंक्तियां निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति का मूल हमें आह्वान करती हैं कि हम राष्ट्रभाषा हिन्दी को व्यावहारिक जीवन में अपनाने का संकल्प लें। आज इंगलैंड, जापान, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका तथा इजराईल आदि देश अपनी-अपनी राष्ट्रभाषा के बल पर उन्नति के शिखर पर पहुंचे हैं। हम भारतवासी भी अपनी भाषा के बल पर आगे बढ़ सकते हैं।

हिन्दी भाषा का उच्चकोटि एवं गौरवपूर्ण साहित्य आज हमें अमीर खुसरो, संत तुलसीदास, कबीर, रहीम, रसखान आदि की शपथ दिलाते हुए आह्वान करता है कि हम हिन्दी को जन-जन की भाषा बनाएं। हम सदा स्मरण रखें कि हिन्दी के माध्यम से आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, रामकृष्ण मिशन आदि संस्थाओं ने सामाजिक बुराइयों पर चोट की। हिन्दी भाषा में ही सम्पूर्ण भारतवर्ष को एकसूत्र में पिरोने की क्षमता है।

**उठ तुझे मेरी शपथ है, चल तुझे मेरी शपथ है।**
**आग अंगों से लपेटे, प्राण में पीड़ा समेटे।**
**दीप जैसे जल रहा है, चल तुझे मेरी शपथ है॥**

आज हिन्दी दिवस पर हम हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने की शपथ लें।

**-कृष्णलाल वोहरा,** प्रिंसीपल आर्य सीनि० सै० स्कूल सिरसा

## धन से बाजार में चरित्र मिलता नहीं

मेरे मित्र कह रहा हूं, बात ये विचित्र सुन,
पानी गंगाजल सा, पवित्र मिलता नहीं।
कितना मनन करो, कितना यत्न करो,
आक, ढाक, धतूरे में इत्र मिलता नहीं।
आदमी की आदमी से आत्मा तो मिलती है,
आदमी का आदमी से चित्र मिलता नहीं।
धन से बाजार में, खरीद लो जो मर्जी हो,
धन से बाजार में, चरित्र मिलता नहीं।

**-हलचल हरियाणवी,** ग्राम व डाक० बीकानेर

# महासती देवी रूप रामरखी

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, १८० महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता - ७००००७

सती वह होती है जो अपने पति के दुःख दर्द के दिनों में जीवन की विषम परिस्थितियों में अपने सतित्व की रक्षा करते हुए साथ देती है और कष्टों का निवारण होने पर सुखी गृहस्थ बनाने में सहायक होती है। ऐसी पतिव्रता गृहिणी को सती की संज्ञा दी गई है जैसे सीता, सावित्री व दमयन्ती आदि। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास में एक विचित्र तरह की सती का नाम आता है जिसने अपनी पूरी उम्र आँखों पर पट्टी इसलिए बांध ली कि उसका पतिदेव अंधा है। उसने सोचा जब मेरा पति अंधा होने के कारण संसार को देखने का आनन्द नहीं ले सकता तो में एक उसकी अर्द्धांगिनी व पतिव्रता पत्नी होने के नाते मेरा कर्तव्य ही नहीं बल्कि पावन धर्म है कि मैं भी संसार को देखने का आनन्द न लूँ। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने अपनी आँखों पर पट्टी बांध ली जिसका पवित्र नाम था माता गांधारी। इससे भी दो कदम नहीं बल्कि आठ-दस कदम आगे बढ़कर अंग्रेजों के शासनकाल में एक और महासती हुई जिसका नाम इतिहास के पन्नों को पलटने के बाद कहीं छिपा हुआ मिलता है जिसका नाम 'रामरखी' था। यह एक शहीदी व क्रान्तिकारी परिवार की अति साधारण महिला थी किन्तु पति के प्रति इसका इतना अगाध प्रेम व श्रद्धा थी कि वह पति से अच्छा खाना, पीना, सोना, रहना अपने पतिव्रत धर्म के विरुद्ध समझती थी। यह एक अजब तरह की पत्नी थी जिसको हम महान्, साध्वी, संन्यासिनी या विरक्तभाव की पतिव्रता देवी कहें, तब भी उसके महान् त्याग, तपस्या व बलिदान के सामने सभी विशेषण ओछे पड़ते हैं।

उसके पति का नाम भाई बालमुकुन्द था जो भाई परमानंद के चचेरे भाई थे। उनके पूर्वज भाई मतिदास जिसकी गुरु तेगबहादुर के साथ दुष्ट पापी औरंगजेब ने आरा से चिरवाकर हत्या करवा दी थी। तभी से उनके परिवार को "भाई" नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। भाई लाल मुकुन्द एक बुद्धिमान्, चिंतनशील, देशभक्त क्रान्तिकारी नेता थे जिनको रासबिहारी बोस ने सन् १९१२ में लाहौर क्रान्तिकारी संगठन का जत्थेदार नियुक्त किया था। उनका नाम वायसराय लार्ड हार्डिंग के चांदनी चौक दिल्ली में हुए बम कांड में जुड़ा हुआ था उनके ऊपर कागज, पत्रों में किसी प्रकार का नाम, हत्या, डकैती आदि का किसी प्रकार का अभियोग साबित न होने पर भी उनको फाँसी का कठोर दंड तीन क्रान्तिकारियों जिनके नाम मास्टर अमीरचंद, अवध बिहारी व वसन्तकुमार विश्वास था, के साथ दिया गया। जब ये महान् क्रान्तिकारी जेल के सींखचों में बंद थे तब उसकी धर्मपत्नी 'रामरखी' उनसे दो बार जेल में मिलने आई तब उसको मालूम हुआ की मेरे पति को आधा आटा और आधी मिट्टी मिली हुई कच्ची, अधजली रोटी मिलती हैं और सोने के लिए एक छोटी अंधेरी कोठरी मिली हुई है जिसमें उन्हें मच्छरों में ही सोना पड़ता है। यह जानकर उसके मन पर बड़ा आघात हुआ और नमूना बतौर एक रोटी का टुकड़ा लेकर घर आ गई।.घर पर आते ही उसने भीष्म प्रतिज्ञा की कि जब मेरे पतिदेव ही आधा आटा आधी मिट्टी की कच्ची, अधजली रोटी खाते हैं और अंधेरे में एक छोटी कोठरी में सोते है तो उसने भी निश्चय किया कि मुझे भी अपने पतिदेव की तरह ही खाना व सोना चाहिए और उसी दिन से वह आधा आटा आधी मिट्टी मिला कच्ची, अधजली रोटी बनाकर खाने लगी, अपने मकान की एक छोटी कोठरी में बिना रोशनी के मच्छरों के बीच ही सोने लगी और जब उसे मालूम हुआ कि उसके पति को ५ अक्तूबर १९१४ ई० को फाँसी पर लटका दिया गया है तो वह अपने मन को समझाकर किसी प्रकार से प्रसन्न किया और अपने सब गहने व नये वस्त्र पहनकर एक नई दुल्हन की भांति सज-धजकर किसी एक स्थान पर बैठ गई और पति का ध्यान करते-करते ही अपने नश्वर शरीर का परित्याग कर दिया। यह था रामरखी का पतिव्रत धर्म जिसका पालन करके उसने सती शृंखला में अपने आपको अग्रणी बना दिया।

इस बलिदान को हम आत्महत्या न कहकर सती का दर्जा देते हैं। आत्महत्या तो वह होती है जो किसी दुःख में या किसी दवाब में अपनी इच्छा न होते हुए भी किसी लाचारी के कारण अपनी हत्या करनी पड़ती है, उसे सती न कहकर आत्महत्या या आत्मदाह कहा जाता है। जैसे अन्दाज डेढ़ सौ वर्षों पहले वैसे तो सारे भारत में परन्तु विशेषकर राजस्थान व बंगाल में पति के मरने के बाद उसकी पत्नी को घर वाले सती के नाम पर जबरदस्ती पति के साथ जला दिया करते थे। उस अमानवीय दुष्कर्म को सती होना न कहकर किसी निर्दोष, असहाय की हत्या करना कहना चाहिए और इस निष्ठुर कार्य को महिमा मंडित न करके इसकी जितनी भर्त्सना की जावे उतनी करनी चाहिए। साथ ही जबरदस्ती जलाने वालों को दंडित करना चाहिए। इस कुप्रथा से हिन्दू जाति का बड़ा विनाश हुआ है। इस निष्ठुर व अन्यायी प्रथा को हटाने के लिए बंगाल में राजा राममोहन राय व ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने सतीप्रथा पर सरकार की तरफ से कानून बनवाकर प्रतिबंध लगवाकर बड़ा सराहनीय काम किया था। इससे हजारों विधवाओं का जीवन तो जरुर बच गया किन्तु समाज ने उसको सम्मान नहीं दिया और उनको वही नरकीय जीवन व्यतीत करने पर विवश होना पड़ता था। इससे भी बढ़कर यदि किसी ने काम किया है तो वह त्यागी, तपस्वी, बाल ब्रह्मचारी, करुणा की प्रतिमूर्ति महर्षि दयानंद ने किया है जिसने सती प्रथा का तो डटकर विरोध किया ही साथ ही विधवाओं के पुनर्विवाह को वैध (न्याय संगत) बतलाकर उसे प्रचलित करवाकर विधवाओं का नरकीय जीवन से सुखी जीवन बना दिया।

यहां एक बात और समझने की है कि मध्यकाल में मुसलमानों के राज्य में जब क्षत्रिय राजा मुसलमान बादशाहों से परास्त हो जाते थे तब उनकी क्षत्राणियाँ अपने सातित्व की रक्षा के लिये यानि मुसलमान बादशाहों से अपनी इज्जत बचाने के लिये सामूहिक रूप से प्रज्वलित अग्नि में कूदकर जल जाने की प्रथा चली हुई थी जो सती होने के नाम से प्रचलित थी परन्तु उसका सही नाम जौहर या बलिदान था। उसको सती कहना अज्ञानता थी जिसके कारण बाद में विधवाओं को मरे हुए पति के साथ जबरदस्ती जलाने की प्रथा का चल पड़ना उसी अज्ञानता का परिणाम था। यदि उस जौहर को जो अपने सतित्व की रक्षा के लिये स्वेच्छा से बिना किसी जोर जबरदस्ती के अग्नि में कूदकर प्राण दे देना, जो एक शहीदी और बहादुरी का काम था। यदि उसका नाम सती होना नहीं रखते तो शायद इसके बाद जो जबरदस्ती जलाने की प्रथा चली वह नहीं चलती। यह हिन्दुओं का दुर्भाग्य था कि जौहर जैसी बलिदानी कार्य को सती की संज्ञा दे दी गई जिसके फलस्वरूप आगे चलकर हजारों-लाखों माताओं और बहनों को इस अज्ञानता का मूल्य अपना जीवन देकर चुकाना पड़ा।

इस समय भी ऐसे बहुत साधु, संत संन्यासी व शंकराचार्य हैं जो इस वैज्ञानिक व बौद्धिक युग में भी सती प्रथा को प्रोत्साहन दे रहे हैं परन्तु बड़ी प्रसन्नता की बात है कि महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज और अन्य कई समाज सुधारक संस्थाओं के प्रयत्नों से यह अमानवीय प्रथा आज प्राय: समाप्त हो गई है।

# आर्य-संसार

## वैदिक सामान्यज्ञान प्रतियोगिता सम्पन्न

शिक्षक दिवस के महान् अवसर पर सार्वदेशिक आर्यवीर दल की स्थानीय ईकाई के सौजन्य से राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा परिषद् द्वारा आयोजित वैदिक सामान्यज्ञान प्रतियोगिता, लाल सड़क स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में बहुत ही सुव्यवस्थित एवं अनुशासित ढंग से सम्पन्न हो गयी। इस प्रतियोगिता में वेद-शास्त्रों, गीता-रामायण एवं महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश पर आधारित लघु प्रश्न पूछे गये।

-विजयपाल सिंह, प्रेस सचिव आर्यवीर दल, हाँसी

## सामाजिक समरसता से राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होगा - डॉ० सांगवान

उन्नीसवीं शताब्दी के महान् समाज सुधारक तथा उच्चकोटि के विद्वान् व आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि सामाजिक समरसता व आपसी भाईचारे से ही राष्ट्र उन्नति के शिखर पर एवं परम वैभव की स्थिति पर पहुंच सकता है। यह कार्य अविद्या के नाश एवं विद्या की वृद्धि से संभव है। विद्या से ही अज्ञानता का नाश होता है। आचार्य चाणक्य अपने ग्रंथ में लिखते हैं कि कोई भी व्यक्ति कितना ही रूपवान्, धनवान् एवं शारीरिक दृष्टि से हृष्टपुष्ट क्यों न हो, यदि वह विद्यारूपी आभूषण से वंचित है तो बाकी सारे गुण व्यर्थ हैं। शिक्षा ऐसा वरदान है जो मानव समाज को आदर्श समाज बनाने का एकमात्र साधन एवं सोपान है।

जातिपाति की भावना अज्ञानता के कारण ही है। अज्ञानता से ही सामाजिक समरसता व आपसी भाईचारे को चोट पहुंचती है। इसलिए आवश्यक है कि हम सब मिलकर ज्ञान का प्रकाश फैलाएं। मिल-जुलकर रहें और महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वपनों को साकार करें।

-कंवरसिंह आर्य, मंत्री आर्यसमाज कोर्ट रोड सिरसा

## आर्यसमाज सरस्वती विहार में संस्कृत ग्रन्थ का लोकार्पण एवं सम्मान

११ सितम्बर : आर्यसमाज सरस्वती विहार में रविवार के सत्संग में लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया का वेद विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। इस अवसर पर उन्होंने संस्कृत लेखक श्री ओमप्रकाश ठाकुर की नवीन कृति 'तेनालीकथा-कौतुकम्' का लोकार्पण किया। उनके कथाशिल्प और कवित्व की समीक्षा करते हुए जनता को उनकी रचनाएं पढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर श्री ठाकुर को शाल द्वारा सम्मानित किया गया और महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र भी भेंट किया गया। आर्यसमाज के पदाधिकारीगण सर्वश्री भजनप्रकाश आर्य, कृपादेव, हरीश आर्य एवं चन्द्रभान जी ने ओमप्रकाश ठाकुर की संस्कृत सेवाओं की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

-भजनप्रकाश आर्य, प्रधान आर्यसमाज

## चार दिन चारों वेदों के साथ सान्ताक्रुज में

फर्ज कीजिए पाँच-पाँच वेदपाठी ब्राह्मण वेद मंत्रोच्चारण कर रहे हों। एक आदित्य युवा ब्रह्मचारी के ब्रह्मत्व में समाज के संभ्रात परिवारों के आठ-दस यजमान विशाल अग्निकुंड में शुद्ध घी और सुगंधित जड़ी-बूंटियों से निर्मित हवन सामग्री की आहुतियाँ डाली जा रही हों तो ऐसा लगता है मानो कुछ देर के लिए ही सही-हम वैदिक काल में पहुंच गये हों कुछ ऐसा ही नजारा देखने को मिला आर्यसमाज सान्ताक्रुज की यज्ञशाला में जहां दिनांक १ से ४ सितम्बर २००५ तक वेदप्रचार अभियान का सफल एवं सार्थक आयोजन किया गया। इस अवसर पर लगे वैदिक पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य भी खूब बिका और श्रद्धालु वेदभक्तों को वैदिक पुस्तकों का उपहार भी दिया गया। इस दौरान प्रतिदिन सुबह-शाम वैदिक सत्संग भी होता रहा जिसमें सुमधुर वैदिक भजनों और प्रवचनों ने ईश्वरभक्ति का समाँ बांध दिया था।

इस समय आयोजन में महामंत्री श्री यशप्रिय आर्य तथा इसे कुशल नेतृत्व प्रदान किया श्री विश्वभूषण आर्य ने जो आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान हैं। इस अभियान की शानदार सफलता का श्रेय न केवल आर्ष गुरुकुल रोजड़ (गुज़रात) के प्रमुख ब्र० विवेकभूषण 'दर्शनाचार्य' एवं आर्ष गुरुकुल एटा (उ०प्र०) के आचार्य वागीश शर्मा के सारगर्भित एवं ओजस्वी व्याख्यानों को है बल्कि फिरोजपुर (पंजाब) से पधारे आर्य भजनोपदेशक श्री विजय आनन्द के सुमधुर भजनों को भी। वेदपाठी पंडित रहे सर्वश्री पं० नामदेव जी आर्य, पं० विनोद शास्त्री, पं० नरेन्द्र शास्त्री, पं० प्रभारंजन पाठक एवं पं० रणधीर शास्त्री। वेदों के प्रचार एवं प्रसार की दृष्टि से उक्त अभियान का आयोजन मील का पत्थर साबित हुआ।

-मंत्री आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई

## स्वतंत्रतादिवस समारोह

ध्वजारोहण श्रीमती सरला जी भुटानी मुख्यातिथि के करकमलों द्वारा हुआ। श्री के०के० चुघ समाजसेवी विशिष्ट अतिथि थे। श्री यशपाल जी महेन्द्र 'दृष्टि पितामह' पूर्व प्रधान ने विद्यार्थियों को कठोर परिश्रम करते हुए आदर्श जीवन निर्माण की प्रेरणा दी। ओमप्रकाश आर्य प्रधान ने अतिथियों का परिचय व स्वागत करते हुए 'दयानन्द आदर्श मिडल विद्यालय' आर्यसमाज मंदिर सैक्टर ४ की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए **'निर्धन विद्यार्थी सहायता कोष'** हेतु अपील की। दान भी प्राप्त हुआ तथा कहा कि छात्र/छात्राएं अपने जीवन को गौरवशाली व महान् बनाने हेतु प्रयत्नशील रहें। महापुरुषों के मार्ग पर चलकर यश के भागी बनें। श्री जसवन्तराय गुगलानी मुख्यवक्ता ने स्वतंत्रता के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए विद्यालय की उन्नति के लिए सुझाव भी दिए।

छात्र/छात्राओं ने १½ घंटे तक निरन्तर ड्रिल वं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। देशभक्ति के गीत "ये जन्मभूमि भारत, ये कर्मभूमि भारत, लहर-लहर लहराता झंडा, जन गण मन का देश हमारा, मेरा रंग दे बंसती चोला, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, हम होंगे कामयाब, सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तां हमारा" आदि ने समारोह में चार चाँद लगा दिए।

-ओमप्रकाश आर्य, प्रधान दयानंद आदर्श मा० स्कूल सै० ४, अर्बन एस्टेट, गुड़गांव

## आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली-११००३४

दिनांक २८ अगस्त २००५ रविवार को आर्यसमाज सरस्वती विहार के वार्षिक निर्वाचन में आप सब ने मुझे (भजनप्रकाश आर्य) सर्वसम्मति से सन् २००५-२००६ के लिए प्रधान चुना तथा कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार दिया। धन्यवाद। नई कार्यकारिणी निम्नलिखित है - संरक्षक-श्री कृष्णदेव जी, प्रधान-श्री भजनप्रकाश आर्य, उप प्रधान-श्री हरीश आर्य जी, उप प्रधान-श्री धर्मदेव जी, उप प्रधान-श्री नन्दकिशोर जी, मंत्री-श्री चन्द्रभान जी, उपमंत्री-श्रीमती विजय कुमारी, उपमंत्री-श्री रविचन्द्र जी, उपमंत्री श्री अरुण आर्य, प्रचार मंत्री-श्री नितिन जी, कोषाध्यक्ष-श्री ब्रह्मदेव जी, लेखा निरीक्षक-श्री रविन्द्र जी।

-भजनप्रकाश आर्य (प्रधान)

## (पृष्ठ १का शेष) देश की रक्षा हेतु हम.........

कार्यकर्ताओं की अटल बिहारी वाजपेयी की जोड़ी से बढ़ती दूरी का यही मुख्य कारण है। भारतीय जनता पार्टी का उसी प्रकार सुधार नहीं किया जा सकता, जिस प्रकार कांग्रेस का सुधार नहीं किया जा सकता। भाजपा के प्रेरणास्रोत गाँधी और जे०पी० हैं, जिनका चिंतन हिन्दुत्व और प्रखर राष्ट्रवाद से कोसों दूर था। भाजपा अपने वर्तमान रूप के रहते हुए, उन्हें तिलांजलि नहीं दे सकती। इसलिये विचारवान् लोग यह सुझाव दे रहे हैं कि देश में एक हिन्दुत्ववादी और राष्ट्रवादी पार्टी को खड़ा किया जाये। इसके दो उपाय सुझाये जा रहे हैं - एक यह कि एक नई हिन्दू पार्टी बनाई जाये और दूसरे यह कि भारतीय जनसंघ को सक्रिय और सबल बनाया जाये।

नई पार्टी बनाने का सुझाव व्यावहारिक नहीं है। किसी पार्टी के नाम का प्रचार करने और उसकी छवि बनाने में समय लगता है परन्तु भारतीय जनसंघ का नाम पहले से ही गाँव-गाँव और जन-जन तक फैला हुआ है। इसकी छवि आज भी पूर्ववत् उज्ज्वल है और इसकी विचारधारा की प्रासंगिकता आज पहले से अधिक है।

इसलिए एक राष्ट्रवादी और संघ-जनसंघ के वरिष्ठ साथी और कार्यकर्ता के नाते मेरा यह सुविचारित मत है कि भारतीय जनसंघ को सबल बनाना इस बिगड़ती स्थिति का मुकाबला करने के लिये सबसे उपयुक्त उपाय है।

मेरे सभी राष्ट्रवादियों विशेष रूप से उपर्युक्त सभी संस्थाओं के उन साथियों, जिन्होंने अपने जीवन का बहुमूल्य भाग हिन्दू समाज को एकसूत्र में जोड़ने के पुनीत कार्य में लगाया है, से अपील है कि वे अपने-अपने स्थान पर अपनी प्रेरणा से भारतीय जनसंघ को सक्रिय और सबल बनाने के कार्य में जुट जायें। भारतीय जनसंघ एक वैचारिक आंदोलन है। इसका विचार सशक्त, तर्कसंगत और समय की आवश्यकता के अनुकूल है। बिगड़ते हालात में देश की आवश्यकताओं का तकाजा है कि इस काम में किसी प्रकार का विलम्ब न किया जाये। समय और ज्वारभाटा किसी की प्रतीक्षा नहीं करते।

वैदिक वाक्य **'चरैवेति-चरैवेति'** हमारा मूल वाक्य है और हिन्दू राष्ट्र हमारी आस्था और आराधना का केन्द्र है। हिन्दुस्तान के असंख्य महापुरुषों और आज के समय में महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानंद, वीर सावरकर, डॉ० हेडगेवार, डॉ० मुखर्जी, श्री गोलवलकर गुरुजी और डॉ० अम्बेडकर ने इस विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए जीवन पर्यन्त कार्य किये और इसके लिए जिये और इसके लिए मरे। आइये! हम उनका अनुसरण करें और मिलकर सिंहनाद करें। भारतीय जनसंघ के साथ चलो, सबको साथ लेकर चलो। (तमसो मा ज्योतिर्गमय)

**संकलनकर्ता-स्वामी केवलानंद सरस्वती**, वैदिक मोहन आश्रम, महात्मा हंसराज कुटीर नं० ३७ भूपतवाला, हरिद्वार (उत्तरांचल)

# आर्यवीर दल भिवानी ने रचा इतिहास

गाँव धनासरी, बेरला, रुदड़ौल तथा बहल के बाद उपमंडल चरखी दादरी के कस्बा बौंद कलां के आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आर्यवीर दल भिवानी ने ३ से ११ सितम्बर २००५ तक निःशुल्क योगासन-प्राणायाम एवं चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जिसमें ६३० आर्यवीरों, ३४५ वीरांगनाओं तथा ७२ वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया। शिविर काल में लगभग १४०० शिविरार्थियों, अध्यापक-अध्यापिकाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों ने यज्ञोपवीत धारण किया। शिविर का उद्घाटन वेदप्रकाश आर्य प्रान्तीय महामंत्री ने किया तथा यज्ञोपवीत संस्कार आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर एवं सत्यवीर शास्त्री सभामंत्री ने करवाया। शिविर संचालक चाँदसिंह आर्य वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने शिविरार्थियों को आसन-प्राणायाम, जूडो-कराटे, दंड बैठक, लाठी-भाला, डम्बल-पी.टी., जिम्नास्टिक, सूर्यनमस्कार-भूमिनमस्कार आदि व्यायामों का प्रशिक्षण दिया जिसमें व्यायाम शिक्षक सोम आर्य चरखी, सुरेन्द्र आर्य सन्देनी, नरेश आर्य झोझूकलां, सुनील आर्य बिहार, बिशन आर्य झोझूकलां तथा वीरसिंह आर्य सैम्पल आदि ने सहयोग किया। शिविर संयोजक सुभाष आर्य बौन्दिया तथा प्रबंधक कृष्ण यादव, प्रतापसिंह यादव प्राचार्य एवं मण्डलपति विमलेश आर्य थे। शिविर काल में वैश्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, श्रीराम उच्च विद्यालय, छाजूराम उच्च विद्यालय, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजकीय कन्या उच्च विद्यालय आदि अनेक विद्यालयों में प्रवचन, यज्ञ-सत्संग का कार्यक्रम प्रतिदिन चलता रहा जिसे चाँदसिंह आर्य ने बहुत सुंदर ढंग से चलाया। शिविर का समापन ११ सितम्बर को हुआ जिसमें मुख्य अतिथि श्री उमेद शर्मा प्रान्तीय संचालक आर्यवीर दल हरयाणा तथा विशिष्ट अतिथि निर्मला जी शर्राफ, मेजर शमशेरसिंह, रामनिवास आचार्य, देवीसिंह, वेदप्रकाशार्य, ज्ञानचंद शास्त्री, रामफल आर्य, डॉ० भूपसिंह, डॉ० सत्यपाल आदि थे। समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी जगदीश सर्राफ भिवानी ने की। समारोह में पं० चिंतामणि जी, पं० जगदीशप्रसाद, बहन पुष्पा शास्त्री, ज्ञानेन्द्र जी तेवतिया आदि की भजनमण्डलियों ने दो दिन रात्रि को भी उत्तम व्यवस्था की गई। स्वागताध्यक्ष प्राचार्य श्री प्रतापसिंह यादव ने सभी का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर महाराज राजपाल मालपोष, बलदेव आर्य, कंवरसिंह, अनिल मास्टर, बजरंगलाल सोनी, राजमल आर्य, पवनकुमार, विक्रान्त आर्य, सुमन आर्या, रचना गर्ग, सभी अध्यापक-अध्यापिकाएं व छात्र-छात्राएं आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ग्राम पंचायत, आसपास के सभी क्षेत्रवासियों का भरपूर सहयोग रहा। कुल मिलाकर कार्यक्रम इतना प्रभावशाली था कि लगभग ५ घंटे तक आर्य वीरों के व्यायाम, प्रदर्शन और व्याख्यान सुनकर भी दर्शक शान्ति से बैठे रहे। आर्यवीरों का व्यायाम प्रदर्शन आकर्षण का मुख्य केन्द्र था। विशेष शिविरार्थियों को वैदिक साहित्य से सम्मानित किया गया। सेठ दीनदयाल जी कलकत्ता की तरफ से ३०० किलो दूध तथा २००० केले शिवरार्थियों को वितरित किए गए। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सभी ने शिविर संचालक श्री चाँदसिंह आर्य, आर्यवीर दल भिवानी तथा आदर्श विद्यालय की भूरि-भूरि प्रशंसा की। दैनिक अखबारों में चित्र सहित खबरों की धूम मची रही।

-अध्यापक बिशन आर्य, प्रेस प्रवक्ता,
आर्यवीर दल झोझूकलां (भिवानी)



## आर्यसमाज के अधिकारी ध्यान दें

आपके दैनिक या साप्ताहिक सत्संग में कोई नया व्यक्ति आता है तो शान्तिपाठ के बाद या पहले उसका परिचय पूछें। एकदिन की बात है मैं एक आर्यसमाज के रविवारीय सत्संग में चला गया। वहां प्रवचन हो रहा था। मैं नमस्ते करके आगे जाकर बैठ गया। शान्तिपाठ हो गया। किसी ने मुझ से नहीं पूछा कि आप कौन हो? कहाँ से आये हो? अन्त में मैंने प्रधान/मंत्री जी से कहा कि सत्संग में कोई नया व्यक्ति आता है तो उसे पहचानने का प्रयास किया करो। हो सकता है वह कोई आतंकवादी हो और समाज को क्षति पहुंचाने आया हो या श्रद्धालु आर्यसमाजी हो। अतः अजनबी आगन्तुक का नाम परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। यह मानवता के नाते हमारा कर्त्तव्य है। वास्तव में ऐसे व्यक्ति जो वयोवृद्ध हैं उनको पद छोड़ देना चाहिए। हम देखते हैं कि आर्यसमाज के पास विशाल भवन है परन्तु सत्संग में उपस्थिति बहुत कम है। इसके अनेक कारण हैं इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है।

- देवराज आर्यमित्र

## माता की पहचान करो

माता की जय बोलने वालो, माता की पहचान करो।
वास्तव में जो माता है उसका ही सम्मान करो॥
सच्ची माता को भूलकर यदि झूठी माता पूजोगे।
पापी और अपराधी बनकर सजा जुर्म की भुगतोगे॥
माता प्यार स्नेह रखती है बच्चों की परम हितैषी है।
उसको कौन कहेगा माता, जो रक्त की प्यासी है॥
माता भेंट नहीं मांगती, माता को मत बदनाम करो।
बकरे, मुर्गे पशु पक्षियों की हत्या करना बंद करो॥
जंगली शेर नहीं हैं इसके जो माँ को ही खा जायेंगे।
इसके शेर शिवाजी जैसे जो माँ की लाज बचायेंगे॥
सारी रात शोर मचाकर माता का मत बेहाल करो।
माँ को सुख से रहने दो माता का कुछ ख्याल करो॥

-देवराज आर्यमित्र, WZ-४२८ हरिनगर नई दिल्ली-६४, दूरभाष : ५५४६९२५१



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७६८७४

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२









आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार    सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२    अंक ४२    २८ सितम्बर, २००५    वार्षिक शुल्क १०० रुपये    विदेश में २० डॉलर    एक प्रति २.००

# क्या, रामायण-महाभारत ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं हैं?

हमें दुःख है कि जिस देश के शीर्ष नेता ही दिशा भ्रमित हों तो उस देश की आम जनता की क्या दशा होगी। हमारे देश के नागरिक गाँधी और नेहरू को सिर्फ शीर्ष नेता ही नहीं बल्कि सर्वोपरि नेता मानते हैं। उन नेताओं की राष्ट्रीयता पर मैं प्रश्नचिह्न तो नहीं लगता किन्तु उनके द्वारा अपनाये गये विचार व कार्यों से देश को बहुत बड़ी क्षति व कठिनाइयाँ उठानी पड़ी हैं जिनकी भरपाई होना असम्भव जान पड़ता है। जन साधारण को शायद यह नहीं मालुम होगा कि गांधी व नेहरू, रामायण व महाभारत को एक ऐतिहासिक ग्रन्थ न मानकर एक उपन्यास या एक शिक्षाप्रद कहानी की पुस्तक मानते थे। उनका विचार था कि वाल्मीकि और व्यास ने मनुष्यों को जीवन जीने की कला सिखाने के लिए इन दो आदर्शग्रन्थों के रूप में उन्होंने रामायण व महाभारत की रचना की थी। जैसे एक उपन्यासकार किसी व्यक्ति या समाज का चरित्र-चित्रण करने के लिये उपन्यास बनाता है, उसी प्रकार रामायण, महाभारत के रचियताओं ने काल्पनिक राम और कृष्ण को लेकर यह दो ग्रन्थ रच दिये। इन दोनों में जितने भी पात्र जैसे राम, लक्ष्मण, भरत, सीता, हनुमान, बाली, रावण, विभीषण, मेघनाद, कृष्ण, दुर्योधन, अर्जुन, भीम, भीष्म, कर्ण, द्रोणाचार्य आदि सभी काल्पनिक हैं। जैसे उपन्यास के नायक व नायिकाएं काल्पनिक होती हैं। गांधी व नेहरू जी का कहना था कि मानवमात्र को सुंदर ढंग से कैसे जीना चाहिए और आपत्तियों का कैसे निवारण करना चाहिए यह सब शिक्षाएं रामायण व महाभारत में उनके रचियताओं ने लिखी हैं यानि इन पुस्तकों से मानव मात्र का पथ-प्रदर्शन किया है। वास्तव में राम और कृष्ण इस धरती पर नहीं हुए।

यह समझ में नहीं आता कि गाँधी, नेहरू के दिमाग में यह कल्पना उपजी ही कैसे? सैकड़ों लेखकों ने सहस्रों उपन्यास लिखे हैं। कालिदास से लेकर मुंशी प्रेमचंद तक लाखों उपन्यास लिखे जा चुके हैं और अभी भी लिखे जा रहे हैं परन्तु किसी भी उपन्यास के पात्र चाहे पुरुष हों या स्त्री, किसी का भी जन्मदिन नहीं मनाया जाता, जबकि राम, कृष्ण, सीता आदि के जन्मदिन मनाये ही जाते है साथ ही उनके जीवन की विशेष घटनाओं को भी पर्वों के रूप में सिर्फ भारत में ही नहीं विश्व के सैकड़ों देशों में मनाये जाते हैं। किसी भी उपन्यास के नायक का दूसरे उपन्यास के नायक से कोई सम्बन्ध नहीं होता और न ही एक-दूसरे को उदाहरण के रूप में कोई पेश करता है। उपन्यास के पात्रों को पढ़ने वाले तब तक ही याद रखते हैं जब तक उपन्यास पढ़कर समाप्त नहीं कर देते। परन्तु श्री राम को हुए नौ लाख वर्ष और श्री कृष्ण को हुए पाँच हजार वर्ष हो गये फिर भी अभी तक लोग उनको महापुरुष ही नहीं बल्कि भगवान् समझ कर पूजते हैं। रामायण की चर्चा महाभारत में कई स्थानों पर हुई है। स्वयं श्री कृष्ण ने कहा है कि मैं धनुषधारियों में राम हूँ और ऋषियों में मैं कपिल हूँ। श्री कृष्ण के इतना कहने से ही दोनों का होना प्रमाणित हो जाता है।

इतिहास में एक घटना ऐसी आती है कि बालक भोज ने अपने अन्यायी चाचा मुंज को पत्र लिखा था कि चाचा जी सतयुग में धर्मात्मा राजा मानधाता, त्रेता में श्री राम और द्वापर में युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन जैसे योद्धा भी राज्य को अपने साथ नहीं ले जा सके परन्तु चाचा जी ऐसा मालुम होता है कि आप राज्य को अपने साथ जरूर ले जाओगे। इसी पत्र ने राजा मुंज की आँखें खोल दीं और यह पत्र इतिहास की सत्यता को प्रकट करता है। अब भी भारत में कितने ही प्राचीन किले ऐसे हैं जो महाभारत की याद दिलाते हैं। भारत में सैकड़ों कवि जैसे तुलसीदास, सूरदास, रसखान, रहीम, कबीर तथा आधुनिक कवियों में मैथिलीशरण गुप्त व दिनकर आदि ने राम व कृष्ण ही नहीं बल्कि कैकेयी व उर्मिला आदि की प्रशंसा भी मुक्तकंठ से की है। कवि की कविता और लेखक का लेख इन दोनों महापुरुषों का जिक्र किये बगैर पूरा ही नहीं होता। ऐसे महापुरुषों को कोई कहे कि ये कभी हुए ही नहीं, यह कैसी हास्यप्रद बात है। आश्चर्य इस बात का है कि गीता का पाठ नित्य पढ़ने वाला व्यक्ति भी गीता के निर्माता को ही झुठलाता है। यह एक विडम्बना नहीं तो क्या है?

इन दोनों नेताओं ने हमारे देश के इतिहास को ही नहीं झुठलाया साथ ही उनके ऊपर भारतीयों के अति विश्वास रखने से राष्ट्र की भी बहुत क्षति हुई है जिसका विवरण नीचे लिख रहे हैं -

**पहले गाँधी जी के सम्बन्ध में -**

१. जब सुभाष ने कांग्रेस अध्यक्ष के लिये पट्टाभिसीतारामैया को हरा दिया तब गाँधी जी ने कहा कि पट्टाभिसीतारामैया की हार मेरी हार है। इस पर सुभाष ने अध्यक्षता से त्याग पत्र दे दिया तो क्या गाँधी जी ने लोकतंत्र व निष्पक्षता का काम किया? यदि गाँधी जी ऐसा न कहते तो शायद स्वतन्त्र भारत का प्रथम प्रधानमंत्री सुभाष बाबू होते और देश की कायापलट हो जाती।

२. जब मुसलमान भाई हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बना सकते हैं तब यदि स्वामी श्रद्धानंद जैसे देशभक्त संन्यासी अपने धर्म से च्युत हुए हिन्दुओं को शुद्ध करके उनकी इच्छानुसार पुनः हिन्दू बना लेते हैं तो गांधी जी को इसमें क्या अन्याय लगा? गाँधी जी शुद्धि कार्यों से बेहद नाराज थे और इसे साम्प्रदायिकता का काम समझते थे इसलिए गाँधी जी स्वामी जी से नाराज रहते थे और स्वामी जी ने भी गाँधी जी की तुष्टीकरण नीति से ही काँग्रेस को छोड़ दिया था। जब स्वामी जी को धर्मान्ध मुसलमान ने गोली से मार दिया उस समय गोहाटी में कांग्रेस अधिवेशन चल रहा था। गाँधी जी को जब स्वामी जी की मृत्यु की खबर लगी तो उन्होंने यही कहा कि यह तो होना ही था, इसमें क्या दुःख करना। इसका तात्पर्य यह हुआ कि धर्मान्ध ने जो किया अच्छा किया। कितनी घटिया बात गाँधी जी ने कही।

३. क्रान्तिकारी शिरोमणि भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी से यदि गाँधी जी चाहते तो बचा सकते थे किन्तु वे क्रान्तिकारियों को हिंसक, उपद्रवी व देश की आजादी लाने में बाधक समझकर इनको बचाने की कोई सिफारिश नहीं की इसलिये भारत माता के उन सपूतों को फाँसी पर चढ़ाने का दोष गाँधी जी के माथे मंढा हुआ है।

४. गाँधी जी कहते थे कि स्वतन्त्रता मिलते ही मैं गोहत्या बंद करवा दूंगा किन्तु स्वतन्त्रता मिल गई परन्तु गोहत्या उनकी आँखों के सामने ही होती रही। गाँधी जी से पूछा गया कि देश को आजादी मिलने के बाद भी गोहत्या क्यों हो रही है? तब गाँधी जी ने कहा यह देश की राजनीति का प्रश्न है। मैं राजनीति से अलग हूं इसलिये मैं इसका क्या जवाब दूं। जब पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपये देने का प्रश्न आया तो गाँधी जी ने अनशन करने की धमकी देकर रुपये पाकिस्तान को दिलवाये जबकि यह प्रश्न भी देश की राजनीति से जुड़ा था।

**नेहरू जी के सम्बन्ध में :-**

१. स्वतन्त्रता मिलने के बाद अधिकतर नेताओं की इच्छा थी कि देश का पहला प्रधानमंत्री सरदार पटेल जी को बनाया जाये परन्तु नेहरू जी ने जिद्द की और गाँधी जी पर अपना प्रभाव डालकर स्वयं प्रधानमंत्री बने जिससे देश भारतीयता से परे हटता गया पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति का देश में प्रभाव जमता गया और देश अंग्रेजियत के चंगुल में फँस गया। राष्ट्रभाषा हिन्दी बने तथा गोहत्या बंद हो, जैसे जटिल प्रश्न आजादी मिलने के बाद तुरन्त हल

(शेष पृष्ठ ७ पर)

# हिंदी की अद्‌भुत शक्ति

## विश्वभाषा के रूप में हिंदी की प्रतिष्ठा की अपेक्षा कर रहे हैं

**विश्वनाथ कैलखुरी शास्त्री**

भारतीय दर्शन में शब्द को ब्रह्म का स्वरूप माना गया है। भारत में सरस्वती के तट पर विश्व में पहली बार शब्द प्रकट हुआ। इस शब्द से भाषा बनी, जो वैदिक संस्कृत के रूप में प्रचलित हुई। संस्कृत की अक्षर ऊर्जा से संसार में अनेक बोलियां एवं भाषाओं का विकास हुआ। भारत में वह वैदिक से लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश से होकर हिंदी बनी। हिंद और हिंदुस्तान नाम सिंधु नदी ने हमें दिए हैं। महात्मा गाँधी ने सबसे पहले हिंद स्वराज की कल्पना की थी। हिंद एक देश है और इसलिए हिंद, हिंदी और हिंदू का सही परंपरागत नाम राष्ट्रवाचक है, पंथ वाचक नहीं। हिंद से इंड का प्रचलन हुआ एवं इंड से इंडिया का। इसी आधार पर हमारी राष्ट्रभाषा पहले हिंदवी और बाद में हिंदी के नाम से प्रसिद्ध और प्रचलित हुई।

प्राचीन समय से हिंदी संपूर्ण भारत की संपर्क भाषा रही है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण है केरल के नम्बूदरीपाद ब्राह्मणों का आज भी श्री बद्रीनाथ मंदिर में रावल (प्रधान पुजारी) के रूप में नियुक्त होना। देश की सभी भाषाओं के साथ-साथ इस विशाल बहुभाषी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी के सार्वदेशिक एवं सर्वग्राह्य स्वरूप ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। १४ दिसंबर, १९४९ को संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। तभी से प्रतिवर्ष १४ सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४३ (१) के अनुसार देवनागरी में लिखित हिंदी संघ की राजभाषा होगी तथा संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंको का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा तथा अनुच्छेद ३४३ (२) में यह प्रावधान किया गया था कि संविधान के लागू होने के समय से १५ वर्ष की अवधि तक अर्थात् २५ जनवरी १९६५ तक संघ के सभी सरकारी कार्यों के लिए पहले की भांति अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता रहेगा। यह देश का दुर्भाग्य है कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देशवासियों में राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र प्रेम की जो उत्कट भावना थी वह धीरे-धीरे क्षुद्र स्वार्थ एवं क्षेत्रीयता की संकीर्ण भावना के कारण क्षीण होने लगी। हिंदी भाषियों के हिंदी के प्रति अतिशय उत्साह एवं दक्षिण में हिंदी विरोधी आंदोलन के कारण राजभाषा अधिनियम, १९६३ पारित किया गया, जिसने हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी के प्रयोग की निरंतरता को बढ़ा दिया।

संविधान के अनुच्छेद ३५१ में हिंदी के विकास का उत्तरदायित्व संघ सरकार को सौंपा गया है। इसके अनुपालन में भारत सरकार ने हिंदी के विकास के लिए वे सभी प्रयास किए हैं, जिससे राजभाषा के रूप में केंद्रीय सरकार का सारा कामकाज हिंदी में किया जा सके। हिंदीतर भाषियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। शब्दावली, नियमों, अधिनियमों, आदेशों, प्रारूपों, परिपत्रों एवं सभी दस्तावेजों का आज हिंदी अनुवाद उपलब्ध है। बड़ी संख्या में केंद्रीय सरकार के कार्यालयों एवं उपक्रमों में राजभाषा कर्मी पदस्थापित किए गए हैं, जो निष्ठापूर्वक राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य संपन्न कर रहे हैं। सूचना क्रांति के इस दौर में बढ़ते कंप्यूटरीकरण को देखते हुए हिंदी में कार्य करने की सुविधा को बढ़ाने के लिए अभी २० जून २००५ को सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिष्ठान सीडैक ने निःशुल्क सॉफ्टवेयर जारी किया है, जिसमें ५२५ फांट्स, भारतीय ओपन आफिस, वेब बाउजर, ई मेल, ओसीआर, हिंदी अंग्रेजी शब्द कोश, ट्रांसलिटरेशन उपकरण, वर्ड प्रोसेसर, लेख वाणी सिस्टम, टाइपिंग ट्यूटर आदि अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। यह हिंदी भाषा कंप्यूटिंग के क्षेत्र में एक सफल क्रांतिकारी प्रयास है। इंटरनेट पर भी आज हिंदी लोकप्रिय होती जा रही है। माइक्रोसाफ्ट ने आफिस हिंदी के द्वारा भारतीयों के लिए कंप्यूटर का उपयोग आसान कर दिया है। अंग्रेजी न जानने वाले भी इंटरनेट के माध्यम से अपना काम आसानी से कर सकते हैं। हिंदी के वेब पोर्टल समाचार, साहित्य, व्यापार, ज्योतिष, सूचना प्रौद्योगिकी आदि की जानकारी सुलभ करा रहे हैं। हिंदी अब विश्व में प्रथम स्थान पर आ गई है।

भाषाविद् डॉ० जयंतीप्रसाद नौटियाल ने अपने 'भाषा अध्ययन शोध २००५' में दावा किया है कि विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है, जो कि १०० करोड़ से अधिक है, जबकि चीनी भाषा बोलने वालों की संख्या ९० करोड़ के आसपास है। वर्तमान में एक करोड़ ३० लाख भारतीय मूल के लोग विश्व के १३२ देशों में बिखरे हुए हैं। इनमें से आधे से अधिक लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। विदेशों के १४४ विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। हिंदी यूनेस्को की एक आधिकारिक भाषा है। यूनेस्को द्वारा शिक्षा, विज्ञान, सांस्कृतिक तथा अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का हिंदी अनुवाद कराया जाता है। विश्व पटल पर हिंदी को सम्मानजनक स्थान दिलाने तथा व्यापकता प्रदान करने की दृष्टि से अब तक सात विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं। इनमें से कुछ भारत के बाहर भी आयोजित हुए। मुख्यतः भारत में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय तथा मारीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना तथा हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की एक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान करने के प्रस्ताव पारित किए गए हैं। यह संतोष का विषय है कि भारतीय संसद द्वारा महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय की एक केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में वर्धा में स्थापना की जा चुकी है। इसी तरह मारीशस में भी विश्व हिंदी सचिवालय स्थापित हो चुका है। हिंदी के संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने में भी अब अधिक विलंब नहीं है।

हिंदी के पास जो सबसे बड़ी शक्ति है वह है इसकी असंख्य शब्द निर्माण की क्षमता एवं दूसरी भाषा के शब्दों को आत्मसात् करने की विशिष्टता। वाक्य विन्यास में हिंदी और उर्दू में एकरूपता है, क्योंकि दोनों के कारक चिह्न क्रियावाचक शब्द एक ही हैं। अकेली संस्कृत भाषा में २ हजार धातुएं हैं। एक धातु में नौ प्रत्यय, तीन पुरुष, तीन वचन, तीन लिंग, सात विभक्तियां और बाईस उपसर्ग तथा कृदंत, तद्धित आदि के प्रत्यय लगाकर यदि शब्द बनाना प्रारंभ किया जाए तो लगभग ११ लाख शब्द बन जाएंगे। एक ही धातु से यदि ११ लाख शब्द बन सकते हैं तो २ हजार धातुओं से तो करोड़ों शब्द बन सकते हैं। निःसंदेह अपनी अतुलनीय शब्दसंपदा एवं वैज्ञानिक देवनागरी लिपि के बल पर संस्कृत और हिंदी मिलकर न केवल कंप्यूटर जगत् पर राज कर सकती हैं, वरन वैश्विक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो सकती हैं।

(लेखक आयकर विभाग में हिंदी अधिकारी हैं)

(दैनिक जागरण २३.९.०५ से साभार)

## माननीय मुख्यमंत्री जी, हरियाणा सरकार चंडीगढ़ एवं प्रधानमंत्री जी, भारत सरकार दिल्ली, द्वारा श्रीमान् उपायुक्त महोदय, करनाल

**विषय : राजभाषा हिन्दी को उचित स्थान दिलाने हेतु ज्ञापन।( हिन्दी दिवस १४ सितम्बर)**

मान्यवर,

हिन्दी १४ सितम्बर १९४९ को देश की राजभाषा बनी। २६ जनवरी १९५० से देश का संविधान लागू हुआ हुआ तबसे हिन्दी को राजभाषा बनाने के प्रयास जारी हैं किन्तु हम इसे वास्तविक रूप में राजभाषा नहीं बना पाए हैं क्योंकि केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के कामकाज तथा प्रशासन में अंग्रेजी का प्रयोग जारी है। केन्द्र सरकार के कार्यालयों में, गृह मंत्रालय में, प्रधानमंत्री कार्यालय में अंग्रेजी हावी है। यहां तक कि भारत के प्रधानमंत्री भी संसद और संसद से बाहर अंग्रेजी में ही बोलते हैं। संसद के पिछले सत्र में सिक्ख विरोधी दंगों के बारे नानावती आयोग की रिपोर्ट पर चर्चा में भाग लेते हुए वे १० अगस्त २००५ को लोकसभा में अंग्रेजी में ही बोले। एक ईमानदार एवं स्वच्छ छवि वाले प्रधानमंत्री से यह आशा नहीं। कहते हैं विदेश जाकर भी ऑक्सफोर्ड में उन्होंने भारत में अंग्रेजी एवं अंग्रेजों के योगदान की प्रशंसा की।

आजादी के ५८ वर्ष बाद भी देश में अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। अहिन्दी भाषी राज्यों की बात तो दूर हिन्दी भाषी राज्यों में भी सरकारी कामकाज एवं प्रशासन में अंग्रेजी हावी है। यहां तक कि अधिकांश राज्यों में पहली कक्षा से अंग्रेजी को अनिवार्य कर दिया है। हरियाणा की बात करें तो यहां कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में कामकाज एवं प्रशासन की भाषा अंग्रेजी है। सारी सूचनायें, पत्राचार, पाठ्यक्रम आदि अधिकांशतया अंग्रेजी में छपते हैं। एक उदाहरण कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का है, यहां सारा काम अंग्रेजी में होता है। यहां तक कि बी.ए. (हिन्दी) तथा एम.ए. (हिन्दी) के प्रश्न पत्रों पर भी ऊपर अंग्रेजी में लिखा होता है। वर्ष २००५ का बी.ए. (तृतीय वर्ष) हिन्दी अनिवार्य का प्रश्न पत्र देखा जा सकता है जैसे - Roll No..........., Total no of pages : 3, B.A.M/A.S.............461, Hindi Complsory, Time : Three Hours, Maximum Marks................

एम.ए. हिन्दी (भाग दो) पेपर सात पर लिखा है -

Total pages : 2, MDU/M.S..........1221, Kavyshastra Evam Sahityalochan.

जबकि हिन्दी में (काव्यशास्त्र एवं साहित्यलोचन) है। यही हाल अन्य विश्वविद्यालयों का है। व्यावसायिक एवं तकनीकी कॉलेजों में तो शिक्षा एवं प्रशासन में अंग्रेजी ही है। हरियाणा के पब्लिक स्कूलों/अंग्रेजी माध्यमी स्कूलों में तो हिन्दी विषय ही खत्म कर दिया गया है।

हरियाणा सरकार के कार्यालयों में, सचिवों एवं वित्तसचिव के कार्यालयों में अंग्रेजी में कामकाज होता है। जिला प्रशासन में हिन्दी का प्रयोग अब होने लगा है। हरियाणा के न्यायालयों में समस्त कामकाज अंग्रेजी में होता है। जनता को न्याय अपनी भाषा में नहीं मिलता जबकि अन्य हिन्दी प्रदेशों में न्यायालयों में हिन्दी में भी काम होता है। अब हरियाणा में पहली कक्षा से अंग्रेजी अनिवार्य कर दी गई है। इससे बच्चे न तो मातृभाषा हिन्दी को सीख पायेंगे और अंग्रेजी तो उनके लिए दूर की बात है। हरियाणा की जनता को भी अपना निजी काम हिन्दी में करना चाहिए। हिन्दी को इस देश के लोग नहीं अपनायेंगे तो क्या विदेशी लोग/अन्य देश इसे अपनायेंगे? अतः सरकार तथा प्रशासन को एवं जनता को राजभाषा/राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति के लिए हर संभव प्रयास करने होंगे।

**-प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य,** अध्यक्ष राजभाषा संघर्ष समिति (रजि०)

करनाल शाखा, आवास ४३२, सेक्टर ८, करनाल-१३२००१

# वेदांग : चार उपवेद विद्यारूपी अमरकोषों का संक्षिप्त वर्णन

-जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, सेक्टर ६ बहादुरगढ़ (हरयाणा)

**मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्** (२.१.६८) यह न्यायदर्शन का वचन है कि मंत्र विचार तथा आयुर्वेदवत् वेदों का प्रमाण है ऐसा ही सब आप्त विद्वानों ने माना है, वेदों में जिस आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान का प्रतिपादन किया गया है, वह संसार में सत्य माना गया है। इसलिए मन्त्र आयुर्वेद रूपी एकदेश के प्रत्यक्ष से वेद के उस भाग का भी प्रामाण्य समझना चाहिये, जिसमें आयुर्वेद का प्रतिपादन नहीं है। क्योंकि वेद में कहा गया है कि आयुर्वेद प्रत्यक्ष विज्ञान द्वारा वेद के रचयिता का आप्तत्व सिद्ध है। वहीं आप्त उस भाग का भी रचयिता है, जिसमें आयुर्वेद का साक्षात् प्रतिपादन नहीं है। इन सब संकेतों से स्पष्ट है कि अतिप्राचीन काल के ऋषियों ने वेद में लोकोपयोगी समस्त विद्याओं, आधिदैविक तथा आधिभौतिक पदार्थों के विज्ञानों और आध्यात्मिक तत्त्वों की विस्तार से विवेचना की है, ऐसा मानते व समझते थे। इस प्रकार न्याय सूत्रकार महर्षि गौतम मन्त्रान्तर्गत (मन्त्रप्रतिपादित) आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान के प्रामाण्य द्वारा वेद का प्रामाण्य सिद्ध करते हैं।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में क्रमशः चिकित्साशास्त्र, धनुःशास्त्र, संगीतशास्त्र, और अर्थशास्त्र का विशेष रूप से प्रतिपादन है, इसलिए ये शास्त्र चारों वेदों के उपवेद माने जाते है। उपदेव ये है - आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, और अर्थवेद। आओ हम उपवेदों की ओर दृष्टि दें जिनको हमारे ऋषियों ने रचा है।

''आयुर्वेद'' सम्बन्धी दो मुख्य शास्त्र हैं, जिनका नाम सुश्रुत और चरक है। सुश्रुत के निर्माणकर्ता महर्षि धन्वन्तरि जी हैं, सुश्रुत का अनुवाद अरब, इटली और जर्मनी की भाषाओं में हो चुका है और चरक जिसको कि चरक महर्षि ने रचा और पतञ्जलि ऋषि ने परिष्कार किया है उसका अनुवाद भी अरबी भाषा में हो चुका है और हन्टर जी के वचनानुसार प्राचीन यूरोप के वैद्यों की पुस्तकों में उनके वचन उद्धरणरूप से मिलते हैं। रसायन विद्या (Chemistry), वनस्पति विद्या (Botany), जंगम विद्या (Zology), खनिज विद्या (Minerology), शरीर तंत्र विद्या (Physiology), शल्य विद्या (Surgery), कायचिकित्सा विद्या (Medicine), पदार्थ विद्या (Physical Science), अगद तथा विषनिवारक विद्याओं (Antidote) का पूर्ण विस्तार से इन दो ग्रन्थों में वर्णन है।

शल्य विद्या का वर्णन करते हुए डॉक्टर 'रायल' लिखते हैं कि आर्यों की Surgery (शल्य विद्या) के अन्तर्गत छेदन, भेदन, लेखन, सीवन आदि क्रियाएं थी और ये सब नाना प्रकार के शस्त्रों से की जाती थी, जिनका ब्यौरा इस प्रकार से है - यंत्र, शस्त्र, क्षार, अग्नि, शलाका, शृङ्ग, अलाबु और जलायुका।

भौतिक विज्ञान में भी जो उन्नति प्राचीनकाल में थी और इस समय तक भी आज के वैज्ञानिकों को अविदित है। चन्द्रकांतमणि के वर्णन में आया है कि इस मणि के द्वारा चन्द्रमा से पानी बनाया जाता था। सुश्रुत सूत्र स्थान ४५/३० में लिखा है-अर्थात् चन्द्रकान्तमणि से बना हुआ जल शीतल, विमल, आनन्द देने वाला, पित्त, ज्वर, दाह और विष का नाश करने वाला है। यह चन्द्रकान्तमणि बादशाह अकबर के समय थी। इस शोध की अति आवश्यकता है। भारत की आदर्श देवी कल्पना चावला जी ने आयुर्वेद की शोध करते-करते अपने प्राण त्यागे थे।

''आयुर्वेद शास्त्र'' जो कि सम्पूर्ण लौकिक विद्याओं की अमूल्य खान है, इसके महत्त्व को सर्वदेशों के विद्वान् स्वीकार करते हैं। वैदिक समय से लेकर आज तक पृथ्वी के सम्पूर्ण वैद्यों के गुरु वास्तव में पूर्ण विद्वान्, परमयोगी, धन्वन्तरि और परम मेधावी महर्षि चरक ही रहे हैं। प्राचीन वैदिक समय का एक महत्त्व यही प्रतीत होता है कि इसका एक-एक ऋषि अपने-अपने विषय में जगद्गुरु ही रहा है। आजकल वे लोग जिन्होंने इनसे ही सीखकर वनस्पति विद्या, शल्य विद्या, पदार्थ विद्या रसायन विद्याओं का थोड़ा सा ही विकास किया है, अपने को महान् उन्नत बतलाते हैं तो उस समय के इन वैदिक ऋषियों को जिन्होंने इनसे बढ़कर और भी कई विद्याओं में वेद के आश्रय से उन्नति की थी, किससे उपमा दें?

अथर्ववेद का आयुर्वेद उपवेद है इसमें अरोग्य विद्या, शरीर की रक्षा एवं चिकित्सा का वर्णन है।

''धनुर्वेद'' अर्थात् राज्य सम्बन्धी काम करना है, इसके दो भेद हैं एक निज राजपुरुष सम्बन्धी और दूसरा प्रजा सम्बन्धी होता है। राजकार्य में सब सभा, सेना के अध्यक्ष, शस्त्रास्त्र विद्या, नाना प्रकार के व्यूहों का अभ्यास अर्थात् जिसको आजकल कवायद कहते हैं शत्रुओं से लड़ाई के समय क्रिया करनी होती है उन सबका वर्णन मिलता है। रामायण न केवल महाराजा रामचन्द्र जी के क्षात्रधर्म को दर्शाता है प्रत्युत आर्यों के परिवारों में धार्मिक जीवन का अनुभव कराता है, सेनाओं का वर्णन ऐसी उत्तम रीति से इसमें किया गया है मानो कि पढ़ने वाला युद्ध में बिठलाया जा रहा है। श्री रामचन्द्र जी का लंका के अयोध्या में पुष्पक विमान में बैठकर एक दिन के अन्दर ही पहुंच जाने का वर्णन पढ़ते हुए इतिहासवेत्ता को वैदिक समय के शिल्पियों की महिमा का दृश्य मिलता है। वर्तमान पश्चिमीय शिल्पविद्या की उन्नति के दो स्तम्भ रेल और तार हैं और इन्हीं कारण पश्चिमीय उन्नति अनेक छिद्र रखती हुई भी ऐसे अभियान को प्राप्त हो रही है कि अपने साथ किसी की तुलना नहीं करती, परन्तु जिन्होंने पुष्पक विमान बनाये थे वे शिल्पी कैसे महान् होंगे, उनका अनुभव बुद्धिमान ही कर सकते हैं। यदि रामायण में बिना इस विमान के और किसी वस्तु का वर्णन न होता तो भी यह पुस्तक वैदिक समय के शिल्पियों के महत्त्व को दर्शाने के लिए अनुपम थी। परन्तु इसमें नाना प्रकार के शस्त्रों का ब्यौरा पाया जाता है जिसके पाठ करने से यूरोप और अमेरिका के 'डिनामाइट' तुच्छ प्रतीत होते हैं। इस ग्रन्थ द्वारा प्राचीन समय की यात्रा करने वाले महान् कवि वाल्मीकि के उपकार को हम भूल नहीं सकते।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, इसमें रंच मात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है। प्राचीन ग्रन्थों का अनुशीलन हमें इस परिणाम पर पहुंचाता है कि अनेक विद्वान् वैज्ञानिक आविष्कार जो प्राचीन समय में थे, मध्यकाल में आकर लुप्त हो गए और आज के वैज्ञानिकों की अभी भी वहां तक पहुचं नहीं हो पाई है। भारद्वाज ''अंशुबोधिनी'' के विमान अधिकरण में आए सूत्र पर बौधायन ऋषि की वृत्ति निम्न है - एक श्लोक में विमान की रचना और उसकी आकाश सञ्चारी गति के आठ भाग किये हैं : (१) बिजली के चलने वाला, (२) अग्नि, जल और वायु आदि से चलने वाला, (३) भाप से चलने वाला, (४) पञ्चशिखी के तेल से चलने वाला, (५) सूर्य किरणों से चलने वाला, (६) उल्कारस (चुम्बक) से चलने वाला, (७) सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त आदि मणियों से चलने वाला, (८) केवल वायु से चलने वाला। संसार में इन विमानों में से केवल एक ही प्रकार प्रचलित है, अर्थात् तेल (पेट्रोल) के द्वारा विमान चलते हैं जिनसे अन्तरिक्ष में प्रदूषण फैलता है। सभी जानते है कि तेल का साधन उत्तरोत्तर क्षीण हो रहा है और एक दिन समाप्त हो जायेगा। आज आधुनिक युग की आवश्यकता है कि प्रदूषण रहित विमानों की खोज करनी चाहिये। धनुर्वेद अर्थात् जिसमें अस्त्र-शस्त्र विद्या के विधान युक्त अङ्गिरा आदि ऋषियों के बनाये गये ग्रन्थ जो कि अङ्गिरा, भारद्वाजकृत संहिता है, जिनसे राजविद्या सिद्ध होती है। परन्तु वे ग्रन्थ प्रायः लुप्त हो गये हैं, जो पुरुषार्थ से इसको सिद्ध करना चाहे तो वेदों से साक्षात् कर सकता है।

धनुर्वेद, यजुर्वेद का उपवेद है जिसमें धनुर्विद्या अर्थात् युद्ध की जानकारी मिलती है।

''गान्धर्ववेद'' जिसका गान विद्या कहते हैं उसमें स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र, नृत्य, गीत आदि का सम्पूर्ण वर्णन मिलता है। इस उद्यान की यात्रा करने वालो! जरा सुनो तो सही कि सामने से कैसे सुन्दर राग की ध्वनि आ रही है, वह देखो ऋषि नारद जी अपना वीणा बजा रहे हैं, यात्रा की सारी थकावट इस मनमोहिनी वीणा को सुनते ही दूर हो जाती है। आओ तो देखें गान्धर्ववेद के कौन आचार्य सामवेद का गायन कर रहे हैं? शिष्यगण बैठे हुए हैं, सामवेद का गायन महर्षि नारद जी उनको वीणा सुनाकर कर रहे हैं। किसी शिष्य के हाथ में तानपूरा यंत्र है और कोई वादित्र बजा रहा है। कोई जलतरंग लिये बैठा है। नारद संहिता का ग्रन्थ सबके समाने धरा हुआ है, इस पर आर्ष ग्रन्थ में स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान आदि की विद्या का सम्पूर्ण वर्णन मिलता है तथा साजबाज सम्बन्धी सभी प्रकार के यंत्रों की सिखलाई की नियमावली प्राप्त होती है। जिस समय सब शिष्यगण महावामदेवगान का आलाप करते हैं उस समय मन शान्ति को धारण करता हुआ ईश्वर के प्रेम में लीन हो जाता है और पृथ्वी पर गायन विद्या के आचार्य महर्षि नारद जी का धन्यवाद करता है।

सामवेद के मंत्र में स्तुषे का अर्थ 'तृ स्तुति कर' इतना ही है, किन्तु इसके गहरे भाव को प्रकट करने के लिए इसका अर्थ 'स्तुति का गीता गा' किया गया है। हेतु यह है कि साम है ही गान का विषय। साम का लक्षण शास्त्रकारों ने किया 'गीतिषु सामाख्या' ऋचाएं ही भक्तों के भावावेश की स्वरलहरी में जब फूटकर बाहर प्रकट होती हैं, तो वे साम बन जाती है। उपासना और गीत का गहरा सम्बन्ध हैं अर्थात् जो मनोदशा एक गायक की संगीत को गाने के समय होती है, ठीक वही स्थिति भक्त की भी उपासना में प्रभु स्मरण के समय होनी चाहिए। लोक में एक कहावत है कि - ''गाना और रोना तो सबको आता है।'' यदि गाना संगीत विद्या का नाम होता तो वह सभी को कैसे आ सकता है? इससे परिचित तो वे ही होते हैं जो इसको विधिपूर्वक सीखते हैं। वस्तुतः गाना और रोना, दोनों ही पारिभाषिक शब्द हैं। गाने की परिभाषा यह है कि ''मनुष्य के हृदय में उल्लास की उमङ्ग उठकर अपने अंदर न समाकर स्वर का सहारा लेकर बाहर झलक पड़े, उसे गाना कहते हैं।'' इस स्थिति में मनुष्य गुनगुनाने के लिए विवश

है और हममें से कोई भी ऐसा न मिलेगा जो गाता न हो। चाहे व स्नानागार में गाए, चाहे वह गली में चहलकदमी करते हुए, चाहे उसे तर्ज आती हो अथवा न आती हो और चाहे सुनने वाला उसे बिल्कुल पंसद न कर रहे हों किन्तु वह गाता है। तो गाने का वास्तविक स्वरूप हुआ "उल्लास का विकास।" अतः हमें नित्य परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना तथा मनोहर गानों का कार्यक्रम जो श्रेष्ठ कर्म है इसे करना चाहिए।

गान्धर्ववेद, सामवेद का उपवेद है जिसमें नृत्य और संगीत विद्या का वर्णन किया गया है। इसका अभिप्राय गानविद्या की व्याख्या करने का है।

**अर्थवेद** - जिसको कि शिल्पविद्या कहते हैं उसको पदार्थ, गुण, विज्ञान, क्रिया कौशल, नाविध पदार्थों का निर्माण, पृथ्वी से लेकर आकाश पर्यन्त की विद्या का वर्णन मिलता है। सब प्रकार की हस्तक्रिया, यंत्र कला आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

जब हम आगे बढते हैं तो हमारी दृष्टि एक कला भवन पर पड़ती है, इसके अन्दर जाते ही विचित्र रचना दिख रही है, अर्थवेद के एक आचार्य महर्षि विश्वकर्मा नाना प्रकार के विमान और कलायंत्र की विधि बतला रहे हैं, इस कला भवन के एक कोने में योगिराज श्रीकृष्ण जी से विद्वान् रणभूमि में रथ चलाने की विधि दर्शा रहे हैं, कहीं नल से विद्वान् पाकविद्या में नियुक्त हो रहे हैं, मयासुर से कई इंजीनियर बिल्लौरी महल बनवाने का प्रयत्न कर रहे हैं, वराहमिहिर से शिष्यगण और शुक्रनीति के निर्माणकर्ता नाना प्रकार के कोट (किले), सड़के, पुल बांधने के करतब यहां से सीख रहे हैं, कई शिल्पजन "अश्वतरी" नामी जहाज बना रहे हैं, अर्थवेद के इतिहास की ओर जब दृष्टि करते हैं तब मुण्डक उपनिषद् बतलाती है कि अर्थवेद तथा ब्रह्मविद्या के प्रथम गुरु महर्षि ब्रह्मा जी हुए हैं जिन्होंने कि मनुष्य जाति को अर्थ और परमार्थ के उत्तम रत्नों से सुभूषित कर दिया था।

विज्ञान के तत्त्व का इतिहास दो सिद्धान्तों को प्रकट कर रहा है, प्रथम यह है कि ज्ञान को मनुष्य स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकता किन्तु किसी दूसरे के सिखाने से सीखता है। द्वितीय बात यह है कि बारम्बार प्राचीन सिद्धान्त ही विद्वानों के द्वारा प्रचरित होते रहे हैं तथा एक भी नवीन सिद्धान्त या वैज्ञानिक नियम सभी संसार पर प्रकट नहीं हुआ। आओ हस्तकला तथा यंत्र कला पर एक दृष्टि डालें -

प्राचीन समय में चीनियों ने बड़ी उन्नति की थी, रेशम और रूई के उत्तम वस्त्र बनाने में ये परम प्रवीण कारीगर थे। प्राचीन समय में मिस्र के रथ और घोड़े बहुत ही उत्तम कक्षा के थे। राजाओं ने प्रजोपकार के लिए नहरें खुदवाई और जहाज बनवाये थे। लेखन, व्याकरण, ज्योतिष, रेखागणित, राग विद्या और आयुर्वेद में लोगों ने बहुत कुछ प्राप्त किया था। मिट्टी और कांच के पात्र और जहाज बनाने आदि के काम में बड़े निपुण थे। वे तुला (तराजू) को काम में लाते थे और लीवर (भुजायन्त्र) से भारी बोझ उठाया करते थे। आरे, छैनी, उत्तम से उत्तम चिमटे, पिचकारी और अस्त्रों के बनाने वाले थे, सोने और धातुओं को गलाकर काम में लाते थे। नील नदी पर रंग बिरंगे बादवानों से लहराते हुए जहाज उनके महत्त्व को जताते थे। लेख का सार यह है कि हमें उपवेदों के पठन-पाठन से विद्यारूपी अनमोल रत्नों का ज्ञान प्राप्त होता है। हमारे ऋषियों ने आर्ष ग्रन्थों में सभी विद्याओं का बोधनीय ज्ञान सिखलाया है। अतः हमें आर्ष ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त करके अपने व्यक्तित्व को महान् तथा विशाल बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

अर्थवेद, ऋग्वेद का उपवेद है जिसमें ज्ञान-विज्ञान, शिल्प विद्या का वर्णन है। इसका अभिप्राय अर्थ विद्या के उन नियमों की व्याख्या करने का है जो वेदों में पाये जाते हैं।

# सदाचार से ही आर्यत्व की सिद्धि

**-स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती**

उपनिषद् में बताया है '**सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद, प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सी इत्यादि**' और महाभारत के अनुसार '**अद्रोहेणैव भूतानां सो धर्मः स सतां मतः।**' अर्थात् प्राणिमात्र से द्वेष न करना यह ऐसा धर्म है, जिसे सत्पुरुष मानते हैं। सज्जनों का मार्ग ही सदाचार है। सदाचार मन, वचन और कर्म में एक सा रहने का नाम है।

किसी भी मत-मतान्तर के माननेवालों के शिष्टाचार भले ही भिन्न हो, परन्तु सार्वभौम सदाचार प्रायः एकसा ही है। जिस प्रकार का व्यवहार अपनी आत्मा से प्रतिकूल पड़ता है, उस प्रकार का प्रतिकूल व्यवहार अन्यों से न करना चाहिये, यह महत्त्वपूर्ण बात सदाचार के अंतर्भूत है। इसीलिए महाभारत में वेद व्यास जी ने कहा है-

**श्रूयतां धर्मसर्वस्वं, श्रुत्वा चैवाधार्यताम्।**
**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥**

शिष्टाचार को अंग्रेजी में एटीकेट कहते हैं। आर्यों के शिष्टाचार भी सदाचार जैसे सार्वभौम एवं स्वयंपूर्ण है। यदि भीतरी सदाचार न हो तो बाहरी शिष्टाचार केवल दिखावा, ढोंग और पाखण्ड होके रहेगा। इसलिए कहा है -

**'रामवत् आचरेत् न रावणवत्' या**
**'युधिष्ठिरवत् आचरेत् न दुर्योधनवत्।'**

महाभारत में धर्म के लक्षण बताते हुए व्यास जी ने वेद, स्मृति के साथ सदाचार को भी विशेष स्थान दिया है।

सदाचार शिक्षा का केवल एक अंगमात्र नहीं है, वह तो शिक्षा का मूलस्रोत है। या यूं कहिये विद्या की मूल शक्ति है ऐसा भी माना है कि सदाचार यह शिक्षा का फल नहीं, अपितु उसका मूल है। शिक्षा से ज्ञान और ज्ञान से सदाचार प्राप्त हो सकता है, यह एक प्रकार का अर्धसत्य है। कारण ज्ञानी सदाचारी होगा ही यह गणित ठीक नहीं। मनुष्य साक्षर होकर भी राक्षस हो सकता है, यह आज प्रत्यक्ष प्रतीत हो रहा है। ज्ञानरूप शिक्षा में सदाचार का कितना योग है, यह वर्तमान में एक रहस्य बना हुआ है, जिसे समझना कठिन है। कहा जाता है कि धर्मशून्यता से यह साक्षरता राक्षसता में बदल जाती है। जो आचार धर्म की ओर ले जानेवाले हैं, वे ही आचार 'सदाचार' हैं। शास्त्रों में विद्वता को परमधर्म नहीं कहा है, परन्तु आचार को ही परमधर्म कहा है। सभी जानते है - **आचारः परमो धर्मः**। धर्म से जो सदाचार बनते हैं, वे सब अवस्था, सर्वदेश तथा सर्वकालों के लिए एक समान सार्वभौम हैं। शील और चरित्र मनुष्य जीवन का एक संगठित विधान है। संकल्प सदाचार का आदिपीठ है, परन्तु वर्तमान शिक्षा संकल्पहीन, व्रतहीन और दिशाहीन है। परिणामतः सदाचार समाज से कोसों दूर भाग रहा है।

महाभारत में यक्ष और युधिष्ठिर जी के प्रश्नोत्तर बहुत प्रसिद्ध है। यक्ष ने प्रश्न पूछा-प्रसन्नता क्या वस्तु है? तब उत्तर में कहा गया-अच्छे आचरण का फल ही प्रसन्नता है, यह है सदाचार की महत्ता जीवन में सद् विहार, सद् विचार, सद् आचार और सद् व्यवहार होना चाहिये, इसी से ही मनुष्य सदाचारी व सज्जन बनता है।

सदाचार के कुछ आदर्श उदाहरण निम्न प्रकार है -

**१. भरत एवं राम का सदाचार -**

भरत एवं कैकेयी सेना के साथ रामचन्द्र जी को अयोध्या वापस लाने के लिये चित्रकूट पहुंच रहे थे, यह देखकर लक्ष्मण जी आगबबूला हुए और कहा-भरत यहां पर भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रहा है। किन्तु रामचन्द्र जी ने चित्रकूट पर सर्वप्रथम माता कैकेयी के चरणछुये, भरत को गले से लगाया, ऐसे अनूठे सदाचार से माता कैकेयी को परिताप हुआ। यह पश्चात्ताप की भावना देखकर रामचन्द्र जी बोले- "माँ! यह सब विधि का विधान था, इसमें आपका कोई दोष नहीं!" देखिये- कैसा उच्च अनुकरणीय सदाचार है।

**२. छत्रपति शिवाजी महाराज का सदाचार -**

जो रूपसुंदरी नवयौवना (सुबेदार की पुत्रवधू) शत्रुपक्ष से पकड़ लायी गयी थी, छत्रपति शिवाजी ने उसे वस्त्राभूषणादि से सम्मानित कर उसके पिता के पास लौटाया, यह इतिहास प्रसिद्ध है। क्या ऐसा सदाचार किसी मुगल बादशाह से अपेक्षित है?

**३. महर्षि दयानन्द का सदाचार -**

अनूपशहर में एक ब्राह्मण ने स्वामी दयानन्द को पान में विष खिला दिया, इसका परिणाम जब ज्ञात हुआ, तब स्वामी जी ने वमन से उस विष को शरीर से निकाल फेंका। इसकी खबर वहां के तहसीलदार सय्यद जी को लगी, उन्होंने उस ब्राह्मण को पकड़ लिया। उनका मन प्रसन्न हुआ कि अब स्वामी जी उनकी बहुत प्रशंसा कर धन्यवाद देंगे। इस विचार से तहसीलदार ने गिरफ्तार दुष्ट ब्राह्मण को हथकडियां लगाकर स्वामी जी के समक्ष उपस्थित किया, तब स्वामी जी ने तहसीलदार से कहा - '**मैं संसार को कैद कराने नहीं, बल्कि कैद से छुडाने आया हूँ, इसे शीघ्र छोड दो।**' दुष्टता पर, दुराचार एवं सदाचार से ही विजय प्राप्त होती है। अस्तु!

वाणी का वेग या मनमाने बेछूट प्रयोग, मन का क्रोधरूपी वेग, जिह्वा के चटोरेपन का वेग, उदर का क्षुधारूपी वेग, इसी प्रकार कामवासना या कामाग्नि का वेग इत्यादि समस्त वेगों को जो मनुष्य सह लेता है और सम्यग् संतुलित स्थितप्रज्ञ बना लेता है, वह सदाचारी वीर स्वयं के साथ पृथ्वी पर शासन कर सकता है।

आत्मदर्शन का अर्थ एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के साथ अपनी एकता का अनुभव करें। भगवान् बुद्ध ने कहा, 'पुत्र को पाप से बचावें, पुण्य-कार्य करने की शिक्षा देवें।' शिल्प के साथ शास्त्र की शिक्षा देवें, उसे पैत्रिक अधिकार देवें, तब पुत्र कहें माता-पिता ने मेरा पालन किया है अब मैं उनका पालन करूंगा, गृहस्थधर्म कार्य यथावत करूंगा। महात्मा बुद्ध के शिष्य आनन्द श्रावस्ती ने भंगी (मेहतर) कन्या के हाथ का जल पिया, तब युद्ध के शिष्य राजा प्रसेनजित् ने उस कन्या को प्रचारिका नियुक्त किया। अतः जन्मगत जाति में कुछ भी धरा रहा नहीं। स्वयं महात्मा बुद्ध ने भ्रष्टाचारिणी आम्रपाली के यहां भोजन किया, वह प्रचारिका बनी, इतना ही नहीं तो बुद्ध ने स्वयं अपने हाथ में पतिता नारी वासवदत्ता के गलित गोत्रों से बहता पीप पोंछा था। सदाचार का अर्थ है '**सताम् आचारानुष्ठानम्।**' इस प्रकार महात्मा बुद्ध ने सदाचार द्वारा अपने मत का प्रचार किया था।

हम किसी व्यक्ति को सुखी देखें, तो उससे प्रेम करें, ईर्ष्या न करें और दुःखी व्यक्ति को देखकर उस पर दया करें और हो सके तो उसकी सहायता करें, परन्तु उससे घृणा व तिरस्कार कभी न करें। सदाचार से सम्पूर्ण विश्व का कल्याण होता है, सदाचार यह एक प्रबल महत्त्वपूर्ण शक्ति है, इसके लिये प्रत्येक को संतुलित मनोवृत्ति धारण करनी होगी। सदाचार से मानव जीवन व समाज जीवन का व्यवहार सुचारूरूप से चलता है, यही सदाचार का उद्देश्य है।

**(वैदिक गर्जना जून ०५ से साभार)**

# अथ यज्ञ प्रकरणम्

-सोहनलाल शारदा, शाहपुरा भीलवाड़ा, राजस्थान

**संस्कृतं हविः होतव्यमिति।** (शतपथ)

**अर्थात्** - योग्य रीति व यथाविधि से होम करना चाहिये। एकदम मनभर घृत को जला दो वा वर्षभर चम्मच-चम्मच करके मनभर घृत को जलाते रहें तो भी वह हवन नहीं होगा। (सातवां पूना प्रवचन)

यहां पर महर्षि कहते हैं कि यज्ञ शब्द के तीन अर्थ हैं। प्रथम देवपूजा। द्वितीय संगतिकरण, तृतीय दान है।

प्रथम देव शब्द का अर्थ मूलरूप से प्रकाशस्वरूप है व देव शब्द का अर्थ परमात्मा भी है। इसलिए कि उसने वेद का अर्थात् ज्ञान का प्रकाश और सूर्यादि जड़ पदार्थों का प्रकाश किया है तथा देव अर्थात् विद्वान् भी अर्थ शतपथ अनुसार होता है इसलिए कि यहां कहा गया है कि - **''विद्वा सो हि देवा:''** और पूजा शब्द का अर्थ सत्कार है। अर्थात् देव की पूजा कहने से परमात्मा का सत्कार करना यह अर्थ होता है।

ईश्वर का सत्कार मूलत: वेदमंत्र पठन-पाठन, अर्थ विचार तत्त्व से ही जाना जाता है। इसलिए ही प्राचीन ऋषिमुनि आर्यजनों ने होम के स्थल पर वेदमंत्रों की योजना की है। इसी विचारधारानुसार ही यज्ञशाला को देवालय की संज्ञा दी है। (सांतवा पूना प्रवचन)

यज्ञ के विषय में गीता में वर्णन है कि -

**अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।**
**यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥**
**कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।**
**तस्यात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥** (अध्याय ३ श्लोक १४/१५)

**अर्थात्** - ब्रह्म शब्द से यहां वेद लिया जाता है। वेद का अर्थ 'ज्ञान' है। यह ज्ञान उस परब्रह्म अविनाशी परमेश्वर का ही दिया, पढाया, बताया गया है। इससे ही यथाविधि उचित समय पर तत्त्व से जानकर यज्ञ किया जाता है तभी इस प्रकार के यज्ञ से ही अन्न की उत्पत्ति प्राणिमात्र के कल्याण के लिये होती है और अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है। वृष्टि यज्ञ से होती है। यज्ञ वेद मंत्रों से ही होता है। अत: इस हेतु वेद का पढ़ना पढाना अत्यावश्यक है। महर्षि वर्णन करते हैं कि-इसलिए ही ब्रह्मयज्ञ अर्थात् वेदाध्ययन पांचों महायज्ञों में एक यज्ञ कहा जाता है। (पूना प्रवचन)

और आगे संगतिकरण का अर्थ बतलाते हुए वर्णन करते हैं कि-संगतिकरण अर्थात् अत्यन्त प्रीतिपूर्वक परमात्मा का ध्यान, विचार एवं सत् आप्त विद्वज्जनों का संग करना, संगति करना तथा सत्सङ्ग करना यह भी ज्ञान यज्ञ कहलाता है। आगे तीसरा जो अर्थ है वह है दान, जो विद्यादान है। अन्य दान जैसे अन्न, वस्त्र, धन का दान - विद्यादान के सहायक हैं। इसलिए यह भी दान ही है लेकिन विद्यादान ही अक्षयदान है। इसलिए कहा है कि सर्वेषामेव दानानाम् ब्रह्मदानम् विशेष्यते। (तृतीय समुल्लास)

यज्ञ हेतु समिधायें जो कीड़ा लगी मलिन देशोत्पन्न और अपवित्र पदार्थ आदि से दूषित नहीं होवे और इस हेतु ही विशेष रूप से इस सामान्य प्रकरण में वर्णन है कि **''समिदिध्मार्थ पलाशशाखामयम्''** पलाश याने ढाक। इन समिधाओं को अच्छी प्रकार से देख लेवें।

इन्हें चारों ओर बराबर करते हुए बीच में चुने। हवन में आहुति सब द्रव्यों को यथावत् शुद्ध कर लेना अतिआवश्यक समझ एक दिन पूर्व ही तैयार करके रखना है। सुवा ऐसा बना हो जिसमें ६ मासा अर्थात् आधा तोला घृत व सामग्री हेतु भी चाय के चम्मच समान अथवा चित्र संस्कारविधि सामान्य प्रकरणस्थ उपदेश समान बना लेवें दैनिक यज्ञ हेतु। इसमें भी ६ मासा सामग्री आसके। मन्त्रोच्चारण अग्न्याधान समिदाधान जलसिंचन पश्चात् नित्य सोलह आहुति करनी हैं। (सत्यार्थप्रकाश जो चार आघारावाज्य भागाहुतियां)

चार प्रात:कालीन वा सायंकालीन आहुतियाँ, चार महाव्याहृतियां याने भूरग्नये प्राणाय की तथा चार प्रार्थना परक मंत्र आपो ज्योतीरसो० यां मेधाम्०

**विश्वानिदेव और अग्ने नय सुपथा०**

इनके अलावा अधिक चाहे तो गायत्री मंत्र की व विश्वानि देव० मंत्र से करके तीन **सर्वं वै पूर्णं**० की देनी हैं।

वृहद् यज्ञ हेतु ऋत्विज चार वरण करने हैं, जिनके नाम व कार्य एवम् आसन स्थान का भी वर्णन सामान्यप्रकरण में पूरी तरह से है। यहां ही ऋत्वजों के लक्षण व नाम हैं।

### ऋत्वजों के लक्षण

अच्छे विद्वान्, धार्मिक, जितेन्द्रिय कर्मकाण्ड कराने में कुशल, निर्लोभी, परोपकारी, दुर्व्यसनों से रहित, कुलीन, सुशील, वैदिक मतवाले, वेदवित् ऐसे जनों को ऋत्विज बनाना है जो संख्या में सुविधानुसार चार होने चाहिएं।

जो एक हो तो उसका नाम पुरोहित और संख्या में दो हो तो ऋत्विज् और पुरोहित। यदि एक कर्मकाण्ड कराने हेतु तीन हो तो इनके नाम होंगे ऋत्विज्, पुरोहित और अध्यक्ष और वृहद् यज्ञ पारायण यज्ञादि में चार ऋत्विज हों तो उनके नाम होवेंगे। १. होता, २. अध्वर्यु, ३. उद्गाता और चौथा ब्रह्मा। यहां सामान्य प्रकरण में इनके स्थान बैठने का भी वर्णन है कि-

इनका आसन वेदी के चारों ओर हो याने होता का आसन वेदी के पश्चिम भाग में पूर्वाभिमुख बैठे। दूसरा अध्वर्यु का उत्तर में आसन दक्षिण की ओर मुख। और उद्गाता का पूर्व में आसन पश्चिमाभिमुख हो। और ब्रह्मा का आसन दक्षिण दिशा वेदी के और उत्तराभिमुख बैठना है। यजमान का आसन पूर्वाभिमुख हो। इन ऋत्विजों को सत्कारपूर्वक प्रार्थनापरक शब्दों में यजमान उत्तराभिमुख रहकर कहे के- **ओमावसो सदने सीद**

तब ऋत्विक् कहे कि **ओं सीदामि।** ऐसा कह यथास्थान आसन पर बैठे। तब यजमान कहे कि-**अहम् अद्य उक्त** (याने जो भी जिस निमित्त यज्ञ हो जैसे वृष्टियज्ञ, वेदपारायण यज्ञ इसका नाम लेकर कहे के) **कर्म करणाय भवन्तं वृणे।** ऋत्विग् कहे वृतोऽस्मि।

इस प्रकार विधिपूर्वक करने से ही श्रद्धा बढेगी और इन तीन स्थानों पर नये पंडितों को बैठाने से नई पीढ़ी भी आर्य बनेगी, इसी आशा के साथ।

---

# आर्यसमाज के विवादों को दूर करने के उपाय

आर्यसमाज में प्रबंध सम्बन्धी विवादों के कारणों पर विचार करने पर यह पता चलता है कि विवादों का मूल कारण कोई सैद्धान्तिक नहीं है बल्कि विवादित लोग अपने निजी और तुच्छ स्वार्थों से वशीभूत होकर केवल निजी आर्थिक लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से ही विवाद उत्पन्न कर झगड़ों में सभी को उलझाकर अपना उल्लू साधते हैं। मेरे विचार से विवादों के समाधानार्थ निम्न उपाय किये जा सकते हैं - (१) आर्यसमाज या इसके द्वारा संचालित संस्थाओं के परिसरों में यथासम्भव किसी भी व्यक्ति (पुरोहित, शिक्षक आदि) को परिवार के साथ रहने की सुविधा न दी जाये क्योंकि अधिकतर स्थानों पर विवाद का मूल कारण भी यही है। (२) जिन समाजों में स्कूल चलता है, उनमें कई कारणों से विवाद हो जाता है, विवाद का कारण आर्थिक है क्योंकि पहले की तरह स्कूल चलाना अब सामान्यत: सेवा नहीं है। अपितु यह व्यापार होगया है अत: आर्यसमाज के लिये उसके द्वारा संचालित स्कूलादि भस्मासुर होगये हैं। अत: आर्यसमाज के नाम पर कोई स्कूल आदि आर्यसमाज परिसर में न खोला जाये। जो पूर्व से स्कूलादि खुले हुये हैं उनमें यदि विवाद समाप्त न हो तो उन्हें अन्य संस्थाओं या सरकार को उचित शर्तों के साथ आर्यसमाज परिसर के बाहर चलाने के लिए दे दिया जाये। (३) आर्यसमाज के केन्द्रीय संगठन के निर्वाचन में आर्यसमाजों के स्थानीय सदस्यों की कोई भूमिका नहीं रहती है बल्कि केन्द्रीय संगठन में पदाधिकारियों का निर्वाचन प्रान्तीय सभा के मनोनीत प्रतिनिधियों के द्वारा होता है जिसका ज्ञान प्रान्तीय सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों को भी नहीं होता है। अत: नियमावली में परिवर्तन कर केन्द्रीय संगठन के चुनाव में सभी आर्यसमाजों के मतदाता सदस्यों को भाग लेने दिया जाए। (४) प्रान्तीय और केन्द्रीय संगठनों के आय-व्यय का ब्यौरा और उसकी कार्यकारिणी की बैठक का अविलम्ब रूप से प्रकाशन होकर सभी आर्यसमाजों को अनिवार्य रूप से भेजा जाये। (५) नियमावली में संशोधन कर पदाधिकारियों की आयुसीमा और अधिकतम अवधि तक रहने की भी सीमा निर्धारित की जाए। (६) केन्द्रीय और प्रान्तीय संगठन की अन्तरंग के लोगों पर अ[illegible] से नीचे की समाजों पर अन्तरंग सदस्य या पदाधिकारी बनने पर रोक लगायी जाए। (७) आर्यसमाज में नीचे से ऊपर तक यत्र-तत्र-सर्वत्र कार्यों में पारदर्शिता प्रदर्शित की जाये। (८) विवादित लोग सभी अपने को आर्यसमाज का शुभचिंतक बतलाते हैं। यदि यह सत्य है तो विवादित लोग स्वयं पद छोड़कर बिना किसी पद के आर्यसमाज का कार्य करें, आखिर महात्मा गाँधी भी तो कांग्रेस के प्राथमिक सदस्य नहीं थे पर क्या वे कांग्रेस का काम नहीं करते थे। बिना पद के किसी को काम करने से कैसे रोका जा सकता है? इसके लिए आर्यसमाज के प्रति सेवा और त्याग की समर्पण भावना से काम करने की जरुरत है। यदि ऐसा नहीं होता है तो दोनों पक्षों के झगड़ालू लोगों को पदाधिकारी या सदस्य बनने के अयोग्य घोषित किया जाए और लोग उन्हें किसी भी प्रकार का महत्त्व भविष्य में न दें। (९) आर्यसमाज के सदस्य जागरूक हों और आर्यसमाज के संगठन के स्वरूप को भी जानें और आवश्यकतानुकूल कर्त्तव्यपालन के साथ-साथ अपने अधिकारों का भी प्रयोग करें। यदि आर्यसमाज के लोग अपने आन्तिरक विवादों का समाधान करने में असमर्थ हैं तो विचारणीय है कि क्या यह आर्यसमाज है या अनार्यसमाज? अत: स्वहित और समाजहित में आर्यसमाज से जुड़े लोग चिन्तन कर इस समस्या के समाधान का प्रयत्न करें।

-दयाराम पोद्दार, झारखंड राज्य, आर्य प्रतिनिधि सभा, राँची

**बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, कृपया इन सबसे दूर रहें।**

## गोहत्या के पीछे अंग्रेजों की बड़ी साजिश थी ?

-राजीव दीक्षित

१८१३ ई० में अंग्रेजों की संसद (हाउस ऑफ कॉमन्स) में एक बहस चली, जिसका मुद्दा था हाउ टू क्रिश्चियनाइज इण्डिया (भारत को ईसाई कैसे बनाया जाए?) २४ जून १८१३ को यह बहस पूरी हुई। उस बहस के दस्तावेजों को देखने से यह पता चलता है कि अंग्रेज और ईस्ट इंडिया कंपनी केवल व्यापार करने और राज्य करने के उद्देश्य से यहाँ नहीं आयी थी। वे भारत को ईसाई बनाने भी आये थे। इसके लिए उन्होंने कुछ नीतियां बनाई थीं। वे यह थी कि यदि भारत को ईसाई बनाना है, तो सबसे पहले भारत की सुख-सुविधाओं का नाश करना होगा। भारत में गरीबी और भुखमरी लानी होगी। भारत की अर्थव्यवस्था और कृषि को भी बर्बाद करना होगा।

इसके लिए उन्होंने अपने गुप्तचरों से सर्वेक्षण करवाया। इससे उन्हें यह पता चला कि भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर और मूल रूप से गाय पर निर्भर है। भारतीय संस्कृति का भी मूल केन्द्र गाय है। उन्होंने गाय का कत्ल करवाना शुरू कर दिया और गाय का माँस अंग्रेज फौज को खिलाया जाने लगा। कुछ दिन बाद उन्हें पता चला कि बुल (सांड) को मारना गाय से ज्यादा जरुरी है। क्योंकि यदि सांड नहीं मरेगा तो गाय पैदा होती रहेगी। तब उन्होंने कुछ ऐसे कत्लखाने खोले, जिनमें सिर्फ नन्दी (सांड) का ही कत्ल किया जाता था। १८५० के आसपास गाय के कत्ल का प्रश्न भारत के सभी धर्म गुरूओं ने उठाना शुरु किया।

ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने ८ दिसम्बर १८६३ को गवर्नर लैन्सडाउन को एक चिट्ठी लिखी। इसकी फोटोकॉपी हमारे पास है। विक्टोरिया ने अपनी चिट्ठी में लिखा कि गाय का कत्ल बंद नहीं होना चाहिए। गाय के कत्ल के बहाने हिन्दू और मुसलमानों के बीच दरार डालनी चाहिए।

अंग्रेजों की हमेशा से यह नीति रही है कि बांटो और राज करो (डिवाइड एंड रूल) अगर हिन्दुओं को यह पता चलेगा कि मुसलमान गाय काट रहे हैं, तो उनमें झगड़े शुरु हो जायेंगे। तब अंग्रेजों को राज करने से कोई रोक नहीं सकता। जब रानी की चिट्ठी लैन्सडाउन को मिली तो उसने सभी कत्लखानों में सिर्फ मुसलमानों को ही नौकरी पर रखा और यह प्रचार करना शुरु कर दिया कि गाय हम नहीं, मुसलमान काट रहे हैं। अंग्रेजों के इस षड्यंत्र से हिन्दू और मुसलमानों के बीच झगड़े होने शुरु हो गये। (गोधन से साभार)

## अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान, ६० बी हुमायूपुर नई दिल्ली, प्रतिवर्ष निर्धन, अनाथ एवं प्रबुद्ध छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करता है। इस वर्ष भी प्रतिष्ठान की ओर से यह आयोजन ३०.१०.०५ को किया जा रहा है।

**कार्यक्रम**

**दिनांक :** ३० अक्तूबर २००५ (रविवार) प्रातः १०:०० से दोपहर १२:३० तक
**स्थान :** ११९ गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-४९
**अध्यक्षता : आचार्य हरिदेव जी** (गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली ४९)
**अभिनन्दन : (१) आचार्य ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी** को **स्व० श्री पं० ऋषि तिवारी** जी (हॉलैंड) स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। **(२) आचार्या मेधा** जी पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी को **श्रीमती ईतवारिया रामदास तिवारी** (हॉलैंड) स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।
**छात्रवृत्ति :** विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं को प्रदान की जाएगी।
**उद्घाटन : डॉ० योगानन्द जी शास्त्री** (स्वास्थ्यमंत्री, दिल्ली सरकार)
**मुख्यअतिथि : श्री केशव तिवारी** (हॉलैंड)
**वक्तागण : श्री डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी** एम.डी.यू. (रोहतक), **श्री विनय जी आर्य**, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा (दिल्ली), **श्री प्रवीण जी आर्य** (अध्यक्ष फोर साईट सोसाइटी, दिल्ली), **श्री जगवीरसिंह जी** प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, **आचार्या सुमेधा** जी कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, **श्री मधुरप्रकाश** (मधुरलोक) दिल्ली, **डॉ० तारकनाथ** (प्रवक्ता नोयडा कॉलेज), **मा० ऋषिपाल आर्य।**
**आशीर्वाद : डॉ० धर्मपाल जी** (भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० हरिद्वार), **श्रीमान् कृष्णलाल जी** सिक्का (कुलपति गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली), **बहन किर्ती अवतार** (प्रभाकर आर्यसमाज मंदिर, हॉलैंड)।

-रामपाल शास्त्री (प्रधान)

## आर्यसमाज का वैदिक दर्शन

**इस विषय पर ८ अक्तूबर २००५ को प्रातःकाल ७.३० बजे आकाशवाणी रोहतक से आचार्य वेदव्रत शास्त्री सम्पादक सर्वहितकारी की वार्ता प्रसारित होगी।**

## जलते गाँधी के आदर्श

-राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति,
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

मना चुके हैं स्वतंत्रता की अट्ठावन हम अभी जयन्ती,
नहीं कहीं पर स्वर्णिम आभा भारती की धरती पर दिखती।
सर्वाधिक है बड़ा विश्व का दिव्य हमारा यह गणतंत्र,
घोर उपेक्षित गण सारा, हावी हुआ यहां पर तंत्र॥
राष्ट्रपिता के ही भारत में, जलते हैं सारे सिद्धान्त,
ज्ञान-विवेक उपेक्षित सा है, शासक भी तो हैं उद्भ्रान्त।
बेच रही हैं सरकारें अब धन की खातिर यहां शराब,
मानव बनता जाता दानव, स्वास्थ्य दशा है हुई खराब॥
देती है अब नहीं दिखाई, गांधी जी की सत्य अहिंसा,
सुरसा के मुख सी बढ़ती है भारती की धरती पर हिंसा।
सत्य भावना हुई तिरोहित, बढ़ता हम सबमें है स्वार्थ,
देख यहां अन्याय-अनय को नहीं उठाता धनु है पार्थ॥
उग्रवाद-आतंकवाद की भट्ठी में जलता है देश,
है कर्तव्यहीनता फैली, फैला भ्रष्टाचार विशेष।
किंकर्तव्यविमूढ़ बना है यहां प्रशासन व शासन,
नहीं रेंगती जूँ कानों पर, करती है जनता क्रन्दन॥
राजनीति भी आज बनी है, धन अर्जन के हित व्यापार,
दनुजवृत्तियों के सम्मुख हम किए पराजय हैं स्वीकार।
राष्ट्रवाद की शिखर भावना भी तो हुई यहां पर लुप्त,
प्रेम, दया, सेवा के सारे भाव हुए हैं आज विलुप्त॥
विडम्बना यह कैसी आयी जलते गाँधी के आदर्श,
कौन दिलाए ढाढ़स मां को, कौन करे भारत उत्कर्ष?

२ अक्तूबर गाँधी जयंती पर -

## बापू थे पुरुष महान्!

बापू थे पुरुष महान्, गुणों की खान सुनो सज्जनो
देखो जी उन्हें भूल न जाना।
कर्त्तव्य का मार्ग यदि वे हमें नहीं बतलाते,
कैसे विजय देश की होती, आजादी क्यों पाते,
थी देश नाव मझधार, लगा दी पार, सुना सज्जनो।
सत्य, अहिंसा का व्रत लेकर आगे बढ़ते जाएं,
जीएं-जीने भी दें सबको सुखी संसार बनाएं,
यह था उनका उपदेश, रखो मत द्वेष, सुनो सज्जनो।
देखो जी उन्हें भूल न जाना॥
ईश्वर-अल्लाह नाम एक हैं, राम-रहीम न न्यारे,
जातपात का भेद नहीं कुछ ईश्वर को सब प्यारे,
यह पावन परम विचार, जगत् का सार, सुनो सज्जनो।
मानवता का मान बढ़ाओ बापू ने समझाया,
जीवनभर संघर्ष किया अपना कर्त्तव्य निभाया,
रखी देश जाति की लाज, बनाए काज, सुनो सज्जनो।
उनकी नीति और आदर्श हमें अपनाना होगा,
आतंकी जनगण को भी सत्यपथ पर लाना होगा,
प्रण यह कर लें हम आप, मिटे संताप, सुनो सज्जनो।
बापू जी की जन्म जयंती हमें जगाने आई,
त्याग तपस्या के जीवन का पाठ पढ़ाने आई,
यह विश्व बने परिवार, हों शुद्ध विचार, सुनो सज्जनो।
देखो जी उन्हें भूल न जाना॥

-डॉ० सुशीला आर्या, चरखी दादरी

## तम्बाकू - आज स्वास्थ्य को सबसे बड़ा खतरा

तम्बाकू को धूम्रपान के रूप में जैसे सिगरेट, गुटखा, बीड़ी, सिगार, हुक्का, चिलम आदि एवं अन्य कच्चे एवं तैयार रूप में प्रयोग किया जाता है।

WHO के अनुसार विश्वभर में तम्बाकू जनित पदार्थों के कारण हर साल ३० लाख लोगों की मृत्यु होती है।

हमारे देश में तम्बाकू कैंसर का सबसे बड़ा कारण है। इससे ३१ अलग-अलग प्रकार के कैंसर होते हैं।

बीसवीं सदी में विश्वभर में करीब १०० मिलियन लोगों की तम्बाकू जनित रोगों के कारण मृत्यु हुई।

विभिन्न रूप में तम्बाकू का सेवन कई जान लेवा बीमारियों का कारण है जिनमें मुँह का कैंसर, गले का कैंसर, श्वास (दमा) एवं हृदय (दिल) की बीमारी पेप्टिक अल्सर तथा गर्भवती महिलाओं में बार-बार गर्भपात, कम वजन वाले बच्चे के पैदा होने की संभावना इत्यादि प्रमुख हैं।

आपको सलाह दी जाती है कि तम्बाकू का सेवन किसी भी रूप में कभी भी न करें व दीर्घायु बनें। **तम्बाकू का अन्त, सुखी जीवन पर्यन्त।**

## आयुर्वेदिक उपचार

### सरदर्द और आँखों के लिए

२५ ग्राम दखनी मिर्च/सफेद मिर्च, २५० ग्राम बादाम गिरी गुरबंदी (भारतीय), ५० ग्राम कूजा मिश्री। इन सबको मिक्सी में पीसकर पाउडर बना लें। बच्चे को सुबह शाम एक चम्मच दूध के साथ दें। बड़े को सुबह शाम दो चम्मच दूध के साथ दें।

**सर्वहितकारी के पाठकों से नम्र निवेदन** है कि सर्वहितकारी का १०० रुपये वार्षिक शुल्क मनीआर्डर द्वारा भिजवाने का कष्ट करें। सर्वहितकारी के सम्बन्ध में आपके सुझाव, लेख, कविता, समाचार सादर आमंत्रित है। सर्वहितकारी के नये ग्राहक बनाकर और विज्ञापन देकर भी आप सहयोग कर सकते है। **-वेदव्रत शास्त्री, सम्पादक सर्वहितकारी, दयानन्दमठ, रोहतक**

# आर्य-संसार

## क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

-**दर्शन योग महाविद्यालय,** आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड़ पत्रालय-सागपुर, जि० साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन में **कार्तिक शुक्ला ५ से १२ वि०सं० २०६२ तदनुसार ६ नवम्बर से १३ नवम्बर २००५ तक ८ दिवसीय** योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें महिलाएं भी भाग ले सकेंगी।

शिविर में योगदर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जपविधि, ईश्वरसमर्पण, स्व-स्वामी सम्बन्ध (ममत्व) को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जायेगा।

शिविर में भाग लेने वाले व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह १५ वर्ष से अधिक वाला हो, अतिवृद्ध अथवा रोगी न हो, धूम्रपानादि व्यसनों से रहित हो, कम से कम ८ कक्षा तक की योग्यता रखता हो, आर्यभाषा (हिन्दी) को पढ़, लिख, समझ, बोल सकता हो तथा पूर्ण अनुशासन में चलने वाला हो।

भोजन शुल्क ४००/- रुपये होगा। स्थान के अभाव आदि कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिये जावेंगे तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जावेगी। शिविर में भाग लेने वाले इच्छुक सज्जन **२० अक्तूबर से पूर्व अपना नाम, शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, अवस्था (आयु), प्रेरक के नाम आदि सहित आवेदन पत्र लिखें** और हमसे स्वीकृति प्राप्त होने पर **भोजन शुल्क राशि धनादेश (मनीऑर्डर) व्यवस्थापक, योग शिविर, आर्य वन के नाम भेजकर अपना पंजीकरण अवश्य करा लेवें। अन्यथा शिविर में स्थान आरक्षित नहीं माना जायेगा।** कृपया चैक या ड्राफ्ट न भेजें। जो शिविरार्थी आर्थिक कठिनाई के कारण शुल्क देने में असमर्थ होंगे उनको योग्य जानकर भोजन शुल्क में छूट दी जा सकती है।

शिविरार्थी ५ नवम्बर को सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जायें। शिविरार्थी चादर, कम्बल, सफेद व पीले वस्त्र (धोती, पायजामा, कमीज़, लंगोट/साड़ी, सलवार, कमीज आदि) २-४ कापियाँ, पेन तथा टार्च अपने साथ लावें। आभूषण तथा कीमती सामान और बच्चों को साथ न लावें।

**निवेदक :**

**मनसुखभाई वेलाणी** (प्रधान-आर्य वन विकास क्षेत्र तथा समस्त न्यासी गण)
**जशुभाई पटेल** (शिविर व्यवस्थापक)
**स्वामी सत्यपति परिव्राजक** (शिविराध्यक्ष)

## यज्ञ से विश्व का कल्याण - आचार्य चन्द्रशेखर

आर्यसमाज मयूर विहार - १ के तत्त्वावधान में आयोजित वेदशतक महायज्ञ के शुभ अवसर पर धार्मिक जगत् के महान् प्रवक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि किसी भी मांगलिक अवसर पर बोलचाल की भाषा में कहा जाता है कि हम इस आयोजन को धूमधाम से करेंगे। धूमधाम एक महत्त्वपूर्ण शब्द है। धूम का अर्थ है - धुंआ, धाम का अर्थ है - स्थान। इसका अर्थ यही है कि जिस स्थान पर यज्ञ का धुंआ हो, जहां यज्ञ का आयोजन हो, उसी को ही धूमधाम कहते हैं।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि यज्ञ की मूलभावना है परोपकार, तो हम अपनी प्रसन्नता में दूसरों को भी सम्मिलित करें, उनकी उपेक्षा न करें, यही यज्ञ है। अंग्रेजी में घर को Home कहा जाता है, कौन नहीं चाहता कि घर में पावनता हो, यज्ञ से पावनता प्राप्त होती है तो वास्तव में होम के बिना कोई Home बन ही नहीं सकता।

अनेक पुस्तकों के यशस्वी लेखक आचार्य चन्द्रशेखर जी ने यजमानों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि यज्ञ आरोग्यप्रद है, सुखकारक तथा समृद्धिकारक है। यज्ञ से समूचे विश्व का कल्याण होता है, यज्ञ में जो आहुति डाली जाती है वह सौगुना होकर हमें वापिस मिल जाती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए। शरीर की शुद्धि के लिए स्नान, संपत्ति की शुद्धि के लिए दान, मन की शुद्धि के लिए ध्यान तथा पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ का अनुष्ठान आवश्यक है।

यज्ञ से पूर्व कज़ाकिस्तान के पूर्व राजदूत श्री विद्यासागर वर्मा जी एवं समाज प्रधान श्री महेन्द्रकुमार चाठली जी ने आचार्य श्री का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। इस शुभ अवसर पर बिग्रेडियर चितरंजन सावंत जी, श्री गुलाबसिंह राघव एवं श्री विजय गुप्त आदि महानुभावों ने भी सभा को सम्बोधित किया। समाज मंत्री श्री अमीरचन्द्र रखेजा जी ने सभी का आभार प्रकट किया।

**-अमीरचन्द्र रखेजा,** मंत्री

## गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक उत्सव

**(२६ सितम्बर २००५ से २ अक्तूबर २००५ तक)**

श्री गुरु विरजानंद स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का ३९वां तथा श्री गुरु विरजानंद गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर का ३५वां वार्षिक उत्सव आश्विन कृष्णा नवमी से आश्विन शुक्ला चतुर्दशी संवत् २०६२ विक्रमी तदनुसार २६ सितम्बर २००५ सोमवार से २ अक्तूबर २००५ रविवार तक अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है।

इस महोत्सव में प्रतापकुमार साधक जी के सान्निध्य में २६ सितम्बर २००५ से ३० सितम्बर २००५ तक ध्यानयोग अभ्यास कराया जाएगा। इसी तरह श्री प्रतापकुमार जी के ब्रह्मत्व में प्रतिदिन २६ सितम्बर २००५से २ अक्तूबर २००५ तक सामवेद पारायण यज्ञ प्रातः ७:१५ से ८:४५ तक चलेगा। ३० सितम्बर को रात्रि आठ बजे वैदिक परीक्षा सम्मेलन होगा जिसमें वेद अष्टाध्यायी और संस्कारविधि कण्ठस्थीयकरण परीक्षाएं होंगी। १ अक्तूबर को आर्ष सम्मेलन और महिला सम्मेलन होंगे।

-सुखदेवराज अधिष्ठाता

## (पृष्ठ १का शेष) क्या, रामायण-महाभारत ऐतिहासिक....

हो जाते किन्तु नेहरू जी ने इन समस्याओं को हल नहीं होने दिया।

२. महाराजा हरिसिंह से सन्धि करके पटेल जी ने काश्मीर पर आक्रमण करके काश्मीर का दो तिहाई भाग जीत लिया। यदि नेहरू जी प्रश्न को संयुक्त राष्ट्र संघ में नहीं ले जाते तो पटेल जी एक तिहाई भाग भी जीत लेते और पूरा काश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन जाता और आज जो अरबों रुपये काश्मीर को पाने के लिये पानी की तरह बहाये जा रहे हैं वह रुपये राष्ट्र की उन्नति व समृद्धि में लगते और आज देश धन-धान्य से परिपूरित होता। आज जो सबसे जटिल समस्या काश्मीर की बनी हुई है वह नहीं होती। पाकिस्तान जो काश्मीर के बहाने अमानुषिक, अप्रिय व आतंकवादी हरकतें कर रहा है वह नहीं करता और आज भारत विश्व के शीर्ष देशों में गिना जाता। इसके ऊपर जो संकट के बादल हर समय छाये रहते हैं वह न होकर एक सुखी देश होता।

३. हिन्दुओं पर ही हिन्दू कोड बिल पास करके नेहरू जी को क्या मिला। इस बिल से जो हिन्दू परिवारों में भाई-बहन का प्यार था वह कम हुआ और भाई-बहनों को अपने-अपने स्वार्थ के लिए कोर्ट-कचहरियों का मुख देखना पड़ा। यह नेहरू जी के विकृत दिमाग की उपज थी जिसको आज हिन्दू समाज भोग रहा है। हिन्दू परम्परा के अनुसार वैसे ही भाई अपनी बहन को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त देता ही रहता है और उसके हिस्से से शायद ज्यादा ही देता है तो इस बिल को लाने की आवश्यकता ही क्या थी? यह तो हिन्दू बहनों की सहनशीलता व भाई के प्रति प्रेम है जिससे हिन्दू परिवारों में झगड़े बहुत कम होते हैं। यह हिन्दू धर्म की महानता व उदारता की पहचान है, नहीं तो नेहरू जी ने तो घरों को महाभारत बनने का रास्ता बना ही दिया था।

**अब विचार करेंगे गाँधी-नेहरू दोनों के सम्बन्ध में :-**

जब अपनी इच्छा या अनिच्छा से पाकिस्तान देना ही पड़ गया, इसके पीछे अंग्रेजों की चाल, जिन्ना की मुसलमानों का मसीहा बनने की इच्छा और मुसलमानों का ९३ प्रतिशत पाकिस्तान बनाने के पक्ष में मत देना, इन सब कारणों से पाकिस्तान देना ही पड़ा। उस समय भारत में मुसलमान २२ प्रतिशत थे। जिन्ना को खुश करने के लिए २८ प्रतिशत भारत की भूमि पूर्वी पाकिस्तान व पश्चिमी पाकिस्तान के नाम से दी गई। पाकिस्तान के नेताओं ने अपने देश को इस्लामी राष्ट्र घोषित भी कर दिया तब भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित ..रने की, भारत में मुसलमानों को रखने की और पाकिस्तान में हिन्दुओं को छोड़ने की क्या आवश्यकता थी? यह तो वही मिसाल हुई "आ बैल मुझे मार।" गाँधी-नेहरू को जिन्ना, अम्बेडकर के साथ-साथ और अन्य कई नेताओं ने कहा कि जब मुसलमानों के लिये पाकिस्तान अलग बन गया तो सब मुसलमानों को पाकिस्तान भेज दो और सब हिन्दुओं को भारत में बुला लो। उसी समय चाहिये तो यह था कि हिन्दू-मुसलमानों की अदला-बदली करके भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित कर देते। परन्तु गाँधी-नेहरू ने अदूरदर्शिता का परिचय दिया और मुसलमानों को भारत में ही रहने दिया। जबकि हिन्दुओं को मारपीट कर पाकिस्तान से जितना निकाल सके उतना निकाल दिया। यह कहाँ का न्याय हुआ?

गाँधी-नेहरू की दूरदर्शिता इसी में थी कि सब हिन्दुओं को भारत बुला लेते और सब मुसलमानों को पाकिस्तान भेज देते। ऐसा करने से भारत-पाकिस्तान का भाईचारा भी बना रहता और दोनों देश सुख व शान्ति से भी रहते। सिर्फ गाँधी जी को विश्व का महान् पुरुष बनने की, और नेहरू जी को कांग्रेस का राज्य मुसलमानों के वोटों पर हमेशा बनाए रखने की भूख थी. इसलिये इन दोनों ने अदला-बदली करने का विरोध किया और देश को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया। जिसके कारण देश का विनाश हुआ और आज देश को पतन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। आने वाला समय इनको किस नाम से सम्बोधित करेगा यह तो भविष्य ही बतलायेगा। कुछ स्वार्थ तो ऐसे होते हैं जिनको समय पर पहचाना नहीं जाता परन्तु वे सबसे भयंकर स्वार्थ होते हैं उनसे जो हानि होती है उसकी कोई सीमा नहीं होती! वही स्वार्थ भारत के साथ हुआ।

**-खुशहाल चन्द्र आर्य,** आर्यसमाज बड़ा बाजार
९ मुंशी सदरूद्दीन लेन, कोलकाता-७००००७

# पुरुषः = परमात्मा का स्वरूप

-स्वामी वेदरक्षानंद सरस्वती,
संरक्षक आर्य गुरुकुल कालवा

**सहस्रशीर्षा: पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।**
**स भूमिꣳ सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥**
(साम० मंत्र संख्या ६१७)

**अर्थ :** (पुरुषः) ब्रह्माण्डपुरीवासी प्रभु (सहस्रशीर्षाः) हजारों अगणित सिरों वाला (सहस्राक्षः) अगणित आँखों वाला (सहस्रपात्) अगणित पादों वाला है, सर्वज्ञ, सर्वद्रष्टा, सर्वगत है। (सः) वह (भूमिं सर्वतः वृत्वा) वह भुवन को सब ओर से घेरकर (अति) और लांघकर (दशाङ्गुलम्) दस अंगों वाले ब्रह्माण्ड में (अतिष्ठत्) स्थित है॥

**पद्यानुवाद :-**
वह है परम पुरुष अविनाशी।
सहस्रशीर्ष सहस्राक्ष है सहस्रपाद प्रकाशी।
अगणित सिर हैं, अगणित हम हैं।
अगणित चरणयुक्त अग जग है।
घेर रहा सब ओर भुवन को वह ब्रह्माण्ड निवासी।
घेरे सभी ओर भूमंडल।
लांघे इससे परे दशांगुल।
दस अंगों वाले दिग्मण्डल से ऊपर सुख राशि।
वह सर्वज्ञ सर्वद्रष्टा है।
वह समग्रगत जगस्रष्टा है।
यह सारा ब्रह्माण्ड उसी का वह घट घट अधिवासी।

**त्रिपादूर्ध्वम्बुदैत् पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः।**
**तथा विष्वङ् व्यक्रामदशनानशने अभि॥**
(साम० मंत्र संख्या ६१८)

**अर्थ :** (पुरुषः) वह परम पुरुष (त्रिपात्) तीन चरण (ऊर्ध्वः उत् एत) जगत् से ऊपर उठा है (अस्य पादः इह पुनः अभवत्) इसका यह जगत् रूप चरण यहां पुनः पुनः होता रहता है। (तथा) और (अशनानशने) अशन्+अन+अशने=खाने वाले, न खाने वाले जड़ चेतन के (अभि) प्रति (विष्वङ्) व्याप्त होकर (व्यक्रामत्) स्व विक्रम दिखा रहा है॥

**पद्यानुवाद :-**
वह है पुरुष त्रिपाद् अपार।
जन्म मरण से मुक्त अजर है कालातीत प्रसार।
तीन चरण संसृति से ऊपर प्रकटित विगत विकार।
इसके एक चरण में होता बार-बार संसार।
साशन अनशन जड़ चेतन जग में उसका विस्तार।
अपना विक्रम प्रगट कर रहा वशी सर्व आधार।

**पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।**
**पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥**
(साम० मंत्र संख्या ६१९)

**अर्थ :** (यत् भूतम्) जो भूत उत्पन्न हुआ (च यत्) और जो (भाव्यम्) होवेगा जो (इदम्) यह वर्तमान जगत् है। (सर्वम्) सब (पुरुष एव) परम पुरुष में ही है (सर्वा भूतानि अस्य पादः) सारे उत्पन्न भूतमात्र उस परम पुरुष का पाद मात्र हैं। (अस्य त्रिपात्) इसके तीन चरण (अमृतं दिवि) अमृत द्योतनात्मक स्वरूप में विद्यमान रहते हैं॥

**पद्यानुवाद :-**
वह है पुरुष विश्व आधार।
यह जो हुआ तथा होवेगा विद्यमान संसार।
इन सब में अपना कौशल वह दिखा रहा हर बार।
इसका एक चरण यह सारा प्रकटित विश्व अपार।
इस स्रष्टा के तीन चरण हैं अमृत मुक्ति विस्तार।
तीन चरण में उससे ही गति पाता रहे संसार।
पादाक्रान्त उसी के वश अनुवर्ती रत व्यापार।
सदा प्रकाश लोक में अविनश्वर है जगदाधार।
मैं भी प्रभु के अमृत धाम को पाऊं तर संसार।

**तावानस्य महिमा ततो ज्यायांश्च पूरुषः।**
**उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति॥**
(साम० मंत्र संख्या ६२०)

**अर्थ :** जितना ब्रह्माण्ड है (तावान्) उतना ही (अस्य महिमा) इस सर्वाधार की महिमा है वह (पुरुषः) परम पुरुष (ततः च) उससे ज्यायान् बहुत अधिक है। (अमृतत्वस्य उत) मोक्ष का भी (ईशानः) अधीश है (यत्) जो (अन्नेन) अन्नमय शरीर के आधार पर (अधिरोहति) अतिरोहण करता है॥

**पद्यानुवाद :-**
वह प्रभु अमृत रूप ईशान।
इस संसृति ब्रह्माण्डपुरी के परम पुरुष भगवान्।
इस विराट् ब्रह्माण्ड विपुल का जितना है विस्तार।
भूत भविष्यत् वर्तमान से परिसीमित संसार।
पर वह पुरुष विराट् जगत् से बढ़ा चढ़ा हर बार।
परम त्रिकालातीत अधिक संसृति से विगत विकार।
उसकी महिमा है अनन्त निस्सीमित अपरम्पार।
वह स्वामी है जातमात्र का जीवन धन करतार।
जो बदला तन अन्नों से उस तन के ईश महान्।
वह प्रभु इस नश्वर तन के अमृत रूप ईशान।

**ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।**
**स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥**
(साम० मंत्र संख्या ६२१)

**अर्थ :** (ततः विराट् अजायत) उस पूर्ण पुरुष से विराट्=विविध प्रकार से राजमान ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ। (विराजःअधि पूरुषः) विराट् से ऊपर उत्तम अधिनायक परम पुरुष है। (पश्चात् स जातः) पीछे उस विराट् के प्रगट हो (भूमिम् अथो पुरः अति अरिच्यत) भूमि को-उत्पत्ति के आधार लोकों को फिर शरीर पुरियों को और पालन पोषण करने वाले पदार्थों को उत्पन्न किया॥

**पद्यानुवाद :** उससे प्रगटा पिंड विराट्।
परम पुरुष से प्रगटा था वह यह उसके सम्राट्।
यही अधिष्ठाता विराट् के अनासक्त विख्यात।
हुआ विभक्त अनेक खण्ड वह भूमि उसी से जात।
भूमि-धाम उत्पत्ति अनेको लोक मात्र विख्यात।
पुनः भूमियों पर पुर प्रकटे देह गेह संघात।
विविध प्राणिगण और वनस्पति पोषकगण बहु भाँत।
उसी विराट् पिंड से प्रकटे जग के विविध प्रपात॥



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७६८७४
सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२







आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती





ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक
प्रधान सम्पादक : जयसिंह टेकेदार
सम्पादक : वेदव्रत शास्त्री
वर्ष ३२ अंक ४३ ७ अक्तूबर, २००५ वार्षिक शुल्क १०० रुपये विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

## आर्यसिद्धान्तमर्मज्ञ-श्री जगदेवसिंह जी शास्त्री सिद्धान्ती



श्री जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती

स्वर्गीय सिद्धान्ती जी का जन्म संवत् १९५७ विक्रमी में विजयदशमी (दशहरा) के दिन (सन् १९००) में रोहतक जिले की तहसील झज्जर के बरहाणा गांव के गुगनाण पाना निवासी चौ० प्रीतराम अहलावत के घर में हुआ। आपकी माता श्रीमती मामकौर तहसील चरखी दादरी के अटेला गांव की थी। आपके पिता जी घुड़सवार सेना में थे। अस्वस्थता के कारण सन् १९९८ ई० में दफेदार पद से पेंशन लेकर घर आगये थे।

जाट हाई स्कूल रोहतक से हाईस्कूल तक की शिक्षा के पश्चात् जगदेवसिंह जी पेशावर जाकर सन् १९१७ में सेना में भर्ती हो गये। वे इससे पूर्व यज्ञोपवीत धारण करके आर्यसमाजी बन चुके थे। उस समय अंग्रेज सरकार आर्यसमाज के नाम से चौंकती थी। सेना में भर्ती होने वाले हरयाणा के प्रत्येक युवक की विशेष जांच की जाती थी कि वह आर्यसमाजी तो नहीं है। जगदेवसिंह जी ने सेना में देशभक्ति का परिचय देने के साथ-साथ मांसभक्षण, शराब के सेवन का विरोध किया और सन्ध्या हवन के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश का प्रचार भी किया।

युद्ध समाप्ति के पश्चात् सन् १९२१ में इनकी रेजीमेंट के टूट जाने पर सभी जवान अपने घर लौट आये। संस्कृत भाषा पढ़ने की इच्छा से सन् १९२२ में आप गुरुकुल मटिण्डू में २० रु० मासिक पर गणित पढ़ाने का कार्य करने लगे और साथ-साथ संस्कृत पढ़कर प्राज्ञ, विशारद और शास्त्री परीक्षा भी उत्तीर्ण की। सन् १९२९ में आप आर्य महाविद्यालय किरठल के आचार्य बने और वहां श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री जैसे अनेक विद्वान् स्नातक तैयार करने के साथ-साथ उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज का प्रचार कार्य भी किया।

उसी काल में आपने अपने छात्रों और अध्यापकों के साथ मिलकर सीकर (राजस्थान) में प्रजापति यज्ञ करवाया। इस यज्ञ के कारण आपसी ख्याति राजस्थान और पंजाब में भी फैल गई।

सन् १९३९ में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में जत्था लेकर गये। सबसे कठिन मोर्चा तुलजापुर का था, उसी पर सिद्धान्ती जी के जत्थे ने सत्याग्रह किया और मुसलमान सिपाहियों का लाठी प्रहार सहन किया। सन् १९४२ के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के साथ आर्यसमाज के प्रचार के रूप में श्री सिद्धान्ती जी ने हरयाणा प्रान्त का एक मास तक दौरा किया। रात्रि में जहां भी ठहरते वैदिक धर्म और आर्यसमाज सम्बन्धी व्याख्यान देते और गुप्तरूप से अपने विश्वासपात्र लोगों को इस बात के लिए तैयार करते कि हमारी सेनायें अवसर आने पर स्वतन्त्रताप्राप्ति की लड़ाई के लिए तैयार रहें। ऐसा करने के लिए सिद्धान्ती जी को चौ० छोटूराम ने लाहौर बुलाया था। इसके पश्चात् स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को गुरुकुल कांगड़ी से गिरफ्तार करके लाहौर के शाही किले में बंद कर दिया गया। सिद्धान्ती जी की गिरफ्तारी के भी पंजाब सरकार के वारंट थे किन्तु वे पंजाब से बाहर रहकर बचते रहे। बाद में चौ० टीकाराम मन्त्री से मिलकर वारंट रद्द करवाये गये।

सन् १९४४ में आर्य महाविद्यालय किरठल की रजत जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। इसके पश्चात् सिद्धान्ती जी ने आर्य महाविद्यालय किरठल को छोड़कर दिल्ली में आकर एक साप्ताहिक पत्र और प्रेस लगाने की योजना बनाई। पहाड़ी धीरज के प्रसिद्ध रईस चौ० उमरावसिंह ने सिद्धान्ती जी को इस कार्य के लिए अपनी धर्मशाला दे दी।

देहली आकर सिद्धान्ती जी ने 'सम्राट्' साप्ताहिक पत्र चालू किया। श्री नारायणसिंह शास्त्री और चन्द्रमोहन शास्त्री स्वयं भोजन पकाते, गयादत्त प्रेस में और कभी सरस्वती प्रेस जोगीवाड़ा नई सड़क दिल्ली में सम्राट् छपवाकर लाते और पते लिखकर टिकट लगाकर डाक में डालते थे। सब कार्य स्वयं करते थे। सन् १९४८ में सम्राट् प्रेस लगाया। बिजली मिलने तक दोनों शास्त्री पैर से मशीन चलाकर अखबार छापते रहे। श्री सिद्धान्ती जी और रघुवीरसिंह जी शास्त्री प्रायः बाहर प्रचार का कार्य करते थे और श्री नारायणसिंह शास्त्री और श्री चन्द्रमोहन शास्त्री ने प्रेस को संभाला। प्रेस उत्तरोत्तर उन्नति करता गया और राजधानी के अच्छे प्रेसों में इसकी गणना होने लगी।

१९४७ के उपद्रवों में भी सिद्धान्ती जी ने निकटवर्ती लोगों की रक्षा की और उन्हें सान्त्वना देते रहे। १९४२ में ब्र० भगवान्देव जी को झज्जर लाकर गुरुकुल का आचार्य बनाने में भी सिद्धान्ती जी की विशेष भूमिका थी।

श्री सिद्धान्ती जी ने १ मई से २२ मई १९५४ ई० तक हमें न्यायदर्शन वात्स्यायनभाष्यसहित पढ़ाया संस्कृत माध्यम से। उन्होंने हमारी न्यायदर्शन की परीक्षा ली। पांच अध्यायों के पांच प्रश्नपत्र संस्कृत में बनाये और उत्तर भी संस्कृत भाषा में ही दिये थे। आचार्य भगवान्देव जी ने मुझे कहा-तुमने बहुत परीक्षायें दी हैं किन्तु इस बार तुम्हें अपनी योग्यता का पता चलेगा, सिद्धान्ती जी बड़े कांटे के परीक्षक हैं। मैंने भी उत्तर दिया कि परीक्षक को भी पता चल जायेगा, परीक्षार्थी कैसे होते हैं।

परीक्षा हुई। दूसरे और तीसरे अध्याय में मुझे शतप्रतिशत अंक मिले, शेष अध्यायों में दो चार कम थे। इसी प्रकार अन्य साथियों का भी बहुत अच्छा परिणाम था। वे प्रश्नपत्र और उत्तर संचिकाएं आज भी मेरे पास सुरक्षित हैं। पहले सिद्धान्ती जी का विचार था कि बाहर की शास्त्री आदि सरकारी परीक्षा दिये विना विद्यार्थियों की अच्छी योग्यता नहीं बनती किन्तु महर्षि दयानन्द की आर्षपाठविधि के परमभक्त आचार्य भगवान्देव जी मानते थे कि जितनी योग्यता अल्प समय में आर्ष-पाठविधि के अनुसार हो सकती है उतनी अन्य प्रकार से नहीं हो सकती। आचार्य जी गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों पर आर्षपाठविधि का प्रेक्टिकल कर रहे थे।

गुरुकुल झज्जर के बड़े ब्रह्मचारियों को २२ दिन पढ़ाकर न्यायदर्शन के परीक्षक श्री सिद्धान्ती जी ने आचार्य भगवान्देव जी से कहा था कि आचार्य जी मेरे विचार बदल गये हैं। आपके ब्रह्मचारियों की योग्यता प्रशंसनीय है। इसी प्रकार कन्या गुरुकुल नरेला की छात्राओं को भी सिद्धान्ती ने न्यायदर्शन पढ़ाया था। वे न्यायदर्शन के अच्छे विद्वान् थे।

सन् १९५० में सिद्धान्ती जी को सर्वखाप पंचायत का प्रधान चुना गया था। वे आजीवन इसके प्रधान रहे। शोरों (मुजफ्फरनगर), बेरी (रोहतक), बड़ौत (मेरठ), दिसाला (मुजफ्फरनगर), सिसाना (रोहतक) आदि में सर्वखाप पंचायत बुलाकर समाजसुधार के अनेक कार्य किये तथा रूढ़ियों और कुरीतियों को बंद करवाया।

मैंने अपने २२ जून सन् १९६४ को होने वाले विवाह संस्कार करवाने की प्रार्थना श्री सिद्धान्ती जी से की। सिद्धान्ती जी ने कहा कि मैं वानप्रस्थाश्रम में हूं और विवाह-संस्कार करवाना गृहाश्रमी पण्डित का काम है अतः मैं विवाह-संस्कार नहीं करवा सकता। संस्कार के लिए पं० रघुवीरसिंह जी शास्त्री को भेज दूंगा।

(शेष पृष्ठ २ पर)

# मारिशस आर्यसमाज के भीष्मपितामह

# दिवंगत श्री मोहनलाल मोहित

❑ डॉ० भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर (राजस्थान)

एक सौ तीन वर्ष की पूर्णायु प्राप्त कर लघु भारत कहलाने वाले मारिशस देश की आर्यसमाजों के भीष्मपितामह तुल्य श्री मोहनलाल मोहित गत ३ सितम्बर को इस असार संसार को त्यागकर प्रभु के पावन चरणों में चले गये। मोहित जी से मिलने तथा विस्तृत विचार विमर्श करने के अनेक अवसर मुझे भारत में भी मिले थे और उनके देश में भी। उनका जन्म २२ सितम्बर १९०२ को मारिशस के सेम्पेर जिले के लावनीर ग्राम में श्री रामावतार के यहां हुआ। अपने पिता की स्मृति में मोहित जी ने एक विशाल सभागृह रामावतार हाल निकटवर्ती सेमो नगर में बनवाया है। पेशे से किसान मोहित जी कहा करते थे कि उन्होंने गन्नों के खेतों में एक साधारण मजदूर की तरह जितना श्रम किया है उतना कोई क्या करेगा? अब तो कृषि कर्म में यंत्रों की सहायता ली जाती है किन्तु आज से सौ बरस पहले तो खेती की फसल इन्सान के पुरुषार्थ और श्रम का ही फल थी।

उन दिनों अध्ययन की पर्याप्त सुविधाएं भी नहीं थीं। मोहनलाल मोहित की धर्म के प्रति रुचि आरम्भ से ही रही। शीघ्र ही वे वैदिक धर्म के प्रति आकर्षित हो गये और अपने देश की आर्यसामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगे। मारिशस में जब द्वीप की सभी आर्यसमाजों की प्रतिनिधि सभा के रूप में आर्यसभा का गठन हुआ तो मोहित जी उसके कर्णधार बन गये। १९७३ में वहां अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का बृहद् आयोजन राजधानी पोर्ट लुई में आर्यसभा के विशाल भवन के निकट के ताहेर बाग में हुआ। इसी बाग में १९०१ में महात्मा गांधी कुछ समय के लिए ठहरे थे। इस महासम्मेलन की अध्यक्षता प्रख्यात आर्यश्रेष्ठी श्री प्रतापसिंह शूर जी बल्लभदास ने की थी और उसके स्वागताध्यक्ष मोहित जी स्वयं थे। उस समय भारत से अकबर नामक जलयान से कई सौ आर्यपुरुष मारिशस गये थे।

आर्यसभा के विभिन्न पदों पर रहकर मोहित जी ने इस संगठन को व्यवस्थित कर शक्तिशाली बनाया। उनकी तपस्या का ही परिणाम था कि मारिशस में आर्यधर्म का घर-घर में प्रचार हुआ। वे अच्छे लेखक भी थे। मारिशस में जितने आर्यपत्र निकलते रहे उन सबमें उनकी रचनाएं स्थान प्राप्त करती रहीं। आर्यसभा के मुखपत्र आर्योदय का सम्पादन उन्होंने १९६२ में आरम्भ किया और कई वर्षों तक करते रहे। जब २००३ के षण्मासिक मारिशस प्रवास में मुझे आर्यसभा के पुस्तकालय में पर्याप्त समय पर बैठना पड़ा, मैंने आर्योदय की पुरानी फाइलों को रुचिपूर्वक पढ़ा तथा मोहित जी के लेखन कौशल से रूबरू हुआ। उन्होंने आर्यसभा का इतिहास लिखा।

मोहित जी को अपनी पितृभूमि भारत से अत्यन्त प्रेम था। उन्होंने बीसियों बार भारत की यात्रा की, पहले समुद्र के मार्ग से और बाद में वायु मार्ग से। कैसा विचित्र संयोग था कि परलोक गमन के कुछ दिन पहले ही वे अपने पुत्र श्री राजेन्द्र मोहित, पौत्र-पौत्री तथा सेवक सहित भारत यात्रा पर आये। भारत में उनसे मेरा साक्षात्कार एकाधिक हुआ था। एक बार लुधियाना में हीरो साइकिल्स के संचालक श्री सत्यानन्द मुंजाल के माडल टाउन निवास पर और दूसरी बार नई दिल्ली में आर्यसमाज मन्दिर-मार्ग में। मैंने आर्य लेखक कोश में उनके साहित्यिक अवदान की चर्चा की थी।

२००१ के मई मास में जब मैं पहली बार मारिशस गया तो वायु पत्तन से उतरकर सीधा उनसे भेंट करने के लिए उनके गांव लावनीर चला गया। मारिशस में सांस्कृतिक क्रान्ति के सूत्रधार श्री पं० वासुदेव विष्णुदयाल की ९५वीं जन्मतिथि पर मुख्यवक्ता के रूप में मैं आमंत्रित था और इस आयोजन के संयोजक श्री राजमन राधाकृष्ण का आग्रह था कि आर्यसभा के अतिथि भवन में जाने से पहले मैं इस वृद्ध आर्य पुरुष का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त कर लूं। रातभर की यात्रा से श्रान्त क्लान्त मुझे तथा मेरी गृहिणी श्रीमती शान्ति माथुर को जब मोहित निवास पर एक प्याला गरम चाय का मिला तो हमारी थकान चटपट दूर हो गई। उस समय मोहित जी से पर्याप्त समय तक विचार चलता रहा। २००५ के प्रवास में तो अनेक बार लावनीर समाज में व्याख्यान देने तथा उससे पूर्व उनसे मिलने के अवसर मिले। २२ सितम्बर २००३ को जब उनका जन्म दिन मनाया गया तो संयोगवश प्रख्यात पत्रकार श्री वेदप्रताप वैदिक तथा मेरे निकटवर्ती पाली जिले के संसद सदस्य श्री पुष्प जैन भी लावनीर आर्यसमाज में मोहित जी के जन्मोत्सव में सम्मिलित हुए। इन सबने मोहित जी को दीर्घायु प्राप्त करने की कामना की।

भारत तथा अपने देश में मोहित जी ने लाखों रुपयों का दान देकर आर्यसमाज की प्रवृत्तियों को गति दी है। वैदिक साहित्य और शोध के लिए उन्होंने एक बड़ी राशि देकर अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वैदिक पीठ की स्थापना की है। उनके छोटे पुत्र श्री सुभाष का कुछ वर्ष पहले निधन हो गया था। द्वितीय पुत्र श्री राजेन्द्र आर्यसभा के कोषाध्यक्ष हैं तथा सभा की गतिविधियों में खूब रुचि लेते हैं। यह भी महत्त्वपूर्ण संयोग रहा कि अपने छः मास के मारिशस प्रवास को समाप्त कर ३० दिसम्बर २००३ को जब वहां से हमने विदा ली तो डॉ० शिवसागर रामगुलाम वायु पत्तन पर जाने से पहले आर्यसभा के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू और विदुषी डॉ० उषा शर्मा के साथ मोहित जी का आशीर्वाद लेने उनके निवास पर गये और तब स्वदेश आये।

## श्री जगदेवसिंह जी शास्त्री सिद्धान्ती.... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

विवाह संस्कार पर आशीर्वादार्थ पधारने के साथ शर्त रखी यदि ५ से अधिक बाराती आयेंगे तो मैं बिना खाये-पीये ही वापिस आजाऊंगा। मैंने सब स्वीकार किया। वर के साथ केवल ४ बाराती १ मामा और ३ भाई ही गये थे। ऐसे थे सिद्धान्ती जी, अपने सिद्धान्तों के पालन के लिये।

सन् १९५६ में आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपमन्त्री निर्वाचित हुये। कुछ काल पश्चात् स्वामी वेदानन्द जी (तीर्थ) मन्त्री का देहान्त होने पर आपको पंजाब सभा का मंत्री बनाया गया। आपने सभा कार्यालय जालन्धर में ही रहकर सभा का कार्य किया। आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। १९५७ के पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और सत्याग्रह करके जेल में भी रहे।

जहां सिद्धान्ती जी वैदिक सिद्धान्तों के प्रखर प्रवक्ता थे वहां अच्छे लेखक और पत्रकार भी थे। उनके लेख सम्राट् साप्ताहिक और आर्यमर्यादा साप्ताहिक में छपते थे। आकाशवाणी से भी आपकी वार्ता प्रसारित होती रहती थी।

पौराणिक मान्यतानुसार प्रयाग में गंगा यमुना सरस्वती तीनों नदियों का संगम माना जाता है। वास्तव में वहां गंगा और यमुना दो ही नदियां मिलती हैं। यद्यपि सरस्वती आज प्राचीन रूप में उपलब्ध नहीं है किन्तु श्री सिद्धान्ती जी की मान्यता थी कि सरस्वती नदी शिवालिक की पहाड़ियों से निकलकर कुरुक्षेत्र से होती हुई पश्चिम की ओर बहती थी और पश्चिमी समुद्र में जाकर मिल जाती थी। कालान्तर में पश्चिम की मरुभूमि में जाकर अदृश्य हो जाती थी।

मनुस्मृति अ० २ श्लोक २१ में **मध्यदेश** की पश्चिमी सीमा **विनशन** तक मानी गई है। **विनशन** का धात्वर्थ विपूर्वक **णश् अदर्शने** धातु से अदर्शन अथवा लुप्त होना बनता है। इसका स्पष्टीकरण मनुस्मृति के प्राचीन टीकाकार कुल्लूक भट्ट ने किया है-''**विनशनात्= सरस्वत्यन्तर्धानदेशात्पूर्वम्**''। अर्थात् विनशन पश्चिम दिशा का वह स्थान है जहां जाकर सरस्वती नदी लुप्त होती थी, समाप्त हो जाती थी।

जब विनशन के कुल्लूकभट्टकृत अर्थ की चर्चा मैंने सिद्धान्ती जी से की तो अति प्रसन्न होकर उन्होंने कहा-शास्त्री जी आपने तो मेरी बहुत बड़ी समस्या का समाधान कर दिया।

एक दिन मैं कार्यवश दिल्ली सम्राट् प्रेस में गया। सिद्धान्ती जी प्रेस के ऊपर अपनी काष्ठकुटिया में बैठे प्रूफ रीडिंग कर रहे थे। मैंने **महत्व** शब्द को देखकर कहा कि यह तो अशुद्ध है। इसमें तकार डबल होना चाहिए। मैंने पाणिनि का ''**तस्य भावस्त्वतलौ**'' सूत्र बतला दिया। इस पर सिद्धान्ती जी ने कहा-आज के बाद यह त्रुटि नहीं होगी। साथ ही यह भी कहा कि यद्यपि मैंने आपको न्याय पढ़ाया है किन्तु व्याकरण के तो आप ही पण्डित हैं।

१९६२ में हरयाणा लोक समिति के टिकट पर आपने झज्जर लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा और कांग्रेस प्रत्याशी श्री प्रतापसिंह दौलता को भारी बहुमत से पराजित किया। दौलता जी अच्छे वकील थे। हारने पर उन्होंने चुनाव ट्रिब्यूनल में याचिका दायर कर दी। आरोप था ओ३म् का झंडा धार्मिक चिह्न और हिन्दी भाषा। टिब्यूनल ने निर्णय सिद्धान्ती जी के पक्ष में दे दिया तो दौलता जी पंजाब हाईकोर्ट में पहुंच गये। वहां सिद्धान्ती जी के विरोध में निर्णय हुआ तो सिद्धान्ती जी ने सुप्रीम कोर्ट में अपील कर दी। वहां मुख्य न्यायाधीश श्री गजेन्द्र गडकर की अध्यक्षता में पांच जजों की बेंच ने सर्वसम्मति से सिद्धान्ती जी के पक्ष में निर्णय देते हुए कहा कि ओ३म् ध्वज धार्मिक चिह्न नहीं है और सरकार की भाषा नीति का विरोध करना भी असंवैधानिक नहीं ठहराया जा सकता। इस प्रकार सिद्धान्ती जी ने पहले जनता द्वारा विजय प्राप्त की और बाद में सर्वोच्च न्यायालय में भी सफलता प्राप्त की।

सिद्धान्ती जी एम.पी. बनने के बाद भी पूर्ववत् ही बने रहे। रहन-सहन और व्यवहार में कोई अन्तर नहीं आया। पहले की भांति सम्राट् प्रेस के ऊपर बनी लकड़ी की कुटिया में ही रहे। सिद्धान्ती जी की विद्वत्ता और सादगी की छाप लोकसभा में भी थी। उनके भाषण और सुझाव ध्यान से सुने जाते थे। १९६६ में हरयाणा प्रान्त का निर्माण उन्हीं के काल में हुआ था।

सन् १९७७ में सिद्धान्ती जी का नागरिक अभिनन्दन किया गया उस समय एक विशाल ग्रन्थ भी प्रकाशित किया गया था जिसमें सिद्धान्ती जी के जीवन तथा कार्यों पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

२७ अगस्त १९७९ को मध्याह्नोत्तर १ बजे ७९ वर्ष की आयु में शरीर त्यागकर आपने परलोक गमन किया। स्वर्गीय सिद्धान्ती जी के स्मारक के रूप रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय भवन का नाम पं० **जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन** रखा गया। उनकी १०५वीं जयन्ती १२ अक्तूबर को मनाई जायेगी। -वेदव्रत शास्त्री

# पं० जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती जी को जैसा मैंने सुना तथा देखा, जिनकी १२ अक्तूबर को १०५वीं जयन्ती मनाई जावेगी

❑ केदारसिंह आर्य, आर्य अनाथालय, दयानन्दमठ, रोहतक

स्वर्गीय पं० जगदेवसिंह जी शास्त्री सिद्धान्ती के जीवन का मेरे ऊपर बहुत प्रभाव है। मुझे २७ वर्ष तक उनके निकट रहने का अवसर मिला है। वे मन, वचन तथा कर्म से एक थे और सिद्धान्तभूषण परीक्षा देने के पश्चात् उन्होंने अपने नाम के साथ सिद्धान्ती लिखना आरम्भ कर दिया और अन्तिम सांस तक वैदिक सिद्धान्तों का पालन करते रहे। जो कह दिया उसका पालन किया। कभी वचन भंग नहीं किया। वे सादगी के प्रतिमूर्ति थे। उनका सादा जीवन था और उच्च विचारों के धनी थे। वे स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतंत्रानन्द, स्वामी आत्मानन्द, स्वामी वेदानन्द (तीर्थ), स्वामी सर्वानन्द, चौ० छोटूराम जी आदि उच्चकोटि के विद्वानों तथा नेताओं के कार्यों और विचारों के उपासक थे। अपने जीवनकाल में उन्होंने १० के लगभग पुस्तकें लिखीं तथा सम्राट्, आर्य, आर्योदय तथा आर्यमर्यादा आदि साप्ताहिक पत्रिकाओं का साहसपूर्वक सम्पादन किया। वे उच्चकोटि के लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता थे। अपने व्याख्यान के पश्चात् श्रोताओं की शंकाओं का समाधान भी करते थे। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश को १०० बार ध्यान से पढ़ा था। इसी कारण सत्यार्थप्रकाश लगभग मौखिक याद था। पूछने पर बताया दिया करते थे कि अमुक बात फलां पृष्ठ पर छपी है। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणियां भी लिखी थीं, जिनको पढ़कर साधारण पाठक भी समझ सकता है। वे प्रतिदिन स्वाध्याय करते थे। आर्यसमाज के उत्सवों आदि पर प्रायः मंचसंचालक से पूछ लेते थे कि आप किस विषय पर सुनना चाहते हैं। संकेत मिलने पर उसी विषय पर धारावाहिक व्याख्यान देते थे। वे अपने व्याख्यानों में जो भाषण देते थे उन पर स्वयं भी आचरण करते थे। आजकल के अधिकांश नेताओं की भांति नहीं जो अपने उपदेशों को मंचों पर ऊंची आवाज में कहते हैं, परन्तु मंच से उतरकर अपने उपदेशों के विरुद्ध आचरण करते हैं।

उपरोक्त कथन पर मैं कुछ बातों का उल्लेख करना चाहता हूं जो उन्होंने मुझे सुनाई थी। वे सेना की सेवा में रहते हुए वैदिक धर्म की पालना करते थे। आज प्रायः सैनिक कहते हैं कि सेना में रहकर शराब तथा मांस आदि का सेवन करना ही पड़ता है। परन्तु श्री सिद्धान्ती जी ने सेना में रहते हुए कभी भी इन मादक वस्तुओं का सेवन नहीं किया और प्रतिदिन सन्ध्या करते थे। अवकाश मिलने पर हवन भी करते थे। आप सेना में रहते हुए अवसर मिलने पर धोती कुर्ता तथा पगड़ी बान्धते थे। एक बार सेना के धोबी ने उनकी धोती धोकर किसी अन्य सैनिक को पहनने के लिए दे दी और सिद्धान्ती जी के बार-बार मांगने पर भी नहीं दी। एक दिन उन्होंने एक सैनिक को उनकी धोती बांधी हुई देख ली और उससे पूछा भाई जी आपने यह धोती किससे ली है? उन्होंने बताया कि धोबी ने मुझे एक सप्ताह के लिए किराया लेकर दी है। श्री सिद्धान्ती जी ने धोबी को धमकाया और प्रण किया कि भविष्य में मैं अपने कपड़े स्वयं साफ करूंगा। श्री सिद्धान्ती जी ने अपने कपड़े अन्त तक साफ किये। श्री सिद्धान्ती जी की पलटन का तबादला अन्य छावनी में हो गया। सैनिकों की हाजरी का रिकार्ड श्री सिद्धान्ती जी के चार्ज में था। परन्तु किसी कारणवश वह रिकार्ड अपने साथ न ला सके। इससे हाजरी लेने में बाधा हुई। इस समस्या के समाधान हेतु श्री सिद्धान्ती जी ने एक कागज पर अपनी पलटन के नाम क्रमवार लिखकर दे दिये। सैनिक भारतमाता तथा वैदिक धर्म की जयजयकार करते हुए शहर में पैदल चल रहे थे।

श्री सिद्धान्ती जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लाहौर स्थित दयानन्द विद्यालय में सिद्धान्तभूषण की परीक्षा पास की। उन्हीं दिनों श्री सिद्धान्ती जी का आर्यसमाज के नेता स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, महाशय कृष्ण जी आदि से सम्पर्क हुआ। मैं सन् १९४२ में अपने ग्राम जुआं (सोनीपत) में आर्य पाठशाला में पहली कक्षा में अपने निकट के भाई श्री धर्मपाल जी के साथ पढ़ता था। श्री सिद्धान्ती जी आचार्य भगवान्‌देव जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आदि के साथ मेरे ग्राम में आये। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को एक घोड़े पर बैठाया और आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म की जय बोलते हुए ग्राम में घुमाया। मैंने पहली बार इन आर्यनेताओं को देखा तथा इनके सन्देश को ध्यान से सुना।

मैंने भाई श्री धर्मपाल आर्य के साथ बचपन में ही अपने ग्राम जुआं में आर्यसमाज की विधिवत् स्थापना करके आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ सम्बन्ध स्वीकार करवाया था। श्री सिद्धान्ती जी तथा आचार्य भगवान्देव जी लगभग प्रतिवर्ष उत्सवों पर पधारते थे। इनके अतिरिक्त उत्सव पर आर्यसमाज के अन्य विद्वान् तथा नेता यथा-प्रो० रामसिंह, प्रो० शेरसिंह, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, आचार्य प्रियव्रत, पं० रामस्वरूप शान्त, पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री धर्मसिंह राठी, पं० ब्रह्मानन्द, स्वामी नित्यानन्द, कुंवर जौहरीसिंह आदि भी आते रहे जिनका प्रभाव आज तक ग्रामवासियों पर है।

हिन्दीरक्षा आन्दोलन १९५७ में मैं अपनी कालेज की पढ़ाई छोड़कर दो बार जेल गया था। रोहतक जेल में श्री सिद्धान्ती जी से गहरा सम्पर्क हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के जालन्धर कार्यालय में नियुक्त हुआ। श्री सिद्धान्ती जी हिन्दी सत्याग्रह के पंजाब सभा के मंत्री होने के कारण महान् नेता थे और सत्याग्रहियों को तैयार करते थे। सरकार ने उनके वारंट कर दिये परन्तु वे पुलिस के काबू में नहीं आ सके। सरकारी एजेंटों ने कहना आरम्भ कर दिया कि सिद्धान्ती डरकर छिपते हैं। इस कारण श्री सिद्धान्ती जी ने दैनिक समाचारपत्रों में घोषणा की कि मैं फलां तारीख पर आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के उत्सव पर बोलकर स्वयं गिरफ्तारी दे दूंगा। इस प्रकार श्री सिद्धान्ती जी ने अपना वचन पूरा किया। दिल्ली पुलिस ने भरसक प्रयत्न उन्हें गिरफ्तार करने का किया परन्तु पुलिस असफल रही। श्री सिद्धान्ती जी मंच पर आये और आधा घंटा बोलकर गिरफ्तारी दी। इस अवसर पर आर्यसमाज के कार्यकर्ता एवं पुलिस वहां भारी संख्या में उपस्थित थी। श्री सिद्धान्ती जी जेल में बन्द होकर भी हिन्दी सत्याग्रहियों को अपील करते रहे (मैं जेल से बोल रहा हूं) मैंने यह समाचार उनका सन्देश उनके चित्र के साथ छपा हुआ पढ़ा था। वेदानन्द जी का निधन हो जाने पर वे दिल्ली आये थे। पंजाब सभा के श्री वीरेन्द्र जी ने उन पर आरोप लगाया कि सिद्धान्ती ने स्वामी जी के मृतशरीर से धन चोरी करके निकाल लिया। इसकी जांच घनश्याम गुप्त जी ने की तथा श्री सिद्धान्ती जी को निर्दोष घोषित करके श्री वीरेन्द्र जी पर जुर्माना किया था।

श्री सिद्धान्ती जी जालन्धर कार्यालय में आकर अपना अधिकांश समय जालन्धर में रहते थे। अपना निवास कार्यालय में बनाया और अपने लिए एक चारपाई तथा बिस्तरा जेब से खरीदा। श्री सिद्धान्ती जी मेरे तथा मेरे साथियों के साथ छात्रावास के नियमों के अनुसार भोजन करते थे। हम मासिक बिल बनाकर उनसे भोजन व्यय बांटकर देते थे। एक बार श्री सिद्धान्ती जी ने बिल देखकर मुझे कहा कि बिल गलत है। मैंने घबराकर कहा कि भूल समझाने की कृपा करें। उन्होंने बताया कि मेरी रोटी प्रतिदिन घी में चुपड़ी हुई आती हैं। परन्तु बिल में घी का व्यय क्यों नहीं लिखा।

श्री सिद्धान्ती जी प्रायः आर्यसमाज के उत्सवों आदि पर मुझे साथ ले जाते थे। मैं यात्रा व्यय का बिल सभा को देता था। श्री सिद्धान्ती जी को जब पता लगा तो मुझे धमकाया कि मैं अपनी यात्रा का भुगतान करूंगा। मुझे पैंशन मिलती है। इस प्रकार उन्होंने सभा पर अतिरिक्त व्यय नहीं डाला। यदि मैं कुछ व्यय कर देता तो पैसा-पैसा मुझे देते थे। सभा की पत्रिका में प्रति सप्ताह वेदोपदेश तथा सम्पादकीय लेख अपनी लेखनी से लिखकर प्रूफ स्वयं देखा करते थे। उनके महत्त्वपूर्ण योगदान से लोकसभा में सदस्य रहते हुए १९६६ में हरयाणा प्रदेश बनवाया। सदा सादा जीवन व्यतीत किया और ईमानदारी तथा निडरता का परिचय दिया। मैंने इस प्रकार का आदर्श नेता उनके बाद नहीं देखा।

---

विजय दशमी पर विशेष-

## युग के रावण को ललकारें

❑ राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

वृत्ति आसुरी बढ़ी हुई है, रावण के युग जैसी,  
आज राम के इस भारत में, बनी व्यवस्था कैसी?  
एक नहीं शत शत सीताओं का होता अपहरण यहां,  
लज्जा लुटती महिलाओं की, नारी धर्म का हरण यहां॥

है अज्ञान-अनय का होता धरती पर ताण्डव नर्तन,  
भस्मासुर से बढ़े हुए असुरों का होता है वन्दन।  
मद्यपान हो रहा अभय हो, करता है शासन सहयोग,  
करता है बहुमत भारत का अभक्ष्य खाद्य का ही उपयोग॥

मांस-मद्य का सेवन करने से रावण राक्षस कहलाया,  
परनारी पर कुदृष्टि डालने से रावण का हुआ सफाया।  
सोचो तुम! हे देशवासियों! आज कहां हम खड़े हुए हैं,  
असुरवृत्ति के सम्मुख हम सब असहायों से पड़े हुए हैं॥

भ्रष्टाचार बढ़ा है अतुलित, अनाचार का राक्षस हंसता,  
पशुप्रवृत्ति से आच्छादित हो मानव पशुओं सदृश विहंसता।  
खर दूषण की सेनाओं का पड़ा हुआ है भू पर डेरा,  
अहिरावण ने सारी धरती पर बिखराया घोर अंधेरा॥

टकरायेगा कौन दनुज से, कौन करेगा शर सन्धान?  
किसमें फिर पौरुष जागेगा, कौन उठायेगा धनु-बाण?  
युवक हमारे राम-लखन बन, युग के रावण को ललकारें,  
कागज के रावण के बदले असली रावण को संहारें॥

# यू०के० में आचार्य श्री ज्ञानेश्वरजी आर्य

आर्यजगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी आर्य इंग्लैंड चौथी बार वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु १९ अगस्त को पधारे हैं। जो सच्चे विद्वान् होते हैं स्वभावतः त्यागी, तपस्वी, कर्मठ एवं अपने लक्ष्य को सदैव समक्ष रखकर कार्य करते हैं। तदवत् आचार्य श्री का केवल उद्देश्य यह है कि यहां के निवासियों (भारतीयों) में वैदिक मान्यताओं एवं ऋषि-मुनियों का संदेश **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** (सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाओ) दें।

आचार्य जी का १८ अगस्त को आना निश्चित था, किन्तु हवाई-यान में कुछ खराबी के कारण २० सायं London पहुंचे। रविवार के साप्ताहिक सत्संग में कार्यक्रम निश्चित था, आचार्य जी का परिचय प्रधान प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने दिया। आचार्य जी की यह चौथी यात्रा है, अतः यहां का रहन-सहन, खान-पान, वातावरण आदि से ज्ञात थे।

साप्ताहिक सत्संग में एक घण्टे के प्रवचन में बहुत ही ओजस्वी और क्रान्तिकारी विचार रखते हुए आपने कहा-'जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत करने के लिए सच्चे ईश्वर की उपासना आवश्यक है, क्योंकि उसी से हम ज्ञान, शक्ति, साहस, पराक्रम, उत्साह को प्राप्त करके प्रतिकूलताओं बाधाओं का सामना कर सकते हैं।'

विदेशियों के साथ रहने के कारण जो खानपान आदि में बदलाव आया है, उसके साथ एक बहुत बड़े सिद्धान्त की भी हानि हुई है, वह है पुनर्जन्म के प्रति अविश्वास या अमान्यता। वेदादि शास्त्रों में अनेक प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि आत्मा अजर अमर है तथा यह पुनर्जन्म को धारण करती है किन्तु पाश्चात्यों के विचारों से प्रभावित होकर भारतीयों की यह मान्यता धीरे-धीरे बनती जा रही है कि मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता है-This is the first and last life वे मन में यही मानकर कि बस यही जीवन है जो जैसे जितना मिले खा-पीकर ऐश करो, Eat, drink and be marry पुनर्जन्म के सिद्धान्त को न मानने के कारण अनेक दोष उत्पन्न हो रहे हैं। आर्यसमाज लन्दन में आचार्य जी के १४ कार्यक्रम हुए हैं जिसमें एक सप्ताह का अष्टांग-योग शिविर था। यह शिविर प्रातः सायं चलता रहा, लोगों ने बहुत पसंद किया, अनेक विषयों पर प्रकाश डाला, जैसे आत्म-निरीक्षण, यम-नियम, आत्मा-परमात्मा, शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म, शुद्ध-उपासना, कर्म-फल, मृत्यु का समय निश्चित या अनिश्चित, दिनचर्या, खान-पान आदि। जैसे भारतवर्ष में जादू-टोना, पाखण्ड; पूजा-पद्धति आदि चलती है, वैसे यह रोग विदेशों में भी चल रहा है। आचार्य जी ने शंका-समाधान के लिए सभी को समय दिया। प्रवचनकाल में यदा-कदा प्रसंगानुसार गुजराती जन-समुदाय में गुजराती-भाषा का धाराप्रवाह प्रयोग किया।

अनेक कार्यक्रमों में लोगों ने अनेक तरह की भेंट, दक्षिणा, दान आदि देने का प्रयत्न किया, किन्तु आचार्य जी ने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा मेरा उद्देश्य धन कमाना नहीं है, भ्रमण करना नहीं है, केवल आप मुझे समय दीजिए, मेरे विचारों को सुनिए, अपने परिवार, समाज को आदर्श बनाओ। इससे लोगों में बहुत प्रभाव बना है, नहीं तो यहां के भारतीयों की मानसिकता ऐसी बनी है जो कोई भारत से आता है, दान मांगते हैं, यह निराला साधु है, जो देता है, किन्तु लेता कुछ नहीं।

आचार्य जी के अनेक कार्यक्रम अनेक शहरों में हो रहे हैं। १९ सितम्बर से २ अक्तूबर तक वैदिक धर्म के प्रचारार्थ टंझानिया और केनिया गए हैं। पुनः ३ से २२ अक्तूबर तक कार्यक्रम England में होंगे।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आर्यसमाज लन्दन के पदाधिकारियों ने प्रयत्न किया, कार्यक्रमों में सदैव अच्छी उपस्थिति होती थी।

**-डॉ० रामचन्द्र शास्त्री, पुरोहित-आर्यसमाज लंदन**

## सर्वहितकारी के पाठकों से आवश्यक निवेदन

नम्रनिवेदन है कि आप अपनी वार्षिक सहयोग राशि १०० सौ रुपये मनीआर्डर आदि के द्वारा शीघ्र भिजवावें। सर्वहितकारी के जिन वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यों के रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा में जमा हुये थे उनको सभा सर्वहितकारी के स्थान पर अब 'आर्य प्रतिनिधि' भेज रही है।

मेरे पास सर्वहितकारी के पुराने वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यों का शुल्क जमा नहीं हुआ है। मैं आपको बार-बार सूचित कर रहा हूं और सर्वहितकारी प्रति सप्ताह इसी आशा और विश्वास के साथ भेज रहा हूं कि आप अपनी सहयोग राशि सौ रुपये शीघ्र भिजवा देंगे। अतः आप शीघ्र सौ रुपये भिजवाने की कृपा करें। यदि आप सर्वहितकारी नहीं मंगवाना चाहते तो ५० पैसे के पोस्टकार्ड द्वारा सूचित अवश्य करें। **-वेदव्रत शास्त्री सम्पादक सर्वहितकारी, दयानन्दमठ, रोहतक**

**दूरभाष : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४**

# हिन्दी दिवस : १४ सितम्बर : १४ बातें

★ राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। राष्ट्र के गौरव का यह तकाजा है कि उसकी अपनी एक राष्ट्रभाषा हो। कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को अपनी भाषा में ही अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है।

★ भारत में अनेक उन्नत और समृद्ध भाषाएं हैं किन्तु हिन्दी सबसे अधिक व्यापक क्षेत्र में और सबसे अधिक लोगों द्वारा समझी जानेवाली भाषा है।

★ सर्वोच्च सत्ता प्राप्त भारतीय संसद ने देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को राजभाषा के पद पर आसीन किया है। अब यह अखिल भारत की जनता का निर्णय है।

★ संसार में चीनी तथा अंग्रेजी के बाद हिन्दी सबसे विशाल जनसमूह की भाषा है।

★ प्रान्तों में प्रान्तीय भाषाएं जनता तथा सरकारी कार्य का माध्यम होंगी, लेकिन केन्द्रीय और अन्तःप्रांतीय व्यवहार में राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही कार्य होना आवश्यक है।

★ प्रादेशिक भाषाएं तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी दोनों एक-दूसरे की पूरक तथा सहोदरा हैं। एक-दूसरे के सहयोग से वे अधिक समृद्ध होंगी।

★ प्रादेशिक हिन्दी और राष्ट्रीय हिन्दी जैसी कोई चीज़ नहीं। जिसे आज हिन्दी कहते हैं, वही राष्ट्रभाषा है और उत्तरोत्तर विकास करके समृद्ध एवं गौरवशाली बनेगी।

★ प्रत्येक मनुष्य दो आँखों से देखता हैं। भारत जैसे विशाल राष्ट्र के निवासी के पास भी दो आँखें चाहिएं। ये दो आँखें है-१. अपने प्रान्त की भाषा २. सारे देश के लिए परस्पर व्यवहार की भाषा।

★ हिन्दी का प्रचार करना राष्ट्रीयता का प्रचार करना है। हिन्दी किसी पर न तो जबरदस्ती लादी जा रही है और न लादी जाएगी। वह तो प्रेम का प्रतीक है।

★ कोई भी शब्द चाहे वह किसी भी भाषा का क्यों न हो, यदि वह जनता में प्रचलित है, तो वह राष्ट्रभाषा हिन्दी का शब्द है। आगे भी हिन्दी विभिन्न भाषाओं से शब्दराशि लेकर समृद्ध बनेगी।

★ राष्ट्र की एकता के लिए जैसे एक राष्ट्रभाषा होना आवश्यक है, उसी प्रकार एक लिपि का होना भी आवश्यक है। नागरी लिपि में वे सभी गुण मौजूद हैं, जो किसी वैज्ञानिक लिपि में होने चाहिएं। अतः समस्त प्रादेशिक भाषाओं की एक नागरी लिपि हो, यह आवश्यक है।

★ अंग्रेजी को बनाए रखना हमारी शान और इज्जत के खिलाफ है। वह हमारे देश में रहनेवालों के बीच की एक दीवार है। इस देश में केवल अंग्रेजी जानने वालों का राज नहीं रह सकता।

★ कौन कहता है कि दक्षिण में अंग्रेजी बोलनेवालों की संख्या ज्यादा है? वहां अंग्रेजी जाननेवालों से पांच गुनी संख्या हिन्दी जानने तथा समझनेवालों की है।

**हिन्दी दिवस के दिन हम प्रतिज्ञा करें कि राष्ट्रभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि का प्रचार कर राष्ट्रीय भावना को हम सुदृढ़ करेंगे।**

**हिन्दी प्रचार समिति,** अशोक हिन्दी भवन
अल्लीपुर ग्राम, जहीराबाद, मेदक जिल्ला (आन्ध्रप्रदेश)

## बुढ़ापा सरलता से कैसे गुजरे

१. बुढ़ापा जरूर आयेगा यह तो पक्का ही है।
२. बुढ़ापे के लिए हर इन्सान को जवानी में सोचना चाहिए।
३. पश्चिमी सभ्यता का जोर है, कहीं बुढ़ापा दुःखदाई न हो।
४. कुछ पैसा सरकारी माध्यम से जरूर रखना चाहिए, जो सिर्फ आपको मिले।
५. बैंक, डॉक्टर, दवाखाना, पास-पास होने चाहिएं।
६. कुछ लोग भरोसे वाले जरूर होने चाहिएं, चाहे अपने हों या पराये।
७. बुढ़ापा अकेले नहीं कटता।
८. विल (वसीयत) वगैरह समझौता करके कर देनी चाहिए, जैसे गुजराती करते हैं, बाद में झंझट नहीं होता।
९. बुढापे में जायदाद का सहारा ही नहीं पैसे का भी सहारा होना चाहिए।
१०. पचास वर्ष के बाद सांसारिक रिश्ते कम कर देने चाहिएं। जहां जाना है उसको समझना चाहिए।
११. बुढ़ापे में स्वाद से बचना चाहिए।
१२. तीन बातों का ध्यान रखो-**मौन**-ज्यादा बोलना नहीं। **कौन**-कौन क्या कर रहा है वास्ता कम रखो। **नोन**-नमक कम है ज्यादा है क्या कहना।
१३. बुढ़ापे को व्यसन वाला जीवन भारी बना देता है।
१४. बुढ़ापे में सामाजिक काम भी सहायक होते हैं।
१५. चौधरी बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

संग्रहकर्ता-**ओम्प्रकाश अग्रवाल** (माना सोसाइटी)
२१९, आवास विकास कालोनी, ऋषिकेश (उत्तरांचल)

भारतीय इतिहास की प्रेरक झांकी....

# वीरशिरोमणि सरदार चूड़ावत एवं क्षत्राणी हाड़ी रानी

❑ स्वामी केवलानन्द सरस्वती, वैदिक मोहन आश्रम, ऋषिकेश मार्ग, भूपतवाला, हरद्वार

जिस राष्ट्र के वीर योद्धा बड़ी-बड़ी विपत्ति आने पर भी कर्त्तव्यविमुख नहीं होते, राष्ट्रीय उन्नति के आधार माने जाते हैं। विवेकी और विचारशील व्यक्ति की यही पहचान नीतिनिपुण महात्मा विदुर जी ने बताई है।

**यस्य कार्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।**
**समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते॥**

सर्दी-गर्मी, डर और प्रेम तथा सधनता और निर्धनता जिस कर्मयोगी के मार्ग में बाधा उपस्थित नहीं करते, वही वीरशिरोमणि पण्डित और विवेकी है।

कर्नल टाड के लिखे राजस्थान के इतिहास में आपको दर्जनों ऐसे उदाहरण पढ़ने को मिलेंगे जिनमें यह वर्णित है कि वीर मातृभूमि पर शत्रु का आक्रमण होने पर विवाह की वेदी से उठकर सीधे रणभूमि पर जा धमके। ठीक इसी प्रकार सरदार चूड़ावत और हाड़ी रानी की वीरगाथा तो प्रसिद्ध ही है।

राजस्थान की छोटी-सी रियासत रूपनगर के शासक को बादशाह औरंगजेब का फर्मान मिला कि अमुक तिथि तक अपनी युवती बेटी चंचल को दिल्ली के शाही महलों में बेगमों की सेवा के लिए भेज दो, नहीं तो मैं आक्रमण करके तुम्हारी रियासत को धूल में मिला दूंगा। रूपनगर का राज्य इस फर्मान से घबरा गया और अपनी बेटी को दिल्ली जाने की प्रेरणा करने लगा। क्षत्रिय कुमारी यह सुनकर आग-बबूला क्रोध से अपने पिता की भर्त्सना करते हुए उसने कहा कि दिल्ली यवनों के यहां जाने की अपेक्षा मुझे मरना स्वीकार है।

अपने कायर पिता को यह उत्तर देकर चंचलकुमारी क्षत्राणी ने महाराणा राजसिंह तत्कालीन चित्तौड़गढ़ को पत्र सन्देश भेजा-''हे महाराणा आपकी वीरता और धर्मपरायणता को सुनकर मैंने हृदय से आपको पति के रूप में वरा है। मेरे स्वाभिमान को कुचलने के लिये यवन दुष्टात्मा औरंगजेब ने मेरे पिता को यह हुक्म भेजा है कि मेरा डोला अमुक दिन तक शाही महल में पहुंचा दे, अन्यथा रूपनगर पर आक्रमण करके रियासत को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा और मुझे दिल्ली ले जायेगा। इस कारण मेरे पिता भयभीत हैं। मुझे उनसे आशा नहीं कि वे मेरी रक्षा के लिये अपने विनाश की चुनौती स्वीकार करेंगे। अतः मेरी रक्षा का दायित्व अब आप पर है। कृपया जैसा भी हो आप नियत समय से पूर्व रूपनगर आकर मेरे साथ विवाह करके मुझे मेवाड़ ले जाइये, नहीं तो मैं औरंगजेब के चंगुल से बच न सकूंगी। यदि दुर्भाग्य से ऐसा हुआ तो रूपनगर की बेटी नहीं, महाराणा राजसिंह की रानी दिल्ली जायेगी।'' यह पत्र सन्देश अपने विश्वस्त पुरोहित के हाथ महाराणा को भेज दिया।

पुरोहित पत्र सन्देश लेकर ऐसे समय पहुंचा जब महाराणा का दरबार लगा हुआ था। पुरोहित ने महाराणा का अभिवादन करके पत्र सन्देश को आगे रख दिया और एक ओर बैठ गया। महाराणा ने पत्र खोलकर पढ़ा तो चिन्तामग्न होकर चुप बैठ गये। महाराणा के राजपुरोहित ने यह स्थिति देखकर राणा जी से पूछा-''पत्र में ऐसा क्या लिखा है, जिसने आपको चिन्तित बना दिया है?'' महाराणा ने पत्र को पुरोहित को देते हुए कहा कि आप ही पत्र पढ़कर दरबार को सुना दीजिए। पत्र पुरोहित जी ने पढ़कर दरबार को सुनाया और आवेशपूर्ण मुद्रा में महाराणा की ओर देखते हुए कहा-''इसमें सोचने की कौनसी बात है? क्या अपनी पत्नी की रक्षा का साहस भी महाराणा में नहीं रहा?'' पुरोहित जी की फटकार सुनकर झेंप मिटाते हुए महाराणा ने उत्तर दिया-''नहीं, रक्षा तो अवश्य की जायेगी, सोचने की बात केवल अल्प समय में कार्य सम्पादन की है। कैसे इतनी शीघ्रता हो यही बात विचारणीय है।'' यह कहकर महाराणा ने पान का एक बीड़ा और तलवार दरबार के बीच में रखकर अपने वीर सामन्तों को सम्बोधित करते हुए कहा-''जिस वीर में यह साहस हो कि वह दिल्ली से रूपनगर पर आक्रमण करने वाले शाही लश्कर को मार्ग में तब तक रोके रखेगा, जब तक कि मैं राजकुमारी से विवाह करके चित्तौड़गढ़ न पहुंच जाऊं, वह वीर इस बीड़े को उठाये।''

दरबार में सन्नाटा छा गया और सभी वीर एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। थोड़ी देर राणा ने इस स्थिति को देखकर वीरशिरोमणि नवयुवक वीर सरदार चूड़ावत की ओर देखा और कहा-''सरदार चूड़ावत! इस कठिन काम को पूरा करने की आशा तुमसे ही की जा सकती है।'' वीर चूड़ावत ने यह सुनते ही उठकर बीड़ा चबा लिया और तलवार को हाथ में लेकर चूम लिया। दरबार सरदार चूड़ावत के जयघोष से गूंज उठा। महाराणा का अभिवादन करके और फौज को कूच के लिये तैयारी का आदेश देकर वीर चूड़ावत अपने महल में अपनी नवोढ़ा पत्नी से विदाई लेने गया। महल में पत्नी को देखते ही नवयुवक सरदार को भविष्य की चिन्ता ने घेर लिया। विवाह के बाद अभी सरदार चूड़ावत के हाथ का कंगन (मोली) भी नहीं खुला था। रानी हाड़ी के हाथों में विवाह के अवसर पर लगाई गई हल्दी का पीलापन भी विद्यमान था। सरदार के मन में पत्नी के भावी जीवन की चिन्ता बिजली की तरह कौंध गई। विचार आया कि इस मोर्चे से मेरा वापस आना कठिन है। फिर किशोरी जिसने संसार का कुछ भी सुख नहीं देखा, मेरे पश्चात् कैसे अपना जीवन काटेगी? चिन्ता की अग्नि से सरदार चूड़ावत का चेहरा मुर्झा गया।

रानी हाड़ी पति के स्वागत के लिए बड़ी प्रसन्नता से खड़ी हुई। किन्तु पति की इस अवस्था को देखकर व्याकुलता से पूछने लगी-''श्रीमान् आप बाहर से प्रसन्नमुद्रा से आ रहे थे, परन्तु मुझे देखकर उदास क्यों हो गये? हाड़ी रानी की बात सुनकर सरदार चूड़ावत ने दरबार की सारी घटना सुना दी और युद्धभूमि के लिये अपने प्रस्थान की बात बताई।''

हाड़ी रानी सुनकर और प्रसन्न होकर बोली-''वीर भूमि मेवाड़ में मैं अपने पति की वीरता की धाक को जानकर कृतकृत्य हो गई कि इस कठिन मोर्चे को फतह करने के लिये सबकी आशाओं के केन्द्र मेरे पतिदेव हैं। मगर मैं आपकी उदासी का कारण नहीं समझ पाई?'' इसे सुनकर सरदार ने अपनी चिन्ता का कारण बताया। हाड़ी रानी ने सरदार को उत्साहित करके कहा कि ''आप मेरी ओर से निश्चिन्त होकर जाइये। आप अपने कर्त्तव्य को जानते हैं तो आपकी अर्धांगिनी भी अपने कर्त्तव्य से अनभिज्ञ नहीं है। मैं किसी भी प्रकार से आपके नाम को कलंकित न होने दूंगी।''

वीर सरदार चूड़ावत को हाड़ी रानी ने सांत्वना देकर प्रसन्नता से विदा किया। सरदार चूड़ावत की सेना जब प्रस्थान करने लगी तो मन में रानी हाड़ी का ध्यान पुनः उभरकर क्षुब्ध करने लगा। इसी हड़बड़ी में सरदार ने एक सैनिक को महल में भेजा और कहा कि हाड़ी से कोई सहनाणी लेकर आओ। इस सन्देश से रानी को ठेस लगी कि मेरी चिन्ता में मेरे पति पूरे मनोयोग से अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर पायेंगे, अतः मुझे उनको अपनी ओर से निश्चिन्त कर देना चाहिये। वह सैनिक को ठहरने के लिये कहकर अन्दर से एक थाल और रूमाल ले आई और सैनिक से कहा यह लो मेरी सहनाणी कहते ही अपना सिर काटकर पति को भेंट कर रही हूं। तुम इस थाल में रूमाल से ढककर ले जाना और मेरी ओर से कहना कि आपको चिन्ता मुक्त करने के लिए मैं प्रथम अपने कर्त्तव्य को भली प्रकार जानती हूं।

सैनिक इस दृश्य से स्तब्ध रह गया उसने रानी का सिर थाल में रखकर सरदार चूड़ावत को देते हुए हाड़ी के वचन सुना दिये। सरदार चूड़ावत ने कटे हुए शीश के लम्बे बालों को दो भागों में बांटकर अपने गले में बांध लिया और रणभूमि में शत्रु की सेना पर टूट पड़ा। लड़ते-लड़ते जब एक बार औरंगजेब पर चढ़ाई कर बैठा तो बादशाह ने अपने प्राणों की भिक्षा मांगकर जान बचाई और दिल्ली लौटने का वचन दिया फिर भी उसी समय शत्रु सैनिक ने छिपकर वार कर चूड़ावत का सिर काट दिया, फिर भी रुण्ड (गला) कटने पर भी सरदार चूड़ावत का कबन्ध घंटों तलवार चलाकर शत्रु सेना को भगाता रहा।

क्या संसार के विषय भोगों में लिप्त व्यक्ति से इस प्रकार के कठोर कर्त्तव्य निभाने की बात सोची जा सकती है? यह तो भारतीय इतिहास के अनूठे कर्त्तव्य के प्रेरक संस्मरण हैं।

## वेदप्रचार सप्ताह तथा यजुर्वेदपारायणयज्ञ

आर्यसमाज मोतिहारी पू० चम्पारण द्वारा १४ से २१ सितम्बर तक उल्लासपूर्वक वेदप्रचार सप्ताह तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें वेदप्रवक्ता आचार्य पं० सदानन्द शास्त्री गुरुकुल बैरगनिया, आचार्य प्रभामित्र शास्त्री गुरुकुल आर्यसमाज खुशरूपुर, पटना, स्वामी अग्निव्रत जी महाराज नालंदा, अंजुसुमन समस्तीपुर, स्वामी दिव्यमुनि वानप्रस्थी भागलपुर, स्वामी नित्यानन्द जी पटना ने भाग लिया। आठ दिनों तक वेदमंत्रों से मोतिहारी शहर गुंजायमान होता रहा। पूर्वी और पश्चिमी चम्पारण के आर्यसमाज के सैकड़ों प्रतिनिधियों ने तथा शहर के हजारों लोगों ने इसमें भाग लेकर अपने को लाभान्वित किया।

-मन्त्री आर्यसमाज, मोतिहारी

## गुरु की महानता

पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार

माता-पिता की ही तरह, होता गुरु महान्।
हुआ किसी का भी नहीं, बिना गुरु कल्याण।
बिना गुरु कल्याण, किसी का ना होता है।
बिना गुरु इंसान, व्यर्थ जीवन खोता है।
सुख चाहो यदि मीत, करो गुरुओं की सेवा।
सेवा से मिले, सुयश की पावन मेवा।
भक्त धर्मात्मा, वेदों का विद्वान्।
वाणी हो जिसकी मधुर, गुरु उसे लो मान।
गुरु उसे लो मान, बनो त्यागी तपधारी।
राम, कृष्ण, चाणक्य, भोज से परोपकारी।
जगद्गुरु दयानन्द, लाजपत जैसे नेता।
बिस्मिल, शेखर, भगतसिंह से वीर विजेता।
घूम रहे हैं विश्व में, पाखण्डी शैतान।
करो सज्जनों ढोंगियों की पूरी पहचान।
ठीक तरह पहचान, करोगे सुख पाओगे।
मारोगे तुम मौज, ठगी से बच जाओगे।
वेदों का स्वाध्याय करो, आलस्य को त्यागो।
ऋषियों के वंशजो नींद से अब तो जागो।

ग्राम बहीन, जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

# आर्यसमाज को पाखण्ड का गढ़ मत बनाओ

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक (हरयाणा) दिनांक १४ सितम्बर २००५ में पृष्ठ चार पांच पर श्री खुशहालचन्द्र आर्य का लेख पढ़ा। **आर्यसमाज मंदिरों में पौराणिक संस्कार होने चाहियें या नहीं ?** इस शीर्षक से लेखक की अज्ञानता प्रकट होती है। इस लेखक ने पहले भी एक ऐसा लेख लिखा जिसका शीर्षक था **ऋषि ने आर्यसमाज की स्थापना करके गलती की।** श्री सीताराम (आर्यमुनि हिसार) ने उस पर आपत्ति की थी।

यह लेखक दो पैसे के लाभ के लिये आर्यसमाज को पाखण्ड का केन्द्र बनाना चाहता है। महर्षि दयानन्द पाखण्डों का खण्डन करने में विरोधियों का अपमान सहते रहे, ईंट-पत्थर खाते रहे। लेखक उसे आर्यसमाज में प्रवेश कराना चाहता है। लेखक की बनिया वृत्ति को देखकर एक दृष्टांत याद आ गया। एक सेठ जी जैसे तैसे सारी उमर धन कमाते रहे और कुछ दान भी करते थे। श्वास पूरे होने पर जब यमलोक में पहुंचे तो यमराज ने पूछा-आपके पाप-पुण्य समान हैं। बताओ स्वर्ग में जाओगे या नरक में ? सेठ जी बोले- महाराज मुझे दोनों के बीच में रखो ताकि दोनों ओर से ग्राहक आते रहें। भाई खुशहालचन्द्र जी ! आर्यसमाज सिद्धान्तों के विरुद्ध समझौता नहीं करेगा। चाहे कोई खुश हो या नाराज।

लेखक ने गुरुकुल कांगड़ी की यज्ञशाला में नमाज की बात लिखी है। वहां मुस्लिम भाई ने खामोशी से खुदा की इबादत करते हुये नमाज अदा कर दी तो क्या हुआ, कोई बुतपरस्ती तो नहीं की। यह पौराणिक पण्डा तो मिट्टी के ढेले को ठाकुर जी बनाकर अनेक बार पुजवाते हैं। दूसरी बात दुकानों की लिखी। दुकानें आर्यसमाज भवन के बाहर हैं। दूसरे दुकानदार झूठ-सच बोलता है तो उसके कर्म उसके साथ। क्या आपके मित्रगण हमेशा सच बोलते हैं ?

भाई खुशहालचन्द्र जैसे अधिकारियों ने शोकसभा करने के लिए सत्संग हाल दे दिया। मैंने वहां जाकर देखा तो गरुड़पुराण की कथा हो रही थी। मैंने उसे समझा-बुझा तत्काल बन्द कराया। आप पौराणिकों को वैदिक सिद्धांत के विरुद्ध खुली छूट देकर सुधारना चाहते हो ? कभी नहीं होगा। यह लोग आर्यसमाज में माता का जागरण करने के लिए जगह मांगेंगे और आपको मुंहमांगा रुपया देंगे तो क्या आप इनको खुश करने के लिए आर्यसमाज का भवन दोगे ? श्रीमान् जी ! आर्यसमाज में पहले ही बहुत विकृतियां उत्पन्न हो रही हैं। आप यह नया सुझाव देकर मलियामेट मत करो।

-ले० देवराज आर्य मित्र, WZ-४२८ हरिनगर, नई दिल्ली

# पुस्तक समीक्षा

## महाशय शिवदत्त वानप्रस्थी का जीवन-चरित

लेखक : आचार्य धर्मवीर शास्त्री नयाबास, जिला झज्जर

प्रकाशक : विदुषी आर्या, आचार्या, वैदिक कन्या गुरुकुल बहालगढ़, इन्दिरा कालोनी, लिबासपुर (सोनीपत)

प्रधानसम्पादक : डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य
प्रधानाचार्य वैदिक कन्या गुरुकुल बहालगढ़ (सोनीपत)

साइज : $\frac{१८ \times २३}{८}$ पृष्ठ १८४ मूल्य १०० रु०।

महाशय शिवदत्त वानप्रस्थी का जन्म संवत् १९५६ (सन् १८९९) में रोहतक जिले के गांव बालन्द के दलित वा हरिजन कहे जाने वाले परिवार में हुआ था। गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी एक बार शुद्धि आन्दोलन के कार्यक्रम में रोहतक की प्रसिद्ध हरिजन बस्ती डहरी पाना में पधारे थे। वहां पर अनेक लोगों को यज्ञोपवीत दिये गये और छुआछूत निवारणार्थ सह-भोज का भी आयोजन किया गया था। इसी अवसर पर महाशय शिवदत्त जी भी स्वामी श्रद्धानन्द जी से जनेऊ लेकर वैदिक धर्म में दीक्षित हुए थे। अपना पारिवारिक धंधा करने के साथ-साथ महाशय जी ने पढ़ना-लिखना सीखा और भजन गाने बजाने का भी अभ्यास किया। अपने शुभ संस्कारों और विचारों के आधार पर अपने पुत्र सुदर्शनदेव को गुरुकुल झज्जर में पढ़ने के लिए सन् १९४७ में भेजा जो वहां से संस्कृत के विद्वान् बनकर हरयाणा सरकार के शिक्षा विभाग में उच्च पदों पर सेवा करके सेवानिवृत्त हुए हैं। विद्वत्समाज में उनकी आज विशेष प्रतिष्ठा है।

प्रस्तुत पुस्तक तीन भागों में विभक्त है। इसके प्रथम भाग में वानप्रस्थी जी का जीवनवृत्त प्रकाशित किया गया है। द्वितीय भाग में वैदिक सन्ध्या, दैनिक अग्निहोत्र, बृहद् यज्ञपद्धति, बलिवैश्वदेवयज्ञ, पितृयज्ञ और अतिथियज्ञ का विवरण है। तृतीय भाग में वानप्रस्थी जी द्वारा प्रचार में गाये जाने वाले तथा अन्य आर्यसमाज सम्बन्धी भजनों का संग्रह है तथा उनके परिवार द्वारा संस्थापित एवं संचालित वैदिक कन्या गुरुकुल बहालगढ़ का भी परिचय प्रकाशित किया गया है।

-वेदव्रत शास्त्री

# करले सुमिरन प्रभु का...

टेक-करले सुमिरन प्रभु का यही है समय,
ऐसा सुन्दर समय फिर निकल जाएगा।
शुभ कर्मों से पाया है जीवन मगर,
व्यर्थ में वक्त सारा गुजर जाएगा। करले.....।

१. कर्म करते रहो जग में ये सोचकर,
मैं यहां पर किसी को दुःखी ना करूं।
ओ३म् का नाम ही एक अनमोल है,
उस प्रभु को मैं तन मन अर्पण करूं॥
यूं ही माया में पड़कर भटकता है नर,
तन तो माटी है माटी में मिल जाएगा। करले.....।

२. सीख अच्छे-बुरे की प्रभु ने दिया,
तू भला कर बुरा कर तुझे सोचना।
कर्म अच्छा करेगा तो होगा भला,
फल बुराई का तुझको पड़े भोगना।
शुभ कर्मों से जीवन सफल है मगर,
फल बुराई का एक दिन मिल जाएगा। करले.....।

३. वेद में ज्ञान है सब का सम्मान है,
जग में कोई भी तो अपना साथी नहीं।
सारे रिश्ते यहीं पर रहेंगे 'सरस',
साथ में तेरे कुछ भी तो जाना नहीं।
छोड़कर सबको जाओगे संसार से,
काम नेकी का बस तेरे संग जाएगा। करले.....।

—सुरेन्द्रकुमार 'सरस', आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

# नवरात्र, दुर्गाष्टमी और नारी पूजा

❑ प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, ४३२, सेक्टर-८, करनाल

इस देश में सारा साल जगराते या भगवती जागरण होते हैं। नारी की मां भगवती के रूप में पूजा होती है। उसे दुर्गा भी कहा जाता है। नवरात्रों के दिनों में देवी मां की विभिन्न रूपों में पूजा की जाती है। उसे शेरोंवाली माता भी कहा जाता है। उसका नाम सबसे बड़ा बताया जाता है। दुर्गा सप्तशती में भगवती दुर्गा के रूप में नारी को बहुत बड़ा सम्मान दिया गया है और कहा गया है कि जो देवी सब प्राणियों में बुद्धिरूप से स्थित है उसे बार बार नमस्कार है। वही देवी बुद्धिमानों में विद्या है और शक्तिमानों में शक्ति है। बुद्धिरूप में वह सब प्राणियों के हृदय में विराजमान है। उस देवी भगवती नारायणी को नमस्कार है-

**या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।**
**नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥**
**विद्या त्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणां,**
**शक्तिस्त्वमेव किल शक्तिमतां सदैव।**
**सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते**
**हे देवी नारायणि नमोऽस्तु ते॥**

चैत्र दुर्गाष्टमी के अवसर पर देश के विभिन्न भागों में लाखों श्रद्धालु देवी माँ के दर्शन करते हैं। अकेले माँ वैष्णो देवी के इस बार १.७९ लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। देश की राजधानी दिल्ली में नवरात्रि के आठवें दिन दिल्ली के विभिन्न मंदिरों में माँ भगवती के आठवें रूप महागौरी की पूजा की गई तथा भक्तों की भारी भीड़ लगी तथा नवरात्रि के दिन शीतला माता के दर्शन के लिए श्रद्धालु उमड़ पड़े। हरयाणा में लाखों श्रद्धालुओं ने देवसर की पहाड़ी माता मंदिर में देवी दुर्गा माँ के दर्शन किए। झज्जर में लाखों श्रद्धालुओं ने माता भीमेश्वरी के दर्शन किए। इस अवसर पर अष्टमी के दिन कन्याओं को भोजन कराया जाता है और उन्हें सम्मानित किया जाता है। एक ओर नारी की नवरात्रों के दिनों में देवी के रूप में, दुर्गा के रूप में, शक्ति के रूप में, शेरोंवाली माता के रूप में पूजा की जाती है और कन्या के रूप में अष्टमी के दिन उसका सम्मान किया जाता है, उन्हीं नवरात्रों में सामाजिक स्तर पर उनकी क्या स्थिति रही? समाज ने, देश के लोगों ने उनको क्या सम्मान दिया? एक सप्ताह की घटनाओं के विवरण से पता चलता जायेगा।

पहला समाचार सहारनपुर का है कि यहां विभिन्न आयुवर्ग की सौ से अधिक लड़कियां देह व्यापार में लिप्त हैं। हरयाणा, उत्तरांचल और दिल्ली से भी प्रतिदिन यहां तीन दर्जन से अधिक कॉलगलर्स पहुचंती हैं। देह व्यापार में लिप्त अधिकांश लड़कियां गाँव देहात से सम्बन्धित हैं जो आर्थिक कारणों से यहां आती हैं। इनके परिजनों को इस गिरोह के लोग १० से १५ हजार रुपए प्रतिमास देते हैं। अगली घटना है नई दिल्ली के बसंत बिहार थाना क्षेत्र में अब्दुल हमीद नामक व्यक्ति ने अपनी बेटी के साथ दुष्कर्म किया। उसी के साथ राजौरी जिला हस्पताल में रोगी को देखने आई एक युवती के साथ तीन युवकों ने हस्पताल के बाथरूम में सामूहिक बलात्कार किया। तीसरा प्रमुख समाचार है मुम्बई के मयखानों में रात को नाचने वाली ७५ हजार बारबालाओं का भविष्य अंधकारमय। इनमें ८३% प्रतिशत लड़कियां पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्यप्रदेश की हैं। हरयाणा की इसमें लगभग सौ लड़कियां हैं। ये लड़किया नाच-गाकर अपने परिवारों को पाल रही थीं। इनकी जिंदगी रात को ही शुरू होती है और रात में ही खत्म हो जाती है। ये लड़कियां अत्यंत विवशता में इस काम को अपनाती हैं। पेट की भूख और परिवार की आवश्यकतायें उन्हें इस ओर ले जाती हैं। पड़ोस और समाज के लोग इन्हें अच्छी नजर से नहीं देखते। इन्हें हर प्रकार का उत्पीड़न एवं शोषण सहन करना पड़ता है। अच्छी आमदनी/कमाई कर लेने के बावजूद वे जहालत का जीवन जीती हैं क्योंकि सभ्य समाज में उनके लिए कोई स्थान नहीं है। मौत ही उनके लिए आखिरी रास्ता है। अमृतसर की परमजीतकौर अपने बूढ़े माँ-बाप और चार भाई-बहनों का पेट पालने के लिए मुम्बई पहुंच गई। अमृतसर की परमजीतकौर मुम्बई की ७५ हजार बारबालाओं में एक है जिनका अतीत और भविष्य दर्द से भरा हुआ है।

अगली घटना है फरीदाबाद में एक नाबालिग लड़की का अपहरण और फिर उसे बेच दिया गया। १७/४/०५ का समाचार है कि राजस्थान के सीकर जिले में रींगस थाना के अंतर्गत एक महिला ने पांच बच्चों समेत कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली। मध्यप्रदेश भिंड जिले की घटना है कि यहां रौन थाना के अन्तर्गत मछंड बाजार में बाबूराम राही की पुत्रवधू ने अपने चार बच्चों सहित आग लगाकर आत्महत्या करली। १७/४/०५ के ही एक अन्य समाचार के अनुसार दिल्ली के बलबीरचंद नामक एक पिता ने अपनी पत्नी की मौत के बाद अपनी बेटी के साथ दो बार बलात्कार किया। दिल्ली में मकान नं० २२८, न्यू रमेशनगर, नई दिल्ली की विवाहिता सीमा ने दहेज के कारण आत्महत्या कर ली। १९/४/०५ की खबर है कि नोएडा में एक दहेज के लोभी ने विवाहिता को पीटकर सड़क पर फेंक दिया। ये कुछ घटनाएं/समाचार नवरात्रों के हैं। ऐसी घटनायें नारियों के साथ सारा साल घटती हैं। नवरात्रों के तुरन्त बाद देखें तो २१/४/०५ को समाचार छपा कि देह व्यापार का सबसे बड़ा दलाल कंवलजीत सिंह नोएडा से पकड़ा गया। जहांगीरपुरी दिल्ली में एक महिला का अपहरण करने और उससे दुराचार करने के मामले में गुड़गांवा का एस.एच.ओ. ओम्प्रकाश व एक सिपाही गिरफ्तार किया गया। २१/४/०५ की खबर है कि हरयाणा में नूंह उपमंडल के गांव मलवा में एक ससुर ने अपनी पुत्रवधू के साथ दुष्कर्म किया। २२/४/०५ का समाचार है कि मुंबई की मरीन ड्राइव चौकी में पुलिस चौकी के सिपाही आत्माराम मोरे ने चेंगर उपनगर मुंबई की रहने वाली १७ वर्षीय लड़की से पुलिस चौकी में दुराचार किया।

यह है हमारा नवरात्रों और नवरात्रों के तुरन्त बाद देश में नारीपूजा का थोड़ा सा विवरण। इस तरह हम कन्याओं एवं लड़कियों का समाज में सम्मान करते हैं। घरों एवं परिवारों में लड़कियों एवं महिलाओं का मान सुरक्षित नहीं है। बाप एवं ससुर उनकी इज्जत पर हमला कर रहे हैं। थानों एवं पुलिस चौकियों के अधिकारी उनके साथ दरिंदगी का व्यवहार करते हैं। स्वयं कानून के रक्षक भक्षक बन रहे हैं। ऐसे अपराधियों को कठोर से कठोर सजा मिलनी चाहिए जैसा कि ४ मई २००५ को दिल्ली की कडकड़डूमा स्थित अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश जे.एम. मलिक की अदालत ने वार्ड ब्वॉय भूरा को एक नर्स के साथ बलात्कार के लिए उम्रकैद की सजा दी। भूरा ने ६ दिसम्बर २००३ की रात को शान्तिमुकुन्द हस्पताल में नर्स के साथ बलात्कार किया और उसे चोट पहुंचाकर उसकी दाई आँख निकाल दी थी। ऐसा जघन्य अपराध करके बाद में उसने अदालत में सजा से एक दिन पहले विवाह का प्रस्ताव भी रखा जिसे ठुकरा दिया गया। ऐसे ही दहेज हत्या के मामले में दुलहेड़ा (झज्जर) गांव की सुनीता को जिन्दा जला देने के अपराध में झज्जर के ही नाहरी गांव के निवासी अशोक, राजसिंह व फूलो को ४ मई २००५ को अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने उम्रकैद की सजा दी।

अब बारबालाओं की बात करें। ऐसे में उनको सम्मान कहां? वे अपने घर-परिवारों का पेट पालने के लिए वहां पहुंची हैं। वे सारी रात नाचकर लोगों का मनोरंजन करती हैं किन्तु वहां से बाहर उनको समाज हेय दृष्टि से देखता है। क्या वे इसी सभ्य समाज का हिस्सा नहीं हैं? वे भी इस नरक से बाहर आना चाहती हैं। क्या समाज तथा सरकार उनको बसाकर उनका सम्मान कर सकती है? डांस बार बंद करने के विरोध में मुम्बई में बारबालाओं ने महाराष्ट्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में तख्तियों पर लिखा हुआ था कि उन्हें जीवनयापन की वैकल्पिक व्यवस्था चाहिए। वे डांस बार छोड़ने को तैयार हैं किन्तु घर-परिवार को सहारा देने के लिए नौकरी या आय का कोई साधन तो मिले। अब बात करें देहव्यापार में लिप्त लड़कियों एवं महिलाओं की। सहारनपुर के इलावा देश के अन्य भागों में भी नारी देह का व्यापार होता है जिसकी खबरें छपती रहती हैं। चंडीगढ़ जो केन्द्रशासित है, जहां पंजाब एवं हरयाणा की राजधानी है, वहां भी नारीदेह का व्यापार बढ़ रहा है। यहां पंजाब, हरयाणा, कश्मीर, दिल्ली, मुंबई आदि स्थानों से लड़कियां लाई जाती हैं। इनमें से बहुतसी किसी आर्थिक विवशता के कारण तो कुछ पैसा कमाने के लिए आती हैं। परन्तु इनके ग्राहक कौन हैं? पुरुष। एक रिपोर्ट के अनुसार पुलिस कर्मचारी, नौकरशाह, व्यापारी, राजनेता, व्यवसायी, सैलानी आदि इसमें शामिल हैं।

उधर सिनेमा जगत् में जहां नारी लाखों लोगों का मनोरंजन करती है, वहां भी देहशोषण का शिकार है। बालीवुड सिनेमा नग्नता और सैक्स का पर्याय बनता जा रहा है। फिल्म में रोल देने के लिए नायिकाओं का हर तरह से शोषण किया जाता है। उनकी इज्जत/अस्मिता से सौदा किया जाता है। यह है नारी का सम्मान। रही सही कसर टी.वी. ने पूरी कर दी है। टी.वी. के विज्ञापनों ने नारी को एक उपभोक्ता वस्तु बनाकर रख दिया है। ऐसा लगता है कि मानो दूरदर्शन का सारा कार्यकलाप नारी के देह प्रदर्शन तक सीमित रह गया है। दूरदर्शन के चैनलों पर अश्लील फिल्मों के अतिरिक्त अर्द्धनग्नावस्था में नाच-गाने के कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। सीरियलों/धारावाहिकों में भी डांस पार्टियों व बारों के अभद्र दृश्य दिखाए जाते हैं। सिनेमा और टी.वी. चैनलों ने नारी की प्रतिष्ठा को तार-तार कर दिया है। एक ओर हम, समाज के लोग जगराते करते हैं, मां भगवती के रूप में नारी की पूजा करते हैं, दूसरी ओर उसकी प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिलाने में लगे हुए हैं।

अतः हमें जागना होगा। समाज के लोगों को जगाना होगा। जगरातों या भगवती जागरण को धार्मिक क्रिया तक सीमित न कर इन्हें सामाजिक रूप देना होगा। जगरातों तथा नवरात्रों के साथ-साथ महिलाओं, लड़कियों तथा बालिकाओं के सम्मान की रक्षा के लिए सुरक्षा इकाइयाँ कायम करनी होंगी। सामाजिक संगठनों को इसमें सक्रिय भूमिका निभानी होगी। सरकार, प्रशासन तथा पुलिस को और अधिक सचेत रहना होगा ताकि त्वरित कार्यवाही हो सके। राष्ट्रीय महिला आयोग का दायरा बढ़ाकर उसे कानूनी अधिकार देने होंगे। न्यायालयों को शीघ्र निर्णय देने होंगे क्योंकि महिला सम्बन्धी अपराधों में सजा मिलते-मिलते कई साल लग जाते हैं। अथवा दहेजहत्या, बलात्कार, दुष्कर्म, यौनशोषण जैसे महिला अपराधों की सुनवाई के लिए विशेष न्यायालय हों ताकि शीघ्र न्याय मिल सके। मनुस्मृति के आठवें अध्याय में बलात्कार के मामलों में अंग काटने का विधान किया गया है। इसके अलावा स्वयं नारी को दुर्गा बनना होगा। शेरोंवाली माता बनना होगा जैसा कि अगस्त २००४ में नागपुर के कस्तूरबा नगर की महिलाओं ने चण्डी का रूप धारण करके अक्कू दादा जैसे बलात्कारी को स्वयं मार डाला। तभी जाकर ये भगवती जागरण, दुर्गाष्टमी और नवरात्रों की पूजा सार्थक होगी। दूसरे शब्दों में इसके लिए कठोर से कठोर दंड का विधान करना होगा तथा समाज को जागरूक रहना होगा।

## ऋषिभक्त सेवानिवृत्त सेनाधिकारी
# कर्नल सत्यवीर आर्य का असामयिक निधन

कर्नल सत्यवीर आर्य का जन्म एक फरवरी १९४५ को भिवानी जिले के गांव आर्यनगर में हुआ था। इनकी माता का नाम बदामा देवी था। पिता श्री मोहब्बतसिंह बचपन से ही आर्य विचारों से ओतप्रोत रहे हैं। आर्यनगर गांव जीन्द रियासत का अन्तिम तथा लोहारू रियासत के निकट था। लोहारू रियासत में आर्यसमाज के प्रचार की सभी गतिविधियां स्वामी स्वतंत्रानन्द के नेतृत्व में महाशय मोहब्बतसिंह के घर से ही संचालित होती थीं।

कर्नल सत्यवीर आर्य का बचपन इसी परिवेश में बीता था, जिसका उनके जीवन पर इतना गहरा प्रभाव हुआ कि वे आजीवन सिद्धान्तवादी आर्य बन गये।

२ जुलाई १९६३ में सेना में एक सैनिक के रूप में भर्ती होकर अपने परिश्रम एवं बुद्धि कौशल से सीढ़ी दर सीढ़ी ऊंचाइयों को छूते हुये कर्नल जैसे उच्च पद से ३१ जनवरी २००२ को सेवानिवृत्त हुये।

सेना में सेवा के दौरान सैनिकों तथा सेनाधिकारियों के मन पर अपनी स्वच्छ छवि एवं आर्यत्व की एक अमिट छाप छोड़ी। सेवाकाल के दौरान वे कर्नल आर्य के नाम से जाने जाते थे। उनकी दिनचर्या एवं जीवनशैली एक सच्चे आर्य जैसी थी। वे अपने अधीनस्थों के प्रेरणास्रोत थे। वे बास्केटबाल एवं वालीबाल के उत्तम खिलाड़ियों में से एक थे।

कर्नल आर्य जी को अर्द्धांगिनी के रूप में शील, स्वभाव एवं बहुगुणसम्पन्न महिला श्रीमती चन्द्रावती देवी मिलीं, यह सोने में सुहागा जैसा था। २७ फरवरी १९६६ को इनका विवाह हुआ। इनकी पत्नी का पितृपरिवार भी आर्यसमाजी है।

माता-पिता के संस्कारों का प्रभाव संतानों पर भी पड़ता है, इस उक्ति के अनुरूप श्री आर्य की तीनों संतानें श्रेष्ठता की प्रतिमूर्ति हैं। बड़े बेटे श्री विश्वमित्र शास्त्री गुरुकुल झज्जर के स्नातक हैं तथा राजकीय सेवा में अध्यापक हैं। छोटे बेटे श्री जयप्रकाश सेना में मेजर जैसे उच्च पद पर आसीन हैं। बेटी भी उच्चशिक्षिता है तथा उसके पति भी सेनाधिकारी हैं। परिवार में २ पौत्र तथा १ पौत्री है।

इस प्रकार स्व० श्री कर्नल आर्य का परिवार सर्वविध सुखी तथा सम्पन्न है, कमी है तो मात्र कर्नल आर्य जी की, जिनका ३१ अगस्त २००५ को हृदयगति रुकने से असामयिक निधन हो गया। यह परमात्मा की व्यवस्था है। प्राणिमात्र का इस पर कोई वश नहीं चलता। हमें यह असह्य कष्ट सहन करना ही होगा।

इस सात्त्विक दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शोकसंतप्त परिवार को सहनशक्ति देने हेतु हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

**-विजयकुमार शास्त्री,** राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिंघानी, जि० भिवानी (हरयाणा)

# देशी घी की परिभाषा

एक दिन की बात है कि प्रातःकाल नाश्ते के समय मैं बाजार में जा रहा था। एक चौराहे पर एक रेहड़ी पर लिखा था-'**देशी घी की पूड़ियां**'। कुछ लोग खा रहे थे। मैंने पास जाकर पूरियां बनाने वाले से पूछा, 'भाई देशी घी कहां से लाते हो? कौनसी डेयरी का है?' प्रो० मामचन्द बोला, 'बाबूजी! अव्वल नम्बर पनघट है।' मैंने कहा, 'भाई पनघट तो वनस्पति घी है, यह देशी घी तो नहीं है।' वह कहने लगा, 'साहब हम तो इसे देशी घी मानते हैं क्योंकि हमारे देश में बनता है।' ऐसे ही देशी घी का बोर्ड लगाकर सब हलवाई इस वनस्पति घी की मिठाइयां बनाकर बेच रहे हैं। आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है, कृपया ध्यान देने की चेष्टा करें। कहीं यह देशी घी आपके समाज में हवन के लिये तो प्रयोग नहीं होता है। मैंने आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ के समय जाकर देखा है। आहुतियां डालने के बाद सुगन्ध नहीं आती जो यज्ञ का सार है। कुछ आर्यसमाजों में घटिया दर्जे की सस्ती सामग्री का प्रयोग होता है और समिधाएं भी साफ सुथरी नहीं होती, बस हवन करने की फोर्मल्टी पूरी की जाती है। ऐसा यज्ञ करने से कोई लाभ नहीं है।

-देवराज आर्यमित्र, WZ-४२८, हरिनगर नई दिल्ली-६४

# रसायनशाला गुरुकुल झज्जर के फलघृत पर मेरे अनुभव

आज से १५ साल पहले मेरी बहन शशी मेहता पत्नी राकेश मेहता फरीदाबाद निवासी को दो पुत्रियों के उपरान्त फलघृत के सेवन से पुत्र की प्राप्ति हुई।

इसके बाद मेरे एक मित्र डॉ० जितेन्द्र, जो सोनीपत जिले के गांव भटगांव में इस समय कार्यरत हैं, उन्होंने विदेश में जाकर इस फलघृत का सेवन किया जिससे उनको एक पुत्री के बाद फलघृत के सेवन से पुत्र प्राप्त हुआ।

मैंने स्वयं एक पुत्री होने के उपरान्त अपनी पत्नी को फलघृत का सेवन कराया जिससे मुझे पुत्र प्राप्त हुआ। पुत्रप्राप्ति में फलघृत बहुत लाभदायक औषधि है।

-डॉ० नीरजकुमार, ४७/८शिवाजी कालोनी, रोहतक

## एक अपूर्व प्रकाशन अद्भुत संकलन पं० बस्तीराम सर्वस्व

छपकर तैयार होगया है। बड़े साइज के ५६४ पृष्ठों के सजिल्द प्रकाशन का मूल्य केवल २०० रुपये है। कम्प्यूटर द्वारा आफसेट मशीन से बढ़िया कागज पर सुन्दर छपाई और लेमीनेशनयुक्त जिल्द के साथ यह ग्रन्थ बहुत आकर्षक और संग्रहणीय बन गया है। प्रत्येक आर्य परिवार और आर्यसमाज में सुरक्षित रखने योग्य पुस्तक है। जो सज्जन वा समाज इस पुस्तक को मंगवाना चाहें वे २०० रु० मनीआर्डर द्वारा भेजकर मंगवा सकते हैं। आपके घर पहुंचाने का डाकव्यय ३० रु० होगा, वह मैं वहन करूंगा। जो व्यक्ति स्वयं दयानन्दमठ में आकर पुस्तक लेना चाहेंगे उनको १७० रु० में मिलेगी।

**-वेदव्रत शास्त्री,** आचार्य प्रकाशन, दयानन्दमठ, रोहतक



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७६८७४

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२

685 पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरांचल)




आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
# सर्वहितकारी
आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ | अंक ४४ | १४ अक्तूबर, २००५ | वार्षिक शुल्क १०० रुपये | विदेश में २० डॉलर | एक प्रति २.००

# भव्य अद्भुत समारोह

## (न भूतो न भविष्यति)

❑ सोहनलाल शारदा, शाहपुरा भीलवाड़ा (राजस्थान)

**"एक माह पश्चात् आज का दिवस आनन्द का है। चित्त बहुत अच्छा प्रसन्न है। इस समय में मैं ईश्वरेच्छा में हूं।"**

ये वचन योगेश्वर भगवान् दयानन्द जी महाराज ने भक्तों के कुशलक्षेम पूछने पर कहे थे। लाहौर व अन्य स्थानों से आये भक्तजनों का प्रश्न था कि-श्रीमानों का चित्त कैसा है? आप इस समय कहां है? इत्यादि।

इस समय दोपहर ग्यारह बजे हैं। सम्पूर्ण भारतभर में प्रत्येक आर्य परिवार में भौतिक लक्ष्मीपूजन, आह्वान का कार्यक्रम करने में तत्पर हो रहा है और इधर यह दृढ़व्रती अखण्ड बाल ब्रह्मचारी संन्यासी अलौकिक पारलौकिक मोक्षसुख प्राप्ति हेतु ईश्वरोपासना में लवलीन है। जैसा कि वर्णन है कि-**"श्वास तीव्र गति से चल रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि महाराज श्वास रोककर ईश्वर का ध्यान कर रहे हैं।"** (सर्वश्री देवेन्द्र बाबू कृत जीवनी गोवि०हासा० पृष्ठ ६२१-६२१)

आगे यहां वर्णन है कि इस दिन की अद्भुत तैय्यारी हेतु एक दिवस पूर्व क्षौरकर्म कराने हेतु नापित को बुलवाया गया। इसके कार्य से प्रसन्न होकर इसको पारितोषिक स्वरूप पांच रुपये देने का आदेश किया। लेकिन जैसा कि कहावत है कि-**"दाता देता है, भंडारी पेट कूटता है।"**

यहां महर्षि के आदेश की अवहेलना कर भक्त सेवकजनों ने एक रुपया ही दिया। महर्षि को ज्ञात होते ही और आग्रहपूर्वक कहके इसे पूरे पांच रुपये ही दिला दिये गये।

उस समय इस कर्म का भाव सिर्फ एक आना ही था। ऐसे थे महान् दयालु दया के सागर दयानन्द।

क्षौरकर्म पश्चात् स्नान की इच्छा प्रकट की। लेकिन सेवकों ने अनुकूल समय नहीं जानकर केवल गीले वस्त्र से ही शरीर व शिर को पोंछा।

**दोपहर ग्यारह बजे का समय**-अब आदेश करते हैं दीपावली को कि-**"जो भी चाहो भोजन बनाओ। अतः कुछ विविध प्रकार के व्यञ्जन बनाये जाकर थालों में सजाये गये। स्वामी जी ने इन्हें एक दृष्टि से अवलोकन किया और कहा कि इन सभी को ले जाओ। लेकिन सेवकों के अत्याग्रह से मात्र एक चम्मच चनों का पानी ही लिया।"** अब यह भव्य अद्भुत समापन समारोह अपनी अन्तिम प्रक्रिया पर है। तृतीय पहर पश्चात् चार बज रहे हैं। दिन है ३० अक्तूबर सन् १८८३। भक्तजन जो दूरस्थ स्थानों से यानि अलीगढ़, मेरठ, लाहौर, कानपुर आदि के सभी को बुलवाया गया और साथ ही २००) दो सौ रुपये व दो दुशाले भी मंगवाये गये।

प्रथम आत्मानन्द शिष्य को बुलवाया गया। वे आकर सम्मुख खड़े हो गये। तभी श्री महाराज स्वामी जी ने कहा कि-**"या तो पीछे खड़े हो जाओ या सिराहने बैठ जाओ।"** जब बैठ गये तब श्री महाराज ने पूछा कि-**"आत्मानन्द क्या चाहते हो?"**

श्री आत्मानन्द प्रत्युत्तर में श्रद्धान्वित हो कहता है कि-**"हम तो ईश्वर से यही कामना करते हैं कि आप पूर्ण स्वस्थ हो जायें।"**

इस पर पूज्य स्वामी जी महाराज ने कुछ ठहरकर कहा कि-**"यह देह है। इसका अब क्या अच्छा होना है?"** यह कहकर श्री आत्मानन्द के शिर पर हाथ रखकर कहा कि-**"आनन्द से रहना।"**

अब आगे संन्यासी गोपाल गिरि जो काशी से आया हुआ था, उसको बुलाया गया। उससे भी यही प्रश्नोत्तर हुये। अन्त में उसे भी यही कहा कि-**"गोपाल गिरि अच्छी प्रकार से रहना।"**

अब आगे जो दो सौ रुपये व दो दुशाले मंगवाये थे उसके लिए आदेश करते हैं कि-**"इसे आधे-आधे आत्मानन्द व भीमसेन को दे दो।"** लेकिन इस विषम परिस्थिति को देखकर इन दोनों ने इसे ग्रहण नहीं किया। इतने में सायंकाल घड़ी ने पांच बजा दिये।

जब सर्व दूरस्थ व स्थानीय जन सामने खड़े हो गये तभी श्री स्वामी जी महाराज ने सभी को ऐसी कृपादृष्टि से देखा कि उसका यह लेखनी वर्णन करने में असमर्थ है। मानो वे सर्व जनमानस को कह रहे हैं कि-**"उदास क्यों हो रहे हो। सभी को धैर्य धारण करना चाहिए।"**

इस समय श्री स्वामी जी के मुख पर कुछ भी घबराहट व शोक के चिह्न नहीं थे। तभी किसी भक्त ने प्रश्न किया कि-**"श्रीमानों का चित्त कैसा है?"** श्री स्वामीजी महाराज सावधानतापूर्वक कहते हैं कि **"बहुत अच्छा है। तेज और अन्धकार का भाव है।"**

इस रहस्यमय वाणी का रहस्य जनसाधारण नहीं समझ सके। लेकिन जैसा हमने समझा-'तेज' स्वयं के लिये मोक्ष यानि आनन्द का प्रकाशपुञ्ज है और पश्चात् हमारे लिखे कहे अनुसार जो वेदानुकूल है, नहीं चले तो अन्धकार ही है।

अब साढ़े पांच होरहे हैं। अवसान के तीस मिनट शेष हैं तभी कहते हैं कि-**"जो भी जन हमारे साथ हैं और जो भी दूरस्थ स्थानों से आये हैं उन सबको हमारे पीछे खड़ा करदो। सामने कोई भी खड़ा नहीं रहे।"** तदनुसार सर्व भक्तवृन्द पीछे खड़े होगये। तभी आदेश करते हैं कि **"चारों ओर के द्वार खोल दो। छत के दो रोशनदान भी खोल दो।"** अब आगे भक्त समुदाय से पूछते हैं कि **"आज कौनसा माह पक्ष तिथि वा वार है।"** तभी किसी भक्त ने कहा कि-**"आज कार्तिकी अमावस्या मङ्गलवार है।"** अब यह भव्य समारोह समापन की ओर।

यह श्रवण करके प्रथम में छत और दीवारों की ओर दृष्टि दौड़ाते हैं। पुनः कई वेदमन्त्र पढ़े। संस्कृत देववाणी में ईश्वरोपासना की। आर्यभाषा में ईश्वर का गुण कीर्तन किया। फिर अति हर्षातिरेक हो गायत्री का पाठ व कुछ समाधिस्थ रहकर आंखें खोलकर कहा कि-**"पण्डित सुन्दरलाल को बुलाओ।"** उपस्थित भक्तजनों ने इधर-उधर दृष्टिपात कर कह दिया कि **"वे नहीं आये हैं।"** तभी प्रतिवाद करते हुये कहा कि-**"वे आगये हैं। स्टेशन पर हैं।"** लेकिन जनसमुदाय इसको समझ ही नहीं सका और समापन होते ही वे आगये। तभी लोग आश्चर्य से चकित रह गये। अब अन्तिम समय है। घड़ी का सुइया ६ पर आरहा है। तभी श्री स्वामी जी महाराज कहते हैं कि-**"हे दयामय! हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर! तेरी यह ही इच्छा है। तेरी यह ही इच्छा है तो तेरी इच्छा पूर्ण हो। तनै अच्छी लीला की। आहा!!!"**

**आहा!!! अति आनन्ददायक शब्द।** अब जो सीधे लेटे हुये थे स्वयं ही करवट लेते हैं और एक प्रकार से विशेष तौर पर श्वास को रोककर **"एकदम बाहर निकाल देते हैं।"** होगया। अब इस भव्य अद्भुत समारोह का समापन। मानवी लीला समाप्त। महर्षि तो प्रभु के परम चरम पद मोक्ष की प्रेममयी गोद में जा बिराजे अति आनन्द से। भक्तजन आंसू बहा रहे थे। अतः कहते हैं कहावत कि-**"ऐसी करनी कर चलो, हम हंसें जग रोये।"**

**वेद विज्ञान....**

# आर्षग्रन्थ : उपनिषदों का परिचय

❑ जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, आर्यसमाज सेक्टर-६, बहादुरगढ़ (हरयाणा)

**उपनिषद्**-उपनिषदों को समूचे तौर पर वेदांत कहा जाता है और यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में इनकी अनुपम व्याख्या का वर्णन प्रकाशित है। उपनिषद् आध्यात्मिक विद्या की श्रेष्ठ पुस्तकें हैं? इनमें जीवन, सृष्टि और ईश्वर के विषय में चिंतन किया गया है कि विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई, मृत्यु के पश्चात् कौन कहां जाता है। आत्मा क्या है तथा आत्मा और परमात्मा में क्या सम्बन्ध है? वेदों में दो विद्याएं हैं-एक अपरा, दूसरी परा। इनमें से अपरा यह है कि जिसमें पृथ्वी और तृण से लेकर प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठाक कार्य सिद्ध करना होता है, दूसरी परा विद्या जिससे सर्वशक्तिमान् ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है। यहां परा विद्या अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम है, क्योंकि अपरा विद्या का ही उत्तम फल परा विद्या है। उपनिषदों में परमात्मा आत्मा सम्बन्धी ज्ञान प्रकाशित किया गया है। उपनिषद् कहानियों से भरे पड़े हैं।

आधुनिक युग के सर्वप्रख्यात जर्मन दार्शनिक शोपनहार ने उपनिषदों के बारे में अपनी सम्मति देते हुए कहा था कि समस्त भूमण्डल में उपनिषदों के मूल ग्रन्थों से बढ़कर मनुष्य को उन्नत बनाने वाली और लाभदायक अन्य कोई सामग्री नहीं है। उपनिषदों के गौरव को सिद्ध करने के लिए उनके मूलपाठ को ही प्रस्तुत किया जाना चाहिए न कि हम किसी विदेशी की सम्मति को इस बारे में उद्धृत करें, जिसे इस ग्रन्थ का मूलरूप से पढ़ने का कभी सुअवसर ही नहीं मिला। भारतवर्ष के दार्शनिक, बाल विद्वान्, प्रोफेसर गुरुदत्त जैसे योग्य और विश्वसनीय उपनिषदों के अनुवादक को खोकर हमें बहुत बड़ी हानि हुई है।

अब हम दर्शाना चाहते हैं कि वैदिक ज्ञान को आदर्श मानने वाले आर्यों ने कैसी विचित्र और अनुपम उन्नति की थी। आदर्श को देखकर जो पुरुष घर को आदर्श रूपी चित्र के अनुसार बनाता है वह स्तुति के योग्य है। सम्पूर्ण ज्ञान, उपासना और विज्ञान कांड का चित्र (नक्शा) मानो वेद है पर जिन पुरुषों ने इस चित्र पर दृष्टि रखते हुए इसके अनुसार शारीरिक और आत्मिक उन्नति रूपी गृह बनाये मनुष्यजाति में उनकी महिमा महान् रहेगी। ईश्वररचित बीज को लेकर जो किसान हल चलाकर खेत बोता और सहस्रों मन अनाज उत्पन्न करके राजा और प्रजा का पेट भरता है उसका पुरुषार्थ सराहनीय है, इसी तरह वेदों से नाना विद्याओं के बीज लेकर चारों वर्णों के स्त्री-पुरुषों ने उनका विस्तार किया और उस विस्तार का चिह्न पुस्तकाकार में आने वाले मनुष्यों के लिए छोड़ गये। वैदिक समय एक मनोहर उद्यान के सदृश हमारे ज्ञाननेत्रों के सन्मुख उपस्थित हो रहा है। इस बाग का एक-एक वृक्ष सुन्दर सुगंधि देता हुआ आकाश से बातें कर रहा है। इस उद्यान के सुन्दर लहराते पत्ते, मीठे फल और रंग-बिरंगे फूल व्याकुल हृदय को शान्ति और नवजीवन प्रदान करने वाले हैं। इस उद्यान के एक कोने में कई एक ब्रह्मर्षि जीवनमुक्त बैठे हुए ब्रह्मविद्या की पुस्तकें रच रहे हैं जिनका नाम उपनिषद् है। इन उपनिषदों को पढ़ने से दग्धहृदय शान्ति को प्राप्त होते हैं, शोक और भय के समुद्र से पार होने के लिए आत्मा नवीन बल धारण करती है।

'दाराशिकोह' और 'शोपनहार' जैसे विद्वान् और महान् पुरुष उनकी महिमा गाते हुए नहीं थकते। प्राचीन ब्राह्मणों के यह पुस्तक, जो कि उन्होंने वैदिक समय में वेद के आश्रय में लिखे, आज तक ब्रह्मविद्या के शिरोमणि और अनुपम पुस्तक हैं। क्या पृथ्वी पर कोई पुस्तक धर्म विषय में ऐसा विद्यमान है जो इन उपनिषदों का लग्गा खा सके। मैक्समूलर और शोपनहार तथा स्वदेशीय और विदेशीय सम्पूर्ण विद्वान् एक स्वर से कह रहे हैं कि ब्रह्मविद्या के अनुपम ग्रन्थ उपनिषद् हैं। काम से कारीगर की महत्ता का अनुभव होता है। जब हम कहते हैं कि यह गृह अत्यन्त सुन्दर बना है तो इससे यह भी पाया जाता है कि इसका बनाने वाला भी अत्यन्त चतुर और बुद्धिमान् था। जब पृथ्वी के विद्वान् इस बात को अङ्गीकार करते हैं कि ब्रह्मविद्या में उपनिषदें अनुपम हैं तो क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि वे ऋषि जिन्होंने ९ उपनिषदें यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय की व्याख्या लिखी वे सचमुच जीवन्मुक्त और अनुपम पुरुष थे। कोई यह न समझ ले कि ऋषि जिन्होंने कि उपनिषदें लिखी केवल अंधे ही भगत थे और पदार्थविद्या तथा नाना प्रकार की सांसारिक विद्याओं से शून्य थे। वे चारों वेदों के विद्वान् सम्पूर्ण शास्त्रों के वेत्ता और कलाकौशल और नाना प्रकार के यंत्रादि बनाने में प्रवीण और जहां सम्पूर्ण सांसारिक विद्या जाकर समाप्त होती है वहां ब्रह्मविद्या का आरम्भ होता है इसलिए वे सर्व विद्यानिधान थे।

हम पहले बता चुके हैं कि उपनिषद् कहानियों से भरे पड़े हैं। यह कठोपनिषद् का वचन है कि प्रभु ने इन्द्रियों की रचना बाहर की ओर की है, इसलिए ये बाहर की ओर दौड़ कर जाती हैं। आँख रूप पर, नाक गंध पर, जीभ रस पर, कान शब्द पर और त्वचा स्पर्श पर, अर्थात् अपने-अपने ग्राह्य विषय की ओर दौड़ने की इनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इनकी सार्थकता भी तो इसी में है। जरा कल्पना करें-संसार में दिखने वाले ये सुन्दर दृश्य, नाना प्रकार के रङ्ग-रूपवाले पत्र-पुष्प, हिमाच्छादित शुभ्र पर्वतमालाएं, पर्वत-शिखरों से गिरते हुए जलप्रपात, रङ्ग-बिरंगे पक्षी, सुन्दर सजीली छींट के से परिधानों से आवृत तितलियां आदि-आदि तो होते, किन्तु इस रूप को निहारने वाली आँख न होती तो इस समस्त रचना का सौन्दर्य निरर्थक था। इसी प्रकार संसार में रूप को ग्रहण करने वाली आँख तो होती, किन्तु रचना और दृश्य कोई न होता तो आँख का बनाना भी व्यर्थ था, अत: सिद्ध हुआ कि आँख की सार्थकता रूप से और रूप की सार्थकता आँख से है। किन्तु आँख उस रूपको ग्रहण इस प्रकार करे कि अपने आत्मा और समाज के लिए किसी प्रकार की बुराई उत्पन्न न हो। यह ज्ञान मानव को बहुत प्रयत्नपूर्वक शिक्षा देने से आता है, स्वयं नहीं। आँख की स्वाभाविक प्रवृत्ति का चित्रण किसी शायर ने अच्छे ढङ्ग से इस प्रकार किया है -

**दिल के जो दुश्मन हैं,**
**उनके शौक में रहती हैं आँख।**
**जान का मालिक जो है,**
**उससे नज़र मिलती नहीं॥**

छान्दोग्य उपनिषद् में एक कथा का वर्णन आता है- जबाला के पुत्र सत्यकाम ने अपनी माता जी जबाला से पूछा कि-माता जी! मैं ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना चाहता हूं, बताइए मेरा क्या गोत्र है? जबाला ने उत्तर दिया कि पुत्र! मैं यह नहीं जानती कि तू किस गोत्र का है। मैं इधर-उधर बहुत-सों की सेवा में रही। तू मुझे जवानी में प्राप्त हुआ। सो मैं यह नहीं जानती कि तू किस गोत्र का है। बस में इतना बता सकती हूं कि मेरा नाम जबाला है और तेरा नाम सत्यकाम है। इसलिए तुम अपने परिचय में केवल इतना ही कहो कि मैं जबाला का पुत्र सत्यकाम हूं।

सत्यकाम हारिद्रुमत गौतम के पास आया, बोला-भगवन्! मैं आपके पास ब्रह्मचर्य वास करूंगा। इसी इच्छा से मैं आपकी सेवा में आया हूं। गौतम ने पूछा-सौम्य! तू किस गोत्र का है? भगवन् मैं नहीं जानता कि मैं किस गौत्र का हूं। मैंने अपनी माता जी से पूछा था, उसने मुझ से कहा-इधर उधर सेवा कार्य करते हुए यौवनकाल में मैंने तुझे प्राप्त किया है। सो मैं नहीं जानती कि तू किस गोत्र का है। हां, मेरा नाम जबाला है और तेरा नाम सत्यकाम है। इस प्रकार भगवन्! मैं जबाला का पुत्र सत्यकाम हूं। ऋषि ने उत्तर दिया कि भाई, इतना बेलाग सत्य ब्राह्मण के सिवाय और कोई नहीं बोल सकता। जा सौम्य, समिधा ले आ। मैं तेरा उपनयन करूंगा, क्योंकि तू सत्य से नहीं डिगा है। इस कथा से यह सुतरां स्पष्ट है कि ब्राह्मणादि को पहचानने का यदि कोई जन्मगत चिह्न होता तो सत्यकाम को देखते ही ऋषि पहचान लेते, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। सत्य जो कि ब्राह्मण का मुख्य गुण है, उसी के आधार पर ऋषि जी ने सत्यकाम को ब्राह्मण माना।

सूर्य में प्रकाश और उष्णता, चन्द्रमा में वही प्रकाश शीतलतायुक्त, अग्नि में दाहकता, वायु में वेग और शोषणशक्ति, इन सब जड़ देवों में यह दिव्यता उसी महान् देव की है। उपनिषद् में बड़े रोचक ढंग से इस विषय को स्पष्ट किया है। अग्नि ने कहा-मुझमें भयङ्कर दाहक शक्ति है, मैं संसार को भस्म कर सकती हूं। अग्नि की इस गर्वोक्ति को सुनकर उसके सामने एक तिनका रखकर कहा गया, इसे जलाकर दिखाओ। अग्नि पूरे पराक्रम से तिनके को भस्म करने के लिए झपटी, किन्तु कुछ नहीं कर सकी और लज्जित अनुभव करने लगी। यह दाहकशक्ति मुझ में मेरी नहीं, किसी ओर की थी। इसी प्रकार वायु को बड़ा अभिमान था कि वह संसार को उड़ा और सुखा सकता है। उसकी ओर भी वह तिनका आगे कर उड़ाने को कहा। तिनके को उड़ाने के लिए वायु अपने वेग से उसकी ओर बढ़ा, किन्तु वह उसको हिला तक न सका। उसने भी लज्जित होकर अनुभव किया कि उसमें भी वेग और शोषणशक्ति उस महादेव की ही है। इसप्रकार सार निकलता है कि जड़ देवों में जो भी शक्ति दिखाई देती है, यह सब उसी की है। इसी प्रकार ईश्वर के भक्त महात्माओं में जो लोकोत्तर गुण दिखाई देते हैं, ये सब भी उसी से प्राप्त किये हैं, अन्यथा मनुष्य के पास क्या था?

(शेष पृष्ठ ७ पर)

# गीता ही कहती है, श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं थे

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, १८० महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

किसी भी पुस्तक का अंतिम श्लोक पूरे ग्रन्थ का सार या निचौड़ होता है। गीता का भी निम्नलिखित यह अंतिम श्लोक सारी गीता का निष्कर्ष है। यह श्लोक कृष्ण को ईश्वर का अवतार न मानकर एक महान् पुरुष ही सिद्ध करता है।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ १८-७८

संजय, धृतराष्ट्र को कहता है, हे राजन्! जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण है और गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन है, वहीं पर श्री विजय भूति और अचल नीति है। ऐसा मेरा मत है।

महाभारत के पूरे दृश्य को देखकर संजय ने श्रीकृष्ण को एक महान् चतुर, बुद्धिमान्, कुशल राजनीतिज्ञ व दूरदर्शी बताया है और अर्जुन को एक महान् पराक्रमी, बलवान् योद्धा व धनुर्विद्या में अति निपुण बताया है तभी उनकी जीत होनी निश्चित बताई। मनुष्यों की यह एक आम धारणा होती है कि किसी अति बलशाली व शक्तिशाली मनुष्य को मारने के लिए दो या चार व्यक्ति तैयार होते हैं, वे भी परस्पर करीब-करीब समान बलवान् होते हैं तभी वे उसको मारने में सफलता प्राप्त करते हैं। उदाहरण के तौर पर हम यह कहें की एक हाथी और एक जंगली भैंसे ने मिलकर एक भयंकर बलशाली शेर को मार गिराया तो इसमें हाथी और जंगली भैंसा करीब-करीब समान ही बलशाली हैं। ऐसा कभी नहीं कहा जाता कि एक हाथी और एक चींटी ने मिलकर एक अत्यंत बलशाली शेर को मार गिराया। यह कहने वाले की बात महत्त्वहीन समझी जाती है। सुनने वाले कहेंगे की हाथी को चींटी का सहयोग लेने की क्या आवश्यकता थी। वह तो स्वयं ही शेर को पछाड़ सकता था। मेरी यही बात संजय के कहे श्लोक के लिए लागू होती है।

संजय के कहे अनुसार यह सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण और अर्जुन साथ-साथ जिस युद्ध में लड़ेंगे उसमें विजय मिलनी निश्चित है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों का महाभारत युद्ध में लड़ने का महत्त्व था हिस्सेदारी समान ही थी। किसी ने बुद्धि व राजनीति का प्रयोग किया तो किसी ने शारीरिक बल व पराक्रम का। जब अर्जुन मनुष्य था तो श्रीकृष्ण भी अर्जुन से कुछ अधिक गुणों वाला मनुष्य ही था। अर्जुन जहां बहुत बलशाली, पराक्रमी व धनुषविद्या में अति निपुण मनुष्य था तो वहीं श्रीकृष्ण एक अति बुद्धिमान्, राजनीतिज्ञ, धैर्यवान्, विद्वान् व दूरदर्शी मनुष्य ही था। यदि श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार होते तो संजय यह कहता की पांडवों की तरफ जब श्रीकृष्ण स्वयं ईश्वर के अवतार हैं तब कौरवों की जीत की सम्भावना करना ही व्यर्थ है।

अब मैं उन श्लोकों का अर्थ लिखूंगा जिनके आधार पर मेरे पौराणिक भाई श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार कहते हैं। गीता में लिखा हुआ है कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन का मोह भंग करने के लिये अपना मुंह खोलकर उसमें पूरा ब्रह्माण्ड दिखाया और कहा कि यह सब मेरा ही रचा हुआ खेल है। मैंने सबको मार रखा है तुझे तो सिर्फ निमित्त बनना है, फिर तू क्यों क्षत्रिय धर्म से विचलित होता है। तेरे तो दोनों हाथों में लाभ ही लाभ है। यदि तू युद्ध में जीत गया तो राज्य का सुख भोगेगा और यदि युद्ध में मारा गया तो तुझे स्वर्ग मिलेगा। इसलिये हे अर्जुन तू उठ! और अपने कर्तव्य को समझकर युद्ध करने के लिए तैयार हो। गीता के कुछ श्लोकों में श्रीकृष्ण कहते हैं कि तुम मेरी शरण में आ जाओ फिर तुम्हें चिंता या भय करने की कोई आवश्यकता नहीं। यह बात तो पिता भी अपने पुत्र को मेला दिखाने के लिए ले जाता है तब कहता है कि तुम मेरी अंगुली पकड़े रखो फिर कोई चिंता नहीं। जो भी दिक्कतें आयेगी मैं सम्भाल लूंगा। इसी प्रकार श्रीकृष्ण को भी अपनी बुद्धि, ज्ञान, बल व कार्यकुशलता पर इतना अधिक भरोसा था कि कोई भी समस्या आयेगी तो मैं उसका समयानुसार उचित समाधान निकाल लूंगा और वे निकाल भी लेते थे। पौराणिक भाइयों के पास कृष्ण को ईश्वर सिद्ध करने का यदि कोई सबसे बड़ा हथियार है तो वह यह है कि वे कहते हैं कृष्ण ने गीता में स्वयं को कहा है कि संसार में जब-जब धर्म की हानि और अधर्म का अभ्युत्थान होता है तब-तब मैं अन्यायियों को मारने के लिये सत्पुरुषों की रक्षा के लिए समय-समय पर पर जन्म लेता रहता है। परन्तु यह तो अपने आत्मविश्वास की पराकाष्ठा का परिचय है न कि अवतार का। अनेक क्रान्तिकारियों ने भी कहा था कि मेरी इच्छा है कि फाँसी लगने के बाद में पुनः भारतभूमि पर ही जन्म लूं और अन्यायी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध इसी प्रकार लड़ते हुए अपने प्राणों को न्यौछावर करूं। यदि श्रीकृष्ण अन्याय को मिटाने के लिये बार-बार जन्म लेता तो सिर्फ भारत में ही क्यों लेता? विदेशों में भी लेता। जबकि भारत से कहीं ज्यादा अन्याय विदेशों में हुए है। वहां पर भी तो लेना चाहिए था। ईश्वर के लिए तो सारा विश्व ही एक समान है। गीता के वे श्लोक जिनसे अवतारवाद सिद्ध होता है, वे अवतारवाद को सिद्ध करके मूर्तिपूजा आरम्भ करने के लिये बाद में जोड़े हुए श्लोक हैं।

कुछ घटनाएं भी श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतारवाद सिद्ध करने के लिये उनके जीवन में जोड़ी हुई हैं जैसे कहा जाता है कि जब दुःशासन ने द्रौपदी का चीरहरण करना चाहा तब द्रौपदी ने श्रीकृष्ण को अपनी सहायता करने के लिये पुकारा और श्रीकृष्ण ने द्रौपदी का चीर इतना बढ़ा दिया कि दुःशासन साड़ी खींचता रहा और साड़ी बढ़ती गई। अन्त में दुःशासन ने थककर चीरहरण करना बन्द कर दिया जिससे द्रौपदी की लाज बच गई। इसमें सच्चाई यह है कि द्रौपदी को जब नग्न करने का प्रयत्न किया जा रहा था तब या तो श्रीकृष्ण को जानकारी हो जाने से वे सब काम छोड़कर तुरन्त घटनास्थल पर आगये तब उनका यह दुष्कर्म करने का साहस नहीं हुआ या द्रौपदी ने डाटते हुए कहा कि यदि आप लोगों ने मेरे सतीत्व पर हाथ उठाया तो श्रीकृष्ण को मालूम होने पर आप लोगों की खबर ले लेगा। श्रीकृष्ण के बल और न्यायप्रियता से सब परिचित थे इसलिये उनका चीरहरण करने की हिम्मत ही नहीं हुई और उन्होंने वह दुष्कर्म करने का विचार ही छोड़ दिया। यह तो हम घरों में बराबर देखते हैं कि जब बच्चा कोई शैतानी करता है तो उसकी मां उसे डाटकर कहती है कि या तो शैतानी करना बन्द कर दे नहीं तो तुम्हारे पिताजी के आने पर तुम्हारी शिकायत कर दूंगी तब बच्चा फौरन शैतानी बन्द कर देता है। कारण बच्चा पिताजी के स्वभाव से परिचित है।

अब कोई यह प्रश्न उठा सकता है कि श्रीकृष्ण तो पाण्डवों की तरफ थे ही, दुर्योधन आदि को यह मालूम होते हुए भी इस नीच कर्म को करने पर क्यों उतारू थे? इसका उत्तर यही हो सकता है कि नीच प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों की कभी-कभी बुद्धि नष्ट हो जाती है। जब कोई उनको सचेत करता है तब वह सम्भल जाता है और नीच कर्म करने से भय खा जाता है। ऊपर वाली मुंह में ब्रह्माण्ड दिखाने वाली घटना से और इस उदाहरण से भी यदि द्रौपदी की करुण पुकार सुनकर श्रीकृष्ण द्रौपदी का चीर बढ़ा देता है और उसकी लाज बचा लेता है तो दुर्योधन को स्पष्ट मालूम हो जाता है कि श्रीकृष्ण एक मनुष्य नहीं बल्कि स्वयं ईश्वर के अवतार हैं तो उसी वक्त दुर्योधन कृष्ण के पैरों में पड़कर क्षमा मांग लेता और युद्ध किये बगैर ही पाण्डवों को उनका हिस्सा दे देता। ईश्वर से भला! कौन लड़ाई मोल ले सकता है? इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार न होकर एक महान् पुरुष ही थे।

मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह बलशाली से हमेशा डरता रहता है। अब भी हम देखते हैं कि भारत, पाकिस्तान से अधिक शक्तिशाली होते हुए भी पाकिस्तान की कितनी अमानवीय, अप्रिय व आतंकवादी हरकतें करने के बाद भी भारत सहन करता जा रहा है। उसके पीछे कारण यही है कि अमेरिका जैसा शक्तिशाली व धनाढ्य देश पाकिस्तान की सहायता के लिये उसके पीछे खड़ा है। इसी प्रकार यदि दुर्योधन को यह मालूम हो जाता है कि श्रीकृष्ण ईश्वर का अवतार है और ईश्वर के आगे हमारी क्या हस्ती है? तब वह पाण्डवों से झगड़ा कभी भी मोल नहीं लेता। इससे मालूम होता है कि कुछ श्लोक व घटनाएं श्रीकृष्ण को ईश्वर सिद्ध करने के लिए बाद में जोड़ी हुई हैं।

यह सब महाभारत के बाद कुछ स्वार्थी ब्राह्मणों ने अपना पेट भरने के लिए राम और कृष्ण को अवतार बतलाकर और उनकी काल्पनिक मूर्तियां बनाकर भोले-भाले लोगों से उनकी पूजा करनी आरम्भ करवा दी जिसका परिणाम यह हुआ कि सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व ही अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड में फंस गया और आज स्थिति यह हो गई है कि मानवता विनाश के कगार पर आकर खड़ी हो गई है। अब यह विनाश वेदों के ज्ञान का पुनः प्रचार व प्रसार होने से ही बचना सम्भव है। अन्यथा मानवता का नष्ट हो जाना सुनिश्चित है।

अवतार का मानना बस ऐसा ही है जैसे एक चक्रवर्ती राजा किसी भिखारी को जो उसी के राज्य में रहता है, दण्ड देने के लिये वह स्वयं अपनी पूरी सेना को लेकर उससे लड़ने के लिये जावे जैसी यह हास्यस्पद बात है उससे भी कहीं अधिक हास्यस्पद बात रावण व कंस को मारने के लिये ईश्वर का अवतार लेना है। ईश्वर न तो कभी अवतार लेता है और न उसे लेने की आवश्यकता है। जैसे ईश्वर की न्यायव्यवस्था में जीव और प्रकृति बन्धी हुई है वैसे ही ईश्वर भी अपनी न्यायव्यवस्था से बन्धा हुआ है। अपने भक्तों के कल्याण के लिये या किसी को दण्ड देने के लिए ईश्वर जन्म नहीं लेता। जिसकी न्यायव्यवस्था के प्रतिकूल एक पत्ता भी नहीं हिल सकता तो रावण व कंस की क्या हिम्मत है कि वे अन्याय कर सकें।

इस लेख को लिखने के लिये मैंने गीता को आदि से अन्त तक पढ़ा जिसमें अनेक श्लोक ऐसे मिले हैं जिनमें श्रीकृष्ण अपने आपको ईश्वर का अवतार न मानकर एक पुरुष मानता है और ईश्वर की एक अलग सत्ता को स्वीकार करता है जो सर्वशक्तिमान्, सर्व अन्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और अजर व अमर है। तीन

(शेष पृष्ठ चार पर)

# नेहरू ने कहा...

नेहरू ने कहा-''ओह दैट आउफुल ओल्ड हिपोक्रेट'' Oh, that howfull old hypocsrite - ओह! वह (गांधी) भंयकर ढोंगी बुड्ढा। यह पढ़कर आप चकित होंगे कि क्या ये सत्य है- गांधी के अनन्य अनुयायी कहे जाने वाले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने यह कहा होगा, कदापि नहीं। किन्तु यह मध्याह्न सूर्य की भाँति देदीप्यमान सत्य है- नेहरू ने ऐसा ही कहा था। प्रसंग लीजिये-सन् १९५५ में कनाडा के प्रधानमंत्री लेस्टर पीयरसन भारत आये थे। भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से उनकी भेंट हुई थी। भेंट की चर्चा, उन्होंने अपनी पुस्तक 'द इन्टरनेशनल हेयर्स' में की है-

सन् १९५५ में दिल्ली यात्रा के दौरान मुझे नेहरू को ठीक-ठाक समझने का अवसर मिला था। मुझे वह रात याद है, जब गार्डन पार्टी में हम दोनों साथ बैठे थे, रात के सात बज रहे थे और चांदनी छिटकी हुई थी। उस पार्टी में नाच गाने का कार्यक्रम था। नाच शुरू होने से पहले नृत्यकार दौड़कर आये और उन्होंने नेहरू के पांव छुए फिर हम बात करने लगे। उन्होंने गांधी के बारे में चर्चा की, उसे सुनकर मैं स्तब्ध हो गया। उन्होंने बताया कि गांधी कैसे कुशल एक्टर थे? उन्होंने अंग्रेजों को अपने व्यवहार में कैसी चालाकी दिखाई? अपने इर्द-गिर्द ऐसा घेरा बुना, जो अंग्रेजों को अपील करे। गांधी के बारे में मेरे सवाल के जवाब में उन्होंने कहा- Oh, that howfull old hypocsrite. नेहरू के कथन का अभिप्राय हुआ- ''ओह! वह भयंकर ढोंगी बुड्ढा।''

उद्धृत अंश-'राजनीति के अधखुले गवाक्ष', लेखक-सूर्यनारायण चौधरी, प्रकाशक-ग्रन्थ विकास, ३७ राजापार्क, आदर्शनगर, जयपुर (पृष्ठ २५६)

क्या आप समझते हैं-यह उक्त विचार, जो गांधी के सम्बन्ध में नेहरू ने एक विदेशी प्रधानमंत्री के समक्ष व्यक्त किया, वह अचानक उनके मुख से प्रकट हुआ? कदापि नहीं। नेहरू ने गांधी को बहुत निकट एवं गहराई से देखा था। वह भी उनके प्रतिपक्षी होकर नहीं, अपितु अनुयायी होकर। उसका सार रूप, जो स्वार्थवश या लोकभयवश अपने देशवासियों के समक्ष कभी प्रकट न कर सके, एक विदेशी प्रधानमंत्री के समक्ष प्रकट कर दिया। नेहरू ने गांधी को किन कारणों से ऐसा कहा? इसके हम दो एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहें हैं। १७ जनवरी १९२८ का एक पत्रांश, जो गांधी ने नेहरू को लिखा था-

''तुम्हारी पताका फहरे, इसका शानदार तरीका सुझाऊँ। मुझे प्रकाशन के लिए एक पत्र लिखो, जिसमें तुम्हारे मतभेद प्रकट किये गये हों। मैं उसे 'यंग इंडिया' में छाप दूँगा। तुम्हारा पहला पत्र मैंने पढ़ने और जवाब देने के बाद फाड़ दिया था। दूसरा रख लिया है और अगर तुम और कोई खत लिखने की तकलीफ नहीं उठाना चाहते हो तो चिट्ठी मेरे सामने है, मुझे पता नहीं, इसमें कोई बुरा लगने वाला अंश है लेकिन कोई हुआ तो विश्वास रखो, मैं ऐसा अंश निकाल दूंगा। मैं इस पत्र को एक स्पष्ट और प्रामाणिक दस्तावेज मानता हूँ।''

एक पत्र और देखिए, जिसमें गांधी अंग्रेजों को किस प्रकार भयभीत कर अपनी ओर झुकाते थे तथा देशभक्त क्रांतिकारियों को दबाने के लिए अंग्रेजों को प्रोत्साहित करते थे- तुम उन्हें दबाओ और मेरे समर्थन में तुम्हारा हित है, यह स्पष्ट होता है। २ मार्च १९३० को वायसराय को गांधी ने एक पत्र लिखा-

''हिंसक दल की शक्ति और प्रभाव बढ़ता जा रहा है। मेरा उद्देश्य इस संगठित हिंसा के विरुद्ध (अहिंसा) की शक्ति को हरकत में लाना है। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने का अर्थ- इन दोनों प्रकार की हिंसक शक्तियों को खुली छूट देना होता है।'' - आज का भारत (पृष्ठ- २४०)

क्रांतिकारियों ने गांधी की इस प्रवृत्ति को समझ लिया था, इसलिए शहीद सुखदेव जी ने गांधी से कहा था- 'आप क्रांतिकारियों को कुचल देने में नौकरशाही का साथ दे रहे हैं।' पाठक क्रांतिकारियों के आरोप के समझ गये होंगे- वह कितना सत्य पर आधारित था?

गांधी ने दूध न पीने की प्रतिज्ञा की थी किन्तु थोड़ी सी शारीरिक दुर्बलता के आने पर बकरी का दूध लेना प्रारम्भ कर दिया। वह बकरी अंगूर सहित विविध प्रकार के फलों का सेवन करती थी। एक घटना और है। पहली अगस्त १९२० को असहयोग आंदोलन शुरू करते समय गांधी ने कहा था- एक साल में स्वराज्य प्राप्त हो जायेगा अर्थात् पहली अगस्त १९२१ तक। चार महीने बाद वह तिथि बदलकर ३१ दिसम्बर १९२१ कर दी, ३१ अगस्त आधी रात तक हमें स्वराज्य प्राप्त हो जायेगा अन्यथा मेरी लाश समुद्र में तैरती होगी। स्वामी श्रद्धानंद जी जैसे लोगों ने इस घोषणा को पहले ही असत्य बता दिया था- यह कभी नहीं होने वाला है, किन्तु गांधी तथा उनके अन्धे अनुयायियों ने एक न सुनी। परिणाम वही निकला, जो श्री स्वामी श्रद्धानंद जी ने लोगों से कहा था।

इस प्रकार अनेक छलछिद्र एवं कपटपूर्ण व्यवहारों के कारण नेहरू के मन में गांधी के प्रति किञ्चित् मात्र भी आस्था एवं श्रद्धा नहीं थी, वही विदेशी प्रधानमंत्री के समक्ष फूट पड़ी। गांधी के छलछिद्रपूर्ण पत्र लिखने के सुझाव को नेहरू ने अपनाया। 'जय जवाहरलाल की' इस शीर्षक से एक लेख 'माडर्न रिव्यु' पत्रिका में 'चाणक्य' के नाम से लिखा गया था, यह लेख स्वयं नेहरू ने ही लिखा था। इस प्रकार गांधी के छलछिद्र के अनुयायी नेहरू थे। सत्य मनुष्य को स्वीकार करने के लिए विवश करता ही है और वही उस सहभोज में प्रकट हो गया।

जब गांधी को राष्ट्रपिता की उपाधि दिलवाने वाले नेहरू के मन में ही गांधी के प्रति ऐसे विचार हैं तो गांधी को राष्ट्रपिता कहना कहां तक उचित है? वैसे तो भारत जैसे प्राचीन राष्ट्र के लिए किसी को भी राष्ट्रपिता कहना उचित नहीं किन्तु कोई राष्ट्रपिता की उपाधि देना ही चाहता है तो महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वातन्त्र्यवीर दामोदर सावरकर या नेताजी सुभाषचन्द्र बोस में से किसी एक को इस उपाधि से विभूषित करना चाहिए, जो इसके अधिक उचित अधिकारी हैं। आज जो लोग गांधी को राष्ट्रपिता न कहने पर आपत्ति उठाते एवं कोलाहल करते हैं, उनको गांधी के प्रति नेहरू के कहे गये वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर विचारना चाहिए।

संकलनकर्ता-**स्वामी केवलानन्द सरस्वती**, वैदिक मोहन आश्रम, धोपतवाला, हरिद्वार

## १९वां वार्षिक महोत्सव

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय जसात, तह० पटौदी, जिला गुड़गांव का **१९वां वार्षिक महोत्सव कार्तिक कृष्णपक्ष पंचमी एवं षष्ठी सं० २०६२ तदनुसार २२-२३ अक्तूबर २००५ शनिवार-रविवार** को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस महोत्सव के शुभ अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ **स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक** की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। आप सभी गुरुकुल प्रेमी धर्माभिलाषी सज्जनों से प्रार्थना है कि अपने इष्ट-मित्रों सहित गुरुकुल भूमि में पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ायें।

इस पुनीत अवसर पर बड़े-बड़े विद्वान्, साधु-महात्मा, भजनोपदेशक एवं धार्मिक नेता पधार रहे हैं। **संचालक : जगदीशसिंह आर्य**

## शान्ति यज्ञ

आप सभी को सूचित किया जाता है कि हमारे पूजनीय पिता श्री बनवारीलाल जी का 97 वर्ष की आयु में 10 अक्तूबर 2005 को स्वर्गवास हो गया है।

शान्ति यज्ञ 21 अक्तूबर 2005 शुक्रवार को प्रात:काल 10 बजे हमारे पैतृक गाँव भागवी (भागी) तहसील च० दादरी में होगा।

**निवेदक :**

मो० 9812449368 **सूबेसिंह**, एच.सी.एस. (से.नि.)
मो० 9815849358 एवं समस्त परिवार

## गीता ही कहती है, श्रीकृष्ण... (पृष्ठ तीन का शेष)

श्लोक यहां प्रस्तुत करता हूं जिनसे श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार सिद्ध नहीं होते।

**तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।**
**असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥ ३-१९॥**

**अर्थ**-तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्त्तव्य कर्म को भलीभांति करता रह, क्योंकि आसक्ति से रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

**प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।**
**प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पार्थावतिष्ठते॥ २-६५॥**

**अर्थ**-अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है और उस प्रसन्नचित्त वाले कर्मयोगी की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर एक परमात्मा में ही भलीभांति स्थिर हो जाती है।

**एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।**
**स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति॥ २-६२॥**

**अर्थ**-हे अर्जुन! यह ब्रह्म को प्राप्त हुए पुरुष की स्थिति है, उसको प्राप्त हो योगी कभी मोहित नहीं होता और अन्तकाल में भी इस ब्राह्मी स्थिति में स्थित होकर ब्रह्मानन्द को प्राप्त होता है।

मैं अपनी महर्षि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिये यह लिखे बगैर नहीं रह सकता कि महर्षि दयानन्द ने अवतारवाद तथा मूर्तिपूजा का सही रूप बतला करके निःसन्देह मानवजाति का बड़ा उपकार किया है। अभी सभी लोग इस बात को समझ नहीं पाये हैं किन्तु समय सबका मार्गदर्शक होता है इसलिये भविष्य उन्हें अवश्य ही समझा देगा तभी मानव जाति का कल्याण होना सम्भव है अन्यथा अवैदिक राह पर चलकर विश्व में कभी भी सुख व शान्ति की स्थापना नहीं हो सकती।

# सत्यार्थप्रकाश का पाठ

(ले० स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

[यह लेख स्वामी जी ने देश-विभाजन से पूर्व १९४५ में लिखा था। आजकल सत्यार्थप्रकाश के पाठ पर चर्चा चल रही है। इस सम्बन्ध में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की क्या राय है एवं आर्यसमाज का क्या सिद्धान्त है यह जानने के लिए पूरे लेख को ध्यान से पढ़ें।

-सम्पादक]

सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में ऋषि दयानन्द जी ने भारत के उन मतों पर विचार प्रकट किये हैं जिन पंथों का सम्बन्ध वेद से है। वह वेद की संस्कृति मानते हैं। उन संप्रदायों में ऋषि ने सिख पंथ को भी लिया है और उस प्रकरण में श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का पाठ भी उद्धृत किया है। उसी पाठ पर इस शीर्षक में विचार करना है। इसीलिये इसका नाम यह लिखा है।

सत्यार्थप्रकाश में यह पाठ हैं-

१. ओं सत्यनाम कर्त्ता पुरुष निर्भौ निर्वैर अकाल मूर्त अजोनि सहभं गुरुप्रसाद जप, आदि सच जुगादि सच है भी सच नानक होसी भी सच। [जपुजी पौड़ी १]

२. वेद पढ़त ब्रह्मा मरे चारों वेद कहानि।
सन्त (साध) कि महिमा वेद न जाने। [सुखमनी पौड़ी ७। चौ० ८]

३. नानक ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर। [सु० पौड़ी ८। चौ० ६]

यदि इस पाठ को उसी रूप में लिखना हो, मात्रादि का भेद न करना हो, तो यह पाठ इस प्रकार होगा-

(१) १ ओ सति नाम करता पुरुष निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनि सैभं गुर प्रसादी जपु। आदि सचु जुगादि सचु है भी सचु नानक होसी भी सचु।

[जपुजी पौड़ी १]

(२) वेद पड़त ब्रह्मा मरे चारों वेद कहानि (यह पाठ इस प्रकार नहीं है) साध की महिमा वेद न जानहि। [सुखमनी अष्टपदी ७। पाद ८]

(३) नानक ब्रह्म गिआनी आप परमेसुर। [सुखमनी अष्टपदी ७। पाद ८]

यदि इस पाठ में मात्राओं को देखा जाय तो महान् अन्तर है यथा-

१ ओ को ओं। सति को सत्य। करता को कर्त्ता। अजूनी को अजोनी। सैभं का सहभं। निरभउ को निर्भौ। निरवैर को निर्वैर। मूरति को मूर्त। प्रसादि को प्रसाद। जपु को जप। सचु को सच आदि अनेक भेद हैं। इसका कारण यह है-

ऋषि स्वयं गुरुमुखी पढ़े हुए न थे। और उन्होंने गुरुग्रन्थ जी का पाठ भी न किया था। किसी ने उनको बताया था। उसे सुन उन्होंने लिख लिया, वही सत्यार्थप्रकाश में लिख दिया है। इसमें मुख्य भेद ओं और १ ओ का है। सिख पंथ में यह १ ओ ही लिखा जाता है, इसके अर्थ ओं के अर्थों के समान ही हैं। इस कारण अर्थ भेद नहीं। संस्कृत वाले ओं के पहले १ का अंक नहीं लिखते हैं। इस कारण ऋषि ने भी न लिखा।

अब रहा मात्राओं का भेद। श्री गुरुग्रन्थ जी में अक्षरों पर जो मात्राएं हैं, उनका पूर्ण ध्यान पाठ में भी नहीं किया जाता। उन मात्राओं का नियमपूर्वक उच्चारण न करके उस शब्द का साधारण उच्चारण किया जाता है। गुरुमुखी में रेफ, संयुक्त अक्षर न होने से पाठ भेद हो जाता है।

इसी प्रकार लिखने में सिख भी इन मात्राओं को पूरा-पूरा न लिखकर साधारण रूप से लिखते हैं। यथा- सोरठ रवदास। जउ तुम चंद हम भए हैं चकोरा।

गुरमत प्रभाकर भाई कान्ह सिंघ जी। श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब में 'रवदास' की जगह 'रविदास' पाठ है और 'हैं' के स्थान पर 'है' पाठ है। इसी प्रकार और लेखकों के पाठ भी हैं।

इन पाठों में विशेष चिंतनीय 'वेद पढ़त ब्रह्मा मरे, चारों वेद कहानि' का पाठ है। क्योंकि यह पाठ श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में नहीं है।

इसका समाधान इस प्रकार है-

(१) जिस भांति 'करे करावे आपे आप। मानुष के कुछ नाहीं हाथ।' यह पाठ प्राय: पढ़ा जाता है। प्रचलित है किन्तु श्री गुरुग्रंथ जी में यह पाठ भी नहीं है। इसी प्रकार 'वेद पढ़त ब्रह्मा मरे, चारों वेद कहानि' पाठ प्रचलित है श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में नहीं। प्रचलित होने से किसी ने कहा और ऋषि ने सुनकर लिख दिया।

(२) श्री गुरुग्रंथ जी में यह पाठ आनुपूर्वी रूप में नहीं है। किन्तु इस भाव के शब्द मिलते हैं। इस पाठ के दो भाग बना लिये जायें। एक 'वेद पढत ब्रह्मा मरे।' दूसरा 'चारों वेद कहानि'। इन भागों का भाव कहने वाले शब्द यह हैं यथा-

(क) नाभि कमलते ब्रह्मा उपजे वेद पड़हि मुखि कंठ सवार।
ताको अन्त न जाई लखणा आवत जात रहे गुवार॥
-गुजरी महला १। शब्द २

(ख) चारे वेद ब्रह्मे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारि।
ताका हुकम न बूझै वपुड़ा नरक सुरग अवतारी॥
-आसा महला ३ अष्टपदियां। अष्ट पदि २३

(ग) सनक सननन्द अंत नहीं पाइआ।
वेद पड़े पड़ि ब्रह्मे जनम गंवाइया। -राग आसा कबीर जी शब्द १०

वेद पढत ब्रह्मा मरे और 'वेद पड़े पड़ि ब्रह्मे जनम गवाइया तथा नरक सुरग अवतारी, और आवत जात रहे गुवार में शब्द भेद होते हुए भी भाव भेद नहीं है।

दूसरा पाठ है 'चारों वेद कहानि।' इस भाव का शब्द यह है 'वेद कतेव इफतरा भाई दिल का फिकर न जाइ।' तिलंग कबीर जी श० १। इस पाठ में वेद को इफतरा कहा है। इफतरा का अर्थ बुहतान है। जैसा कि भाई कान्हसिंघ जी ने लिखा है। वेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकर न जाइ।

इफतरा। कपोल कल्पना। गुरमत प्रभाकर पृष्ठ ६४८

पण्डित तारासिंह जी ने लिखा है-

इफतरा। अ०। 'बहुतान' बहकाव, यथा 'वेद कतेव इफतरा भाई दिल का फिकर न जाइ।' सामादि चारों वेद और अंजील आदिक किताबां परस्पर विरुद्ध वचनों से संदेह करने वाली हैं। जांते पूरे गुरों के उपदेस विना इन से चित का संदेह जाना कठिन है।

गुरुगिरार्थ कोष पृष्ठ ११६

लुगात सईदी। इफतरा, बुहतान।

इस प्रकार वेद पढ़त ब्रह्मा मरे और चारों वेद कहानि का भाव इन शब्दों में है। और उस प्रकार का पाठ श्री गुरुग्रंथ जी में नहीं है यह निश्चय है।

(३) कई सज्जन इस प्रश्न को इस रूप में कहते हैं। जब निश्चय है कि यह पाठ श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में नहीं है तब इस पाठ को सत्यार्थप्रकाश से निकाल ही देना चाहिये।

जो सज्जन पाठ निकालने की बात कहते हैं। आगे मैं इस पर विस्तार से विचार करना चाहता हूं, ताकि मेरी भावना को पाठक ठीक-ठीक समझ लें। इस पर प्रथम उत्तर तो यह है-

सत्यार्थप्रकाश के लेखक ऋषि दयानन्द जी हैं। उनका स्वर्गारोहण हुए अनेक वर्ष व्यतीत हो गए हैं। उनके जीवनकाल में यदि कोई उनको यह बात बतलाता, तो मेरा पूर्ण विश्वास है कि वह इस पाठ को अवश्य ही निकाल देते। वह चाहते तो कोई और पाठ लिख देते, अथवा कुछ भी न लिखते, क्योंकि उन्होंने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखा है-"इस ग्रन्थ में जो कहीं-कहीं भूल-चूक से अथवा शोधने तथा छापने में भूल-चूक रह जाय, उसको जानने जनाने पर जैसा वह सत्य होगा, वैसा ही कर दिया जायेगा।"

इसलिये उस समय यह ठीक हो सकता था। अब किसी को भी इसमें परिवर्तन का अधिकार नहीं है। लेखक स्वयं बदलना चाहे तो बदल सकता है। दूसरे को बदलने का अधिकार न होने से अब इस पाठ का निकाल देना असम्भव है। अधिक से अधिक यही हो सकता है कि इस पाठ के नीचे टिप्पणी दी जाय। उसमें लिखा जाय कि यह पाठ इस रूप में ग्रंथ साहिब जी में नहीं है। और उस भाव के जो शब्द ऊपर लिखे हैं, वह भी लिख दिये जायें।

इसमें एक यह लाभ भी है। पाठक यह भी समझ सकेंगे कि भूल सबसे होती है। ऋषि दयानन्द जी ने भी यह भूल से ही लिखा है।

यदि ऐसा होने पर भी वह सज्जन संतुष्ट न हों, और यही बल दें कि जब यह पंक्ति श्री गुरुग्रंथ साहिब में नहीं है, यह निर्विवाद है और सत्यार्थप्रकाश में यह पाठ गुरुग्रंथ जी के नाम से लिखा है, तो इसे निकाल देना ही चाहिये। इसका उत्तर मैं यह दूंगा।

जो पाठ किसी ने लिखा है और वह ठीक नहीं है। उस धर्म ग्रन्थ से वह पाठ निकाल दिया जाय। यह व्यवस्था सत्यार्थप्रकाश के लिये ही है वा अन्य ग्रन्थों के लिये भी है। यदि प्रथम पक्ष माना जाय कि सत्यार्थप्रकाश के लिये ही है तो यह कोई न्याय नहीं है। सत्यार्थप्रकाश से पाठ निकाला जाय, अन्य पुस्तकों से न निकाला जाय, इसमें कोई युक्ति नहीं कि यह क्यों किया जाय।

यदि दूसरा पक्ष माना जाय कि हां यदि कोई पाठ ठीक न हो तो सब ग्रन्थों से निकाल देना चाहिये, यह पक्ष न्याययुक्त तो है। किन्तु कठिनाई यह है कि उस धर्म ग्रन्थ के माननेवाले इसमें सहमत होंगे? मेरी सम्मति में कोई भी सहमत न होगा। उदाहरण के लिये मैं श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी के पाठ ही लिखता हूं-

गैंडा मारि होम जग कीए देवतिआं की वाणे-राग मलार वार महला १ वार २५

देवताओं का स्वभाव है कि वह गैंडा मारकर हवन करते हैं। अजामेध, अश्वमेध, गोमेध, यज्ञ हैं। ऋषि दयानन्द जी ने इनके अर्थ ठीक-ठीक किये हैं। अश्व राष्ट्र को कहते हैं, उसका उत्तम प्रबन्ध ही अश्वमेध है। गो नाम अन्न का है, उत्तम और अधिक अन्न उत्पन्न करना ही गोमेध है। [illegible]जामेध पर उन्होंने नहीं लिखा, परन्तु लेख है अजा के अर्थ पुराना अन्न है। यह अर्थ छोड़कर भी, इन पशुओं अजा, अश्व, गौ का मारना तो है गैंडे मारने वाला कोई यज्ञ नहीं है। यज्ञों का वर्णन करने वाले शतपथादि ब्राह्मणग्रन्थ और कात्यायनादि श्रौतसूत्र हैं। उनमें किसी ने भी गैंडे का यज्ञ नहीं लिखा है। यदि कोई दिखाने का कष्ट करे, तो मुझे अति प्रसन्नता होगी।

क्या इस पाठ को निकाला जाय .

दूसरा पाठ हरणखसु वाला है वह इस [illegible] -

(१)दुरमति हरणाखस दुराचारी। प्र[illegible] गरब प्रहारी।
प्रहलाद उधारे कृपा धारी। -गौड़ी अष्टपदियां महला १ अष्टपदि ९

(२) निंदा दुसटी ते किन फल पाइआ हरणाखशु नखहि विदारे। प्रहलाद जन सद हरि गुण गावै हरि जीउ लिए उबारे॥ -सोरठ महला ३ शब्द ५

(३) भगतां दा सदा तूं रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ। प्रहलाद जनु तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइया। -सोरठ महला ३ घर १ तितुकी शब्द १

(४) मेरी पाटीआ लिखहु हरि गोविन्द गोपाला।
दूजे भाइ फाथे जमजाला। सति गुरकरे मेरी प्रतिपाला। हरि सुख दाता मेरे नाल॥१॥

गुर उपदेसि प्रहलाद हरि उचरै। सासना ते बालक गमु न करे ॥१ ॥ रहाउ।

माता उपदेसै प्रहलाद पिआरे। पुत्र राम ना छोड़हु जीउ लेहु उवारे। प्रहलाद कहे सुनहु मेरी माइ। राम नाम न छोड़ा गुरि दिआ बुझाइ ॥२ ॥

संडा मरका सभि जाइ पुकारे। प्रहलाद आप बिगडिआ सभ चाटड़े बिगाड़े। दुसट सभा महि मन्त्र पकाइआ। प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ ॥३ ॥

हाथ खडग करि धइआ अति अहंकारि। हरि तेरा कहा तुध लए उवारि। खिन महि भैआन रूप निकसिआ थंम उपाड़ि। हरणाखसु नखी विदारिया प्रहलाद लीआ उवारि ॥४ ॥

संत जना के हरि जीउ कारज सवारे। प्रहलाद जन के इकीह कुल उधारे। राग भैरउ महला ३ शब्द २०

(५) तिनि करते इक चलतु उपाइआ। अनहदवाणी शबद सुणाइआ। मनुमुखि भुले गुरमुखि बुझाइआ। कारण करता करदा आइआ। १

गुर का शवद मेरे अन्तरधिआन। हउ कबहु न छोड़उ हरि का नाम। १ रहाउ।

पिता प्रहलाद पड़ण पठाइआ। ले पाटी पाधे के आइआ।

नाम विना नहिं पड़हु अचार। मेरे पटीआ लिख देहु गोविंद मुरारि ॥२ ॥

पुत्र प्रहलाद सिउ कहिआ माइ। परविरति न पड़हु रही समझाइ। निरभउ दाता हरि जीउ मेरे नालि। जो हरि छोड़उ तउ कुल लागे गालि ॥३ ॥

प्रहलाद सभ चाटड़े बिगारे। हमारा कहिआ न सुणे आपणे कारज संवारे। सभ नगरि महि भगति दृड़ाई। दुसट सभा का किछु न बसाई ॥४ ॥

संडे मरके कीई पुकार। सभे दैत रहे झखमारि। भगत जना की पति राखे सोई। कीते कै कहिए क्या होई ॥५ ॥

किरत संजोगी दैत राज चलाइआ। हरि न बुझै तिन आप भुलाइआ। पुत्र प्रहलाद सिउ वाद रचाइआ। अन्धा न बूझै काल नेड़े आइआ ॥६ ॥

प्रहलाद कोठे विचि रखिआ वारि दिआ ताला निरभउ बालक मूल न डरइ मेरे अन्तर गुर गोपाला। कीता होवे सरीकी करै अनहोदा नाउ धराइआ। जो धुरि लिखिआ सो आइ पहुता जन सिउ वाद रचाइआ ॥७ ॥

पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई। कहा तुमारा जगदीस गुंसाई। जगजीवन दाता अन्ति सखाई। जहि देखा तहि रहिआ समाई ॥८ ॥

थंमु उपाड़ि हरि आप दिखाइआ। अहंकारी दैत मार पचाइआ। भगता मनि आनन्द बजी बाधाई। अपने सेवक कउ देवडिआई ॥९ ॥

जंमण मरणा मोह उपाइआ। आवण जाणा करते लिखि पाइआ। प्रहलाद के कारज हरि आप दिखाइआ। भगता का बोल आगै आइआ ॥१० ॥ देव कुली लखमी कउ करहि जैकार। माता नरसिंघ का रूप निवार। लखमी भउ करै न साकै जाइ। प्रहलाद जनु चरणी लागा आइ ॥११ ॥ भगता का अंगीकार करदा आइआ। करतै आपणा रूप दिखाइआ ॥१३ ॥ -भैरउ महला ३ शब्द १। (६) पाधरी छन्द-इह भांत जग दोही फिराइ। जलं वा थलीयं हिरनाछइ ॥२ ॥ प्रहलाद भगत लीनोवतार। सुभ करन काज संतन उधार चटसार पढ़न सौंपिओ नृपाल। पटयहि कहिओ लिखदे गुपाल ॥४ ॥

तोटक-इक दिवस गयो चटसार नृपं। चित चौप रहियो सभ देख सुतं। जु पढ़ियो दिजते सुन ताहि रड़ियो। निरभै सिस नाम गुपाल पढ़ियो ॥५ ॥ सुन नाम गुपाल रिसियो असुरं। बिन मोहि सो कौन भजो दुसरं। दिज याहि धरो सिस आन हनो। जड़ क्यों भगवान को नाम भनो ॥६ ॥ जलं और थलं इक वीर मनं। इह कयहि गुपाल को न म भनं। तव ही इह बांधत थंम भए। सुन स्रवनन दानव वैन धए ॥७ ॥ गहि मूड़ चले सिस मारन को। निकसि ओ जगुपाल उबारन को। चक चौप रहे जन देख सबै। निकसियो हरि फारी कवार जवै ॥८ ॥ लख देव दिवार सबै थहरे। अविलोक चराचर हू हरि रे। गरजे नर सिंघन रात करं। दृग रत कीयो मुख सोण भरं ॥९ ॥ लख दानव भाज चले सब ही गरजियो नरसिंघ रणं जब ही। इक भूपति ठाढ रहियो रण में। गहि हाथ गदा निरभै मन में ॥१० ॥ लरजे सब सूतृपं गरजे। समुहाथ भए भट केहर के।..........११..........

चौपाई-त्याग चले रण को सब बीरा। लाज विसरगी भए अधीरा ॥

हिरनाछस तब आप रिसाना। बांध चलियो रण को करगाना ॥२८ ॥

भरियो रोस नरसिंघ सरूपं। आवत देखि सुमुहिरण भूपं।

निज धावन को रोस न माना। देख सेवकहि दुःखी रिसाना ॥२९ ॥

भुजंग प्रयात-मचियो दुंद जुधं मचे दुऐ जुआणं।

तडंकार तेगं कडक्के कमाणं। फिरियो कम्प कै दानवं सुलताणं।

हडं स्रोणा चले मधि मुल्लताणं ॥३१ ॥ फिरियो सिंघ सूरं करुरं करालं।

कंपाई सटा पूछ फेरी विसालं ॥३३ ॥

दोहरा-गरजत रण नरसिंघ के भज्जे सूर अनेक।

एक टिकियो हिरनाछ तह अवरन योद्धा एक ॥३४ ॥

चौपाई-मुसट युद्ध जुटे भट दोऊ। तीसर ताहि न पिखियत कोऊ।

भए दुहन के राते नैणा। देखत देव तमासे गैणा ॥३५ ॥

असट दिवस असट निस जुद्धा। कीनो दुहन भरन मिल क्रुद्धा।

बहुरो असुर कछुक मुरझाना। गिरियो भूमि जन वृछ पुराना ॥३६ ॥

सींच वार पुन ताहि जगायो। छुटे मूरछा पुनि जी जीया आयो।

वहुरो भए सूर दोऊ क्रुद्धा। मंडिया वहुर आप महिं जुद्धा ॥३७ ॥

भुजंगप्रयात-हलाचाल कै कै पुनर वीर ढूके। मचियो जुद्ध जिउ करण संगं घड़के। नखं पात दोऊ करे दंत घाते। मनो गज्ज जुट्टे वनं मसत माते ॥३८ ॥ पुनर नारसिंघे धरा ताहि मारियो। पुरानो पलासी मनो वाइ डा[illegible]

देवतियों आन के जीत करषं ॥३९ ॥

पाधरी छन्द-कीनो नरसिंघ दुसटं संघार। धरयो विसनू सपतमवतार।

लिंनो सु भगत अपनो छिनाइ सब सृष्टि धरम करम न चलाइ ॥४० ॥

प्रहलाद करयो नृप छत्र फेर। कीनो संघार सब इम अंधेर।

सब दुष्टारिष्ट दिंने खपाइ। पुन लई जोति जोतहि मिलाई ॥४१ ॥

-दसम ग्रन्थ अवतार वर्णन, नरसिंघावतार

इस पाठ का संक्षेप से भाव यह है-हिरण्याक्ष नाम का एक राक्षस था जो ईश्वर को नहीं मानता था। उसके गृह में पुत्ररत्न हुआ, उनका नाम प्रह्लाद रखा गया। यह ईश्वरभक्त था। इसे चटशाला में पढ़ने भेजा, वहां भी ईश्वर का नाम लिखता, पढ़ता था, पिता को पता लगा, वह रुष्ट हुआ, प्रह्लाद को थंभ से बांधा गया। प्रह्लाद की रक्षा के लिए भगवान् नरसिंह रूप में प्रगट हुए। उसका हिरण्याक्ष से युद्ध हुआ। नरसिंह ने हिरण्याक्ष को मार दिया और उसके स्थान पर प्रह्लाद को राज्य तिलक करके राजा बनाया गया। प्रहलाद के २१ कुलों का उद्धार हुआ।

सार यह, कि प्रह्लाद की रक्षा के लिए नरसिंह अवतार हुए। उन्होंने हिरण्याक्ष को मारा।

यह कथा पुराणों में प्रसिद्ध है। पुराणों में नरसिंह अवतार का भी उल्लेख है। हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यपु दो भ्राता थे। दोनों ने देवों को दुःख दिया था, दोनों के मारने के लिए भगवान् के दो अवतार हुए थे। एक वाराह, दूसरा नरसिंह। दोनों अवतारों ने दोनों राक्षसों को मारा था। यह निर्विवाद है। पंडित तारासिंह जी ने गुरु गिरार्थ कोष में लिखा है-

हिरणाखस। दे प्रहलाद के पिता का भाई राखस, प्रहलाद के पिता का नाम हिरणकशिपु था। हिरण सुवरण जैसी बसंती रंग की विलीआं अखां वाला मंनके नाम हिरणाख्य रखा, हिरण सुवरण की सेहजा वाला जाणके नाम हिरण्यकशिपु है। कशिपु सेहजा का नाम है।

सत्यार्थप्रकाश के २१३ पृष्ठ पर लिखा है-"पुनः वे हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यपु उत्पन्न हुए। उनमें से हिरण्याक्ष को वराह ने मारा।......"

अब रहा हिरण्यकश्यप उसका लड़का जो प्रह्लाद था, वह भक्त हुआ था। उसका पिता पढ़ाने को पाठशाला में भेजता था। तब वह अध्यापकों से कहता था कि मेरी पट्टी में राम-राम लिख देओ। जब उसके बाप ने सुना, उससे कहा तू हमारे शत्रु का भजन क्यों करता है? छोकरे ने न माना। तब उसके बाप ने उसको बांधके पहाड़ से गिराया, कूप में डाला, परन्तु उसको कुछ न हुआ। तब उसने एक लोहे का खम्भा आगी में तपाके, उससे बोला, जो तेरा इष्टदेव राम सच्चा हो, तो तू इसको पकड़ने से न जलेगा। प्रह्लाद पकड़ने को चला। मन में शंका हुई, जलने से बचूंगा वा नहीं? नारायण ने उस खम्भे पर छोटी-छोटी चींटियों की पंक्ति चलाई। उसको निश्चय हुआ, झट खम्भे को जा पकड़ा वह फट गया, उसमें से नृसिंह निकला और उसके बाप को पकड़ पेट को फाड़ डाला पश्चात् प्रह्लाद को लाड से चाटने लगा। प्रह्लाद से कहा वर मांग। उसने अपने पिता की सद्‌गति होनी मांगी। नृसिंह ने वर दिया कि तेरे इक्कीस पुरुषे सद्‌गति को गये।"

यह भागवत पुराण की कथा है। यह लिखकर ऋषि ने आगे इसकी समालोचना की है वह समालोचना वहां ही पढ़ें।

पंडित तारासिंह जी और ऋषि दयानन्द जी का मत है कि प्रह्लाद के पिता का नाम हिरण्याक्ष नहीं था। उसका नाम हिरण्यकश्यपु था। और ऐसा ही पुराण में है। नृसिंहावतार ने प्रह्लाद के पिता को मारा था इसलिये नृसिंह ने हिरण्यकश्यपु को मारा था, हिरण्याक्ष को नहीं।

आदि श्री गुरुग्रन्थ जी तथा दसम गुरु ग्रन्थ जी में नृसिंह द्वारा हिरण्याक्ष का मारना जो लिखा है। वह किसी पुराण में नहीं है और ठीक भी नहीं है।

अब यदि कोई कहे कि यह दोनों "गैंडे मार होम जग कीए, हरणाखस नखहि विदारे" पाठ श्री गुरुग्रंथ ही से निकाल दिये जायें, अथवा इन पाठों को बदल दिया जाय तो इस बात को कोई भी न मानेगा क्योंकि **रामराय जी ने "मिटी मुसलमान की"** के स्थान पर दिल्ली में **"मिटी बेईमान की"** पाठ बदला था, गुरु हरराय जी ने उनको गद्दी से पृथक् कर दिया। और गुरु गोविन्दसिंह जी ने सिख दीक्षा आरम्भ की उस दीक्षा में अब तक कहा जाता है-रामराइयों के साथ सिख व्यवहार न करें अर्थात् उनसे रोटी बेटी का सम्बन्ध न करें और **भाई मनीसिंह जी** ने पाठ नहीं कुछ क्रम बदला था। उसे शाप दिया गया कि तूने गुरु देह का अंग-भंग किया है। अतः आपके भी अंग-अंग काटे जायेंगे। **उसके अंग-अंग काटे गए।**

इन ऐतिहासिक घटनाओं के होते हुए न तो कोई व्यक्ति कह सकता है कि इस प्रकार के पाठों में सुधार किया जाय। और न ही यह बात हो सकती है। अर्थात् यह असम्भव है।

जैसे श्री गुरुग्रंथ जी के पाठ बदलने का किसी को अधिकार नहीं है। इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश का पाठ "वेद पढत ब्रह्मा मरे चारों वेद कहानि" के बदलने वा निकालने का भी किसी को अधिकार नहीं है और यह भी निर्णीत है कि यह पाठ क्रमशः इसी भांति श्री गुरुग्रंथ जी में नहीं है और इस भाव का दूसरा पाठ है, जैसा कि मैंने पहले लिखा है।

सत्यार्थप्रकाश के पाठ विषय में जो मैं ठीक समझता हूं और आर्यसमाज का सिद्धान्त है, वह मैंने लिख दिया है, पाठक इस पर विचार करके निश्चय करलें।

अन्य सिद्धान्तों पर भी मैंने सत्यार्थप्रकाश और श्री गुरुग्रंथ जी के पाठ लिख दिये हैं, ताकि पाठकों को समझने में सुविधा हो। इतना लिखकर पुस्तक समाप्त करता हूं और आशा करता हूं कि इससे सिद्धान्त ज्ञान में पाठकों को सहायता मिलेगी।

# विचित्र हमारा मित्र

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली

सामवेद-संहिता-उत्तरार्चिकः - प्रथमोध्यायः - सूक्त १२। ऋषिः - वामदेवः। देवता - इन्द्रः। छन्दः - गायत्री। स्वरः - षड्जः।

**मन्त्र -** कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता॥ ६८२॥

**अर्थ -** प्रश्न-(कया) किस आनन्दमयी (ऊती) रक्षणा से (चित्रः) विचित्र तथा ज्ञानवान् प्रभु (सदावृधः सखा) सदा वृद्धि करने वाला हमारा मित्र (आभुवत्) सर्वथा होवे। उत्तर - (कया) आनन्दमयी (शचिष्ठया) उत्तम ज्ञान कर्म वाणी द्वारा (वृता) वर्तन के द्वारा॥

**पद्यार्थ -**उत्तम किस रक्षा-विद्या द्वारा सखा-विचित्र।
नित्य प्रवर्धन-प्रद सुखद प्रभु हो अपना मित्र॥
प्रभु हो अपना मित्र सदा सुखदा-प्रज्ञा से।
उत्तम वाणी उत्तम-कर्म-योग-सज्जा से॥
करें मधुर व्यवहार तथा बर्ताव मधुर हम।
शुभ सद्वर्धक अग्नि सखा बन जाये उत्तम॥

**महर्षि दयानन्द द्वारा यजुर्वेद २७/३९ में व्याख्यात-**

हे विद्वान्! (चित्र) अद्भुत गुण, कर्म, स्वभाव वाला तू-(सदावृधः) सदा बढ़ने वाले पुरुष का (सखा) मित्र (आ+भुवत्) बन। (कया) किसी (ऊती) रक्षा आदि क्रिया से (नः) हमारी रक्षा कर। (कया) किसी (शचिष्ठया) अत्यन्त श्रेष्ठ (वृता) बर्ताव रूप क्रिया से हमें नियुक्त कर॥

**भावार्थ-**जो अद्भुत गुण, कर्म, स्वभाव वाला विद्वान् सबका मित्र होकर, कुकर्मों से हटाकर हमें सुकर्मों से युक्त करता है, वह हमारे लिये सत्कार के योग्य है।

**मंत्र -** कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः।
दृढा चिदारुजे वसु॥ ६८३॥

**अर्थ-**(कः) कौन सुखरूप प्रजेश (सत्यः) सत्यस्वरूप अविनाशी (मदानां) आनन्दों का (मंहिष्ठः) महानतम दानी (अन्धसः) अन्नरस से (मत्सत्) प्रसन्न करता है। (दृढाचित्) सुदृढ (वसु आरुजे) बाधा दुर्ग को तोड़ देता है।

**पद्यार्थ -**सुख अनुपम है कौन सा है सच्चा आनन्द।
सभी सुखों में जो परम काटे सब दुःख द्वन्द्व॥
काटे सब दुःख द्वन्द्व सुजीवन धारक अन्धस्।
ध्यान योग्य आरोग्य हेतु वासक-जीवन-रस॥
सत्यरूप सुखरूप प्रजापति देव महत्तम।
सोमसुधा से वसुओं से देते सुख अनुपम॥

**महर्षि दयानन्द द्वारा यजुर्वेद २७/४० में व्याख्यात -**

हे विद्वान्! जो (कः) सुखदायक (सत्यः) सज्जनों में श्रेष्ठ (मंहिष्ठः) अत्यन्त महत्त्व से नियुक्त विद्वान्! (त्वा) तुझे (अन्धसः) अन्न-भोजन से (मदानाम्) हर्षों के मध्य में (मत्सद्) आनन्दित करता है, (आरुजे) रोग के लिये औषधों के (चित्) तुल्य (दृढा) दृढ़ (वसु द्रव्यों का संचय करता है- वह हमारा पूजनीय है)॥

**भावार्थ-**इस मंत्र में उपमालङ्कार है। जो सत्य से प्रेम करने वाला, आनन्ददायक विद्वान् परोपकार के लिये-रोग-निवारण के लिए औषध के तुल्य-वस्तुओं का संचय करता है, वही सत्कार के योग्य है॥

**मंत्र -** अभी षुणः सखीनामविता जरितृणाम्।
शतं भवास्यूतये॥ ६८४॥

**अर्थ -** हे प्रभु (नः) हमारी आप (अभि सु अविता) सब ओर से सुन्दर रक्षा करते हो। जब हम आपके (सखीनाम्) सख्यभाव प्राप्त करते हैं। (जरितृणाम्) स्तोता बने हुओं के (शतं ऊतये) शतशः रक्षा से (भवासि) आप तत्पर होते हो॥

**पद्यार्थ-**हम स्तोता तेरे बने सखा बने हर्षाय।
सब प्रकार से आप हैं रक्षक सर्वसहाय॥
रक्षक सर्वसहाय आप शतधा रक्षा को।
हो जाओ सन्नद्ध सजग, हरदो विपदा को॥
शत शत वर्ष आयु भर हो शुभ रक्षक मेरे।
हे परमेश्वर आप सखा, हम स्तोता तेरे॥

**महर्षि दयानन्द द्वारा यजुर्वेद २७/४१ में व्याख्यात-**

हे विद्वान्! क्योंकि तू (नः) हमारे (सखीनाम्) मित्रों और (जरितृणाम्) स्तुति करने वालों का (अविता) रक्षक है और (ऊतये) प्रीति आदि के लिये (शतम्) असंख्य (सु) उत्तम सुख प्रदान करता (भवासि) है, अतः (अभि) सब ओर से पूज्य है॥

**भावार्थ -** जो मनुष्य मित्रों के रक्षक, असंख्य सुख प्रदान करने वाले एवं अनाथों की रक्षा में प्रवृत्त होते हैं, वे असंख्य धन प्राप्त करते हैं॥

जो विद्वान् मित्रों के तथा स्तुति करने वाले अनाथों के रक्षक और मनुष्यों को प्रीति आदि के लिये असंख्य सुख प्रदान करने वाले होते हैं वे सबके पूज्य होकर असंख्य धन प्राप्त करते हैं॥

## आर्षग्रन्थ : उपनिषदों का परिचय... (पृष्ठ दो का शेष)

यह प्रश्नोपनिषद् का वचन है कि सूर्य उदित होते ही अपनी किरणों से समस्त दिशाओं और ऊपर-नीचे सब स्थानों के प्राणवायु को खींच लेता है। यही कारण है कि सूर्योदय से पूर्व उठने वाले जिस स्फूर्ति व ताजगी का अनुभव करते हैं, वह देर से उठने वालों को प्राप्त नहीं होती और उन्हें आलस्य घेरे रहता है। अतः निद्रा के विषय में भी पशु-पक्षी मनुष्य से अच्छे हैं, समान नहीं। ईशोपनिषद् की गणना दस उपनिषदों में एक ऐसी महत्त्व की वृत्तिरूप में होती है जो स्वामी दयानन्द की सम्मति में सर्वाधिक प्राचीन तो है ही स्वयं वेद का ही एक अंश होने से परम प्रामाणिक भी है। भारत के पौराणिक विद्वानों को छोड़कर विद्वत् संसार के प्रकाण्ड पंडितों में इस बात को लेकर कोई मतभेद नहीं है कि दस उपनिषद् ही प्राचीन तथा वास्तविक हैं। वस्तुतः ईशोपनिषद यजुर्वेद का ही एक भाग है, अतः महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्य में इस उपनिषद् के मंत्रों पर एक मूल्यवान एवं प्रामाणिक भाष्य हमें उपलब्ध है। किन्तु दार्शनिक, प्रोफेसर गुरुदत्त जी द्वारा लिखी हुई इस उपनिषद् की व्याख्या का भी अपना महत्त्व है और जिस व्यक्तिने इसे एक बार खुले दिमाग से पढ़ा है, वह यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता कि व्याख्या उनकी सर्वोत्तम कृति है। मन्त्रगत भावों को व्याख्यात करने की मौलिकता तथा उनके प्रतिपाद्य का विवेचन उनका नितांत अपना है। उनकी भाषा उत्कृष्ट है तथा तर्क उच्चकोटि के हैं। अब तक प्रकाशित होने वाले उपनिषदों की संख्या २३३ है परन्तु प्रामाणिक उपनिषद् ११ ही हैं। इनके नाम है - ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक तथा श्वेताश्वेतर। ग्यारहवां उपनिषद् श्वेताश्वतर भी स्वीकार किया गया है।

आओ हम एक दृष्टि डालें कि शाखाएं क्या हैं? व्याख्या को शाखा कहते हैं। प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा लिखित वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ अर्थात् शाखाएं अथवा शाखा ग्रन्थ ११२७ हैं, लेकिन आज भारत में केवल १० शाखाएं ही उपलब्ध हैं, यदि ये सभी ११२७ शाखाएं होती तो आधुनिक आविष्कारों का श्रेय विदेशियों को कभी नहीं मिल पाता। ये दस शाखाएं इस प्रकार से हैं- (१) ऋग्वेद की शाकल शाखा। (२) यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा (३) यजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा (४) यजुर्वेद की काण्व शाखा (५) यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा (६) सामवेद की जैमिनि शाखा (७) सामवेद की राणायनि शाखा (८) सामवेद की कौथम शाखा (९) अथर्ववेद की शौनक शाखा (१०) अथर्ववेद की पिप्पलाद शाखा। इन ११२७ सभी शाखाओं में भी वेद को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया है।

अर्थवेद के इतिहास की ओर जब दृष्टि करते हैं तब मुण्डक उपनिषद बतलाती है कि अर्थवेद तक ब्रह्मविद्या के प्रथम गुरु महर्षि ब्रह्मा जी हुए हैं जिन्होंने कि मनुष्य जाति को अर्थ और परमार्थ के उत्तम रत्नों से सुभूषित कर दिया था। कठोपनिषद् में यमाचार्य कहते हैं कि हृदय की एक सौ नाड़ियों में एक नाड़ी ऊपर को अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र की ओर जाती है। मुक्त जीव की आत्मा इस नाड़ी के द्वारा शरीर से निकलकर मोक्ष पथ पर बढ़ जाती हैं। अन्य जो इन सांसारिक विषयों में फंसे रहते हैं उनकी आत्मा भिन्न स्थानों से जाती है, अतः मुक्ति का प्रश्न ही नहीं उठता, वे तो जन्म-मरण की चक्री में घूमते रहते हैं। अतः जो नर-नारी वैदिक साहित्य के उपदेश को जीवन में संजोयेंगे वे मोक्ष पद के अधिकारी होंगे। उपनिषद् ने स्पष्ट किया है कि वेद ब्रह्म का उपदेश करने वाले ग्रन्थ हैं। उपनिषदों के अनुसार वेद में ऊंचा आध्यात्मिक ज्ञान भरा हुआ है और स्वयं उपनिषदें भी वेदों के आध्यात्मिक ज्ञान का ऋषियों द्वारा अपनी भाषा में व्याख्यानमात्र हैं।

# आचार्य दयानन्द का निधन

आचार्य दयानन्द जी का जन्म १९४५ को ग्राम फरटिया केहर में स्व० श्री चेतराम आर्य के घर हुआ। इनके पिता सरल एवं त्यागी स्वभाव के व्यक्ति थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने पैतृक गांव में ही हुई। ये बाद में अच्छी शिक्षा ग्रहण करने के लिये गुरुकुल झज्जर चले गये। वहां इन्होंने ब्रह्मचारी रह करके आचार्य तक की शिक्षा ग्रहण की। आचार्य दयानन्द बचपन से ही होनहार छात्रों में गिने जाते थे। इनका सारा जीवन समाजसुधार एवं धार्मिक कार्यों में व्यतीत हुआ। बचपन से ही इन्होंने आर्यसमाज में प्रवेश ले लिया था। आर्यसमाज लोहारू के कर्णधार स्वर्गीय स्वामी ईशानन्द जी के परम (सेवकों) शिष्यों में गिने जाते थे। इन्होंने १९६९ से १९८० तक ग्राम-ग्राम में योग शिविर लगाकर अनेक छात्रों को यज्ञोपवीत देकर हजारों छात्र आर्यसमाजी बनाये थे तथा आर्य योग शिविरों में अपना पूरा-पूरा योगदान दिया था। स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश के कट्टर समर्थक माने जाते थे। इन्होंने अपना सारा जीवन समाजसुधार एवं धार्मिक शिक्षाओं में व्यतीत किया। इनके दिल में स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति बहुत सहानुभूति थी और महर्षि को सच्चा समाजसुधारक एवं त्यागमूर्ति मानते थे। स्वामी जी के कहे हुए मार्ग पर आप तो चलते ही थे लेकिन औरों को भी चलाने की प्रेरणा देते थे। आर्यसमाज के संस्थापक को वे सच्चा देशभक्त एवं चारों वेदों का ज्ञाता मानते थे। इनका जीवन बड़ा ही सरल स्वभाव का था। यह न किसी से वैर रखते थे और न ही किसी से ज्यादा दोस्ती। ये हमेशा कहा करते थे कि न इतना मीठा बनो दुनिया तुम्हें खा जावे और न ही इतने कड़वे बनो जो दुनिया तुम्हारे मुंह पर थूके। आर्यसमाज को अपना सच्चा घर मानते थे। शराबखोरी, दहेज, गोहत्या के कट्टर विरोधी थे। गृहस्थी होकर भी ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। मैं आचार्य दयानन्द जी के बहुत नजदीकी मित्रों एवं शिष्यों में हूं। मैं भी इनकी ही शिक्षाओं से आर्य बना। इन्होंने मुझे आर्य बन जाओ कहा तो मैं तुरन्त इनकी शिक्षा मानकर इन्हीं के हाथों से यज्ञोपवीत संस्कार कराकर आर्य बना और जनेऊ धारण किया। मैं इनका जीवन अच्छी तरह देखा करता था। आचार्य जी सबको एक दृष्टि से देखा करते थे। इनके दिल में कभी भी ऊंच-नीच की बात नहीं आई। इन्होंने जीवन में कभी एक रुपये की भी रिश्वत नहीं ली। ये कहा करते थे कि भगवान् के दिए हुये अपने दो हाथों से भी हम अपना पेट नहीं भरेंगे तो दूसरे के सौ हाथों से हम अपना पेट कैसे भर सकेंगे। इनके विचार थे कि दूसरे की कमाई से हम महान नहीं बन सकते। आचार्य जी अनपढ़ता को एक अभिशाप मानते थे। स्वर्गीय आचार्य जी का शुरू से ही एक सोच थी कि जब तक हमारा समाज पढ़ा-लिखा नहीं होगा तब तक हम महान् नहीं बन सकते। महान् बनने के लिए हमारे समाज को पढ़ाना अति आवश्यक है। फिर उन्होंने ग्राम-ग्राम, नगर-नगर ढाणी मोहल्लों में साइकिल पर सवार होकर लोगों को एकत्र करके उनको अक्षरज्ञान सिखाया करते थे। आचार्य जी ने सर्विस में होते हुए भी अनेक सामाजिक कार्य किये। जब भी समय मिलता अपनी साइकिल उठाई उस पर चौक ब्लैकबोर्ड रखा घर-घर गली-गली में पढ़ाने निकल पड़ते थे। इनका जीवन साधु-महात्माओं के समान त्यागमय था। फरवरी २००६ में सेवानिवृत्त होने वाले थे। उसके बाद अपना सारा जीवन समाजसेवा में लगाना था, लेकिन क्या करें भगवान् को यही मंजूर था। १ अक्तूबर शनिवार के दिन यह होनहार सेवक हमारे से विदा कर दिया। हम आचार्य जी के जाने का सदमा कदापि नहीं भुला पायेंगे। और हम उस परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो हमको इतनी शक्ति दे कि उनके अधूरे कार्य हम पूरा कर सकें। आचार्य दयानन्द के अचानक निधन से आर्यसमाज एवं को-आपरेटिव बैंक की बहुत बड़ी क्षति हुई है। इनके कार्यों की भरपाई करना हमारे लिए एक बहुत बड़ी चुनौती होगी। मैं कई बार ऐसे सोचा करता हूं कि परमात्मा क्या ऐसे महान् व्यक्तियों को धरती पर नहीं रहने देते तब मेरे दिल में ख्याल आता है कि जो देता है वह लेता भी है। इस बात को याद करके मैं मेरी संतुष्टि कर लेता हूं।

आचार्य दयानन्द जी का जीवन एक मिशाल है इन्होंने कभी जीवन में शराब, बीड़ी, सिगरेट, मांस आदि का सेवन नहीं किया। हमेशा सादा शाकाहारी भोजन ही करते थे। इनके पीछे परिवार में पत्नी, एक लड़का, एक लड़की हैं। इनके बच्चे भी पिता जी की तरह सरल स्वभाव एवं होनहार हैं। उस परमपिता परमात्मा से विनती करता हूं कि हे प्रभो इनके बच्चों को इतनी शक्ति दे कि अपने पिताजी के बताए हुए मार्ग पर चलकर इनके पिताजी के स्वप्नों को साकार कर सकें।

सेवक-**हवासिंह आर्य आर्यमित्र,** आर्यसमाज लोहारू, भिवानी (हरयाणा)



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित (दूरभाष : ०१२६२-२७७८०१)
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरण संख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७६८७४

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२







आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती





ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार — सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२ अंक ४५ २१ अक्तूबर, २००५ वार्षिक शुल्क १०० रुपये विदेश में २० डॉलर एक प्रति २.००

# राष्ट्रभाषा हिन्दी की दुर्दशा के लिए देश के राजनेता तथा राजनीतिक पार्टियां जिम्मेदार

हिन्दी देश की राजभाषा है, राष्ट्रभाषा है। संविधान में इसे राजभाषा का स्थान प्राप्त हुए ५२ वर्ष हो गए हैं। संसार में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं की दृष्टि से चीनी भाषा और अंग्रेजी के बाद इसे तीसरा स्थान प्राप्त है। विश्व के भाषाई मानचित्र (न्यूयार्क) के अनुसार हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है जबकि चीनी भाषा को उसके अनेक रूपों के कारण दूसरा स्थान दिया गया है। नेपाल में भी हिन्दी बोली जाती है, संभवत: हिन्दी बोलने वाले नेपाली से भी अधिक हैं। हिन्दी के द्वारा इस्लामाबाद, काबुल तथा ढाका में भी बातचीत की जा सकती है। मॉरीशस, फिजी तथा ट्रिनिदाद में भी हिन्दी का व्यवहार होता है। यहां तक कि वहां विश्व हिन्दी सम्मेलन भी हो चुके हैं किन्तु अपने ही देश में हम हिन्दी को उचित स्थान नहीं दे पाए हैं। स्वाधीनता के ५८ वर्ष बाद भी हम इसे राजभाषा नहीं बना पाए हैं। सरकारी कामकाज से लेकर प्रशासन तथा निजी क्षेत्रों में सभी जगह अंग्रेजी का वर्चस्व है। शिक्षा, उच्चतर शिक्षा, नव्य ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन आदि क्षेत्रों में अंग्रेजी का वर्चस्व है।

यद्यपि देश की समस्त सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक गतिविधियां हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में संचालित होती हैं, देश की जनता से सम्बंध भारतीय भाषाओं में होता है फिर भी देश पर अंग्रेजी हावी है। अंग्रेजी देश में किसी भी प्रदेश, प्रांत, जिले अथवा ग्राम की भाषा नहीं है। फिर भी यह देश पर हावी है। प्रतिवर्ष देश में विभिन्न संस्थाओं द्वारा हिन्दी के उपलक्ष्य में आयोजन किए जाते हैं क्योंकि सरकारी कामकाज में, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों/निगमों/उपक्रमों एवं कार्यालयों में अब भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग/इलाहाबाद के पिछले ५ वर्ष के कार्यक्रमों पर नजर डालें तो स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। सम्मेलन द्वारा १३-१४ सितम्बर ९७ को लुधियाना (पंजाब) में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा सम्मेलन में हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की मांग की गई। सम्मेलन द्वारा ३०-३१ मई १९९८ को सोलन (हिमाचल) में आयोजित 'राष्ट्रभाषा सम्मेलन' का भी वही लक्ष्य था। वर्ष १९९९ में हिन्दी की ५०वीं वर्षगांठ पर सम्मेलन द्वारा १० से १४ सितम्बर ९९ तक इलाहाबाद में ५ दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। उसका मुख्य बिंदु था कि पिछले ५० वर्षों में हिन्दी कहां से कहां पहुंची? इसी प्रकार १३-१४ सितम्बर २००० को सम्मेलन द्वारा आंध्रप्रदेश के नेल्लोर जिले में अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसी प्रकार २-३ जून २००१ को देहरादून में सम्पन्न हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (१२ सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-३) के वार्षिक अधिवेशन का मुख्य विषय था। २०वीं सदी की उपलब्धियां, २१वीं सदी की चुनौतियां राष्ट्रभाषा हिन्दी के संदर्भ में। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा गोवा में आयोजित अपने ५२वें वार्षिक अधिवेशन में १८ मार्च २००१ को गोष्ठी का विषय रखा गया-'२१वीं शताब्दी में हिन्दी और भारतीय भाषाओं का भविष्य।' इस प्रकार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुख्य बिंदु है हिन्दी की प्रतिष्ठापना तथा भारतीय भाषाओं का सम्मान।

आखिर ऐसा क्यों? इसका कारण है देश में अंग्रेजी का वर्चस्व। सरकार, प्रशासन, राजकाज, विज्ञान, चिकित्सा, प्रबंधन, प्रौद्योगिकी, विधि एवं न्याय आदि महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अब भी अंग्रेजी का वर्चस्व जारी है। अंग्रेजी दिनोंदिन समाज और शासन का केन्द्र बिंदु बनती जा रही है। हिन्दी और भारतीय भाषाओं की उपेक्षा हो रही है जबकि इनके जानने वाले पूरे देश के लोग हैं। हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों की प्रसार संख्या भी अंग्रेजी के पत्रों से अधिक है। टी.वी. चैनलों पर हिन्दी का प्रसारण भी अंग्रेजी से अधिक होता है फिर भी सरकारी विज्ञापनों का ६०-७०% भाग अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं को दिया जाता है। लंदन में छठा, विश्व हिन्दी सम्मेलन (१४-१८ सितम्बर ९९) हो सकता है और हमारे अधिकारी तथा भारत सरकार के प्रतिनिधि वहां जाकर हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने की बात कर सकते हैं किन्तु अपने ही देश में वे हिन्दी को उचित स्थान देने को तैयार नहीं। आज कम्प्यूटर और इंटरनेट की हमारी अपनी कोई भाषा नहीं। एक रिपोर्ट के अनुसार इंटरनेट के लगभग ८० करोड़ पेजों में हिन्दी के १०० पृष्ठ भी नहीं हैं। चीन ने अपनी भाषाओं के लिए 'इंटरनेशनल कम्यूनिकेशन' नामक कंपनी के सहयोग से चाइना इंटरनेट तैयार कर लिया है किन्तु हमने हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को कम्प्यूटर तथा इंटरनेट पर लाने के लिए कोई काम नहीं किया?

इस सारी स्थिति तक हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को इस मुकाम पर पहुंचाने के लिए देश के शासक, राजनेता तथा राजनीतिक पार्टियां जिम्मेवार हैं। सबसे पहले कांग्रेस पार्टी इसके लिए जिम्मेवार है। उसके नेताओं ने यह प्रावधान करवा लिया कि संविधन लागू होने के १५ वर्ष बाद तक अर्थात् १९६५ तक हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी भी जारी रहेगी। राजभाषा विधेयक १९६३, १९६७ तथा १९७६ पारित किए गए और उनमें यह व्यवस्था कर दी गई कि जब तक सभी प्रदेश या प्रांत हिन्दी के प्रयोग का प्रस्ताव पास करके केन्द्र सरकार को नहीं देते जब तक अंग्रेजी जारी रहेगी। यह सब कांग्रेस पार्टी के शासनकाल में हुआ। कांग्रेस ने केन्द्र में अपने ४०-४५ साल के शासनकाल में हिन्दी को राजभाषा का वास्तविक स्थान दिलाने के लिए कुछ नहीं किया। अन्य पार्टियां भी इसके लिए जिम्मेवार है। कांग्रेस के अलावा संयुक्त मोर्चा आदि की जो भी सरकार केन्द्र में आई, उनमें किसी ने भी हिन्दी को राजभाषा का वास्तविक स्थान दिलाने का प्रयत्न नहीं किया। सबको अपने-अपने राजनीतिक स्वार्थ तथा वोट बैंक प्रमुख थे, राष्ट्रभाषा तथा भारतीय भाषाओं की बात गौण थी। यद्यपि स्वाधीनता की लड़ाई हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के माध्यम से लड़ी गई थी किंतु आजादी के बाद इनकी महत्ता गौण

(शेष पृष्ठ ७ पर)

# आर्य जाति के छिलते हुए तलुओं, टूटती हुई अंगुलियों और कटते हुए पाँव की रक्षा कीजिए

-सत्यश्रवा

महर्षि दयानन्द एक दूरदर्शी महापुरुष थे। राजस्थान के रजवाड़ों में धर्मप्रचार करते हुए जीवन के अंतिम दिनों में वे उदयपुर पधारे। उदयपुर के चारों ओर वीरशिरोमणि महाराणा प्रताप की सेना के योद्धा, भील जनजाति के वंशज बहुतायत में निवास करते हैं। इन्हीं भीलों के देशभक्त पूर्वजों ने अपने बाणों के अचूक निशानों से हल्दीघाटी के ऐतिहासिक युद्ध में मुगल सेना के छक्के छुड़ा दिये थे और समस्त घाटी को शत्रु सैनिकों की लाशों से पाट दिया था। खेद है कि इस वीर जाति के वंशज आज अशिक्षा, अंधविश्वासों, व्यसनों, कुरीतियों और गरीबी की मार से मजबूर होकर लोभ लालच और डर के वशीभूत हो धड़ाधड़ ईसाई बनते जा रहे हैं।

महर्षि ने आज से सवा सौ वर्ष पहले ही इस बात को समझ लिया था और अपने देश की इस वीर जाति की यह दुर्दशा देखकर उन्हें मर्माहत पीड़ा होती थी। एकदिन एक श्रद्धालु ब्राह्मण शिष्य के सामने अपनी पीड़ा को महर्षि ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया था -

''आपको पेंशन मिलती है। उसमें पुत्र-पौत्र का परिपालन भलिभांति हो सकता है। आप ब्राह्मणवंशीय हैं। पूर्वकाल में आप के पुरातन पुरुष जगद्गुरु समझे जाते थे। वे जगदुपकार में जी-जान से लगे रहते थे। आपके लिए भी उनके चरण-चिह्नों पर चलना उचित है। अपने पूर्वजों की भांति परोपकार का व्रत धारण कीजिए और कटि बांधकर भीलों की बस्तियों में चले जाइये। वे दिनोंदिन, धड़ाधड़ ईसाई होते चले जा रहे हैं। उन्हें अपनी इच्छानुसार ईश्वर भक्ति का उपदेश देकर किसी प्रकार ईसाईयों के पंजे से बचाइए। आर्यजाति के छिलते हुए तलुओं की टूटती हुई अंगुलियों की और कटते हुए पांव की रक्षा कीजिए।''

उस ब्राह्मण के तो ऐसे भाग न थे जो ऋषि वचनों को सुनता परन्तु एक युवा भील ने उन्हीं दिनों स्वामी जी के दर्शन किये। उनसे दीक्षा ली और उनके आदेश से बांसवाड़ा के निकट माही नदी के बीहड़ों में बसे सैंकड़ों ग्रामों में अपने भील भाइयों को शराब-मांस, बालविवाह, बहुविवाह, आदि दुर्व्यसनों, बलिप्रथा जैसे अंधविश्वासों तथा हत्या, चोरी आदि अपराधों से दूर करने का बीड़ा उठाया। गोविंद गुरु नामक इस भील ने ग्राम-ग्राम में हवन करने की प्रथा भी डाली। इस प्रकार गोविंद ने महर्षि दयानंद के आदेश का जन्म-भर पालन किया। आज भी इस क्षेत्र के ग्रामीण गोविंद गुरु की देवता के समान पूजा करते हैं।

पिछली शताब्दी के मध्य में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक युवक भरी जवानी में उत्तरप्रदेश के इटावा जिले से आकर कुछ समय तक मालवा क्षेत्र में रहकर भील क्षेत्र में आया। आजन्म बांसवाड़ा, कुशलगढ़ तथा झाबुआ जिले में बामनिया गांव में डेरा डालकर भीलों में शिक्षा का प्रचार किया, इन्हें कुरीतियों और अंधविश्वासों से बाहर निकाला, रजवाड़ों तथा सेठ साहूकारों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों तथा बेगार से मुक्ति दिलाई तथा शराब और मांस छोड़ने का संकल्प लेने वाले लाखों भीलों को यज्ञोपवीत (जनेऊ) दिये। इसके साथ-साथ इनकी अशिक्षा से लाभ उठाकर, लेन-देन में ठगी और बेईमानी करने वाले सेठों, साहूकारों, बनियों के अत्याचारों से भी इन्हें सावधान किया। इससे यहां के दुकानदार इनके विरोधी हो गए। भील युवकों में अन्याय के लिए एकजुट होकर खड़ा होने का साहस भी स्वनाम धन्य मामा बालेश्वरदयाल नामक इस महापुरुष ने पैदा किया। इनके हितों की खातिर मामाजी ने पं० जवाहरलाल नेहरू तथा श्रीमती इंदिरा गांधी से भी टक्कर ली और अनेक मांगें मनवाई।

भील समुदाय के आराध्य मामा जी का ६ वर्ष पूर्व ही देहावसान हुआ है। बामनिया गांव में उनके आश्रम में स्थापित प्रतिमा पर प्रतिवर्ष भारी मेला लगता है, जिसमें हजारों स्त्री-पुरुष रंगारंग पोशाकों में सज धजकर, ढोल नगाड़ों के साथ सम्मिलित होते हैं और मामा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। फसल को घर में ले जाने से पहले उसका कुछ भाग प्रत्येक भील परिवार मामाजी की प्रतिमा पर अवश्य चढ़ाता है।

परन्तु आज उदयपुर, चित्तौड़, रतलाम, झाबुआ तथा धार आदि जिलों में बहुसंख्या में बसने वाले भील और भिलाला जाति के इन दीन दुखियों, दरिद्रनारायणों की न तो दयानंद के आर्यसमाज ने और न ही विश्व हिन्दू परिषद आदि संस्थाओं ने विशेष सुध ली है। कुछ काम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के थांदला (झाबुआ), बांसवाडा तथा कुशलगढ़ आश्रमों द्वारा छात्रावासों, विद्यालयों, बालबाड़ियों इत्यादि के माध्यम से तथा वनवासी कल्याण आश्रम और सेवा भारती द्वारा संचालित सैंकड़ों एकल विद्यालयों एवं अन्य प्रकल्पों के माध्यम से अवश्य हो रहा है। इसकी प्रशंसा होनी ही चाहिए। परन्तु यह सब काम ऊँट के मुंह में जीरे के समान है।

यह समूचा क्षेत्र इतना विस्तृत, काम इतना विशाल और समस्या इतनी विकट है कि इसका समाधान युद्धस्तर पर, सुनियोजित योजना बनाकर, विद्युतगति से चलने पर ही संभव है। इस क्षेत्र में आर.एस.एस. की भारी शक्ति है, उनके पास बड़ी संख्या में समर्पित कार्यकर्ता भी हैं। इस क्षेत्र के रतलाम, नागदा, कोटा, उज्जैन, इंदौर, महू, बांसवाडा, उदयपुर इत्यादि नगरों में समृद्ध आर्यसमाज हैं, विशाल भवनों वाले आर्य विद्यालय हैं तथा चित्तौड़गढ़ और होशंगाबाद में गुरुकुल भी हैं। उदयपुर में श्रीमद्दयानंद सत्यार्थप्रकाश न्यास जैसी सुदृढ़ संस्था भी है। आर्यसमाज और आर.एस.एस. की विविध संस्थाएं यदि मिलजुल कर अथवा अलग-अलग ही सही, सुनियोजित तरीके से इस क्षेत्र की तरफ ध्यान दें तो वीर जाति के ईसाईकरण से बचाया जा सकता है। अन्यथा जैसा कि एक सरकारी रिपोर्ट के हवाले से नई दुनिया इंदौर ने ११-७-२००५ के समाचार में बताया है, दस वर्षों में झाबुआ जिले में ईसाइयों की जनसंख्या ८०% बढ़ी है। अगले दस वर्षों में यह जनसंख्या पुनः इतनी ही और बढ़ जाएगी।

महर्षि की उपर्युक्त मर्मान्तक पीड़ा से प्रभावित होकर मामा बालेश्वरदयाल की कर्मभूमि रहे इस क्षेत्र के सबसे पिछड़े और निर्धन भीलबहुल झाबुआ जिले के बामनिया गांव में एक नवगठित परोपकारी न्यास ने भील छात्रों के लिए एक छात्रावास आरंभ किया है। इस छात्रावास में नाममात्र का शुल्क देकर निर्धन छात्रों को निवास, भोजन, शिक्षा सहायता तथा भारतीय संस्कृति के अनुरूप संस्कार देने की व्यवस्था की गई है, ताकि ये छात्र स्वयं तथा अपने गांव वालों को ईसाई होने से बचा सकें। इस छात्रावास को एक सेवाभावी सेवानिवृत्त प्राचार्य दिल्ली से आकर अपनी सेवाएं मानदरूप में दे रहे हैं। अन्य सेवाभावी महानुभावों का भी स्वागत है। उदारमना, धर्मप्रेमी, दानी महानुभावों, आसपास के सामाजिक संगठनों, आर्यसमाजों तथा परोपकारी न्यासों को भी इस पुनीत कार्य में सहायता के लिए आगे आना चाहिए।

आओ हम ऋषिवर की पीड़ा को समझें, अपने भील भाइयों को ईसाइयों के चंगुल से बचाएं और इन दरिद्रनारायणों की सेवा हेतु आगे आकर आशीर्वाद दें।

ईश्वर करे! भीलों में से ही कोई गोविंद गुरु बनकर सामने आए तथा कोई मामा बालेश्वरदयाल पुनः इस क्षेत्र को अपनी कर्मभूमि बनाए। तभी ''आर्य जाति के छिले हुए तलुओं की, टूटती हुई अंगुलियों की और कटते हुए पांव की रक्षा हो सकेगी।''

## 'मौन' का माहात्म्य

वाचनिक मौन धारण करना, मुनि बनने का उपाय है।
चिंतन, मनन का अवसर देता, साधना में करता सहाय है।
शांत, गंभीर व मौन रहना, वैराग्य प्राप्ति में सहायक है।
हास-परिहास, व्यंग्य करना, योगाभ्यास में महाबाधक है।
अप्रासंगिक अनावश्यक वाणी, गंभीरता नष्ट कराती है।
तन-मन में चंचलता बढ़ाती, अध्यात्म-पथ से गिराती है।
योगनिष्ठ साधक बनकर, 'मौनव्रत' का निर्धारण करें।
योगमार्ग में प्रविष्ट होकर, काम-क्रोध का निवारण करें।
ईश्वर के ध्यान में एकाग्रचित्त होना, यही सच्चा योग है।
यम नियम का पालन करना, योग में देता सहयोग है।
यथासम्भव मौन रहना, योगानुष्ठान में अति उपयोगी है।
सुसंस्कारों को जागृत करता, 'विवेक' प्राप्ति में सहयोगी है।
वाचनिक मौन का पालन करते, मन से भी सदा शांत हो।
ईश्वरभक्ति में निमग्न हो चित्त, प्रसन्न और प्रशांत हो।

## 'मौन' धारण कर क्या करें ?

१. ईश्वर के गुणों का चिंतन करें एवं परमात्मा का ध्यान करें।
२. ओ३म् अथवा गायत्री आदि मंत्रों का अर्थ सहित जाप करें।
३. सद्ग्रंथों का स्वाध्याय करें एवं तदनुसार आचरण करें।
४. यदि ध्यान, जप एवं स्वाध्याय भी न कर सकें तो धार्मिक भावनाओं को धारण करते हुए सेवा, परोपकार करें किंतु मन में काम, क्रोध, राग, द्वेष का न कभी विचार करें।

-ब्र० प्रशान्त आर्य, दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़
सागपुर, जि० साबरकांठा (गुजरात)

# मनुष्य वही है जो प्राणिमात्र के लिए मरे

वेद कहता है "**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**" सारे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ, सदाचारी, सभ्य, ईमानदार, परोपकारी, धार्मिक) बनाओ और शास्त्र कहता है कि "**वसुधैव कुटुम्बकम्**" सारा विश्व एक परिवार है इसलिए हे! संसार के पुरुषो तुम बिना किसी वैरभाव रखे, प्रेमपूर्वक, मिलजुलकर सुख व शांति से एक परिवार की भांति रहो। यहां तक तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की यह पंक्ति "**मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे**" बिल्कुल सही है किन्तु शास्त्र इससे भी आगे बढ़कर यह कहता है कि "**आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः**" सब प्राणियों की आत्मा को जो व्यक्ति अपनी आत्मा के समान समझता है वही पंडित या विद्वान् है। इसी बात को व्यास जी ने अपने शब्दों में कहा है "**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्**" जो व्यवहार हम दूसरों से नहीं चाहते वैसा हम भी दूसरों के प्रति न करें। वेद इसी उदार मानवता की भावना को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहता है "**माता भूमि :पुत्रोऽहं पृथिव्याः**" भूमि हमारी माता है और हम सब उसके पुत्र हों। पृथ्वी पर जितने भी प्राणी, यहां तक कि पेड़-पौधे भी सभी एक पृथ्वीमाता के पुत्र होने के नाते सभी परस्पर भाई-बहन हैं, इसलिए भाई बहन की भांति एक दूसरे का हित चिंतन करते हुए प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करो। इन मंत्रों के उपदेश से मानव की उदारता व विशालता की सीमा और भी बढ़ जाती है। वेदों में मित्रता के भाव को भ्रातृभाव से कम नहीं आंका गया। वेद का यह मंत्र इसी भाव की ओर संकेत करता है। "**मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे।**" तुम सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखो और सब प्राणी भी तुम्हें मित्र की दृष्टि से देखें। इन ऊंचे भावों व शिक्षाओं के मंत्रों को जीवन में धारण करने से मानव, महामानव बनता हुआ देवत्व व ऋषित्व को प्राप्त हो जाता है। जो व्यक्ति मानवता के गुण जैसे दया, करुणा, परोपकार, उदारता, सहृदयता, निष्पक्षता आदि को अधिक से अधिक अपने जीवन में धारण करता है, उसका जीवन उतना ही पवित्र व आदर्श तो बनता ही है साथ ही उसको प्रतिफल के रूप में वह लोगों की दृष्टि में उतना ही अधिक आदर व सम्मान पाने का पात्र बनता है।

वैसे तो इस पवित्र भारतभूमि पर सहस्त्रों महापुरुष, संत, महात्मा, स्वामी, ऋषि, महर्षि हुए हैं। सभी जीवमात्र से प्रेम व स्नेह रखने वाले हुए हैं कारण हृदय की उदारता के बिना कोई भी व्यक्ति महापुरुष, संत, महात्मा, ऋषि व महर्षि बन ही नहीं सकता फिर भी हम अपने देश के गौरवमय इतिहास को गहराई से देखते हैं तो हमारे समक्ष दो ऐसे महापुरुष उपस्थित होते हैं जिनका पूरा जीवन ही प्राणिमात्र की सेवा व रक्षा के लिए समर्पित था। वे हैं महात्मा बुद्ध और महर्षि दयानन्द।

महात्मा बुद्ध अपने बचपन काल से ही किसी वृद्ध, दुःखी, अपाहिज को देखता था तो उसका हृदय द्रवित व दुःखी हो उठता था और यह दुःख क्यों होता है? इसका कैसे निवारण किया जा सकता है? इन्हीं सोच-विचारों में वह चिंतित रहता था। कितनी ही घटनाएं हैं जिनको देखकर बुद्ध का हृदय दुःखित व व्यथित हो उठा था। कभी किसी वृद्ध को कमर झुकाये चलते देखकर, कभी कुष्ठ रोगी को तो कभी मृत व्यक्ति को ले जाते हुए देखकर। परन्तु सबसे अधिक दुःख व पीड़ा उसको तब हुई जब उसने किसी यज्ञ में ब्राह्मणों द्वारा पशुबलि देते हुए देखा। बुद्ध से नहीं रहा गया और ब्राह्मणों (यज्ञकर्ताओं) से पूछा कि आप यज्ञ को सर्वोत्तम कर्म कहते हो, तब इन निर्दोष व मूक पशुओं को मारकर यज्ञ में क्यों डालते हो। ऐसा दुष्कर्म करने से तुम्हारा यह यज्ञ कर्म सर्वोत्तम कैसे हुआ? किसी जीव के प्राण लेना तो दुष्कर्म व पाप है। ब्राह्मणों ने कहा कि यज्ञों में पशुबलि देना तो वेदों में लिखा है। तब बुद्ध ने कहा कि मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता जिसमें किसी निरपराध जीव की हत्या करने लिखी हो। फिर पंडितों ने कहा कि वेद तो ईश्वरीय वाणी है, उसकी आज्ञा का पालन न करना धर्म विरुद्ध है। तब बुद्ध ने कहा कि जो सब प्राणियों का पिता कहलाकर, वह अपने ही एक पुत्र से अपने ही दूसरे पुत्र का वध करवाता है, जबकि उसे रक्षा करने का आदेश देना चाहिए। ऐसे अन्यायी व पक्षपाती ईश्वर को भी मैं नहीं मानता। चाहे ब्राह्मणों के गलत उत्तर से बुद्ध ने गलत निर्णय लिया परन्तु इससे यह तो सिद्ध ही होता है कि महात्मा बुद्ध किसी भी प्राणी की हिंसा होने के कितने सख्त विरोधी थे और हर प्राणी के प्रति उनके हृदय में कितना अधिक प्यार था जिनकी रक्षा के लिये उसने ईश्वर तक को भी चुनौती दे डाली। यह महात्मा बुद्ध के उदार हृदय का ही परिणाम था जिससे बौद्ध धर्म का प्रचार सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि बाहर के देशों चीन, जापान, तिब्बत, ब्रह्मा व लंका आदि में भी बहुत तीव्र गति से हुआ।

दूसरे महापुरुष हमें दिखाई देते हैं जो प्राणिमात्र को अपना ही परिवार समझते थे, वे थे महर्षि दयानंद महर्षि जी ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए कहा है कि जो सब प्राणियों से यथायोग्य स्वात्मवत् व्यवहार करे यानि प्राणिमात्र के दुःख सुख, हानि-लाभ को अपना दुःख सुख, हानि-लाभ समझे और जो व्यवहार आप दूसरों से चाहते हैं वही व्यवहार आप दूसरों से भी करें, दूसरी पहचान बताई कि बलवान् से बलवान् अन्यायी व्यक्ति चाहे वह चक्रवर्ती राजा ही क्यों न हो, उससे कभी न डरे और न उसका सत्कार करे किन्तु निर्बल से निर्बल धर्मात्मा व सज्जन व्यक्ति से सदा डरता रहे और उसका सम्मान करता रहे। महर्षि के जीवन का एक-एक पल व एक-एक श्वास परोपकारी व राष्ट्रीय कार्यों के लिए ही समर्पित था। स्वामी जी ने सभी कार्य जैसे नारी शिक्षा, अछूतोद्धार, बाल-वृद्धविवाह निषेध, सतीप्रथा का विरोध गौ आदि पशुओं की रक्षा का प्रयत्न पुनर्विवाह का प्रचलन, पंच महायज्ञों की हर गृहस्थी के लिए अनिवार्यता तथा वेद जो ईश्वर ने प्राणिमात्र के हित व कल्याण के लिए बनाये हैं उनका प्रचार व प्रसार

करना आदि मानवमात्र ही नहीं बल्कि प्राणिमात्र की सेवा व रक्षा करना ही प्रकट करते हैं। उनके जीवन में एक नहीं अनेक घटनाएं ऐसी आती हैं जिनसे ज्ञात होता है कि महर्षि जी अपने जीवन से दूसरों के जीवन को कहीं अधिक मूल्यवान् समझते थे, दूसरों के दुःख को सहन नहीं करने के कारण और उनके दुःख दूर करने के लिए अपना जीवन भी जोखिम में डालने के लिए सदैव उद्यत रहते थे। उनके जीवन की दो घटनाएं यहां प्रस्तुत करते हैं जिससे उनके हृदय की उदारता व विशालता का अंदाज लगाया जा सकेगा।

पहली घटना को सुनकर हर व्यक्ति के शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और समझ में आता है कि परोपकारी व्यक्ति की रक्षा ईश्वर कैसे करता है? स्वामी जी जंगल से होकर कहीं जा रहे थे तो उन्होंने देखा की कुछ ढोंगी व्यक्ति साधु के वेश में किसी देवी की पूजा कर रहे है और एक तरफ एक माता अपने लाडले बच्चे को गोद में लिए रो रही हैं। स्वामी जी ने उस माता जी से पूछा आप क्यों रो रही हैं? माता ने कहा बेटा! ये साधु अभी मेरे इस गोद वाले बच्चे को मारकर देवी की भेंट चढ़ायेंगे इसलिए मैं रो रही हूं। तब स्वामी जी ने उन ढोंगी साधुओं से कहा कि यदि आप देवी को इस बच्चे की बलि न देकर मेरी बलि दे दें तो क्या आपको कोई आपत्ति है? स्वामी जी के हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर शरीर को देखकर वे खुश हो गये और बोले कि हमें कोई आपत्ति नहीं। यदि आप अपनी बलि देना चाहते हो तो हम इस बच्चे को छोड़ सकते हैं। स्वामी जी ने अपनी बलि देने के लिए जैसे ही सिर नीचे किया और एक साधु ने मारने के लिए खंजर उठाया उसी समय काफी पुलिस घोड़ों पर चढ़ी हुई आती दिखाई दी और वे सब ढोंगी साधु सारा सामान वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए। बाद में पुलिस वालों से स्वामी जी के पूछने पर मालूम हुआ कि सरकार ऐसी हत्याओं को रोकने के लिए पुलिस द्वारा ऐसे अंधविश्वासी लोगों पर छापे मारती है और इन अमानुषिक कार्यों को करने से रोकती है इसलिए हम इनको पकड़ने आये थे।

दूसरी घटना इसी भांति है कि स्वामी जी कहीं जा रहे थे, तब उन्होंने देखा कि एक गाड़ी कीचड़ में फंसी हुई है। गाड़ीवान् बैलों को काफी मार रहा है किन्तु बैल गाड़ी को नहीं निकाल पा रहे हैं और गाड़ी टस से मस भी नहीं हो रही है। स्वामी जी से बैलों को पिटता हुआ नहीं देखा गया और वे गाड़ीवान् से बोले की आप कृपया इन बैलों को खोल दीजिए। मैं आपकी गाड़ी कीचड़ से बाहर निकाल दूंगा। गाड़ीवान् ने बैलों को खोल दिया और स्वामी जी ने अपने प्राणायाम व शारीरिक बल से क्षणभर में ही गाड़ी को कीचड़ से बाहर निकाल दिया। जब गाड़ीवान् स्वामी जी के प्रति आभार व्यक्त करने लगा तब स्वामी जी बोले कि मैंने तो आपके लिये नहीं, मेरे दिल के कष्ट को दूर करने के लिए गाड़ी निकाली है, आभार तो मुझे आपके प्रति करना चाहिए कि आपने मेरी आत्मा को खुश करने के लिये मुझे सुअवसर प्रदान किया। यह सुनकर गाड़ीवान् चकित हो गया और उस महान् आत्मा को हृदय से धन्यवाद देते हुए प्रस्थान किया।

अफसोस की बात तो यह है कि जैसे महात्मा बुद्ध के अनुयायियों ने उनके अहिंसा के संदेश को न मानकर अधिकतर जीवों को अपना भोज्य बना लिया है उसी प्रकार जो महर्षि दयानन्द ने मानवमात्र को अपने भूले हुए गौरवमय सम्बोधन जिनमें एक जाति ''आर्य'', एक धर्म ''वैदिक धर्म'' एक उपास्य देव ''ओ३म्'' एक भाषा ''संस्कृत'', एक झंडा ''ओ३म् का'', एक अभिवादन ''नमस्ते'' को बतलाकर सारे विश्व को एक मंच पर लाना चाहते थे और उसी उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की और उनके सदस्यों को नित्य संगठन सूत्रों का पाठ करने का आदेश दिया परन्तु आज उसी आर्यसमाज के शीर्ष नेता परस्पर कुत्ते-बिल्ली की तरह लड़ झगड़ रहे हैं। जिसके कारण आर्यसमाज का पतन होता जा रहा है और कितना पतन करेंगे यह भविष्य ही बतायेगा।

-खुशहाल चन्द्र आर्य
प्रधान आर्यसमाज बड़ा बाजार
१ मुंशी सदरुद्दीन लेन,
कोलकाता-७०००७

### प्रार्थना

प्रभु वेद विद्या का विस्तार करदो।
दुःखी देश भारत का उद्धार करदो।
जमाना हुआ सो रही आर्य जाति,
इसे मोह निद्रा से बेदार करदो।
तपोबल के पौधे जो मुरझा गये हैं,
इन्हें ज्ञान अमृत से गुलजार करदो।
भुजाओं में दो भीम-सा बल हमारे,
रगों में ऋषि-रक्त संचार करदो।
बचाने को भारत की नौका भंवर से,
सदा आर्यवीरों को तैयार करदो।

❑ आर्यवीरो-जागो। भारतमाता की जय हो।
❑ संसार के श्रेष्ठपुरुषो-एक होजाओ।

## नैतिक शिक्षा में क्या सिखाते हो?

नगरों ग्रामों में सह-शिक्षा के निजी (Private) स्कूल विद्यालय चल रहे हैं। उनमें नैतिक शिक्षा के अध्यापक भी नियुक्त हैं। मुझे अनेक स्कूलों में जाने का अवसर मिला है। इन स्कूलों में अधिकतम अध्यापिकाएं ही पढ़ा रही हैं। अध्यापक बहुत कम हैं। मैंने मुख्य अध्यापिका (Madam) के साथ कुछ कक्षाओं में जाकर बच्चों से बातें कीं, कुछ प्रश्नों का उत्तर पूछा।

जब मैंने पूछा जो बच्चे अण्डे खाते हैं हाथ खड़ा करो। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, लगभग सत्तर प्रतिशत बच्चों ने हाथ खड़े किये। दूसरा प्रश्न केवल छात्राओं (लड़कियों) से किया। जिसने लम्बे नाखून बढ़ा रखे हैं और नेलपालिश लगा रखी है वह हाथ उठाओ। तीन-चार छात्राएं पाई गई। मैंने स्कूल के नैतिक शिक्षक से पूछा कि नैतिक शिक्षा में क्या पढ़ाते हो?

इन बच्चों को कौन बताएगा कि क्या खाना चाहिये क्या नहीं। शिक्षक बोला, सर (Sir) यह बातें नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में नहीं हैं। मेरा अनुरोध है कि स्कूल में बच्चों को स्वास्थ्यरक्षा की शिक्षा भी दी जाये।

-ले० देवराज आर्य मित्र, WZ-४२८ हरिनगर, नई दिल्ली

# अन्ध श्रद्धा का महापथ-भगवती जागरण

-पं० गंगाशरण आर्य

अन्धपरम्परा की अंधी दौड़ में आज जिधर देखो नगरों में, गांवों में अपने-आपको धार्मिक एवं भक्त के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए नित्यप्रति रातभर जाग-जागकर अष्टभुजा वाली **माता दुर्गा के जागरण** करने-करवाने की एक प्रथा सी चल पड़ी है। जिसमें एक कपोलकल्पित देवी अनैतिहासिक तथा ऐसे ही कपोल-कल्पित अन्य देवताओं के चित्र सजाकर उनके आगे धूप-दीप जला दिए जाते हैं तथा कुछ पेशेवर और रातभर चीखने-चिल्लाने वाले लोग किराए पर बुला लिए जाते हैं। ये किराए के लोग फिल्मी धुनों पर बनाए हुए गाने चिघांड़-चिघांड़कर गाते हैं। इनके सामने अनेक भोले-भाले नर-नारी और बालक, भ्रमवश अंधविश्वास में फंसे हुए किसी शक्ति के आगमन की प्रतीक्षा में अंधभक्तिभावना में बैठे झूमते रहते हैं। जागरण करने-कराने वाले अधिकतर लोग धर्मतत्त्व से अनभिज्ञ पाये जाते हैं। श्रीकृष्ण जी गीता में उपदेश देते हुए अर्जुन को कहते हैं -

**''न चातिस्वप्नशीलस्य न जाग्रतो नैव चार्जुन''**॥ गीता अ० ६-१६॥

**अर्थात्** - हे अर्जुन! योग न ज्यादा सोने वाले का सिद्ध होता है और न अति जागने वाले का। अतः यथोचित जागना चाहिए तथा यथोचित सोना चाहिए। वैसे आयुर्वेद की दृष्टि से रात में जागना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

प्रिय बंधुओ! **जागरण** से हमारा कोई बैर नहीं है, जागरण हो, वह वेद के निर्देशानुसार हो। वेद कहता है -

**यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।**
**यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः**॥ साम. २१ सूक्त ४

अर्थात् - जो निद्रारूपी अज्ञान से उठ जाता है मंत्र उसको ही ज्ञान देते हैं। इसी प्रकार जागने वालों को ही सामज्ञान होता है और जागने वालों को ही परमानन्द रूप, रस मित्ररूप में स्वागत करता है।

उपरोक्त वेदमंत्रों के माध्यम से परमात्मा से अज्ञानस्वरूप निद्रा अंधकार से उठ जाना कहा है। वेद ईश्वरीय वाणी होने से मनुष्य सब प्राणियों के लिए कल्याण का मुख्य कारण है।

**वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः**। (यजु० अ. ९, मंत्र २३)

**अर्थात्** - सत्य क्रिया के साथ सबके हितकारी हम लोग राज्य में निरन्तर आलस्य छोड़कर जागते रहें। जागना है तो ऐसे जागना चाहिए। अपने राष्ट्र में चारों ओर से सावधान रहना है। अन्दर और बाहर से देश को क्षति पहुंचाने वालों से सावधान रहना है। सप्त माताओं-जगदम्बा (सृष्टि रचाने वाली ईश्वरीय शक्ति), जननी माता निर्मात्री, धरती माता, गो माता, वेद माता, भारत माता आदि की रक्षा के लिए जागरूक रहना ही सच्ची माँ का जागरण है। जैसा कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने **''सत्यार्थप्रकाश''** के ग्यारहवें समुल्लास में उद्धरण दिया है-**''उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिः इतरथान्धपरम्परा''**। (सांख्य दर्शन)

**अर्थात्** - जब उत्तम-उत्तम उपदेशक होते हैं तब अच्छी प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप पुरुषार्थचतुष्टय सिद्ध होते हैं और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते, तब अन्धपरम्परा ही चलती है। हाँ फिर कभी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं, तभी अन्धपरम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है। इसी निमित्त शतपथ ब्राह्मण में प्रार्थना की गई है -

**ओ३म् असतो मा सद्गमय।**
**तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय॥**

**अर्थात्** - हे सर्वरक्षक प्रभु! आप हमें असत्य मार्ग से हटाकर सन्मार्ग की ओर, अज्ञान अंधकार से बचाकर वैदिक ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृतत्व की ओर ले जाएं।

आज धन का नाश करने तथा लोगों की नींद हराम करने वाले पाखण्डियों को बुलाकर इस गाने-बजाने के कार्यक्रम को मौहल्ले में दूर-दूर तक सुनाने के लिए ध्वनिविस्तारकों (हाई वान्टेज स्पीकर बाक्सों) का प्रयोग किया जाता है। इनकी कान-फोड़ ध्वनि से पड़ोसियों की रातभर की नींद उड़ जाती है तथा आसपास में कानपड़ी बात भी नहीं सुनाई देती, जिससे आकर्षित होकर मौहल्ले भर के भोले-भाले नर-नारी और बालक सब खिंचे चले जाते हैं।

**जागरण** करने वाले चिल्ला-चिल्लाकर इस काल्पनिक देवी की मूर्ति पर चढ़ावा चढ़ाने की प्रार्थना करते हैं। जिसके कारण कुछ नर-नारी उस मूर्ति के आगे रूपये-पैसे चढ़ाते हैं। फिर तो देखा-देखी अन्य नर-नारी भी अपने खून-पसीने की कमाई किसी मनोकामना पूर्ण होने के चक्कर में उस जड़मूर्ति के आगे चढ़ाने लगते हैं। जागरण करने वाले एक कथा सुनाते हैं जो पूर्णतः कपोल-कल्पित हैं। वेद, उपनिषद्, गीता-रामायण और दर्शनों में कहीं भी इस कथा का उल्लेख नहीं है, परन्तु फिर भी इस झूठी कथा को वे ढोंगी-पाखंडी ऐसे नाटकीय ढंग से गा-गाकर सुनाते हैं कि भोले-भाले, अंधविश्वासी और धर्म अज्ञानी नर-नारी उस गप्प को सत्य समझ लेते हैं तथा उसकी प्रेरणा से वे भी भगवती जागरण करवाने तथा इन जागरणों में जाने के लिए प्रेरित हो जाते हैं।

जागरण करने वाले सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र और रानी तारा की जो झूठी कथा सुनाते हैं वह संक्षेप में इस प्रकार हैं -

एक बार रानी तारा की बहन रूक्मिणी (जो भंगी के घर पली थी) ने देवी के मंदिर में हो रहे जागरण में दो पैसे देवी को चढ़ाकर अरदास करवायी कि यदि मेरे पुत्र हुआ तो मैं भी जागरण करवाऊंगी। कुछ समय बाद उसके एक पुत्र ने जन्म लिया तो उसने जागरण करवाया जिसमें देवी को मांस-मदिरा का भोग लगाया गया था। वहां पहुंची तारा भी वही प्रसादरूप में खाती है तथा वही मांस-मदिरा का प्रसाद अपनी झोली में लेकर घर को चल देती है परन्तु रास्ते में राजा ने जब झोली देखी तो मांस-मदिरा, पान, सुपारी, बताशे, नारियल में परिवर्तित हो जाते हैं। यह देखकर राजा भी चौंक गया और देवी का जागरण करवाने के लिए तैयार हो गया।

राजा ने उस जागरण में अपने प्रिय घोड़े तथा इकलौते पुत्र के टुकड़े-टुकड़े करवाकर बर्तन में डालकर पकवाये। पकने पर उन टुकड़ों से देवी माता को भोग लगाया गया तथा राजा को खिलाया गया। भगवती मां को याद करने पर माता ने बेटे व घोड़े को जीवित कर दिया। ''क्या यह गपोड़ा सच है?''

जागरण वाले यह भी कहते हैं कि राजा अकबर ने देवी का चमत्कार देखकर उस पर सवा मन सोने का छत्र चढ़ाया था तथा मां ने द्रोपदी के चीर हरण के बाद पांडवों को हर्षित होकर दर्शन दिये थे तथा उनके कष्टों को दूर कर दिया था।

यह कथा सुनकर प्रत्येक बुद्धिमान्, सुशिक्षित विचारवान् एवं निष्पक्ष व्यक्ति यही कहेगा कि यह कथा अशिक्षित भोले-भाले तथा अंधविश्वासी लोगों को पथभ्रष्ट करने के लिए गढ़ी गई है। यहां आप विचार कर तो देखिये -

१. इस कथा में सभी बातें, निराधार, तर्कशून्य तथा सृष्टिनियम के विरुद्ध हैं, क्योंकि किसी प्राणी के यदि टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें तो उसे परमात्मा भी जीवित नहीं कर सकता, इस कपोल-कल्पित देवी की बात ही क्या है?

२. यदि देवी में कटे हुए सिर को जीवित करने की शक्ति है तो जागरण करने वाले अपनी संतान को काटकर प्रसाद के रूप में दूसरों को बांटकर फिर देवी से जीवित करवा कर दिखावें।

३. यदि अकबर ने देवी का चमत्कार देखकर उस पर सवा मन का छत्र चढ़ाया था तो स्वयं अकबर उनके परिवार के लोग, उनके मंत्री, समर्थक आदि मुसलमान, देवी को मानने वाले, हिन्दू क्यों नहीं बन गये? और वह सवा मन सोने का छत्र कहां गया?

४. यदि देवी पांडवों पर प्रसन्न थी तो उसने महाभारत के युद्ध में मारे गए वीर अभिमन्यु को जीवित क्यों नहीं किया?

५. महमूद गजनवी, औरंगजेब, अहमदशाह अब्दाली और नादिरशाह आदि अनेक अत्याचारियों ने अनेक मंदिरों को तोड़ा व लूटा, तब कहां गई थी यह देवी, उसकी प्राणप्रतिष्ठा एवं शक्तिसंचार? इस देवी ने तब मूर्तियों और पुजारियों की रक्षा क्यों नही की?

६. यदि पांडवों को देवी ने दर्शन दिए थे तो अब वह अपने भक्तों को दर्शन क्यों नहीं देती? तथा देवी ने पांडवों को उनका राज्य क्यों नहीं दिलवा दिया?

७. यदि तारा की बहन रूक्मिणी के दो पैसों के चढ़ावे से देवी ने प्रसन्न होकर हंसता-खेलता पुत्र दिया था तो आज देवी के अनेक भक्त निःसंतान और रोगी क्यों हैं?

८. आए दिन सुनने में आता है कश्मीर में उग्रवादियों द्वारा भीषण नरसंहार किया जा रहा है। ऐसे में समीप ही बैठी माता वैष्णव देवी उन निर्दोषों की रक्षा क्यों नहीं करती? क्यों नहीं पापियों का संहार करती?

९. यदि तारा की गोद में रखे मांस, मदिरा, पान-सुपारी, नारियल, बताशे में परिवर्तित हो गए थे, तो अब देवी का कोई भक्त ऐसा करवाकर क्यों नहीं दिखाती? यदि देवी न तब चमत्कार दिखाया था तो अब क्यों नही दिखाती? उत्तर दे सकता है कोई?

१०. अपने पुत्र व घोड़े को काटकर-पकाकर कोई पागल व्यक्ति ही खा सकता है, राजा हरिश्चन्द्र जैसा सदाचारी एवं बुद्धिमान् व्यक्ति तो स्वप्न में भी ऐसा कुकृत्य नहीं कर सकता, फिर इस कुकृत्य की कुशिक्षा एवं झूठी कथा को आप हरिश्चन्द्र जैसे राजा से जुड़ा हुआ क्यों समझ लेते हैं? पाखंड, अंधविश्वास में अज्ञानी हिन्दू की मोम की नाक को चाहे जिधर मोड़ लो, भेड़चाल है। इस पाखण्ड, अंधविश्वास से ही हिन्दू जाति का सर्वनाश हो रहा है।

**प्रेषक- स्वामी केवलानंद सरस्वती,** वैदिक मोहन आश्रम
भूपतवाला हरिद्वार (उत्तरांचल)

## श्रीमती महिमा देवी का कुरुक्षेत्र में निधन



आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० रणजीतसिंह जी की बहन श्रीमती महिमा देवी जी धर्मपत्नी चौ० भगवानसिंह जी पूर्व प्रबंधक महर्षि वैदिक धाम कुरुक्षेत्र का ७७ वर्ष की आयु में २७ सितम्बर २००५ को सायं ६ बजे हृदय गति बंद हो जाने पर निधन हो गया। वह एक घंटा पूर्व निर्धन परिवार को वस्त्रों का दान करने के बाद वैदिक धाम के सामने वाले पार्क में आकर बैठ गई। थोड़ी देर बार हृदय गति बंद होने पर इस संसार से विदा हो गई। सूचना मिलते ही उनका परिवार वहां पहुंच गया। २८ सितम्बर को वैदिक रीति के अनुसार अन्त्यष्टि की गई। इस अवसर पर डॉ० रणजीतसिंह जी, उनकी पुत्री श्रीमती सुमनमंजरी पुलिस अधीक्षक (रेलवे) तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ता उपस्थित थे। चौ० भगवानसिंह जी ने चौ० लखीराम आर्य अनाथालय रोहतक को ५०० रु, आ०प्र०नि० सभा हरयाणा को ५०० रु, आर्यसमाज थानेसर को ५०० रु, आर्यसमाज सेवा सदन कुरुक्षेत्र तथा दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र को ११०० रु० दान दिया।

-**केदारसिंह आर्य**, आर्य अनाथालय रोहतक

## ऋषिराज तुम्हें है कोटि नमन

दिव्य धरा के हे उद्धारक! युग की महती पूण्य विभूति,
दिया युगों से भूले जनगण के अन्तस् में नव अनुभूति,
सत्य शक्ति के शोधक बनकर, किया सत्य शिव अन्वेषण,
मानवता का पाठ पढ़ाकर, बने मनुजता के आकर्षण।
दिव्य राष्ट्र की सोती संस्कृति किया अलंकृत, कर जाग्रत,
देव! तुम्हारे पूज्य पदों पर, हुई समग्र मनुजता नत,
जीवन के प्रति क्षेत्र क्षेत्र में, किया मनोरम परिवर्तन,
आर्यजनों के भटके पथ पर किया सहज प्रत्यावर्तन।
श्रेष्ठ सुधारक! क्रान्ति प्रणेता! हे युग के अनुपम निर्माता,
युग का ले लो नमन देव! हे भारत माता के त्राता,
अवतरण हुआ हे देव तुम्हारा! भू का भार हटाने को,
महिमंडल में व्याप्त घने तम को जड़ सहित मिटाने को।
रोती तथा बिलखती अबलाओं को तुमने त्राण दिया,
आर्य धर्म की जर्जरता हर, नव्य नवलतम प्राण दिया,
शंखनाद निर्भयता का कर, किया शुरू शास्त्रार्थ समर,
दम्भ-द्वेष-मिथ्या के तट पर शुचिर जगाई ज्योति प्रखर।
स्वातंत्र्य प्रेम की सिन्धु तरंगे अन्तस्तल में किया प्रवाहित,
भरतभूमि ही नहीं संजोए सारे महिमंडल का हित,
युगों पुरातन संस्कृति पावन भारत की तुम ले आए,
जिससे मृदु आभा बिखराकर, जन में जाग्रत ज्योति जगाए।
फिर तो हलचल मची धरा पर, लगी फहरने आर्य पताका,
दिव्य धरा के भाग्य व्योम में, मुस्काई नव शुचि मधु राका,
धर्मप्राण! हे भारतरक्षक! हे मानवता की प्रतिमूर्ति,
किया प्रकाशित अवनी अम्बर कोटि दिनेशों की हे मूर्ति।
आर्तनाद विधवाओं का सुन, सुन गौवों का दारुण क्रन्दन,
पवित्र भूमि पर भारत की फिर दिया उतार मधुर नंदन,
वेद ज्योति नव पुनः जगाकर किया विनिर्मित नवचेतन,
लगा चूमने नभमंडल को आर्य धर्म का पवि केतन।
दिव्य धरा के पाप विनाशक! सत्य शिवम् सुन्दर ललाम,
दिव्य धरा का ही ले लो, देव पुरुष! तुम आज प्रणाम,
वेद प्रभा से तुमने ऋषिवर! दीप्यमान था किया चमन,
ऋषिवर दयानन्द को युग के कवि का कोटि नमन॥

-**स्व० श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति**
२८/७/०५ मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)



## वैदिक धर्म प्रचार यात्रा सम्पन्न

धार्मिक पाखण्ड, कन्या भ्रूणहत्या, शराब, गोहत्या, जातिवाद आदि सामाजिक बुराइयों के खिलाफ वेदप्रचार समिति सम्बन्धित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्त्वावधान में २७ सितम्बर से ५ अक्तूबर २००५ तक जनजागरण प्रचारयात्रा का आयोजन किया गया। प्रचारयात्रा के माध्यम से मेवात व फरीदाबाद जनपद के गांव नांगल जाट-मानपुर-सेवली-सीहा, कोंडल, अल्लीका, लुलवाड़ी, रसूलपुर, बड़ौली में वेदरक्षा, गोरक्षा, जाति तोड़ो समाज जोड़ो, कन्या भ्रूणहत्या विरोधी, राष्ट्ररक्षा, नशाबन्दी, धर्मरक्षा, भ्रान्तिनिवारण, आध्यात्म जागरण व महर्षि दयानन्द मन्तव्य सम्मेलन किये गये।

वैदिक धर्म प्रचार यात्रा में आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरेशदत्त आर्य (बिजनौर), श्री शिवराम विद्यावाचस्पति संयोजक वेदप्रचार समिति, महाशय खेमसिंह क्रान्तिकारी, श्री भजनलाल आर्य प्रचारमंत्री, श्री रणजीतसिंह आर्य, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री गिरिराज याज्ञिक, श्री अतुलकुमार आर्य आदि विद्वानों ने भाग लिया।

विद्वानों की प्रेरणा से सैकड़ों लोगों ने आजन्म शराब, जुआ, पाखण्ड, मांसाहार आदि से दूर रहने की प्रतिज्ञाएं कीं तथा यज्ञोपवीत धारण किये।

-**नारायणसिंह आर्य**, संयोजक, वैदिक धर्म प्रचार यात्रा महाभियान, सोहना रोड, पलवल (फरीदाबाद)

## बुढ़ापा सरलता से कैसे गुजरे

- बच्चों को प्यार करो। आठे-साठे का मेल (दादा पोता)
- अच्छी क्वालिटी, अच्छी दुकानों का चयन कर लेना चाहिए।
- सादगी पसन्द बुढ़ापा सरल होता है।
- ऊंची आवाज में बोलना खतरे से खाली नहीं होता।
- सही इच्छा को इसी जन्म में पूरा कर लेना चाहिए।
- जवानी आकर चली जाती है बुढ़ापा आकर जाता नहीं।
- बुढ़ापे में किये हुए अच्छे बुरे काम बहुत याद आते हैं।
- बुढ़ापे की अकड़ दुःखदायी बना देती है।
- बुढ़ापा मन का होता है, अगर इंसान एक्टीव रहे तो ठीक है।
- प्रभु का धन्यवाद करो, प्रार्थना करो, हम प्रभु तेरी सन्तान हैं।
- किसी का बुरा सोचना पाप ही नहीं बहुत बुरा होता है।
- इन्सान का जन्म लेकर अगला जन्म कर्म के आधार पर होगा। (शास्त्र)
- संसार में कर्म प्रधान है कर्म ही पूजा है।
- इन्सान को छोड़कर बाकी सब जन्म सिर्फ भोग के लिए होते हैं।
- संसार की हर चीज़ छूटने वाली ही है, वो छूटे, पहले ही कुछ चीजें छोड़ देनी चाहिएं।
- अगला जन्म कैसा होगा, कहां पर होगा, आज तक किसी को पता नहीं चला।
- आत्मा की आवाज़ सुनो, आत्मा का रिश्ता परमात्मा से है।
- दान देने की इच्छा हो तो कल पर मत टालो। दान सुपात्र को ही देना चाहिए।
- दान देना तो अच्छा है, उससे भी अच्छा है गन्दी कमाई ही न करो।
- पैसे और डॉक्टर पर भरोसा मत करो, डॉक्टर भी मर जाता है और पैसे वाला भी।
- बुढ़ापे में नफे की बात कम, सरलता की बात ज्यादा सोचें।
- बुढ़ापा महानगरों में मुश्किल कटता है, मुश्किलें रहती हैं।
- अच्छी बातें, जिन्दगी के अनुभव जरूर बताने चाहिएं, चाहे कोई सुने या न सुने।
- सारा पैसा खत्म न कर देना, पैसा है तो ही पूछ है।
- कोई पीछे कर दे, उससे अच्छा है खुद ही पीछे हो जाओ।
- बुढ़ापा तालमेल से अच्छा गुज़रता है।
- कोई गलती हो गई, आगे न करने की सोचो, प्रभु से क्षमा मांगो।
- कुछ लोगों को अगले जन्म का आभास हो जाता है, पेपर अच्छे दिए होते हैं।
- बुढ़ापे में ऑपरेशन वगैरह से बचना चाहिए, क्योंकि नया खून नहीं बनता।
- मौत को रोका नहीं जा सकता। मौत को समझा जा सकता है।
- बुढ़ापे का चस्का भी खतरनाक होता है।

संग्रहकर्ता-**ओम्प्रकाश अग्रवाल** (माना सोसाइटी)
२१९, आवास विकास कालोनी, ऋषिकेश (उत्तरांचल)

# आर्य-संसार

### सम्पादक के नाम पत्र

## आर्य पत्रिकाओं के दीर्घ जीवन के लिए आजीवन ग्राहकता की आवश्यकता

मेरी भेंट जब किसी रांची से बाहर के आर्यसमाजी या आर्यसमाज के पदाधिकारी से होती है तब मैं जिज्ञासा भाव से पूछता हूं कि क्या वे किसी आर्यसमाजी पत्रिका को पढ़ते हैं या व्यक्तिगत रूप से उसके वार्षिक/आजीवन ग्राहक हैं तब मुझे यह जानकर बड़ा धक्का लगता है कि अधिकांश लोगों का उत्तर नकारात्मक होता है। कभी-कभी कुछ लोग कहते हैं कि उनके यहां आर्यसमाज में दिल्ली की सार्वदेशिक पत्रिका आती है, अन्य कोई पत्रिका नहीं। जब मैं पुनः पूछता हूं कि क्या उन्होंने कभी उस सार्वदेशिक पत्रिका का वार्षिक/आजीवन चंदा भी भेजा है? इस पर वे अज्ञानता प्रदर्शित करते हैं। मैंने भी पूर्व में कतिपय लोगों को सार्वदेशिक या अन्य आर्यपत्रिकाओं का केवल एक वर्ष का चंदा उपहारस्वरूप इस अनुरोध के साभ भेजा था कि भविष्य में वार्षिक चंदा भेजने की जिम्मेवारी मेरी नहीं होगी फिर भी मैंने पाया कि कई वर्षों तक उक्त पत्रिकायें उन्हें निःशुल्क ही मिलती रही। ऐसी स्थिति में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि बिना चंदा प्राप्ति और बिना चंदा प्राप्ति की आशा के उक्त पत्रिकायें ऐसे ग्राहकों को क्यों भेजी जाती हैं? ऐसा करके हम कोई स्वस्थ परम्परा नहीं बना रहे हैं और न ही इससे पत्रिका कभी भी आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी होगी।

ऐसी पृष्ठभूमि में मासिक आर्य सेवक (नागपुर) और नवप्रकाशित मासिक आर्यसमाज प्रहरी (भोपाल) के यशस्वी सम्पादक आदित्यपाल वानप्रस्थ का कार्य अन्य लोगों के लिये भी प्रेरक होना चाहिए जिन्होंने अपनी सम्पादकीय क्षमता से उक्त पत्रिकाओं को न केवल अप्रत्याशित ऊंचाइयों तक पहुंचाया बल्कि बिना चन्दा प्राप्ति के किसी को भी लगातार पत्रिका न भेजकर पत्रिका का आर्थिक घाटा कम से कम करके पत्रिका को स्वावलम्बी बनाने में प्रयत्नशील रहे। मेरे विचार से अन्य पत्र-पत्रिकाओं के संचालकों को भी गम्भीरतापूर्वक अपनी-अपनी पत्रिका को स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। जो लोग जानबूझकर या बिना सोचे बिना चंदा प्राप्ति के लोगों को पत्रिकायें भेजते हैं, उन्हें इस विषय पर गम्भीर विचार करना चाहिए। आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य को स्वयं व्यक्तिगत रूप से और संस्थाओं को अपने सामर्थ्यानुसार यथासम्भव किसी न किसी या अधिकाधिक पत्रिकाओं का आजीवन सदस्य बनना चाहिए। साथ ही पत्रिकाओं को प्रकाशित सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने के साथ-साथ पूर्णकालिक योग्य विद्वानों को सम्पादक भी बनाना चाहिये। प्रत्येक पत्रिका को समय-समय पर अपने आजीवन ग्राहकों की सूची और आय व्यय का ब्यौरा और पत्रिका की प्रगति या अवनति की जानकारी भी देनी चाहिए।

मैं स्वयं ६ पत्रिकाओं का आजीवन और दो पत्रिकाओं का नियमित वार्षिक ग्राहक हूं। मेरे प्रयत्न से आर्यसमाज राँची भी लगभग १८ पत्रिकाओं का आजीवन ग्राहक है। शनैः शनैः अन्य नियमित पत्रिकाओं का आजीवन सदस्य भी बनने और बनाने की आकांक्षा है।

**-दया रामपोद्दार**, झारखंड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, राँची

## चिकित्सा भास्कर पर सम्मति

आदरणीय शास्त्री जी, सादर चरणस्पर्श।

आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तक **चिकित्सा भास्कर** श्री चौ० हरिसिंह चिड़ी निवासी वैद्यराज की पुस्तक अचानक हाथ लगी, पढ़ी और बहुत अच्छी लगी। इसकी जानकारी सही नुस्खे वाकई में श्री हरिसिंह जी ने जो संग्रह करके आप द्वारा प्रकाशित करवाकर जनता का उपकार किया है इसे सही कद्रदान ही पहचान सकते हैं। मेरा निवेदन है कि अपनी अन्य पुस्तकों की सूची भेजने की कृपा करें जिससे मैं उन्हें मंगवा सकूं।

**-वैद्य चन्द्रमोहन शर्मा** पुत्र वैद्य श्री श्रीनाथ जी शर्मा, ४९१, ४, ५ बी. रोड, सरदार पुरा, जोधपुर

## आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत का १०९वां वार्षिकोत्सव

७ नवम्बर से १३ नवम्बर तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मना रहा है। इस पुनीत वेला में अध्यात्म की ओर प्रेरित करने और ज्ञान गंगा में अवगाहन कराने हेतु देश के विख्यात वैदिक मनीषी और भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

**कार्यक्रम** - ७ नवम्बर से १३ नवम्बर तक वेदकथा एवं ऋग्वेद पारायण यज्ञ आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत में होगा।

**मुख्य कार्यक्रम** - वार्षिकोत्सव का मुख्य समारोह ११, १२, १३ नवम्बर २००५ को होगा। जो कि पं० रतिराम वाटिका, महर्षि दयानंद मार्ग (पशु हस्पताल के सामने) नजदीक अमर भवन चौंक, पानीपत में मनाया जायेगा।

**-समस्त सदस्यगण महिला/पुरुष आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत**

## श्री राधेश्याम आर्य 'विद्यावाचस्पति' नहीं रहे

बड़े दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि मेरे देवतुल्य पिता श्री **राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति (सम्पादक रश्मिरथी पत्रिका एवं आर्य दर्पण पत्र) मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)** का दिनांक १२-०९-२००५, दिन सोमवार, समय दोपहर २:३५ बजे हृदयगति रुक जाने के कारण असमय देहान्त हो गया। श्री आर्य जी पत्रकारिता के प्रति अटूट निष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता, सत्यता एवं ईमानदारी को दृष्टि में रखते हुए पत्रिका और पत्र का अनवरत प्रकाशन होते रहने के लिए मैं कृत-संकल्प हूं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके द्वारा पत्रिका और पत्र को पूर्व की भांति अपेक्षित सहयोग मिलता रहेगा।

**भवदीय-अरुणकुमार आर्य सुपुत्र श्री राधेश्याम आर्य**
सह-सम्पादक - रश्मिरथी एवं आर्य दर्पण

## राष्ट्रभाषा हिन्दी की दुर्दशा के लिये ..... (पृष्ठ १का शेष)

होती चली गई। आज स्थिति यह है कि किसी भी राजनीतिक दल या नेता में राष्ट्रभाषा/राजभाषा को उचित स्थान दिलाने की हिम्मत नहीं। यहां तक कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार भी हिम्मत नहीं कर सकती क्योंकि यह उसके गठबंधन सरकार के एजेंडा/कार्यसूची से बाहर है। पहली बात तो केन्द्र में गठबंधन सरकार के अन्य घटक दल इसका विरोध करेंगे फिर बाहर से कांग्रेस, भाकपा, माकपा आदि दल भी इसका विरोध करेंगे। सभी राजनीतिक दल वोट बैंक के कारण हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की बात कहने से डरते है। यहां तक कि भारतीय जनता पार्टी भी इस बारे में मौन है।

अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण देश में भयानक शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक विषमता आई है। चिकित्सा, विज्ञान, इंजीनियरी, प्रौद्योगिकी आदि की उच्चतर शिक्षा में अंग्रेजी का प्रभुत्व बढ़ता ही जा रहा है। कॉरपोरेट तथा प्रबंधन के क्षेत्र में अंग्रेजी हावी है। वैज्ञानिकी तथा तकनीकी में अंग्रेजी हावी है। अखिल भारतीय सेवाओं में अंग्रेजी जानने वालों का ही एकाधिकार रहता है। इस प्रकार हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को जानने वाले देश के ९८% लोगों की इनमें कोई भागीदारी नहीं है। देश के राजनेताओं तथा राजनीतिक पार्टियों एवं शासकों को इस सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक विषमता को दूर करने के बारे में विचार करना चाहिए। अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण फैली इस असमानता को दूर करने की अपेक्षा वे अंग्रेजी का वर्चस्व और मजबूत करते जा रहे हैं। दिल्ली, पंजाब, पश्चिमी बंगाल, बिहार, हरयाणा, तमिलनाडु, गुजरात आदि राज्यों द्वारा प्राथमिक कक्षाओं से अंग्रेजी को अनिवार्य करना इस बात का प्रमाण है। इससे समस्या का समाधान होने वाला नहीं है।

अतः देश में अंग्रेजी का वर्चस्व समाप्त करने के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को उचित स्थान दिलाने के लिए भारत सरकार तथा प्रधानमंत्री को पहल करनी चाहिए। सभी राजनीतिक पार्टियों तथा दलों को अपने राजनीतिक स्वार्थों एवं दुराग्रहों को त्यागकर, देशहित में इस बारे में सहयोग करना चाहिए। क्या केन्द्र सरकार के गठबंधन में शामिल विभिन्न दल तथा उनके नेता हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की उन्नति नहीं चाहेंगे? क्या वे चाहेंगे कि उनके अपने देश की भाषाएं अथवा राष्ट्रभाषा सदा के लिए पिछड़ी रहे? कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाजवादी पार्टी भी नहीं चाहेगी कि हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की उन्नति न हो? माकपा, भाकपा को भी इसमें सहयोग करना होगा। अतः प्रधानमंत्री को इस मुद्दे पर अपने यूपीए गठबंधन के सहयोगियों से तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से बातचीत करनी चाहिए। देश की राजनीतिक पार्टियां पहले ही इस बारे में बहुत गलतियां कर चुकी हैं। अब और भूल उन्हें नहीं करनी चाहिए। किसी अन्य देश में ऐसा संकट नहीं है। एक ओर राष्ट्रभाषा तथा भारतीय भाषाएं हैं तथा दूसरी ओर अकेली अंग्रेजी है। देश की 100 करोड़ जनता की भाषाओं का सवाल है। क्या देश के नेता तथा राजनीतिक पार्टियां इस समस्या को सुलझाने की ओर ध्यान देंगी? आखिर पाकिस्तान से भी तो हम पिछले ५० साल से बात कर रहे हैं।

**-प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य**, ४३२/८ सै०, आर्यनिवास, करनाल-१३२००१

# दीर्घायु बनाम वृद्धावस्था



यह सच्चाई है यदि दीर्घ आयु होंगी तो वृद्ध अवस्था अवश्य होगी। यदि जवानी में अन्धे बने रहे अर्थात् मन इन्द्रियों के दास बनकर रहे तो वृद्ध अवस्था में दुर्गति के कारण रोना पछताना पड़ेगा। मैं अपने को देखते हुए अन्य व्यक्तियों को देख रहा हूं कि धीरे धीरे सिर के बाल सफेद हो रहे हैं। मुंह में दांत हिलने लगते हैं। आँखों की रोशनी घटने लगती है। कानों से ठीक सुनाई नहीं देता है। घुटनों में दर्द रहता है। पाचन क्रिया मंद हो गई है। भोजन शीघ्र हजम नहीं होता। अत: कब्ज की शिकायत रहती है। इस कारण पेट में गैस बनती है। रक्तचाप भी बिगड़ जाता है। चलने में चक्कर आने लगते हैं। विवश होकर हस्पतालों में डॉक्टरों का इंतजार करना पड़ता है। एक दिन में प्रात:काल से सोने तक कितने प्रकार की दवाइयां खानी पड़ती हैं। फिर भी रोगों से मुक्ति नहीं मिलती है। एक बीमारी ठीक होती है तो दूसरी लग जाती है। अनेक रोगों के कारण चारपाई से चिपककर विकलांग बन जाता है।

वृद्ध अवस्था में ऐसी दुर्गति का कारण जवानी की लापरवाही है। यौवन अवस्था में आहार विहार में निरन्तर कुपथ्य (बदपरहेजी) से शरीर के अंग ग्रन्थियां आंतें कमजोर और खराब हो जाती हैं। अत: कार्यक्षमता और सहनशक्ति समाप्त हो जाती है। जब मैं नौजवानों को धूम्रपान, मद्यपान आदि का नशा और मीट, मछली, अंडे, चिकन खाते हुये देखता हूं तब प्यार से समझाने का यत्न करता हूं बेटे! इस जवानी को बर्बाद मत करो। इन दुर्व्यसनों को छोड़ दो अन्यथा जल्दी बूढ़े हो जाओगे, पछताओगे। कुछ युवक उत्तर देते है अंकल! हम देख रहे हैं, इनमें क्या मजा है। जब नुकसान होगा तो स्वयं छोड देगें। मैनें जब कहा-अच्छा तो एक शेर नोट करलो -

**होश अब आया है घर का घर उजड़ जाने के बाद।**
**शोक उड़ने का हुआ है पर कतर जाने के बाद॥**

दोस्तो! यदि अपना भला चाहते हो तो आज ही अपना खानपान सुधार लो। यह मांस मछली, अंडे, शराब आदि मनुष्य का भोजन नहीं है। इनके खाने से शरीर में अनेक प्रकार के भयंकर रोग लग जाते हैं। बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। यदि स्वस्थ रहना चाहते हो तो शुद्ध शाकाहारी बनो। वृद्ध अवस्था में आराम से रहने के लिये परिश्रम पुरुषार्थ करो।

बुढ़ापे में सुख शांति का जीवन व्यतीत करने के लिये निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखो -

क) अपनी इच्छाओं को दूर करके दाल-रोटी खाओ, ईश्वर के गुण गाओ। समय का सदुपयोग करने के लिए सन्ध्या, स्वाध्याय और सत्संग किया करो। प्रात: सांय भ्रमण के लिये जाया करो।

ख) जीवन में कभी कष्ट आता है तो कर्मों का फल समझकर सहन कर लो। व्यर्थ की चिंता मत करो, मौत आती है तो आने दो। ईश्वर का चिंतन करोगे तो सहनशक्ति आयेगी।

ग) कहते हैं बुढ़ापे में दिमाग खराब हो जाता है इसलिए बूढ़ा हर समय बोलता चिल्लाता रहता है। आप किसी से कुछ मत कहो, कुछ कहना है तो प्यार से कहो क्रोध में मत बोलो। कोई माने या न माने इसे अपना मान अपमान मत समझो। हर हाल में चिंतामुक्त खुश रहो। जो जैसा करेगा वैसा भरेगा यह समझकर पुत्रैषणा, लोकैषणा और वित्तैषणा छोड़ दो।

-ले० देवराज आर्यमित्र, WZ-४२८ हरिनगर, नई दिल्ली-६४

## भगवान् तेरा सुमिरन...

टेक-भगवान् तेरा सुमिरन, जीवन सफल बनाये।
बुद्धि पवित्र कर दे, सन्मार्ग फिर दिखाये॥
भगवान् तेरा सुमिरन....

१. करता रहूं मैं सुमिरन, मुझ पर दया हो तेरी।
होठों पे नाम तेरा, हर पल हृदय में मेरी।
बैठा हूं तेरे दर पे, प्रभु आस मन में लाये।
भगवान् तेरा सुमिरन....

२. प्राण-शक्ति हो प्रबल, दृव्यदृष्टि हो प्रबल।
श्रवण-शक्ति तीव्र हो, भुजाओं में हो बल।
ऐसी करो दया प्रभु, मेरे तन में प्राण आये।
भगवान् तेरा सुमिरन....

३. तुम हो दया के सागर, दीनों के नाथ हो तुम।
तेरी दया हो जिस पर, उसको भला है क्या ग़म।
जीवन 'सरस' बनेगा, जो तुझमें रम जाये॥
भगवान् तेरा सुमिरन....

—**सुरेन्द्रकुमार 'सरस'**, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक




मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरण संख्या P/RTK/85-2/2000
☎ ०१२६२-२७६८७४

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०६
विक्रमसंवत् २०६२
दयानन्दजन्माब्द १८२

685 पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराञ्चल)






आर्यसमाज के प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

# सर्वहितकारी

आर्य विचारधारा का अग्रणी साप्ताहिक समाचार-पत्र
दयानन्दमठ, रोहतक

प्रधान सम्पादक : जयसिंह ठेकेदार        सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ३२   अंक ४६   २८ अक्तूबर, २००५   वार्षिक शुल्क १०० रुपये   विदेश में २० डॉलर   एक प्रति २.००

# सर्वांगीण विकासार्थ

-सोहनलाल शारदा, शाहपुरा भीलवाड़ा, राजस्थान

**ओं सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥** (यजु० अ० १६ मंत्र ९)

अर्थात्-हे जगतोत्पादक प्रभो! आप निन्दा स्तुति और स्वअपराधियों को सहन करने वाले हैं। आपकी कृपा दृष्टि व सहाय से मुझ को भी वैसा ही कीजिए।

(सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास)

यहां ही आगे वर्णन है कि- 'जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा ही वर्तमान करना चाहिए।'

इस प्रकार कथनी व करनी के संगम को पूर्णतया निभाया महर्षि दयानन्द जी महाराज ने। जैसे अपने घातक विषदाता जगन्नाथ उर्फ धूला जोशी मिश्र शाहपुरा को कहते हैं कि-

हे जगन्नाथ! मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य (वेदभाष्य का लोकोपकारहित) सर्वथा अधूरा रह गया। तुम नहीं जान सकते हो कि इससे लोकहित की कितनी हानि हुई है। अच्छा, विधाता के विधान में ऐसा ही होना था। और इसमें तुम्हारा भी क्या दोष है? हे जगन्नाथ! ले ये कुछ रुपये मार्गव्यय हेतु जो तुम्हारे काम आयेंगे। तुम जैसे भी हो इस राठौड़ राज्य की सीमा से पार हो जाओ।

और नेपाल राज्य में जा छिपने से ही तुम्हारे प्राणों का परित्राण हो सकेगा। अन्यथा उनके प्रकोप के उत्ताप से तुम्हारा परित्राण कोई नहीं कर सकेगा।

हे जगन्नाथ! अब देर नहीं करो। चुपचाप यहां से भाग जाओ। देखना किसी को भी तुम्हारा कर्म स्थाली पुलाक न्याय से भी ज्ञात नहीं हो जाये। तुम मेरी ओर से सर्वथा निश्चिन्त रहना। इस हृदय सागर से तुम्हारा यह कुकर्म का भेद किसी भी प्रकार से कभी भी प्रकाशित नहीं होगा।

(श्रीमद्दयानन्दप्रकाश सार्वदेशिक १९९० सन् के पृष्ठ ४४०)

यह ब्रह्मचारी संन्यास व गृहाश्रम धर्म के लिये ही है। लेकिन राजधर्म में दण्ड व्यवस्था का मूलत: प्रारूप छठे समुल्लास में विद्यमान है। यहां प्रधान पुरुष राजा के लिए भी निर्देश करते हैं कि-

'राजा एक पुण्यात्मा व भाग्यशाली पुरुष है, अत: अपराध करने पर जब सभा उसको दण्ड नहीं देवे और वह दण्ड ग्रहण नहीं करे तो अन्य साधारण जन दण्ड को क्योंकर मानेंगे।'

और यदि ऐसी व्यवस्था नहीं हो तो सभी प्रधान और समर्थ पुरुष अन्याय में डूबकर न्याय धर्म को डुबाकर सब प्रजा का नाश कर आप भी नाश हो जायें।

अत: न्याययुक्त दण्ड ही का नाम राजा और धर्म है। इस प्रकार के दण्ड होने से सर्वप्रजाजन दुष्ट कर्म करने से अलग रहेंगे। और जो भी इस प्रक्रिया को कड़ा दण्ड कहते हैं वे जन यहां वर्णन को देखें कि-वे राजनीति को नहीं समझते। इसलिए कि एक पुरुष को इस प्रकार के कड़ा दण्ड होने से सब लोग बुरे काम करने से अलग रहेंगे और बुरे दुष्ट कर्मों को छोड़कर धर्म मार्ग में ही स्थित रहेंगे।

इस प्रकार के कड़ा दण्ड देने में राजा व राज्याधिकारी को स्वयम् को वा निकटस्थ सम्बन्धी अर्थात् किसी भी प्रकार का पक्षपात नहीं करना चाहिये।

इसके लिए भगवान् मनु महाराज का आदेश है कि-

**गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्।**
**आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्॥**
**नाततायिबधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन।**
**प्रकाशं वाऽप्रकाशं वा मन्युस्तन्मन्युमृच्छति॥**

(मनु० अ० ८, श्लोक ३४०, ३५०)

अर्थात्-चाहे गुरु हो चाहे पुत्रादि हो, चाहे पिता आदि वृद्ध पुरुष हों। चाहे वह ब्राह्मण हो, चाहे वह बहुत शास्त्र आदि का ज्ञाता ही क्यों न हो। जो भी धर्म याने अपने-अपने कर्त्तव्य को छोड़कर अधर्माचरण में वर्तमान होकर दूसरों को विना अपराध के ही मारने वाले हों जैसे आतंकवादी ऐसों को विना बिचारे ही मार डालना चाहिये और मारने के पश्चात् विचार करना चाहिए। सत असत् का कि दुष्ट मनुष्य को मारने से हन्ता को पाप नहीं होता है। चाहे प्रसिद्धि हेतु मारे चाहे अप्रसिद्धि हेतु। इसलिए जानो यह क्रोध से क्रोध का ही युद्ध है। अत: यहां सुराज्य की कल्पना करते हुए वर्णन करते हैं कि-

**यस्य स्तेनः पुरे नास्ति नान्यस्त्रीगो न दुष्टवाक्। न साहसिकदण्डघ्नो स राजा शक्रलोकभाक्॥** (मनु० अ० ८ श्लोक ३८९)

अर्थात् जिस राजा के राज्य में न कोई चोर हो, न कोई परस्त्रीगामी, न कोई भी दुष्ट वचनों को बोलने वाला हो और न ही साहसिक डाकू और न राजा की आज्ञा को भंग करने वाला हो ऐसा राजा ही अतीव श्रेष्ठ है।

इस प्रकार के राज्य राजा और प्रजा के निर्माण हेतु ही प्रथम में कथनी व करनी के भेद को मिटाते हुए आर्य कुलकमलदिवाकर मेवाड़ नरेश महाराणा सज्जनसिंह को व उन्हीं के वंशोत्पन्न शाहपुरे के महाराजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा के.सी.आई.ई. को मनुस्मृति के ७-८ व ९ अध्याय पढ़ाकर पुन: पातञ्जल योगशास्त्र व न्यायशास्त्र के कुछ अंश के साथ ही साथ सन्ध्या यज्ञ करने की साङ्गोपाङ्ग विधि भी सात आठ दिन के भीतर सिखाई थी। साथ में यहां के पण्डितों को भी।

फलस्वरूप इस अति लघु राज्य की महर्षि के निर्देशानुसार ही शासनव्यवस्था चलाने से इस राज्य को आर्यजगत् में आर्यराज्य घोषित किया गया और राजा को आर्य नरेश।

अब भी सर्वांगीण विकास हेतु इसी प्रकार के महर्षिकृत के पठन-पाठन की महती आवश्यकता है। अत: हमें अपने निजी अपराधकर्ता पर कुछ भी ध्यान नहीं देकर राष्ट्र समाज एवं पारिवारिक कल्याण हेतु महर्षिकृत निर्देशों का यथावत् पालन करना है।

इसलिए कि ये सर्व ही सम्पूर्ण वेद-वेदांग के सार संक्षेप से हैं।

इसे पालनार्थ हम पूर्ण साधनसम्पन्न हैं, हमारे पास सौ के लगभग गुरुकुल हैं तो हजार के लगभग छोटे-बड़े विद्यालय भी तथा पांच हजार के लगभग आर्यसमाज मन्दिर/भवन भी विद्यमान हैं और इसके साथ-साथ ही महर्षि के सिद्धान्तों पर आस्था रखने वाले भी संसार में एक लाख से ज्यादा ही हैं।

फिर कमी किस बात की है?

कमी है तो केवल श्रद्धापूर्वक पठन-पाठन की। अत: हमारा कर्त्तव्य यही है कि हम प्रथम में चारों पुस्तकें याने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पंचमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, सत्यार्थप्रकाश से मिलाकर अन्तिम शोधपूर्ण को मान्य कर स्वयं पढ़ें, प्रयोग करें, लाभान्वित हों, लाभ का अन्यों को भी दिग्दर्शन करें। सन्ध्या यज्ञ दैनिक व विशेष को।

पुन: वेदाङ्गप्रकाश के प्रथम तीन खण्ड पढ़-पढ़ा छठे समुल्लास को पढ़ इसमें वर्णित पाठ्य-क्रमानुसार पढ़ें व पढ़ाकर शासनसूत्र हाथ में लेकर सब प्रकार की सुन्दर वैदिक व्यवस्था करनी है जो इसी से होना संभव है। इसी विचारधारा अनुसार ही। इसी आशा के साथ।

## दीपावली की शुभकामना

**तमसो मा ज्योतिर्गमय**- हे प्रभो! हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल। हमारे अन्तरात्मा के अज्ञान को हटाकर ज्ञान का प्रकाश कर। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात्।

-वेदव्रत शास्त्री

# नारी शिक्षा और सुरक्षा

-श्री हरवंशलाल कपूर, सहमंत्री आर्य प्रादेशिक सभा, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली

परमपिता परमेश्वर इस अनन्त सृष्टि का रचनाकार है। पशु, पक्षी, अनन्त जीवाणु, वनसम्पदा, औषधि, पुष्प, फल वृक्ष, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि के विस्तार का वर्णन करने में लेखनी असमर्थ हो सकती है। इन सबसे विचित्र अनुपम परमपिता परमेश्वर ने अपनी विशिष्ट कृति मनुष्य की रचना की है और मनुष्य को पुरुष और नारी के रूप में सुसज्जित करके मनुष्य संतान की उत्पत्ति का वैज्ञानिक साधन बनाया है। वेद ज्ञान-विज्ञान परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि रचना के साथ ही मनुष्य के चरित्र निर्माण और विद्या वैभव से सुसज्जित करने के अभिप्राय से इस संसार में रहने योग्य शान्तिमयी मनोहर पृथ्वी का रूप देकर चार ऋषियों की पवित्र आत्मा में सत्प्रेरणा के रूप में दिया, जिसका अनन्त काल से प्रचार होता चला आ रहा है और वही वेदज्ञान का अमृत प्रवाह मनुष्य सभ्यता के धर्मपरायण सत्याचरण का आधार है।

संसार के किसी भी क्षेत्र में वर्तमान समय में देश-विदेश में जहां भी मनुष्य रहता है, वहां विद्या का विस्तार हो रहा है, परन्तु मनुष्य वैदिक मानव मूल्यों से मनसा, वाचा, कर्मणा अपने आपको आदर्श मनुष्य बनाकर तदुपरांत आर्यत्व के गुणों से सुसज्जित होकर देव पद को प्राप्त होने में असमर्थ दिखाई पड़ता है। इससे आगे ब्रह्मज्ञानी बनकर सूर्य के समान संसार का उपकार करने के योग्य बनकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की अंतिम उपाधि के योग्य होना तो दूर की बात है।

नारी को वेद में पुरुष के साथ अर्धांगिनी कहा है, नाम दिया है और सर्वश्रेष्ठ वैदिक कर्म यज्ञ में यजमान पुरुष के साथ उसकी सभ्य पत्नी भी विराजमान हो तभी वह यज्ञ वैदिक दृष्टि से आत्मशुद्धि, आत्मकल्याण, सांसारिक वातावरण की पवित्रता का माध्यम और साधन बनेगा। जब-जब मनुष्य वैदिक ज्ञान-विज्ञान से विमुख हुआ, प्रकृति और उत्कर्ष अर्जित करने के साधनों से अल्पज्ञ बुद्धि के कारण सत्य विद्याओं से वंचित हो गया, तब-तब मनुष्य सभ्यता पाप, पाखंड और कुरीतियों के अंधकार से ग्रस्त हो गई। महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदप्रचार काल में स्त्रीशिक्षा पर विशेष बल दिया गया और आर्यसमाज के संगठन में स्त्री और पुरुष को बराबर के सदस्यता के अधिकार १८ वर्ष की आयु में मिल गये।

ऋषि ने अपने अमरग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में विशेष बल देकर लिखा है- जब हम बेटी संतान को शिक्षित करते हैं तो दो परिवारों का सभ्य होना निश्चित हो जाता है। नारी बेटी के बाद बहन बनती है, बहन के बाद पत्नी बनती है और संतान उत्पत्ति के पश्चात् माता का सम्मानजनक पद प्राप्त करती है। जब तक वह पिता के घर में रहती है, अपनी विद्वत्ता और सभ्यता से पिता के घर को सुशोभित करती है और विवाह के उपरांत अपने पति के घर को सच और आदर्शयुक्त स्थान बनाती है तथा वेद के आधार पर संतान के चरित्र निर्माण का दायित्व निभाती है। मनुष्य के जीवन में कोई ऐसा सम्मानजनक कार्य नहीं है, जो नारी के सम्मानजनक सहयोग के बिना सफल हो सके, परन्तु आज अवैदिक काल के अंधकार के साये वर्तमान के साथ-साथ चलते हुए दिखाई दे रहे हैं और नारी को विषय की वस्तु मानकर उसको घृणित व्यापार की हद तक पहुंचा दिया है। अनेक संविधान कानून बने हैं परन्तु आज भी पुरुषप्रधान समाज नारी को अपनी दया और कृपा का पात्र मानता है और नारी शिक्षित-प्रशिक्षित होकर मनुष्य के प्रादुर्भाव और आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् विद्या के प्रकाश से प्रकाशमान होकर कहीं-कहीं पुरुष से भी उत्तम सम्मानजनक स्थान पर विराजमान दिखाई देती है। परन्तु शृंगार रस में ग्रस्त होने की वृत्ति न तो पुरुष ने छोड़ी है और न ही नारी ने छोड़ी है। सादा एवं पवित्र जीवनदर्शन और उच्च विचार मनुष्य के सदाचार के उपहार होने चाहिएं परन्तु आज फैशन शृंगार रस में डूबे हुए बनावटी साधन और अश्लीलता की सीमाओं को छूती हुई वेशभूषा वासनायुक्त दुर्व्यवहार को प्रोत्साहन दे रही है।

भारतवर्ष ऋषि-मुनियों का सात्विक परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान वेद के प्रचार का स्रोत देश है। इस नाते से नारी की शिक्षा और सुरक्षा का दायित्व भारतवर्ष के बुद्धिजीवी और प्रशासन पर सर्वाधिक निर्धारित होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना के समय नारी को पुरुष के समान १८ वर्ष की आयु में आर्यसमाज की सदस्यता के अधिकार दे दिये थे और उस समय से बेटे के साथ बेटी को विद्याप्राप्ति के लिए विद्यालय में प्रवेश पाने का अधिकार और वेदज्ञान प्राप्त करने का अधिकार बना दिया गया था, परन्तु कितनी खेदजनक परिस्थिति है कि आज ५७ साल भारत को स्वतंत्र हुए प्रगतिपथ पर अग्रसर होते हुए हो गये हैं, परोपकारी संविधान के आधार पर देश में प्रशासनिक व्यवस्था कायम है परन्तु नारी को पुरुष अपने बराबर संसद और विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व देने को तैयार नहीं है। यहां से नारी के प्रति भेदभाव का जन्म होता है और वह धीरे धीरे निम्न स्तर तक विष फैला रहा है। देश में उच्चशिक्षा की संस्थायें पर्याप्त संख्या में डॉक्टर, इंजीनियर एवं प्रशासक बनाने के लिए उपलब्ध हैं, जिनमें बेटों के साथ बेटियां भी शिक्षा प्राप्त करके इन उच्च पदों पर आसीन होने के लिए प्रयास कर रही हैं। यह ऋषि दयानन्द की अपार कृपा है कि अब इन विद्यालयों और महाविद्यालयों में बेटी संतान का प्रवेश पाने के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है परन्तु भारत की केन्द्रीय सरकार और प्रान्तों की प्रान्तीय सरकारों को इतना तो अवश्य करना चाहिए कि बेटी संतान के लिए शिक्षण/प्रशिक्षण की योग्यता का स्तर अर्जित करने के पश्चात् प्रशासनिक नियुक्तियों में इन्हें प्राथमिकता देनी चाहिए, ऐसा संविधान में निर्देशित नीतियों में सुनिश्चित करना अवश्यमभावी है।

भारतवर्ष की ऋतु गर्म देश की श्रेणी में आता है इसलिए यहां सूती और ढीले ढाले कपड़े पहनना स्वास्थ्यवर्द्धक और सम्मानजनक समझा जाता है परन्तु आजकल की युवा पीढ़ी ने टी०वी० के निरंकुश प्रदर्शन से प्रेरणा लेकर ठंडे देशों के परिवेश तंग मोटे वस्त्र पहनने आरम्भ कर दिये हैं जो गर्म देश के नौजवान पुरुषों को नारी के शारीरिक सौंदर्य के प्रति आमंत्रित करते हुए दिखाई देते हैं। यहां पुरुष और नारी दोनों अपराधी ठहरते हैं। दोनों को सभ्य संयम से काम लेना चाहिए। शिक्षण और प्रशिक्षण प्राप्त करने की अवस्था में बेटा और बेटी दोनों ब्रह्मचर्य का पाल्न करें, अपने शारीरिक बल को बढ़ायें और विवाह संस्कार से पहले शारीरिक संबंध सम्भोग करने से बचें अन्यथा कई प्रकार के कलंक उनके माथे पर लग जायेंगे।

नशीले पदार्थ, मदिरा, मांस का सेवन न तो पुरुष को शोभा देता है और न ही नारी को इसका सेवन करना उचित है, परन्तु आज देश की राजधानी में समाचारपत्रों के माध्यम से और टी०वी० पर कोई दिन खाली नहीं जाता जब किसी नारी से दुराचार/बलात्कार के निन्दनीय समाचार का प्रसारण या प्रकाशन नहीं होता हो। समाचार पत्र जो देश की सभ्यता के निर्माण में उत्तरदायी समझे जाते हैं उनके अपने विशेषांक वासनावर्द्धित अश्लील नारी और पुरुष के चित्रों के साथ सजाये होते हैं।

आर्यसमाज, डी०ए०वी० एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वैदिक विद्वान् इन सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ समय-समय पर आवाज उठाते हैं परन्तु धन कमाने की अंधी दौड़ ने सबकी आँखों पर पाप का परदा डाल दिया है। इसके साथ ही दहेज का दानव निर्लज्जता से पुन: जीवित हो गया है। जो धन परोपकार पर लगना चाहिए, शिक्षण संस्थाओं के रख रखाव पर लगना चाहिए वह धन दहेज और शृंगार रस में व्यय हो रहा है और उसी का दुष्परिणाम है कि नारी आज के परिवेश में अपने आपको असुरक्षित मानती है। नैतिक मूल्यों का अभाव, सामाजिक चेतना की कमी, सत्यनिष्ठा में अविश्वास यह कुछ ऐसे प्रमुख कारण हैं जिनको दूर किये बिना न तो पुरुष का सम्मान होगा और न नारी सुरक्षित रहेगी।

परमपिता परमेश्वर के न्याय की व्यवस्था बेआवाज है और ईश्वर का न्याय कैसा दंड देता है, यह मनुष्य की समझ से दूर है। भ्रूणहत्या बढ़ रही है। माता-पिता अल्ट्रासाउंड के माध्यम से गर्भ में पल रहे लिंग का परीक्षण कराते हैं और यदि वह बेटी हो तो एक पल का संकोच किये बिना उसका गर्भपात करा देते हैं, अपनी बेटी का स्वयं गला घोंट देते हैं। वह ईश्वर की संतान है और उसको मारने वाले को क्या ईश्वर का न्याय दंड नहीं देगा?

हर शुभ कार्य में गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हैं और परमपिता परमात्मा की उपासना करके उससे प्रार्थना करते हैं कि हमारी बुद्धि को पवित्र-निर्मल बनाये। आज ऐसा लगता है कि अधिकांश लोगों की बुद्धि अपवित्र हो गई है और गायत्री मंत्र का मात्र उच्चारण ही रह गया है, उसके अर्थों पर कोई विचार नहीं करता है। हम सब अपने आपको मनुष्य समाज के अंग कहलाने वाली नारी और पुरुष परमपिता परमात्मा को साक्षी मानकर आत्मिक संकल्प करें कि नारी की शिक्षा और सुरक्षा का उत्तरदायित्व जितना स्वयं नारी पर है उससे कहीं अधिक पुरुष पर है। देश की प्रशासनव्यवस्था इस समस्या पर गम्भीरता से विचार करे, शृंगार रस के बढ़ते हुए शैलाब को रोके, सादगी और उच्च विचार का वेद प्रचार अमृत जन-जन तक पहुंचने का कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी आर्यसमाज, डी०ए०वी० और गुरुकुलों के कार्यकर्ता अपना अनिवार्य कर्तव्य मानकर करें।

सम्पादकीय-

# कन्या भ्रूणहत्या

**वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।**

-महर्षि दयानंद

**ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।**

-व्याकरणमहाभाष्ये पंतजलिः

**वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।**
**आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च॥** (मनु० २/६)
**यद्गृहीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते।**
**अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित्॥** -निरुक्ते यास्कः
**अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवां अफलामपुष्पाम्।**

(ऋग्वेद १०/७२/५)

**वेदाः सर्वाङ्गाणि सत्यमायतनम्।** (केनोपनिषद् ४/३३)

**अच्छा तो वेदमार्ग है जो पकड़ा जाये तो पकड़ो नहीं तो सदा गोते खाते रहोगे।** (सत्यार्थप्रकाश समु० ११)

**जिसने संस्कृत पढकर वेद नहीं पढे उसका संस्कृत पढना व्यर्थ है।**

-डॉ० संपूर्णानंद पूर्व मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश

प्राचीन भारत में वेद शास्त्रों का पठन पाठन होता था और प्रजा झूठ, छल-कपट, चोरी, व्यभिचार, दुर्भिक्ष, अनावृष्टि अतिवृष्टि आदि से पीड़ित नहीं थी। राजा अश्वपति का दृष्टांत प्रसिद्ध है। उसके पास गये ऋषियों ने राजा का भोजन-निमंत्रण स्वीकार नहीं किया तब राजा अश्वपति ने कहा -

**न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।**
**नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥**

मेरे जनपद में कोई कंजूस नहीं, कोई शराबी नहीं, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो प्रतिदिन अग्निहोत्र न करता हो, न कोई मूर्ख है और न स्वैरी=स्वेच्छाचारी पुरुष है, ऐसी स्थिति में स्त्री तो स्वैरिणी=व्यभिचारिणी हो ही नहीं सकती।

आज किसी देश का राष्ट्रपति वा प्रधानमंत्री, किसी प्रदेश का मुख्यमंत्री अथवा राज्यपाल, किसी जिले का डी.सी. वा अन्य कोई अधिकारी ऐसी घोषणा करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

प्रतिदिन टेलीविजन, रेडियो और समाचारपत्रों में दुराचार की ऐसी दुर्घटनायें देखने, सुनने, पढ़ने में आती हैं जिनको यहां उद्धृत करते हुए भी लज्जा अनुभव होती है। वेदज्ञान के अभाव में संसार के स्त्री-पुरुष इन्द्रियदास बनकर विषयभोगों में फंस गये और मानव जीवन के कर्तव्य को भूल गये। हमारे पूर्वज विद्वान् ऋषि महर्षियों ने वेदज्ञान के आधार पर कुछ श्रेष्ठ परम्परायें/मर्यादायें निर्धारित की थीं जो सभी के लिए अनुल्लंघनीय थीं। जो मर्यादा को तोड़ता था उसे पापी मानकर कठोर दंड दिया जाता था।

ऋग्वेद (१०/५/६) में एक मंत्र आया है -

**''सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरोऽगात्।''**

क्रान्तिदर्शी विद्वानों ने सात मर्यादायें निश्चित की थीं। उन सात में से यदि कोई किसी एक मर्यादा का भी अतिक्रमण करता था तो वह पापी समझकर दंडित किया जाता था।

उन सात मर्यादाओं का वर्णन महर्षि यास्क ने निरुक्त (२/५/२७) में ''अहुंर'' शब्द की व्याख्या में किया है -

**''सप्तैव मर्यादाः कवयचकुस्तासामेकामप्यभिगच्छन्नंहस्वान् भवति-स्तेयं, तल्पारोहणं, ब्रह्महत्या, भ्रूणहत्या, सुरापान, दुष्कृतस्य कर्मणः पुनः पुनः सेवा, पातकेऽनृतोद्यमिति।''**

१. चोरी करना, २. परस्त्रीगमन, ३. वेदविद् ब्राह्मणों की हत्या, ४. भ्रूण हत्या=गर्भपात, ५. शराब पीना, ६. किसी पाप को बार-बार करना और ७ किसी पातक कर्म को करके उस को छिपाने के लिए झूठ बोलना।

इन सात में से किसी भी एक दुष्कर्म के करने वाला व्यक्ति भी पापी माना जाता था किन्तु आज प्रायः एक ही व्यक्ति सातों अपराध करता है। १.पहले शराब पीता है, फिर २. चोरी (डाका) करता है, ३. परस्त्री वा कन्यागमन करता है, ४.,५. ब्रह्महत्या और भ्रूणहत्या करता और करवाता भी है, ६. इन सब दुष्कर्मों को बार-बार करता रहता है, ७. इस कारण पकड़ा जाने पर बचने के लिए अनेक प्रकार से झूठ भी बोलता है। ऐसे महापापी भी कानूनी कमजोरियों के कारण दण्ड से बच जाते हैं/अथवा साधारण दंड भुगतकर पुनः उसी मार्ग पर चल पड़ते हैं।

इन महापातकों में एक महापातक भ्रूणहत्या=गर्भ गिराना भी है। मनुस्मृति (११/८७) में अज्ञात गर्भ गिरवाने पर भी ब्रह्महत्या वा मनुष्यहत्या वाले दंड का प्रायश्चित विधान किया है। किन्तु जो जान पहचान कर कन्यागर्भ का हत्यारा है वह तो उस से भी अधिक दंड का भागी है।

हत्यारा जंगल में कुटिया बनाकर उस पर शव के शिर का झंडा टांगकर १२ वर्ष तक वहां रहे और भीख मांगकर अपना गुजारा करे। (मनु० ११/७२)

शिर के बाल, दाढ़ी मूंछ आदि सब मुंडवाकर गौ और ब्राह्मणों की सेवा करता हुआ गोशाला में अथवा ग्राम के बाहर कुटी बनाकर वा पेड़ के नीचे निवास करे। (मनु० १/७८)

यमस्मृति में इतना और अधिक लिखा है -

**भ्रूणघ्ने देही में भिक्षामेनो विख्याप्य संचरेत्।**
**एककालं चरेद् भैक्ष्यं तदलब्ध्वोदकं पिबेत्॥**

गर्भहत्यारा अपने पाप को सार्वजनिक रूप से प्रकट करता हुआ **''मुझ भ्रूणहत्यारे के लिए भिक्षा दो''** इस प्रकार कहता हुआ सर्वत्र भ्रमण करे और निर्वाह के लिए दिन-रात में केवल एक समय भिक्षा मांगे और यदि किसी दिन भिक्षा न मिले तो पानी पीकर ही संतोष करले।

याज्ञवल्क्य स्मृति में भी भ्रूणहत्या का लेख मिलता है। स्मृतिकारों ने विधान किया है कि जो व्यक्ति जिस अंग से चोरी आदि पापकर्म करता है, राजा उसके पाप को छुड़वाने के लिए उसके उस उस अंग को कटवा देवे। यदि वह पापी फिर भी न माने तो उसके लिए मृत्युदंड का विधान है। (मनु० ११/१००)

यह तो हुई प्रजा और राजा द्वारा दंड देने की व्यवस्था। इससे भी ऊपर राजा वरुण (परमात्मा) भी ऐसे प्राणियों को इसी जन्म में अथवा जन्मान्तरों में किये हुये पापकर्म का दंड अवश्य देता है। मनुस्मृति आदि में भी यही लिखा है- **''अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्''**। किये हुए प्रत्येक शुभ और अशुभ कर्म का फल कर्ता आत्मा को अवश्य भोगना पड़ता है। देखने और सुनने में आया है कन्याभ्रूणपात करवाने वाली अनेक स्त्रियां भविष्य में गर्भधारण करने योग्य नहीं रहतीं। कई भयंकर रोगों से पीड़ित हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त स्त्री-पुरुष सभी प्रकार के प्रयत्न करने के पश्चात् भी पुत्र अथवा पुत्री के सुख से आजीवन वंचित रहते हैं। मेरे विचार से ऐसे वे ही अभागे स्त्री-पुरुष होते हैं जिन्होंने पूर्वजन्म में भ्रूणहत्या की थी अथवा करवाई थी।

गर्भपात करने वाली स्त्री के साथ गर्भपात करवाने के लिए गर्भवती महिला को मजबूर करनेवाली सास, नणद, देवरानी, जिठानी, पति, देवर और श्वसुर आदि जो सम्बन्धी हैं वे भी इस पापफल के भागी हैं। इनके अतिरिक्त धन के लालच में जो दाई वा डॉक्टर गर्भपात करवाते हैं वे भी रुद्र भगवान् की मार से नहीं बच सकेंगे, भले ही सरकारी तन्त्र को धोखा देकर बच जावें। इसलिए मननशील स्त्री-पुरुषों को अपनी आत्मा की सद्गति की दृष्टि से भी भ्रूणहत्या के महापाप से बचना चाहिए।

परमात्मा ने स्त्री और पुरुषों की संख्या लगभग बराबर ही उत्पन्न की है। आधी दुनिया स्त्रीलिंग है और आधी पुल्लिंग। किन्तु मनुष्य अपने स्वार्थ वा अज्ञान के कारण कन्याभ्रूण की हत्या करवा देता है। इसका प्रमुख कारण है पुत्र को वंश का उत्तराधिकारी वा संचालक होने के कारण अपना धन समझना और कन्या को पराया धन समझना। **जाता हि कन्या परकीया एव।** अभिज्ञान शाकुन्तलम् में महाकवि कालिदास ने भी कण्व ऋषि के मुख से कहलवाया है कि आज शकुन्तला को पतिगृह में भेजकर मैं उसी प्रकार निश्चिन्त होगया हूं जिस प्रकार कोई कर्जदार अपने किसी पुराने कर्ज को चुकाकर निश्चिन्त होता है।

दूसरा कारण है **''नापुत्रस्य गतिरस्ति''** नपूते की गति न होने की रूढिग्रस्त भावना अथवा इसकी गलत व्याख्या। शास्त्रकारों ने पुत्र शब्द से पुत्र और पुत्री दोनों का ग्रहण किया है। पाणिनीय व्याकरण में **''पुमान् स्त्रिया''** (अष्टाध्यायी १/२/६७) ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च= ब्राह्मणौ का अर्थ दो ब्राह्मण नहीं अपितु प्रसंगानुसार ब्राह्मण और ब्राह्मणी समझना चाहिए। इसी प्रकार कुक्कुटौ का अर्थ दो मुर्गे के साथ मुर्गा और मुर्गी भी समझना चाहिए। यहां पाणिनि के नियमानुसार समास में स्त्री के सहवचन में पुमान् शेष रहता है स्त्री निवृत्त हो जाती है। इसलिए पुत्रश्च पुत्री च= पुत्रौ का अर्थ पुत्र और पुत्री दोनों होगा। इसी प्रकार -

**''भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्''** (अ० १/२/६८)

**''पिता मात्रा''** (अ० १/२/७०) **''श्वसुरः श्वश्र्वा''** (अ०१/२/७०)

सूत्रव्याख्या भी विशेष द्रष्टव्य है। भ्राता च स्वसा च **भ्रातरौ**। पुत्रश्च दुहिता च

(शेष पृष्ठ ४ पर)

# आओ जगमग दीप जलाएं

कार्तिक मास की अमावस्या की काली अंधेरी रात में नन्हे-नन्हे दीप प्रकाशमान होकर हमें जीवन का यथार्थ समझाते हैं कि चाहे कितनी अंधेरी रात हो प्रातःकाल की शुभ वेला अवश्य आती है। अंधेरा कितना ही गहरा क्यों न हो, प्रकाश अवश्य जन्म लेता है। अंधेरे से प्रकाश एवं असत्य से सत्य की ओर ले जाने वाला प्रेरणादायी पावन पर्व है- दीपावली।

**तमसो मा ज्योतिर्मय -** अंधेरे से प्रकाश की ओर जाने की अभिलाषा सदा मानव समाज की रही है। आज का मानव अपनी बुद्धि के बल पर चन्द्रमा तक पहुंचने में सफल हो गया है। कितना अंधकार था आदिमानव के जीवन में लेकिन आज प्रकाश ही प्रकाश है।

पूरे भारतवर्ष में दीपावली पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस पर्व के आगमन से कुछ दिन पहले लोग अपने घरों की सफाई करते हैं। दुकानदार अपनी दुकानों की सफाई करते हैं। इसलिए आज के दिन चारों ओर सुन्दरता ही दिखाई देती है। बाजारों की रौनक देखते ही बनती है। मिठाई की दुकानों पर सबसे अधिक भीड़ रहती है। रात के समय प्रत्येक घर पर नन्हे-नन्हे दीप टिमटिमाने लगते हैं। आतिशबाजी का प्रचलन इतना अधिक बढ़ गया है कि राजभर में ही करोड़ों रुपये आतिशबाजी के कारण मिट्टी में मिला दिए जाते हैं

**काटों भरे हुए जीवन में, फूलों सा मुस्कराना होगा।**
**रहे धरा पर नहीं अंधेरा, ऐसा दीप जलाना होगा॥**

दीपावली बाहर के अंधकार को मिटाने के साथ साथ भीतर के अंधकार को भी मिटाने की प्रेरणा देती है। आज चारों ओर स्वार्थ की हवाएं बह रही हैं। समाज में भ्रष्टाचार, अनाचार एवं अनैतिकता ने अपना स्थान बना लिया है। अपराधों की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं। इस बाहरी अंधकार को दूर करने के लिए महात्मा बुद्ध के इस अमृत विचार को हृदय में रखना होगा- **अप्प दीपो भव -** तुम अपने अंदर के दीप को प्रज्वलित करो। तुम स्वयं दीप बनकर भीतर बाहर के अंधेरे को दूर करो। **तमसो मा ज्योतिर्गमय -** मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। जब समाज का हर व्यक्ति स्वयं अपने दोषों का अवलोकरन करेगा- तो निश्चित रूप से उसके अंदर का अंधेरा दूर होगा। इससे ही समाज में परिवर्तन हो सकता है। कबीर, गुरु नानक, महात्मा गांधी, संत विनोबा तथा अन्य संत महात्माओं ने स्वयं पहले अपने अंतर (हृदय) के विषयवासना रूपी अंधेरे को दूर किया- तब वे बाहरी अंधकार को दूर करने में सफल हुए।

**आत्मज्योति को जागृत कर, दीपावली का करें अभिनन्दन।**
**अज्ञान के अंधकार को दूर कर, आत्मज्ञान से सबका करें अभिवन्दन॥**

वसुधैव कुटुम्बकम् एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः के सिद्धांत पर चलते हुए हम अपने अंतर के अंधकार के साथ साथ बाहरी अंधकार को भी दूर कर सकते हैं। दीपावली के इस पावन पर्व की आप सबको शुभकामनाएं।

-कृष्णलाल वोहरा, प्रिंसीपल आर्य सीनि०सै० स्कूल, सिरसा

## मांगेराम आर्य मैमोरियल ट्रस्ट

हमारे पूज्य पिता, ग्रामीण स्वाभिमान के धनी, भक्तिभाव से परिपूर्ण, जीवन पर्यन्त परोपकारी श्री मांगेराम आर्य १० नवम्बर २००४ (धनतेरस) को ब्रह्मलीन हो गये थ। उनक आदर्शों एवं सिद्धांतों को साकार रूप देने हेतु "**मांगेराम आर्य मैमोरियल ट्रस्ट**" की स्थापना एवं उनकी प्रतिमा का अनावरण ग्राम बांकनेर में ३० अक्तूबर २००५ रविवार (धनतेरस) को उनकी पहली बरसी पर सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु आप सादर आमंत्रित हैं।

**कार्यक्रम :** हवन प्रात १० बजे

प्रतिमा का अनावरण ११.०० बजे प्रात:

ब्रह्मभोज (भण्डारा) १२.०० बजे दोपहर

**स्थान-** प्रकाश सदन बांकनेर, नरेला, दिल्ली-११००४०

**निवेदक:** श्रीमती चांदकौर (पत्नी), ओम्प्रकाश पुत्र, ब्रह्मप्रकाश पुत्र, ऋषिप्रकाश पुत्र, वीरप्रकाश पुत्र, रवीन्द्रप्रकाश, पुत्र, आनन्दप्रकाश पुत्र, सुशीला पुत्री, सुरेन्द्रप्रकाश पुत्र, मेजर डॉ० ज्ञानप्रकाश, पुत्र।

## मेरे फोन नं० बदल गये

**- प्रो० शेरसिंह,** १४ एम. साकेत, नई दिल्ली

| पुराने नम्बर | नये नम्बर |
|---|---|
| २६८५१७१८ | २९५६१७१८ |
| २६८५९२३४ | २९५६३२३४ |
| २६५२२५२२ | २९५६२५२२ |

## शान्ति यज्ञ

चौ० सूबेसिंह आर्य (पूर्व एस.डी.एम.) के पिता चौ० बनवारीलाल जी का ९७ वर्ष की आयु में १० अक्तूबर २००५ को देहान्त हो गया था। उनके निमित्त उनके गांव भागवी (तह० चरखीदादरी) में २१.१०.०५ को शान्ति यज्ञ हुआ। यह यज्ञ दयावती, सुमित्रा आदि बहनों ने सम्पन्न करवाया। इसमें इलाके के तथा दूर दूर से हजारों प्रतिष्ठित स्त्री पुरुष एवं सगे सम्बन्धी, रिश्तेदार सम्मिलित हुए। गुरुकुल झज्जर से आचार्य विजयपाल जी, फतेहसिंह जी भंडारी, रोहतक से वेदव्रत शास्त्री, सत्यवीर शास्त्री, म० जिलेसिंह, वेदपाल आदि, पूर्व मुख्यमंत्री चौ० हुकमसिंह जी, सतगामा पंचायत, बिरहोड़ बारहा, फौगाट आदि पंचायतों के प्रतिनिधि भी पधारे। यज्ञ के पश्चात् प्रसाद और भोजन की भी व्यवस्था की गई थी।

इस अवसर पर निम्नलिखित धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं को एक सौ एक रुपये प्रत्येक को दान दिया गया -

१. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक। २. दयानन्दमठ रोहतक। ३. गुरुकुल झज्जर। ४. गऊशाला च०दादरी। ५. आर्यसमाज भागवी। ६. आर्यसमाज बेरी। ७. वेदप्रचार मंडल झज्जर। ८. वेदप्रचार मंडल भिवानी। ९. कन्या गुरुकुल पंचगांव भिवानी। १०. कन्या गुरुकुल खानपुर कलां, ११. कन्या गुरुकुल लोआ, झज्जर। १२. कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली। १३. गुरुकुल मटिंडू सोनीपत। १४. गुरुकुल कुरुक्षेत्र। १५. गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद। १६. गुरुकुल सिंहपुरा सुंदरपुर। १७. गुरुकुल लाढौत, रोहतक। १८. आर्य अनाथालय दयानन्दमठ रोहतक।

-रामकुमार सुपुत्र स्व० बनवारीलाल

## आर्यवीर दल हाँसी का वार्षिक उत्सव

आर्यवीर दल हाँसी का वार्षिक उत्सव ९-१०-११ दिसम्बर २००५ को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमं देश के कोने कोने से साधु संत विद्वान् महानुभाव पधार रहें हैं। आप सभी आर्य भाई-बहनों से प्रार्थना हैं कि उत्सव में पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाऐं एवं तन-मन-धन से सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें।

-मंत्री आर्यवीर दल, हांसी

## कन्या भ्रूणहत्या (पृष्ठ ३ का शेष)

**पुत्रौ।** माता च पिता च **पितरौ।** श्वसुरश्च श्वश्रूश्च **श्वसुरौ।**

तीसरा कारण कन्या भ्रूणहत्या का है दहेज दानव। दहेज के कारण अनेक सुशिक्षित कन्यायें भी अपने योग्य वर प्राप्त करने में असफल होने के कारण आत्महत्या कर लेती हैं। दहेज की कमी के कारण सुसराल में जाकर परिवार के तानों से तंग आकर नववधू अपनी जीवनलीला समाप्त कर लेती है। इससे भी बढकर सुसराल के दहेजलोभी निर्दयी स्त्री-पुरुष बहू को घर से निकाल देते हैं। मार देते हैं। जला देते हैं और फिर कानून के फंदे में फंसकर स्वयं भी बर्बाद हो जाते हैं। मांगकर दहेज देना और लेना अपराध है। स्वत: यदि माता-पिता अपनी पुत्री को अपनी शक्ति और श्रद्धानुसार स्नेहवश कुछ भी देते हैं तो वह अपराध श्रेणी में नहीं आयेगा।

सामाजिक व्यवस्था के अनुसार सभी नवयुवतियां विवाह के पश्चात् पीहर को छोड़कर बड़े चाव के साथ सुसराल जाती हैं। उनकी अपनी उमंग होती है। बहुत सुन्दर विचार होते हैं। यदि उन्हें अच्छा वर घर परिवार मिल जाता है तो वे पीहर के माता पिता, भाई भाभी के प्यार को भूलकर पति के परिवार में घुल मिलकर वहां आनन्द का जीवन व्यतीत करती हैं और अच्छा स्वर्ग समान घर बसाती हैं। विपरीत परिस्थिति में वे नरक समान घर में जैसे तैसे निर्वाह करके दुःखी रहती हैं और दोनों घरों का सुख समाप्त हो जाता है।

यदि प्रत्यके पिता अपने पुत्र के विवाह में वधूघर से दहेज का लोभ छोड़ दे तो उसको भी अपनी पुत्री के विवाह में दहेज नहीं देना पड़ेगा। ऐसी अवस्था में दोनों का घर आर्थिकदृष्टि से समान ही रहेगा। जिस के लड़के ही हों अथवा जिसके लड़कियां ही हों उनको भी दहेज का लोभ छोड़कर समाज के वातावरण को सुखमय बनाना चाहिए। दहेज के धन.से किसी का सारे जीवन निर्वाह नहीं हो सकता। केवल अपने पुरुषार्थ से प्राप्त धन ही सर्वोत्तम माना गया है। पैतृक धन और स्त्री-धन का दूसरा और तीसरा स्थान है। **स्वयं यजस्व। मा गृध कस्यस्विद् धनम्।**

-वेदव्रत शास्त्री

# एक वर्ष में एक लाख नवयुवकों तक कैसे पहुंचे ?

आज आर्यजगत् में सर्वत्र एक बेचैनी व्याप्त प्रतीत होती है। अनेक मूर्धन्य संन्यासी, विद्वानों, निष्ठावान्, ऋषिभक्तों से हमें वार्तालाप का अवसर मिला है। सभी चिंतित हैं आर्यसमाज की दशा और दिशा को लेकर। सबके समक्ष एक प्रश्नवाचक चिह्न खड़ा है कि आर्यसमाज का स्वर्णिम युग क्या वास्तव में अतीत की वस्तु हो गया है? विगत तीस वर्षों में आर्यसमाज के संगठन में विभिन्न रूप में कार्य करते हुए जो कुछ देखा है जो अब देख रहे हैं, इस कटु सत्य को हमें स्वीकार करना पड़ता है। माँ आर्यसमाज की सेवा में सर्वस्व अर्पित कर देने वाले व्यक्तित्व आज अंगुलियों पर गिनने लायक ही हैं। कतिपय सक्रिय आर्यसमाजों व संगठनों को छोड़ प्रायः आर्यसमाजें औपचारिकता मात्र निभा रही हैं। साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थिति १०-१५ से अधिक नहीं, सिद्धान्तों से अपरिचित अधिकारियों द्वारा सत्संग की कार्यवाही के क्रम में खानापूर्ति, सत्संग में आकर कुछ जीवन निर्माण का संदेश मिल सके इसका, यहां तक कि आत्मीयता तथा स्नेह का भी पूर्णतया अभाव, व्यक्तिगत संपर्क का सर्वथा त्याग, नवीन भाई-बहनों को वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप का उनके समक्ष दिग्दर्शन कर उन्हें आकर्षित करने में पूर्ण अरुचि, वेदप्रचार के कार्य को युगानुकूल, समयानुकूल, उन्नत तकनीक का प्रयोग कर नवीन आयाम देने की बात तो दूर इस दिशा में सर्वथा अनिच्छा, आधार बन गई है इस दयनीय स्थिति की। रही सही कसर स्वार्थ-लोलुपता, पदलिप्सा और आपसी लड़ाई ने पूरी कर दी है। आर्यसमाज की दशा दिशा, समस्याओं के कारण तथा निवारण पर आर्यजगत् के चिंतक वर्ग द्वारा बहुत कुछ लिखा गया है तथा लिखा जा रहा है। अतः उस ओर अधिक न जाकर सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर के माध्यम से कार्य करते हुए जो अनुभव हुए हैं उनके आधार पर आर्यों की सेवा में कुछ निवेदन प्रस्तुत कर रहा हूं। इस समय हमें यही पंक्तियां याद आ रही हैं- **'बड़े शौक से सुन रहा था जमाना, हमीं सो गये दास्तां कहते कहते।'**

बन्धुओ! निराशा की कोई बात नहीं है। संगठन के झगड़े भी मिट जावेंगे, आर्यों की शिथिलता व जड़ता भी दूर हो जावेगी, हमें तो पूर्ण विश्वास है। उसका कारण है यत्र तत्र सर्वत्र निष्ठावान् आर्यजनों की उपस्थिति एवं आज भी अनेक आर्यसमाजों, संगठनों, सभाओं व आर्यपत्रिकाओं द्वारा उदाहरण देने लायक किये जा रहे रचनात्मक कार्य। आवश्यकता इस बात की है कि हम इनके कार्यों से प्रेरणा लेकर, मतभेद, मनभेद, वैमनस्य में उलझने की बजाय महर्षिवर के बलिदान को प्रतिक्षण याद रखते हुए उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को अधिकाधिक जनों तक पहुंचाने में जुट जावें, **विश्वास रखें वे आपका स्वागत करने को समुत्सुक हैं हमारा अनुभव तो यही कहता है।**

सर्वविदित है कि सत्यार्थप्रकाश रचनास्थल जैसी पवित्र ऐतिहासिक धरोहर आर्यों को १९९२ में प्राप्त हुई। जर्जर भवन का कायाकल्प कर अब यहां एक भव्य प्रेरणादायक स्मारक का निर्माण हो चुका है। कुछ वर्ष इसके निर्माण में निकलने के पश्चात् न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्ववोध जी व हमारे चिंतन का विषय था कि किस प्रकार इस स्थल को केन्द्र बनाकर सत्यार्थशिक्षाओं का प्रचार प्रसार किया जावे? **सुनिश्चित मत था कि आर्यसमाजों की चारदीवारी से हमें बाहर निकलना होगा। लोग हम तक आवें इसकी प्रतीक्षा न कर हम उन तक पहुंचें तथा सरलतम शब्दों में अपनी बात कहें व ऐसा साहित्य उन्हें दें जिसे वे आसानी से समझ सकें।** यह भी तय किया कि ग्राम्य अंचल में अभी शहरी बीमारी अपेक्षाकृत कम है अतः प्रचार कार्य में ग्राम्य अंचल को वरीयता दी जानी चाहिए। १९९८ में न्यास ने वेदप्रचार मंडल का गठन कर वेदप्रचार वाहन तैयार किया। उपरोक्त निश्चयानुसार सत्यार्थशिक्षाओं को सरलतम रूप में प्रस्तुत करने वाला साहित्य निरन्तर प्रकाशित करने का क्रम बनाया। गतः ९ वर्ष में जो प्रचार प्रसार कार्य किया, अगर एक पंक्ति में उसका लक्ष्य वर्णित किया जावे तो वह पंक्ति होगी- 'गैर आर्यसमाजियों में वैदिक सिद्धान्त तथा सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं का प्रसार किया जावे।'

अतीव सफलतापूर्वक अपने प्रचार कार्यक्रम के संदर्भ में जिन लाखों लोगों तक हम पहुंचे, हमारा संदेश गया, लाखों रुपयों का हमारा साहित्य गया, सत्यार्थप्रकाश ने जिन हजारों परिवारों में प्रवेश किया, जो हजारों व्यक्ति न्यास के प्रत्यक्ष संपर्क में आकर औपचारिक रूप से जुड़े उनमें से ९९ प्रतिशत वे थे जिन्होंने पूर्व में कभी इस प्रकार के न तो विचार श्रवण किये थे और न ही साहित्य पढ़ा था। बाईस लाख रुपये से ऊपर का साहित्य विक्रय एवं २५०० से ऊपर परिवारों का न्यास से सदस्यता के रूप में जुड़ना ऐसे लोगों के मध्य में वैदिक सिद्धान्तों के प्रति आकर्षण व प्रभाव उत्पन्न होने का प्रमाण है।

उक्त प्रकार के उत्साहजनक सकारात्मक परिणाम से प्रेरित हो न्यास ने इस वर्ष ऐसे ही विद्यार्थी वर्ग तक सत्यार्थप्रकाश का संदेश पहुंचाने का कार्यक्रम **बनाया जिन तक पूर्व में महर्षि दयानन्द के जीवन को नवीन दिशा प्रदान कर देने वाले, क्रान्तिकारी विचार न पहुंच पाये थे।** दो मास के भीतर ही जो आशातीत सफलता हमें प्राप्त हुई उसे ही कर्मठ आर्यजनों तक पहुंचाने के निमित्त यह आलेख लिखा है ताकि विश्व के कोने कोने में यह अभिनव योजना प्रारम्भ करने की मनसा आर्यों का बन सके। हमें सदैव चिंता रहती है कि नौजवान पीढ़ी आर्यसमाज से नहीं जुड़ रही है। हमारी सोच बन गई है कि उन्हें हमारी बातों में कोई रुचि नहीं है **पर हमारे उक्त प्रयासोपरान्त मिले परिणाम ने इस सोच को गलत साबित कर दिया है।**

अमेरिका निवासी श्री प्रभात जी शर्मा के द्वारा अपने पूज्य पिताश्री स्वर्गीय पंडित राजबल जी शर्मा की स्मृति में इस योजना का आंशिक वार्षिक व्यय भार निज के ऊपर लेने के पश्चात् दिनांक २३ जुलाई २००५ को **'वैदिक संस्कृति प्रचार योजना'** का शुभारम्भ कर इसके अंतर्गत बीस रु० मात्र में छठी से दसवीं तक के विद्यार्थियों को सदस्य बनाकर उन्हें भेंटस्वरूप **'बाल सत्यार्थप्रकाश'** और तदाधारित इस प्रकार का प्रश्न पत्र भेंट किया जाना था जिसे हल करने में बच्चों को निश्चित रूप से पुस्तक को तीन चार बार पढ़ना पड़े। परिणाम में १००० से १०० रु० तक के पुरस्कार तथा ६०% अंक पाने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को प्रमाणपत्र व पुरस्कारस्वरूप एक पुस्तक स्वाध्याय हेतु अतिरिक्त दी जानी है। २६ जुलाई २००५ से २६ दिसम्बर २००५ तक न्यास के सुसज्जित वेदप्रचार रथ के माध्यम से पंडित रघुनाथ देव **''वैदिक भूषण''** के नेतृत्व में प्रचार कार्य कर ग्राम्य अंचल के ७१ विद्यालयों में प्रवचन कर विद्यार्थियों व गुरुजनों को प्रेरित किया गया। योजना के प्रति विद्यार्थियों का उत्साह देखते बनता था। दो मास में २००० विद्यार्थी इसके सदस्य बने। उत्तर पुस्तिका प्राप्ति का अंतिम दिनांक ३० नवम्बर २००५ होने पर भी अब तक १००० पूर्ण हलशुदा उत्तर पुस्तिकाओं का प्राप्त होना तथा २०० के लगभग जब मूल्यांकन की गई उत्तर पुस्तिकाओं में विद्यार्थियों द्वारा ७० से ९६ प्रतिशत तक अंक प्राप्त करना उनके द्वारा पुस्तक का मनोयोगपूर्वक किये गये स्वाध्याय का द्योतक है। ७० प्रतिशत से ज्यादा छात्र छात्राओं ने ८० प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त किए हैं। इन सभी प्रतिभागियों को मान्य श्री ओमप्रकाश जी मस्करा (कोलकाता) के सौजन्य से एक सुन्दर पुस्तक पुरस्कारस्वरूप प्रेषित की जावेगी। पत्राचार योजनाएं तो आर्यजगत् में अन्य भी चल रही हैं पर मूलतः अन्तर यह है कि उनमें आर्यसमाज के विद्यालयों तथा गुरुकुलों के बच्चे ही भाग लेते हैं। परन्तु इस योजना में मुख्य प्रतिभागी वैदिक सिद्धान्तों से अद्यतन अपरिचित विद्यार्थी वर्ग है। इस योजना में भी आर्यसमाज के विद्यालयों के १००० बच्चे सदस्य बन चुके हैं। इस प्रकार दो माह में अब तक कुल ३००० विद्यार्थी इस योजना के सदस्य बन चुके हैं। जनवरी, फरवरी २००६ में पुनः न्यास का वेदप्रचार रथ प्रचारयात्रा पर निकलेगा। पूर्ण विश्वास है कि न्यूनतम २००० विद्यार्थी सदस्य बन सकेंगे। **इस प्रकार से एक वर्ष में मात्र चार माह के प्रचार से ५००० छात्र-छात्राओं को हम सत्यार्थ संदेश दे सकेंगे।** ग्रीष्मावकाश में प्रथम ३० छात्र-छात्राओं को पूर्णतः हमारे द्वारा व्ययभार उठाकर नवलखा महल में इनका गहन वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण शिविर लगाया जावेगा ताकि मेधावी छात्र-छात्राएं सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्तों को गंभीरता से समझ सकें।

इस लेख के माध्यम से आर्यजगत् के कर्णधारों की सेवा में यही निवेदन करना चाहता हूं कि **केवल २०० आर्यसमाजें/आर्य संस्थाएं/सभाएं/संगठन मिलकर इस कार्य को हाथ में ले लें तो वर्षभर में एक लाख नौजवानों तक आपका संदेश पहुंच सकता है।**

यह लिखना संभवत आवश्यक नहीं है कि साहित्य का स्थायी प्रभाव होता है। वह कब किसे नई दिशा प्रदान कर दे कहा नहीं जा सकता। आर्यजगत् के सैकड़ों ऐसे मूर्धन्य कर्णधार हैं जिनका जीवन किसी न किसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश पढ़ने से परिवर्तित हो गया। अभी हमें अमेरिका निवासी सुप्रसिद्ध आर्य रघुनाथ जी धर लिखते हैं कि जब वे आठवीं कक्षा में थे किसी ने उनके बस्ते में सत्यार्थप्रकाश रख दिया। किसने रखा वे यह तो आज तक नहीं जान पाये पर वे आर्यसमाजी बन गये। यूं तो सत्यार्थप्रकाश की प्रशंसा में न जाने कितने महापुरुषों ने सकारात्मक लिखा है पर सत्य कहना चाहता हूं कि इन बच्चों में प्रथम बार सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर जो राय प्रेषित की है उसे पढ़कर हम भावविभोर हो रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे वैचारिक क्रान्ति का रथ एक बार पुनः तीव्र गति से चल सकता है यदि आर्यनेतृत्व इस प्रकल्प पर ध्यान देवे। बच्चों की हजारों सम्मतियां प्रस्तुत नहीं की जा सकती अतः केवल एक प्रतिभागी की सम्मति दे रहा हूं- **राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गाम बीसलपुर जिला पाली की जया सोनी लिखती है-** 'आज हमने पुराने संस्कारों को छोड़ दिया है जिससे हमारा हर तरह से पतन हो रहा है। हमें ऐसे ही प्रकाश की जरूरत है। वेदों में हमारा सम्पूर्ण ज्ञान है, यह हमारे अंधविश्वास को

तोड़ने में समर्थ है। इसे प्रत्येक घर में पढ़ा जाये। हमारे शब्दकोश में शब्द नहीं हैं। वास्तव में गागर में सागर भर दिया है। हम स्वामी दयानन्द जी के जन्म जन्म के आभारी हैं। यह अमृत का खजाना है।'

अतएव यही निवेदन करना चाहते हैं कि जब तब किये जाने वाले संकल्पों को मूर्त रूप में यदि हम देखना चाहते हैं तो उक्त प्रकार की योजना उसका एक प्रकार है। हां! इसमें कई प्रकार के सकारात्मक संशोधन/परिवर्धन/परिवर्तन हो सकते हैं। विद्वज्जन इस दिशा में हमारा भी मार्गदर्शन करें। **ऋषिभक्तों से निवेदन है कि इस विषय पर गंभीर चिंतन कर सकारात्मक प्रेरणा व ऊर्जा प्राप्त करने हेतु महर्षिवर की पवित्र कर्मस्थली सत्यार्थप्रकाश रचनास्थली पर २ से ४ मार्च २००६ में एकादश सत्यार्थप्रकाश महोत्सव के अवसर पर अवश्य पधारें।**

निश्चित रूप से आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है। सहकार भावना से रचनात्मक कार्य करने का संकल्प हम सब लें, प्रभु ऐसी कृपा करे।

-अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष सत्यार्थप्रकाश न्यास,
नवलखा महल, गुलाब बाग उदयपुर-३१३००१

## गुरुकुल भैयापुर लाढौत ( रोहतक ) का १४वां वार्षिक महोत्सव

**दिनांक :** ५-६ नवम्बर ( शनिवार, रविवार ) को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के उच्चकोटि के नेता, साधु, संन्यासी, विद्वानों और उपदेशकों के सारगर्भित मनोहारी कार्यक्रम होंगे।

इसी शुभ अवसर पर **चौ० भूपेन्द्रसिंह हुड्डा मुख्यमंत्री हरियाणा,** विद्यालय भवन की आधारशिला रखेंगे। दोनों दिन प्रात: 8 बजे से सांय चार बजे तक आकर्षक कार्यक्रम रहेगा। कृपया इष्टमित्रों सहित सपरिवार अधिकाधिक संख्या में पहुंचें।

-आचार्य हरिदत्त

## ऋषिवर! शत शत तुम्हें प्रणाम

महिमण्डल को वेद ज्ञान का, जिसने नव संदेश दिया
नव जागृति का मंत्र फूंक कर, जाग्रत भारत देश किया
पावनतम जिसका चरित्र था, ज्योतिर्मयसा ललित ललाम।
ऋषिवर! शत शत तुम्हें प्रणाम॥

नष्ट विनष्ट किया ऋषि तुमने, गहन तमिस्रा की कारा
तेरे सिंह निनादों से जग उठा जगत् का जन सारा
लिए प्रबल इच्छा जनहित की कर्म किए सारे निष्काम
ऋषिवर! शत शत तुम्हें प्रणाम॥

अन्यायों-अत्याचारों का दृढ़ता से प्रतिकार किया
त्याग तथा बलिदानों से ही, संघर्षों से प्यार किया
प्रतिपल रहे जूझते निर्भय, दनुज वृत्तियों से अविराम
ऋषिवर! शत शत तुम्हें प्रणाम॥

स्वतंत्रता संदेश तुम्हीं ने दिया दिव्य सत्यार्थप्रकाश
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' स्वर गूंज उठा अवनी आकाश
डंका बजा पुन: वेदों की लहराई स्वर लहरी साम
ऋषिवर! शत शत तुम्हें प्रणाम॥

अबलाओं-विधवाओं का तुमने ही नष्ट किया क्रंदन
तुमने ही ऋषि! नव जागृति का भरा धराउर में स्पंदन
लेने लगे नवल अंगडाई खेत, बाग, वन, उपवन, ग्राम
ऋषिवर! शत शत तुम्हें प्रणाम॥

पाखण्डों पर चला दुधारा, अन्धभक्ति की नींव हिली,
दिव्य तुम्हारे वक्तव्यों से, मानवता को शक्ति मिली
वध करके अज्ञान-असुर का, बने तुम्हीं कलयुग के राम
ऋषिवर! शत शत तुम्हें प्रणाम॥

हिन्दी के तुम रहे हितैषी, सत्य धर्म के प्रबल प्रचारक
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं थे, दीन दलित जग के उद्धारक
ब्रह्मचर्य के व्रती तुम्हारा! अमर रहेगा नाम-सुकाम
ऋषिवर! शत शत तुम्हें प्रणाम॥

**-स्व० राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति,**
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

# कन्या भ्रूणहत्या के विरुद्ध सर्वधर्म जन चेतना यात्रा

**दयानन्दमठ रोहतक-** आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने जब से संस्था का प्रधान पद सम्भाला है उसी दिन से आर्यजगत् में गतिशीलता डाल रहे हैं। चाहे देश हो या प्रदेश अथवा विदेश, किसी भी कोने पर पहुंचे वहीं पर महर्षि दयानन्द जी द्वारा संचालित सामाजिक क्रान्ति को आगे बढ़ाने में जहां स्वयं जुटते हैं वहीं दूसरे साथियों को भी उस कार्य में तत्परता से जुटने के लिए आह्वान करते हैं। सामाजिक अन्याय से पीड़ित महिला वर्ग की आवाज बनकर कन्याभ्रूणहत्या जैसा जघन्य पाप के अभिशाप को मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द के जन्मस्थान टंकारा (गुजरात) से स्वतंत्रता के इतिहास की प्रमुख स्थली जलियांवाला बाग अमृतसर (पंजाब) तक ऋषि निर्वाण दिवस दीपावली प्रथम नवम्बर को प्रारम्भ करके १५ नवम्बर २००५ को गुरु विरजानंद के जन्म स्थान करतारपुर (गुरुकुल पंजाब) तक एक जनचेतनायात्रा लेकर जा रहे हैं। इस यात्रा के संयोजक की जिम्मेवारी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एवं राजधर्मपत्रिका के सम्पादक श्री जगवीरसिंह को सौंपी गई है। इस यात्रा में सभी धर्मों के धर्माचार्य, मण्डलों के मण्डलेश्वर व पीठों के पीठाधीशों को सम्मिलित किया गया है। टंकारा से प्रथम नवम्बर २००५ को ऋषि निर्वाण दिवस को चलकर ७ नवम्बर २००५ को रोहतक नगर में सायंकाल ४ बजे पहुचेंगे। चौ० छोटूराम चौक सिविल रोड रोहतक से शोभायात्रा के रूप में झज्जर रोड, रेलवे रोड, भिवानी स्टैंड व शान्तमई होते हुए पुराना गोहाना अड्डा पर सभा में बदल जायेगी। वहीं पर स्वामी अग्निवेश व अन्य धार्मिक नेता जनता को सम्बोधित करेंगे। इस सम्बन्ध में २३ अक्तूबर रविवार को स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में प्रमुख आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं की बैठक दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई जिसमें यात्रा के स्वागत व तैयारी समिति का गठन किया गया। बहन गायत्री देवी को संयोजक व रणवीर शास्त्री को सहसंयोजक बनाकर संचालन समिति में संरक्षक के रूप में स्वामी इन्द्रवेश जी, श्री वेदव्रत शास्त्री, महावीर शास्त्री, डॉ० शीशराम, मा० रणवीर आर्य, सुखवीर शास्त्री, बानवीर कूण्डू आर्य, बहन दयावती आर्य, प्रतिभा सुमन पूर्व चेयरमैन नगर परिषद्, कृष्णा देवी, फूलवती, सुमित्रा देवी, कान्ता कूण्डू, पूनम व प्रवेश एवं राजबाला एडवोकेट को संचालन समिति का सदस्य बनाया गया। श्री रामधारी शास्त्री प्रदेश संचालन समिति के संयोजक व संतराम आर्य को सहसंयोजक प्रदेश संचालन समिति बनाया गया। अन्त में सभी कार्यकर्ताओं एवं विभिन्न धर्मावलम्बियों से ७ नवम्बर २००५ सोमवार सायंकाल ४ बजे जुलूस में शामिल होने व विभिन्न धार्मिक नेताओं के विचार सुनने के लिए दल-बल से रोहतक पहुंचने का आह्वान किया गया।

## दयानन्दमठ का ७४वां वैदिक सत्संग

वैदिक सत्संग समिति दयानन्दमठ, रोहतक द्वारा संचालित वैदिक सत्संग का ७४वां सत्संग समारोह ६ नवम्बर २००५ रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। समिति के मन्त्री एवं कार्यक्रम के संयोजक सन्तराम आर्य ने बताया कि यह कार्यक्रम १९९९ ई० में प्रारम्भ हुआ था तथा लगभग ६ वर्ष से निरन्तर चल रहा है। इस सत्संग का उद्देश्य सामाजिक कुप्रथाओं, धार्मिक अन्धविश्वासों, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एवं शोषण के बारे में वैदिक धर्म की मान्यताओं का प्रचार-प्रसार करना है।

७४वें सत्संग के अवसर पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में संस्कृत विभाग में रीडर डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी का वक्तव्य होगा। उनका विषय है-युगद्रष्टा-महर्षि दयानन्द सरस्वती। जैसा कि सभी प्रबुद्धजन जानते हैं कि प्रथम नवम्बर को महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण दिवस भी है अत: विषय समसामयिक होने के साथ सभी आर्य बन्धुओं, आर्य युवकों एवं सभी बहनों के लिए एक विशेष जानकारी का अवसर भी है। सत्संग से अगले दिन ७ नवम्बर सोमवार को 'कन्याभ्रूणहत्या के विरुद्ध-सर्वधर्म जनचेतनायात्रा' स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा (गुजरात) से चलकर रोहतक में पहुंचेगी। उसके स्वागत के लिए आप सभी ७ नवम्बर को सायंकाल ५ बजे शोभायात्रा में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें एवं आर्यसमाज के मनीषियों के विचार सुनें।

**-सन्तराम आर्य,** मन्त्री एवं संयोजक
वैदिक सत्संग समिति, दयानन्दमठ, रोहतक

# आर्य-संसार

## स्वामी अग्निवेश की जन चेतना यात्रा का अभिनंदन

१ नवम्बर २००५ ऋषि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) से प्रारम्भ तथा १५ नवम्बर २००५ को जलियावाला बाग अमृतसर (पंजाब) में समापन होने वाली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश की अध्यक्षता में निकाली गई। **कन्या भ्रूण हत्या विरुद्ध जनजागरण** एवं दस लाख संकल्पित हस्ताक्षर जन चेतना अभियान यात्रा का मधुबन (करनाल) क्षेत्र में आर्यसमाज के जुझारू, कर्मठ कार्यकर्ता डॉ० यशवीर आजाद शास्त्री के नेतृत्व में खरकाली राजमार्ग पर हसनपुर, बसताड़ा, झींवरहेड़ी, कुटेल, भूसली, बीजना, बजीदा, दहा, कम्बोपुरा, मधुबन ऊंचा समाना, खरकाली आदि गाँवों के सैंकड़ों आर्यसमाजियों द्वारा १० नवम्बर को सुबह ८ बजे अभिनन्दन किया जायेगा।

**-क्षेत्रिय आर्य कार्यकर्ता**, मधुबन,
सम्पर्क मो०- ९८९६०४४६८४

## अद्भुत गोशाला सहयोग सम्मेलन

११ नवम्बर शुक्रवार २००५ को गुरुकुल गोशाला डिकाडला में हर वर्ष की तरह इस बार भी हरयाणा की विभिन्न ग्रामीण गोशालाओं को लगभग 3 लाख रुपये का सहयोग मौके पर ही नकद दिया जायेगा। यह सहयोग हर वर्ष गोवंश रक्षा समिति हरयाणा देती है जिसके अध्यक्ष ब्रह्मचारी ओम्स्वरूपार्य आचार्य गुरुकुल आटा-डिकाडला (पानीपत) हैं। इस सम्मेलन के अध्यक्ष गोभक्त श्री राजेन्द्र सिंहल नरेला तथा मुख्य अतिथि श्री प्रेमचंद गोयल राष्ट्रीय सेवा प्रमुख रा०स०स० होंगे। अन्य विशिष्ट अतिथियों में श्री अरविंद शर्मा सांसद, श्री भरतसिंह छोकर विधायक समालखा होंगे। ला० रामजीलाल अग्रवाल, ला० जयनारायण खण्डेलवाल व ला० रामनिवास अग्रवाल दिल्ली होंगे तथा पानीपत से श्री हरिओम् तायल एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी पालीवाल भी पधारेंगे। आचार्य बलदेव अध्यक्ष ह०रा०गो० संघ को भी आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम १० से १.३० बजे तक होगा।

-ओम्स्वरूप

## गर्भ से कन्याभ्रूण की आवाज

पुत्री समझ गर्भ में माता कतल करावण आगी।
आज से पहले तनैं मेरे में कमी कौणसी पागी।
तू भी किसी के रही गर्भ में, तू भी तो पुत्री थी।
जन्म लिए बिन धरती पै के आकाश से उतरी थी।
लाड प्यार में पाली पोसी शिक्षा हुई त्रि थी।
वंशबेल चालण की खातर शादी त्रि करी थी।
अपने हाथों नीम धरी थी वा बेल कटावण लागी॥ १॥

मान लिया तैरे फेर दुबारा लड़का भी हो जावै।
जो लड़की मारी जांगी तो तैरे लड़के नै कोण ब्याहवे?
तू करवाचौथ व्रत पै कन्या नहीं जिमावण पावै।
भैंण बिना भाई कै राखी किस धौरे बन्धवावै।
इतणे मोटे जुलम कमावै सहम बणे क्यों दागी॥ २॥

मैं दो तीन बरस की आयु में भाई की कामना करती।
उस छोटे से को मुंह चूमू गोदी में ठाये फिरती।
भाई की शादी में मैं भी चाव में खूब सिंगरती।
सुथरी लागै नणदी के संग भाभी पाणी भरती।
आज जुल्म से कांप रही धरती खुद माँ बेटी नै खागी॥ ३॥

सीता और सावत्री का तू सुण इतिहास पुराना।
मछली बींध द्रोपदी ब्याही थी अर्जुन का देख निशाना।
मैं अपणा पति आप बरल्यूं तेरे धन की कोन्या चाहना।
**सूबेसिंह** कहै लोभ की खातिर डूब्या फिरै जमाना।
तेरी माफी का कोन्या खाना जब धर्मराज कै जागी॥ ४॥

**-सूबेसिंह** (पूर्व बी.डी.ओ.), गांव मकड़ौली खुर्द, रोहतक

## डॉ० ऑफ फिलासफी



आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक के मालिक, सर्वहितकारी साप्ताहिक के सम्पादक श्री वेदव्रत शास्त्री के सबसे छोटे पुत्र **श्री विवेकानंद शास्त्री साहित्याचार्य** एम.ए. ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के श्रद्धानंद वैदिक शोध संस्थान के अन्तर्गत २२-९-२००५ को **"डॉ० ऑफ फिलासफी"** की डिग्री प्राप्त की है। थिसिस का विषय था- **"व्याकरणदर्शने अद्वैततत्त्वमीमांसा"**। श्री शास्त्री जी सन् १९९८ ई० से हरियाणा सरकार की सेवा में संस्कृत अध्यापक पद पर कार्यरत हैं।

Enrolment No. : 01010 ओ३म्

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
GURUKULA KANGRI VISHWAVIDYALAYA, HARIDWAR

विद्यावाचस्पतिः

इदं प्रमाणीक्रियते यत् श्री विवेकानन्द पुत्रः श्री वेदव्रत शास्त्री प्रस्तुतः शोधप्रबन्धः २००५ तमे ख्रीष्टाब्दे प्रतिज्ञातः। तदर्थं अस्मै/अस्यै गुरुकुल-कांगड़ी-विश्वविद्यालयेन श्रद्धानन्द-वैदिक-शोध-संस्थान-विषये विद्यावाचस्पति-उपाधिः प्रदीयते। अस्य शोध-प्रबन्धविषयः- "व्याकरण दर्शने अद्वैततत्त्व मीमांसा"

DOCTOR OF PHILOSOPHY

*This is to certify that Mr.* VIVEKANAND *Son of Shri* VEDVRAT SHASTRI *has been admitted to the degree of Doctor of Philosophy of Gurukula Kangri Vishwavidyalaya in* SHRADHANAND VEDIC SHODH SANSTHAN, 2005. *The degree of* DOCTOR OF PHILOSOPHY *is hereby conferred on his/her under the seal of Vishwavidyalaya. The title of his/her thesis was :* Vyakarana Darshane Advaitatattva Mimansa.

कुलाधिपतिः Chancellor — कुलपतिः Vice-Chancellor — आचार्य Pro Vice-Chancellor — कुलसचिवः Registrar

हरिद्वार / Haridwar
दिनांक / Date 22-9-2005

## सूचना प्राप्ति का अधिकार

आर्यसमाज के क्षेत्रीय और केन्द्रीय संगठन की गतिविधियों से सामान्य आर्यजन अपरिचित हैं क्योंकि इनके कार्यों में न तो पारदर्शिता है और न ही ये अपने आय-व्यय का ब्यौरा व अंतरंग या आम सभा की बैठक के निश्चयों की जानकारी देते हैं। प्रत्येक आर्यसमाज को यह जानने का हक है कि ऊपर के संगठनों में क्या हो रहा है? आज कहा जा रहा है सार्वदेशिक सभा को अपना कार्यालय का खर्च चलाने के लिये प्रतिमाह दो लाख का खर्च है जिसकी पूर्ति की आशाएं वे आर्यजगत् से कर रहे हैं पर सार्वदेशिक के पदाधिकारी यह नहीं बतलाते हैं कि उनका दो लाख का मासिक खर्च कैसे होता है? जबकि सामान्य आर्यजनता तो यही जानती है कि सभा के कोष में करोड़ों रुपयों की स्थिर निधियाँ हैं जिसका ब्याज और अन्य स्रोतों से प्राप्त राशि से लाखों रुपया प्रतिमाह की आय सार्वदेशिक को है फिर यह बावेला क्यों? क्या हमारी सभायें सरकार की तरह आर्यसमाजों को भी किसी भी प्रकार की जानकारी (सूचना) देने का अधिकार नहीं दे सकती हैं? जबकि सरकार ने सभी देशवासियों को सूचना प्राप्ति जानने का अधिकार एक कानून बनाकर दे दिया है। अतः सार्वदेशिक और क्षेत्रिय प्रतिनिधि सभाओं को इसका अनुसरण करना चाहिए। ऐसा न करने पर उन्हें जानकारी प्रदान करने के लिए बाध्य किया जाये। उनके द्वारा ऐसा न करने पर उनके साथ किसी प्रकार का सहयोग नहीं किया जाए।

**-दयाराम पोद्दार**, झारखंड राज्य आर्यप्रतिनिधि सभा, रांची

# विदेशों में गुरुकुल खोलने की योजना

समादरणीय श्रीयुत शास्त्री जी। LEICESTER U.K.(ENGLAND) १९-१०-२००५

सर्वहितकारी साप्ताहिक,

सादर नमस्ते।

आज मुझे इंग्लैंड देश में आये दो मास पूरे हो चुके हैं। इस बीच २ सप्ताह के लिए मैं पूर्वी अफ्रिका के अनेक देशों में वैदिक धर्मप्रचारार्थ गया था, जिसका वर्णन पृथक् रूप से पुस्तक रूप में करूंगा।

पिछली यात्राओं में यहां ''आर्य वैदिक सोसायटी'' तथा ''आर्य संगठन'' नामक संस्थाओं की स्थापना की थी। इस बार यहां यू०के० में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ बड़ी अवस्था वाले, पठित, धार्मिक युवकों को ३ वर्ष तक प्रशिक्षण देकर विद्वान् बनाने के उद्देश्य से गुरुकुल या विद्यालय खोलने की योजना प्रस्तुत की है। यह जानकर लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

स्वामी दयानन्द जी ने अनेकत्र निर्देश किया है कि वैदिक धर्म के प्रसार प्रचार हेतु संन्यासी, आचार्य, उपदेशक तथा प्रशिक्षकों का होना अत्यन्त आवश्यक है। यू०के० में ८-१० लाख के लगभग हिन्दू हैं, हजारों आर्यसमाजी भी हैं किन्तु दुरवस्था यह है कि इनका अपना न कोई टी०वी० चैनल है, न रेडियो स्टेशन है और न कोई समाचारपत्र, न गुरुकुल, न बैंक। जबकि अन्य मत पंथ सम्प्रदायों की ये सब चीजें बहुत संख्या में हैं, जिनसे बहुत प्रचार करते हैं।

मैंने यू०के० की सभा तथा समाजों को पत्र लिखा है कि किसी उपयुक्त स्थान पर गुरुकुल/विद्यालय चलावें, इस हेतु भवन प्रारंभ में किराये पर लिये जायें, विद्यार्थियों की संख्या चाहे ८-१० ही हो। उनको पढ़ाने, प्रशिक्षित करने के लिए हम भारत से अच्छे स्तर के योग्य आचार्य प्रेषित करेंगे, जो मात्र भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा तथा अन्य आवश्यक साधन-सुविधाओं को प्राप्त करके निष्कामभावना से, मुख्यरूप से विद्वानों के निर्माण का ही कार्य करेंगे। अध्यापन हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में किया जायेगा। कुछ विषयों को पढ़ाने हेतु स्थानीय अनुभवी सेवाभावी योग्य प्रशिक्षकों का भी सहयोग लिया जा सकता है।

विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा, साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् तथा वेदों के साथ-साथ यज्ञ, संस्कार, संगीत, आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि विषयों का भी परिज्ञान कराया जाये। विद्यार्थी विद्यालय की आंतरिक व्यवस्था प्रबंध यथा भोजन निर्माण, शुद्धि आदि कार्यों को स्वयं ही करेंगे। इस कार्य में स्वेच्छिक रूप से पुरुष तथा माताएं सहयोग प्रदान कर सकती हैं। ऐसा विकल्प रखा गया है।

मैंने अनुभव किया है कि यहां के लोगों में अभी भी इस कार्य हेतु श्रद्धा है तथा संस्था को चलाने के लिए दान, सहयोग, छात्रवृत्ति, साधन सरलतापूर्वक प्राप्त हो जायेंगे। बाहरी कार्यों के लिए एक कार्यकारी समिति बनायी जाये जो मात्र बाहर के कार्यों को करे, आंतरिक कार्यों में हस्तक्षेप न करे। ऐसा संविधान बनाया जाये।

मुझे पूरा विश्वास है कि वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, नीति तथा गौरवमयी-शाश्वत-आदर्श परम्पराओं के प्रचार प्रसार हेतु इस विधि से थोड़े काल में अनेक विद्वानों का निर्माण होना प्रारंभ हो जायेगा, जो न केवल यू०के० में अपितु यूरोप, अफ्रिका, अमेरिकी देशों में भी विदेशी भाषाओं के माध्यम से विशेष रूप से कार्य कर सकेंगे। यही एक उत्तम प्रभावशाली उपाय प्रतीत हो रहा है।

ऐसी ही प्रेरणा तथा प्रस्ताव मैंने पूर्वी अफ्रिकी देशों की आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं के समक्ष उपस्थित किये हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि हम सभी परस्पर मिलकर, प्रेम, पुरुषार्थ, त्याग, तपस्या तथा निष्कामता के साथ इस पृथ्वी पर विलुप्त होती जा रही वैदिक जीवन पद्धति को पुनः जीवित करने में सफल हों, इसी आंतरिक भावना के साथ यह संक्षिप्त समाचार आपको प्रेषित कर रहा हूं। विस्तार से भारत आकर लिखने का, बताने का प्रयास करूंगा।

-ज्ञानेश्वरा

## सूचित करें

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त पंजाब के एक उपदेशक महाराज कृष्ण भसीन के पिता श्री ओमप्रकाश भसीन थे, जिन्होंने सारी आयु आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त पंजाब की सेवा की है। उनकी स्यालकोट में क्रिकेट बेटस् बनाने की फैक्ट्री थी और वे स्यालकोट के ही रहने वाले थे। उनकी पुत्रवधू श्रीमती विनोद भसीन उनके संबंध में एक पुस्तक प्रकाशित करना चाहती हैं। समस्त आर्यजनों से प्रार्थना है कि उनके जीवन के संबंध में यदि किसी को कोई जानकारी हो अथवा कोई संस्मरण हो तो वह निम्नलिखित पते पर भिजवाने की कृपा करें।

**-श्रीमती विनोद भसीन,** के-५ हौजखास एन्कलेव अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-१६, दूरभाष नं० - २६५१७०...



मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-२७६८७४, २७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।